

प्राकृत ग्रंथ परिषद्
ग्रन्थाङ्क : १२

पउमचरियं
द्वितीयो विभागः

प्राकृत ग्रन्थ परिषद्
अहमदाबाद

॥ नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥
॥ नमोनमः श्रीगुरुरामचन्द्रसूरये ॥

पुनःप्रकाशनना लाभार्थी

श्री सुरत तपगच्छ रत्नत्रयी आराधक संघ ट्रस्ट

विजय रामचन्द्रसूरीश्वरजु आराधना भवन

आराधना भवन रोड, सुभाष चोक पास, गोपीपुरा, सुरत-३६५ ००१.

परमशासनप्रभावक महाराष्ट्रदेशोद्धारक सुविशालगच्छाधिपति व्याख्यानवाचस्पति सुविशुद्धदेशनादाता श्रीसंघना परमउपकारी सूरिप्रेमना प्रथम पट्टालंकार स्व. आचार्यदेवेशश्रीमद् विजयरामचन्द्रसूरीश्वरजु महाराज तथा तेजोश्रीना आश्रम अंतेवासी वात्सल्यमहोदयि सुविशालगच्छनायक सूरिरामस्मृतिमंदिर महामहोत्सव-प्रतिष्ठाचार्य पूज्यपाद आचार्यदेवेश श्रीमद् विजयमहोदयसूरीश्वरजु महाराजना धर्मप्रभावक साम्राज्य तथा दिव्य आशीर्वादिनी अने सूरिरामना विनेयरत्न कलिकालना धन्नाअज्ञगार सव्यारित्रपात्र वर्धमानतपोनिधि स्व. पूज्यपाद पंन्यासप्रवर श्री कांतिविजयजु गणिवरना विनेयरत्न वात्सल्यवारिधि शासनप्रभावक आचार्यदेवेश श्रीमद् विजयनरयंद्रसूरीश्वरजु महाराज प्रवचनप्रभावक सुविशाल गच्छाधिपति श्रीवीरविभुनी ७८ मी पाटने शोभावनार आचार्यदेवेश श्रीमद् विजयहंमभूषणसूरीश्वरजु महाराज तथा पूज्यपाद प्रशमरसपयोनिधि आचार्यदेवेश श्रीमद् विजयजयकुंजरसूरीश्वरजु महाराजना पट्टधरत्न प्रवचनप्रभावक आचार्यदेवेश श्रीमद् विजयमुक्तिप्रभसूरीश्वरजु महाराजना पट्टधरत्न प्रसिद्ध प्रवचनकार सूरिमंत्र पंचप्रस्थाननी भेवार अण्ड मौनपूर्वक आराधना-साधना करनार आचार्यदेवेश श्रीमद् विजयश्रेयांसप्रभसूरीश्वरजु महाराजना उपदेशी श्री सुरत तपगच्छ रत्नत्रयी आराधक संघ ट्रस्ट, विजय रामचन्द्रसूरीश्वरजु आराधना भवन, गोपीपुरा, सुरत द्वारा आ परमगीतार्थशिरोमणि पूर्वधर महापुरुष श्री विमलसूरीश्वरजु म.सा. विरचित श्री पठमयरियम् भाग-१,२ ग्रंथ प्रकाशननो संपूर्ण लाभ लेवामां आव्यो छे. अमे तेजोश्रीना जूज जूज आभारी छीअे. आवा अमूल्य प्राचीन ग्रंथोना प्रकाशनमां तेजोश्रीना ज्ञाननिधिनो सहपयोग करता रहे तेवी मंगल कामना.

मंत्री
प्राकृत ग्रंथ परिषद
अमदावाद.



PRAKRIT TEXT SOCIETY

ĀCĀRYA VIMALASŪRI'S
PAUMACARIYAM

WITH
HINDI TRANSLATION
PART-II

Edited By
DR. H. JACOBI

Second Edition revised by
MUNI SHRI PUNYAVIJAYAJI

Translated into Hindi by
Prof. SHANTILAL M. VORA
M.A.,Shastracharya

Appendices prepared by
DR. K. RISHABH CHANDRA
M.A.,Ph.D.

PRAKRIT TEXT SOCIETY
AHMEDABAD
2005

Published by

RAMANIK SHAH

Secretary

PRAKRIT TEXT SOCIETY

Shree Vijay-Nemisuriswarji

Jain Swadhyay Mandir

12, Bhagatbaug Society,

Sharada Mandir Road, Paldi,

Ahmedabad-380007.

T.No. 26622465

Reprint-December-2005

Price : Rs. 300/-

Copy : 650

Available from :

1. **MOTILAL BANARASIDAS, DELHI, VARANSI**
2. **CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES OFFICEK. 37/99,
GOPAL MANDIR LANE, P.BOX NO. 1008, VARANASI-221001**
3. **SARASWATI PUSTAK BHANDAR, RATANPOLE, AHMEDABAD-1**
4. **PARSHVA PUBLICATION, RELIEF ROAD, AHMEDABAD-1**

Printed By :

MANIBHADRA PRINTERS

12, Shayona Estate, Shahibag,

Ahmedabad - 380 004.

T.No. 25626996, 27640750

आयरियसिरिविमलसूरिविड्यं

पउमचरियं

हिंदीअणुवायसहियं

द्वितीयो विभागः

सम्पादकः

डॉ. हर्मन याकोबी

संशोधकः पुनःसम्पादकश्च

मुनिपुण्यविजयः

[जिनागमरहस्यवेदि-जैनाचार्यश्रीमद्विजयानन्दसूरिकर(प्रसिद्धनाम श्रीआत्मारामजीमहाराज)शिष्यरत्न-
प्राचीनजैनभाण्डागारोद्धारकप्रवर्तकश्रीकान्तिविजयान्तेवासिनां श्रीजैन-आत्मानन्दग्रन्थमालासम्पादकानां
मुनिवरश्रीचतुरविजयानां विनेयः]

हिन्दी-अनुवादकः

प्राध्यापक शान्तिलाल म. वोरा

एम.ए., शास्त्राचार्य

परिशिष्टप्रस्तुतकर्ता

डॉ. के. ऋषभचन्द्र

एम.ए., पीएच.डी.

प्राकृत ग्रन्थ परिषद्

अहमदाबाद

प्रकाशक :

रमणीक शाह

सेक्रेटरी, प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी

श्री विजयनेमिसूरीश्वरजी जैन स्वाध्याय मंदिर

१२, भगतबाग सोसायटी, शारदा मंदिर रोड,

पालडी, अहमदाबाद-३८०००७.

फोन नं. २६६२२४६५

पुनःमुद्रण-डिसेम्बर-२००५

मूल्य रु. ३००/-

प्राप्तिस्थान

१. मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, दिल्ली
२. चौखम्बा संस्कृत सीरीज़, वाराणसी-२२१००१
३. पार्श्व प्रकाशन, झवेरीवाड, रिलीफ रोड, अहमदाबाद-३८०००१
४. सरस्वती पुस्तक भंडार, अहमदाबाद-३८० ००१

मुद्रक :

माणिभद्र प्रिन्टर्स

१२, शायोना अेस्टेट,

दूधेश्वर रोड, शाहीबाग,

अहमदाबाद-३८० ००४.

टे.नं. २५६२६९९६, २७६४०७५०

प्रकाशकीय

पउमचरियं (सं. पद्मरचित) जैन परंपरा अनुसार पद्म (राम)का चरित अर्थात् जैन रामायण है। प्राकृत भाषाबद्ध इस महापुराण काव्य की रचना नागिलवंशीय आचार्य विमलसूरिने ईस्वीसन् की तृतीय-चतुर्थ शताब्दी में की थी। इसका आधुनिक युग में सर्वप्रथम संपादन जर्मन विद्वान हर्मन याकोबीने किया था, जो भावनगर से सन् १९१४ में प्रकाशित हुआ था। उसीका अन्य महत्त्वपूर्ण पाठों की सहाय से शुद्ध करके स्व. आगमप्रभाकर पू. मुनिराज श्री पुण्यविजयजी म.सा.ने पुनः संपादन किया था, जो प्रा. शान्तिलाल बोरा के हिन्दी अनुवाद के साथ प्राकृत ग्रंथ परिषद्ने दो भागों में क्रमशः सन् १९६२ और १९६८ में प्रकाशित किया गया था। कई वर्षों से ग्रन्थ अप्राप्त हो चुका था। इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का पुनःमुद्रण प्रकाशित करते हुए हमें हर्ष हो रहा है।

परम पूज्य आचार्य श्री विजयनरचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा और पू. मुनिराज श्री धर्मरत्नविजयजी के अनन्य सहकार से परिषद् यह कार्य संपन्न कर सकी है। एतदर्थ हम इनके अत्यंत आभारी हैं। ग्रन्थ के दोनों खण्डों के पुनःमुद्रण में संपूर्ण आर्थिक सहायदाता श्री सुरत तपगच्छ रत्नत्रयी आराधक संघ ट्रस्ट, सुरत के प्रति आभार प्रदर्शित करते हुए हमें आनंद होता है।

पुनःमुद्रण कार्य सुचारु ढंग से शीघ्र संपन्न करने के लिए माणिभद्र प्रिन्टर्स के श्री कनुभाई भावसार को धन्यवाद।

अहमदाबाद

कार्तिक पूर्णिमा, सं. २०६२

— रमणीक शाह

गंथसमपणं

आसमणलिंगपडिवज्जणायो जो सहयरो महं जाओ ।
अज्जऽवहिं हं बहुमणओ य जेणं विणीएणं ॥१॥
सिरिपुहहचंदचरियाईणं विविहाण गंथरयणाणं ।
संपायणाइकज्जे कउज्जमो जो विवेयमई ॥२॥
सिरिहंसविजय-संपयविजयाण पसिस्स-सिस्सपवरस्स ।
तस्स सुणिणो य सुणिणो यण्णासउवाहिमंतस्स ॥३॥
रमणियविजयस्सेसो बीओ खंडो उ पउमचरियस्स ।

ग्रन्थ-समर्पण

दीक्षाग्रहणकाल से ही जो मेरे साथी बने और अद्यावधि
जिन्होंने मेरा विनयपूर्वक सम्मान किया, 'सिरिपुहड्चंद'
(श्रीपृथ्वीचंद्र) चरितादि विविध ग्रन्थरत्नों के संपादनादि-
कार्य में जिन्होंने उद्यम किया तथा जो विवेकबुद्धि-संपन्न
हैं ऐसे श्रीहंसविजयजी के प्रशिष्य और श्रीसंपतविजयजी
के शिष्य 'पंन्यास' उपाधिधारक गुणवान मुनि श्रीरमणीक-
विजय के करयुगल में 'पउमचरिय' का यह द्वितीय भाग
कृतज्ञ मुनि पुण्यविजय के द्वारा समर्पित किया जाता

PREFACE

The current of Indian literature has flown into three main streams, viz., Sanskrit, Pali and Prakrit. Each of them witnessed enormous range of creative activity. Sanskrit texts ranging in date from the Vedic to the classical period and belonging to almost all branches of literature have now been edited and published for more than a century beginning with the magnificent edition of the Rigveda by Prof. Max Muller. The Pali literature devoted almost exclusively to the teaching and religion of the Buddha was even more lucky in that the Pali Text Society of London planned and achieved comprehensive publication in a systematic manner. Those editions of the Pali Vinaya, Sutta and Abhidhamma Pitakas and their commentaries are well known all over the world.

The Prakrit literature presents an amazing phenomenon in the field of Indian literary activity. Prakrit as a dialect may have had its early beginning about the seventh century B. C. from the time of Mahāvira, the last Tirthaṅkara, who reorganised the Jaina religion and church in a most vital manner and infused new life into all its branches. We have certain evidence that he, like the Buddha, made use of the popular speech of his times as the medium of his religious activity. The original Jaina sacred literature or canon was in the Ardhamagadhi form of Prakrit. It was compiled sometime later, but may be taken to have retained its pristine purity. The Prakrit language developed divergent local idioms of which some outstanding regional styles became in course of time the vehicle of varied literary activity. Amongst such Śaurasenī, Mahārāṣṭrī and Pāṣāṇī occupied a place of honour. Of these the Mahārāṣṭrī Prakrit was accepted as the standard medium of literary activity from about the first century A. D. until almost to our own times. During this long period of twenty centuries a vast body of religious and secular literature came into existence in the Prakrit language. This literature comprises an extensive stock of ancient commentaries on the Jain religious canon or the Āgamic literature on the one hand, and such creative works as poetry, drama, romance, stories as well as scientific treatises on Vyākaraṇa, Kosha, Chanda etc. on the other hand. This literature is of vast magnitude and the number of works of deserving merit may be about a thousand. Fortunately this literature is of intrinsic value as a perennial source of Indian literary and cultural history. As yet it has been but indifferently tapped and is waiting proper publication. It may also be mentioned that the Prakrit literature is of adding interest for teaching the origin and development of almost all the New-Indo-Aryan languages like Hindi, Gujarātī, Marāṭhī, Punjābī, Kāśmīrī, Sindhī, Bangālī, Uriyā, Āssāmī and Nepālī. A national effort for the study of Prakrit languages in all aspects and in proper historical perspective is of vital importance for a full understanding to the inexhaustible linguistic heritage of modern India. About the eighth century the Prakrit languages developed a new style known as Apabhraṃśa which has furnished the missing links between the Modern and the Middle-Indo-Aryan speeches. Luckily several hundred Apabhraṃśa texts have been recovered in recent years from the forgotten archives of the Jaina temples.

With a view to undertake the publication of this rich literature some coordinated efforts were needed in India. After the attainment of freedom, circumstances so moulded themselves rapidly as to lead to the foundation of a society under the name of the Prakrit Text Society, which was duly registered in 1952 with the following aims and objects :

- (1) To prepare and publish critical editions of Prākṛit texts and commentaries and other works connected therewith.
- (2) To promote studies and research in Prākṛit language and literature.
- (3) To promote studies and research of such languages as are associated with Prākṛit.
- (4) (a) To set up institutions or centres for promoting studies and research in Indian History and Culture with special reference to ancient Prākṛit texts.

- (b) To set up Libraries and Museums for Prakrit manuscripts, painting, coins, archaeological find and other material of historical and cultural importance.
- (5) To preserve manuscripts discovered or available in various Bhandars throughout India, by modern scientific means *inter alia* photostat, microfilming, photography, lamination and other latest scientific methods.
- (6) To manage or enter into any other working arrangements with other Societies having any of their objects similar or allied to any of the objects of the Society.
- (7) To undertake such activities as are incidental and conducive, directly or indirectly, to and in furtherance of any of the above objects.

From its inception the Prākṛit Text Society was fortunate to have received the active support of Late Dr. Rajendra Prasad, the First President of Republic of India, who was its Chief Patron and also one of the six Founder Member.

HEREWITH we are publishing Second Part of Paumacariya of Vimalasuri. The First Part was issued in 1962. Over and above giving the Hindi Translation as in the First Part, this second Part includes some valuable APPENDICES and NOTES on the Orthography of the MSS. etc. For preparing the latter we are thankful to Dr. K. R. Chandra.*

The programme of work undertaken by the Society involves considerable expenditure, towards which liberal grant have been made by the following Government :—

| | | | |
|---------------------|------------|-------------------|------------|
| Government of India | Rs. 10,000 | Madras | Rs. 25,000 |
| „ Assam | Rs. 12,500 | Mysore | Rs. 5,000 |
| „ Andhra | Rs. 10,000 | Orissa | Rs. 12,500 |
| „ Bihar | Rs. 10,000 | Punjab | Rs. 25,000 |
| „ Delhi | Rs. 5,000 | Rajasthan | Rs. 15,000 |
| „ Hyderabad | Rs. 3,000 | Saurashtra | Rs. 1,250 |
| „ Kerala | Rs. 5,000 | Travancore-Cochin | Rs. 2,000 |
| „ Madhya Pradesh | Rs. 22,500 | Uttar Pradesh | Rs. 25,000 |
| „ Madhya Bharat | Rs. 10,000 | West Bengal | Rs. 5,000 |
| | | Maharashtra | Rs. 5,000 |

To these have been added grants made by the following Trusts and individual philanthropists:-

| | | | |
|-------------------------------|------------|----------------------------|-----------|
| Sir Dorabji Tata Trust | Rs. 10,000 | Shri Girdharlal Chhotalal | Rs. 5,000 |
| Seth Lalbhai Dalpatbhai Trust | Rs. 20,000 | Shri Tulsidas Kilachand | Rs. 2,500 |
| Seth Narottam Lalbhai Trust | Rs. 10,000 | Shri Laharchand Lalluchand | Rs. 1,000 |
| Seth Kasturbhai Lalbhai Trust | Rs. 8,000 | Shri Nahalchand Lalluchand | Rs. 1,000 |
| Shri Ram Mills, Bombay | Rs. 5,000 | Navjivan Mills | Rs. 1,000 |

The society records its expression of profound gratefulness to all these donors for their generous grants-in-aid to the Society.

Ahmedabad.
25th December, 1968.

P. L. VAIDYA
H. C. BHAYANI
General Editors

* For some fresh and additional information on the date, sources and influence of Paumacariya readers are referred to the articles as indicated :—

- (i) New Light on the Date of Paumacariyam, Journal of the Oriental Institute, Baroda, Vol. XIII, No. 4, June, 1964
(ii) Sources of the Rama-story of Paumacariyam, JOI, Baroda, Vol. XIV, No. 2, December, 1964
(iii) Extant of the Influence of the Rama-story of Paumacariyam, JOI, Baroda, Vol. XV, No. 3-4 March-June, 1966,
(iv) Intervening Stories of Paumacariyam and their Sources, JOI, Baroda, Vol. XVI, No. 4, June, 1967.

ग्रन्थानुक्रमः

A Note on the Variant Readings and Orthographic-Scribal Tendencies of the PC. by Dr. K. R. Chandra

XI-XVI

'पउमचरिय'द्वितीयविभागस्य विषयानुक्रमः

| | | | |
|---|---------|--|--------|
| ६० सुग्गीवभामंडलसमागमं नाम सट्टिमं पव्वं | ३७७ | ७५ इंदहआदिनिक्खमणं नाम पंचहत्तरं पव्वं | ४२६-३२ |
| ६१ सत्तिसंपायं नाम एगसट्टं पव्वं | ३७७-८२ | ७६ सीयासमागमविहाणं नाम छहत्तरं पव्वं | ४३२-३४ |
| ६२ रामविप्पलावं नाम वासट्टं पव्वं | ३८२-८५ | ७७ मयवक्खणं नाम सत्तहत्तरं पव्वं | ४३४-४१ |
| ६३ विसल्लापुव्वभवाणुकित्तणं नाम तिसट्टं पव्वं | ३८५-८९ | ७८ साएयपुरीवण्णणं नाम अट्टहत्तरं पव्वं | ४४१-४५ |
| लक्ष्मणस्य विशल्यायाश्च चरितम् | ३८७ | ७९ राम-लक्खणसमागमविहाणं नाम एगूणासीयं पव्वं | ४४५-४७ |
| वायुरोगोत्पत्तिकारणम् | ३८९ | ८० तिहुयणालंकार-भुवणालंकारहत्थि-संखोभविहाणं नाम असीइमं पव्वं | ४४८-५२ |
| ६४ विसल्लाआगमणं नाम चउसट्टिमं पव्वं | ३९०-९२ | ८१ [ति]भुवणालंकारहत्थिसल्लविहाणं नाम एक्कासीयं पव्वं | ४५२-५४ |
| अमोघविजया शक्तिः | ३९१ | ८२ तिहयणालंकार-भुवणालंकार-पुव्व-भवाणुकित्तणं नाम वासीइमं पव्वं | ४५४-६२ |
| ६५ रावणदूयाभिगमणं नाम पंचसट्टं पव्वं | ३९३-९६ | ८३ भरह-केगइदिकखाभिहाणं तेयासीयं पव्वं | ४६२-६३ |
| ६६ फग्गुणट्ठाहियामह-लोगनियमकरणं नाम छासट्टं पव्वं | ३९६-९८ | ८४ भरहनिव्वाणगमणं नाम चउरासीइमं पव्वं | ४६३ |
| फाल्गुनमासे अष्टाहिकामहोत्सवः | ३९७ | ८५ [लक्खण]रज्जाभिसेयं नाम पंचासंइमं पव्वं | |
| ६७ सम्माद्विट्ठिदेवकित्तणं नाम सत्तसट्टं पव्वं | ३९९-४०२ | ८६ महुसुंदरबहाभिहाणं नाम छासीइमं पव्वं | ४६६-७० |
| ६८ बहुरूवासाहणं नाम अडसट्टिमं पव्वं | ४०२-५ | ८७ महुराउवसग्गविहाणं नाम सत्तासीयं पव्वं | ४७०-७२ |
| ६९ रावणचिंताविहाणं नाम एगूणसत्तरं पव्वं | ४०५-९ | ८८ सत्तुग्गकयंतसुहभवाणुकित्तणं नाम अट्टासीयं पव्वं | ४७२-७५ |
| ७० उज्जोयविहाणं नाम सत्तरं पव्वं | ४०९-१३ | ८९ महुरानिवेसविहाणं नाम एगूणनउयं पव्वं | ४७५-७९ |
| ७१ लक्खण-रावणजुज्झं नाम एगसत्तरं पव्वं | ४१४-१८ | | |
| ७२ चक्करयणुप्पत्ती नाम बावत्तरं पव्वं | ४१८-२१ | | |
| ७३ दहवयणवहविहाणं नाम तिहत्तरं पव्वं | ४२१-२३ | | |
| ७४ पियंकरउअक्खाणयं नाम चउहत्तरं पव्वं | ४२३-२६ | | |

| | | | |
|--|---------|--|---------|
| ९० मणोरमालम्भविहाणं नाम नउइयं पर्वं | ४७९-८१ | १०८ हणुवनिव्वाणगमणं नाम अट्टुत्तरसयं पर्वं | ५६४-६७ |
| ९१ राम-लक्ष्मणविभूहंसणं नाम एककाणउयं पर्वं | ४८१-८३ | १०९ सबकसंकहाविहाणं नाम नउत्तरसयं पर्वं | ५६८-६९ |
| ९२ सीयाजिणपूयाडोहलविहाणं नाम बाणउयं पर्वं | ४८३-८५ | ११० लवणंकुसतवोवणपवेसविहाणं नाम दसुत्तरसयं पर्वं | ५७०-७२ |
| ९३ जणचिंताविहाणं नाम तेणउयं पर्वं | ४८५-८८ | १११ रामविप्पलावविहाणं नाम एगदसुत्तरसयं पर्वं | ५७३-७४ |
| ९४ सीयानिव्वासणविहाणं नाम चउणउयं पर्वं | ४८८-९५ | ११२ लक्ष्मणविभोगविहीसणवचणं नाम बारसुत्तरसयं पर्वं | ५७४-७६ |
| ९५ सीयासमासासणं नाम पंचाणउयं पर्वं | ४९५-५०० | ११३ कल्लाणमित्तदेवागमणं नाम तेरसुत्तरसयं पर्वं | ५७६-८१ |
| ९६ रामसोयविहाणं नाम छन्नउयं पर्वं | ५००-३ | ११४ बलदेवनिकखमणं नाम चउहसुत्तरसयं पर्वं | ५८१-८३ |
| ९७ लवणंकुसभवविहाणं नाम सत्ताणउयं पर्वं | ५०४-५ | ११५ बलदेवमुणिगोयरसंखोभविहाणं नाम पंचरसुत्तरसयं पर्वं | ५८४-८४ |
| ९८ लवणंकुसदेसविजयं नाम अट्टाणउयं पर्वं | ५०६-१० | ११६ बलदेवमुणिदाणपसंसाहविहाणं नाम सोलसुत्तरसयं पर्वं | ५८५-८६ |
| ९९ लवणंकुसजुज्झविहाणं नाम नवनउयं पर्वं | ५१०-१५ | ११७ पउमकेवलनाणुप्पत्तिविहाणं नाम सत्तदसुत्तरसयं पर्वं | ५८७-९० |
| १०० लवणंकुससमागमविहाणं नाम सययमं पर्वं | ५१५-१९ | ११८ पउमनिव्वाणगमणं नाम अट्टुत्तरसयं पर्वं | ५९०-९८ |
| १०१ देवागमविहाणं नाम एककोत्तरसयं पर्वं | ५१९-२४ | ग्रन्थोपसंहारः | ५९६ |
| १०२ रामधम्मसवणविहाणं नाम दुत्तरसयं पर्वं | ५२४-३८ | ग्रन्थकारप्रशस्तिः | ५९८ |
| १०३ रामपुव्वभव-सीयापव्वज्जाविहाणं नाम तिउत्तरसयं पर्वं | ५३८-५२ | परिशिष्ट | १-१५८ |
| १०४ लवणंकुसपुव्वभवाणुक्कित्तणं नाम चउरुत्तरसयं पर्वं | ५५०-५२ | १ व्यक्तिविशेषनाम | १-३८ |
| १०५ महु-केढवउवक्खाणं नाम पंचुत्तरसयं पर्वं | ५५२-५९ | २ प्रथम परिशिष्ट के वर्गविशेष | ३९-४७ |
| १०६ लक्ष्मणकुमारनिकखमणं नाम छउत्तरसयं पर्वं | ५६०-६३ | ३ वर्गीकृत-भौगोलिक-विशेषनाम | ४८-५५ |
| १०७ भामंडलपरलोयगमणविहाणं नाम ससुत्तरसयं पर्वं | ५६३-६४ | ४ सांस्कृतिकसामग्री | ५६-६० |
| | | ५ वंशावली विशेष | ६१-६३ |
| | | ६ देश्य और अनुकरणात्मक शब्द परिशिष्ट १ से ६ का वृद्धि पत्र | ६४-६५ |
| | | ७ पाठांतराणि | ६६ |
| | | ८ हिन्दी अनुवाद संशोधन | ६७-१३२ |
| | | | १३३-१५८ |

Variant Readings and Orthographic-scribal tendencies of the PC.

THE PC. MANUSCRIPTS

Variant readings¹ of the text of Paumacariyam given at the end under Appendix No. 7 are collected from three manuscripts (one palm-leaf manuscript J and two paper manuscripts K and Kh). J is the oldest manuscript and its readings are better than those of the other two. Acceptable readings are printed in heavy type. References given against those readings are explained at the close of Appendix No. 7. The description of the manuscripts utilised is as follows :-

1. J-Palm-leaf manuscript from Jaisalmer. It was copied in V.S. 1198 (1141 A.D.)²
2. K-Paper manuscript from Muni Punyavijayaji's Collection; S.No. 2805; Copied in the later half of the 16th century V. S.
3. Kh-Paper manuscript from Muni Punyavijayaji's Collection, S.No.4178; Copied in 1648 V.S. Both these paper manuscripts³ have been described under 'Sampādakiya kiñcit' in Part I of this work. There the Serial Number of manuscript K is wrongly mentioned as 2085.

VARIANT READINGS

1. A List of Missing and Extra Passages in the Mss.

(i) EXTRA PASSAGES

MS. J

- | | |
|---|------------------------------|
| 1 | verse after ch. I, verse 65. |
| „ | in 3.22 |
| „ | in 8.13 |
| 1 | „ after 49.32 |
| 1 | „ after 54.9 |

The whole verse is replaced at.82.24.

-
1. I acknowledge my gratitude to Rev. Muni Shri Punyavijayaji who made me available these readings through Shri Nagindas Kevalshi Shah.
 2. For details see Serial No. 264, on page 110 of Śri Jaisalmerudurgastha Jaina Tāḍapatriya Grantha Bhaṇḍāra Sūcipatra prepared by Muni Punyavijayaji to be shortly published and Serial No. 152 under Catalogue of Palm-leaf Mss. on page 17 of 'A Catalogue of Manuscripts in the Jain Bhandaras at Jaisalmer' by C.D. Dalal and L.B. Gandhi, Baroda, 1923.
 3. They are noted and described under Serial No. 7582/2805 and 7583/4178 in Addenda to the Catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts—Muni Punyavijayaji's Collection'. Part III (L.D. Series, Ahmedabad), p. 974.

(ii) MISSING PASSAGES

| Chapter | MS. J Verses | | MS. K |
|---------|--------------------------|----|--------------------------|
| 8 | 173,174 | 22 | 44.45 |
| 11 | 90 (later half) | 25 | 14 (later half) |
| 31 | 19 | 45 | 5,6 |
| 57 | 6 (,,) | 47 | 29 |
| 63 | 46 (,,) | 53 | 66-68 |
| 63 | 47 (former half) | 97 | 19 (middle half) |
| 70 | 55 (later quarter) | | |
| 70 | 56 (former three-fourth) | | |
| 82 | 57 | | MS. Kh |
| 86 | 36 | 55 | 44 (later three-fourth) |
| 102 | 122, 123 | 55 | 45 (former three-fourth) |

All the manuscripts have verse 125 in place of 12.4 and vice-versa. This order is correct and the text should be corrected accordingly.

2. Principles Followed by Dr. H. Jacobi in his Edition of PC.

From a study of the Mss. J, K and Kh we can make out some of orthographical and grammatical preferences that guided H. Jacobi¹ in the selection of readings in his editing the text of Paumacariyam published in 1914. They are indicated below:-

- (i) In the case of the forms of denominatives and the roots of the tenth class, preference is given to readings with *am̐ti* or *im̐ti* over those with *em̐ti*.
- (ii) Preference is given to the reading eliding an intervocalic consonant over those preserving it.
- (iii) Readings having *h* in place of *bh* are preferred over those retaining the latter.
- (iv) Medial dental nasal *n* is uniformly given as cerebral *ṇ*.
- (v) Clusters that have resulted from an original *ṇn* or *ṇ* are uniformly given as *ṇṇ*.
- (vi) For metrical reasons preference has been given to *hi* over *hiṃ* (instrumental plural termination) and to *i* over *iṃ* (neutre nom./acc. plural termination).

3. Orthograpeical Confusions of the Mss.

(i) VOWELS: Orthographical confusions between the quantities as also qualities of vowels, displacing and misplacing of mātrās, misplacing of and addition of the anusvāra dot and misreading of vowels like *i* and *e* as *raṃ* and *pa* respectively are generally noted in all the manuscripts. though they are increasingly frequent in manuscripts later in date.

(ii) CONSONANTS: Consonantal confusions are noted below:-

Instances of metathesis as *hara*⇒*raha* are found in all the manuscripts.

1. I am grateful to Dr. A. N. Upadhye for his suggestion to treat this topic.

(a) Confusions of Single Consonants

| | | | | | |
|----------------|-------|-----------------|----------|---------------|----------|
| <i>ga=ma</i> | J | <i>na=va</i> | J | <i>ya=e</i> | J |
| <i>ga=ra</i> | K | <i>na=la</i> | J | <i>ra=na</i> | J |
| <i>ca=va</i> | Kh | <i>na=ta</i> | K | <i>ra=va</i> | K |
| <i>ja=ca</i> | J | <i>pa=ya, e</i> | J, K, Kh | <i>la=na</i> | J |
| <i>ḍa=u</i> | J | <i>ba=pa</i> | K, Kh | <i>la=bha</i> | K |
| <i>ta=ma</i> | K | <i>bha=ba</i> | Kh | <i>va=ca</i> | J, K, Kh |
| <i>da=ra</i> | J, K | <i>ma=sa</i> | J, K, Kh | <i>va=ra</i> | K |
| <i>da=va</i> | J | <i>ma=ga</i> | K, Kh | <i>va=ṇa</i> | K, Kh |
| <i>da=ha</i> | K, Kh | <i>ya=pa</i> | J | <i>sa=ma</i> | J, K, Kh |
| <i>dha=va</i> | K, Kh | <i>ya=sa</i> | K, Kh | <i>sa=ra</i> | Kh |
| <i>dha=tha</i> | K | <i>ya=ma</i> | J, K | <i>ha=i</i> | J, K, Kh |

(b) Confusions of Clusters

| | | | |
|-------------------|----------|------------------|----------|
| <i>ccha=ttha</i> | J | <i>tta=ttha</i> | K |
| <i>jja = vva</i> | K, Kh | <i>ttha=ccha</i> | K, Kh |
| <i>ṭṭa = ḍḍa</i> | K, Kh | <i>dda=ddha</i> | K, Kh |
| <i>ṭṭa = ttha</i> | K | <i>ddha=ttha</i> | K, Kh |
| <i>ttha=ḍḍha</i> | J, K, Kh | <i>nta=nna</i> | J, K |
| <i>ḍḍha=tṭa</i> | K | <i>nta=ta</i> | K |
| <i>ṇha =mha</i> | K, Kh | <i>nna=ta</i> | J, K, Kh |
| <i>tta =nna</i> | J | | |

Scribal Tendencies of the Mss.

A. GENERAL TRAITS IN THE MANUSCRIPTS

(i) *Pari* and *paḍi* as well as *dhira* and *vira* are interchangeable.

(ii) *Ujjata* (*udyata*) is written as *ujjata* or *ujjuya*.

(iii) Case Ending *ya*. There are a few instances of feminine substantives having *ya* or *i* case ending in the place of *e*. It is archaic¹ and it has been adopted in the acceptable readings under Appx. 7 as indicated ;

(a) *ya* ending : *Mandoyariya* 1.50, 59.63, *Bhūyāḍaviya* 1.62, *Lamkāpurīya* 5.267, 66.20, *Lamkānāyaraīya* 7.162,—J; *visayasuhāsāya* 8.107—J, Kh; *janāniya* 7.95, *naiya* 10.34—K, Kh; *pāyavasādhāya* 28.35—K; *tiya* 30.66, 63.58, 92.14, 101.4,—J; *nayariya* 31.120—K; *samadiṭṭhiya* 36.21,—J, K; *nattiyāya* 37.56, *punṇalahuyāya* 63.38, *ckkarasiya* 73.34, *bhantiyāya* 78.10—J; *piyūya* 77.99—K.

(b) *i* ending: *Amjaṇḍi samāṇi* 1.62—J, *Videhi(hā i)* 1.66—J, *imāi* 55.6—K and *Videhāi* 97.16—K.

1. Its parallel in Pāli is 'ya'. In the Vasudevahiṇḍi there are a few instances of 'ya' case-ending. Leuman is of the opinion that 'ya' is an old form which Prakrit has in common with Pāli. Dr. L. Al-dorf subscribes also to this view. (See Bulletin of the School of Oriental Studies' London, Vol. VIII. pp. 319-34). In Ashokan Inscriptions 'ya' is also prevalent at all places and 'ya' in the north and north-west. In non-Ashokan Inscriptions 'ya' is also prevalent and later on there comes 'ye' case-ending that becomes 'e' after Christian era. In the 3rd and 4th Century A. D 'e' has become the standard termination (See Inscriptional Prakrits by Mehandale).

B. SCRIBAL PECULIARITIES OF INDIVIDUAL MSS.

MS. J

This manuscript generally spells the following words as indicated :

- (i) *Uttama* as *uttima*, *kiraṇa* as *kiriṇa*. *Rāvaṇa* as *Rāmaṇa*² or *Rāmvaṇa*, *Vāṇara* as *Vānara*, *somara* as *savara*, *eva* as *emva*, *kāṭṭha* as *kāṭṭha*, *jāva* as *jāṃva*, *jāṃva*, *jāva cciya* as *jāvaṃ ciya*, *tāva* as *tāṃva*, *tāṃva*, *tāva cciya* as *tāvaṃ ciya*, *nivvāṇa* as *nevvāṇa*, *pi hu* as *pi ha*, *vi hu* as *vi ha* and *Sattuggho* as *Sottujjha*.
- (ii) Instrumental plural case-ending is often *hiṃ* instead of *hi* e. g., *gaṇaharehiṃ* 1.10 and *kusumehiṃ* 4.13.
- (iii) Accusative singular of the base in *ā* and *ī* is often endingless, e. g. *sibiya* 3.132 and *samuppatti* 4.20,

MS. K

- (i) There are notable errors regarding the placement of the *mātrā*—putting an additional *mātrā* or omitting or displacing it.
- (ii) It generally spells *keettha* for *keṭṭha*.
- (iii) It often spells *Rāmaṇa* and *Vānara* for *Rāvaṇa* and *Vāṇara* respectively.
- (iv) It has a lesser number of instrumental plurals in *hiṃ* as compared with J.
- (v) It has often accusative singulars in *aṃ* and *iṃ* for the feminine bases ending in *ā* and *ī*.

MS, Kh

- (i) It has a considerable number of errors as regards the use of *mātrās* and *anusvāra*.
- (ii) Sometimes it drops the indeclinable *ca* altogether and at times it puts additional *ca*.
- (iii) In the last two or three cantos of PC *t* in third personal singular termination and medial *g*, *t* and *d* elsewhere are found to be retained.
- (iv) It generally spells *keṭṭha* as *keettha*.
- (v) It often spells *Rāvaṇa* as *Rāmaṇa*.
- (vi) It has more frequently instrumental plurals in *hiṃ* as compared with K, but less frequently as compared with J.
- (vii) It has often feminine accusatives in *aṃ* and *iṃ*.

C. MISCELLANEOUS

- (i) Vowel Variation and Sandhi :

(a) In K and Kh *uttama* is sometimes written as *uttima*.

(b) J has retained diphthong *ai* at these places :

Vaidehi for *Vaidehi* 26.75; 94.33; 101.29

(c) J has a few cases in which residue *t* has formed sandhi with the preceding *t* :

thivamsa (*thiivarṃsa*) 1.32 *khigoyarehiṃ* (*khigoyarehiṃ*) 53.43, *mārihi* (*mārihi*) 23.10 and similarly *pāvihī* 26.64, *kāhī* 28.84, *hijjihī* 28.86, *dharihi* 96.36 etc,

1. These have been noted in the Appx. No. 7 up to the 5th canto only.

2. In the Vasudevahinḍī also we have the form *Rāmaṇa*'.

(d) J has *yə* for *i* and *i* for *yə* at a number of places while in K and Kh there are only some instances of this kind.

(ii) Consonants :

- (a) J has often retained medial consonants like *g*, *t*, *d*, *bh* and *y*.
- (b) K and Kh have sometimes retained *t* and *bh*, and they have some additional instances of dropping medial consonants, too.
- (c) J, K and Kh have also a few instances of softening medial *k*.
- (d) Rare instances of softening *t* are as follows :
aidhranto 33. 87 J, 68. 30 K, Kh, *Giribhūdi Gobhādi, madi* 55. 35 K Kh, *samadio* 5. 152 Kh.
- (e) In the following two cases even the initial consonant is softened :
gao for *kao* 18.54. K, Kh, *dhunai* for *thunai* 108.20 K.
- (f) J has a few cases of changing *m* to *v* :
paṇavai 19. 17, *bhāvinie* 20. 111. *sasambhavo* 24. 36. *sodāvanie* 26.81, *bhāvai* 35.13, *sāvitti* 39.35. *bhavo* 70.32, *nivisam* 103.70 etc.

(iii) Śrutis *t*, *y* and *v* :

- (a) *t* śruti : A few instances of *t* śruti are observed as follows :
J has *Sasitaha* (pa) 5.5, *rāo ta* (ca) 31. 128, *kañcaṇamatesu* (ye) 69.14, *Maṇoramati* (di) 90. 8, *tāto* (o) 91.13, *taṅhātiyāim* (dī) 102.85, *chuhātiyā* (di) 103.158 etc.
K has *ritū* (pū) 5.232, *Nārato* (da) 90. 4, etc.
Kh has *rayaṅagghārikao-* (dī) 77.24, *maṇamattagato* (jo) 77.71, *sāvato* (ko) 77.26 etc.
K and Kh have *Sasito* (ko) 5.99, *ahataṁ* (kaṁ) 17.103. *-dhārato* (o) 59.18, *pasāto* (do) 77.20, *Puhatidharassa* (vī) 77.49 etc.
- (b) *ya* śruti : We come across such instances of *ya* śruti of long and short *a* when it is preceded by any vowel, e.g. *nissamkiyaiesuṁ* 14.21, *asiyā* (yā) 20.97, *uīyarāga* 14.54, *cauyāṅaṅām* 82.2, *dāyavayaṅam* 16.16, *jineyavvo* 16.16, *loyadhamma* 17.22, *sahoyarim* 5.70, etc. Moreover J has *ya* śruti of vowels even other than *a* and *i*, e.g. *bhāṇiyuṁ* 71.58, *āyesadāyā* 14.19, *narayovagā* 14.22 etc.
- (c) *va* śruti : J has many instances of *va* śruti (not less than 50 cases over and above those occurring in the printed text) whereas there are very few in K and Kh.
MS. J : *ka=taṅadāruvehiṁ* 26.9, *sovaṇavam* 31.57; *ga=uvveva* 16.84, *ja=bhuvāḥḥiṅgaṇa* 16.80; *ta=jagujjovakaram* 2.30, *ujjovam* 2.100; *da=kaṇaoyari* 17.55, etc. The other verses in which there are words with *va* śruti are : 2.30, 100; 3.19, 126; 6.69, 105, 106, 152; 7.78; 16.80, 84; 17. 55; 20.20, 76; 26.9; 28.128; 30. 89,90; 31.57, 68; 32,43; 33.8; 35.19; 39.97; 40.4; 53.22; 55.34; 58.4; 59.32; 82,59; 93.21; 94.8, 37, 93; 96.1; 91.41; 100.46; 106.6; 108.27; 109.10; 113.6, 59; and 117.42,43.
MS. K; 8.17, 253; 17.38; 20.147; 94,93; 102.28 and 116.11,
MS. Kh: 4.11; 8.167 and 17.38.

(iv) Nasals :

- (a) Initial *n* : J cerebralises the initial dental *n* in very few cases; *nūṇam* 5.191, *jāṇa rattim* 14.139, *māṇe cirāvehi* 24.38, *nei* 48.32, etc., whereas K and Kh have such instances more than those in J.

(b) Medial *n* : J has a number of instances of preserving medial dental *n* and that also specifically in the word *anala*, e.g. *kovāuala* 13.45, *virahānala* 16.2, *viyogānala* 30.88, *kohānala* 31.17, *narayānala* 32.31. *Analappabha* 39.31, *Vinami* 3.144, *nindo* 24.50, 57.25, *viddhatthāni* 27.12, etc. And there is uniform use of *n* in the word *īnara*. K and Kh have such instances lesser than those in J. K has often *Vānara* and Kh has it sometimes (According to Hemacandra 4.1.228 medial *n* is preserved in Ārṣa).

(v) Clusters :

- (a) J has mostly *nn* for *jn* and *ny* and it has often *nn* for *nn*. K and Kh have mostly *nn* for all these three clusters.
- (b) J has one more instance of preservation of consonant *r* in a cluster *ghanavandram* 53.81, the other two being at 11.120 and 34.42.
- (c) J retains largely a long vowel followed by a cluster with its first member being a nasal but K and Kh retain it sometimes, e.g. *narenda*, *varenda*, etc. We find *tānva*, *tānva*, *jānva*, *jānva*, *emva* at several places and *nevvāna* also in J. Note also *jānhaṅi* at 94.48.
- (d) J has several III person plural indicative forms of the verbs of the 10th gaṇa in *emti* whereas K and Kh have *imti* and *amti*, e.g. *uvvaṭṭemti* 3.96—J and *uvvaṭṭamti*—K and Kh.

(vi) Declensions :

- (a) J has also a very few cases of Nominative singular forms which are used for Accusative singular forms of *a* ending bases : *dhammo*, *gamaṇo*, 80.28, *Rāmo* 94.62, 103.68, etc.
- (b) J, K and Kh have a very few instances of feminine bases having their singular Accusative forms just like Sanskrit forms : *cauyānāṅm* 8.22, *kumārīm* 14.52, *mahādevīm* 22.57, *Sākeyapurīm* 22.58, *Kosaṅbīm* 88.24, and *varataṅgīm* 18.27—J; *Laṅkāṅm* 23.23, *bhūmi* 29.2, *pajjalāṅm* 68.30 and *purīm* 75.61, —K; *Sīyām* 76.24, *mahīm* 94.37 —K and Kh (can they be accounted as a fault of the copyists who were careless in placing additional anusvāra and mātrā ?).
- (c) J has some additional Instrumental plural forms ending in *su* instead of *him*. e.g. *pāyavesu saṅchannā* 17.29, etc. whereas K and Kh preserve sometimes *him* case-ending of the Instrumental plural though *su* is found in the printed text: *karaggamukkehim* 8.101, *kheyaravasahehiū* 62.35, etc.
- (d) J has two instances of applying *mhi* as Locative singular case-ending (an Ārṣa form) : *visaymhi* 12.73 and *araṅgamhi* 11.58.

(vii) Indeclinables :

K has also very few instances of using the word *kīha* for *kim*; see 21.74, 46.47, 48.8, etc.

D. ADDITIONAL PECULIARITIES OF MS J.

- (i) *e*, *o*, *im* and *him* are at times metrically short.
- (ii) There are some additional cases of having a long vowel in place of an ending short vowel with a nasal; *nayaresum* as *nayaresū* 20.181, *soṭūam* as *soṭūna* 103.14, *ihaim* as *ihai* 21.7, etc. Feminine substantives also have their singular Accusative forms ending in *ā* and *ī* in place of *am* and *im* respectively.
- (iii) A few additional instances of having *ha* termination for II Person singular Imperative are noted: *dāveha* 8.109, *civāveha* 8.114, *suṅcha* 5.64; 8.142, *dhareha* 39.58; 56.21, *ḍṇeha* 63.71, etc.
- (iv) There are a few *u* ending forms: *etthu* 79.4, *atāhu* 113.70 (indeclinables); *macchariyau* 94.14, etc.
- (v) *Kiha* in place of *kim* is noted not less than nine times over and above those (eight times) found in Jacobi's edition: see 11.53, 21.74, 27.18, 37.35, 78.32, 86.29, 103.169, 105.104 and 110.38

K. R. Chandra

६० सुग्रीव-भामण्डलसमागमपठनं

एयन्तरमि पउमो, केसरिजुत्तं रहं समाखुद्धो । लच्छीहरो वि एवं, हणुमाइभडेहि परिकिण्णो ॥ १ ॥
संपत्तो रणभूमि, पढमं चिय लक्खणो गरुडकेऊ । दट्टणं तं पलणा, भुयङ्गपासा दसदिसासु ॥ २ ॥
अह ते खेयरसामो, भीमोरगवन्धणाउ परिमुक्का । भामण्डल-सुग्रीवा, निययवलं आगया सिग्घं ॥ ३ ॥
तत्तो ते पवरभडा, सिरिविक्खाया भणन्ति पउमभं । सामिय ! परमविभूई, कह तुज्झ खणेण उप्पन्ना ? ॥ ४ ॥
तो भणइ पउमनाहो, परिहिण्डन्तेण साहवो दिट्ठा । देसकुलभूसणा ते, गिरिसिहरे जायउवसग्गा ॥ ५ ॥
चउकाणणं तु पडिमं, साइन्ताणं समत्थच्चित्ताणं । भवतिमिरनासणयरं, केवलनाणं समुप्पन्नं ॥ ६ ॥
गरुडाहिवेण तइया, तुट्टेणं अह जो वरो दिट्ठो । सो चिन्तियमेत्तेणं, विज्जाण समागमो जाओ ॥ ७ ॥
एवं राहवभणियं, सोऊणं खेयरा सविग्घइया । मुणिवरकहाणुरत्ता, जाया हरिसाइयसरीरा ॥ ८ ॥
न तं पिया नेव करेन्ति बन्धू, न चेव मित्ता सकलत्त-भिच्चा ।
जहा मणुस्सस्स हिओवएसं, कुणन्ति साह विमलप्पहावा ॥ ९ ॥

॥ इय पउमचरिए सुग्रीवभामण्डलसमागमं नाम सट्ठिमं पठनं समत्तं ॥

६१. सत्तिसंपाद्यपठनं

अन्ने रणपरिहत्था, सूरा सन्नद्धबद्धतोणीरा । वाणरभडाण समुहा, समुट्टिया रक्खसा बहवे ॥ १ ॥
पडुपडह-भेरि-श्लरि-काहल-तलिमा-मुइङ्गसइणं । फुडियं पिव आयासं, दो अद्धे महियलं व गयं ॥ २ ॥

६०. सुग्रीव एवं भामण्डलका समागम

तब सिंह जुते हुए रथ पर राम सवार हुए । हनुमान आदि सुभटोंसे घिरा हुआ लक्ष्मण भी इसी तरह रथ पर सवार हुआ । (१) गरुडकेतु लक्ष्मण पहले ही रणभूमिमें पहुँच गया । उसे देखकर नागपाश दसों दिशाओंमें भाग गये (२) भयंकर नागपाशासे मुक्त वे विद्याधरराजा भामण्डल और सुग्रीव शीघ्र ही अपने सैन्यमें आ पहुँचे । (३) तब श्रीविख्यात आदि प्रवर सुभटोंने रामसे पूछा कि, हे स्वामी ! क्षणभरमें आपमें परमविभूति कैसे उत्पन्न हुई ? (४) तब रामने कहा कि घूमते हुए हमने एक पर्वतके शिखर पर जिनको उपसर्ग हुए हैं ऐसे देशभूषण और कुलभूषण नामके दो साधु देखे थे । (५) चतुरानन प्रतिमा (ध्यानका एक प्रकार) की साधना करते हुए समर्थ चित्तवाले उन्हें संसारका अंधकार दूर करने वाला केवलज्ञान उत्पन्न हुआ । (६) उस समय गरुडाधिपने प्रसन्न हो हमें जो वर दिया था उसका चिन्तनमात्र करनेसे विद्याओंका समागम हुआ है । (७) इस प्रकार रामके द्वारा कही गई बात सुनकर विस्मययुक्त और मुनिवरोंकी कथामें अनुरक्त वे खेचर रोमांचित हुए । (८) निर्मल प्रभाववाले साधु मनुष्यके कल्याणका जैसा उपदेश देते हैं वैसा तो न माता, न पिता, न भाई, न मित्र और न स्त्री सहित भृत्य ही देते हैं । (९)

॥ पद्मचरितमें सुग्रीव एवं भामण्डलका समागम नामक साठवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

६१. शक्ति-सम्पात

दूसरे बहुतसे युद्धक्ष शूरवीर राक्षस कवच धारण करके तथा तरकश बाँधकर वानर-सुभटोंके सम्मुख उपस्थित हुए । (१) ढोल, नगारे, भालर, काहल (बड़ा ढोल), तलिमा (बाद्य विशेष) तथा मृदंगकी तुमुल ध्वनिसे मानो आकारा

एत्थन्तरे महप्पा, लङ्कापरमेसरो सह बलेण । परिसक्कइ रणभूमिं, पुरओ देविन्दसमविहवो ॥ ३ ॥
 नाणाउहगहियकरा, नाणाविहवाहणेसु आरूढा । नाणाविहवरचिन्धा, आवडिया समरसोडीरा ॥ ४ ॥
 सर-असर-सत्ति-सबल-करालकोन्तेहि खिप्पमाणेहिं । जह निम्मलं पि गयणं, खणेण गहणं कयं सयलं ॥ ५ ॥
 तुरयारूढेहि समं, आसवलग्गा तओ समावडिया । जोहा जोहल्लीणा, रहिया रहिए विवाएन्ति ॥ ६ ॥
 मत्तगइन्दत्था वि य, अब्भिद्वा कुञ्जरोवरिठियाणं । एवं समसरिसबला, आलग्गा समरकम्मन्ते ॥ ७ ॥
 तं वाणराण सेत्रं, भगं चिय रक्खसेहि परहुत्तं । नीलाइकइभडेहिं, पुणरवि आसासियं सबं ॥ ८ ॥
 निययबलपरिभवं ते, दट्टुं लङ्काहिवस्स सामन्ता । जोहन्ति सबडहुत्ता, अरिसेत्रं सत्थपहरेहिं ॥ ९ ॥
 सुय-सारण-मारीजी-चन्द्रका विज्जुवयणमाईया । जीमूतनायको वा, कयन्तवयणा समरसूरा ॥ १० ॥
 तं पि य संगाममुहे, भगं कइसाहणं पलोएउं । सुग्गीवसन्तिया जे, समुट्टिया सुहडसंघाया ॥ ११ ॥
 तं वाणरेहि सेत्रं, दूरं ओसारियं अइबलेहिं । दट्टूण रक्खसवई, वाहेइ रहं सबडहुत्तं ॥ १२ ॥
 अह तेण तक्खणं चिय, पवंगमा गरुयसत्थपहरेहिं । भग्गा पलोइऊणं, विहीसणो अहिमुहो हूओ ॥ १३ ॥
 तं भणइ रक्खसिन्दो, अवसर मह दिट्ठिगोयरपहाओ । न य हवइ जुत्तमेयं, हन्तुं एक्कोयरं समरे ॥ १४ ॥
 अह तं भणइ कुमारो, विहीसणो अमरिसं तु वहमाणो । उभयबलाण समक्खं, न देमि पट्टिं सुकन्त व ॥ १५ ॥
 पुणरवि भणइ दहमुहो, दुट्ट ! तुमं उज्झउं निययवंसं । भिच्चत्तं पडिवन्नो, पुरिसाहमपायचारोणं ॥ १६ ॥
 पुणरवि भणइ सुभणिओ, विहीसणो रावणं मह सुणेहि । वयणं हियं च पच्छं, सुहजणणं उभयलोएसु ॥ १७ ॥
 एवगए वि जइ तुमं, इच्छसि धण-रज्जसंपथं विउलं । सह राहवेण पीइं, करेहि सीया समप्पेहि ॥ १८ ॥

दूटकर दो टुकड़े हो पृथ्वी पर गिर पड़ा हो, ऐसा प्रतीत होता था । (२) इसी बीच देवेन्द्रके समान वैभववाला महात्मा लंकेश रावण सैन्यके साथ रणभूमिकी ओर चला । (३) नानाविध आयुध हाथमें धारण किये हुए, अनेक प्रकारके वाहनोंमें आरूढ़ और नाना प्रकारके उत्तम चिह्नवाले युद्धवीर भी आ पहुँचे । (४) बाण, भस्त्र, शक्ति, सच्चल तथा भयंकर भाले फेंकनेवाले उन्होंने निर्मल आकाशको भी क्षणभरमें पूरा ग्रहण लगा हो ऐसा कर दिया । (५) बादमें अश्वारोहियोंके साथ अश्वारोही भिड़ गये तथा सैनिकोंके साथ सैनिक और रथारोहियोंके साथ रथारोही लड़ने लगे । (६) मदोन्मत्त हाथियोंके ऊपर आरूढ़ योद्धा भी हाथियों पर बैठे हुआके साथ भिड़ गये । इस तरह समान एवं सदृश बलवाले वे युद्धमें लग गये । (७) राक्षसोंके द्वारा पराजित और भग्न वानरोंकी उस सारी सेनाको नील आदि कपि-सुभटोंने पुनः आश्वस्त किया । (८)

अपनी सेनाके पराभवको देखकर लंकाधिप रावणके सामन्त शत्रुसैन्यकी ओर अभिमुख होकर शत्रुओंके प्रहार द्वारा युद्ध करने लगे । (९) शुक, सारण, मारीचि, चन्द्र, अर्क, विजुद्धदन और जीमूतनायक आदि यमके जैसे भयंकर वदनवाले तथा युद्धमें शूर सुभटों द्वारा युद्धभूमिमें वानरसैन्यके विनाशको देखकर सुग्रीवके जो सुभट-समुदाय थे वे उठ खड़े हुए । (१०-११) अति बलवान् वानरों द्वारा वह राक्षससैन्य दूर खदेड़ दिया गया । यह देखकर राक्षसपतिने रथ सम्मुख चलाया । (१२) उसने फौरन ही भारी शस्त्रप्रहारोंसे बन्दरोंको भगा दिया । यह देखकर विभीषण सामने आया । (१३) उसे राजसेन्द्रने कहा कि मेरे दृष्टिपथमेंसे तू दूर हट । युद्धमें सहोदर भाईको मारना ठीक नहीं है । (१४) इस पर क्रोध धारण करनेवाले कुमार विभीषणने कहा कि सुकान्ताकी भाँति दोनों सैन्योंके समक्ष मैं पीठ नहीं दिखाऊँगा । (१५) रावणने पुनः कहा कि, दुष्ट ! तूने अपने वंशको छोड़कर पादचारी अधम मनुष्योंकी नौकरी स्वीकार की है । (१६) इस पर भलीभाँति प्रतिपादन करनेवाले विभीषणने रावणसे कहा कि उभय लोकमें सुखजनक, हितकर और पथ्य ऐसा मेरा वचन तुम सुनो । (१७) इतना होने पर भी यदि तुम विपुल धन, राज्य एवं सम्पत्ति चाहते हो तो रामके साथ प्रीति करो और सीताको सौंप दो । (१८) अपने अभिमानका त्याग करके रामको जल्दी ही प्रसन्न करो । एक स्त्रीके कारण अयशरूपी

मोक्षाय नियममाणं, दसरहपुत्रं लहुं पसाएहि । मा अयसमलकलङ्कं, करेहि महिलानिमित्तम् ॥ १९ ॥
 सोऽज्ज तस्स वयणं, दसाणणो तिवकोहपज्जलिओ । अल्लियइ गबियमई, आयद्धियनिसियवरवाणो ॥ २० ॥
 रह-गय-तुरयारूढा, सामिहिया गहियपहरणा-SSवरणा । अने वि य सामन्ता, आलगा वाणरभडाणं ॥ २१ ॥
 एतं ददुण रणे, सहोयरं तस्स अद्वयन्देणं । छिन्दइ धयं सरोसो, विहीसणो अहिमुहावडिओ ॥ २२ ॥
 तेण वि य तस्स धणुयं, छिन्नं लङ्गाहिवेण रुद्वेणं । चावं दुहा विरिक्कं, जेट्टस्स विभीसणभडेणं ॥ २३ ॥
 बहुभडजीयन्तकरे, वड्ढन्ते ताण दारुणे जुज्जे । जणयस्स परमभत्तो, समुद्विओ इन्दइकुमारो ॥ २४ ॥
 सो लक्खणेण रुद्वो, तुज्जेण व सायरो समुल्लिओ । पउमेण कुम्भकण्णो, सिग्घं आयारिओ एत्तो ॥ २५ ॥
 आवडिओ सीहकडो, नीलेण समं नलो य सम्भूणं । सुहडो सयंभुनामो, आयारइ दुम्महं समरे ॥ २६ ॥
 दुम्मरिसो घडउवरिं, कुद्वो इन्दासणी तहा काली । चन्दणभेण समाणं, कन्दो भिन्नज्जणामेण ॥ २७ ॥
 सिग्घं विराहिओ वि य, आयारइ अज्जयं समाकुद्वो । अह कुम्भयण्णपुत्तं, कुम्भं पत्तो य हणुवन्तो ॥ २८ ॥
 सुग्गोवो वि सुमालो, केउं भामण्डलो तहा काली । जोहेइ ददरहो वि य, रणकण्डुं चैव वहमाणो ॥ २९ ॥
 एवं अत्रे वि भडा, समसरिसवला रणम्मि आवडिया । आहवणमुहररवा, जुज्जन्ति समच्छरुच्छाहा ॥ ३० ॥
 हण छिन्द भिन्द निक्खिव, उत्तिट्टुत्तिट्टु लहु पडिच्छाहि । पप्फोड ताड मारय, सह घत्तुवत्तिणहणन्ति ॥ ३१ ॥
 बहुत्तरणिगाएणं, विमुक्कवुक्कारमुहडसदेणं । गज्जन्तीव दिसाओ, धणसत्थतमन्धयाराओ ॥ ३२ ॥
 सूरादूराण इमो, वट्टइ अहियं परिकखणाकालो । जह मुज्जइ आहारो, न तहा जुज्जिज्जए समरे ॥ ३३ ॥
 मा भाहि कायर ! तुमं, दीणं न हणामि जं च परहुत्तं । तेण वि सो पडिभणिओ, अज्ज तुमं चैव नट्टो सि ॥ ३४ ॥

मलसे अपने आपको कलंकित मत करो। (१९) उसका ऐसा कहना सुनकर रावण क्रोधसे अत्यन्त प्रज्वलित हो गया। अभियानी वह स्त्रीचकर तीक्ष्ण बाण फेंकने लगा। (२०) अपने स्वामीका हित करनेवाले दूसरे भी सामन्त रथ, हाथी एवं घोड़ों पर सवार हो तथा प्रहरण एवं कवच धारण करके वानर सुभटोंके साथ भिड़ गये। (२१) सहोदर भाईके युद्धमें आते देख सामने आये हुए विभीषणने गुस्सेमें आकर अर्धचन्द्र बाणसे उसकी ध्वजा काट डाली। (२२) रथ उस लंकाधिपति रावणने भी उसका धनुष काट डाला। इस पर सुभट विभीषणने वड़े भाईके धनुषको दो टुकड़ोंमें बाँट दिया। (२३)

बहुत-से सुभटोंके जीवनका विनाश करनेवाला उनका दारुण युद्ध जब हो रहा था तब पिता का परम भक्त इन्द्रजितकुमार उपस्थित हुआ। (२४) जिस प्रकार उड़लते हुए सागरको पर्वत रोकता है उसी प्रकार लक्ष्मणने उसे रोक। रामने आते हुए कुम्भकर्णको ललकारा। (२५) नीलके साथ सिंहकटि और शम्भुके साथ नल भिड़ गया। स्वयम्भू नामके सुभटने युद्धमें दुर्मतिको ललकारा। (२६) दुर्मर्ष घटोदरपर और इन्द्रासनि कालीपर क्रुद्ध हुआ। चन्द्रनखके साथ स्कन्द तथा भिन्नांजन के साथ विराधित शीघ्र ही भिड़ गया। क्रुद्ध मयने अंगदको ललकारा तथा कुम्भकर्णके पुत्र कुम्भके पास हनुमान आ पहुँचा। (२७-२८) सुग्गोव सुमालीके साथ, भामण्डल केतुके साथ तथा युद्धकी खुजली धारण करनेवाले ददरथ कालीके साथ युद्ध करने लगा। (२९) दूसरे भी समान और सदृश बलवाले सुभट युद्धक्षेत्रमें आये और मत्सर एवं उत्साहसे युक्त वे आह्वान करके चिल्लाते हुए युद्ध करने लगे। (३०) मारो, काटो, तोड़ो, फेंको, उठो-उठो, जल्दी पकड़ो, फोड़ो, पीटो, मारो, उलट दो, मार डालो—इस तरह योद्धा चिल्ला रहे थे। (३१)

वादल सरीखे शस्त्रोंसे अन्धकारित दिशाएँ अनेक विध वालोंकी आवाजसे तथा सुभटों द्वारा की गई हुँकार-ध्वनिसे मानो गरजने लगीं। (३२) शूर और कायरों का यह विशेष परीक्षा-काल था, क्योंकि जिस हिसाबसे अन्न खाया जाता है उसी हिसाबसे युद्धमें लड़ा नहीं जाता। (३३) हे कायर ! तुम मत डरो। जो पराजित होता है उस दीनको मैं नहीं मारता। इसपर उसे प्रत्युत्तर दिया जाता था कि आज तुम ही नष्ट हुए हो। (३४) कोई सुभट दूटे हुए जोड़वाले कवचको देखकर,

कोइ भडो सत्ताहं, सहसा विच्छिन्नबन्धनं ददुं । संघेइ साहुपुरिसो, जह नेहं विहडियं सन्तं ॥ ३५ ॥
 दन्तेसु धरिय स्रगं, आबन्धेऊण परियरं सुहडो । जुज्झइ अविसन्नमणो, सामियपरितोसणुज्जुत्तो ॥ ३६ ॥
 मत्तगयदन्तभिन्नो, विज्जिज्जन्तो य कण्णचमरेहिं । सामियकयकरणिज्जो, सुवइ भडो वीरसेज्जासु ॥ ३७ ॥
 सीसगहिण्णमेका, छुरियापहरेसु केइ पहरन्ति । असि-कणय-तोमरेहिं, सुहडा घायन्ति अन्नोन्नं ॥ ३८ ॥
 रत्तासोयवणं पिव, किंसुयरुक्खाण होज्जसंघायं । जायं खणेण सेनं, पयलियरत्तारुणच्छायं ॥ ३९ ॥
 केएथ मल्लियस्तथा, गरुयपहाराहयाऽहिमाणेणं । पडिउट्टियं करेन्ता, अन्ने लोलन्ति महिवट्ठे ॥ ४० ॥
 हत्थी जज्जरियतणू, मुञ्चन्ता रुहिरकदमुद्दामं । छज्जन्ति जलयकाले, गिरि व जह गेरुयालिद्धा ॥ ४१ ॥
 गयतुरयखुरखउक्खय-रण उच्छाइए दिसाचक्रे । अविभाविद्विद्विपहा, नियया नियए विवाएन्ति ॥ ४२ ॥
 एयारिसम्मि जुज्झे, इन्दइणा लक्खणो सवडहुत्तो । छन्नो सरेहि सिग्धं, तेण वि सो तह विसेसेणं ॥ ४३ ॥
 अह रावणस्स पुत्तो, सिग्धं पेसेइ तामसं अत्थं । नासेइ लक्खणो तं, दिवायरत्थेण परिकुविओ ॥ ४४ ॥
 पुणरवि दसाणणसुओ, भीमेहि सरेहि वेडिउं पयओ । आदत्तो सोमिंसि, सरहं सत्तुरङ्गमावरणं ॥ ४५ ॥
 तेण वि य वयणतेयं, अत्थं च वीसज्जिउं पवणवेगं । ववगयविसाणलसिहा, भुयङ्गपासा निरायरिया ॥ ४६ ॥
 जुज्झं काऊण चिरं, रामकणिट्ठेण इन्दइकुमारो । बद्धो निस्संदेहं, भुयङ्गपासेसु अइगाढं ॥ ४७ ॥
 पउमो वि भाणुकण्णं, विरहं काऊण नायपासेहिं । बन्धइ बलपरिहत्थो, दिवायरत्थं पणासेउं ॥ ४८ ॥
 मगहाहिव ! ते बाणा, भुयङ्गपासा हवन्ति निमिसेणं । अमरा आउइभेया, चिन्तियमेत्ता ज्हाख्खा ॥ ४९ ॥

जिस प्रकार साधुपुरुष दूटे हुए स्नेहको जोड़ते हैं उसी प्रकार उसे जोड़ता था । (३५) दाँतोंसे तलवार पकड़कर और कमरबन्द कसकर स्वामीके परितोषके लिए उद्यत कोई सुभट मनमें विषण्ण हुए बिना लड़ता था । (३६) मदेन्मत्त हाथीके दाँतसे भिन्न तथा कानरूपी चामरोंसे डुलाया जाता कोई सुभट स्वामीके प्रति कर्तव्यका पालन करके वीर शय्यामें सो गया था । (३७) एक-दूसरेका सिर काटे हुए कई वीर तलवारकी चोटसे प्रहार करते थे । तलवार, कनक तथा तोमरसे सुभट एक-दूसरेको घायल करते थे । (३८) मातो रत्ताशोकका वन हो अथवा किंशुकके वृक्षोंका समूह हो इस प्रकार क्षणभरमें रक्तकी अरुण छायाके प्राकट्यसे सेना हो गई । (३९) नष्ट शस्त्रवाले कई सुभट भारी प्रहारसे आहत होनेसे गिर पड़ते थे और फिर उठते थे । दूसरे जमीन पर लोटते थे । (४०) जर्जरित शरीरवाले तथा रक्तयुक्त तीव्र मदजल छोड़ते हुए हाथी वर्षाकालमें गेरुसे सने हुए पर्वतकी भाँति मालूम पड़ते थे । (४१) हाथी और घोड़ोंकी खुरोंसे खोदनेके कारण उड़ी हुई धूलसे दिशाचक्र छ्वा गया । इससे देखनेमें विवेक न रहनेके कारण खुद अपनोंके साथ ही सुभट लड़ने लगे । (४२)

ऐसे युद्धमें सम्मुख आये हुए लक्ष्मणको इन्द्रजितने बाणोंसे आच्छादितकर दिया । उस लक्ष्मणने भी उसे शीघ्र ही विशेष रूपसे बैसा कर दिया । (४३) इसके बाद रावणके पुत्र इन्द्रजितने शीघ्र ही तामस अस्त्र फेंका । कुपित लक्ष्मणने दिवाकर-अस्त्रसे उसका नाश किया । (४४) फिर इन्द्रजित भयंकर बाणोंसे रथ एवं अश्वयुक्त लक्ष्मणको बाँधनेमें प्रयत्नशील हुआ । (४५) इस पर उसने भी पवनके जैसे वेगवाले वैननेय-अस्त्रको छोड़ा । और विषानलकी लपटें निकालनेवाले सर्पोंके बन्धनको नष्ट किया । (४६) चिरकाल तक युद्ध करके रामके छोटे भाई लक्ष्मणने इन्द्रजित कुमारको अत्यन्त गाढ़ नागपाशमें असन्दिग्ध रूपसे बाँध दिया । (४७) पराक्रममें कुशल रामने दिवाकर अस्त्रका विनाश करके तथा रथरहित बनाकर भानुकर्याको नागपाशसे बाँध लिया । (४८)

हे मगधनरेश ! ये बाण निमिषमात्र में नागपाश हो जाते हैं और आयुधका विनाश करनेवाले वे अमर बाण चिन्तन करने पर पुनः जैसेके तैसे हो जाते हैं । (४९) नागपाशमें बद्ध तथा निश्चेष्ट उसे रामके कहनेसे भामण्डलने

१. वैननेयं अस्त्रं गरुडात्मित्यर्थः ।

सो नायपासबद्धो, निषेद्धो राहवस्स वयणेणं । भामण्डलेण गन्तुं, निययरहे विलह्वो सिग्घं ॥ ५० ॥
 इन्दइभडो वि एवं, बद्धो चिय लक्खणस्स आणाए । सिग्घं विराहिणं वि, आरुहिओ सन्दणे नियए ॥ ५१ ॥
 एवं अन्ने वि भडा, घणवाहणमाइया रणे गहिया । बद्धा य वाणरेहिं, पवेसिया निययसिबिरं ते ॥ ५२ ॥
 एयन्तरम्मि समरे, विभीसणं भणइ दहमुहो रुट्ठो । विसहसु पहारमेकं, जइ रणकण्डुं समुबहसि ॥ ५३ ॥
 तेण वि य धीरमइणा, भणिओ एक्केण किं व पहरेणं ? । होऊण अप्पमत्तो, आहणसु मए जहिच्छाए ॥ ५४ ॥
 सो एवभणियमेत्तो, घत्तइ सुलं सहोयरस्स रणे । तं पि य सरेहि एन्तं, रामकणिट्ठो निवारइ ॥ ५५ ॥
 दट्ठूण निरागरियं, सुलं लंकाहिवो परमरुट्ठो । गेण्हइ अमोहविजयं, सत्ति उक्का इव जलन्ती ॥ ५६ ॥
 ताव य जलहरसामं, पेच्छइ गरुडद्वयं ठियं पुरओ । विरिथणविउलवच्छं, पलम्बवाहुं महापुरिसं ॥ ५७ ॥
 तं भणइ रक्तसवई, अन्नस्स मए समुज्जयं सत्थं । को तुज्झ आहियारो, धट्ट ! ममं ठाविउं पुरओ ? ॥ ५८ ॥
 जइ वा इच्छसि मरिउं, लक्खण ! इह भडसमूहसंवट्ठे । तो ठाहि सवडहुत्तो, विसहसु सत्तीपहारं मे ॥ ५९ ॥
 ओसारिऊण एत्तो, विहीसणं लक्खणो सह रिऊणं । जुज्झइ रणे महप्पा, दट्टववसाओ भयविमुक्को ॥ ६० ॥
 अह रावणेण सत्ती, मुक्का जालाफुलिङ्गनियरोहा । गन्तूण लक्खणं सा, भिन्दइ वच्छथलाभोगे ॥ ६१ ॥
 सो तेण पहारेणं, सोमिती तिबवेयणुम्हविओ । मुच्छनिमोलिथच्छो, धस ति धरणीवले पडिओ ॥ ६२ ॥
 एयन्तरम्मि रामो, पडियं दट्टूण लक्खणं समरे । अह जुज्झिउं पवत्तो, समयं विज्जाहरिंदेहिं ॥ ६३ ॥
 सो तेण तक्खणं चिय, दसाणणो छिन्नचावधयक्खओ । विरहो कओ य माणी, चलणेसु ठिओ धरणिवट्ठे ॥ ६४ ॥
 अन्नं रहं विलग्गो, जाव य धणुयं लएइ तूरन्तो । ताव चिय दहवयणो, पउमेण कओ रणे विरहो ॥ ६५ ॥

जा करके अपने रथमें चढ़ा लिया। (५०) इसी प्रकार बद्ध इन्द्रजीत सुभटको भी लक्ष्मणकी आज्ञासे विराधितने अपने रथमें चढ़ाया। (५१) इसी तरह मेघवाहन आदि दूसरे सुभट भी युद्धमें पकड़े गये। वानरोंने उन्हें बाँधकर अपने शिविरमें दाखिल किया। (५२)

इस बीच युद्धमें रुष्ट रावणने विभीषणसे कहा कि यदि तुझे युद्धकी खुजली आ रही है तो तू एक प्रहार सहन कर। (५३) धीरमतिने भी उससे कहा कि एक प्रहारसे क्या? अप्रमत्त होकर तुम इच्छानुसार मुझ पर प्रहार करो। (५४) इस तरह कहे गये उसने (रावणने) युद्धमें भाईके ऊपर शूल फेंका। उस आते हुए शूलको लक्ष्मणने बाणोंसे निवारण किया। (५५) दूर हटाये गये शूलको देखकर अत्यन्त रुष्ट रावणने उल्काकी भाँति जलती हुई अमोघविजया नामकी शक्ति धारण की। (५६) उसी समय उसने बादलके समान श्याम वर्णवाले, गरुड़की ध्वजावाले, विशाल एवं मोटी छातीवाले तथा लम्बी भुजाओंवाले महापुरुषको (लक्ष्मणको) सम्मुख अवस्थित देखा। (५७) उसे राक्षसपतिने कहा कि दूसरेके लिए मैंने शस्त्र उठाया है। अरे धृष्ट! मेरे सामने खड़े होनेका तुझे क्या अधिकार है? (५८) हे लक्ष्मण! यदि तू सुभट समूहके संवर्षमें मरना चाहता है तो सामने खड़ा रह और मेरा शक्तिप्रहार सहन कर। (५९) इस पर विभीषणको एक और हटाकर दृढ़ निश्चयवाला तथा भयसे मुक्त महात्मा लक्ष्मण युद्धमें शत्रुसे लड़ने लगा। (६०) तब रावणने ज्वाला एवं चिनगारियोंके समूहसे व्याप्त एक शक्ति छोड़ी। जा करके उसने लक्ष्मणके विशाल वक्षस्थलके प्रदेशको भेद डाला। (६१) उस प्रहारके कारण तीव्र वेदनासे सन्तप्त और मूर्छासे आँखें बन्द किया हुआ लक्ष्मण धड़ामसे ज़मीन पर गिर पड़ा। (६२) लक्ष्मणको युद्धमें गिरते देख राम विद्याधरेन्द्रके साथ लड़ने लगे। (६३) उनके द्वारा तत्काल ही धनुष, ध्वजा एवं कवच नष्ट किया गया तथा रथहीन बनाया गया अभिमानी रावण ज़मीन पर पैरोंसे खड़ा रहा। (६४) दूसरे रथमें बैठकर जबतक वह रावण धनुष लेता है तबतक तो रामने उसे लड़ाईमें रथहीन बना दिया। (६५) रामके

१. समयं चिय रक्तसिद्धिणं—सु० ।

रामस्स सरवरेहिं, निसायरो विम्भलो कओ सिग्घं । न य गेण्हिउं समत्थो, बाणं न सरासणं चेव ॥ ६६ ॥
 बाणेहि लोढिओ च्चिय, धरणियले राहवेण दहवयणो । दीसइ पुणो पुणो च्चिय, अन्नन्नरहे समारूढो ॥ ६७ ॥
 विच्छिन्नचावकवओ, छबारा रावणो कओ विरहो । तह वि य न य साहिज्जइ, अब्भुयकम्मो समरसूरो ॥ ६८ ॥
 पउमो विन्हियहियओ, जंपइ जो मह सराहओ न मओ । पुण्णेहि रक्खिओ वि हु, परभवजणिण तुक्केणं ॥ ६९ ॥
 निसुणेहि भणिज्जन्तं, मह वयणं रक्खसाहिवइ । एक्कं । जो मज्झ तुमे भाया, निहओ सत्तोपहारेणं ॥ ७० ॥
 तस्साणुमगालगं, नेमि तुमे जमपुरिं न संदेहो । होउ त्ति एव भणिओ, दसाणणो अइगओ लक्कं ॥ ७१ ॥
 चिन्तेइ सावलेवो, एक्को मे वेरिओ मओ निहओ । किंचि हरिसाइयमणो, पविसइ निययं महाभवणं ॥ ७२ ॥
 रुद्धे सोज्जण सुए, तं चिय एक्कोयरं समरसूरं । सोयइ निसासु एत्तो, दहवयणो तिवदुक्खन्तो ॥ ७३ ॥
 केएत्थ पुषटुकएण रणम्मि भङ्गं, पावन्ति बन्धणमिणं अवरे हयासा ।
 अन्ने पुणो सुचरिएण जयन्ति धीरा, लोए सया विमलकित्तिधरा भवन्ति ॥ ७४ ॥

॥ इय पउमचरिए सत्तिसंपायं नाम एगसद्धं पव्वं समत्तं ॥

६२. रामविष्पलावपव्वं

तत्तो समाउलमणो, पउमो सोगेण ताडिओ गाढं । पत्तो य तुरियवेगो, जत्थउच्छइ लक्खणो ठाणे ॥ १ ॥
 दट्टुण सत्तिभिन्नं, सहोयरं महियलम्मि पल्लत्थं । रामो गलन्तनयणो, मुच्छावसविम्भलो पडिओ ॥ २ ॥

उत्तम बाणोंसे राक्षस शीघ्र ही विह्वल बना दिया गया । वह न तो बाण और न धनुष लेनेमें समर्थ हुआ । (६६) रामके द्वारा बाणोंसे जमीन पर लोटाया गया रावण पुनः पुनः दूसरे-दूसरे रथमें आरूढ़ होता देखा जाता था । (६७) धनुष और कवचसे विच्छिन्न रावण छः बार रथहीन किया गया तथापि अद्भुत कर्मवाला तथा युद्ध करनेमें वीर वह बशमें नहीं आता था । (६८) तब विस्मित हृदयवाले रामने कहा कि मेरे द्वारा बाणोंसे आहत होने पर भी तुम नहीं मरे । वस्तुतः परभवमें किये हुए ऊँचे पुण्यसे ही तुम रक्षित हो । (६९) हे राक्षसाधिपति ! मेरा एक वचन तुम सुनो । तुमने जो मेरे भाईको शक्तिके प्रहारसे मारा है तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि मैं भी उसके पीछे पीछे यमपुरीमें तुम्हें पहुँचा दूँगा । 'भले'—ऐसा कहकर रावण लंकामें लौट आया । (७०-७१) वह अभिमानके साथ सोचता था कि मेरा एक रात्रु तो मारा गया । इस तरह मनमें कुछ हर्षित होता हुआ वह अपने महाभवनमें प्रविष्ट हुआ । (७२) पुत्र एवं समरमें शूर सहोदर भाईका पकड़ा जाना सुनकर तीव्र दुःखसे पीड़ित रावण तबसे रातमें शोक करने लगा । (७३) युद्धमें पूर्वकृत पापके कारण कई लोग विनष्ट होते हैं । दूसरे हताश हो बन्धन प्राप्त करते हैं । अन्य धीर पुरुष सुचरितके कारण जीतते हैं और लोकमें सदा विमल यशको धारण करनेवाले होते हैं ।

॥ पउमचरितमें शक्ति सम्पात नामक इकसठवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

६२. रामका विप्रलाप

इसके पश्चात् मनमें व्याकुल तथा शोकसे अत्यन्त ताड़ित राम जिस स्थानमें लक्ष्मण था वहाँ जल्दी ही आ पहुँचे । (१) शक्तिसे विदारित और जमीनपर लिटे हुए सहोदरको देखकर आँखोंमेंसे आँसू गिरते हुए राम मूर्च्छाके कारण विह्वल हो नीचे

सीयलजलोच्छ्रियज्ञो, आसत्यो वाणरेहि परिकिष्णो । अह विलविउं पयत्तो, रामो कलुणेण सहेंण ॥ ३ ॥
 हा वच्छ । सायरवरं, उत्तरिऊणं इमं अइदुल्लं । विहिजोएण अणत्थं, एरिसयं पाविओ सि तुमं ॥ ४ ॥
 किं माणेण महाजस ! ण य वायं देसि विलवमाणस्स । जाणसि य विओगं ते, न सहामि मुहुत्तमेत्तं पि ॥ ५ ॥
 तुहुं मे गुरुहि वच्छय ! समप्पिओ आयरेण निक्खेवो । किं ताण उत्तरमिणं, दाहामि विमुक्कलजोऽहं ? ॥ ६ ॥
 सुलभा नरस्स लोए, कामा अत्था अणेयसंवन्धा । नवरं इहं न लब्भइ, भाया माया य जणओ य ॥ ७ ॥
 अहवा परम्मि लोए, पावं अइदारुणं मए चिण्णं । तस्सेयं पावफलं, जायं सीयानिमित्तम्मि ॥ ८ ॥
 अज्ज महं एयाओ, भुयाउ केऊरकिणइयङ्गाओ । देहस्स भारमेत्तं, जायाओ कज्जरहियाओ ॥ ९ ॥
 एयं मे हयहिययं, वज्जमयं निम्मियं कयन्तेणं । जेणं चिय न य फुट्टइ, दट्टूण सहोयरं पडियं ॥ १० ॥
 सत्तुं दमेण तइया, सत्तीओ पञ्च करविमुक्काओ । गहियाउ तुमे सुपुरिस !, संपइ एक्का वि न वि रुद्धा ॥ ११ ॥
 मुणिया य निच्छएणं, सत्ती वज्जइलेहि निम्माया । सिरिवच्छभूसियं पि हु, जा भिन्दइ लक्खणस्स उरं ॥ १२ ॥
 उट्टेहि लच्छिवल्लह !, धणुयं घेतूण मा चिरावेहि । मज्झागया वहत्थे, एए सत्तुं निवारैहि ॥ १३ ॥
 ताव य एस परियणो, वच्छय ! विट्ठीसु रमइ पुरिसस्स । आवइपडियस्स पुणो, सो चेव परम्मुहो ठाइ ॥ १४ ॥
 ताव य गज्जन्ति परा, अणुजीविगया मणोहरं वयणं । जाव बहुसत्थदादं, वेरियसीहं न पेच्छन्ति ॥ १५ ॥
 माणुजओ वि पुरिसो, एगागी वेरिएहि पडिहद्धो । अवलोइउं दिसाओ, सुमरइ एक्कोयरं सरं ॥ १६ ॥
 भोत्तूण तुमे वच्छय !, एत्थ महाविग्गहे समावडिए । को ठाइइ मह पुरओ, निययं तु हियं विचिन्तेन्तो ॥ १७ ॥
 तुज्ज पसाएण मए, निव्वूढं दुक्खसंकडं एयं । न य नज्जइ एत्ताहे, कह य भमि(श्वि)स्सामि एगागी ॥ १८ ॥
 भो मित्त वाणराहिय !, साहणसहिओ कुलोचियं देसं । वच्चसु य अविग्घेणं, सिग्घं भामण्डल ! तुमं पि ॥ १९ ॥

गिर पड़े । (२) घेरे हुए वानरों द्वारा शरीर पर शीतल जल छिड़कनेसे होशमें आये हुए राम करुण शब्दसे रोने लगे । (३) हा वत्स ! अत्यन्त दुर्लभ इस समुद्रको पार करके विधिके योगसे इस तरह तुम अन्यत्र पहुँच गये हो । (४) हे महायश ! क्या मानके कारण तुम रोते हुए युद्धको उत्तर नहीं देते ? तुम जानते हो कि मैं तुम्हारा वियोग एक मुहूर्तमात्र भी सह नहीं सकता । (५) हे वत्स ! गुरुजनोंने तुमको एक धरेहरके तीरपर आदरके साथ मुझे सौंपा था । निर्लेज मैं उन्हें अब क्या उत्तर दूँगा ? (६) विश्वमें लोगोंके लिए काम, अर्थ एवं अनेक सम्बन्ध सुलभ हैं, परन्तु यहाँ केवल भाई, माता एवं पिता नहीं मिलते । (७) अथवा परलोकमें मैंने अतिनयंकर पापका अनुष्ठान किया होगा । सीताके निमित्तसे उसका यह फल मिला है । (८) आज केयूरसे शोभित चिह्नवाली मेरी ये भुजाएँ प्रयोजन रहित होनेसे शरीरके लिए भारभूत हो गई हैं । (९) यमने मेरा यह पापी हृदय वज्रका बनाया है, जिससे भाईको गिरा हुआ देखकर भी वह फूटता नहीं है । (१०) हे सुपुरुष ! शत्रुदम राजाके हाथसे छोड़ी गई पाँच शक्तियाँ उस समय तुमने ग्रहण की थीं, किन्तु आज एकाकी भी तुम रोक न सके । (११) इससे ज्ञात होता है कि यह शक्ति निश्चय ही वज्रके समूहसे बनाई गई होगी, जिससे श्रीवत्ससे विभूषित लक्ष्मणका वक्षस्थल भी वह भेद सकी । (१२) हे लक्ष्मीवल्लभ ! तुम उठो । धनुष ग्रहण करनेमें देर मत लगाओ । मेरे वधके लिए आये हुए इन शत्रुओंको तुम रोको । (१३) हे वत्स ! यह कुटुम्ब-परिवार मनुष्यकी दृष्टिमें तभीतक रमण करता है जबतक दुःख नहीं आ पड़ता । दुःख आनेपर वही फिर पराङ्मुख हो जाता है । (१४) तभीतक दूसरे अनुजीवी लोग मनोहर वचन कहते हैं जबतक अनेक शस्त्ररूपी दादोंसे युक्त वैरी रूपी सिंहको वे नहीं देखते । (१५) शत्रुओं द्वारा घिरा हुआ अभिमानी किन्तु एकाकी पुरुष भी चारों ओर देखकर शूरवीर सहोदर भाईको याद करता है । (१६) हे वत्स ! तुम्हें छोड़कर दूसरा कौन अपने हितका विचार करके इस होनेवाले महाविग्रहमें मेरे सम्मुख खड़ा हो सकता है ? (१७) तुम्हारे प्रसादसे ही मैंने यह दुःखका संकट उठाया है । मैं नहीं जानता कि अब मुझ एकाकीका क्या होगा ? (१८)

हे वानराधिप मित्र ! तुम अपनी सेनाके साथ कुलोचित देशमें निर्विघ्न चले जाओ, और हे भामण्डल ! तुम भी शीघ्र

न तहा विहोसण ! ममं बाहइ सीयाविओयदुक्खं पि । जह अकयत्थेण तु मे, इज्झइ हिययं निरवसेसं ॥ २० ॥
 सुग्गीवाई सुहडा, सबे जाहिनन्ति निययनयराइं । तुह पुण अहो विहीसण !, कयमं देसं पवज्जिहिसि ? ॥ २१ ॥
 पढमं चिय उवयारं, कुणन्ति इह उत्तमा नरा लोए । पच्छा जे मज्झिमया, अहमा उभएसु वि असत्ता ॥ २२ ॥
 सुग्गीवय ! भामण्डल !, चियया मे रयह मा चिरावेह । जामि अहं परलोयं, तुब्भे वि जहिच्छियं कुणह ॥ २३ ॥
 मरणे कयववसारं, पठमं दट्टण जम्बवो भणइ । धीरत्तणं पवज्जसु, मुञ्चसु सोगं इमं सामि ! ॥ २४ ॥
 विज्जासत्थेण इमो, पहओ लच्छीहरो गओ मोहं । जीविहइ तुज्ज भाया, सामिय ! नत्थिऽत्थ संदेहो ॥ २५ ॥
 तम्हा किंचि उवायं, तूरन्ता कुणह रयणिसमयम्मि । लच्छीहरो निरुत्तं, मरइ पुणो उग्गाए सूरै ॥ २६ ॥
 तत्तो ते कइसुहडा, भीया तिण्णोव गोउरपुराईं । सत्तेव य पायारा, कुणन्ति विज्जानिओगेणं ॥ २७ ॥
 रह-गय-त्तरुमेहिं, सहिओ जोहेहि बद्धकवएहिं । नीलो चावविहत्थो, पढमम्मि पइट्ठिओ दारे ॥ २८ ॥
 बोए नलो महप्पा, अहिट्ठिओ दारुणो गयाहत्थो । तइए विहीसणो वि य, तिसूलपाणी ठिओ सूरै ॥ २९ ॥
 दारे चउत्थयम्मि उ, कुमुओ सन्नद्धवद्धतोणीरो । कुन्ते वेत्तूण ठिओ, तह य सुसेणो वि पञ्चमए ॥ ३० ॥
 वेत्तूण भिण्डिमालं, सुग्गीवो छट्टए ठिओ दारे । सत्तमए असिहत्थो, अहिट्ठिओ जणयपुत्तो वि ॥ ३१ ॥
 पुवदुवारम्मि ठिओ, सरहो सरहद्धओ रणपयण्डो । अह अङ्गओ कुमारो, अहिट्ठिओ गोउरै अवरो ॥ ३२ ॥
 नामेण चन्दरस्सी, वालिसुओ कट्ठिणदप्पमाहप्पो । रक्खइ उत्तरदारं, जो जिणइ जमं पि सत्तेणं ॥ ३३ ॥
 एवं जे केइ भडा, अत्ते बलसत्तिकितिसंपन्ना । सन्नद्धवद्धकवया, अहिट्ठिया दक्खिणदिसाए ॥ ३४ ॥

जाओ । (१६) हे विभीषण ! सीताके वियोगका दुःख मुझ उतना पीड़ित नहीं करता जितना असफल होनेसे मेरा सारा हृदय जल रहा है । (२०) सुग्रीव आदि सब सुभट अपने-अपने नगरोंमें चले जाएँगे, पर तुम विभीषण ! किस देशमें जाओगे ? (२१) इस लोकमें उत्तम पुरुष पहले ही उपचार करते हैं, जो मध्यम पुरुष होते हैं वे बादमें करते हैं, किन्तु अधम पुरुष तो दोनोंमें असमर्थ होते हैं । (२२) हे सुग्रीव ! हे भामण्डल ! तुम मेरे लिए चिंता बनाओ, देर मत करो । मैं परलोकमें चला जाऊँगा । तुम भी यथेच्छ करो । (२३)

इस तरह मृत्युके लिए कृत निश्चय रामको देखकर जाम्बवानने कहा कि हे स्वामी ! आप धीरज धारण करें और इस शोकको छोड़ें । (२४) विद्या-शस्त्रसे आहत यह लक्ष्मण बेहोश हो गया है । हे स्वामी ! आपका भाई जीवित होगा, इसमें सन्देह नहीं है । (२५) इसलिए रातके समयमें फौरन ही कोई उपाय कीजिये अन्यथा सूर्यके उगनेपर लक्ष्मण अवश्य मर जायगा । (२६) तब भयभीत उन कपि-सुभटोंने विद्याके प्रभावसे नगरके तीन गोपुर और सात प्राकार बनाये । (२७) रथ, हाथी और घोड़े तथा कवच बाँधे हुए योद्धाओंके साथ नील हाथमें धनुष लेकर पहले दरवाजेपर स्थित हुआ । (२८) भयंकर और हाथीपर आरूढ़ महात्मा नल दूसरे दरवाजेपर तथा त्रिशूलपाणि वीर विभीषण तीसरे दरवाजेपर स्थित हुए । (२९) चौथे दरवाजेपर कवच पहना हुआ और तूणीर बाँधा हुआ कुमुद तथा पाँचवेंपर सुपेण भाला लेकर खड़ा रहा । (३०) भिन्दिपाल (शस्त्र विशेष) लेकर सुग्रीव छठे दरवाजेपर खड़ा रहा और सातवें दरवाजेपर तलवार हाथमें धारण करके जनकपुत्र भामण्डल आ डटा । (३१) सिंहकी ध्वजावाला तथा युद्ध करनेमें प्रचण्ड ऐसा शरभ पूर्वं द्वारपर स्थित हुआ और अंगदकुमार पश्चिम-गोपुरमें अधिष्ठित हुआ । (३२) जो अपने सामर्थ्यसे यमको भी जीत सकता है ऐसा कठोर दर्पके माहात्म्यवाला चन्द्रशिम नामका बालिपुत्र उत्तर द्वारकी रक्षा करने लगा । (३३) इसी प्रकार बल, शक्ति एवं कीर्तिसे सम्पन्न जो कोई दूसरे सुभट थे वे तैयार होकर और कवच बाँधकर दक्षिण दिशामें आ डटे । (३४) इस प्रकार खेचर राजाओंने सारा सन्निवेश

१. कं सरणं तं पव०—मु० ।

एवं तु संनिवेशं, खेयखसमेतु विरइयं सबं । नक्खत्तेहि व गयणं, अइरेहइ उज्जलसिरीयं ॥ ३५ ॥

न तं सुरा नेव य दाणविन्दा, कुणन्ति जीवस्स अणुगहत्थं ।

समज्जियं जं विमलं तु कम्मं, जहा निवारैइ नरस्स दुक्खं ॥ ३६ ॥

॥ इय पउमचरिए रामविप्पलाथं नाम बासट्ठं पच्चं समत्तं ॥

६३. विसल्लापुत्रभवकित्तणपच्चं

नाऊण य सोमिती, भरणावत्थं दसाणणो एत्तो । एक्कोयरं च बद्धं, सोयइ पुत्ते य पच्छन्नं ॥ १ ॥

हा भाणुयण्ण ! वच्छय !, निच्चं चिय मह हिउज्जओ सि तुमं । कह बन्धणम्मि पत्तो, विहिपरिणामेण संगामे ? ॥ २ ॥

हा पुत्त मेहवाहण !, इन्दइ ! सुकुमालकोमलसरीरा । कह वेरियाण मज्जे, चिट्ठह अइतुक्खिया बद्धा ? ॥ ३ ॥

यद्धाण असरणाणं, कालगए लक्खणे ससोगत्ता । मह पुत्ताण रिबुभडा, न य नज्जइ किं पि काइन्ति ? ॥ ४ ॥

हिययस्स वल्लहेहिं तुम्भेहिं दुक्खिएहि बद्धेहिं । अहिययरं चिय वद्धो, अहयं नत्थेत्थ संदेहो ॥ ५ ॥

एवं गए व बद्धे, महागओ दुक्खिओ सजूहम्मि । चिट्ठइ तह दहवयणो, वन्नुमु य सोगसंतत्तो ॥ ६ ॥

सोऊण सत्तिपहयं, सोमिन्ति जणयनन्दिणी एत्तो । अह विलविउं पयत्ता, सोगसमुच्छइयसवङ्गी ॥ ७ ॥

हा भइ लक्खण ! तुमं, उत्तरिऊणं इमं सलिलनाहं । मज्झ कएण महायस !, एयावत्थं पवन्नो सि ॥ ८ ॥

मोत्तण बन्धवजणं, निययं जेठस्स कारणज्जुत्तो । सुपुरिस ! रक्खसदीवे, कह सि तुमं पाविओ मरणं ? ॥ ९ ॥

बालत्ते किं न मया, अहयं दुक्खस्स भाइणी पावा ? । जेण इमो गुणनिलओ, मज्झ कए लक्खणो बहिओ ॥ १० ॥

बनाया । अपनी उज्ज्वल कान्तिसे वह सन्निवेश आकाशमें नक्षत्रकी भाँति श्रत्यन्त शोभित हो रहा था । (३५) देव'श्रौर दानवेन्द्र भी जीवपर वैसा अनुग्रह नहीं करते, जैसा कि पूर्वजित विमल कर्म मनुष्यके दुःखका निवारण करते हैं । (३६)

॥ पञ्चचरितमें रामका विप्रलाप नामका बासठवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

६३. विशल्याके पूर्वभवोंका कथन

उधर लक्ष्मणके मरणावस्थाको जानकर रावण पकड़े गये सहोदर भाई तथा पुत्रोंके लिए मनमें प्रच्छन्न शोक करने लगा । (१) हा वत्स भानुकर्ण ! तुम नित्य मेरे कल्याणके लिए उद्यत रहते थे । भाग्यके परिणामस्वरूप तुम युद्धमें कैसे पकड़े गये हो ? (२) हा पुत्र मेघवाहन ! हा पुत्र इन्द्रजित ! सुकुमार और कोमल शरीरवाले तुम अतिदुःखित और बद्ध हो शत्रुओंके बीच कैसे रहते होंगे ? (३) लक्ष्मणके मरने पर शोकसे पीड़ित शत्रुसुभट बद्ध और अशरण मेरे पुत्रोंका न मालूम क्या करेंगे ? (४) हृदयवल्लभ ! तुम्हारे दुःखित होनेसे और पकड़े जानेसे मैं सविशेष पकड़ा गया हूँ, इसमें सन्देह नहीं । (५)

जिस प्रकार पकड़ा गया महागज अपने यूथमें दुःखित होता है उसी प्रकार शोकसन्तप्त रावण अपने बन्धुवर्गमें दुःखित हुआ । (६) उधर शक्ति द्वारा आहत लक्ष्मणके बारेमें सुनकर सर्वांगमें शोकसे सतत आच्छादित सीता रोने लगी । (७) हा भद्र लक्ष्मण ! हा महायश ! इस समुद्रको पार करके मेरे लिए तुमने यह अवस्था प्राप्त की है । (८) हे सुपुरुष ! बन्धुजनोंका त्याग करके अपने बड़े भाईके लिए उद्युक्त तुमने राक्षसद्वीपमें कैसे मरण पाया है ? (९) दुःखका भाजनरूप पापिनी मैं बचपनमें ही क्यों न मर गई, जिससे मेरे लिए गुणका धामरूप इस लक्ष्मणका वध हुआ । (१०)

सोमिति ! तुज्ज देवा, कुणन्तु जीवस्स पालणं सबे । सिग्घं च विसल्लत्तं, वच्चसु अम्हं पि वयणेणं ॥ ११ ॥
 एवं सा जणयसुया, रोयन्ती निययदेयरगुणोहा । कह कह वि खेयरीहिं, उवएससएसु संथविया ॥ १२ ॥
 तुह देयरस्स भहे !, अज्ज वि मरणं न नज्ज निरुत्तं । वीरस्स विलवभाणी, मा सुयणु ! अमज्जलं कुणसु ॥ १३ ॥
 किञ्चि अणाउलहियया, सीया विज्जाहरीण वयणेणं । जावऽच्छइ तावऽन्नं, सेणिय ! निसुणोसु संबन्धं ॥ १४ ॥
 ताव च्चिय संपत्तो, दारं दुग्गस्स खेयरो एक्को । भामण्डलेण रुद्धो, पविसन्तो अमुणियायारो ॥ १५ ॥
 विज्जाहरो पवुत्तो, जीवन्तं जइह इच्छसि कुमारं । दावेह मज्ज पउमं, तस्स उवायं परिकहेमि ॥ १६ ॥
 एव भणियम्मि तो सो, नीओ भामण्डलेण तुट्ठेणं । पउमस्स सन्नियासं, लक्खणकज्जुज्जयमणेणं ॥ १७ ॥
 पायप्पण्डणोवगओ, जंपह सो सामि ! सुणसु मह वयणं । जीवइ एस कुमारो, पहओ विज्जाउहेण प्हू ! ॥ १८ ॥
 ससिमण्डलस्स पुत्तो, नामेणं चन्द्रमण्डलो सामि ! । सुप्पभदेवीतणओ, सुरगोवपुराहिवो अहयं ॥ १९ ॥
 विहरन्तो गयणयले, वेलाज्जकलस्स नन्दणेण अहं । दिट्ठो उ वेरिणं, सहस्सविज्जाण पावेणं ॥ २० ॥
 अह मेहुणियावेरं, सुमरिय सो दारुणं रणं काउं । पहणइ चण्डरवाए, सत्तीएँ ममं परमरुट्ठो ॥ २१ ॥
 पडिओ गयणयलाओ, तत्थ महिन्दोदए वरुज्जाणे । दढसत्तिसल्लिओ हं, दिट्ठो भरहेण साधूणं ॥ २२ ॥
 चन्दणजलेण सित्तो, अहयं भरहेण कलुणजुत्तेणं । जाओ य विगयसल्लो, अईवबलकन्तिसंपन्नो ॥ २३ ॥
 एयन्तरम्मि रामो, पुच्छइ तं खेयरं ससंभन्तो । जइ जाणसि उप्पत्ती, साहसु मे तस्स सलिलस्स ॥ २४ ॥
 सो भणइ देव ! निसुणसु, अहयं जाणामि तस्स उप्पत्ती । परिपुच्छिण सित्ठं, भरहनरिन्देण मे सबं ॥ २५ ॥
 जह किल नयरसमग्गो, देसो रोगेण पीडिओ सबो । उववाय-जरय-फोडव-दाहाऽरुइ-सूलमाईसु ॥ २६ ॥

हे लक्ष्मण ! तुम्हारे प्राणोंकी रक्षा सब देव करें । मेरे वचनसे तुम शीघ्र ही शल्यरहित हो जाओ । (११) इस तरह अपने देवके गुणोंको याद करके रोती हुई सीताको खेचरियोंने अनेक उपदेश देकर किसी तरह शान्त किया । (१२) हे भद्रे ! तुम्हारे देवरक्षा आज भी मरण निश्चित रूपसे ज्ञात नहीं हुआ । हे सुतनु ! विलाप करके वीरका अमंगल मत करो । (१३)

विद्याधरियोंके वचनसे जब सीता कुछ निराकुल हृदयवाली हुई, उस समय जो अन्य घटना घटी उसके बारेमें भी, हे श्रेणिक ! तुम सुनो । (१४) उस समय एक विद्याधर दुर्गके द्वारके पास आया । धञ्जात आचारवाला वह प्रवेश करने पर भामण्डलके द्वारा रोका गया । (१५) उस विद्याधरने कहा कि यदि कुमार जीवित रहे यह चाहते हो तो मुझे रामके दर्शन कराओ । मैं उन्हें उपाय करूँगा । (१६) ऐसा कहने पर तुष्ट और लक्ष्मणके लिए उद्यत मनवाला भामण्डल उसे रामके पास ले गया । (१७) पासमें जाकर और पैरोंमें पड़कर उसने कहा कि, हे स्वामी ! आप मेरा कहना सुनें । हे प्रभो ! विद्याधरके द्वारा आहत यह कुमार जीवित है । (१८) हे स्वामी ! चन्द्रमण्डल नामका मैं शशिमण्डल का पुत्र, सुप्रभादेवीका तनय तथा सुरभ्रंवका पुरोहित हूँ । (१९) गगनतलमें विहार करता हुआ मैं वेलायक्षके पुत्र पापी सहस्रविजय शत्रु द्वारा देखा गया । (२०) सालीके बैरको याद करके उसने दारुण युद्ध किया । अत्यन्त रुष्ट उसने चण्डरवा शक्ति द्वारा मुझ पर प्रहार किया । (२१) दृढ़ शक्तिसे पीड़ित मैं आकाशमेंसे महेंद्रोदय नामक सुन्दर उद्यानमें जा गिरा । वहाँ साधुपुरुष भरतने मुझे देखा । (२२) करुणायुक्त भरत द्वारा चन्दन जलसे सिक्त मैं शल्यरहित हो अतीव बल एवं कान्तिसे सम्पन्न हुआ । (२३) तब धबराये हुए रामने उस खेचरसे पूछा कि उस जलकी उत्पत्तिके बारेमें यदि तुम जानते हो तो कहो । (२४) उसने कहा कि, हे देव ! आप सुनें । मैं उस जलकी उत्पत्तिके विषयमें जानता हूँ । पूछने पर भरत राजाने सब कुछ मुझे कहा था । (२५) यदि सारा नगर अथवा सारा देश उपद्रव, ज्वर, फोड़ा-फुन्सी, दाह, अरुचि एवं शूल आदि रोगोंसे पीड़ित हो तो वह उससे नीरोग हो जाता है । (२६)

१. रोचयन्ती स्मरन्तीत्यर्थः ।

नवरं पुण इह नयरे, राया नामेण दोणमेहो ति । पसुमन्तिसयणपरियण-सहिओ सो जाउ नीरोगो ॥ २७ ॥
 सहाविओ य तो सो, भणिओ कह रोगवज्जिओ सि तुमं ? । मामय ! साहेहि फुडं, एयं मे कोउयं परमं ॥ २८ ॥
 सो भणइ मज्झ दुहिया, अत्थि विसल्ला गुणाहिया लोए । जीसे गम्भरथाए, जणणी रोगेण परिसुक्का ॥ २९ ॥
 निणसासणाणुरत्ता, निच्चं पूयासमुज्जयमईया । बन्धूहि परियणेण य, पूइज्जइ देवया चेव ॥ ३० ॥
 ण्हणोदएण तीए, सुरहिसुयन्धेण देव ! सितो हं । समयं निययजणेणं, तेण निरोगत्तणं पत्तो ॥ ३१ ॥
 सुणिऊण वयणमेयं, विज्जाहरतो मए वरुज्जाणे । चरियं तु विसल्लाए, सत्तहिओ पुच्छिओ समणो ॥ ३२ ॥

लक्ष्मणस्य विशाल्यायाश्च चरितम्—

जलहरगम्भीरसरो, चउनाणी साहिउं मह पवत्तो । अह पुण्डरीयविजए, नयरं चक्रद्वयं नाम ॥ ३३ ॥
 तथैव चक्रवट्टी, धीरो परिवसइ तिहुयणाणन्दो । नामेण अणङ्गसरा, तस्स उ गुणसालिणी धूया ॥ ३४ ॥
 अह अन्नया कयाई, सुपइट्टपुराहिवेण सा कन्ना । हरिया पुणबसूणं, घणलोहायत्तच्चित्तेणं ॥ ३५ ॥
 चक्रहरस्साऽऽणाए, सहसा विज्जाहरेहि गन्तूणं । जुज्जं कयं महन्तं, तेण समं पहरविच्छड्डुं ॥ ३६ ॥
 अह तस्स वरविमाणं, भगं चिय खेयरेहि रुट्टेहिं । तत्तो विवडइ बाला, सोहा इव सरयचन्दस्स ॥ ३७ ॥
 पुण्णलहुयाएँ तो सा, विज्जाएँ पुणबसूनिउत्ताए । सावयपउररवाए, पडिया अडवीएँ घोराए ॥ ३८ ॥
 विविहरसुसंकडुट्टिय-अन्नोन्नालोदवेणुसंवाया । विसमगिरिदुप्पवेसा, सावयसयसंकुला भीमा ॥ ३९ ॥
 सा तत्थ वुण्णहियया, दस वि दिसाओ खणं पलोएउं । सुमरिय बन्धुसिणेहं, कुणइ पलावं महुरवाणी ॥ ४० ॥
 हा ताय ! सयल्लोयं, परिवालसि विक्रमेण जियसत्तू । कह अणुकम्पं न कुणसि, एत्थ अरण्णम्मि पावाए ? ॥ ४१ ॥
 हा जणणि ! उदरदुखं, तारिसयं विसहिऊण अइगरुयं । भयविहल्लुदुम्मणाए, कह मज्झ तुमं न संभरसि ? ॥ ४२ ॥

इस नगरमें द्रोणमेघ नामका राजा था । वह पशु, मंत्री, स्वजन एवं परिजनके साथ नीरोग हो गया । (२७) तब वह बुलाया गया । उससे पूछा कि तुम रोगरहित कैसे हुए ? मुझे इसके बारेमें स्पष्ट रूपसे कहो । मुझे अत्यन्त कुतूहल हो रहा है । (२८) उसने कहा कि लोकमें विशेष गुणवाली विशाल्या नामकी मेरी एक पुत्री है जिसके गर्भमें रहने पर माता रोगसे मुक्त हो गई थी । (२९) वह जिनशासनमें अनुरक्त तथा पूजाके लिए सदैव उद्यत बुद्धिवाली है । बन्धु एवं परिजनों द्वारा वह देवताकी भाँति पूजी जाती है । (३०) हे देव ! अपने लोगोंके समक्ष उसके द्वारा सुगन्धित गन्धवाले स्नानोदकसे मैं सींचा गया । उससे मैंने नीरोगता प्राप्त की है । (३१) विद्याधरके पाससे यह कथन सुनकर मैंने उस उत्तम उद्यानमें स्थित सत्त्वहित श्रमणसे विशाल्याके चरितके बारेमें पूछा । (३२) मेघके समान गम्भीर स्वरवाले उन चतुर्दानी मुनिने मुझसे कहा कि—

पुण्डरीक विजयमें चक्रध्वज नामका एक नगर है । (३३) वहाँ धीर एवं तीनों लोकोंके आनन्द देनेवाला अनंगशर नामका एक चक्रवर्ती रहता था । उसकी एक गुणशालिनी पुत्री थी । (३४) एक दिन मनमें अत्यन्त वृष्णायुक्त हो सुप्रतिष्ठान-पुरके राजा पुनर्वसुने उस कन्याका अपहरण किया । (३५) चक्रवर्तीकी आज्ञासे विद्याधरोंने सहसा जाकर उसके साथ जिसमें शस्त्रसमूहका उपयोग किया गया है ऐसा महान् युद्ध किया । (३६) उस समय क्रुद्ध खेचरोंने उसका उत्तम विमान तोड़ डाला । शरच्चन्द्रकी शोभाकी भाँति वह उसमेंसे नीचे गिरी । (३७) पुनर्वसुके द्वारा प्रयुक्त विद्यासे वह पुण्य अल्प होनेके कारण जंगली जानवरोंके प्रचुर रवसे युक्त घोर जंगलमें जा गिरी । (३८) वह भयंकर जंगल विविध प्रकारके उगे हुए वृक्षोंसे व्याप्त था, उसमें वांसके समूह एक-दूसरेमें सटे हुए थे, वह विषम पर्वतों के कारण दुष्प्रवेश था तथा सँकड़ों जङ्गली जानवरोंसे युक्त था । (३९) मधुर वाणीवाली वह मनमें भीत हो एक क्षण भरमें दसों दिशाओंको देखकर और बन्धुजनोंके स्नेहको यादकर प्रलाप करने लगी । (४०) हा तात ! तुम पराक्रमसे शत्रुओंको जीतकर सारे लोकका पालन करते हो । इस अरण्यमें तुम मुझ पापीपर करुणा क्यों नहीं करते ? (४१) हा माता ! वैसा अतिभारी उदर-दुःख सहन करके भयसे विह्वल और लड्डिप मुझे तुम क्यों याद नहीं करती ? (४२) हा गुणी परिवर्ग ! मुझ पापकारिणीपर वैसा वात्सल्य करके अब क्यों वह सब

हा परिवग्ग ! गुणायर, वच्छलं तारिसं करेऊणं । कह पावयारिणीए, संपइ मे अवहियं सब ॥ ४३ ॥
 काऊण विप्पलावं, सा य तहिं गगरेण कण्ठेणं । अच्छइ दुक्खियविमणा, बाला घोराडवीमज्जे ॥ ४४ ॥
 असण-तिसाअभिभूया, पत्त-फलहारिणो तहिं बाला । मुञ्जइ य एक्कवेलं, अट्टमदसमोववासेहिं ॥ ४५ ॥
 गमिओ य सिसिरकालो, सीयमहावेष्णं सहन्तीए । अग्गीतावणरहिओ, कुड्डनिवासेण परिहीणो ॥ ४६ ॥
 पत्तो वसन्तमासो, नाणाविइकुसुमगन्धरिद्धिल्लो । तत्तो गिम्हो पत्तो, संतावकरो य सत्ताणं ॥ ४७ ॥
 षण्णगज्जियतूररवो, धारासंजणियतडयडारावो । चञ्चलतडिच्छडालो, पाउसकालो वि निरिथिण्णो ॥ ४८ ॥
 एवं साऽणङ्गसरा, वाससइस्साणि तिण्णि तवचरणं । काऊण य संविग्गा, ववसइ संलेहणं तत्तो ॥ ४९ ॥
 पच्चविखय आहारं, चउविहं देहमाइयं सबं । भणइ य हत्थसयाओ, एत्तो परओ न गन्तव्वं ॥ ५० ॥
 नियमस्स छट्ठदिवसे, वोलीणे नवरि खेयरो एक्को । नामेण लद्धियासो, षण्णमिय मेरं पडिनियत्तो ॥ ५१ ॥
 तं दट्टूणऽवइण्णो, नेन्तो पिइगोयरं निरुद्धो सो । भणिओ वच्चसु देसं, को वावारो तुमं एत्थं ? ॥ ५२ ॥
 तुरियं च लद्धियासो, संपत्तो चक्कवट्ठिणो मूलं । आगच्छइ तेण समं, नत्थऽच्छइ जोजुत्ता सा ॥ ५३ ॥
 अवइण्णो चक्कहरो, पेच्छइ तं अयगरेण खज्जन्ति । काऊण विप्पलावं, निययपुरं पत्थिओ सिग्घं ॥ ५४ ॥
 बावीससइस्सेहिं, पुत्ताणं तिब्बजायसवेगो । समणत्तं पडिवत्तो, चक्कहरो तिहुयणाणन्दो ॥ ५५ ॥
 खज्जन्तीए वि तहिं, बालए सो हु अयगरो पावो । नो मारिओ किवाए, मन्तं जाणन्तियाए वि ॥ ५६ ॥
 धम्मज्झाणोवगया, खद्धा मरिऊण देवलोगम्मि । उववत्ता कयपुण्णा, देवो दिव्वेण रूवेण ॥ ५७ ॥
 जिण्णिऊण खेयरिन्दे, पुण्णबसू तीए विरहदुक्खत्तो । सणियाणो पबइओ, दुमसेणमुणिसस पासम्मि ॥ ५८ ॥

छीन लिया है ? (४३) इस तरह गद्गद् कण्ठसे विप्रलाप करके दुःखित और हताश वह कन्या उस घोर जंगलमें रहने लगी । (४४)

भूख और प्याससे पीड़ित वह पत्र एवं फलका आहार करनेवाली कन्या अष्टम और दशम उपवास करके एक बेर ही खाती थी । (४५) अग्निके तापसे रहित तथा मकानमें न रहनेसे ऐसा शिशिरकाल उसने सर्दीकी भारी पीड़ा सहन करके बिताया । (४६) इसके बाद नानाविध कुसुमोंकी गन्धसे समृद्ध वसन्त-मास आया । उसके पञ्चान्न प्राणियोंको सन्ताप देनेवाला म्रीप्मकाल आया । (४७) बादलोंकी गर्जनासे मानों वाद्योंकी ध्वनि करनेवाला, धाराओंके गिरनेसे तड़तड़ आवाज करनेवाला और चंचल बिजलीकी कान्तिसे युक्त वर्षाकाल भी व्यतीत हुआ । (४८) इस तरह उस अनंगशराने तीन हजार वर्ष तक तपश्चरण किया । इसके बाद संवेगयुक्त उसने संलेखनाके लिए निश्चय किया । (४९) चतुर्विध आहार एवं शरीर आदि सबका प्रत्याख्यान करके उसने कहा कि यहाँसे सौ हाथसे आगे मैं नहीं जाऊँगी । (५०)

नियमधारणका छठा दिन व्यतीत होनेपर लब्धिदास नामका एक खेचर मेरुको प्रणाम करके लौट रहा था । (५१) उसे देखकर वह नीचे उतरा । पिताके पास ले जानेके लिए रुके हुए उसने कहा कि तुम्हारा यहाँ क्या काम है ? तुम अपने देश चले जाओ । (५२) लब्धिदास शीघ्र ही चक्रवर्तीके पास गया और उसके साथ जहाँ वह योगयुक्ता अनंगशरा थी वहाँ आया । (५३) चक्रवर्ती नीचे उतरा और अजगर द्वारा खाई जाती उसको देखा । रो-धोकर वह शीघ्र ही अपने नगरकी ओर चल पड़ा । (५४) तीव्र वैराग्य जिसे उत्पन्न हुआ है ऐसे त्रिभुवनानन्द चक्रवर्तीने बाईस हजारपुत्रोंके साथ श्रमणत्व प्राप्त किया । (५५) वहाँ खाई जाती उस बालाने मंत्र जानते हुए भी कृपावश उस पापी अजगरको नहीं मारा । (५६) धर्म-ध्यानमें लीन पुण्यशाली वह भक्षित होनेपर मर करके देवलोकमें उत्पन्न हुई और दिव्य रूपवाली देवी हुई । (५७) खेचरेन्द्रोंको जीतकर पुनर्वसुने उसके विरहसे दुःखित हो दुमसेन मुनिके पास निदानयुक्त दीक्षा ली । (५८) बादमें तपका आचरण

१. गोसारिओ—प्रत्य० ।

ततो सो चरिय तवं, कालगओ सुरवरो समुप्पन्नो । चइऊण दहरहसुओ, नाओ चिय लक्खणो एसो ॥ ५९ ॥
 ततो साण्णङ्गसरा, कमेण चइऊण देवलोगाओ । दोणघणारायधूया, विसल्लनामा समुप्पन्ना ॥ ६० ॥
 जेणं चिय अन्नभवे, तव-चरणं अज्जियं सउवसगं । तेणं इमा विसल्ल, बहुरोगपणासिणी जाया ॥ ६१ ॥
 बहुविहरोगामूलं, वाऊ अइदारुणो समुप्पन्नो । परिपुच्छिण्ण मुणिणा, तस्स वि य समुब्भवो सिट्ठो ॥ ६२ ॥
 वायुरोगोत्पत्तिकारणम्—

गयपुरनयरनिवासी, विञ्झो नामेण बहुधणापुण्णो । भण्डं वेत्तुण गओ, साएयपुरिं महिसएहिं ॥ ६३ ॥
 सो तत्थ मासमेगं, अच्छइ भण्डस्स कारणे सेट्ठी । ताव य से वरमहिसो, पडिओ भाराइरेणेणं ॥ ६४ ॥
 कम्मपरिनिज्जराए, मओ य पवणासुरो समुप्पन्नो । सेयंकरपुरसामी, पवणावत्तो त्ति नामेणं ॥ ६५ ॥
 अवहिविसएण देवो, नाऊणं पुवजम्मसंबन्धं । ताहे जणस्स सिग्घं, चिन्तेइ वहं परमरुट्ठो ॥ ६६ ॥
 जो सो मज्झ जणवओ, पायं ठविऊण उत्तमङ्गमि । वच्चन्तओ य लोगो, तस्स फुडं निग्घहं काहं ॥ ६७ ॥
 एव परिचिन्तिऊणं, सइसा देसे पुरे य आरुट्ठो । देवो पउज्जइ तओ, बहुरोगसमुब्भवं वाउं ॥ ६८ ॥
 सो तारिसो उ पवणो, बहुरोगसमुब्भवो विसल्लए । नीओ खणेण पलयं, तेणं चिय प्हाणसल्लिलेणं ॥ ६९ ॥
 भरहस्स जहा सिट्ठं, साहूणं सबभूयसरणेणं । भरहेण वि मज्झ पहू, मए वि तुज्झं समक्खायं ॥ ७० ॥
 अहिसेयजलं तीएँ, तुरियं आणेहि तत्थ गन्तूणं । जीवइ तेण कुमारो, न पुणो अन्नेण भेएणं ॥ ७१ ॥

अहो ! नराणं तु समत्थलोए, अवट्टियाणं पि हु मच्चुमग्गो ।

समज्जियं जं विमलं तु कम्मं, करेइ ताणं सरणं च खिप्पं ॥ ७२ ॥

॥ इय पउमचरिए विसल्लापुत्रव्यभवाणु, कित्तणं नाम तिसट्ठं पव्वं समत्तं ॥

करके मरनेपर यह देवरूपसे उत्पन्न हुआ । वहाँसे च्युत होनेपर यह दशरथका पुत्र यह लक्ष्मण हुआ है । (५९) वह अनंगशरा भी देवलोकसे च्युत होकर द्रोणघन राजाकी विशल्या नामकी पुत्रीके रूपमें उत्पन्न हुई है । (६०) चूँकि पूर्वभवमें उपसर्गके साथ तपश्चरण किया था, इसलिए यह विशल्या बहुत रोगोंका नाश करनेवाली हुई है । (६१)

एक बार नानाविध रोगोंकी कारणभूत अतिदारुण हवा उत्पन्न हुई । पूञ्जनेपर मुनिने उसकी उत्पत्तिके बारेमें कहा । (६२) गजपुर नामक नगरमें रहनेवाला विन्ध्य नामक अतिसम्पन्न व्यापारी भैंसोंके ऊपर वेचनेके पदार्थ लेकर साकेतपुरीमें गया । (६३) वह वहाँ विक्रीय पदार्थोंके कारण एक महीना ठहरा । इस बीच उसका एक उत्तम भैंसा अधिक भारकी वजहसे गिर पड़ा । (६४) कर्मकी निर्जराके कारण मरनेपर यह पवनासुरके रूपमें उत्पन्न हुआ और पवनावर्तके नामसे श्रेयस्करपुर नामक नगरका स्वामी हुआ । (६५) अवधिज्ञानसे उस देवने पूर्वजन्मका वृत्तान्त जान लिया । तब अत्यन्त रुष्ट वह शीघ्र ही लोगोंके विनाशके बारेमें सोचने लगा । (६६) जनपदके वे लोग जो मेरे सिरपर पैर रखकर जाते थे उनको मैं अवश्य ही दण्ड दूँगा । (६७) ऐसा सोचकर देश और नगरपर सहसा रुष्ट उस देवने अनेक रोग पैदा करनेवाली हवा फैलाई । (६८) बहुत रोगोंके उत्पादक बैसे पवनको विशल्याने क्षणभरमें स्नानजलसे नष्ट कर डाला । (६९)

हे प्रभो ! सर्वभूतशरण मुनिने भरतसे और भरतने मुझसे जैसा कहा था वैसा मैंने आपसे कहा है । (७०) वहाँ जाकर उसका अभिप्रेक जल फौरन ही लाओ । उससे कुमार जी उठेगा, अन्य किसी कारणसे नहीं । (७१) अहो ! समस्त लोकमें स्थित मनुष्योंका मृत्युपथ कैसा है ! जो विमल कर्म अर्जित किया होता है वही उनकी रक्षा करता है और वही शरणरूप होता है । (७२)

॥ पञ्चचरितमें विशल्याके पूर्वभवोंका कथन नामक तिरसठवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

६४. विसल्लाआगमणपचवं

सुणिऊण वयणमेयं, सेणिय ! रामो तओ सुपरितुट्ठो । विज्जाहरेहि समयं, करेइ मन्तं गमणकज्जे ॥ १ ॥
जम्बूनयाइएहिं, मन्तीहिं राहवो तओ भणियो । पेसेह जलस्स इमे, अङ्गय-हणुयन्त-जणयसुया ॥ २ ॥
भामण्डलो य हणुओ, सुग्गीवसुओ य रामदेवेणं । भणिया साएयपुरी, वच्चह उदयस्स कज्जेणं ॥ ३ ॥
आणं पडिच्छिऊणं, अह ते विज्जाहरा खणद्धेणं । पत्ता साएयपुरिं, नरिन्दभवणम्मि ओइण्णा ॥ ४ ॥
संगीयएण भरहो, उवगिज्जन्तो विवोहिओ सिग्घं । भवणाउ समोइण्णो, अह पुच्छइ स्खेयरे तुट्ठो ॥ ५ ॥
सीयाहरणनिमित्ते, पहओ लच्छीहरो य सतीए । भरहस्स तेहि सिट्ठं, कहियं संखेवओ सबं ॥ ६ ॥
सोऊण इमं भरहो, रुट्ठो दावेइ तो महाभेरी । हय-भय-रहेहि समयं, सन्नद्धो तन्नखणं चेव ॥ ७ ॥
सोऊण भेरिसद्धं, सबो साएयपुरवरीलोगो । किं किं ? ति उल्लवन्तो, भयविहलविसंतुलो जाओ ॥ ८ ॥
भणइ जणो किं एसो, अइविरियसुओ इहागओ रत्तिं ? । भरहस्स छिद्धाई, जो निययं चेव पडिकूलो ॥ ९ ॥
एयं वेत्तूण लहुं, मणिकणयं रूपयं पवालं च । वत्थाहरणं च वहुं, करेह भूमीहरलीणं ॥ १० ॥
रह-भय-तुरयारूढा, सुहडा सत्तुग्घयाइया सबे । सन्नद्धवद्धकवया, भरहस्स घरं समल्लोणा ॥ ११ ॥
रणपरिहयुच्छाहं, भरहं दट्ठूण गमणतत्तिहं । तो भणइ जणयतणओ, जं भण्णासि तं निसामेहि ॥ १२ ॥
लङ्कापुरी नराहिव !, दूरे लवणो य अन्तरे उयही । भीमो अणोरपारो, कह तं लद्धेसि पयचारी ? ॥ १३ ॥
भरहेण वि सो भणियो, कायवं किं मएत्थ करणिज्जं ? । साहेहि मज्झ सिग्घं, जेण पणामेमि ते सबं ॥ १४ ॥

६४. विशल्याका आगमन

हे श्रेणिक ! यह वचन सुनकर अत्यन्त परितुष्ट राम गमनके लिए विद्याधरोंके साथ परामर्श करने लगे । (१) तब जाम्बूनद आदि मंत्रियोंने रामसे कहा कि इन अंगद, हनुमान तथा जनकसुतको पानी लानेके लिए भेजो । (२) रामने भामण्डल, हनुमान एवं सुग्रीवपुत्र अंगदसे कहा कि पानीके लिए तुम साकेतपुरी जाओ । (३) आज्ञा मान्य रखकर वे विद्याधर ळगार्थमें ही साकेतपुरीमें पहुँच गये और राजभवनमें उतरे । (४) संगीतके द्वारा गुणगान किया जाता भरत शीघ्र ही उठा । सन्तुष्ट वह भवनमेंसे नीचे उतरा और खेचरोंसे पूछा । (५) सीताहरणके कारण लक्ष्मण शक्ति द्वारा आहत हुआ है, यह उन्होंने भरतसे कहा तथा सारी बात संक्षेपसे कह सुनाई । (६) यह सुनकर क्रुद्ध भरतने महाभेरी बजाई और तत्काल ही घोड़े, हाथी एवं रथके साथ तैयार हो गया । (७) भेरीका शब्द सुनकर साकेतपुरीमें रहनेवाले सबलोग 'क्या है ? क्या है ?' ऐसा कहते हुए भयसे विह्वल और व्याकुल हो गये । (८) लोग कहने लगे कि क्या सर्वदाका विरोधी और भरतके दोष देखकर घात करनेवाला अतिवीर्यका पुत्र रातमें यहाँ आया है ? (९) मणि, सोना, चाँदी, प्रवाल तथा बहुतसे बख्खाभरण—इन सबको जल्दी ही लेकर भूमिगृहमें जमा कर डालो । (१०) रथ, हाथी और घोड़े पर सवार शत्रुघ्न आदि सब सुभट तैयार हो और कवच पहनकर भरतके भवनमें आये । (११) युद्धके लिए परिपूर्ण उत्साहवाले तथा गमनके लिये तत्पर भरतको देखकर जनकसुत भामण्डलने कहा कि मैं आपसे जो कहता हूँ वह आप ध्यानसे सुनें । (१२)

हे नराधिप ! लवणसमुद्रके बीचमें लंकापुरी आई है । वह समुद्र भयंकर और अतिविस्तीर्ण है । पैरोंसे चलनेवाले आप उसको कैसे लाँघ सकेंगे ? (१३) इस पर भरतने उसे कहा कि तो फिर यहाँ क्या कार्य करना चाहिए यह मुझे तुम शीघ्र ही कहो जिससे वह सब मैं उपस्थित करूँ । (१४) तब भामण्डलने कहा कि, हे महायश ! विशल्याका यह

तो भणइ जणयतणओ, एयं ण्हाणोदयं विसल्लाए । अन्हं देहि महायस ।, मा वक्खेवं कुणसु एत्तो ॥ १५ ॥
 एएण सित्तमेत्तो, जीवइ लच्छीहरो निरुत्तेणं । वच्चाओ तेण ल्हं, मरइ पुणो उग्गए सूरे ॥ १६ ॥
 भरहेण वि सो भणिओ, किं गहणं पाणिएण एएणं ? । सयमेव सा विसल्ला, जाउ तहिं दोणमेहसुया ॥ १७ ॥
 आइट्ठं चिय मुणिणा, जह एसा तस्स पढमकल्लाणी । होही महिलारयणं, न चेव अन्नस्स पुरिसस्स ॥ १८ ॥
 दोणघणस्स सयासं, भरहेण य पेसिओ तओ दूओ । न य देइ सो विसल्लं, सन्नद्धो पुत्तवलसहिओ ॥ १९ ॥
 सो केगईए गन्तुं, पवोहिओ सुमहुरेहि वयणेहिं । ताहे परितुट्टमणो, दोणो धूयं विसज्जेइ ॥ २० ॥
 भामण्डलेण तो सा, आरुहिया अत्तणो वरविमाणे । कन्नाण सहस्सेणं, सहिया य नरिन्दधूयाणं ॥ २१ ॥
 उप्पइऊण गया ते, सिग्घं संगाममेइणी सुहडा । अग्वाइकयाडोवा, अवइण्णा वरविमाणा णं ॥ २२ ॥
 सा वि य तहिं विसल्ला, सुललियसियचामरेहि विज्जन्ती । हंसीव संचरन्ती, संपत्ता लक्खणसमीवं ॥ २३ ॥
 सा तोए फुसिय सन्ती, सत्ती वच्छरथलाउ निष्फिडिया । कामुयधरस्स नज्जइ, पदुट्टमहिला इव षण्णा ॥ २४ ॥
 विष्फुरियाणलनिवहा, सा सत्ती नहयलेण वच्चन्ती । हणुवेण ससुप्पइउं, गहिया अइवेगवन्तेणं ॥ २५ ॥

अमोधविजयाशक्तिः—

अह सा खणेण जाया, वरमहिला दिव्वरुवसंपत्ता । भणइ तओ हणुयन्तं, मुञ्चसु मं नत्थि मे दोसो ॥ २६ ॥
 सत्ती अमोहविजया, नामेण अहं तिलोगविकखाया । लद्धाहिवस्स दिन्ना, तुट्टेणं नागराएणं ॥ २७ ॥
 कइलसपवओवरि, तइया वालिस्स जोगजुत्तस्स । उक्कत्तेऊण भुया, कया य वीणा दहमुहेणं ॥ २८ ॥
 चेइयघराण पुरओ, जिणचरियं तत्थ गायमाणस्स । परितोसिएण दिन्ना, धरणेण अहं दहसुहस्स ॥ २९ ॥
 सा हं न केणइ प्हू ।, पुरिसेणं निज्जिया तिहुयणम्मि । भोत्तूण विसल्लं वि हु, दुस्सहतेयं गुणकरालं ॥ ३० ॥
 एयाए अन्नजम्मे, घोरं समुवज्जियं तवोक्कम्मं । असण-तिसा-सीया-ऽऽयवसरीरपीडं सहन्तीए ॥ ३१ ॥

स्नानोदक आप हमें दें । आप इसमें देरी न करें । (१५) इससे सिक्त होते ही लक्ष्मण अवश्य जी उठेंगे । इसलिए हम जल्दी ही जायें । सूर्योदय होने पर तो वह मर जायेंगे । (१६) भरतने भी उसे कहा कि इस जलका तो लेना ही क्या, द्रोणमेघकी पुत्री वह विशल्या स्वयं ही वहाँ जाय । (१७) मुनिने कहा है कि यह महिलारत्न उसकी पटरानी होगी, दूसरे पुरुषकी नहीं । (१८) द्रोणमेघके पास तब भरतने दूत भेजा । पुत्र एवं सेनाके साथ तैयार उसने विशल्या न दी । (१९) कैकईने जाकर अत्यन्त मीठे वचनोंसे उसे समझाया । तब मनमें प्रसन्न हो द्रोणने लड़कीको भेजा । (२०) उसके बाद भामण्डलने राजाओंकी एक हजार कन्याओंसे युक्त उसे अपने उत्तम विमानमें बिठाया । (२१) उड़ करके वे सुभट शीघ्र ही संभ्रामभूमि पर गये । उत्तम विमानोंकी अर्घ्य आदिसे पूजा करके वे नीचे उतरे । (२२) सुन्दर चँवर जिसे डोले जाते हैं ऐसी विशल्या भी हंसीकी भाँति गमन करती हुई लक्ष्मणके पास पहुँची । (२३) उसके द्वारा छुए जाने पर वह शक्ति वक्षस्थलमेंसे बाहर निकली । उस समय वह कामी पुरुषके घरमेंसे निकलनेवाली दुष्ट महिलाकी भाँति ज्ञात होती थी । (२४) आकाश मार्गसे जानेवाली उस विस्फुरित अग्निसमूहसे युक्त शक्तिको अतिवेगवाले हनुमानने कूदकर पकड़ लिया । (२५)

वह शक्ति क्षणभरमें दिव्यरूपसम्पन्न एक सुन्दर स्त्री हो गई । इसके पश्चात् उसने हनुमानसे कहा कि तुम मुझे छोड़ दो । इसमें मेरा दोष नहीं है । (२६) मैं त्रिलोकमें विख्यात अमोधविजया नामकी शक्ति हूँ । दुष्ट नागराज द्वारा लंकेश रावणको मैं दी गई थी । (२७) पहले जब बालि कैलास पर्वतके ऊपर योगयुक्त था तब रावणने भुजाको चीरकर वीणा बनाई थी । (२८) वहाँ चैत्यगृहोंके समक्ष जिनचरितका गान करनेवाले रावणको प्रसन्न धरणेन्द्र देवके द्वारा मैं दी गई थी । (२९) हे प्रभो ! दुस्सह तेजवाली तथा गुणोंके कारण उन्नत ऐसी विशल्याको छोड़कर मैं त्रिभुवनमें किसी पुरुष द्वारा जीती नहीं गई हूँ । (३०) भूख, प्यास, शीत एवं आतप तथा शरीरपीड़ा सहन करनेवाली उसने पूर्वजन्ममें घोर तप करनेसे उत्पन्न होनेवाला कर्म अर्जित किया था । (३१) हे सुपुरुष ! परभवमें सम्यक्

जिणवरतवस्स पेच्छसु, माहृप्पं परभवे सुचिण्णस्स । जेणेरिसाई सुपुरिस !, साहिज्जन्तोह कज्जाई ॥ ३२ ॥
 अहवा को इहलोगमि विम्हओ साहिण्ण कज्जेण ? । पावइ जेण सिवसुहं, जीवा कम्मक्खयं काउं ॥ ३३ ॥
 मुञ्च परायत्ता हं, इमाएँ परिनिज्जिया तवबलेण । वच्चामि निययठाणं, खमसु महं सामि ! दुच्चरियं ॥ ३४ ॥
 काऊण समुल्लवं, एवं तो सत्तिदेवयं हणुओ । मुञ्चइ संभमहियओ, निययट्ठाणं च संपत्ता ॥ ३५ ॥
 सा द्रोणमेहधूया, समयं कत्ताहि विणयसंपत्ता । नमिऊण रामदेवं, उवविट्ठा लवखणसमीवे ॥ ३६ ॥
 परिमुसइ लक्खणं सा, मुद्धा वरकमलकोमलकरेसु । गोसीसचन्दणेण य, अणुलिम्पइ अङ्गमज्जाई ॥ ३७ ॥
 अन्नं पिय संपत्तो, जम्मं लच्छीहरो सुहपसुत्तो । आयम्बनयणजुयलो, पचलियवाहू समुस्ससिओ ॥ ३८ ॥
 संगीयाण तो सो, उवगिज्जन्तो समुट्ठिओ सहसा । रुट्ठो पलोयमाणो, जंपइ सो रावणो कत्तो ? ॥ ३९ ॥
 रोमञ्चककसेणं, विहसियवयणेण पउमनाहेणं । अवगूहिओ कणिट्ठो, भणिओ य रिवू पणट्ठो सो ॥ ४० ॥
 सिट्ठं च निरवसेसं, सत्तीपहराइयं जहावत्तं । जणिओ य महाणन्दो, मन्दरपमुट्ठेहि सुहडेहि ॥ ४१ ॥
 पउमवयणेण दिन्नं, करेण तं चन्दणं विसल्लए । दिवाउहपहयाणं, इन्दइपमुहाण सुहडाणं ॥ ४२ ॥
 ते चन्दणोदएणं, अहिसित्ता खेयरा गया तुरिया । जाया य विगयसल्ला, संपत्ता निव्वुइं परमं ॥ ४३ ॥
 सा तत्थ चन्दवयणा, द्रोणसुया ललियरूवलायणा । लच्छीहरस्स पासे, विभाइ देवि व इन्द्रस्स ॥ ४४ ॥
 सबम्मि सुपडिवत्ते, सोमित्ती राहवस्स वयणेणं । परिणेइ ददधिईओ, तत्थ विसल्ला विभूईए ॥ ४५ ॥

एवं नरा पुत्रभवज्जिएणं, धम्मेण जायन्ति विमुक्कदुक्खा ।

पावन्ति दिवाणि न्हिच्छियाणि, लोए पहाणं विमलं जसं च ॥ ४६ ॥

॥ इय पञ्चमचरिए विसल्लआगमणं नामं चउसट्ठिमं पठ्वं समत्तं ॥

प्रकारसे आचरित जिणवरके तपका माहात्म्य देखो, जिससे इस भवमें ऐसे कार्य सिद्ध होते हैं । (३२) अथवा इस लोकमें साधित कार्यके लिए विस्मयकी क्या बात है, क्योंकि उससे तो जीव कर्मक्षय करके मोक्षसुख भी प्राप्त करते हैं । (३३) इसके तपोबलसे मैं पराजित हुई हूँ । मैं परायत्त हूँ, इसलिए मुझे छोड़ दो । मैं अपने स्थान पर जाऊँ । हे स्वामी ! मेरा दुश्चरित क्षमा करो । (३४) इस प्रकार सम्भाषण करनेवाली उस शक्तिदेवताको हृदयमें भयभीत हनुमानने छोड़ दिया । वह अपने स्थान पर चली गई । (३५)

विनयसम्पन्न वह द्रोणमेघकी पुत्री विशल्या कन्याओंके साथ रामको नमस्कार करके लक्ष्मणके पास जा बैठी । (३६) उस मुग्धाने कमलके समान कोमल उत्तम हाथोंसे लक्ष्मणको सहलाया तथा गोशीर्षचन्दनसे उसके अंग-प्रत्यंगपर लेप किया । (३७) आरामसे सोये हुए, किंचित् रक्तवर्णके नेत्रयुगलवाले, जिसके हाथ कुञ्ज हिल रहे हैं ऐसे तथा उच्छ्वास प्राप्त लक्ष्मणने मानो दूसरा जन्म पाया । (३८) संगीतके द्वारा गुणगान किया जाता वह सहसा उठ खड़ा हुआ । रष्ट वह चारों ओर देखता हुआ कहने लगा कि वह रावण कहाँ है ? (३९) रोमांचके कारण कर्कश तथा हास्ययुक्त मुखवाले रामने छोटे भाईका आलिंगन किया और कहा कि वह शत्रु नष्ट हो गया । (४०) शक्तिके प्रहार आदि, जो हुआ था—यह सब कहा और मन्दर आदि सुभटोंके द्वारा महा आनंद मनाया गया । (४१) रामके कहनेसे विशल्याने वह चन्दन दिव्य आयुधोंसे आहत इन्द्रजित आदि सुभटोंको लगाया । (४२) चन्दनजलसे अभिषिक्त वे खेचर शल्यरहित हो और परम आनन्द प्राप्त करके जल्दी ही चले गये । (४३)

सुन्दर रूप और लावण्यसे युक्त तथा चन्द्रके समान मुँहवाली वह द्रोणसुता विशल्या लक्ष्मणके पास इन्द्रकी देवीकी भाँति शोभित हो रही थी । (४४) सब कार्य अच्छी तरहसे सन्पन्न होनेपर रामके कहनेसे अतिशय धैर्यवाले लक्ष्मणने धामधूमके साथ विशल्यासे वहाँ विवाह किया । (४५) इस तरह मनुष्य पूर्वभवमें अर्जित धर्मसे दुःखमुक्त होते हैं, यथेच्छ दिव्य पदार्थ प्राप्त करते हैं और लोकमें उत्तम एवं विमल यश उन्हें मिलता है । (४६)

॥ पञ्चचरितमें विशल्याका आगमन नामक चौसठवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

६५. रावणद्वयाभिगमणपठवं

अह लक्ष्मणं विसलं, चारियपुरिसेसु साहियं एत्तो । सुणिऊण रक्खसवई, मन्तीहि समं कुणइ मन्तं ॥ १ ॥
 विविहकलागमकुसलो, मयङ्कनामो तओ भणइ मन्ती । रूससि जइ वा तूससि, तह वि य निमुणेहि मह वयणं ॥ २ ॥
 रामेण लक्खणेण य, विज्जाओ सीह-गरुडनामाओ । लद्धाउ अयत्तेणं, तुज्झ समक्खं इई सामि ! ॥ ३ ॥
 बद्धो य भाणुयण्णो, समयं पुत्तेहि तुज्झ संगमे । सत्तोएँ निरत्थत्तं, जायं च अमोहविज्जाए ॥ ४ ॥
 जइ जीवइ निक्खुत्तं, सोमिती तह वि तुज्झ पुत्ताणं । दीसइ सामि ! विणासो, समयं चिय कुम्भयण्णेणं ॥ ५ ॥
 समयेव एवमेयं, नाऊणऽप्हेहि जाइओ सन्तो । अणुचरसु धम्मबुद्धिं, सामिय ! सोयं समप्पेहि ॥ ६ ॥
 पुबपुरिसाणुचिण्णा, मज्जाया पालिया सह जणेणं । वन्धवमित्ताण हियं, होइ फुडं सन्धिकरणेणं ॥ ७ ॥
 पायवडिएहि एवं, जं भणिओ मन्तिणेहि दहवयणो । गमियं करेइ दूयं, सामन्तं नाम नामेणं ॥ ८ ॥
 मन्तीहि समुदएणं, संदिट्ठं सुन्दरं तु दूयस्स । नवरं महोसहं पिव, सुदूसियं रावणऽत्थेणं ॥ ९ ॥
 उत्तमकुलसंभूओ, दूओ नय-विणय-सत्तिसंपन्नो । रामस्स सन्नियासं, सामन्तो पत्थिओ सिग्वं ॥ १० ॥
 पायवडिओ निविट्ठो, सामन्तो भणइ राहवं एत्तो । लङ्काहिक्खस्स वयणं, कहिज्जमाणं निसामेहि ॥ ११ ॥
 जुज्जेण किर न कज्जं, सपच्चणएण जणविणासेणं । बहवो गथा खयन्तं, पुरिसा जुज्झाहिमाणेणं ॥ १२ ॥
 जंपइ लङ्काहिक्खे, कुणसु पयत्तेण सह मए संधी । न य वेप्पइ पच्चसुहो, विसमगुहामज्झयारत्थो ॥ १३ ॥

६५. रावणके दूतका आगमन

गुप्तचरोने शल्यरहित लक्ष्मणके बारेमें कहा । यह सुनकर राजसपति रावण मंत्रियोंके साथ मंत्रणा करने लगा । (१) तब विविध कलाओं तथा शास्त्रोंमें कुशल मृगाङ्क नामके मंत्राज्ञे कहा कि आप रुष्ट हों अथवा तुष्ट हों, फिर भी मेरा वचन सुनें । (२) हे स्वामी ! यहाँ आपके समक्ष ही राम एवं लक्ष्मणने बिना किसी प्रयत्नके ही सिंह एवं गरुड़ नामकी विद्याएँ प्राप्त की हैं । (३) संग्राममें आपके पुत्रोंके साथ भानुकरणको बाँधा और अमोघविद्या शक्ति भी निकम्मी हो गई । (४) हे स्वामी ! यदि लक्ष्मण अवश्य जीवित हुआ है तो कुम्भकर्णके साथ आपके पुत्रोंका विनाश दिखाई पड़ता है । (५) वस्तुस्थिति इसी प्रकार है ऐसा स्वयंसेवक जानकर हमारा यही याचना है कि, स्वामी ! आप धर्मबुद्धिका अनुसरण करें और सीताको सौंप दें । (६) पूर्वपुरुषों द्वारा अनुष्ठित मर्यादाका लोगोंके साथ पालन करनेसे तथा सन्धि कर लेनेसे भाई तथा मित्रोंका अवश्य ही हित होगा । (७)

पैरोंमें पड़कर मंत्रियोंने जब रावणसे ऐसा कहा तब उसने सामन्त नामके दूतको भेजा । (८) मंत्रियोंने प्रसन्नताके साथ दूतको सुंदर संदेश दिया, परन्तु रावणने उसे अर्थसे, महीषकी भाँति, अत्यन्त दूषित कर दिया । (९) उत्तम कुलमें उत्पन्न तथा नय, विनय एवं शक्तिसे सम्पन्न दूत सामन्तने रामके पास जानेके लिए शीघ्र ही प्रस्थान किया । (१०) पैरोंमें गिरकर (अर्थात् नमस्कार करके) और बैठनेपर सामन्तने रामसे कहा कि लंकाधिप रावणका जो संदेश मैं कहता हूँ उसे आप सुनें । (११)

पापपूर्ण और लोकविनाशक युद्धका कोई प्रयोजन नहीं है । युद्धके अभिमानसे बहुतसे पुरुष विनाशको प्राप्त हुए हैं । (१२) लंकाधिपति कहते हैं कि तुम मेरे साथ समझ-बूझकर सन्धि कर लो । विषम गुफामें रहा हुआ सिंह पकड़ा नहीं जाता । (१३) हे राम ! जिसने युद्धभूमिमें इन्द्रको बाँधा था तथा बहुतसे सुभटोंको हराया है उस महात्मा

१. वन्धवपुत्ताण—मु० ।

५०

बद्धो जेण रणसुहे, इन्दो परिनिज्जिया भडा बहवे । सो रावणो महप्पा, राहव ! किं ते असुयपुबो ? ॥ १४ ॥
 पायाले गयणयले, जले थले जस्स वच्चाणस्स । न खल्लिज्जइ गइपसरो, राहव ! देवासुरेहिं पि ॥ १५ ॥
 लवणोदहिपरियन्तं, वसुहं विजाहरेसु य समाणं । लङ्कापुरीए भागे, दोण्णि तुमं देमि तुट्ठो हं ॥ १६ ॥
 पेसेहि मज्झ पुत्ते, मुञ्चसु एकोयरं निययवन्धुं । अणुमण्णसु जणयसुया, जइ इच्छसि अत्तणो खेमं ॥ १७ ॥
 तो भणइ पउमनाहो, न य मे रज्जेण कारणं किञ्चि । जं अन्नपणइणिसमं, भोगं नेच्छामि महयं पि ॥ १८ ॥
 पेसेमि तुज्झ पुत्ते, सइोयरं चेव रावण ! निरुत्तं । होहामि सुपरितुट्ठो, जइ मे सीयं समप्पेहि ॥ १९ ॥
 एयाए समं रण्णे, भमिहामि सुमित्तिपरिमिओ अहयं । भुञ्जसु तुमं दसाणण !, सयलसमत्थं इमं वसुहं ॥ २० ॥
 एयं चिय दूय ! तुमं, तं भगसु तिकूडसामियं गन्तुं । एयं तुज्झ हिययरं, न अन्नहा चेव कायव्वं ॥ २१ ॥
 सुणिऊग वयगमेयं, दूओ तो भणइ राहवं एत्तो । महिलापसत्तचित्तो, अप्पहियं नेव लक्खेसि ॥ २२ ॥
 गरुडाहिवेण जइ वि हु, पवेसियं जाणजुवलयं तुज्झ । जइ वा छिद्देण रणे, मह पुत्ता सहोयरा बद्धा ॥ २३ ॥
 तह वि य किं नाम तुमं, गव्वं अइदारुणं समुब्वहसि । जेणं करेसि जुज्झं ?, न य सीया नेय जीयं ते ॥ २४ ॥
 सुणिऊग वयगमेयं, अहिययरं जणयनन्दणो रुट्ठो । भडभिउडिकयाडोवो, जंपइ महएण सद्देणं ॥ २५ ॥
 रे पावदूयकोल्हुय !, दुबयणावास ! निब्भओ होउं । जेणेरिसाणि जंपसि, लोगविरुद्धाई वयणाई ॥ २६ ॥
 सीयाए कडा का वि हु, किं वा अहिखिन्नसि सामियं अहं ? । को रावणो त्ति नामं, दुट्ठो य पसू अचारित्तो ? ॥ २७ ॥
 भणिऊण वयगमेयं, जाव य खमं लएइ जगयसुओ । लच्छीहरेण ताव य, रुट्ठो नयचक्खुणा सहसा ॥ २८ ॥
 पडिसद्दएण को वि हु, भामण्डल ! हवइ दारुणो कोवो । एएण मारिएणं, दूएण जसो न निव्वडइ ॥ २९ ॥

रावणके बारेमें क्या आपने पहले नहीं सुना । (१४) हे राघव ! पातालमें, आकाशमें, जलमें, स्थलमें जाते हुए जिसकी गतिके प्रसारको देव और असुर भी रोक नहीं सकते, ऐसे रावणके बारेमें क्या तुमने पहले नहीं सुना ? (१५) तुष्ट मैं तुम्हें विद्याधरोंके साथ लवणोदधि तककी पृथ्वी तथा लंकापुरीके दो भाग देता हूँ । (१६) यदि तुम अपनी कुशल चाहते हो तो मेरे पुत्रोंको भेज दो, मेरे अपने सहोदर भाईको छोड़ दो और जनकसुताको अनुमति दो । (१७)

इसपर रामने कहा कि मुझे राज्यसे कोई प्रयोजन नहीं है । अन्यकी पत्नीकी भाँति महान् भोगकी भी मैं अभिलाषा नहीं रखता । (१८) हे रावण ! तुम्हारे पुत्रों और भाईको मैं भेजता हूँ । यदि सीता मुझे सौंप दी जाय तो मैं सन्तुष्ट हो जाऊँगा । (१९) लक्ष्मणसे युक्त मैं उसके साथ अरण्यमें घूमता फिरूँगा । हे दशानन ! इस सारी पृथ्वीका तुम उपभोग करो । (२०) हे दूत ! त्रिकूटके स्वामी रावणके पास जाकर तुम उससे यह कहो कि यही तुम्हारे लिए हितकर है । इससे उल्टा तुम्हें नहीं करना चाहिए । (२१)

ऐसा वचन सुनकर दूतने रामसे कहा कि स्त्रीमें आसक्त मनवाले तुम अपना हित नहीं देखते । (२२) यद्यपि गरुडाधिप ने तुम्हें दो वाहन दिये हैं और कपटसे मेरे भाई और पुत्रोंको युद्धमें तुमने पकड़ लिया है तथापि तुम्हारा क्या हिसाब है ? तुम्हें जो अतिदारुण गर्व उत्पन्न हुआ है उससे तुम युद्ध करते हो, परन्तु न तो तुम्हें सीता ही मिलेगी और न तुम्हारे प्राण ही बचेंगे । (२३-२४)

दूतका यह कथन सुनकर जनकनन्दन भामण्डल बहुत ही गुस्सेमें हो गया । शृकुटिका भयंकर आटोप करके और चिल्लाकर उसने कहा कि अरे पापी और सियार जैसे दूत ! तुम निर्भय होकर ऐसे लोकविरुद्ध वचन कहते हो, अतएव तुम दुर्बचनोंके आवासरूप हो । (२५-२६) सीताकी तो क्या बात, तुम हमारे स्वामीका तिरस्कार क्यों करते हो ? दुष्ट, पशु तुल्य और दुश्चरित रावण कौन होता है ? (२७) ऐसा कहकर भामण्डल जैसे ही तलवार उठाता है वैसे ही नीति-विचक्षण लक्ष्मणने उसे एकदम रोका । (२८) हे भामण्डल ! किसी तरहका प्रयुक्तर देनेसे दारुण क्रोध ही होता है । अतः दूतको मारनेसे यश

न य बम्भणं न समणं, न य दूर्यं नेय बालयं बुद्धं । न य घायन्ति मणुस्सा, हवन्ति जे उत्तमा लोए ॥ ३० ॥
 लच्छीहरेण रुद्धे, एत्तो भामण्डले भणइ दूओ । राहव ! वेयारिज्जसि, इमेहि भिच्चेहि मूढेहि ॥ ३१ ॥
 नाऊण य अप्पहियं, अहवा हियएण मुणिय दोस-मुणं । परिचयसु जणयत्तणयं, भुज्जसु पुहविं चिरं कालं ॥ ३२ ॥
 पुप्फविमाणारूढो, सहिओ कन्नाण तिहि सहस्सेहि । राहव ! लीलायन्तो, इन्दो इव भमसु तेलोक्कं ॥ ३३ ॥
 एवं समुल्लवन्तो, भडेहि निब्भच्छिओ गओ दूओ । साहइ रक्खसवइणो, जं भणियं रामदेवेणं ॥ ३४ ॥
 बहुगाम-नयर-पट्टणसमाउला वसुमई महं सामी । देइ तुह गय-तुरङ्गे, पुप्फविमाणं च मणगमणं ॥ ३५ ॥
 वरकन्नाण सहस्सा, तिण्णि उ सीहासणं दिणयरामं । ससिनिम्मलं च छत्तं, जइ से अणुमन्नसे सीया ॥ ३६ ॥
 वयणाई एवमाई, पुणरुत्तं देव ! सो मए भणिओ । पउमो एगगमणो, सीयागाहं न छड्डेइ ॥ ३७ ॥
 भणइ पउमो महाजस !, जह तुज्ज इमाई जंपमाणस्स । जीहा कह न य पडिया, पसिदिलवासिप्फलं चेव ? ॥ ३८ ॥
 सुरवरभोगेसु वि मे, सीयाएँ विणा न निव्वुई मज्झं । भुज्जसु तुम दसाणण !, सयलसमत्थं इमं वसुहं ॥ ३९ ॥
 मण-नयणहारिणीओ, भयसु तुमं चेव सबजुवईओ । पत्त-फलाहारो हं, सीयाएँ समं भमीहामि ॥ ४० ॥
 वाणरवई वि एत्तो, हसिऊणं भणइ जह तुमं सामी । किं सो गहेण गहिओ, वाऊण व साऽऽसितो होज्जा ? ॥ ४१ ॥
 जेणेरिसाई पलवइ, विवरीयत्थाणि चेव वयणाई । किं तथ नत्थि वेज्जा, जे तुह सामिं तिगिच्छन्ति ? ॥ ४२ ॥
 संगममण्डले वि हु, आवासं सरवरेसु काऊणं । हरिही लक्खणवेज्जो, काममाहवेयणं तस्स ॥ ४३ ॥
 सुणिऊण वयणमेयं, तो मे रुद्धेण वाणराहिवई । भणिओ अहिक्खवन्तो, तुज्ज वि मरणं समासन्नं ॥ ४४ ॥
 भणिओ मे दासरही, कुवुरिसवेयारिओ तुमं संधी । न कुणसि कुणसि विरोहं, कज्जाकज्जं अयाणन्तो ॥ ४५ ॥

प्राप्त नहीं होता । (२६) लोकमें जो उत्तम मनुष्य होते हैं वे ब्राह्मण, भ्रमण, दूत, बालक और वृद्धका घात नहीं करते । (३०) इस तरह लक्ष्मणने जब भामण्डलको रोका तब दूतने कहा कि हे राघव ! इन-मूर्ख भृत्योंसे तुम ठगे गये हो । (३१) अपना हित जान करके अथवा मनसे गुण-दोषका विचार करके तुम सीताका त्याग करो और चिरकालतक पृथ्वीका उपभोग करो । (३२) हे राघव ! तीन हजार कन्याओंके साथ पुष्पक विमानमें आरूढ़ हो इन्द्रकी भाँति लीला करते हुए तुम त्रिभुवनमें भ्रमण करो । (३३)

इस तरह बकबक करनेवाला दूत सुभदों द्वारा अपमानित होनेपर चला गया और रामने जो कुछ कहा था वह राक्षसपति रावणसे कहा । (३४) 'यदि तुम सीताको दे दो तो मेरे स्वामी तुम्हें अनेक ग्राम, नगर एवं पत्तनोंसे व्याप्त पृथ्वी, हार्थी एवं घोड़े, मनोनुकूल गमन करनेवाला पुष्पक विमान, तीन हजार उत्तम कन्याएँ, सूर्यके समान कान्तिवाला सिंहासन तथा चन्द्रमाके समान विमल छत्र प्रदान करेंगे' । (३५-३६) हे देव ! मैंने उन्हें ऐसे वचन पुनः पुनः कहे, फिर भी एकाग्र मनवाले रामने सीता का आग्रह नहीं छोड़ा । (३७) हे महायश ! इसपर रामने कहा कि इस तरह कहते हुए तुम्हारी जीभ शिथिल और वासी फलकी भाँति क्यों गिर न गई ? (३८) देवोंके उत्तम भोगोंमें भी सीताके बिना मुझे चैन नहीं पड़ सकता । हे रावण ! इस सारी पृथ्वीका तुम उपभोग करो । (३९) मन और आँखोंको सुन्दर लगनेवाली सब युवतियाँ तुम्हारी सेवा करें । पत्र और फलका आहार करनेवाला मैं सीताके साथ भ्रमण करता रहूँगा । (४०) उस समय वानरपति सुग्रीव भी हँसकर कहने लगा कि तुम्हारा वह स्वामी क्या भूतसे पकड़ा गया है अथवा वायुसे ग्रस्त हुआ है, जिससे वह इस प्रकारके विपरीत अर्थवाले वचन कहता है । क्या वहाँ कोई वैद्य नहीं है जो तुम्हारे स्वामीकी चिकित्सा करे ? (४१-४२) युद्ध-समूहरूपी सरोवरोंमें आवास कराकर लक्ष्मण-रूपी वैद्य उसकी कामरूपी प्रहसे उत्पन्न वेदनाको दूर करेगा । (४३) यह कथन सुनकर रुष्ट मैंने वानरपतिका अपमान करके उसे कहा कि तेरा भी मरण समीप आया है । (४४) रामको मैंने कहा कि, कुपुरुषके द्वारा प्रतारित होकर कार्य-अकार्य नहीं जाननेवाले तुम सन्धि तो नहीं करते, उल्टा विरोध बढ़ा रहे हो । (४५) और हे राघव ! पैदल योद्धारूपी

पायालवीइपउरं, मयगलगाहाउलं रहावत्तं । राहव ! भुयासु तरिउं, किं इच्छसि रावणसमुद्धं ? ॥ ४६ ॥
 चण्डाणिलेण वि नहा, न चलिज्जइ पउम ! दिणयरो गयणे । तह य तुमे दहवयणो, न य जिप्पइ समरमज्झमि ॥ ४७ ॥
 सोऊण मज्झ वयणं, रुद्धो भामण्डलो सहामज्जे । खमं समुगिरन्तो, निवारिओ लखणेणं ति ॥ ४८ ॥
 वाणरभडेसु वि अहं, अहियं निवभच्छिओ भउविमो । पक्खी व समुप्पइउं, तुज्झ सयासं समहोणो ॥ ४९ ॥
 पवयभडसमक्खं तिबसीयाणुवन्धं, रहुवइभणियं जं तं मए तुज्झ सिट्ठं ।
 कुणसु निययकज्जं साणुरूवं तुमं तं, विमलजसविसालं भुज्ज रज्जं समत्थं ॥ ५० ॥

॥ इय पउमचरिए राव गदूया भिगमणं नाम पञ्चसट्ठं पव्वं समत्तं ॥

६६. फग्गुणट्टाहियामह-लोगनियमकरणपव्वं

सोऊण दूयवयणं, दसाणणो निययमन्तिसमसहिओ । मन्तं कुणइ जयत्थे, गाढं सुयसोगसंततो ॥ १ ॥
 जइ वि हु जिणामि सत्तुं, संगामे बहुनरिन्दसंघट्टे । तह वि य मज्झ सुयाणं, दीसइ नियमेण य विणासो ॥ २ ॥
 अहवा निसासु गन्तुं, सुत्ताणं वेरियाण उक्खन्दं । दाऊण कुमारवरे, अणेमि अवेइओ सहसा ॥ ३ ॥
 एव परिचिन्तयन्तस्स तस्स सहसा समागया बुद्धी । साहेमि महाविज्जं, बहुरूवं नाम नामेणं ॥ ४ ॥
 न य सा सुरेहि जिप्पइ, होहिज्जइ अइवला महाविज्जा । परिचिन्तिऊण एवं, सदाविय किंकरा भणइ ॥ ५ ॥
 सन्तीहरस्स सोहं, सिग्घं चिय कुणह तोरणादीसु । विरएह महापूयं, जिणवरभवणेषु सबेषु ॥ ६ ॥
 मन्दोयरोएँ एत्तो, सो चैव भरो समप्पिओ सबो । कोइलमुहलुग्गीओ, तइया पुण फग्गुणो मासो ॥ ७ ॥

तरंगोंसे व्याप्त. मद भरनेवाले हाथीरूपी ग्राहोंसे युक्त और रथरूपी भँवरवाले रावगरूपी समुद्रको तुम क्या भुजाओंसे तैरना चाहते हो ? (४६) हे राम ! जिस तरह प्रचण्ड आँधोंसे आकाशमें सूर्य चलित नहीं होता उसी तरह युद्धमें रावण तुमसे जीता नहीं जायगा । (४७) मेरा वचन सुनकर सभाके बीच तलवार खींचनेवाले रुष्ट भामण्डलको लक्ष्मणने रोका । (४८) वानर सुभटोंसे भी अत्यन्त तिरस्कृत मैं भयसे उद्विग्न हो पक्षीकी भाँति उड़कर आपके पास आया हूँ । (४९) वानर-सुभटोंके समक्ष सीताके उत्कट प्रेमसे युक्त रघुपतिने जो कुञ्ज कहा था वह मैंने आपसे निवेदन किया । अब आप अपने अनुरूप कार्य करें तथा विमल यश एवं समस्त विशाल राज्यका उपभोग करें । (५०)

॥ पञ्चचरितमें रावणके दूतका अभिगमन नामक पैंसठवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

६६. अष्टाह्निका महोत्सव तथा लोगोंका नियमन

दूतका वचन सुनकर पुत्रके शोकसे अत्यन्त सन्तप्त रावणने विजयके लिए अपने मन्त्रियोंके साथ मंत्रणा की । (१) बहुत-से राजाओंके समुदायसे युक्त संग्राममें यदि मैं शत्रुओंको जीत लूँ तब भी मेरे पुत्रोंका विनाश तो निश्चय ही दीखता है । (२) अथवा रात्रिके समय सहसा अज्ञात रूपसे पुत्रोंके वरियोंको घेरकर और उन्हें झलसे मारकर कुमारोंको ले आऊँ । (३) इस प्रकार सोचते हुए उसे एकदम विचार आया कि बहुरूपा नामकी विद्याकी मैं साधना करूँ । (४) वह महाविद्या अत्यन्त बलवती होती है । उसे तो देव भी जीत नहीं सकते । ऐसा सोचकर उसने भृत्योंसे कहा कि भगवान् शान्तिनाथके मन्दिरको तोरण आदिसे शीघ्र ही सजाओ और सब जिनमन्दिरोंमें महापूजा करो । (५-६) इसका सारा भार मन्दोदरीको सौंपा गया । उस समय कोयलके मुखसे निकलनेवाले संगीतसे युक्त फागुन महीना था । (७)

मुणिसुबयस्स तित्थे, जिणभवणालंकियं इमं भरहं । गामउड-सेट्टि-गहवइ-भवियजणाणन्दियं मुइयं ॥ ८ ॥
 सो नत्थि एत्थ गामो, नेव पुरं संगमं गिरिवरो वा । तिय चच्चरं चउक्कं, जत्थ न भवणं जिणिन्दाणं ॥ ९ ॥
 ससिकुन्दसन्निभाइं, नाणासंगीयतूरसद्दाइं । नाणाधयचिन्धाइं, नाणाकुसुमच्चियतलाइं ॥ १० ॥
 साहुजणसंकुलाइं, तेसंझं भवियवन्दियरवाइं । कञ्चण-रयणमईणं, जिणपडिमाणं सुपुष्णाइं ॥ ११ ॥
 धयवडय-छत्त-चामर-लम्बूसा-ऽऽरिसविरइयधराइं । मणुएहि जिणिन्दाणं, विभूसियाइं समत्थाइं ॥ १२ ॥

फाल्गुनमासे अष्टाहिकामहोत्सवः—

लङ्कापुरी वि एवं, जिणवरभवणेषु मणभिरामेषु । उवसोहिएसु छज्जइ, महिन्दनयरि ष पच्चक्खा ॥ १३ ॥
 एवं फग्गुणमासे, वट्टन्ते धवलअट्टमीमाई । जाव च्चिय पञ्चयसी, अट्टाहिमहूसवो लमो ॥ १४ ॥
 एवं उभयवलेसु वि, नियमगहणुज्जओ जणो जाओ । दियहाणि अट्ट सेणिय !, अचो वि हु संजमं कुणइ ॥ १५ ॥
 देवा वि देवलोए, चेइयपूयासमुज्जयमईया । सयलपरिवारसहिया, हवन्ति एसु दियहेसु ॥ १६ ॥
 नन्दीसरवरदीवं, देवा गन्तूण अट्ट दियहाइं । जिणचेइयाण पूयं, कुणन्ति दिव्वेहि कुसुमेहिं ॥ १७ ॥
 देवा कुणन्ति ण्हवणं, कञ्चणकलसेसु खीरवारीणं । पत्तपुडएसु वि इहं, जिणाभिसेओ विहेयवो ॥ १८ ॥
 पूयं कुणन्ति देवा, कञ्चणकुसुमेसु जिणवरिन्दाणं । इह पुण चिल्लदलेसुं, नरेण पूया विरइयवा ॥ १९ ॥
 लङ्कापुरीएँ लोगो, अहियं उच्छाहजणियदढभावो । भूसेइ चेइयहरे, धय-छत्त-पडायमाईसु ॥ २० ॥
 गोसीसचन्दणेणं, सिग्घं सम्मज्जिओवलित्ताइं । कणयाइरण पुणो, रज्जावलचित्तियतलाइं ॥ २१ ॥
 वज्जिन्दनील-मरगाय-मालालम्बन्तदारसोहाइं । सुरहिसुगन्धेषु पुणो, कुसुमेसु कयाइं पूयाइं ॥ २२ ॥

भगवान् मुनिसुव्रतके तीर्थमें यह भरतक्षेत्र जिनभवनोंसे अलंकृत और प्रामसमूह, सेठ, गृहस्थ एवं भव्यजनोंको आनन्द देनेवाला तथा सुखमय था । (८) इसमें कोई ऐसा गाँव, नगर, नदीका संगम-स्थान, पर्वत, तिराहा, चौराहा या चौक नहीं था जिसमें जिनेन्द्रोंका मन्दिर न हो । (९) चन्द्रमा और कुन्द पुष्पके समान सफेद, नानाविध संगीत एवं वाद्योंसे शब्दायमान, अनेक प्रकारके ध्वजा-चिह्नोंसे युक्त, विविध पुष्पोंसे अर्चित प्रदेशवाले, साधुजनोंसे युक्त, तीनों सन्ध्याओंके समय भव्यजनों की वन्दनध्वनिसे व्याप्त, स्वर्ण, रत्न एवं मणिमय जिनप्रतिमाओंसे पूर्ण, ध्वजा, पताका, छत्र, चामर, लम्बूष (गेंदके आकारका एक आभरण) एवं दर्पण से सजाये हुए गृहवाले—एसे जिनवरोंके सारे मन्दिर लोगोंने विभूषित किये । (१०-२) इसी प्रकार लंकापुरी भी मनोहर और अलंकृत जिनभवनोंसे साक्षात् इन्द्रनगरी अलकापुरीकी भाँति शोभित हो रही थी । (१३) इस तरह जब फाल्गुन मास था तब शुक्ल अष्टमीसे पूर्णिमातक अट्टाई-महोत्सव मनाया गया । (१४) दोनों सेनाओंमें लोग नियम ग्रहण में लघत हुए । हे श्रेणिक ! आठ दिन तो दूसरे लोग भी संयमका पालन करते हैं । (१५) इन दिनों देव भी देवलोकमें सकल परिवारके साथ चैत्यपूजामें उद्यमशील रहते हैं । (१६) नन्दीश्वर द्वीपमें जाकर देव आठ दिन तक दिव्य पुष्पोंसे जिनचैत्योंकी पूजा करते हैं । (१७) देव सोनेके कलशोंमें क्षारसागरके जलसे जिनेश्वर भगवान्को स्नान कराते हैं, अतः यहाँ पर भी पत्रपुटोंसे जिनाभिषेक करना चाहिए । (१८) स्वर्णपुष्पोंसे देव जिनवरोंकी पूजा करते हैं अतः यहाँ पर भी पुष्पोंसे लोगोंको पूजा करनी चाहिए । (१९)

लंकापुरीमें उत्साहजनित दृढ़ भाववाले लोगोंने ध्वजा, छत्र एवं पताका आदिसे चैत्यगृहोंको सजाया । (२०) बृहार्कर गोशीर्षचन्द्रनसे लीपे गये आँगन शीघ्र ही सोना आदिकी रजसे रचित रंगवल्लीसे चित्रित किये गये । (२१) हीरे, इन्द्रनील एवं मरकतकी लटकती हुई मालाओंसे दरवाजे शोभित हो रहे थे और सुगन्धित गन्धवाले पुष्पोंसे उनमें पूजा की

१. बज्जे रामवलअट्टमी—प्र० ।

दारेसु पुष्पकलसा, ठविया दहि-खीर-सप्पिसंपुष्पा । वरपउमपिहियवयणा, जिणवरपूयाभिसेयत्थे ॥ २३ ॥
 झल्लरि-हुडुक्क-तिलिमाउलाईं पडुपडह-भेरिपउराईं । वज्जन्ति जिणहरेहिं, जलहरघोसाईं तूराईं ॥ २४ ॥
 नयरीएँ भूसणं पिव, भवणालिसहस्समज्झयारत्थं । छज्जइ दसाणणहरं, तुळ्ळं कइलाससिहरं व ॥ २५ ॥
 तस्स वि य समल्लोणं, तवणिज्जुज्जलविचित्तमत्तीयं । जिणसन्तिसामिभवणं, थम्मसहस्साउलं रम्मं ॥ २६ ॥
 उवसोहियं समन्ता, नाणाविहरयणकुसुमकयपूयं । विज्जाएँ साहणट्ठे, पविसइ तं रावणो धीरो ॥ २७ ॥
 पडुपडहतूरवहुविह-रवेण संखोहियं व तेल्लोळ्ळं । ष्हवणाहिसेयवणय-रण गयणं पि पिञ्जरियं ॥ २८ ॥
 बलिकम्म-गन्ध-धुवाइएहि पूया करेइ कुसुमेहिं । लङ्काहिवो महप्पा, विसुद्धगन्धेहि भावेणं ॥ २९ ॥
 सेयम्बरपरिहाणो, नियमत्थो कुण्डलुज्जलकवोलो । तिविहेण पणमिऊणं, उवविट्ठो कोट्टिमत्तलम्मि ॥ ३० ॥
 सन्तिजिणस्स अहिसुहो, धीरो होऊण अद्धपलियङ्गं । गहियक्खमालहत्थो, आढत्तो सुमरिउं विज्जं ॥ ३१ ॥
 पुवं समप्पियभरा, एत्तो मन्दोयरी भणइ मन्ति । जमदण्डनामधेयं, देहि तुमं घोसणं नयरे ॥ ३२ ॥
 अब्बो ! जहा समगो, लोगो तव-नियम-सीलसंजुत्तो । जिणवरपूयानिरओ, दयावरो होउ जीवाणं ॥ ३३ ॥
 जो पुण कोहवसगओ, करेइ पावं इमेसु दियहेसु । सो होइ घाइयवो, जइ वि पिया किं पुणं इयरो ? ॥ ३४ ॥
 जमदण्डेण पुरजणो, भणिओ मन्दोयरीएँ वयणेणं । मा कुणउ कोइ पावं, एत्थ नरो दुविणीओ वि ॥ ३५ ॥
 सोऊण मन्तिवयणं वि लोगो, जाओ जिणिन्दवरसासणभत्तिजुत्तो ।
 सिद्धालयाण विमलाण ससिप्पहाणं, पूयानिओयकरणेसु सया पसत्तो ॥ ३६ ॥

॥ इय पउमचरिए फग्गुणट्ठाहियामहलोगनियमकरणं नाम ब्रासट्टं पव्वं समत्तं ॥

गई थी । (२२) जिनवरके पूजाभिषेकके लिये दही, दूध और घी से भरे हुए तथा मुखभागमें उत्तम पुष्पोंसे ढँके हुए पूर्ण-
 कलश द्वारपर रखे गये । (२३) झल्लरि, हुडुक्क और तिलिम जैसे वाद्योंसे युक्त बड़े नगारे और भेरियाँ तथा बादलके समान
 घोष करनेवाले वाद्य जिनमन्दिरोंमें बजने लगे । (२४) हजारों भयनोंके समूहके बीच स्थित नगरीका भूषण जैसा रावणका
 महल कैलासपर्वतके ऊँचे शिखरकी भाँति शोभित हो रहा था । (२५) उसके पास सोनेकी बनी हुई उज्ज्वल और विचित्र
 दीवारवाला तथा हजारों तम्बोंसे युक्त शान्तिनाथ भगवान्का मनोहर मन्दिर था । (२६) नानाविध रत्नों एवं पुष्पोंसे पूजित
 वह सब तरफसे सजाया हुआ था । उसमें विद्याकी साधनाके लिए धीर रावणने प्रवेश किया । (२७) उस समय बड़े-बड़े
 नगरों और वाद्योंकी नाना प्रकारकी ध्वनिसे मानों तीनों लोक संक्षुब्ध हो गये और स्नानाभिषेकके चन्दनकी रजसे आकाश
 भी मानों पीला-पीला हो गया । (२८) विशुद्ध इन्दीवर कमलके समान नील वर्णवाले महात्मा रावणने नैवेद्य, सुगन्धित धूप
 आदिसे तथा पुष्पोंसे पूजा की । (२९) सफेद वस्त्र पहना हुआ, नियममें स्थित तथा कुण्डलों के कारण देदीप्यमान कपोल-
 वाला वह मनसा, वाचा कर्मणा तीनों प्रकारसे बन्दन करके रत्नमय भूमिपर बैठा । (३०) शान्ति जिनके सम्मुख वह धीर
 अर्धपर्यकासनमें बैठकर तथा हाथमें अक्षमाला धारण करके विद्याका स्मरण करने लगा । (३१)

पहले जिसे सारा भार सौंपा गया है ऐसी मन्दोदरीने मंत्रीसे कहा कि तुम नगरमें यमदण्ड नामकी घोषणा करवाओ ।
 कि सब लोग तप, नियम एवं शीलसे युक्त हों, जिनवरकी पूजामें निरत रहें तथा जीवों पर दयाभाव रखें । (३२-३३) जो
 कोई क्रोधके वशीभूत होकर इन दिनों पाप करेगा वह मारा जायगा, फिर वह चाहे पिता हो या दूसरा कोई । (३४)
 मन्दोदरीके कहनेसे यमदण्ड नामकी घोषणा द्वारा नगरजनोंको जताया गया कि इन दिनों कोई दुर्विनीत नर भी पाप न
 करे । (३५) मंत्रीकी घोषणा सुन सभी लोग जिनेन्द्रके उत्तम शासनमें भक्तियुक्त हुए और सुक्तिस्थानमें गये हुए, विमल
 एवं चन्द्रमाके समान कान्तिवाले उन जिनेन्द्रोंकी अवश्य कर्तव्य रूप पूजा करनेमें सदा निरत हुए । (३६)

॥ पउमचरितमें फाल्गुन मासका अष्टाहिका महोत्सव तथा लोकनियमकरण नामक छसठवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

६७. सम्महिद्धिदेवकित्तणपण्वं

तं चैव उ दित्तन्तं, चारियपुरिसाण मूलओ सुणिउं । जंपन्ति वाणरभडा, एक्केकं रिउजयामरिसा ॥ १ ॥
 जह किल सन्तिजिणघरं, पविसेउं रावणो महाविज्जा । नामेण य बहुरूवा, देवाण वि जम्भणी जा सा ॥ २ ॥
 जाव न उवेइ सिद्धिं, सा विज्जा ताव तत्थ गन्तूणं । खोमेह रक्खसवदं, नियमत्थं मा चिरावेह ॥ ३ ॥
 जइ सा उवेइ सिद्धिं, राहव ! बहुरूविणी महाविज्जा । देवा वि जिणइ सबे, कि पुण अन्हेहि खुदेहिं ? ॥ ४ ॥
 भणिओ विभीषणेणं, रामो इह पत्थवग्मि दहवयणो । सन्तीहरं पविट्ठो, नियमत्थो घेप्पऊ सहसा ॥ ५ ॥
 पउमेण वि पडिभणिओ, भीयं न हणामि रणमुहे अहयं । किं पुण नियमारूढं, पुरिसं जिणचेइयहरत्थं ? ॥ ६ ॥
 अह ते वाणरमुहडो, मन्तं काऊण अट्ट दियहाइं । पेसन्ति कुमारवरे, लङ्कानयरिं बलसमग्गे ॥ ७ ॥
 चलिया कुमारसीहा, लङ्काहिबइस्स खोभणट्टाए । सन्नद्धवद्धचिन्धा, रह-गय तुरएसु आरूढा ॥ ८ ॥
 मयरद्धओ कुमरो, आडोवो तह य गरुयचन्द्राभो । रइवद्धणो य सूरु, महारहो दडरहो चैव ॥ ९ ॥
 वायायणो य जोई, महाबलो नन्दणो य नीलो य । पीईकरो नलो वि य, सबपिओ सबदुट्ठो य ॥ १० ॥
 सायरघोसो खन्दो, चन्दमरीई सुपुण्णचन्दो य । एतो समाहिबहुलो, सीहकडी दासणी चैव ॥ ११ ॥
 जम्बूणओ य एत्तो, संकटवियडो तहेव जयरोणो । एए अन्ने य बहू, लङ्कानयरिं गया सुहडा ॥ १२ ॥
 पेच्छन्ति नवरि लङ्का-पुरीएँ लोयं भउज्जियं सयलं । अह जंपिउं पयत्ता, अहो ! हु लङ्काहिवो धीरो ॥ १३ ॥
 बद्धो य भाणुक्कणो, इन्द्रइ वणवाहणो य संगामे । वहिया य रक्खसभडा, बहवो वि य अक्खमाईया ॥ १४ ॥
 तह वि य रक्खसवइणो, खणं पि न उवेइ काइ पडिसङ्का । काऊण समुल्लव्वं, एवं ते विन्हेयं पत्ता ॥ १५ ॥

६७. सम्यग्दृष्टि देवका कीर्तन

शुभचरोंसे यह समग्र वृत्तान्त सुनकर शत्रुके जयको न सहनेवाले वानर सुभट एक-दूसरेसे कहने लगे कि भगवान् शान्तिनाथके मन्दिरमें प्रवेशकर देवोंको भी डरानेवाली जो बहुरूपा नामकी महाविद्या है उसे जबतक रावण सिद्ध नहीं करता तबतक वहाँ जाकर नियमस्थ उस राजसपतिको क्षुब्ध करो। देर मत लगाओ। (१-३) हे रावण ! यदि वह बहुरूपिणी महाविद्या सिद्ध करेगा तो सारे देव भी उसे जीत नहीं सकेंगे, फिर हम क्षुद्रोंकी तो बात ही क्या ? (४) विभीषणने रामसे कहा कि शान्तिनाथके मन्दिरमें प्रविष्ट और नियमस्थ रावणको आप प्रारम्भमें ही सहसा पकड़ें। (५) इसपर रामने भी कहा कि युद्धमें भयभीत पुरुषको भी मैं नहीं मारता, तो फिर जिनके चैत्यगृहमें स्थित नियमारूढ़ पुरुषकी तो बात ही क्या। (६) इसके पश्चान् उन वानर-सुभटोंने आठ दिन तक मंत्रणा करके सेनाके साथ कुमारवरोको लंका-नगरीकी ओर भेजा। (७)

कवच पहने हुए तथा चिह्न बाँधे हुए वे कुमार रथ, हाथी एवं घोड़ों पर सवार हो रावणको क्षुब्ध करनेके लिए चल पड़े। (८) कुमार मकरध्वज, आटोप, गरुड़, चन्द्राभ, रतिवर्धन, सूर, महारथ, दडरथ, वातायन, ज्योति, महाबल, नन्दन, नील, प्रीतिकर, नल, सर्वप्रिय, सर्वदुष्ट, सागरघोष, स्कन्द, चन्द्रमरीचि, सुपूर्णचन्द्र, समाधिबहुल, सिंहकटि, दासनी, जाम्बूनद, संकट, विकट तथा जयसेन—ये तथा दूसरे भी बहुतसे सुभट लंकानगरीकी ओर गये। (९-१२) उन्होंने लंकापुरीमें सब लोगोंको भयरहित देखा। तब वे आश्चर्यसे कहने लगे कि लंकानरेश कितना धीर है। (१३) यद्यपि युद्धमें भालुकर्ण, इन्द्रजित तथा घनवाहन पकड़े गये हैं और अक्ष आदि बहुतसे राजस सुभट मारे गये हैं, तथापि राजसपति क्षणभरके लिए भी भय धारण नहीं करता। इस प्रकार बातचीत करके वे विस्मित हुए। (१४-१५) तब विभीषणके पुत्र

अह ते विभीसणसुओ, सुभूसणो भणइ उज्झउं सङ्गं । पविसह लङ्कानयरिं, लोलह जुवईउ मोत्तूणं ॥ १६ ॥
 ते एव भणियमेत्ता, सकवाडं भञ्जिऊण वरदारं । लङ्कापुरी पविट्ठा, पवयभडा चञ्चल्य चण्डा ॥ १७ ॥
 सोऊण दुन्दुभिरवं, ताण पविट्ठाण जणवओ खुभिओ । किं किं ? ति उल्लवन्तो, भयविहलविसंदुओ जाओ ॥ १८ ॥
 संपत्तं पवयबलं, हा ताय ! महाभयं समुप्पन्नं । पविससु घरं तुरन्तो, मा एत्थ तुमं विवाइहिसि ॥ १९ ॥
 हा भइ ! परित्तायह, भाउय ! मा जाह लहु नियतेहि । अवि घाह किं न पेच्छह, परवलवित्तासियं नयरिं ॥ २० ॥
 नायरजणेण एवं, गाढं हाहारवं करन्तेणं । खुब्भइ दसाणणहरं, अन्नोन्नं लङ्घयन्तेणं ॥ २१ ॥
 काएत्थ गलियरयणा, भउदुया तुडियमेहलकलावा । हत्थावलम्बियकरा, अन्ना पुण वच्चइ तुरन्ती ॥ २२ ॥
 अन्ना भएण विलया, गरुयनियम्भा सणेण तूरन्ती । हंसि व पउमसण्डे, कह कह वि परं परिट्ठवइ ॥ २३ ॥
 पीणुन्नयथणजुयला, अइगरुयपरिस्समाउला बाला । अह दारुणे वि य भए, वच्चइ लीलाए रच्छासु ॥ २४ ॥
 अन्नाए गलइ हारो, अन्नाए कडयकुण्डलाहरणं । अन्नाए उत्तरिज्जं, विवडियवडियं न विन्नायं ॥ २५ ॥
 एवं तु नायरजणे, भयविहलविसंदुले मओ राया । सन्नज्झिऊण सवलो, रावणभवणं समलीणो ॥ २६ ॥
 जुज्झं समुबहन्तो, तेहि समं रावणस्स महिलाए । मन्दोयरीए रूद्धो, जिणवरसमयं सरन्तीए ॥ २७ ॥
 एयन्तरम्मि दट्ठुं, नयरजणं भयसमाउलं देवा । सन्तीहराहिवासी, वच्छलं उज्जया काउं ॥ २८ ॥
 सन्तीहराउ सहसा, उप्पइया नहयलं महाघोरा । दाढाकरालवयणा, निदाहरविसन्निहा कूरा ॥ २९ ॥
 आसा हवन्ति हत्थी, सीहा वग्घा य दारुणा सप्पा । मेहा य अग्निपवणा, होन्ति पुणो पवयसरिच्छा ॥ ३० ॥
 अह ते घोरायारे, देवे दट्ठूण वाणराणीयं । भग्गं भउदुयमणं, संपेलोपेल कुणमाणं ॥ ३१ ॥

सुभूषण ने उन्हें कहा कि शंकाका त्याग करके लंकापुरीमें तुम प्रवेश करो और युवतियोंको छोड़कर उन्हें ललचाओ । (१६)
 इस प्रकार कहने पर किवाड़से युक्त उत्तम दरवाजेको तोड़कर चंचल और प्रचण्ड बानर-सुभटोंने लंकापुरीमें प्रवेश किया । (१७)

प्रविष्ट उनकी दुन्दुभिकी ध्वनि सुनकर लोग क्षुब्ध हो गये । 'क्या है ? क्या है ?'—ऐसा कहते हुए वे भयसे विह्वल एवं व्याकुल हो गये । (१८) हा तात ! वानर सेना आ पहुँची है । बड़ा भारी डर पैदा हुआ है । जल्दी ही घरमें प्रवेश करो, अन्यथा तुम यहाँ मारे जाओगे । (१९) हा भद्र ! बचाओ । भाई ! तुम मत जाओ । जल्दी ही लौट आओ । अरे, दौड़ो । शत्रुकी सेनासे वित्रासित नगरीके क्या तुम नहीं देखते ? (२०) इस प्रकार हाहारव करते हुए तथा एक-दूसरे को लाँघते हुए नगरजनोंके कारण रावणका महल भी क्षुब्ध हो गया । (२१) भयसे पलायन करनेवाली किसी स्त्रीकी मेखलाके टूट जानेसे रत्न बिखर गये थे, तो कोई हाथसे हाथका अबलम्बन देकर जल्दी जल्दी जा रही थी । (२२) भयसे विकल हो चिह्लाती हुई कोई भारी नितम्बवाली स्त्री हड़बड़ीमें किसी तरह, पद्मखण्डमें हंसीकी भाँति, पैर रखती थी । (२३) मोटे और ऊँचे स्तनोंवाली तथा बहुत भारी परिश्रमसे आकुल कोई स्त्री दारुण भय उपस्थित होने पर भी मुहल्लेमेंसे धीरे-धीरे लीलापूर्वक जाती थी । (२४) दूसरी किसीका हार गिर पड़ा, किसीके कड़े, कुण्डल तथा आभरण गिर पड़े, किसीका उत्तरीय गिर पड़ा, फिर भी किसीको मालूम ही न हो पाया । (२५)

इस प्रकार भयसे विह्वल एवं क्षुब्ध नगरजनोंको देखकर भय राजा तैयार होकर सेनाके साथ रावणके महलके पास आया । (२६) उनके साथ युद्ध करते हुए उसको जिनघरके सिद्धान्तका स्मरण करनेवाली रावणकी पत्नी मन्दोदरीने रोका । (२७) इस बीच नगरजनोंको भयसे व्याकुल देखकर भगवान् शान्तिनाथके मन्दिरके अधिवासी देव धर्मका अनुराग दिखानेके लिए तैयार हुए । (२८) शान्तिनाथके मन्दिरमेंसे अतिभयंकर, विकराल दाँतोंसे युक्त वदनवाले, ग्रीष्मकालीन सूर्य जैसे तेजस्वी तथा क्रूर वे आकाशमें उड़े । (२९) उन्होंने घोड़े, हाथी, सिंह, बाघ, भयंकर सर्प, भेड़, आग बरसानेवाले पवन तथा पर्वत जैसा रूप धारण किया । (३०) उन भयंकर आकारवाले देवोंको देखकर भयसे मनमें परेशान वानरसेना एक-दूसरेको पेरती हुई भाग खड़ी हुई । (३१) शान्तिनाथके मन्दिरमें रहनेवाले देवोंने वानर सेनाको विध्वस्त किया है यह

विद्वत्थं पवयवळं, सन्तीहरवासिएहि देवेहिं । नाऊण सेसचेइय-भवणनिवासी सुरा रुद्ध ॥ ३२ ॥
 देवाण य देवाण य, आवडियं दारुणं महाजुञ्जं । विच्छूढघायपउरं, अन्नोत्राहवणारावं ॥ ३३ ॥
 सन्तीहरसुरसेन्नं, दूरं ओसारियं तु देवेहिं । दट्टूण वाणरभडा, पुणरवि य ठिया नयरिहुत्ता ॥ ३४ ॥
 नाऊण पुण्णभदो, रुद्धो तो भणइ माणिभदं सो । पेच्छसु किं व विमुक्का, वाणरकेऊ महापावा ? ॥ ३५ ॥
 सन्तीहरमल्लीणं, नियमत्थं रावणं विगयसङ्गं । हन्तूण समुज्जुत्ता, मिच्छादिद्धी महाघोरा ॥ ३६ ॥
 तो भणइ माणिभदो, नियमत्थं रावणं जिगाययणे । खोभेऊण न तीरइ, जइ वि सुरिन्दो सयं चेव ॥ ३७ ॥
 भणिऊण एवमेयं, रुद्धा जक्खाहिवा तहिं गन्तुं । तह जुञ्जितं पवत्ता, जेण सुरा लज्जिया नट्टा ॥ ३८ ॥
 अह ते जक्खाहिवई, पत्थरपहरेसु वाणराणीयं । गन्तूण उवलहन्ते, गयणत्थं राहवं ताहे ॥ ३९ ॥
 अह भणइ पुण्णभदो, राम ! तुमं सुणसु ताव मह वयणं । उत्तमकुलसंभूओ, विक्खाओ दहरहस्स सुओ ॥ ४० ॥
 जाणसि धम्माधम्मं, कुसलो नाणोदहिस्स पारगओ । होऊण एरिसुणो, कइ कुणसि इमं अकरणिज्जं ? ॥ ४१ ॥
 नियमत्थे दहवयणे, धीरे सन्तीहरं समल्लीणे । लङ्कापुरीएँ लोयं, विताससि निययभिच्चेहिं ॥ ४२ ॥
 जो जस्स हरइ दवं, निक्खुत्तं हरइ तस्स सो पाणे । नाऊण एवमेयं, राहव ! सुहडा निवारिहि ॥ ४३ ॥
 तं भणइ लच्छिनिलओ, इमस्स रामस्स गुणनिही सीया । रक्खसनाहेण हिया, तस्स तुमं कुणसु अणुकम्पं ॥ ४४ ॥
 कञ्चणपत्तेण तओ, अम्वं दाऊण वाणराहिवई । भणइ य जस्खनरिन्दं, सुच्चसु एयं महाकीवं ॥ ४५ ॥
 इहरा वि न साहिज्जइ, दहवयणो गरुयदप्पमाहप्पो । बहुरूविणीएँ किं पुण, विज्जाएँ वसं उवगयाए ? ॥ ४६ ॥
 पेच्छसु ममं महायस !, वच्च तुमं अत्तणो निधयठारणं । ववगयकोवारम्भो, पसन्नचित्तो य होऊणं ॥ ४७ ॥
 तो भणइ पुण्णभदो, एव इमं एत्थ नवरि नयरीए । जह न वि करेह षोडं, जुण्णतणादीसु वि अकज्जं ॥ ४८ ॥

जानकर बाकीके मन्दिरोंमें बसनेवाले देव रुष्ट हो गये । (३२) तब देवों देवोंके बीच ही फेंके गये शस्त्रोंसे व्याप्त तथा एक-दूसरेको ललकारनेसे शब्दायमान ऐसा वह भयंकर महायुद्ध हुआ । (३३) दूसरे देवोंने शान्तिगृहके देवोंकी सेनाको दूर भगा दिया है ऐसा देख वानर सुभट पुनः लंका नगरीकी ओर अभिसुख हुए । (३४) यह जानकर रुष्ट पूर्णभद्रने माणिभद्रसे कहा कि वानरचिह्नवाले महापापी कैसे छूटे हैं यह तो देखो । (३५) शान्तिनाथके मन्दिरमें आये हुए, नियमस्थ तथा संगसे रहित रावणको मारनेके लिए अतिभयंकर और मिथ्यादृष्टि वानर उद्यत हुए हैं । (३६) तब माणिभद्रने कहा कि यदि स्वयं इन्द्र हो तो भी वह जिनभवनमें नियमस्थ रावणको धुब्ध करनेमें समर्थ नहीं है । (३७) ऐसा कहकर वे रुष्ट यक्षाधिप वहाँ जाकर इस तरह लड़ने लगे कि देव लज्जित होकर भाग गये । (३८)

इसके पश्चात् पत्थरके प्रहारोंसे वानरसेनाको मारनेके लिए जब वे यक्ष गये तब उन्होंने आकाशमें स्थित रामको देखा । (३९) तब पूर्णभद्रने कहा कि, उत्तम कुलमें उत्पन्न, विख्यात और दशरथके पुत्र हे राम ! तुम मेरा कहना सुनो । (४०) तुम धर्म और अधर्मको जानते हो, कुशल हो और ज्ञान-सागरको पार कर गये हो । ऐसे गुणोंसे युक्त होकर भी तुम यह अकार्य क्यों कर रहे हो ? (४१) नियमस्थ और धीर रावण जब भगवान् शान्तिनाथके मन्दिरमें ध्यानस्थ है तब तुम अपने भृत्योंसे लंकापुरीके लोगोंको क्यों दुःख देते हो ? (४२) जो जिसका द्रव्य हरता है वह निश्चय ही उसके प्राण लेता है । ऐसा जानकर, हे रावण ! तुम अपने सुभटोंको रोको । (४३) इस पर लक्ष्मणने कहा कि इन रामकी गुणकी निधि जैसी सीताका राक्षसनाथ रावणने अपहरण किया है । उसके ऊपर तुम अनुकम्पा करते हो । (४४) इसके बाद वानराधिपति सुग्रीवने स्वर्णपत्रोंसे अर्घ्य प्रदान करके यक्षनरेन्द्रसे कहा कि आप इस महाकोपका त्याग करें । (४५) बशमें आई हुई बहुरूपिणी विद्यासे ही क्या, अत्यन्त दर्पयुक्त रावण दूसरी भी क्यों नहीं साधता ? (४६) हे महायश ! आप मेरी ओर देखें । क्रोधका परित्याग करके और प्रसन्नचित्त हो आप अपने स्थान पर पधारें । (४७) इस पर पूर्णभद्रने कहा कि इस नगरीमें केवल इतना ही करो कि पुराने तिनकेको भी कोई पीड़ा देने जैसा अकार्य न करो । (४८) ऐसा कहकर

भणिऊण वयणमेयं, साहम्मियवच्छला तओ जक्खा । परमेद्धिसंपउत्ता, गया य निययाइं ठणाइं ॥ ४९ ॥
 एवं जिणिन्दवरसासणभत्तिमन्ता, उच्छाहनिच्छियमणा इह जे मणुस्सा ।
 विज्जाएँ किं व सुहसाहणसंपयाए, सिद्धालयं पि विमलं खलु वन्ति धीरा ॥ ५० ॥
 ॥ इय पञ्चमचरिए सम्महिद्धिदेवकित्तयां नाम सत्तसट्ठं पव्वं समत्तं ॥

६८. बहुरूवासाहणपव्वं

नाऊण य उवसमियं, जक्खवइं अङ्गओ गयवरिन्दं । किक्किन्धिदण्डनामं, आरूढो दप्पियामरिसो ॥ १ ॥
 लङ्कापुरी पयट्ठा, सुहडा कुमुइन्दणीलमाईया । नाणाउहगहियकरा, नाणाविहवाहणारूढा ॥ २ ॥
 कुङ्कुमकयङ्गराया, नाणालंकारभूसियसरीरा । विसमाहयत्तरवा, कुमारसीहा बला चण्डा ॥ ३ ॥
 अह ते वाणरसुहडा, अङ्गयपमुहा बलेण परिपुण्णा । लङ्कापुरिं पविट्ठा, धयलत्तसमुज्जलसिरीया ॥ ४ ॥
 भेसन्ता नयरज्जा, दहमुहभवणङ्गणं समणुपत्ता । दट्टण कोट्टिमत्तलं, जलगाहसमाउलं भीया ॥ ५ ॥
 अचलन्तनयणरूवाइं तत्थ नाऊण कोट्टिमकयाइं । रावणभवणदुवारं, संपत्ता गिरिगुहायारं ॥ ६ ॥
 तो इन्दनीलकोट्टिम-तलम्मि सीहा करालमुहजन्ता । दट्टण वाणरा ते, जाया य पलायणुज्जुत्ता ॥ ७ ॥
 परिमुणियकारणेणं, नियत्तिया अङ्गएण दुक्खेहिं । पुणरवि पविसन्ति घरं, सबतो दिन्नदिट्ठीया ॥ ८ ॥
 फलिहमयविमलकुड्डे, आगासं चेष मन्नमाणा ते । कट्ठिणसिलवडियसिरा, पडिया बहवे पवयजोहा ॥ ९ ॥
 परिफुडियजन्तु-कोप्पर, अइगाहं वेयणापरिगाहिया । पविसन्ति जाणियपहा, अन्नं कच्छन्तरं भीया ॥ १० ॥

साधर्मियोंके ऊपर वात्सल्य रखनेवाले और परमेष्ठीमें श्रद्धालु वे यक्ष अपने अपने स्थान पर चले गये । (४९) इस तरह जो मनुष्य इस लोकमें जिनेन्द्रके शासनमें भक्तियुक्त, उस्ताहशील एवं निश्चित मनवाले होते हैं वे धीर सुख-सुविधा प्रदान करनेवाली विद्या तो क्या विमल मोक्षमें भी जाते हैं । (५०)

॥ पञ्चचरितमें सम्यग्दृष्टिदेवका कीर्तन नामक सड़सठवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

६८. बहुरूपा विद्याकी साधना

यक्षपति शान्त हुआ है यह जानकर दर्प एवं अमर्षसे युक्त अंगद किष्किन्धिदण्ड नामक हाथी पर सवार हुआ । (१) हाथमें नाना प्रकारके आयुध लिये हुए तथा नानाविध वाहन पर आरूढ़ कुमुद, इन्द्रनील आदि सुभट-लंकापुरीकी ओर चले । (२) कुङ्कुमका लेप किये हुए, नाना अलंकारोंसे विभूषित शरीरवाले तथा बली और प्रचण्ड वे कुमारवर एक साथ बजाये जानेवाले बाद्योंकी ध्वनिसे गीयमान थे । (३) ध्वज एवं छत्रके कारण समुज्ज्वल कान्तिवाले तथा सेनासे परिपूर्ण वे अंगद आदि वानरसुभट लंकामें प्रविष्ट हुए । (४) नगरजनोंको डराते हुए वे रावणके महलके आँगनमें जा पहुँचे । वहाँ पानी और माहोंसे भरी हुई रत्नमय भूमिको देखकर वे भयभीत हुए । (५) उस रत्नमय भूमिपर बनाई गई अचल नेत्रोंवाली आकृतियोंको जानकर वे रावणके भवनके पर्वतकी गुफा जैसे आकारवाले द्वारके पास पहुँचे । (६) वहाँ इन्द्रनीलमणिके बने हुए भूमिखलमें भयंकर यंत्रोंसे युक्त मुखवाले सिंहोंको देखकर वे वानर पलायनके लिए उद्यत हुए । (७) कारणसे अवगत अंगदके द्वारा कठिनाईसे वापस लौटाये गये उन वानर-सुभटोंने चारों ओर दृष्टि रखकर पुनः भवनमें प्रवेश किया । (८) स्फटिकमय स्वच्छ दीवारको आकाश माननेवाले उन वानर-योद्धाओंके सिर कठोर शिलाके साथ टकराये और बहुतसे तो नीचे गिर पड़े । (९) घुटने और कोहनी भग्न होनेके कारण अत्यधिक वेदनासे युक्त और भयभीत वे मार्गसे अवगत होनेपर दूसरे

तत्थ वि य कज्जलनिभा, वसुंधरा इन्दनोलनिम्माया । संसइयदिन्नपसरा, नाउं कट्टिणं न देन्ति पयं ॥ ११ ॥
 दिट्ठा य तथ एक्का, तरुणी फल्लिहामयम्मि सोवाणे । पुच्छन्ति दिसामूढा, भदे! कत्तो जिणहरं तं? ॥ १२ ॥
 जाहे सा पड्वियणं, न देइ ताणं विमग्गामाणाणं । ताहे करेहि फुसियं, लेप्पयमहिला विजाणन्ति ॥ १३ ॥
 अह ते विलक्खवयणा, अन्नं कच्छन्तरं समल्लीणा । तत्थ महानीलमए, कुड्डे सहस ति आवडिया ॥ १४ ॥
 ते चक्खुवज्जिया इव, सुहडा एक्केकमं अपेच्छन्ता । परिमुसिज्जाऽऽडत्ता, करेसु अइदीहकुड्डाई ॥ १५ ॥
 परिमुसमाणेहि नरो, सज्जीवो जाणिओ य वायाए । केसेसु खरं गहिओ, भणिओ दावेहि सन्तिहरं ॥ १६ ॥
 एवं ते पवयभडा, पुरओ पहदेसयं नरं काउं । सवे वि समणुपत्ता, सन्तिजिणिन्दस्स वरभवणं ॥ १७ ॥
 दिट्ठं सरयन्मनिभं, नाणाविहचिच्चयम्मकयसोहं । ऊसियधयावडायं, सग्गविमाणं व ओइणं ॥ १८ ॥
 वज्जिन्दनोल-मरगय-मालाओऊलभूसियदुवारं । नाणारयणसमुज्जल-सुयन्धवरकुसुमकयपूर्यं ॥ १९ ॥
 विच्छड्डिय वलियम्मं, कालागरुवहलधूवगन्धड्डुं । तक्खणमेत्तुप्पाडिय-वरकमलकयच्चणविहाणं ॥ २० ॥
 एयारिसं च दट्ठं, जिणभवणं विग्गिया ताओ जोहा । पणमन्ति सन्तिनाहं, तिक्खुत्तपयाहिणावत्तं ॥ २१ ॥
 एवं सो निययवलं, बाहिरकच्छन्तरे ठवेऊणं । पविसरइ सन्तिभवणं, दढहियओ अङ्गयकुमारो ॥ २२ ॥
 भावेण वन्दणं सो, काऊणं तस्स पेच्छए पुरओ । कोट्टिमत्ते निविट्ठं, जोगत्थं रक्खसाहिवइं ॥ २३ ॥
 अह भणइ अङ्गओ तं, रावण ! किं ते समुट्ठिओ डम्भो । तिजगुत्तमस्स पुरओ, हरिऊणं जणयरायसुयं? ॥ २४ ॥
 धिद्धि ! ति रक्खसाहम !, दुच्चरियावास ! तुज्ज एताहे । तं ते करेमि जं ते, न य कुणइ जमो सुरुट्ठो वि ॥ २५ ॥
 अह सो सुग्गीवसुओ, महयं काऊण कलयलारावं । आरुट्ठो दहवयणं, पहणइ वत्थेण वल्लहत्थो ॥ २६ ॥

दरवाजेमें प्रविष्ट हुए । (१०) वहाँपर भी इन्द्रनील-मणिसे निर्मित काजलके समान श्यामवर्णवाला आँगन था । उसमेंसे गुजरना शंकास्पद है ऐसा जानकर वे जोरसे पैर नहीं रखते थे । (११) वहाँ स्फटिकमय सोपानमें उन्होंने एक तरुणी देखी । दिग्भ्रान्त उन्होंने उससे पूछा कि, भद्रे ! वह जिनमन्दिर कहीं आया ? (१२) खोजनेवाले उनकी जब उसने जवाब नहीं दिया तब उन्होंने स्पर्श किया तो ज्ञात हुआ कि यह लेप्पयमहिला (विविध पदार्थोंके लेपसे बनाई गई स्त्री-मूर्ति) है । (१३) लज्जित मुखवाले वे एक दूसरे कक्षमें गये । वहाँ महानोलमणिकी बनी हुई दीवारके साथ एकदम टकराये । (१४) अन्धोंकी भाँति एक-दूसरेको न देखते हुए वे सुभट अतिदीर्घ दीवारोंको हाथसे छूने लगे । (१५) छू-छू करके आगे बढ़नेवाले उन्होंने वाणोंसे सजीव मनुष्यको जान उसे बालोंसे निष्ठुरतापूर्वक पकड़ा और कहा कि शान्तिगृह दिखाओ । (१६) इस प्रकार मार्गदर्शक मनुष्यको आगे करके वे सब धानर-सुभट शान्तिजिनेन्द्रके उत्तम भवनमें जा पहुँचे । (१७) उन्होंने शरत्कालीन मेघके समान सफेद, नानाविध चित्रकर्मसे सजाये गये तथा ऊपर उठी हुई ध्वजा-पताकावाले उस भवनको नीचे उतरे हुए स्वर्गविमानकी भाँति देखा । (१८) वज्र, इन्द्रनील एवं मरकतकी मालाओं और रेशमी वस्त्रोंसे विभूषित द्वारवाले, नाना प्रकारके रत्नोंसे देदीप्यमान, उत्तम सुगन्धित पुष्पोंसे जिसमें पूजा की गई है ऐसे, नैवेद्यसे भरे हुए, कालागरुकी धनी धूपसे गन्धयुक्त, उसी समय तोड़े गये उत्तम कमलोंसे जहाँ पूजा की गई है ऐसे उस जिनमन्दिरको देखकर उन विस्मित योद्धाओंने तीन बार प्रदक्षिणा करके शान्तिनाथ भगवान्को प्रणाम किया । (१६-२१)

इस प्रकार अपनी सेनाको बाहरके कक्षमें रखकर दृढ़ हृदयवाले अंगदकुमारने भगवान् शान्तिनाथके मन्दिरमें प्रवेश किया । (२२) वहाँ उन्हें भावपूर्वक वन्दन करके उसने सामने रत्नमय भूमिपर योगस्थ राक्षसाधिपति रावणको देखा । (२३) तब अंगदने उसे कहा कि, हे रावण ! जनकराजकी पुत्री सीताका अपहरण करके तीनों लोकोंमें उत्तम ऐसे भगवान्के सम्मुख तूने यह क्या दम्भका अनुष्ठान किया है ? (२४) हे अधम राक्षस ! हे दुश्चरितके आवास ! तुझे धिक्कार है । अत्यधिक रुष्ट यम भी जो नहीं कर सकता ऐसा हाल मैं अब तेरा कहूँगा । (२५) इसके पश्चात् बलवान् हाथवाले और गुस्सेमें आये हुए सुग्रीवपुत्र उस अंगदने बहुत ही शोर मचाकर रावणको कपड़ेके (कोड़ेसे) पीटा । (२६) उसके आगे रले गये सहस्रदल

तस्स पुरओ ठियाई, तुरियं घेत्तूण सहसवत्ताई । पहणइ धरणिनिविट्ठं, अहोमुहं जुवइवग्गं सो ॥ २७ ॥
 सो तस्स अक्खमालं, कराउ हरिऊण तोडइ कुमारो । पुणरवि संघेइ लहुं, भूओ अप्पेइ विहसन्तो ॥ २८ ॥
 सा तस्स अक्खमाला, करम्मि सुविमुद्धफलिहन्मिमाया । रेहइ डोलायन्ती, मेहस्स बलाहपन्ति व ॥ २९ ॥
 वररयणपज्जलन्ती, छेत्तूण य कण्ठियं अइतुरन्तो । निययंसुएण बन्धइ, गलए लङ्काहिवं एत्तो ॥ ३० ॥
 घेत्तूण य तं वत्थं, उल्लम्बइ रहसपूरियामरिसो । पुणरवि य भवणथम्भे, दहवयणं बन्धइ कुमारो ॥ ३१ ॥
 दीणारेसु हसन्तो, पञ्चसु विक्खेइ रक्खसाहिवई । निययपुरिसस्स हत्थे, सवइ पुणो तिबसद्देण ॥ ३२ ॥
 कण्णोसु कुण्डलाई, जुवईण लएइ अङ्गयकुमारो । सिरभूसणाई गेण्हइ, चलणेसु य नेउराई पुणो ॥ ३३ ॥
 अन्नाएँ हरइ वत्थं, अन्नन्नं बन्धिऊण केसेसु । सहसा करेण पेळइ, बलपरिहत्थो परिभमन्तो ॥ ३४ ॥
 एवं समाउलं तं, सहसा अन्तेउरं कुमारेणं । आलोडियं नराहिव!, वसहेण व गोउलं सबं ॥ ३५ ॥
 पुणरवि भणइ दहमुहं, रे पाव! छलेण एस जणयसुया । माया काऊण हिया, एक्कागी हीणसत्तेणं ॥ ३६ ॥
 संपइ तुज्झ समक्खं, एयं दइयायणं समत्थं ते । दहमुह! हरामि रुम्भसु, जइ दढसत्ती समुबहसि ॥ ३७ ॥
 एव भणिऊण तो सो, सिग्घं मन्दोयरी महादेवी । केसेसु समायङ्गइ, लच्छी भरहो व चक्कहरो ॥ ३८ ॥
 पेच्छसु मए दसाणण!, नीया हिययस्स वल्लइ तुज्झ । वाणरवइस्स होही, अह चामरगाहिणी एसा ॥ ३९ ॥
 पचलियसबाहरणा, हत्थेण घणंसुयं समारन्ती । पगलियनयणंसुजला, पविसइ दइयस्स भुयविवरं ॥ ४० ॥
 हा नाह! परिचायसु, नीया हं वाणरेण पावेणं । तुज्झ पुरओ महायस!, विलवन्ती दीणकट्टुणाई ॥ ४१ ॥
 किं तुज्झ होहइ पह!, एएण उवासिएण ज्ञाणेणं । जेण इमस्स न छिन्दसि, सीसं चिय चन्दहासेणं ॥ ४२ ॥
 एयाणि य अन्नाणि य, विलवइ मन्दोयरी पयलियंसु । तह वि य गाढयरं सो, धीरो ज्ञाणं समारुहइ ॥ ४३ ॥

कमलोंको जल्दीसे उठाकर उसने जमीनपर बैठे हुए अश्वमेध युवतिवर्गको पीटा । (२७) उसके हाथमें रही हुई विशुद्ध स्फटिककी बनी हुई डोलती अक्षमाला बादलमें बगुलेकी पंक्ति-सी शोभित हो रही थी । (२८) उत्तम रत्नोंसे देदीप्यमान वह माला उस अंगदने बहुत ही जल्दी तोड़ डाली । बादमें अपने वस्त्रसे रावणको गलेमें बाँधा । (२९-३०) एकदम क्रोधमें भरे हुए अंगदने वस्त्रको लटकवाया । बादमें कुमारने मन्दिरके स्तम्भके साथ रावणको बाँधा । (३१) हँसते हुए उसने राक्षसाधिपति को पाँच दीनारमें अपने आदर्मीके हाथ बेच दिया । फिर कठोर शब्दसे उसे गाली-गलौच करने लगा । (३२) अंगदकुमारने युवतियोंके कानोंमेंसे कुण्डल ले लिये, शिरोभूषण तथा पैरोंमेंसे नूपुर भी ले लिये । (३३) दूसरी किसी स्त्रीका वस्त्र हर लिया । एक-दूसरीको बालोंसे बाँधकर चारों ओर घूमता हुआ बली वह सहसा उन्हें हाथसे पीटने लगा । (३४) हे राजन् ! जिस तरह एक साँढ़ सारे गोकुलको क्षुब्धकर देता है उसी तरह अंगदकुमारने उस अन्तःपुरको एकदम क्षुब्ध कर दिया । (३५)

उसने रावणसे पुनः कहा कि, रे पापी ! निन्दनीय तूने छलसे और माया करके एकाकी इस सीताका अपहरण किया है । (३६) हे रावण ! तेरे सामने ही मैं इन सब स्त्रियोंका अपहरण करता हूँ । यदि ताकत हो तो रोक । (३७) ऐसा कहकर चक्रवर्ती भरतने जिस तरह लक्ष्मी को खँचा था उसी तरह उसने पटरानी मन्दोदरीको बालोंसे पकड़ कर खँचा । (३८) हे रावण ! देख तेरी हृदयवल्लभाको मैं ले जा रहा हूँ । यह वानरपतिकी चामरधारिणी होगी । (३९) जिसके सब आभरण गिर गये हैं ऐसी वह मन्दोदरी हाथसे घन वस्त्र सँभालती हुई और आँखोंसे अश्रजल बहाती हुई पतिके भुज-विवरमें प्रवेश करने लगी । (४०) हा नाथ ! रक्षा करो । हे महायश ! यह पापी वानर आपके सामने दीन और करुण विलाप करती हुई मुझे ले जा रहा है । (४१) हे प्रभो ! आपके इस ध्यानकी उपासनासे क्या होगा यदि चन्द्रहास तलवारसे इसका सिर आप नहीं काटते । (४२) आँसू बहाती हुई मन्दोदरीने ऐसा तथा दूसरा भी विलाप किया, फिर भी धीर वह प्रगाढ़ ध्यानमें लीन रहा । (४३) विद्याकी

न य सुणइ नेय पेच्छइ, सबेसु य इन्दिएसु गुत्सेसु । विज्जासाहणपरमो, नवरं ज्ञाणेक्कगयचित्तो ॥ ४४ ॥
 मेरु इ निप्पकम्पो, अक्खोभो सायरो इव महप्पा । चिन्तेइ एगमणसो, विज्जं रामो इ जणयसुयं ॥ ४५ ॥
 एयम्मि देसयाले, उज्जोयन्ती दिसाउ सबाओ । जयसइं कुणमाणी, बहुरूवा आगया विज्जा ॥ ४६ ॥
 तो भणइ महाविज्जा, सिद्धा हं तुज्झ कारणज्जुत्ता । सामिय! देहाऽऽणत्तिं, सज्झं मे सयल्लोके ॥ ४७ ॥
 एक्कं मोत्तूण प्हू!, चक्कहरं तिहुयणं अपरिसेसं । सिग्घं करेमिह वसे, लक्खण-रामेसु का गणणा? ॥ ४८ ॥
 भणिया य रावणेणं, विज्जा नत्थेत्थ कोइ संदेहो । नवरं चिन्तियमेत्ता, एज्जसु मे भगवई! सिग्घं ॥ ४९ ॥
 जावं समत्तनियमो नमिऊण विज्जं, लक्काहिवो ति परिवारइ सन्तिगेहं ।
 मन्दोयरिं विमलक्कित्तिधरिं पमोत्तुं, तावं गओ पउमणाहसहाणिओयं ॥ ५० ॥

॥ इय पउमचरिए बहुरूवासाहणं नाम अडसट्ठिमं पव्वं समत्तं ॥

६९. रावणचिन्ताविहाणपर्व

अह जुवइसहस्साइं, दस अट्ट य तस्स पणमिउं चलणे । गलियंसुलोयणाइं, जपन्ति प्हू! निसामेहि ॥ १ ॥
 सन्तेण तुमे सामिय!, विज्जाहरसयल्लवसुमइवईणं । खलियारियाउ अग्घे, अज्जं सुग्गीवपुत्तेणं ॥ २ ॥
 सुणिऊण ताण वयणं, रुट्ठो लक्काहिवो भणइ एत्तो । ववहरइ जो हु एवं, वद्धो सो मच्चुपासेहिं ॥ ३ ॥
 मुच्चह कोवारम्भं, संपइ मा होइ उस्तुयमणाओ । सुग्गीवं निज्जीवं, करेमि समरे न संदेहो ॥ ४ ॥
 भामण्डलमाईमा, अन्ने वि य दुट्ठखेयरा सबे । मारेमि निच्छएणं, का सत्ता पायचारेहिं ॥ ५ ॥

साधनामें तत्पर तथा ध्यानमें एकाग्र मनवाला वह सभी इन्द्रियोंमें संयत होनेसे न तो सुनता था और न देखता ही था । (४४) मेरुकी भाँति निष्प्रकम्प और सागरकी भाँति अश्लेष वह महात्मा, एकाग्र मनसे सीताका चिन्तन करनेवाले रामकी भाँति, विद्याका चिन्तन कर रहा था । (४५) इसी समय सब दिशाओंको प्रज्वलित करनेवाली तथा जयघोष करती हुई बहुरूपा विद्या आई । (४६) तब उस महाविद्याने कहा कि, हे स्वामी! मैं सिद्ध हुई हूँ । आपके लिए मैं कार्य करनेके लिए उद्यत हूँ । आप आज्ञा दें । मेरे लिए सारा त्रिलोक साध्य है । (४७) हे प्रभो! एक चक्रवर्तीको छेड़ सारा त्रिभुवन मैं शीघ्र ही वसमें कर सकती हूँ । लक्ष्मण और रामका तो क्या हिसाब है? (४८) रावणने उसे कहा कि, भगवती विद्ये! इसमें कोई सन्देह नहीं है । सोचते ही तुम शीघ्र ही मेरे पास आ जाना । (४९) जिसका नियम समाप्त हुआ है ऐसा लंकेरा रावण विद्याको नमस्कार करके जैसे ही भगवान् शान्तिनाथके मन्दिरमें प्रदक्षिणा देने लगा वैसे ही निर्मल यशको धारण करनेवाली मन्दोदरीको छेड़कर सेनाके साथ वह अंगद रामके पास चला गया । (५०)

॥ पद्यचरितमें बहुरूपा विद्याकी साधना नामक अडसठवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

६९. रावणकी चिन्ता

इसके अनन्तर रोती हुई अठारह हजार युवतियोंने उस रावणके चरणोंमें प्रणाम करके कहा कि, हे प्रभो! आप सुनें । (१) हे स्वामी! आपके सब विद्याधर राजाओंके रहते सुग्रीवके पुत्र अंगदने आज हमारा अपमान किया है । (२) उनका कथन सुन रुष्ट लंकाधिपने कहा कि जो ऐसा व्यवहार करता है वह मृत्युके पारासे निश्चय ही जकड़ा गया है । (३) अब क्रोध छोड़ो । मनमें चिन्ता मत रखो । इसमें सन्देह नहीं कि युद्धमें सुग्रीवको निष्प्राण करूँगा । (४) भामण्डल आदि दूसरे सब दुष्ट विद्याधरोंको अवश्य ही मारूँगा तो फिर पादचारः मनुष्योंकी तो बात ही क्या है? (५) इस तरह

संथाविज्जण एवं, महिलाओ निग्गओ जिणहराओ । पविसइ मज्जणहरयं, उवसाहियसबकरणिज्जं ॥ ६ ॥
 एत्तो वेतुलियमए, मज्जणपीडे विहाइ घणसामो । मुणिसुबयजिणवसहो, पण्डुसिलाए ष अभिसेए ॥ ७ ॥
 सुविसुद्धरयण-कञ्चणमएसु कुम्भेसु सलिलपुण्णेषु । सुमहग्घमणिमएसु य, अन्नेसु य ससियरनिहेसु ॥ ८ ॥
 गम्भीरभेरि-काहल-मुइङ्ग-तलिमा-सुसङ्खपउराई । एत्तो पवाइयाई, तूराई मेहघोसाई ॥ ९ ॥
 उवट्टणेषु सुरभिसु, नाणाविहचुण्णवण्णगन्धेहिं । मज्जिज्जइ दणुइन्दो, जुवईहि मयङ्कवयणाहिं ॥ १० ॥
 अङ्गसुहसीयलेणं, सलिलेणं सुरहिगन्धपवरेणं । कुन्तलकयकरणिज्जो, ण्हाओ लङ्काहिवो विहिणा ॥ ११ ॥
 सो हार-कडय-कुण्डल-मउडालंकारभूसियसरीरो । पविसरइ सन्तिभवणं, नाणाविहकुसुमकयपूयं ॥ १२ ॥
 अह विरइज्जण पूयं, काऊण य वन्दणं तिपरिवारं । पविसरइ लीलायन्तो, अह भोयणमण्डवं धीरो ॥ १३ ॥
 दिन्नासणोवविट्ठो, सेसा वि भडा सएसु ठाणेषु । अत्थरय-वरमसूरय-वेत्तासणकञ्चणमएसु ॥ १४ ॥
 दिन्ना भिङ्गारविही, उवणीयं भोयणं बहुवियप्यं । मुज्जइ लङ्काहिवई, समयं चिय सबसुहडेहिं ॥ १५ ॥
 अट्टसयखज्जयजुयं, अह तं चउसट्टिवज्जणवियप्यं । सोलसओयणमेयं, विहिणा जिमिओ वराहारं ॥ १६ ॥
 निवत्तभोयणविही, लीलायन्तो भडेहिं परिक्किणो । क्रीलणभूमिमह गओ, विज्जाएँ परिक्खणं कुणइ ॥ १७ ॥
 विज्जाएँ रक्खसवई, करेइ नाणाविहाई रूवाई । पणइ करेसु भूमिं, जणयन्तो रिउज्जायप्यं ॥ १८ ॥
 एत्थन्तरे पवुत्ता, निययभडा दहमुहं कयपणामा । मोत्तूण तुमं रामं, को अन्नो घाइउं सत्तो ? ॥ १९ ॥
 सो एव भणिगयेत्तो, सबालंकारभूसियसरीरो । पविसइ पमउज्जाणं, इन्दो इव नन्दणं मुइओ ॥ २० ॥

स्त्रियोंको आश्वासन देकर वह जिनमन्दिरमेंसे बाहर निकला और सब उपकरणोंसे सम्पन्न स्नानगृहमें प्रवेश किया। (६) जिस अभियेकके समय पाण्डुशिला पर मुनि सुव्रत जिनवर शोभित हो रहे थे उसी तरह वैदूर्यके बने हुए स्नानपीठ पर बादलोंके समान श्याम वर्णका रावण शोभित हो रहा था। (७) मणियोंसे खचित अत्यन्त विशुद्ध सोनेके बने घड़े तथा चन्द्रमाकी किरणोंके समान दूसरे बहुत महँगे मणिमय घड़े पानासे भरे हुए थे। (८) उधर गम्भीर आवाज करनेवाली भेरि, काहल, मृदंग, तलिमा तथा सुन्दर शंखसे युक्त बादल की भाँति गर्जना करनेवाले वाद्य बज रहे थे। (९) चन्द्रमाके समान सुन्दर मुखवाली युवतियाँ रावणको नानाविध चूर्ण, वर्ण एवं गन्धसे युक्त सुगन्धित उवटन मल रही थीं। (१०) बालोंमें जो कार्य करना था वह करके रावणने सुगन्धित गन्धसे युक्त शरीरको सुख देनेवाले शीतल जलसे विधिवत् स्नान किया। (११) हार, कटक, कुण्डल, मुकुट तथा अलंकारोंसे विभूषित शरीरवाले उसने भगवान् शान्तिनाथके मन्दिरमें प्रवेश किया और नानाविध पुष्पोंसे पूजा की। (१२) पूजाकी रचना करके तथा तीन बार प्रदक्षिणा देकर वन्दन करके धीरे वह लीलापूर्वक भोजनमण्डपमें प्रविष्ट हुआ। (१३) दिये गये आसन पर वह बैठा। बाकीके सुभट भी अपने-अपने निर्मल मशूरक (बख या चर्मका वृत्ताकार आसन), वेत्तासन तथा सोनेके बने हुए आसनों पर बैठे। (१४) हाथ-पैर धोनेके लिए जलपात्र दिये गये। बहुत प्रकारका भोजन लाया गया। सब सुभटोंके साथ रावणने भोजन किया। (१५) एक सौ आठ खाद्य पदार्थोंसे युक्त, चौसठ प्रकारके व्यंजनोंवाले तथा सोलह प्रकारके चाबलसे सम्पन्न उत्तम आहार उसने विधिपूर्वक खाया। (१६) भोजनके कार्यसे निवृत्त हो सुभटोंसे घिरा हुआ वह लीला करता हुआ क्रीडाभूमिमें गया और वहाँ विद्याकी परीक्षा की। (१७) विद्याके बलसे राक्षसपतिने नानाविध रूप किये और शत्रुओंको कम्पित करते हुए उसने हाथोंसे जमीनको ठोका। (१८) तब अपने सुभटोंने रावणको प्रणाम करके कहा कि आपको छोड़ दूसरा कौन रामको मारनेमें समर्थ है? (१९) इस प्रकार कहने पर सब अलंकारोंसे भूषित शरीरवाले उसने मुदित हो इन्द्र जिस तरह नन्दनवनमें प्रवेश करता है उस तरह पद्मोद्यानमें प्रवेश किया। (२०) रावणकी विशाल सेनाको देखकर विदीर्ण हृदयवाली सीता सोचने लगी कि इसे इन्द्र भी जीत नहीं सकता। (२१) मनमें इस तरह चिन्तित सीताको रावणने कहा कि, हे

१. एत्तो फलिहमणिमए—प्रत्य० । २. पञ्चमुज्जाणं—प्रत्य० ।

ददृण जणयतणया, सेत्रं लङ्काहिवस्स अइबहुयं । चिन्तेइ वुण्णहियया, न य जिणइ इमं सुरिन्दो वि ॥ २१ ॥
 सा एव उत्सुयमणा, सीया लङ्काहिवेण तो भणिया । पावेण मए सुन्दरि, हरिया छम्मेण विल्वन्ती ॥ २२ ॥
 गहियं वयं किसोयरि !, अणन्तविरियस्स पायमूलम्मि । अपसन्ना परमहिला, न भुञ्जियवा मए निययं ॥ २३ ॥
 सुमरन्तेण वयं तं, न मए रमिया तुमं विसालच्छी । रमिहामि पुणो सुन्दरि !, संपइ आलम्बणं छेतुं ॥ २४ ॥
 पुप्फविमाणारूढा, पेच्छसु सयलं सक्राणणं पुहइं । भुञ्जसु उत्तमसोक्खं, मज्झ पसाएण ससिवयणे ! ॥ २५ ॥
 सुणिऊण इमं सीया, गगगरकण्ठेण भणइ दहवयणं । निसुणेहि मज्झ वयणं, जइ मे नेहं समुवहसि ॥ २६ ॥
 घणकोववसगएण वि, पउमो भामण्डलो य सोमिच्ची । एए न घाइयवा, लङ्काहिव ! अहिसुहावडिया ॥ २७ ॥
 ताव य जीवामि, अहं जाव य एयाण पुरिससीहाणं । न सुणेमि मरणसहं, उवियणिज्जं अयण्णसुहं ॥ २८ ॥
 सा जंपिऊण एव, पडिया धरणीयले गया मोहं । दिट्ठा य रावणेणं, मरणावत्था पयलियंसु ॥ २९ ॥
 मिउमाणसो खणेणं, जाओ परिचिन्तिउं समादत्तो । कम्मोयएण बद्धो, को वि सिणेहो अहो गरुओ ॥ ३० ॥
 धिद्धि त्ति गरहणिज्जं, पावेण मए इमं कयं कम्मं । अन्नोन्नपोइपमुहं, विओइयं जेणिमं मिथुणं ॥ ३१ ॥
 ससि-पुण्डरीयधवलं, निययकुलं उत्तमं कयं मलिणं । परमहिलाए कएणं, वम्महअणियत्तचित्तेणं ॥ ३२ ॥
 धिद्धी ! अहो ! अकज्जं, महिला जं तत्थ पुरिससीहाणं । अवहरिऊण वणाओ, इहाऽऽणिया मयणमूढेणं ॥ ३३ ॥
 नरयस्स महावीही, कडिणा सगगगल अणयभूमो । सरिय व कुडिलहियया, वज्जेयवा हवइ नारी ॥ ३४ ॥
 जा पढमदिट्ठसन्ती, अमएण व मज्झ फुसइ अज्जाइं । सा परपसत्तचित्ता, उवियणिज्जा इहं जाया ॥ ३५ ॥
 जइ वि य इच्छेज्ज ममं, संपइ एसा विमुक्कसम्भावा । तह वि न य जायइ धिई, अवमाणसुदूमियमणस्स ॥ ३६ ॥
 भाया मे आसि जया, विभीसणो निययमेव अणुकूलो । उवएसपरो तइया, न मणो पीइं समल्लोणो ॥ ३७ ॥

सुन्दरी ! पापी मैंने विलाप करती हुई तुम्हारा धोखेसे अपहरण किया है। (२२) हे कुशोदरी ! अनन्तवीर्यके चरणोंमें मैंने व्रत लिया है कि अप्रसन्न परनारीका मैं नियमेन उपभोग नहीं करूँगा। (२३) हे विशालाक्षी ! उस व्रतको याद करके मैंने तुम्हारे साथ विलास किड़ा नहीं की है। हे सुन्दरी ! अब रामरूपी आलम्बनका नाश करके मैं तुम्हारे साथ रमण करूँगा। (२४) हे शशिवदने ! पुष्पक विमानमें आरूढ़ होकर तुम वनोंसे युक्त सारी पृथ्वी देखो और मेरे प्रसादसे उत्तम सुखका उपभोग करो। (२५) यह सुनकर गद्गद कण्ठसे सीताने रावणसे कहा कि मेरा कहना सुन। हे लंकाधिप ! यदि तेरा मुकपर स्नेह है तो क्रोधके अत्यधिक वशीभूत होने पर भी संग्राममें सामने आयेहुए राम लक्ष्मण और भामण्डल इनको मत मारना। (२६-२७) मैं तभी तक जीती रहूँगी जब तक इन पुरुषसिंहोंके बारेमें कानसे असुखकर और उद्वेगकर मरण शब्द नहीं सुनती। (२८) ऐसा कहकर वह जमीन पर गिर पड़ी और बेसुध हो गई। आँसू बहाती हुई उसे रावणने मरणावस्थामें देखा। (२९) वह एकदम कोमल हृदयवाला हो कर सोचने लगा कि अहो, कर्मोदयके कारण मैं किसी भारी स्नेहसे बंधा हुआ हूँ। (३०) धिक्कार है। पापी मैंने यह निन्दनीय कार्य किया है, जिससे एक-दूसरे पर प्रेम रखनेवाले इस जोड़ेको मैंने विमुक्त कर दिया है। (३१) परनारीके लिए काममें लीन चित्तवाले मैंने चन्द्र एवं पुण्डरीकके समान सफेद और उत्तम अपने कुलको मलिन किया है। (३२) पुरुषोंमें सिंहके समान रामकी स्त्रीका वनमेंसे अपहरण करके कामसे विमोहित मैं जो यहाँ लाया हूँ उस अकार्यके लिए मुझे धिक्कार है। (३३) नरकके विशाल मार्ग जैसी, स्वर्गकी कठिन अर्गलाके समान, अनौतिकी भूमि सरीखी और नदीकी भाँति कुटिल हृदयवाली स्त्रीका त्याग करना चाहिए। (३४) जो पहली बार देखते ही अमृतकी भाँति मेरे अंगोंको छूने लगी उसका चित्त तो दूसरेमें लगा है, अतः वह मेरे लिए उद्वेगकर हो गई है। (३५) रामके प्रति जो सद्भाव है उसका परित्याग करके यदि यह मुझे चाहे भी, तो अपमानसे दुःखित मनवाले मुझे धृति नहीं होगी। (३६) सतत अनुकूल मेरा भाई विभीषण जब हितका उपदेश देता था तब भी मनमें अनुराग नहीं हुआ। (३७) महासुभट पकड़े गये हैं, दूसरे भी बड़े बड़े योद्धा मारे गये हैं और राम अपमानित

बद्धा य महासुहृदा, अन्ने वि विवाइया पवरजोहा । अवमाणिओ य रामो, संपइ मे केरिसी पीई ? ॥ ३८ ॥
 जइ वि सभप्पेमि अहं, रामस्स किवाएँ जणयनिवर्तणया । लोओ दुग्गहहियओ, असत्तिमन्तं गणेही मे ॥ ३९ ॥
 इह सोह-गरुडकेऊ, संगामे राम-लक्खणे जिणितं । परमविभवेण सीया, पच्छा ताणं समप्पे हं ॥ ४० ॥
 न य पोरुसस्स हाणी, एव कए निम्मला य मे कित्ती । होहइ समथलोए, तम्हा ववसामि संगामं ॥ ४१ ॥
 एव भणिऊण तो सो, निययघरं पथिओ महिड्डीओ । सुमरइ वेरियजणियं, दहवयणो परिहवं ताहे ॥ ४२ ॥
 अह तक्खजग्गि रुट्ठो, जंपइ सुग्गीवअङ्गए वेतुं । मज्झाउ दो वि अट्ठे, करेमि इह चन्द्रहासेणं ॥ ४३ ॥
 भामण्डलं पि वेत्तुं, पावं दढसङ्कलाहि सुनिवद्धं । मोगगरवायाहिहियं, करेमि गयजोवियं अज्ज ॥ ४४ ॥
 करवत्तेण मरुसुयं, फालेमिह कट्टजन्तपडिबद्धं । मारेमि सेसपुहडे, लक्खणरामे पमोत्तूणं ॥ ४५ ॥
 एवं निच्छयहियए, जाए लङ्काहिंवे निमित्ताई । जायाइ बहुविहाई, मगहवई अजयवन्ताई ॥ ४६ ॥
 अक्को आउहसरिसो, परिवेसो अन्धरे फरुसवण्णो । नट्ठो सयलसमत्थो, रयगीचन्दो भएणेव ॥ ४७ ॥
 जाओ य भूमिकम्पो, घोरा निवडन्ति तत्थ निग्वाया । उक्का य रुहिरवण्णा, पुबडिसा चेव दिप्पन्तो ॥ ४८ ॥
 जालामुहो सिवा वि य, घोरं वाहरइ उत्तरदिसाए । हेसन्ति फरुसविरसं, कम्पियगीवा महातुरया ॥ ४९ ॥
 हत्थी रडन्ति घोरं, पहणन्ता वसुमई सहत्थेणं । मुञ्चन्ति नयणसलिलं, पडिमाओ देवयाणं पि ॥ ५० ॥
 वासन्ति करयरवं, रिट्ठा वि य दिणयरं पलोएन्ता । भज्जन्ति महारुक्खा, पडन्ति सेलाण सिहराई ॥ ५१ ॥
 विउलाई पि सराई, सहसा सोसं गयाइ सबाई । वुट्ठं च रुहिरवासं, गयणाओ तडयडारावं ॥ ५२ ॥
 एए अन्ने य बहू, उप्पाया दारुणा समुप्पजा । देसाहिवस्स मरणं, साहेन्ति न एत्थ संदेहो ॥ ५३ ॥
 नक्खत्तवलविमुक्को, गहेसु अच्चन्तकुडिलवन्तेसु । वारिज्जन्तो वि तया, अह कङ्खइ रणमुहं माणी ॥ ५४ ॥

हुए हैं। अब मेरी प्रीति कैसी? (३८) कृपा करके मैं यदि रामको सीता सौंप दूँ तो जिनका हृदय मुश्किलसे समझमें आता है ऐसे लोग मुझे अशक्तिशाली समझेंगे। (३९) इस संग्राममें सिंह और गरुड़की ध्वजावाले राम और लक्ष्मणको जीतकर बादमें परम वैभवके साथ उन्हें मैं सीता सौंपूँगा। (४०) ऐसा करनेसे मेरे पौरुषकी हानि नहीं होगी और समस्त लोकमें निर्मल कीर्ति होगी, अतः संग्राम करूँ। (४१) ऐसा कहकर महान ऋद्धिवाले रावणने अपने भवनकी ओर प्रस्थान किया। उस समय वह शत्रुजनित पराभवका स्मरण करने लगा। (४२) रुष्ट वह तत्काल बोला कि सुग्रीव और अंगदको पकड़कर इस चन्द्रहास तलवारसे दोनोंको बीचमेंसे आगे कर दूँगा। (४३) पापी भामण्डलको पकड़कर और मजवूत जंजीरसे बाँधकर मैं आज उसे मुद्गरके प्रहारसे पीट पीटकर चैतन्यहीन बना दूँगा। (४४) काष्ठ-यंत्रमें जकड़े हुए हनुमान्को इस तलवारसे फाड़ डालूँगा। राम और लक्ष्मणको छोड़ शेष सुभटोंको मार डालूँगा। (४५) हे मगधनरेश श्रेणिक! हृदयमें इस तरह निश्चय किये हुए रावणको पराजयसूचक अनेक अपशकुन हुए। (४६) सूर्य आयुषके समान और आकाशभरदल कठोर वर्षावाला हो गया। रातके समय सम्पूर्ण चन्द्र मानों भयसे भाग गया। (४७) भूचाल हुआ। घोर विजलियाँ गिरने लगीं। पूर्व दिशाकी मानो चमकते हों इस तरह रक्तवर्णवाली उल्काएँ गिरने लगीं। (४८) मुँहमें ज्वालावाली शृगाली उत्तरदिशामें भयंकर रूपसे रोने लगी। जिनकी गर्दन काँप रही हैं ऐसे बड़े बड़े घोड़े कठोर और सूखी हिनहिनाहट करने लगे। (४९) अपनी सूटोंसे जमीन पर प्रहार करते हुए हाथी भयंकर रूपसे चिंवाड़ने लगे। देवताओंकी प्रतिमाएँ भी आँसू बहाने लगीं। (५०) सूर्यको देखकर कौए भी कठोर 'का का' ध्वनि करने लगे। (५१) सब बड़े बड़े सरोवर अचानक सूख गये। आकाशमेंसे तड़-तड़-आवाज करती हुई रुधिर की वर्षा हुई। (५२) ये तथा दूसरे भी बहुत-से दारुण उत्पात हुए। इसमें सन्देह नहीं कि ये सब राजाका मरण कहते थे। (५३) ग्रहोंके अत्यन्त कुटिल होनेसे नक्षत्रोंके बलसे रहित वह अभिमानी मना करने पर भी युद्धकी आकांक्षा रखता था। (५४) अपने यशके

१. तणयं—प्रत्यय० ।

निययजसभङ्गभीओ, गाढं वीरेकरसगओ धीरो । सत्थाण वि जाणन्तो, कज्जाकज्जं न लक्खेइ ॥ ५५ ॥
 लङ्काहिवस्स एत्तो, जं हिययत्थं तु कारणं सबं । साहेमि तुज्झ सेणिय, सुणेहि विगहं पमोत्तूणं ॥ ५६ ॥
 जिणिऊण सत्तुसेजं, मोत्तूण य पुत्तवन्धवा सबे । पविसामि ण लङ्का हं, करेमि पच्छा इमं कज्जं ॥ ५७ ॥
 सयलम्मि भरहवासे, उवासेऊण पायचारा हं । बल-सत्ति-कन्तिजुत्ता, ठवेमि विज्जाहरे बहवे ॥ ५८ ॥
 जेणेत्थ वंसे सुरदेवपुज्जा, जिणुत्तमा चक्कहरा य रामा ।
 नारायणा तिबबला महप्पा, जायन्ति तुज्जामलक्कित्तिमन्ता ॥ ५९ ॥

॥ इय पउमचरिए रावणचिंताविहाणं एग्गुणसत्तरं पर्वं समत्तं ॥

७०. उज्जोयविहाणपर्व

तत्तो सो दहवयणो, दियहे अइभासुरे सह भडेहिं । अत्थाणीएँ निविट्ठो, इन्दो इव रिद्धिसंपन्नो ॥ १ ॥
 वरहार-कणयकुण्डल-मउडालंकारभूसियसरीरो । पुलयन्तो निययसहं, अहियं चिन्तावरो जाओ ॥ २ ॥
 भाया य भाणुकण्णो, इन्दइ घणवाहणो महं पुत्ता । हत्थ-पहतथा य भडा, एत्थ पएसे न दीसन्ति ॥ ३ ॥
 ते तत्थ अपेच्छन्तो, रुट्ठो भडभिउडिभासुरं वयणं । काऊण देइ दिट्ठी, दहवयणो चक्करयणस्स ॥ ४ ॥
 रोसपसरन्तहियओ, आउहसाला समुज्जओ गन्तुं । ताव य समुट्ठियाइं, सहसा अइदुण्णिमिताइं ॥ ५ ॥
 अन्नेण वच्चमाणो, पहओ चलणेण पायमग्गम्मि । छिन्नो य तस्स मग्गो, पुरओ वि हु किण्हसप्पेणं ॥ ६ ॥
 हा हा धो ! मा वच्चत्तु, तस्स सुणन्तस्स अकुसला सदा । जाया सहसुप्पाया, सउणा अजयावहा बहवे ॥ ७ ॥

नाशसे भयभीत और एकमात्र शृंगाररसमें ही अत्यन्त लीन वह धीर शास्त्र जानने पर भी कार्य-अकार्यका विवेक नहीं कर सकता था । (५५) हे श्रेणिक ! अब मैं रावणके हृदयमें जो विचार था वह सब तुम्हें कहता हूँ । विग्रहका त्याग करके तुम सुनो । (५६) शत्रुसैन्यको जीतकर, सब पुत्र एवं भाइयोंको छुड़ाकर मैं लंकामें प्रवेश करूँगा । बादमें यह कार्य करूँगा । (५७) सारे भरतक्षेत्रमेंसे मनुष्योंका नाश करके बल, शक्ति व कान्तिसे युक्त बहुत-से विद्याधरोंको स्थापित करूँगा, जिससे इस वंशमें सुरेन्द्रोंके द्वारा पूज्य, उन्नत और विमल कीर्तिवाले तथा अत्यन्त बलशाली महात्मा जिनेश्वर, चक्रवर्ती, बलराम और नारायण पैदा हों । (५८-५९)

॥ पद्मचरितमें रावणकी चिन्ताका विधान नामका उनहत्तरवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

७०. युद्धोद्योग

तब एक अत्यन्त तेजस्वी दिनमें इन्द्रके समान ऋद्धिसम्पन्न रावण सुभटोंके साथ सभास्थानमें बैठा हुआ था । (१) उत्तम हार, सोनेके कुण्डल, मुकुट एवं अलंकारोंसे विभूषित शरीरवाला वह अपनी सभाको देखकर अधिक चिन्तातुर हुआ । (२) भाई भानुकर्ण, मेरे पुत्र इन्द्रजित और मेघवाहन तथा सुभट हस्त एवं प्रहस्त इस प्रदेशमें नहीं दीखते । (३) उन्हें वहाँ न देख स्मृ रावणने सुभटकी भ्रुकुटिसे देदीप्यमान मुख करके चक्ररत्नके ऊपर दृष्टि डाली । (४) हृदयमें व्याप्त रोषवाला वह आयुधशालामें जानेके लिए उद्यत हुआ । तब सहसा अत्यधिक खराब शकुन होने लगे । (५) पादमार्गसे जाते हुए उसे दूसरे पैरसे चोट पहुँची और सामनेसे काले साँपने उसके मार्गको काटा । (६) छीः छीः ! मत जावें—ऐसे अकुशल शब्द सुनते हुए उसे पराजयसूचक बहुत-से शकुन सहसा होने लगे । (७) उसका उत्तरीय गिर पड़ा, वैदूर्यके दण्डवाला छत्र टूट

१. दिष्टि—प्रत्य० । २. सालं—प्रत्य० ।

५२

पडियं च उत्तरिज्जं, भग्गं वेरुलियदण्डयं छत्तं । ताहे कयञ्जलिउडा, दइयं मन्दोयरी भणइ ॥ ८ ॥
 विरहसरियाएँ सामिय !, वुञ्जन्ती दुक्खसलिलभीमाए । उत्तारेहि महायस !, सिणेहहत्थावलम्बेणं ॥ ९ ॥
 अन्नं पि सुणसु सामिय !, मह वयणं जइ वि नेच्छसि मणेणं । एयं पि य तुज्ज हियं, होहइ कडुओसहं व जहा ॥ १० ॥
 संसयतुलं वलम्भो, किं वा संसयसि णाह ! अत्ताणं ? । उम्मग्गेण रियन्तं, धरेह चित्तं समजायं ॥ ११ ॥
 तुज्जं विभूससु कुलं, सत्थाहणिज्जं च कुणसु अप्पाणं । अप्पेहि भूमिगोयर—महिला कलहस्स आमूलं ॥ १२ ॥
 वइरिस्स अत्तणो वा, मरणं काऊण निच्छयं हियए । जुञ्जिज्जइ समरमुद्दे, तह वि य किं कारणं तेणं ? ॥ १३ ॥
 तम्हा अप्पेहि इमां, सीया रामस्स पणयपीईए । परिवालेहि वयं तं, जं गहियं मुणिसयासम्मि ॥ १४ ॥
 देवेहि परिग्गहिओ, जइ वि समो हवइ भरहनाहेणं । तह वि अक्कित्ति पावइ, पुरिसो परनारिसङ्गेणं ॥ १५ ॥
 जो परनारीसु समं, कुणइ रइं मूढभावदोसेणं । आसीवसेण समयं, कीलइ सो उगतेएणं ॥ १६ ॥
 हात्थाहलं पिव विसं, हुयवहजालं व परमपज्जलियं । वग्धि व विसमसोला, अहियं वज्जेह परमहिला ॥ १७ ॥
 इन्दीवरघणसामो, गब्बियहसियं दसाणणो काउं । भणइ पियां ससिवयणे, किं व भयं उवगयासि तुमं ॥ १८ ॥
 न य सो हं रविकिती, न चेव विज्जाहरो असणिवोसो । न य इयरो को वि नरो, जेण तुमं भाससे एवं ॥ १९ ॥
 रिउपायवाण अग्गी, सो हं लङ्काहिवो सुपडिकूलो । न य अप्पेमि ससिमुद्दी, सीया मा कुणसु भयसङ्गं ॥ २० ॥
 एव भणियम्मितो सा, ईसावसमुवगया महादेवी । जंपइ सीयाएँ समं, किं सामिय ! रइसुहं महसि ? ॥ २१ ॥
 ईसाकोवेण तओ, प्पहणइ कण्णुप्पलेण सा दइयं । भणइ य गुणाणुरूवं, किं दिट्ठं तीएँ सोहग्गं ? ॥ २२ ॥
 किं भूमिगोयरीए, कीरइ अहियं कलविहीणाए ? । विज्जाहरीएँ समंयं, भयसु प्पह ! नेहसंबन्धं ॥ २३ ॥

गया । तब मन्दोदरीने पतिसे हाथ जोड़कर कहा कि, हे स्वामी ! हे महायश ! दुःखरूप जलसे भयंकर ऐसी विरहरूपी नदीमें डूबती हुई मुझे आप स्नेहरूपी हाथका अवलम्बन देकर पार उतारें । (८-९) हे स्वामी ! यद्यपि आप मनसे नहीं चाहते, फिर भी मेरा कहना सुनें । कड़वी दवाकी भाँति यह भी आपके लिए हितकर होगा । (१०) हे नाथ ! संशयरूपी तराजूपर चढ़कर आप अपने आपको सन्देहमें क्यों डालते हो ? उन्मार्गमें भटकते हुए चित्तको आप मर्यादामें रखें । (११) आप अपने ऊँचे कुलको विभूषित करो और आत्माको श्लाघनीय बनाओ । भूमिपर विचरण करनेवाले मनुष्यकी कलहकी जड़रूप ऐसी स्त्रीको दे दो । (१२) शत्रु अथवा अपने मरणका मनमें निश्चय करके युद्धमें लड़ा जाता है । तथापि उसका क्या प्रयोजन है । (१३) अतएव प्रेमपूर्वक रामको यह सीता सौंप दो और मुनिके पास जो व्रत ग्रहण किया था उसका पालन करो । (१४) देवोंके द्वारा अनुग्रहीत हो अथवा भरत राजाके जैसा हो, फिर भी परनारीके संसर्गसे मनुष्य अपयश प्राप्त करता है । (१५) जो अपनी मूर्खताके दोषसे परनारके साथ रति करता है वह उम तेजवाले आशीविष सर्पके साथ खेल खेलता है । (१६) हालाहल चिपके जैसा, अत्यन्त प्रज्वलित अग्निकी ज्वाला सरीखी और भयंकर स्वभाववाली व्याघ्रीके समान परनारीका एकदम त्याग करो । (१७) इन्दीवर कमल तथा बादलके समान श्यामवर्णवाले रावणने अभिमानके साथ हँसकर पत्नीसे कहा कि, हे शशिवदने ! तुम्हें डर क्यों लग रहा है ? (१८) मैं न तो रविकीर्ति हूँ, न विद्याधर अशनिघोष हूँ और न दूसरा कोई मनुष्य हूँ जिससे तुम ऐसा बोलती हो । (१९) शत्रुरूपी वृत्तोंके लिए अभ्रतुल्य विरोधी मैं लंकातरेश चन्द्रवदना सीताको नहीं दूँगा । तुम भयकी आशंका मत करो । (२०) इस प्रकार कहनेपर ईर्ष्याके वशीभूत हो उस पटरानीने कहा कि, हे नाथ ! क्या आप सीताके साथ रतिसुख चाहते हैं ? (२१) तब ईर्ष्या और कोपसे उसने अपने पतिको कर्णोत्पलसे प्रहार किया और कहा कि प्रशंसा करने योग्य कौन-सी सुभगता तुमने उसमें देखी है ? (२२) हे प्रभो ! कलाविहीन और भूमिपर विहार करनेवाली स्त्रीके साथ अधिक स्नेह-सम्बन्ध क्यों करते हैं ? विद्याधरीके साथ स्नेहसम्बन्ध कीजिये । (२३) हे प्रभो ! आप

१. महिलं—प्रत्य० । २. इमं सीयं—प्रत्य० । ३. भरहराणं—प्रत्य० । ४. वग्धि व विसमसोलां अहियं वज्जेह परमहिलं—प्रत्य० । ५. पियं—प्रत्य० । ६. ससिमुद्दि सीयं—प्रत्य० । ७. भणियमेत्ते सा—सु० ।

आणवसु केरिसी हं, होमि प्हू ! जा तुमं हिययइट्ठा । किं सयलपङ्कयसिरी ? अहवा वि सुरिन्दवहुसरिसा ? ॥ २४ ॥
 सो एव भणियमेत्तो, अहोमुहो लज्जिओ विचिन्तेइ । परमहिलासत्तो हं, अकित्तिलहुयत्तणं पत्तो ॥ २५ ॥
 अह सो विलक्खहसियं, काऊण य भणइ अत्तणो कन्तं । तं मज्झ हिययइट्ठा, अहियं अत्राण महिलणं ॥ २६ ॥
 लद्धपसायाए तओ, भणिओ मन्दोयरीए दहवयणो । किं दिणयरस्स दीवो, दिज्जइ वि हु मग्गणट्ठाए ? ॥ २७ ॥
 जाणन्तो वि नयविही, कह वि पमायं गओ विहिवसेणं । तह वि य पवोहणीओ, हवइ नरो अन्नपुरिसेणं ॥ २८ ॥
 आसि पुरा मुणिवसहो, विण्हू वेउवलद्धिसंपन्नो । सिद्धन्त-गीइयासु य किं न पवोहं तथा नीओ ? ॥ २९ ॥
 जइ पयणुओ वि कीरइ, मज्झ पसाओ इमं भणन्तीए । तो मुच्चसु नाह ! तुमं, सीया रामस्स हियइट्ठा ॥ ३० ॥
 तुह अपुमएण सीया, नेऊणं राहवं पसाएमि । आणेमि भाणुकण्णं, पुत्ता य अळं रणमुहेणं ॥ ३१ ॥
 सो एव भणियमेत्तो, जंपइ लक्काहिवो परमरुट्ठो । लहु गच्छ गच्छ पावे !, जत्थ मुहं ते न पेच्छामि ॥ ३२ ॥
 एव भणियं पवुत्ता, सुणसु प्हू ! बहुजणेण जं सिट्ठं । हलहर-चक्कराणं, जम्मं पडिवासुदेवाणं ॥ ३३ ॥
 आसि तिविट्ठु दुविट्ठु, सयंभु पुरिसोत्तमो पुरिससीहो । पुरिसवरपुण्डरीओ, दत्तो वि हु केसवा एए ॥ ३४ ॥
 अयलो विजय सुभदो य सुप्पहो तह सुदरिसणो चेव । आणन्द नन्दणो वि य, इमे वि हल्लिणो वइक्कन्ता ॥ ३५ ॥
 अह भारहम्मि वासे, एए बल-केसवा वइक्कन्ता । संपइ वट्ठन्ति इमे, राहव-नारायणा लोए ॥ ३६ ॥
 एएहि तारगई, पडिसत्तू घाइथा तिखण्डवई । संपइ सामि विणासं, तुहमवि गन्तुं समुच्छहसि ॥ ३७ ॥
 भोत्तूण कामभोए, पुरिसा जे संजमं समणुपत्ता । ते नवरि वन्दणिज्जा, हवन्ति देवा-सुराणं पि ॥ ३८ ॥
 तन्हा तुमे वि सामिय !, भुत्तं चिय उत्तमं विसयसोक्खं । भमिओ य जसो लोए, संपइ दिक्खं पवज्जासु ॥ ३९ ॥

आज्ञा दें कि मैं कैसी होऊँ, जिससे आपके हृदयको मैं प्रिय लगूँ। क्या मैं सब पद्योंकी शोभाको धारण करूँ अथवा देवकन्या जैसी बनूँ? (२४) इस तरह कहा गया वह नीचा मुँह करके लज्जित हो सोचने लगा कि परनारीमें आसक्त मैंने अपयश और लघुता प्राप्त की है। (२५) तब लज्जासे हँसकर उसने अपनी पत्नीसे कहा कि तुम अन्य स्त्रियोंकी अपेक्षा मेरे हृदयको अधिक प्रिय हो। (२६) तब प्रसन्न होकर मन्दोदरीने रावणसे कहा कि क्या सूर्यको ढूँढ़नेके लिए दीया दिखाया जाता है? (२७) नीतिका मार्ग जाननेपर भी भाग्यवश किसी तरहसे प्रमाद आ गया हो तो वह मनुष्य अन्य पुरुष द्वारा जगाया जाना चाहिए। (२८) प्राचीन कालमें वैक्रियक लब्धिसम्पन्न विष्णु नामक एक मुनिवर थे। क्या वह सिद्धान्त-गीतिकाओं द्वारा उस समय जागृत नहीं किये गये थे? (२९) इस प्रकार कहती हुई मुझपर यदि आपका स्वल्प भी अनुग्रह है तो, हे नाथ! आप रामकी हृदयप्रिया सीताको छोड़ दें। (३०) आपकी अनुमतिसे सीताको ले जाकर मैं रामको प्रसन्न करूँ और भानुकर्ण तथा पुत्रोंको लौटा लूँ। इस तरह युद्धसे आप विरत हों। (३१) इस प्रकार कहा गया रावण अत्यन्त रुष्ट होकर कहने लगा कि, हे पापे! जल्दी-जल्दी यहाँसे तू वहाँ चली जा जहाँ मैं तेरा मुँह न देख पाऊँ। (३२) तब उसने ऐसा कहा कि, हे प्रभो! ज्ञानी जनोंने हलधर, चक्रधर तथा प्रतिवासुदेवोंके जन्मके बारेमें जो कहा है वह आप सुनें। (३३) त्रिपृष्ठ, द्विपृष्ठ, स्वयम्भू, पुरुषोत्तम, पुरुषसिंह, पुरुषवर, पुण्डरीक और दत्त—ये केशव थे। (३४) अचल, विजय, सुभद्र, सुप्रभ, सुदर्शन, आनन्द और नन्दन—ये हलधर हो चुके हैं। (३५) भारतवर्षमें ये बलदेव और केशव हो चुके हैं। इस समय लोकमें ये राघव और नारायण विद्यमान हैं। (३६) इन्होंने तीन खण्डोंके स्वामी तारक आदि विरोधी शत्रुओंको मार डाला है। हे स्वामी! अब आप भी विनारा प्राप्त करना चाहते हैं। (३७) काम भोगोंका उपभोग करके जो पुरुष संयम प्राप्त करते हैं वे बादमें देव एवं असुरोंके लिए वन्दनीय होते हैं। (३८) हे स्वामी! आपने उत्तम विषय सुखका उपभोग किया है और आपका यश लोकमें फैल गया है। अब आप दीक्षा अंगीकार करें। (३९) अथवा हे दशमुख! अगुव्रत धारण करके शील व संयममें निरत हों और देव एवं गुरुमें भक्तियुक्तः

१. सीयं रामस्स हियइट्ठा—प्रत्य० । २. सीयं—प्रत्य० ।

अहवा अणुव्यधरो, होऊणं सील-संजमाभिरओ । देव-गुरुभक्तिजुत्तो, दहमुह ! दुक्खक्खयं कुणसु ॥ ४० ॥
 अट्टारसहि दसाणण !, जुवइसहस्सेहि जो तुमं तिच्छिं । न गओ अणुमूढो सो कह एकाएँ वच्चिहिसि ? ॥ ४१ ॥
 इह सयलजीवलोए, विसयसुहं भुञ्जिउं सुचिरकालं । जइ कोइ गओ तिच्छिं, पुरिसो तं मे समुदिससु ॥ ४२ ॥
 तम्हा इमं महाजस !, विसयसुहं अप्पसोक्खबहुदुक्खं । वज्जेहि वज्जणिज्जं, परमहिलासंगमं एयं ॥ ४३ ॥
 बहुभडखयंकरेणं, देव ! न कज्जं इमेण जुज्जेणं । बद्धज्जलिमउडा हं, पडिया वि हु तुज्ज पाएसु ॥ ४४ ॥
 हसिऊण भणइ वीरो, उट्टेहि किसोयरी ! भउबेयं । मा वच्चसु पसयच्छी !, नामेणं वासुदेवाणं ॥ ४५ ॥
 बलदेव-वासुदेवा, हवन्ति बहवो इहं भरहवासे । तह वि य किं संजायइ, सिद्धी खलु नाममेत्तेणं ? ॥ ४६ ॥
 रहनेउरनयरवई, जह इन्दोऽणिहुई मए नीओ । तह य इमं कीरन्तं, पेच्छसु नारायणं सिग्घं ॥ ४७ ॥
 भणिऊण वयणमेयं, समयं मन्दोयरीएँ दहवयणो । कीलणहरं पविट्ठो, ताव य अत्थं गओ सूरो ॥ ४८ ॥
 अत्थायम्मि दिणयरे, संज्ञासमए समागए सन्ते । मउलेन्ति कमलयाई, विरहो चक्कायमिहुणाणं ॥ ४९ ॥
 जाए पओससमए, पज्जलिए रयणदीवियानिवहे । लङ्कापुरी विभायइ, मेरुस व चूलिया चेव ॥ ५० ॥
 पेसिज्जइ जुवइजणो, विरइज्जइ मण्डणं पिययमाणं । मोहणसुहं महिज्जइ, मइर चिय पिज्जइ पसन्ना ॥ ५१ ॥
 का वि पियं वरजुवई, अवगूहेऊण भणइ चन्दमुहो । अपि एकं पि य रत्तिं, माणेषु तुमे समं सामि ! ॥ ५२ ॥
 अत्रा पुग महुमत्ता, वरकुसुमसुयन्धगन्धरिद्विद्धि । पडिया पियस्स अङ्के, नवकिसलयकोमलसरीरा ॥ ५३ ॥
 का वि य अपोढबुद्धी, बाल दइएण पाइया सीधुं । पोढत्तणं पवन्ना, तक्खणमेत्तेण चडुक्कम्मं ॥ ५४ ॥
 जह जह बलमाइ मओ, जुवईणं मयणमूढहिययाणं । तह तह वट्टइ राओ, लज्जा दूरं समोसरइ ॥ ५५ ॥
 अणुदियहजणियमाण, पभाइए जाणिऊण संगामं । घणविरहभीयहियया, अवगूहइ पिययमं धणियं ॥ ५६ ॥

हो दुःखका विनाश करो । (४०) हे दशानन ! अठारह हजार युवतियोंसे कामसे विमोहित तुम्हें यदि तृप्ति न हो सकी तो एकसे कैसे होगी ? (४१) इस समय जीवलोकमें सुचिर काल पर्यन्त विषय सुखका उपभोग करके यदि किसी पुरुषको तृप्ति हुई हो तो ऐसा पुरुष मुझे दिखाओ । (४२) अतः हे महायश ! अल्प सुखदायी तथा बहुत दुःखकर इस विषय सुखका परित्याग करो और इस त्याग्य परनारीके संसर्गको छोड़ो । (४३) हे देव ! अनेक सुभटोंका विनाश करनेवाले इस युद्धसे कोई प्रयोजन नहीं है । मैं सिर पर हाथ जोड़कर आपके पैरोंमें पड़ती हूँ । (४४) इसपर हँस करके वीर रावणने कहा कि, हे कृशोदरी ! प्रसन्नाक्षी ! वासुदेवके नामसे तुम भय और उद्वेग मत धारण करो । (४५) इस भरत-खण्डमें बहुतसे बलदेव और वासुदेव होते हैं, फिर भी क्या नाममात्रसे।सद्धि होती है ? (४६) जिस तरह रथनूपुर नगरके स्वामी इन्द्रके मैनै बन्धनमें डाला था उसी तरह किये जाते इस नारायणको भी तुम शीघ्र ही देखोगी । (४७) ऐसा वचन कहकर मन्दोदरीके साथ रावणने क्रीडागृहमें प्रवेश किया । उस समय सूर्य भी अस्त हो गया । (४८) सूर्यके अस्त होने पर और सन्ध्या समयके आने पर कमल मुरझा गये तथा चक्रवाकका जोड़ा बिछुड़ गया । (४९) प्रदोषबेला होनेपर और रत्न दीपकाओंके जलने पर लंकापुरा मेरुकी चूलिकाकी भाँति शोभित हुई । (५०) उस समय युवतियाँ भेजी जाने लगीं, प्रियतमाओंका मण्डन किया जाने लगा, रतिसुख मनाया जाने लगा और प्रसन्न करनेवाली मदिराका पान होने लगा । (५१) कोई चन्द्रमुखी सुन्दर युवति पतिकी आलिंगन देकर कह रही थी कि हे स्वामी ! तुम्हारे साथ मैं भी एक रात तो आनन्द मनाऊँ । (५२) मधुपानसे मत्त, उत्तम सुगन्धित पुष्पोंकी गन्धसे समृद्ध तथा नर्तन किसलयके समान कोमल शरीरवाली दूसरी स्त्री प्रियकी गोदमें गिरती थी । (५३) अश्रुद बुद्धिवाली कोई स्त्रीने प्रियके द्वारा मद्य पिलाये जाने पर तत्काल ही रातकर्ममें प्रौढ़ता प्राप्त की । (५४) जैसे-जैसे विरहसे भयभीत हृदयवाली युवतियोंको मद चढ़ता गया वैसे-वैसे राग बढ़ता गया और लज्जा दूर होती गई । (५५) प्रातःकालमें संग्राम है ऐसा जानकर प्रतिदिन मान

१. पुरओ मन्दो—प्रत्य० । २. विरहभीयहिययाणं—प्रत्य० ।

विज्जाहरमिहुणाई, कीलन्ति घरे घरे जहिच्छाए । उत्तरकुरुसु नज्जइ, वड्डियनेहाणुरागाई ॥ ५७ ॥
 वीणाइ-वंस-तिसरिय-नाणाविहगीय-वाइयरवेणं, । जंपइ व महानयरी, जणेण उल्लवमन्तेणं ॥ ५८ ॥
 तम्बोल-फुल्ल-गन्धाइएसु देहाणुलेवणसएसु । एय विणिओयपरमो, लोगो मयणुस्सवे तइया ॥ ५९ ॥
 लङ्काहिबो वि एत्तो, निययं अन्तेउरं निरवसेसं । सम्माणेइ महप्पा, अहियं मन्दोयरी देवी ॥ ६० ॥
 एवं सुहेण रयणी, बोलीणा आगयाऽरुणच्छया । संगीय-तूरसदो, भवणे भवणे पविथरिओ ॥ ६१ ॥
 ताव य चक्कायारो, दिवसयरो उग्गओ कमलवन्धु । कह कह वि षणइणिजणं, संथाविय दहमुहो भणइ ॥ ६२ ॥
 सन्नाहसमरभेरी, षहणह तुराई मेहघोसाई । रणपरिहत्थुच्छाहा, होह भडा ! मा चिरावेह ॥ ६३ ॥
 तस्स वयणेण सिग्घं, नरेहि षहया तओ महाभेरी । सहेण तेण सुहडा, सन्नद्धा सयलवलसहिया ॥ ६४ ॥
 मारीजी विमलाभो, विमलघणो नन्दणो सुणन्दो य । सुहडो य विमलचन्दो, अन्ने वि य एवमाईया ॥ ६५ ॥
 तुरएसु रहवरेसु य, पवयसरिसेसु मत्तहत्थीसु । सरह-खर-केसरीसु य, वराह-महिसेसु आरूढा ॥ ६६ ॥
 असि-कणय-चाव-खेडय-वसुनन्दय-चक्र-तोमरविहत्था । धय-छत्तवड्डचिन्धा, असुरा इव दप्पियाडोवा ॥ ६७ ॥
 निष्फिडिऊण पवत्ता, सुहडा लङ्कापुरोएँ रणसूरा । ऊसियसियायवत्ता, संपेल्लोपेळ कुणमाण ॥ ६८ ॥
 बहुतूरनिगाएणं, हयहेसिय गज्जिणं हत्थीणं । फुट्टइ व अम्बरतलं, विमुक्कापाइकनाएणं ॥ ६९ ॥
 अह ते रक्खससुहडा, सन्नद्धा रयणमउडकयसोहा । वचन्ता गयणयले, छज्जन्ति घणा इव सविज्जू ॥ ७० ॥

महाभडा कवइयदेहभूसणा, समन्तओ तुरय-गइन्दसंकुल ।

सज्जाउहा दिणयरतेयसन्निहा, विणिग्गया विमलजसाहिलासिणो ॥ ७१ ॥

॥ इय पउमचरिए उज्जोगविहाणं नाम सत्तरं पर्वं समत्तं ॥

करनेवाली स्त्रीने मनमें विरहसे अत्यन्त भयभीत हो प्रियतमको गाढ़ आलिंगन दिया । (५६) मानो उत्तरकुरुमें क्रीड़ा कर रहे हों इस तरह बड़े हुए स्नेहानुरागसे युक्त विद्याधर-युगल घर-घरमें इच्छानुसार क्रीड़ा कर रहे थे । (५७) वीणा, बंशी आदिसे समृद्ध नानाविध गीत एवं वाद्योंकी ध्वनिसे तथा वातालाप करनेवाले लोगोंसे मानो महानगरी सम्भाषण कर रही थी । (५८) ताम्बूल, फूल एवं गन्धादिसे तथा संकड़ों प्रकारके शरारके अनुलेपनसे उस समय लोग मदनोत्सवमें अत्यन्त संलग्न थे । (५९) उधर महात्मा रावणने भी अपने समग्र अन्तपुरमें मन्दोदरी देवीको अधिक सम्मानित किया । (६०) इस प्रकार सुखपूर्वक रात व्यतीत हुई और अरुण कान्ति प्रकट हुई । संगीत और वाद्योंकी ध्वनि घर-घरमें फैल गई । (६१) उस समय कमलबन्धु चक्राकार सूर्य उदित हुआ । प्रणयेना जनोंको किसी तरहसे आधासन देकर रावणने कहा कि युद्धकी तैयारी करो । समरभेरे तथा बादलकी भाँति घोष करनेवाले वाद्य बजाओ । सुभट रणके लिए परिपूर्ण उस्ताहवाले हों । देर मत करो । (६२-६३) उसके आदेशके अनुसार लोगोंने महाभेरि बजाई । उसकी आवाज़से समग्र सैन्य सहित सुभट सन्नद्ध हो गये । (६४) मरीचि, विमलाभ, विमलघन, नन्दन, सुनन्द, विमलचन्द्र तथा दूसरे सुभट भी घोड़ों पर, रथोंमें, पर्वत सरीखे मत्त हाथियों पर, शरभ, गधे, सिंह, वराह और भैंसों पर सवार हुए । (६५-६६) तलवार, कनक, धनुष, स्फेटक (नाशक शस्त्र), वसुनन्दक (एक प्रकारकी उत्तम तलवार), चक्र एवं तोमर चलानेमें दक्ष, ध्वजा एवं छत्रोंके चिह्न लगाये हुए, असुरोंकी भाँति दर्पयुक्त, ऊपर उठाये हुए सफेद छत्रवाले तथा एक दूसरेको दबाते और ऊपर उठाते हुए रणशूर सुभटोंने लंकापुरीकी ओर निर्गमन किया । (६७-६८) नानाविध रणवाद्योंके निनादसे, घोड़ोंकी हिनहिनाहट और हाथियोंकी चिंवाइसे तथा पैदल सैनियों द्वारा लगाये जानेवाले नारोंसे मानों आकाशतल फूट रहा था । (६९) कवच पहने हुए तथा रत्नोंके मुकुटसे शोभित वे राक्षस-सुभट आकाशमार्गसे जानेपर विजलीसे युक्त बादलकी तरह शोभित हो रहे थे । (७०) कवच धारण करनेसे अलंकृत शरीरवाले, चारों ओर घोड़े और हाथियोंसे व्याप्त आयुधोंसे सज्ज, सूर्यके तेजके तुल्य तेजस्वी तथा विमल यशकी अभिलाषावाले महाभट निकल पड़े । (७१)

॥ पद्मचरितमें उद्योग-विधान नामक सत्तरवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

७१. लक्ष्मणरावणजुद्धपद्यं

अह सो रक्खसनाहो, कमेण आपुच्छिऊण परिणीओ । कोहं समुबहन्तो, विणिग्गओ निययनयरीओ ॥ १ ॥
 इन्द्रं नाम रहं सो, पेच्छइ बहुरूविणीएँ निम्मवियं । विविहाउहाण पुण्णं, दन्तिसहस्सेण संजुत्तं ॥ २ ॥
 अह ते मत्तगइन्दा, एरावणसन्निभा चउविसाणा । गेरुयकयङ्गराया, घण्टासु य कलयलारावा ॥ ३ ॥
 अह सो महारहं तं, आरूढो केउमण्डणाडोवं । आहरणभूसियङ्गो, इन्दो इव रिद्धिसंपन्नो ॥ ४ ॥
 तस्स विलग्गस्स रहे, समूसियं चन्दमण्डलं छत्तं । गोखीर-हारधवलं च उद्धुयं चामराजुयलं ॥ ५ ॥
 पडुपडह-सङ्ग-काहल-मुइङ्ग-तिलमा-गहीरपणवाणं । पहयं पहाणतूरं, पलयमहामेहनिग्गोसं ॥ ६ ॥
 अप्पसरिसेहि समयं, दसहि सहस्सेहि खेयरभट्टाणं । सुरसरिसविक्रमाणं, रणकण्डू उबहन्ताणं ॥ ७ ॥
 एयन्तरम्मि पउमो, पुच्छइ सुहडा सुसेणमाईया । भो भो! कहेह एसो, दीसइ कवणो नगवरिन्दो? ॥ ८ ॥
 अलिउलतमालनीलो, जम्बूनयविविहसिहरसंघाओ । चञ्चलतडिच्छडालो, नज्जइ मेहाण संघाओ ॥ ९ ॥
 तो भणइ जम्बुवन्तो, सामिय! बहुरूविणीएँ विज्जाए । सेलो कओ महन्तो, दीसइ लङ्गाहिबो एसो ॥ १० ॥
 जम्बूणयस्स वयणं, सोऊणं भणइ लक्खणो एत्तो । आणेह गरुडकेउं, महारहं मा चिरावेह ॥ ११ ॥
 अह तथ महाभेरो, समाहयाऽणेयतूरसमसहिया । सहेण तीएँ सिग्घं, सन्नद्धा कइवरा सब्बे ॥ १२ ॥
 असि-कणय-चक्र-तोमर-नाणाविहपरहरणा-ऽऽवरणहत्था । रुम्भन्ति पवयजोहा, रणपरिहत्था सकन्ताहिं ॥ १३ ॥
 सुमहुरवयणेहि तओ, संथाविय कइवरा पणइणीओ । सन्नद्धाउहपमुहा, पउमसयासं समल्लीणा ॥ १४ ॥

७१. रावण-लक्ष्मण युद्ध

वह राक्षसनाथ रावण अनुक्रमसे रानियोंसे पूछकर कोप धारण करता हुआ अपनी नगरीमेंसे बाहर निकड़ा। (१) बहुरूपिणी विद्या द्वारा विनिर्मित, विविध आयुधोंसे परिपूर्ण तथा हजार हाथियोंसे जुते हुए इन्द्र नामके रथको उसने देखा। (२) ऐरावतके जैसे वे मत्त हाथी चार दौतवाले थे। गेरुसे उन पर अंगराग किया गया था तथा घण्टोंके कारण वे कलकल ध्वनि कर रहे थे। (३) ध्वजा एवं मण्डपसे शोभित उस रथ पर आमूषणोंसे विभूषित शरीरवाला तथा इन्द्रके समान ऋद्धि सम्पन्न वह रावण आरूढ़ हुआ। (४) रथ पर बैठे हुए उस पर चन्द्रमण्डलके जैसा छत्र धरा गया तथा गायके दूध एवं हारके समान धवल दो चँवर डुलाये जाने लगे। (५) उस समय प्रलयकालीन महामेघके समान निर्घोष करनेवाले बड़े बड़े ढोल, शंख, काहल, मृदंग, तिलिमा तथा गंभीर ध्वनि करनेवाले नगाड़ों जैसे उत्तम वाद्य बजाये गये। (६) देवोंके समान विक्रमशील तथा लड़ाईकी खुजली धारण करनेवाले अपने ही जैसे दस हजार सुभटोंके साथ रावण चला। (७)

इस बीच रामने सुषेण आदि सुभटोंसे पूछा कि यह कौनसा उत्तम पर्वत दीख रहा है यह कहो। (८) भौरै तथा तमालके समान नीलवर्णवाला तथा सोनेके अनेक शिखरोंसे युक्त यह पर्वत चंचल बिजलीसे शोभित मेघोंके समूह जैसा लगता है। (९) तब जाम्बवन्तने कहा कि, हे स्वामी! बहुरूपिणी विद्याने यह महान् पर्वत बनाया है। यह रावण दिखाई दे रहा है। (१०) जाम्बूनदका यह कहना सुन लक्ष्मणने कहा कि महारथ गरुडकेतु लाओ। देर मत करो। (११) तब अनेक वाद्योंके साथ महाभेरी बजाई गई। उसके शब्दसे शीघ्र ही सब कपिवर तैयार हो गये। (१२) तलवार, कनक, चक्र, तोमर आदि नानाविध प्रहरण हाथमें धारण किये हुए युद्धकुशल वानरयोद्धा अपनी अपनी पत्नियों द्वारा रोके गये। (१३) तब सुमधुर वचनोंसे प्रियाओंको आश्वासन देकर कवचधारी और आयुधोंसे युक्त कपिवर रामके

१. कण्डू—प्रत्य० ।

रामो रहं विलगो, केसरिजुत्तं निवद्धतोणीरं । लच्छीहरो वि एवं, आरूढो सन्दणं गरुडं ॥ १५ ॥
 भामण्डलमाईया, अन्ने वि महाभडा कवइयङ्गा । रह-नाय-तुरयारूढा, संगामसमुज्जया जाया ॥ १६ ॥
 एवं कइबलसहिया, सन्नद्धा पउमनाह-सोमिती । सेणिय ! विणिग्गया ते, जुज्जत्थे वाहणारूढा ॥ १७ ॥
 जन्ताण ताण सउणा, महुरं चिय वाहरन्ति सुपसत्थं । साहन्ति निच्छएणं, पराजयं चैव आणन्दं ॥ १८ ॥
 दट्टूण सत्तुसेत्तं, एज्जन्तं रावणो तओ रुद्धो । निययबलेण समग्गो, वाहेइ रहं सबडहुत्तं ॥ १९ ॥
 गन्धव-किन्नरगणा, अच्छरसाओ नहङ्गणत्थाओ । मुञ्चन्ति कुसुमवासं, दोसु वि सेत्तेसु सुहडणं ॥ २० ॥
 विण्डपर-फल्लय-खेडय-वसु-नन्दयगोविणसु अङ्गेषु । पविसन्ति समरभूमिं, चलदिट्ठी पढमपाइका ॥ २१ ॥
 आसेसु कुञ्जरेसु य, केइ भडा रहवरेसु आरूढा । नाणाउहगहियकरा, आभिट्ठा सहरिसुच्छाहा ॥ २२ ॥
 सर-झसर-सत्ति-सबल-फलिहसिला-सेल-मोमारसयाईं । वरसुहडवत्तियाईं, पढन्ति जोहे वहन्ताईं ॥ २३ ॥
 खग्गेहि केइ सुहडा, संगामे वावरन्ति चलहत्था । अन्ने य गयपहारं, देन्ति समरथाण जोहाणं ॥ २४ ॥
 सोसगहिएक्कमेक्का, अन्ने छुरियापहारजज्जरिया । दप्पेण समं जीयं, मुयन्ति देहं च महिवट्ठे ॥ २५ ॥
 खज्जन्ति धरणिपडिया, वायस-गोमाउ-गिद्धनिवहेणं । ओयड्वियन्तरुण्डा, रुहिर-वसाकदमनिबुद्धा ॥ २६ ॥
 हत्थी हत्थीण समं, जुज्जइ रहिओ समं रहत्थेणं । तुरयबलमगोसुहडो, तुरयारूढं विवाएइ ॥ २७ ॥
 असि-कणय-चक्र-तोमर-अन्नोन्नावडियसत्थघायग्गी । अह तक्खणम्मि जाओ, संगामो सुहडुबिसहो ॥ २८ ॥
 उम्मेण्ठा मत्तगया, भमन्ति तुरयाऽऽसवारपरिसुक्का । भज्जन्ति सन्दणवरा, छिज्जन्ति धया कणयदण्डा ॥ २९ ॥

पास गये । (१४) सिंह जुते तथा तरकश बाँधे हुए रथ पर राम सवार हुए । इसी प्रकार लक्ष्मण भी गरुड़-रथ पर आरूढ़ हुआ (१५) शरीर पर कवच धारण किये हुए भामण्डल आदि दूसरे महासुभट भी रथ, हाथी एवं घोड़ों पर सवार हो संग्रामके लिए उद्यत हुए (१६) हे श्रेणिक ! इस प्रकार तैयार हो वाहनमें आरूढ़ राम और लक्ष्मण बानरसेनाके साथ युद्धके लिए निकल पड़े । (१७) उनके चलने पर पक्षी मधुर और सुप्रशस्त स्वरमें बोलने लगे । वे सुनिश्चित रूपसे शत्रुका पराजय और अपने लिए आनन्दकी सूचना दे रहे थे । (१८) तब शत्रुसैन्यको आता देख कुपित रावणने सामने सेनाके साथ रथ हाँका । (१९) गन्धर्व एवं किन्नर गणोंने तथा आकाशमें स्थित अप्सराओं ने दोनों सेनाओंके ऊपर पुष्पोंकी वृष्टि की । (२०)

भयंकर फर (ढाल), फलक (अस्त्रविशेष), स्फेटक (नाश करनेवाला शस्त्र) तथा वसुनन्दन (एक तरहकी उत्तम तलवार) से शरीरको सुरक्षित करके सर्वप्रथम चपल दृष्टिवाले पैदल सैनिकोंने समरभूमिमें प्रवेश किया । (२१) कई सुभट घोड़ों पर, कई हाथियों पर तो कई उत्तम रथों पर आरूढ़ हुए । हर्ष और उत्साहसे युक्त वे हाथमें नाना प्रकारके आयुध लेकर भिड़ गये । (२२) उत्तम सुभटों द्वारा गृहीत और योद्धाओंको मारनेवाले सैकड़ों वाण, भ्रसर, शक्त, सब्बल, स्फटिक शिलावाले पर्यत और मुद्गर गिरने लगे । (२३) युद्धमें कई चपल हाथवाले सुभट तलवारों का उपयोग करते थे, तो दूसरे समर्थ योद्धाओंके ऊपर गदाका प्रहार करते थे । (२४) तलवारके प्रहारसे जर्जरित दूसरे योद्धा एक-दूसरेका मस्तक ग्रहण करके प्राणोंके साथ शरीरको भी दर्पके साथ पृथ्वीतल पर छोड़ते थे । (२५) जमीन पर गिरे हुए और खून, चर्बीके कीचड़से सने हुए तथा खेचे जाते धड़ कौए, सियार और गीधके समूह द्वारा खाये जाते थे । (२६) हाथीके साथ हाथी और रथमें बैठे हुएके साथ रथी युद्ध करने लगे । घोड़े पर बैठा हुआ सुभट घुड़सवारको मारने लगा । (२७) तलवार, कनक, चक्र एवं तोमरके एक-दूसरे पर गिरनेसे तथा शस्त्रोंके आघातसे उठनेवाली आगवाला और सुभटोंके लिए अत्यन्त दुःसह ऐसा संग्राम तत्क्षण होने लगा । (२८) महावतोंसे रहित हाथी और सवारोंसे रहित घोड़े घूमने लगे । अच्छे अच्छे रथ टूटने लगे और सोनेके दण्डवाली ध्वजाएँ झिन्न होने लगीं । (२९) गिरती हुई तलवारोंका खन्खन् शब्द

खणखणखण त्ति सद्दो, कत्थइ खग्गाण आवडन्ताणं । विसिहाण तडतडरवो, निवडन्ताणं गयङ्गेषु ॥ ३० ॥
मणिकुण्डलुज्जलाइं, पडन्ति सीसाइं मउडचिन्धाइं । नचन्ति कचन्धाइं, रहिरवसालित्तगत्ताइं ॥ ३१ ॥
अन्नो अन्नं पहणइ, अन्नो अन्नं भुयावलुम्मत्तो । आयद्धिऊण निहणइ, जोहा जोहं करी करिणो ॥ ३२ ॥
उभयबलेसु भडेहिं, उप्पयनिवयं रणे करेन्तेहिं । गयणङ्गणं निरुद्धं, पाउसकाले इ मेहेहिं ॥ ३३ ॥
एयारिसम्मि जुज्जे, सुय-सारणमाइएसु सुहडेसु । मारीजीण य भग्गं, सेत्तं चिय वाणरभडाणं ॥ ३४ ॥
सिरिसेलेण बलेण य, भूयनिणाएण तह य नोलेणं । कुमुयाइवाणरेहिं, भग्गं चिय रक्खसाणीयं ॥ ३५ ॥
सुन्दो कुम्भ निसुम्भो, विक्रम कमणो य जम्बुमाली य । मयरद्धओ य सूरु, असणिनिवायाइणो सुहडा ॥ ३६ ॥
एए रक्खसवसभा, निययवलुच्छाहकारणुज्जुत्ता । वाणरभडेहि समयं, जुज्जं काऊण आदत्ता ॥ ३७ ॥
भुयवरवलसम्मेया, वियडा कुडिलङ्गया सुसेणा य । चण्डुम्मियङ्गयाई, समुट्टिया कइवरा एए ॥ ३८ ॥
रक्खस-कइद्वयाणं, जुज्जं अइदारुणं समावडियं । अन्नोन्नकरग्गाहं, घणसत्थपडन्तसंघायं ॥ ३९ ॥
एयन्तरम्मि हणुओ, गयवरजुत्तं रहं समारुहिउं । लोलेइ रक्खसवलं, पउमसरं चेव मत्तगओ ॥ ४० ॥
एक्केण तेण सेणिय !, सुरेण महावलं निसियराणं । गरुयपहाराभिहयं, भयजरगहियं कयं सबं ॥ ४१ ॥
तं पेच्छऊण सेत्तं, भयविहलविसंटुलं मओ रुट्ठो । हणुयस्स समावडिओ, मुञ्चन्तो आउहसयाइं ॥ ४२ ॥
सिरिसेलेण वि सिग्घं, आयणाऊरिएसु बाणेसु । कच्चणरहो विचित्तो, तुज्जो मयसन्तिओ भग्गो ॥ ४३ ॥
अन्नं रहं विलग्गो, मयराया जुज्जिउं समादत्तो । सो वि य सिरिसेलेणं, भग्गो निसियद्वयन्देहिं ॥ ४४ ॥
विरहं दट्टूण मयं, दसाणणोऽणेरूवविज्जाए । सिग्घं विणिम्मिय रहं, ससुरस्स तओ समप्पेइ ॥ ४५ ॥
सो तत्थ सन्दणवरे, आरुहिऊणं मओ सरसएहिं । विरहं करेइ हणुयं, तक्खणमेत्तेण आरुट्ठो ॥ ४६ ॥

और गिरते हुए बाणोंका आकाशमें तड-तड शब्द होने लगा । (३०) मणिमय कुण्डलोंसे उज्ज्वल तथा मुकुट धारण किये हुए सिर गिरने लगे और रुधिर एवं चर्बीसे स्निग्ध अंगवाले धड़ नाचने लगे । (३१) कोई एक योद्धा दूसरेको मारता था, भुजाओंके बलसे उन्मत्त दूसरा किसी दूसरेको मारता था । योद्धा योद्धाको और हाथी हाथीको खींचकर मारते थे । (३२) दोनों सेनाओंमें ऊपर कूदते और नीचे गिरते हुए सुभटोंसे आकाश, वर्षाकालमें बादलोंकी तरह, झा गया । (३३)

ऐसे युद्धमें शुक, सारण आदि सुभटों तथा मारीचिने वानर योद्धाओंका सैन्य छिन्न-भिन्न कर डाला । (३४) हनुमान, बल, भूतनिनाद तथा नील और कुमुद आदि वानरोंने राक्षस सेनाको छिन्न-भिन्न कर डाला । (३५) सुन्द, कुम्भ, निसुम्भ, विक्रम, क्रमण, जम्बुमाली, मकरध्वज, सूर्य, अशानि और निर्घात आदि—ये राक्षसोंमें वृषभके समान श्रेष्ठ तथा अपने-अपने बल एवं उत्साहके कारण उद्यत सुभट वानर योद्धाओंके साथ युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए । (३६-३७) भुजवर, बल, सम्मेत, विकट, कुटिल, अंगद, सुपेण, चण्डोर्मि तथा अंग आदि—ये कपिवर उठ खड़े हुए । (३८) राक्षस और कपिध्वजोंके बीच एक-दूसरे के साथ जिसमें हाथापाई हो रही है तथा जिसमें बहुत-से राक्षोंका समूह गिर रहा है ऐसा अतिभयंकर युद्ध होने लगा । (३९)

उस समय हाथीसे जुते रथमें सवार हो हनुमान, जिस भौंति मत्त हाथी पद्मसरोवरका विलोडन करता है उस भौंति, राक्षस सेनाका विलोडन करने लगा । (४०) हे श्रेणिक ! उस अकेले शूरवीरने राक्षसोंके समग्र महासैन्यको भारी प्रहारोंसे पीटकर भयरूपी ज्वरसे प्रस्तकर दिया । (४१) उस सेनाको भयसे विकल और विह्वल देख क्रुद्ध मय सैकड़ों आयुध छोड़ता हुआ हनुमानके सम्मुख आया । (४२) हनुमानने भी शीघ्र ही कानतक खींचे हुए बाणोंसे मयका विशाल और विचित्र स्वरार्थ तोड़ डाला । (४३) दूसरे रथपर चढ़ा हुआ मय राजा युद्ध करने लगा । तीक्ष्ण अर्धचन्द्र बाणोंसे उसे भी हनुमानने तोड़ डाला । (४४) मयको रथहीन देखकर रावणने अनेकरूपिणी विद्यासे शीघ्र ही रथ बनवाकर ससुरको दिया । (४५) उस उत्तम रथपर आरूढ़ हो क्रुद्ध मयने सैकड़ों बाणोंसे तत्क्षण ही हनुमानको रथहीन कर दिया । (४६) हनुमानको रथहीन

आलोड्ऊण हणुयं, विरहं अह धाइओ जणयपुत्तो । तस्स वि य सन्दणवरो, मएण भग्गो सरवरेहिं ॥ ४७ ॥
 सयमेव वाणरवई, समुट्ठिओ तस्स रोसपज्जलिओ । सो वि मएण निरत्थो, कओ य धरणीयले पडिओ ॥ ४८ ॥
 एत्तो मएण समयं, विहीसणो जुज्झिउं समाढत्तो । छिन्नकवया-ऽऽयवत्तो, कओ य वाणाहयसरीरो ॥ ४९ ॥
 पयलन्तरुहिरदिहं, विहीसणं पेच्छिऊण पउमामो । केसरिरहं विलग्गो, छाएइ मयं सरसएहिं ॥ ५० ॥
 रामसरनियरघत्थं, भयविहलविसंठुलं मयं दट्ठुं । सयमेव रक्खसवई, समुट्ठिओ कोहपज्जलिओ ॥ ५१ ॥
 सो लक्खणेण दिट्ठो, भणिओ रे दुट्ठ ! मज्झ पुरहुत्तो । ठा-ठाहि पाव तक्कर !, जा ते जीयं पणासेमि ॥ ५२ ॥
 अह भणइ लक्खणं सो, किं ते हं रावणो असुयपुब्बो । निस्सेसपुहइनाहो, उत्तमदिवारुहो लोए ? ॥ ५३ ॥
 अज्ज वि मुच्चसु सीयं, अहवा चिन्तेहि निययहियणं । किं रासहस्स सोहइ, देहे रइथा विजयवण्टा ? ॥ ५४ ॥
 देवा-ऽसुरलद्धजसो, अहयं तेलोकपायडपयावो । सह भूमिगोयरेणं, अहियं लज्जामि जुज्जन्तो ॥ ५५ ॥
 जइ वा करेहि जुज्झं, निविण्णो निययजीवियवेषं । तो ठाहि सवडहुत्तो, विसहसु मह सन्तियं पहरं ॥ ५६ ॥
 तो भणइ लच्छिनिलओ, जाणामि पहुत्तणं तुमं सबं । नासेमि अज्ज सिग्घं, एयं ते गज्जियं गरुयं ॥ ५७ ॥
 एवं भणिउं सरोसो, चावं धेत्तूण वाणनिवहेणं । छाएऊण पवत्तो, तुज्जं पिव पाउसे मेहो ॥ ५८ ॥
 जमदण्डसन्निहेहिं, सरैहि लच्छीहरो गयणमग्गे । बलपरिहत्युच्छाहो, दहमुहवाणे निवारैइ ॥ ५९ ॥
 दसरहपुत्तेण कओ, रयणासवनन्दणो वियलियत्थो । ताहे मुयइ दणुवई, आरुट्ठो वारुणं अत्थं ॥ ६० ॥
 तं लक्खणो खणेणं, नासेइ समीरणत्थजोएणं । मुच्चइ लङ्काहिवई, अग्गेयं वारुणं अत्थं ॥ ६१ ॥
 जालासहस्सपउरं, दहमाणं तं पि लच्छिनिलएणं । धारासरेहि सिग्घं, विज्झवियं वारुणत्थेणं ॥ ६२ ॥

देखकर जनकपुत्र भामण्डल दौड़ा। उसका रथ भी मयने उत्तम बाणोंसे तोड़ डाला। (४७) रोपसे प्रज्वलित वानरपति सुप्रिय स्वयं ही उसके आगे खड़ा हुआ। मयके द्वारा निरख किया गया वह भी पृथ्वीपर गिर पड़ा। (४८) तब मयके साथ विभीषण युद्ध करने लगा। कवच और छत्र जिसके तोड़ डाले गये हैं ऐसा वह भी बाणोंसे आहत शरीरवाला किया गया। (४९) जिसके शरीरमेंसे रक्त बह रहा है ऐसे उस विभीषणको देखकर सिंहस्थपर बैठे हुए रामने सैकड़ों बाणोंसे मयको आच्छादित कर दिया। (५०) रामके बाण-समूहसे आक्रान्त और भयसे आकुल-व्याकुल मयको देखकर क्रोधसे जलता हुआ रावण स्वयं ही उठ खड़ा हुआ। (५१)

लक्ष्मणने उसे देखकर कहा कि, रे दुष्ट ! पापी ! तस्कर ! मेरे आगे ठहर, जिससे मैं तेरे जीवनका नाश करूँ। (५२) तब उसने लक्ष्मणसे कहा कि समग्र पृथ्वीके स्वामी और उत्तम एवं दिव्य पदार्थोंसे लोकमें पूजनीय ऐसे मुझ रावणके बारेमें क्या तूने पहले नहीं सुना ? (५३) लक्ष्मणने कहा—आज ही सीताको छोड़ दो, अथवा अपने हृदयमें सोचो कि गधेके शरीरपर बाँधा गया विजयवण्ट क्या अच्छा लगता है ? (५४) इसपर रावणने कहा—देवों और असुरोंमें यश प्राप्त करनेवाला और तीनों लोकोंमें जिसका प्रताप छाया हुआ है ऐसा मैं जमीनपर चलनेवालोंके साथ लड़नेमें बहुत लज्जित होता हूँ। (५५) अपने प्राणोंसे उदासीन होकर यदि तू युद्ध करना चाहता है तो मेरे समक्ष खड़ा हो और मेरे प्रहारोंको सहन कर। (५६) तब लक्ष्मणने कहा कि मैं तेरा सारा प्रभुत्व जानता हूँ। आज तेरी इस भारी गर्जनाको शीघ्र ही नष्ट करूँगा। (५७) ऐसा कहकर रोषयुक्त उसने धनुष उठाया और वर्षाकालमें पर्वतको छानेवाले मेघकी भाँति बाणोंसे उसे छाने लगा। (५८) बल एवं परिपूर्ण उत्साहवाला लक्ष्मण यमदण्ड सराखे बाणोंसे रावणके बाणोंका आकाशमार्गमें निवारण करने लगा। (५९) दशरथके पुत्र लक्ष्मणने रत्नश्रवाके पुत्र रावणको अस्त्ररहित बना दिया। तब क्रुद्ध राक्षसपतिने वारुण अस्त्र छोड़ा। (६०) समीरणस्त्रका प्रयोग करके लक्ष्मणने उसका नाश किया। तब लंकाधिपतिने भयंकर आग्नेय अस्त्र छोड़ा। (६१) हजारों ज्वालाओंसे युक्त जलते हुए उस अस्त्रको भी जलधारारूपी बाणोंसे युक्त वारुणास्त्रसे बुझा दिया। (६२) तब रावणने अतिभयंकर

अह तस्स रक्खसत्थं, विसज्जियं रावणेण अइघोरं । धम्मत्थेण पणासइ, तं दसरहनन्दणो सिग्घं ॥ ६३ ॥
 लच्छीहरेण सेणिय ।, विसज्जियं इन्धणं महासत्थं । पडिइन्धणेण नीयं, दिसोदिसिं रक्खसिन्देणं ॥ ६४ ॥
 अह रावणेण सिग्घं, तमनिवहत्थन्धयारियदिसोहं । विमलं करेइ तं पि य, दिवायरत्थेण सोमिती ॥ ६५ ॥
 फणिमणिकिरणुज्जलियं, उरगतथं रावणेण विक्खित्तं । तं लक्खणेण नीयं, दूरं गरुडत्थजोएणं ॥ ६६ ॥
 मुञ्चइ विणायगतथं, रक्खसणाहस्स लक्खणो समरे । तं वारेइ महप्पा, तिकूडसामी महत्थेणं ॥ ६७ ॥
 भग्गे विणायगतथे, सरेहि लच्छीहरो तिकूडवई । छाएइ सेनसहियं, सो वि य तं बाणवरिसेणं ॥ ६८ ॥

संगामसूरा जणियाहिमाणा, जुज्झन्ति अन्नोन्नजयत्थचित्ता ।

घोरा नरा नेव गणन्ति सत्थं, न मारुयग्गि विमलं पि भाणुं ॥ ६९ ॥

॥ इय पउमचरिए लक्खण-रावणजुज्झं नाम एगसत्तरं पव्वं समत्तं ।

७२. चकरयणुत्पत्तिपव्वं

खिन्नाण दिज्जइ जलं, तिसाभिभूयाण सीयलं सुरहिं । भत्तं च बहुवियप्पं, असणकिलन्ताण सुहडाणं ॥ १ ॥
 सिञ्चन्ति चन्दणेणं, सुहडा वणवेयणापरिग्गहिया । आसासिज्जन्ति पुणो, देहुवगरणेसु बहुएसु ॥ २ ॥
 लक्काहिवेण समयं, सोमिच्चिसुयस्स वट्टए जुज्झं । विविहाउहविच्छड्डं, विम्हयणिज्जं सुरवराणं ॥ ३ ॥
 गन्धक्किन्नरगणा, अच्छरसहिया नहट्टिया ताणं । मुञ्चन्ति कुसुमवासं, साहुकारेण वामीसं ॥ ४ ॥

राक्षसासु उसके ऊपर छोड़ा । लक्ष्मणने शीघ्र ही उसे धर्मासुसे नष्ट किया । (६३) हे श्रेणिक ! तव लक्ष्मणने इन्धन नामका महाशस्त्र फेंका । राक्षसेन्द्र रावणने प्रति-इन्धन अस्त्र द्वारा उसे दसों दिशाओंमें बिखेर दिया । (६४) तव रावणने शीघ्रही तमोनिवह नामक अस्त्रसे दिशाओंको अन्धकारित कर दिया । लक्ष्मणने दिवाकरासुसे उसे भी निर्मल बना दिया । (६५) तब सर्पोंके मणियोंकी किरणोंसे उज्ज्वल उरगासु रावणने फेंका । गरुडासुके प्रयोगसे उसे भी लक्ष्मणने दूरकर दिया । (६६) लक्ष्मणने युद्धमें रावणके ऊपर विनायकासु फेंका । त्रिकूटस्वामी महात्मा रावणने उसका महासुसे निवारण किया । (६७) विनायकासुका नारा होनेपर लक्ष्मणने सैन्यसहित त्रिकूटपत्तिको बाणोंसे आच्छादित कर दिया । उसने भी उसे (लक्ष्मणको) बाणोंकी वर्षासे ढँक दिया । (६८) अभिमानी तथा मनमें एकदूसरेको जीतनेकी इच्छावाले युद्धवीर लड़ते हैं । भयंकर मनुष्य न तो शस्त्रको, न वायुको, न अग्निको और न विमल सूर्यको ही गिनते हैं । (६९)

॥ पउमचरितमें लक्ष्मण और रावणका युद्ध नामक इकट्तरवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

७२. चक्ररत्नकी उत्पत्ति

तृपासे अभिभूत खिन्न सुभटोंको जल दिया जाता था, भोजनसे पीड़ित सुभटोंको अनेक प्रकारका भोजन दिया जाता था, घ्रणकी वेदनावाले सुभट चन्दनसे सींचे जाते थे तथा शरीरके बहुत-से उपकरणों द्वारा उन्हें आश्वासन दिया जाता था । (१-२) अनेक प्रकारके आयुध जिसमें फेंके जाते हैं और जो देवताओंके लिए भी आश्चर्यजनक था ऐसा लंकाधिपके साथ लक्ष्मणका युद्ध हो रहा था । (३) आकाशमें स्थित अप्सराओंके साथ गन्धर्व और किन्नरगण भी साधुकारसे युक्त कुसुमवृष्टि कर रहे थे । (४)

१. तिकूडवई—प्रत्यय । २. वियम्मणिज्जं—सु० । ३. गहट्टिया—प्रत्यय ।

विजाहरस्स ताव य, दुहियाओ चन्दवद्धणस्स न्हे । दिवविमाणत्थाओ, अट्ट जणीओ सुरूवाओ ॥ ५ ॥
 मयहरयपरिमियाओ, कन्नाओ अच्छरेहि भणियाओ । साहेह कस्स तुम्हे, दुहियाओ इहं पवन्नाओ ? ॥ ६ ॥
 साहन्ति ताण ताओ, अम्ह पिया चन्दवद्धणो नामं । वइदेहीसंवरणे, दुहियासहिओ गओ मिहिलं ॥ ७ ॥
 सो लक्खणस्स अम्हे, दाऊणं पत्थिओ निययगेहं । ततो पभूइ एसो, हिययम्मि अवट्टिओ निययं ॥ ८ ॥
 सो एस महाघोरे संगामे संसयं समावन्नो । न य नज्जइ कह वि इमं, होहइ दुहियाओ ? तेणऽम्हे ॥ ९ ॥
 लच्छीहरस्स एत्थं, जा होही हिययवल्लहस्स गई । सा अम्हाण वि होही, नियमा अट्टण्ह वि जणीणं ॥ १० ॥
 सोऊण ताण सद्दं, उट्टुमुहो लक्खणो फलोयन्तो । भणिओ य बालियाहिं, सिद्धत्थो होहि कज्जेसु ॥ ११ ॥
 सोऊण ताण सद्दं, ताहे संभरइ दहमुहो अत्थं । सिद्धत्थनामधेयं, घत्तइ लच्छीहरस्सुवरिं ॥ १२ ॥
 रामकणिट्टेण तओ, तं विग्घविणायगत्थजोएणं । नीयं विहलपयावं, संगाममुहे अभीएणं ॥ १३ ॥
 जं जं मुञ्चइ अत्थं, तं तं छेत्तूण लक्खणो धीरो । छाएइ सरवरेहिं, रविं व सयलं दिसायकं ॥ १४ ॥
 एत्थन्तरम्मि सेणिय !, बहुरूवा आगया महाविजा । लक्काहिवस्स जाया, सन्निहिया तत्थ संगामे ॥ १५ ॥
 अह लक्खणेण छिन्नं, सीसं लक्काहिवस्स संभूर्यं । छिन्नं पुणो पुणो च्चिय, उप्पज्जइ कुण्डलभरणं ॥ १६ ॥
 छिन्नम्मि उत्तिमज्जे, एक्के दो होन्ति उत्तिमज्जाइ । उक्कत्तिएसु तेसु य, दुगुणा दुगुणा हवइ वुट्ठी ॥ १७ ॥
 छिन्नं च भुयाजुयलं, दोणिण वि जुयलइ होन्ति वाहाणं । छिन्नेसु तेसु वि पुणो, जायइ दुगुणा भुयावुट्ठी ॥ १८ ॥
 वरमउडमण्डिएहिं, सिरेहि छिन्नेहि नहयलं छन्नं । केऊरभूसियासु य, भुयासु एवं च सविसेसं ॥ १९ ॥
 असि-कणय-चक्र-तोमर-कुन्ताइअण्यसत्थसंधाए । मुञ्चइ रक्खसणाहो, बहुविहबाहासहस्सेहिं ॥ २० ॥

उस समय चन्द्रवर्धन विद्याधरकी सुन्दर आठ पुत्रियों आकाशमें दिव्यविमानमें बैठी हुई थीं। (५) कंचुकियोंसे घिरी हुई उन कन्याओंसे अप्सराओंने पूछा कि तुम किसकी पुत्रियाँ हो और किसके द्वारा अंगीकृत की गई हो। (६) उन्होंने उनसे कहा कि हमारे पिताका नाम चन्द्रवर्धन है। सीताके स्वयंवरमें वह पुत्रियोंके साथ मिथिला गये थे। (७) हमें लक्ष्मणको देकर वह अपने घर लौट आये। तबसे यह हमारे हृदयमें दृढ़ रूपसे अवस्थित हैं। (८) वह इस महाघोर संग्राममें संशयको प्राप्त हुए हैं। क्या होगा यह जाना नहीं जाता, इस कारण हम दुःखी हैं। (९) हृदयवह्नभ लक्ष्मणकी जो यहाँ गति होगी वह हम आठों वहनोंकी भी नियमतः होगी। (१०) उनका शब्द सुनकर ऊपर मुँह उठाकर देखते हुए लक्ष्मणने उन स्त्रियोंसे कहा कि कार्यमें मैं सिद्धार्थ रहूँगा। (११) उनको कहे गये शब्दको सुनकर रावणको सिद्धार्थ नामक अस्त्रका स्मरण हो आया। उसने वह लक्ष्मणके ऊपर फेंका। (१२) संग्राममें निडर लक्ष्मणने तब विघ्नघिनायक नामक अस्त्रके योगसे उसे प्रतापहीन बना डाला। (१३) रावण जो जो अस्त्र छोड़ता था उसे विनष्ट करके धीर लक्ष्मणने सूर्यकी भाँति दिशाचक्रको बाणोंसे छा दिया। (१४)

हे श्रेणिक ! तब बहुरूपा महाविद्या आई। वह उस संग्राममें लंकाधिप रावणके समीपमें स्थित हुई। (१५) इसके बाद लक्ष्मणके द्वारा रावणका सिर काट डालने पर वह पुनः उत्पन्न हुआ। मस्तकको पुनः पुनः काटने पर भी कुण्डलका आभरणवाला वह पुनः पुनः उत्पन्न होता था। (१६) एक सिर काटने पर दो सिर होते थे। दोनोंको काटने पर दुगुनी वृद्धि होती थी। (१७) दोनों भुजाएँ काटने पर बाहुओं की दो जोड़ी हो जाती थी। उन्हें काटने पर पुनः भुजाओंकी दुगुनी वृद्धि होती थी। (१८) उत्तम मुकुटोंसे मण्डित द्विज मस्तकोंसे आकाश छा गया। केयूरसे विभूषित भुजाओंसे ऐसा सविशेष हुआ। (१९) तलवार, कनक, चक्र, तोमर तथा भाले आदि अनेक शस्त्रोंका समूह रावण नाना प्रकारकी अपनी हजारों भुजाओंसे छोड़ता था। (२०) उस आते हुए आयुधसमूहको बाणोंसे काटकर लक्ष्मण विरोधी शत्रुको बाणोंसे

१. रिबुसिर्च नं दिसा०—प्रत्य० । २. पुणरवि अन्नं सीसं विजाए तक्खणं चैव—प्रत्य० । ३. एसु दोसु वि दु—सु० ।

तं लक्ष्मणो वि एन्तं, आउहनिवहं सरेहि छेत्तुणं । छाएऊण पवत्तो, षडिसत्तुं बाणनिवहेणं ॥ २१ ॥
 एकं च दोष्णि तिष्णि य, चत्तारि य पञ्च दस सहस्साइं । लक्खं सिराण छिन्दइ, अरिस्स नारायणो सिग्घं ॥ २२ ॥
 निवडन्तएसु सहसा, बाहासहिणसु उत्तिमङ्गेषु । छन्नं चिय गयणयलं, रणभूमी चैव सविसेसं ॥ २३ ॥
 जं जं सिरं सबाहुं, उप्पज्जइ रावणस्स देहम्मि । तं तं सरेहि सबं, छिन्दइ लच्छीहरो सिग्घं ॥ २४ ॥
 रावणदेहुकत्तिय-पयलन्तुद्दामरुहिरविच्छड्डुं । जायं चिय गयणयलं, सहसा संझारुणच्छायं ॥ २५ ॥
 पयलन्तसेयनिवहो, जणियमहायासदीहनीसासो । चिन्तेइ सेणिय ! तओ, चक्कं लङ्काहियो रुट्ठो ॥ २६ ॥
 वेरुल्लियसहस्सारं, मोत्तियमालाउलं रयणचित्तं । चन्दणकयचच्चिकं, समच्चियं सुरभिकुसुमेहिं ॥ २७ ॥
 सरयरविसरिसतेयं, पलयमहामेहसरिसनिग्घोसं । चिन्तियमेत्तं चक्कं, सन्निहियं रावणस्स करे ॥ २८ ॥
 किन्नर-किंपुरिसगणा, विस्सावसु-नारया सहऽच्छरसा । मोत्तूण समरपेक्खं, भएण दूरं समोसरिया ॥ २९ ॥
 तं चक्ररयणहत्थं, दसाणणं भणइ लक्ष्मणो धीरो । जइ काइ अत्थि सत्ती, पहरसु मा णे चिरावेसुं ॥ ३० ॥
 सो एव भणियमेत्तो, रुट्ठो तं भामिऊण मणवेगं । मुञ्चइ पलयकण्हं जयसंसयकारणं चक्कं ॥ ३१ ॥
 दट्टूण य एज्जन्तं, चक्कं सवडम्मुहं षणनिणायं । आढत्तो सोमिती, वारेउं तं सरोहेणं ॥ ३२ ॥
 वज्जावत्तेण य नंगलेण पउमो निवारणुज्जत्तो । सुग्गीवो वि गयाए, पहणइ भामण्डलो असिणा ॥ ३३ ॥
 वारेऊण पवत्तो, सूलेण विहीसणो महन्तेणं । हणुओ वि मोग्गरेणं, सुग्गीवसुओ कुठारेणं ॥ ३४ ॥
 सेसा वि सेसपहरण-सएसु समजोहिउं समाढत्ता । तह वि य निवारिउं ते, असमत्था वाणरा सबे ॥ ३५ ॥
 तं आउहाण निवहं, भन्तूण समागयं महाचक्कं । सणियं पथाहिणेउं, अहिट्ठियं लक्ष्मणस्स करे ॥ ३६ ॥

छानेका प्रयत्न करने लगा । (२१) नारायण लक्ष्मणने शीघ्र ही शत्रुके एक हजार, दो हजार, तीन हजार, चार हजार, पाँच हजार, दस हजार, लाख सिर काट डाले । (२२) भुजाओंके साथ मस्तकोंके सहसा गिरनेसे आकाश और रणभूमि तो सविशेष छा गई । (२३) बाहुके साथ जो जो सिर रावणके शरीर पर उत्पन्न होता था उस सबको लक्ष्मण बाणोंसे शीघ्र ही काट डालता था । (२४) रावणके शरीरके कटनेके कारण बहनेवाले ढेर रक्तके फैलनेसे आकाश सहसा सन्ध्या-कालीन अरुणकान्ति जैसा हो गया । (२५)

हे श्रेणिक ! ढेर-सा पसीना जिसका बह रहा है और जो अत्यन्त श्रमसे जनित दीर्घ निःश्वाससे युक्त है ऐसा रूढ़ लंकेश तब चक्रके विषयमें सोचने लगा । (२६) वैदूर्यके बने हुए एक हजार आरोंवाला, मोतियोंकी मालासे व्याप्त, रत्नोंसे चित्र-विचित्र, चन्दनसे अनुलिप्त, सुगन्धित पुष्पों द्वारा पूजित, शरत्कालीन सूर्यकी भाँति तेजस्वी, प्रलयकालीन महामेघकी तरह निर्बोष करनेवाला—ऐसा चक्र सोचते ही रावणके हाथमें आ गया । (२७-८) अप्सराओंके साथ किन्नर और किंपुरुषोंके गण, विश्वावसु और नारद युद्धको देखना छोड़ दूर चले गये । (२९) चक्ररत्नसे युक्त हाथवाले रावणसे वीर लक्ष्मणने कहा कि यदि तेरे पास कोई शक्ति है तो प्रहार कर । ढेर मत लगा । (३०) इस प्रकार कहे जानेपर क्रुद्ध उसने मनकी भाँति वेगशील, प्रलयकालीन सूर्य सरीखे तथा विजयमें संशय पैदा करनेवाले उस चक्रको घुमाकर छोड़ा । (३१) खूब आवाज़के साथ सामने आते हुये चक्रको देख लक्ष्मण उसे बाण-समूहसे रोकनेका प्रयत्न करने लगा । (३२) वज्रावर्त धनुष एवं हलसे राम भी निवारणका प्रयत्न करने लगे । गदासे सुग्रीव तथा तलवारसे भामण्डल उसपर प्रहार करने लगे । (३३) विभीषण बड़े भारी शूलसे उसे रोकने लगा । हनुमान भी सुदूरसे तथा सुग्रीवका पुत्र अंगद कुठारसे उसे रोकने लगा । (३४) दूसरे भी बाकीके सैकड़ों प्रहरणोंसे जूझने लगे, फिर भी वे सब बानर उसका निवारण करनेमें असमर्थ रहे । (३५) आयुधोंके समूहका विनाश करके वह महाचक्र धीरेसे प्रदक्षिणा करके लक्ष्मणके हाथमें अधिष्ठित हुआ । (३६) परभवमें किये गये

१. चिरावेह—प्रत्य० । २. कुद्धो तं—प्र० । ३. य—प्रत्य० ।

परै भवे सुकयफलेण माणवा, महिद्धिया इह बहुसोक्त्वभायणा ।
महारणे जयसिरिलद्धसंपया, ससी जहा विमलपयावपायडा ॥ ३७ ॥

॥ इइ पउमचरिए चकरयणुप्पत्ती नाम वावत्तरं षव्वं समत्तं ॥

७३. दहवयणवहविहाणपञ्चं

उप्पन्नचकरयणं, दट्टूणं लक्खणं पवयजोहा । अहिणन्दिया समत्था, भणन्ति एकैकमेकेणं ॥ १ ॥
एयं तं फुडवियडं, अणन्तविरिएण जं पुरा भणियं । नायं संपइ सबं, कज्जं बल-केसवाणं तु ॥ २ ॥
जो एस चक्रपाणी, सो वि य नारायणो समुप्पन्नो । सीहरहम्मि विलग्गो एसो पुण होइ बलदेवो ॥ ३ ॥
एए महानुभावा, भारहवासम्मि राम-सोमित्ती । बलदेव-वासुदेवा, उप्पन्ना अट्टमा नियमा ॥ ४ ॥
दट्टूण चक्रपाणि, सोमित्ती रामणो विचिन्तेइ । तं संपइ संपन्नं, अणन्तविरिएण जं भणियं ॥ ५ ॥
दट्टूण आयवत्तं, जस्त रणे सयल्लगयवडाडोवा । भज्जन्ति खेयरभडा, भयविहलविसंटुला सत्तू ॥ ६ ॥
सायरसल्लिसमत्था, हिमगिरिविञ्जत्थली पुहइनारी । आणाणामकारी, दासि व महं वसे आसि ॥ ७ ॥
सो हं मणुएण कहं, जिणिऊगाऽऽलोइओ दसग्गीवो ? । वट्टइ इमा अवत्था, किं न हु अच्छेरयं एयं ? ॥ ८ ॥
धिद्धि ! ति रायलच्छी, अदीहपेही मुहुत्तरमणिज्जा । परिचइऊगाऽऽडत्ता, एकपए दुज्जणसहावा ॥ ९ ॥

सुकृतके फलसे मनुष्य इस लोकमें वड़े भारी ऐश्वर्यसे युक्त, अनेक सुखोंके पात्र, महायुद्धमें जयश्रीरूपी सम्पत्ति पानेवाले तथा चन्द्रमाकी भाँति विमल प्रतापसे आच्छादित होते हैं । (३७)

॥ पञ्चचरितमें चकरलकी उत्पत्ति नामक वहत्तरवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

७३. रावणका वध

चकरल जिसे उत्पन्न हुआ है ऐसे लक्ष्मणको देखकर सब वानर-योद्धा आनन्दित हुए और एक-दूसरेसे ऐसा बचन कहने लगे । (१) अनन्तवीर्य मुनिने पहले जो स्पष्ट और बिना लुपाये कहा था वह सब कार्य अब बलदेव और केशवका हो गया । (२) जो यह चक्रपाणि है वह भी नारायण रूपसे पैदा हुआ है । सिंहस्थमें बैठे हुए ये बलदेव हैं । (३) ये महानुभाव राम और लक्ष्मण भारतवर्षमें निश्चय ही आठवें बलदेव और वासुदेव रूपसे उत्पन्न हुए हैं । (४)

चक्रपाणि लक्ष्मणको देखकर रावण सोचने लगा कि अनन्तवीर्यने जो कहा था वह अब सिद्ध हुआ । (५) युद्धमें जिसके छत्रको देखकर हाथियोंके समग्र घटाटोपसे सम्पन्न शत्रु खेचर-सुभट भी भयसे विह्वल और दुःखी होकर भाग जाते थे तथा सागरके जलके साथ हिमगिरि और विन्ध्यस्थली तककी पृथ्वी रूपी स्त्री दासीकी भाँति आज्ञाका पालन और प्रणाम करती हुई मेरे बसमें थी—उसा मैं दशप्रोव रावण मनुष्योंके द्वारा पराजित हो कैसा दिखाई देता हूँ ? किन्तु यह भी अवस्था है । क्या यह एक आश्चर्य नहीं है ? (६-८) अदीर्घदर्शी, मुहूर्त भरके लिए रमणीय प्रतीत होनेवाली राज्य-लक्ष्मीको धिक्कार है ! दुर्जनोंके जैसे स्वभाववाली यह एक ही साथ छोड़ने लगी है । (९) किंपाक-फलके जैसे भोग बादमें

१. परभवसुकय—प्रत्य० । २. एकेकिकं वयणं—सु० ।

किपागफलसरिच्छा, भोगा पच्छा हवन्ति विसकडुया । बहुदुवखदोगइकरा, साहूणं गरहिया निच्चं ॥ १० ॥
 भरहाइमहापुरिसा, धन्ना जे उज्झउण रायसिरिं । निखन्ता चरिय तवं, सिवमयलमणुत्तरं पत्ता ॥ ११ ॥
 सो कह मोहेण जिओ, अहयं संसारदीहजणएणं ? । किं वा मरेमि इण्हि, उवट्टिए पडिभए घोरे ? ॥ १२ ॥
 दट्टूण चक्रहत्थं, सोमिच्छि रावणो सवडहुत्तं । महुरवयणेहि एत्तो, निहोसणो भणइ दहवयणं ॥ १३ ॥
 अज्ज वि य भज्ज वयणं, कुणसु पइ ! जाणिउण अप्पहियं । तुहु पउमपसाएणं, जीवसु सीयं समप्पेन्तो ॥ १४ ॥
 सा चेव तुज्ज लच्छो, एव कुणन्तस्स आउयं दीहं । हवइ नियमेण रावण !, नरस्स इह माणभङ्गेणं ॥ १५ ॥
 एक्कोयरस्स वयणं, अवगणेउण रावणो भणइ । रे तुज्ज भूमिगोयर !, गवं चिय दारुणं जायं ॥ १६ ॥
 ताव य गज्जन्ति गया, जाव न पेच्छन्ति अहिमुहावडियं । दाढाविडम्बियमुहं, वियडवडाभासुरं सीहं ॥ १७ ॥
 रयणासवस्स पुत्तो, अहयं सो रावणो विजियसत्तू । दावेमि तुह अवत्थं, जीयन्तयरी निरुत्तेणं ॥ १८ ॥
 भणिओ य लक्खणेणं, किं वा बहुएहि भासियबेहिं । उप्पन्नो तुज्ज अ रिवू, हन्ता नारायणो अहयं ॥ १९ ॥
 निवासियस्स तइया, पियरेणं वणफलासिणस्स मया । नारायणत्तणं ते, विजायं दीहकालेणं ॥ २० ॥
 नारायणो निरुत्तं, होहि तुमं अहवं को वि अन्नो वा । इह तुज्ज माणभङ्गं, करेमि निस्संसयं अज्जं ॥ २१ ॥
 अइगव्विओ सि लक्खण, हत्थविलगणेणियेण चक्केणं । अहवा होइ खलेण वि, महूसवो पाययज्जणस्स ॥ २२ ॥
 चक्केण खेयरेहि य, समयं सतुरङ्गमं सह रहेणं । पेसेमिह पायाले, किं च बहुत्तेण भणिणं ? ॥ २३ ॥
 सो एवभणियमेत्तो, चकं नारायणो भमाडेउं । पेसेइ पडिवहेणं, लङ्काहिवइस्स आरुट्ठो ॥ २४ ॥
 आलोइउण एन्तं, चकं घणघोसभीसणं दित्तं । सर-इसर-भोगारेहिं, उज्जुत्तो तं निवारेउं ॥ २५ ॥

विषके समान कडुए, बहुत दुःख और दुर्गति देनेवाले तथा साधुओंके द्वारा सदैव गर्हित होते हैं। (१०) भरत आदि महापुरुष धन्य हैं जिन्होंने राज्यलक्ष्मीका परित्याग करके दीक्षा अंगीकार की थी और तपका आचरण करके विमल और अनुत्तर शिवपद प्राप्त किया। (११) दीर्घ संसारके उत्पादक मोहके द्वारा मैं कैसा जीता गया हूँ? अथवा घोर भय उपस्थित होने पर अब मैं क्या करूँ? (१२)

रावणके सम्मुख हाथमें चक्र धारण किये हुए लक्ष्मणको देखकर विभीषणने रावणसे मधुर शब्दोंमें कहा कि, हे प्रभो! अपना हित जानकर अब भी मेरा कहना करो। सीताका समर्पण करनेवाले तुम रामके प्रसादसे जीते रहो। (१४) हे रावण! इस प्रकार करनेसे तुम्हारा वही ऐश्वर्य रहेगा। अभिमानके नष्ट होनेसे यहाँ मनुष्यका आयुष्य अवश्य ही दीर्घ होता है। (१५) सहोदर भाईके ऐसे कथनकी अवहेलना करके रावणने कहा कि, हे भूमिगोचर! तेरा गर्व भयंकर हो गया है। (१६) तभी तक हाथी चिचाड़ते हैं जबतक वे दाँतोंसे मुखकी विडम्बना करनेवाले अर्थात् भयंकर और समीपवर्ती जटाओंसे दीप्रिमान सिंहको सामने आया नहीं देखते। (१७) रत्नश्रवाका पुत्र और शत्रुओंपर विजय पानेवाला मैं रावण तुम्हें अवश्य ही जीवनका नाश करनेवाली अवस्था दिखाता हूँ। (१८)

तब लक्ष्मणने कहा कि बहुत बोलने से क्या फायदा? तेरा शत्रु और मारनेवाला मैं नारायण उत्पन्न हुआ हूँ। (१९) इसपर रावणने कहा कि उस समय पिताके द्वारा निर्वासित और जंगली फलोंको खानेवाले तेरा नारायणत्व मैंने दीर्घ कालसे जाना है। (२०) तू अवश्य ही नारायण हो अथवा दूसरा कोई भी हो, किन्तु आज मैं तेरा जरूर मान भंग करूँगा। (२१) हे लक्ष्मण! हाथमें आये हुये इस चक्रसे तू बहुत घमण्डी हो गया है, अथवा क्षुद्र लोगोंको खलके कारण भी महोत्सव होता है। (२२) बहुत कहनेसे क्या फायदा? मैं तुझे चक्र, खेचर, घोड़े और रथके साथ पाताल लोकमें भेजता हूँ। (२३)

इस प्रकार कहे जाने पर रूष्ट उस नारायणने चक्रको घुमाकर लंकापतिके वधके लिए फेंका। (२४) खूब आवाज़ करने से भीषण और दीप्त चक्रको आते देख बाण, भस्तर और मुद्गरसे उसे रोकनेके लिए रावण प्रयत्नशील हुआ। (२५) हे

१. वहरण भासियव्वेण प्रत्य० । २. अरी मु० । ३. अवि य को प्रत्य० ।

रुम्भन्तं पि अहिमुहं, तह वि समल्लियइ चक्ररयणं तं । पुण्णावसाणसमए, सेणिय ! मरणे उवगयम्मि ॥ २६ ॥
 अइमाणिणस्स एत्तो, लङ्काहिवइस्स अहिमुहस्स रणे । चक्रेण तेण सिग्घं, छिन्नं वच्छत्थलं विउलं ॥ २७ ॥
 चण्डाणिलेण भग्गो, तमालवणकसिणअलिउलावयवो । अञ्जणगिरि व पडिओ, दहवयणो रणमहीवट्ठे ॥ २८ ॥
 सुत्तो व कुसुमकेऊ, नज्जइ देवो व महियले पडिओ । रेहइ लङ्काहिवई, अत्थगिरित्थो व दिवसयो ॥ २९ ॥
 एत्तो निसायरवलं, निहयं दट्ठूण सामियं भग्गं । विवरमुहं पयट्ठं, संपेच्छोप्पेह कुणमाणं ॥ ३० ॥
 जोहो तुरङ्गमेणं, पेत्तिज्जइ रहवरो गयवरेणं । अइकायो पुण भडो, विवडइ तत्थेव भयविहलो ॥ ३१ ॥
 एवं पलायमाणं, निस्सरणं तं निसायराणीयं । आसासिउं पयत्ता, सुग्गीव-विहीसणा दो वि ॥ ३२ ॥
 मा भाह मा पलायह, सरणं नारायणो इमो तुहं । वयणेण तेण सेणिय !, सबं आसासियं सेत्तं ॥ ३३ ॥
 जेट्ठस्स बहुलपक्खे, दिवसस्स चउत्थभागसेसम्मि । एगारसीएँ दिवसे रावणमरणं वियाणाहि ॥ ३४ ॥
 एवं पुण्णावसाणे तुरय-गयघडाडोवमज्जे वि सूरा, संपत्ते मच्चुकाले असि-कणयकरा जन्ति नासं मणुस्सा ।
 उज्जोएउं सतेओ सयलजयमिणं सो वि अत्थाइ भाणू, जाए सोक्खप्पओसे स विमलकिरणो किं न चन्दो उवेइ ? ॥ ३५ ॥

॥ इइ पउमचरिए दहवयणवहविहाणं नाम तिहत्तरं पच्चं समत्तं ॥

७४. प्रियंकरउवक्खाणपच्चं

दट्ठूण धरणिपडियं, सहोयरं सोयसल्लियसरीरो । छुरियाएँ देइ हत्थं, विहीसणो निययवहकज्जे ॥ १ ॥

श्रेणिक ! पुण्यके नाशके सभय मरण उपस्थित होने पर सम्मुख आते हुए चक्ररत्नको रोकने पर भी वह आ लगा । (२६) तब अत्यन्त अभिमानी और युद्धमें सामने अवस्थित लंकाधिपति रावणका विशाल वक्त्रस्थल उस चक्रने शीघ्र ही चीर डाला । (२७) तमाल वृक्ष तथा भौरोंके समान अत्यन्त कृष्ण अवयव वाला रावण, प्रचण्ड वायुसे दूटे हुए अञ्जणगिरिकी भाँति, युद्धभूमि पर गिर पड़ा । (२८) जमीन पर गिरा हुआ लंकाधिपति सोचे हुए कामदेवकी भाँति, एक देवकी भाँति और अस्ताचल पर स्थित सूर्यकी भाँति प्रतीत होता था । (२९)

अपने स्वामीका वध देखकर राजस-सेना भाग खड़ी हुई और दवाती-कुचलती विवरकी ओर जाने लगी । (३०) उस समय घोड़ेसे योद्धा और हाथीसे रथ कुचला जाता था । अतिक्रान्त भट तो भयसे विहल हो वहीं पर गिर पड़ता था । (३१) इस तरह पलायन करता हुआ अशरय राजस-सेनाको सुग्गीव और विभीषण दोनों ही आश्वासन देने लगे कि तुम मत डरो, मत भागो । यह नारायण तुम्हारे लिए शरणरूप हैं । हे श्रेणिक ! इस कथन से सारा सैन्य आश्चर्य हुआ । (३२) ज्येष्ठ मासके कृष्णपक्षकी एकादशीके दिन दिवसका चौथा भाग जब वाकी था तब रावणका मरण हुआ ऐसा तुम जानो । (३३)

इस प्रकार पुण्यका नाश होने पर जब मृत्युकाल आता है तब घोड़े और हाथियोंके समूहके बीच स्थित होने पर भी हाथमें तलवार और कनक धारण करनेवाले शूर मनुष्य भी नष्ट हो जाते हैं । जो अपने तेज से इस सारे जगत्को आलोकित करता है वह सूर्य भी अस्त होता है । सुखरूपी प्रदोषकालके आने पर विमल किरणों वाला चन्द्र क्या नहीं आता ? (३४)

॥ पउमचरितमें रावणके वधका विधान नामक तिहत्तरवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

७४. प्रियंकरका उपाख्यान

जमीन पर गिरे हुए अपने सहोदर भाईको देख शोकसे पीड़ित शरीरवाले विभीषणने अपने वधके लिए छुरीको हाथ लगाया । (?) तब रामके द्वारा रोक गया वह वैसुध होकर पुनः आश्रय हुआ । फिर सहोदर भाईके पास जाकर

१. गयरहेणं प्रत्य० ।

रामेण तओ रुद्धो, मुच्छं गन्तुं पुणो वि आसत्थो । एक्कोयरस्स पासे, ठिओ य तो विलविउ पयत्तो ॥ २ ॥
 हा भाय रावण ! तुमं, इन्दो इव संपयाएँ होऊणं । कह पत्तो सि महाजस !, एयाक्थं महापावं ? ॥ ३ ॥
 न य मज्झ तुमे वयणं, पडिच्छियं हिययरं भणन्तस्स । ददच्चक्कताडिओ वि हु, पडिओ धरणीयले फरुसे ॥ ४ ॥
 उट्टेहि देहि वयणं, सुन्दर ! महं एवविलवमाणस्स । उत्तारेहि महाजस !, सोगमहासागरे पडियं ॥ ५ ॥
 सोऊण विसयजीयं, दहवयणन्तेउरं सपरिवारं । सोगाउरं रुयन्तं, रणभूमिं आगयं दीणं ॥ ६ ॥
 दट्ठूण सुन्दरीओ, भत्तारं रुहिरकदमालिचं । धरणीयले पल्लहत्थं, सहसा पडियाउ महिवट्टे ॥ ७ ॥
 रम्भा य चन्दवयणा, तहेव मन्दोयरी महादेवी । पक्खसी य नीला य रुप्पिणी रयणमाला य ॥ ८ ॥
 ससिमण्डला य कमला य सुन्दरी तह य चेव कमलसिरी ! सिरिदत्ता य सिरिमई, भद्रा य तहेव कणयपभा ॥ ९ ॥
 सिरिकन्ता य मिगावइ, लच्छी य अण्णसुन्दरी नन्दा । पउमा वसुंधरा वि य, तडिमात्त चेव भाणुमई ॥ १० ॥
 पउमावती य किती, पीई संज्ञावली सुभा कन्ता । भणवेया रइवेया, पभावई चेव माणवई ॥ ११ ॥
 जुवईण एवमई, अट्टारस साहसीउ अइकलुणं । रोवन्ति दुक्खियाओ, आभरणविमुक्ककेसीओ ॥ १२ ॥
 काइत्थ मोहवडिया, चन्दणवहलोदणण सिक्कणी । उल्लसियरोमकूवा, पडिबुद्धा पउमिणी चेव ॥ १३ ॥
 अवगूहिऊणं दइयं, अन्ना मुच्छं गया कणयगोरी । अण्णगिरिस्स लम्मा छज्जइ सोयामणी चेव ॥ १४ ॥
 काइत्थ समासत्था, उरतालणचञ्चलायतणुयङ्गी । केसे विलुम्पमाणी, रुयइ च्चिय महुरसद्वेणं ॥ १५ ॥
 अङ्गे ठविऊण सिरं, अन्ना परिमुसइ विउलवच्छयलं । काइ चलणारविन्दे, चुम्बई करपल्लवे अवरा ॥ १६ ॥
 जंपइ काइ सुमहुरं, रोवन्ती अंसुपुण्णनयणजुया । हा नाह ! किं न पेच्छसि, सोगसमुद्धम्मि पडियाओ ? ॥ १७ ॥

वह विलाप करने लगा कि— हा भाई रावण ! हा महायश ! सम्पत्तिमें इन्द्रकी भाँति होने पर भी तुम ऐसी महापापी अवस्थाको कैसे प्राप्त हुए ? (२-३) हितकर कहनेवाले मेरा वचन तुमने नहीं माना । चक्रके द्वारा अत्यन्त ताड़ित होने पर तुम कठोर जमीन पर गिर पड़े हो । (४) हे सुन्दर ! उठो और इस तरह विलाप करते हुए मुझसे बातें करो । हे महायश ! शोकरूपी महासागर में पतित मुझे पार लगाओ । (५)

मृत्युके वारेमें सुनकर परिवारके साथ शोकातुर, रोता हुआ और दीन ऐसा रावणका अन्तःपुर समरभूमि पर आया । (६) पतिको रक्तके कीचड़से लिपटे हुए तथा जमीन पर पड़े हुए देख सुन्दरियाँ एकदम पृथ्वी पर गिर पड़ीं । (७) रम्भा, चन्द्रवदना, पटरानी, इरी, प्रधरा, उर्वशी, नीला, रुक्मिणी, रत्नमाला, शशिमण्डला, कमला, सुन्दरी, कमलश्री, श्रीदत्ता, श्रीमती, भद्रा, कनकप्रभा, श्रीकान्ता, मृगावती, लक्ष्मी, अन्नंगसुन्दरी नन्दा, पद्मा, वसुन्धरा, तडिन्माता, भानुमती, पद्मावती, कीर्ति, प्रीति, सन्ध्यावली, सुभा, कान्ता, मनोवेगा, रतिवेगा, प्रभावती तथा मानवती आदि अठारह हजार युवतियाँ आभरणों का त्याग करके और वालोंको विखेरकर दुःखित हो अत्यन्त करुण स्वरमें रोने लगीं । (८-१२) वेसुध होकर गिरी हुई कोई स्त्री चन्दनमिश्रित जलसे शरीर सिक्त होने पर रोम-छिद्रोंके विकसित होनेसे कमलिनीकी भाँति जागृत हुई । (१३) पतिका आलिंगन करके मूर्छित दूसरी कनकगौरी अंजनगिरिसे लगी हुई विजली की भाँति मालूम होती थी । (१४) कोई कोमल शरीरवाली स्त्री होशमें आने पर छाती पीटती थी और वालोंको उखेड़ती हुई मधुरशब्दसे रोती थी । (१५) दूसरी कोई स्त्री सिरको गोदमें रखकर विपुल वक्षस्थलको छूती थी । कोई चरणारविन्द को तो दूसरी करपल्लवको चूमती थी । (१६) दोनों आँखोंमें आँसू भरकर रोती हुई कोई सुमधुर वाणीमें कहती थी कि, हा नाथ ! शोक-समुद्रमें पतित हमें क्या तुम नहीं देखते ? (१७) हे प्रभो ! शक्ति, कान्ति एवं बलसे युक्त तुम विद्याधरोंके स्वामी

१. सतिदत्ता—प्रत्य० । २. कणयाभा—प्रत्य० । ३. वई य कन्ती मु० ।

विज्जाहराण सामी, होऊणं सत्ति-कन्ति-बलजुत्तो । रामस्स विग्गहे किं, सुवसि प्ह धरणिपल्लके ? ॥ १८ ॥
उट्टेहि सयणवच्छल !, एकं पि य देहि अहं उल्लावं । अवराहविरहियाणं, किं कोवपरायणो जाओ ? ॥ १९ ॥
परिहासकहासत्तं, विसुद्धदसणावलीपरमसोमं । वयणिन्दुमिमं सामिय !, किं धारसि अहं परिकुवियो ? ॥ २० ॥
अइसुन्दरे मणोहरविस्थिण्णे जुवइकीलणट्टाणे । कह ते चक्रेण पर्यं, दित्रं वच्छत्थलाभोए ॥ २१ ॥
वइरीहि नियलवद्धे, इन्दइ-घणवाहणे परायत्ते । मोएहि राहवेणं, गुणनिहि ! पोइं करेऊणं ॥ २२ ॥
उट्टेहि सयणवच्छल !, अत्थाणिसमागयाण सुहडाणं । बहुयाणं असरणाणं, देहि प्ह ! दाण-सम्माणं ॥ २३ ॥
विरहग्गिं दीवियाइं, विउज्जवसु इमाइं नाह ! अज्जाइं । अवग्गूहणोदएणं, चन्दणसरिसाणुलेवेणं ॥ २४ ॥
हसियाणि विलसियाणि य, अणेगचडुकम्मकारणाणि प्ह ! । सुमरिज्जन्ताणि इहं, दहन्ति हिययं निरक्सेसं ॥ २५ ॥
एवं रोवन्तीणं, रावणविलयाण दीणवयणाणं । हिययं कस्स न कलुणं, जायं चिय गग्गरं कण्ठं ॥ २६ ॥
एयन्तरम्मि रामो, लक्खणसहिओ विभीसणं भणइ । मा रुयसु भइ ! दीणं, जाणन्तो लोगविचन्तं ॥ २७ ॥
जाणसि य निच्छएणं, कम्माणं विचिद्धियं तु संसारं । पुबोवत्तं पावइ, जीवो किं एत्थ सोएणं ? ॥ २८ ॥
वहुसत्थपण्डिओ वि हु, दसाणणो सयलवसुमईनाहो । मोहेण इममवत्थं, नीओ अइदारुणवलेणं ॥ २९ ॥
रामवयणावसाणे, विभीसणं भणइ तत्थ जणयसुओ । समरे अदिघ्नपट्टी, किं सोयसि रावणं धीरं ? ॥ ३० ॥
मोत्तूण इमं सोयं, निगुणसु अक्खाणयं कहिज्जन्तं । लच्छीहरद्धयसुओ, अक्खपुरे नरवई वसई ॥ ३१ ॥
अरिदमणो त्ति पयासो, परविसए भञ्जिऊण रिउसेजं । कन्तादरिसणहियओ, निययपुरं आगओ सिग्गं ॥ ३२ ॥
तं पविसिऊण नयरं, तोरण-धयमण्डियं भणभिरामं । पेच्छइ य निययमहिलं, आहरणविभूसियं सग्गिहे ॥ ३३ ॥

होकर रामके साथके विग्रह में पृथ्वीरूपी पलंग पर क्यों सोते हो ? (१८) अपने लोगों पर वात्सल्यभाव रखनेवाले तुम उठो । हमारे साथ एक बार बेलो तो सही । निरपराधके ऊपर तुम कुपित क्यों हुए हो ? (१९) हे स्वामी ! परिहास-कथामें आसक्त और विशुद्ध दन्तपंक्तिके कारण अत्यन्त शोभायुक्त इस मुखको हम पर गुस्सेसे क्यों सफेद-सा बना रखा है ? (२०) हे मनोहर ! अत्यन्त सुन्दर, विस्तीर्ण, युवतियोंके क्रीडास्थान जैसे तुम्हारे वक्षस्थल पर चक्रने पर कैसे दिया ? (२१) हे गुणनिधि ! शत्रुओंके द्वारा जंजीर में जकड़े हुए और पराधीन इन्द्रजित एवं धनवाहनको रामके साथ सन्धि करके छोड़ाओ । (२२) हे स्वजनवत्सल प्रभो ! उठो । सभास्थानमें आये हुए बहुतसे अशरण सुभटोंको दान-सम्मान दो । (२३) हे नाथ ! विरहाग्निसे जलते इन शरीरोंको चन्दनसे युक्त लेपवाले आलिंगनरूपी जलसे बुझाओ । (२४) हे प्रभो ! हास्य, विलास तथा अनेक प्रिय सम्भाषणोंके कारणोंको याद करने पर वे हृदयको अत्यन्त जलाते हैं । (२५)

दीन वदनवाली रावणकी स्त्रियोंको इस तरह रोते देख किसका हृदय करुण और कण्ठ गद्गद नहीं हुआ ? (२६) तब लक्ष्मणके साथ रामने विभीषणसे कहा कि भद्र ! लोकका वृत्तान्त जाननेवाले तुम दान होकर मत रोओ । (२७) संसारमें जो कर्मोंकी चेष्टा होती है उसे तुम अवश्य ही जानते हो । पूर्वका उपात्त ही जीव पाता है, अतः यहाँ शोक करनेसे क्या फायदा ? (२८) सब शास्त्रोंमें परिणत और सारी पृथ्वीका स्वामी रावण भी अतिदारुण बलवाले मोहके कारण इस अवस्थाको प्राप्त हुआ । (२९) रामके कहनेके बाद जनकसुत भामण्डलने विभीषणसे कहा कि युद्धमें पीठ न दिखानेवाले धीर रावणके लिये शोक क्यों करने हो ? (३०) इस शोकका परिस्थान करके जो आख्यान कहा जाता है उसे तुम सुनो—

लक्ष्मीधरध्वजका पुत्र प्रख्यात अरिदमन राजा अक्षपुरमें रहता था । विदेशमें शत्रुसैन्यका विनाश करके हृदयमें पत्नीके दर्शनकी इच्छावाला वह शीघ्र ही अपने नगरमें लौट आया । (३१-२) तोरण एवं ध्वजाओंसे परिणत उस मनोहर नगरमें प्रवेश करके उसने अपने भवनमें आभूषणोंसे विभूषित अपनी पत्नीको देखा । (३३) राजाने उससे पूछा कि किसने

१. ंण दरिसणमिणं, देहे सु० । २. गिग्गमियाइं—प्रत्यं० । ३. वहियं ? सु० ।

५४

तं पुच्छइ नरवसभो, सिद्धो हं तुज्झ केण सयराहं ? । सा भणइ मुणिवरेणं, कित्तिधरेणं च मे कहिओ ॥ ३४ ॥
 ईसा-रोसवसगओ, भणइ मुणी जइ तुमं मुणसि चित्तं । तो मे कहेहि सबं, किं मज्झ अवट्टियं हियए ? ॥ ३५ ॥
 तं भणइ ओहिनाणी, तुज्झ इमं भद् ! वट्टए हियए । जह किल कह मरणं मे, होहिइ ? कइया व ? कतो वा ? ॥ ३६ ॥
 भणिओ य सत्तमदिणे, असणिहओ तत्थ चैव मरिऊणं । उप्पज्जिहिसि महन्तो, कीडो विट्ठाहरे नियए ॥ ३७ ॥
 सो आगन्तूण सुयं, भणइ य पीयंकरं तुमे अहयं । अवसेण घाइबो, कीडो विट्ठाहरे थूलो ॥ ३८ ॥
 अह सो मरिऊण तहिं उप्पन्नो पेच्छिऊण तं पुत्तं । मरणमहाभयभीओ, पविसइ विट्ठाहरे दूरं ॥ ३९ ॥
 पीयंकरो मुणिन्दं, पुच्छइ सो तत्थ कीडओ दूरं । मारिज्जन्तो नासइ, भयवं ! केणेव कज्जेणं ? ॥ ४० ॥
 अह भणइ साहवो तं, मुच्च विसायं इहेव संसारे । जो जत्थ समुप्पज्जई, सो तत्थ रइ कुणइ जीवो ॥ ४१ ॥
 पीयंकरस्स चरियं सुणिऊण एयं, तोसं परं उवगया वि हु खेयरिन्दा ।
 लङ्काहिवस्स अणुओ पडिवोहिओ सो, जाओ पुराणविमलामलसुद्धबुद्धी ॥ ४२ ॥

॥ इइ पउमचरिए पीयंकरउवक्खाणयं नाम चउहत्तरं पव्वं समत्तं ॥

७५. इन्दइपमुहणिकस्समणपव्वं

अह भणइ पउमनाहो, मरणन्ताइ हवन्ति वेराणि । लङ्काहिवस्स एत्तो, कुणह लहु पेयकरणिज्जं ॥ १ ॥
 भणिऊण एवमेयं, सब्बे वि विहीसणाइया सुहडा । पउमेण सह पयट्ठा, गया य मन्दोयरी जत्थ ॥ २ ॥
 जुवइसहस्सेहि समं, रोवन्ती राहवो मइपगब्भो । वारेइ महुरभासी, उवणय-हेऊ-सहस्सेहिं ॥ ३ ॥

अकस्मान् मेरे वारेमें तुझे कहा था ? उसने कहा कि मुनिवर कीर्तिधरने मुझे कहा था । (३४) कुछ क्रुद्ध होकर उसने मुनिसे कहा कि यदि तुम मनकी बात जान सकते हो तो मेरे मनमें क्या है यह सब मुझे कहो । (३५) अवधिज्ञानीने उसे कहा कि हे भद्र ! तुम्हारे हृदयमें यह है कि मेरा मरण कैसे होगा, कब होगा और किससे होगा ? (३६) उन्होंने कहा कि सातवें दिन विजलीसे आहत होकर तुम वहीं मर जाओगे और अपने शौचालयमें बड़े कीड़ेके रूपमें पैदा होगे । (३७) उसने वहाँसे आकर अपने पुत्र प्रियंकरसे कहा कि तुम शौचालयमें मोटे कीड़ेको अवश्य ही मार डालना । (३८) बादमें मरकर वह वहीं पैदा हुआ । उस पुत्रको देखकर मरणके महाभयसे भीत वह शौचालयमें दूर घुस गया । (३९) उस प्रियंकरने मुनिसे पूछा कि, हे भगवन् ! मारने पर वह कीड़ा वहाँसे किस कारण दूर भाग गया ? (४०) इस पर उस साधुने कहा कि तुम विषादका त्याग करो । इस संसारमें जो जीव जहाँ पैदा होता है वह वहाँ प्रेम करता है । (४१) प्रियंकरका यह चरित सुनकर खेचरेन्द्र अत्यन्त संतुष्ट हुए । लंकाधिप रावणका वह छोटा भाई विभीषण प्रतिबोधित होने पर पहलेकी-सी विमल, अमल और शुद्ध बुद्धिवाला हुआ । (४२)

। पञ्चचरितमें प्रियंकरका उपाख्यान नामक चौहत्तरवाँ पर्व समाप्त हुआ ।

७५. इन्द्रजित आदिका निष्क्रमण

तत्पश्चान् रामने कहा कि वैर मरण तक होते हैं, अतः अब लंकेश रावणका प्रेत्यकर्म जल्दी करो । (१) ऐसा कहकर विभीषण आदि सभी सुभट रामके साथ जहाँ मन्दोदरी थी वहाँ गये । (२) हजारों युवतियोंके साथ रोती हुई उसको मतिप्रगल्भ और महुरभापी रामने हजारों दृष्टान्त और तर्क द्वारा रोका । (३) गोशीर्षचन्दन, अगुरु और कर्पूर आदि

१. ०वरेणं णाणधरेणं--प्रत्य० ।

गोसीसचन्दणा-ऽगुरु-कप्पूराईसु सुरहिदबेसु । लङ्काहिवं नरिन्दा, सक्करेउं गया वप्पं ॥ ४ ॥
 पउमसरस्स तडत्थो, पउमामो भणई अत्तणो सुहडे । मुञ्जह रक्खसवसभा, जे बद्धा कुम्भकण्णार्ई ॥ ५ ॥
 रामवयणेण एत्तो, नरेहि ते आणिया तहिं सुहडा । मुक्का य बन्धणाओ, भोगाविरत्ता तओ जाया ॥ ६ ॥
 सुहडो य भाणुकण्णो, इन्द्र वणवाहणो य मारीई । मय-दाणवमाईया, हियण मुणित्तणं पत्ता ॥ ७ ॥
 अह भणइ लच्छिनिलओ, जइ वि हु अवयारिणो भवइ सत्तू । तह वि य पसंसियवो, अहियं माणुजओ सुहडो ॥ ८ ॥
 संथाविऊण भणिया, इन्द्रपमुहा भडा निर्ययभोगे । मुञ्जह जहाणुपुवं, सोउबेयं पमोत्तुणं ॥ ९ ॥
 भणियं तेहि महायस !, अलाहि भोगेहि विससरिच्छेहिं । घणसोगसंगएहिं, अणन्तसंसारकरणेहिं ॥ १० ॥
 रामेण लक्खणेण य, भणन्ता वि य अणेगउवएसे ! न य पडिवत्ता भोगे, इन्द्रपमुहा भडा बहवे ॥ ११ ॥
 अवयारिऊण सरदरे, ण्हाया सबे वि तत्थ विमलजले । पुणरवि य समुत्तिण्णा, गया य निययाइं टाणाइं ॥ १२ ॥
 वणियाण मारियाण य, भडाण लोगो कहासु आसत्तो । लङ्कापुरीएँ चिट्ठइ, वियलियवादारकम्मन्तो ॥ १३ ॥
 केई उवालभन्ता, रुवन्ति सुहडा दसाणणगुणोहं । अत्ते विरत्तभोगा, संजाया तक्खणं चेव ॥ १४ ॥
 केइ भडा अइघोरं, संसारं निन्दिऊण आढत्ता । अत्ते पुण रायसिरी, भणन्ति तडिच्चलसहावा ॥ १५ ॥
 दीसइ पच्चक्खमिणं, सुहमसुहफलं रणम्मि सुहडाणं । भङ्गेण य विजएण य, समसरिसवलाण वि इहेव ॥ १६ ॥
 थोवा वि सुकयपुण्णा, पावन्ति जयं रणम्मि नरवसभा । बहवो वि कुच्छियतवा, भज्जन्ति न एत्थ संदेहो ॥ १७ ॥
 अवलस्स बलं धम्मो, रक्खइ आउं पि सुचरिओ धम्मो । धम्मो य हवइ पक्खो, सबतो पेच्छए धम्मो ॥ १८ ॥
 आसेसु कुञ्जरेसु य, भडेसु सन्नद्धवद्धकवएसु । न य रक्खिज्जइ पुवं, पुण्णेहिं विवज्जिओ पुरिसो ॥ १९ ॥

सुगन्धित पदार्थोंसे लंकाधिपका सत्कार करनेके लिए वे राजा सरोवरके किनारे पर गये । (४) पद्मसरोवरके तट पर स्थित रामने अपने सुभटोंसे कहा कि कुम्भकर्ण आदि जो सुभट बाँधे गये हैं उन्हें छोड़ दो । (५) रामके कहनेसे वे सुभट आदिमियों द्वारा वहाँ लाये गये और बन्धनसे मुक्त किये गये । तब वे भोगोंसे विरक्त हुए । (६) भानुकर्ण, इन्द्रजीत, वनवाहन, मरीचि, मयदानव आदि सुभटोंने मनमें मुनिधर्म अंगीकार किया । (७) तब लक्ष्मणने कहा कि यद्यपि शत्रु अपकारी होता है, फिर भी सम्माननीय सुभटकी तो विशेष प्रशंसा करनी चाहिए । (८) इन्द्रजीत आदि सुभटों को सान्त्वना देकर उसने कहा कि शोक एवं उद्वेगका परित्याग करके तुम पहलेकी भाँति अपने भोगोंका उपभोग करो । (९) उन्होंने कहा कि, हे महायरा ! विप सदृश, बड़े भारी दुःखसे युक्त और अनन्त-संसारके कारण भूत भोग अब बस हैं । (१०)

राम और लक्ष्मणके द्वारा अनेक उपदेश दिये जाने पर भी इन्द्रजित आदि बहुत-से सुभटोंने भोगका स्वीकार नहीं किया । (११) सरोवरमें उतरकर उसके निर्मल जलमें सब नहाये । फिर बाहर निकलकर वे अपने-अपने स्थानों पर गये । (१२)

व्यापार और कर्मोंका परित्याग करके लंकापुरीमें लोग घायल और मरे हुए सुभटोंकी कथामें आसक्त थे । (१३) कई सुभट उपालम्भ देते हुए रावणके गुण-समूह पर रो रहे थे, तो दूसरे तत्काल ही भोगोंसे विरक्त हुए । (१४) कई सुभट अति-भयंकर संसारकी निन्दा करने लगे तो दूसरे कहने लगे कि राजलक्ष्मी बिजलीकी भाँति चंचल स्वभाववाली होती है । (१५) यहाँ युद्धमें ही समान बलवाले सुभटोंके विनाश और विजयसे शुभ और अशुभ फल प्रत्यक्ष देखा जाता है । (१६) इसमें सन्देह नहीं कि पुण्यशाली राजा थोड़े होने पर भी युद्धमें जय पाते हैं, जबकि कुत्सित तप करनेवाले बहुत होने पर भी विनष्ट होते हैं । (१७) निर्बलका बल धर्म है । भलीभाँति आचरित धर्म आयुषकी भी रक्षा करता है । धर्म ही अपनी तरफ़दारी करनेवाला मित्र होता है । धर्म चारों तरफ़ देखता है । (१८) पूर्वके पुण्यसे विवर्जित पुरुषकी अश्व, हाथी

१. नियमगेहे—प्रत्य० ।

केइ भणन्ति एसा, हवइ गई वरभडाण संगामे । अन्ने जंपन्ति भडा, सत्ती वि हु रामकेसीणं ॥ २० ॥
 भङ्गन्ति आउहाई, अवरे घत्तन्ति भूसणवराई । संवेगसमावन्ना, अन्ने गिण्हन्ति पबज्जं ॥ २१ ॥
 एवं घरे घरे च्चिय, लङ्कानयरीएँ सोगगहियाओ । रोवन्ति महिलियाओ, कळुणं पयलन्तनयणाओ ॥ २२ ॥
 अह तस्स दिणस्सऽन्ते, साहू नामेण अप्पमेयवलो । छप्पन्नसहस्सजुओ, मुणोण लङ्कापुरी पत्तो ॥ २३ ॥
 जइ सो मुणी महप्पा, एन्तो लङ्काहिवम्मि जीवन्ते । तो लक्खणस्स पीई, होन्ती सह रक्खसिन्देणं ॥ २४ ॥
 ज्योणसयं अणुणं, जत्थऽच्छइ केवली समुदेसे । वेराणुवन्धरहिया, हवन्ति निययं नरवरिन्दा ॥ २५ ॥
 गयणं जहा अरूवं, चलो य वाऊ थिरा हवइ भूमो । तह केवल्लिस्स नियमा, एस सहावो य लोयहिओ ॥ २६ ॥
 सङ्घेण परिमिओ सो, गन्तुं कुसुमाउहे वरुज्जाणे । आवासिओ मुणिन्दो, फासुयदेसम्मि उवविट्ठो ॥ २७ ॥
 ज्ञायन्तस्स भगवओ, एवं घाइक्खएण कम्मणं । रयणिसमयम्मि तइया, केवल्लणं समुप्पवं ॥ २८ ॥
 एगगमणो होउं, तस्साईसयसमूहसंवन्धं । निसुणेहि ताव सेणिय, भणन्तं पावनासयरं ॥ २९ ॥
 अह मुणिवसहस्स तथा, ठियस्स सोहासणे सुरवरिन्दा । चलिया भिसन्तमउडा, जिणटरिसणउज्जया सबे ॥ ३० ॥
 धायइसण्डविदेहे, सुरिन्दरमणे पुरे य पुबिल्ले । उप्पन्नो तित्थयरो, तिलोयपुज्जो तहिं समए ॥ ३१ ॥
 असुरा नाग-सुवण्णा, दीव-समुदा दिसाकुमारा य । वाय-ग्गि-विज्जु-थणिया, भवणनिवासी दसविधप्पा ॥ ३२ ॥
 किन्नर-किंपुरिस-महोरगा य गन्धर्व-रक्खसा जक्खा । भूया य पिसाया वि य, अट्टविहा वाणमन्तरिया ॥ ३३ ॥
 चन्दा सूरु य गहा, नक्खत्ता तारगा य नायवा । पञ्चविहा जोइसिया, गइरइकामा इमे देवा ॥ ३४ ॥
 सोहम्मीसाण-सणकुमार-माहिन्द-बम्भलोगा य । लन्तयकप्पो य तहा, छट्ठो उण होइ नायवो ॥ ३५ ॥

अथवा कवच बाँधकर तैयार सुभटोंसे रक्षा नहीं होती । (१६) कई लोग कह रहे थे कि संग्राममें सुभटोंकी यही गति होती है, तो दूसरे भट राम और लक्ष्मणकी शक्तिके बारेमें कह रहे थे । (२०) कई सुभट आयुध तोड़ रहे थे, दूसरे उत्तम भूषण ले रहे थे तो और दूसरे विरक्त होकर प्रव्रज्या ग्रहण कर रहे थे । (२१) इस प्रकार लंकागरीके घर-घरमें शोकान्वित महिलाएँ आँसुओंसे आँसू बहाकर करण-स्वरमें रो रही थीं । (२२)

उस दिनके अन्त भागमें अप्रमेयवल नामके साधु छप्पन हजार मुनियोंके साथ लंकापुरीमें आये । (२३) यदि वे महात्मा मुनि लंकाधिप रावणके जीते जी आये होते तो लक्ष्मणकी राक्षसेन्द्र रावणके साथ सन्धि हो जाती । (२४) जिस प्रदेशमें केवली ठहरते हैं वहाँ सौ योजनसे अधिक विस्तारमें लोग चरभावसे रहित हो जाते हैं । (२५) स्वभावसे ही जैसे आकाश अरूपी है, वायु चल है और पृथ्वी स्थिर है उसी प्रकार लोगोंका हित करना यह केवलीका निश्चित स्वभाव होता है । (२६) संघसे युक्त उन मुनिने कुसुमायुध नामके सुन्दर उद्यानमें जाकर आवास किया । वे निर्जीव प्रदेशमें ठहरे । (२७) ध्यान करते हुए भगवान्को धाती-कर्मोंका क्षय होने पर रातके समय केवलज्ञान उत्पन्न हुआ । (२८) हे श्रेष्ठिक ! तुम पापका नाश करनेवाले उनके अतिशयोंके बारेमें जो कहा जाता है उसे एकप्र मनसे सुनो । (२९)

जब वे मुनिवर सिंहासन पर स्थित थे तब मुकुटोंसे शोभित सब देव जिनदर्शनके लिए उत्सुक होकर चले । (३०) उस समय धातकी खण्डके पूर्व विदेहमें आये हुए सुरेन्द्ररमण नगरमें त्रिलोकपूज्य तीर्थकर उत्पन्न हुए । (३१) असुरकुमार, नागकुमार, सुवर्णकुमार, द्वीपकुमार, समुद्रकुमार, दिक्कुमार, वायुकुमार, अग्निकुमार, विद्युत्कुमार तथा स्तनितकुमार—ये दस प्रकारके भवन्वासी देव होते हैं । (३२) किन्नर, किंपुरुष, महोरग, गान्धर्व, राक्षस, यक्ष, भूत और पिशाच—ये आठ प्रकारके व्यन्तर देव होते हैं । (३३) चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारे—ये पाँच प्रकारके ज्योतिष्क देव नित्य गतिशील होते हैं । (३४) सौधर्म, ऐशान, सानत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्मलोक तथा छटा लान्तक कल्प जानना चाहिए । (३५) आगे

१. णियमा—प्रत्य० । २. सो, तुगे कुसु० प्रत्य० ।

एतो य महासुक्ती, हवइ सहस्सार आणओ चेव । तह षणओ य आरण, अच्चुयकण्पो य वारसभो ॥ ३६ ॥
 एएसु य कण्पेसुं, देवा इन्दाइणो महिङ्कीया । चलिया मिसन्तमउडा, अन्ने वि सुरा सपरिवारा ॥ ३७ ॥
 आगन्तूण य नयरे, धेतूण जिणं गया सुमेरुगिरिं । अहिसिच्चन्ति सुरवरा, खीरोयहिंवारिकलसेहिं ॥ ३८ ॥
 वत्तम्मि य अहिसेए, आहरणविहूसियं जिणं काउं । वन्दन्ति सबदेवा, पहट्टमणसा सपरिवारा ॥ ३९ ॥
 एवं कयाभिसेयं, जणणोए अप्पिऊण तित्थयरं । देवा नियत्तमाणा, सरन्ति मुणिकेवलुप्पत्ती ॥ ४० ॥
 गय-तुरय-वसह-केसरि-विमाण-रु-चमर-वाहणारूढा । गन्तूण पणमिऊण य, साहुं तथेव उवविट्ठा ॥ ४१ ॥
 सोऊण दुन्दुहिरवं, देवाण समागयाण पडमाभो । खेयरवलपरिकिण्णो, साहुसयासं समल्लीणो ॥ ४२ ॥
 तह भाणुकण्ण-इन्द्रइ-घणवाहण-मरिञ्जि-मयभडादीया । एए मुणिस्स पासं, अल्लीणा अङ्करत्तम्मि ॥ ४३ ॥
 एवं थोऊण मुणी, देवा धिज्जाहरा य सोममणा । निमुणन्ति मुणिमुहाओ, विणिग्गयं बहुविहं धम्मं ॥ ४४ ॥
 भणइ मुणी मुणियत्थो, संसारे अट्टकम्मपडिबद्धा । जीवा भमन्ति मूढा, सुहाऽसुहं चेव वेयन्ता ॥ ४५ ॥
 हिंसाऽलिय-चोरिकाइएसु परजुवइसेवणेसु पुणो । अइलोभपरिणया वि य, मरिऊण हवन्ति नेरइया ॥ ४६ ॥
 रयणप्पभा य सक्कर-वालुय पङ्कप्पभा य धूमपभा । एतो तमा तमतमा, सत्त अहे होन्ति पुट्टवीओ ॥ ४७ ॥
 एयासु सयसहस्ता, चउरासीई हवन्ति नरयाणं । कक्खडपरिणामाणं, असुईणं दुरभिगन्धाणं ॥ ४८ ॥
 करवत्त-जन्त-सामलि-वेयरणी-कुम्भिपाय-पुडपाया । हण-दहण-पयण-भञ्जण-कुट्टणघणवेयणा सब्बे ॥ ४९ ॥
 पज्जलियङ्गारनिहा, हवइ मही ताण सबनरयाणं । तिक्खासु पुणो अहियं, निरन्तरा वज्जसुईसु ॥ ५० ॥
 एएसु पावकम्मा, पक्खित्ता तिक्खेयणसयाइं । अणुहोन्ति सुइरकालं, निमिसं पि अलद्धसुहसाया ॥ ५१ ॥

महाशुक्र, सहस्सार, आनत, प्राणत, आरण और बारहवाँ अच्युतकल्प है। (३६) इन कल्पों में इन्द्र आदि बड़ी भारी ऋद्धिवाले देव होते हैं। मुकुटोंसे शोभित वे तथा अन्य देव परिवारके साथ चले। (३७) सुरेन्द्ररमण नामक नगरमें आकर और जिनको लेकर वे सुमेरु-पर्वत पर गये। यहाँ देवोंने क्षीर सागरके जलसे भरे कलशोंसे अभिषेक किया। (३८) अभिषेक पूर्ण होने पर जिनेश्वरको आभूषणोंसे सजाकर मनमें आनन्दित सब देवोंने परिवारके साथ वन्दन किया। (३९) इस तरह अभिषेक तीर्थकरको माताको सौंपकर लौटते हुए देवोंको मुनिको केवल ज्ञानकी उत्पत्ति हुई है इसका स्मरण हो आया। (४०) हाथी, घोड़े, वृषभ, सिंह, मृग, चमरी गायके आकारके विमानों और वाहनों पर आरूढ़ वे साधुके पास गये और प्रणाम करके वहीं बैठे। (४१) दुन्दुभिकी ध्वनि और देवोंका आगमन सुनकर विद्याधर-सेनासे घिरे हुए राम साधुके पास आये। (४२) भानुकर्ण, इन्द्रजित, घनवाहन, मरिचि तथा सुभट मय आदि—ये आधी रातके समय मुनिके पास आये। (४३) सौम्य मनवाले देव एवं विद्याधरोंने मुनिकी स्तुति करके मुनिके मुखसे निकला हुआ बहुविध धर्म सुना। (४४) वस्तुतत्त्वको जाननेवाले मुनिने कहा कि—

आठ कर्मोंमें जकड़े हुए मूढ़ जीव शुभ और अशुभका अनुभव करते हुए संसारमें भ्रमण करते हैं। (४५) हिंसा, भूठ, चोरी आदि तथा परस्त्रीसेवनसे और अतिलोभमें ग्रस्त जीव मरकर नैरयिक (नरकके जीव) होते हैं। (४६) रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा, पंक्रप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा तथा तमस्तमःप्रभा (महातमःप्रभा)—ये सात नरकभूमियाँ हैं। (४७) इनमें कर्कश परिणामवाले, अशुचि और दुरभिगन्धवाले चौरासी लाख नरकस्थान आये हैं। (४८) वे सब नरक-स्थान करवत, यंत्र, शाल्मलिवृक्ष, वेंतरणीनदी, कुम्भिपाक, पुटपाक, वध, दहन, पचन, भञ्जन, कुट्टन आदि बड़ी भारी वेदनाओंसे युक्त होते हैं। (४९) उन सब नरकोंकी जमीन जलते अङ्गारों सरीखी और बिना व्यवधानके वज्रकी तीक्ष्ण सुइयोंसे अत्यन्त व्याप्त होती हैं। (५०) इनमें फेंके गये पापकर्म करनेवाले जीव निमिषमात्र भी सुख न पाकर सुचिरकाल पर्यन्त संकड़ों तीव्र दुःख अनुभव करते हैं। (५१)

१. सुको, सहस्यारो आणओ तह य चेव सु० । २. वलेण सहिओ, साहु०--प्रथ० । ३. परमगन्धाणं सु० ।

कूडतुल-कूडमाणाइएसु रसभेइणो य कावडिया । ते वि मया परलोए, हवन्ति तिरियो उ दुहभागी ॥ ५२ ॥
 वय-नियमविरहिया वि हु, अज्जव-मद्वगुणेषु उववेया । उप्पज्जन्ति मणुस्सा, तहाऽऽरियाऽणारिया चेव ॥ ५३ ॥
 वय-नियम-सील-संजम-गुणेषु भावेन्ति जे उ उप्पाणं । ते कालगय समाणा, हवन्ति कप्पालएसु सुरा ॥ ५४ ॥
 ततो वि चुयसमाणा, चक्कराईकुले समुप्पत्ता । भोत्तूण मणुयसोत्खं, लएन्ति निस्सङ्गपवज्जं ॥ ५५ ॥
 चारित्त-नाण-दंसण-विसुद्धसम्मत्त-लेसपरिणामा । धोरतव-चरणजुत्ता, उहन्ति कम्म निरवसेसं ॥ ५६ ॥
 पँप्फोडियकम्मरया, उप्पाडेऊण केवलं नाणं । ते पावेन्ति सुविहिया, सिवमयलमणुत्तरं ठाणं ॥ ५७ ॥
 ते तत्थ सङ्गरहिया, अवावाहं सुहं अणोवमियं । भुज्जन्ति सुइरकालं, सिद्धा सिद्धि समलीणा ॥ ५८ ॥
 अह सो मुणिवरवसभो, इन्दइ-घणवाहणेहि निययभवं । परिपुच्छिओ महप्पा, कहिऊण तओ समादत्तो ॥ ५९ ॥
 कोसम्वीनयरीए, सहोयरा आसि तत्थ घणहीणा । घणपीइसंपउत्ता, नामेणं पढम-पच्छिमया ॥ ६० ॥
 अह तं पुरी भमन्तो, भवदत्तो नाम आगओ समणो । तस्स सयासे धम्मं, सुणेन्ति ते भायरा दो वि ॥ ६१ ॥
 संवेगसमावत्ता, जाया ते संजया समियपावा । नयरीए तोए राया, नन्दो महिया य इन्दुमुहो ॥ ६२ ॥
 अह तत्थ पट्टणवरे, परमविभूई कया नरिन्देणं । धय-उत्त-तोरणाईसु चेव कुसुभोवयारिल्ल ॥ ६३ ॥
 दट्टण तं विभूई, कयं नियाणं तु पच्छिमजईणं । होमि अहं नन्दसुओ, जइ मे धम्मस्स माहप्यं ॥ ६४ ॥
 वोहिज्जन्तो वि मुणी, अणियत्तमणो नियाणकयगाहो । मरिऊण य उववत्तो, गढभम्मि उ इन्दुवयणाए ॥ ६५ ॥
 गढभट्टियस्स रत्ता, वहूणि कारावियाणि लिङ्गाणि । पायारनिवसणाई, जायाई रज्जकहणाई ॥ ६६ ॥
 जाओ कुमारसीहो, अह सो रइवद्वणो ति नामेणं । अमरिन्दरूवसरिसो, रज्जसमिद्धिं समणुपत्तो ॥ ६७ ॥

भूटे तौल, भूटे माप आदिसे तथा धी आदि रसोमें जो मिश्रण करनेवाले कपटी लोग हैं वे भी मरकर दूसरे जन्ममें दुःखभागी तिर्यञ्च होते हैं । (५२) व्रत-नियमसे रहित होने पर भी आर्जव एवं मार्दव गुणोंसे युक्त जीव मनुष्यके रूपसे उत्पन्न होते हैं और आर्य या अनार्य होते हैं । (५३) जो व्रत, नियम, शील एवं संयमके गुणोंसे आत्माको वासित करते हैं वे मरने पर कल्पलोकमें देवके रूपमें पैदा होते हैं । (५४) वहाँसे च्युत होने पर चक्रवर्ती आदिके कुलोंमें उत्पन्न वे मनुष्य-सुखका उपभोग करके आसक्तिरहित प्रव्रज्या अंगीकार करते हैं । (५५) चारित्र, ज्ञान और दर्शन तथा विशुद्ध सम्यक्त्व, विशुद्ध लेश्या और विशुद्ध परिणामवाले वे घोर तप एवं चारित्रसे युक्त हो कर्मको सम्पूर्ण रूपसे जला डालते हैं । (५६) कर्मरजका विनाश करके और केवल ज्ञान पैदा करके वे सुविहित शिव, अचल और अनुत्तर स्थान प्राप्त करते हैं । (५७) सिद्धिको प्राप्त वे संगरहित सिद्ध वहाँ अव्यावाध और अनुपम सुखका अनन्तकाल तक उपभोग करते हैं । (५८)

इसके पश्चात् इन्द्रजित और घनवाहनने अपने पूर्व भवके बारेमें मुनिवरसे पूछा । तब उन महात्माने कहा कौशाम्बी नगरीमें प्रथम और पश्चिम नामके दरिद्र किन्तु अत्यन्त प्रीतियुक्त दो भाई रहते थे । (५९-६०) विदार करते हुए भवदत्त नामक एक श्रमण उस नगरीमें आये । उन दोनों भाइयोंने उनके पास धर्म सुना । (६१) वैराग्ययुक्त वे पापका शमन करनेवाले संयमी हुए । उस नगरीका राजा नन्द और रानी इन्दुमुखी थी । (६२) उस उत्तम नगरमें राजाने ध्वज, छत्र एवं तोरण आदिसे तथा पुष्प-रचनासे बड़ी भारी धामधूम की । (६३) उस धामधूमको देखकर पश्चिम नामके साधुने निदान (भावी जन्मके लिए संकल्प) किया कि यदि धर्मका माहात्म्य है तो मैं नन्द राजाका पुत्र होऊँ । (६४) समझाने पर भी अनिवृत्त मनवाला और निदानके लिए जिद करनेवाला वह मुनि मरकर इन्दुमुखीके गर्भमें उत्पन्न हुआ । (६५) जब वह गर्भमें था तब राजाने बहुत-से लिङ्ग करवाये तथा राज्यमें वर्णन करने योग्य अर्थात् दर्शनीय प्रकारोंसे युक्त सन्निवेशोंकी स्थापना की । (६६) सिद्धके समान श्रेष्ठ कुमारका जन्म हुआ । अमरेन्द्रके समान रूपशाले रतिवर्धन नामक उस कुमारने राज्यकी समृद्धि प्राप्त की । (६७)

१. ०या दुहाभागी—प्रत्य० । २. पप्फोडिऊण कम्मं, उवा० प्रत्य० । ३. नन्दी सु० । ४. इन्दुमई—प्रत्य० ।

५. होज अहं नन्दिसुओ जइ धम्मरससिथि माहप्यं सु० ।

पढंमो वि तवं काउं, कालगओ सुरवरो समुपपन्नो । संभरइ कणिट्टं सो, जायं नन्दस्स अङ्गुहं ॥ ६८ ॥
 तस्स पडिबोहणट्टे, चेल्लयरूवेण आगओ सिग्घं । पविसरइ रायभवणं, दिट्ठो रइवद्धणेण तओ ॥ ६९ ॥
 अब्भुट्ठिओ निविट्ठो, कहेइ रइवद्धणस्स पुबभवं । सबं सपच्चयगुणं, जं दिट्ठं जं च अणुह्यं ॥ ७० ॥
 तं सोऊण विवुट्ठो, अह सो रइवद्धणो विगयसङ्गो । गिण्हइ जिणवरदिकखं, देवो वि गओ निययटाणं ॥ ७१ ॥
 रइवद्धणो वि य तवं, काऊणं कालधम्मसंजुत्तो । पढमामरस्स पासं, गओ य वेमाणिओ जाओ ॥ ७२ ॥
 तत्तो चुया समाणा, विजए जाया विउद्धवरनयरे । एक्कोयरा नरिन्दा, चरिय तवं पत्थिया सग्गं ॥ ७३ ॥
 तत्तो वि चुया तुब्भे, इन्द्रइ-घणवाहणा समुपपन्ना । लङ्काहिवस्स पुत्ता, विजा-वल-रूवसंपन्ना ॥ ७४ ॥
 जा आसि इन्दुवयणा, सा इह मन्दोयरी समुपपन्ना । जणणी बीयम्मि भवे, जिणसासणभावियमईया ॥ ७५ ॥
 सुणिऊण परभवं ते, दो वि जणा तिबजायसंवेगा । निस्सङ्गा पवइया, समयं विजाहरभडेहिं ॥ ७६ ॥
 धीरो वि भाणुक्कणो, मारीजी चेव खेयरसमिद्धी । अवहत्थिऊण दोण्णि वि, पवइया जायसंवेगा ॥ ७७ ॥
 मन्दोयरी वि पुत्ते, पवज्जमुवागए सुणेऊणं । सोयसराहयहियया, मुच्छावसविम्भला पडिया ॥ ७८ ॥
 चन्दणजल्लिप्रङ्गी, आसत्था विलविउं समाढत्ता । हा इन्द्रइ ! घणवाहण !, जणणी नो लक्खिया तुब्भे ॥ ७९ ॥
 भत्तारविरहियाए, पुत्ता आलम्बणं महिलियाए । होन्ति इह जीवलोए, चत्ता तेहिं पि पावा हं ॥ ८० ॥
 तिसमुहमेइणिवई, मह दइओ विणिहओ रणमुहम्मि । पुत्तेहि वि मुक्का हं, कं सरणं वो पवज्जामि ? ॥ ८१ ॥
 एवं सा विल्वन्ती, अज्जाए तत्थ संजमसिरीए । पडिबोहिया य गेण्हइ, पव्वज्जं सा महादेवी ॥ ८२ ॥
 चन्दणहा वि अणिच्चं, जीयं नाऊण तिबदुक्खत्ता । पवइया दढभावा, जिणवरधम्मज्जया जाया ॥ ८३ ॥

प्रथम मुनि भी तप करके मरने पर देव रूपसे उत्पन्न हुआ । नन्दके पुत्र रूपसे उत्पन्न छोटे भाईको उसने याद किया । (६८) उसके प्रतिबोधके लिये वह शीघ्र ही शिष्यके रूपमें आया । राजभवनमें उसने प्रवेश किया । तब रतिवर्धनने उसे देखा । (६९) अभ्युत्थानके बाद बैठे हुए उसने रतिवर्धनसे पूर्वभव तथा जो देखा और अनुभव किया था वह सब सप्रमाण कहा । (७०) यह सुनकर वह रतिवर्धन विरक्त हो गया । उसने जिनवरकी दीक्षा ग्रहण की । देव भी अपने स्थान पर चला गया । (७१) रतिवर्धन भी तप करके और कालधर्मसे युक्त होने पर (अर्थात् मरने पर) प्रथम देवलोकमें गया और वैमानिक देव हुआ । (७२) वहाँसे च्युत होने पर विजय क्षेत्रमें आये हुए विवुद्धवर नगरमें वे सहोदर राजा हुए । तप करके वे स्वर्गमें गये । (७३) वहाँसे भी च्युत होने पर लंकेश रावणके विद्या, बल और रूपसे सम्पन्न पुत्र इन्द्रजित और घनवाहनके रूपमें तुम उत्पन्न हुए हो । (७४) जो इन्द्रमुखी थी वह यहाँ दूसरे भवमें जिनशासनसे वासित बुद्धिवाली माता मन्दोदरीके रूपमें उत्पन्न हुई है । (७५)

पर-भवके बारेमें सुनकर उन दोनों ही व्यक्तियोंको तीव्र वैराग्य उत्पन्न हुआ । निस्संग उन्होंने विद्याधर सुभटोंके साथ दीक्षा ली । (७६) धीर भानुकर्ण तथा मरीचि दोनोंने वैराग्ययुक्त हो खेचर-समृद्धिका परित्यागकर प्रव्रज्या ली । (७७) पुत्रोंने प्रव्रज्या अंगीकार की है यह सुनकर हृदयमें शोकरूपी बाणसे आहत मन्दोदरी मूर्च्छासे विह्वल हो नीचे गिर पड़ी । (७८) शरीर पर चन्दनजलसे सिक्त वह होशमें आने पर विलाप करने लगी कि, हा इन्द्रजित ! हा घनवाहन ! तुमने माताका ध्यान नहीं रखा (७९) इस जीवलोकमें पतिसे विरहित स्त्रीके लिए पुत्र आलम्बनरूप होते हैं । मैं पापी उनसे भी परित्यक्त हुई हूँ । (८०) जिसके तीन और समुद्र था ऐसी पृथ्वीके स्वामी मेरे पति युद्धमें मारे गये । पुत्रोंके द्वारा भी मैं परित्यक्त हुई हूँ । अब मैं किसकी शरणमें जाऊँ ? (८१) इस प्रकार वहाँ विलाप करती हुई उसे आर्या संयमश्रीने प्रतिबोधित किया । उस महादेवीने दीक्षा ग्रहण की । (८२) तीव्र दुःखसे पीड़ित चन्द्रनला भी जीवनको अनित्य जानकर प्रव्रजित हुई और दृढ़

१. नन्दस्स मु० । २. छइय० मु० । ३. पवइया स्वायजसा—प्रत्य० ।

अट्टावन्नसहस्सा, तथ य जुवईण लद्धवोहीणं । पवइया नियमगुणं, कुणन्ति दुक्खवखयट्ठाए ॥ ८४ ॥
इवं इन्द्रइ-मेहवाहणमुणी धम्मेक्चित्ता सया, नाणालद्धिसमिद्धसाहुसहिया अब्भुज्जया संजमे ।
भवाणन्दयरा भमन्ति वसुहं ते नागलीलागई, अवावाहसुहं सिवं सुविमलं मग्गन्ति रत्तिदिवं ॥ ८५ ॥

॥ इय पउमचरिए इन्द्रइआदिनिक्खमणं नाम पञ्चहत्तरं पव्वं समत्तं ॥

७६. सीयासमागमपव्वं

एत्तो दसरहतणया, हलहर-नारायणा महिद्धीया । लङ्कापुरिं पविट्ठा, हय-गय-रह-जोहपरिकिण्णा ॥ १ ॥
पड्डपड्डह-भेरि-झल्लरि-काहल-तिलिमा-मुइङ्गसदेणं । जयजयसदेणं तहिं, न सुणिज्जइ कण्णवड्डियं पि ॥ २ ॥
तत्थेव रायमगो, पउमं सहलवखणं पलोयन्तो । न य तिप्पइ नयरजणो, संपेत्थोप्पेल्लकुणमाणो ॥ ३ ॥
विज्जाहरीहिं सहसा, भवणगवक्खा निरन्तरं छन्ना । वयणकमलेसु अहियं, रेहन्ति पलोयमाणीणं ॥ ४ ॥
अन्नोन्ना भणइ सही, एसो वरपुण्डरीयदलनयणो । सीयाए हियइट्ठो, रामो इन्दो व रूवेणं ॥ ५ ॥
इन्दीवरसरिसाभो, इन्दीवरलोयणो महावाह । चकरयणस्स सामी, पेच्छ सही लवखणो एसो ॥ ६ ॥
एसो क्किक्किन्धिर्वई, विराहिओ जणयनन्दणो नीलो । अङ्गो अङ्गकुमारो, हणुवन्तो जम्बुवन्तो य ॥ ७ ॥
एवं ते पउमई, सुहडा निसुणन्तया जणुल्लवे । सीयाभिमुहा चलिया, आवूरेन्ता नरिन्दपहं ॥ ८ ॥
अह सो आसन्नत्थं, पुच्छइ वरचमरधारिणिं पउमो । भइ ! कहेहि सिभं, कत्थं उच्छइ सा महं भज्जा ? ॥ ९ ॥

भाववाली वह जिनवरके धर्ममें प्रयत्नशील हुई । (८२) ज्ञानप्राप्त अठावन हजार युवतियोंने वहाँ दीक्षा ली । दुःखके क्षयके लिए वे नियमोंका आचरण करने लगीं । (८४) इस तरह धर्ममें सदा दत्तचित्त और नाना प्रकारकी लक्ष्मियोंसे समृद्ध साधुओंसे युक्त इन्द्रजित और मेघवाहन मुनि संयममें उद्यमशील हुए । भयजन्योंको आनन्द देनेवाले तथा हाथीकी लीलाके समान गतिवाले वे पृथ्वी पर घूमते थे और अव्यावाध एवं विमल शिव-सुखको रात-दिन खोजते थे । (८५)

। पञ्चचरितमें इन्द्रजित आदिका निष्क्रमण नामक पञ्चहत्तरवाँ पर्व समाप्त हुआ ।

७६. सीताका समागम

तब बड़ी भारी ऋद्धिवाले और घोड़े, हाथी, रथ एवं योद्धाओंसे विरे हुए दशरथपुत्र राम और लक्ष्मणने लंकापुरीमें प्रवेश किया । (१) उस समय बड़े बड़े डंके, भेरी, मांझ काहल, तिलिमा व मृदंगकी आवाज तथा जय-जय ध्वनिके कारण कानमें पड़ा शब्द भी सुनाई नहीं पड़ता था । (२) वहीं राजमार्गमें लक्ष्मणके साथ रामको देखकर धक्कमधक्का करनेवाले नगरजन वृत्त नहीं होते थे । (३) दर्शन करनेवाली कमल-वदना विद्याधारियोंके द्वारा सहसा भवनोंके सघन रूपसे छाये हुए भवनोंके गयाक्ष अधिक शोभित हो रहे थे । (४) वे एक-दूसरेसे कहती थीं कि, सखी ! पुण्डरीकके दलके समान सुन्दर नेत्रोंवाले और सीताके प्रिय ये राम रूपमें इन्द्रकी भाँति हैं । (५) हे सखी ! नीलकमलके समान कान्तिवाले, नील-कमलके समान नेत्रोंवाले, बलवान् और चक्ररत्नके स्वामी इस लक्ष्मणको तो देख । (६) ये किष्किन्धिपति सुग्रीव, विराधित, जनकनन्दन भामरडल, नील, अंग, अंगद कुमार, हनुमान, जाम्बवन्त हैं । (७) इस प्रकार लोगोंकी बात-चीतको सुनते और राजमार्गको भरते हुए राम आदि सुभट सीताकी ओर चले । (८) आसनपर स्थित सुन्दर चामरधारिणी से उन रामने पूछा

१. करेन्ति--प्रय० ।

सा भणइ सामि ! एसो पुष्पइरी नाम पबओ रम्मो । तत्थऽच्छइ तुह घरिणी, पउमुज्जाणस्स मज्झमि ॥ १० ॥
 अह सो कमेण पत्तो, रामो सीयाएँ सन्निवेशमि । ओइण्णो य गयाओ, पेच्छइ कन्ता मल्लिणदेहा ॥ ११ ॥
 पयईए तणुयङ्गी, अहियं चिय विरहदूमियसरीरा । सीया दट्टूण पियं, अहोमुही लज्जिया रुयइ ॥ १२ ॥
 अवहत्थिऊण सोयं, दइयस्स समागमे जणयधूया । हरिसवसपुलइयङ्गी, जाया चिय तक्खणं चेव ॥ १३ ॥
 देवि व सुराहिवई, रइमिव कुसुमाउहं घणसिणेहा । भरहं चेव सुभदा, तह अलीणा पइं सीया ॥ १४ ॥
 अवगूहिया खणेकं, रामेण ससंभमेण जणयसुया । निबवियमाणसऽङ्गी, सिता इव चन्दणरसेणं ॥ १५ ॥
 दइयस्स कण्ठलग्गा, भुयपासे सुमणसा जणयधूया । कण्ठरुसमासत्ता, कणवलय चिव तणुयङ्गी ॥ १६ ॥
 दट्टूण रामदेवं, सीयासहियं नहट्टिया देवा । मुञ्चन्ति कुसुमवासं, गन्धोदयमिस्सियं सुरहिं ॥ १७ ॥
 साहु ति साहु देवा, भणन्ति सीयाएँ निम्मलं सीलं । सुददाणुबयधारी, मेरु व अकम्पियं हियं ॥ १८ ॥
 लच्छीहरेण एत्तो, सीयाए चरणवन्दणं रइयं । तीए वि सो कुमारो, अवगूढो तिबनेहेणं ॥ १९ ॥
 सा भणइ भइ ! एयं, पुवं समणुत्तमेहिं जं भणियं । तं तइ सुयमणुभूयं, दिट्ठं चिय पायडं अम्हे ॥ २० ॥
 चक्रहरसिरीएँ तुमं, जाओ चिय भायणं पुहइणाहो । एसो वि तुज्ज जेट्ठो, बलदेवत्तं समणुपत्तो ॥ २१ ॥
 एकोयराय चलणे, पणमइ भामण्डलो जणियतोसो । सीयाए सुमणसाए, सो वि सिणेहेण अवगूढो ॥ २२ ॥
 सुग्गीवो पवणसुओ, नलो य नीलो य अङ्गओ चेव । चन्दाभो य सुसेणो, विराहिओ जम्बवन्तो य ॥ २३ ॥
 एए अद्वे य बहू, विज्जाहरपत्थिवा निययनामं । आभासिऊण सोयं, पणमन्ति जहाणुपुबीए ॥ २४ ॥
 आभरणभूसणाइं, वरसुराहिविलेवणाइं विविहाइं । आणेन्ति य कथाइं, कुसुमाइं चेव दिवाइं ॥ २५ ॥

कि, भद्रे ! मेरी पत्नी कहाँ है, यह मुझे तुम शीघ्र ही कहो । (६) उसने कहा कि, हे स्वामी ! यह पुष्पगिरि नाम स्म्यक पर्वत है । वहाँ पर पद्मिनी नाम की वीध आपकी पत्नी है । (१०)

वे राम अनुक्रमसे गमन करने हुए सीताके सन्निवेशमें पहुँचे । हाथी परसे नीचे उतर कर उन्होंने मलिन शरीरवाली सीताको देखा । (११) प्रकृतिसे ही पतले शरीरवाली और उसपर विरहसे दुःखित देहवाली सीता प्रियको देखकर मुँह नीचा करके लज्जित हो रोने लगी । (१२) फिर पतञ्ज समागम होने पर शोकका परित्याग करके सीता तत्क्षण ही हृदयके आवेशमें पुलकित शरीरवाली हो गई । (१३) इन्द्रके पास देवीकी भाँति, कामदेवके पास रतिकी भाँति और भरतके पास सुभद्राकी भाँति अत्यन्त स्नेहयुक्त सीता पतिके पास गई । (१४) उत्कंठावश एक क्षणभरके लिए आलिंगित सीता मानों चन्दन-रससे सीक्त हुई हो इस तरह मन और शरीरसे शीतल हुई । (१५) पतिके कण्ठसे लगी हुई और भुजपाशमें बद्ध तथा मनमें प्रसन्न तन्वंगी सीता कल्पवृक्षसे लगी हुई कनकलता-सी लगती थी । (१६) सीता सहित रामको देखकर आकाशमें स्थित देवोंने गन्धोदकसे युक्त सुगन्धित पुष्पोंकी वृष्टि की । (१७) देव कहने लगे कि साधु ! साधु ! अणुत्रतोंको दृढ़तापूर्वक धारण करनेवाली सीताका शील निर्मल है और हृदय मेरुकी भाँति निष्प्रकम्प है । (१८) तब लक्ष्मणने सीताके चरणोंमें प्रणाम किया । उसने भी तीव्र स्नेहसे उस कुमारका आलिंगन किया । (१९) उसने कहा कि, हे भद्र ! पहले श्रमणोत्तमने जो कहा था वह वैसा ही स्पष्ट हमने सुना देखा और अनुभव किया । (२०) पृथ्वीनाथ तुम चक्रवर्तीकी लक्ष्मीके पात्र हुए हो, तुम्हारे इन बड़े भाईने भी बलदेवपन प्राप्त किया है । (२१) आनन्दमें आये हुए भामण्डलने भी सहोदरा सीताके चरणोंमें प्रणाम किया । प्रसन्न मनवाली सीताने भी स्नेहसे उसका आलिंगन किया । (२२) सुग्रीव, हनुमान, नल, नील, अंगद, चन्द्राभ, सुयेण, विराधित, जाम्बवन्त—इन तथा दूसरे भी बहुत से विद्याधर राजाओंने अनुक्रमसे अपना अपना नाम कहकर सीताको प्रणाम किया । (२३-४) वे आभरण, वभूषण, विविध प्रकारके उत्तम सुगन्धित विलेपन, वस्त्र एवं दिव्य कुसुम आदि लाये थे । (२५)

१. कन्तं मालणदेहं—प्रत्य० ।

५५

भणन्ति तं पणयसिरा महाभडा, सुभे ! तुमं कमलसिरी न संसथं ।
अणोवमं विसयसुहं जहिच्छिथं, निसेवसू विमलजसं हलाउहं ॥ २६ ॥
॥ इइ पञ्चमचरिण सीयासमागमविहाणं नाम छ्हत्तरं पठ्वं समत्तं ॥

७७. मयवक्खाणपच्चं

अह सो महाणुभावो, भुवणालङ्कारमत्तमायङ्गं । आरूढो षडमाभो, समयं सीसाएँ^१ सोममुहो ॥ १ ॥
खेयरभडेहि संमयं, जयसदूदुग्धुद्रुमङ्गलरवेणं । पत्तो रावणभवणं, पविसइ समयं पिययमाए ॥ २ ॥
भवणस्स तस्स मज्झे, थम्भसहस्सेण विरइयं तुङ्गं । सन्तिजिणिन्दस्स धरं, वरकणयविचित्तभत्तीयं ॥ ३ ॥
ओइण्णो थ गयाओ, समयं सीयाए रियइ जिणभवणं । रामो पसन्नमणसो, काउस्सग्गं कुणइ धीरो ॥ ४ ॥
रइऊण अञ्जलिउडं, सीसे सह गेहिणीएँ पडमाभो । संथुणंइ सन्तिनाहं, सब्भूयगुणेहि परितुट्ठो ॥ ५ ॥
जस्साऽवयारसमाए, जाया सब्बथ तिहुयणे सन्ती । सन्ति त्ति तेण नामं, तुज्ज कयं पावनासयरं ॥ ६ ॥
बाहिरचक्केण रिवू, जिणिऊण इमं समज्जियं रज्जं । अब्भिन्ताररिउसेत्तं, विणिज्जियं ज्ञाणचक्केण ॥ ७ ॥
सुर-असुरपणमिय ! नमो, ववगयजरमरण ! रागरहिय ! नमो । संसारनासण ! नमो, सिवसोक्खसमज्जिय ! नमो ते ॥ ८ ॥
लच्छीहरो विसल्ला, दोण्णि वि काऊण अञ्जलो सीसे । पणमन्ति सन्तिपडिमं, भडा य सुग्गीवमादीया ॥ ९ ॥
काऊण थुइविहाणं, पुणो पुणो तिवभत्तिराएणं । तत्थेव य उवविट्ठा, जहासुहं नरवरा सब्बे ॥ १० ॥

सिर भुक्ताये हुए महाभट उसे कहते थे कि, हे शुभे ! तुम कमलश्री (लक्ष्मी) हो, इसमें सन्देह नहीं । हलायुध (राम) के साथ तुम अनुपम विषयसुखका यथेच्छ उपभोग करो और विमल यश प्राप्त करो । (२६)

। पञ्चचरितमें सीतासमागम-विधान नामक छिहत्तरवाँ पर्व समाप्त हुआ ।

७७. मय आख्यान

तत्पश्चान् चन्द्रके समान मुखवाले वे महानुभाव राम सीताके साथ भुवनालंकार नामक मत्त हाथी पर सवार हुए । (१) जयधेष और गाये जाते मंगल-गीतोंके साथ खेचर-सुभटोंसे युक्त वे रावणके महलके पास आ पहुँचे और प्रियतमाके साथ उसमें प्रवेश किया । (२) उस महलके बीच हज़ार खम्भोंसे बनाया गया, ऊँचा और सोनेका बना हुआ विचित्र दीवारोंवाला शान्तिजिनेन्द्रका मन्दिर था । (३) हार्थी परसे उतरकर सीताके साथ वे जिनमन्दिरमें गये । धीरे रामने प्रसन्न मनसे कायोत्सर्ग (ध्यान) किया । (४) सब्बे गुणोंसे परितुष्ट रामने मस्तक पर हाथ जोड़कर सीताके साथ शान्तिनाथ प्रभुकी स्तुति की कि—

जिसके अवतारके समय त्रिभुवनमें सर्वत्र शान्ति हो गई, अतः आपका पापका नाश करनेवाला शान्ति नाम रखा गया । (५-६) आपने बाह्य चक्रसे शत्रुओंको जीतकर यह राज्य प्राप्त किया था । आपने ध्यानरूपी चक्रसे अभ्यन्तर शत्रु सैन्यको जीता था । (७) सुर एवं असुरों द्वारा प्रणाम किये जाते आपको नमस्कार हो । जरा और मरणसे रहित तथा रागाहीन आपको नमस्कार हो । संसारका नाश करनेवाले आपको नमस्कार हो । शिव-सुख पानेवाले आपको नमस्कार हो । (८) लक्ष्मण और विशल्या दोनोंने तथा सुग्रीव आदि सुभटोंने भी मस्तक पर अञ्जलि करके भगवान् शान्तिनाथकी प्रतिमाको प्रणाम किया । (९) तीव्र भक्तिरागसे पुनः पुनः स्तुति विधान करके सभी लोग वहीं पर सुखपूर्वक बैठे । (१०)

१. ०ए पञ्चममुहो—प्रत्य० । २. सहिओ, जय०—प्रत्य० । ३. उत्तिण्णो—प्रत्य० । ४. ० णए संतिजिणं—प्रत्य० ।
५. पावणासयरं—प्रत्य० । ६. न्तरारिसिन्ने—प्रत्य० ।

एयन्तरे सुमाली, विहीसणो मालवन्तनामो य । रयणासवमाईया, घणसोयसमोत्थयसरीरा ॥ ११ ॥
 दट्टूण ते विसण्णे, जंपइ पउमो सुणेह मह वयणं । सोगस्स मा हु सङ्गं, देह मणं निययकरणिज्जे ॥ १२ ॥
 इह सयलजीवलोए, जं जेण समज्जियं निययकम्मं । तं तेण पावियवं, सुहं च दुक्खं च जीवेणं ॥ १३ ॥
 जाएण य मरियवं, अवस्स जीवेण तिहुयणे सयले । तं एव जाणमाणो, संसारठिईं मुयसु सोगं ॥ १४ ॥
 खणभङ्गुरं सरीरं, कुसुमसमं जीवणं चलं जीयं । गयकण्णसमा लच्छी, सुमिणसमा वन्धवसिणेहा ॥ १५ ॥
 मोत्तूण इमं सोगं, सबे तुम्हे वि कुणह अप्पहियं । उज्जमह विणवराणं, धम्मे सवाए सत्तीए ॥ १६ ॥
 महुरक्खरेहि एवं, संथाविय रहुवईण ते सबे । निययघराइं उवगया, सुमणा ते बन्धुकरणिज्जे ॥ १७ ॥
 ताव विहीसणघरिणी, जुवइसहस्ससहिया महादेवी । संपत्ता य वियङ्गा, पउमसयासं सपरिवारा ॥ १८ ॥
 पायप्पडणोवगया, पउमं विन्नवइ लक्खणेण समं । अहं अणुग्गहत्थं, कुणह घरे चलणपरिसङ्गं ॥ १९ ॥
 जाव चिय एस कहा, वट्टइ एत्तो विहीसणो ताव । भणइ य पउम ! घरं मे, वच्च तुमं कीरउ पसाओ ॥ २० ॥
 एव भणिओ पयझे, गयवरखन्धट्ठिओ सह पियाए । सयलपरिवारसहिओ, संघट्टुट्ठेन्तज्जणनिवहो ॥ २१ ॥
 गय-तुरय-रहवरेहिं, जाणविमाणेहिं खेयारूढा । वच्चन्ति रायमग्गे, तूरवुच्छलियकयचिन्धा ॥ २२ ॥
 पत्ता विहीसणवरं, मन्दरसिहरोवमं जगज्जेन्तं । वरजुवइगोयवाइय—निच्चं कयमङ्गलाडोवं ॥ २३ ॥
 अह सो विहीसणेणं, रयणघाईकओवयारो य । सीयाए लक्खणेण य, सहिओ पविसरइ भवणं तं ॥ २४ ॥
 मज्झे घरस्स पेच्छइ, भवणं पउमप्पभस्स रमणिज्जं । थम्भसहस्सेणं चिय, धरियं वरकणयभितीयं ॥ २५ ॥
 खिङ्खिणिमालोऊलं, पलम्बलम्बूसविरइयाडोवं । नाणाविहधयचिन्धं, वरकुसुमकयच्चणविहाणं ॥ २६ ॥

तब अत्यन्त शोकसे व्याप्त शरीरवाले सुमाली, विभीषण, माल्यवन्त तथा रत्नश्रवा आदिको विपण देखकर रामने कहा कि तुम मेरा कहना सुनें । शोकका संसर्ग न करा और अपने कार्यमें मन लगाओ । (११-१२) इस सारे संसारमें जिस जीवने जैसा अपना कर्म अर्जित किया होता है उसके अनुसार सुख और दुःख उसे पाना ही पड़ता है । (१३) समग्र त्रिभुवनमें जो पैदा हुआ है उसे अवश्य ही मरना पड़ता है । इस प्रकारकी संसार-स्थितिको जाननेवाले तुम शोकका परित्याग करो । (१४) शरीर क्षणभंगुर है, जीवन फूलके समान है, जीवन अस्थिर है, लक्ष्मी हाथीके कानके समान चंचल होती है और बान्धवोंका स्नेह स्वप्न जैसा होता है । (१५) इस शोकका त्याग करके तुम सब आत्महित करो और सम्पूर्ण शक्तिसे जिनवरोंके धर्ममें उद्यमशील रहो । (१६)

रामके द्वारा इस तरह मधुर वचनोंसे आश्रित वे सब अपने अपने घर पर गये । सुन्दर मन्तवाले वे बन्धुकार्यमें लग गये । (१७) उस समय विभीषणकी पत्नी महादेवी विदग्धा एक हजार युवतियों और परिवारके साथ रामके पास आई । (१८) पैरोंमें गिरकर लक्ष्मणके साथ रामसे उसने विनती की कि हम पर अनुग्रह करके आप हमारे घरमें पधारें । (१९) जब यह बातचीत हो रही थी तब विभीषणने रामसे कहा कि हमारे घर पर पधारकर आप अनुग्रह करें । (२०) ऐसा कहने पर प्रियाके संग हाथीके स्कन्ध पर स्थित राम समग्र परिवार तथा समुदायमें उठे हुए जनसमूहके साथ चले । (२१) वाद्योंकी ध्वनिके साथ ऊपर उठे हुए ध्वजचिह्नवाले विद्याधर हाथी, घोड़े एवं रथ तथा यान-वमान पर आरूढ़ हो राजमार्गसे चले । (२२) मन्दराचलके शिखरके समान उन्नत, चमकते हुए और सुन्दर युवतियोंके गाने-बजानेके साथ नित्य किये जानेवाले मंगलसे व्याप्त विभीषणके घर पर वे पहुँचे । (२३) विभीषण द्वारा रत्नोंके अर्घ्य आदिसे सम्मानित वे राम, सीता और लक्ष्मणके साथ उस भवनमें प्रविष्ट हुए । (२४) भवनके बीच उन्होंने हजार खम्भों द्वारा धारण किया हुआ और सोनेकी दीवारवाला पद्मप्रभस्वामीका सुन्दर मन्दिर देखा । (२५) छोटे-छोटे घुंघरूकी मालाओंसे युक्त, लटकते हुए लम्बूषसे शोभित, नानाविध ध्वजाओंसे चिह्नित और उत्तम घुंघरूसे अर्चनवाधि जिसमें की गई है ऐसा वह मन्दिर था । (२६)

पउमपभस्स पडिमा, विसुद्धवरपउमरागनिम्माणा । पउमो पियाए सहिओ, संथुणइ विसुद्धभावेणं ॥ २७ ॥
 अत्रे वि लक्खणाई, सुहडा परिवन्दिऊण उवविट्ठा । तथेव जिणाययणे अच्छन्ति क्हाणुवन्धेणं ॥ २८ ॥
 विज्जाहरोसु ताव य, प्हाणविही विरइया महिद्धीया । रामस्स लक्खणस्स य सीयाए तहाविसल्लाए ॥ २९ ॥
 वेरुलियण्हाणपीढे, ताण य उवविट्ठयाण मज्जणयं । बहुतूर-सङ्खपउरं, वत्तं चिय कणयकलसेहिं ॥ ३० ॥
 प्हाओ अलंक्रियतण्ण, पउमो पउमपभं षणमिऊणं । भत्तस्स गिरिसरिच्छं, तत्थ य रइयं निवेयणयं ॥ ३१ ॥
 पउमो लक्खणसहिओ, अत्रो वि य षरियणो समन्तियणो । भोयणवरं पविट्ठो, भुज्जइ नाणाविहं भत्तं ॥ ३२ ॥
 मिउसुरहिसाउकलियं, पञ्चणहं चेव इन्दियत्थाणं । इहं सुहं भणोज्जं, इच्छाए भोयणं भुत्तं ॥ ३३ ॥
 सम्माणिया य सबे, विज्जाहरपत्थिवा सविभवेणं । वरहार-कडय-कुण्डल-वत्था-उलंकारमादीसु ॥ ३४ ॥
 निवत्तभोयणा ते, जंपन्ति सुहासणट्टिया सुहडा । रक्खसवंसस्स अहो !, विभीसणो भूसणो जाओ ॥ ३५ ॥
 एत्तो विहीसणाई, सबे विज्जाहरा कयाडोवा । रज्जाहिसेयकज्जे, उवट्टिया पउमणाहस्स ॥ ३६ ॥
 तो भणइ पउमणाहो, भरहो अणुमन्निओ मह गुरूणं । रज्जे रज्जाहिबई, सयलसमत्थाए वसुहाए ॥ ३७ ॥
 अभिसेयमङ्गलत्थे, दीसइ दोसो महापुरिसचिणो । भरहो सोऊणऽह्हे, संविग्गो होहइ कयाई ॥ ३८ ॥
 भणियं च एवमेयं, सबेहि वि खेयरेहि मिलिएहिं । लङ्कापुरीए रामो, अच्छइ इन्दो व सुरलोए ॥ ३९ ॥
 सबे वि खेयरभडा, तथेव टिया पुरीए वलसहिया । अमरा इव सुरलोए, अइसयगुणरिद्धिसंपन्ना ॥ ४० ॥
 पउमो सीयाए समं, भुज्जन्तो उत्तमं विसयसोक्खं । दोगुन्दुगो व देवो, गयं पि कालं न लक्खेइ ॥ ४१ ॥
 सग्गसरिसो वि देसो, पियविरहे रण्णसन्निहो होइ । इट्ठजणसंपभोगे, रण्णं पि सुरालेयं जिणइ ॥ ४२ ॥

विशुद्ध और उत्तम पद्मरागसे निर्मित पद्मप्रभ की प्रतिमा की प्रियाके साथ रामने विशुद्ध भावसे स्तुति की। (२७) लक्ष्मण आदि दूसरे भी सुभट वन्दन करके बैठे और वातर्चित करते-करते उसी जिनमन्दिरमें ठहरे। (२८) तब विद्याधरियोंने राम, लक्ष्मण, सीता तथा विशाल्याके लिए महान् वैभवशाली स्नानविधि की। (२९) वैदूर्यके बने स्नानपीठों पर बैठे हुए उनको सोनेके कलशोंसे स्नान कराया गया। उस समय बहुत-से वाद्य एवं शंख बजाये गये। (३०) स्नात और अलंकृत शरीरवाले रामने पद्मप्रभ भगवान्को वन्दन करके अन्नका पर्यंतसदृश नैवेद्य रचा। (३१) पश्चात् लक्ष्मण तथा मंत्रियोंसे युक्त दूसरे परिजनोंके साथ रामने भोजनगृहमें प्रवेश किया और नाना प्रकारके आहारका उपभोग किया। (३२) मृदु, सुरभि और स्वादु, पाँचों इन्द्रियोंके लिए इष्ट, सुखकर और मनोज्ञ ऐसा भोजन उन्होंने इच्छानुसार लिया। (३३) बादमें उत्तम हार, कटक, कुण्डल, वरु एवं अलंकार आदिसे उन्होंने सब विद्याधर राजाओंका वैभवके साथ सम्मान किया। (३४) भोजनसे निवृत्त और सुखासन पर बैठे हुए वे सुभट कहते थे कि, अहो ! विभीषण राजसवंशका भूषण हुआ है। (३५)

इसके अनन्तर सब विद्याधर मिलकर राज्याभिषेकके कार्यके लिए रामके पास उपस्थित हुए। (३६) तब रामने कहा कि मेरे गुरुजनने समस्त पृथ्वीके राज्यका राजा भरत होगा ऐसा स्वीकार किया था। (३७) अतः अभिषेक-मंगलमें महापुरुषों द्वारा अर्गाकृत दोष दीखता है। हमारे वारेमें सुनकर भरत कदाचिन् विरक्त हो जाय। (३८) सब विद्याधरोंने मिलकर कहा कि ऐसा ही हो। सुरलोक में इन्द्रकी भाँति राम लंकापुरीमें ठहरें। (३९) गुण और ऋद्धिसे अत्यन्त सम्पन्न सब खेचर-सुभट देवलोकमें देवोंकी भाँति, उसी नगरीमें सेनाके साथ ठहरे। (४०)

सीताके साथ उत्तम विषयसुखका उपभोग करते हुए दोगुन्दुक देवके जैसे राम बीते हुए कालको नहीं जानते थे। (४१) प्रियके विरहमें स्वर्ग सदृश देश भी अरण्यतुल्य हो जाता है और इष्टजनका मिलन होने पर अरण्य भी देवलोकको जीत लेता

तह य विसल्लासहिओ, अच्छइ लच्छीहरो जणियतोसो । रइसागरोवगाढो, सुरवइलीलं विडम्बन्तो ॥ ४३ ॥
 एवं ताण रइसुहं, अणुहवमाणण ऽण्येवरिसाइं । वोलीणाणि दिणं पिव, अइसयगुणरिद्धिजुत्ताणं ॥ ४४ ॥
 अह लखणो कयाई, पुराणि सरिऊण कुवरादीणि । कन्नाण कए लेहे, साहिन्नाणे विसज्जेइ ॥ ४५ ॥
 विज्जाहरेहि गन्तुं, ताण कुमारीण दरिसिया लेहा । लखणमणुस्सगाणं, अहियं नेहं वहन्तीणं ॥ ४६ ॥
 दसपुरवईण धूया, रूवमई वज्जयणनरवइणा । वीसज्जिया य पत्ता, लङ्कानयरिं सपरिवारा ॥ ४७ ॥
 अह वालिखिल्लदुहिया, कुवरनयराहिवस्स गुणकलिया । सा वि ताहिं संपत्ता, कन्ना कल्लणमाल ति ॥ ४८ ॥
 पुहवीधरस्स दुहिया, पुहइपुरे तथ होइ वणमाला । विज्जाहरेहि नीया, सा वि य लच्छीहरसमीधं ॥ ४९ ॥
 खेमज्जलीयनयरे, जियसत्तू नाम तस्स जियपउमा । धूया परियणसहिया, सा वि य लङ्कापुरिं पत्ता ॥ ५० ॥
 उज्जेणिमाइएसु य, नयरेसु वि जाओ रायकन्नाओ । लङ्कापुरी गयाओ, गुरुहि अणुमज्जियाओ य ॥ ५१ ॥
 परिणैइ लच्छिनिलओ, परमविभूईए ताओ कन्नाओ । सब्बसुन्दरीओ, सुरवहुसमसरिसरूवाओ ॥ ५२ ॥
 परिणैइ पउमणाहो, कन्नाओ जाओ पुवदिन्नाओ । नवजोवणुज्जलाओ, रइमुणसारं वहन्तीओ ॥ ५३ ॥
 एवं परमविभूई, हलहरनारायणा समणुपत्ता । लङ्कापुरोए रज्जं, कुणन्ति विज्जाहरसमग्गा ॥ ५४ ॥
 लखरिसाणि कमेण य, गयाणि तथेव पवरनयरीए । सोमिति-हलहराणं, विज्जाहररिद्धिजुत्ताणं ॥ ५५ ॥
 एवं तु कहन्तरए, पुणरवि निसुणेहि अन्नसंवन्धं । इन्दइमुणिमाईणं, सेणिय ! लद्धीगुणहराणं ॥ ५६ ॥
 ज्ञाणाणलेण सब्बं, दहिऊणं कम्मकयवरं धीरो । इन्दइमुणी महप्पा, केवलनाणी तओ जाओ ॥ ५७ ॥
 अह मेहवाहणो वि य, धीरो अन्नोन्नकरणवोएसु । जिणिऊण कम्ममहं, गेण्हइ सो केवलपडायं ॥ ५८ ॥

है। (४२) इसी प्रकार तेपयुक्त, प्रेसके सागर में डूबा हुआ और देवेन्द्रकी लीलाकी विडम्बना करनेवाला लक्ष्मण विशल्याके साथ रहता था। (४३) इस तरह रतिकुलकी अदुभव करनेवाले तथा आतशय गुण और ऋद्धिसे सम्पन्न उनके अनेक वर्ष दिनकी भाँति व्यतीत हुए। (४४)

एक दिन कभी कूबर आदि नगरोंको याद करके लक्ष्मणने कन्याओंके लिए अभिज्ञानके साथ लेख भेजे। (४५) विद्याधरोंने जाकर लक्ष्मणके लिए मनमें उत्सुक और अधिक स्नेह धारण करनेवाली उन कन्याओंको लेख दिखाये। (४६) दशपुरपतिकी पुत्री रूपमतीको वज्रकर्ण राजाने जानेकी अनुमति दी। वह परिवारके साथ लंकानगरीमें आ पहुँची। (४७) कूबरनगरमें स्वामी वालिखिल्यकी कल्याणमाला नामकी गुणवती पुत्री थी। वह भी वहाँ पहुँच गई। (४८) पृथ्वीपुरमें पृथ्वीधरकी पुत्री वनमाला थी। विद्याधरोंके द्वारा वह भी लक्ष्मणके पास लाई गई। (४९) क्षेमांजलिक नगरमें जितशत्रु नामक राजा था। उसकी पुत्री जितपद्मा थी। वह भी परिजनोंके साथ लंकापुरीमें पहुँच गई। (५०) उज्जयिनी आदि नगरोंमें जो राजकन्याएँ थीं वे भी गुरुजनों द्वारा अनुमति मिलने पर लंकापुरीमें पहुँच गईं। (५१) लक्ष्मणने सर्वांगसुन्दर और देवकन्याओंके समान सुन्दर रूपवाली उन कन्याओंके साथ अत्यन्त वैभवपूर्वक विवाह किया। (५२) नवयौवनसे उज्वल और उत्तम रतिगुण धारण करनेवाली जो कन्याएँ पहले दी गई थीं उनके साथ रामने शादी की। (५३) इस तरह परमविभूति प्राप्त राम और लक्ष्मण विद्याधरोंके साथ लंकापुरीमें राज्य करते थे। (५४) विद्याधरोंकी ऋद्धिसे युक्त लक्ष्मण और रामके अनुक्रमसे छः वर्ष उसी सुन्दर नगरीमें व्यतीत हुए। (५५)

हे श्रेणिक ! अब मैं दूसरी कथा कहता हूँ। लब्धि और गुणसम्पन्न इन्द्रजित आदि मुनियोंका तुम दूसरा वृत्तान्त भी सुनो। (५६) ध्यानाग्निसे कर्मके सारे कतवारको जलाकर धीर और महात्मा इन्द्रजित मुनि केवलज्ञानी हुए। (५७) विभिन्न करण और योगसे धीर मेघवाहनने भी कर्मरूपी मल्लको जीतकर केवलीरूपी पताका ग्रहण की। (५८) दर्शन, ज्ञान

दंसण-नाण-चरित्ते, सुद्धो तव-चरण-करणविणिओगे । केवलनाणाइसयं, संपत्तो भाण्यण्णो वि ॥ ५९ ॥
 ठाणोसु जेतु एए, सिवमयलमणुत्तरं सुहं पत्ता । दीसन्ति ताणि सेणिय !, ते पुण साहू न दीसन्ति ॥ ६० ॥
 विञ्जत्थलीसु जेण उ, इन्दइ तह मेहवाहणो सिद्धो । तित्थं मेहरवं तं, विक्खायं तिहुयणे जायं ॥ ६१ ॥
 समणो वि जम्बुमाली, कालं काऊण तो निमित्तमि । अहमिन्दत्तं पत्तो, सुचरियकम्माणुभावेणं ॥ ६२ ॥
 तत्तो चुओ य सन्तो, होहइ एरावए महासमणो । केवलसमाहिजुत्तो, सिद्धि पाविहिइ धुयकम्मो ॥ ६३ ॥
 अह नम्भयाएँ तीरमि निवुओ कुम्भयणमुणिवसमो । पीठरखड्डुं भणइ, तं तित्थं देसविक्खायं ॥ ६४ ॥
 मारोजि तवच्चरणं काऊणं कप्पवासिओ जाओ । जो जारिसमि ववसइ, फलं पि सो तारिसं लभइ ॥ ६५ ॥
 पुवं काऊण वहुं, पावं मयदानवो वि मुणिवसमो । तवचरणपभावेणं, जाओ बहुलद्धिसंपन्नो ॥ ६६ ॥
 एयन्तरमि राया, पुच्छइ गणनायगं षणमिऊणं । कह सो मओ महाजस !, जाओ च्चिय लद्धिसंपन्नो ॥ ६७ ॥
 अन्नं पि मुणसु सामिय !, जा हवइ पइवया इहं नारी । सा सीलसंजमरया, साहसु कवणं गई लहइ ॥ ६८ ॥
 तो भणइ इन्द्रभई, जा ददसीला पइवया महिल । सीयाएँ हवइ सरिसी, सा सगं लहइ सुकयत्था ॥ ६९ ॥
 जह तुरयरहवरणं, पत्थरलोहाण पायवाणं च । हवइ विसेसो नरवइ !, तहेव पुरिसाण महिलणं ॥ ७० ॥
 एसो मणमत्तगओ, उद्दामो विसयलोलुओ चण्डो । नाणडुकुसेण धरिओ, नरेण ददसत्तिजुत्तेणं ॥ ७१ ॥
 निसुणेहि ताव सेणिय !, सीलविणासं पशभिमाणेणं । जायं च्चिय महिलए, तं तुज्ज कहेमि फुडवियडं ॥ ७२ ॥
 जइया आसि जणवओ, काले वहुरोगपीडिओ सबो । धन्नगामाउ तया, नट्टो विप्पो सह पियाए ॥ ७३ ॥
 सो अग्गिलो अडयणा, सा महिला माणिणी महापावा । चत्ता य महारण्णे, विप्पेणं माणदोसेणं ॥ ७४ ॥

एवं चारित्रयुक्त, शुद्ध, तप और चरण-करणमें नियुक्त भानुकर्णने भी केवलज्ञानका अतिशय प्राप्त किया । (५९) हे श्रेणिक ! जिन स्थानोंमें इन्होंने अचल, अनुत्तर और शुभ मोक्ष प्राप्त किया था वे तो दीखते हैं, पर वे साधु नहीं दिखाई पड़ते । (६०) विन्ध्यस्थलोंमें इन्द्राजित तथा मेघवाहन सिद्ध हुए थे, अतः वह मेघरव तीर्थ त्रिभुवनमें विख्यात हुआ । (६१)

जम्बुमाली श्रमणने भी निमित्त आने पर काल करके आचारित शुभ कर्मके प्रभावसे अहमिन्द्रपना प्राप्त किया । (६२) वहाँ से च्युत होने पर वह ऐरावत क्षेत्रमें महाश्रमण होगा । कर्मोंका क्षय करके केवल समाधिसे युक्त वह सिद्धि प्राप्त करेगा । (६३) नर्मदाके तीर पर मुनिवृषभ कुम्भकर्णने निर्वाण प्राप्त किया । देशविख्यात वह तीर्थ पीठरखण्ड कहा जाता है । (६४) मरीचि तपश्चरण करके कल्पवासी देव हुआ । जो जैसा करता है वह फल भी वैसा ही पाता है । (६५) पहले बहुत पाप करके मुनिवृषभ मयदानव भी तपश्चर्याके प्रभावसे अनेक विध लब्धियोंसे सम्पन्न हुआ । (६६)

इस पर राजा श्रेणिकने गणनायक गौतम स्वामीको प्रणाम करके पूछा कि हे महायश ! वह मय कैसे लब्धिसम्पन्न हुआ ? (६७) हे स्वामी ! और भी सुनें । जो स्त्री यहाँ पर प्रव्रजित होती है वह शील और संयममें रत कौनसी गति प्राप्त करती है, यह आप कहें । (६८) तब इन्द्रभूतिने कहा कि जो सीताके समान शीलमें दृढ़ स्त्री प्रव्रजित होती है वह अत्यन्त कृतार्थ स्त्री स्वर्ग प्राप्त करती है । (६९) हे राजन् ! जिस तरह घोड़े और रथमें, पत्थर और लोहेमें तथा वृक्षोंमें वैशिष्ट्य होता है उसी तरह पुरुषोंमें और स्त्रियोंमें वैशिष्ट्य होता है । (७०) रवच्छन्द, विषय-लोलुप और भयानक मन रूपी हाथीको दृढ़ शक्तियुक्त पुरुष ज्ञानरूपी अंकुशसे कावृमें रख सकता है । (७१) हे श्रेणिक ! अत्यधिक अभिमानसे स्त्रीके शीलका जो विनाश हुआ वह मैं तुम्हें स्फुट और विशद रूपसे कहता हूँ । उसे तुम सुनो । (७२)

जिस समय रोगसे अत्यन्त पीड़ित सारा जनपद था उस समय धान्य प्राप्तसे एक ब्राह्मण प्रियाके साथ निकल पड़ा । (७३) वह अग्रज था । कुलटा उस मानिनी और महापापी स्त्रीको अभिमानके दोषसे ब्राह्मणने जंगलमें छोड़ दिया ।

दिष्टा य कररुहेणं, नरवङ्गा अक्षणो कया भज्जा । पुष्पावङ्गणनयरे, अच्छइ सोक्खं अणुहवन्ती ॥ ७५ ॥
 अह अन्नया कयाई, लद्धपसायाएँ तीएँ सो राया । चरणेण उत्तिमङ्गे, पहओ रइकेलिसमयम्मि ॥ ७६ ॥
 अत्थाणम्मि निविट्ठो, पुच्छइ राया बहुस्सुए सबे । पाएण जो नरिन्दं, हणइ सिरे तस्स को दण्डो ॥ ७७ ॥
 तो पण्डिया पवुत्ता, नरवइ ! सो तस्स छिज्जए पाओ । हेमङ्गेण निरुद्धा, विप्पेणं जंपमाणा ते ॥ ७८ ॥
 हेमङ्को भणइ निवं, तस्स उ पायस्स कीरए पूया । भज्जाएँ वल्लभाए, तम्हा कोवं परिच्चयसु ॥ ७९ ॥
 सुणिऊण वयणमेयं, हेमङ्को नरवईण तुट्टेणं । संपाविओ य रिद्धी, अणेगादाणाभिमाणेणं ॥ ८० ॥
 तइया हेमंकपुरे, मित्तजसा नाम अच्छइ वराई । सा भग्गवस्स भज्जा, अमोहसरलद्धविजयस्स ॥ ८१ ॥
 अइदुक्खिया य विहवा, हेमङ्कं पेच्छिऊण धणपुण्णं । सिरिवद्धियं सुयं सा, भणइ स्यन्ती मह सुणेहि ॥ ८२ ॥
 ईसत्थागमकुसलो, तुज्ज पिया आसि भग्गवो नामं । धणरिद्धिसंपउत्तो, सबनरिन्दाण अइपुज्जो ॥ ८३ ॥
 संथाविऊण जणणिं, चणपुरं सो कमेण संपत्तो । सबं कललगमगुणं, सिक्खइ गुरवस्स पासम्मि ॥ ८४ ॥
 जाओ समत्तविज्जो, तत्थ पुरेसस्स सुन्दरा धूया । छिहेण य अवहरिउं, वच्चइ सो निययघरहुत्तो ॥ ८५ ॥
 सीहेन्दुनामधेओ, भाया कजाएँ तीएँ बलसहिओ । पुरओ अविट्ठिऊणं, जुज्जइ सिरिवद्धिण समं ॥ ८६ ॥
 सीहेन्दुरायपुत्तं, बलसहियं निज्जिणित्तु एगागी । सिरिवद्धिओ कमेणं, गओ य जणणीएँ पासम्मि ॥ ८७ ॥
 विन्नाणलघवेणं, तोसविओ तेण कररुहो राया । सिरिवद्धिण लद्धं, रज्जं चिय पोयणे नयरे ॥ ८८ ॥
 कालगयम्मि सुकन्ते, सीहेन्दू वेरिण उच्छित्तो । निक्खमइ सुरङ्गाए, समयं घरिणीए भयभीओ ॥ ८९ ॥
 एक्कोदराएँ सरणं, पोयणनयरम्मि होहती मज्झं । परिचिन्तिऊण वच्चइ, सिग्घं तम्बोलियसमग्गो ॥ ९० ॥

(७४) कररुह राजाने उसे देखकर अपनी पत्नी बनाया । पुष्पावतीर्ण नगरमें सुख अनुभव करती हुई वह रहने लगी । (७५) एक दिन प्रसाद प्राप्त उस स्त्रीने रतिकेलिके समय राजाके मस्तक पर पैरसे प्रहार किया । (७६) सभामें स्थित राजाने सब विद्वानोंसे पूछा कि जो राजाके सिर पर पैरसे प्रहार करे उसके लिए कौनसा दण्ड है ? (७७) तब परिणत कहने लगे कि, 'हे राजन् ! उसका वह पैर काट डालना चाहिए ।' इस तरह कहते हुए उन पण्डितोंको हेमांक नामक ब्राह्मणने रोका । (७८) हेमांकने राजासे कहा कि प्रिय भार्याके उस पैरकी तो पूजा करनी चाहिए । अतः क्रोधका परित्याग करो । (७९) यह वचन सुनकर तुष्ट राजाने सम्मान पूर्वक अनेकविध दान देकर हेमांकको ऋद्धिसे सम्पन्न किया । (८०)

उस समय हेमन्तपुरमें मित्रयशा नामकी एक गृहिणी रहती थी । वह भार्गव अमोघशरलद्धविजयकी भार्या थी । (८१) अतिदुःखित उस विधावाने हेमांकको धनसे पूर्ण देखकर रोते-रोते अपने पुत्र श्रीवधितसे कहा कि मेरा कहना सुन । (८२) भार्गव नामका तेरा पिता धनुष और अस्त्र विद्यामें कुशल, धन और ऋद्धिसे युक्त तथा सब राजाओंका अति-पूज्य था । (८३) माताको आश्वासन देकर वह चलता हुआ व्यात्रपुरमें आ पहुँचा और गुरुके पास सब कलाएँ और आगम सीखने लगा । (८४) उस नगरमें विद्याभ्यास समाप्त करके और उसकी सुन्दरा नामकी लड़कीका किसी बहानेसे अपहरण करके वह अपने घरकी ओर जाने लगा । (८५) उस कन्याका सिहेन्दु नामका एक भाई था । वह सेनाके साथ आगे आकर श्रीवर्धनके साथ युद्ध करने लगा । (८६) एकका श्रीवर्धनने सैन्य सहित राजपुत्र सिहेन्दुको पराजित किया । क्रमशः विचरण करता हुआ वह माताके पास आ पहुँचा । (८७) ज्ञानकी कुशलतासे उसने कररुह राजाको सन्तुष्ट किया । श्रीवधितने पोतनपुरमें राज्य प्राप्त किया । (८८)

सुकान्तके मरने पर शत्रुने सिहेन्दुको पराजित किया । भयभीत वह पत्नीके साथ सुरंगके रास्तेसे बाहर निकला । (८९) मैं पोतननगरमें अपनी बहनकी शरणमें जाऊँ—ऐसा सोचकर ताम्बूलिकके साथ वह शीघ्र चल पड़ा । (९०) चोरी

१. पिच्छिऊण—प्रत्य० । २. ओच्छन्ते—प्रत्य० ।

चार्यभडेहि रति, सहसा वित्तसिओ पलयन्तो । भीमोरगेण दट्टो, सीहेन्दू पोयणासन्ने ॥ ९१ ॥
 मुच्छाविहलसरीरं, खन्धे काऊण दइययं मुद्धा । संपत्ता विलवन्ती, जत्थ मओ अच्छइ समणो ॥ ९२ ॥
 पडिमं ठियस्स मुणिणो, तस्साऽऽसन्ने पियं पमोत्तुणं । समणस्स फुसइ चलणे, पुणरवि दइयं परामुसइ ॥ ९३ ॥
 मुणिपायपसाएणं, सीहेन्दू जीविओ महुच्छाहो । जाओ पियाएँ समयं, पणमइ तं साहवं तुट्टो ॥ ९४ ॥
 अह उग्गयम्मि सूरै, समत्तनियमं मुंणी विणयदत्तो । अहिवन्दिऊण पुच्छइ, सीहेन्दुं महिलियासहियं ॥ ९५ ॥
 गन्तूण सावओ सो, कहेइ सिरिवद्धियस्स संदेसं । सबं फुडवियडन्थं, जं भणियं सीहचन्देणं ॥ ९६ ॥
 तं सोऊणं रुट्टो, सहसा सिरिवद्धिओ उ सत्तद्धो । महिल्याएँ उवसमं सो, नोओ मुणिपायमूलम्मि ॥ ९७ ॥
 तं वन्दिऊण समणं, समयं भज्जाएँ तत्थ परितुट्टो । संभासेइ सिणेहं, सालं सिरिवद्धिओ पयओ ॥ ९८ ॥
 काऊण नरवरिन्दो, पियाइ वन्धूसमागमानन्दं । निययं तत्थ परभवं, पुच्छइ य मयं महासमणं ॥ ९९ ॥
 अह तस्स साहइ मुणी, भद्दायरिओ त्ति नाम सोभपुरे । ते वन्दओ नरिन्दो, जाइ सुमालो सह जणेणं ॥ १०० ॥
 अह तत्थ कुट्टवाही, महिला मुणिवन्दणाएँ अल्लीणा । अग्वायइ दुग्गन्धं, तीए देहुन्धवं राया ॥ १०१ ॥
 गेहं गए नरिन्दे, भद्दायरियस्स पायमूलम्मि । सा कुट्टिणी वयाहं, घेत्तूण सुरालयं पत्ता ॥ १०२ ॥
 ततो सा चविऊणं, जाथा इह सीलरिद्धिसंपत्ता । रुवगुणजोवणधरी, जिणवरधम्मज्जयमईया ॥ १०३ ॥
 अह सो सुमालराया, रज्जं दाऊण जेइपुत्तस्स । कुणइ चिय संतोसं, अट्टहिं गामेहिं दढचित्तो ॥ १०४ ॥
 अट्टहिं गामेहिं निवो, संतुट्टो सावयत्तणगुणेणं । देवो होऊण चुओ, जाओ सिरिवद्धिओ तुहयं ॥ १०५ ॥
 जणणोएँ तुज्झ नरवइ !, कहेमि अह पुबजम्मसंघन्धं । एको चिय वइदेसो, पविसइ गामं छुहासत्तो ॥ १०६ ॥

द्वारा रातमें सहसा पीड़ित होने पर भागते हुए उस सिंहेन्दुको पोतनपुरके समीप भयंकर सर्पने काट लिया। (६१) मूर्छासे विह्वल शरीरवाले प्रियतमको कन्धे पर उठाकर रोती हुई वह स्त्री जहाँ मृग नामका श्रमण था वहाँ गई। (६२) प्रतिमामें स्थित मुनिके समीप प्रियको रखकर उसने श्रमणके चरण छूए। बादमें पतिको छूआ। (६३) मुनिके चरणोंके प्रसादसे जीवित सिंहेन्दु अत्यन्त उत्साहित हो गया। आनन्दित उसने प्रियाके साथ उस साधुको प्रणाम किया। (६४) सूर्योदय होने पर समाप्त नियमवाले मुनिको वन्दन करके विनयदत्तने स्त्रीके साथ आये हुए सिंहेन्दुसे पूछा। (६५) उस श्रावकने जाकर सिंहेन्दुने जो सन्देश कहा था वह सब स्फुट और चिराद रूपसे श्रीवधितको कह सुनाया। (६६) उसे सुनकर स्तु श्रीवधित एकदम तैयार हो गया। पत्नी द्वारा शान्त किया गया वह मुनिके चरणोंमें उपस्थित हुआ। (६७) पत्नीके साथ मुनिको प्रणाम करके आनन्दमें आया हुआ श्रीवधित सालके साथ स्नेहपूर्वक वातचीत करने लगा। (६८) राजाने प्रिया और उसके भाईके मिलनका आनन्द मनाकर मय महाश्रमणसे अपने परभवके बारेमें पूछा। (६९) इस पर उसे मुनिने कहा कि—

शोभपुरमें भद्राचार्य नामके एक मुनि थे। लोगोंके साथ सुमाल राज उन्हें वन्दन करनेके लिए आया। (१००) वहाँ कोढ़वाली एक स्त्री भी मुनिके वन्दनके लिये आई थी। उसके शरीरसे उत्पन्न दुर्गन्ध राजाने सूँधी। (१०१) राजाके घर पर जानेके बाद वह कुट्टिनी भद्राचार्यके चरणोंमें व्रत अंगीकार करके स्वर्गमें गई। (१०२) वहाँ से च्युत होने पर शील एवं ऋद्धिसे सम्पन्न रूप, गुण और यौवन धारण करनेवाली तथा जिनवरके धर्ममें उद्यत बुद्धिवाली वह हुई। (१०३) इधर दृढचित्त वह सुमाल राजा भी बड़े लड़केको राज्य देकर आठ गाँवोंसे ही सन्तोष करने लगा। (१०४) आठ गाँवसे सन्तुष्ट राजा श्रावकपनेके गुणसे देव हुआ। च्युत होने पर तुम श्रीवधित हुए हो। (१०५)

हे राजन् ! अब मैं तुम्हारी माताके पूर्वजन्मका वृत्तान्त कहता हूँ। कोई एक परदेशी भूखसे पीड़ित हो गाँवमें प्रविष्ट हुआ। (१०६) भोजनगृहमें आहार न पाकर क्रोधसे प्रज्वलित उसने कहा कि सारे गाँवको मैं जला डालता हूँ। इसके

१. मुणि — प्रत्य० ।

भोयणहरग्मि भत्तं, अलहन्तो भणइ कोवपज्जलिओ । सबं डहामि गामं, तत्तो य विणिग्गओ गामा ॥ १०७ ॥
 विहिसंजोएण तओ, पज्जलिओ हुयवहेण सो गामो । गामिल्लएहि वेत्तुं, छूढो अग्गीएँ सो पहिओ ॥ १०८ ॥
 मरिऊण समुप्पन्नो, अह सो सूरारिणी नरवइस्स । तत्तो वि य कालगया, जाया अइवेयणे नरए ॥ १०९ ॥
 नरयाओ समुत्तरिउं, उप्पन्ना तुज्झ नरवई माया । एसा वि य मित्तजसा, भगवघरिणी सुसीलमई ॥ ११० ॥
 अह पोयणनयरवरे, वणिओ गोहाणिओ त्ति नामेणं । भुयवत्ता से महिला, मओ य सो तीएँ उप्पन्नो ॥ १११ ॥
 जायस्स उ भुयवत्ता, रइवद्धणकामिणी गुणविसाला । अह गद्भाइपीडा, पुरभाखहणयं चव ॥ ११२ ॥
 एयं मओ कहेउं, गयणेण गओ जहिच्छियं देसं । सिरिवद्धिओ य राया, पोयणनयरं अह पविट्ठो ॥ ११३ ॥
 पुण्णोदएण सेणिय !, कस्स वि रज्जं नरस्स उवणमइ । तं चव उ विवरीयं, हवइह सुकयावसाणग्मि ॥ ११४ ॥
 एकस्स कस्स वि गुरू, लद्धूणं धम्मसंगमो होइ । अन्नस्स गई अहमा, जायइ सनियाणदोसेणं ॥ ११५ ॥
 एयं नाऊण सया, कायवं वुहजणेण अप्पहियं । जं होइ मरणकाले, सिवसोग्गइमग्गदेसयरं ॥ ११६ ॥
 एवं दया-दम-तओट्ठियसंजमस्स, सोउं जणो मयमहामुणिभासियत्थं ।
 सामन्त-सेट्ठिसहिओ सिरिवद्धिओ सो, धम्मं करेइ विमलामलदेहलम्भं ॥ ११७ ॥
 ॥ इइ पडमचरिए मयवक्खाणं नाम सत्तहत्तरं पठवं समत्तं ॥

७८. साय्यपुरीवर्णणपठवं

भत्तार-सुयविओगे, एगन्तेणेव दुक्खिया भवणे । अवराइया पलोयइ, दस वि दिसाओ सुदीणमुही ॥ १ ॥
 पुत्तस्स दरिसणं सा, कङ्कन्ती ताव पेच्छइ गवन्खे । उप्पयनिवयकरेन्तं, एकं चिय वायसं सहसा ॥ २ ॥

बाद वह गाँवमेंसे बाहर निकला । (१०७) तब विधिके योगसे आगसे वह गाँव जल उठा । गाँवके लोगोंने उस पथिकको पकड़कर आगमें भोंक दिया । (१०८) मर करके वह राजाकी रसोइन हुआ । वहाँसे मरने पर घोर वेदनावाले नरकमें वह पैदा हुई । (१०९) हे राजन् ! नरकको पान करके वह तुम्हारी माता और भागवकी पत्नी सुशीलमति इस मित्रयशाके रूपमें उत्पन्न हुई है । (११०) पोतन नगरमें गोथानिक नामका वणिक था और उसकी भुजपत्रा नामकी पत्नी थी । वह (गोथानिक ?) मर कर उसके पेटमें उत्पन्न हुआ । (१११) गुणविशाला भुजपत्रा उस (पुत्र) में रतिको बढ़ानेकी इच्छावाली हुई । इसके बाद गर्दभादिकी पीडा और पुर (शहर) में भारोद्धहन—(११२) ?

इस प्रकार कहकर मयमुनि आकाशमार्गसे जिस देशमें जानेकी उनकी इच्छा थी उस देशमें चले गये । श्रीवर्धित राजाने भी पोतननगरमें प्रवेश किया । (११३) हे श्रेणिक ! पुण्यका उदय होने पर किसी भी मनुष्यको राज्य प्राप्त होता है और पुण्यका अवसान होने पर वही उसे विपरीत होता है । (११४) गुरुको प्राप्त करके किसी एकको धर्मका योग होता है तो दूसरेको निदानके दोषसे अधम गति मिलती है । (११५) ऐसा जानकर समभदार मनुष्यको सदा आत्महित करना चाहिए जिससे मरणकालमें मोक्ष, सद्गति या मार्गका उपदेशक पद प्राप्त हो । (११६) इस तरह दया, दम एवं तपमें उद्यत संयमी महामुनि मयका उपदेश सुनकर सामन्त और सेठोंके साथ वह श्रीवर्धित राजा निर्मल और विमल देहकी प्राप्ति करानेवाले धर्मका आचरण करने लगा । (११७)

॥ पडमचरितमें मयका आख्यान नामक सत्तहत्तरवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

७८. साय्यपुरीका वर्णन

पति और पुत्रका वियोग होने पर अत्यन्त दुःखित और दीन मुखवाली अपराजिता (रामकी माता) भवनमें से दर्शों दिशाएँ देखती थी । (१) पुत्रके दर्शनकी इच्छावाली उसने सहसा गवाक्षमें से एक कौएको उड़ते और बैठते देखा ।

१. गाथा १११ और ११२ का संबंध ठीक नहीं लगता है और अर्थमें संदेह है । संस्कृत पद्मचरितमें इसके लिये देखो पर्व ८० श्लोक २००-२०१ ।

तं भणइ वायसं सा, जइ मे पुत्तस्स तत्थ गन्तूणं । वत्तं आणेहि ल्हं, देहामि य पायसं तुज्झं ॥ ३ ॥
 एव भणिऊण तो सा, सुमरिय पुत्तस्स बहुगुणं चरियं । कुणइ पलावं कल्लणं, मुच्चन्तो अँसुजलनिवहं ॥ ४ ॥
 हा वच्छ ! कत्थ देसे, कोमलकर-चरण ! कमखडे पन्थे । परिसकसि सीया-ऽऽयव-दुहिओ वरिणीए समसहिओ ॥ ५ ॥
 मोत्तूण मन्दभग्गा, चिरकालं पुत्त ! पवसिओ सि तुमं । 'इअ दुहियं नियजणणि, सुविणे वि ममं न संभरसि ॥ ६ ॥
 एयाणि य अत्ताणि य, पलवन्ती जाव चिट्ठए देवी । ताव य गयणयलाओ, ओइण्णो नारओ सहसा ॥ ७ ॥
 सेयम्बरपरिहाणो, दीहजडामउडधारिणो भयवं । पविसइ ससंभमाए, अव्वभुट्ठाणं कयं तीए ॥ ८ ॥
 दिन्नासणोवविट्ठो, पेच्छइ अवराइयं पगलियंसुं । काऊण समुल्लावं, पुच्छइ किं दुम्मणा सि तुमं ? ॥ ९ ॥
 एव भणियाएँ तो सो, देवरिसी पुच्छिओ कहिं देसे । कालं गमिऊण इहं, समागओ ? साहसु फुडं मे ॥ १० ॥
 अह नारओ पवुत्तो, कल्लणं आसि धायईसण्डे । पुविल्ले सुररमणे, नयरे तित्थंफरो जाओ ॥ ११ ॥
 सुर-असुरेहि नगवरे, कीरन्तो जिणवरस्स अभिसेओ । दिट्ठो मए पमोओ, भावेण य वन्दिओ भयवं ॥ १२ ॥
 जिणदरिसणाइसत्तो, गमिउं तेवीस तत्थ वासाइं । जणणि व भरहभूमिं, सरिऊण इहाऽऽगओ अहयं ॥ १३ ॥
 अह तं भणइ सुभणिया, महरिसि ! निगुणेहि दुक्खसंभूईं । जं पुच्छिया तुमे हं, तं ते साहेमि भूयत्थं ॥ १४ ॥
 भामण्डलसंजोगे, पँवइए दसरहे सह भडेहिं । रामो पियाएँ समयं, विणिग्गओ लक्खणसंमग्गो ॥ १५ ॥
 सीयाएँ अवहियाए, जाओ सह कइवरेहि संजोगो । लक्काहिवेण पहओ, सत्तीए लक्खणो समरे ॥ १६ ॥
 लक्कापुरिं विसल्ला, नीया वि हु लक्खणस्स जीयत्थे । एयं ते परिकहियं, सबं संखेवओ तुज्झं ॥ १७ ॥
 तत्थऽच्छइ वइदेही, बन्दी अइदुक्खिया पइविहणा । सत्तिपहाराभिहओ, किं व मओ लक्खणकुमारो ? ॥ १८ ॥

(२) उसने उस कौएसे कहा कि यदि तू वहाँ जाकर मेरे पुत्रका जल्दी ही समाचार लायगा तो मैं तुझे दूध दूँगी । (३) तब ऐसा कहकर और पुत्रके बहुत गुणवाले चरित्रका स्मरण करके अश्रुजल बहाती हुई वह करुण प्रलाप करने लगी । (४) हा वत्स ! कोमल हाथों और पैरोंवाले तुम सर्दी और गरमीसे दुःखित हो। पत्नीके साथ किस देशमें कर्कश मार्ग पर गमन करते हो ? (५) पुत्र ! मन्द भाग्यवाली मेरा परिस्थान करके चिर कालसे तुम प्रवासमें गये हो। अतः दुःखसे पीड़ित अपनी माताका स्वप्नमें भी तुम स्मरण नहीं करते ? (६) जब वह देवी इस तरह प्रलाप कर रही थी तब आकाशमें से सहसा नारद नीचे आये (७) सफेद वस्त्र पहने हुए और बड़ी जटाओंका मुकुट धारण किये हुए भगवान् नारदने प्रवेश किया। आदरके साथ वह उठ खड़ी हुई ! (=) दिये गये आसन पर बैठे हुए नारदने आँसू बहाती हुई अपराजिताको देखा। सम्भाषण करके उन्होंने पूछा कि तुम दुःखी क्यों हो ? (८) इस प्रकार कही गई उसने देवपिं नारदसे पूछा कि किस देशमें समय बिताकर आप यहाँ आये हैं, यह स्फुट रूपसे आप मुझे कहें । (१०) तब नारदने कहा कि—

धातकीखण्डके पूर्वमें आये हुए सुररमणनगरमें तीर्थकर उत्पन्न हुए हैं। उनका कल्याणक था । (११) पर्वत पर सुर-असुर द्वारा जिनवरका किया जानेवाला अभिषेक-उत्सव मैंने देखा और भावपूर्वक भगवान्को वन्दन किया । (१२) जिनदर्शनमें अत्यन्त आसक्त मैं तेईस वर्ष वहाँ बिताकर जननोत्तुल्य भरतभूमिका स्मरण करके यहाँ आया हूँ । (१३) तब सुन्दर वचनवाली अपराजिताने उनसे कहा कि, हे महर्षि ! मेरे दुःखकी उत्पत्तिके वारेमें आप सुनें। आपने मुझसे पूछा इसलिए मैं आपसे सच्ची हकीकत कहती हूँ । (१४) भामण्डलके साथ मिलन होनेके बाद और सुभटोंके साथ दशरथके प्रव्रजित होने पर लक्ष्मण और प्रियाके साथ राम बाहर निकल पड़े। सीताके अपहृत होने पर कपिवरोंके साथ उनका मिलन हुआ। युद्धमें लंकाधिपने शक्तिके द्वारा लक्ष्मणको आहत किया। लक्ष्मणके जीवनके लिए लंकापुरीमें से विशल्या ले जाई गई—यह सब संक्षेपमें मैंने आपसे कहा । (१५-७) वहाँ पतिसे रहित और अत्यन्त दुःखित सीता बन्दी होकर रही हुई है।

१. अइदुक्खदेहदुहियं सुविणे वि मए न—सु० । २. भवणं—प्रत्य० । ३. वरिसाईं—प्रत्य० । ४. पव्वइओ दसरहो—प्रत्य० ।

५. संभेओ—प्रत्य० ।

तं अज्ज वि एइ न वी, वत्ता संपरिफुडा महं एयं । सुमरन्तियाएँ हियए, सोगमहादारुणं जायं ॥ १९ ॥
 सुणिऊण वयणमेयं, अङ्गाओ वत्तिऊण वरवीणं । जाओ उबिग्गमणो, दीहुस्सासे मुयइ विप्पो ॥ २० ॥
 भणिया य नारएणं, भदे ! छड्डेहिं दारुणं सोगं । तव पुत्तस्स असेसं, गन्तूणाऽऽणेमि वत्तमहं ॥ २१ ॥
 एव भणितं पयट्टो, वीणां कन्धन्तरे ठवेऊणं । उप्पइय नहयलेणं, लङ्का पत्तो खणद्वेणं ॥ २२ ॥
 हियएण सुणइ विप्पो, जइ वत्ता राहवस्स पुच्छेऽहं । तो मे कयाइ दोसं, काहिनत्ति निसायरा पात्रा ॥ २३ ॥
 ताए च्चिय वेलाए, पउमसरे अङ्गाओ सह पियाहिं । कीलइ जलमज्जणयं, गउ व समयं करेणुहिं ॥ २४ ॥
 सो रावणस्स कुसलं, पुच्छन्तो अङ्गयस्स भिच्चेहिं । नीओ पउमसंयासं, दहगोवहिओ ति काऊणं ॥ २५ ॥
 अब्बंभणं करेन्तो, आसासेऊण पउमणाहेणं । परिपुच्छिओ य अज्जय ! साह तुमं आगओ कत्तो ? ॥ २६ ॥
 सो भणइ देव ! निसुणसु, सुयसोगाणलपलित्तहिययाए । जणणोएँ तुज्झ पासं, विसज्जिओ नारओ अहयं ॥ २७ ॥
 सीही किसोररहिया, कलहयपरिवज्जिया करेणु व । तह सा तुज्झ विओगे, अच्चन्तं दुक्खिया जणणी ॥ २८ ॥
 विवइण्णकेसभारा, रोवन्ती दुक्खिया गमइ कालं । जणणी तुज्झ महाजस !, सोगमहासागरे पडिया ॥ २९ ॥
 लक्खण ! तुमं पि जणणी, पुत्तविओगग्गिंदीक्खिसरीरा । रोवन्ती अइकलुणं, कालं च्चिय दुक्खिया गमइ ॥ ३० ॥
 नाऽऽहारे न य संयणे, न दिवा न य सबरीसु न पओसे । खणमवि न उवेन्ति धिइं, अच्चन्तं तुम्ह जणणीओ ॥ ३१ ॥
 सुणिऊण वयणमेयं, हलहर-नारायणा सुदीणमुहा । रोवन्ता उवसमिया, कइ कइ वि पवंगमभडेहिं ॥ ३२ ॥
 तो भणइ नारयं सो, पउमो अइसुन्दरं ववसियं ते । वत्तादाणेणऽहं, जणणीणं वीवियं दिन्नं ॥ ३३ ॥

शक्तिके प्रहारसे अभिहत लक्ष्मण कुमार क्या मर गया ? (१८) आज तक भी यह बात स्पष्टरूपसे मेरे पास नहीं आई है । इसे याद करके हृदयमें अत्यधिक दारुण शोक पैदा होता है । (१९)

यह सुनकर ब्राह्मण नारदने गोदमें से सुन्दर वीणा उठा ली और मनमें उद्विग्न होकर वह दीर्घ उच्छ्वास छोड़ने लगे । (२०) नारदने कहा कि भद्रे ! तुम दारुण शोकका त्याग करो । जा करके मैं तुम्हारे पुत्रका समग्र वृत्तान्त-लाता हूँ । (२१) इस तरह कहकर और वीणाको बगल में दबाकर नारद आकाशमें उड़े और ज्ञानार्थमें लंका पहुँच गये । (२२) ब्राह्मण नारदने मनमें सोचा कि यदि रामके बारेमें मैं बात पूछूँ तब कदाचित् पापी निशाचर मेरा द्वेष करेंगे । (२३) उस समय हृथिनियोंके साथ क्रीड़ा करनेवाले हाथीकी भाँति अंगद प्रियाओंके साथ पद्मसरोवरमें जलस्नानकी क्रीड़ा कर रहा था । (२४) रावणकी कुशल पूछनेवाले उस नारदको, रावणका हित चाहनेवाला है ऐसा समझकर अंगदके श्रुत्य रामके पास ले गये । (२५) अब्रह्मण्यं—ऐसा बोलनेवाले उस नारदको आश्वासन देकर रामने पूछा कि आर्य ! आप कहाँसे पधारे हैं यह कहें । (२६) उसने कहा कि देव ! आप सुनें । पुत्रके शोक रूपी अग्नि से प्रदीप्त हृदयवाली आपकी माताके द्वारा भेजा गया मैं नारद हूँ । (२७) बच्चोंसे रहित मोरनी और हाथीके बच्चेसे वज्रित हृथिनीकी भाँति आपके वियोगसे माता अत्यन्त दुःखित है । (२८) हे महायश ! शोकसागर में निमग्न और बाल बिलेरे हुई आपकी दुःखी माता रोकर समय गुजारती है । (२९) लक्ष्मण ! पुत्र वियोगरूपी अग्निसे दीप्त शरीरवाली तुम्हारी माता भी अत्यन्त करुणाजनक रूपसे रोती है और दुःखी वह किसी तरह समय बिताती है । (३०) तुम्हारी माताएँ न आहारमें, न सोनेमें, न दिनमें, न रातमें, न प्रदोषकालमें ज्ञानभर भी धैर्य धारण करती हैं । (३१) यह कथन सुनकर दीन मुखवाले हलधर और नारायण रोने लगे । बानर-सुभटोंने किसी तरह उन्हें शान्त किया । (३२) तब रामने नारदसे कहा कि तुमने बहुत अच्छा किया । हमारी माताओं-

१. ०सयासे, गलगहितो तेहि काऊणं—प्रत्य० । २. ०ग्गिदमियं—सु० । ३. सरणे—प्रत्य० । ४. कह वि पवंगममहाभडेहिं—प्रत्य० ।

सो चेव सुकयपुण्णो, पुरिसो जो कुणइ अभिगओ विणयं । जणणीण अप्पमत्तो, आणावयणं अलङ्कन्तो ॥ ३४ ॥
जणणीण कुसलवत्तं, सोऊणं राम-लक्खणा तुट्ठा । पूयन्ति नारयं ते, समयं विज्जाहरभडेहिं ॥ ३५ ॥
एयन्तरम्मि पउमो, विभीसणं भणइ सुहडसामक्खं । अह्हे साएयपुरी, भइ ! अवस्सेण गन्तव्वं ॥ ३६ ॥
सुयसोगाणल्लतवियाण ताण जणणीण तत्थ गन्तूणं । दरिसणज्जलेण अह्हे, णिव्विवियबाइं अज्जाइं ॥ ३७ ॥
काऊण सिरपणामं, विभीसणो भणइ सुणसु वयणं मे । राहव ! सोलस दियहा, अच्छेयव्वं महं भवणे ॥ ३८ ॥
अन्नं पि सामि ! निसुणसु, पडिवत्ताकारंणेण साएए । पेसिज्जन्ति नरुत्तम !, दूया भरहस्स तूरन्ता ॥ ३९ ॥
राहववयणेण तओ, दूया संपेसिया तुरियवेगा । गन्तूण षणमिऊण य, भरहस्स कहेन्ति पडिवत्तं ॥ ४० ॥
पत्तो हलं समुसलं, रामो चक्कं च लक्खणो धीरो । निहओ लङ्काहिर्वइ, सीयाएँ समागमो जाओ ॥ ४१ ॥
अह घन्धणाउ मुक्का, इन्दइपमुहा भइ उ पवइया । लद्धाओ गरुड-केसरिविज्जाओ राम-चक्कीणं ॥ ४२ ॥
जाया विभीसणेणं, समयं च निरन्तरां महापीई । लङ्कापुरीएँ रज्जं, कुणन्ति बल-केसवा मुइया ॥ ४३ ॥
एवं राषव-लक्खण-रिद्धी, सुणिऊण हरिसिओ भरहो । तम्बोल-सुगन्धाइसु दूए पूएइ विभवेणं ॥ ४४ ॥
धेत्तूण तओ दूए, भरहो जणणीणमुवगओ मूलं । सुयसोगदुक्खियाणं, कहेन्ति वत्ता अपरिसेसा ॥ ४५ ॥
सोऊण कुसलवत्ता, सुयाण अभिणन्दियाउ जणणीओ । ताव य अन्ने वि बहू, नयरी विज्जाहरा पत्ता ॥ ४६ ॥
अह ते गयणयल्लथा, विभीसणाणाए खेयरा सबे । मुञ्चन्ति रयणवुट्ठिं, घरे घरे तीएँ नयरीए ॥ ४७ ॥
अह तत्थ पुरवरीए, विज्जाहरसिप्पिएसु दक्खेसु । सयलभवणाण भूमी, उवलित्तं रयणकणएणं ॥ ४८ ॥
जिणवरभवणाणि बहू, सिग्घं चिय निम्मियाइं तुज्जाइं । पासायसहस्साणि य, अट्टावयसिहरसरिसाइं ॥ ४९ ॥

का समाचार कहकर हमें तुमने जीवन दिया है। (३३) वही सुकृतसे पूर्ण हैं जो आज्ञाका उल्लंघन न करके अप्रमत्तभावसे सम्मुख जाकर माताका विनय करता है। (३४) माताओंकी कुशलवार्ता सुनकर तुष्ट राम-लक्ष्मणने विद्याधर सुभटोंके साथ नारदकी पूजा की। (३५)

इसके पश्चात् रामने सुभटोंके समक्ष विभीषणसे कहा कि, भद्र ! हमें अवश्य ही अयोध्या जाना चाहिए। (३६) पुत्रके शोक रूपी अग्निसे तप्त उन माताओंके अंगोंको वहाँ जाकर दर्शन रूपी जलसे हमें शान्त करना चाहिए। (३७) मस्तकसे प्रणाम करके विभीषणने कहा कि, हे राषव ! मेरा कहना सुनें। मेरे भवनमें सोलह दिन तो आपको ठहरना चाहिए। (३८) हे स्वामी ! और भी सुनें। हे नरोत्तम ! वृत्तान्त जाननेके लिए साकेतमें भरतके पास मैं दूत भेजता हूँ। (३९) तब रामके कहनेसे बहुत बेगवाले दूत भेजे गये। जाकर और प्रणाम कर भरतसे सारा वृत्तान्त उन्होंने कह सुनाया कि रामने सुसलके साथ हल और धोर लक्ष्मणने चक्र प्राप्त किया है, लंकापति रावण मारा गया है और सीताके साथ समागम हुआ है। (४०-४१) बन्धनसे विमुक्त इन्द्रजित आदि सुभटोंने दीक्षा ली है, राम एवं चक्री लक्ष्मणने गरुड़ और केसरी विद्याएँ प्राप्त की हैं। (४२) विभीषणके साथ सदैवके लिए महाप्रीति हुई है और द्रसन्न राम व लक्ष्मण लंकापुरी में राज्य करते हैं। (४३)

राम-लक्ष्मणकी ऐसी ऋद्धि सुनकर हर्षित भरतने ताम्बूल और सुगन्धित पदार्थ आदि से वैभवपूर्वक दूतोंकी पूजा की। (४४) तब दूतोंको लेकर भरत माताओंके पास गया और पुत्रके शोकसे दुःखित उन्हें सारी बात कही। (४५) पुत्रोंकी कुशलवार्ता सुनकर माताएँ प्रसन्न हुईं। उस समय दूसरे भी बहुतसे विद्याधर नगरीमें आये। (४६) आकाशमें स्थित विभीषण आदि सब खेचरोंने उस नगरीके घर-घरमें रत्नोंकी वृष्टि की। (४७) उस सुन्दर नगरीमें विद्याधरोंके सब शिल्पियोंने सब मकानोंकी जमीन रत्न और सोनेसे लीप दी। (४८) उन्होंने शीघ्रही अनेक ऊँचे जिनमन्दिर तथा अष्टापद

१. विज्जविय०—मु० । २. ँरणे य सा०—प्रत्य० ।

वरकणयथम्भपउरा, विस्त्रिण्णा मण्डना रयणचित्ता । रइया समन्तओ वि य, विजयपडागौसु रमणिज्जा ॥५०॥
 कञ्चणरयणमयाइं, मोत्तियमालाउलाइं विउलाइं । रेहन्ति तोरणाइं, दिसासु सबासु रम्माइं ॥ ५१ ॥
 सुरवइभवणसमेसुं, लग्गा ण्हवणुसवा निणहरेसु । नडनट्टगीयवाइय-रवेण अभिणन्दिया अहियं ॥ ५२ ॥
 तरुतरुणपल्लवुग्गय-नाणाविहकुसुमगन्धपउराइं । छज्जन्ति उववणाइं, कोइलभमरोवगोयाइं ॥ ५३ ॥
 चावीसु दीहियासु य, कमलुप्पलपुण्डरीयल्लासु । निणवरभवणेषु पुणो, रेहइ सा पुरवरी अहियं ॥ ५४ ॥
 एवं साएयपुरी, सुरनयरिसमा कया दणुवईहिं । रामस्स समक्खाया, अहियं गमणुस्सुयमणस्स ॥ ५५ ॥

अचिन्तियं सयलमुवेइ सोभणं, नरस्स तं सुकयफलस्स संगमे ।

अहो जणा ! कुणह तवं सुसंतयं, जहा सुहं विमलयरं निसेवह ॥ ५६ ॥

॥ इइ पउमचरिए साएयपुरीवणणं नाम अट्टहत्तरं पव्वं समत्तं ॥

७९. राम-लक्ष्मणसमागमपर्व

अह सोलसमे दियैहे, कओवयारा पभायसमयम्मि । राहव-सोमिच्चि-सिया पुप्फविमाणं समारूढा ॥ १ ॥
 सबे वि खेयरभडा, विमाण-रह-गय-तुरङ्गभारूढा । रामेण समं चलिया, साएयपुरी नहयलेणं ॥ २ ॥
 पउमङ्कसन्निविट्ठा, पुच्छइ सीया पई अइमहन्तं । जम्बुद्वीवस्स ठियं, मज्जे किं दीसए एयं ॥ ३ ॥
 पउमेण पिया भणिया, एत्थ निणा सुरवरेसु अहिसित्ता । मेरू नाम नगवरो, बहुरयणजलन्तसिहरोहो ॥ ४ ॥
 जलहरपन्भारनिभं, नाणाविहरुक्खकुसुमफलपउरं । एयं दण्डारण्णं, जत्थ तुमं अवहिया भदे ! ॥ ५ ॥

पर्वतके शिखर जैसे हजारों महल बनाए । (४६) उन्होंने उत्तम सोनेके स्तम्भोंसे व्याप्त, विशाल, रत्नोंसे चित्र-विचित्र और विजयपताकाओंसे रमणीय ऐसे मण्डप चारों ओर निर्मित किये । (५०) वहाँ स्वर्ण एवं रत्नमय, मोतीकी मालाओंसे युक्त, विपुल और रम्य तोरण सब दिशाओंमें शोभित हो रहे थे । (५१) इन्द्रके महलके जैसे जिनमन्दिरोंमें स्नात्र-उत्सव होने लगे । नट, नृत्य और गाने-बजानेकी ध्वनि द्वारा बहुत ही खुशी मनाई गई । (५२) वहाँ वृक्षों पर उगे हुए कोमल पल्लव एवं नानाविध पुष्पोंकी गन्धसे व्याप्त तथा कोयल एवं भौरोंकी ध्वनिसे गीतमय उपवन शोभित हो रहे थे । (५३) कमल, उत्पल और पुण्डरीकसे छाई हुई बावड़ियों और दीर्घिकाओंसे तथा जिनवरके मन्दिरोंसे वह नगरी अधिक शोभित हो रही थी । (५४) इस प्रकार राक्षस राजाओं द्वारा साकेत पुरी सुरनगरी जैसी की गई । तब गमनके लिए अत्यन्त उत्सुक मनवाले रामको उसके बारेमें कहा । (५५) पुण्यका फल प्राप्त होने पर मनुष्यको सारी शोभा अचिन्त्य रूपसे प्राप्त होती है । अतः हे मनुष्यों ! सतत तप करो और अतिविमल सुखका उपभोग करो । (५६)

॥ पद्मचरितमें साकेतपुरीका वर्णन नामक अट्टहत्तरवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

७९. राम एवं लक्ष्मणका माताओंके साथ समागम

इसके पश्चात् सोलहवें दिन प्रभातके समय पूजा करके राम, लक्ष्मण और सीता पुष्पक विमान पर आरूढ़ हुए । (१) सभी विद्याधर-सुभट विमान, हाथी, एवं घोड़ों पर सवार हो आकाशमार्गसे रामके साथ चले । (२) रामकी गोदमें बैठी हुई सीताने पतिसे पूछा कि जम्बूद्वीपके मध्यमें स्थित यह अतिविशाल क्या दीखता है ? (३) रामने प्रियासे कहा कि अनेकविध रत्नोंसे प्रकाशित शिखरोंवाले मेरू नामके इस पर्वतपर देवों द्वारा जिनवर अभिषिक्त होते हैं । (४) भद्रे ! बादलोंके समूह

१. •गाए राम•—प्रत्य• । २. दिवसे—प्रत्य• । ३. •त्तिभडा पु•—प्रत्य• । •त्तिसुया पु•—सु• । ४. •वरेहिं अहिं•

—प्रत्य• ।

एसा वि य कण्णरवा, महानई विमलसलिलकल्लोला । जीसे तडम्मि साहू, सुन्दरि ! पडिलाहिया य तुमे ॥ ६ ॥
 एसो दीसइ सुन्दरि !, वंसइरी जत्थ मुणिवरिन्दाणं । कुल-देसभूसणाणं, केवलनाणं समुप्पन्नं ॥ ७ ॥
 भवणुज्जाणसमिद्धं, एयं तं कुब्बरं पिए ! नयरं । इह वसइ वालिखिल्लो, जणओ कल्लाणमालाए ॥ ८ ॥
 एयं पि पेच्छ भदे !, दसण्णनयरं जहिं कुलिसयत्तो । राया अणन्नदिट्ठी, रूववत्तिपिया परिवसइ ॥ ९ ॥
 तत्तो वि वइकन्ता, भणइ पियं जणयनन्दिणी एसा । दीसइ पुरी पहाणा, कवणा सुरनयरिसंठाणा ॥ १० ॥
 भणिया य राहवेणं, सुन्दरि ! एसा महं हिययइद्दा । विज्जाहरकयभूसा, साएयपुरी मणभिरामा ॥ ११ ॥
 दट्ठूण समासत्ते, पुप्फविमाणं ससंभमो भरहो । निप्फडइ गयारूढो बल्लसंहिओ अहिमुहं सिग्घं ॥ १२ ॥
 दट्ठूण य एज्जन्तं, भरहं भडचडगरेण पउमभो । ठावेइ धरणिवट्ठे, पुप्फविमाणं तओइण्णो ॥ १३ ॥
 भरहो मत्तगयाओ, ओयरिउं नमइ सहरिसो सिग्घं । रामेण लक्खणेण य, अवगूढो तिबनेहेणं ॥ १४ ॥
 संभासिएकमेक्का, पुप्फविमाणं पुंणो वि आरूढा । पविसन्ति कोसलं ते, विज्जाहरसुहडपरिक्किणा ॥ १५ ॥
 रह-गय-तुरङ्गमेहिं, संघट्ठुट्ठेन्तजोहनिवहेहिं । पविसन्तेहि निरुद्धं, गयणयलं महियलं नयरं ॥ १६ ॥
 भेरी-मुइङ्ग-तिलिमा-काहल-सङ्गाउलाइं तूराइं । वज्जन्ति घणरवाइं, चारणगन्धवमीसाइं ॥ १७ ॥
 गय-तुरयहेसिएणं, तूरनिणाएण वन्दिस्सेणं । न सुणंति एकमेक्कं, उल्लवं कण्णवडियं पि ॥ १८ ॥
 एवं महिङ्गिजुत्ता, हलहर-नारायणा निवइमग्गे । वच्चन्ते नयरज्जणो आढत्तो पेच्छिउं सब्बो ॥ १९ ॥
 नायरवह्नि सिग्घं, भवणगवक्खा निरन्तरा लत्ता । रेहन्ति वयणपङ्कय-सराण रुद्धा व उदेसा ॥ २० ॥

जैसा, नानाविध वृक्ष, पुष्प एवं फलोंसे प्रचुर यह दण्डकारण्य है, जहाँसे तुम अपहृत हुई थी। (५) हे सुन्दरी! निर्मल जल और तरंगोंवाली यह कर्णरवा महानदी है जिसके तट पर तुमने साधुओंको दान दिया था। (६) हे सुन्दरी! यह वंशगिरि दिखाई पड़ता है जहाँ कुलभूषण और देशभूषण मुनियोंको केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था। (७) हे प्रिये! भवनों और उद्यानोंसे समृद्ध यह कूबरनगर है। यहाँ कल्याणमालाका पिता वालिखिल्य रहता है। (८) हे भद्रे! इस दशार्ण-नगरको भी देख जहाँ सम्यग्दृष्टि राजा कुलिशयज्ञ और उसकी प्रिया रूपवती रहती है। (९) वहाँसे आगे चलने पर जनकनन्दिनी सीताने प्रियसे पूछा कि सुरनगरीके जैसी उत्तम रचनावाली यह कौनसी नगरी दिखाई देती है? (१०) रामने कहा कि हे सुन्दरी! यह मेरी हृदयेष्ट और विद्याधरोंके द्वारा विभूषित मनोहर नगरी साकेतपुरी है। (११)

समीपमें पुष्पक विमानको देखकर भरत आदरके साथ निकला और हाथी पर सवार होकर सेनाके साथ शीघ्र अभिमुख गया। (१२) सुभटोंके समूहके साथ भरतको आते देख रामने पुष्पक विमानको पृथ्वी पर स्थापित किया। बादमें वे उसमेंसे नीचे उतरे। (१३) मत्त हाथी परसे नीचे उतरकर शीघ्र ही भरतने हर्षके साथ प्रणाम किया। राम और लक्ष्मणने तीव्र स्नेहसे उसका आलिंगन किया। (१४) एक-दूसरेके साथ सम्भाषण करके वे पुनः पुष्पकविमान पर आरूढ़ हुए। विद्याधर-सुभटोंसे घिरे हुए उन्होंने अयोध्यामें प्रवेश किया। (१५) प्रवेश करते हुए रथ, हाथी और घोड़ोंसे तथा टकराकर ऊपर उठते हुए घोड़ाओंके समूहसे नगरका आकाशतल और धरातल अवरुद्ध हो गया। (१६) चारणों और गन्धर्वोंके संगीतसे युक्त बादलकी तरह आवाज करते हुए भेरी, मृदंग, तिलिमा, काहल और शंख आदि वाद्य बजने लगे। (१७) हाथियोंकी चिंघाड़ और घोड़ोंकी हिनहिनाहटसे तथा बन्दीजनोंकी ध्वनिसे कानमें पड़ी हुई वातचीत भी एक-दूसरे नहीं सुनते थे। (१८)

ऐसी महान् ऋद्धिसे सम्पन्न राम और लक्ष्मण जब राजमार्ग परसे जा रहे थे तब सब नगरजन उन्हें देखने लगे। (१९) नगरकी चित्रयोंने शीघ्र ही भवनोंके गवाक्ष बीचमें जगह न रहे इस तरह ढँक दिये। मुखरूपी कमलोंसे आच्छन्न

१. एयं पिच्छसु भदे!—प्रत्य० । २. रूववत्तिपिया—मु० । ३. संहिओ सम्मुहो सिग्घं—मु० । ४. पुणो समारूढा । पविसन्ति कोसलाए वि० मु० । ५. सुणेइ एकमेक्को—मु० ।

अह कोउएण तुरिया, अन्ना अन्नं करेण पेछेउं । पेच्छन्ति पणइणीओ, पउमं नारायणसमेयं ॥ २१ ॥
 अन्नोच्चा भणइ सही ! सीयासहिओ इमो पउमणाहो । लच्छीहरो वि एसो, हवइ विसल्लएँ साहीणो ॥ २२ ॥
 सुग्गीवमहाराया, एसो वि य अङ्गओ वरकुमारो । भामण्डलो य हणुवो, नलो य नीलो सुसेणो य ॥ २३ ॥
 एए अन्ने य बहू, चन्दोयरनन्दणाइया सुहडा । पेच्छ हल ! देवा इव, महिद्धिया रूवसंपन्ना ॥ २४ ॥
 एवं ते पउमाई, पेच्छिज्जन्ता य नायरजणेणं । संपत्ता रायघरं, लुलियचलुचलणधयसोहं ॥ २५ ॥
 सा पेच्छिऊण पुत्ते, घराउ अवराइया समोइण्णा । अह केकई वि देवी, सोमिती केगया चेव ॥ २६ ॥
 अन्नं भवन्तरं पिव, पत्ताओ पुत्तदंसणं ताओ । बहुमङ्गलज्जयाओ, ठियाउ ताणं समासन्ने ॥ २७ ॥
 आलोइऊण ताओ, अवइण्णा पुफयाउ तूरन्ता । सयलपरिवारसहिया, अह ते जणणीओ पणमन्ति ॥ २८ ॥
 सुयदरिसणुसुगाहिं, ताहि वि आसासिया सिणेहेणं । परिचुम्बिया य सीसे, पुणो पुणो राम-सोमिती ॥ २९ ॥
 पण्हुयपओहराओ, जायाओ पुत्तसंगमे ताओ । पुलइयरोमञ्चीओ, तोसेण य वीरजणणीओ ॥ ३० ॥
 दिन्नासणोवविद्धा, समयं जणणीहि राम-सोमिती । नाणाकहासु सत्ता, चिद्धन्ति तर्हि परमतुद्धा ॥ ३१ ॥
 जं सुविऊण विउज्झई, जं च पउत्थस्स दरिसणं होइ । जं मुच्छिओ वि जीवइ, किं न हु अच्छेरयं एयं ॥ ३२ ॥
 चिरं पवसिओ वि दीसइ, चिरपडिलगो वि निवुई कुणइ । बन्धणगओ वि मुच्चइ, सय ति शीणा कहा लोए ॥ ३३ ॥

एको वि कओ नियमो, पावइ अच्चम्भुयं महासुरलच्छि ।

तम्हा करेह विमलं, धम्मं तित्थंकरणं सिवसुहफल्यं ॥ ३४ ॥

॥ इइ पउमचरिए राम-लक्ष्मणसमागमविहारणं नाम एगूणासीयं पर्वं समत्तं ॥

सरोधरों की भाँति वे प्रदेश शोभित हो रहे थे । (२०) तब कौतुकवश एक-दूसरीको हाथसे हटाकर स्त्रियाँ नारायणके साथ रामको देखने लगीं । (२१) वे एक-दूसरीसे कहती थीं कि सीताके साथ ये राम हैं और विशल्याके साथ ये लक्ष्मण हैं । (२२) ये सुग्रीव महाराजा हैं । ये कुमारवर अंगद, भामण्डल, हनुमान, नल, नील और सुषेण हैं । (२३) इन तथा अन्य बहुत-से चन्द्रोदरनन्दन आदि देवों जैसे महद्विक और रूपसम्पन्न सुभटोंको तो, अरी ! तू देख । (२४) इस प्रकार नगरजनों द्वारा देखे जाते वे राम आदि चंचल और फहराती हुई ध्वजाओंसे शोभित राजमहल में आ पहुँचे । (२५) पुत्रोंको देख अपराजिता महलमेंसे नीचे उतरी उसके बाद देवी केकई तथा केकया सुमित्रा भी नीचे उतरी । (२६) मानों दूसरा जन्म पाया हो इस तरह उन्होंने पुत्रों का दर्शन किया । अनेकविध मंगल कार्य करनेमें उद्यत वे उनके पास जाकर ठहरीं । (२७) उन्हें देखकर वे तुरन्त पुष्पकविमानमेंसे नीचे उतरे । सम्पूर्ण परिवारके साथ उन्होंने माताओंको प्रणाम किया । (२८) पुत्रोंके दर्शनके लिए उत्सुक उन्होंने स्नेहपूर्वक आश्वासन दिया और राम-लक्ष्मणके सिर पर पुनः पुनः चुम्बन किया । (२९) पुत्रोंसे मिलन होने पर उनके स्तनोंमेंसे दूध झरने लगा । वीर जननी वे आनन्दसे रोमांचित हो गईं । (३०) माताओंके साथ राम और लक्ष्मण दिये गये आसनों पर बैठे । अत्यधिक आनन्दित वे नाना कथाओंमें लीन हो वहीं ठहरे । (३१) सोकर जो जागता है, प्रवास पर गये हुए का जो दर्शन होता है, और मूर्छित व्यक्ति भी जी उठता है—यह क्या आश्चर्य नहीं है ? (३२) चिरप्रवासित भी दीक्षता है, चिर कालसे विषयोंमें आसक्त भी मोक्ष प्राप्त करता है और बन्धन में पड़ा हुआ भी मुक्त होता है—इस पर से शाश्वतताकी बात निर्वल प्रतीत होती है । (३३) एक भी नियम करने पर जीव महान् अभ्युदय तथा देवोंका विशाल ऐश्वर्य प्राप्त करता है; अतः तीर्थकरोंके विमल एवं शिवसुखका फल देनेवाले धर्म का पालन करो । (३४)

॥ पञ्चचरितमें राम एवं लक्ष्मणका माताओंके साथ समागम-विधान नामक उनासीवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

१. अह कोसल देवी—प्रत्य० । २. ०सणा षिविद्धा प्रत्य० । ३. सुषिऊण प्रत्य० । ४. हवइ प्रत्य० । ५. नास्तीयं गाथा प्रत्यन्तरयोः । ६. ०णमायाहिं समा० मु० ।

८०. भुवणालंकारहृत्थिसंखोभणपञ्चं

पुणरवि नमिऊण मुणिं, पुच्छइ सिरिवित्थरं मगहराया । हलहर-सोमितीणं, कहेइ साह समासेणं ॥ १ ॥
 निसुणेहि सेणिय ! तुमं, हलहर-नारायणाणुभावेणं । नन्दावत्तनिवेसं, बहुदारं गोउरं चेव ॥ २ ॥
 सुरभवणसमं गेहं, खिइसारो नाम हवइ पायारो । मेरुस्स चूलिआ इव, तह य सभा वेजयन्ती य ॥ ३ ॥
 साला य विउल्लसोहा, चक्कमिणं हवइ सुविहिनामेणं । गिरिकूडं पासायं, तुङ्गं अवलोयणं चेव ॥ ४ ॥
 नामेण वद्धमाणं, चित्तं पेच्छाहरं गिरिसरिच्छं । कुक्कुडअण्डावयवं, कूडं गढमिगिहं रम्मं ॥ ५ ॥
 कप्पतरुसमं दिबं, एगत्थम्मं च हवइ पासायं । तस्स पुण सबओ च्चिय, ठियाणि देवीण भवणाइं ॥ ६ ॥
 अह सीहवाहीणी वि य, सेज्जा हरविट्ठरं दिणयरामं । ससिकिरणसन्निभाइं, चमराइं मउयफरिसाइं ॥ ७ ॥
 वेरुलियविमलदण्डं, छत्तं ससिसन्निहं सुहच्छायं । विसमोइयाउ गयणं लङ्घन्ती पाउयाओ य ॥ ८ ॥
 वन्थाइ अणग्घाईं, दिवाइं चेव भूसणवराइं । दुब्भिज्जं चिय कवयं, मणिकुण्डलजुवलयं कन्तं ॥ ९ ॥
 खमं गया य चक्कं, कणयारिसिलीमुहा वि य अमोहा । विविहाइ महत्थाइं, अन्नाणि वि एवमादीणि ॥ १० ॥
 पन्नाससहस्ताइं, कोडीणं साहणस्स परिमाणं । एक्का य हवइ कोडी, अब्भहिया पवरधेणूणं ॥ ११ ॥
 सत्तरि कुलकोडीओ, अहियाउ कुडुम्बियाण जेट्ठणं । साएयपुरवरीए, वसन्ति धणरयणपुण्णाओ ॥ १२ ॥
 कइल्लससिहरसरिसोवमाइ भवणाइ ताण सैवाणं । बलय-नवा-महिसीहिं, समाउलाइं सुरम्माइं ॥ १३ ॥
 पोक्खरिणिदीहियासु य, आरामुज्जाणकणणसमिद्धा । जिणवरघरेसु रम्मा, देवपुरी चेव साएया ॥ १४ ॥

८० त्रिभुवनालङ्कार हाथीका संक्षोभ

विशाल शोभावाले मुनिको नमस्कार करके मगधराध राज श्रेणिकने पुनः राम और लक्ष्मणके बारेमें पूछा । तब गौतम मुनिने संक्षेपमें कहा (१) उन्होंने कहा कि हे श्रेणिक ! तुम सुनो । हलधर राम और नारायण लक्ष्मणने प्रभावसे नन्द्यावर्त संस्थानवाला तथा अनेक द्वारों व गोपुरोंसे युक्त एक प्रासाद बनवाया । (२) वह देवभवनके जैसा था । क्षितिसार नामका उसका प्राकार था । उसमें मेरु पर्वतकी चूलिका जैसी ऊँची एक वैजयन्ती सभा थी । (३) उसमें अत्यन्त शोभायुक्त शाला तथा सुवीथी नामका एक चक्र था । यह प्रासाद पर्वतके शिखर जैसा था और उसमें ऊँची अट्टालिका थी । (४) उसमें सुन्दर और पर्वतके समान ऊँचा एक प्रेक्षागृह था तथा सुर्गके अण्डके आकारका एक रमणीय गुप्त गर्भगृह था । (५) एक स्तम्भ पर स्थित वह प्रासाद कल्पवृक्षके समान दिव्य था । उसके चारों ओर देवियों (रानियों) के भवन आये हुए थे । (६) शय्यागृहमें आया हुआ सिंहको धारण करनेवाला आसन (सिंहासन) सूर्यके समान तेजस्वी था और चन्द्रमाकी किरणोंके श्वेत चँवर मृदु स्पर्शवाले थे । (७) वैडूर्यका बना निर्मल दण्ड, चन्द्रमाके जैसा सुखद छायावाला छत्र, आकाशको लॉघनेवाली विषमोचिका पादुका, अमूल्य वस्त्र, दिव्य और उत्तम भूषण, दुर्भेद्य कवच, मणिमय कुंडलोंका सुन्दर जोड़ा, तलवार, गदा और चक्र, कन्क, शत्रुका विनाश करनेवाले अमोघ बाण तथा ऐसे ही दूसरे विविध महास्त्र उनके पास थे । (८-१०)

उनके सैन्यका परिमाण पचास हजार करोड़ था । एक करोड़से अधिक उत्तम गायें थीं । (११) बड़े गृहस्थोंके सत्तर करोड़से अधिक धन एवं रत्नोंसे परिपूर्ण कुल साकेतपुरीमें बसते थे । (१२) उन सबके भवन कैलास पर्वतके शिखरके जैसी उपमावाले, बैल गाय और भैंसोंसे युक्त तथा सुन्दर थे । (१३) सरोवरों और बावड़ियों तथा बाग-बगीचोंसे समृद्ध और जिनमन्दिरोसे रम्य देवपुरी जैसी वह साकेत नगरी थी । (१४) रामने हर्षित होकर वहाँ भव्य जनकोंको आनन्द देनेवाले

१. •माई पि प्रत्य• । २. सव्वाइं मु• ।

जिणवरभवणाणि तर्हि रामेणं कारियाणि बहुयाणि । हरिसेणेण व तइया, भवियज्जाणंदयकराई ॥ १५ ॥
 गाम-पुर-खेड-कबड-नयरी सा पट्टणाण मज्झत्था । इन्द्रपुरी व कया सा, साएया रामदेवेणं ॥ १६ ॥
 सबो जणो सुरुवो, सबो धण-धण्ण-रयणसंपुण्णो । सबो करभररहिओ, सबो दाणुज्जओ निच्चं ॥ १७ ॥
 एक्को त्थ महादोसो, दीसइ फुडपायडो जणवयस्स । परनिन्दासत्तमणो न चयइ निययं चिय सहावं ॥ १८ ॥
 लक्काहिवेण जा वि य, हरिऊणं रामिया धुवं सीया । सा कहं रामेण पुणो, ववगयलज्जेण आणीया ॥ १९ ॥
 खत्तियकुलजायाणं, पुरिसाणं माणगवियमईणं । लोणे दुगुच्छणीयं, कम्मं न य एरिसं जुत्तं ॥ २० ॥
 एयन्तरम्मि भरहो, तम्मि य गन्धवनट्टगीएणं । न लहइ रई महप्पा, विसएसु विरत्तगयभावो ॥ २१ ॥
 संसारभउब्बिग्गो, भरहो परिचिन्तिऊणंमादत्तो । विसयासत्तेण मया, न कओ धम्मो सुहनिवासो ॥ २२ ॥
 दुक्खेहि माणुसत्तं, लद्धं जलबुब्बुओवमं चवलं । गयकण्णसमा लच्छी, कुसुमसमं जोवणं हवइ ॥ २३ ॥
 किंपागफलसरिच्छा, भोगा जीयं च सुविणपरितुल्लं । पक्खिसमागमसरिसा, बन्धवनेहा अइदुरन्ता ॥ २४ ॥
 धन्ना हु तायमई, जे सबे उज्झिऊण रज्जाई । उसमसिरिदेसियत्थं, सुगइपहं ते समोइण्णा ॥ २५ ॥
 धण्णा ते बालमुणी, बालत्तणयम्मि गहियसामण्णा । न य नाओ पेम्मरसो, सज्जाए वावडमणेहि ॥ २६ ॥
 भरहाइमहापुरिसा, धन्ना ते जे सिरिं पयहिऊणं । निग्गन्था पवइया, पत्ता सिवसासयं सोक्खं ॥ २७ ॥
 तरुणत्तणम्मि धम्मं, जइ हं न करेमि सिद्धिसुहगमणं । गहिओ जराएँ पच्छा, उज्झिस्सं सोगअग्गीणं ॥ २८ ॥
 गलगण्डसमाणेसुं, सरीरछीरन्तरावहन्तेसु । थणफोडएसु का वि हु, हवइ रई, मंसपिण्डेसु ? ॥ २९ ॥

बहुत-से सुन्दर जिनमन्दिर बनवाये । (१५) ग्राम, पुर, खेट (मिट्टीकी चहारदीवारीवाला नगर) कबड (कुत्सित नगर), नगरी और पत्तनोंके बीचमें आई हुई वह साकेतनगरी रामने इन्द्रपुरी जैसी बनाई । (१६) वहाँ सभी लोग सुन्दर थे, सभी धन, धान्य एवं रत्नोंसे परेपूर्ण थे, सभी करके भारसे रहित थे और सभी नित्य दानमें उद्यत रहते थे । (१७) किन्तु लोगोंमें एक बड़ा भारी दोष स्पष्ट दिखाई पड़ता था । दूसरेकी निन्दामें आसक्त मनवाले वे अपना स्वभाव नहीं छोड़ते थे । (१८) वे कहते थे कि लंकाधिपने अपहरण करके जिस सीताके साथ रमण किया था उसे निर्लज्ज राम पुनः क्यों लाये ? (१९) क्षत्रियकुलमें उत्पन्न और अभिमानसे गवित बुद्धिवाले पुरुषोंके लिये लोकमें ऐसा कुत्सित कर्म करना उपयुक्त नहीं है । (२०)

उधर विषयोंमें वैराग्यभाववाला महात्मा भरत गान्धर्व, नृत्य और गीत द्वारा उन विषयोंमें आसक्ति नहीं रखता था । (२१) संसारके भयसे उद्वेग भरत सोचने लगा कि विषयोंमें आसक्त मैंने सुखका धाम रूप धर्म नहीं किया । (२२) मुश्किलसे जलके बुलबुलेके समान चपल मनुष्यजन्म प्राप्त किया है । हाथीके कानके समान अस्थिर लक्ष्मी है और यौवन फूलके समान होता है । (२३) किंपाक फलके जैसे वे स्वादमें अच्छे, परंतु परिणाममें विनाशक भोग होते हैं । जीवन स्वप्न सदृश है और बान्धवस्नेह पक्षियोंके मेलेके जैसा क्षणिक और अत्यन्त खराब विपाकवाला होता है । (२४) माता और पिता धन्य हैं जिन्होंने राज्य आदि सर्वका परित्याग करके श्री ऋषभदेव भगवान् द्वारा उपदिष्ट सुगतिके मार्ग पर पदार्पण किया है । (२५) वे बालमुनि धन्य हैं जो बचपनमें ही श्रमणत्व अंगीकार करके स्वाध्यायमें मन लगनेसे प्रेमरसको नहीं जानते । (२६) वे भरत आदि महापुरुष धन्य हैं जिन्होंने लक्ष्मीका त्याग करके निर्ग्रन्थ दीक्षा ली और शिव एवं शाश्वत सुख प्राप्त किया । (२७) यदि मैं तरुण अवस्थामें ही सिद्धिका सुख देनेवाले धर्मका आचरण नहीं करूँगा तो बादमें बुढ़ापेसे जकड़े जाने पर शोकरूपी अग्निसे जलता रहूँगा । (२८) शरीरके दूधको अपने भीतर धारण करनेवाले, गलगण्डके समान स्तनरूपी फोड़े जैसे मांस पिण्डोंमें क्या प्रेम हो सकता है ? (२९) पानके रससे रंगे और दाँतरूपी कीटकोंसे भरे हुये

१. ०जणाणंदियकराई प्रत्य० । ०जणाणंदियवराई मु० । २. धण-कण्ण-रयणपरिपुण्णो मु० । ३. कहि मु० । ४. ०ण
 आड० प्रत्य० । ५. ०न्तहावह० प्रत्य० ।

तम्बोलरसांलिद्धे, भरिए चिय दन्तकीडयाण मुहे । केरिसिया हवइ रई, चुम्बिज्जन्ते अहरचम्मे ? ॥ ३० ॥
 अन्तो कयारभरिए, बाहिरमट्टे सभावदुग्गन्धे । को नाम करेज्ज रई, जुवइसरीरे नरो मूढो ? ॥ ३१ ॥
 संगीयए य रुण्णे, नरिथ विसेतो बुहेहिं निदिट्ठो । उम्मत्तयसमसरिसे, को व गुणो नच्चियवम्मि ? ॥ ३२ ॥
 सुरभोगेसु न तित्तो, जीवो पवरे विमाणवासम्मि । सो किहूँ अवियण्हमणो, माणुसभोगेसु तिप्पिहिइ ॥ ३३ ॥
 भरहस्स एव दियहा, वहवो वच्चन्ति चिन्तयन्तस्स । बलविरियसमत्थस्स वि, सीहस्स व पञ्जरत्थस्स ॥ ३४ ॥
 एवं संविग्गमणो, भरहो चिय केइगईएँ परिमुण्णित्तं । भणिऊण समादत्तो, पउमो महुरेहिं वयणेहिं ॥ ३५ ॥
 अम्ह पियरेण जो वि हु, भरह ! तुमं ठाविओ महारज्जे । तं भुज्जसु निस्सेसं, वसुहं तिसमुद्धरेन्तं ॥ ३६ ॥
 एयं सुदरिसणं तुह, वसे य विज्जाहराहिवा सवे । अहयं धरेमि छत्तं, मन्ती वि य लक्खणो निययं ॥ ३७ ॥
 होइ तुहं सत्तुहणो, चामरधारो भडा य सन्निहिया । बन्धव करेहि रज्जं, चिरकालं जाइओ सि मया ॥ ३८ ॥
 जिणिऊण रक्खसवई इहागओ दरिसणुस्सुओ तुज्जं । अम्हेहि समं भोगे, भोत्तूणं पवइज्जासु ॥ ३९ ॥
 एव भणन्तं पउमं, भरहो पडिभणइ ताव निमुणेहि । इच्छामि देव ! मोत्तुं, बहुदुक्खकारिं नरिन्दसिंरिं ॥ ४० ॥
 एव भणियं सुणेउं, अंसुजलाउण्णल्लोयणा सुहडा । जंपन्ति विम्हियमणा, देव निसामेह वयणउम्हं ॥ ४१ ॥
 तायस्स कुणसु वयणं, पाल्लुं लोयं सुहं अणुहवन्तो । पच्छा तुमं महाजस !, गिण्हेज्जसु जिणमए दिक्खं ॥ ४२ ॥
 भणइ भरहो नरिन्दो, पिउवर्यणं पालियं जहावत्तं । परिवालिओ य लोगो, भोगविही माणिया सवा ॥ ४३ ॥
 दिन्नं च महादाणं, साहुजणो तप्पिओ जहिच्छाए । ताएण ववसियं जं, कम्मं तमहं पि ववसामि ॥ ४४ ॥

मुखमें तथा चुम्बन किए जाते होंठोंके चमड़ेमें कैसे प्रीति हो सकती है ? (३०) भीतरसे मैलेसे भरे हुये किन्तु बाहरसे शुद्ध ऐसे स्वभावसे दुर्गन्धयुक्त युवतियोंके शरीरमें कौन मूर्ख मनुष्य प्रेम कर सकता है ? (३१) बुद्धिमान पुरुषोंने संगीतमें और रोनेमें अन्तर नहीं है ऐसा कहा है । उन्मत्त व्यक्तिके जैसे नर्तनमें कौन-सा गुण है ? (३२) जो जीव उत्तम विमानमें रहकर देवोंके भोगोंसे वृत्त न हुआ वह सतृष्ण मनवाला मनुष्यलोकमें कैसे वृत्त हो सकता है ? (३३) पिंजरेमें रहे हुये सिंहके जैसे बल एवं वीर्यमें समर्थ भी भरतके बहुत-से दिन इस तरह सोचनेमें बीते । (३४)

इस प्रकार मनमें संवेग धारण करनेवाले भरतको कैकेईने जान लिया । रामने भी मधुर वचनोंसे उसे कहा कि हे भरत ! हमारे पिताने तुम्हें महाराज्य पर स्थापित किया है, अतः तीन ओर समुद्र तक फैली हुई समग्र पृथ्वीका तुम उपभोग करो । (३५-३६) यह सुदर्शन चक्र और सब विद्याधर तुम्हारे वशमें हैं । मैं छत्र धरता हूँ और लक्ष्मण भी मंत्री है । (३७) शत्रुघ्न तुम्हारा चामरधर है । सुभट पासमें हैं । अतः हे भाई ! तुम चिरकाल तक राज्य करो, यही मेरी याचना है । (३८) राक्षसपतिको जीतकर तुम्हारे दर्शनके लिए उत्सुक मैं यहाँ आया हूँ । हमारे साथ भोगोंका उपभोग कर तुम प्रव्रज्या लेना । (३९)

तब ऐसा कहते हुए रामसे भरतने कहा कि हे देव ! आप सुनें । बहुत दुःखकर राजलक्ष्मीको मैं छोड़ना चाहता हूँ । (४०) ऐसा कथन सुनकर आँखोंमें अश्रुजल भरकर मनमें विस्मित सुभट कहने लगे कि, देव ! हमारा कहना आप सुनें । (४१) हे महायश ! पिताके वचनका पालन करो । सुखका अनुभव करते हुए लोगों की रक्षा करो । बादमें आप जिनमतमें दीक्षा ग्रहण करना । (४२) इस पर भरत राजाने कहा कि मैंने पिताके वचनका यथार्थ पालन किया है । लोगोंकी भी रक्षा की है और सब भोग भी भोगे हैं । (४३) महादान दिया है । इच्छानुसार साधुओंको सन्तुष्ट किया है । पिताने जो कार्य किया था उसे मैं भी करता हूँ । (४४) मुझे शीघ्र अनुमति दो और विघ्न मत डालो—यही मैं तुमसे याचना करता हूँ । जो कार्य श्लाघनीय होता है वह तो मनुष्यको जिस-किसी तरहसे करना ही चाहिए । (४५)

१. सालित्ते मु० । २. को णु गु० मु० । ३. जीवो सुरवरविमा० प्रत्य० । ४. कह प्रत्य० । ५. केगईए प्रत्य० । ६. करेह प्रत्य० । ७. निसामेहि प्रत्य० । ८. ०सु वसुहं सु० प्रत्य० । ९. ०यणं जं जहा य आणत्तं । परि० प्रत्य० ।

अणुमन्नह मे सिग्धं, विग्धं मा कुणह जाइया तुब्भे । कज्जं सलाहणिज्जं, जह तह वि नरेण कायब्भं ॥ ४५ ॥
 नन्दाइणो नरिन्दा, बहुवो अणियत्तविसर्यपेम्मा य । बन्धवनेहविनडिया, कालेण अहोगई पत्ता ॥ ४६ ॥
 जह इन्धणेण अग्गी, न य तिप्पइ सागरो नइसएसु । तह जीवो वि न तिप्पइ, महएसु वि कामभोगेसु ॥ ४७ ॥
 एव भणिउण भरहो, समुट्ठिओ आसणाउ वच्चन्तो । लच्छीहरेण रुद्धो, गरुयसिणेहं वहन्तेणं ॥ ४८ ॥
 जाव य तस्सुवएसं, देइ चिय लक्खणो रइनिमित्तं । ताव य पउमाणाए, समागयाओ पणइणीओ ॥ ४९ ॥
 एयन्तरम्मि सीया, तह य विसल्ला सुमा य भाणुमई । इन्दुमई रयणमई, लच्छी कन्ता गुणमई य ॥ ५० ॥
 नलकुबरी कुबेरी, बन्धुमई चन्दणा सुमद्दा य । सुमणसुया कमलमई, नन्दा कल्लाणमाला य ॥ ५१ ॥
 तह चेव चन्दकन्ता, सिरिकन्ता गुणमई गुणसमुद्दा । पउमावइमईओ, उज्जुवई एवमईओ ॥ ५२ ॥
 मणनयणहारिणीओ, सवालंकारभूसियङ्गीओ । परिवेद्विऊण भरहं, ठियाओ हृत्थि व करिणीओ ॥ ५३ ॥
 तं भणइ जणयतणया, देवर ! अहं करेहि वयणमिणं । कीलसु जलमज्जणयं, सहिओ य इमासु जुवईसु ॥ ५४ ॥
 सो एव भणियमेतो, भरहो वियलियसिणेहसंबन्धो । दक्खिणणेण महप्पा, अण्णिच्छइ पयणुमेत्तेणं ॥ ५५ ॥
 भरहस्स महिलियाओ, ताव तहिं उवगयाउ सबाओ । अवइण्णाउ सरवरं, दइएण समं पहट्टाओ ॥ ५६ ॥
 निद्वेसु सुयन्धेसु य, उवट्टणएसु विविहवण्णेसु । उवट्टिओ महप्पा, ण्हाओ जुवईहि समसहिओ ॥ ५७ ॥
 उत्तिण्णो य सराओ, जिणवरपूयं च भावओ काउं । नाणाभरणेसु तओ, विभूसिओ, पणइणिसम्मो ॥ ५८ ॥
 कीलणरईविरतो, भरहो तच्चत्थदिद्वसब्भाओ । वरजुवईहि परिमिओ, सो परसुव्वेयसुवहइ ॥ ५९ ॥
 एयन्तरम्मि जो सो, हृत्थी तेलोकमण्डणो नामं । खुहिओ आलाणखम्भं, भन्तुं सालाओ निप्फिडिओ ॥ ६० ॥

विषयोमें अनियंत्रित प्रेम रखनेवाले और बान्धव-स्नेहसे व्याकुल नन्द आदि बहुत-से राजाओंने कालके द्वारा अधोगति पाई है। (४६) जिस तरह ईन्धनसे आग और सैकड़ों नदियोंसे समुद्र तृप्त नहीं होता उसी तरह बड़े-बड़े कामभोगोंसे भी जीव तृप्त नहीं होता। (४७) ऐसा कहकर सिंहासन परसे उठकर जाते हुए भरतको अत्यन्त स्नेह धारण करनेवाले लक्ष्मणने रोका। (४८)

लक्ष्मण उसे भोगके लिए जिस समय उपदेश दे रहा था उसी समय रामकी आज्ञासे प्रणयिनी स्त्रियाँ वहाँ आईं। (४९) इस बीच सीता, विशल्या, शुभा, भानुमति, इन्दुमती, रत्नमती, लक्ष्मी, कान्ता, गुणमति, नलकूबरी, कुबेरी, बन्धुमति, चन्दना, सुमद्दा, सुमनसुता, कमलमती, नन्दा, कल्याणमाला, चन्द्रकान्ता, श्रीकान्ता, गुणमती, गुणसमुद्दा, पद्मावती, ऋजुमति आदि मन और आँखोंको सुन्दर लगनेवाली तथा सब प्रकारके अलंकारोंसे विभूषित शरीरवाली स्त्रियाँ भरतको, हाथी को घेर कर खड़ी हुई हथिनियोंकी भाँति, घेरकर खड़ी रहीं। (५०-५३) सीताने उसे कहा कि देवर ! हमारा यह वचन मानो। इन युवतियोंके साथ जल-स्नानकी क्रीड़ा करो। (५४) इस प्रकार कहने पर स्नेह-सम्बन्धसे रहित महात्मा भरतने थोड़ा दाक्षिण्यभाव जतानेके लिए अनुमति दी। (५५) तब भरतकी सब पत्नियाँ वहाँ उपस्थित हुईं और आनन्दमें आकर पतिके साथ सरोवरमें उतरीं। (५६) स्निग्ध, सुगन्धित और विविध वर्णवाले उवटनोंसे मले गये महात्मा भरतने युवतियोंके साथ स्नान किया। (५७) सरोवरमें उतरकर और भावपूर्वक जिनपूजा करके स्त्रियोंसे युक्त वह नानाविध आभरणोंसे विभूषित हुआ। (५८) क्रीड़ाके प्रेमसे विरक्त और तत्त्वोंके अर्थसे वस्तुके सद्भावको जाननेवाला भरत सुन्दर युवतियोंसे घिरे रहने पर भी, अत्यन्त उद्वेग धारण करता था। (५९)

उस समय त्रैलोक्यमण्डन (त्रिभुवनालंकार) नामका जो हाथी था वह क्षुब्ध हुआ और बाँधनेके स्तम्भको तोड़कर

१. सिग्धं, मा कुणह विलंबं महं तुब्भे प्रत्य० । २. यपिम्माओ प्रत्य० । ३. यपेम्माओ प्रत्य० । ४. य तप्पइ जलनिही नइ० प्रत्य० । ५. कमलवई प्रत्य० । ६. सिरिचंदा प्रत्य० । ७. एत्थ प्रत्य० । ८. पूया य मु० । ९. कीलइ रई० प्रत्य० । १०. खुहिउं मु० ।

भमिऊण समाढत्तो, भङ्गन्तो भवणतोरणवराइं । पायारगोयरावण, वितासेन्तो य नयरजणं ॥ ६१ ॥
 पलयधणसद्दसरिसं, तस्स रवं निसुणिऊण सेसगथा । विच्छड्डियमयदप्पा, दस वि दिसाओ पलयन्ति ॥ ६२ ॥
 वरकणयरयणतुङ्गं, भंतूणं नयरगोउरं सहसा । भरहस्स समासत्ते, उवट्ठिओ सो महाहत्थी ॥ ६३ ॥
 दट्टूण गयवरं तं, जुवईओ भयपवेविरङ्गीओ । भरहं समासियाओ, आइच्चं चेव रस्सीओ ॥ ६४ ॥
 भरहाहिमुहं हत्थि, जन्तं दट्टूण नायरो लोगो । हाहाकारसुहरवं, कुणइ महन्तं परियणो य ॥ ६५ ॥
 अह ते दोण्णि वि समयं, हलहर-नारायणा गयं दट्टुं । वेत्तूण समाढत्ता, निम्मज्जियपरियरावेढा ॥ ६६ ॥
 ताव य भरहनरिन्दं, अणिमिसनयणो गओ पलोएउं । सुमरइ अईयजम्मं, पसन्तहियओ सिद्धिमात्तो ॥ ६७ ॥
 तं भणइ भरहसामी, केण तुमं रोसिओ अणज्जेणं । गयवर पसन्नचित्तो, होहि कसायं परिच्चयसु ॥ ६८ ॥
 सुणिऊण तस्स वयणं, अहिययरं सोमदंसणसहावो । जाओ मयङ्गओ सो, ताहे संभरइ सुरजम्मं ॥ ६९ ॥
 एसो महिद्धिजुत्तो, मित्तो नभे सुरो पुरा आसि । चविऊण नरवरिन्दो, जाओ बलसत्तिसंपन्नो ॥ ७० ॥
 हा कट्टं अहयं पुण, निन्दियकम्मो तिरिक्खजोणीसु । कह हत्थि समुप्पन्नो, विवेगरहिओ अकयकारी ॥ ७१ ॥
 तन्हा करेमि संपइ, कम्मं तं जेण निययदुक्खाइं । छेत्तूण देवलोए, सुज्जामि जहिच्छिण भोगे ॥ ७२ ॥

एवं वइकन्तभवं सरेउं, जाओ सुसंवेगपरो गइन्दो ।

चिन्तेइ तं एत्थ करेमि कम्मं, जेणं तु ठाणं विमलं ल्हे हं ॥ ७३ ॥

॥ इइ पउमचरिए तिहुयणालंकारसंखोभविहाणं नाम आसीइमं पव्वं समत्तं ॥

हस्तिशालामेंसे बाहर निकला । (६०) सुन्दर भवनों, तोरणों, प्राकार, गोचर-भूमि और बनोंको तोड़ता तथा नगरजनोंको त्रस्त करता हुआ वह घूमने लगा । (६१) प्रलयकालीन बादलोंकी गर्जनाके समान उसकी चिंघाड़की सुनकर मद एवं दर्पका परित्याग करके दूसरे हाथी भी दसों दिशाओंमें भागने लगे । (६२) सोने और रत्नोंसे बने हुए नगरके अँचे गोपुरको तोड़कर सहसा वह महाहस्ती भरतके पास आया । (६३) उस हाथीको देखकर भयसे काँपती युवतियोंने, जिस प्रकार किरणें सूर्यका आश्रय लेती हैं उसी प्रकार भरतका आश्रय लिया । (६४) भरतकी ओर जाते हुए हाथीको देखकर नगरजन तथा परिजन खूब हाहाकार और कोलाहल करने लगे । (६५) तब स्नान किये हुए परिवारसे वेष्टित राम और लक्ष्मण दोनों एक-साथ ही हाथीको देखकर पकड़नेका प्रयत्न करने लगे । (६६) उस समय अपलक आँखोंसे भरत राजाको देखकर क्षिथिल मात्रवाला हाथी हृदयमें प्रसन्न होकर स्मरण करने लगा । (६७) उसे भरतस्वामीने कहा कि 'हे गजवर ! किस अनार्यने तुझे क्रुद्ध किया है ? प्रसन्नचित्त होकर कषायका त्याग कर । (६८) उसका कथन सुनकर वह हाथी और भी अधिक सौम्य दर्शन और सौम्य स्वभाव वाला हो गया । तब उसने देवजन्म याद किया । (६९) 'यह पूर्वकालमें ब्रह्मलोकमें अत्यन्त ऐश्वर्यसे सम्पन्न मेरा मित्र देव था । वहाँसे च्युत होनेपर बल एवं शक्तिसम्पन्न नरेन्द्र हुआ । (७०) किन्तु अफसोस है ! मैं निन्दित कर्म करनेवाला, विवेक रहित और अकार्यकारी तिर्यच योनिमें हाथीके रूपमें कैसे उत्पन्न हुआ ? (७१) अतः अब ऐसा कर्म करता हूँ जिससे अपने दुःखोंका नाश करके देवलोकमें यथेच्छ भोगोंका उपभोग करूँ । (७२) इस तरह बीते हुए भवोंको याद करके हाथी संवेगयुक्त हुआ । वह सोचने लगा कि यहाँ पर ऐसा कार्य करूँ जिससे मैं विमल स्थान प्राप्त करूँ । (७३)

॥ पउमचरितमें त्रिभुवनालंकार हाथीके संक्षोभका विधान नामक अस्सीवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

१. हाहारावसु० मु० । २. ०यणो पलोइउं लग्गो । सु० प्रत्य० । ३. अनय—प्रत्य० । ४. ०इ, तं कम्मं जेण सव्वदु०—
 प्रत्य० । ५. एवं अइ०—प्रत्य० । ६. लहेमि—सु० । ७. ०रसंखोहणं—प्रत्य० ।

८१. भुवनालंकारहृत्थिसल्लपव्वं

ततो सो वरहृत्थी, हलहर-नारायणेहि सहिएहि । अइकण्डिणदप्पिएहि वि, गहिओ च्चिय सङ्कियमणेहि ॥ १ ॥
 नारायणवय्यणेणं, नीभो च्चिय मन्तिणेहि निययघरं । संपेसिओ गओ सो, पूयं परिलम्भिओ चेव ॥ २ ॥
 दट्टूण गयं गहियं, समयं विज्जाहरेहि सबजणो । षउमस्स लखणस्स य, बलमाहण्यं पसंसन्ति ॥ ३ ॥
 सीया य विसल्ला वि य, भरहो सह षणइणीहि निययाहिं । लखणरामा य तओ, कुसुमुज्जाणं समुच्चलिया ॥ ४ ॥
 बहुतूरनिगाएणं, जयसदूदुग्घुदुमङ्गलरवेणं । अहिनन्दिया पविट्ठा, राहवभवणं सुरपुराभं ॥ ५ ॥
 ओयरिय वाहणाणं, उवविट्ठाऽऽहारमण्डवं सबे । पडिलाहिऊण साहु, परियणसहिया तओ जिमिया ॥ ६ ॥
 ताव य मगहनराहियं, सबे मंती समागया तत्थ । काऊण सिरपणामं, राहव ! निसुणेहि वयणऽहं ॥ ७ ॥
 जतो पभूइ सामिय !, खुभिऊणं सो समागओ हत्थी । ततो पभूइ गाढं, ज्ञायइ किं किं पि हियएणं ॥ ८ ॥
 ऊससिऊण सुदीहं, निमीलियच्छो करेण महिवेढं । आहणइ धुणइ सोसं, पुणरवि चिन्तावरो होइ ॥ ९ ॥
 धुंबन्तो च्चिय कवलं, न य गेणइ निट्ठुरं पि भणन्तो । ज्ञायइ थम्मनिसण्णो, करेण दसणं च वेढेउं ॥ १० ॥
 लेप्पमओ इव सुइरं, चिट्ठइ सो अचलियङ्गपच्चङ्गो । किं जीवपरिगहिओ, होज्ज न होज्ज ? ति संदेहो ॥ ११ ॥
 मन्तेहि ओसहेहि य, वेज्जपउचेहि तस्स सबभावो । न य लक्खिज्जइ सामिय !, अहियं वियणाउरो सो उ ॥ १२ ॥
 संगीययं पि न सुणइ, न य कुणइ धिइं सरे ण सेज्जासु । न य गामे न य रण्णे, आहारे नेव पाणे य ॥ १३ ॥
 एयावत्थसरीरो, वट्ठइ तेलोकमण्डणो हत्थी । अन्हेहि तुज्ज सिट्ठो, तस्स उवायं पइ कुणसु ॥ १४ ॥

८१. त्रिभुवनालंकार हाथीकी देदना

तब अत्यन्त कठोर और दर्पयुक्त होने पर भी मनमें शंकित राम और लक्ष्मणने मिलकर उत्तम हाथीको पकड़ा । (१) नारायण लक्ष्मणके कहनेसे मन्त्रियों के द्वारा अपने घर पर लाया गया वह हाथी पूजा प्राप्त करके भेज दिया गया । (२) हाथी पकड़ा गया है यह देखकर विद्याधरों के साथ सब लोग राम एवं लक्ष्मणके बलके गौरवकी प्रशंसा करने लगे । (३) तब सीता, विशाल्या, अस्पती स्त्रियोंके साथ भरत तथा राम एवं लक्ष्मण कुसुमोद्यानकी ओर चले । (४) अनेकविध वाद्योंके निनाद और जयध्वनिसे युक्त मंगलगीतोंके द्वारा अभिनन्दित वे इन्द्रपुरीके जैसे रामके महलमें प्रविष्ट हुए । (५) वाहनों पर से उतरकर सब भोजनमण्डपमें जा बैठे । साधुको दान देकर परिजनोंके साथ उन्होंने भोजन किया । (६)

हे मगधनरेश ! उस समय सब मन्त्री वहाँ आये । सिरसे प्रणाम करके उन्होंने कहा कि, हे राघव ! हमारा कहना आप सुनें । (७) हे स्वामी ! जबसे लोगोंको क्षुब्ध करके वह हाथी आया है तबसे न जाने क्या क्या वह हृदयमें सोच रहा है । (८) दीर्घ उच्छ्वास लेकर और आँखें बन्द करके वह सूँढ़से धरातलको पीटता है, सिर धुनता है और फिर चिन्तित हो जाता है । (९) प्रशंसा करने पर या निन्दुर रूपसे कहने पर भी वह आहार नहीं लेता । स्तम्भके पास बैठा हुआ वह सूँढ़से दाँतोंको लपेटकर ध्यान करता है । (१०) चित्रके समान अंग-प्रत्यंगसे अविचलित वह चिरकाल तक खड़ा रहता है । उसमें जीव है या नहीं इसमें सन्देह है । (११) हे स्वामी ! वैद्यों द्वारा प्रयुक्त मन्त्रों और औषधोंसे उसके जीवका सद्भाव ज्ञात नहीं होता । जनशून्य एकान्तके लिए वह अधिक आतुर रहता है । (१२) वह संगीत नहीं सुनता । स्वर और शय्या में भी धैर्य धारण नहीं करता । गाँवमें, अरण्यमें, आहारमें एवं पानमें भी उसे सुख प्रतीत नहीं होता । (१३) ऐसी शारीरिक अवस्थावाले त्रैलोक्य मण्डन हाथीके बारेमें हमने आपसे कहा । हे स्वामी !

१. वणेहि मंतीहिं करी निओ य नियय—प्रत्य० । २. व ताण तहि आयया महामती । का०—मु० । ३. छुमंती—प्रत्य० । ४. वं चिय लालिओ सो उ—प्रत्य० । ५. य नयरे न य हारे णेव—प्रत्य० ।

एयं महामन्तिगिरं सुगेउं, ठिया विचिन्ता बल-चक्कपाणी ।

जंपन्ति तेलोक्कविभूसणेणं, हीणं असेसं विमलं पि रज्जं ॥ १५ ॥

॥ इइ पउमचरिए [ति]भुवणालंकारसङ्गविहाणं नाम एक्कासीयं पव्वं समत्तं ॥

८२. भुवणालंकारहत्थिपुण्वभवाणुक्कित्तणपव्वं

एयन्तरंमि सेणियं !, महासुणी देसभूसणो नामं । कुलभूसणो त्ति बीओ, सुर-असुरनमंसिओ भयवं ॥ १ ॥
जाणं वंसनगवरे, पडिमं चउराणणं उवगयाणं । जणिओ च्चिय उवसग्गो, पुव्वरिवूणं सुरवरेणं ॥ २ ॥
रामेण लक्खणेण य, ताण कए तत्थ पाडिहेरम्मि । सयलजगुज्जोयकरं, केवल्लनाणं समुप्पत्तं ॥ ३ ॥
तुट्ठेण जक्खवइणा, दिन्नो य वरो महासुणो तइया । जस्स पसाएण जिओ, सत्त बल-वासुदेवेहिं ॥ ४ ॥
ते समणसङ्घसहिया, संपत्ता कोसलापुरिं पवरं । कुसुमामोउज्जाणे, अहिद्विया फासुगुदेसे ॥ ५ ॥
अह ते संजमनिलया, साहू सबो वि नागरो लोओ । आगन्तूण सुमणसो, वन्दइ परमेण विणएणं ॥ ६ ॥
पउमो भाईहि समं, साहूणं दरिसणुज्जुओ पत्तो । जाईसरं गयं तं, पुरओ काऊण निप्पिडिओ ॥ ७ ॥
अवराइया य देवी, सोमिच्ची केगई तहऽजाओ । जुवईओ मुणिवरे ते, वन्दणहेउं उवगयाओ ॥ ८ ॥
जगडिज्जन्तुरङ्गम-हत्थिघडाडोववियडमग्गेणं । बहुसुहडसंपरिवुडो, गओ य पउमो तमुज्जाणं ॥ ९ ॥
साहुस्स आयवत्तं, दट्ठुं ते वाहणाउ ओइण्णा । गन्तूण पउममादी, सबे पणमन्ति मुणिवसभे ॥ १० ॥
उवविट्ठण महियले, ताण मुणी देसभूसणो धम्मं । दुविहं कहेइ भयवं, सागारं तह निरागारं ॥ ११ ॥

आप इसका उपाय करें। (१४) इस तरह महामंत्रीकी वाणी सुनकर राम और लक्ष्मण चिन्तायुक्त हुए। वे कहने लगे कि त्रैलोक्यविभूषणके बिना सारा विमल राज्य भी व्यर्थ है। (१५)

॥ पउमचरितमें 'भुवनालंकारके शल्यका विधान' नामक इक्यासीवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

८२. भुवनालंकार हाथीके पूर्वभव

हे श्रेणिक ! इस बीच सुर-असुर द्वारा वन्दित भगवान् देशभूषण और दूसरे कुलभूषण नामके महासुनि वंश नामक पर्वतके ऊपर चतुरानन प्रातिमा (कायोत्सर्ग) धारण किये हैं ऐसा जानकर पहलेके शत्रु देवने उपसर्ग किया। (१-२) राम एवं लक्ष्मणके द्वारा उनका वहाँ प्रातिहार्य-कर्म करने पर अर्थान् उसे रोकने पर सकल विश्वका उद्योत करने वाला केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। (३) तुष्ट यक्षपतिने महान् गुणोंवाला एक बरदान दिया जिसके प्रसादसे बलदेव और वासुदेवने शत्रुको जीत लिया। (४) श्रमणसंघके साथ वे उत्तम साकेतपुरीमें आये और कुसुमामोद उद्यानमें निर्जीव स्थान पर ठहरे। (५) तब सुन्दर मनवाले सब नगरजनोंने आकर परम विनयके साथ संयमके धाम रूप उन साधुओंको वन्दन किया। (६) साधुओंके दर्शनके लिए उत्सुक राम भी पूर्वजन्मको याद करनेवाले हाथीको आगे करके भाइयोंके साथ निकले। (७) अपराजिता, सुमित्रा, कैकेई तथा अन्य युवतियाँ उन मुनिवरोंको वन्दनके लिए गईं। (८) आपसमें एकदम सटे घोड़ों एवं हाथियोंके घटाटोपसे छायें हुए मार्गसे अनेक सुभटोंसे घिरे हुए राम उस उद्यानमें गये। (९) मुनिका छत्र देखकर वे वाहन परसे नीचे उतरे। राम आदिने जाकर सब मुनिवरोंको प्रणाम किया। (१०)

जमीन पर बैठे हुए उन्हें भगवान् देशभूषण मुनिने सागार तथा अनगार ऐसे दो प्रकारके धर्मका उपदेश दिया।

१. सुररायनमं—प्रत्य० । २. ०पुरी वीरा । कु०—सु० । ३. सब्बे वंदंति मुणिल्लणे—प्रत्य० ।

पदमो गिहवासीणं, सायारोऽण्यपज्जवो धम्मो । होइ निरायारो पुण, निग्गन्थाणं जइवराणं ॥ १२ ॥
 लोए अणाइनिहणे, एवं अन्नाणमोहिया जीवा । आणुहोन्ति कुजोणिगया, दुक्खं संसारकन्तारे ॥ १३ ॥
 धम्मो परभववन्धु, ताणं सरणं च होइ जीवस्स । धम्मो सुहाण मूलं, धम्मो कामदुहा धेणू ॥ १४ ॥
 सयलम्मि वि तेलोक्के, जं दवं उत्तमं महग्घं च । तं सबं धम्मफलं, लभइ नरो उत्तमतवेणं ॥ १५ ॥
 जिणवरविहिए मग्गे, धम्मं काऊण निच्छियं पुरिसा । उम्मुक्कम्मकलसा, जन्ति सिवं सासयं ठाणं ॥ १६ ॥
 एयन्तरमि पुच्छइ, साह लच्छीहरो पणमिऊणं । साहेहि गओ खुमिओ, किह पुणरवि उवसमं पत्तो ॥ १७ ॥
 अह देसभूषणमुणी, भणइ गओ अइवलेण संखुमिओ । संभरिऊण परभवं, पुणरवि सोमत्तणं पत्तो ॥ १८ ॥
 आसि पुरा इह नयरे, नामी भज्जा य तस्स मरुदेवी । तीए गव्भमि जिणो, उप्पन्नो सयलजगनाहो ॥ १९ ॥
 सुर-असुरनमियचलणो, रज्जं दाऊण जेट्टपुत्तस्स । चउहि सहस्सेहि समं, पवइओ नरवरिन्दाणं ॥ २० ॥
 अह सो वाससहस्सं, ठिओ य पडिमाएँ जिणवरो धीरो । जल्युद्देसमि फुडं, भणइ जणो अज्ज वि पयागं ॥ २१ ॥
 जे ते सामियभत्ता, तेण समं दिक्खिया नरवरिन्दा । दुस्सहपरिस्सेहेहिं, छम्मासब्भन्तरे भग्गा ॥ २२ ॥
 असण-तिसाएँ किलन्ता, सच्छन्दवया कुधम्मधम्मेषु । जाया वक्कलधारी, तरुफल-मूलासिणो मूढा ॥ २३ ॥
 अह उप्पन्ने नाणे, जिणस्स मरिई तथो य निक्खन्तो । सामण्णा पडिभग्गे, पारिबज्जं पवत्तेइ ॥ २४ ॥
 अह सुप्पमस्स तइया, पुत्ता परुहायणाएँ देवीए । चन्द्रोदय सूर्योदय, पवइया जिणवरेण समं ॥ २५ ॥
 भग्गा सामण्णाओ, सीसा मारिज्जिनामधेयस्स । होऊणं कालगया, भमिया संसारकन्तारे ॥ २६ ॥

(११) अनेक भेदोंसे युक्त प्रथम सागार धर्म गृहस्थोंका होता है और निर्ग्रन्थ यतिवरोका अनगार धर्म होता है । (१२) इस तरह अनादि-अनन्त लोकमें अज्ञानसे मोहित जीव कुयोनियों में उत्पन्न होते हैं और संसाररूपी वनमें दुःख अनुभव करते हैं । (१३) धर्म जीवके लिए परभवमें बन्धुतुल्य, त्राणरूपी एवं शरणरूप होता है । धर्म सुखोंका मूल है । धर्म कामदुघा गाय है । (१४) समग्र त्रिभुवनमें जो उत्तम और महँगा द्रव्य है वह सब धर्मका फल है और उत्तम तपसे मनुष्य वह पाता है । (१५) जिनवरविहित मार्गमें धर्म करनेसे मनुष्य कर्मके कालुष्यसे उन्मुक्त होकर अवश्य ही शिव और शाश्वत स्थान मोक्षमें जाते हैं । (१६)

तब प्रणाम करके लक्ष्मणने साधुसे पूछा कि हाथी क्षुब्ध क्यों हुआ था और पुनः शान्त भी क्यों हो गया इसके बारेमें आप कहें । (१७) इसपर देवभूषण मुनिने कहा कि अतिबलसे हाथी संक्षुब्ध हुआ था और पूर्वभवको याद करके वह उपशान्त भी हो गया । (१८)

पूर्वकालमें इस नगरमें नाभि राजा रहते थे । उनकी भार्या मरुदेवी थी । उनसे समग्र जगतके स्वामी जितेश्वरका जन्म हुआ । (१९) सुर और असुर जिनके चरणोंमें नमस्कार करते हैं ऐसे उन ऋषभजिनने ज्येष्ठ पुत्र भरतको राज्य देकर चार हजार राजाओंके साथ दीक्षा ली । (२०) वे धीर जिनवर एक हजार वर्ष तक फायोत्सर्गमें जिस प्रदेशमें स्थित रहे, उसे लोग आज भी प्रयाग कहते हैं । (२१) जिन स्वामिभक्त राजाओंने उनके साथ दीक्षा ली थी वे छः महीनोंमें ही दुस्सह परीषहोंसे पराजित हो गये । (२२) भूख और प्याससे पीड़ित वे मूढ़ कुधर्मको धर्म मानकर स्वच्छन्द-व्रती, वक्कलधारी और वृक्षोंके फल-मूल खाने लगे । (२३) जितेश्वरको ज्ञान उत्पन्न होने पर मरीचि श्रामण्यका भंग करके निकल गया । उसने परिव्राजक धर्मका प्रवर्तन किया । (२४) उस समय सुप्रभक्री प्रह्लादना नामकी रानीसे उत्पन्न चन्द्रोदय और सूर्योदय नामके पुत्रोंने जिनवरके पास दीक्षा ली । (२५) श्रामण्यसे भग्न वे मरीचि नामके परिव्राजकके शिष्य हुये । मरने पर वे संसार-कान्तारमें भ्रमण करने लगे । (२६)

१. नरो जिणवरतवेणं— सु० । २. मिरिई—प्रत्य० ।

चन्द्रोदओ कयाई, नागपुरे हरिमइस्स भज्जाए । पल्हायणाएँ गढ्मे, जाओ य कुलंकरो राया ॥ २७ ॥
 सूरुदओ वि एत्तो, तंमि पुरे विस्सभूइविप्पेणं । जाओ सुइरयनामो, गढ्मंमि य अग्गिकुण्डाए ॥ २८ ॥
 राया कुलंकरो वि य, गच्छन्तो तावसाण सेवाए । अह पेच्छइ मुणिवंसंभं, धीरं अभिणन्दणं नामं ॥ २९ ॥
 भणिओ ऽवहिनाणीणं, तत्थ तुमं जासि तत्थ कट्ठगओ । नरवइ ! पियामहो ते, चिट्ठइ सप्पो समुप्पन्नो ॥ ३० ॥
 अह फालियम्मि कट्ठे-रविस्सइ तावसो तुमं दट्ठुं । गन्तूण पेच्छइ निवो, तं चेव तहाविहं सबं ॥ ३१ ॥
 तच्चत्थदरिसणेणं, मुणिवरवयणेण तत्थ पडिबुद्धो । राया इच्छइ काउं, पवज्जं जायसवेगो ॥ ३२ ॥
 चउपवन्तसुईए, तं विप्पो सुइरओ विमोहेइ । जंपइ कुलागओ चिय, नरवइ ! तुह पेइओ धम्मो ॥ ३३ ॥
 रज्जं भोत्तूण चिरं, निययपए ठाविउं सुयं जेट्ठं । पच्छा करेज्जसु हियं, सामिय ! वयणं ममं कुणसु ॥ ३४ ॥
 एयं चिय वित्तन्तं, सिरिदामा तस्स महिलिया सोउं । चिन्तेइ परपसत्ता, अहयं मुणिया नरिन्देणं ॥ ३५ ॥
 तेण इमो पवज्जं, राया गिण्हेज्ज वा न गिण्हेज्जा । को जाणइ परहिययं, तम्हा मारेमिह विसेणं ॥ ३६ ॥
 पावा पुरोहिणं, सह संजुत्ता कुलंकरं ताहे । मारेइ तस्सणं चिय, पसुवाएणं निययगेहे ॥ ३७ ॥
 सो कालगओ ताहे, ससओ होऊण पुण तओ मोरो । नागो य समुप्पन्नो, कुरो तह द्दुरो चेव ॥ ३८ ॥
 अह सुइरओ वि पुवं, मरिऊणं गयवरो समुप्पन्नो । अक्कमइ द्दुदुरं तं, सो हत्थी निययपाएणं ॥ ३९ ॥
 कालगओ उप्पन्नो, मच्छो कालेण सरवरे सुक्के । काएसु खज्जमाणो, मरिऊणं कुक्कुडो जाओ ॥ ४० ॥
 मज्जारो पुण हत्थी, तिण्णि भवा कुक्कुडो समुप्पन्नो । माहणमज्जारेणं, खद्धो तिण्णेव जम्माइं ॥ ४१ ॥
 बम्भणमज्जारो सो, मरिउं मच्छो तओ समुप्पन्नो । इयरो वि सुंसुमारो, जाओ तत्थेव सल्लिंमि ॥ ४२ ॥

चन्द्रोदय किसी समय नागपुरमें हरिमतिकी भार्या प्रह्लादानके गर्भसे कुलंकर राजा हुआ । (२७) उधर सूर्योदय भी उसी नगरमें विश्वभूति ब्राह्मणकी अभिकुण्डा नामकी पत्नीके गर्भसे श्रुतिरत नामसे पैदा हुआ । (२८) तापसोंकी सेवाके लिए जाते हुए कुलंकर राजाने अभिनन्दन नामके एक धीर मुनिवरको देखा । (२९) अर्वाधि ज्ञानीने कहा कि, हे राजन् जहाँ तुम जा रहे हो वहाँ काष्ठमें सर्परूपसे उत्पन्न तुम्हारा पितामह रहता है । (३०) लकड़ी चीरने पर तुमको देखकर वह वच जायगा । जा करके राजाने वह सब वैसा ही देखा । (३१) मुनिवरके वचनके अनुसार सत्य वस्तुके दर्शनसे प्रतिबोधित राजाको वैराग्य उत्पन्न होने पर प्रव्रज्या लेनेकी इच्छा हुई । (३२) ऋक् आदि चार विभागवाली श्रुतिसे ब्राह्मण श्रुतिरतने उसे विमोहित किया । कहा कि, हे राजन् कुल-परम्परासे आया हुआ तुम्हारा पैतृक धर्म है । (३३) चिरकाल तक राज्यका उपभोग करके और अपने पद पर ज्येष्ठ पुत्रको स्थापित करके बादमें तुम आत्मकल्याण करना । हे स्वामी ! मेरे वचनके अनुसार कार्य करो । (३४) उसकी पत्नी श्रीदामाने यह वृत्तांत सुनकर सोचा कि मैं परपुरुषमें प्रसक्त हूँ ऐसा राजाने जान लिया है । (३५) यह राजा दीक्षा ले या न ले । दूसरेका हृदय कौन जानता है । अतः विष द्वारा इसे मार डालूँ । (३६) तब पुरोहितके साथ मिलकर फौरन ही उस पापी स्त्रीने अपने घरमें कुलंकरको निर्दयतासे मार डाला । (३७)

मरने पर वह खरगोश होकर फिर मोर, नाग, कुरल पक्षी और मेंढकके रूपमें उत्पन्न हुआ । (३८) उधर श्रुतिरत भी मरकर पहले हाथीके रूपमें पैदा हुआ । उस हाथीने अपने पैरसे उस मेंढकको कुचल डाला । (३९) मरने पर वह यथासमय सूखे सरोवरमें मत्स्यके रूपमें पैदा हुआ । कौआँ द्वारा खाया गया वह मरकर कुकड़ा हुआ । (४०) बिल्ली, फिर हाथी, फिर तीन भय तक कुकड़ेके रूपमें वह उत्पन्न हुआ । बिल्ली, रूपमें उत्पन्न ब्राह्मणने तीनों ही जन्ममें उसे खाया । (४१) इसके बाद बिल्ली रूपसे उत्पन्न ब्राह्मण मरकर मत्स्य हुआ । दूसरा भी उसी जलाशयमें सुंसुमार नामक जलचर प्राणी हुआ । (४२) वे सुंसुमार और मत्स्य धीवरोंके द्वारा जालमें पकड़े गये । खींचकर बध किये गये वे

१. जाओ चिचय कुलगरो—मु० । २. वसहं वीरो अभि०—प्रत्य० । ३. कुरो—प्रत्य० ।

ते सुसुमारमच्छा, धीवरपुरिसेहि जालपडिबद्धा । आयङ्गिऊण वहिया, बहुहा संमया समुप्पन्ना ॥ ४३ ॥
 जो आसि सुसुमारो, सो य विणोओ त्ति नामओ विण्णो । इयरो तस्स कणिट्ठो, रमणो रायग्गिहे विण्णो ॥ ४४ ॥
 मुखत्तण्णेण रमणो, निविण्णो निग्गओ य वेयत्थी । लद्धूण गुरुं सिक्खइ, सङ्गोवङ्गे तहिं वेए ॥ ४५ ॥
 पुणरवि मगहपुरं सो, एक्कोयरदरिसणुस्सुओ रमणो । संपत्तो जक्खहरे, निसासु तत्थाल्थं कुणइ ॥ ४६ ॥
 तत्थ विणोयस्स पिया, असोयदत्तस्स दिन्नसंकेया । तं चेव जक्खनिलयं, साहा नामेण संपत्ता ॥ ४७ ॥
 रमणो तोएँ समाणं, गहिओ च्चिय दण्डवासियनरेहिं । ताव य ताण सयासं, गओ विणोओ असिं धेत्तुं ॥ ४८ ॥
 सव्भावमन्तणं सो, सोउं महिलाएँ कारणे रुट्ठो । घाएइ विणोओ तं, रमणं खग्गेण रयणिम्मि ॥ ४९ ॥
 गेहं गओ विणोओ, सययं महिलाएँ रइसुहं भोत्तुं । कालगओ संसारं, परिहिण्डइ दुक्खसंवाहं ॥ ५० ॥
 अह ते विणोय-रमणा, उप्पन्ना महिसया सकमेहिं । जाया य अच्छभल्ला, निच्चक्खू वणद्वे दद्धा ॥ ५१ ॥
 अह ते वाहुजुवाणा, जाया हरिणा तओ य सारङ्गा । संतासिण्ण रण्णे, मुक्का नियण्ण जूहेणं ॥ ५२ ॥
 अह नरवई सयंभू, विमलजिणं वन्दिउं पडिनियत्तो । पेच्छइ य हरिणए ते, निययधरं नेइ परितुट्ठो ॥ ५३ ॥
 पेच्छन्ति वराहारं, दिज्जन्तं मुणिवराण ते हरिणा । जाया पसन्नहियया, नरवइभवणे धिइं पत्ता ॥ ५४ ॥
 आउक्खए समाहिं, लद्धूण तओ सुरा समुप्पन्ना । चविया पुणो वि तिरिया, भमन्ति विविहासु जोणीसु ॥ ५५ ॥
 कह कह वि भाणुसत्तं, लद्धूण य सो विणोयसारङ्गो । बत्तीसकोडिसामी, जाओ धणओ त्ति कम्पिल्ले ॥ ५६ ॥
 रमणजोओ सारङ्गो, संसारं हिण्डिऊणऽणोएविहं । कम्पिल्ले धणयसुओ, उप्पन्नो भूसणो नामं ॥ ५७ ॥
 पुत्तसिणेहेण पुणो, सबं धणएण तत्थ वरभवणे । देहुवगरणं विविहं, कयं च तस्सेव सन्निहियं ॥ ५८ ॥

बहुधा एक साथ उत्पन्न हुए। (४३) जो सुसुमार था वह राजगृहमें विनोद नामका ब्राह्मण और दूसरा उसका छोटा भाई रमण ब्राह्मण हुआ। (४४) भूर्खताके कारण निविण्ण रमण वेदार्थी होकर निकल पड़ा। गुरुको पाकर उसने वहाँ सांगोपांग वेदोंका अभ्यास किया। (४५) सहोदर भाईके दर्शनके लिए उत्सुक वह रमण पुनः राजगृह गया और रातके समय यक्षके मन्दिरमें निवास किया। (४६) वहाँ विनोदकी प्रिया और अशोकदत्तको जिसने संकेत दे रखा था ऐसी शाखा नामकी स्त्री उसी यक्षमन्दिरमें आई। (४७) कोतवालके आदमियोंने उसके साथ रमणको पकड़ा। उस समय उनके पास विनोद तलवार लेकर गया। (४८) वस्तुतः उनके बीच संकेत हुआ है ऐसा सुनकर पत्नीके कारण रुष्ट विनोदने रातके समय उस रमणको तलवारसे मारडाला। (४९) विनोद घर लौट आया। अपनी स्त्रीके साथ रतिमुखका अनुभव करके मरने पर दुःखसे व्याप्त संसारमें भटकने लगा। (५०)

वे विनोद और रमण अपने कर्मों की वजहसे भैसे हुए। उसके पश्चात् अन्ये भालू होकर दावानलमें जल गये। (५१) उसके बाद दो व्याध-युवक हुए। तब हरिण हुए। उसके बाद सारंग (चितकवरे हरिण) हुए। अपने शूथके त्राससे वे वनमें अलग पड़े रहते। (५२) उधर राजा स्वयंभू विमल जिनेश्वरको वन्दन करके लौट रहा था। उसने उन हरिणोंको देखा और प्रसन्न होकर अपने घर पर लाया। (५३) मुनिवरोंको उत्तम आहारका दिया जाता दान उन हरिणोंने देखा। वे हृदयमें प्रसन्न हुए। इससे राजभवनमें उन्हें घोरज वैधी। (५४) आयुके क्षयके समय समाधि पाकर वे देव रूपसे उत्पन्न हुए। वहाँसे च्युत होनेपर तिर्यच हुए। इस तरह विविध योनियोंमें वे भ्रमण करने लगे। (५५) किसी तरह मनुष्य जन्म प्राप्त करके वह विनोद-सारंग काम्पिल्यपुरमें धनद नामका बत्तीस करोड़का स्वामी हुआ। (५६) रमणका जीव सारंग भी संसारमें अनेक प्रकारसे परिभ्रमण करके काम्पिल्यमें भूषण नामसे धनदके पुत्रके रूपमें उत्पन्न हुआ। (५७) पुत्रके स्नेहसे धनदने उस उत्तम भवनमें विविध प्रकारके सब देहोपकरण उसके लिए जमा किये। (५८)

१. समुया सु० इसी पाठका अनुसरण पद्यचरितमें है—पर्व ८५ श्लोक ६९। २. सयासे प्रत्य०। ३. मन्तरेणं सो सोउं सहाकारणेत्य प्र०। ४. रयणिम्मि प्रत्य०।

सेविज्जन्तो निययं, जुवईसु मणीहरासु भवणगओ । न य पेच्छइ उदयन्ते, ससि-सूरे अत्थमन्ते य ॥ ५९ ॥
 इह पेच्छहु संसारे, सेणिय ! नडचेट्टियं तु जीवाणं । धणओ य आसि भाया, जाओ च्चिय भूसणस्स पिया ॥ ६० ॥
 ताव य निसावसाणे, सोऊणं देवदुन्दुहिनिनारयं । देवार्गमं च दट्ठुं, पडिबुद्धो भूसणो सहसा ॥ ६१ ॥
 भद्दो सभावसीलो, धम्मरओ तिबभावसंजुत्तो । सिरिधरमुणिस्स पासे, वन्दणहेउं अह पयट्ठो ॥ ६२ ॥
 सो तत्थ पविसरन्तो सोगवणे तक्खणमि उरगेणं । दट्ठो च्चिय कालगओ, माहिन्दे सुरवरो जाओ ॥ ६३ ॥
 चविओ पुक्खरदीवे, माहविदेवीए कुच्छिसंभूओ । चन्दाइचपुरे सो, पयासजसनन्दणो जाओ ॥ ६४ ॥
 अमरिन्दरूवसरिसो, नामेण जगज्जुई जुइसमग्गो । संसारपरमभीरू, रज्जमि अणायरं कुणइ ॥ ६५ ॥
 तवसीलस्समिद्धानं, साहूणा सोहारदाणपुण्णेणं । मरिऊण य देवकुरुं, गओ य ईसाणकप्पं सो ॥ ६६ ॥
 सो तत्थ देवसोक्खं, भोत्तुं पलिओवमाइ बहुयाइ । चविओ जम्बुद्दीवे, अवरविदेहे महासमए ॥ ६७ ॥
 रयणपुरे च्चक्रहरो, अयलो महिलाए तस्स धरिणीए । गर्भमि समुप्पत्तो, लोगस्स समूसवो य विभू ॥ ६८ ॥
 वेरगसमावन्नं, चक्की नाऊण अत्तणो पुत्तं । परिणावेइ बला तं, तिण्णि कुमारीसहस्साइ ॥ ६९ ॥
 सो तेहि लालिओ वि य, मन्नइ धीरो विसोवमे भोगे । महइ च्चिय पवज्जं, नवरं एक्केण भावेणं ॥ ७० ॥
 केऊरहारकुण्डल-विभूसिओ वरवहूण मज्झत्थो । उवएसं देइ विभू, गुणायरं जिणवरुदिट्ठं ॥ ७१ ॥
 खणभङ्गुरेसु को वि हु, भोगेसु रई करेज्ज जाणन्तो । किम्पागफलसमेसु य, नियमा पच्छा अपत्थेसु ॥ ७२ ॥
 सा हवइ सलाहणिया, सत्तो एक्का नरस्स जियलोए । जा महइ तक्खणं च्चिय, मुत्तिसुहं चञ्चले जीए ॥ ७३ ॥
 सुणिऊण पणइणीओ, एयं दइएण भासियं धम्मं । उवसन्ताओ नियमे, गेणहन्ति जहाणुसत्तीए ॥ ७४ ॥

भवनमें रहकर अपनी सुन्दर युवतियोंसे सेवित यह चन्द्र एवं सूर्यके उदय-अस्त भी नहीं देखता था । (५६)

हे श्रेष्ठिक ! इस संसारमें जीवोंकी नट जैसी चेष्टा तो देखो । जो धनद भाई था वही भूषणका पिता हुआ । (६०) एक बार रातके अवसानके समय देवदुन्दुभिका निनाद सुनकर और देवोंके आगमनको देखकर भूषण अचानक प्रतियुद्ध हुआ । (६१) भद्र, सद्भावशील व धर्मरत वह तीव्र भावसे युक्त हो श्रीधर मुनिके वन्दनके निकला । (६२) अशोकवनमें चलते हुए उसको साँपने काट लिया । मरने पर वह माहेन्द्र देवलोकमें उत्तम देव हुआ । (६३) वहाँसे च्युत होने पर वह चन्द्रादित्यनगरमें माधवीदेवीकी कुत्तिसे उत्पन्न हो प्रकाशयशका पुत्र हुआ । (६४) अमरेन्द्रके समान रूपवाला और बुद्धिसे युक्त वह जगद्बुद्धि नामका कुमार संसारसे अत्यन्त भीरु होनेके कारण राज्यमें उदासीनभाव रखता था । (६५) तप एवं शीलसे समृद्ध मुनियोंको आहार-दान देनेसे तज्जन्य पुण्यके कारण मरकर वह देवकुरुमें उत्पन्न हुआ । वहाँसे वह ईशानकल्पमें गया । (६६) अनेक पत्योपम तक वहाँ देवसुख भोगकर च्युत होने पर जम्बूद्वीपके पश्चिम विदेहक्षेत्रमें आये हुए महासमयके रत्नपुरमें चक्रवर्ती अचलकी पत्नी हरिणीके गर्भसे वह उत्पन्न हुआ । लोकमें महान् उत्सव मनाया गया । (६७-६८) अपने पुत्रको वैराग्य-युक्त जानकर चक्रवर्तीने जवरदस्तीसे उसका तीन हजार युवतियोंके साथ विवाह कराया । (६९) उनके द्वारा लालित होने पर भी वह धीर भोगोंको विषतुल्य मानता था । एकप्र भावसे वह केवल प्रव्रज्याकी ही इच्छा रखता था ! (७०) केयूर, हार एवं कुण्डलोंसे विभूषित तथा उत्तम वधुओंके बीच रहा हुआ वह विभू, जिनवर द्वारा उपदिष्ट और गुणोंसे समृद्ध ऐसा उपदेश देता था कि क्षणभंगुर तथा किम्पाक फलके समान बादमें अवश्य ही अपश्य ऐसे भोगोंमें जानबूझकर कौन रति करेगा ? (७१-७२) जीवलोकमें मनुष्यकी वही एकमात्र शक्ति रूपाधनीय है जो चंचल जीवनमें तत्काल मुक्ति-सुख चाहती है । (७३) पति द्वारा कहे गये ऐसे धर्मको सुनकर स्त्रियाँ उपशान्त

१. *गमणं दट्ठुं सु० । २. पासं प्रत्य० । ३. तत्थ अवयरंती सु० । ४. माहवदे० प्रत्य० । ५. वीरो प्रत्य० ।

६. *इ गुरु, गुणा० सु० ।

अह सो नरवइपुत्तो, निययसरीरे विववगयसिणेहो । छट्टट्टमाइएसुं, पुणो वि भावेइ अप्पाणं ॥ ७५ ॥
 चउसट्टिसहस्साइं, वरिसाण अकम्पिओ तवं काउं । कालगओ उववन्नो, देवो बम्भुत्तरे कप्पे ॥ ७६ ॥
 जो सो पुण सो धणओ, भमिउं न्णाविहासु जोणीसु । जम्बूदक्खिणभरहे, पोयणनयरे धणसमिद्धे ॥ ७७ ॥
 सोअंगिसुहो नामेण बम्भणो तस्स बम्भणीगब्भे । कम्माणिलेरिओ सो उववण्णो मिउमई न्णमं ॥ ७८ ॥
 अविणय-जूयाभिरओ, बहुविहअवराहकारगो दुट्ठो । निद्धाडिओ धराओ, पियरेणुवल्लभभोएणं ॥ ७९ ॥
 दोकप्पडपरिहाणो, हिण्डन्तो मेइणी चिरं कालं । एकम्मि धरे सलिलं, मग्गइ तण्हाकिलन्तो सो ॥ ८० ॥
 तो बम्भणीए उदयं, दिन्नं चिय तस्स सीयलं सुराहिं । जाओ पसन्नहियओ, पुच्छइ तं मिउमई विण्णो ॥ ८१ ॥
 दट्ठूण मए सहसा, केण व कज्जेण रुयसि सावित्री ! । तीए वि य सो भणिओ, मज्झ वि वयणं निसामेहि ॥ ८२ ॥
 भइ ! तुमे अणुसरिसो, मज्झ सुओ निग्गओ नियधराओ । जइ कह वि भमन्तेणं, दिट्ठो तो मे परिकहेहि ॥ ८३ ॥
 भणिया य मिउमई णं, अम्मो ! मा रुयसु हवसु परितुट्ठा । चिरलवखगो भमेउं, तुज्झ सुओ आगओ सो हं ॥ ८४ ॥
 सोअंगिसुहस्स थिया, पियपुत्तसमागमे जणियतोसा । पण्हयपओहरा सा, कुणइ तओ संगमाणन्दं ॥ ८५ ॥
 सबकलगमकुसलो, धुत्ताण य मत्थयट्ठिओ धीरो । जाओवभोगसेवी, जूए अवराजिओ निययं ॥ ८६ ॥
 तस्स उ वसन्तअमरा, गणिया नामेण रूवसंपन्ना । बीया य हवइ रमणा, इट्ठा कन्ता मिउमइस्स ॥ ८७ ॥
 जणओ बन्धुहि समं, दारिद्रस्स उ विमोइओ तेणं । माया य कुण्डलाइसु, विभूसिया पाविया रिद्धी ॥ ८८ ॥
 एत्तो ससङ्गनयरे, रायहरं चोरियागओ सन्तो । अह नन्दिवट्ठणनिवं, जंपंतं मिउमई सुणइ ॥ ८९ ॥

हुई और उन्होंने यथाशक्ति नियम ग्रहण किये । (७४) वह राजपुत्र अपने शरीरमें भी आसक्ति न रखकर बेला, तेला आदि तपसे अपनी आत्माको भावित करता था ॥ (७५) चौसठ हजार वर्ष तक अकम्पित भावसे तप करके वह मर गया और ब्रह्मोत्तर कल्पमें देव रूपसे उत्पन्न हुआ । (७६)

जो धनद था वह भी कर्म वायुसे प्रेरित होकर नानाविध योनियोंमें भ्रमण करके जम्बूद्वीपके दक्षिण-भरतक्षेत्रमें आये हुए और धनसे समृद्ध पौतनपुरमें शोकाभिमुख नामक ब्राह्मणकी पत्नीके गर्भसे मृदुमतिके नामसे पैदा हुआ । (७७-७८) अविनीत, द्यूतमें रत और अनेकविध अपराध करनेवाला वह दुष्ट, लोगोंके उलझनेसे डरे हुए पिताके द्वारा घरमेंसे निकाल दिया गया (७९) दो कपड़े पहने हुए उसने चिर काल तक पृथ्वी पर घूम कर तृष्णासे पीड़ित हो एक घरमें पानी माँगा । (८०) तब ब्राह्मणीने उसे शीतल और सुगन्धित पानी दिया । वह मन में प्रसन्न हुआ । मृदुमति ब्राह्मणने उससे पूछा कि, हे सावित्री ! मुझे देखकर तुम क्यों रोने लगी ? उसने भी कहा कि मेरा भी कहना सुनो । (८१-८२) भद्र ! तुम्हारे जैसा ही मेरा पुत्र अपने घरसे चला गया है । यदि घूमते हुए, तुम कहीं पर उसे देखो तो मुझसे कहना । (८३) मृदुमतिले कहा कि माँ ! तुम मत रोओ । तुम आनन्दित हो । चिरकालके पश्चात् दिखाई पड़नेवाला वह मैं तुम्हारा पुत्र घूमता घूमता आ पहुँचा हूँ । (८४) शोकाभिमुख की पत्नी प्रिय पुत्रके आगमनसे आनन्दित हुई । जिसके स्तनोंमें से दूध वह रहा है ऐसी उसने तब मिलनका आनन्द मनाया । (८५) सब कलाओं और शास्त्रोंमें पारंगत, धूर्तके भी मस्तक पर स्थित अर्थात् धूर्त शिरोमणि, धीर और सभी प्रकारके उपभोगका सेवन करनेवाला वह जूएमें नियमतः अपराजित रहता था । (८६) उस मृदुमतिकी एक वसन्तामरा नामकी रूपसम्पन्न गणिका तथा दूसरी रमणा नामकी इष्ट पत्नी थी । (८७) उसने भाइयोंके साथ पिताको दारिद्र्यमें से मुक्त किया । कुण्डल आदिसे विभूषित माताने ऋद्धि प्राप्त की । (८८)

एक बार शशांकनगरमें राजमहलमें चोरी करनेके लिए गये हुए मृदुमतिले नन्दिवर्धन राजा को ऐसा कहते सुना कि, हे क्रोधी ! मुनियोंमें श्रेष्ठ ऐसे चन्द्रमुख के पास आज मैंने शिवसुखका फल देनेवाला, नियतबन्धु और अत्यन्त गुणशाली

१. सउणग्गि० सु० । २. इस पाठका अनुसरण पद्मचरित में है ८५. ११९ । ३. कम्माणिलेरिओ सो उप्पणो मि० सु० । ४. सउणग्गि० सु० । ५. राओव० सु० । ६. लाइ, वि० सु० । ७. रायगिहे चोरियंगकी प्रत्य० ।

चन्द्रमुहस्स सयासे, मुणिवरवसहस्स अज्ज परमगुणो । धम्मो सुओ किलोयरि !, सिवसुहफलओ निययवन्धू ॥ ९० ॥
 विसया विसं व देवी, परिणामदुहावहा महासत्तू । तम्हा लएमि दिक्खं, जइ न कुणसि सोगसंबन्धं ॥ ९१ ॥
 एवं च सिक्खयन्तं, देवी सिरिवद्धणं तओ सोउं । अह तक्खणम्मि बोही, संपत्तो मिउमई ताहे ॥ ९२ ॥
 संसारमउबिग्गो, मुणिस्स पासम्मि चन्दवयणस्स । गिण्हइ जिणवरविहियं, पवज्जं मिउमई एत्तो ॥ ९३ ॥
 तप्पइ तवं सुघोरं, जहागमं सील-संजमसमग्गो । मेरु व धोरगरुओ, भमइ मही फासुयाहारो ॥ ९४ ॥
 अवरो पवयसिहरे, नामेणं गुणनिही समणसीहो । चिट्ठइ चउरो मासा, वारिसिया विबुहपरिमहिओ ॥ ९५ ॥
 साहू समत्तनियमो, अन्नुहेसं गओ न्हयलेणं । तं चेव पवयवरं, संपत्तो मिउमई तइया ॥ ९६ ॥
 पविसइ भिक्खाहेउं, रम्मं आलोयनयरनामं सो । समणो समाहियमणो, वन्दिज्जन्तो जणवएणं ॥ ९७ ॥
 लंपइ जणो इमो सो, जो गिरिसिहरे सुरेहि परिमहिओ । साहू बहुगुणनिलओ, भयसोगविवज्जिओ धीरो ॥ ९८ ॥
 भुक्खावेइ जणो तं, सुसायआहार-पाणयादीहिं । सो तत्थ कुणइ मायं, इद्धोरसगारवनिमित्तं ॥ ९९ ॥
 जो सो पवयसिहरे, सो हु तुमं मुणिवरो भणइ लोगो । अणुमन्नइ तं वयणं, माइल्लो तिबरसगिद्धो ॥ १०० ॥
 एयं मायासल्लं, जेणं नालोइयं गुरुसयासे । तेण तुमे नागगई, बद्धं तिरियाउयं कम्मं ॥ १०१ ॥
 सो मिउमई कयाई, कालं काऊण तत्थ वरकप्पे । उववन्नो कयपुण्णो, जत्थ उभिरामो सुरो वसइ ॥ १०२ ॥
 बहुभवकम्मनिबद्धा, एयाण निरन्तरं पिई परमा । आसि चिय सुरलोए, महिद्धिजुत्ताण दोण्हं पि ॥ १०३ ॥
 सुरवहुयामज्झगया, दिवङ्गयतुडियकुण्डलाभरणा । रइसागरोवगाढा, गयं पि कालं न याणन्ति ॥ १०४ ॥
 सो मिउमई कयाई, चइउं मायावसेण इह भरहे । सल्लइवणे निगुज्जे, उप्पन्नो पवए हत्थो ॥ १०५ ॥

धर्म सुना है । (८६-९०) हे देवी ! विषय विषतुल्य और परिणाममें दुःखावह होते हैं । अतएव यदि तुम शोक न करो तो मैं दीक्षा लूँ । (९१) इस तरह देवीको शिक्षा देते हुए श्रीवर्धनको सुना । तब मृदुमतिको तत्क्षण ज्ञान प्राप्त हुआ । (९२) संसारके भयसे उद्विग्न मृदुमतिने चन्द्रमुख मुनिके पास जिनवर-विहित दीक्षा ली । (९३) शील एवं संयमसे युक्त वह आगमके अनुसार घोर तप करने लगा । मेरुके समान धीर-गम्भीर वह प्रासुक आहार करता हुआ पृथ्वी पर परिभ्रमण करने लगा । (९४)

देवोंद्वारा स्तुति किये गये दूसरे गुणनिधि नामके श्रमणसिंह पर्वतके ऊपर वर्षाकालके चार महीने ठहरे हुए थे । (९५) नियम समाप्त होने पर वह आकाशमार्गसे दूसरे प्रदेशमें गये । तब उसी पर्वत पर मृदुमति आया । (९६) लोगों द्वारा वन्दित और मनमें समाधियुक्त उस श्रमणने आलोकनगर नामके सुन्दर नगरमें भिक्षाके लिए प्रवेश किया । (९७) लोग कहने लगे कि पर्वतके शिखर पर देवों द्वारा स्तुत, अनेक गुणोंके धामरूप, भय एवं शोकसे रहित और धीर जो साधु थे वे यही हैं । (९८) लोग उसे स्वादिष्ट आहार-पान आदि खिलाने लगे । ऋद्धि एवं रसकी लालसाके कारण वह माया करने लगा । (९९) लोग कहते कि पर्वतके शिखर पर जो मुनिवर थे वे आप ही हैं । मायावी और रसमें अत्यन्त गृद्ध वह उस कथनका अनुमोदन करता । (१००) चूँकि गुरुके पास मायारूपी शल्यकी तुमने आलोचना नहीं की, अतः तुमने नागमति और तिर्यच आयुष्यका कर्म बाँधा । (१०१)

पुण्यशाली वह मृदुमति कभी भरकर उस उत्तम देवलोकमें उत्पन्न हुआ जहाँ अभिराम देव बसता था । (१०२) अनेक भवोंके कर्मसे बाँधी हुई इनकी निरन्तर और उत्कृष्ट प्रीति रही, देवलोकमें भी अत्यन्त ऋद्धिसम्पन्न दोनोंकी बैसी ही प्रीति थी । (१०३) देवकन्याओंके बीच रहे हुए, दिव्य बाजूबन्द, त्रुटित (हाथका एक आभूषण-विशेष), कुण्डलके आभरणोंसे युक्त और प्रेम-सागरमें लीन वे बीते हुए समयको नहीं जानते थे । (१०४) वह मृदुमति कभी च्युत होकर मायाके कारण इस भरतक्षेत्रमें आये हुए लता आदिसे निबिड़ सल्लकीवनमें पैदा हुआ । (१०५) बादल और काजलके समान कृष्ण

१. वीरो प्रत्य० । २. रई मू० । ३. महिद्धिपत्ताण प्रत्य० । ४. •वहिया० प्रत्य० ।

घणकसिणकज्जलनिभो, संखुभियसमुद्सरिसतिग्घोसो । सियदसणो पवणजवो, वेएण कुलुत्तमो सूरु ॥ १०६ ॥
 एरावणसमसरिसो सच्छन्दविहारिणो रिवुपणासो । अच्छन्तु ताव मणुया, खेयरवसभाण वि अगेज्जो ॥ १०७ ॥
 नाणाविहेसु कीलइ, सिहरनिगुञ्जेसु तरुसमिद्धेसु । अवयरइ माणससरं, लीलायन्तो कमलपुण्णं ॥ १०८ ॥
 कइलासपवयं पुण, वच्चइ मन्दाइणी विमलतोयं । करिणीसहस्ससहिओ, अणुभवइ जहिच्छियं सोक्खं ॥ १०९ ॥
 सो तत्थ गयवरिन्दो, करिवरपरिवारिओ विहरमाणो । सोहइ वणमज्जगओ, गरुडो इव पन्निखसङ्गेहिं ॥ ११० ॥
 लङ्काहिवेण दिट्ठो, सो हु इमो गयवरो मयसणाहो । गहिओ य विरइयं से, भुवणालंकारनामं तु ॥ ३११ ॥
 देवीसु समं सग्गे, रमिऊणं वरविमाणमज्जगओ । कीलइ करिणिसमग्गो, संपइ तिरिओ वि उप्पन्नो ॥ ११२ ॥
 कम्माण इमा सत्ती, जं जीवा सबजोणिउप्पन्ना । सेणिय ! अइदुहिया वि य, तत्थ उ अहियं धिइमुवेन्ति ॥ ११३ ॥
 चंइउं सो अहिरामो, सागेयानयरिसामिओ जाओ । राया भरहो त्ति इमो, फलेण सुविसुद्धम्मस्स ॥ ११४ ॥
 मोहमलपडलमुक्को, भोगाण अणायरं गओ एसो । इच्छइ काऊण महा-पवज्जं दुक्खमोक्खत्थे ॥ ११५ ॥
 जे ते तिणेण समयं, पवज्जं गिण्हऊण परिवडिया । चन्दोदय सूरुदय, लग्गा मारीइपासण्डे ॥ ११६ ॥
 एए ते परिभमिया, संसारं भायरो सुइरकालं । सगकम्मपभावेणं, भरहगइन्दा इमे जाया ॥ ११७ ॥
 चन्दो कुलंकरो जो, समाहिमरणेण जाओ सारङ्गो । सो हु इमो उप्पन्नो, भरहो राया महिद्धीओ ॥ ११८ ॥
 सूरुदओ य विप्पो, जो सो हु कुरङ्गओ तया आसि । कुच्छियकम्मवसेणं, संपइ एसो गओ जाओ ॥ ११९ ॥
 भन्तूण लोहखम्मं, एसो हु गओ वलेण संखुभिओ । भरहालोए सुमरिय, पुवभवं उवसमं पत्तो ॥ १२० ॥
 नाऊणं एवमेयं चवलतडिसमं सबसत्ताण जीयं, संजोगा विप्पओगा पुणरवि बहवो होन्ति संबन्धिवन्धा ।

वर्णवाला, संशुद्ध करनेवाले समुद्रके जैसी गर्जना करनेवाला, सफेह दाँतोंसे युक्त, पवनकी गतिके समान वेगवाला, उत्तम कुलवाला और शूरवीर तथा इन्द्रके हाथी ऐरावत सरीखा, स्वच्छन्द विचरण करनेवाला और शत्रुका नाश करनेवाला वह मनुष्यों की तो क्या बात, श्रेष्ठ विद्याधरों द्वारा भी अग्राह्य था । (१०६-१०७) वृत्तोंसे समृद्ध शिखरवर्ती नानाविध निकुंजोंमें वह क्रीड़ा करता था और लीला करता हुआ कमलोंसे पूर्ण मानस-सरोवरमें उतरता था । (१०८) कैलास पर्वतपर और निर्मल जलवाली मन्दाकिनीमें वह जाता था । एक हजार हथिनियोंके साथ वह इच्छानुसार सुखका अनुभव करता था । (१०९) उत्तम हाथियोंसे घिरकर वहाँ उनके बीच विहार करता हुआ वह गजराज पक्षीसंघसे युक्त गरुड़की भाँति शोभित होता था । (११०) रावणने मदसे युक्त उस हाथीको देखा । पकड़कर उसका नाम भुवनालंकर रखा । (१११) स्वर्गमें उत्तम विमानमें रहा हुआ वह देवियोंके साथ रमण करता था । अब तिर्यच रूपसे उत्पन्न होने पर भी हथिनियोंके साथ क्रीड़ा करता था । (११२) हे श्रेणिक ! कर्मोंकी ऐसी शक्ति है कि सब योनियोंमें उत्पन्न जीव अत्यन्त दुःखित होने पर भी वहीं अधिक धैर्य पाते हैं । (११३) वह अभिराम देवलोकसे च्युत होकर विशुद्ध धर्मके फलस्वरूप साकेतनगरीका स्वामी यह भरत राजा हुआ है । (११४) मोहरूपी मलपटलसे मुक्त और भोगोंमें अनादर रखनेवाला यह दुःखके नाशके लिए महादीक्षा लेना चाहता है । (११५)

जितेश्वरके पास प्रव्रज्या लेकर जो चन्द्रोदय और सूर्योदय पतित हो गये थे और मरीचिके पासखण्डमें शामिल हुए थे, वे भाई सुचिर काल तक संसारमें भ्रमण करके अपने कर्मके प्रभावसे ये भरत और हाथी हुए हैं । (११६-७) जो चन्द्र कुलंकर और जो सारंग मृग था वह समाधिमरणसे महद्विक राजा भरतके रूपमें उत्पन्न हुआ है । (११८) सूर्योदय ब्राह्मण तथा जो मृग उस समय था वह कुत्सित कर्मके कारण अब यह हाथी हुआ है । (११९) क्षुब्ध होकर लोहेके खंभेको तोड़नेवाला यह जो हाथी है वह भरतको देखकर पूर्वभवका स्मरणकर उपशान्त हुआ है । (१२०) सब प्राणियोंका जीवन चंचल बिजलीके समान क्षणभंगुर होता है और अनेक प्रकारके संयोग एवं वियोग तथा सम्बन्धियोंके बन्धन उसमें होते हैं, ऐसा तुम

१. चइओ मु० । २. मोहमलविप्पमुक्को मु० ।

संसारं दुक्खसारं परिभमिय चिरं माणुसरं लहेउं, तुम्भेत्थं धम्मकज्जं कुणह सुविमलं बुद्धिमन्तोऽपमत्ता ॥ १२१ ॥

॥ इह पउमचरिए तिहुयणालंकारपुव्वभवाणुकित्तणं नाम वासीइमं पव्वं समत्तं ॥

८३. भरह-केगईदिकखापव्वं

तं मुणिवरस्स वयणं, सुणिऊणं भरहमाइया सुहडा । बह्वे संवेगपरा, दिक्खाभिमुहा तओ जाया ॥ १ ॥
 एयन्तरंमि भरहो, समुट्ठिओ कुण्डलुज्जलकवोलो । आबद्धज्जलिमउलो, पणमइ साहुं विगयमोहो ॥ २ ॥
 संसारभउव्विग्गो, भरहो तं मुणिवरं भणइ एत्तो । बहुजोणिसहस्साइं, नाह ! भमन्तो य खिन्नो हं ॥ ३ ॥
 मरणतरङ्गुमाए, संसारनईए^१ वुज्जमाणस्स । दिक्खाकरेण साहव !, हत्थालम्बं पयच्छाहि ॥ ४ ॥
 अणुमन्निओ गुरूणं, भरहो मौत्तूण तत्थऽलंकारं । निस्सेससंझरहिओ, लुच्चइ धीरो निययकेसे ॥ ५ ॥
 वय-नियम-शील-संजम-गुणायरो दिक्खिओ भरहसामी । जाओ महामुणी सो, रायसहस्सेण अहिण्णं ॥ ६ ॥
 साहु त्ति साहु देवा, जंपन्ता संतयं कुसुमवासं । सुच्चन्ति नहयलत्था, संथुणमाणा भरहसाहुं ॥ ७ ॥
 अल्ले सावयधम्मं, संवेगपरा लएन्ति नरवसभा । एयन्तरंमि भरहं, पवइयं केगई सोउं ॥ ८ ॥
 मुच्छागया विउद्धा, पुत्तविओयम्मि दुक्खिया कलुणं । धेणु व वच्छरहिया, कुणइ पलावं पयलियंसू ॥ ९ ॥
 सबन्तेउरसहिया, रुयमाणी केगई महादेवी । महुरवयणेहि एत्तो, संथविया राम-केसीहिं ॥ १० ॥
 अह सा उत्तमनारी, पडिबुद्धा तिबजायसंवेगा । निन्दइ निययसरोरं, बीभच्छं असुइदुग्गन्धं ॥ ११ ॥
 नारीण सएहि तिहिं, पासे अज्जाएँ पुहइसचाए । पवइया ददभावा, सिद्धिपयं उत्तमं पत्ता ॥ १२ ॥

जानों, दुःखरूप संसारमें घुमकर और चिरकालके पश्चात् मानवभव पाकर बुद्धिमान् तुम अप्रमत्तभावसे यहाँ अत्यन्त विमल धर्मकार्य करो । (१२१)

॥ पउमचरित्तमें त्रिभुवनालंकारके पूर्वभवोंका कीर्तन नामक वयासीवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

८३. भरत और कैकेईकी दीक्षा

मुनिवरका वह उपदेश सुनकर संवेगपरायण भरत आदि बहुत-से सुभट दीक्षाकी ओर अभिमुख हुए । (१) कुण्डलों-के कारण उज्ज्वल कपोलवाला तथा मोहरहित भरत खड़ा हुआ और हाथ जोड़कर उसने साधुको प्रणाम किया । (२) संसारके भयसे उद्विग्न भरतने उस मुनिवरसे कहा कि, हे नाथ ! नानाविध हज़ारों योनियोंमें भ्रमण करता हुआ मैं खिन्न हो गया हूँ । (३) हे मुनिवर ! मरण रूपी तरंगों उग्र ऐसी संसार रूपी नदीमें डूबते हुए मुझे आप दीक्षा रूपी हाथसे सहारा दें । (४) समग्र प्रकारके संगसे रहित और गुरुजनों द्वारा अनुमत धीर भरतने अलंकार का त्याग करके अपने बालोंका लोच किया । (५) व्रत, नियम, शील, संयम एवं गुरुओंके निधिरूप भरतस्वामीने हज़ारसे अधिक राजाओंके साथ दीक्षा ली । वह महासुनि हुआ । (६) 'साधु, साधु' ऐसा बोलते हुए और भरतमुनिकी प्रशंसा करते हुए आकाशरथ देव सतत पुष्प वृष्टि करने लगे । (७) संवेगपरक दूसरे राजाओं ने श्रावकधर्म अंगीकार किया । उस समय भरतने दीक्षा ली है ऐसा सुनकर कैकेई मूर्च्छित हो गई । होशमें आने पर पुत्रके वियोगसे दुःखित वह बड़बड़े से रहित गायकी भौंति आँसू बहाती हुई करुण प्रलाप करने लगी । (८-९) सारे अन्तःपुरके साथ रोती हुई महादेवी कैकेईको राम और लक्ष्मणने मधुर वचनोंसे शान्त किया । (१०) तब वह उत्तम स्त्री प्रतिबुद्ध हुई । तीव्र संवेग पैदा होने पर वह बीभत्स, अशुचि और दुर्गन्धमय अपने शरीरकी निन्दा करने लगी । (११) तीन सौ स्त्रियोंके साथ उसने आर्या पृथ्वीसत्याके पास दीक्षा ली ।

१. ०न्ता समत्ता प्रत्य० । २. विगययणेहो प्रत्य० । ३. ०ए वुज्जमाणस्स प्रत्य० : ४. ०संगंधरहिओ प्रत्य० ।

एवं जणो तत्थ सुभावियप्पा, नाणावओवासनिओयचित्तो । जाओ महुच्छहपरो समत्थो, धम्मं च निच्चं विमलं करेइ ॥ १३ ॥
॥ इइ पउमचरिए भरह-केगईदिकखाभिहाणं तेयासीइमं पञ्चं समत्तं ॥

८४. भरहनिञ्वाणगमणपञ्च

सो गयवरो मुणीणं, क्याणि परिलम्भिओ पसन्नप्पा । सागारधम्मनिरओ^१, जाओ तवसंजमुज्जुत्तो ॥ १ ॥
छट्टमदसमदुवाल्सेहि मासद्धमासखमणेहिं । मुज्जइ य एकवेलं, पत्ताई सहावपडियाई ॥ २ ॥
संसारगमणओओ, सम्मतपरायणो मिउसहावो । विहरइ पूइज्जन्तो, ससंभमं नायरजणेणं ॥ ३ ॥
लहुडुगमण्ठादीया, भक्खा नाणाविहा रससमिद्धा । तस्स सुपसन्नहियओ, पारणसमए जणो देइ ॥ ४ ॥
तणुक्कम्मसरीरो सो, संवेगालाणणियमसंजमिओ । उग्गं तवोविहाणं, करेइ चत्तारि वरिसाई ॥ ५ ॥
संलेहणं च काउं, कालगओ सुरवरो समुप्पन्नो । वंभुत्तरे विमाणे, हारङ्गयकुण्डलाहरणो ॥ ६ ॥
सुरगणियामज्झगओ, उवगिज्जन्तो य नाडयसएसु । पुवसुहं संपत्तो, हत्थी सुक्याणुभावेणं ॥ ७ ॥
भरहो वि महासमणो, पञ्चमहबयधरो समिइजुत्तो । मेरु व धीरगरुओ सलिलनिही चेव गम्भीरो ॥ ८ ॥
समसत्तुमित्तभावो, समसुहदुक्खो पसंसनिन्दसमो । परिभमइ भंहिं भरहो, जुगंतरपलोयणो धीरो ॥ ९ ॥
भरहो वि तवबलेणं, निस्सेसं कम्मकयवरं डहिउं । केवलनाणसमणो, सिवमयलमणुत्तरं पत्तो ॥ १० ॥

इमा क्हा भरहमुणिस्स संगया, सुणन्तिं जे वियलियमच्छरा नरा ॥

रहन्ति ते धणवलरिद्धिसंपथं, विसुद्धधीविमलजसं सुहालयं ॥ ११ ॥

॥ इइ पउमचरिए भरहनिञ्वाणगमणं नाम चउरासीइमं पञ्चं समत्तं ॥

दृढभाववाली उसने उत्तम सिद्धिपद प्राप्त किया । (१२) इस प्रकार वहाँ सब लोग सुन्दर भावोंसे वासित अन्तःकरण वाले, तथा मनमें नाना प्रकारके व्रत, उपवास एवं नियमोंको धारण करके अत्यन्त उत्साहशील हुए । वे नित्य विमल धर्मका आचरण करने लगे । (१३)

॥ पञ्चचरितमें भरत एवं कैकेईकी दीक्षाका अभिधान नामक तिरासीवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

८४. भरतका निर्वाण

मुनिके उपदेशको धार प्रसन्नात्मा वह हाथी सागारधर्ममें निरत हो तप व संयममें उद्यत हुआ । (१) दो, तीन, चार, पाँच उपवास तथा आधे मास एवं पूरे मासके उपवासके पश्चात् अपने आप गिरे हुए पत्तोंका एक बार वह भोजन करता था । (२) संसारमें भ्रमणसे डरा हुआ, सम्यक्त्वपरायण, मृदु स्वभाववाला और नगरजनों द्वारा आदरपूर्वक पूजा जाता वह विचरण करता था । (३) प्रसन्न हृदयवाले लोग पारनेके समय उसे लड्डू, घी आदि रससे समृद्ध नानाविध भक्ष्य पदार्थ देते थे । (४) कर्मरूपी शरीरको क्षीण करनेवाले तथा निधम एवं संवेग रूपी खम्भेसे संयमित उसने चार वर्ष तक उग्र तप किया । (५) संलेखना करके मरने पर वह ब्रह्मोत्तर विमानमें हार, बाजूबन्द एवं कुण्डलोंसे अलंकृत देव रूपसे उत्पन्न हुआ । (६) हार्थीके जन्ममें उपाजित पुण्यके फलस्वरूप देवगणिकाओंके मध्यमें स्थित तथा सैकड़ों नाटकोंमें मन लगाकर उसने पहलेका सुख पाया । (७) मेरुके समान धीर और महान् तथा समुद्रके समान गम्भीर भरत महाश्रमण भी पाँच महाव्रतका धारी और समितियुक्त हुआ । (८) शत्रु एवं मित्रमें समभाव रखनेवाला, सुख एवं दुःखमें सम, प्रशंसा व निन्दामें भी तटस्थ तथा साडे तीन कदम आगे देखकर चलने वाला वह धीर भरत पृथ्वी पर परेभ्रमण करने लगा । (९) तपके बलसे समग्र कर्म-कलेवरको जलाकर केवलज्ञानसे युक्त भरतने अचल और अनुत्तर मोक्ष प्राप्त किया । (१०) भरत मुनिकी यह कथा मत्सरसे रहित जो मनुष्य इकट्ठे होकर सुनते हैं वे धन, बल, ऋद्धि, सम्पत्ति, विशुद्ध बुद्धि, विमल यश तथा सुखका आलय रूप मोक्ष प्राप्त करते हैं । (११)

॥ पञ्चचरितमें भरतका निर्वाणगमन नामका चौरासीवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

१. •निरतो, तव-संजमकरणउज्जुत्तो प्रत्य० । २. वंभुत्तरे विमाणे, प्रत्य० । ३. मही भरहो, चउरंगुलचारणो धीरो सु० । ४. सुणंतु प्रत्य० ।

८५. रज्जाहिसेयपव्वं

भरहेण समं धीरा, निक्खन्ता जे तर्हि विगयसज्जा । नामाणि ताण सेणिय !, भणामि उल्लावमेत्तेणं ॥ १ ॥
 सिद्धत्थो य नरिन्दो, तहेव रइवद्धणो य सञ्जत्थो । घणवाहरहो जम्बूणओ य सल्लो ससङ्को य ॥ २ ॥
 विरसो य नन्दणो वि य, नन्दो आणन्दिओ सुबुद्धी य । सूरुो य महाबुद्धो, तहेव सच्चासओ वीरो ॥ ३ ॥
 इन्द्राभो य सुयधरो, तहेव जणवल्लहो सुचन्दो य । पुहईधरो य सुमई, अयलो कोधो हरी चेव ॥ ४ ॥
 अह कण्डुरू सुमित्तो, संपुण्णिन्दू य धम्ममित्तो य । नवुसो सुन्दरसत्तो, पहायरो चेव पियधम्मो ॥ ५ ॥
 एए अन्ने य बहू, नरवसभा उज्झिऊण रज्जाइं । सहसाहियसंखाणा, जाया समणा समियपावा ॥ ६ ॥
 अणुपालियवयनियमा, नाणालद्धीसु सत्तिसंपत्ता । पण्डियमरणोवगया, जहाणुरूवं पयं पत्ता ॥ ७ ॥
 निक्खन्ते च्चिय भरहे, भरहोवमचेट्टिए गुणे सरिउं । सोगं समुवहन्तो, विराहियं लक्खणो भणइ ॥ ८ ॥
 कत्तो सो भरहमुणी, जो तरुणत्तंमि उज्झिउं रज्जं । सुकुमालकोमलज्जो, कह धम्मधुरं समुवहइ ॥ ९ ॥
 सोऊण वयणमेयं, विराहिओ भणइ सामि ! सो भरहो । केवलनाणसमग्गो, पत्तो सिवसासयं ठाणं ॥ १० ॥
 भरहं निवाणगयं, पउमाईया भडा निसुण्णिऊणं । अइदुक्खिया मुहुत्तं, तत्थ ठिया सोगसंतत्ता ॥ ११ ॥
 पउमे समुट्टिए ते, निययवराइं गया नरवरिन्दा । काऊण संपहारं, पुणरवि रामालयं पत्ता ॥ १२ ॥
 नमिऊण राहवं ते, भणन्ति निसुणेहि सामि ! वयणउहं । रज्जाभिसेयविभवं, अन्नेच्छसु पट्टवन्धं च ॥ १३ ॥
 रामो भणइ नरवई, मिलिया तुठ्ठे हि परमविभवेण । नारायणस्स संपइ, करेह रज्जाभिसेयं से ॥ १४ ॥
 भुज्जन्तो संत्तगुणं, इस्सरियं सयलमेइणीनाहो । जं नमइ इमो चलणे, संपइ तं किं न मे रज्जं ? ॥ १५ ॥

८५. लक्ष्मणका राज्याभिषेक

हे श्रेणिक ! भरतके साथ आसक्तिका परित्याग करके जो धीर निकल पड़े थे उनके नाम कहनेभरके लिए कहता हूँ । (१) सिद्धार्थ राजा तथा रतिवर्धन, सन्ध्यख घनवाहरथ, जाम्बुनद, शल्य, शशांक, विरस, नन्दन, नन्द, आनन्दित, सुबुद्धि, सूर्य, महाबुद्धि, तथा वीर सत्याशय, इन्द्राभ, श्रुतधर, जनवल्लभ, सुचन्द्र, पृथ्वीधर, सुमति, अचल, क्रोध, हरि, काण्डोरु, सुमित्र, सम्पूर्णन्दु, धर्ममित्र, नवुप, सुन्दरशक्ति, प्रभाकर, प्रियधर्म—इन तथा दूसरे बहुत-से सहस्तसे भी अधिक संख्यामें राजाओंने राज्यका परित्याग किया और पापका शमन करनेवाले श्रमण हुए । (२-६) व्रत-नियमका पालन करके, नाना लब्धियोंसे शक्तिसम्पन्न उन्होंने परिडतमरणसे युक्त हो यथातुरूप पद प्राप्त किया । (७)

जब भरतने अभिनिष्क्रमण किया तब भरत चक्रवर्तीके समान उसके आचरण और गुणोंको याद करके शोक धारण करनेवाले लक्ष्मणने विराधित से पूछा कि वे भरतमुनि कहाँ हैं जिन्होंने तरुणवस्थामें ही राज्यका त्याग कर दिया है । सुकुमार और कोमल अंगवाले वे धर्मधुराका उद्ग्रहण कैसे करते होंगे ? (८-९) यह कथन सुनकर विराधितने कहा कि, हे स्वामी ! केवलज्ञानसे युक्त उन्होंने शाश्वत मोक्षपद प्राप्त किया है । (१०) मत्तमें गये हुए भरतके बारेमें सुनकर अत्यन्त दुःखित राम आदि सुभट शोकसे सन्तप्त होकर मुहूर्तभर वहीं ठहरे । (११) रामके उठने पर वे राजा अपने-अपने घर पर गये और निश्चय करके पुनः रामके महलमें आये । (१२) रामको प्रणाम करके उन्होंने कहा कि, हे स्वामी ! हमारा कहना आप सुनें । राज्याभिषेकके वैभव और पट्टवन्धकी आप इच्छा करें । (१३) रामने राजाओंसे कहा कि तुम मिलकर अब परम वैभवके साथ नारायण लक्ष्मणका राज्याभिषेक करो । (१४) सत्त्वगुणसे युक्त ऐश्वर्यका उपभोग करनेवाला और सारी पृथ्वीका स्वामी यह (लक्ष्मण) मेरे चरणोंमें जो वन्दन करता है, वह क्या मेरा राज्य नहीं है ? (१५)

१. संघत्थो प्रत्य० । २. सहसा हियसंपणा प्रत्य० । ३. निसिमिऊणं प्रत्य० । ४. •मणियण प्रत्य० । ५. संत्तगुणं प्रत्य० ।

सुणिऊण वयणमेयं, सबे वि नराहिवा तर्हि गन्तुं । पायप्पडणोवगया, भणन्ति लच्छीहरं एत्तो ॥ १६ ॥
 अणुमन्नियो गुरुणं, पालेहि वसुन्धरं अपरिसेसं । रज्जाभिसेयविहवं, अत्तेच्छसु सामि ! कीरन्तं ॥ १७ ॥
 अणुमन्नियंमि सहसा, काहलं-तलिमा-मुइङ्गपउराई । पहयाइ बहुविहाई, तूराई मेहघोसाई ॥ १८ ॥
 वीणा-वंससणाहं, गीयं नड-नट्ट-छत्त-गोज्जेहिं । बन्दिजणेण सहरिसं, वयसहालोयणं च कयं ॥ १९ ॥
 कणयकलसेहि एत्तो, सबुवगरणेसु संपउत्तेसु । अह राम-लक्खणा ते, अहिसित्ता नरवरिन्देहिं ॥ २० ॥
 वरहार-कडय-कुण्डल-मउडालंकारभूसियसरीरा । चन्दणकयङ्गरागा, सुगन्धकुसुमेसु कयमाला ॥ २१ ॥
 काऊण महाणन्दं, हलहर-नारायणा देणुवइन्दा । अहिसिञ्चन्ति सुमणसा, एत्तो सीयं महादेविं ॥ २२ ॥
 अहिसित्ता य विसल्ला, देवी लच्छीहरस्स हियइट्ठा । ज्ञा सयलजीयलोए, गुणेहि दूरं समुबहइ ॥ २३ ॥
 अह ते सुहासणत्था, बन्दिजणुग्घुट्टजयजयारावा । दाऊण समादत्ता, रज्जाई खेयरिन्दाणं ॥ २४ ॥
 पउमो तिकूडसिहरे, विभोसणं ठवइ रक्खसाहियई । सुग्गीवस्स वि एत्तो, किकिन्धि देइ परिसेसं ॥ २५ ॥
 सिरिषवयसिहरत्थं च सिरिपुरं मारुइस्स उद्दिट्ठं । पडिसुरस्स हणुरुहं, दिन्नं नीलस्स रिक्खपुरं ॥ २६ ॥
 पायालंकारपुरं, चन्दोयरनन्दणस्स दिन्नं तं । देवोवगीयनयरे, रयणजडी ठाविओ राया ॥ २७ ॥
 भामण्डलो वि भुज्जइ, वेयट्ठे दन्निखणाएँ सेटीए । रहनेउरं ति नामं, नयरं सुरनयरसमविभवं ॥ २८ ॥
 सेसा वि य नरवसभा, अणुसरिसाणं तु देसविसयाणं । पउमेण कया सामो, धण-जणरिद्धीसमिद्धाणं ॥ २९ ॥
 एवं नरिन्दा पउमेण रज्जं, संपाविया उत्तमवंसजाया ।
 भुज्जन्ति देवा इव देवसोक्खं, आणाविसालं विमलप्पहावा ॥ ३० ॥

॥ इइ पउमचरिए रज्जाभिसेयं नाम पञ्चासीइमं पव्धं समत्तं ॥

यह वचन सुनकर सभी राजा वहाँ गये और पैरोंमें गिरकर लक्ष्मणसे कहा कि गुरजनोंने अनुमति दी है कि समग्र पृथ्वीका आप पालन करें। हे स्वामी! किये जानेवाले राज्याभिषेकके वैभवकी आप इच्छा करें। (१६-१७) अनुमति मिलने पर सहसा काहल, तलिमा, मृदंग आदि बादलके समान घोष करनेवाले नानाविध वाद्य बजने लगे। (१८) नट, नृत्य करनेवाले और गानेवाले वीणा और बंशीके साथ गाने लगे। स्तुतिपाठकों ने आनन्दमें आकर जयध्वान की और लक्ष्मणके दर्शन किये। (१९) इसके अनन्तर उन राजाओंने सभी उपकरणोंके साथ स्वर्णकलशोंसे राम एवं लक्ष्मणका अभिषेक किया (२०) उत्तम हार, कटक, कुण्डल, मुकुट एवं अलंकारोंसे भूषित शरीरवाले, चन्दनका अंगराग किये हुए, सुगन्धित पुष्पोंकी माला धारण किये हुए दानवेन्द्र महान् राम और लक्ष्मणने तब बड़ा भारी आनन्द मनाकर प्रसन्न मनसे महादेवी सीताका अभिषेक किया। (२१-२२) जो गुणोंसे सारे जीवलोकको अत्यन्त आकर्षित करती है ऐसी लक्ष्मणकी प्रिया विशाल्यादेवी भी अभिषिक्त हुई। (२३) स्तुतिपाठकों द्वारा 'जय-जय' का उद्घोष जब किया जा रहा था तब वे सुखासन पर बैठकर खेचरेन्द्रोंको राज्य देने लगे। (२४) रामने त्रिकूटशिखरके ऊपर विभीषणको राजसाधिपति रूपसे स्थापित किया। तब सुग्रीवको बाकी बची हुई किष्किन्धि दी। (२५) श्री पर्वतके शिखर पर स्थित श्रीपुर हनुमानको दिया। प्रतिस्वर्णको हनुरुहनगर और नीलको ऋक्षपुर दिया। (२६) पातालालंकारपुर चन्द्रोदरनन्दनको दिया। देवोपगीतनगरमें रत्नजटी राजाको स्थापित किया। (२७) भामण्डल भी वैताड्यकी दक्षिण श्रेणीमें आये हुए देवनगर के समान वैभववाले रथनूपुर नामक नगर का उपभोग करने लगा। (२८) रामने दूसरे भी राजाओंको धन, जन एवं ऋद्धिसे सम्पन्न यथायोग्य देशोंका स्वामी बनाया। (२९) इस प्रकार रामके द्वारा आज्ञा माननेवाला विशाल राज्य प्राप्त करके उत्तम वंशमें उत्पन्न और विमल प्रभाववाले राजा देवोंकी भौति देव-सुखका उपभोग करने लगे। (३०)

॥ पद्यचरितमें राज्याभिषेक नामका पचासीवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

१. ल-तलिमा० प्रत्य० । २. ंणा मणुइन्दा सु० । ३. उवइट्ठं सु० ।

५६

८६. मधुसुंदरवहपर्व

अह राहवेण भणिओ, सत्तुग्घो जं तुंमं हिययइदं । इह मेइणीएँ नयरं, जं मग्गसि तं पणापेमि ॥ १ ॥
 एयं साएयपुरिं, गेण्हसु अहवा वि पोयणं नयरं । तह पोण्डवद्वणं पि य, अन्नं च जहिच्छियं देसं ॥ २ ॥
 भणइ तओ सत्तुग्घो, महरं मे देहि देव हियइदं । पडिभणइ राहवो तं, किं न सुओ तत्थ महराया । ॥ ३ ॥
 सो रावणस्स वच्छय ।, जामाऊ सुरवरिन्दसमविभवो । चमरेण जस्स दिन्नं, सूळं पलयक्कसमतेयं ॥ ४ ॥
 मारेऊण सहस्सं, पुणरवि सूळं करं समल्लियइ । जस्स जयत्थं च महं, न एइ रत्तिदियं निदा ॥ ५ ॥
 जाएण तमो तइआ, पणासिओ जेण निययतेएणं । उज्जोइयं च भवणं, किरणसहस्सेण रविणं व ॥ ६ ॥
 जो खेयरेसु वि णवी, साहिज्जइ तिक्कवलसमिद्धेसु । सो कह सत्तुग्घ । तुमे, जिप्पइ दिवत्थकयपाणी ॥ ७ ॥
 पउमं भणइ कुमारो, किं वा बहुएहि भासियवेहिं । महरं देहि महायस !, तमहं जिणिऊण गेण्हामि ॥ ८ ॥
 जइ तं महुरारायं, न जिणामि खणन्तरेण संगामे । तो देहरहस्स नामं, पियरस्स फुडं न गेण्हामि ॥ ९ ॥
 एवं पभासमाणं, सत्तुग्घं राहवो करे घेतुं । जंपइ कुमार ! एकं, संपइ मे दक्खिणं देहि ॥ १० ॥
 भणइ तओ सत्तुग्घो, महुणा सह रणमुहं पमोत्तुणं । अन्नं जं भणसि प्हू !, करेमि तं पायवडिओ हं ॥ ११ ॥
 निज्झाइऊण पउमो, जंपइ छिद्देण सो हु तो राया । सूळरहिओ पमाई, घेतवो पत्थणा एसा ॥ १२ ॥
 जं आणवेसि एवं, भणिऊण जिणालयं समलीणो । सत्तुग्घकुमारवरो, संथुणइ जिणं सुकयपूर्यं ॥ १३ ॥
 अह सो मज्जियजिमिओ, आपुच्छइ मायरं कयणामो । दट्टूण सुयं देवी, अग्घायइ उत्तिमङ्गमि ॥ १४ ॥

८६. मधुसुन्दर का वध

रामने शत्रुघ्नसे कहा कि इस पृथ्वी पर तुम्हें जो प्रिय नगर हो वह माँगो । मैं वह दूँगा । (१) इस साकेतपुरीको ग्रहण करो अथवा पोतननगर, पुण्ड्रवर्धन या अन्य कोई अभीष्ट देश । (२) तब शत्रुघ्नने कहा कि, हे देव ! प्रिय ऐसी मथुरा-नगरी मुझे दो । इस पर रामने कहा कि क्या तुमने नहीं सुना कि वहाँ मधु राजा है । (३) हे वत्स ! देवोंके इन्द्रके समान वैभववाला वह रावणका जामाता है । जिसे चमरेन्द्रने प्रलयकालीन सूर्यके समान तेजवाला एक शूल दिया है, हजारको मारकर पुनः वह शूल वापस हाथमें आ जाता है, जिसके जयके लिए मुझे रात-दिन नींद नहीं आती, पैदा होते ही जिसने उस समय अपने तेजसे अन्धकार नष्ट कर दिया था और सूर्य की भाँति हजार किरणोंसे भवन उद्द्योतित किया था, अत्यन्त बल-समृद्ध खेचरों द्वारा भी जो बस में नहीं आया—ऐसे दिव्यास्त्र हाथमें धारण किये उसके, हे शत्रुघ्न ! तुम कैसे जीत सकोगे ? (४-७) इसपर शत्रुघ्नकुमारने रामसे कहा कि, हे महायश ! बहुत कहनेसे क्या फायदा ? आप मुझे मथुरा दें । उसे मैं जीतकर प्राप्त करूँगा । (८) यदि उस मथुरा के राजाको युद्धमें जगभर में जोत न लूँ तो पिता दशरथका नाम सर्वथा नहीं लूँगा । (९) इस प्रकार कहते हुए शत्रुघ्नको रामने हाथमें लेकर कहा कि, कुमार ! इस समय मुझे तुम एक दक्षिणा दो । (१०) तब शत्रुघ्नने कहा कि, हे प्रभो ! मधुके साथ युद्ध को छोड़कर और जो कुछ आप कहेंगे वह आपके चरणोंमें पड़ा हुआ मैं करूँगा । (११) रामने सोचकर कहा कि शूलरहित और प्रमादी उस राजाको किसी छिद्रसे पकड़ना—यही मेरी प्रार्थना है । (१२) 'जैसी आज्ञा'—ऐसा कहकर शत्रुघ्नकुमार जिनमन्दिरमें गया और अच्छी तरहसे पूजा करके जिनेश्वर भगवानकी स्तुति की । (१३)

१. तुमे प्रत्य० । २. भुवणं प्रत्य० । ३. दसर० प्रत्य० । ४. सो तुमं राया प्रत्य० ।

देइ तओ आसीसं, जणणी जय पुत्त ! रणमुहे सत्तुं । रज्जं च महाभोगं, भुज्जसु हियइच्छियं सुइरं ॥ १५ ॥
 संगामे लद्धजसं, पुत्तय ! एत्थागयं तुमं दट्ठुं । कणयकमलेहि पूयं, जिणाण अहयं करीहामि ॥ १६ ॥
 तेलोकमङ्गला वि हु, सुरअसुरनमंसिया भयविमुक्का । ते देन्तु मङ्गलं तुह, सत्तुग्घ ! जिणा जियभवोहा ॥ १७ ॥
 संसारदीहकरणो, महारिवू जेहि निज्जिओ मोहो । ते तिहुयणेकभाणू, अरहन्ता मङ्गलं देन्तु ॥ १८ ॥
 अट्टविहेण विमुक्का, पुत्तय ! कम्मेण तिहुयणमौम्मि । चिट्ठन्ति सिद्धकज्जा, ते सिद्धा मङ्गलं देन्तु ॥ १९ ॥
 मन्दर-रवि-ससि-उयही-वसुहा-ऽणिल-धरणि-कमल-गयणसमा । निययं आयरधरा, आयरिया मङ्गलं देन्तु ॥ २० ॥
 ससमय-परसमयविऊ, अणेगसत्थधधारणसमत्था । ते तुज्ज उवज्जाया, पुत्त ! सया मङ्गलं देन्तु ॥ २१ ॥
 बारसविहेण जुत्ता, तवेण साहेन्ति जे उ निवाणं । ते साहु तुज्ज वच्छय !, साहन्तु दुसाहयं कज्जं ॥ २२ ॥
 एवं दिन्नासीसो, जणणि नमिऊण गयवराहूढो । निप्पिडइ पुरवरीए, सत्तुग्घो सयलवलसहिओ ॥ २३ ॥
 जंगडिज्जन्तुरज्जम-संघट्टेन्तगयघडाडोवं । पाइक्क-रहसणाहं, महुराहुत्तं बलं चलियं ॥ २४ ॥
 लच्छीहरेण धणुवं, वज्जावत्तं सरा य अग्गिमुहा । सिग्घं समप्पियाइं, अन्नाइ वि तस्स सत्थाइं ॥ २५ ॥
 रामो कयन्तवयणं, तस्स उ सेणावइं समप्पेउं । लच्छीहरेण समयं, संसइयमणो नियत्तेइ ॥ २६ ॥
 सत्तुग्घो वि महप्पा, कमेण संपत्थिओ बलसमग्गो । महुरापुरीए दूरे, नइम्मि आवासिओ सिग्घं ॥ २७ ॥
 ववगयपरिस्समा ते, मन्तं काऊण मन्तिणो सवे । केइगइसुयं पमाइं, भणन्ति निसुणेहि वयणऽम्हं ॥ २८ ॥
 जेण पुरा अइविरिओ, गन्धारो निज्जिओ रणमुहंमि । सो कह महु महप्पा, जिप्पिहिइ तुमे अबुद्धीणं ? ॥ २९ ॥
 तो भणइ कयन्तमुहो, महुराया जइ वि सुलकयपाणी । तह वि य सत्तुग्घेणं, जिप्पिहिइ रणे न संदेहो ॥ ३० ॥

इसके पश्चात् स्नान-भोजन करके उसने माताको प्रणाम करके अनुमति माँगी । पुत्रको देखकर देवीने सिरको सूँघा ।
 (१४) तब माताने आशीर्वाद दिया कि पुत्र ! युद्धमें शत्रुको जीतो और राज्य तथा मनचाहे विशाल भोगोंका सुचिर काल तक
 उपभोग करो । (१५) पुत्र ! संग्राममें यश प्राप्त करके यहाँ आए हुए तुमको देख मैं खर्ण कमलोंसे जिनेश्वरोंकी पूजा करूँगी ।
 (१६) हे शत्रुघ्न ! तीनों लोकमें मंगलरूप, सुर एवं असुरों द्वारा वन्दित, भयसे मुक्त तथा भवसमूहको जीतनेवाले जिन
 तुम्हें मंगल प्रदान करें । (१७) संसार को दीर्घ बनानेवाले महाशत्रु मोहको जिन्होंने जीत लिया है ऐसे त्रिभुवनमें एकमात्र
 सूर्य सरीखे अरिहन्त तुम्हें मंगल प्रदान करें । (१८) हे पुत्र ! अठों प्रकारके कर्मसे विमुक्त होकर जो त्रिभुवनके अभ्रभागमें
 रहते हैं ऐसे कार्य सिद्ध करनेवाले सिद्ध तुम्हारा कल्याण करें । (१९) मन्दराचल, सूर्य, चन्द्रमा, समुद्र, वसुधा, पवन, पृथ्वी,
 कमल और गगनके समान तथा अपने आचारको धारण करनेवाले आचार्य तुम्हें मंगल प्रदान करें । (२०) हे पुत्र ! स्वसिद्धान्त
 एवं पर सिद्धान्तके ज्ञाता, अनेक शास्त्रोंके अर्थको धारण करनेमें समर्थ ऐसे उपाध्याय तेरा सदा कल्याण करें । (२१) हे वत्स !
 बारह प्रकारके तपसे युक्त होकर जो निर्वाणकी साधना करते हैं वे साधु तुम्हारा दुस्साध्य कार्य सिद्ध करें । (२२) इस प्रकार
 आशीर्वाद दिया गया शत्रुघ्न माताको प्रणाम करके हृथी पर सवार हुआ और सारी सेनाके साथ नगरीमें से निकला । (२३)

एकदम सटे हुए घोड़ोंके समूह और उठ खड़े हुए हाथियोंके घटाटोपसे सम्पन्न तथा प्यादे एवं रथोंसे युक्त सेना
 मथुराकी ओर चल पड़ी । (२४) लक्ष्मणने वज्रावर्त धनुष, अग्निमुख बाण तथा दूसरे भी शस्त्र उसे शीघ्र ही दिये । (२५)
 कृतान्तवदन सेनापति उसे देकर मनमें शंकाशील राम लक्ष्मणके साथ लौट आए । (२६) महात्मा शत्रुघ्न भी सेनाके साथ
 प्रयाण करता हुआ आगे बढ़ा । मथुरापुरीसे दूर नदीमें उन्होंने शीघ्र ही डेरा डाला । (२७) श्रम दूर होने पर उन सब
 मंत्रियोंने परामर्श करके कैकेईके प्रमादी पुत्रसे कहा कि हमारा कहना सुने । (२८) जिसने पूर्व कालमें अत्यन्त बलवान्
 गन्धारको युद्धमें जीत लिया था उस महात्मा मधुको अनजान तुम कैसे जीतोगे ? (२९) तब कृतान्तवदने कहा कि यद्यपि
 मधुराजाने हाथमें शूल धारण कर रखा है, तथापि इसमें सन्देह नहीं कि शत्रुघ्न द्वारा वह जीता जायगा । (३०) बड़ी-बड़ी

१. करिस्सामि प्रत्य० । २. गग्गिणं । चि० प्रत्य० । ३. तुहं प्रत्य० । ४. गडिगऽणंतं प्रत्य० । ५. केगइ० प्रत्य० ।

हृत्थी करेण भञ्जइ, तुङ्गं पि य पायवं चियडसाहं । सीहो किं न वियारइ, पयलियगण्डत्थलं हरिंथि ॥ ३१ ॥
 अह मन्तिजणाएसेण पत्थिया चारिया गया महुरं । वत्तं लद्धूण तओ, सामिसयासं पुणो पत्ता ॥ ३२ ॥
 निसुणेहि देव वयणं, अत्थि हु महुरापुरीएँ पुब्बेणं । वरपायवसुसमिद्धं, कुबेरनामं वरुज्जाणं ॥ ३३ ॥
 सहिओ य जयन्तीए, देवीए सयलपरियणसमग्गो । कोलइ तत्थुज्जाणे, इन्दो इव नन्दणे मुइओ ॥ ३४ ॥
 तस्स पुण छट्ठदिवसो, बट्टइ वरकाणणे षड्दस्स । मयणाउरस्स एवं परिवज्जियसेसकम्मस्स ॥ ३५ ॥
 सयलं च साहणं पुरवराओ नीसरिय तस्स पासत्थं । जायं सामन्तजुयं, सूलं पुण नयरिमज्झमि ॥ ३६ ॥
 जइ एरिसम्मि सामिय !; पत्थावे आणिओ पुरिं महुरं । नय गेण्हसि रयणीए, कह महुरायं पुणो जिणसि? ॥ ३७ ॥
 चारियवयणेण तओ, सत्तुग्घो साहणेण महएणं । काऊण दारभङ्गं, पविसइ महुरापुरिं रत्तिं ॥ ३८ ॥
 सत्तुग्घो जयइ जए, दसरहपुत्तो^१ जयमि विजियारी । वन्दिजणुग्घुट्टरवो, किन्थरिओ पुरवरोमज्जे ॥ ३९ ॥
 तं सोऊण जयरवं, नयरजणो भयपवेविरसरोरो । किं किं ति उल्लवन्तो, अइसुट्टु समाउलो जाओ ॥ ४० ॥
 महुरापुरिं पविट्ठं, सत्तुग्घं जाणिऊण महुराया । उज्जाणाउ सरोसो, विणिग्गओ जह दसग्गीवो ॥ ४१ ॥
 सूलरहिओ मह चिय, अल्लहन्तो पुरवरोपवेसं सो । सत्तुग्घकुमारणं, निक्खमिउं वेडिओ सहसा ॥ ४२ ॥
 अइरहसपसरियाणं, उभयबलणं रणं समावडियं । गय-तुरय-जोह-रहवर-अन्नोत्रालग्गसंघट्टं ॥ ४३ ॥
 जुज्झइ गओ गएणं, समयं रहिओ वि रहवरत्थेणं । तुरयविलग्गो वि भडो, आसारूडे^३ विवाएइ ॥ ४४ ॥
 सर-झसर-मोगरेहिं, अन्नोत्रावडियसत्थनिवहेहिं । उट्टन्ति तक्खणं चिय, फुलिङ्गजालासहस्साइं ॥ ४५ ॥
 एत्तो कयन्तवयणो, आदत्तो रिउवलं खयं नेउं । महुरायस्स सुएणं, रुद्धो लवणेण पविसन्तो ॥ ४६ ॥

शाखाओंवाले ऊँचे पेड़को हाथी सूँढ़से तोड़ता है तो क्या चूते हुए गण्डस्थलवाले हाथीको सिंह नहीं फाड़ डालता ? (३१)

इसके पश्चात् मन्त्रियोंके आदेशसे मथुराको भेजे गये गुप्तचर संदेश लेकर अपने स्वामीके पास वापस आये । (३२) उन्होंने कहा कि मथुरापुरीके पूर्वमें उत्तम वृक्षोंसे समृद्ध कुबेर नामका एक सुन्दर उद्यान है । (३३) जयन्ती देवीके साथ समग्र परिजनसे युक्त मधुराजा आनन्दित हो, नन्दनवनमें इन्द्र को भाँति, उस उद्यानमें क्रीड़ा करता है । (३४) उत्तम उद्यानमें प्रविष्ट, मदनसे पांडित और शेष कार्योंका त्याग किये हुए उसका छठा दिन है । (३५) सामन्तोंके साथ सारी सेना नगरमेंसे निकलकर उसके पास गई है, किन्तु शूल नगरीमें है । (३६) हे स्वामी ! यदि ऐसे अवसर पर आये हुए आप मथुरापुरीको रातके समय ले नहीं लेंगे, तो फिर मथुराको कैसे जीतोगे ? (३७)

तब गुप्तचरोंके कथनके अनुसार बड़े भारी सैन्यके द्वारा रातके समय दरवाजा तोड़कर शत्रुघने मथुरापुरीमें प्रवेश किया । (३८) शत्रुओंको जीतनेवाले दशरथके पुत्र शत्रुघ्नका संसारमें विजय हो—ऐसी स्तुतिपाठकों द्वारा उद्घोषित जय ध्वनि नगरमें फैल गई । (३९) उस जयघोषको सुनकर भय से कापते हुए शरीरवाले नगरजन 'क्या है, क्या है ?' ऐसा कहते हुए अत्यन्त व्याकुल हो गये । (४०) मथुरापुरीमें शत्रुघने प्रवेश किया हैं ऐसा जानकर मधु राजा रोषके साथ उद्यानमेंसे, रावणकी भाँति, बाहर निकला । (४१) शूलरहित होनेसे नगरीमें प्रवेश नहीं पानेवाले उस मधुको शत्रुघ्न कुमारने निकलकर सहसा घेर लिया । (४२) अतिवेगसे फैले हुए दोनों सैन्योंके बीच हाथी, घोड़े, प्यादे और रथ जिसमें आपसमें भिड़ गये हैं ऐसा युद्ध होने लगा । (४३) हाथीके साथ हाथी जूझने लगे । रथ और अस्त्रसे रहित होनेपर भी घोड़ेपर सवार हो सुभट घुड़सवारोंको मारने लगा । (४४) एक दूसरे पर गिरनेवाले बाण, भस्तर, मुद्गर जैसे शस्त्र समूहोंसे तत्काल ही चिन्नगारियोंसे व्याप्त हजारों ज्वालाएँ उठीं । (४५) उधर कृतान्तवदनने शत्रुसैन्यका न्य करना शुरू किया । प्रवेश करनेवाले उसको मधुराजाके पुत्र लवणने रोका । (४६) लवण और कृतान्तके बीच युद्धभूमिमें तलवार, कन्क, चक्र और तोमरके

१. पविट्टस्स प्रत्य० । २. तो रणम्मि चि० प्रत्य० । ३. विवाडेइ—प्रत्य० ।

लवणस्स कयन्तस्स य, दोण्ह वि जुज्झं रणे समावडियं । असि-कणय-चक्र-तोमर-विच्छड्ढिज्जन्तघाओहं ॥ ४७ ॥
 काऊण अन्नमन्नं, विरहं रणदपिपया गयारूढा । पुणरवि य समन्भिडिया, जुज्झन्ति समच्छरुच्छाहा ॥ ४८ ॥
 आयण्णपूरिण्हिं, सरिहं लवणेण विउलवच्छयले । पहओ कयन्तवयणो, दढं पि भेत्तूण सत्ताहं ॥ ४९ ॥
 काऊण चिरं जुज्झं, कयन्तवयणेण तत्थ सतीए । पहओ लवणकुमारो, पडिओ देवो व महिवट्टे ॥ ५० ॥
 दट्टूण सुयं पडियं, मूह महासोगकोहपज्जलिओ । सहसा समुट्ठिओ सो, अरिगहणे हुयवहो चैव ॥ ५१ ॥
 दट्टूण य एज्जन्तं, महुरापुरिसामियं तु सत्तुग्घो । आवडइ तस्स समरे, रणरसतण्हालुओ सिग्घं ॥ ५२ ॥
 बाण्ण तत्थ महुणा, केऊ सत्तुग्घसन्तिओ छिन्नो । तेण वि य तस्स तुरया, रहेण समयं चिय विलुक्ता ॥ ५३ ॥
 तत्तो मूह नरिन्दो, आरूढो गयवरं गिरिसरिच्छं । छाएऊण पवत्तो, सत्तुग्घं सरसहस्सेहिं ॥ ५४ ॥
 सत्तुग्घेण वि सहसा, तं सरनिवहं निवारिउं देहे । भिन्नो सो महुराया, गाढं चिय निययबाणेहिं ॥ ५५ ॥
 आयुम्मियनयणजुओ, मणेण चिन्तेइ सूलरहिओ हं । पुण्णावसाणसमए, जाओ मरणस्स आसन्ने ॥ ५६ ॥
 सुयसोगसल्लियङ्को, तं चिय दट्टूण दुज्जयं सत्तुं । मरणं च समासन्नं, मुणिवरवयणं सरइ ताहे ॥ ५७ ॥
 पडिबुद्धो भणइ तओ, असासए इह समत्थसंसारे । इन्दियवसाणुगेणं, धम्मो न कओ विमूढेणं ॥ ५८ ॥
 मरणं नाऊण धुवं, कुसुमसमं जोवणं चला रिद्धी । अवसेण मए तइया, न कओ धम्मो पमाएणं ॥ ५९ ॥
 पज्जलियमि य भवणे, कूवतलयस्स खणणमारम्भो । अहिणा दट्टस्स जए, को कालो मन्तंजवगस्स ? ॥ ६० ॥
 जाव न सुञ्चामि ल्हुं, पाणेहिं एत्थ जीयसंदेहे । ताव इमं जिणवयणं, सरामि सोमं मणं काउं ॥ ६१ ॥
 तम्हा पुरिसेण जए, अप्पहियं निययमेव कायव्वं । मरणंमि समावडिए, संपइ सुमरामि अरहन्तं ॥ ६२ ॥

शस्त्रसमूह जिसमें फेंके जा रहे हैं ऐसा युद्ध होने लगा । (४७) एक-दूसरेको रथरहित करके युद्धके लिए गर्वित हाथी पर सवार हो भिड़ गये और मत्सर एवं उत्साहके साथ लड़ने लगे । (४८) कान तक खेंचे गये बाणोंसे लवणने कृतान्तवदनकी विशाल छाती पर मजबूत कवचको भेदकर प्रहार किया । (४९) चिरकाल तक युद्ध करके कृतान्तवदन द्वारा शक्तिसे आहत लवणकुमार देवकी भाँति जमीन पर गिर पड़ा । (५०) पुत्रको गिरा देख शोक और क्रोधसे अत्यन्त प्रज्वलित अग्नि जैसा मधु शत्रुको पकड़नेके लिए सहसा खड़ा हुआ । (५१)

मथुरापुरीके स्वामीको आता देख युद्धरसका प्यासा शत्रुघ्न समरभूमिमें उसके सम्मुख शीघ्र ही आया । (५२) उस लड़ाईमें मधुने बाणसे शत्रुघ्नकी ध्वजा काट डाली । उसने भी रथके साथ उसके घोड़े नष्ट कर दिये । (५३) तब मधु राजा पर्वत जैसे हाथी पर आरूढ़ हुआ और हजारों बाणोंसे शत्रुघ्नको छाने लगा । (५४) शत्रुघ्नने सहसा उस शरसमूहका निवारण करके अपने बाणोंसे उस मधुराजाके शरीरको विदारित किया । (५५) जिसकी दोनों आँखें घूम रही हैं ऐसा वह मनमें सोचने लगा कि शूलसे रहित मैं पुण्यके अवसानके समय मरणासन्न हुआ हूँ । (५६) तब पुत्रके शोकसे पीड़ित अंगवाले उसने शत्रुको दुर्जय और मृत्युको समीप देखकर मुनिवरके वचनको याद किया । (५७) होशमें आने पर वह कहने लगा कि इस सारे अशाश्वत संसारमें इन्द्रियोंके वशवर्ती मूर्ख मैंने धर्म नहीं किया । (५८) मरणको ध्रुव, यौवनको पुष्पके समान और ऋद्धिको चंचल जानकर पराधीन मैंने उस समय प्रमादवश धर्म नहीं किया । (५९) मकानके जलने पर कूएँ-तालाबको खोदनेका आरम्भ कैसा ? सर्पके द्वारा काटे जाने पर इस संसारमें मंत्रके जपनका कौनसा समय रहता है ? (६०) जीवनका सन्देह होनेसे यहाँ पर मैं जबतक प्राणोंका त्याग नहीं करता तबतक मनको सौम्य बनाकर जिनेश्वरके इस वचनको याद कर लूँ । (६१)

अतएव मनुष्यको संसारमें आत्मकल्याण अवश्य ही करना चाहिए । मरण उपस्थित होने पर अब मैं अहिन्तको याद करता हूँ । (६२) इन अरिहन्तोंको और मोक्षमें गये सिद्धोंको नमस्कार हो । आचार्यों, उपाध्यायों और सब साधुओंको नमस्कार

१. •गकोवप०—प्रत्य० । २. सरणियरं—प्रत्य० । ३. समावण्णे—प्रत्य० । ४. •जवणमि—सु० ।

इणमो अरहन्ताणं, सिद्धाण नमो सिवं उवगायाणं । आयरिय-उवज्झाणं, नमो सथा सबसाहूणं ॥ ६३ ॥
 अरहन्ते सिद्धे वि य, साहू तह केवलीयधम्मो य । एए हवन्तु निययं, चत्तारि वि मङ्गलं मज्झं ॥ ६४ ॥
 जायइया अरहन्ता, माणुसखित्तम्मि होन्ति जयनाहा । तिविहेण पणमिऊणं, ताणं सरणं पवन्नो हं ॥ ६५ ॥
 हिंसा-उल्लिय-चोरिका, मेहुणपरिग्गहं तहा देहं । पच्चक्खामि य सबं, तिविहेणाहारपाणं च ॥ ६६ ॥
 परमत्थे ण तणमओ, संथारो नं वि य फासुया भूमी । हिययं जस्स विसुद्धं, तस्साया हवइ संथारो ॥ ६७ ॥
 एक्को जायइ जीवो, एक्को उप्पज्जए भमइ एक्को । सो चेव मरइ एक्को, एक्को चिय पावए सिद्धि ॥ ६८ ॥
 नाणम्मि दंसणम्मि य, तह य चरित्तम्मि सासओ अप्पा । अवसेसा दुब्भावा, वोसिरिया ते मए सवे ॥ ६९ ॥
 एवं जावज्जीवं, सङ्गं वोसिरिय गयवरत्थो सो । पहरणज्जरियतणु, आलुञ्चइ अत्तणो केसे ॥ ७० ॥
 जे तत्थ किन्नरादी, समागया पेच्छया रणं देवा । ते मुच्चन्ति सहरिसं, तस्सुवरिं कुसुमवरवासं ॥ ७१ ॥
 धम्मज्जाणोवगओ, क्कालं काऊण तइयकप्पम्मि । जाओ सुरो महप्पा, दिवङ्गयकुण्डलाभरणो ॥ ७२ ॥
 एवं नरो जो वि हु बुद्धिमन्तो, करेइ धम्मं मरणावसाणे ।
 वरच्छरासंगयलालियङ्गो, सो होइ देवो विमलाणुभावो ॥ ७३ ॥
 ॥ इइ पञ्चमचरिए महुसुन्दरवहाभिहाणं नाम छासीइमं पब्बं समत्तं ॥

८७. महुराउवसर्गविहाणपब्बं

केगइलुएण सेणिय, पुण्णपभावेण सूळरयणं तं । अइखेयसभावन्नं, लज्जियविलियं हयपभावं ॥ १ ॥
 तं सामियस्स पासं, गन्तूणं चमरनामधेयस्स । साहेइ सूळरयणं, महुनिवमरणं जहावत्तं ॥ २ ॥

हो । (६३) अरिहन्त, सिद्ध, साधु और केवलीका धर्म—ये चारों मेरे लिए अवश्य भंगल रूप हों । (६४) मनुष्य क्षेत्रमें जितने भी जगतके नाथ अरिहन्त हैं उन्हें मन-वचन-काया तीनों प्रकारसे प्रणाम करके उनकी शरण मैंने ली है । (६५) हिंसा, स्रूठ, चोरी, मैथुन, परिग्रह तथा शरीर और आहार-पान सबका मैं प्रत्याख्यान करता हूँ । (६६) वस्तुतः संथारा न तो नृणमय होता है और न निर्जीव भूमिका ही होता है जिसका हृदय विशुद्ध है उसकी आत्मा ही संथारा रूप होती है । (६७) एक जीव ही जन्म लेता है, एक वही उत्पन्न होता है, एक वही परिभ्रमण करता है, वही अकेला मरता है और वही अकेला सिद्धि पाता है । (६८) ज्ञानमें, दर्शनमें तथा चारित्रमें आत्मा शाश्वत है । धाकीके जो दुर्भाव हैं उन सबका मैंने त्याग किया है । (६९)

इस तरह यावज्जीवनके लिए संगका त्याग करके हाथी पर स्थित और शत्रुओंसे जर्जरित शरीरवाले उसने अपने केशोंका लोच किया । (७०) वहाँ युद्ध देखनेके लिए जो किन्नर आदि देव आये थे उन्होंने हर्षपूर्वक उसके ऊपर उत्तम पुष्पोंकी वृष्टि की । (७१) धर्मध्यानमें लीन वह महात्मा मर करके तीसरे देवलोक सनत्कुमारमें दिव्य बाजूबन्द और कुण्डलोंसे विभूषित देव के रूपमें उत्पन्न हुआ । (७२) इस तरह जो भी बुद्धिमान् मनुष्य मृत्युके समय धर्मका आचरण करता है वह सुन्दर अप्सराओंके संसर्गसे स्नेहपूर्वक पाले गये शरीरवाला और विमल प्रभावशाली देव होता है । (७३)

॥ पञ्चचरित्तमें महुसुन्दरके वधका अभिधान नामक छिआसीवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

८७. मथुरामें उपसर्ग

हे श्रेणिक ! कैंकई पुत्र शत्रुघ्नके पुण्यके प्रभावसे वह शूलरत्न अत्यन्त खेदयुक्त, लज्जित और प्रभावहीन हो गया । (१) उस शूलरत्नने चमर नामके स्वामीके पास जाकर जैसा हुआ था वैसा मथुराजाके मरणके बारेमें कहा । (२)

१. नमो णमो सत्त्व०—प्रत्य० । २. अरहन्तो सिद्धो—मु० । ३. हवन्ति—मु० । ४. ण य सुहावहा भूमी—प्रत्य० ।
 ५. ०भार्गी—प्रत्य० । ६. ०पयावं—प्रत्य० ।

सोऊण मित्तमरणं, चमरो घणसोगकोहपज्जलिओ । वेरपडिउञ्चणट्टे, महुराहिसुहो अह पयट्टो ॥ ३ ॥
 अह तत्थ वेणुदाली, सुवण्णराया सुरं पलोएउं । पुच्छइ कहेहि कत्तो, गमणारम्भो तुमे रहओ ॥ ४ ॥
 सो भणइ मज्झ मित्तो, जेण हओ रणसुहे मधू नामं । सन्नणस्स तस्स संपइ, मरणं आणेमि निक्खुत्तं ॥ ५ ॥
 तं भणइ वेणुदाली, किं न सुओ संभवो विसल्लाए ? । अहिलससि जेण एवं, कज्जाकज्जं वियाणन्तो ॥ ६ ॥
 अह सा अमोहविजया, सती नारायणस्स देहत्था । फुसिया य विसल्लाए, पणासिया सुकयकम्माए ॥ ७ ॥
 ताव य भवन्ति एए, सुर-असुर-पिसाय-भूयमाईया । जाव णं चिनिच्छिण्णं, लएइ जिणसासणे दिक्खं ॥ ८ ॥
 मज्जा-SSमिसरहियस्स उ, हत्थसयब्भन्तरेण दुस्सत्ता । न हवन्ति ताव जाव य, हवइ सरीरंमि नियमगुणो ॥ ९ ॥
 रुहो वि य काळुगी, चण्डो अइदारुणो सह पियाए । सन्तो षणट्टविज्जो, किं न सुओ ते गओ निहणं ? ॥ १० ॥
 वच्चसु गरुडिन्द ! तुमं, एयं चिय उज्झिऊण वावारं । अहयं तस्स कएणं, रिउभयजणणं ववहरामि ॥ ११ ॥
 एव भणिओ पयट्टो, चमरो महुरापुरिं समणुपत्तो । पेच्छइ महूसवं सो, कीलन्तं जणवयं सबं ॥ १२ ॥
 चिन्तेऊण पवत्तो, अकयग्घो जणवओ इमो पावो । जो निययसामिमरणे, रमइ खलो सोगपरिसुको ॥ १३ ॥
 अच्छउ ताव रिवू सो, जेण महं घाइओ इहं मित्तो । नयरं देसेण समं, सबं पि इओ खयं नेमि ॥ १४ ॥
 निज्जाइऊण एवं, कोहाणलदीविओ चमरराया । लोगस्स तक्खणं चिय, उवसगं दूसइ कुणइ ॥ १५ ॥
 जो जत्थ सत्तिविट्ठो, सुइओ वा परियणेण सह मणुओ । सो तत्थ मओ सबो, नयेरे देसे य रोगेणं ॥ १६ ॥
 दट्टूण य उवसगं, ताहे कुलदेवयाएँ सत्तुग्घो । पडिचोइओ य वच्चइ, साएयं साहणसमग्गो ॥ १७ ॥
 रिवुजयलद्धाइसयं, सत्तुग्घं पेच्छिऊण पउमामो । लच्छीहरेण समयं, अहियं अहिणन्दिओ तुट्ठो ॥ १८ ॥

मित्रकी मृत्यु सुनकर शोक और क्रोधसे अत्यन्त प्रज्वलित चमर वैरका बदला लेनेके लिए मथुराकी ओर चला। (३) सुपर्ण कुमार देवोंके इन्द्र वेणुदालिने देवको देखकर पूछा कि तुम किस ओर जानेके लिए प्रवृत्त हुए हो? (४) उसने कहा कि मधुनामक मेरे मित्रको जिसने युद्धमें मारा है उसकी मृत्यु अब मैं अवश्य लाऊँगा। (५) उसे वेणुदालिने कहा कि विशाल्याके जन्मके बारेमें क्या तुमने नहीं सुना, जिसके कार्य-अकार्यको न जानकर तुम ऐसी इच्छा रखते हो? (६) नारायण लक्ष्मणके शरीरमें रही हुई अमोघविजयाको पुण्यकर्मवाली विशाल्याने छूकर विनष्ट किया था। (७) तबतक ये सुर, असुर, पिशाच, भूत आदि होते रहते हैं जबतक निश्चयपूर्वक जिनशासनमें दीक्षा नहीं ली जाती। (८) जबतक शरीरमें नियम-धर्म रहता है तबतक मद्य और मांससे रहित उस व्यक्तिके पास सौ हाथके भीतर-भीतर दुष्ट प्राणी नहीं आते। (९) कालाम्भि नामका प्रचण्ड और अतिभयंकर रुद्र नष्ट विद्यावाला होकर प्रियाके साथ मर गया यह क्या तुमने नहीं सुना। (१०) हे गरुडेन्द्र! इस व्यापारका परित्याग कर तुम वापस लौट चलो। मैं उसके लिए शत्रुमें भय पैदा करता हूँ, ऐसा कहकर चमरेन्द्र चला और मथुरा पुरीमें आया। वहाँ पर उसने सब लोगोंको महान् उत्सव मनाते देखा। (११-१२) वह सोचने लगा कि ये लोग अकृतघ्न और पापी हैं, क्योंकि अपने स्वामीका मरण होने पर भी शोकसे रहित होकर आनन्द मनाते हैं। (१३) जिसने यहाँ मेरे मित्रको मारा उस शत्रुकी बात तो जाने दो। अब मैं देशके साथ सारे नगरको नष्ट कर डालता हूँ। (१४) ऐसा सोचकर क्रोधाग्निसे प्रदीप्त चमरराजाने तत्काल ही लोगोंके ऊपर दुस्सह उपसर्ग किया। (१५) उस नगर या देशमें जो मनुष्य जहाँ परिजनके साथ बैठे अथवा सोये थे वे वही रोगसे मर गये। (१६) उस उपसर्गको देखकर कुलदेवतासे प्रेरित शत्रुघ्न तब सेनाके साथ साकेतपुरी गया। (१७) शत्रुके ऊपर जय प्राप्त करनेसे महिमान्वित शत्रुघ्नको देखकर लक्ष्मणके साथ राम अभिनन्दित और तुष्ट हुये। (१८) पुत्रको देखकर माता हर्षित हुई। तब उसने स्वर्णकलशोंसे जिनवरेन्द्रोंका स्नान एवं पूजन

१. भर्माति--प्रत्य० । २. य—सु० । ३. सहिओ—सु० । ४. पडिचोइओ—सु० । ५. आणदिओ—प्रत्य० ।

जणणी वि य परितुट्ठा, पुत्तं दट्ठुण जिणवरिन्दाणं । कञ्चणकलसेहि ताओ, ष्हवणेण समं कुणइ पूयं ॥ १९ ॥
 एव नरा सुकएण भयाई, नित्थरयन्ति जला-उणिलमाई ।
 तेण इमं विमलं जिणधम्मं, गेण्हह संजमसुट्ठियभावा ॥ २० ॥

॥ इइ पउमचरिए महुराउवसग्गविहाणं नाम सत्तासीयं पव्वं समत्तं ॥

८८. सत्तुग्घ-कयंतमुहभवाणुकित्तणपव्वं

अह मगहपुराहिर्वई, पुच्छइ गणनायगं कयणामो । कज्जेण केण महुरा, विमगिया केगइसुएणं ॥ १ ॥
 सुंरपुरसमाउ इहई, बहुयाओ अत्थि रायहाणीओ । सत्तुग्घस्स न ताओ, इट्ठाओ जह पुरी महुरा ॥ २ ॥
 तो भणइ मुणिवरिन्दो, सेणिय ! सत्तुग्घरामपुत्तस्स । बहुया भवा अतीया, महुराए तेण सा इट्ठा ॥ ३ ॥
 अह संसारसमुद्वे, जीवो कम्माणिलहओ भरहे । महुरापुरीए जाओ, नामेणं जउणदेवो सो ॥ ४ ॥
 धम्मरहिओ मओ सो, कोलो गड्डुए वायसो जाओ । अइयासुओ य भंमणे, दड्ढो महिसो समुप्पन्नो ॥ ५ ॥
 जलवाहो गवलो पुण, छवारा महिसओ समुप्पन्नो । कम्मस्स उवसमेणं, जाओ दारिदिओ मणुओ ॥ ६ ॥
 नामेण कुलिशधरो, मुणिवरसेवापरायणो विप्पो । रुवाईसयजुत्तो, विवज्जिओ बालकमेहिं ॥ ७ ॥
 तस्स पुरस्साहिर्वई, असङ्किओ नाम दूरदेसं सो । संपत्थिओ कयाई, तस्स उ ललिया महादेवी ॥ ८ ॥
 वायायणट्ठिया सा, विप्पं दट्ठुण कामसरपहया । सदाविय चेडीए, चिट्ठइ एक्कासणनिविट्ठा ॥ ९ ॥

किया । (१६) इस तरह सुकृतसे मनुष्य पानी, आग आदिके भयोंको पार कर जाता है । अतः संयमसे सुस्थित भाववाले होकर तुम इस विमल जिनधर्मको ग्रहण करो । (२०)

॥ पद्मचरितमें मथुरामें उपसर्गका विधान नामक सत्तासीवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

८९. शत्रुघ्न और कृतान्तवदनके पूर्वभव

मगधाधिपति श्रेणिकने प्रणाम करके गणनायक गौतमसे पृच्छा कि कैकेईपुत्र शत्रुघ्न ने किसलिए मथुरानगरी माँगी थी ? (१) सुरपुरके समान बहुत-सी राजधानियाँ यहाँ पर हैं । शत्रुघ्नको जैसी मथुरा पसन्द आई वैसी वे क्यों पसन्द न आई ? (२) तब मुनिवरेन्द्रने कहा कि :—

हे श्रेणिक ! राजकुमारके बहुतसे अतीत जन्म मथुरामें हुए थे । इससे वह उसे प्रिय थी । (३) संसार-सागरमें कर्मरूपी वायुसे आहत एक जीव भरतक्षेत्रमें आई हुई मथुरापुरीमें यमुनदेवके नामसे पैदा हुआ । (४) धर्मरहित वह मर करके गड्ढोंमें अशुचि पदार्थ खानेवाला सूअर, और कौआ हुआ । वकरेके रूपमें भ्रमण करता हुआ वह जल गया और भैंसेके रूपमें उत्पन्न हुआ । (५) तब जलघोड़ा और जंगली भैंसा हुआ । पुनः छः बार भैंसेके रूपमें हुआ । तब कर्मके उपशमसे दरिद्र मनुष्य हुआ । (६) मुनिवरोक्की सेवामें तत्पर वह कुलिशधर नामका विप्र उत्तम रूपसे युक्त और मूर्खोंकी चेष्टाओंसे रहित था । (७) उस नगरका अशंकित नामका स्वामी था । वह कभी दूर देशमें गया । उसकी महादेवी ललिता थी । (८) वातायनमें स्थित उसने ब्राह्मणको देखकर कामबाणसे आहत हो नौकरानी द्वारा उसे बुलाया और उसके साथ एक ही आसनपर बैठकर कामचेष्टा करने लगी । (९) एक दिन अचानक वह राजा अपने महल पर आया और रानीके साथ एक ही आसन पर

१. सुपुरिससमागमाओ, व०—प्रत्य० । २. बहवो भ०—प्रत्य० । ३. भमइ । म०—प्रत्य० । ४. भवणे—प्रत्य० ।

अह अन्नया निवो सो, सयराहं आगओ नियं गेहं । पेच्छइ देवीएँ समं, तं चिय एक्कासणनिविट्ठं ॥ १० ॥
 मायाविणीएँ तोए, गाढं चिय कन्दियं भवणमज्जे । संतासं च गओ सो, गहिओ य नरिन्दपुरिसेहिं ॥ ११ ॥
 आणत्तं नरवइणा इमस्स अट्टङ्गनिग्गहं कुणह । नयरस्स वहिं दिट्ठो, मुणिणा कल्लणनामेणं ॥ १२ ॥
 भणिओ जइ पव्वज्जं, गेण्हसि तो ते अहं मुयावेमि । तं चिय पडिवन्नो सो, मुक्को पुरिसेहिं पव्वइओ ॥ १३ ॥
 काऊण तवं घोरं, कालगओ सुरवरो समुप्पन्नो । देवीहिं संपरिवुडो, कील्लइ रइसागरोगाढो ॥ १४ ॥
 नामेण चन्दभहो, राया महुराहिवो पणयसत्तू । तस्स वरा वरभज्जा, तिण्णिं य एक्कोयरा तोए ॥ १५ ॥
 सरो य जउणदत्तो, देवो य तइज्जओ समुप्पन्नो । भाणुप्पह-उग्ग-उक्का-मुहा य तिण्णेव पुत्ता से ॥ १६ ॥
 विइया य तस्स भज्जा, कणयाभा नाम चन्दभहस्स । अह सो चविऊण सुरो, तोए अयलो सुओ जाओ ॥ १७ ॥
 अवरो त्थ अङ्गनामो, धम्मं अणुमोइऊण अइरुवो । जाओ य मङ्गियाए, कमेण पुत्तो तहिं काले ॥ १८ ॥
 सावत्थिनिवासी सो, अविणयकारी जणस्स अइवेसो । निद्धाडिओ य तो सो, कमेण अइदुक्खिओ भमइ ॥ १९ ॥
 अह सो अयलकुमारो, इट्ठो पियरस्स तिण्णिं वाराओ । उग्गुक्कमुहन्तेहिं, घाइज्जन्तो च्चिय पणट्ठो ॥ २० ॥
 पुहइं परिहिण्डन्तो, तिलयवणे कण्टएण विट्ठो सो । किणमाणो च्चिय दिट्ठो, अङ्केणं उयलो य वलियङ्को ॥ २१ ॥
 मोत्तूण दारुमारं, अङ्केण उ कण्टओ खणट्ठेणं । आयड्ढिओ सुसत्थो, अयलो तं भणइ निसुणेहिं ॥ २२ ॥
 जइ नाम सुणसि कत्थइ, अयलं नामेण पुहइविक्खायं । गन्तवं चैव तुमे, तस्स सयासं निरुत्तेणं ॥ २३ ॥
 भणिऊणं एवमेयं, सावत्थि पत्थिओ तओ अङ्को । अयलो वि य कोसम्बि, कमेण पत्तो वरुज्जाणं ॥ २४ ॥
 सो तत्थ इन्ददत्तं, नरवसभं गरुलियागयं दइं । तोसेइ धणुबेएँ, विसिहायरियं च दोजीहं ॥ २५ ॥

बैठे हुए उसको देखा । (१०) वह मायाविनी महलमें जोरोंसे चिढ़ाने लगी । इससे वह भयभीत हो गया । राजाके आदमियोंने उसे पकड़ लिया । (११) राजाने आज्ञा दी कि इसके आठ टंगोंका निग्रह करो । कल्याण नामक मुनिने उसे नगरके बाहर देखा । (१२) कहा कि यदि प्रवज्या ग्रहण करोगे तो मैं लुङ्गाउंगा । उसने वह बात स्वीकार की । इसपर राजपुरुषोंने छोड़ दिया । उसने दीक्षा ली । (१३) घोर तप करके मरने पर वह वेव हुआ । देवियोंसे घिरा हुआ वह रातके सागरमें लीन हो क्रीड़ा करने लगा । (१४)

शत्रुओंको मुकानेवला चन्द्रभद्र नामका एक महुरा नरेश था । उसकी वरा नामकी एक सुन्दर भार्या थी । उसके (वराके) तीन सहोदर भाई थे । (१५) सूर्य, यमुनादत्त और तीसरा देव उत्पन्न हुआ । उसके (वराके) अनुक्रमसे भानुप्रभ, उम और उल्कामुख ये तीन ही पुत्र थे । (१६) चन्द्रभद्रकी कन्दामा नामकी दूसरी भार्या थी । वह देव च्युत होकर उसका अचल नामसे पुत्र हुआ । (१७) दूसरा एक अंक नामका था । धर्मका अनुमोदन करनेसे वह उस समय मांगका का अतिरूपवान् पुत्र हुआ । (१८) अविनयकारी और लोगोंका अत्यन्त द्वेषी वह श्रावतीवासी बाहर निकाल दिया गया । अतिदुःखत वह इधर उधर भटकने लगा । (१९) पिताका प्रिय वह अचलकुमार भी उम और उल्कामुखसे तीन बार घायल होने पर भाग गया । (२०) पृथ्वी पर पारश्रमण करता हुआ वह तिलवदनमें काँटेसे बीधा गया । घायल और काँपते हुए शरीरवाला वह अचल अंक द्वारा देखा गया । (२१) लकड़ीके बोधेका परित्याग करके अंकने काँटा आघे क्षणमें निकाल दिया । सुखाथ अचलने उसे कहा कि, तुम मुनो । (२२) पृथ्वीमें कहीं पर भी यदि तुम विख्यात अचलका नाम सुनो तो उसके पास अवश्य ही जाना । (२३) ऐसा कहकर अंकने श्रावतीकी ओर प्रस्थान किया तो अचलने कौशाम्दीकी ओर गमन किया ।

क्रमशः चलता हुआ वह एक सुन्दर उद्यानमें आ पहुँचा । (२४) वहाँ वन-विहारके लिए आये हुए राजा इन्द्रदत्तको उसने देखा । दुष्ट विशिखाचार्यको धनुर्देवमें (हराकर ?) उसने राजाको सन्तुष्ट किया । (२५) राजाने अपनी लड़की मित्रदत्ता

१. ०राहसमागओ—सु० । २. देवेहिं—प्रत्य० । ३. साणु०—सु० । ४. उग्ग-उक्कमुहन्तेहिं,—सु० । ५. ०ण य नेत-चलियंमो—प्रत्य० । ६. ण वयणमेयं,—सु० । ७. ०ए, सिहायरियं च दो जीहं—प्रत्य० ।

दिन्ना य मित्तदत्ता, अयलस्स निवेण अत्तणो धूया । लोगम्मि अवज्झाओ, भण्णइ रज्जं च पत्तो सो ॥ २६ ॥
 अङ्गाइया य देसा, जिणिऊणं सयलसाहणसभग्गो । पियरस्स विग्गहेणं, अयलो महुरं समणुपत्तो ॥ २७ ॥
 ते चन्दभइपुत्ता, समयं चिय पत्थिवेहि नियएहिं । अत्थेण सुविउलेणं, भिन्ना अयलेण ते सबे ॥ २८ ॥
 नाऊण चन्दभइो, भिन्ने सबे वि अत्तणो भिच्चे । पेसेइ सन्धिकज्जे, साला तस्सेव वसु-दत्ता ॥ २९ ॥
 ते पेच्छऊण अयलं, पच्चहियाणंति पुबचिन्धेहिं । अइलज्जिया नियत्ता, कहेन्ति ते चन्दभइस्स ॥ ३० ॥
 पुत्तेहि समं भिच्चा, कया य अदिट्ठसेवया सबे । मायावित्तेहि समं, अयलस्स समागमो जाओ ॥ ३१ ॥
 पुत्तस्स चन्दभइो, परितुट्ठो कुणइ संगमाणन्दं । जाओ रज्जाहिवई, अयलो सुकयाणुभावेणं ॥ ३२ ॥
 अयलेण अन्नया सो, दिट्ठो नडरङ्गमज्झयारत्थो । परियाणो य अङ्को, पडिहारनरेसु हम्मन्तो ॥ ३३ ॥
 दिन्ना य जम्मभूमि, सावत्थो तस्स अयलनरवइणा । दवं च सुप्पभूयं, नाणालंकारमादीयं ॥ ३४ ॥
 दोन्नि वि ते उज्जाणं, कीलणहेउं गया सपरिवारा । दट्ठण समुदमुणिं, तस्स सयासम्मि निक्खन्ता ॥ ३५ ॥
 दंसणनाणचरित्ते, अप्पाणं भाविऊण कालगया । दोन्नि वि सुरवहुकलिए, देवा कमलुत्तरे जाया ॥ ३६ ॥
 भोगे भोत्तूण सुओ, अयलसुरो केगईएँ गब्भमि । जाओ दसरहपुत्तो, सत्तुग्घो पुहँइविवखाओ ॥ ३७ ॥
 सेणिय ! सो णेयभवा, आसि च्चिय पुरवरीएँ महराए । सत्तुग्घो कुणइ रई, मोत्तूणं सेसनयरीओ ॥ ३८ ॥
 गेहस्स तरुवरस्स य, छायाए जस्स एकमवि दियहं । परिवसइ तत्थ जायइ, जीवस्स रई सहावेणं ॥ ३९ ॥
 किं पुण जत्थ बहुभवे, जीवेणं संगई कया ठाणे । जायइ तत्थ अईवा, सेणिय ! पीई ठिई एसा ॥ ४० ॥
 अह सो अङ्कसुरवरो, तत्तो आउक्खए चुयसमाणो । जाओ कयन्तवयणो, सेणाहिवई हलहरस्स ॥ ४१ ॥

अचलको दी । उसने राज्य पाया और वह लोकमें उपाध्याय कहा जाने लगा । (२६) अंग आदि देशोंको जीतकर सम्पूर्ण सेनाके साथ अचल पितासे युद्ध करनेके लिए मथुरा जा पहुँचा । (२७) अपने राजाओंके साथ चन्द्रभद्रके उन सब पुत्रोंको अचलने विपुल शरूसे हरा दिया । (२८) अपने सब भृत्य हार गये हैं देसा जानकर चन्द्रभद्रने सन्धिके लिए उसके पास सालोंको नजराना देकर भेजा । (२९) अचलको देखकर पहलेके चिह्नोंसे उन्होंने उसे पहचान लिया । अत्यन्त लज्जित वे लौटे और चन्द्रभद्रसे कहा । (३०) उसने चन्द्रभद्रके पुत्रोंके साथ सबको आज्ञा उठानेवाले सेवक बनाया । माता-पिताके साथ अचलका समागम हुआ । (३१) आनन्दने आये हुए चन्द्रभद्रने मिलनका महोत्सव मनाया । पुरयके फलस्वरूप अचल राज्याधिपति हुआ । (३२)

एक दिन अचलने नाटककी रंगभूमिमें स्थित और द्वाररक्षक द्वारा मारे जाते अंकको देखा और उसे पहचाना । (३३) अचल राजाने उसे उसकी जन्मभूमि श्रावस्ती, बहुत-सा धन और नाना प्रकारके अलंकार आदि दिये । (३४) बादमें दोनों ही परिवारके साथ उद्यानमें क्रीड़ाके लिए गये । समुद्र-मुनिको देखकर उसके पास उन्होंने दीक्षा ली । (३५) दर्शन, ज्ञान और चारित्रसे अपने आपको भावित करके मरने पर दोनों ही कमलोत्तरमें देवधुओंसे युक्त देव हुए । (३६) भोग भोगकर च्युत होने पर अचल देव कैकेईके गर्भसे दशरथका विश्वविश्रुत पुत्र शत्रुघ्न हुआ । (३७) हे श्रेणिक ! शत्रुघ्न अनेक भवों तक मथुरानगरीमें था, अतः उसने दूसरी नगरियों को छोड़कर इससे अनुराग किया । (३८) जिस घर या वृक्षकी छायामें एक दिन भी कोई प्राणी रहता है तो उसके साथ उसकी प्रीति स्वभावसे हो जाती है । (३९) तो फिर अनेक भवों तक जिस स्थानमें जीवने संगति की हो, तो उसका कहना ही क्या ? हे श्रेणिक ! वहाँ अत्यधिक प्रीति होती है । यही नियम है । (४०) वह अंक देव आयुके क्षय होने पर वहाँसे च्युत हो हलधर रामका सेनापति कृतान्तवदन हुआ है । (४१) हे श्रेणिक ! चिनय-

१. ०णा सब्बे वि अयलेणं—प्रत्य० । २. ०व सहंता—प्रत्य० । ३. अदिट्ठ०—प्रत्य० । ५. देसविवखाओ—प्रत्य० ।

५. सेणाणीओ हल०—प्रत्य० ।

एसो ते परिकहिओ, सेणिय पुच्छन्तयस्स विणएणं । सत्तुग्घभवसमूहो, कयन्तवयणेण सहियस्स ॥ ४२ ॥

एयं परंपरमवाणुगयं सुणेउं, जो धम्मकज्जनिरओ न य होइ लोए ।

सो पावकम्मपरिणामकयावरोहो, ठाणं सिवं सुविमलं न उवेइ मूढो ॥ ४३ ॥

॥ इइ पउमचरिए सत्तुग्घकयन्तमुट्टभवारणुकित्तणं नाम अट्टासीयं पव्वं समत्तं ॥

८९. महुरानिवेसपर्व

अह अन्नया कयाई, विहरन्ता मुणिवरा गयणगामी । महुरापुरिं कमेणं, सत्त जणा चेवं अणुपत्ता ॥ १ ॥

सुरमंतो सिरिमंतो, सिरिनिलओ सबसुन्दरो चेव । जयमन्तो ऽणिलललोओ, अवरो वि य हवइ जयमित्तो ॥ २ ॥

सिरिनन्दणस्स एए, सत्त वि धरणीए कुच्छिसंभूया । जाया नरवइपुत्ता, महापुरे सुरकुमारसमा ॥ ३ ॥

पीतिकरस्स एए, मुणिस्स दट्टूण सुरवरागमणं । पियरेण सह विउट्टा, सबे धम्मज्जया जाया ॥ ४ ॥

सो एगमासजायं, ठविऊणं डहरयं सुर्यं रज्जे । पवइओ सुयसहिओ, राया पीतिकरसयासे ॥ ५ ॥

केवललद्धाइसओ, काले सिरिनन्दणो गओ सिद्धिं । इयरे वि सत्त रिसिया, कमेण महुरापुरिं पत्ता ॥ ६ ॥

ताव च्चिय घणकालो, समागओ मेइमुक्कजलनिवहो । जोगं लएन्ति साहू, सत्त वि ते तीए नयरीए ॥ ७ ॥

सा ताण पभावेणं, नट्टा मारी सुराहिवपउत्ता । पुहई वि सलिलसित्ता, नवसाससमाउला जाया ॥ ८ ॥

महुरा देसेण समं, रोगविमुक्का तओ समणुजाया । पुण्डुच्छवाडपउरा, अकिट्टसस्सेण सुसमिद्धा ॥ ९ ॥

पूर्वक पूछते हुए तुम्हको मैंने कृतान्तवदन के साथ शत्रुघ्नका यह भवसमूह कहा । (४२) इसप्रकार परंपरासे चले आते भयोंके बारेमें सुनकर जो लोकमें धर्मकार्यमें निरत नहीं होता वह पापकर्मके परिणाम स्वरूप बाधा प्राप्त करनेवाला मूढ़ पुरुष अत्यन्त विमल शिवस्थान नहीं पाता । (४३)

॥ पद्मचरितमें शत्रुघ्न एवं कृतान्तमुखके भयोंका अनुकीर्तन नामक अट्टासीवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

८९. शत्रुघ्नका मथुरामें पड़ाव

एक दिन अनुक्रमसे विहार करते हुए गगनगामी सात मुनि मथुरा नगरीमें आये । (१) सुरमन्त्र, श्रीमन्त्र, श्रीतिलक, सर्वसुन्दर, जयवान्, अनिलललित और अन्तिम जयमित्र ये उनके नाम थे । (२) महापुरमें श्रीनन्दनकी भार्या धरणीकी कुत्तसे उत्पन्न ये सातों ही राजपुत्र देवकुमारके समान थे । (३) प्रीतिकर मुनिके पास देवताओंका आगमन देखकर पिताके साथ प्रतिबुद्ध ये सब धर्मके लिए उद्यत हुए । (४) एक महीनेके बालकपुत्रको उस राज्य पर स्थापित करके पुत्रोंके साथ राजाने प्रीतिकरके पास प्रव्रज्या ली । (५) केवल ज्ञानका अतिशय प्राप्त करके मरने पर श्रीनन्दन मोक्षमें गया । दूसरे सातों ऋषि विचरख करते हुए मथुरापुरीमें आये । (६) उस समय बादलोंसे जलसमूह छोड़नेवाला वर्षाकाल आ गया । सातों ही साधुओंने उस नगरीमें योग ग्रहण किया । (७) उनके प्रभावसे सुरेन्द्र द्वारा प्रयुक्त महामारि नष्ट हो गई । पानीसे सींची गई पृथ्वी भी नये शस्यसे व्याप्त हो गई । (८) तब देशके साथ रोगसे विमुक्त मथुरा भी सफेद ऊखकी बाड़ोंसे व्याप्त हो बिना जोते ही उत्पन्न धान्योंसे सुसमृद्ध हो गई । (९)

१. एवं—प्रत्य० । २. लोके—मु० । ३. वराहो—मु० । ४. व संपत्ता—प्रत्य० । ५. सिरिनिलओ—प्रत्य० । सिरिनिवओ—मु० । ६. महापुरे—प्रत्य० । ७. रिसया—प्रत्य० । ८. कसललोहो—प्रत्य० । ९. वि सेलस हेट्टम्म—मु० ।

बारसविहेण जुत्ता, तवेण ते मुणिवरा गयणगामी । पोयणविजयपुराइसु, काऊणं पारणं एन्ति ॥ १० ॥
 अह अन्नया कयाई, साहू मज्झणहदेसयालम्मि । उप्पइय नहयलेणं, साएयपुरिं गया सब्बे ॥ ११ ॥
 भिक्खुद्वे विहरन्ता, घरपरिवाडीएँ साहवो धीरा । ते सावयस्स भवणं, संपत्ता अरहँदत्तस्स ॥ १२ ॥
 चिन्तेइ अरहदत्तो, वरिसाकाले कहिं इमे समणा । हिण्डन्ति अणायारी, निययं ठाणं पमोत्तूणं ॥ १३ ॥
 पव्वभारकोट्टगाइसु, जे य ठियाँ जिणवराण आगारे । इह पुरवरीएँ समणा, ते परियाणामि सब्बे हं ॥ १४ ॥
 भिक्खुं घेत्तूण तओ, पाणं चिय एसणाएँ परिसुद्धं । उज्जाणमज्झयारे, जिणवरभवणम्मि पविसन्ति ॥ १५ ॥
 एए पुण पडिकूला, सुत्तत्थविवज्जिया य रसलुद्धा । परिहिण्डन्ति अकाले, न य हं वन्दामि ते समणे ॥ १६ ॥
 ते सावएण साहू, न वन्दिया गारवस्स दोसेणं । सुण्हाएँ तस्स नवरं, तत्तो पडिल्यभिया सब्बे ॥ १७ ॥
 दाऊण धम्मलाभं, ते जिणभवणं कमेणं पविसंता । अभिवन्दिया जुईणं, ठाणनिवासीण समणेणं ॥ १८ ॥
 काऊण अणायारी, न वन्दिया जुइसुणिस्स सीसेहिं । भणिओ चिय निययगुरू, मूटो जो पणमसे एए ॥ १९ ॥
 ते तत्थ जिणाययणे, मुणिसुवयसामियस्स वरपडिमं । अभिवन्दिउं निविट्ठा, जुईण समयं कयाहारा ॥ २० ॥
 ते साहिऊण ठाणं, निययट्ठाणं नहं समुप्पइया । सत्त वि अणिलसमज्जा, खणेण महुरापुरिं पत्ता ॥ २१ ॥
 चारणसमणे दट्ठुं, ठाणनिवासी मुणी सुविम्हइया । निन्दन्ति य अप्पाणं, ते चिय न य वन्दिया अम्हे ॥ २२ ॥
 जाव चिय एस कहा, वट्टइ तावागओ अरिहदत्तो । जुइणा कहिज्जमाणं, ताणं गुणकिट्ठाणं सुणइ ॥ २३ ॥
 महुराहि कयावासा, चारणसमणा मइन्तमुणकलिया । सावय ! लद्धिसमिद्धा, अज्ज मए वन्दिया धीरा ॥ २४ ॥
 अह सो ताण पहावं, सुणिऊणं सावओ विसण्णमणो । निन्दइ निययसहावं, पच्छातावेण डज्जन्तो ॥ २५ ॥

बारह प्रकारके तपसे युक्त वे गगनगामी मुनि पारना करके पोतनपुर, विजयपुर आदि नगरोंमें गये। (१०) एक दिन दोपहरके समय सब साधु आकाशमार्गसे उड़कर साकेतपुरी गए। (११) भिक्षाके लिये एक घरसे दूसरे घरमें जाते हुए वे धीर साधु अर्हदत्तके मकान पर आये। (१२) अर्हदत्त सोचने लगा कि वर्षाकालमें अपने नियत स्थानको छोड़कर ये अनाचारी श्रमण कहाँ जाते हैं? (१३) जो इस नगरीमें, पर्वतके ऊपरके भागमें, आश्रयस्थानों आदिमें तथा जिनवरोंके मन्दिरोंमें लाधु रहते हैं उन सबको मैं पहचानता हूँ। (१४) भिक्षा तथा पान जो निर्दोष हो वह लेकर वे उद्यानके बीच आये हुए जिनमन्दिरमें प्रवेश करते हैं। (१५) उनसे विशुद्ध आचरणवाले, सूत्र और उसके अर्थसे रहित तथा रसलुब्ध ये तो असमयमें घूमते हैं। इन श्रमणोंको मैं वन्दन नहीं करूँगा। (१६) ऐसा सोचकर उस श्रावकने अभिमानके दोष से उन साधुओंको वन्दन नहीं किया। तब केवल उसकी पुत्रवधूने उन सबको दान दिया। (१७)

धर्मलाभ देकर क्रमशः जिनमन्दिरमें प्रवेश करते हुए उनको उस स्थानमें रहनेवाले द्युति नामके श्रमणने वन्दन किया। (१८) अनाचारी मानकर द्युति मुनिके शिष्योंने इन्हें प्रणाम नहीं किया और अपने गुरुसे कहा कि जो इन्हें प्रणाम करता है वह मूर्ख है। (१९) आहार करके वे उस जिनमन्दिर में द्युतिमुनिके साथ मुनिमुद्रतस्वामीकी सुन्दर प्रतिमाको वन्दन करनेके लिए बैठे। (२०) अपना निवास स्थान कहकर पवनके समान वेगवाले वे सातों ही अपने स्थानकी ओर जानेके लिए आकाशमें उड़े और क्षणभरमें मथुरानगरीमें पहुँच गये। (२१) चारण श्रमणोंको देखकर उस स्थानके रहनेवाले मुनि अत्यन्त विस्मित हुए। वे अपनी निन्दा करने लगे कि हमने उनको वन्दन नहीं किया। (२२) जब यह कथा हो रही थी तब अर्हदत्त वहाँ आया और द्युतिमुनि द्वारा कहा जाता उनका गुणकीर्तन सुना। (२३) हे श्रावक! मथुरामें ठहरे हुए महान् गुणोंसे युक्त तथा लब्धियोंसे समृद्ध ऐसे धीरता धारण करनेवाले श्रमणोंको मैंने आज वन्दन किया है। (२४) तब उनके प्रभावको सुनकर मनमें विषण्ण वह श्रावक पश्चात्तापसे जलता हुआ अपने स्वभावकी निन्दा करने लगा कि मुझे धिक्कार है। मूर्ख मैं सम्यग्दर्शन से रहित

१. वीरा—प्रत्य० । २-३. अरिह०—प्रत्य० । ४. ०या जे य जिणवरागारे—प्रत्य० । ५. तओ अणं पि य ए०—मु० ।
 ६. ०ण संपत्ता—मु० । ७. वीरा—प्रत्य० ।

धिद्धि त्ति मूढभावो, अहयं सम्मत्तदंसणविहूणो । अविदियधम्माधम्मो, मिच्छतो नत्थि मम सरिसो ॥ २६ ॥
 अब्भुट्ठाणं काउं, न वन्दिया जं मए मुणिवरा ते । तं अज्ज वि दहइ मणो, जं चिय न य तप्पिया विहिणा ॥ २७ ॥
 दट्ठूण साहुरूवं, जो न चयइ आसणं तु सयरहं । जो अवमण्णइ य गुरुं, सो मिच्छतो मुण्यवो ॥ २८ ॥
 ताव चिय हयहिययं, डज्झिहिइ महं इमं खल्ल सहावं । जाच न वि वन्दिया ते, गन्तूण सुसाहवो सबे ॥ २९ ॥
 अह सो तग्गयमणसो, नाऊणं कत्तिमी समासन्ने । जिणवन्दणाएँ सेट्ठी, उच्चलिओ धणयसमविभवो ॥ ३० ॥
 रह-गय-तुरङ्गमेहिं, पाइक्कसएहि परिमिओ सेट्ठी । पत्तो सत्तरिसिपयं, कत्तिगिमलसत्तमीए उ ॥ ३१ ॥
 सो उत्तमसम्मत्तो, मुणीण काऊण वन्दणविहाणं । विरएइ महापूर्यं, तत्थुइसम्मि कुसुमेहिं ॥ ३२ ॥
 नह-नइ-छत्त-चारण-पणच्चिउग्गीयमङ्गलारावं । सत्तरिसियासमपयं, सगसरिच्छं कथं रम्मं ॥ ३३ ॥
 सत्तुग्गकुमारो वि य, सुण्णिऊणं मुणिवराण वित्तन्तं । जणणीएँ समं महुरं, संपत्तो परियणापुण्णो ॥ ३४ ॥
 साहूण वन्दणं सो, काऊणाऽऽवासिओ तहिं ठाणे । विउलं करेइ पूयं, पड्डुपडह-मुइङ्गसदाहं ॥ ३५ ॥
 साहू समत्तनियमा, भणिया सत्तुग्गरायपुत्तेणं । मज्झ घराओ भिक्खं, गिण्हह तिवाणुकम्पाए ॥ ३६ ॥
 समणुत्तमेण भणिओ, नरवइ ! कयकारिओ पयत्तेणं । न य कप्पइ आहारो, साहूण विसुद्धसीलाणं ॥ ३७ ॥
 अकया अकारिया वि य, मणसाऽणणुमोइया य जा भिक्खा । सा कप्पइ समणाणं, धम्मधुरं उवहन्ताणं ॥ ३८ ॥
 भणइ तओ सत्तुग्गो, भयवं जइ मे न गेण्हह धरम्मि । केत्तियमित्तं पि इहं, अच्छह कालं पुरवरीए ॥ ३९ ॥
 तुब्भेत्थ आगएहिं, समयं रोगेहि ववगया मारी । नयरी वि सुहसमिद्धा, जाया बहुसासपरिपुणा ॥ ४० ॥

धर्म-अधर्मको न जाननेवाला और मिथ्यात्वी हूँ । मेरे जैसे दूसरा कोई नहीं है । (२५-२६) उठ करके मैंने जो उन मुनिवरोंको वन्दन नहीं किया था और जो विधिपूर्वक दान आदिसे दृप्त नहीं किया था वह आज भी मेरे मन को जलाता है । (२७) साधुके आकारको देखकर जो तत्काल आसनका त्याग नहीं करता और जो गुरुका अपमान करता है उसे मिथ्यात्वी समझना चाहिए । (२८) येरा यह हृदय स्वाभाविक रूपसे तवतक जलता रहेगा जबतक मैं जा करके उन सब सुसाधुओंको वन्दन नहीं करूँगा (२९)

इस प्रकार उन्हींमें लगे हुए मनवाला और कुबेरके समान वैभवशाली वह सेठ कार्तिकी पूर्णिमा समीप है ऐसा जानकर जिनेश्वर भगवानोंके वन्दनके लिए चला । (३०) रथ, हाथी एवं घोड़ों तथा सैंकड़ों पदातियोंसे घिरा हुआ वह सेठ उन सात ऋषियोंके स्थान पर कार्तिक मासकी कृष्ण सप्तमीके दिन पहुँचा । (३१) उत्तम सम्यक्त्ववाले उसने मुनियोंको विधिपूर्वक वन्दन करके उस प्रदेशमें पुष्पोंसे महापूजाकी रचना की । (३२) नट, नर्तक और चारणों द्वारा किये गये नृत्य, गीत एवं मंगलध्वनिते युक्त वह सप्त-ऋषियोंका आश्रमस्थान स्वर्ग जैसा रम्य बना दिया गया । (३३)

मुनिवरोंका वृत्तान्त सुनकर परिजनों से युक्त शत्रुघ्नकुमार भी माताओंके साथ मथुरानगरीमें आ पहुँचा । (३४) साधुओं को वन्दन करके उसी स्थानमें वह ठहरा और भैरी एवं मृदंगसे अत्यन्त ध्वनिमय ऐसी उत्तम पूजा की । (३५) जिनका नियम पूरा हुआ है ऐसे साधुओंसे राजकुमार शत्रुघ्नेने कहा कि अत्यन्त अनुकम्पा करके आप मेरे घरसे भिक्षा ग्रहण करें । (३६) इस पर एक उचाम श्रमगने कहा कि, हे राजन् ! प्रदत्तपूर्वक किया अथवा कराया गया आहार विशुद्धशील साधुओंके काममें नहीं आता । (३७) जो स्वयं न की गई हो, न कराई गई हो और मनसे भी जिसका अनुमोदन न किया गया हो ऐसी भिक्षा धर्मधुराका वहन करने वाले श्रमणोंके कामकी होती है । (३८) तब शत्रुघ्नेने कहा कि, भगवन् ! यदि आप मेरे घरसे नहीं लेंगे तो इस नगरीमें आप कितने समय तक रहेंगे ? (३९) आपके यहाँ आनेसे रोगोंके साथ महामारी भी दूर हो गई है और नगरी भी सुखसे समृद्ध तथा नाना प्रकार के धान्योंसे परिपूर्ण हो गई है । (४०)

१. काउं जं ण मए वंदिया मुणिवरा ते । अज्ज वि तं उहइ मणो ज चिय न—प्रत्य० । २. ओ भिवइसम—प्रत्य० ।

३. काऊण वंदणं सो, साहूणाऽऽ—प्रत्य० ।

एव भणिओ पवुत्तो, सेणिय ! मुणिपुङ्गवो सभावन् । सत्तुग्घ ! मज्झ वयणं, निसुणेहि हियं च पथं च ॥ ४१ ॥
 इह भारहम्मि वासे, बोलीणे नन्दनरवईकाले । होही पविरलगहणो, जिणधम्मो चेव दुसमाए ॥ ४२ ॥
 होहिनति कुपासण्डा, बहवो उप्पाय-ईइसंबन्धा । गामा मसाणतुल्ला, नयरा पुण पेयलोयसमा ॥ ४३ ॥
 चोरा इव रायाणो, होहिनति नरा कसायरयवहुला । मिच्छत्तमोहियमई, साहूणं निन्दणुज्जुत्ता ॥ ४४ ॥
 जं चेव अप्पसत्थं, तं सुपसत्थं ति मन्नमाणा ते । निस्संजम-निस्सील, नरए पडिहिनति गुरुक्कमा ॥ ४५ ॥
 निब्भच्छिऊण साहू, मूढा दाहिनति चेव मूढाणं । बीयं व सीलवट्टे, न तस्स दाणस्स परिवुट्ठी ॥ ४६ ॥
 चण्डा कसायवहुला, देसा होहिनति कुच्छियायारा । हिंसा-उल्लिय-चोरिका, काहिनति निरन्तरं मूढा ॥ ४७ ॥
 वय-नियम-सील-संजम-रहिएसु अणारिएसु लिङ्गीसु । वेयारिही जणो वि यं, विविहकुपासण्डसत्थेसु ॥ ४८ ॥
 धण-रयणदवरहिया, लोगा पिइ-भाइवियलियसिणेहा । होहिनति कुपासण्डा, बहवो दुसमाणुभावेणं ॥ ४९ ॥
 सत्तुग्घ ! एव नाउं, कालं दुसमाणुभावसंजणियं । होहि जिणधम्मनिरओ, अप्पहियं कुणसु सत्तोए ॥ ५० ॥
 सायारधम्मनिरओ, वच्छल्लसमुज्जओ जणे होउं । ठावेहि जिणवराणं, घरे घरे चेव पडिमाओ ॥ ५१ ॥
 सत्तुग्घ ! इह पुरीए, चउसु वि य दिसासु सत्तरिसियाणं । पडिमाउ ठवेहि लहुं, होही सन्ती तओ तुज्जं ॥ ५२ ॥
 अज्जपभूईए इहं, जिणपडिमा जस्स नत्थि निययघरे । तं निच्छिएण मारी, मारिहिइ मयं व जह वग्घी ॥ ५३ ॥
 अज्जुट्टपमाणा वि हु, जिणपडिमा जस्स होहिइ घरम्मि । तस्स भवणाउ मारी, नासिहिइ लहुं न संदेहो ॥ ५४ ॥
 भणिऊण एवमेयं, सेट्टिसमग्गेण रायपुत्तेणं । अहिंविन्दिया मुणी ते, सत्त वि परमेण भावेणं ॥ ५५ ॥
 दाऊण धम्मलहं, ते य मुणी नहयलं समुप्पइया । चारणलद्धाइसया, सीयाभवणे समोइण्णा ॥ ५६ ॥

हे श्रेणिक ! इस प्रकार कहे गये और स्वभावको जाननेवाले उन मुनिपुंगवोंने कहा कि, हे शत्रुघ्न ! मेरा हितकारी और पथ्य वचन सुनो । (४१) इस भरतचेत्रमें नन्द राजाका काल व्यतीत होने पर दुःसम आरमें जिनधर्मको पालनेवाले अत्यन्त विरल हो जाएंगे । (४२) बहुत-से कुधर्म फैलेंगे । उपद्रव, अनावृष्टि और अतिवृष्टि आदि ईतियोंके कारण गाँव श्मशान तुल्य और नगर प्रेतलोक सदृश हो जाएंगे । (४३) राजा चोरोंके जैसे होंगे और लोग कापातिक कर्मसे युक्त, मिथ्यात्वसे मोहित मतिवाले तथा साधुओंकी निन्दामें तत्पर रहेंगे । (४४) जो अप्रशस्त हैं उसीको अत्यन्त प्रशस्त माननेवाले वे संयम और शीलहीन तथा कर्मसे भारी होकर नरकमें भटकेंगे । (४५) साधुओंका तिरस्कार करके मूढ़ लोग मूर्खोंको दान देंगे । पत्थर पर पड़े हुए बीजकी भाँति उस दानकी वृद्धि नहीं होगी । (४६) देश उग्र, कपायवहुल और कुत्सित आचारवाले होंगे । मूर्ख लोग निरन्तर हिंसा, भूठ और चोरी करेंगे । (४७) व्रत, नियम, शील एवं संयमसे रहित अनार्य लिंगधारी साधुओंसे तथा अनेक प्रकारके कुधर्म युक्त पाखण्डियोंके शाकोंसे लोग ठगे जाएंगे । (४८) दुःसम आरेके प्रभावसे बहुत-से लोग धन, रत्न एवं द्रव्यसे रहित, पिता एवं भाईके स्नेहसे हीन तथा मिथ्याधर्मी होंगे । (४९) हे शत्रुघ्न ! दुःसम के प्रभावसे उत्पन्न ऐसे कालको जानकर तुम जिनधर्म में निरत हो और शक्तिके अनुसार आत्महित करो । (५०) गृहस्थ धर्ममें निरत तुम सार्धमिक जनोके ऊपर वात्सल्यभाव रखनेमें समुद्यत होकर जिनमन्दिरोंकी तथा घर-घरमें प्रतिमाओंकी स्थापना करो । (५१) हे शत्रुघ्न ! इस नगरीकी चारों दिशाओंमें सप्तधियोंकी प्रतिमाओंकी जल्दी ही स्थापना करो । तब तुम्हें शान्ति होगी । (५२) आजसे लेकर यहाँ जिसके अपने घरमें जिनप्रतिमा नहीं होगी उसे महामारि अवश्य ही उस तरह मारेगी, जिस तरह व्याघ्री हिरनको मारती है । (५३) अंगूठे जितनी बड़ी जिन प्रतिमा भी जिसके घरमें होगी उसके घरमेंसे महामारि क्रौरन ही नष्ट होगी, इसमें सन्देह नहीं । (५४) ऐसा कहकर सेठके साथ राजपुत्र शत्रुघ्न द्वारा वे सातों ही मुनि भावपूर्वक अभिवन्दित हुए । (५५)

धर्मलाभ देकर वे चारणलब्धि संपन्न मुनि आकाशमें उड़े और सीताके भवनमें उतरे । (५६) भवनके

१. हु—प्रत्य० । २. अज्जप्पभिइं च इहं—प्रत्य० ।

भवणङ्गणट्टिया ते, सीया दट्टूण परमसद्दाए । परमन्नेण सुकुसला, पडिलाहइ साहवो सबे ॥ ५७ ॥
 दाऊण य आसीसं, जहिच्छियं मुणिवरा गया देसं । सत्तुग्घो वि य नयरे, ठावेइ जिणिन्दपडिमाओ ॥ ५८ ॥
 सत्तरिसीण वि पडिमाउ, तत्थ फलएसु सन्निविट्ठाओ । कञ्चणरयणमईओ, चउसु वि य दिसासु महुराए ॥ ५९ ॥
 देसेण समं नयरी, सवा आसासिया भयविमुक्का । धण-धन्न-रयणपुण्णा, जाया महुरा सुरपुरि व ॥ ६० ॥
 तिण्णेव जोयणाइं, दीहा नव परिरएण अहियाइं । भवणसु उववणेसु य, रेहइ महुरा तलाएसु ॥ ६१ ॥
 जाया नरिन्दसरिसा, कुडुम्बिया नरवई धणयतुल्ला । धम्म-उत्थ-कामनिरया, मणुया जिणसासणुज्जुत्ता ॥ ६२ ॥
 महुरापुरीएँ एवं, आणाईसरियरिद्धिसंपन्नं । रज्जं अपोवमगुणं, सत्तुग्घो मुज्जइ जहिच्छं ॥ ६३ ॥
 एयं तु जे सत्तमुणीण पवं, सुणन्ति भावेण पसन्नचित्ता ।
 ते रोगहीणा विगयन्तराया, हवन्ति लोए विमलंसुतुल्ला ॥ ६४ ॥

॥ इइ पउमचरिए महुरानिवेसैविहाणं नाम एगूणनउयं पवं समत्तं ॥

१०. मणोरमालंभपञ्च

अह वेयङ्कनगवरे, दाहिणसेढीएँ अत्थि रयणपुरं । विज्जाहराण राया, रयणरहो तत्थ विवग्गाओ ॥ १ ॥
 नामेण चन्दवयणा, तस्स पिया तीएँ कुच्छिसंभूया । रूव-गुण-जोवणधरी, मणोरमा सुरकुमारिसमा ॥ २ ॥
 तं पेच्छिऊण राया, जोवणलायणकान्तिपडिपुण्णं । तीए वरस्स कज्जे, मन्तीहि समं कुणइ मन्तं ॥ ३ ॥

आंगनमें स्थित उन्हें देखकर अक्षिकुशल सीताने परम श्रद्धाके साथ सब साधुओंको उत्तम अन्नका दान दिया । (५७) आशीर्वाद देकर मुनिवर भी अभिलषित देशकी ओर गए । शत्रुघ्ने भी नगरमें प्रतिमाएँ स्थापित कीं । (५८) उस मथुराकी चारों दिशाओंमें सप्तर्षियोंके स्वर्ण और रत्नमय प्रतिमाएँ तख्तों पर स्थापित की गईं । (५९) देशके साथ सारी नगरी भयसे मुक्त हो आश्वस्त हुईं । धन, धान्य और रत्नोंसे परिपूर्ण मथुरा देवनगरी जैसी हो गई । (६०) तीन योजन लम्बी और नौ योजनसे अधिक परिधिवाली मथुरा भवनों, उपवनों और सरोवरोंसे शोभित हो रही थी । (६१) वहाँ गृहस्थ राजाके जैसे थे, राजा कुबेर सरोखे थे, और धर्म, अर्थ एवं काममें निरत मनुष्य जिनरासनमें उद्यमशील थे । (६२) इस तरह मथुरापुरीमें आत्मा, ऐश्वर्य एवं ऋद्धिसे सम्पन्न तथा अनुपम गुणयुक्त राज्य का शत्रुघ्न इच्छानुसार उपभोग करने लगा । (६३) इस तरह जो प्रसन्नचित्त होकर भावपूर्वक सप्तर्षियोंका पद सुनते हैं वे लोकमें रोगहीन, बाधारहित और विमल किरणोंवाले चन्द्रके समान उज्ज्वल होते हैं । (६४)

॥ पद्मचरितमें मथुरामें निवेश-विधि नामक नवासीवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

१०. मनोरमाकी प्राप्ति

वैताह्य पर्वतकी दक्षिण श्रेणीमें रत्नपुर आया है । वहाँ विद्याधरोंका प्रसिद्ध राजा रत्नरथ था । (१) चन्द्रवदन नामकी उसकी प्रिया थी । उसकी कुक्षिसे उत्पन्न देवकन्या जैसी रूप, गुण और यौवनको धारण करनेवाली मनोरमा थी । (२) यौवन, लावण्य और कान्तिसे परिपूर्ण उसे देखकर राजाने उसके वरके लिए मंत्रियोंके साथ मंत्रणा की । (३) उस समय

१. आवासिया—प्रत्य० । २. संसिहाणं—प्रत्य० । ३. संकतिसंपुत्रं—प्रत्य० ।

ताव चिय हिण्डन्तो, तं नयरं नारओ समणुपत्तो । दिन्नासणोवविट्ठो, रयणरहं भणइ सुणियत्थो ॥ ४ ॥
 दसरहनवस्स पुत्तो, भाया पउमस्स लक्खणो वीरो । किं न सुओ ते नरवइ १, तस्स इमा दिज्जाए कत्ता ॥ ५ ॥
 तं एव जंपमाणं, सोऊणं पवणवेगमाईया । रुट्ठा रयणरहसुया, सयणवहं सुमरिउं बहवे ॥ ६ ॥
 अह तेहि निययभिच्चा, आणत्ता किंकरा हणह एयं । तं सुणिय भउब्बिग्गो, उप्पइओ नारओ रुट्ठो ॥ ७ ॥
 संपत्तो चिय सहसा, एयं सो लक्खणस्स निस्सेसं । वत्तं कहेइ एत्तो, मओरमाई सुरमुणी सो ॥ ८ ॥
 अह सो चित्तालिहियं, कर्त्तं दावेइ लच्छिनिलयस्स । जयसुन्दरीण सोहं, हाऊण व होज्ज निम्भविया ॥ ९ ॥
 तं पेच्छिऊण विट्ठो, वम्महवाणेहि लक्खणो सहसा । चिन्तेइ तग्गयमणो, हियएण बहुप्पयाराइं ॥ १० ॥
 जइ तं महिलारयणं अहयं न लहामि तो इमं रज्जं । विफलं चिय निस्सेसं, जीयं पि य सुत्तयं चेव ॥ ११ ॥
 रयणरहनन्दणार्णं, विचेट्ठिये नारएण परिकहिए । रुट्ठो य लच्छिनिलओ, सदाविय पत्थिवे चलिओ ॥ १२ ॥
 विज्जाहरेहि समयं, गयवर-रह-तुरय-जोहपरिकिण्णा । उप्पइया गयणयलं, हलहर-नारायणा सिग्घं ॥ १३ ॥
 संपत्ता रयणपुरं, कमेण असि-कणय-तोमरविट्ठथा । दट्ठूण आगया ते, रयणरहो खेयरो रुट्ठो ॥ १४ ॥
 भडचडगरेण सहिओ, विणिग्गओ परवलं अइसयन्तो । जुज्झइ रणपरिहत्थो, जोहसहसाइ घाएन्तो ॥ १५ ॥
 रयणरहस्स भडेहिं, निद्वयपहराहयं पवगसेत्तं । रुद्धं संगाममुहे, सायरसलिलं व तुज्जेहिं ॥ १६ ॥
 दट्ठूण निययसेत्तं रुट्ठो लच्छीहरो रहारूढो । अह जुज्झइ पवत्तो, घाएन्तो रिउभडे बहवे ॥ १७ ॥
 पउमो किंकिन्धवई, विराहिओ अङ्गओ य आणत्तो । जुज्झइ सिरिसेलो वि य, समयं चिय वेरियभडेहिं ॥ १८ ॥
 वाणरभडेसु भग्गं, तिबपहाराहयं रिउवलं तं । विवडन्तजोह-तुरयं, जायं च पलायणुज्जुत्तं ॥ १९ ॥

परिभ्रमण करता हुआ नारद उस नगरमें आया । दिखे गये आसन पर बैठे हुए उसने बात जानकर रत्नरथसे कहा कि, हे राजन् ! दशरथके पुत्र और रामके भाई लक्ष्मणके बारेमें क्या तुमने नहीं सुना ? उसे यह कन्या दो । (४-५) इस प्रकार कहते हुए उसे सुनकर रत्नरथके पवनवेग आदि बहुतसे पुत्र स्वजनोंके वधको याद करके रुष्ट हुए । (६) उन्होंने अपने सेवक नौकरोंको आज्ञा की कि इसे मारो । यह सुनकर क्रुद्ध नारद भयसे उद्विग्न ऊपर उड़ा । (७) सहसा आकर उस देवसुनि नारदने यह सारा मनोरमा आदिका वृत्तान्त लक्ष्मणसे कह सुनाया । (८) फिर उसने चित्रपट पर आलिखित कन्या लक्ष्मणको दिखलाई । नानो वह विश्वसुन्दरियोंकी शोभाको लेकर बनाई गई थी । (९) उसे देखकर सहसा मदनवाणोंसे विद्ध और उसीमें लीन लक्ष्मण हृदयमें अनेक प्रकारका विचार करने लगा । (१०) यदि उस महिलारत्नको मैं नहीं पाऊँगा तो यह सारा राज्य विफल है और जीवन भी शून्य है । (११) नारद द्वारा रत्नरथके पुत्रोंका आचरण कहे जाने पर रुष्ट लक्ष्मणने राजाओंको बुलाया और आक्रमणके लिए चल पड़ा । (१२)

हाथी, रथ, घोड़े और योद्धाओंसे घिरे हुए हलधर (राम) और नारायण (लक्ष्मण) विद्याधरोंके साथ शीघ्र ही आकाशमें उड़े । (१३) तलवार, कनक और तोमरसे युक्त वे अनुक्रमसे रत्नपुरमें आ पहुँचे । उन्हें आया देख रत्नरथ खेचर रुष्ट हुआ । (१४) सुभट-समूहके साथ वह निकल पड़ा और युद्धमें दक्ष वह हजारों योद्धाओंको मारता हुआ शत्रु सैन्यको मार करके लड़ने लगा । (१५) रत्नरथके सुभटोंने युद्धभूमिमें निर्दय प्रहारोंसे आहत शत्रुसैन्यको, पर्वतों द्वारा रोके जानेवाले सागरके पानीकी भाँति, रोका । (१६) अपने सैन्यको नष्ट होते देख रुष्ट लक्ष्मण रथ पर आरूढ़ हुआ और बहुत-से शत्रुसुभटोंको मारता हुआ युद्ध करने लगा । (१७) राम, सुग्रीव, विराधित, अंगद, आनर्त और हनुमान भी शत्रुके सुभटोंके साथ लड़ने लगे । (१८) वानरसुभटों द्वारा तीव्र प्रहारोंसे आहत वह शत्रुसैन्य भग्न हो गया । योद्धा और घोड़े गिरने लगे । इससे वह पलायनके लिए उद्यत हुआ । (१९) रत्नरथके साथ सैन्यको भग्न देख

१. धीरो—प्रत्य० । २. •इउं नारओ षट्ठो—प्रत्य० । ३. किंकिन्धवई प्रत्य० ।

रयणरहेण समाणं, भगं दट्टूण नारओ सेत्तं । अङ्गाइ विण्फुरन्तो, हसइ चिय कहकहारावं ॥ २० ॥
 एए ते अइचवला, दुच्चेष्टा खेयराहमा खुदा । पलयन्ति पवणवेगा, लक्खणगुणनिन्दया पावा ॥ २१ ॥
 पियरं पलयमाणं, दट्टूण मणोरमा रहारूढा । पुवं सिणेहहियया, सहसा लच्छीहरं पत्ता ॥ २२ ॥
 सा भणइ पायवडिया, मुञ्च तुमं भिउडिभङ्गुरं कोवं । एयाण देहि अभयं, लच्छीहर ! मज्झ सयणाणं ॥ २३ ॥
 सोमत्तणं पवन्ने, चक्रहरे आगओ सह सुएहिं । रयणरहो कयविणओ; समाहिओ राम-केसीहिं ॥ २४ ॥
 रयणरहं भणइ तओ, हसिउणं नारओ अइमहन्तं । भडवोक्कियं कहिं तं, तुज्झ गयं जं पुरा भणियं ॥ २५ ॥
 एवं रयणरहेणं पडिभणिओ नारओ तुमे कोवं । नीएण अन्ह जाया, उत्तमपुरिसेसु सह पीई ॥ २६ ॥
 अह ते रयणरहेणं हलहर-नारायणा पुरिं निययं । ऊसियधयापडायं, पवेसिया कणयपायारं ॥ २७ ॥
 दिन्ना कणयरहेणं, सिरिदामा हलहरस्स वरकत्ता । लच्छीहरस्स वि तओ, मणोरमा सव्वगुणपुष्णा ॥ २८ ॥
 वत्तं पाणिग्गहणं, कमेण दोण्हं पि परमरिद्धीए । विज्जाहरोहि समयं, रयणपुरे राम-केसीणं ॥ २९ ॥
 एवं पयण्डा वि अरी पणामं, वच्चन्ति पुष्णोदयदेसकाले ।
 नरस्स रिद्धी वि हु होइ तुज्जा, तम्हा, खु धम्मं विमलं करेह ॥ ३० ॥
 ॥ इइ पउमचरिए मणोरमालम्भविहाणं नाम नउइयं पव्वं समत्तं ॥

९१. राम-लक्ष्मणविभूषणं

अन्ने वि खेयरभडा, वेयद्धे दाहिणाएँ सेटीए । निवसन्ति लक्खणेणं, ते सबे निज्जिया समरे ॥ १ ॥

नारद अंगोंको हिलाता हुआ खिलखिलाकर हँसा । (२०) उसने कहा कि ये तेरे अतिचपल, दुष्ट आचारवाले, छुद्र, लक्ष्मणकी निन्दा करनेवाले, पापी और अधम खेचर पवनके वेगकी भाँति भाग रहे हैं । (२१)

पिताको भागते देख पहलेसे हृदयमें स्नेह रखनेवाली मनोरमा रथ पर आरूढ़ हो सहसा लक्ष्मणके पास आई । (२२) उसने पैरोंमें गिरकर कहा कि, हे लक्ष्मण ! तुम कुटिल भ्रुकुटिवाले क्रोधका त्याग करो । इन मेरे स्वजनोंको तुम अभय दो । (२३) चक्रधर लक्ष्मणके सौम्यभाव धारण करने पर पुत्रोंके साथ रत्नरथ आया । प्रणाम आदि विनय करनेवाले उसके मनको राम और लक्ष्मणने स्वस्थ किया । (२४) तब नारदने हँसकर रत्नरथसे कहा कि जिसका तुमने पहले निर्देश किया था वह तुम्हारी शूरीकी बड़ी भारी ललकार कहाँ गई ? (२५) इस पर रत्नरथने नारदसे कहा कि तुमने क्रोध कराया उससे हमारी उत्तम पुरुषोंके साथ प्रीति हुई है । (२६) इसके बाद रत्नरथने ऊँचे उठी हुई ध्वजा-पताकाओं तथा सोनेके प्राकारवाली अपनी नगरीमें राम एवं लक्ष्मणका प्रवेश कराया । (२७) कनकरथने रामको श्रीदामा नामकी उत्तम कन्या दी । बादमें लक्ष्मणको भी सर्वगुणसम्पन्न मनोरमा दी गई । (२८) दोनों राम एवं लक्ष्मणका विद्याधरियोंके साथ खूब ठाठबाटसे रत्नपुरमें पाणिग्रहण हुआ । (२९) इस तरह पुण्योदयके समय प्रचण्ड शत्रु भी प्रणाम करते हैं और लोगोंको विपुल ऋद्धि प्राप्त होती है ! अतः तुम विमल धर्मका आचरण करो ! (३०)

॥ पद्मचरितमें मनोरमाका प्राप्ति-विधान नामक नव्वेवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

९१. राम एवं लक्ष्मणकी विभूति

वैताल्य पर्वतकी दक्षिण श्रेणीमें जो दूसरे खेचर-सुभट रहते थे उन सबको भी लक्ष्मणने युद्धमें जित लिया । (१)

१. पुब्बि—प्रत्य० । २. राम-केसीणं—प्रत्य० । ३. ०पुरिसेण स० सु० ।

६१

जे रामसासर्णगया, विज्जाहरपत्थिवा महिङ्गीया । निसुणेहि ताण सेणिय!, नामाई रायहाणोणं ॥ २ ॥
 आइच्चाहं नयरं, तहेव सिरिमन्दिरं गुणपहाणं । कञ्चणपुरं च एत्तो, भणियं सिवमन्दिरं रम्मं ॥ ३ ॥
 गन्धवं अमयपुरं तहेव लच्छीहरं मुण्येवं । मेहपुरं रहगीयं, चक्रुरं नेउरं हवइ ॥ ४ ॥
 सिरिवहुरवं च भणियं, सिरिमलयं सिरिगुहं च रविभूसं । तह य हरिद्वयनामं, जोइपुरं होइ सिरिछायं ॥ ५ ॥
 गन्धारपुरं मलयं, सीहपुरं चैव होइ सिरिविजयं । जक्खपुरं तिलयपुरं, अन्नाणि वि एव बहुयाणि ॥ ६ ॥
 नयराणि लक्खणेणं, जियाइ विज्जाहराणुक्किणाइं ! वसुहा य वसे ठविया, सत्तसु रयणेसु साहीणा ॥ ७ ॥
 चकं छत्तं च धणुं, सत्ती य गया मणी असी चैव । एयाइ लच्छिनिलओ, संपत्तो दिव्वरयणाइं ॥ ८ ॥
 पुणरवि मगहाहिवई, पुच्छइ गणनायमं पणमिऊणं । भयवं ! लवंकुसाणं, उप्पत्ति मे परिकहेहि ॥ ९ ॥
 लच्छीहरस्स पुत्ता, कइ वा महिलाउ अगमहिसीओ । एव परिपुच्छिओ सो, कहिऊण मुणी समाउत्तो ॥ १० ॥
 निसुणेहि मगहासामिय!, पहाणपुरिसाण उत्तमं रज्जं । भुञ्जन्ताण य बहुया, मासा वरिसा य वच्चन्ति ॥ ११ ॥
 तुङ्गकुलजाइयाणं, उत्तमगुण-रूढ-जोवणधरीणं । दस छ च्चेव सहस्सा, रामकणिट्टस्स महिलाणं ॥ १२ ॥
 अट्ट महादेवीओ, सवाण वि ताण उत्तमगुणाओ । ताओ निसुणेहि नरवइ !, नामेहि कहिज्जमाणीओ ॥ १३ ॥
 दोणघणसुया पढमा, होइ विसल्ल च्चि नाम नामेणं । विइया पुण रूवमई, तइया कल्लाणमाला य ॥ १४ ॥
 वणमाला य चउत्थी, पञ्चमिया चैव होइ रइमाला । छठी वि य जियपउमा, अभयमई सत्तमी भणिया ॥ १५ ॥
 अन्ते मणोरमा वि य, अट्टमिया होइ सा महादेवी । लच्छीहरस्स एसा, रूवेण मणोरमा इट्ठा ॥ १६ ॥
 पउमस्स महिलियाणं, अट्ट सहस्साइ रूवकलियाणं । ताणं पुण अहियाओ, चत्तारि इमेहि नामेहिं ॥ १७ ॥
 पढमा उ महादेवी, सीया बीया पहावई भणिया । तइया चैव रइनिहा, सिरिदामा अन्तिमा भवइ ॥ १८ ॥

हे श्रेणिक! रामके शासनमें जो बड़ी भारी ऋद्धिवाले विद्याधरराजा थे उनकी राजधानियोंके नाम तुम सुनो। (२) आदित्याभनगर, गुणोंसे सम्पन्न श्रीमन्दिरनगर, कंचनपुर, सुन्दर शिवमन्दिर, गान्धर्वनगर, अमृतपुर, लक्ष्मीधर, मेघपुर, रथगीत, चक्रपुर, नूपुर, श्रीबहुरव, श्रीमलय, श्रीगुह, रविभूप, हरिध्वज, ज्योतिःपुर, श्रीचन्द्राय, गान्धारपुर, मलय, सिंहपुर, श्रीविजय, यत्तपुर, तिलकपुर तथा दूसरे भी बहुत-से विद्याधरोंसे व्याप्त नगर लक्ष्मणने जीत लिये, पृथ्वी बसमें की और सातों रत्न स्वाधीन किये। (३-७) चक्र, छत्र, धनुष, शक्ति, गदा, मणि और तलवार—ये दिव्य-रत्न लक्ष्मणने प्राप्त किये। (८)

मगधाधिप श्रेणिकने गणनायक गौतमको प्रणाम करके पुनः पूछा कि भगवन् ! लवण और शंकुशकी उत्पत्तिके बारेमें तथा लक्ष्मणके पुत्र, किरियाँ और पटरानियाँ कितनी थीं इसके बारेमें आप मुझे कहें। इस तरह पूछे गये वे मुनि कहने लगे कि, हे मगधनरेश ! तुम सुनो। उत्तम राज्यका उपभोग करनेवाले प्रधानपुरषोंके बहुत-से मास और वर्ष व्यतीत हो गये। (९-११) ऊँचे कुलमें उत्पन्न, उत्तम गुण, रूप एवं यौवनधारी दस हजार महिलाएँ रामकी और छः हजार छोटे भाई लक्ष्मणकी थीं। (१२) उन सबमें उत्तम गुणोंवाली आठ पटरानियाँ थीं। हे राजन् ! नाम लेकर मैं उनका निर्देश करता हूँ। तुम सुनो। (१३) पहली द्रोणघनकी विशल्या नामकी पुत्री है। दूसरी रूपमती, तीसरी कल्याणमाला, चौथी वनमाला, पाँचवीं रतिमाला छठी जितपद्मा, सातवीं अभयमति और अन्तिम आठवीं मनोरमा—ये आठ लक्ष्मणकी पटरानियाँ थीं। लक्ष्मणके रूपसे मनोरम यह मनोरमा इष्ट थी। (१४-१६) रामकी आठ हजार रूपवती महिलाएँ थीं, उनमें इन नामोंवाली चार उत्तम थीं। (१७) पहली पटरानी सीता, दूसरी प्रभावती कही गई है। तीसरी रतिनिभा और अन्तिम श्रीदामा थी। (१८) लक्ष्मणके गुणशाली ढाई सौ पुत्र थे। उनमेंसे

१. मणरया—मु० । २. पुरं नरगीर्यं—मु० । ३. रविभासं—प्रत्य० । रविभारं—प्रत्य० । ४. शरिज्यणामं—प्रत्य० ।

५. मणी—मु० ।

अह्वाइज्जा उ सया, लक्खणपुत्ताण गुणमहन्ताणं । साहेमि ताण मज्झे, कइवइयानं तु नामाई ॥ १९ ॥
 वसहो धरणो चन्द्रो, सरहो मयरद्धओ मुणोयवो । हरिणाहो थ सिरिधरो, तहेव मयणो कुमारवरो ॥ २० ॥
 अह ताण उत्तमा जे, अट्ट जणा सिरिधरस्स अङ्गरुहा । जाण सहावेण जणो, गुणाणुरत्तो थिईं कुणइ ॥ २१ ॥
 अह सिरिधरो त्ति नामं, दोणघगल्लुयाएँ नन्दणो वीरो । पुत्तो रूवमईए, पुहईतिलओ तिलयभूओ ॥ २२ ॥
 कल्लाणमालिणीए, मङ्गलनिलओ सुओ पवररूवो । विमलप्पहो त्ति नामं, पुत्तो पडमावईए वि ॥ २३ ॥
 पुत्तो वणमालाए, अज्जुणविकखो त्ति नाम विकखाओ । अइविरियस्स सुयाए, तणओ वि य हवइ सिरिकेसी ॥ २४ ॥
 नामेण सबकिती, अभयमइसुओ सुरो व रूवेणं । इयरो सुपासकिती, मणोरमाकुच्छिसंभूओ ॥ २५ ॥
 सबे वि रूवमन्ता, सबे बलविरियसत्तिसंपन्ना । पुहइयले विकखाया, पुत्ता लच्छीहरस्सेए ॥ २६ ॥
 ते देवकुमारा इव, अन्नोन्नवसाणुगा वणसिणेहा । साएयपुरवरीए, अच्छन्ति सुहं अणुहवन्ता ॥ २७ ॥
 अह अट्टपच्चमाओ, कोडीओ सबनिवइपुत्ताणं । सोलस चैव सहस्सा, राईणं बद्धमउडाणं ॥ २८ ॥
 एवं तिस्रण्डाहिवइत्तणं ते, पत्ता महारज्जसुहं पसत्थं । गमेन्ति कालं वरसुन्दरीसु, सेविज्जमाणा विमलप्पहावा ॥ २९ ॥

॥ इइ पडमचरिए राम-लक्खणविभूइदंसणं नाम एक्काणउयं पव्वं समत्तं ॥

९२. सीयाजिणपूयाडोहलपव्वं

अह अन्नया कयाई, भवणत्था महरिहम्मि सयणिज्जे । सीया निसावसाणे, पेच्छइ सुधिणं जणयधूया ॥ १ ॥
 सा उगयंमि सूरे, सबालंकारभूसिया गन्तुं । अत्थाणिमण्डवत्थं, पुच्छइ दइयं कयपणामा ॥ २ ॥

कतिपयके नाम कहता हूँ । (१६) वृषभ, धरण, चन्द्र, शरभ, मकरध्वज, हरिनाथ, श्रीधर तथा कुमारवर मदनको तुम जानो । (२०) ढाई सौमेंसे लक्ष्मणके ये आठ उत्तम कुमार थे जिनके स्वभावसे गुणानुरक्त लोग धीरज धारण करते थे । (२१) द्रोणघनकी पुत्री विशल्याका श्रीधर नामका वीर पुत्र था । रूपमतीका पुत्र पृथ्वीतिलक तिलकरूप था । (२२) कल्याणमालाका पुत्र मंगलनिलय अत्यन्त रूपवान् था । पद्मावतीका विमलप्रभ नामका पुत्र था । (२३) वनमालाका विख्यात पुत्र अर्जुनवृक्ष था । अतिवीर्यकी पुत्रीका लङ्का श्रीकेशी था । (२४) अभयवतीका सर्वकीर्ति नामका पुत्र रूपमें देव जैसा था । दूसरा मनोरमाकी कुक्षिसे उत्पन्न सुपार्श्वकीर्ति था । (२५) लक्ष्मणके ये सभी पुत्र रूपवान्, बल, वीर्य एवं शक्तिसे सम्पन्न तथा पृथ्वीतल पर विख्यात थे । (२६) एक दूसरेका अनुसरण करनेवाले और अत्यन्त स्नेहयुक्त वे देवकुमार जैसे सुखका अनुभव करते हुए साकेतपुरीमें रहते थे । (२७) सब राजाओंके साढ़े चार करोड़ पुत्र और मुकुटधारी सोलह-हजार राजा वहाँ रहते थे । (२८) इस प्रकार तीन खण्डोंका आधिपत्य और विशाल राज्यका उत्तम सुख प्राप्त करके सुन्दर स्त्रियों द्वारा सेवा किये जाते तथा विमल प्रभाववाले वे काल व्यतीत करते थे । (२९)

॥ पद्मचरितमें राम एवं लक्ष्मणकी विभूतिका दर्शन नामक इवयानवेवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

९२. जिनपूजाका दोहद

कभी एक दिन महलमें रही हुई जनकपुत्री सीताने महार्घ शैयामें रात्रिके अवसानके समय एक स्वप्न देखा । (१) सूर्योदय होने पर सब अलंकारों से विभूषित उसने जा करके और प्रणाम करके सभामण्डपमें स्थित पतिसे पूछा कि हे नाथ !

१. ०तिलओ—प्रत्य० । २. ०पहासा—सु० । ३. अत्थाणम०—प्रत्य० ।

किल सामि ! अज्ज सुविणे, दो सरहा तिबकेसरारुणिया । ते मे सुहं पविट्ठा, नवरं पडिया विमाणाओ ॥ ३ ॥
 तो भणइ पउमणाहो, सरहाणं दरिसणे तुमं भदे ! होहिन्ति दोन्नि पुत्ता, अइरेणं सुन्दरायारा ॥ ४ ॥
 जं पुप्फविमाणाओ, पडिया न य सुन्दरं इमं सुविणं । सवे गहाऽणुकूल, होन्तु सया तुज्झ पसयच्छि ! ॥ ५ ॥
 ताव य वसन्तमासो, संपत्तो पायवे पसाहेन्तो । पल्लव-पवाल-किसलय-पुप्फ-फलयइं च जणयन्तो ॥ ६ ॥
 अंकोल्लित्तिसणवखो, मल्लियणयणो असोयदलजीहो । कुरवयकरालदसणो, सहयारसुकेसरारुणियो ॥ ७ ॥
 कुसुमरयपिञ्जरङ्गो, अइमुत्तलयासमूसियकरगो । पत्तो वसन्तसीहो, गयवइयाणं भयं देन्तो ॥ ८ ॥
 कोइलसुहलुगोयं, महुरगुमुगुमुमेन्तझंकारं । कुसुमरण समत्थं, पिञ्जरयन्तो दिसायकं ॥ ९ ॥
 नाणाविहतलुञ्जं, वरकुसुमसमच्चियं फलसमिद्धं । रेहइ महिन्दउदयं, उज्जाणं नन्दणसरिच्छं ॥ १० ॥
 एयारिसंमि काले, पढमिलुगगठभसंभवे सीया । जाया मन्दुच्छाहा, तणुयसरीरा य अइरेणं ॥ ११ ॥
 तं भणइ पउमनाहो, किं तुज्झ अवट्ठियं पिए ! हियए । दवं दोहलसमए ? तं ते संपाडयामि अहं ॥ १२ ॥
 तो सुमरिऊण जंपइ, जणयसुया जिणवरालए बहवे । इच्छामि नाह ! दट्ठं वन्दामि तुह प्पसाएणं ॥ १३ ॥
 सोऊण तीए वयणं, पउमाभो भणइ तत्थ पडिहारिं । कारेह जिणहराणं, सोहा परमेण विभवेणं ॥ १४ ॥
 सबो वि नायरजणो, तत्थ महिन्दोदए वरुज्जाणे । गन्तूण सविभवेणं, जिणालयाणं कुणउ पूयं ॥ १५ ॥
 सा एव भणिय सन्ती, पडिहारी किंकरण आएसं । देइ विहसन्तवयणा, तेहिं पि पडिच्छिया आणा ॥ १६ ॥
 अह तेहि पुरवरीए, घुट्टं चिय सामियस्स वयणं तं । सोऊण सबलोओ, जिणपूयाउज्जओ जाओ ॥ १७ ॥
 एत्तो जिणभवणाइं जणेण संमज्जिओवल्लिआइं । कयवन्दणमालाइं, वरकमलसमच्चियतलाइं ॥ १८ ॥

आज मैंने स्वप्नमें देखा कि गहरे केसरी रंगके कारण अरुण शोभावाने दो शरभ मेरे मुखमें प्रविष्ट हुए हैं और मैं विमानमें से नीचे गिर पड़ी हूँ । (२-३) इस पर रामने कहा कि हे भद्रे ! शरभोंके दर्शनसे तुम्हें सुन्दर आकृतिवाले दो पुत्र शीघ्र ही होंगे । (४) विमान परसे जो तुम गिरी, वह सुन्दर स्वप्न नहीं था । हे प्रसन्नाक्षी ! सभी ग्रह तुम्हें सदा अनुकूल हों । (५)

उस समय वृत्तोंको प्रसन्न करनेवाला तथा पल्लव, किसलय, नये अंकुर, पुष्प एवं फलोंको पैदा करनेवाला वसन्तमास आया । (६) अंकोल वृक्ष रूपी तीक्ष्ण नाखूनवाला, मल्लिकारूपी नेत्रवाला, अशोकपत्ररूपी जीभवाला, कुरवकरूपी कराल दाँत वाला, आमके केसररूपी अरुणमासे युक्त, पुष्पोंकी रजरूपी पीले शरीरवाला तथा अतिमुक्तकलता रूपी ऊपर उठे हुए पंजोंवाला—ऐसा वसन्तरूपी सिंह गजपतिभोंको भय देता हुआ आया । (७-८) कोयलके बोलनेसे गीतयुक्त, भौरोंकी गुनगुनाहटसे झंझूत, कुसुमरजसे समस्त दिशाओंको पीली-पीली बनानेवाला, नानाविध वृत्तोंसे छाया हुआ, उत्तम पुष्पोंसे अचित एवं फलसे समृद्ध ऐसा महेन्द्रोदय उद्यान नन्दनवनकी भाँति शोभित हो रहा था । (९-१०)

ऐसे समयमें प्रथम गर्भकी उत्पत्तिसे सीता मन्द उत्साहवाली तथा अतिशय क्षीणशरीर हो गई । (११) उसे रामने कहा कि, प्रिये ! तेरे हृदयमें क्या है ? दोहदके परिणामस्वरूप जो पदार्थ तुम्हें चाहिए वह मैं तुम्हें ला दूँ । (१२) तब याद करके सीताने कहा कि, हे नाथ ! आपके अनुग्रह से मैं बहुतसे जिनमन्दिरोंके दर्शन और वन्दन करना चाहती हूँ । (१३) उसका कहना सुन रामने प्रतिहारिसे कहा कि, अत्यन्त वैभवके साथ जिनमन्दिरोंकी शोभा कराओ । (१४) सभी नगरजन उस उत्तम महेन्द्रोदय उद्यानमें जायँ और वैभवके साथ जिनालयोंकी पूजा करें । (१५) इस प्रकार कही गई हैसमुखी प्रतिहारीने नौकरोंको आदेश दिया । उन्होंने भी आज्ञा धारण की । (१६) उन्होंने नगरीमें घोषणा की । राजाका वचन सुनकर सब लोग जिनपूजाके लिए उद्यत हुए । (१७) तब लोगोंने जिनभवनोंको बुहारकर लीपा, वन्दनयार बोंधे तथा उत्तम कमलोंसे भूमिको अलंकृत किया । (१८) रत्नमय पूर्णकलश जिनमन्दिरोंके द्वारोंमें स्थापित किये गये तथा उत्तम चित्रकर्मसे

१. विणएणं—मु० ।

दारिसु पुण्णकलसा, परिठविया जिणहराणं रयणमया । वरचित्तयम्मपउरा, पसारिया पट्टया बहवे ॥ १९ ॥
 ऊसविया भयनिवहा, रइयाणि वियाणयाइ विविहाई । मोत्तियओऊलाई, लम्बूसादरिससोहाई ॥ २० ॥
 पूया कया महन्ता, नाणाविहजलय-थलयकुसुमेहिं । सवाण जिणहराणं, अट्टावयसिहरसरिसाणं ॥ २१ ॥
 तूराइ बहुविहाई, षहयाई मेहसरिसघोसाई । गन्धवाणि य विहिणा, महुरसराई पगीयाई ॥ २२ ॥
 उवसोहिए समत्थे, उज्जाणे नन्दणोवमे रामो । पविसइ जुवइसम्मगो, इन्द्रो इव रिद्धिसंपत्तो ॥ २३ ॥
 नारायणो वि एवं, महिल्लसहिओ जणेण परिकिण्णो । तं चेव वरुज्जाणं, उवगिज्जन्तो समणुपत्तो ॥ २४ ॥
 एवं जणेण सहिया, हल्लहर-नारायणा तहिं चेव । आवासिया समत्था, देवा इव भद्दसालवणे ॥ २५ ॥
 पउमो सीयाएँ समं, जिणवरभवणाण वन्दणं काउं । सद्-रस-रूवमाई, भुञ्जइ देवो व विसयसुहं ॥ २६ ॥
 सबो वि नायरज्जो, जिणवरपूयासमुज्जओ अहियं । जाओ रइसंपत्तो, तत्थुज्जाणम्मि अणुदियहं ॥ २७ ॥

एवं जिणिन्दवरसासणभत्तिमन्तो, पूयापरायणमणो सह सुन्दरीसु ।

तत्थेव काणणवणे पउमो पहट्ठो, पत्तो रइं विमलकन्तिधरो महप्पा ॥ २८ ॥

॥ इइ पउमचरिए जिणपूयाडोहैल्लविहाणं नाम बाणउयं पव्वं समत्तं ॥

९३. जणचितापव्वं

अह त्थ वरुज्जाणे, महिन्दउदए ठियस्स रामस्स । तण्हाइया पवत्ता, दरिसणकङ्खी पया सवा ॥ १ ॥
 एत्थन्तरमि सीया, सुहासणत्थस्स पउमनाहस्स । साहेइ विन्डियमई, फुरमाणं दाहिणं चक्खुं ॥ २ ॥

प्रचुर बहुतसे पट बाँधे गये । (१६) ध्वजसमूह फहराये गये । स्तनमय नानाविध वितान, मोतीसे भरे हुए प्रालंब (लटकते हुए वस्त्र) तथा लम्बूप एवं दर्पणोंसे वे शोभित थे । (२०) अष्टापदके शिखरके समान अत्युन्नत सध जिनमन्दिरोंकी जलमें तथा स्थलमें पैदा होनेवाले पुष्पोंसे बड़ी भारी पूजा की गई । (२१) मेघके समान घोषवाले अनेक प्रकारके वाद्य बजाये गये तथा मधुर स्वरवाले गीत विधिवत् गाये गए । (२२) इन्द्रके समान ऋद्धिसम्पन्न रामने युवतियोंके साथ नन्दनवनके समान समप्ररूपसे अलंकृत उस उद्यानमें प्रवेश किया । (२३) इसीप्रकार स्त्रियोंके साथ, लोगोंसे घिरा हुआ गाया जाता नारायण (लक्ष्मण) भी उसी उत्तम उद्यान में आ पहुँचा । (२४) इस प्रकार भद्रराल वनमें रहने वाले देवों की भाँति राम और लक्ष्मण भी उसी उद्यान में सबके साथ ठहरे । (२५) सीताके साथ राम जिनमन्दिरोंमें वन्दन करके देवकी भाँति शब्द, रस और रूप आदिका उपभोग करने लगे । (२६) उस उद्यानमें जिनवरकी पूजामें उद्यत सभी नगरजन दिन-प्रतिदिन अधिक अनुरक्त हुए । (२७) इस प्रकार जिनैन्द्रके शासनमें भक्तियुक्त, पूजामें लीन मग्नवाले तथा विमल कान्तिको धारण करनेवाले आनन्दित महात्मा रामने उस उद्यानमें सुख प्राप्त किया । (२८)

॥ पञ्चरितमें जिनपूजाका दोहद-विधान नामक बानवेवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

९३. लोगोंकी चिन्ता

महेन्द्रोदय उद्यानमें जब राम ठहरे हुए थे तब तृपितकी भाँति दर्शनके लिये उत्कण्ठित सारी प्रजा वहाँ आई । (१) उस समय विस्मित बुद्धिवाली सीताने सुखासन पर स्थित रामसे फड़कती दाहिनी आँखके वारेमें कहा । (२) वह मनमें

१. ०ण कणयमया—प्रत्य० । २. ०हयाभिहाणं—प्रत्य० । ३. ०मणा फुरमाणं दाहिणं आच्छि—प्रत्य० ।

चिन्तेइ तो मणेणं, कस्स वि दुक्खस्स आगमं एयं । चक्खुं साहेइ धुवं, पुणो पुणो विप्फुरन्तं मे ॥ ३ ॥
 एक्केण न संतुट्ठो, जं पत्ता सायरन्तरे दुक्खं । दिवो अहेउयअरी, किं परमं काहिई अन्नं ? ॥ ४ ॥
 भणिया भाणुमईए, किं व विसायं गया जणयधूए ! ? । जं जेण पावियबं, तं सो अणुहवइ सुह-दुक्खं ॥ ५ ॥
 गुणमाला भणइ तओ, किं वि कयाए इहं वियक्काए । विरएहि महापूर्यं, जिणवरभवणाण वइदेहि ! ॥ ६ ॥
 तो ते होही सन्ती, संजम-तव-नियम-सीलकल्याए । जिणभत्तिभावियाए, साहूणं वन्दणपराए ॥ ७ ॥
 भणिऊण एवमेयं, जणयसुया भणइ कञ्चुइं एत्तो । भद्दकलसं ति नामं, आणवइ इमेण अत्थेणं ॥ ८ ॥
 होऊण अण्णमत्तो, पइदियहं देहि उत्तमं दाणं । लोगो वि कुणउ सबो, जिणवरपूयाभिसेयाई ॥ ९ ॥
 सो एव भणियमेत्तो, दाणं दाऊण गयवरारूढो । घोसेइ नयरमज्जे, जं भणियं जणयधूयाए ॥ १० ॥
 इह पुरवरोए लोगो, होऊणं सील-संजमुज्जुत्तो । कुणउ जिणचेइयाणं, अहिसेयादी महापूर्यं ॥ ११ ॥
 सोऊण वयणमेयं, जणेण सिम्वं जिणिन्दभवणाइं । उवसोहियाइ एत्तो, सबुवगरणेहि रम्भाइं ॥ १२ ॥
 खीर-दहि-सप्पिपउरा, पवत्तिया जिणवराण अभिसेया । बहुमङ्गलवगीया, तूररकुच्छलियजयसहा ॥ १३ ॥
 सीया वि य जिणपूर्यं, करेइ तव-नियम-संजमुज्जुत्ता । ताव य पया समत्था, पउमव्भासं समणुपत्ता ॥ १४ ॥
 जयसहकयारावा, पडिहारनिवेइया अह पविट्ठा । आबद्धञ्जलिमउला, पणमइ पउमं पया सवा ॥ १५ ॥
 अह तेण समालत्ता, मयहरया जे पयाए रमेणं । साहह आगमकज्जं, मणसंखोभं पमोत्तूणं ॥ १६ ॥
 विजओ य सूरदेवो, मैहुगन्धो पिङ्गलो य सुलधरो । तह कासवो य कालो, खेमाई मयहरा एए ॥ १७ ॥
 अह ते सज्झसहियया, कम्पियचलणा न देन्ति उल्लवं । पउमस्स पभावेणं, अहोमुहा लज्जिया जाया ॥ १८ ॥
 संथाविऊण पुणरवि, पुच्छइ आगमणकारणं रामो । साहह मे वीसत्था, पयहिय सबं भउबेयं ॥ १९ ॥

सोचने लगी कि बार बार फड़कती हुई मेरी यह आँख अवश्य ही किसी दुःखका आगमन कहती है । (३) समुद्रके बीच जो दुःख प्राप्त किया था उस एकसे सन्तुष्ट न होकर बिना कारण कार्य करनेवाला दैव दूसरा अधिक क्या करेगा ? (४) भानुमतीने कहा कि सीता ! तुम क्यों विषण्ण हो गई हो । जिसे जो सुख-दुःख पाना होता है, उसे वह पाता है । (५) तब गुणमालाने कहा कि यहाँ वितर्क करनेसे क्या फायदा ? हे दैदेही ! जिनवरके मन्दिरोंमें बड़ी भारी पूजा रचो । (६) तब संयम, तप, नियम एवं शीलसे युक्त, जिनकी भक्तिसे भावित तथा साधुओं को वन्दन करनेमें तत्पर तुम्हें शान्ति होगी । (७) इस प्रकार कहने पर सीताने भद्रकलश नामक कंचुकीसे कहा । उसने इस मतलबकी आज्ञा दी कि तुम अप्रसन्न होकर प्रतिदिन उत्तम दान दो और सब लोगोंको जिनवरकी पूजा और अभिषेक आदिमें तत्पर करो । (८-९) इस तरह कहने पर दान देकर और हाथी पर सवार हो सीताने जो कहा था उसकी उसने नगरमें घोषणा की कि इस नगरमें लोग शील एवं संयममें उद्यत हो जिनचैत्योंकी अभिषेक आदि महापूजा करें । (११) यह वचन सुनकर लोगोंने शीघ्र ही रम्य जिनन्द्रभवनोंको सब उपकरणों से सजाया । (१२) जिनवरोंका प्रचुर दूध, दही और घीसे अभिषेक किये गये, बहुतसे मंगलगीत गाये गए तथा बाद्योंकी ध्वनिके साथ जयघोष किया गया । (१३) तप, नियम और संयमसे युक्त सीताने भी जिनपूजा की ।

उस समय सारी प्रजा रामके पास आई । (१४) जयशब्दका उद्घोष करनेवाली तथा प्रतिहारीके द्वारा निवेदित सारी प्रजाने प्रवेश किया । उसने सिर पर हाथ जोड़कर रामको प्रमाण किया । (१५) उन रामने प्रजाके जो अगुए थे उन्हें कहा कि मनके संचोभका त्याग करके आगमन का प्रयोजन कहो । (१६) विजय, सूर्यदेव, मधुगन्ध, पिंगल, शूलधर, काश्यप, काल तथा जेम—आदि ये अगुए थे । (१७) हृदयमें भीत और काँपते हुए पैरोवाले वे बोलते नहीं थे । रामके प्रभावसे मुँह नीचा करके वे लज्जित हो गये । (१८) सान्त्वना देकर पुनः रामने उनके आगमनका कारण पूछा कि विश्वस्त हो तथा भय एवं

१. अच्छि सा०—प्रत्य० । २. महमत्तो पि०—प्रत्य० ।

एव परिपुच्छियाणं, ताणं चिय भणइ मयहरो एको । सामिय अभएण विणा, अहं वाया न निक्खमइ ॥ २० ॥
 तो भणइ पउमनाहो, न किंचि भयकारणं हवइ तुज्झं । उल्लवह सुवीसत्था, मोत्तूणं सज्जसुबेयं ॥ २१ ॥
 लद्धम्मि तओ अभए, विजओ पत्थावियक्खरं वयणं । जंपइ कयल्लिखुडो, सामिय ! वयणं सुणसु अहं ॥ २२ ॥
 सामिय ! इमो समत्थो, पुहइजणो पावमोहियमईओ । परदोसग्गहणरओ, सहाववंको य सदसीलो ॥ २३ ॥
 जंपइ पुणो पुणो चिय, नह सोया रक्खसाण नाहेणं । हरिऊणं परिमुत्ता, इहाणिया तहवि रामेणं ॥ २४ ॥
 उज्जाणेषु धरेसु य, तलयवावीसु जणवओ सामी । सीयाअववायकहं, मोत्तूणं न जंपए अन्नं ॥ २५ ॥
 दसरहनियस्स पुत्तो, रामो तिसमुद्दमेइणीनाहो । लक्काहिवेण हरियं, कह पुण आणेइ जणयसुयं ? ॥ २६ ॥
 नूणं न एत्थ दोसो, परपुरिसपसत्तियाएँ महिलाए । जेण इमो पउमाभो, सीया धारेइ निययधरे ॥ २७ ॥
 जारिसकम्मायारो, हवइ नरिन्दो इहं वसुमईए । तारिसनिओगनिरओ, अहियं चिय होइ सबजणो ॥ २८ ॥
 एव भणन्तस्स पभू, जणस्स अइदुट्टपावहिययस्स । राहव ! करेहि संपइ, अइरा वि य निग्गहं घोरं ॥ २९ ॥
 सोऊण वयणमेयं, वज्जेण व ताडिओ सिरं रामो । लज्जाभरोत्थयमणो परमविसायं गओ सहसा ॥ ३० ॥
 चिन्तेऊण पवत्तो, हा ! कहं कारणं इमं अन्नं । जायं अइदुबिसहं, सीयाअववायसंवन्धं ॥ ३१ ॥
 जीए कएण रणे, अणुहयं विरहदारुणं दुक्खं । सा सीया कुलयन्दं, मह अयसमलेण मइलेइ ॥ ३२ ॥
 जीसे कज्जेण मए, विवाइओ रक्खसाहिवो समरे । सा मज्झ अयसमइलं, सीया जसदप्पणं कुणइ ॥ ३३ ॥
 जुत्तं चिय भणइ जणो, जा परपुरिसेण अत्तणो गोहे । नीया पुणो वि य मए, इहाणिया मयणमूढेणं ॥ ३४ ॥
 अहवा को जुवईणं, जाणइ चरियं सहावकुडिलणं । दोसाण आगरो चिय, जाण सरीरे वसइ कामो ॥ ३५ ॥

उद्वेगका परित्याग करके मुझे कहो । (१९) इस प्रकार पूछने पर उनमेंसे एक अगुपने कहा कि, हे स्वामी ! अभयके बिना हमारी वाणी नहीं निकलती । (२०) तब रामने कहा कि तुम्हें भयका कोई कारण नहीं है । विश्वस्त होकर और भय एवं उद्वेगका परित्याग करके कहो । (२१)

अभय प्राप्त होने पर हाथ जोड़े हुए विजयने कथनको बराबर व्यवस्थित करके कहा कि हे स्वामी ! हमारा कहना आप सुनें । (२२) हे स्वामी ! पृथ्वी परके सब लोग भव बंधनसे मोहित बुद्धिवाले, दूसरोंके दोषग्रहणमें रत, स्वभावसे ही टेढ़े और राठ आचरणवाले होते हैं । (२३) ये बार बार कहते हैं कि राक्षसोंके स्वामी रावणने अपहरण करके सीताका उपभोग किया है, किन्तु फिर भी राम उसे यहाँ लाये हैं । (२४) हे स्वामी ! उद्यानोंमें, घरोंमें तथा तालावों और बावड़ियों पर सीताके अपवादकी कथाको छोड़कर लोग दूसरा कुछ दोलते नहीं हैं । (२५) तानों और समुद्रसे घिरी हुई पृथ्वीके स्वामी दशरथपुत्र राम लंकेश रावण द्वारा अपहृत सीताको पुनः क्यों लाये हैं ? (२६) वस्तुतः परपुरुषमें प्रसक्त महिलाका इसमें दोष नहीं है, क्योंकि ये राम सीताको अपने घरमें रखे हुए हैं । (२७) इस पृथ्वी पर राजा जैसे कर्म और आचारवाला होता है वैसे ही कार्यमें और भी अधिक निरत सब लोग होते हैं । (२८) हे प्रभो राघव ! ऐसा कहनेवाले अतिदुष्ट और पापीहृदयी लोगोंका आप अब जल्दी ही घोर निग्रह करें । (२९)

ऐसा वचन सुनकर मानो वज्रसे सिर ताडित हुआ हो ऐसे राम लज्जाके भारसे खिन्न हो एकदम अत्यन्त दुःखी हो गए । (३०) वे सोचने लगे कि अफसोस है ! सीताके अपवादके बारेमें यह दूसरा एक अत्यन्त दुःसह कारण उपस्थित हुआ । (३१) जिसके लिए अरण्यमें दारुण विरह-दुःख भोगा वह सीता मेरे कुलरूपी चन्द्रको अयशरूपी मलसे मलिन करती है । (३२) जिसके लिए मैंने युद्धमें राजसराजको मारा वह सीता मेरे यशरूपी दर्पण को अपयश से मलिन करती है । (३३) लोग ठीक ही कहते हैं कि परपुरुषके द्वारा जो अपने घरमें ले जाई गई थी उसीको कामविमोहित मैं यहाँ लाया हूँ । (३४) अथवा जिनके शरीरमें दोषोंकी खान जैसा काम बसता है उन स्वभावसे कुटिल युवतियोंका चरित कौन जान

१. ०ऊण य प०—प्रत्य० । २. हु—प्रत्य० ।

मूलं दुच्चरियाणं, हवइ य नरयस्स वत्तणी विउल्ल । मोक्खस्स महाविग्घं, वज्जेयवा सया नारी ॥ ३६ ॥
 धन्ना ते वरपुरिसा, जे च्चिय मोत्तूण निययजुवईओ । पवइया कयनियमा, सिवमयलमणुत्तरं पत्ता ॥ ३७ ॥
 एयाणि य अन्नाणि य, चिन्तेन्तो राहवो बहुविहाई । न य आसणे न सयणे, कुणइ धिई नेव वरभवणे ॥ ३८ ॥
 नेहा-उववायभयसंगयमाणसस्स, वामिस्सतिव्वरसवेयवसीकयस्स ।
 रामस्स धीरविमलस्स वि तिबदुक्खं, जायं तथा जणयरायसुयानिमित्तं ॥ ३९ ॥
 ॥ इइ पउमचरिए जणचिन्ताविहाणं नाम तेणउयं पव्वं समत्तं ॥

९४. सीयानिष्वासणपव्वं

अह सो एयट्टमणं, काऊणं लक्खणस्स पडिहारं । पेसेइ पउमनाहो, जणवयपरिवायपरिभीओ ॥ १ ॥
 पडिहारसदिओ सो, सोमिती आगओ पउमनाहं । नमिऊण समवभासे, उवविट्ठो भूमिभागम्मि ॥ २ ॥
 भूगोयरा अणेया, सुहडा सुग्गीवमाइया एत्तो । अन्ने वि जहाजोगं, आसीणा कौउहल्लेणं ॥ ३ ॥
 काऊण समालावं, खणन्तरं लक्खणस्स बलदेवो । साहइ जणपरिवायं, सीयाए दोससंभूयं ॥ ४ ॥
 सुणिऊण वयणमेयं, जंपइ लच्छीहरो परमरुट्ठो । मिच्छं करेमि पुहइ^२, लुयजीहं तक्खणं चेव ॥ ५ ॥
 मेरुस्स चूलिया इव, निक्कम्पा सीलधारिणी सीया । लोएण निग्घिणेणं, कह परिवायग्गिणा दड्ढा? ॥ ६ ॥
 लोयस्स निग्गहं सो, समुच्छहन्तो समहुरवयणेहिं । संथाविओ कणिट्ठो, रामेणं बुद्धिमन्तेणं ॥ ७ ॥

सकता है। (३५) स्त्री दुश्चरितोंका मूल, नरकका विशाल मार्ग और मोक्षके लिए महाविघ्नरूप होती है; अतः स्त्रीका सर्वदा त्याग करना चाहिए। (३६) वे उत्तम पुरुष धन्य हैं जो अपनी युवतियोंका त्याग करके प्रव्रजित हुए हैं तथा नियमोंका आचरण करके अचल एवं अनुत्तर मोक्षमें पहुँच गये हैं। (३७) इन और ऐसे ही दूसरे बहुत प्रकारके विचार करते हुए रामको न आसन पर, न शय्या पर और न उत्तम भवनमें धीरज बँधती थी। (३८) स्नेह और अपवादके भयसे युक्त मानस-वाले तथा एक दूसरेमें मिले हुए तीव्र अनुराग और वेदनाके वशीभूत ऐसे धीर और निर्मल रामको भी जनकराजकी पुत्री सीताके निमित्तसे तीव्र दुःख हुआ। (३९)

॥ पउमचरितमें जनचिन्ताविधान नामक तिरानवेवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

९४. सीताका निर्वासन

लोगों की बदनामीसे भयभीत रामने मनमें निश्चय करके लक्ष्मणके पास प्रतिहारीको भेजा। (१) प्रतिहारीके साथ वह लक्ष्मण आया। रामको प्रणाम करके समीपमें वह जमीन पर खड़ा रहा। (२) भूमि पर विचरण करनेवाले (मानव) सुभट, सुप्रीव आदि तथा दूसरे भी यथायोग्य स्थान पर कुतूहल वश बैठ गये। (३) थोड़ी देर तक बातचीत करके बलदेव रामने लक्ष्मणसे सीताके दोषसे उत्पन्न जनपरिवाद के बारेमें कहा। (४) यह वचन सुनकर अत्यन्त रुष्ट लक्ष्मणने कहा कि मैं फौरन ही मिथ्याभाषी पृथ्वीको छिन्न जिह्वावाली बना देता हूँ। (५) शीलधारिणी सीता मेरुकी चूलिकाकी भाँति निष्प्रकम्प है। निर्दय लोगोंने परिवाद रूपी अग्निसे उसे कैसे जलाया है? (६) तब लोक का निग्रह करनेके लिए उत्साह-शील उस छोटे भाईको बुद्धिमान् रामने सुमधुर वचनों से शान्त किया। (७) उन्होंने कहा कि ऋषभ, भरत जैसे इक्ष्वाकुलके

१. जंपइ जण०—प्रत्य० । २. ०इ हयजीहं तक्खणं सव्वं—प्रत्य० ।

उसभ-भरहोवमेहिं, इक्खागकुलुत्तमेहिं वहवेहिं । लवणोयहिपेरन्ता, भुत्ता पुहई नरिन्देहिं ॥ ८ ॥
 आइच्चनसार्इणं, निवईण रणे अदिन्नपिट्ठीणं । ताण जसेण तिहुयणं, अलंकिर्यं वित्थयवलेणं ॥ ९ ॥
 एयं इक्खागकुलं, ससिकरधवलं तिलोयविकखायं । मज्झ घरिणीएँ लक्खणं, कलङ्कियं अयसपङ्केणं ॥ १० ॥
 ताव य किंचि उवायं, करेहि सोमिच्चि । कालपरिहीणं । जाव न वि हवइ मज्झ वि, दोसो सीयाववाएणं ॥ ११ ॥
 अबि परिचयामि सीयं, निदोसं जइ वि सीलसंपन्नं । न य इच्छामि खणेकं, अकिच्चिमलकलुसियं जीयं ॥ १२ ॥
 अह भणइ लच्छिनिलओ, नरवइ । मा एव दुक्खिओ होहि । पिसुणवयणेण संपइ, मा चयसु महासइं सीयं ॥ १३ ॥
 लोगो कुडिलसहावो, परवोसग्गहणनिययत्तिल्लो । अज्जवज्जणमच्छरिओ, दुग्गाहहियओ पट्टो य ॥ १४ ॥
 भणइ तओ बलदेवो, एव इमं जह तुमं समुल्लवसि । किं पुण लोगविरुद्धं, अयसकलङ्कं न इच्छामि ॥ १५ ॥
 किं तस्स कीरइ इहं, समत्थरज्जेण जीविणं वा । जस्स पवादो बहुओ, भमइ चियं णं सया अयसो ? ॥ १६ ॥
 किं तेण भुयवलेणं, भीयाणं जं भयं न वारेइ ? । नाणेण तेण किं वा, जेणऽप्पाणं न विज्जायं ? ॥ १७ ॥
 तावऽच्छउ जणवाओ, दोसो मह अत्थि एत्थ नियमेणं । जा परपुरिसेण हिया, निययघरं आणिया सीया ॥ १८ ॥
 पउमुज्जाणटियाए, जाइज्जन्तीएँ रवस्ससिन्देणं । सीयाएँ निच्छएणं, तं चिय अणुमन्नियं वयणं ॥ १९ ॥
 एवं समाउलमणो, सेणाणीयं कयन्तवयणं सो । आणवइ गन्धिणीयं, सीयं छड्डेहि आरण्णे ॥ २० ॥
 एव भणिए पवुत्तो, सोमिच्चि राहवं कयणामो । न य-देव ! तुज्झ जुत्तं, परिचइज्जणं जणयधूयं ॥ २१ ॥
 परपुरिसदरिसणेणं, न य दोसो हवइ नाह । जुवईणं । तन्हा देव । पसज्जसु, मुञ्चसु एयं असग्गाहं ॥ २२ ॥
 पउमो भणइ कणिट्ठं, एत्तो पुरओ न किञ्चि वत्तवं । छड्डेमि निच्छएणं, सीयं अववायभीओ हं ॥ २३ ॥

बहुतसे उत्तम राजाओंने लवणसागर तककी पृथ्वीका उपभोग किया है । (८) विस्तृत सैन्यवाले तथा युद्धमें पीठ न देने-वाले आदित्ययशा आदि राजा हुए हैं । उनके यशसे त्रिभुवन अलंकृत हुआ है । (९) हे लक्ष्मण ! चन्द्रमाकी किरणोंके समान धवल तथा त्रिलोकमें विख्यात ऐसे इक्ष्वाकुकुलको मेरी स्त्रीने अयशके पंक्से मलिन किया है । (१०) हे लक्ष्मण ! सीताके अपवादसे जबतक मुझे दोष नहीं लगता तब तक, समय बीतनेसे पहले, तुम कोई उपाय करो । (११) यदि सीता नीर्दोष और शीलसम्पन्न हो तो भी मैं उसका त्याग कर सकता हूँ, किन्तु अपयशके मलसे कलुषित जीवन में एक क्षणके लिए भी नहीं चाहता । (१२) इस पर लक्ष्मण ने कहा कि, हे राजन् ! आप इस तरह दुःखी न हों । दुर्जनोके वचनसे इस समय आप महासती सीताका त्याग न करें । (१३) लोग तो कुटिल स्वभावके, दूसरेके दोषोंको ग्रहण करनेमें सदैव तत्पर, सरल लोगोंके द्वेषी, हृदयमें दुराग्रहयुक्त तथा अतिदुष्ट होते हैं । (१४) तब बलदेव रामने कहा कि तुम जैसा कहते हो वैसा ही है, फिर भी लोकविरुद्ध अपयशका कलंक मैं नहीं चाहता । (१५) इस संसारमें लमस्त राव्य या जीवनको लेकर वह व्यक्ति क्या करे जिसके कि अयशका प्रवाद सदा घूमता हो । (१६) उस भुजबलका क्या फायदा जो भयभीत लोगोंके भयका निवारण नहीं करता । उस ज्ञानसे क्या लाभ जिससे आत्मा न पहचानी जाय । (१७) लोकप्रवादकी बात तो दूर रही । परपुरुष द्वारा जो अपहृत थी उस सीताको मैं अपने घरमें लाया हूँ इसीमें वस्तुतः मेरा दोष रहा है । (१८) पद्मो-द्यानमें स्थित और राक्षसेन्द्र रावणके द्वारा याचित सीताने अवश्य ही उसके वचनको मान्य रखा होगा । (१९)

तब मनमें व्याकुल रामने कृतान्तवदन नामक सेनापतिको आज्ञा दी कि गर्भिणी सीताको अरण्यमें छोड़ दो । (२०) ऐसा कहने पर लक्ष्मणने प्रणाम करके रामसे कहा कि हे देव ! सीताका परित्याग करना आपके लिए ठीक नहीं है । (२१) हे नाथ ! परपुरुषके दर्शनसे युवतियोंको दोष नहीं लगता । अतः हे देव ! आप प्रसन्न हों और इस असदाग्रहका त्याग करें । (२२) इस पर रामने छोटे भाईसे कहा कि इससे आगे कुछ भी मत बोलना । अपवादसे भीत मैं अवश्य ही सीताका परित्याग करूँगा । (२३) बड़े भाईका निश्चय जान वह लक्ष्मण अपने घर पर गया । तब कृतान्तवदन रथ पर

१. ०लुभवेहिं बहुएहिं—प्रत्य० । २. अदिद्वपिट्ठीणं—मु० । ३. सीयं—प्रत्य० । ४. ०य तिहुयणे अयसो—मु० ।

६२

जेट्टस्स निच्छयं सो, नाऊणं लक्खणो गओ सगिहं । ताव य कयन्तवयणो^१, समागओ रहवराहूढो ॥ २४ ॥
 सन्नद्धवद्धकवयं, जन्तं सेणावई पलोएउं । जंपइ जणो महल्लं, कस्स वि अवराहियं जायं ॥ २५ ॥
 संपत्तो य खणेणं, पउमं विन्नवइ पायवडिओ सो । सामिय ! देहाणत्ति, जा तुज्झ अवट्टिया हियए ॥ २६ ॥
 तं भणइ पउमनाहो, सोयाएँ डोहलाहिल्यासाए । दावेहि जिणहराई, सम्मेयाईसु बहुयाई ॥ २७ ॥
 अडविं सीहनिगायं, बहुसावयसंकुलं परमघोरं । सीयं मोत्तूण तहिं, पुणरवि य लहुं नियत्तेहि ॥ २८ ॥
 जं आणवेसि सामिय !, भणिउणं एव निग्गओ सिग्घं । संपत्तो कयविणओ, कयन्तवयणो भणइ सीयं ॥ २९ ॥
 सामिणि ! उट्टेहि लहुं, आरूहसु रहं करेसु नेवच्छं । वन्दसु जिणभवणाई, पुहइयले लोगपुजाइ ॥ ३० ॥
 सेणावईण एवं, जं भणियां जाणई तओ तुट्ठा । सिद्धाण नमोक्कारं, काऊण रहं समाहूढा ॥ ३१ ॥
 जं किंचि पमाएणं, दुच्चरियं मे कयं अपुण्णाए । भरिसन्तु तं समत्थं, जिणवरभवणट्टिया देवा ॥ ३२ ॥
 आपुच्छिऊण सयलं, सहीयणं परियणं च वइदेही । जंपइ जिणभवणाई, पणमिय सिग्घं नियत्तामि ॥ ३३ ॥
 एत्थन्तरे रहो सो, कयन्तवयणेण चोइओ सिग्घं । चउतुरयसमाउत्तो, वच्चइ मणपवणंसमवेगो ॥ ३४ ॥
 अह सुकतरुवरत्थं, दित्तं पक्खावलिं विहुणमाणं । दाहिणपासम्मि ठियं, पेच्छइ रिट्ठं करयन्तं ॥ ३५ ॥
 सुराभिमुही नारी, विमुक्केसी बहुं विलवमाणी । तं पेच्छइ जणयसुया, अन्नाइ वि दुण्णिमित्ताई ॥ ३६ ॥
 निमिसियमेत्तेण रहो, उल्लङ्घइ जोयणं पवणवेगो । सीया वि पेच्छइ मँहिं, गामा-उगर-नगर-षडिपुण्णं ॥ ३७ ॥
 सा एवं वच्चन्ती, निज्झरणाई च सलिलपुण्णाई । पेच्छइ सराइ सीया, वरपक्कयकुसुमछन्नाई ॥ ३८ ॥
 कत्थइ तरुणगगहणं, पेच्छइ सा सवरीतमसरिच्छं । कत्थइ पायवरहियं, रण्णं चिय रणरणायन्तं ॥ ३९ ॥

सवार हो आ गया । (२४) तैयार हो कबच पहने हुए सेनापतिको जाते देख लोग कहने लगे कि किसीने बड़ा भारी अपराध किया है । (२५) क्षण भरमें वह आ पहुँचा । पैरोंमें गिरे हुए उसने रामसे विनती की कि, हे स्वामी ! आपके हृदयमें जो हो उसके बारेमें आप मुझे आज्ञा दें । (२६) उसे रामने कहा कि दोहदकी अभिलाषावाली सीताको सम्मेलितशिखर आदिमें बहुत-से जिनमन्दिरोंका दर्शन कराओ । (२७) वहाँ सिंहके निनादसे निनादित, अनेक जंगली जानवरोंसे भरे हुए और अत्यन्त घोर अटवीमें सीताको छोड़कर तुम जल्दी ही वापस लौटो । (२८) हे स्वामी ! जैसी आज्ञा । ऐसा कहकर वह जल्दी ही बाहर आया । सीताके पास पहुँचकर विनयपूर्वक कृतान्तवदनने कहा कि, स्वामिनी ! आप जल्दी उठें, वस्त्र परिधान करें, रथ पर आरूढ़ हों और पृथ्वीतल पर आये हुए लोकपूज्य जिनभयनोंको वन्दन करें । (२९-३०) सेनापतिके द्वारा ऐसा कहने पर जानकी प्रसन्न हुई और सिद्धोंको नमस्कार करके रथ पर आरूढ़ हुई । (३१) उसने मन ही मन कहा कि अपुण्यशालिनी मैंने प्रमादवश जो दुश्चरित किया हो उसे जिनमन्दिरोंमें रहे हुए समस्त देव चामा करें । (३२) सभी सखियों और परिजनोंकी अनुमति लेकर सीताने कहा कि जिनभयनोंको वन्दन करके मैं शीघ्र ही वापस आ जाऊँगी । (३३)

तब कृतान्तवदनने वह रथ जल्दी चलाया । चार घोड़ोंसे युक्त तथा मन और पवनके वेगके जैसा तेज वह रथ चल पड़ा । (३४) उसने सूखे पेड़ पर बैठे हुए, गर्वित, पँख फड़फड़ाते, दाहिनी ओर स्थित और काँव-काँव करते हुए एक कौवेको देखा । (३५) सूर्यकी ओर अभिमुख, बाल बिखरे हुई और बहुत विलाप करती हुई खी तथा दूसरे दुर्निमित्तोंको सीताने देखा । (३६) निमिषमात्रमें पवनवेग रथ एक योजन लाँच गया । सीताने भी ग्राम, आकर, नगरसे युक्त ऐसी पृथ्वी देखी । (३७)

इस प्रकार जाती हुई उस सीताने पानीसे भरे भरने तथा सुन्दर कमल पुष्पोंसे आच्छन्न सरोवर देखा । (३८) उसने कहीं पर रात्रिके अन्धकारके समान सघन वृक्षोंसे युक्त वन देखा, तो कहीं पर वृक्षोंसे रहित और आहें भरता हुआ

१. ओणो उच्चलिओ २०—प्रत्य० । २. करेहि वे०—प्रत्य० । ३. ०या महिलिया तयो—मु० । ४. ०पवेगो सो—प्रत्य० ।
 ५. मही, बहुसावयसंकुलं भीमं—मु० ।

कथइ वणदवदहूं, रणां मसिधूमधुलिधूसरियं । कथइ नीलदुमवणं, पवणाहयपचलियदलोहं ॥ ४० ॥
 किलिकिलिकिलन्त कथइ, नानाविहमिलियसउणसंधई । कथइ वाणरपउरं, बुकारुत्तसियमयजूहं ॥ ४१ ॥
 कथइ सावयवहुविह-अचोत्रावडियजुञ्जसद्दालं । कथइ सीहभउद्दुय-चवलपलायन्तगयनिवहं ॥ ४२ ॥
 कथइ महिसोरिङ्गियं, कथइ डुहुडुहुडुहन्तनइसलिलं । कथइ पुलिन्दपउरं, सहसा छुच्छु त्ति कयवोलं ॥ ४३ ॥
 कथइ वेणुसमुट्टिय-फुलिङ्गजालाउलं धगधगेन्तं । कथइ खरपदणाहय-कडयडमज्जन्तदुमगहणं ॥ ४४ ॥
 कथइ किरि त्ति कथइ, भिरि त्ति कथइ छिरि त्ति रिंछाणं । सद्दो अइघोरयरो, भयजणओ सबसत्ताणं ॥ ४५ ॥
 एयारिसविणिओगं, पेच्छन्ती जणयनन्दणी रण्णं । वच्चइ रहमारूढा, सुणइ यु अइमहुरयं सद्दं ॥ ४६ ॥
 सीया कयन्तवयणं, पुच्छइ किं राहवस्स एस सरो । तेण वि य समवस्सायं, सामिणि ! अह जण्हवीसद्दो ॥ ४७ ॥
 ताव च्चिय संपत्ता, वद्देही नण्हवि विमलतोयं । पेच्छइ उभयतडट्टिय-पायवकुसुमाच्चियतरङ्गं ॥ ४८ ॥
 गाह-इस-मगर-कच्छभ-संधट्टुच्छलियवियडकल्लोलं । कल्लोलविट्टुमाहय-निचद्धफेणावलीपउरं ॥ ४९ ॥
 पउरवरकमलकेसर-नलिणीगुञ्जन्तमहुरुगोयं । उग्गीयरवायणिय-सारङ्गनिविट्टुउभयतडं ॥ ५० ॥
 उभयतडहंससारस-चक्रायरमन्तणयपक्खिउलं । पक्खिउलजणियकलरव-समाउलाइण्णगयजूहं ॥ ५१ ॥
 गयजूहसमायङ्गिय-विसमसमुवेल्लकमलसंधायं । संधायजलमूरिय-निज्जरणझरन्तसद्दालं ॥ ५२ ॥
 एयारिसगुणकलियं, पेच्छन्ती जणयनन्दणी गङ्गं । उत्तिण्णा वरतुरया, परकूलं चैव संपत्ता ॥ ५३ ॥

मरुस्थल देखा । (३६) कहीं दावानलसे जल हुआ और स्याही और धूआँ जैसी धूलसे धूसरित अरण्य था, तो कहीं पवनसे आहत होने पर जिनके पत्तोंका समूह हिल रहा है ऐसे नीले वृक्षोंका वन था । (४०) कहीं नानाविध पक्षियोंका समूह एकत्रित हो चहचहा रहा था, तो कहीं प्रचुर वानरोंके चिचियानेसे मृगसमूह सन्नस्त था । (४१) कहीं अनेक प्रकारके जंगली जानवरोंके एक-दूसरे परके आक्रामक युद्धसे वन शब्दायमान था, तो कहीं सिंहके भयसे हैरान हो जल्दी जल्दी भागता हुआ गज-समूह था । (४२) कहीं भैंसा डिडकारता था, कहीं नदीका पानी कलकल ध्वनि कर रहा था, कहीं सहसा 'छू-छू' आवाज करनेवाली भीलोंसे वन भरा हुआ था । (४३) कहीं बाँसोंमें उठी हुई अग्निज्वालासे व्याप्त होनेके कारण धग्-धग् आवाज आ रही थी । कहीं तेज हवासे आहत हो वृक्षसमूह कड्-कड् करते हुए टूट रहा था । (४४) कहीं किर, कहीं हिर, तो कहीं छिर—भालुओंकी ऐसी अत्यन्त भयंकर तथा सब प्राणियोंको भय पैदा करनेवाली आवाज आ रही थी । (४५)

ऐसे कार्योंको देखती हुई रथारूढ सीता अरण्यमें से जा रही थी । उस समय उसने एक अतिमधुर ध्वनि सुनी । (४६) सीताने कृतान्तवदनसे पूछा कि क्या वह रामका शब्द है ? इस पर उसने कहा कि, हे स्वामिनी ! यह गंगाकी ध्वनि है । (४७) तब वैदेही निर्मल जलवाली गंगाके पास पहुँची । उसने दोनों किनारों पर स्थित पेड़ोंके फूलोंसे अर्चित तरंगोंवाली गंगाको देखा । (४८) ग्राह, मत्स्य, मगरमच्छ तथा कछुओंके समूहके उल्लसनेसे विकट तरंगोंवाली, तरंगोंमें आये हुए मूँगोंसे आहत, बँधी हुई फेनकी पंक्तिसे व्याप्त, बहुतसे उत्तम कमलोंके केसरमें तथा कमलिनियोंमें गुंजार करनेवाले भौरोंसे गीतमय, गीतकी ध्वनि सुनकर जिसके दोनों तटों पर हिरन बैठे हैं, दोनों तटों पर हंस, सारस, चक्रवाक आदि क्रीड़ा करते हुए अनेक पक्षी-कुलोंसे युक्त, पक्षीकुलसे उत्पन्न कलरवसे व्याकुल एवं खिन्न गज समूहवाली, गज-समूहके द्वारा लींचे गये और ऊपर-नीचे उठते हुए कमल संधातसे व्याप्त, जल-समूहसे भरे और बहते हुए भरनोंसे शब्दायमान—ऐसे गुणोंसे सम्पन्न गंगाको जब सीता देख रही थी तब घोड़ोंने उसे पार कर दिया और वह दूसरे किनारे पर भी पहुँच गई । (४९-५३)

१. •यडुहुडुहियडुहंतगिरिणईसलिलं—प्रत्य० । २. •जणणी—प्रत्य० ।

अह सो कयन्तवयणो, धीरो वि य तत्थ कायरो जाओ । धरिऊण सन्दणवरं, रुवइ तओ उच्चकण्ठेणं ॥५४॥
 तं पुच्छइ वइदेही, किं रुवसि तुमं इहं अकज्जेणं । तेण वि सा पडिभणिया, सामिणि ! वयणं निसामेहि ॥५५॥
 दित्तगिगिससरिच्छं, दुज्जणवयणं प्हू निसुणिऊणं । डोहलयनिभेण तुमं, चत्ता अववायभीएणं ॥ ५६ ॥
 तीए कयन्तवयणो, कहेइ नयराहिवाइयं सबं । दुक्खस्स य आमूलं, जणपरिवायं जहावत्तं ॥ ५७ ॥
 लच्छीहरेण सामिणि !, अणुणिज्जन्तो वि राहवो अहियं । अववायपरिभोओ, न मुयइ एयं असग्गाहं ॥५८॥
 न य माया नेव पिया, न य भाया नेव लक्खणो सरणं । तुज्ज इह महारण्णे, सामिणि ! मरणं तु नियमेणं ॥५९॥
 सुणिऊण वयणमेयं, वज्जेण व ताडिया सिरे सीया । ओयरिय रहवराओ, सहसा ओमुच्छिया पडिया ॥ ६० ॥
 कह कह वि समासत्था, पुच्छइ सेणावइं तओ सीया । साहेहि क्त्थ रामो, केदूरे वा वि साएथा ॥ ६१ ॥
 अह भणइ कयन्तमुहो, अइदूरे कोसला पुरी देवी । अइचण्डसासणं पुण, कत्तो च्चिय पेच्छसे रामं ॥ ६२ ॥
 तह वि य निब्भरनेहा, जंपइ एयाइ मज्झ वयणां । गन्तूण भणियंओ, पउमो सवायरेण तुमे ॥ ६३ ॥
 जह नय-विणयसमग्गो, गम्भीरो सोमदंसणसहावो । धम्मा-उधम्मविहण्णू, सबकलणं च पारगओ ॥ ६४ ॥
 अभवियजणवयणेणं, भीएण दुगुंछणाएँ अइरेणं । सामिय ! तुमे विमुक्का, एत्थ अरण्णे अकयपुण्णा ॥ ६५ ॥
 जइ वि य तुमे महायस !, चत्ता हं पुबकम्मदोसेणं । तह वि य जणपरिवायं, मा सामि ! फुडं गणेज्जासु ॥६६॥
 रयणं पाणितलाओ, कह वि पमाएण सागरे पडियं । केण उवाएण पुणो, तं लब्भइ मग्गमाणेहिं ? ॥ ६७ ॥
 पक्खिविऊण य कूवे, अमयफलं दारुणे तमन्धारे । जह पडिवज्जइ दुक्खं, पच्छायावाहओ बालो ॥ ६८ ॥
 संसारमहादुक्खस्स, माणवा जेण सामि ! मुञ्चन्ति । तं दरिसणं महम्भं, मा मुञ्चहसे जिणुदिट्ठं ॥ ६९ ॥

वहाँ वह कृतान्तवदन धीर होने पर भी कातर हो गया । रथको खड़ा करके वह ऊँचे स्वरसे रोने लगा । (५४) उसे वैदेहीने पूछा कि तुम बिना कारण यहाँ क्यों रोते हो ? उसने भी उसे (सीतासे) कहा कि, हे स्वामिनी ! आप मेरा कहना सुनें । (५५) प्रदीप्त अग्नि और विपतुल्य दुर्जन-वचन सुनकर अपवादके भयसे प्रभुने दोहदके वहाने आपका त्याग किया है । (५६) कृतान्तवदनने जैसा हुआ था वैसा नगरजनोंके अभिवादनसे लेकर सारे दुःखके मूल रूप जनपरिवादको कह सुनाया । (५७) हे स्वामिनी ! लक्ष्मणके द्वारा अनुनय किये जाने पर भी अपवादसे अत्यन्त भयभीत रामने अपना यह असदाग्रह नहीं छोड़ा । (५८) हे स्वामिनी ! इस महारण्यमें आपके न माता, न पिता, न भाई और न लक्ष्मण ही शरणरूप हैं । आपकी यहाँ श्रवश्य मृत्यु हो जायगी । (५९) यह वचन सुनकर मानो सिर पर वज्रसे चोट लगाई गई हो ऐसी सीता रथ परसे उतरी और सहसा मूर्च्छित होकर गिर पड़ी । (६०) किसी तरह होशमें आने पर सीताने सेनापतिसे पूछा कि राम कहाँ है और साकेत कितनी दूर है यह कहो । (६१) इस पर कृतान्तवदनने कहा कि, हे देवी ! साकेतनगरी बहुत दूर है । अत्यन्त प्रचण्ड शासनवाले रामको आप कैसे देख सकोगी ? (६२) फिर भी स्नेहसे भरी हुई उसने कहा कि लौटकर तुम मेरे ये वचन रामसे संपूर्ण आदरके साथ कहना कि हे स्वामी ! नय और विनयसे युक्त, गम्भीर, सौम्य दर्शन और सौम्य स्वभाववाले धर्म-अधर्मके ज्ञाता, सब कलाओंके पारगाभी तुमने अभव्यजनोंके कहनेसे वदनामीसे अत्यन्त डरकर मुझ पापीको इस अरण्यमें छोड़ दिया है । (६३-६५) हे महायशः पूर्वकर्मके दोषसे तुमने यद्यपि मुझे छोड़ दिया है, तथापि हे स्वामी ! आप जन-परिवादको सत्य मत समझना । (६६) किसी तरह प्रमादवश हथेलीमेंसे रत्न समुद्रमें गिर जाय, तो खोजने पर भी वह कैसे प्राप्त हो सकता है ? (६७) भयंकर अन्धकारसे युक्त कूर्ममें अमृतफल फेंककर पश्चात्तापसे पीड़ित मूर्ख जिस तरह दुःख प्राप्त करता है उसी तरहसे, नाथ ! जिससे मनुष्य संसारके महादुःखका परित्याग करते हैं उस जिनेन्द्र द्वारा प्रोक्त अतिमूल्यवान् दर्शनका तुम त्याग मत करना । (६८-६९) जिस अहित (कट्ट)

१. लं सीयाए जं जहा० - मु० । २. तुज्ज इहं अरण्णे, सामिणि ! रणं तु—प्रत्य० । ३. ०यवो गंतुं सव्वा०—प्रत्य० ।

४. अइरेणं—प्रत्य० । ५. एत्थारण्णे कह अउण्णा ?—प्रत्य० ।

जं जस्स अणुसरिच्छं, अहियं तं तस्स हवइ भणियबं । को सयलजणस्स इहं, करेइ मुहबन्धणं पुरिसो ? ॥ ७० ॥
 मह वयणेण भणेज्जसु, सेणावइ ! राहवं षणमिउणं । दाणेण भयसु बलियं, बन्धुजणं पीइजोएणं ॥ ७१ ॥
 भयसु य सीलेण परं, मित्तं सन्भावनेहनिहसेणं । अतिहिं समागयं पुण, मुणिवसहं सबभावेणं ॥ ७२ ॥
 खन्तीएँ जिणसु कोवं, माणं पुण मद्दवप्पओगेणं । मायं च अज्जवेणं, लोभं संतोसभावेणं ॥ ७३ ॥
 बहुसत्थागमकुसलस्स तस्स नय-विणयसंपउत्तस्स । किं दिज्जउ उवएसो, नवरं पुण महिलिया चवला ॥ ७४ ॥
 चिरसंवसमाणीए, बहुदुच्चरियं तु जं कयं सामि ! । तं खमसु मज्झ सबं, मउयसहावं मणं काउं ॥ ७५ ॥
 सामिय ! तुमे समाणं, मह होज्ज न होज्ज दरिसणं नूणं । जइ वि य अवराहसयं, तह वि य सबं खमेज्जासु ॥ ७६ ॥
 सा एव जंपिउणं, पडिया खरककरे धरणिवट्टे । मुच्छानिमीलियच्छी, पत्ता अइदारुणं दुक्खं ॥ ७७ ॥
 दट्टूण धरणिपडियं, सीयं सेणावई विगयहासी । चिन्तेइ इहारणे, कल्लाणी दुक्करं जियइ ॥ ७८ ॥
 धिद्धी किवाविमुक्को, पावो हं विगयलज्जमज्जाओ । जणनिन्दियमायारो, परपेसणकारओ भिच्चो ॥ ७९ ॥
 नियइच्छवज्जियस्स उ, अहियं दुक्खेक्कतगयमणस्स । भिच्चस्स जीवियाओ, कुक्कुरजीयं वरं हवइ ॥ ८० ॥
 परघरलद्धाहारो, साणो होऊण वसइ सच्छन्दो । भिच्चो परवसो पुण, विक्कियदेहो निययकालं ॥ ८१ ॥
 भिच्चस्स नरवईणं, दिज्जाएसस्स पावनिरयस्स । न य हवइ अकरणिज्जं, निन्दियकम्मं पि जं लोए ॥ ८२ ॥
 पुरिसत्तणम्मि सरिसे, जं आणा कुणइ सामिसालस्स । तं सबं पच्चक्खं, दीसइ य फलं अहम्मस्स ॥ ८३ ॥
 धिद्धी अहो ! अकज्जं, जं पुरिसा इन्दिएसु आसत्ता । कुब्बन्तिह भिच्चत्तं, न कुणन्ति सुहालयं धम्मं ॥ ८४ ॥

वचनके लिए जो योग्य होता है उसे वैसा ही कहा जाता है । यहाँ ऐसा कौन मनुष्य है जो सब लोगोंका मुँह बन्द कर सके । (७०) हे सेनापति ! प्रणाम करके तुम रामको मेरी ओरसे कहना कि दानसे बलवानकी और स्नेहसे बन्धुजनकी सेवा करना । (७१) शीलसे शत्रुकी, सद्भाव एवं स्नेहसे मित्रकी और आये हुए अतिथि मुनिवरकी सर्वभावसे सेवा करें । (७२) क्रोधको शान्ति से, मानको मार्दवके प्रयोगसे मायाको ऋजुभावसे और लोभको सन्तोषवृत्तिसे जीतना । (७३) शास्त्र एवं आगममें अतिकुशल तथा नय एवं विनयसे युक्त उन्हें मैं क्या उपदेश दूँ ? फिर मैं तो केवल एक चंचल हूँ । (७४) हे स्वामी ! चिर काल तक पासमें रहनेसे जो मैंने बहुत दुश्चरित किया है उसे, मनको मृदु स्वभाववाला बनाकर, आप क्षमा करें । (७५) हे नाथ ! तुम्हारे जैसे मेरे पति हैं, परन्तु फिर भी तुम्हारे दर्शन अथ मुझे नहीं होंगे । यद्यपि मैंने सैकड़ों अपराध किये हैं, फिर भी वे सब आप क्षमा करें । (७६) ऐसा कहकर वह कठोर और कर्कश जमीन पर गिर पड़ी । मूर्खासे बँद आँखोंवाली उसने अत्यन्त दारुण दुःख पाया । (७७)

सीताको जमीन पर गिरी हुई देख जिसकी हँसी नष्ट हो गई है ऐसे उस सेनापतिने सोचा कि इस अरण्यमें कल्याणी सीता मुश्किलसे जी सकेगी । (७८) दयाहीन, पापी, लाज-मर्यादासे रहित, लोकनिन्दित आचारवाले और दूसरेकी आज्ञाके अनुसार करनेवाले मुझ नौकरको धिक्कार है । (७९) अपनी इच्छासे रहित और एकमात्र दुःखमें ही मनको लीन रखनेवाले भृत्यके जीवनसे तो कुत्तेका जीवन अधिक अच्छा है । (८०) दूसरेके घर पर आहार करके कुत्ता स्वच्छन्द भावसे रहता है, किन्तु नौकर तो परवश होता है और सदाके लिए उसने अपना शरीर बेच दिया होता है । (८१) राजा द्वारा आज्ञा दिये गये और पापनिरत भृत्यके लिए लोकमें जो भी निन्दित कार्य होता है वह अकरणीय नहीं होता । (८२) पुरुषत्व तो समान होने पर भी स्वामीकी जो आज्ञा पाली जाती है वह सब अधर्मका फल है ऐसा प्रत्यक्ष दिखाई पड़ता है । (८३) इन्द्रियोंमें आसक्त पुरुष जो अकार्य करते हैं उसके लिए धिक्कार है । लोग नौकरी करते हैं, पर सुखका

१. ०सणं भूयं—प्रत्य० । २. ०सथं तं चिय सब्बं—प्रत्य० । ३. ०वाइ मुक्को—प्रत्य० । ४. ०इहव०—प्रत्य० ।

५. कुब्बन्ति अ भि०—प्रत्य० ।

एयाणि य अन्नाणि य, विलविय सेणावई तर्हि रण्णे । मोत्तूण जणयतणयं, चलिओ साएयपुरिहुत्तो ॥ ८५ ॥
सीया वि तत्थ रण्णे, सन्नं लद्धूण दुक्खिया कलुणं । रुवइ सहायविमुक्का, निन्दन्ती चेव अप्पाणं ॥ ८६ ॥
हा पउम ! हा नरुत्तम, हा विहलियजणसुवच्छल ! गुणोह ! । सामिय ! भउदूदुयाए, किं न महं दरिसणं देहि ? ॥ ८७ ॥
तुह दोसस्स महाजस !, थेवस्स वि नरिथ एत्थ संबन्धो । अइदारुणाण सामिय !, मह दोसो पुबकम्माणं ॥ ८८ ॥
किं एत्थ कुणइ ताओ !, किं व पई ? किं व बन्धवजणो मे ? । दुक्खं अणुहवियवं, संपइ य उवट्ठिए कम्मे ॥ ८९ ॥
नूणं अवण्णवायं, लोए य अणुट्ठियं मए पुवं । घोराडवीएँ मज्जे, पत्ता जेणेरिसं दुक्खं ॥ ९० ॥
अहवा वि अन्नजम्मे, घेत्तूण वयं पुणो मए भग्गं । तस्सोयएण एयं, दुक्खं अइदारुणं जायं ॥ ९१ ॥
अहवा पउमसरत्थं, चक्कायजुयं सुपीइसंजुत्तं । भिन्नं पावाएँ पुरा, तस्स फलं मे धुवं एयं ॥ ९२ ॥
किं वा वि कमलसण्डे, विओइयं हंसजुयलयं पुवं । अइनिग्घिणाएँ संपइ, तस्स फलं चेव भोत्तवं ॥ ९३ ॥
अहवा वि मए समणा, दुगुंछिया परभवे अपुण्णाए । तस्स इमं अणुसरिसं, भुज्जेयवं महादुक्खं ॥ ९४ ॥
जा सयलपरियणेणं, सेविज्जन्ती सुहेण भवणत्था । सा हं सावयपउरे, चेट्टामिह भीसणे रण्णे ॥ ९५ ॥
नाणारयणुज्जोए, पडसयपच्चत्थुए य सयणिज्जे । वीणा-वंसरवेणं, उवगिज्जन्ती सुहं सइया ॥ ९६ ॥
सा हं पुण्णस्स खए, गोमाउय-सीहभीमसहाले । रण्णे अच्छामि इहं, वसणमहासागरे पडिया ॥ ९७ ॥
किं वा करेमि संपइ ?, कवणं व दिसन्तरं पवज्जामि ? । चिट्टामि कत्थ व इहं, उप्पन्ने दारुणे दुक्खे ? ॥ ९८ ॥
हा पउम ! बहुगुणायर !, हा लक्खण ! किं तुमं न संभरसि ? । हा ताय ! किं न याणसि, एत्थारण्णे ममं पडियं ? ॥ ९९ ॥

धामरूप धर्म नहीं करते । (८४) ऐसे तथा दूसरे विलाप करके सेनापति सीताको वहीं अरण्यमें छोड़ साकेतकी ओर चल पड़ा । (८५)

उस वनमें होशमें आकर दुःखी सीता धैर्यका त्याग करके अपनी निन्दा करती हुई करण स्वरमें रोने लगी । (८६) हा राम ! हा नरोत्तम ! हा व्याकुल जनोंके वत्सल ! गुणौप ! हे स्वामी ! भयसे उद्विग्न मुझे दर्शन क्यों नहीं देते ? (८७) हे महायश ! आपके दोषका यहाँ तनिक भी सम्बन्ध नहीं है ! हे नाथ ! मेरे अत्यन्त दारुण पूर्वकर्मोंका ही दोष है । (८८) इसमें पिता क्या करें ? मेरे पति या बान्धवजन भी इसमें क्या करें ? कर्मका उदय होने पर दुःखका अनुभव करना ही पड़ता है । (८९) अवश्य ही पूर्वजन्ममें मैंने लोकमें अवर्णवाद (धर्मकी निन्दा) किया होगा जिससे घोर जंगलमें मैंने ऐसा दुःख पाया है । (९०) अथवा पूर्वजन्म में व्रत अंगीकार करके फिर मैंने तोड़ा है । उसके उदयसे ऐसा अतिदास्य दुःख हुआ है । (९१) अथवा पापी मैंने पद्मसरोवरमें स्थित प्रीतियुक्त चक्रवाक मिथुनको पहले जुदा कर दिया था । उसीका मुझे यह फल मिल रहा है । (९२) अथवा कमलवनमें हंसके जोड़ेको अतिनिर्दय मैंने पहले विधुक्त कर दिया था । अब उसका फल मुझे भोगना चाहिए । (९३) अथवा अपुरयशालिनी मैंने परभवमें श्रमणोंकी निन्दा की होगी । उसके अनुरूप यह महादुःख मुझे भोगना चाहिए । (९४) जो महलमें आरामसे रहकर सब परिजनों द्वारा सेवित थी वह मैं जंगली जानवरोंसे भरे हुए भीषण वनमें ठहरी हुई हूँ । (९५) नाना प्रकारके रत्नोंसे उद्योदित और लैकड़ों वहाँसे आच्छादित शयनमें वीणा और बंसोकी ध्वनसे गाई जाती मुखपूर्वक सोती थी वह मैं पुण्य का क्षय होने पर दुःखरूपी महासागरमें पड़कर सियार और सिंहके भीषण शब्दोंसे युक्त इत वनमें दैठी हुई हूँ । (९६-९७) अब मैं क्या करूँ ? किस दिशामें जाऊँ ? दारुण दुःख उत्पन्न होने पर मैं कहाँ बैटूँ ? (९८) हा अनेक गुणोंकी खानरूप राम ! हा लक्ष्मण ! क्या तुम याद नहीं करते ? हा तात ! इस अरण्य में पड़ी हुई मेरे बारे में क्या तुम नहीं जानते ? (९९)

१. दुक्खे अणुहवियव्वे—मु० । २. अवण्णवण्णं, लो०—मु० ।

हा विजाहरपत्थिव !, भामण्डल ! पाविणी इहारणे । सोयणवे निमग्गा, तुमं पि किं मे न संभरसि ? ॥ १०० ॥
 अहवा वि इहारणे, निरत्थयं विलविण एएणं । किं पुण अणुहवियबं, जं पुढकयं मए कम्मं ॥ १०१ ॥
 एवं सा जणयसुया, जावञ्छइ ताव तं वणं पढमं । बहुसाहणो पविट्ठो, नामेणं वज्जजङ्घनिवो ॥ १०२ ॥
 पोण्डरियपुराहिवई, गयवन्धत्थे समागओ रण्णे । घेत्थण कुञ्जरवरे, निग्गच्छइ साहणसमग्गो ॥ १०३ ॥
 ताव य जे तस्स ठिया, पुरस्सरा गहियपहरणावरणा । सोऊण रुण्णसइ, सहसा खुभिया विचिन्तेन्ति ॥ १०४ ॥
 गय-महिस-सरह-केसरि-वराह-रु-चमरसेविए रण्णे । का एसा अइकलुणं, रुवइ इह दुक्खिया महिला ? ॥ १०५ ॥
 किं होज्ज देवकत्ता, सुरवइसावेण महियले पडिया ? । कुलुमाउहस्स किं वा, कुविया य रई इहोइण्णा ? ॥ १०६ ॥
 एवं सवियक्कमणा, नवि ते वच्चन्ति तत्थ पुरहुत्ता । सवे वि भउड्विग्गा, वग्गोभूया य चिद्धन्ति ॥ १०७ ॥
 तत्थ वणे महयं पि बलं तं, महिलारुण्णसरं सुणिऊणं ।
 जायभयं अइचच्चलनेत्तं, खायजसं विमलं पि निरुद्धं ॥ १०८ ॥
 ॥ इइ पडमचरिए सीयानिवासासणविहाणं नाम चउणउयं पठ्वं समत्तं ॥

९५. सीयासमासासणपठ्वं

जाव य सा निययचमू, रुद्धा गङ्ग व पवयवरेणं । ताव करेणुविलग्गो, पराइओ वज्जजङ्घनिवो ॥ १ ॥
 पुच्छइ आसन्नत्थे, केणं चिय तुम्ह गइपहो रुद्धो । दीसह समाउलमणा, भयविहलविसंतुला सब्बे ? ॥ २ ॥

हा विद्याधरराज भामण्डल ! शोकसागरमें निमग्न पापिनी मैं इस अरण्यमें हूँ । क्या तुम भी मुझे याद नहीं करते ? (१००)
 अथवा यहाँ अरण्यमें ऐसा निरर्थक विलाप करने से क्या ? मैंने पूर्वजन्ममें जो पापकर्म किया था उसका अनुभव करना ही पड़ेगा । (१०१)

इस प्रकार विलाप करती हुई वह जनकसुता सीता जब बैठी हुई थी तब उस वनमें उसके आगमनसे पहले वज्रजंघ नामके राजाने विशाल सेनाके साथ प्रवेश किया था । (१०२) पौण्डरिकपुरका वह राजा हाथियोंको पकड़नेके लिए उस अरण्य में आया था । हाथियोंको लेकर वह सेनाके साथ जा रहा था । (१०३) उस समय उसके आगे जानेवाले जो प्रहरण और कवच धारण किये हुए सैनिक थे वे रोनेका शब्द सुनकर सहसा ध्रुब्ध हो सोचने लगे कि हाथी, भैंसे, शरभ, सिंह, वराह, मृग, चमरीगायसे युक्त इस वनमें कौन यह दुःखित स्त्री अत्यन्त करुण विलाप कर रही है ? (१०४-१०५) इन्द्रके शापसे जमीन पर गिरी हुई क्या यह कोई देवकन्या है ? अथवा कामदेवकी कुपित रति यहाँ अवतीर्ण हुई है ? (१०६) इस प्रकार मनमें विकल्पयुक्त वे वहाँ से आगे नहीं जाते थे । भयसे उद्विग्न वे सब व्यग्र होकर ठहर गये । (१०७) उस वनमें स्त्रीका रुदन-स्वर सुनकर भयभीत, अतिचंचल नेत्रवाला, ख्यातयश और निर्मल भी वह महान् सैन्य रुक गया । (१०८)

॥ पद्मचरितमें 'सीता निर्वासन-विधान' नामक चौरानवेवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

९५. सीताको आश्वासन

जब अपनी उस सेनाको पर्वतसे रुद्ध गंगाकी भाँति अवरुद्ध देखा तब हाथी पर बैठा हुआ वज्रजंघ राजा आया ।
 (१) उसने समीपस्थ लोगोंसे पूछा कि किसने तुम्हारा गमन-मार्ग रोक है ? तुम सब मनमें व्याकुल तथा भयसे विह्वल

१. पाविणीइ दीणाए । इह रणवे णिमग्गं, तुमं—प्रत्य० । २. रणं—प्रत्य० । ३. पुरिहुत्ता—प्रत्य० । ४. महिलिय-
 रुण्णसरं निमुणेइ—मु० ।

जाव चिय उल्लव्वं, देन्ति नरिन्दस्स निययचारभडा । ताव य वरजुवईए, सुणइ ख्वन्तीए कलुणसरं ॥ ३ ॥
 सरमण्डलविन्नाओ, भणइ निवो जा इहं ख्वइ मुद्धा । सा गुविणी निरुत्तं, पउमस्स भवे महादेवो ॥ ४ ॥
 भणिओ भिच्चेहि पइ, एव इमं जं तुमे समुल्लवियं । न कयाह अलियवयणं, देव ! सुयं जंपमाणस्स ॥ ५ ॥
 जाव य एसालावो, वट्टइ तावं नरा समणुपत्ता । पेच्छन्ति जणयत्तणयं, पुच्छन्ति य का तुमं भहे ? ॥ ६ ॥
 सा पेच्छञ्ज पुरिसे, बहवे सन्नद्धवद्धतोणीरे । भयविहल्लवेविरङ्गी, ताणाभरणं पणामेइ ॥ ७ ॥
 तेहि वि सा पडिभणिया, किं अहं विहसणेहि एएहिं । चिट्टन्तु तुज्झ लच्छी !, ववगयसोगां इओ होहि ॥ ८ ॥
 पुणरवि भणन्ति सुन्दरि !, मोत्तुं सोगं भयं च एत्ताहे । जंपसु सुपसन्नमणा, किण्ण मुणसि नरवइं एयं ॥ ९ ॥
 पुण्डरियपुराहिवई, एसो इहं वज्जजङ्घनरवसभो । चारित्त-नाण-दंसण-बहुगुणनिलओ जिणमयमि ॥ १० ॥
 सङ्काइदोसरहिओ, निच्चं जिणवयणगहियपरमत्थो । परउवयारसमत्थो, सरणागयवच्छलो वीरो ॥ ११ ॥
 दीणाईण पुणो वि य, विसेसओ कलुणकारणुज्जुत्तो । पडिवक्खगयमइन्दो, सबकलाणं च पारगओ ॥ १२ ॥
 एयस्स अपरिमेया, देवि ! गुणा को इहं भणिउकामो । पुरिसो सयलतिहुयणे, जो वि महाबुद्धिसंपन्नो ॥ १३ ॥
 जाव य एसालावो, वट्टइ तावागओ नरवरिन्दो । अवयरिय करेणुए, करेइ विणयं जहाजोगं ॥ १४ ॥
 तत्थ निविट्ठो जंपह, वज्जमओ सो नरो न संदेहो । इह मोत्तुं कल्लणिं, जो जीवन्तो गओ सगिहं ॥ १५ ॥
 एत्थन्तरे पवुत्तो, मन्तो संथाविञ्ज जणयसुयं । नामेण वज्जलङ्घो, एसो पुण्डरियपुरसामो ॥ १६ ॥

दीखते हो। (२) जबतक राजाको अपने चारभट जवाब दें तब तक तो उसने रोती हुई वर युवतीका करुण स्वर सुना। (३) स्वरको पहचाननेवाले राजाने कहा कि जो स्त्री यहाँ पर रो रही है, वह अवश्य ही रामकी गर्भवती पटरानी होगी। (४) श्रुत्योंने कहा कि, प्रभो! आपने जैसा कहा वैसा ही होगा। हे देव! आपको कभी अलीकवचन कहते नहीं सुना। (५) जब ऐसा वार्तालाप हो रहा था तब लोग सीताके पास गये, उसे देखा और पूछा कि, भद्रे! तुम कौन हो? (६) कवच पहने और तूणोर बाँधे हुए बहुतसे पुरुषों को देखकर भयसे चिह्लल और काँपते हुए शरीरवाली वह उन्हें आभरण देने लगी। (७) उन्होंने उसे कहा कि इन आभूषणोंसे हमें क्या प्रयोजन? तुम्हारी लक्ष्मी तुम्हारे पास रहे। अब तुम शोकरहित बनो। (८) उन्होंने और भी कहा कि, हे सुन्दरी! शोक और भयका परित्याग करके और मनमें प्रसन्न हो कहो कि इस राजाको क्या तुम नहीं पहचानती? (९) यह पौंडरिकपुरके स्वामी और जिनधर्ममें कहे गये चारित्र, ज्ञान और दर्शन रूप अनेक गुणोंके धाम जैसे वज्रजंघ नामके राजा हैं। (१०) यह वीर शंका आदि दोषसे रहित, नित्य जिनवचनका मर्म जाननेवाले, परोपकारमें समर्थ तथा शरण में आये हुए पर वात्सल्यभाव रखनेवाले हैं। (११) यह दीनजनों पर विशेष रूपसे करुणा करने में उद्यत रहते हैं। शत्रु रूपी हाथीके लिए यह सिंह जैसे तथा सब कलाओंमें कुशल हैं। (१२) हे देवी! इस सारे त्रिभुवनमें ऐसा अत्यन्त बुद्धिसम्पन्न पुरुष कौन है जो इसके असंख्येय गुणोंका बखान यहाँ करनेकी इच्छा करे। (१३)

जब यह बातचीत हो रही थी तब राजा वहाँ आ पहुँचा हाथी परसे नीचे उतरकर उसने यथायोग्य धिनय किया। (१४) वहाँ बैठकर उसने कहा कि वह मनुष्य निःसंदेह वज्रमय होगा जो तुम कल्याणी स्त्रीका परित्याग करके अपने घर पर जीवित ही लौट गया है। (१५) तब सीताको सान्त्वना देकर मंत्रीने कहा कि यह वज्रजंघ नामके पौण्डरिक नगरके स्वामी हैं। (१६) हे वत्से? यह वीर पाँच अणुव्रतोंको धारण करनेवाले, समस्त उत्तम गुणोंके समूह रूप, देव एवं गुरुके पूजनमें

१. चार भटा—प्रत्य० । २. महरसरं—मु० । ३. विजाया—प्रत्य० । ४. तुमं समुल्लवसि । न—प्रत्य० ।
 ५. पिच्छन्ति कयं (?) जलिउडा, रज्जिमि य का तुमं—प्रत्य० । ६. नाणाभ०—प्रत्य० । ७. तेहिं सा—प्रत्य० । ८. गा तुमं होहि—प्रत्य० । ९. दीणाण पुण विसेसं अहियं चिय कलुण०—प्रत्य० ।

पञ्चाणुवयधारी, वच्छे सम्मत्तउत्तमगुणोहो । देव-गुरुपूयणरओ, साहम्मियवच्छलो वीरो ॥ १७ ॥
 एवं चिय परिकहिए, सीया तो पुच्छिया नरवईणं । साहेहि कस्स दुहिया ?, कस्स व महिला तुमं लच्छी ? ॥ १८ ॥
 जं एव पुच्छिया सा, सीया तो भणइ दीणमुहकमला । अइदीहा मज्झ कहा, नरवइ ! निसुणेहि संखेवं ॥ १९ ॥
 जणयनरिन्दस्स सुया, बहिणी भामण्डलस्स सीया हं । दसरहनिवस्स सुण्हा, महिला पुण रामदेवस्स ॥ २० ॥
 कइगइवरदानिहे, दाउं भरहस्स निययरज्जं सो । अणरणपत्थिवसुओ, पवइओ जायसंवेगो ॥ २१ ॥
 रामेण लक्खणेण य, समं गया दण्डयं महारण्णं । संबुक्कवहे नराहिव, हरिया हं रक्खसिन्देणं ॥ २२ ॥
 अह ते बलेण सहिया, नहेण गन्तूण राम-सुग्गीवा । लङ्कापुरीएँ जुज्जं, कुणन्ति समयं दहसुहेणं ॥ २३ ॥
 बहुमडजोयन्तकरे, समरे लङ्काहिवं विवाएउं । रामेण आणिया हं, निययपुरि परमविभवेणं ॥ २४ ॥
 ददूण रामदेवं, भरहो संवेगजायसब्भावो । धेतूण य पवज्जं, सिद्धिसुहं चैव संपत्तो ॥ २५ ॥
 सुयसोगसमावन्ना, पवज्जं केगई वि धेतूणं । सम्माराहियचरिया, तिथसविमाणुत्तमं पत्ता ॥ २६ ॥
 लोगो वि अमज्जाओ, जंपइ अलियं अवण्णवायं मे । जह रावणकयसज्जा, पउमेण इहाणिया सोया ॥ २७ ॥
 सुणिऊण लोगवयणं, पउमेणं अयसदोसभीएणं । जिणवन्दणाभिलासी, डोहलयनिहेणं ऽहं भणिया ॥ २८ ॥
 मा होहि उस्सुयमणा, सुन्दरि ! जिणचेइयाइ विविहाइं । वन्दावेमि सहीणो, अहियं सुर-असुरनमियाइं ॥ २९ ॥
 गन्तूण पिए ! पढमं, अण्णवयपवए जिणं उसहं । वन्दामि तुमे सहिओ, जस्स इहं जम्मणं नयरे ॥ ३० ॥
 अजियं सुमइमणन्तं, तहेव अहिनन्दणं इह पुरीए । जायं चिय कम्पिल्ले, विमलं धम्मं च रयणपुरे ॥ ३१ ॥
 चम्पाएँ वासुपुज्जं, सावथी संभवं समुप्पन्नं । चन्दपहं चन्दपुरे, कायन्दीए कुसुमदन्तं ॥ ३२ ॥

निरत तथा साधर्मिक भाइयोंपर वात्सल्य भाव रखनेवाला है । (१७) इस प्रकार कहने पर राजाने सीतासे पूछा कि, हे लक्ष्मी ! तुम किसकी पुत्री और किसकी पत्नी हो ? (१८)

इस प्रकार पूछने पर कुम्हलाये हुए मुखकमलवाली सीताने कहा कि, हे राजन् ! मेरी कथा बहुत लम्बी है, किन्तु संक्षेपमें सुनो । (१९) मैं जनकराजाकी पुत्री, भामण्डलकी बहन, दशरथ राजाकी पुत्रवधू तथा रामकी पत्नी सीता हूँ । (२०) कैकेईके बरदानके बहानेसे भरतको अपना राज्य देकर अनरण्य राजाके उस पुत्र दशरथने वैराग्य उत्पन्न होने पर प्रव्रज्या ली । (२१) राम और लक्ष्मणके साथ मैं दण्डक महारण्यमें गई । हे नराधिप ! शम्बूकके वधमें राक्षसेन्द्र रावणके द्वारा मैं अपहृत हुई । (२२) तब सेनाके साथ आवाशमार्गसे जाकर राम और लक्ष्मणने लंकापुरीमें रावणके साथ युद्ध किया । (२३) बहुत सुभटोंके प्राणोंका अन्त करनेवाले उस युद्धमें रावणको मारकर राम मुझे अपनी नगरीमें परम विभवके साथ ले गये । (२४) रामको देखकर संवेगके कारण शुभ भाव जिसमें पैदा हुए हैं ऐसे भरतने प्रव्रज्या ली और सिद्धि-सुख भी प्राप्त किया । (२५) पुत्रके शोकसे युक्त कैकेईने भी दीक्षा ली । चारित्रकी सम्यक् आराधना करके उसने उत्तम देवविमानमें जन्म लिया । (२६) मर्यादाहीन लोग मेरे बारेमें झूठी निन्दा करने लगे कि रावणके साथ रंग करनेवाली सीताको राम यहाँ लाये हैं । (२७) लोगोंका कहना सुन अपयशके दोषसे भीत रामने दोहदके बहाने जिनवन्दनकी अभिलाषा रखनेवाली मुझे कहा कि, हे सुन्दरी ! तुम मनमें चिन्तित मत हो । सुर और असुरों द्वारा वन्दित ऐसे विविध जिनमन्दिरोंका स्वाधीन रूपसे मैं तुम्हें खूब दर्शन कराऊँगा । (२८-२९)

हे प्रिये ! जिनका इस नगरमें जन्म हुआ था उन प्रथम ऋषभ जिनका अष्टापद पर्वतके ऊपर तुम्हारे साथ मैं दर्शन करूँगा । (३०) अजितनाथ, सुमति नाथ, अनन्तनाथ अभिनन्दन स्वामी इस नगरीमें हुए हैं । काष्पिल्यमें विमलनाथ तथा रत्नपुरमें धर्मनाथ हुए हैं । (३१) चम्पामें वासुपूज्य, और श्रावस्तीमें सम्भवनाथ पैदा हुए हैं । चन्द्रप्रभ चन्द्रपुरमें और काकन्दीमें पुष्पदन्त हुए हैं । (३२) वाराणसीमें सुपार्शनाथ, और कौशाम्बीमें पद्मप्रभ उत्पन्न हुए हैं । भदिलपुरमें

१. केगई०—प्रत्य० । २. ०मविषणं—प्रत्य० ।

वाणारसी सुपासं, कोसम्भीसंभवं च पठमभं । महिलपुरसंभूयं, सीयलसामिं विगयमोहं ॥ ३३ ॥
 सेयंसं सीहपुरे, मल्लिं मिहिलाए गयपुरे सन्ति । जायं कुन्धुं च अरं, तत्येव य कुञ्जरपुरंमि ॥ ३४ ॥
 जायं कुंसगनयरे, मुणिसुव्वयसामियं जियभवोहं । नरस इह धम्मचक्रं, अज्ज वि पज्जलइ रवितेयं ॥ ३५ ॥
 एयाइ जिणवराणं, जम्मट्टाणाइ तुज्ज सिट्ठाइं । पणमसु भावेण पिए !, अत्ताणि वि अइसयकराईं ॥ ३६ ॥
 पुप्फविमाणारूढा, मह पासत्था नहेण अमरगिरिं । गन्तूण पणमसु पिए !, सिद्धाययणाइ दिवांइं ॥ ३७ ॥
 कोट्टिम-अकोट्टिमाइं, जिणवरभवणाइ एत्थ पुहइयले । अहिवन्दिऊण पुणरवि; निययपुरिं आगमीहामि ॥ ३८ ॥
 एको वि नमोक्कारो, भावेण कओ जिणिन्दचन्दाणं । मोएइ सो हु जीवं, पणपावपसङ्गजोगाओ ॥ ३९ ॥
 वं पिययमेण एवं, भणिया हं तत्थ सुमणसा जाया । अच्छामि जिणहराणं, चिन्तती दरिसणं निच्चं ॥ ४० ॥
 चल्लियस्स मए समयं, जिणहरपरिवन्दणुस्सुयमणस्स । दइयस्स ताव वत्ता, जणपरिवाई लहुं पत्ता ॥ ४१ ॥
 अववायभीयएणं, ततो परिचिन्तियं मह पिएणं । लोगो सहाववंको, न अन्नहा जाइ संतोसं ॥ ४२ ॥
 तम्हा वरं खु एसा, सीया नेऊण छड्डिया रण्णे । न य मज्झ जसस्स इहं, होउ खणेकं पि वाघाओ ॥ ४३ ॥
 सा हं तेण नराहिव !, जणपरिवायस्स भीयहियएणं । परिचत्तां विह रण्णे, दोसविमुक्का अकयपुण्णा ॥ ४४ ॥
 उत्तमकुलस्स लोए, न य एयं खत्तियस्स अणुसरिसं । बहुसत्थपण्डियस्स य, धम्मठिइं जाणमाणस्स ॥ ४५ ॥
 एयं चिय वित्तन्तं, परिकहिऊणं तओ जणयधूया । माणसजलणुम्हविया, रोवइ कलुणेण सहेणं ॥ ४६ ॥
 रोयन्ति जणयसुयं, दट्टूण नराहियो किवावन्नो । संथावणमइकुसलो, जंपइ एयाइ वयणाइं ॥ ४७ ॥

बोतमोह शांतिउत्थानका जन्म हुआ है । (३३) सिंहपुरमें श्रेयांसनाथ, मिथिलामें मल्लि और हस्तिनापुरमें शांतिनाथ हुए हैं । इसी प्रकार हस्तिनापुरमें कुन्धुनाथ और अरनाथ हुए हैं । (३४) संसार को जीतनेवाले मुनिसुव्वतस्वामी कुशाप्रपुरमें हुए, जिनका धर्मचन्द्र आज भी सूर्यके तेजको भाँति प्रखलित हो रहा है । (३५) हे प्रिये ! जिनवरोंके जन्म स्थान तुझे कहे । अतिशयकर दूसरे स्थानोंको भी तुम भावपूर्वक प्रणाम करना । (३६) हे प्रिये ! मेरे साथ पुष्पक विमानमें आरूढ़ होकर ओर आकाश मार्गसे सुमेरु पर्वत पर जाकर दिव्य सिद्ध भवनोंको भी तुम वन्दन करना । (३७) इस पृथ्वीतल पर आये हुए कृत्रिम और अकृत्रिम जिनभवनोंको वन्दन करके पुनः अपनी नगरोंमें हम आ जायेंगे । (३८) जिनवरोंको भावपूर्वक एक भी नमस्कार करनेसे वह जीवको घने पाप-प्रसंगके योगसे मुक्त करता है । (३९) प्रियतमके द्वारा इस तरह कहाँ गई मैं प्रसन्न हुई । जिनमन्दिरोंके दर्शनके वारेमें मैं नित्य सोचती रहती थी । (४०) मेरे साथ जानेवाले तथा जिनमन्दिरोंमें वन्दनके लिए उत्सुकमना पतिके पास उस समय अचानक जन परिवादका कथा आई । (४१) अपवादसे डरनेवाले मेरे पतिने तब सोचा कि स्वभावसे ही देदे लोग दूसरी तरहसे सन्तुष्ट नहीं होते । (४२) अतएव यहाँ अच्छा है कि सीताको ले जाकर अरण्यमें छोड़ दिया जाय । इससे मेरे यशको यहाँ एक क्षणके लिए भी व्याघात नहीं होगा । (४३) हे नराधिप ! जन-परिवादके कारण हृदयमें भीत उनके द्वारा निर्दोष किन्तु अपुण्यशालिनी मैं इस अरण्यमें परित्यक्त हुई हूँ । (४४) उत्तम कुलमें उत्पन्न, बहुतसे शास्त्रोंमें पण्डित तथा धर्मकी स्थिति जाननेवाले क्षत्रियके लिए लोकमें ऐसा उचित नहीं है । (४५)

ऐसा वृत्तान्त कहकर मनकी आगसे पीड़ित सीता करुण शब्दमें रोने लगी । (४६) जनकसुताको रोते देख दयालु तथा सान्त्वना देनेमें अतिकुशल राजाने ये वचन कहे (४७) जिन शासनमें तीव्र भक्ति रखनेवाली हे सीते ! तुम मत रोओ

१. महिलाए—मु० । २. कुसुमानयरे—मु० । ३. कथाईं—मु० । ४. सत्वाइं—प्रत्य० । ५. आगमित्सामि—प्रत्य० । ६. •ङ्गजोगाणं—प्रत्य० । ७. •त्ता लहु रण्णे—प्रत्य० ।

मा स्यसु तुमं सीए!, जिणसासणतिवभत्तिंसंपत्ते । किं वा दुक्खायाणं, अट्टज्जाणं समारुहसि? ॥ ४८ ॥
 किं वा तुमे न नाया, लोयठिई एरिसी निययमेव । अधुवत्ताऽसरणत्ता, कम्माण विचित्तया चेव? ॥ ४९ ॥
 किं ते साहुसयासे, न सुयं जह निययकम्मपडिबद्धो । जीवो धम्मेण विणा, हिण्डइ संसारकन्तारे? ॥ ५० ॥
 संजोय-विप्पओया, सुह-दुक्खाणि य बहुप्पयाराइं । पत्ताइ दीहकालं, अणाहनिहणेण जीवेणं ॥ ५१ ॥
 खज्जन्तेण जल-थले, सकम्मविप्फण्डिएण जीवेणं । तिरियभवे दुक्खाइं, सुह-तण्हाईणि भुत्ताइं ॥ ५२ ॥
 विरहा-ऽववाय-तज्जण-निब्भच्छण-रोय-सोयमाईयं । जीवेणं समणुभूयं, मणुएसु वि दारुणं दुक्खं ॥ ५३ ॥
 कुच्छियतवसंभूया, देवा दट्टूण परमसुरविहवं । पावन्ति ते वि दुक्खं, विसेसओ चवणकालंमि ॥ ५४ ॥
 नरएसु वि उववत्ता, जीवा पावन्ति दारुणं दुक्खं । करवत्त-जन्त-सामलि-वेयरणीमाइयं विविहं ॥ ५५ ॥
 तं नत्थि जणयधूए!, ठाणं ससुरासुरे वि तेलोक्के । जम्भं मच्चू य जरा, जत्थ न जीवेण संपत्ता ॥ ५६ ॥
 इह संसारसमुद्दे, नियकम्माणिलहएण जीवेणं । लद्धे वि माणुसत्ते, एरिसियतणू तुमे पत्ता ॥ ५७ ॥
 रामस्स हिययइट्ठा, अणुहविऊणं सुहं तु वइदेही । हरिया रक्खसवइणा, जिमिया एकारसे दिवसे ॥ ५८ ॥
 तत्तो वि य पडिबक्खे, निहए पडिआणिया निययठाणं । पुणरवि य सुहं पत्ता, रामस्स पसायजोएणं ॥ ५९ ॥
 असुहोदएण भइ!, गम्भादाणेण संजुया सि तुमं । परिव्वाजलणदड्ढा, निच्छूढा एत्थ आरण्णे ॥ ६० ॥
 जो सुसमणआरामं, दुबयणग्गी ण डहइ अविसेसो । अयसाणिलेण सो वि य, पुणरुत्तं डज्जइ अणाहो ॥ ६१ ॥
 धन्ना तुमं कयत्था, सलाहणिज्जा य एत्थ पुहइयले । चेइहरनमोकारं, दोहलयं जा समल्लीणा ॥ ६२ ॥
 अज्ज वि य तुज्ज पुण्णं, अत्थि इहं सोलसालिणी बहुयं । दिट्ठा सि मए जं इह, गयवन्धत्थं पविट्ठेणं ॥ ६३ ॥

दुःखके हेतुभूत आर्तध्यान पर तुम क्यों आरोहण करती हो? (४८) क्या तुम्हें लोककी ऐसी नियत स्थिति, अधुवता, अशरणा तथा कर्मोंकी विचित्रता ज्ञात नहीं है? (४९) क्या तुमने साधुके पास नहीं सुना कि अपने कर्मोंसे जकड़ा हुआ जीव धर्मके विना संसार रूपी जंगलमें भटकता रहता है। (५०) अनादि-अनन्त जीवने संयोग और वियोग तथा बहुत प्रकारके सुख-दुःख दीर्घ काल तक पाये हैं। (५१) जल और स्थलमें खाये जाते तथा अपने कर्मके कारण तड़पते हुए जीवने तिर्यग् भवमें भूख-प्यास आदि दुःख सहते हैं। (५२) विरह, अपवाद, धर्मकी, भर्त्सना, रोग, शोक आदि दारुण दुःख का जीवने मनुष्य भवमें अनुभव किया है। (५३) कुत्सित तपसे उत्पन्न देव उत्तम कोटिके देवोंका वैभव देखकर और विशेषतः च्यवनके समय दुःख पाते हैं। (५४) नरकोंमें उत्पन्न जीव शात्मली वृक्षके करवत जैसे पत्रों तथा वैतरणी आदि नाना प्रकारका दारुण दुःख प्राप्त करते हैं। (५५) हे सीते! देव और दानवोंसे युक्त इस त्रिलोकमें ऐसा स्थान नहीं है जहाँ जीवने जन्म, जरा और मृत्यु न पाई हो। (५६) इस संसारसागरमें अपने कर्मरूपी पवनसे जीव आहत होता है। मनुष्य जन्म पावरके भी तुमने ऐसा शरीर प्राप्त किया है। (५७) रामकी हृदयप्रिया तुम दैदेहीने सुखका अनुभव किया। राक्षसपतितके द्वारा अपहृत होने पर ग्यारहवें दिन भोजन किया। (५८) उसके अनन्तर शत्रुओंके मारे जाने पर तुम अपने स्थान लई गई। रामके अनुग्रहसे पुनः तुमने सुख पाया। (५९) हे भद्रे! गर्भवती होने पर भी अशुभ कर्मके योगके कारण बदनामीकी आगसे जली हुई तुम इस वनमें छोड़ दी गई हो। (६०) जो सुश्रमण रूपी उद्यान दुर्वचनरूपी आगसे जरा भी नहीं जलता वह भी अनाथ अपयशरूपी वायुसे जलता है। (६१) तुम इस धरातल पर धन्य हो, कृतार्थ हो और श्लाघनीय हो, क्योंकि चैत्यगृहोंमें नमस्कार करनेका दोहद तुम्हें हुआ। (६२) हे शीलशालिनी! आज भी तुम्हारा बहुत पुण्य है कि हाथियोंको यहाँ बाँधनेके लिए प्रविष्ट मेरे द्वारा तुम देखी गई हो। (६३) सोमवंशका पुत्र गजवाहन नामका राजा था। उसकी स्त्री सुबन्धु

१. संजुते! किं वा दुक्खाययणं—प्रत्य० । २. विविहा०—प्रत्य० । ३. ण मणुयजम्मे, अणुहुयं दारुणं—प्रत्य० ।
 ४. उण य सुहं—प्रत्य० । ५. दियहे—प्रत्य० । ६. पडियागया—मु० । ७. वाओरगदड्ढा, नि—मु० ।

अह सोमवंसतणओ, राया गयवाहणो ति नामेणं । महिला तस्स सुबन्धू, तीए हं कुच्छिसंभूओ ॥ ६४ ॥
 अहयं तु बज्जणङ्को, पुण्डरियपुराहिणो जिणाणुरओ । धम्मविहाणेण तुमं, मह बहिणी होहि निक्खुत्तं ॥ ६५ ॥
 उट्टेहि मज्झ नयरं, वच्चसु तत्थेव चिट्ठमाणीए । तुह पच्छायवतविओ, गवेसणं काहिई रामो ॥ ६६ ॥
 महुरवयणेहि एवं, सीया संथाविया नरवईणं । अह धम्मबन्धवत्तं, लद्धूणं सा धिई पत्ता ॥ ६७ ॥
 अहिगयतवसम्मादिट्ठिदाणेक्कचित्तं, समणमिव गुणङ्कं सोलसंभारपुण्णं ।
 परजणउवयारिं वच्छलं धम्मबन्धुं, विमलजसनिहाणं को ण सिरिहाइ वीरं ? ॥ ६८ ॥

॥ इइ पउमचरिए सीयासमासासणं नाम पञ्चाणउयं पव्वं समत्तं ॥

९६. रामसोयपव्वं

अह तक्खणमि सिविया, समाणिया धरविमाणसमसोहा । लम्बूस-चन्द-चामर-दप्पण-चित्तंसुयसणाहा ॥ १ ॥
 मयहरयपरिमिया सा, आरूढा जणयनन्दिणी सिवियं । वच्चइ परिचिन्तन्ती, कम्मस्स विचित्तया एसा ॥ २ ॥
 दिवसेसु तीसु रण्णं, बोलेऊणं च पाविया विसयं । बहुगाम-नगर-पट्टण-समाउलं जण-धणाइण्णं ॥ ३ ॥
 पोक्खरिणि-वावि-दीहिय-आरामुज्जाण-काणणसमिद्धं । देसं पसंसमाणी, पोण्डरियपुरं गया सीया ॥ ४ ॥
 उवसोहिए समत्थे, पोण्डरियपुरे वियङ्कुजणपउरे । पईसइ जणयस्स सुया, नायरलोण दीसन्ती ॥ ५ ॥

श्री । उसको कुक्षिसे मैं उत्पन्न हुआ हूँ । (६४) पोण्डरिक नगरोंका स्वामी मैं वज्रजंघ जिनेश्वर भगवान्में अनुरक्त हूँ । धर्मविधिसे तुम अवश्य ही मेरी बहन हो । (६५) उठो ओर मेरे नगरमें चलो । वहीं ठहरी हुई तुम्हारी पश्चात्तापसे तप राम गवेषणा करेंगे । (६६)

इस तरह मधुर वचनोंसे राजाने सीताको सान्त्वना दी । ओर धर्म बन्धुको पाकर उसने धैर्य धारण किया । (६७) तप एवं सम्यग्दृष्टि प्राप्त करके दानमें दत्तचित्त, श्रमगर्को भाँति गुणोंसे सम्पन्न, शील-समूहसे पूर्ण, दूसरे लोगोंका उपकार करनेवाले वात्सल्य युक्त, धर्मबन्धु तथा निर्मल यशके निधान वीर की कौन नहीं सराहना करता ? (६८)

॥ पञ्च चरितमें 'सीताको आश्रासन' नामका पचानवेवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

९६. रामका शोक

इसके पश्चात् शीघ्र ही उत्तम विमानके समान शोभावली तथा लम्बूष (गेंदके आकारका एक आभूषण) से युक्त डोलते हुए चँवर, दर्पण और चित्रित वस्त्रोंसे युक्त शिबिका लाई गई । (१) कंचुकियोंसे घिरी हुई वह सीता शिबिका पर आरूढ़ हुई और कर्मकी इस विचित्रताका चिन्तन करती हुई चली । (२) तीन दिनमें वन पार करके वह अनेक ग्राम, नगर एवं पत्तन तथा जन एवं धनसे व्याप्त देशमें पहुँची । (३) पुष्करिणी, बावड़ी, दीर्घिका, आराम एवं बारा-बारीचोंसे समृद्ध उस देशकी प्रशंसा करती हुई सीता पौण्डरिकपुरमें पहुँची । (४) सारेके सारे सजाये हुए और विदग्धजनोंसे व्याप्त उस पौण्डरिकपुरमें नगरजनों द्वारा देखी जाती संताने प्रवेश किया । (५) बड़े-बड़े ढोल, मेरी झर्री, आइज़, मृदंग और शंखोंकी

१. हं गम्भसं०—प्रत्य० । २. वाविकण नरवईणा—सु० । ३. सनिदाणं—सु० । ४. धीरं—प्रत्य० ।
 ५. वणंरणी—प्रत्य० । ६. पविसइ—प्रत्य० ।

पडुपडह-भेरि-झलरि-आइङ्ग-मुइङ्ग-सङ्गसदेणं । मङ्गलगीयरवेण य, न सुणइ लोगो समुल्लावं ॥ ६ ॥
 एवं सा जणयसुया, परियणपरिवारिया महिह्वीए । सुरवासहरसरिच्छं, नरवइभवणं अह पविट्ठा ॥ ७ ॥
 परितुट्टमणा सोया, तत्थऽच्छइ वज्जजङ्घनरवइणा । पुंइज्जन्ती अहियं, बहिणी भामण्डलेणेव ॥ ८ ॥
 जय जीव नन्द सुइरं, ईसाणे ! देवए ! महापुज्जे ! कल्लाणी ! सुहकम्मे !, भण्णइ सीया परियणेणं ॥ ९ ॥
 धम्मकहासत्तमणा धम्मरई धम्मधारणुज्जुत्ता । धम्मं अहिलसमाणी, गमेइ दियहे तहिं सीया ॥ १० ॥
 अह सो कयन्तवयणो, अहियं खिन्नेसु वरतुरंगेसु । सणियं अइकमन्तो पउमसयासं समणुपत्तो ॥ ११ ॥
 काऊण सिरयणामं, जंषइ सो देव ! तुज्ज वयणेणं । एगागी जणयसुया, गुरुभारा छड्डिया रण्णे ॥ १२ ॥
 सीह-ऽच्छभल-चित्तय-गोमाऊरसियभीमसदाले । खर-फरुसचण्डवाए, अन्नोत्रालीढदुमगहणे ॥ १३ ॥
 जुज्जन्तवग्घ-महिसे, पञ्चमुहावडियमत्तमायङ्गे । नउलोेरगसंगामे, सीहचवेडाहयवराहे ॥ १४ ॥
 सरभुत्तासियवणयर—कडमडमज्जन्तरुक्खसदाले । करयरडन्तबहुविह—करच्छडाझडियपक्खिउले ॥ १५ ॥
 गिरिनइसल्लुद्धाइय-निज्जरइंशत्तिज्जत्तिभिघोसे । तिबलुहापरिगहिए, अन्नोत्रच्छन्नसावज्जे ॥ १६ ॥
 एयारिसविणिओगे, भयंकरे विविहसावयममिद्धे । तुज्ज वयणेण सीया, सामि ! मया छड्डिया रण्णे ॥ १७ ॥
 नयणंसुदुद्दिणाए, जं भणियं देव ! तुज्ज महिलाए । तं निसुणसु संदेसं, साहिज्जन्तं मए सब्बं ॥ १८ ॥
 पायप्पडणोवगया, सामि ! तुमे भणइ महिलिया वयणं । अहयं जह परिचत्ता, तह जिणधम्मं न मुच्चिहिसि ॥ १९ ॥
 नेहाणुरागवसगो वि, जो ममं दुज्जणाण वयणेणं । छड्डेहि असुणियगुणो, सो जिणधम्मं पि मुच्चिहइ ॥ २० ॥

आवाजके कारण तथा मंगलगीतोंकी ध्वनिके कारण लोग बातचीत तक सुन नहीं सकते थे । (६) इस प्रकार परिजनोंसे घिरी हुई सीताने अत्यन्त ऐश्वर्यके साथ देवोंके निवासस्थान जैसे राजभवनमें प्रवेश किया । (७) भामण्डलकी भाँति बहन रूपसे वज्रजंघ राजा द्वारा अत्यन्त पूजित सीता मनमें प्रसन्न हो वहाँ रहने लगी । (८) हे स्वामिनी ! हे देवता ! हे महापूज्य ! हे कल्याणी ! हे शुभकर्मा ! तुम्हारी जय हो । तुम जीओ और चिरकाल पर्यन्त सुखी रहो इस प्रकार परिजनों द्वारा सीता कही जाती थी । (९) धर्मकथामें आसक्त मनवाली, धर्ममें प्रेम रखनेवाली, धर्मके धारणमें उद्यत और धर्मकी अभिलाषा रखनेवाली सीता वहाँ दिन बिताने लगी । (१०)

उधर अत्यधिक खिन्न उत्तम घोड़ोंसे शनैः शनैः रास्ता लाँघता हुआ कृतान्तवदन रामके पास आया । (११) सिरसे प्रणाम करके उसने कहा कि, देव ! आपके कहनेसे एकाकी और गर्भवती सीताको अरण्यमें मैंने छोड़ दिया है । (१२) हे स्वामी सिंह, ऋक्ष, भालू, चीते, और सियारकी भयंकर आवाजसे शब्दायमान, तीक्ष्ण और प्रचण्ड वायुवाले, एक-दूसरेके साथ जुड़े हुए वृक्षोंके कारण सघन, वाघ और भैंसे जिसमें जूझ रहे हैं सिंहके द्वारा गिराये गये मदोन्मत्त हाथीवाले, न्योले और साँपकी लड़ाईवाले, सिंहके पंजेकी मारसे मरे हुए सूअरोंवाले, शरभ (सिंहकी एक जाति) के द्वारा त्रस्त वनचरों से व्याप्त, कड-कड ध्वनि करके दूटनेवाले वृक्षोंसे शब्दित, कर-कर शब्द करके रोते हुए तथा ओले और बिजलीके कारण नीचे गिरे हुए नानाविध पक्षीसमूहोंसे व्याप्त, पहाड़ी नदियोंके पानीसे छाया हुआ और भरनोंकी जल्दी-जल्दी आनेवाली भन्न-भन्न ध्वनिके निर्घोषसे युक्त, तीव्र क्षुधासे जकड़े हुए और एक-दूसरेको मारनेवाले जंगली जानवरोंसे भरे हुए ऐसे, भयंकर और अनेक प्रकारके जानवरोंसे समृद्ध जंगलमें आपके कहनेसे मैंने सीताको छोड़ दिया है । (१३-७) हे देव ! नेत्रोंमें अश्रुरूपी बादलोंसे व्याप्त आपकी पत्नीने जो सन्देश कहा था वह सारा मैं कहता हूँ । आप उसे सुनें । (१८)

हे स्वामी ! आपके चरणोंमें गिरकर आपकी पत्नीने यह वचन कहा कि जिस तरह मैं छोड़ दी गई हूँ, उस तरह जिनधर्म को तुम मत छोड़ना । (१९) जो स्नेहरागके वशीभूत हो कर भी गुणोंको न पहचानकर दुर्जनोंके वचनसे मेरा त्याग कर

१. पुज्जिज्जन्ती—मु० । २. सुचिरं सरसई ! दे०—प्रत्य० । ३. अण्णोण्णाल्लितसा—प्रत्य० । ४. मए—प्रत्य० ।
 ५. णभत्ति न—मु० । ६. मुच्चिहिसि—मु० ।

निदोसाए वि महं, दोसं न तहा जणो पयासिहिइ । जह धम्मवज्जियस्स उ, नरवइ लज्जाविहीणस्स ॥ २१ ॥
 एयं चिय एकभवे, दुक्खं होहिइ मए सुयन्तस्स । सम्भत्त-नाण-दंसण-रहियस्स भवे भवे दुक्खं ॥ २२ ॥
 लोए नरस्स सुलहं, जुवइ-निही-विधिहवाहणाईयं । सम्भइसणरयणं, दुलहं पि य रज्जलाभाओ ॥ २३ ॥
 रज्जं भोत्तूण नरो, वच्चइ नरयं न एत्थ संदेहो । सम्भइसणनिरओ, सिवसुहसोक्खं लहइ धीरो ॥ २४ ॥
 एवं चिय संदिट्ठं, सीयाए नेहनिब्भरमणाए । संखेवेण नराहिव !, तुज्झ मए साहियं सबं ॥ २५ ॥
 सामिय ! सहावभीरू, अहिययरं दारुणे महारण्णे । बहुसत्तभीसणरवे, जणयसुया दुक्करं जियइ ॥ २६ ॥
 सेणावइस्स वयणं, सोऊणं राहवो गओ मोहं । पडियारेण विउद्धो, कुणइ पलावं पिययमाए ॥ २७ ॥
 चिन्तेऊण पवत्तो, हा ! कट्टं खलयणस्स वयणेणं । मूढेण मए सीया, निच्छूढा दारुणे रण्णे ॥ २८ ॥
 हा पउमपत्तनयणे !, हा पउममुहो ! गुणाण उप्पत्ती । हा पउमगब्भगोरे !, कत्तो त्ति पिए ! विमग्गामि ॥ २९ ॥
 हा सोमचन्दवयणे !, वायं मे देहि देहि वइदेहि ! । जाणसि य मज्झ हिययं, तुह विरहे कायरं निच्चं ॥ ३० ॥
 निदोसा सि मयच्छी !, किवाविमुक्केण उज्झिया सि मए । रण्णे उत्तासणए, न य नज्जइ किं पि पाविहिसि ? ॥ ३१ ॥
 हरिणि व जूहभट्टा, असण-तिसावेयणापरिग्गहिया । रविकिरणसोसियङ्गी, मरिहिसि कन्ते महारण्णे ॥ ३२ ॥
 किं वा वग्गेण वणे, खद्धा सीहेण वाइधोरेणं ? । किं वा वि धरणिसइया, अक्कन्ता मत्तहत्थीणं ? ॥ ३३ ॥
 पायवखयंकरेणं, जलन्तजालासहस्सपउरेणं । किं वणदवेण दद्धा, सहायपरिवज्जिया कन्ता ॥ ३४ ॥
 को रयणजडीण समो, होइ नरो सयलजीवल्लोयंमि ? । जो मज्झ पिययमाए, आणइ वत्ता वि विहलाए ॥ ३५ ॥

सकता है वह जिनधर्मको भी छोड़ सकता है । (२०) हे राजन् ! निर्दोष मेरा लोग उतना दोष नहीं कहेंगे जितना धर्मवर्जित और लज्जाहीनका कहेंगे । (२१) इस तरह मरने पर मुझे एक ही भवमें दुःख होगा, किन्तु सम्यग्ज्ञान और सम्यग्दर्शनसे रहितको तो भव-भवमें दुःख होगा । (२२) मनुष्यको लोकमें युवतियाँ, खजाना विविध वाहन आदि सुलभ हैं, किन्तु राज्यत्वभक्तों अपेक्षा भी सम्यग्दर्शन रूपी रत्न दुर्लभ है । (२३) इसमें सन्देह नहीं कि राज्यका उपभोग करके मनुष्य नरकमें जाता है, किन्तु सम्यग्दर्शनमें निरत धीर पुरुष तो मोक्षस्वका आनन्द प्राप्त करता है । (२४) हे राजन् ! हृदय में स्नेहसे भरी हुई सीताने इस तरह जो संदेश दिया था वह सब मैंने आपसे संक्षेपमें कहा । (२५) हे स्वामी ! स्वभावसे अत्यन्त भीरु सीता अनेक प्राणियोंकी भयंकर गर्जनावाले उस दारुण महाघनमें कटिनाईसे जीयेगी । (२६)

सेनापतिका ऐसा कथन सुनकर राम वेसुध हो गये । उपचारसे होशमें आने पर प्रियतमाके लिए वे प्रलाप करने लगे । (२७) वे सोचने लगे कि अफसोस है कि दुष्ट जनोंके वचनसे मूढ़ मैंने सीताको भयंकर जंगलमें छोड़ दिया । (२८) हा पद्मदलके समान नयनोंवाली ! हा पद्ममुखी ! हा गुणोंके उत्पादनके स्थान सरीखी ! हा पद्मके गर्भके समान गौर वर्णवाली प्रिये ! मैं तुम्हें कहाँ हूँ हूँ ! (२९) हा चन्द्रके समान सौम्य वदनवाली वैदेही ! मुझे जवाब दे, जवाब दे ! तेरे विरहके कारण सदैव कातर रहनेवाले मेरे हृदयको तू जानती है । (३०) हे मृगाक्षी ! तू निर्दोष है । दयाहीन मैंने तुझे भयंकर जंगलमें छोड़ दिया है । मैं नहीं जानता कि कैसे तेरी रक्षा होगी ? (३१) हे कान्ते ! यूथभ्रष्ट हरिणीकी भौंति भूख और प्यासकी वेदनासे पीड़ित तथा सूर्यकी किरणोंसे शोषित शरीरवाली तू महारण्यमें मर जायगी । (३२) जंगलमें बाघने अथवा अत्यन्त भयंकर सिंहने तुझे खा लिया होगा, अथवा पृथ्वी पर सोई हुई तुम्हें मत्त हाथीने कुचल दिया होगा । (३३) सहायता न मिलने पर कान्ता क्या वृक्षोंका क्षय करनेवाले और जलती हुई हजारों ज्वालामुखोंसे व्याप्त दावानलसे जल गई होगी ? (३४) सम्पूर्ण जीव लोकमें रत्नजटी जैसा कौन पुरुष होगा जो व्याकुल मेरी प्रियतमाका समाचार तक लावे । (३५)

१. ०द्धो, विलवइ सोए पियं—प्रत्यः ।

पुच्छइ पुणो पुणो च्चिय, पउमो सेणावई पयलियंसू । कह सा धोरारण्णे, धरिहिइ पाणा जणयधूया ! ॥ ३६ ॥
 एव भणिओ कयन्तो, लज्जाभरपेल्लिओ समुल्लावं । न य देइ ताव रामो, कन्तं सरिउं गओ मोहं ॥ ३७ ॥
 एयन्तरम्मि पत्तो, सहसा लच्छीहरो पउमनाहं । आसासिऊण नंपइ, नाह ! निसामेहि मे वयणं ॥ ३८ ॥
 धीरत्तणं पवज्जसु, सामिय ! मोत्तूण सोगसंबन्धं । उवणमइ पुवविहियं, लोयस्स सुहा-सुहं कम्मं ॥ ३९ ॥
 आयासे गिरिसिहरे, जैले थले दारुणे महारण्णे । जीवो संकडपडिओ, रक्खिज्जइ पुवसुकएणं ॥ ४० ॥
 अह पुण पावस्सुदए, रक्खिज्जन्तो वि धीरपुरिसेहिं । जन्तू मरइ निरुचं, संसारठिई इहं लोए ॥ ४१ ॥
 एवं सो पउमाओ, पसाइओ लक्खणेण कुसलेणं । छड्ढेइ किंचि सोयं, देइ मणं निययकरणिज्जे ॥ ४२ ॥
 सीयाए गुणसमूहं, सुमरन्तो जणवओ नयरवासी । रुयइ पयलन्तनेत्तो, अईव सीलं पसंसन्तो ॥ ४३ ॥
 वीणा-मुइङ्ग-त्तिसरिय-वंसरतुग्गीयवज्जिथा नयरो । जाया कन्दियमुहल, तद्वियहं सोयसंतत्ता ॥ ४४ ॥
 रामेण भद्रकलसो, भणिओ सीयाए पेयकरणिज्जं । सिग्घं करेहि विउलं, दाणं च जहिच्छियं देहि ॥ ४५ ॥
 जं आणवेसि सामिय !, भणिऊणं एव निग्गओ तुरियं । सबं पि भद्रकलसो, करेइ दाणाइकरणिज्जं ॥ ४६ ॥
 जुवईण सहस्सेहिं, अट्टहि अणुसंतयं पि परिकिण्णो । पउमो सीएक्कमणो, सिविणे वि पुणो पुणो सरइ ॥ ४७ ॥
 एवं सणियं सणियं, सीयासोए गए विरलभावं । सेसमहिहासु पउमो, कह कह वि धिई समणुपत्तो ॥ ४८ ॥
 एवं हलहर-चक्रहरा महिङ्गिजुत्ता नरिन्दचक्रहरा । भुञ्जन्ता विसयसुहं विमलजसादेतसयलविसयसुहं ॥ ४९ ॥

॥ इइ पउमचरिए रामसोयविहायं नाम छन्नउयं पव्वं समत्तं ॥

इसप्रकार आँसू बहाते हुए रामने सेनापतिसे बारम्बार पूछा कि उस भयंकर जंगलमें वह सीता प्राण कैसे धारण करेगी ? (३६) इस तरह कहे गये कृतान्तवदनने लज्जाके भारसे दबकर जब जवाब नहीं दिया तब तो पल्लोको याद करके राम वेहोश हो गये । (३७) उस समय सइसा लक्ष्मण रामके पास आया । उसने आश्वासन देकर कहा कि, हे नाथ ! मेरा कहना सुनें । (३८) हे स्वामी ! शोकका परित्याग करके आप धीरज धारण करें । पूर्वमें किया गया शुभ अथवा अशुभ कर्म लोगोंको प्राप्त होता है । (३९) आकाशमें, पर्वतके शिखर पर, जलमें, स्थलमें अथवा भयंकर वनमें संकटमें पड़ा हुआ जीव पूर्वकृत सुकृतसे बचता है । (४०) पापका उदय होने पर धीर पुरुषों द्वारा रक्षित प्राणी भी अवश्य मरता है । इस लोकमें संसारकी यही स्थिति है । (४१)

इस तरह कुशल लक्ष्मणके द्वारा प्रसादित रामने कुछ शोक छोड़ा और अपने कार्यमें मन लगाया । (४२) सीताके गुणोंको याद करके उसके शीलकी भूरि भूरि प्रशंसा करते हुए लोग आँखोंमें आँसू लाकर रोते थे । (४३) उस दिनसे वीणा, मृदंग, त्रिसरक और बंसीकी ध्वनियुक्त संगीतसे रहित वह नगरी शोकसे सन्तप्त हो आक्रन्दनसे सुखर हो उठी । (४४) रामने भद्रकलशासे कहा कि सीताका प्रेतकर्म जल्दी करो और विपुल एवं यथेच्छ दान दो । (४५) हे स्वामी ! आपका जो आज्ञा । ऐसा कहकर भद्रकलशा जल्दी ही गया और दानादि सब कार्य किया । (४६) आठ हजार युवतियोंसे सतत धिरे रहने पर भी एकमात्र सीतामें जिनका मन लगा हुआ है ऐसे राम स्वप्नमें भी उसे पुनः पुनः याद करने थे । (४७) इस तरह शनैः शनैः सीताका शोक कम होने पर रामने शैव महिलाओंसे क्रीडा तरह धैर्य प्राप्त किया । (४८) इस प्रकार बड़े भारी ऐश्वर्य से युक्त, राजाओंमें चक्रवर्ती जैसे तथा निर्मल यशवान्ने हलहर और चक्रवर (राम और लक्ष्मण) समग्र देराको सुख देने हुए विषय-सुखका उपभोग करने लगे । (४९)

॥ पञ्चचरितमें रामके शोकका विधान नामक छानवेवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

१. धीरत्त—प्रत्य० । २. जलण जले दारु—प्रत्य० ।

९७. लवण-ऽङ्कुसुप्पत्तिपव्वं

एवं चिय ताव इमं, जायं अन्नं सुणेहि संबन्धं । लवण-ऽङ्कुसाण सेणिय ।, उप्पत्ति राहवसुयाणं ॥ १ ॥
 अह पुण्डरीयनयरे, ठियाएँ सीयाएँ गम्भवीयाए । आपण्डुरङ्गलट्ठी, सामलवयणा थणा जाया ॥ २ ॥
 बहुमङ्गलसंपुण्णं, देहं अइविब्भमा गई मन्दा । निद्धा य नयणदिट्ठी, मुहकमलं चेव सुपसन्नं ॥ ३ ॥
 पेच्छइ निसासु सुविणे, कमलिणिदलपुडयविमलसलिलेणं । अभिसेयं कीरन्तं, गणसु अइचारुवेसु ॥ ४ ॥
 मणिदप्पणे विसन्ते, निययसुहं असिन्वरे पलोएइ । मोत्तूण य गन्धवं, सुणेइ नवरं धणुयसइं ॥ ५ ॥
 चक्खुं देइ अणिमिसं, सीहाणं पञ्जरोयरत्थाणं । एवंविहपरिणामा, गमेइ सीया तहिं दियहे ॥ ६ ॥
 एयं नवमे मासे, संपुण्णे सवणसंगए चन्दे । सावणपञ्चदसीए, सुयाण जुयलं पसूया सा ॥ ७ ॥
 अह ताण वज्जजङ्घो, करेइ जम्मूसवं महाविउलं । गन्धव-गीय-वाइय-पडुपडह-मुइङ्गसदालं ॥ ८ ॥
 पढमस्स कयं नामं, अणङ्गलवणो अणङ्गसमरुवो । तस्स गुणेहि सरिच्छो, बीओ मयणङ्कुसो नामं ॥ ९ ॥
 अह ताण रक्खणद्वं, जणणीए सरिसवां सिरे दिन्ना । दोण्ह वि कण्ठोलइया, ससुवण्णा वग्घनहमाला ॥ १० ॥
 एवं क्रमेण दोणिण वि, रिङ्गण-चंक्रमणयाइ कुणमाणा । वड्डन्ति बालया ते, पञ्चसु धाईसु सान्हिया ॥ ११ ॥
 पत्ता सरीरविद्धि, विविहकलागहणधारणसमत्था । जाया जणस्स इट्ठा, अमरकुमारोवमसिरोया ॥ १२ ॥
 ताणं चिय पुण्णेणं, सिद्धथो नाम चेह्लओ सहसा । पत्तो पुण्डरियपुरं, विज्जावलरिद्धिसंपन्नो ॥ १३ ॥
 जो तिणिण वि सञ्ज्ञाओ, गन्तूण वि मन्दरे जिणहराइं । वन्दिता एइ पुणो, निययावासं खणद्धेणं ॥ १४ ॥
 वय-नियम-संजमधरो, लोयाकयमत्थओ विमुद्धप्पा । जिणसासणाणुरत्तो, सबकलाणं च पारगओ ॥ १५ ॥

९७. लवण और अंकुश

हे श्रेणिक ! इधर तो ऐसा हुआ । अब रामके पुत्र लवण और अंकुशकी उत्पत्तिके बारेमें अन्य वृत्तान्त सुनो । (१) पौण्डरिकनगरमें स्थित गर्भवती सीताकी देहयष्टि पीली पड़ गई तथा स्तन श्याम बर्णके हो गये । (२) उसकी देह अनेक मंगलोंसे पूर्ण थी, अत्यन्त विलासयुक्त उसकी गति मन्द थी, दृष्टि स्निग्ध थी और मुखकमल प्रसन्न था । (३) उसने रात्रिके समय स्वप्नमें अत्यन्त सुन्दर रूपवाले हाथियों पर कमलिनीके पत्रपुटमें निर्मल जलसे किया जाता अभिषेक देखा । (४) मणियोंके दर्पण होते हुए भी वह अपना मुख तलवारमें देखती थी और संगीतको छोड़कर धनुषका शब्द सुनती थी । (५) पिंजरेके भीतर रहे हुए सिंहोंको वह अपलक नेत्रोंसे देखती थी । ऐसे परिणामवाली सीता वहाँ दिन बिताती थी । (६) इस प्रकार नौ महीने पूरे होने पर जब चन्द्रमा श्रवण नक्षत्रसे युक्त था तब श्रावणपूर्णिमाके दिन उसने पुत्रोंके युगलको जन्म दिया । (७) वज्रजङ्घने उनका नृत्ययुक्त संगीत, गान, वादन तथा ढोल और मृदंगकी पट्ट ध्वनिसे युक्त बहुत बड़ा जन्मोत्सव मनाया । (८) अन्नंगके समान रूपवाले पहलेका नाम अन्नंगलवण रखा और उसके मदनके गुणोंके समान दूसरेका नाम मदनांकुश रखा । (९) वहाँ उनकी रक्षाके लिए माताने शिरमें सरसों बिखेरे । दोनोंके गलोंमें सुवर्णयुक्त बाघनखकी माला पहनाई गई । (१०) इस तरह पाँच दाइयोंके साथ रहनेवाले वे बालक अनुक्रमसे रेंगना, चलना आदि करते हुए बढ़ने लगे । (११) शरीरवृद्धिको प्राप्त, वे विविध कलाओंके ग्रहण और धारणमें समर्थ तथा देवदुभागोंकी भाँति शोभायुक्त वे लोगोंके प्रिय हुए । (१२)

उनके पुण्यसे विद्या, बल एवं श्रद्धिसे सम्पन्न सिद्धार्थ नामक एक शिष्य, जो तीनों सन्ध्याके समय मन्दर पर्वत पर जाकर और जिन मन्दिरोंमें वन्दन करके आधे क्षणमें अपने आवासस्थान पर वापस आ जाता था, पौण्डरिक पुरीमें अचानक आ पहुँचा । (१३-४) व्रत, नियम एवं संयमको धारण करनेवाला मस्तक पर लोच किया हुआ, जिनशासनमें अनुरक्त और सब कलाओंमें निपुण वह भिक्षाके लिए क्रमशः भ्रमण करता हुआ सीताके घरके पास आया । आदरयुक्त तथा विशुद्ध

१. •वा तहिं दि०—मु० ।

भिक्षवद्वं विहरन्तो, क्रमेण पतो घरं विदेहाए । दिष्टो ससंभमाए, पणओ य विसुद्धभावाए ॥ १६ ॥
 दाऊण आसणवरं, सीया सवुत्तमन्नपाणेणं । पडिल्लमेइ पड्डा, सिद्धत्थं सबभावेणं ॥ १७ ॥
 निवत्ताहारो सो, सुहासणत्थो तओ विदेहाए । परिपुच्छिओ य साहइ, निययं चिय हिण्डणाईयं ॥ १८ ॥
 सो तत्थ चेल्लसामी, दट्टं लवणङ्कुसे सुविम्हविओ । पुच्छइ ताण पउत्ति, सीया वि य से परिकहेइ ॥ १९ ॥
 परिमुणियकारणो सो, रुयमाणिं जणयनन्दिणिं दट्टं । अइदारुणं किवाळ, सिद्धत्थो दुक्खिओ जाओ ॥ २० ॥
 अट्टङ्गनिमित्तधरो, सिद्धत्थो भणइ मा तुमं सोगं । कुणसु खणं एकं पि य, सुएहि एयारिसगुणेहिं ॥ २१ ॥
 सिद्धत्थेण कुमारा, सिग्धं नाणाविहाइ सत्थाइं । सिक्खीविद्या सपुण्णा, सबकलाणं च पारगया ॥ २२ ॥
 न हु कोइ गुरू खेवं, वच्चइ सीसेसु सत्तिखुभहेसु । जह दिणयरो पभासइ, सुहेण भावा सचक्खुणं ॥ २३ ॥
 देन्तो च्चिय उवएसं, हवइ कयत्थो गुरू सुसीसाणं । विवरीयाण निरत्थो, दिणयरतेओ व उलुयाणं ॥ २४ ॥
 एवं सबकलागम-कुसला लवण-ऽङ्कुसा कुमारवरा । अच्छन्ति कीलमाणा, जहिच्छियं पुण्डरीयपुरे ॥ २५ ॥
 सोमत्तणेण चन्दं, जिणऊण ठिया रवि च तेएणं । वीरत्तणेण सकं, उदहिं गम्भीरयाए य ॥ २६ ॥
 थिरयाए य नगिन्दं, जमं पयावेण मारुयं गइणा । परिणिज्जिणन्ति हत्थि, बलेण पुहइं च खन्तीए ॥ २७ ॥
 सम्मत्तभावियमणा, नज्जइ सिरिविजय-अमियवरतेया । गुरुलणसुस्सुसपरा, वीरां जिणसासणुज्जुत्ता ॥ २८ ॥
 एवं ते गुणरत्तपद्मयवरा विज्ञाननाणुत्तमा, लच्छीकित्तिनिवाससंगयतणू रज्जस भौरवहा ।
 कालं नेन्ति य पुण्डरीयनयरे भव्वां य भावद्विया, जाया ते विमलं सुणिम्मलजसा सीयासुया विस्सुया ॥ २९ ॥
 ॥ इइ पउमचरिए लवणङ्कुसंभवविहाणं नाम सत्तारुउयं पळवं समत्तं ॥

भाववाली सीताने उसे देखा और प्रणाम किया । (१५-६) उत्तम आसन देकर आनन्दविभोर सीताने सिद्धार्थको सम्पूर्ण भावसे सर्वोत्तम आहार-पानी दिया । (१७) भोजनसे निवृत्त होने पर सुखारुन पर बैठे हुए उससे सीताने पूछा । उसने अपना पर्यटन आदि कहा । (१८) वहाँ लवण और अंकुशको देखकर अत्यन्त विरिमत उस बाल मुनिने उन्हा वृत्तान्त पूछा । सीताने भी वह कह सुनाया । (१९) कारणसे अबगत अतिदयालु सिद्धार्थ बहुत ही कस्याभावसे रोती हुई सीताको देखकर दुःखित हुआ । (२०) अष्टांगनिमित्तके जानकार सिद्धार्थने कहा कि ऐसे गुणवाले पुत्रोंके होते हुए तुम एक क्षणभरके लिए भी शोक मत करो । (२१) सिद्धार्थने पुण्यशाली कुमारोंको नानाविध शास्त्र जल्दी ही सिखा दिये । वे सब कलाओंमें निपुण हुए । (२२) जिस प्रकार सूर्य नेत्रवालेको सब पदार्थ आसानसे दिखलाता है उसी प्रकार महान् शक्तिशाली शिष्योंमें कोई भी गुरु खेद प्राप्त नहीं करता । (२३) शिष्योंको उपदेश देने पर गुरु कृतार्थ होता है, किन्तु जिस तरह उल्लूके लिए सूर्य निरर्थक होता है उसी तरह विपरीत अर्थात् कुशिष्यको उपदेश देने पर वह निरर्थक होता है । (२४) इस प्रकार सब कलाओं एवं शास्त्रोंमें कुशल कुमारवर लवण और अंकुश पौण्डरिकपुरमें यथेच्छ क्रीड़ा करते हुए रहते थे । (२५) सौम्यभावसे चन्द्रमाको, तेजसे सूर्यको, वीरतासे इन्द्रको और गम्भीरतासे समुद्रको उन्होंने जीत लिया । (२६) स्थिरतासे नगेन्द्र मेरुको, प्रतापसे यमको, गतिसे वायुको, बलसे हार्थको तथा क्षमावृत्तिसे पृथ्वीको उन्होंने जीत लिया । (२७) वीर एवं जिन शासनमें उद्यत वे सम्यक्त्वसे भावित मनवाले श्री एवं विजयके कारण अमित तेजसे युक्त, तथा गुरुजनोंकी सेवामें तत्पर जान पड़ते थे । (२८) इस तरह गुणरूपी रत्नोंसे सम्पन्न पर्वत सर्राखे, विज्ञान एवं ज्ञानके कारण उत्तम, लक्ष्मी और कीर्तिके निवासके योग्य शरीरको धारण करनेवाले, राज्यभारको वहन करनेमें समर्थ, भव्य (मोक्ष पानेकी योग्यतावाले) तथा धर्मभावमें स्थित वे पौण्डरिकपुरमें कालनिर्गमन करते थे । इस प्रकार निर्मल यशवाले वे सीता-पुत्र विमल एवं विश्रुत हुए । (२९)

॥ पद्मचरितमें लवण और अंकुशके भवका विधान नामक सत्तानवेवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

१. सिक्खविद्या संपुण्णा—प्रत्य० । २. सुमुहेसु—प्रत्य० । ३. थिरजोगेण णिगि—प्रत्य० । ४. धीरा—प्रत्य० ।
 ५. भारव्वहा—प्रत्य० । ६. भव्वा भवते ठिया—प्रत्य० । ७. एवं—मु० । ८. ससुववि—मु० ।

९८. लवण-ऽकुसदेसविजयपद्यं

एतो उदारकीलण-जोगा लवण-ऽकुसा पलोएउं । राया उ वज्जजङ्घो, कन्नाउ गवेसए ताणं ॥ १ ॥
लच्छीमईएँ धूया, ससिचूला नाम सुन्दरा कन्ना । बत्तीसकुमारिजुया, पढमस्स निरुविया सा उ ॥ २ ॥
वीवाहमङ्गलं सो, दट्टुं दोणहं पि इच्छइ नरिन्दो । रुवेण अणुसरिच्छं, वीयस्स गवेसए कत्तं ॥ ३ ॥
चित्तन्तेण मुमरिया, पुहइपुरे पिहुनरिन्दअङ्गरुहा । नामेण कणयमाला, अमयमईकुच्छिसंभूया ॥ ४ ॥
तीए कएण दूओ, सिग्घं संपेसिओ नरवईणं । संपत्तो पुहइपुरं, तत्थ पिहुं पेच्छइ नरिन्दं ॥ ५ ॥
जंपइ कयसम्माणो, दूओ हं वज्जजङ्घनरवइणा । संपेसिओ महाजस!, तुज्झ सुयाममाणट्टाए ॥ ६ ॥
मयणङ्कुसस्स एयं, देहि सुयं देव! वरकुमारस्स । नेहं च अवोच्छिन्नं, कुणसु समं वज्जजङ्घेणं ॥ ७ ॥
तो भणइ पिहुनरिन्दो, रे दूय! वरस्स जस्स पढमगुणो । न य नज्जइ कुलवंसो, कह तस्स सुयं अहं देमि? ॥ ८ ॥
एव भणन्तस्स तुमं, जुत्तं चिय दूय! निग्गहं काउं । किं व परेण पउत्तं, जं तं न दुरावहं होइ? ॥ ९ ॥
सो एव निट्टुराए, गिराएँ निब्भच्छिओ नरवईणं । दूओ गन्तूण फुडं, कहेइ सिरिवज्जजङ्घस्स ॥ १० ॥
सुणिऊण दूयवयणं, सन्नद्धो वज्जजङ्घनरवसभो । सह साहणेण गन्तुं, विद्धंसइ पुहइपुरदेसं ॥ ११ ॥
पिहुदेसवहे रुट्ठो, वग्घरहो नाम पत्थिवो सूरु । जुज्झन्तो चिय गहिओ, संगामे वज्जजङ्घेणं ॥ १२ ॥
नाऊण य वग्घरहं, बद्धं देसं च विहयविद्धत्थं । पिहुनरवई सल्लेहं, पुरिसं पेसेइ मित्तस्स ॥ १३ ॥
नाऊण य लेहत्थं, समागओ पोयणाहिओ राया । बहुसाहणो महप्पा, मित्तस्स सहायकज्जेणं ॥ १४ ॥

९८. लवण और अंकुशका देशविजय

इधर सुन्दर और क्रिडाके योग्य लवण एवं अंकुशको देखकर वज्रजंघ राजा उनके लिए कन्याओंकी खोज करने लगा । (१) लक्ष्मीमतीकी शशिचूला नामकी सुन्दर कन्या बत्तीस युवतियोंके साथ पहले लवणकुमार को दी गई । (२) राजा लवण और अंकुश दोनोंका विवाहमंगल देखना चाहता था, अतः दूसरेके लिए रूपमें समान कन्याकी वह खोज करने लगा । (३) सोचने पर उसे याद आया कि पृथ्वीपुरके पृथुनरेन्द्रकी पुत्री और अमृतवतीकी कुक्षिसे उत्पन्न कनकमाला नामकी कन्या है । (४) उसके लिए राजाके पास शीघ्र ही उसने दूत भेजा । पृथ्वीपुरमें वह पहुँचा । वहाँ उसने पृथुराजाके दर्शन किये । (५) जिसका सत्कार किया गया है ऐसे उस दूतने कहा कि, हे महायश ! वज्रजंघ राजाके द्वारा मैं आपकी पुत्रीकी मंगनीके लिए भेजा गया हूँ । (६) हे देव ! कुमारवर मदनान्कुशके लिए आप यह कन्या दें और वज्रजंघके साथ अविच्छिन्न स्नेह-सम्बन्ध जोड़ें । (७)

इसपर पृथु राजाने कहा कि दूत ! जिस वरका प्रथम गुण, कुलवंश ज्ञात न हो उसे मैं अपनी पुत्री कैसे दे सकता हूँ ? (८) अरे दूत ! इस तरह कहनेवाले तुम्हारा निग्रह करना योग्य है । अथवा जो दूसरेके द्वारा भेजा गया है वह दुर्धर होता है । (९) इस प्रकार राजा द्वारा कठोर वाणीसे अपमानित उस दूतने जाकर श्रीवज्रजंघसे सारी बात स्पष्ट रूपसे कही । (१०)

दूतका वचन सुनकर वज्रजंघ राजा तैयार हुआ । सेनाके साथ जाकर उसने पृथ्वीपुर देशका विध्वंस किया । (११) पृथु राजाके देशके विनाशसे रघु व्याघ्ररथ नामक राजा युद्धमें प्रवृत्त हुआ । युद्धमें लड़ते हुए उसको वज्रजंघने पकड़ लिया । (१२) व्याघ्ररथके पकड़े जाने और विनष्ट वैभववाले देशके बारेमें सुनकर पृथु राजाने लेखक साथ एक आदमीको मित्रके पास भेजा । (१३) पत्रमें लिखा हुआ समाचार जानकर पौतनपुरका बलवान् राजा मित्रको सहायता देनेके लिए बड़ी सेनाके साथ आया । (१४) उधर वज्रजंघ राजाने भी शीघ्र ही पौण्डरिकनगरमें अपने पुत्रोंके पास सन्देशवाहक पुरुषको

ताव य पुण्डरियपुरं, तूरन्तो वज्जजङ्घनरवङ्गा । पुरिसो उ लेहवाहो, पवेसिओ निययपुत्ताणं ॥ १५ ॥
 अह ते कुमारसीहा, आणं पिउसन्तिथं पडिच्छेउं । सनाहसमरभेरिं, दावेन्ति थ अप्पणो नयरे ॥ १६ ॥
 एत्तो पुण्डरियपुरे, नाओ कोलाहलो अइमहन्तो । बहुसुहडतूरसदो, वित्थरिऊणं समादत्तो ॥ १७ ॥
 सुणिऊण असुयपुबं, तं सद्दं समरभेरिसंजणियं । किं किं ? तिऽह पासत्थे, पुच्छन्ति लव-ऽङ्कुसा तुरियं ॥ १८ ॥
 सुणिऊण य सनिमित्तं, वित्तन्तं ते तहिं कुमारवरा । सन्नज्जिउं पयत्ता, गन्तुमणा समरकज्जम्मि ॥ १९ ॥
 रुब्भन्ता वि कुमारा, अहियं चिय वज्जजङ्घपुत्तेहिं । गन्तूण समादत्ता, भणइ विदेहा य ते पुत्ते ॥ २० ॥
 तुब्भे हि पुत्त ! बाला, न खमा जुज्जस्स ताव निमिसं पि । न य जुप्पन्तिऽह वच्छा, महइमहारहधुराधारे ॥ २१ ॥
 तेहि वि सा पडिभणिया, अम्मो ! किं भणसि दीणयं वयणं । वीरपुरिसाण भोज्जा, वसुहा किं एत्थ विद्धेहिं ? ॥ २२ ॥
 एवं ताण सहावं, नाऊणं जणयंनन्दिणी भणइ । पावेह पत्थिवजसं, तुब्भे इह सुहडसंगामे ॥ २३ ॥
 अह ते मज्जियजिमिया, सवालंकारभूसियसरीरा । सिद्धाण नमोक्कारं, काऊणं चैव जणणीए ॥ २४ ॥
 धय-चमर-कणय-किंकिणि-विहूसिएसुं रहेसु आरूढा । असि-कणय-चक्र-तोमर-करालकोन्तेसु साहीणा ॥ २५ ॥
 अट्टाइएसु पत्ता, दिणेसु ते वज्जजङ्घनरवसहं । सन्नद्धवद्धकवया, हयगयरहजोहपरिक्किण्णा ॥ २६ ॥
 दट्टेण वज्जजङ्घं, समागयं पिहुरिन्दसामन्ता । तुरिया जंसाहिलासी, अग्निहट्टा समरसोण्डीरा ॥ २७ ॥
 असि-परसु-चक्र-पट्टिस-एसु पहरन्ति उभयवलजोहा । जुज्जन्ति सवडहुत्ता, अन्नोन्नं चैव घापन्ता ॥ २८ ॥
 एवंविहम्मि जुज्जे, वट्टन्ते सुहडमुक्कवुक्कारे । लवण-ऽङ्कुसा पविट्ठा, चक्का-ऽसि-गयातमन्धारे ॥ २९ ॥
 अह ते तुरओउ(हु)दए, बहुभडमयरे सुसत्थकमलवणे । लीलान्ति जहिच्छं, समरतलाए कुमारगया ॥ ३० ॥

भेजा । (१५) सिंह जैसे उन कुमारोंने पिताकी आज्ञा जानकर अपने नगरमें युद्धकी तैयारीके लिए भेरी बजाई । (१६) तब पौण्डरिकपुरमें बहुत भारी कोलाहल मच गया । सुभटों व बाघोंकी बहुत बड़ी आवाज चारों ओर फैल गई । (१७) अश्रुतपूर्व युद्धकी भेरीसे उत्पन्न अश्रुतपूर्व उस आवाजको सुनकर लवण और अंकुश पासके लोगोंसे सहसा पूछने लगे कि यह क्या है ? यह क्या है ? (१८) अपने निमित्तका वृत्तान्त सुनकर वे कुमारवर युद्धकार्यमें जानेके लिए तैयार होने लगे । (१९) वज्रजंघके पुत्रों द्वारा बहुत रोके जाने पर भी कुमार जानेके लिए प्रवृत्त हुए । इस पर जानकीने अपने पुत्रोंसे कहा कि, हे पुत्रों ! तुम बच्चे हो । तुम क्षण भरके लिए भी युद्ध करनेमें समर्थ नहीं हो । बड़े भारी रथकी धुराको बहन करने में बत्स (बछड़े और छोटे बच्चे) नहीं जोड़े जाते । (२०-२१) उन्होंने भी उसे प्रत्युत्तरमें कहा कि माता जी ! आप ऐसा दीनवचन क्यों कहती हैं ? वसुधा वीरपुरुषों द्वारा भोग्य है । इसमें वृद्धोंका क्या काम ? (२२) उनका ऐसा स्वभाव जानकर सीताने कहा कि इस सुभट-संप्राममें तुम राजाओंका यश प्राप्त करो । (२३)

इसके पश्चात् स्नान और भोजन से निवृत्त उन्होंने शरीर पर सब अलंकारोंसे विभूषित हो सिद्धोंको और माताको प्रणाम किया । (२४) ध्वज, चँवर, सोनेकी छोटी छोटी घण्टियोंसे विभूषित रथमें आरूढ़, तलवार, कनक, तोमर, चक्र एवं भयंकर भालोंसे लैस, कवच बाँधकर तैयार और घोड़े, हाथी, रथ और योद्धाओंसे घिरे हुए वे ढाई दिनोंमें वज्रजंघ राजाके पास जा पहुँचे । (२५-२६) वज्रजंघको आया देख पृथुराजाके यशके अभीलापी तथा लड़ाईमें बहादुर सामन्त जल्दी ही भिड़ गये । (२७) दोनों सेनाओंके योद्धा सैकड़ों तलवार, फरसे, चक्र और पट्टियोंसे प्रहार करने लगे । एक-दूसरेको घायल करते हुए वे एक दूसरेके साथ युद्ध करने लगे । (२८) जिसमें सुभट गर्जना कर रहे थे तथा चक्र, तलवार और गदाके तमसे जो अन्धकारित हो गया था—ऐसा जब युद्ध हो रहा था तब उसमें लवण और अंकुराने प्रवेश किया । (२९) वे कुमाररूपी हाथी घोड़ेरूपी जलवाले, सुभट रूपी बहुतसे मगरमच्छोंसे युक्त तथा अच्छे शस्त्ररूपी कमलवनसे सम्पन्न ऐसे युद्धरूपी

१. ०हा तओ पु०—प्रत्य० । २. ०यणंदणी—प्रत्य० । ३. ०यखिक्किणिविभूसि०—प्रत्य० । ४. जयाहि०—प्रत्य० ।

५. रसोर्डीरा—प्रत्य० । ६. तुरउट्टारे, व० सु० ।

गेण्हन्ता संधेन्ता, परिमुञ्चन्ता य सरवरे बहुसो । न य दीसन्ति कुमारा, दीसन्ति य रिबुमडा भिन्ना ॥ ३१ ॥
 निद्वयपहराभिहयं, सयलं लवणङ्कुसेहि रिउसेत्रं । भग्गं पिहण समयं, नज्जइ सीहेहि मयजूहं ॥ ३२ ॥
 अणुमग्गेण रहवरा, दाउं ते जंपिऊण आढत्ता । अमुणियकुल्लाण संपइ, मा भज्जह अहिमुहा होह ॥ ३३ ॥
 हयविहयविप्परद्धं, निययवलं पेच्छिउं पलायन्तं । राथा पिहू नियत्तो, पडइ कुमाराण चल्लेणु ॥ ३४ ॥
 अह भणइ पिहुरिन्दो, दुच्चरियं जं कयं पमाएणं । तं खमह मज्ज सव्वं, सोमसहावं मणं काउं ॥ ३५ ॥
 पुहइपुरसामियं ते, संभासेऊण महुरवयणेहिं । जाया पसन्नहियया, समयं चिय वज्जजङ्घेणं ॥ ३६ ॥
 लवणङ्कुसेहि समयं, पिहुस्स पीई निरन्तरा जाया । आणामिया य बहवे, तेहि महन्ता पुहइपाला ॥ ३७ ॥
 आवासिएहि एवं, भडेहि तो वज्जजङ्घनरवइणा । भणओ य नारयमुणी, कहेहि लवण-उडकुसुप्पती ॥ ३८ ॥
 तो भणइ नारयमुणी, अत्थि इहं कोसलाए नरवसभो । इक्खागवंसतिलओ, विक्खाओ दसरहो नामं ॥ ३९ ॥
 चत्तारि सायरा इव, तस्स सुया सत्ति-कन्ति-बलजुत्ता । विन्नाणनाणकुसल्य, ईसत्थकयस्समा धीरो ॥ ४० ॥
 जेट्ठो य हवइ पउमो, अणुओ पुण-लक्खणो तहा भरहो । सत्तुओ य कणिट्ठो, जो सत्तुं जिणइ संगामे ॥ ४१ ॥
 पालेन्तो पिउवयणं, लक्खणसहिओ समं च धरिणीए । मोत्तुण य साएयं, डण्डारणं गओ पउमो ॥ ४२ ॥
 लच्छीहरेण वहिओ, चन्दणहानन्दणो य सम्बुक्को । सुयवेरिएण समयं, करेइ खरदूसणो जुज्झं ॥ ४३ ॥
 संगामम्मि सहाओ, जाव गओ लक्खणस्स पउमामो । ताव य छलेण हरिया, जणयसुया रक्खसिन्देणं ॥ ४४ ॥
 सुग्गीव-हणुव-जम्बव-विराहियाई बहू गयणगामी । रामस्स गुणासत्ता, मिलिया पुबं व सुक्कएणं ॥ ४५ ॥

सरोवरमें इच्छानुसार लीला करने लगे । (३०) बागोंको लिए हुए, निशान देखते हुए और छोड़ते हुए कुमार दिखाई नहीं पड़ते थे, शत्रुओंके विनष्ट सुभट ही दिखाई पड़ते थे । (३१) लवण और अंकुश द्वारा निर्दय प्रहारोंसे पीटी गई सारी शत्रुसेना भागकर पृथुके पास आई । वह सिंहों द्वारा भगाये जाने मृगयूथकी भाँति मालूम होती थी । (३२) पीछे पीछे रथ लगाकर वे कुमार उन्हें कहने लगे कि अज्ञातकुलवालोंसे अब मत भागो । सामने आओ । (३३)

क्षत-विश्रत और विनष्ट हो भागती हुई अपनी सेनाको देखकर पृथुराजा लौटा और कुमारोंके चरणोंमें जा गिरा । (३४) फिर पृथुराजाने कहा कि प्रमादवश मैंने जो दुश्चरित किया है वह सब तुम मनको सौम्य स्वभाववाला बनाकर क्षमा करो । (३५) पृथ्वीपुरके स्वामी तथा वज्रजंघके साथ मधुर वचनोंमें सम्भाषण करके वे मनमें प्रसन्न हुए । (३६) लवण और अंकुशके साथ पृथुकी अत्यन्त प्रीति हुई । उन्होंने बड़े-बड़े राजाओंको अधीन किया । (३७) साथमें ठहरे हुए सुभटोंसे युक्त वज्रजंघ राजाने नारद मुनिसे कहा कि लवण और अंकुशकी उत्पत्तिके बारेमें कहें । (३८) तब नारद मुनिने कहा कि—

यहाँ साकेतनगरीमें इक्ष्वाकुवंशमें तिलकभूत दशरथ नामका एक विख्यात राजा था । (३९) उसके चार सागर जैसे शान्ति, कान्ति एवं बलसे युक्त, विज्ञान और ज्ञानमें कुशल तथा धनुर्विद्या तथा अस्त्रविद्यामें अभ्यस्त चार वीर पुत्र थे । (४०) ज्येष्ठ राम थे । उनसे छोटे लक्ष्मण और भरत थे और शत्रुघ्न सबसे छोटा था । वह युद्धमें सबको जीत सकता था । (४१) पिताके वचनका पालन करनेके लिए लक्ष्मण और अपनी पत्नीके साथ साकेतका त्याग करके राम दण्डकारण्यमें गये । (४२) वहाँ चन्द्रनखाके पुत्र शम्बूकका लक्ष्मण ने वध किया । पुत्रके वैरीके साथ खरदूषणने युद्ध किया । (४३) जब राम युद्धमें लक्ष्मणको सहायता देनेके लिए गये तब राक्षसेन्द्र रावणने सीताका झूठसे अपहरण किया । (४४) पूर्वकृत पुण्यके कारण रामके गुणोंमें आसक्त सुग्रीव, हनुमान, जाम्बवंत विराधित आदि बहुतसे गगनगामी विद्याधर आ जुटे । (४५) राक्षसपतिको जीतकर राम सीताको वापस लिये । उन्होंने साकेत नगरीको भी स्वर्गसदृश बना

१. कन्तिसंजुत्ता—प्रत्य० । २. धीरा—प्रत्य० । ३. चंदपहा०मु० ।

रामेण रक्खसवद्, जिणिऊणं आणिया तओ सीया । साएया वि य नयरी, समसरिच्छा कया तेहिं ॥ ४६ ॥
 परमिद्धिसंपउत्ता, हलहर-नारायणा तहिं रज्जं । भुज्जन्ति सुरवरा इव, सत्तसु रयणेषु साहीणा ॥ ४७ ॥
 अह अन्नया कयाई, जणपरिवायाणुगेण पउमेणं । परपुरिसजणियदोसा, जणयसुया छड्डिया रण्णे ॥ ४८ ॥
 कहिऊण य निस्सेसं, वत्तं तो नारओ सरिय सीयं । जंपइ समंसुनयणो, सबनरिन्दाण पच्चवत्तं ॥ ४९ ॥
 पउमस्स अग्गमहिसी, अट्टण्हं महिलियासहस्साणं । रयणं व निरुवलेवा, उत्तमसम्मत्त-चारित्ता ॥ ५० ॥
 नूणं चिय अन्नभवे, पावं समुवज्जियं विदेहाए । तेणेतथ माणुसत्ते, अणुहूयं दारुणं दुवत्तं ॥ ५१ ॥
 परतत्तिरयस्स इहं, जणस्स अलियं पभासमाणस्स । वासीफलं व जोहा, कह व न पड्डिया धरणिवट्टे ? ॥ ५२ ॥
 सुणिऊण वयणमेयं, अणज्जलवणो मुणिं भणइ एत्तो । साहेहि इहन्ताओ, केदूरे कोसला नयरी ? ॥ ५३ ॥
 सो भणइ जोयणाणं, सयं ससद्धं इमाउ ठाणाओ । साएया वरनयरी, जत्थ य परिवसइ पउमाओ ॥ ५४ ॥
 सुणिऊण वयणमेयं, भणइ लवो वज्जज्जुनरवसम्मं । मामय मेलेहि भडा, साएयं जेण वच्चाओ ॥ ५५ ॥
 एयन्तरम्मि पिहुणा, दिन्ना मयणज्जुस्स निययसुया । वत्तं पाणिग्गहणं, तत्थ कुमारस्स तदियहं ॥ ५६ ॥
 गमिऊण एगरत्तिं, तत्तो वि विणिग्गया कुमारवरा । परदेसे य जिणन्ता, पत्ता आलोगनयरं ते ॥ ५७ ॥
 तत्तो वि य निग्गन्तुं, अब्भणपुरं गया सह वलेणं । तत्थ वि कुबेरकन्तं, जिणन्ति समरे नरवरिन्दं ॥ ५८ ॥
 गन्तूण य लम्पागं, देसं बहुगाम-नगरपरिपुणं । तत्थ वि य एगकण्णं, नराहिबं निज्जिणन्ति रणे ॥ ५९ ॥
 तं पि य अइक्कमेउं, पत्ता विजयत्थलिं महानयरिं । तत्थ वि जिणन्ति वीरा, भाइसयं नरवरिन्दाणं ॥ ६० ॥
 गज्जं समुत्तरेउं, कइलासस्सुत्तरं दिसं पत्ता । जाया य सामिसाला, लव-ऽकुसा णेयदेसाणं ॥ ६१ ॥
 झस-कंबु-कुंत-सीहल-पण-णदण-सलहलंगला भीमा । भूया य वामणा वि य, जिया य बहुवाइया देसा ॥ ६२ ॥

दिया । (४६) अत्यन्त क्रुद्धिसे युक्त हलधर और नारायण सात रत्नोंसे युक्त हो देवोंकी भाँति वहाँ राज्यका उपभोग करने लगे । (४७) एक दिन लोगोंके अपवादके कारण रामने परपुरुषसे जन्य दौषवाली सीताको अरण्यमें छोड़ दिया । (४८) समग्र वार्ता कहकर और सीताका स्मरण करके अश्रुयुक्त नयनोंवाले नारदने सब राजाओंके समक्ष कहा कि आठहजार महिलाओं में रत्नके जैसी रामकी पटरानी सीता निर्दोष थी और उत्तम सम्यक्त्व एवं चारित्रसे सम्पन्न थी । (४९-५०) अवश्य ही परभवमें सीताने पाप कमाया होगा । उसीसे इस जन्ममें दारुण दुःखका उसने अनुभव किया (५१) दूसरों की बातोंमें रत और झूठ बोलनेवाले मनुष्यकी जीभ वासी फलके समान जमीन पर क्यों न गिर गई ? (५२)

यह कथन सुनकर अनंगलवणने मुनिसे पूछा कि यहाँ से साकेतनगरी कितनी दूर है यह आप कहें । (५३) उसने कहा कि इस स्थानसे डेढ़सौ योजन दूर साकेत नगरी है, जहाँ राम रहते हैं । (५४) यह कथन सुन लवणांकुशने वज्रजंघ राजासे कहा कि, मामाजी ! आप सुभट इकट्ठे करें जिससे हम साकेतकी ओर जायें । (५५) इस बीच पृथु राजाने मदानांकुशको अपनी लड़की दी । उसी दिन वहाँ कुमारका पाणिग्रहण हुआ । (५६) एक रात बिताकर वहाँसे वे कुमार वर निकल पड़े और दूसरे देशोंको जीतते हुए आलोकनगरमें आ पहुँचे । (५७) वहाँसे भी निकलकर वे सेनाके साथ अभ्यर्णपुर गये । वहाँ भी कुबेरकान्त राजाको युद्धमें जीता । (५८) वहाँसे बहुतसे गाँव और नगरोंसे परिपूर्ण लम्पाक देशमें गये । वहाँ पर भी उन्होंने एककर्ण राजाको युद्धमें हराया । (५९) उसका भी अतिक्रमण कर वे विजयस्थली नामकी महानगरीमें पहुँचे । वहाँ भी उन वीरोंने राजाओंके सौ भाइयोंको जीता । (६०) गंगाको पारकर कैलासकी उत्तरदिशामें वे पहुँच गये । इस तरह लवण और आंकुश अनेक देशोंके स्वामी हुए । (६१) उन्होंने झष, कम्बु, कुन्त, सिंहल, पण, नन्दन, शलभ, लंगल, भीम, भूत, वामन तथा बहुवादिक आदि देश जीते । (६२) सिन्धुको पार करके उस पार आये हुए बहुतसे आर्य-अनार्य देश

१. •च्छा य तेहिं कया—प्रत्य० । २. मेलेह—प्रत्य० । ३. नरदवरं—प्रत्य० । ४. •हमंगला—मु० । ५. वाहणा—प्रत्य० ।

उत्तरिऊण य सिन्धुं, अवरेण जिणन्ति ते बहू देसा । आरिय-अणारिया वि य, इमेहि नामेहि नायवा ॥ ६३ ॥
 आहीर-चोय-जवणा, कच्छा सर्गकेरला य नेमाला । वरुला य चारुवच्छा, वरावडा चेव सोपारा ॥ ६४ ॥
 कसमीर-विसाणा वि य, विज्जातिसिरा हिडिबयं-ऽबद्धा । सूला बब्बर-साला, गोसाला सरमया सवरा ॥ ६५ ॥
 आणंदा तिसिरा वि य, खसां तहा चेव होन्ति मेहल्या । सुरसेणां वल्हीया, खंधारा कोल-उल्लुगा य ॥ ६६ ॥
 पुरि-कोवेरा कुहरा, अन्धा य तहा कलिङ्गमाईया । एए अत्रे य बहू, लव-ऽङ्कुसेहिं जिया देसा ॥ ६७ ॥
 एवं लव-ऽङ्कुसा ते, सेविज्जन्ता नरिन्दचक्रेणं । पुणरवि पुण्डरियपुरं, समागया इन्दसमविहवा ॥ ६८ ॥
 सोऊण कुमारणं, आगमणं वज्जजङ्घसहियाणं । धय-छत्त-त्तोरणाई, लोएण कया नयरसोहा ॥ ६९ ॥
 उवसोहिए समत्थे, पुण्डरियपुरे सुरिन्दपुरसरिसे । लवणङ्कुसा पविट्ठा, नायरलोएण दीसन्ता ॥ ७० ॥
 सीया दट्टूण सुए, समागए निग्गया वरघराओ । लवण-ऽङ्कुसेहि षणया, जणणी सवायरतररेणं ॥ ७१ ॥
 तीए वि ते कुमारा, अवगूढा हरिसनेहहिययाए । अङ्गेषु परामुट्ठा, सिरेसु परिचुम्बिया अहियं ॥ ७२ ॥

सपत्थिवा सगयतुरंगवाहणा, विसन्ति ते सियकमलायरे पुरे ।

मणोहरा पयलियचारुकुण्डला, लव-ऽङ्कुसा विमलपयावपायडा ॥ ७३ ॥

॥ इइ पउमचरिए लवङ्कुसदेसविजयं नाम अट्टाणउयं पठवं समत्तं ॥

९९. लवणं-ऽङ्कुसजुज्झपठवं

एवं ते परमगुणं, इस्तरियं पाविया वरकुमारा । बहुपत्थिवपरिकिण्णा, पुण्डरियपुरे परिवसन्ति ॥ १ ॥

ततो कयन्तवयणं, परिपुच्छइ नारओ अडविमज्जे । विमणं गवेसमाणं, जणयसुयं उज्झिउदेसे ॥ २ ॥

उन्होंने जीत लिये । उनके ये नाम जानो । (६३) आभीर, चोक, यवन, कच्छ, शक, केरल, नेपाल, वरुल, चारुवत्सी, बरावट, सोपारा, काश्मीर, विषाण, विज्ज, त्रिशिर, हिडिम्ब, अम्बष्ठ, शूल, वर्वरसाल, गोशाल, शर्मक, शबर, आनन्द, त्रिशिर, खस, मेखलक, शूरसेन, वाह्लीक, गान्धार, कोल, उल्लुक, पुरीकोवेर, कुहर, आन्ध्र तथा कलिङ्ग आदि—ये तथा दूसरे भी बहुतसे देश लवण और अंकुशाने जीत लिये । (६४-६७)

इस तरह राजाओंके समूह द्वारा सेवित वे इन्द्रके समान वैभववाले लवण और अंकुश पुनः पौण्डरिकपुरमें लौट आये । (६८) वज्रजंघके साथ कुमारोंका आगमन सुनकर लोगोंने ध्वज, छत्र, तोरण आदिसे नगरकी शोभा की । (६९) पूर्णरूपसे सुरेन्द्रकी नगरीके समान शोभित पौण्डरिकपुरमें नगरजनों द्वारा देखे जाते लवण और अंकुशाने प्रवेश किया । (७०) पुत्रोंका आगमन देखकर सीता सुन्दर घरमेंसे बाहर निकली । लवण और अंकुशाने माताको सम्पूर्ण आदरके साथ प्रणाम किया । (७१) हृदयमें हर्ष और स्नेहयुक्त उसने भी उन कुमारों का आलिंगन किया, अंगोंको सहलाया और मस्तकों पर बहुते बार चुम्बन किया । (७२) राजाओंके साथ, हाथी, घोड़े और वाहनसे युक्त, मनोहर, भूमते हुए सुन्दर कुण्डलवाले तथा निर्मल प्रतापसे देदीप्यमान उन लवण और अंकुशाने पौण्डरिकपुरमें प्रवेश किया । (७३)

॥ पउमचरितमें लवण और अंकुशका देशविजय नामक अट्टानवेवाँ पर्व समाप्त हुआ । ॥

९९. लवण-अंकुशका युद्धवर्णन

इस तरह वे वरकुमार परम उत्कर्ष और ऐश्वर्य प्राप्त करके अनेक राजाओंसे घिरे हुए पौण्डरिकपुरमें रहने लगे । (१) जंगलके बीच जिस प्रदेश में सीताका त्याग किया था वहाँ खोजते हुए दुःखी कृतान्तवदनसे नारदने पूँछा । (२) सारा वृत्तान्त कहने

१. ०र-ओय०—प्रत्य० । २. ०गकीरला—प्रत्य० । ३. ०षाणा—प्रत्य० । ४. ०ला रसमया—प्रत्य० । ५. खिसा—प्रत्य० ।
 ६. ०णा वण्होया गंधारा कोसल लया—प्रत्य० । ७. पण्हीया मु० । ८. वसन्ति—प्रत्य० ।

सयले य समक्त्वाए, वितन्ते नारओ गओ तुरियं । पुण्डरियपुरं गन्तुं, पेच्छइ लवण-ऽङ्कुसे भवणे ॥ ३ ॥
 'संपुइओ पविट्टो, भणइ तओ नारओ कुमारवरे । जा राम-लक्खणसिरी, सा तुभं हवउ सविसेसा ॥ ४ ॥
 काऊण समालावं, खणमेकं नारओ कुमाराणं । साहेइ य वितन्तं, कयन्तवयणाइयं सबं ॥ ५ ॥
 तं नारयस्स वयणं, सुणिऊण लव-ऽङ्कुसा परमरुद्धा । जंपन्ति समरसज्जं, कुणह लहुं साहणं सबं ॥ ६ ॥
 पउमस्सुवरि पयट्ठे, पुत्ते दड्डूण तथ वइदेही । रुवइ ससंभमहियया, दइयस्स गुणे अणुसरन्ती ॥ ७ ॥
 सीयाएँ समीक्त्थो, सिद्धत्थो भणइ नारयं एत्तो । एस कुडुम्बस्स तुमे, भेओ काउं समाढत्तो ॥ ८ ॥
 सिद्धत्थं देवरिसी, भणइ न जाणामि हं इमं कज्जं । नवरं पुण एत्थ गुणो, दीसइ सत्थो तुमं होहि ॥ ९ ॥
 सुणिऊण य रुयमाणिं, जणणिं पुच्छन्ति दोणिं वि कुमारा । अम्मो ! साहेहि लहुं, केण तुमं एत्थ परिभूया ॥ १० ॥
 सीया भणइ कुमारे, न य केणइ एत्थ रोसिया अहयं । नवरं रुयामि संपइ, तुम्ह पियं सरिय गुणनिलयं ॥ ११ ॥
 भणिया य कुमारेहिं, को अम्ह पिया ? कहिं वि सो अम्मो ? । परिवसइ किं च नामं ?, एयं साहेहि भूयत्थं ॥ १२ ॥
 जं एव पुच्छिया सा, निययं साहेइ उब्भवं सीया । रामस्स य उप्पत्ती, लक्खणसहियस्स निस्सेसं ॥ १३ ॥
 दण्डारण्णाइयं, नियहरणं रावणस्स वहणं च । साएयपुरिपवेसं, जणाववायं निरवसेसं ॥ १४ ॥
 पुणरवि कहेइ सीया, जणपरिवायाणुणेण रामेणं । नेऊण उज्झिया हं, अडवीए केसरिरवाए ॥ १५ ॥
 गयगहणपविट्ठेणं, दिट्ठा हं वज्जनङ्घनरवइणा । काऊण धम्मवहिणी, भणिऊण इहाणिया नयरं ॥ १६ ॥
 एवं नवमे मात्ते, संपत्ते सवणसंगए चन्दे । एत्थेव पसूया हं, तुम्भेहिं राहवस्स सुया ॥ १७ ॥
 तेणेह लवणसायर-परियन्ता वसुमई रयणपुण्णा । विज्जाहरेहि समयं, दासि व वसीकया सवा ॥ १८ ॥

पर नारद फौरन पौण्डरिकपुर गया और भवनमें लवण एवं अंकुशको देखा (१) । पूजित नारदने प्रविष्ट होकर कुमारोंसे कहा कि राम और लक्ष्मणका जो सविशेष ऐश्वर्य है वह तुम्हारा हो । (४) एक क्षणभर बातचीत करके नारदने कुमारोंसे कृतान्तवदन आदिका सारा वृत्तान्त कह सुनाया । (५) नारदका वह कथन सुनकर अत्यन्त रुष्ट लवण और अंकुशने कहा कि युद्ध के लिए शीघ्र ही सारी सेनाको तैयार करो । (६) रामके ऊपर पुत्र आक्रमण करनेवाले हैं यह देखकर भयसे युक्त हृदयवाली सीता पतिके गुणोंको याद कर रोने लगी । (७) तब सीताके समीपमें रहे हुए सिद्धार्थने नारदसे कहा कि तुम इस कुटुम्बमें भेद बालनेके लिए प्रवृत्त हुए हो । (८) देवर्षि नारदने कहा कि मैं यह कार्य नहीं जानता । फिर भी इसमें शुभ दिखाई पड़ता है, अतः तुम स्वस्थ हो । (९)

माता को रोती सुन दोनों कुमारोंने पूछा कि, मां ! तुम जल्दी ही कहो कि तुम्हारा किसने अपमान किया है ? (१०) सीताने कुमारोंसे कहा कि किसीने मुझे कुपित नहीं किया । मैं तो इस समय केवल गुणके धामरूप तुम्हारे पिता को याद करके रोती हूँ । (११) कुमारोंने पूछा कि, माता जी ! हमारे पिता कौन हैं ? वे कहाँ रहते हैं ? उनका नाम क्या है ? यह सच सच कहो । (१२) इस प्रकार पूछने पर उस सीताने अपने उद्धव और लक्ष्मण सहित रामकी उत्पत्तिके बारेमें सब कुछ कहा । (१३) उसने दण्डकारण्यमें अपना अपहरण, रावणका बध, साकेतपुरीमें प्रवेश तथा लोगोंका अपवाद आदि समग्र वृत्तान्त कह सुनाया । (१४) सीताने पुनः कहा कि जन-परिवादको जानकर रामने सिंहकी गर्जनाओंसे व्याप्त जंगलमें मुझे छोड़ दिया था । (१५) हाथियोंको पकड़नेके लिए प्रविष्ट वज्रजंघ राजा द्वारा मैं देखी गई । धर्मभगिनी बनाकर और कहकर बादमें मैं यहाँ लाई गई । (१६) इस तरह नौ महीने पूरे होने पर श्रवण नक्षत्रके साथ जब चन्द्रमाका योग था तब रामके पुत्र तुम्हें मैंने यहाँ जन्म दिया । (१७) विद्याधरोंके साथ उन्होंने लवणसागर तक फैली हुई तथा रत्नों से परिपूर्ण सारी पृथ्वी दासीकी भाँति वशमें की है । (१८) अब लड़ाई छिड़ने पर या तो तुम्हारी या फिर रामकी अशोभनीय बात

१ संपुइओ—मु० ।

आवडिए संगामे, संपइ कि तुम्ह कि व रामस्स । सुणिहामि असोभणयं, वत्तं तेणं मए रुणं ॥ १९ ॥
 सां तेहि वि षडिभणिया, अम्मो ! बल-केसवाण अइरेणं । सुणिहिसि माणविभङ्गं, समरे अम्हेहि कौरन्तं ॥ २० ॥
 सीया भणइ कुमारे, न य जुत्तं एरिसं ववसिउं जे । नमियबो चेव गुरू, हवइह लोए ठिई एसा ॥ २१ ॥
 ते एव जंपमाणिं, संथावेऊण अत्तणो जणणि । दोण्णि वि मज्जिबल्लिमिया, आहरणविभूसियसरीरा ॥ २२ ॥
 सिद्धाण नमोक्कारं, काऊणं मत्तगयवरारूढा । तो निग्गया कुमारा, बलसहिया कोसलभिमुहं ॥ २३ ॥
 दस जोहसहस्सा खलु, गहियकुहाडा बलस्स पुरहुत्ता । छिन्नन्ता तरुनिवहं, वच्चन्ति तओ तहि सुहडा ॥ २४ ॥
 ताण अणुमग्गओ पुण, खर-करह-वइल-महिसंमाईया । वच्चन्ति रयण-कञ्चण-चेलियवहुधन्नभरभरिया ॥ २५ ॥
 नाणाउहगहियकरा, नाणानेवत्थउज्जला जोहा । वच्चन्ति य दढदप्पा, चञ्चलचंमरा वरतुरंगा ॥ २६ ॥
 ताणं अणुमग्गेणं, मत्तगया बहलधाउविच्छुरिया । वच्चन्ति रहवरा पुण, कयसोहा ऊसियधओहा ॥ २७ ॥
 तम्बोल-पुष्प-चन्दन-कुड्कुम-कप्पूर-चेलियाईयं । सबं पि सुष्पभूयं, अत्थि कुमाराण खन्धारे ॥ २८ ॥
 एवं ते बलसहिया, संपत्ता कोसलपुरीविसयं । पुण्डुच्छु-सालिपउरं, काणण-वण-वप्परमणिज्जं ॥ २९ ॥
 जोयणमेत्तेसु पयाणएसु, एवं क्रमेण संपत्ता । कोसलपुरीएँ नियडे, नदीएँ आवासिया वीरा ॥ ३० ॥
 दट्टूण तं कुमारा, पबयसिहरीहतुङ्गपायारं । पुच्छन्ति वज्जजङ्गं, मामय ! किं दीसए एयं ? ॥ ३१ ॥
 तो भणइ वज्जजङ्गो, साएया पुरवरी हवइ-एसा । जत्थउच्छइ तुम्ह पिया, पउमो लच्छीहरसम्मो ॥ ३२ ॥
 सुणिऊण समासन्ने, हलहर-नारायणा पराणीयं । जंपन्ति कस्स लोए, संपइ मरणं समासन्नं ॥ ३३ ॥
 अहवा वि किं व भणइ ?, सो अप्पाऊ न एत्थ संदेहो । जो एइ अम्ह पासं, कयन्तववलोइओ पुरिसो ॥ ३४ ॥

मैं सूनूगी । इसीसे मैं रोती थी । (१६) उन्होंने उसे कहा कि, माताजी ! हमारे द्वारा युद्धमें किए गए बलदेव और केशवके मानभंगके बारेमें तुम शीघ्र ही सुनोगी । (२०) सीताने कुमारोंसे कहा कि तुम्हारे लिए ऐसा करना योग्य नहीं है, क्योंकि गुरुजन वन्दन करने योग्य होते हैं । लोकमें यही स्थिति है ! (२१) इस तरह कहती हुई अपनी माताको सान्त्वना देकर उन दोनोंने स्नान-भोजन किया तथा शरीरको आभूषणोंसे अलङ्कृत किया । (२२)

सिद्धोंको नमस्कार करके मत्त हाथी पर आरूढ़ वे कुमार सेनाके साथ साकेतकी ओर निकल पड़े । (२३) दस हजार योद्धा हाथमें कुल्हाड़ी लेकर सेनाके आगे जाकर पेड़ोंको काटते थे । फिर वहाँ सुभट जाते थे । (२४) फिर उनके पीछे पीछे रत्न, सोना, वस्त्र तथा अनेक तरहके धान्यके भारसे लदे हुए गधे, ऊँट, बैल, भैंसे आदि जाते थे । (२५) उनके पीछे नाना-प्रकारके आयुध हाथमें धारण किए हुए, नाना-भौतिके वस्त्रोंसे उज्वल तथा अत्यन्त दर्पयुक्त, योद्धा और चंचल चमरवाले घोड़े जाते थे । (२६) उनके पीछे पीछे गेरू आदि धातुसे अत्यन्त चित्रित मत्त हाथी तथा सजाए गए और ऊँची ध्वजाओंवाले रथ जाते थे । (२७) कुमारोंकी छावनीमें ताम्बूल, पुष्प, चन्दन, कुड्कुम, कप्पूर, वस्त्र आदि सब कुछ बहुतायतसे था । (२८) इस तरह सेनाके साथ वे सफेद ऊख और धानसे भरे हुए तथा बाग-वगीचों और क्लियोंसे रमणीय साकेतपुरीके देश में आ पहुँचे । (२९) योजनमात्र प्रयाण करते हुए वे वीर क्रमशः साकेतपुरीके समीप आ पहुँचे और नदी पर डेरा डाला । (३०) पर्वतके शिखरके समान उत्तुङ्ग प्राकारवाले उस नगरको देखकर कुमारोंने वज्रजंघसे पूछा कि, मामा ! यह क्या दीखता है ! (३१) तब वज्रजंघने कहा कि यह साकेत नगरी है जहाँ तुम्हारे पिता राम लक्ष्मणके साथ रहते हैं । (३२)

समीप में आई हुई शत्रुकी सेनाके बारेमें सुनकर राम और लक्ष्मण ने कहा कि लोकमें किसकी मृत्यु अब नजदीक आई है । (३३) अथवा क्या कहा जाय ! वह अल्पायु है इसमें सन्देह नहीं । जो पुरुष हमारे पास आता है वह यमके द्वारा देखा गया है । (३४) तब पासमें बैठे हुए विराधितसे रामने सहसा कहा कि सिंह और गरुड़ की ध्वजा से युक्त

१. सा तेहि प०—प्रत्य० ।

२. तरुगहणं, व०—प्रत्य० ।

३. ०सयाईया—प्रत्य० ।

४. ०चदला व०—मु० ।

५. कणधमया ऊ०—प्रत्य० । ६. वीरा—प्रत्य० । ७. ०जसंवाचं—मु० ।

एतो पासलीणं, विराहियं भणइ राहवो सहसा । हरि-गरुड-वाहण-धयं, रणपरिहत्यं कुणह सेत्रं ॥ ३५ ॥
 भणिकेण वयणमेयं, जन्दोयरनन्दणेण आहूया । सधे वि नरवरिन्दा, समागया कोसलनयरिं ॥ ३६ ॥
 ददूण राहववलं, सिद्धत्थो भणइ नारयं भीओ । भामण्डलस्स गन्तुं, एयं साहेहि वित्तन्तं ॥ ३७ ॥
 तो नारएण गन्तुं, वित्तन्ते साहिए अपरिसेसे । जाओ दुक्खियंविमणो, सहसा भामण्डलो राया ॥ ३८ ॥
 सोऊण भाइणेजे, आसन्ने रणवलेण महएणं । भामण्डलो पयट्ठो, समयं पियरेण पुण्डरियं ॥ ३९ ॥
 माया-विचोण समं, समागयं भायरं पलोएउं । सीया भवणवराओ, विणिग्गया निम्भरसिणेहा ॥ ४० ॥
 सीया कुणइ पलावं, कलुणं पिउ-भाइ-माइसंजोए । निवासणाएँ दुक्खं, साहेन्ती जं जहावत्तं ॥ ४१ ॥
 संथाविकुण वडिणिं, जंपइ भामण्डलो सुणसु देवी ! । रणसंसयं पवन्ना, तुज्ज सुया कोसलपुरीए ॥ ४२ ॥
 नारायण-बलदेवा, न य जोहिज्जन्ति सुरवरेहिं पि । लवण-ऽङ्कुसेहि खोहं, नीया ते तुज्ज पुतेहिं ॥ ४३ ॥
 जाव न हवइ पमाओ, ताण कुमाराण देवि ! एत्ताहे । गन्तूण कोसला हं, करेमि परिरक्खणोवायं ॥ ४४ ॥
 सोऊण वयणमेयं, सीया भामण्डलेण समसहिया । दिवविमाणारूढा, पुत्ताण गया समीवग्मि ॥ ४५ ॥
 अह ते कुमारसीहा, मायामहजुवल्लयं च जणणिं च । संभासन्ति य मामं, सयणसिणेहेण परितुट्ठा ॥ ४६ ॥
 को राम-लक्खणार्णं, सेणिय ! वण्णेइ सयलवलरिद्धिं ? । तह वि थ सुणेहि संपइ, संखेवेणं भणिज्जन्तं ॥ ४७ ॥
 केसरिरहे विल्लगो, पउमो लच्छीहरो य गरुडङ्के । सेसा वि पवरसुहडा, जाण-विमाणेसु आरूढा ॥ ४८ ॥
 राया उ तिसिरनामो, वण्हिसिहो सीहविकमो मेरू । एतो पलम्बवाहू, सरहो तह वालिखिल्लो य ॥ ४९ ॥
 सूरु य रुद्धमूर्द्ध, कुलिस्ससवणो य सीहउदरो य । पिहुमारिदत्तनामो, मइन्दवाहाइया बहवे ॥ ५० ॥
 एवं पञ्चसहस्ता, नरिन्दचन्दाण वद्धमउडाणं । विज्जाहराण सेणिय !, भडाण को लहइ परिसंखं ? ॥ ५१ ॥

वाहनवाली सेनाको युद्धके लिए तैयार करो । (३५) ऐसा वचन कहकर चन्द्रोदरके पुत्र विराधितके द्वारा बुलाए गए सभी राजा साकेत नगरीमें आये । (३६) रामके सेनाको देखकर भयभीत सिद्धार्थने नारदसे कहा कि भामण्डलसे जाकर यह वृत्तान्त कहो ; (३७) तब नारदने जाकर सारा वृत्तान्त उसे कह सुनाया । उसे सुनकर भामण्डल राजा सहसा दुःखित और विषण्ण हो गया । (३८) भानजे बड़े भारी सैन्यके साथ समीपमें हैं ऐसा सुनकर भामण्डलने पिताके साथ पौण्डरिकपुरकी ओर प्रयाण किया । (३९) माता-पिताके साथ भाईको आया देख स्नेहसे भरी हुई सीता भवनमेंसे बाहर निकली । (४०) पिता, भाई और मातासे निर्वासनका जैसा हुआ था वैसा दुःख कहती हुई सीता करुण स्वरमें विलाप करने लगी । (४१) बहनको सान्त्वना देकर भामण्डलने कहा कि, देवी ! सुनो । साकेतपुरमें तुम्हारे पुत्र युद्धके कारण संशयवस्थामें आ पड़े हैं । (४२) देव भी नारायण और बलदेवके साथ युद्ध नहीं कर सकते । वे तुम्हारे पुत्र लवण और अङ्कुश द्वारा छुट्ठ किये गये हैं । (४३) हे देवी ! इस समय उन कुमारोंके लिए प्रमाद न हो, अतः मैं अयोध्या जाकर रक्षाका उपाय करता हूँ । (४४) यह वचन सुनकर भामण्डलके साथ सीता दिव्य विमान पर आरूढ़ हो पुत्रोंके पास गई । (४५) स्वजन के स्नेहसे आनंदमें आये हुए वे कुमारसिंह नाना-नानाके युगल तथा माता एवं मामाके साथ वार्तालाप करने लगे । (४६)

हे श्रेणिक ! राम और लक्ष्मणके समग्र सैन्यकी ऋद्धिका वर्णन कौन कर सकता है ? फिर भी तुम संक्षेपसे कही जाती उस ऋद्धिके बारेमें सुनो । (४७) केसरी रथमें राम और गरुडसे चिह्नित रथमें लक्ष्मण बैठे थे । वाक्कीके उत्तम सुभट यान एवं विमाभोंमें सवार हुए थे । (४८) त्रिशिर नामका राजा, वह्निशिख्य, सिंहविक्रम, मेरु, प्रलम्बवाहु, शरभ, वालिखिल्य, सूर्य, रुद्रभूति, कुलिशश्रवण, सिंहोदर, पृथु, मारिदत्त, मृगेन्द्रवाहन आदि बहुत-से राजा थे । ऐसे पाँच हजार तो विद्याधरोंके मुद्दुदुधारी राजा थे । हे श्रेणिक ! सुभटोंकी तो गिनती ही कौन कर सकता है । (४९-५१) घोड़ों

१. ०ण एकवेयं—प्रत्य० । २. ०यमणसो, स०—प्रत्य० । ३. सुणउण—प्रत्य० । ४. माया-पियरेण—प्रत्य० । ५. राओ य—प्रत्य० ।

आसेसु कुञ्जरेसु य, केइ भडा रहवरेसु आरूढा । खर-करह-केसरीसु य, अन्ने गो-महिसयविलग्गा ॥ ५२ ॥
 एवं रामस्स बलं, विणिग्गयं प्हयत्तूरनिग्घोसं । नाणाउहगहियकरं, विमुक्कपाइक्कवोक्कारं ॥ ५३ ॥
 एत्तो परवलसहं, सुणिउं लवण-ऽड्कुसानियं सबं । सत्तद्धं रणदच्छं, अणेयवरसुहडसंघायं ॥ ५४ ॥
 कालाणलंसुचूडा, गवङ्गनेवालवब्बरा पुण्डा । मागहय-पारसउला, कालिङ्गा सीहला य तहा ॥ ५५ ॥
 एकाहिया सहस्सा, दसनरवसहाणं पवरवीराणं । लवण-ऽड्कुसाण सेणियं, एसा कहिया मए संखा ॥ ५६ ॥
 एवं परमवलं तं, राहवसेन्नस्स अभिसुहावडियं । पसरन्तगय-तुरंगं विसमाहयत्तूरसंघायं ॥ ५७ ॥
 जोहा जोहेहि समं, अन्निभट्टा गयवरा सह गएहिं । जुञ्जन्ति रहारूढा, समयं रहिएसु रणसूरा ॥ ५८ ॥
 खग्गेहि मोग्गरेहि य, अन्ने प्हणन्ति सत्ति-कुन्तेहिं । सीसगहिएक्कमेक्का, कुणन्ति केई मुयाजुज्झं ॥ ५९ ॥
 जाव य खणन्तरेक्कं, ताव य गयत्तूरयपवरजोहेहिं । अइरुहिरकद्दमेण य, रणभूमी दुग्गमा जाया ॥ ६० ॥
 बहुत्तूरनिणाएणं, गयगज्जियत्तूरयहिंसियरवेणं । न सुणेइ एकमेक्कं, उल्लव्वं कण्णवडियं पि ॥ ६१ ॥
 नह भूमिगोयराणं, वट्टइ जुज्झं पहारविच्छड्डुं । तह खेयराण गयणे, अन्निभट्ट संकुलं भीमं ॥ ६२ ॥
 लवण-ऽड्कुसाण पक्खे, ठिओ य भामण्डलो महाराया । विज्जुप्पभो मयङ्को, महाबलो पवणवेगो य ॥ ६३ ॥
 सच्छन्द-मियङ्काई, एए विजाहरा महासुहडा । लवण-ऽड्कुसाण पक्खं, वहन्ति संग्गामसोडीरा ॥ ६४ ॥
 लवण-ऽड्कुससंभूई, सुणिऊणं खेयरा रणमुहम्मि । सिद्धिलाइउमारद्धा, सबे, सुग्गीवमाईया ॥ ६५ ॥
 दट्ठूण जणयतणयं, सुहडा सिरिसेलमाइया पणइं । तीए कुणन्ति सबे, समरे य ठिया उदासीणा ॥ ६६ ॥

पर, हाथियों पर तो कोई सुभट उत्तम रथों पर आरूढ़ हुए । दूसरे गधे, ऊँट, सिंह, बैल और भैंसे पर सवार हुए । (५२) इस तरह रणवायोंका बड़ा भारी घोष करता हुआ, हाथमें नानाविध आयुध लिया हुआ तथा प्यादे जिसमें गर्जना कर रहे हैं ऐसा रामका सैन्य निकला । (५३) उधर शत्रुसैन्यकी आवाज सुनकर लवण और अंकुशकी युद्धमें दक्ष और अनेक उत्तम सुभटों से युक्त समग्र सेना तैयार हो गई । (५४) कालानल, अंशुचूड़, गवंग, नेपाल, बर्बर, पुण्डू, मागध, पारसकुल, कलिग तथा सिंहल—यह लवण और अंकुश के दक्ष अत्यन्त वीर राजाओंकी ग्यारह हजारकी संख्या, हे श्रेणिक! मैंने तुमसे कही । (५५-६)

इस तरह हाथी और घोड़ोंसे व्याप्त तथा भयंकर रूपसे पीटे जाते वायोंके समूह से युक्त वह उत्तम सैन्य रामकी सेनाके सम्मुख उपस्थित हुआ । (५७) योद्धा योद्धाओंके साथ और हाथी हाथियोंके साथ भिड़ गये । रणशूर रथिक रथिकोंके साथ युद्ध करने लगे । (५८) कोई तलवार और मुद्गरसे तो दूसरे शक्ति और भालों से प्रहार करते थे । कोई एक-दूसरेका सिर पकड़कर बाहुयुद्ध करते थे । (५९) एक क्षणभर वीरते पर तो हाथी, घोड़े एवं उत्तम योद्धाओंसे तथा रक्त-जन्य अत्यधिक कीचड़से रणभूमि दुर्गम हो गई । (६०) बहुत-से वायोंके निनादसे तथा हाथियोंकी चिंघाड़ एवं घोड़ोंकी हिनहिनाहटसे कानमें पड़ा हुआ एक-दूसरेका शब्द सुनाई नहीं पड़ता था । (६१) आयुध जिसमें फेंके जा रहे हैं ऐसा भूमि पर चलनेवाले मनुष्योंका जैसा युद्ध हो रहा था वैसा ही आकाशमें खेचरोंके बीच संकुल और भयंकर युद्ध हो रहा था । (६२) लवण और अंकुशके पक्षमें महाराज भामण्डल स्थित हुआ । विद्युत्प्रभ, मृगांक महाबल, पवनवेग, स्वच्छन्द-मृगांक आदि युद्धमें वीर महासुभट विद्याधरोंने लवण और अंकुशका पक्ष लिया । (६३-४) लवण और अंकुशकी विभूतिके बारेमें सुनकर युद्धमें सुग्रीव आदि सब खेचर शिथिल होने लगे । (६५) जनकपुत्री सीताको देखकर हनुमान आदि सुभटोंने उसे प्रणाम किया और वे युद्धसे उदासीन हो गये । (६६)

१. मृणिङ्गण लव-ऽड्कुसा पिययसेणं । स०—प्रत्य० । २. ष धीरपुरिसाणं । ल०—प्रत्य० । ३. तुरंगमविसं—सु० ।

४. सीसं गहिएक्कमेक्का, कु०—प्रत्य० । ५. गयनिवहजोहणिवहेहिं—प्रत्य० । ६. यहेसियं—प्रत्य० ।

तं रिउबलं महन्तं, संवद्वेऊण गयघडानिवहं । पविसन्ति वरकुमारा, हलहर-ऽनारायणतेणं ॥ ६७ ॥
 केसरि-नागारिधए, दट्टूण लव-ऽङ्कुसा रणुच्छाहा । एकेकमाणदोणिण वि, जेट्ट-कणिट्टाण आवडिया ॥ ६८ ॥
 उट्टियमेत्तेण रणे, लवेण रामस्स सोहधयचावं । छिन्नं र्हो य भग्गो, बलपरिहत्थेण वीरेणं ॥ ६९ ॥
 अन्नं र्हं विलग्गो, अन्नं धणुवं च राहवो धेत्तुं । संघेइ जाव बाणं, ताव लवेणं कओ विरहो ॥ ७० ॥
 आरुहिऊण नियरहे, वज्जावत्तं गहाय धणुरयणं । रामो लवेण समयं, जुज्झइ पहरोहविच्छड्डं ॥ ७१ ॥
 पउमस्स लवस्स जहा, वट्टइ जुज्झं रणे महाघोरं । तह लक्खण-ऽङ्कुसाणं, तेणेव कमेण नायवं ॥ ७२ ॥
 अन्नाण वि जोहाणं, एवं अणुसरिसविक्रमवलाणं । जसमग्गयाण सेणियं, आवडियं दारुणं जुज्झं ॥ ७३ ॥
 एवं महन्तददसत्तिसुनिच्छयाणं, संमाणदाणकयसामियसंषयाणं ।
 जुज्झं भडाण बहुसत्थपडन्तघोरं, जायं निरुद्धनिवयं विमलंसुमग्गं ॥ ७४ ॥

॥ इइ पउमचरिए लवण-ऽङ्कुसजुज्झविहाणं नाम नवनउयं पव्वं समत्तं ॥

१००. लवण-अंकुससमागमपर्व

एत्तो मंगहनराहिव!, जुज्झविसेसे परिण्णुडं ताणं । जुज्झं कहेमि संपइ, सुणेहि लव-रामपमुहाणं ॥ १ ॥
 सिव्वं लवस्स पासे, अवट्टिओ वज्जजङ्घनरवसभो । भामण्डलो वि य कुसं, अणुगच्छइ बलसमाउत्तो ॥ २ ॥
 रामस्स कयन्तमुहो, अवट्टिओ सारही र्हारुढो । तह लक्खणस्स वि रणे, विराहिओ चेव साहीणो ॥ ३ ॥

हाथियोंके समूहसे युक्त उस बड़े भारी शत्रुसैन्यको त्रस्त करके ये दोनों कुमारवर राम और लक्ष्मणके समीप आ पहुँचे । (६७) सिंह और गरुड़की ध्वजावाले राम-लक्ष्मणको देखकर युद्धमें उत्साहशील लवण और अंकुश दोनों बड़े और झोटे भाईमें से एक-एकके साथ जुट गये । (६८) युद्धमें खड़े होते ही बली और वीर लवणने रामका सिंह ध्वजाके साथ धनुष काट डाला और रथ तोड़ डाला । (६९) दूसरे रथ पर सवार हो और दूसरा धनुष लेकर राम जैसे ही बाण टेकने लगे वैसे ही लवणने उन्हें रथहीन बना दिया । (७०) अपने रथ पर सवार हो और धनुषरत्न वज्रावर्त हाथमें लेकर राम लवणके साथ जिसमें आयुधोंका समूह फेंका जा रहा है ऐसा युद्ध लड़ने लगे । (७१) राम और लवणका युद्धक्षेत्रमें जैसा महाभयंकर युद्ध हो रहा था वैसे ही युद्ध उसी क्रमसे लक्ष्मण और अंकुशके बीच भी हो रहा था ऐसा समझना चाहिए । (७२) हे श्रेणिक! यशस्वी चाह रखनेवाले समान विक्रम और बलशाली दूसरे योद्धाओंके बीच भी दारुण युद्ध होने लगा । (७३) इस तरह महती शक्ति और दृढ़ निश्चयवाले तथा सम्मान-दानके कारण स्वामीकी सम्पत्ति बढ़ानेवाले सुभटोंके बीच बहुत-से शत्रुओंके गिरनेसे भयंकर तथा राजाओं एवं निर्मल आकाशको निरुद्ध करनेवाला युद्ध हुआ । (७४)

॥ पद्मचरितमें लवण एवं अंकुशका युद्धविधान नामक निजानवेवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

१००. लवण और अंकुशका समागम

हे मगधनरेश! उधर जब विशेष रूपसे युद्ध चल रहा था तब लवण और राम आदिके बीच जो युद्ध हुआ वह अब मैं विरपट्टरूपसे कहता हूँ । उसे तुम सुनो । (१) लवणके पास शीघ्र ही वज्रजंघ राजा उपस्थित हुआ । बलसे युक्त भामण्डल भी अंकुशका अन्तुगमन करने लगा । (२) रथ पर आरुढ़ कृतान्तवदन रामका सारथी हुआ । उस्ताप्रकार युद्धमें

१. ०कमणा दो०—मु० । २. ०स्स सहधयं चावं—मु० । ३. धीरेण—प्रत्य० । ४. महाणरा०—प्रत्य० । ५. विसेसेण परिण्णुडं ते णं—मु० ।

एयन्तरम्मि पउमो, भणइ कयन्तं रहं सवडहुत्तं । ठावेहि वेरियाणं, करेमि जेणारिसंखोहं ॥ ४ ॥
 जंपइ कयन्तवयणो, एए वि हु जज्जरीकया तुरया । सुणिसियभाणेहि पइ!, इमेण संगामदच्छेणं ॥ ५ ॥
 निदावसम्मि पत्ता, इमे हया पयलरुहिरविच्छड्डा । न वहन्ति चडुसएहि वि, न चेव करताडिया सामि! ॥ ६ ॥
 राहव! मज्झ भुयाओ, इमाउ बाणेहि सुणिसियग्गेहिं । पेच्छसु अरीण संपइ, कयन्वकुसुमं पिव कयाओ ॥ ७ ॥
 पउमो भणइ कयन्तं, वज्जावत्तं महं पि धणुरयणं । सिद्धिलायइ अइदूरं, विहलपयावं व हलमुसलं ॥ ८ ॥
 ज्वत्तकययस्वणाणं, परपक्खत्तयंकराण दिवाणं । अत्थाण संपइ महं, जाया एयारिसाऽवत्था ॥ ९ ॥
 अत्थाण निरत्थत्तं, सेणिय! जह राहवस्स संजायं । तह लक्खणस्स वि रणे, एव विसेसेण नायवं ॥ १० ॥
 परिमुणियनाइवन्धा, सावेक्खा रणमुहे कुमारवरा । जुञ्जन्ति तेहि समयं, हल-चक्करा निरावेक्खा ॥ ११ ॥
 रामस्स करविमुक्कं, तं सरनिवहं लयो पडिसरेहिं । छिन्नइ बलपरिहत्थो, कुसो वि लच्छीहरस्सेवं ॥ १२ ॥
 ताव य कुसेण भिन्नो, सरेसु लच्छीहरो गओ मोहं । सिग्घं विराहिओ वि हु, देइ रहं कोसलाहुत्तं ॥ १३ ॥
 आस्तथो भणइ तओ, विराहियं लक्खणो पडिवहेणं । मा देहि रहं सिग्घं, ठवेहि समुहं रिउमड्डाणं ॥ १४ ॥
 सरपूरियदेहस्स वि, संगामे अहिमुहस्स सुहडस्स । सूरस्स सलाहणियं, मरणं न य एरिसं जुत्तं ॥ १५ ॥
 सुर-मणुयमज्झयारे, परमपयपसंसिया महापुरिसा । कह पडिवज्जन्ति रणे, कायरभावं तु नरसीहा? ॥ १६ ॥
 दसरहनिवस्स पुत्तो, भाया रामस्स लक्खणो अहयं । तिहुयणविकखायजसो, तस्सेवं नेव अणुसरिसं ॥ १७ ॥
 एव भणिएण तेणं, नियत्तिओ रहवरो पवणवेगो । आलगो संगामो, पुणरवि जोहाण अइघोरो ॥ १८ ॥
 एयन्तरे अमोहं, चक्कं जालासहस्सपरिवारं । लच्छीहरेण मुक्कं, कुसस्स तेलोकभयजणयं ॥ १९ ॥

विराधित लक्ष्मणका सहायक हुआ। (३) बादमें रामने कृतान्तवदनसे कहा कि रथको शत्रुओंके सम्मुख ले जाओ जिससे मैं शत्रुओंको व्यग्र करूँ। (४) कृतान्तवदनने कहा कि, हे प्रभो! संग्राममें दक्ष इसने तीक्ष्ण बाणोंसे इन घोड़ोंको जर्जर बना दिया है। (५) हे स्वामी! बहते हुए रुधिरसे आच्छादित ये घोड़े बेसुध हो गये हैं। न तो सैकड़ों मधुर वचनसे और न हाथसे थपथपाने पर भी ये चलते हैं। (६) हे राघव! मेरी इन भुजाओंको देखो जो फेंके गये तीक्ष्ण नोकवाले बाणोंसे शत्रुओंके कदम्बके पुष्पकी भाँति कर दी है। (७) तब रामने कृतान्तवदनसे कहा कि मेरा भी धनुषरत्न वज्रावर्त अत्यन्त शिथिल बना दिया गया है तथा हल-मूसल भी प्रतापहीन कर दिया गया है। (८) यत्नों द्वारा रक्षा किये जाते तथा शत्रुपक्षके लिए विनाशकारी मेरे दिव्य शस्त्रों की भी इस समय ऐसी अवस्था हो गई है। (९) हे श्रेणिक! रामके शस्त्रोंकी जैसी निरर्थकता हुई वैसे ही विशेष रूपसे लक्ष्मणकी भी युद्धमें समझना। (१०) ज्ञातिसम्बन्धको जाननेवाले कुमारवर सज्ञानभावसे लड़ रहे थे, जबकि राम और लक्ष्मण उनके साथ निरपेक्षभावसे लड़ रहे थे। (११) रामके हाथसे फेंका गया बाण-समूह युद्धमें दक्ष लवण विरोधी बाणोंसे काट डालता था। इसी तरह अंकुश भी लक्ष्मणके बाणोंको काटता था। (१२) उस समय अंकुशके द्वारा बाणोंसे भिन्न लक्ष्मण बेसुध हो गया। विराधितने भी शीघ्र ही रथ साकेत की ओर फेरा। (१३) होशमें आनेपर लक्ष्मणने विराधित से कहा कि विपरीत मार्ग पर रथ मत ले जाओ। शीघ्र ही शत्रुके सम्मुख उसे स्थापित करो। (१४) बाणोंसे देह भरी हुई होने पर भी सामना करनेवाले वीरसुभटका युद्धमें ही मरण श्लाघनीय है, किन्तु ऐसा—पीठ दिखाना उपयुक्त नहीं है। (१५) देव एवं मनुष्योंमें अत्यन्त प्रशंसित और नरसिंह सरीखे महापुरुष युद्धमें कातर भाव कैसे स्वीकार कर सकते हैं? (१६) दशरथ राजाका पुत्र, रामका भाई और तीनों लोकोंमें विख्यात यशवाला मैं लक्ष्मण हूँ। उसके लिए ऐसा अनुचित है। (१७) ऐसा कहकर उसने पवनवेग नामक रथ लौटाया और थोड़ाथोड़ेके लिए अतिभयंकर ऐसे संग्राममें जुट गया। (१८) तब लक्ष्मणने अंकुशके ऊपर अमोघ, हजारों ज्वालाओंसे व्याप्त तथा तीनों लोकोंमें भय पैदा करनेवाला चक्र फेंका। (१९) विकसित प्रभावाला वह चक्र अंकुशके पास जाकर शीघ्र ही वापस लौट

१. वाहेहि—प्रत्य० । २. तस्सेयं—प्रत्य० । ३. •जणं—प्रत्य० ।

गन्तूण कुससयासं, तं चक्रं वियसियप्पहं सिग्घं । पुणरवि य पडिनियत्तं, संपत्तं लक्खणस्स करं ॥ २० ॥
 तं लक्खणेण चक्रं, खित्तं खित्तं कुसस्स रोसेणं । विहलं तु पडिनियत्तइ, पुणो पुणो पवणवेगेणं ॥ २१ ॥
 एयन्तरे कुसेणं, धणुयं अप्फालिउं सहरिसेणं । ठा ठाहि सबडहुत्तो, भणिओ लच्छोहरो समरे ॥ २२ ॥
 दट्टूण तहाभूयं, रणङ्गणे लक्खणं समत्थभडा । जंपन्ति^१ विन्हियमणा, किं एयं अत्तहा जायं ? ॥ २३ ॥
 किं कोडिसिलाईयं, अलियं चिय लक्खणे समणुजायं ! । कज्जं मुणिवरविहियं ? चक्रं जेणऽत्तहाभूयं ॥ २४ ॥
 अह भणइ लच्छिनिलओ, विसायपरिवज्जिओ धुवं एए । बलदेव-वासुदेवा, उप्पन्ना भरहवासम्मि ॥ २५ ॥
 लज्जाभरोत्थयमणं, सोमिन्ति पेच्छिऊण सिद्धत्थो । सह नारएण गन्तुं, जंपइ वयणं सुणसु अहं ॥ २६ ॥
 देव ! तुमं चक्रइरो, बलो य पउमो न एत्थ संदेहो । किं मुणिवराण वयणं, कयाइ अलियं हवइ लोए ? ॥ २७ ॥
 सीयाएँ सुया एए, लवं-ऽकुसा नाम दोण्णि वि कुमारा । गम्भट्टिएसुँ जेसुं, वइदेही छड्डिया रण्णे ॥ २८ ॥
 सिद्धत्थ-नारएहिं, तम्मि य सिट्टे कुमारवित्तन्ते । ताहे सअंसुनयणो, उज्झइ लच्छीहरो चक्रं ॥ २९ ॥
 रामो वि निसुणिऊणं, सुयसंबन्धं तओ वियलियच्छो । धणसोयपीडियतणू, मुच्छावसविम्भलो पडिओ ॥ ३० ॥
 चन्दणजलोल्लियङ्गो, आसत्थो राहवो सुयसमीवं । वच्चइ लक्खणसहिओ, नेहाउलमाणसो सिग्घं ॥ ३१ ॥
 लवणं-ऽकुसा वि एत्तो, ओयरिऊणं रहाउ दो वि जणा । तायस्स चलणजुयलं, पणमन्ति ससंभमसिणेहा ॥ ३२ ॥
 अवगूहिऊण पुत्ते, कुणइ पलावं तओ पउमनाहो । अइनेहनिव्भरमणो, विमुक्कनयणंसुजलनिवहो ॥ ३३ ॥
 हा हा ! मयाऽइकट्टं, पुत्ता ! गम्भट्टिया अणज्जेणं । सीयाएँ समं चत्ता, भयजणणे दारुणे रण्णे ॥ ३४ ॥
 हा ! विउलपुण्णया वि हु, सीयाए जं मए वि संभूया । उयरत्था अइषोरं, दुक्खं पत्ता उ अडवीए ॥ ३५ ॥

आया और लक्ष्मणके हाथमें पहुँच गया । (२०) लक्ष्मणने वह चक्र रोपमें आकर पुनः पुनः अंकुशके ऊपर फेंका, किन्तु विफल होकर पवनके वेगकी तरह वह पुनः पुनः वापस आता था । (२१) तब आनन्दमें आकर अंकुशने धनुषका आस्फालन किया और लक्ष्मणसे कहा कि युद्धमें सामने खड़े रहो । (२२) युद्धभूमिमें लक्ष्मणको वैसा देख मनमें विस्मित सब सुभट कहने लगे कि यह अन्यथा कैसे हुआ ? (२३) मुनीश्वर द्वारा उक्त कोटिशिला आदि कार्य क्या लक्ष्मणमें असत्य मानना, क्योंकि चक्र अन्यथाभूत हुआ है । (२४) इस पर विषादमुक्त लक्ष्मणने कहा कि अवश्य ही भरतक्षेत्रमें ये बलदेव और वासुदेव उत्पन्न हुए हैं । (२५)

लज्जाके भारसे दबे हुए मनवाले लक्ष्मणको देखकर सिद्धार्थ नारदके साथ उसके पास गया और कहा कि हमारा कहना सुनो । (२६) हे देव आपही चक्रधर और राम बलदेव हैं, इसमें सन्देह नहीं । क्या मुनिवरोंका वचन कभी लोकमें असत्य होता है ? (२७) लवण और अंकुश नामके ये दोनों कुमार सीताके पुत्र हैं, जिनके गर्भमें रहते समय खीता वनमें छोड़ दी गई थी । (२८) सिद्धार्थ और नारद द्वारा कुमारोंका यह वृत्तान्त कहे जाने पर आँखोंमें आँसूसे युक्त लक्ष्मणने चक्रको छोड़ दिया । (२९) पुत्रोंका वृत्तान्त सुनकर आँखोंमें आँसू वहाने वाले और शोकसे अत्यन्त पीड़ित शरीरवाले राम भी मूर्च्छावश विह्वल हो नीचे गिर पड़े । (३०) चन्दनके जलसे सिक्त देहवाले राम होशमें आकर मनमें स्नेहसे युक्त हो लक्ष्मणके साथ शीघ्रही पुत्रोंके पास गये । (३१) उधर रथ परसे नीचे उतरकर दोनों लवण और अंकुश आदर और स्नेहके साथ पिताके चरणोंमें गिरे । (३२) पुत्रोंको आलिंगन करके मनमें अत्यन्त स्नेहसे युक्त तथा आँखोंमें से अश्रुजलका प्रवाह वहानेवाले राम प्रलाप करने लगे कि मुझे दुःख है कि अनार्य मैंने सीताके साथ गर्भस्थित पुत्रोंको भयोत्पादक दारुण वनमें छोड़ दिया । (३३-३४) विपुल पुण्यवाली सीतामें जो मेरे द्वारा उत्पन्न किये गये थे उन उदरस्थ पुत्रोंको वनमें प्रतिभयंकर दुःख मिला । (३५) यदि ये पौण्डरिक पुरके स्वामी उस वनमें न होते तो मैं तुम पुत्रोंका वदनरूपोचन्द्र कैसे देख पाता ? (३६)

१. विहयमाणा—प्रत्य० । २. ०सु जेसु य व०—प्रत्य० ।

नइ एसो तत्थ वणे, न य होन्तो पुण्डरीयपुरसामी । तो तुम्ह पुत्तया हं, कह पेच्छन्तो वयणचन्दे ? ॥ ३६ ॥
 एएहि अमोहेहिं, जं न मए विनिहया महत्थेहिं । हा वच्छय अइपुण्णा, तुवमेऽथ जए निरवसेसं ॥ ३७ ॥
 पुणरवि भणइ सुभणिओ, पउमो तुवमेहिं दिट्ठसंतेहिं । जाणामि जणयत्तणया, जीवइ नत्थेत्थ संदेहो ॥ ३८ ॥
 लच्छीहरो वि एत्तो, सयंसुनयणो विओगट्टकवत्तो । आलिङ्गइ दो वि जणे, गाढं लवणं-ऽकुसकुमारि ॥ ३९ ॥
 सत्तुग्घाइनरिन्दा, सुण्णिऊणं एरिसं तु वित्तन्तं । तं चेव समुद्देसं, संपत्ता उत्तमा पीई ॥ ४० ॥
 जाओ उभयवलाणं, समागमोऽण्येयसुहडपमुहाणं । धणपीइसंगयाणं, रणतत्तिनियत्तचित्ताणं ॥ ४१ ॥
 पुत्ताणं दइयत्स य, समागमं पेच्छिऊण जणयमुया । दिवविमाणा रूढा, पुण्डरियपुरं गया सिग्घं ॥ ४२ ॥
 एत्तो हरिसवसगओ, पुत्ताण समागमे पउमनाहो । खेयर-नरपरिकिण्णो, मण्णइ तेलोकलम्भं व ॥ ४३ ॥
 अह तत्थ राह्वेणं, पुत्ताण कओ समागमाणन्दो । बहुतूरमङ्गलरवो, नच्चन्तविलासिणीपउरो ॥ ४४ ॥
 अह भणइ वज्जजङ्घं, पउमो भामण्डलं च परितुट्ठो । तुवमेहिं मज्झ बन्धू, जेहि कुमारा इहाणीया ॥ ४५ ॥
 एत्तो साएयपुरी, समासरिच्छा कया खणद्धेणं । बहुतूरमङ्गलरवा, नडनट्टपणच्चिउम्भीया ॥ ४६ ॥
 पुत्तेहिं समं रामो, पुष्पविमाणं तओ समारूढो । तत्थ विलग्गो रेहइ, सोमित्ती विरइयाभरणो ॥ ४७ ॥
 पायारगोउराइं, जिणभवणाइं च केउनिवहाइं । पेच्छन्ता नरवसभा, साएयपुरिं पविसरन्ति ॥ ४८ ॥
 गय-तुरय-जोह-रहवर-समाउला जणियतूरजयसदा । हल-चक्रहर-कुमारा, वच्चन्ति जणेण दीसन्ता ॥ ४९ ॥
 नारीहिं तओ सिग्घं, लवणं-ऽकुसदरिसणुस्सुयमणाहिं । पडिपूरिया गवक्खा, निरन्तरं पङ्कयमुहीहिं ॥ ५० ॥
 अइरूवजोवणधरे, अहियं लवणं-ऽकुसे नियन्तीहिं । जुवईहिं हारकडयं, विवडियपडियं न विन्नायं ॥ ५१ ॥

हे वत्स ! मेरे द्वारा इन अमोव महास्त्रोंसे आहत होनेपर भी तुम नहीं मारे गये थे, इसलिए इस सारे विश्वमें तुम अत्यन्त पुण्यशाली हो । (३७)

वचनकुशल रामने पुनः कहा कि तुमको देखनेसे मैं मानता हूँ कि सीता जीवित है, इसमें कोई सन्देह नहीं । (३८) आँखोंमें आँसू भरे हुए तथा वियोगके दुःखसे पीड़ित लक्ष्मणने दोनों लवण और अंकुश कुमारोंको गाढ़ आलिंगन किया । (३९) शत्रुघ्न आदि राजा ऐसा वृत्तान्त जानकर उस प्रदेशमें आये । उन्होंने उत्तम प्रीति सम्पादित की । (४०) अनेक प्रमुख सुभट्टोंवाली, अत्यन्त प्रीतिसे सम्पन्न और युद्धकी प्याससे निवृत्त चित्तवाली—ऐसी दोनों सेनाओंका समागम हुआ । (४१) पुत्रोंका और पतिका समागम देखकर दिव्य विमानमें आरूढ़ सीता शीघ्र ही पौण्डरिकपुर चली गई । (४२) विद्याधर तथा मनुष्योंसे घिरे हुए राम पुत्रोंका समागम होने पर आनन्दमें आकर मानो त्रैलोक्यकी प्राप्ति हुई हो ऐसा मानने लगे । (४३) बादमें वहाँ पर रामने पुत्रोंका बहुविध वाद्योंकी मंगलध्वनिसे युक्त तथा नाचती हुई विलासिनियोंसे सम्पन्न मिलन-महोत्सव मनाया । (४४) तब अत्यन्त आनन्दित रामने वज्रजंघ और भामण्डलसे कहा कि तुम मेरे भाई हो, क्योंकि तुम कुमारोंको यहाँ लाये हो । (४५) अनेकविध मंगलध्वनिसे युक्त तथा नट एवं नर्तकों द्वारा प्रनर्तित एवं उद्गीत बइ साकेतनगरी थोड़ी ही देरमें स्वर्ग सदृश बना दी गई । (४६) फिर पुत्रोंके साथ राम पुष्पक विमानमें आरूढ़ हुए । उसमें बैठे हुए तथा आभूषणोंसे विभूषित लक्ष्मण भी शोभित हो रहा था । (४७) प्राकार, गोपुर, जिनमन्दिर और ध्वजाओंके समूहको देखते हुए वे नरश्रेष्ठ साकेतपुरीमें प्रविष्ट हुए । (४८) हाथी, घोड़े, थोड़ा एवं सुभट्टोंसे घिरे हुए, वाद्योंकी ध्वनिके साथ जयघोष किये जाते तथा लोगोंके द्वारा दर्शन किये जाते वे चल रहे थे । (४९) उस समय लवण और अंकुशके दर्शनके लिए मनमें उत्सुक कमलसदृश मुखवाली स्त्रियोंने खाली जगह न रहे इस तरहसे गवाक्षोंको भर दिया । (५०) अत्यन्त रूप और यौवन धारण करनेवाले लवण और अंकुशको गौरसे देखनेवाली स्त्रियोंको निकलकर गिरे हुए हार और कड़ेके बारेमें कुछ खबर ही नहीं रही । (५१) अरी ! सुन्दर केशपाश और पुष्पोंसे भरे हुए सिरको

१. एत्तो विओगट्टकवत्तो । आ०—प्रत्य० । २. सुण्णिऊणं—प्रत्य० ।

एयं कुसुमाउष्णं, सोसं नामेहि वियडधम्मिल्लं । मग्गेण इमेण हले !, पेच्छामि लवं-ऽकुसे जेणं ॥ ५२ ॥
 तीए वि य सा भणिया, अन्नमणे ! चवलच्चलसहावे ! । विउलं पि अन्तरमिणं, एयं न वि पेच्छसि हयासे ! ॥ ५३ ॥
 मा थणहरेण पेळसु, जोवणमयगविए ! विगयलजे ! । किं मे रूससि बहिणे !?, सबस्स ! वि कोउयं सरिसं ॥ ५४ ॥
 अन्ना अन्नं पेळइ, अन्ना अन्नाए नामए सोसं । अवसारिऊण अन्नं, रियइ भवक्खन्तरे अन्ना ॥ ५५ ॥
 नायरवह्हि एवं, लवणं-ऽकुसरुवकोउयमणाहिं । हलवोलाउलमुहला, भवणगवक्खा कया सबे ॥ ५६ ॥
 चन्दद्धसमनिडाल, एए लवणं-ऽकुसा वरकुमारा । आहरणभूसियज्जा, रामस्स अवट्टिया पासे ॥ ५७ ॥
 सिन्दूरसन्निहेहिं, वत्थेहि इमो लवो न संदेहो । दिव्वरेसु य पुणो, सुगपिच्छसमप्पनेसु कुसो ॥ ५८ ॥
 धन्ना सा जणयसुया, जीए पुत्ता इमे गुणविसाला । दूरेण सुकयपुण्णा, जाए होहिन्ति वरणीया ॥ ५९ ॥
 केई नियन्ति एन्तं, सत्तुवं केइ वाणराहिवइं । अन्ने पुण हणुमन्तं, भामण्डलखेयरं अन्ने ॥ ६० ॥
 केई तिकूडसामी, अन्ने य विराहियं नलं नीलं । अङ्गं अङ्गयमाई, नायरलोया पलोएन्ति ॥ ६१ ॥
 नायरजणेण एवं, कयजयआलोयमङ्गलसणाहा । वच्चन्ति रायमग्गे, हलहर-नारायणा सुइथा ॥ ६२ ॥
 एवं कमेण हल-चक्करा सपुत्ता, उद्धयचारुचमरा बहुकेउचिन्धा ।
 नारीजणेण कयमङ्गलगीयसहा, गेहं नियं विमलकन्तिधरा पविट्ठा ॥ ६३ ॥
 ॥ इइ पउमचरिए लवणं-ऽकुससमागमविहाणं नाम सयचमं पर्व्वं समत्तं ॥

१०१. देवागमविहाणपर्व

अह अन्नया कयाई, विन्नविओ राहवो नरिन्देहिं । किक्किन्धिवइ-मरुसुय-विहीसणाईहि बहुएहिं ॥ १ ॥

तनिक नीचा कर जिससे इस मार्गसे जाते हुए लवण और अंकुशको मैं देख सकूँ। (५२) उस स्त्रीने उसे भी कहा कि, हे अन्यमनस्के ! चपल और चंचल स्वभाववाली ! इताश ! इतनी बड़ी खाली जगहको भी क्या तू नहीं देखती ? (५३) किसी स्त्रीने दूसरी स्त्रीसे कहा कि यौवनके मदसे गवित और निर्लज्ज ! तू अपने स्तनोंके भारसे मुझे मत दबा । इस पर उसने पहली स्त्रीसे कहा कि, बहन ! तुम मुझ पर रुष्ट क्यों होती हो ? सबके लिए कौतुक समान होता है। (५४) कोई एक स्त्री दूसरी स्त्रीको दवाती थी, कोई दूसरी स्त्रीका सिर नँवाती थी तो कोई दूसरीको हटाकर गवाक्षके भीतर जाती थी। (५५) लवण और अंकुशका रूप देखनेकी इच्छावाली नगरवधुओंने इस तरह मकानोंके सब गवाक्ष कोलाहलसे मुखरित कर दिये। (५६) अर्ध चन्द्रके समान ललाटवाले तथा आभूषणोंसे विभूषित शरीरवाले ये कुमारवर लवण और अंकुश रामके पास खड़े हैं। (५७) सिन्दूर सदृश वस्त्रोंसे यह लवण है इसमें सन्देह नहीं रहता और तोतेके पंखके समान कान्तिवाले दिव्य वस्त्रोंसे यह अंकुश ज्ञात होता है। (५८) वह जनकसुता सीता धन्य है जिसके विशाल गुणवाले ये पुत्र हैं और वे तो अत्यन्त पुण्यशालिनी होंगी जिनके द्वारा ये वरणीय होंगे। (५९) कई लोग आते हुए शत्रुघ्नको देख रहे थे, तो कई चानराधिपति सुग्रीवको देख रहे थे। दूसरे हनुमानको तो दूसरे कई विद्युत्वर भामण्डलको देख रहे थे। (६०) कई त्रिकूटस्थामी विभीषणको तो दूसरे नगरजन विराधित, नल, नील, अंग और अंगद आदिको देख रहे थे। (६१) इस तरह नगरजनों द्वारा किये जाते जयघोष, दर्शन और मंगलाचारसे युक्त राम और लक्ष्मण आनन्दित हो राजमार्गसे जा रहे थे। (६२) इस प्रकार सुन्दर चँवर डोले जाते, अनेकविध ध्वजाओंसे विह्वित, त्रियों द्वारा मंगल गाने गाये जाते और निर्मल कीर्तिको धारण करनेवाले राम और लक्ष्मणने पुत्रोंके साथ अपने भवनमें अनुक्रमसे प्रवेश किया। (६३)

॥ पञ्चचरितमें लवण और अंकुशके समागमका विधान नामक सौवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

१०१. देवोंका आगमन

किसी दिन सुग्रीव, हनुमान, विभीषण अदि बहुतसे राजाओंने रामने जिनती की कि, हे नाथ ! परदेशमें वह

सामिय ! परविसए सा, दुक्खं परिवसइ जणयनिवतणया । तीए पसन्नमणसो, होऊणं देहि आएसं ॥ २ ॥
 परिचिन्तिऊण एत्तो, पउमाभो भणइ जणपरीवार्यं । पत्ताएँ विदेहीए, कह तीएँ मुहं नियच्छे हं ॥ ३ ॥
 जइ पुहइजणं सबं, एयं सवहेण पत्तियावेइ । तो तीएँ समं वासो, होहिइ न य अन्नभेएणं ॥ ४ ॥
 भणिऊण एयमेयं, खेयरवसहेहि तुरियवेगेणं । आहूओ पुहइजणो, समागओ नरवइसमग्गो ॥ ५ ॥
 विज्जाहरा वि सिग्घं, समागया सयलपरियणाउण्णा । आवासिया य सबे, नयरीए बाहिरुद्देसे ॥ ६ ॥
 मञ्जा कया विसाला, पेच्छागिहमण्डवा मणभिरामा । तेसु य जणो निविट्ठो, सवहेक्खणकङ्खिओ सबो ॥ ७ ॥
 तम्बोल-फुल-चन्दण-सयणा-ऽऽसण-खाण-पाणमाईयं । सबं पि सुपरिउत्तं, मन्तोहि कयं जणवयस्स ॥ ८ ॥
 तो रामसमाइट्ठा, सुग्गीव-विहीसणा सँरयणजडी । भामण्डलहणुमन्ता, विराहियाई अह पयट्ठा ॥ ९ ॥
 एए अन्ने य भट्टा, पुण्डरियपुरं गया खणद्धेणं । पँइसन्ति रायभवणं, जत्थ उ परिवसइ वइदेही ॥ १० ॥
 काऊण य जयसइ, सीयं, पणमन्ति खेयरा सबे । ते वि य ससंभमाए, अहियं संभासिया तीए ॥ ११ ॥
 अह ताण निविट्ठाणं, जंपइ सीया सनिन्दणं वयणं । एयं मज्झ सरीरं, कयं च दुक्खासयं विहिणा ॥ १२ ॥
 अज्जाई इमाई महं, दुज्जणवयणणलेण दङ्गाइ । खीरोयसायरस्स वि, जलेण न य नेबुइं जन्ति ॥ १३ ॥
 अह ते भणन्ति सामिणि !, एयं मेहेहि दारुणं सीयं । सो पावाण वि पावो, जो तुंज्ज लएइ अववार्यं ॥ १४ ॥
 को उक्खिवइ वसुमइं, को पियइ फुलिङ्गपिङ्गलं जलणं । को लेहइ जीहाए, ससि-सूरतणु वि मूढप्पा ॥ १५ ॥
 जो गेण्हइ अववार्यं, एत्थ अए तुज्ज सुद्धसीलाए । सो मा पावउ सोक्खं, कयाइ लोएँ अलियवाइ ॥ १६ ॥
 एयं पुप्फविमाणं, विसज्जियं तुज्ज पउमनाहेणं । आरुहसु देवि ! सिग्घं, वच्चाओ कोसलनयरिं ॥ १७ ॥

जनकराजकी पुत्री सीता दुःखपूर्वक रहती है । आप मनमें प्रसन्न होकर उसको लानेके लिए आजा दें । (१-२) तब रामने सोचकर कहा कि लोगोंका अपवाद-प्राप्त उस सीताका मुख में कैसे देख सकता हूँ ? (३) यदि शपथपूर्वक पृथ्वी परके सब लोगोंको यह विश्वास करावे तो उसके साथ रहना हो सकेगा, वूसरे किसी प्रकारसे नहीं । (४) 'ऐसा ही हो' इस तरह कहकर खेचर राजाओंने तुरन्त ही पृथ्वीके लोगोंको बुलाया । राजाओंके साथ वे आये (५) सम्पूर्ण परिवारके साथ विद्याधर भी शीघ्र ही आ पहुँचे । नगरके बाहरके प्रदेशमें वे सब ठहराये गये । (६) विशाल मंच और मनोहर प्रेक्षागृह तथा मण्डप बनाये गये । शपथ देखनेकी इच्छावाले सबलोग उनमें बैठ गये । (७) पान-कीड़ा, फूल, चन्दन, शयनासन, खान-पान आदि सबकी मांत्रियोंने लोगोंके लिए भली-भाँति व्यवस्था की थी । (८)

तब रामसे आज्ञाप्राप्त रत्नजटीके साथ सुग्गीव, विभीषण, भामण्डल, हनुमान और विराधित आदि तथा दूसरे सुभट पौण्डरिकपुरकी ओर चल पड़े और आधे क्षणमें वहाँ पहुँच गये । जिस राजभवनमें सीता थी उसमें उन्होंने प्रवेश किया । (९-१०) 'जय' शब्द करके उन खेचरोंने सीताको प्रणाम किया । आदरयुक्त उसके साथ उन्होंने खूब बातचीत की । (११) बैठे हुए उनसे सीताने आत्मनिन्दापरक वचन कहे कि विधिते मेरा यह शरीर दुःखका आश्रयस्थान-सा बनाया है । (१२) दुर्जनोकी वचनरूपी आगसे जले हुए मेरे ये अंग क्षीरसागरके जलसे भी शान्त नहीं हो सकते (१३) इस पर उन्होंने कहा कि, स्वामिनी ! इस दारुण शोकका आप परित्याग करें । जो आपके बारेमें अपवाद कहता है वह पापियोंका भी पापी है । (१४) कौन पृथ्वीको ऊपर फेंक सकता है ? चिनगारियोंसे पीली आगको कौन पी सकता है ? कौन मूर्ख जीभसे चन्द्रमा और सूर्यका शरीर चाट सकता है ? (१५) शुद्ध शीलवाली आपकी जो इस जगत्में बदनामी र्थीकार करता है वह पापी और झूठा इस लोकमें कभी सुख न पावे । (१६) हे देवी ! आपके लिए रामने यह पुष्पक विमान भेजा है । आप जल्दी इस पर सवार हों, जिससे हम साकेतनगरीकी ओर प्रयाण करें । (१७) जिसप्रकार चन्द्रकी मूर्तिके

१. एवं—प्रत्य० । २. होही ण य—प्रत्य० । ३. सुपरिउत्तं—सु० । ४. सुरयणं—सु० । ५. हणुवंता—प्रत्य० ।
 ६. पविसंति—प्रत्य० । ७. मिहेहि—प्रत्य० । ८. लोओ—प्रत्य० ।

पउमो देसो य पुरो, न य सोहं देन्ति विरहियाणि तुमे । जह तरुभवणागासं, विवज्जियं चन्दमुत्तीए ॥ १८ ॥
 सा एव भणियमेत्ता, सीया अववायविहुणणट्टाए । आरुहिय वरविमाणं, साएयपुरिं ग्या समडा ॥ १९ ॥
 तत्थ उ महिन्दउदए, ठियस्स रामस्स वरविमाणाओ । अवइण्णा जणयसुया, तत्थ य रयणिं गमइ एक्कं ॥ २० ॥
 अह उग्गयम्मि सूरे, उत्तमनारीहि परिमिया सीया । लल्लियकरेणुवल्लग्गा, पउमसयासं समणुपत्ता ॥ २१ ॥
 जंपइ जणो समत्थो, रूवं सत्तं महाणुभावत्तं । सीयाए उत्तमं चिय, सीलं सयले वि तैलोक्के ॥ २२ ॥
 गयणे खेयरलोओ, धरणियले वसुमईठिओ सबो । साहकारसुहरवो, अहियं सीयं पलोएह ॥ २३ ॥
 केई नियन्ति रामं, अन्ने पुण लक्खणं महावाहुं । ससि-सूरसमच्छाए, पेच्छन्ति लवं-उड्कुसे अन्ने ॥ २४ ॥
 सुग्गीवं जणयसुयं, विहीसणं केइ तत्थ हणुवन्तं । पेच्छन्ति विन्हियमणा, चन्दोयरनन्दणं अन्ने ॥ २५ ॥
 रामस्स सन्नियासं, तत्थ रियन्तीए जणयधूयाए । सह पत्थिवेहिं अग्घं, विहेइ लच्छीहरो विहिणा ॥ २६ ॥
 दट्टूण आवयंति, सीयं चिन्तेइ राहवो एत्तो । कह उज्झयां वि न वि मया, एसा सत्ताउले रण्णे ? ॥ २७ ॥
 काऊण अञ्जलिउडं, पणिवइया राहवस्स चंलणेसु । सीया बहुप्पयारं, परिचिन्तन्ती ठिया पुरओ ॥ २८ ॥
 तं भणइ पउमनाहो, मा पुरओ ठाहि मज्झ वइदेहि ! । अवसरसु पेच्छउं जे, न य हं तीरामि गयंलज्जो ॥ २९ ॥
 लङ्काहिवस्स भवणे, अन्तेउरपरिमिया बहू दिक्खे । तत्थ तुमं परिवसिया, न य हं जाणामि ते हिययं ॥ ३० ॥
 सीया पइं पवुत्ता, तुह सरिसो नत्थि निट्टुरो अन्नो । पाययपुरिसो व जहा, ववससि अइदारुणं कम्मं ॥ ३१ ॥
 होहलळम्भेण अहं, जंसि तुमे छड्डिया महारण्णे । तं राहव ! अणुसरिसं, किं ते अइनिट्टुरं कम्मं ? ॥ ३२ ॥
 जइ हं असमाहीए, तत्थ मरन्ती महावणे घोरे । तो तुब्भ किं व सिद्धं, होन्तं महदोगइकरस्स ? ॥ ३३ ॥

बिना वृक्ष, भवन और आकाश नहीं सुहाते वैसे ही आपके बिना राम, देश और नगरी शोभित नहीं होती। (१८) इस प्रकार कही गई सीता अपवादको दूर करनेके लिए उत्तम विमान पर आरूढ़ हुई और सुभटोंके साथ साकेतपुरीको गई। (१९) वहाँ महेन्द्रोदय नामक उद्यानमें ठहरे हुए रामके उत्तम विमानमेंसे सीता नीचे उतरी और वहाँ पर एक रात बिताई। (२०)

सूर्योदय होने पर उत्तम स्त्रियोंसे घिरी हुई सीता सुन्दर हथिनी पर सवार हो रामके पास गई। (२१) सबलोग कहने लगे कि समग्र त्रिलोकमें सीताका रूप, सत्त्व, महानुभावता और शील उत्तम है। (२२) आकाशमें विद्याधर और पृथ्वी पर मनुष्य—सब कोई मुँहसे प्रशंसा करते हुए सीताको अधिक देखने लगे। (२३) कोई रामको तो कोई महासमर्थ लक्ष्मणको देखते थे। दूसरे चन्द्रमा और सूर्यके समान कान्तिवाले लवण और अंकुशको देखते थे। (२४) वहाँ कोई सुभीवको, भामण्डलको, विभीषणको, हनुमानको तो दूसरे चन्द्रोदरके पुत्र विराधितको मनमें विस्मित हो देखते थे। (२५) वहाँ रामके पास जाती हुई सीताको पार्थिवोंके साथ लक्ष्मणने विधिवत् अर्घ्य प्रदान किया। (२६) आती हुई सीताको देखकर राम सोचने लगे कि वन्य प्राणियोंसे व्याप्त अरण्यमें छोड़ने पर भी यह क्यों न मरी? (२७) हाथ जोड़कर सीताने रामके चरणोंमें प्रणिपात किया। अनेक प्रकारके विचार करती हुई वह सम्मुख खड़ी रही। (२८) रामने उसे कहा कि, सीते ! तुम मेरे आगे मत खड़ी रहो। तुम दूर हटो, क्योंकि निर्लज्ज मैं तुम्हें देख नहीं सकता। (२९) रानियों से घिरी हुई तुम बहुत दिन तक रावणके महलमें रही। मैं तुम्हारा हृदय नहीं जानता। (३०) इसपर सीता ने पति से कहा कि—

तुम्हारे जैसा दूसरा कोई निष्ठुर नहीं है। हे स्वामी ! प्राकृतजनकी भाँति तुम दारुण कर्म कर रहे हो। (३१) हे राघव ! दोहदके बहानेसे जो मुझे तुमने महावनमें छोड़ दिया उसके जैसा अतिनिष्ठुर तुम्हारा दूसरा कार्य कौन-सा है? (३२) यदि मैं उस घोर जंगलमें असमाधिपूर्वक मर जाती तो अत्यन्त दुर्गति करनेवाले तुम्हारा क्या सिद्ध होता? (३३) हे प्रभो !

१. ंणुवल्लग्गा—प्रत्य० । २. तइलोक्के—प्रत्य० । ३. ंया न वि मुया—मु० । ४. चलणेहिं—मु० ।

५. ंसरह पे०—प्रत्य० । ६. गयलज्जे—प्रत्य० ।

६६

थेवो वि य सबभावो, मञ्जुवरि तुज्झ जइ प्ह ! होन्तो । तो किं न अज्जियाए, गेहे हं छड्डिया तइया ? ॥ ३४ ॥
 अपहूणमणाहाणं, दुक्खत्ताणं दरिद्रभूयाणं । विसमग्गयाण सामिय !, हवइह निणसासणं सरणं ॥ ३५ ॥
 जइ वहसि सामि ! नेहं, एव गए वि य पयच्छ मे आणं । होऊण सोमहियओ, किं कायबं मए एत्थं ? ॥ ३६ ॥
 रामो भणइ तुह पिए ! अहयं जाणामि निम्मलं सीलं । नवरं जणाववायं, विगयमलं कुणसु दिबेणं ॥ ३७ ॥
 सुणिऊण वयणमेयं, जंपइ सीया सुणेहि महं वयणं । पञ्चसु दिबेसु प्ह !, लोगमहं पत्तियावेमि ॥ ३८ ॥
 आरोहामि तुलमहं, जल्लं पविसामि धरिमि फालं च । उगं च पियामि विसं, अन्नं पि करेमि भण समयं ॥ ३९ ॥
 परिचिन्तिऊणं रामो, जंपइ पविसरसु पावरां सोए ! । तोए वि य सो भणिओ, एवमिणं नत्थि संदेहो ॥ ४० ॥
 पडिवन्नम्मि य समयं, तं चिय सीयाए जणवओ सोउं । पयलन्तअसुनयणो, जाओ अइदुक्खिओ विमणो ॥ ४१ ॥
 एयन्तरे पवुत्तो, सिद्धत्थो सुणसु देव ! मह वयणं । न सुरेहि वि सीलगुणा, वण्णिज्जन्ती विदेहाए ॥ ४२ ॥
 पविसेज्ज व पायालं, मेरु लवणोदहि व सूसेज्जा । न हु सीलस्स विवत्ती, होज्ज प्ह ! जणयत्तणयाए ॥ ४३ ॥
 विज्जा-मन्तेण मए, पञ्चसु मेरुसु चेइयहराई । अहिवन्दियाई राहव !, तवो य चिण्णो सुहरकालं ॥ ४४ ॥
 तं मे हवउ महाजस !, विहलं जं तत्थ पुण्णमाहप्पं । जइ सीलस्स विणासो, मणसा वि य अत्थि सीयाए ॥ ४५ ॥
 पुणरवि भणइ सुभणिओ, सिद्धत्थो जइ अखण्डियचरित्ता । सीया तो अणलाओ, उत्तरिही कणयलट्ठि व ॥ ४६ ॥
 गयणे खेयरलोओ, जंपइ धरणीचरो महियलत्थो । साहु त्ति साहु भणियं, सिद्धत्थ ! तुमेरिसं वयणं ॥ ४७ ॥
 सीया सई सई चिय, भणइ जणो तत्थ उच्चकण्ठेणं । न य होइ विगारत्तं, पउम ! महापुरिसमहिल्लणं ॥ ४८ ॥

यदि मुझ पर तुम्हारा थोड़ा भी सद्भाव होता तो उस समय तुमने मुझे आर्थिकाके घर (उपाश्रय) पर क्यों नहीं छोड़ दिया ? (३४) हे स्वामी ! लावारिस, अनाथ, दुःखार्त, दरिद्र और संकटमें आये हुए लोगोंके लिए जिनशासन शरणरूप है । (३५) हे स्वामी ! ऐसा होने पर भी यदि तुम स्नेह धारण करते हो तो हृदयमें सौम्यभाव धारण करके मुझे आझा दो कि मैं अब क्या करूँ ? (३६) इस पर रामने कहा कि, प्रिये ! मैं जानता हूँ कि तुम्हारा शील निर्मल है, केवल दिव्य-परीक्षा द्वारा लोगोंके अपवादको तुम विमल बनाओ । (३७) यह वचन सुनकर सीताने कहा कि, हे प्रभो ! मेरा कहना श्राप सुनें । पाँच दिव्योंसे मैं लोगोंको विश्वास करा सकती हूँ । (३८) मैं तुला पर चढ़ सकती हूँ, आगमें प्रवेश कर सकती हूँ, लोहे की तपी हुई लम्बी छड़को धारण कर सकती हूँ, उग्र विष पी सकती हूँ । आपको दूसरा भी कोई सम्मत हो तो वह कहो । मैं वह भी कर सकती हूँ । तब रामने सोचकर कहा कि, हे सीते ! तुम आगमें प्रवेश करो । उसने भी उनसे (रामसे) कहा कि इसमें सन्देह नहीं कि ऐसा ही हो । (४०)

सीता द्वारा स्वीकृत उस शपथको सुनकर आँखों से आँसू बहाते हुए लोग अत्यन्त दुःखित और विपण्ण हो गये । (४१) इस समय सिद्धार्थने कहा कि, देव ! मेरा कहना सुनें । वैदेहीके शीलगुणका तो देव भी वर्णन नहीं कर सकते । (४२) हे प्रभो ! भले ही मेरुपर्वत पातालमें प्रवेश करे या लवणसागर सूख जाय पर सीताके शीलका विनाश नहीं हो सकता । (४३) हे राघव ! विद्यासम्पन्न मैंने पाँच मेरुओं पर आये हुए चैत्यगृहोंमें वन्दन किया है और सुचिर काल पर्यन्त तप भी किया है । (४४) हे महायश ! मनसे भी यदि सीतकि शीलका विनाश हुआ हो तो जो मेरा विशाल पुण्य है वह विफल हो जाय । (४५) सुन्दर वचनवाले सिद्धार्थने आगे कहा कि यदि सीता अखण्डित शीलवाली है तो वह स्वर्णयष्टिकी भौंति आगमेंसे पार उतर जायगी । (४६) आकाशमें स्थित खेचर लोग तथा पृथ्वी स्थित मनुष्योंने कहा कि, हे सिद्धार्थ ! तुमने ऐसा वचन बहुत अच्छा कहा, बहुत अच्छा कहा । (४७) हे राम ! सीता सती है, सती है । महापुरुषोंकी पत्नियोंमें विकार नहीं होता—ऐसा लोग वहाँ ऊँचे स्वरसे कहने लगे । (४८) इस तरह सब लोग रोते-रोते गद्गद कण्ठसे कहने लगे कि,

१. अखण्डि-मणा०—प्रत्य० । २. मे व०—प्रत्य० । ३. ०ण पउमो,—प्रत्य० । ४. समए—प्रत्य० । ५. धरणीचरो—प्रत्य० । ६. विगारत्थं सु०—प्रत्य० ।

एवं सबो वि जणो, रोवन्तो भणइ गम्गरसरेण । राहव । अइनिकलुणं, मा ववससु एरिसं कम्मं ॥ ४९ ॥
 पउमो भणइ जइ किवा, तुब्भं चिय अत्थि एत्थ तणुया वि । मा जंपह अइचवला, सीयापरिवायसंबन्धं ॥ ५० ॥
 रामेण तओ भणिया, पासत्था किंकरा खणह वाविं । तिण्णेव उ हत्थसया, समचउरंसाऽवगाढा य ॥ ५१ ॥
 पूरेह इन्धणेहिं, कालागुरु-चन्दणाइचूलेहिं । चण्डं जालेह लहुं, वाकीए सबओ अग्गि ॥ ५२ ॥
 जं आणवेसि सामिय !, भणिऊणं एव किंकराणेहिं । तं चेव वाविभाई, कम्मं अणुचिद्वियं सबं ॥ ५५ ॥
 एयन्तरम्मि सेणिय !, तं रत्तिं सयलभूसणमुणिसस । जणियो चिय उवसग्गो, परभववेरीण उज्जाणे ॥ ५४ ॥
 विज्जुवयणाववाए, पावाए रक्खसोए घोराए । जहं तीए तस्स जणियं, दुक्खं तं सुणसु एगमणो ॥ ५५ ॥
 गुज्जाविहाणनयरं, उत्तरसेदीए अत्थि वेयद्धे । तं सीहविक्रमनिवो, भुज्जइ विज्जाहरो सूरु ॥ ५६ ॥
 तस्स सिरी वरमहिला, पुत्तो वि य सयलभूसणो नामं । परिणेइ सो कुमारी, अट्ट सयाइ वरतणूणं ॥ ५७ ॥
 अह तस्स अगमहिंसी, गुणकलिया किरणमण्डला नामं । निययं मेहुणयं सा, अहियं अहिलसइ हेमसिंहं ॥ ५८ ॥
 तं पेच्छिऊण सहसा, रुट्ठो चिय सयलभूसणो अहियं । महुरक्खरेहिं सो पुण, उवसमिओ सेसमहिलासु ॥ ५९ ॥
 अह अन्नया कयाई, तेण समं किरणमण्डला सइया । नाया य धाडिया पुण, रुट्ठेणं नरवरिन्देणं ॥ ६० ॥
 संवेयसमावन्नो, पवइओ सयलभूसणो राया । मरिऊण सा वि जाया, विज्जुमुही रक्खसी घोरा ॥ ६१ ॥
 भिक्खट्ठं विहरन्तस्स तस्स सा रक्खसी महापावा । छेत्तण आलणाओ, हत्थि तो कुणइ उवसग्गं ॥ ६२ ॥
 गिहदाहं रयवरिसं, पहे य बहुकण्टयाण पक्खिवणं । पडिमागयस्स उ तहा, गिहसंधिं छिन्दिउं तस्स ॥ ६३ ॥
 चोरो काऊण तओ, बद्धो साह पुणो य परिमुक्को । मज्झणहदेसयाले, पविसइ नयरं च भिक्खट्ठं ॥ ६४ ॥

हे राघव ! ऐसा अत्यन्त निर्दय कार्य आप मत करें । (४९) इस पर रामने कहा कि यदि तुममें तनिक भी दया होती तो अत्यन्त चञ्चल तुमने सीताके परिवादका वृत्तान्त न कहा होता । (५०) तब पासमें खड़े हुए नौकरोंसे रामने कहा कि तुम एक तीन सौ हाथ गहरी और समचतुरस्र बावड़ी खोदो । (५१) कालागुरु और चन्दन आदिकी लकड़ियोंसे उसे ऊपर तक भर दो और उस बावड़ीमें चारों ओर प्रचण्ड आग जल्दी जलाओ । (५२) 'स्वामी ! जैसी आज्ञा'—ऐसा कहकर नौकरोंने बावड़ी आदि सब काम सम्पन्न किया । (५३)

हे श्रेणिक ! उस रात उद्यानमें सकलभूषण मुनिके ऊपर परभवके एक बैरीने उपसर्ग किया । (५४) विद्युद्बदना नामकी उस भयङ्कर पापी राक्षसी ने उनको जैसा दुःख दिया उसे ध्यानसे सुनो । (५५) वैताड्यकी उत्तरश्रेणीमें गुंजा नामका एक नगर है । सिंहविक्रम नामका शूर विद्याधर उसका उपभोग करता था । (५६) उसकी श्री नामकी उत्तम पत्नी तथा सकलभूषण नामका पुत्र था । उस कुमारने आठ सौ सुन्दरियोंके साथ विवाह किया । (५७) उसकी गुणोंसे युक्त किरणमण्डला नामकी एक पटरानी थी, जो अपने फूफेके पुत्र हेमसिंहको अधिक चाहती थी । (५८) यह देखकर सहसा सकलभूषण अधिक रुष्ट हो गया । शेष महिलाओं द्वारा वह मीठे वचनोंसे शान्त किया गया । (५९) एक दिन उसके (हेमसिंहके) साथ किरणमण्डला सो गई । ज्ञान होने पर रुष्ट राजाने उसे बाहर निकाल दिया । (६०) संवेग प्राप्त सकलभूषण राजा ने प्रव्रज्या ली । वह रानी भी मरकर विद्युन्मुखी नामकी भयङ्कर राक्षसी हुई । (६१) भिक्षाके लिए विहार करते हुए उस पर उस महापापी राक्षसीने बन्धनमेंसे हाथीको छोड़कर उपसर्ग किया । (६२) गृहदाह, धूलकी वर्षा, मार्ग पर बहुत-से काँटोंका बिखेरना—ये उपसर्ग उसने किये । दो दीवारोंके बीचका गुप्त स्थान तोड़कर और चोर कहकर उसने उस ध्यानस्थ साधुको पकड़वाया । बादमें वह छूट गया । मध्याह्नके समय नगरमें उस साधुने भिक्षार्थ प्रवेश किया तो स्त्रीका रूप धारण करके वह भिक्षा लेकर

१. •इपूलेहिं—प्रत्य० । २. कम्मं च अणुद्वियं—सु० । ३. •णाविवाए—प्रत्य० । ४. जह तस्स तीए दुक्खं जणियं तं सुणह एयमणो—प्रत्य० । ५. •हरो बलिओ—प्रत्य० । ६. •भूसणो तीसे । ७.—प्रत्य० । ७. •क्खरेसु सो—सु० । ८. सुइया—प्रत्य० । ९. पग्गुक्को—प्रत्य० ।

महिलारूपेण तओ, भिक्खं वेत्तुण निगगया हारं । सा वन्धइ तस्स गले, भणइ य समणो इमो चोरो ॥ ६५ ॥
एए अन्ने य बहू, उवसग्गे, कुणइ तस्स सा पावा । पुणरवि महिन्दउदयट्ठियस्स समणस्स संपत्ता ॥ ६६ ॥
वेयालेसु गएसु य, सीहेसु य भीसणोरगसएसु । महिलासु य उवसग्गं, सा तस्स करेइ अइचण्डा ॥ ६७ ॥
एएसु य अन्नेसु य, बहुदुकखुप्पायणेषु रूवेसु । न य खुहियं तस्स मणं, उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ६८ ॥
केवलनाणुप्पत्ती, नाऊण सुरा अखण्डलाईया । गय-सुरय-रहारूढा, साहुसयासं गया सिग्घं ॥ ६९ ॥
दट्ठण हरिणकेसी, जणयसुयासन्तियं तु वित्तन्तं । साहेइ अमरवइणो, पेच्छ पहू ! दुक्करं एयं ॥ ७० ॥
देवाण वि दुप्परिसो, हुयासणो सबसत्तभयजणणो । कह सीयाएँ महाजस !, पवत्तिओ घोरउवसग्गो ॥ ७१ ॥
जिणधम्मभारियाए, सुसावियाए विसुद्धसीलाए । एवंविहाएँ सुरवइ !, कह होइ इमो उ उवसग्गो ? ॥ ७२ ॥
सो सुरवइण भणिओ, अहयं वच्चामि वन्दओ साहुं । तं पुण वेयावच्चं, करेहि सीयाएँ गन्तूणं ॥ ७३ ॥
एव भणिऊण इन्दो, पायठभासं मुणिसस संपत्तो । हरिणेगवेसी वि तओ, गओ य सीयासमीवं सो ॥ ७४ ॥
एवं किरीडवरहारविभूसियङ्गं, सामन्तणेयपरिचुम्बियपायपीढं ।
सेणाणिओ अमरनाहनिउत्तचित्तो, रामं निएइ विमलम्बरमगसत्थो ॥ ७५ ॥
॥ इइ पउमचरिए देवागमविहाणं नाम एकोत्तरसयं पव्वं समत्तं ॥

१०२. रामधम्मसवणविहाणपव्वं

तं पेच्छिऊण वाविं, तणकट्टसुपूरियं अइमँहन्ती । पउमो समाउलमणो, चिन्तेइ बहुप्पयाराइं ॥ १ ॥
फत्तो हँ वइदेहिं, पेच्छिस्सं विविहगुणसयाइण्णं । नियमेण एत्थ मरणं, पाविहिइ हुयासणे दित्ते ॥ २ ॥

चली गई । उसके गलेमें हार पहनाया और कहा कि यह श्रमण चोर है । (६३-५) उस पर ये तथा अन्य भी बहुत-से उपसर्ग उस पापी राक्षसीने किये । महेन्द्रोद्यानमें स्थित श्रमणके पास वह पुनः आई । (६६) अतिकुपित उसने वेताल, हाथी, सिंह, सैकड़ों भयङ्कर सर्प तथा स्त्रियों द्वारा उस मुनि पर उपसर्ग किये । (६७) इन तथा दूसरे अत्यन्त दुःखजनक रूपों द्वारा उस मुनिका मन क्षुब्ध न हुआ । उसे केवल ज्ञान उत्पन्न हुआ । (६८) केवल ज्ञानकी उत्पत्तिके बारेमें जानकर इन्द्र आदि देव हाथी, घोड़े और रथ पर सवार हो शीघ्र ही साधु के पास आये । (६९)

सीताका वृत्तान्त जानकर हरिणकेशीने इन्द्रसे कहा कि, हे प्रभो ! दुष्कर कार्यको देखो । (७०) हे महायज्ञ ! देवोंके लिए भी दुःस्पर्श्य और सब प्राणियोंके लिए भयजनक ऐसा आगका यह घोर उपसर्ग सीताके लिए क्यों किया गया है ? (७१) हे देवेन्द्र ! जिन धर्ममें श्रद्धालु, सुश्राविका और विशुद्धशीला—ऐसी सीता पर ऐसा उपसर्ग क्यों हुआ ? (७२) उसे इन्द्रने कहा कि मैं साधुको वन्दन करने जाता हूँ । तुम भी जाकर सीताकी सेवा करो । (७३) ऐसा कहकर इन्द्र मुनिके चरणोंके समीप पहुँच गया । बादमें हरिणगमैषी भी सीताके पास गया । (७४) इस तरह किरीट एवं सुन्दर हारसे विभूषित शरीरवाले और अनेक सामन्तों द्वारा चुम्बित है पादपीठ जिसकी ऐसे रामको इन्द्र द्वारा सौंपे गये कार्यमें व्यापारित मनवाले सेनापति हरिणगमैषीने निर्मल आकाशमार्गसे गमन करके देखा । (७५)

॥ पउमचरितमें देवागम विधान नामका एक सौ एक पर्व समाप्त हुआ ॥

१०२. रामका धर्मश्रवण

तृण और काष्ठसे एकदम भरे हुए उस विशाल गड्ढेको देखकर मनमें व्याकुल राम बहुत प्रकारसे सोच-विचार करने लगे । (१) विविध गुणोंसे युक्त वैदेहीको मैं कैसे देखूँगा ? अवश्य ही वह इस प्रदीप्त आगमें मर जायगी । (२)

१. •साधु य, सु०—प्रत्य० । २. वंदितं सा०—प्रत्य० । ३. तुह पुण—मु० । ४. •महन्तं—प्रत्य० ।

जंपिहिइ जणो सबो, जह एसा जणयणंदणा सीया । अववायजणियदुक्खा, मया य जलणं पविसिऊणं ॥ ३ ॥
 तहया हीरन्तीए, नेच्छन्तीए य सीलकलियाए । लङ्काहिवेण सीसं, किं न लुयं मण्डलग्गेणं ? ॥ ४ ॥
 एवंविहाए मरणं, जइ होन्तं तत्थ जणयतणयाए । निव्वडिओ सीलगुणो, होन्तो य जसो तिहुयणम्मि ॥ ५ ॥
 अहवा जं जेण जहा, मरणं समुवज्जियं सयललोए । तं तेण पावियबं, नियमेण न अजहा होइ ॥ ६ ॥
 एयाणि य अत्राणि य, चिंतन्तो जाव तत्थ पउमाभो । चिट्ठइ ताव हुयवहो, पज्जलिऊणं समाढत्तो ॥ ७ ॥
 चण्डाणिलाहएणं, धूमेणं वहलकज्जलनिभेणं । छत्रं चिय गयणयलं, पाउसकाले व मेहेणं ॥ ८ ॥
 असमंथो चिय दट्ठुं, तहाविहं मेहिलीए उवसग्गं । सिग्घं कियालुयमणो, दिवायरो कत्थवि पलाणो ॥ ९ ॥
 धग्घग्घगेन्तसहो, पज्जलिओ हुयवहो कणयवणो । ग्गउयपरिमाणासु य, जालासु नहं पदीवेन्तो ॥ १० ॥
 किं होज्ज दिणयरसयं, समुग्गयं ? किं व महियलं भेतुं । उप्पायनगवरिन्दो, विणिग्गओ दुस्सहपयावो ॥ ११ ॥
 अइचवलचञ्चलाओ, सबओ विफुरन्ति जालाओ । सोयामणीउ नज्जइ, गयणयले उग्गतेयाओ ॥ १२ ॥
 एवंविहम्मि जलणे, पज्जलिए उट्टिया जणयधूया । काऊण काउसग्गं, थुणइ जिणे उसभमाईए ॥ १३ ॥
 सिद्धा य तहायरिया, साह जगविस्सुए उवज्झाए । पणमइ विसुद्धहियया, पुणो य मुणिसुबयं सिरसा ॥ १४ ॥
 एए नमिऊण महापुरिसा तो भणइ जणयनिवतणया । निमुणन्तु लोगवाला, सच्चेणं साविया सबे ॥ १५ ॥
 जइ मण-वयण-तणूणं, रामं मोत्तूण परनरो अत्रो । सिविणे वि य अहिलसिओ, तो डहउ ममं इमो अग्गी ॥ १६ ॥
 अह पुण मोत्तूण पई, निययं अत्रो न आसि मे हियए । तो मा डहउ हुयवहो, जइ सीलगुणस्स माहण्यं ॥ १७ ॥

सब लोग कहेंगे कि अपवादके कारण जिसे दुःख उत्पन्न हुआ है ऐसी जनकनन्दिनी सीताको मैंने आगमें प्रवेश कराया । (३) उस समय अपहृत और शीलसे सम्पन्न होनेके कारण न चाहनेवाली इसका सिर रावणने तलवारसे क्यों नहीं काट डाला । (४) ऐसी सीताका यदि वहाँ मरण होता तो शीलगुण स्पष्ट होता और तीन लोकमें यश हो जाता । (५) अथवा जिसने जो और जैसा मरण उपार्जित किया होता है उसे वैसा मरण सारे लोकमें अवश्य ही मिलता है । वह अन्यथा नहीं हो सकता । (६) ऐसा तथा दूसरा विचार करते हुए राम जब वहाँ बैठे थे तब तो आग जलने लगी । (७) प्रचण्ड वायुसे आहत कृष्णपद्मकी रात और काजलके समान काले धूएँ से, वर्षाकालमें बादलकी भाँति, आकाश छा गया । (८) मैथिलीका वैसा उपसर्ग देखनेमें असमर्थ कृपालु मनवाले सूर्यने भी शीघ्र ही कहीं प्रयाण किया । (९)

धग्घग्घ आवाज करती हुई, सोनेकी-सी वर्णवाली तथा कोस भर ऊँची ज्वालाओंसे आकाशको प्रदीप्त करती हुई आग जलने लगी । (१०) क्या सौ सूर्य उगे हैं अथवा क्या पृथ्वीको फाड़कर दुःसह प्रतापवाला और उत्पातजनक ऐसा कोई महान् पर्वत निकल आया है ? (११) अत्यन्त चंचल ज्वालाएँ चारों ओर दहकने लगीं । उग्र तेजवाली बिजलियों-सी वे ज्वालाएँ मालूम होती थीं । (१२) ऐसी आग प्रज्वलित होने पर सीता उठी और ध्यान धरकर ऋषभ आदि जिनेश्वरोंकी स्तुति करने लगी । (१३) सिद्धों, विश्वविश्रुत आचार्यों और उपाध्यायोंको विशुद्ध हृदयवाली सीताने प्रणाम किया । पुनः मुनिसुव्रत स्वामीको मस्तक झुकाकर वंदन किया । (१४) इन महापुरुषों को नमस्कार करके जनकराजकी पुत्री सीताने कहा कि सत्यकी सौगन्द दिये गये सब लोकपालो ! तुम सुनो । (१५) यदि मैंने मन, वचन और शरीरसे रामको छोड़कर दूसरे पुरुषकी स्वप्नमें भी अभिलाषा की हो तो मुझे यह अग्नि जला डाले । (१६) और यदि अपने पतिको छोड़कर दूसरा कोई मेरे हृदयमें नहीं था और शीलगुणका माहात्म्य है तो आग मुझे न जलावे । (१७) ऐसा कहकर उस सीताने आगमें प्रवेश किया ।

१. ०यनंदिणी—मु० ।

२. ०मथो इव दट्ठुं तहाविहं महिलियाए उ०—मु० ।

३. सिग्घं दयालय०—मु० ।

४. दाऊण—प्रय० ।

सा एव जंपिऊणं, तओ पविट्टाऽलणं जणयधूया । जायं जलं सुविमलं, सुद्धा ददसीलसंपंत्ता ॥ १८ ॥
 न य दारुयाणि न तणं, न य हुयवहसन्तिया य इक्काला । नवरं आलोइज्जइ, वावी सच्छच्छजलभरिया ॥ १९ ॥
 भेतूण धरणिवट्टं, उच्छलियं तं जलं गुल्लगुलेन्तं । वियडगभीरावत्तं, संघट्टुट्टेन्तफेणोहं ॥ २० ॥
 झगझगझगत्ति कत्थइ, अन्नत्तो दिलिदिलिन्तसद्दालं । पवहइ जलं सुभीमं, उम्मग्गपयइकल्लोलं ॥ २१ ॥
 जाव य खणन्तरेकं, ताव च्चिय खुहियसागरसमाणं । सलिलं कडिप्पमाणं, जायं च तओ थणाणुवरिं ॥ २२ ॥
 सलिलेण तओ लोगो, सिग्घं चिय नुब्भिउं समादतो । विज्जाहरा वि सबे, उप्पइया नहयलं तुरिया ॥ २३ ॥
 वरसिप्पिएसु वि कया, संखुभिया तत्थ मञ्जसंघाया । ताहे जणो निरासो, बुब्भंतो विलविउं पत्तो ॥ २४ ॥
 हा देवि । हा सरस्सइ !, परितायसु धम्मवच्छले ! लोगं । उदएण बुज्जमाणं, सवाल्लुहुउलं दीणं ॥ २५ ॥
 दट्टूण हीरमाणं, लोयं ताहे करेसु जणयसुया । सलिलं फुसइ पसन्नं, जायं वावीसमं सहसा ॥ २६ ॥
 ववगयसलिलभओ सो, सबो वि जणो सुमाणसो वावि । पेच्छइ विमलजलोहं, णीलुप्पलभरियकूलयलं ॥ २७ ॥
 सुरहिसयवत्तकेसर-निलीणगुञ्जन्तमहुयरुग्गीयं । चक्काय-हंस-सारस-नाणाविहसउणगणकलियं ॥ २८ ॥
 मणिकञ्चणसोवाणं, तीए वावीएँ मज्जयारत्थं । पउमं सहस्सवत्तं, तस्स वि सीहासणं उवरिं ॥ २९ ॥
 दिब्बसुयपरिच्छन्ने, तत्थ उ सोहासणे सुहनिविट्ठा । रेहइ जणयनिवसुया, पउमइहवासिणि व सिरो ॥ ३० ॥
 देवेहि तन्खणं चिय, विज्जिज्जइ चामरेहिं दिबेहिं । गयणाउ कुसुमवुट्ठी, मुक्का य सुरेहिं तुट्टेहिं ॥ ३१ ॥
 सीयाएँ सीलनिहसं, पसंसमाणा सुरा नहयलत्था । नच्चन्ति य गायन्ति य, साहुकारं विमुञ्चन्ता ॥ ३२ ॥
 गयणे समाहयाइं, तूराइं सुरगणेहिं विविहाइं । सदेण सयललोयं, नज्जइ आवूरयन्ताइं ॥ ३३ ॥

वह शुद्ध और दृढ़शीलसे सम्पन्न थी, अतः आग निर्मल जल हो गई। (१८) न तो लकड़ी, न तृण और न आग के अंगारे वहाँ दीखते थे। वह बावड़ी स्वच्छ निर्मल जल से भर गई। (१९) पृथ्वीका तला फोड़कर कल कल आवाज करता हुआ, भयंकर और गंभीर आवाजोंसे युक्त तथा टकरानेसे उठनेवाली फेनसे व्याप्त जल उछलने लगा। (२०) कहीं भग्-भगे शब्द करता हुआ, दूसरी जगह दिल्-दिल् जैसी आवाज करता हुआ अत्यन्त भयंकर और उन्मार्गीकी ओर प्रवृत्त तरंगोंसे युक्त जल बहने लगा। (२१) थोड़ी ही देरमें तो क्षुब्ध सागरके जैसा पानी सीताकी कमर तक आ गया। फिर स्तनोंके ऊपर तक बढ़ गया। (२२) उस समय सब लोग पानीमें एकदम डूबने लगे और सब विद्याधर भी तुरन्त आकाशमें उड़ गये (२३) उत्तम शिल्पियों द्वारा कृत मञ्जुके समूह संक्षुब्ध हो गये। तब निराश होकर डूबते हुए लोग विलाप करने लगे कि, हा देवी ! हासरस्वती ! हा धर्मवत्सले जलमें डूबते हुए बालक और बुद्धोंसे युक्त दीन लोगोंको बचाओ। (२४-२५) तब लोगोंको बहते देख सीताने निर्मल जलको हाथसे छूआ। वह सहसा बावड़ी जितना हो गया। (२६)

पानी का भय दूर होने पर मनमें प्रसन्न सब लोगोंने निर्मल जलसे पूर्ण और किनारे तक नील कमलोंसे भरी हुई उस बावड़ीको देखा। (२७) सुगन्धित कमलोंके केसरमें लीन होकर गूँजते हुए भौरोंके गीतसे युक्त, चक्रवाक, हंस, सारस आदि नानाविध पक्षियोंके समूहसे सम्पन्न तथा मणि एवं कांचनकी सीढ़ियोंवाली उस बावड़ीके बीच एक सहस्रदल कमल था। उसके ऊपर भी एक सिंहासन था। (२८-२९) दिव्य वस्त्रसे आच्छादित उस सिंहासन पर मुखपूर्वक बैठी हुई सीता पद्म सरोवरमें रहने वाली लक्ष्मी जैसी शोभित होती थी। (३०) तत्क्षण देव-दिव्य चामर डोलने लगे। आनन्दमें आये हुए देवोंने आकाशमेंसे पुष्पवृष्टि की। (३१) सीताके शीलकी कसौटीकी प्रशंसा करते हुए आवाशस्थ देव साध्वाद् कहते कहते नाचने और गाने लगे। (३२) देवगणोंने आकाशमें विविध वाद्य बजाये। उस समय सारा लोक मानों शब्दसे भर गया

१. संपत्ता—प्रत्य० । २. पलोह—प्रत्य० । ३. तो लविउमादत्तो—सु० । ४. हं कमलपल—सु० ।

५. देवीहि—सु० ।

विज्जाहरा य मणुया, नच्चन्ता उल्लवन्ति परितुट्ठा । सिरिजणयरामधूया, सुद्धा दित्ताणले सीया ॥ ३४ ॥
 एयन्तरे कुमारा, लवंऽकुसा नेहनिम्भराऽऽगन्तुं । पणमन्ति निययन्णणि, ते वि सिरि तोषे अग्घाया ॥ ३५ ॥
 रामो वि पेच्छिऊणं, कमलसिरिं चैव अत्तणो महिलं । जंपइ समीवसंथो, मज्झ पिण । सुणसु वयणमिणं ॥ ३६ ॥
 एयारिसं अकज्जं, न पुणो काहामि तुज्झ ससिवयणे ! । सुन्दरि ! पसन्नहियया, होहि महं खमसु दुच्चरियं ॥ ३७ ॥
 महिलाण सहस्साइं, अट्ट ममं ताण उत्तमा भदे ! । अणुहवसु विसयसोक्खं, मज्झ वि आणं तुमं देन्ती ॥ ३८ ॥
 पुप्फविमाणारूढा, खेयरजुवतीसु परिमिया कन्ते ! । वन्दसु जिणभवणाइं, मए समं मन्दरादीणि ॥ ३९ ॥
 बहुदोसस्स मह पिण !, कोवं मोत्तण खमसु दुच्चरियं । अणुहवसु सलाहणियं, सुरलोयसमं विसयसोक्खं ॥ ४० ॥
 तो भणइ पई सीया, नरवइ ! मा होहि एव उच्चिग्गो । न य कत्सइ रुट्ठा हं, एरिसयं अज्जियं पुवं ॥ ४१ ॥
 न य देव ! तुज्झ रुट्ठा, न चैव लोयस्स अलियवाइस्स । पुव्वज्जियस्स राहव !, रुट्ठा हं निययकम्मस्स ॥ ४२ ॥
 तुज्झ पसाएण प्ह, भुत्ता भोया सुरोवमा विविहा । संपइ करेमि कम्मं, तं जेण न होमि पुण महिला ॥ ४३ ॥
 इन्द्रधणु-फेणबुब्बुयसमेसु भोएसु दुरभिगन्थेसु । किं एसु महाजस, कीरइ बहुदुक्खजणएसु ॥ ४४ ॥
 बहुजोणिसयसहस्सा, परिहिण्डन्ती अहं सुपरिसन्ता । इच्छामि दुक्खमोक्खं, संपइ जिणदेसियं दिक्खं ॥ ४५ ॥
 एव भणिऊण सीया, अहिणवसोहा करेण वरकेसे । उप्पाडइ निययसिरे, परिचत्तपरिग्गहारम्भा ॥ ४६ ॥
 मरगयभिङ्गनिभे, केसे ते पेच्छिऊण पउमाभो । मुच्छानिमोलियच्छो, पडिओ धरणीयले सहसा ॥ ४७ ॥
 जाव य आसासिज्जइ, पउमाभो चन्दणाइदवेहिं । ताव य मुणिसवगुत्तो, दिक्खिय अज्जाणमप्पेइ ॥ ४८ ॥
 जाया महवयधरी, चत्तेक्कपरिग्गहा समियपावा । मयहरियाएँ समाणं, गया य मुणिपायमूलम्मि ॥ ४९ ॥

हो ऐसा प्रतीत होता था । (३३) आनन्दमें आकर नाचते हुए विद्याधर और मनुष्य कहते थे कि श्रीजनकराजकी पुत्री सीता प्रदीप्त अग्निमें शुद्ध हुई है । (३४) तब स्नेहसे भरे हुए लवण और अंकुश कुमारोंने भी आकर अपनी माताको प्रणाम किया । उनके सिरको उसने सूँघा । (३५) अपनी पत्नीको कमलश्री (लक्ष्मीकी) तरह देखकर समीपस्थ रामने कहा कि,

प्रिये ! मेरा यह कथन सुन । (३६) हे शशिवदने ! ऐसा अकार्य मैं तुझ पर फिर कभी नहीं करूँगा । हे सुन्दरी ! तू मनमें प्रसन्न हो और मेरा अपराध क्षमा कर । (३७) हे भद्रे ! मेरी आठ हजार पत्नियाँ हैं । उनमें तू उत्तम है । मुझको भी आज्ञा देती हुई तू विषय सुखका अनुभव कर । (३८) हे कान्ते ! खेचर युवतियोंसे विरी हुई तू मेरे साथ पुष्पक विमानमें आरूढ़ होकर मन्दर आदि जिनभवनोंको वन्दन कर । (३९) हे प्रिये ! बहुत दोषवाले मेरे दुश्चरितको तू क्रोधका परित्याग कर क्षमाकर और देवलोक जैसे श्लाघनीय विषयसुखका अनुभव कर । (४०)

इस पर सीताने पतिसे कहा कि, हे राजन् ! इस तरह आप उद्विग्न न हों मैं किसी पर रुष्ट नहीं हूँ । मैंने पूर्वजन्ममें ऐसा ही कर्म बाँधा होगा । (४१) हे देव ! मैं न तो आप पर रुष्ट हुई हूँ और न झूठ बोलनेवाले लोगों पर ही । हे राघव ! मैं तो पूर्व के कर्माये हुए अपने कर्म पर रुष्ट हुई हूँ । (४२) हे प्रभो ! आपके अनुग्रहसे देव सरीखे विविध भोग मैंने भोगे हैं । अब मैं ऐसा कर्म करूँगी जिससे पुनः स्त्री न होऊँ । (४३) हे महायश ! इन्द्रधनुष, फेन और बुलबुले के समान क्षणभंगुर, खराब गन्धवाले और बहुतसे दुःखोंके उत्पादक इन भोगोंसे क्या प्रयोजन है ? (४४) अनेक लाख योनियोंमें घूमनेसे थकी हुई मैं अब दुःखनाशरूप जिनप्रोक्त दीक्षा लेना चाहती हूँ । (४५) ऐसा कहकर अभिनव शोभावाली सीताने परिग्रह और आरम्भका परित्याग करके हाथसे अपने सिर परके सुन्दर केश उखाड़ डाले । (४६) मरकत और भौरिके शरीर सरीखे काले उन बालोंको देखकर मूर्च्छाके कारण बन्द आँखोंवाले राम सहसा पृथ्वी पर गिर पड़े । (४७) जबतक राम चन्दन आदि द्रव्यों से आश्वस्त हुए तब तक तो मुनि सर्वगुप्तने आर्या को दीक्षा दे दी । (४८) सब परिग्रहोंका त्याग करके

गोसीसचन्दणाइसु, 'आसत्थो राहवो निरिक्खेइ । सीयं अपेच्छमाणो, रुट्ठो आरुहइ मत्तगयं ॥ ५० ॥
 ऊसियसियायवत्तो, सललियधुबन्तचामराजुयलो । परिवारिओ भडेहिं, नज्जइ इन्दो ष देवेहिं ॥ ५१ ॥
 अह भाणिउं पयत्तो, मह धरिणी विमलसुद्धचारिचा । देवेहि पाडिहेरं, किं व कयं एत्थ वि सदेहिं ? ॥ ५२ ॥
 सीयं विलुत्तकेसिं, जइ देवा मह लहुं न अप्पेन्ति । देवाण अदेवत्तं, करेमि सिग्घं न सदेहो ॥ ५३ ॥
 को इच्छइ मरिउं जे ? कस्स कयन्तेण सुमरियं अज्जं ? । जो मज्झ हिययइइं, धरेइ पुरिसो तिहुयणम्मि ॥ ५४ ॥
 जइ वि य विलुत्तकेसी, अज्जाणं तत्थ मज्झयारत्था । तह वि य आणेमि लहुं, वइदेहिं संगयसरीरं ॥ ५५ ॥
 एयाणि य अन्नाणि य, जंपन्तो लक्खणेण उवसमिओ । पउमो नरवइसहिओ, साहुसयासं समणुपत्तो ॥ ५६ ॥
 सरयरविसरिसतेयं, दट्टुणं सयलभूसणं रामो । ओयरिय गयवराओ, पणमइ तं चैव तिविहेणं ॥ ५७ ॥
 पउमो पुत्तेहिं समं, उवविट्ठो, मुणिवरस्स आसत्ते । चन्दा-SSइच्चसमग्गो, सुराण ईसो इव जिणस्स ॥ ५८ ॥
 अत्ते वि नरवरिन्दा, लच्छोहरमाइया जिणं नमिउं । उवविट्ठा धरणियले, पुवनिविट्ठेसु देवेसु ॥ ५९ ॥
 आहरणवज्जिया वि य, सियवत्थनियंसणी जणयधूया । अज्जाहिं समं रेहइ, तारासु व सयलससिलेहा ॥ ६० ॥
 सुर-मणुय-खेयरेहिं, उवविट्ठेहिं तओ सयलनाणी । सिस्सेण पुच्छिओ सो, जिणधम्मं अभयसेणेणं ॥ ६१ ॥
 विउलं निउणं च तहा, तच्चत्थं सुहनिबोहणं धम्मं । साहेइ मुणिवरिन्दो, जलहरगम्भोरनिग्घोसो ॥ ६२ ॥
 एत्थ अणन्ताणन्ते, आगासे सासओ सहावत्थो । लेगो तिभेयभिन्तो, हवइ च्चिय तालसंठाणो ॥ ६३ ॥
 वेत्तासणयसरिच्छो, अहलोगो चैव होइ नायवो । झल्लरिनिहो य मज्झे, उवरिं पुण सुरवसंठाणो ॥ ६४ ॥

शामित पापवाली सीता पाँच महाव्रतोंको धारण करनेवाली साध्वी हुई । प्रमुख साध्वीके साथ वह मुनिके चरणोंमें गई । (४८)

गोशीर्षचन्दन आदिसे होशमें आये हुए राम देखने लगे और सीताको न देखकर रुष्ट वे मत्त हाथी पर सवार हुए । (५०) सफ़ेद छत्र ऊपर धरे हुए, लीला के साथ दो चँवर डोले जाते तथा सुभटोंसे घिरे हुए राम देवोंसे युक्त इन्द्रकी भौंति मालूम होते थे । (५१) वे कहने लगे कि मेरी पत्नी विशुद्ध शील एवं चारित्रवाली है । यहाँ धूर्त देव प्रातिहार्य-कर्म कैसा करते हैं ? (५२) यदि देव विलुप्त केशवाली सीताको जल्दी नहीं ला देते तो मैं देवों को अदेव बना दूँगा, इसमें सन्देह नहीं । (५३) कौन मरना चाहता है ? आज किसको यमने याद किया है ? तीनों लोकमें ऐसा कौन पुरुष है जो मेरी हृदय प्रिया सीताको रख सकता है ? (५४) यदि विलुप्तकेशी वैदेही साध्वियोंके बीचमें भी हो तो भी उसे सशरीर जल्दी ही ले आओ (५५) इस तरह तथा अन्य बहुत प्रकारसे बोलते हुए रामको लक्ष्मणने शान्त किया । फिर राजाओंके साथ राम साधुके पास गये । (५६) शत्रुकालीन सूर्य के समान तेजवाले सकलभूषण मुनिको देखकर राम हाथी परसे नीचे उतरे और मन-वचन-काया तीनों प्रकारसे उन्हें प्रणाम किया । (५७) पुत्रों के साथ राम जिस तरह चन्द्र और सूर्यके साथ इन्द्र जिनेश्वरके पास बैठता है उस तरह, मुनिवरके पास बैठे । (५८) लक्ष्मण आदि दूसरे राजा भी जिनेश्वरको नमस्कार करके पहलेसे बैठे हुए देवोंके पास जमीन पर जा बैठे । (५९) आभूषणोंसे रहित होने पर भी श्वेत वस्त्र धारण करनेवाली सीता आर्याओंके साथ ताराओंमें पूर्णिमाकी कलाकी भौंति शोभित हो रही थी । (६०)

देव, मनुष्य तथा विद्याधरोंके बैठ जाने पर अभयसेन नामक शिष्यने सर्वज्ञ मुनिसे जिन धर्मके बारेमें पूछा । (६१) जलधरके समान गम्भीर निर्घोष करनेवाले मुनिवरेन्द्र ने विप्लव अर्थवाले, डुरालकारी, यथार्थ और सुखपूर्वक समझमें आ जाय ऐसे धर्मका उपदेश दिया (६२) —

इस अनन्तानन्त आकाशमें शाश्वत, स्वभावस्थ, स्वर्ग, नरक और मध्यलोकरूप तीन भेदोंसे भिन्न तथा तालके समान संस्थानवाला लोक आया है । (६३) वैत्रासनके समान अधोलोक भ्रालरके समान मध्यलोक तथा मुरजके समान संस्थानवाला ऊपरका लोक (स्वर्ग) जानना चाहिए । (६४)

१. आस(सि)त्तो—प्रत्य० ।

मेरुगिरिस्सं अहत्था, सत्तेव हवन्ति नरखपुहवोओ । रयणप्पहाइयाओ, जीवाणं दुक्खजणणीओ ॥ ६५ ॥
 रयणप्पभा य सक्कर-वालुय-पक्कप्पभा य धूमपभा । एत्तो तमा तमतमा, सत्तमिया हवइ अइधोरा ॥ ६६ ॥
 तीसा य पन्नवीसा, पणरस दस चेव होन्ति पायवा । तिण्णेक्कं पञ्चूणं, पञ्चेव अणुत्तरा नरया ॥ ६७ ॥
 एए चउरासीई, लक्खा सीमन्तयाइया घोरा । खर-फरुस-चण्डवाया, ससि-सूरविज्जिया भीमा ॥ ६८ ॥
 दसंतिगअहिया एक्काहिया य नव सत्त पञ्च तिण्णेक्का । नरइंदए कमो खलु, ओसरमाणो उ रयणाए ॥ ६९ ॥
 अउणावन्नं नरया, सेढी सीमन्तयस्स पुवेणं । चउसु वि दिसासु एवं, अट्टुं चेव परिहाणी ॥ ७० ॥
 चउलीसट्टुहिया, सत्त य छप्पञ्च तह य चत्तारि । अवसरमाणा य पुणो, जाव च्चिय अप्पइट्टाणो ॥ ७१ ॥

मेरुपर्वतके नीचे जीवोंके लिए दुःखजनक रत्नप्रभा आदि नरकभूमियाँ आई हैं। (६५) रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा तथा तमस्तमःप्रभा—ये सात अतिभयंकर नरक हैं। (६६) तीस लाख, पचीस लाख, पन्द्रह लाख, दस लाख, तीन लाख, एक लाख, एक लाखमें पाँच कम और पाँच—ये क्रमशः नरक योनियाँ हैं। (६७) सीमान्तक आदि ये चौरासी लाख नरकावास घोर, तीक्ष्ण, कठोर व प्रचण्ड वायुवाले, चन्द्र एवं सूर्यसे रहित और भयंकर होते हैं। (६८) तेरह, ग्यारह, नौ, सात, पाँच, तीन, और एक—इस प्रकार रत्नप्रभासे क्रमशः घटते हुए नरकेन्द्रक (मुख्य नरकावास) होते हैं। (६९) सीमान्तककी पूर्व दिशामें ४६ नरक आये हैं। इसी प्रकार चारों दिशाओंमें हैं। प्रत्येक प्रतरमें आठ-आठकी कमी होती जाती है। (७०) अड़तालीस, सैंतालीस, छयालीस, पैतालीस, चवालीस इस प्रकार अप्रतिष्ठान तक वे घटते जाते हैं। (७१) ये नरक तपाये हुए लोहेके समान स्पर्शावाले, दुर्गन्धसे भरे हुए, वज्रकी बनी हुई सूइयोंसे व्याप्त जमीनकी भाँति

१. ०स्स व हिट्टा स०—प्रत्य० । २. ०न्ति नरकाउ । ति०—मु० ।

३. गाथा ६९, ७० तथा ७१ अत्यन्त अस्पष्ट होनेसे उनमें आये हुए विषयका स्पष्ट ख्याल नहीं आता; अतः मूलधारी श्रीचन्द्रसूक्त संग्रहणीप्रकरणमेंसे नीचे तीन गाथाएँ उद्धृत की जाती हैं, जिससे उपर्युक्त गाथाओंमें आया हुआ विषय भलीभाँति अवगत हो सके—

१३ ११ ३ ७ ५ ३ १
 तेरि-क्कारस-नव-सग-पण-तिणि-ग-पयरे सच्चिगुणवन्ना ।

सीमन्ताई अप्पइठाणंता इंदया मज्जे ॥ १७३ ॥

तेरह, ग्यारह, नौ, सात, पाँच, तीन और एक—इस प्रकार कुल मिलाकर ४९ प्रतर होते हैं। सीमान्तकसे लेकर अप्रतिष्ठान तकके मध्यवर्ती नरकावासोंको नरकेन्द्रक कहते हैं।

तेहिंतो दिसि-विदिसिं विणिग्गया अट्टु नरयआवलिया ।

पढमे पयरे दिसि इग्गुणवन्न विदिसासु अडयाला ॥ १७४ ॥

बियाईसु पयरेसु इग्गेगहीणाउ होन्ति पंतीओ ।

जा सीमन्तयपयरे दिसि इक्किओ विदिसि नत्थि ॥ १७५ ॥

सीमान्तक आदि इन्द्रक-नरकावासोंकी दिशा और विदिशामें मिलाकर नरककी आठ श्रेणियाँ होती हैं। प्रथम प्रतरमें दिशामें आई हुई इस श्रेणीकी संख्या ४९ की है और विदिशामें ४८ की। इस श्रेणीमें रहे हुए नरकोंके आवासोंको नरकावास कहते हैं।

दूसरे आदि प्रतरमें (प्रत्येक प्रतरमें अनुक्रमसे) दिशामें तथा विदिशामें आई हुई श्रेणियोंमें एक एक संख्या कम होती जाती है; अर्थात् आठ दिशाओंमें आठ-आठ नरकावास कम होते जाते हैं इस प्रकार दूसरे प्रतरकी दिशामें ४८ और विदिशामें ४७ नरकावास आए हैं। इसी क्रमसे घटते-घटते सातवें नरकके अन्तिम प्रतर (उसमें एक ही प्रतर होता है) में दिशामें एक नरकावास रहता है, जबकि विदिशामें तो एक भी नहीं रहता। अन्तिम अप्रतिष्ठान प्रतरमें एक इन्द्रक नरकावास तथा चार दिशाओंमें चार नरकावास—इस प्रकार कुल मिलाकर पाँच नरकावास होते हैं। इस अप्रतिष्ठान नरकेन्द्रकका चारों दिशाओंसे आये हुए नरकावासोंके नाम इस प्रकार हैं—

| | |
|--------------------|-------------------|
| पूर्व दिशा काल | दक्षिण दिशा रोह |
| पश्चिम दिशा महाकाल | उत्तर दिशा महारोह |

तत्तायससमफरिसा, दुग्गन्धा वज्जसूइअइदुग्गमा । सीउण्हवेयणा वि य, करवत्त-ऽसिवत्तजन्ता य ॥ ७२ ॥
 रस-फरिसवसगया जे, पावयरा विगयधम्मसब्भावा । ते चिय पडन्ति नरए, आयसपिण्डं पिव जलोहे ॥ ७३ ॥
 हिंसा-ऽलिय-चोरिकाइएसु परजुवइसेवणाईसु । पावं कुणन्ति जे वि हु, भीमं वचन्ति ते नरयं ॥ ७४ ॥
 सयमेव पावकारी, परं च कारेन्ति अणुमयन्तो य । तिक्कसायपरिगया, पडन्ति जीवा धुवं नरए ॥ ७५ ॥
 ते तत्थ समुप्पन्ना, नरए दित्तग्गिनेयणा पावा । डज्जन्ति थारसन्ता, वलवल्लं चैव कुणमाणा ॥ ७६ ॥
 तत्तो य अग्गिभीया, वेयरणिं नन्ति अइतिसामूया । पाइज्जन्ति रडन्ता, तत्तं खारोदयं दुरहिं ॥ ७७ ॥
 मुच्छगया विउद्धा, असिपत्तवणं तओ य संपत्ता । छिज्जन्ति आउहेहिं, उवरोवरि आवयन्तेहिं ॥ ७८ ॥
 छिन्नकर-चरण-जङ्घा, छिन्नभुया छिन्नकण्ण-नासोद्धा । छिन्नसिर-तालु-नेत्ता, विभिन्नहियया महिं पडिया ॥ ७९ ॥
 रज्जुहिं गलनिवद्धा, वलएउणं च सामलिं पावा । कड्ढिज्जन्ते य पुणो, कण्टयसंछिन्नभिन्नङ्गा ॥ ८० ॥
 केइत्थ कुम्भिपाए, पचन्ति अहोसिरा धगधगेन्ता । जन्तकरवत्तछिन्ना, अन्ने अन्नेसु खज्जन्ति ॥ ८१ ॥
 असि-सत्ति-कणय-तोमर-सूल-मुसुंढीहिं भिन्नसबङ्गा । विलयन्ति धरणिपडिया, सीहसियालेहि खज्जन्ता ॥ ८२ ॥
 एक्कं च तिण्णि सत्त य, दस सत्तरसं तहेव बावोसा । तेत्तीस उयहिनामा, आउं रयणप्पभादीसुं ॥ ८३ ॥
 एवं अणुक्कमेणं, कालं पुढवीसु नरयमज्जगया । अणुहोन्ति महादुक्खं, निमिसं पि अलद्धसुहसाया ॥ ८४ ॥
 सीउण्हल्लुहातण्हाइयाइं दुक्खाइं जाइ तेलोक्के । सबाइं ताइं पावइ, जीवो नरए गरुयकम्मो ॥ ८५ ॥
 तम्हा इमं सुणेउं, फलं अधम्मस्स तिबदुक्खयरं । होह सुपसन्नहियया, जिणवरधम्मज्जया निच्चं ॥ ८६ ॥

अत्यन्त दुर्गम, शीत और उष्णकी वेदनावाले तथा करवत, असिपत्र एवं यंत्रोंसे युक्त होते हैं । (७२) जो लोग रस एवं स्पर्शके वशीभूत, पापी और धर्मके सुन्दर भावसे रहित होते हैं वे जलाशयमें लोहेके पिण्डकी भाँति नरकमें गिरते हैं । (७३) हिंसा, झूठ, चोरी आदि तथा परस्त्री-सेवन आदि भयंकर पाप जो करते हैं वे नरकमें जाते हैं । (७४) जो स्वयं पाप करते हैं, दूसरेसे करवाते हैं और अनुमोदन करते हैं वे तीव्र कषायमें परिगत जीव अवश्य ही नरकमें जाते हैं । (७५) उन नरकोंमें उत्पन्न वे पापी दीप्त अग्निकी वेदना सहन करते हैं तथा 'मैं जल रहा हूँ, मैं जल रहा हूँ' ऐसा चिन्ताते हुए वे जलते हैं । (७६) आगसे डरे हुए वे प्याससे अत्यन्त अभिभूत होकर वैतरणी नदीके पास जाते हैं । रड़ते हुए उन्हें गरम, खारा और दुर्गन्धयुक्त जल पिलाया जाता है । (७७) मूर्च्छित वे होशमें आने पर असिपत्रके वनमें जाते हैं । वहाँ लगातार ऊपरसे गिरनेवाले आयुधोंसे वे छिन्न-भिन्न किये जाते हैं । (७८) हाथ, पैर, जाँघ, मुजा, कान, नाक, होंठ, सिर, तालु और नेत्रोंसे छिन्न तथा फटे हुए हृदयवाले वे जमीन पर गिर पड़ते हैं । (७९) गलेमें रस्सीसे बँधे हुए वे पापी शाल्मलिके वनमें लौटाये जाते हैं । वहाँ बिछे हुए काँटोंसे खण्डित शरीरवाले वे फिर खींचे जाते हैं । (८०) धग्-धग् आवाज करते हुए कई नीचा सिर करके कुम्भिपाकमें पकाये जाते हैं । यंत्र और करवतसे काटे गये दूसरे अन्य नारकियों द्वारा खाए जाते हैं । (८१) तलवार, शक्ति, कनक, तोमर, शूल, मुसुंढि आदि शस्त्रोंसे सारा शरीर जिनका कट गया है ऐसे ये सिंह और सियारों द्वारा खाये जाते नारकी जीव जमीन पर गिरकर बिलाप करते हैं । (८२) रत्नप्रभा आदि नरकोंमें क्रमशः एक, तीन, सात, दस, सत्रह, बाइस और तेत्तीस सागरोपमकी आयु होती है । (८३) इस तरह नरकभूमियोंमें गये हुए जीव समय व्यतीत करते हैं और निमिष मात्रके लिए भी सुख-शान्ति प्राप्त न करके अत्यन्त दुःख अनुभव करते हैं । (८४) तीनों लोकोंमें शीत, उष्ण, क्षुधा, पिपासा आदि जो दुःख हैं वे सब भारी कर्म करनेवाला जीव नरकमें पाता है । (८५) इसलिए अधर्मका ऐसा तीव्र दुःख देनेवाला फल सुनकर मनमें सुप्रसन्न हो जिनवरके धर्ममें नित्य उद्यमशील रहो । (८६)

१. परिणवा—मु० । २. रज्जुहिं गलयवद्धा—मु० । ३. ०२-मोगार-मुसुंढीहिं भि०—मु० । ४. ०यालेसु ख०—प्रत्य० ।

५. नियमं—मु० ।

रयणप्पभाएँ भागे, उवरिल्ले भवणवासिया देवा । असुरा नाग सुवण्णा, वाउसमुद्दा दिसिकुमारा ॥ ८७ ॥
 दीवा विज्जू थणिया, अग्गिकुमारा य होन्ति नायवा । भुज्जन्ति विसयसोत्खं, एए देवोण मज्झगया ॥ ८८ ॥
 चउसट्ठी चुलसीई, बावत्तरि तह य हवइ छन्नउई । छावत्तरि मो लक्खा, सेसाणं हवइ छण्हं पि ॥ ८९ ॥
 एएसु य भवणेषु य, देवा संगीयवाइयरवेणं । निच्चं सुहियपमुइया, गयं पि कालं न याणन्ति ॥ ९० ॥
 ताणं अणन्तरोवरि, दीवसमुद्दा भवे असंखेज्जा । जम्बुद्वीवादीया, एते उ सयंभुरमणन्ता ॥ ९१ ॥
 एएसु वसन्ति सुरा, किन्नर-किंपुरिस-गरुड-गन्धवा । जक्खा भूयपिसाया, कीलन्ति य रक्खसा मुइया ॥ ९२ ॥
 पुढवि जल-जलण-मारुय-वणस्सई चेव थावरा एए । काया एक्को य पुणो, हवइ तओ पच्चमेयजुओ ॥ ९३ ॥
 एइन्दियाउ जाव उ, जीवा पच्चिन्दिया मुणेषवा । फरिस-रस-गन्ध-चक्खू-सोउवओगा बहुवियप्पा ॥ ९४ ॥
 दुविहा थावरकाया, सुहुमा तह बायरा य नायवा । उभओ वि होन्ति दुविहा, पज्जत्ता तह अपज्जत्ता ॥ ९५ ॥
 जीवाणं उवओगो, नाणं तह दंसणं जिणक्खायं । नाणं अट्टवियप्पं, चउविहं दंसणं भणियं ॥ ९६ ॥
 अण्हाउय-पोयाउय-जराउया गब्भज्जा इमे भणिया । सुर-णारओववाइय, सेसा संमुच्छिमा जीवा ॥ ९७ ॥
 ओरालियं विउबं, आहारं तेजसं च कम्मइयं । सुहुमं परंपराए, गुणेहि संपज्जइ सरिरं ॥ ९८ ॥
 धम्मा-ऽधम्मा-ऽऽगासं, कालो जीवो य पोम्मलेण समं । एयं तु हवइ दबं, छब्भेयं सत्तभज्जजुयं ॥ ९९ ॥
 एयं दब्विसेसो, नरवइ ! कहिओ मए समासेणं । निसुणेहि भणिज्जन्तं, दीवसमुद्दाण संखेचं ॥ १०० ॥
 जम्बुद्वीवाइया, दीवा लवणाइया य सलिलनिही । एगन्तरिया ते पुण, दुगुणा दुगुणा असंखेज्जा ॥ १०१ ॥

रत्नप्रभाके ऊपरके भागमें भवनवासी असुर, नाग, सुपर्ण, वायुकुमार, समुद्रकुमार, दिक्कुमार, द्वीपकुमार, विद्यकुमार, स्तनितकुमार और अग्निकुमार ये दस प्रकार के देव रहते हैं। देवियोंके बीचमें रहे हुए वे विषय सुखका उपभोग करते हैं। (८७-८८) इनमेंसे पहले चारके क्रमशः चौसठ लाख, चौरासी लाख, बहत्तर लाख, और छिआनवे लाख तथा बाकीके छहोंके (प्रत्येकके) छिहत्तर लाख भवन होते हैं। (८९) इन भवनोंमें देव गाने-बजानेकी ध्वनिसे नित्य सुखी व प्रमुदित रहते हैं और बीते समयको भी नहीं जानते। (९०)

उनके एकदम ऊपर जम्बूद्वीपसे लेकर स्वयम्भूरमण तक असंख्येय द्वीप-समुद्र आये हैं। (९१) इनमें किन्नर, किंपुरुष, गरुड, गन्धर्व, यक्ष, भूत, पिशाच और राक्षस आनन्दके साथ क्रीड़ा करते हैं। (९२) पृथ्वीकाय, जलकाय, अग्निकाय, वायुकाय और वनस्पतिकाय—ये पाँच प्रकारके स्थावरकाय एकेन्द्रिय जीव होते हैं। (९३) एकेन्द्रियसे लेकर स्पर्शनेन्द्रिय, जिह्वेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय तथा श्रोत्रेन्द्रियसे युक्त विविध प्रकारके पंचेन्द्रिय जीवोंको जानो। (९४) दो प्रकारके स्थावरकाय ज्ञातव्य हैं : सूक्ष्म और वादर। दोनों भी दो प्रकारके होते हैं : पर्याप्त और अपर्याप्त। (९५)

जिन द्वारा कहा गया जीवोंका उपयोग भी दो प्रकारका है : ज्ञान और दर्शन। ज्ञान आठ प्रकारका तथा दर्शन चार प्रकारका कहा गया है। (९६) अण्डज, जरायुज तथा पोतज इन तीन प्रकारके प्राणियोंका गर्भज जन्म होता है। देव और नारक जीवों का उपपात जन्म होता है। शेष जीव सम्मूर्द्धिम होते हैं। (९७) औदारिक, वैक्रयिक, आहारक, तैजस और कर्मण—ये पाँच प्रकारके शरीर क्रमशः सूक्ष्म होते हैं और गुणोंसे प्राप्त होते हैं। (९८) धर्म, अधर्म, आकाश, काल, जीव और पुद्गल ये छः प्रकारके द्रव्य नैगम आदि सात भंगोंसे युक्त होते हैं। (९९)

हे राजन् ! इस तरह खास खास द्रव्य मैंने संक्षेपसे कहे। अब मैं संक्षेपमें द्वीप-समुद्रोंके बारेमें कहता हूँ। उसे तुम सुनो। (१००) जम्बू द्वीप आदि द्वीप और लवण आदि समुद्र एकके बाद एक असंख्येय हैं। वे विस्तारमें दुगुने दुगुने हैं। (१०१) अन्तमें स्वयम्भूरमण समुद्र है। बीचमें जम्बूद्वीप है। यह मण्डलाकार और एक लाख

१. उ—प्रत्य० । २. सुर-नारय उत्रवाया, इमे य सम्मु०—मु० । ३. ०ज्जन्ता दीव-समुद्दा उ सं०—मु० ।

अन्ते सयंभुरमणो, जम्बुद्वीवो उ होइ मज्झमि । सो बोयणाण लक्खं, पमाणओ मण्डलायारो ॥ १०२ ॥
 तस्स वि य हवइ मज्जे, नाहिगिरी मन्दरो सयसहस्सं । सबपमाणेणुच्चो, विथिण्णो दससहस्साइं ॥ १०३ ॥
 दाहिणउत्तरभागे, तस्स उ कुलपवया लवणतोयं । उभओ फुसन्ति सबे, कच्चणवररयणपरिणामा ॥ १०४ ॥
 हिमवो य महाहिमवो, निसदो नीलो य रुप्पि सिहरी य । एएहिं विहत्ताइं, सत्तेव हवन्ति वासाइं ॥ १०५ ॥
 भरहं हेमवयं पुण, हरिवासं तह महाविदेहं च । रम्यय हेरणवयं, उत्तरओ हवइ एरवयं ॥ १०६ ॥
 गङ्गा य पढमसरिया, सिन्धू पुण रोहिया मुण्येवा । तह चैव रोहियंसा, हरी नदी चैव हरिकन्ता ॥ १०७ ॥
 सीया वि य सीओया, नारी य तहेव होइ नरकन्ता । रुप्पयसुवण्णकूला, रत्ता रत्तावई भणिया ॥ १०८ ॥
 वीसं वक्खारगिरी, चौतीस हवन्ति रायहाणीओ । उत्तरदेवकुरूओ, सामलिजम्बूसणाहाओ ॥ १०९ ॥
 जम्बुद्वीवस्स ठिओ, चउग्गुणो तस्स धायई सण्डो । तस्स वि दुग्गुणपमाणं, पुक्खरदीवे हवइ अद्धं ॥ ११० ॥
 पच्चसु पच्चसु पच्चसु, भरहेरवपसु तह विदेहेसु । भणियाउ कम्मभूमो, तीसं पुण भोगभूमोओ ॥ १११ ॥
 हेमवयं हरिवासं, उत्तरकुरु तह य हवइ देवकुरु । रम्यय हेरणवयं, एयाओ भोगभूमोओ ॥ ११२ ॥
 आउ-ठिईपरिमाणं, भोगो मिहुणाण जारिसो होइ । तं ख्वं संखेवं, भणामि निसुणेहि एगमणो ॥ ११३ ॥
 नाणाविहरयणमई, भूमो कप्पद्दुमेसु य समिद्धा । मिहुणयकयाहिवासा, निच्चुज्जोया मणभिरामा ॥ ११४ ॥
 गिह-जोइ-भूसणङ्गा, भोयण भायण तहेव वत्थङ्गा । चित्रसा तुडियङ्गा, कुसुमङ्गा दीवियङ्गा य ॥ ११५ ॥
 बहुरयणविणिग्माया, भवणदुमा अट्टभूमिया दिवा । सयणासणसन्निहिया, तेएण निदाहरविसरिसा ॥ ११६ ॥
 जोईदुमाण उवरिं, ससि-सूरा जत्थ वच्चमाणा वि । ताण पहावोवहया, निययं पि छविं विमुञ्चन्ति ॥ ११७ ॥

योजन विस्तृत है । (१०२) उसके भी मध्यमें नाभिस्थानमें आया हुआ पर्वत मन्दर कुल मिला कर एक लाख योजन ऊँचा और दस हजार योजन विस्तीर्ण है । (१०३) उसके दक्षिण और उत्तर भागमें सोने और सब प्रकारके उत्तम रत्नोंसे युक्त कुलपर्वत दोनों ओर लवणसागरको छूते हैं । (१०४) हिमवान्, महाहिमवान्, निषध, नील, रुक्मि और शिखरी इन छः पर्वतोंसे विभक्त सात ही क्षेत्र होते हैं । (१०५) भरत हैमवत, हरिचेत्र तथा महाविदेह, रम्यक, हेरणवत और उत्तरमें ऐरावत—ये सात क्षेत्र हैं । (१०६) पहली नदी गंगा और फिर सिन्धु, रोहिता और रोहिदंशा, हरि और हरिकान्ता, सीता और सीतोदा, नारी और नरकान्ता, रुक्मककूला और सुवर्णकूला तथा रत्ता और रक्तवती—ये महानदियाँ कही गई हैं । (१०७-८) बीस वक्खार पर्वत, चौतीस राजधानियाँ और शाल्मलि एवं जम्बूद्वीपोंसे युक्त उत्तरकुरु और देवकुरु नामके क्षेत्र होते हैं । (१०९)

जम्बूद्वीप जितना है उससे चारगुना बड़ा धातकी खण्ड होता है और उससे भी दुगुने परिमाणका आधा पुष्करद्वीप होता है । (११०) पाँच पाँच ऐरावत और पाँच विदेह-कुल मिलाकर पन्द्रह कर्मभूमियाँ तथा तीस भोगभूमियाँ होती हैं । (१११) हैमवत, हरिवर्ष, उत्तरकुरु एवं देवकुरु, रम्यक और हेरणवत ये भोगभूमियाँ हैं । (११२)

युगलिकोंका आयुष्य, स्थिति, परिमाण तथा भोग जैसा होता है वह सब मैं संक्षेपसे कहता हूँ ! तुम ध्यानसे सुनो । (११३) नानाविध रत्नोंसे युक्त भूमि कल्पवृक्षोंसे समृद्ध होती है । युगलिकोंके लिए बनाये गये निवास नित्य प्रकाशित और सुन्दर होते हैं । (११४) गृहांग, ज्योतिरंग, भूषणंग, भोजनांग, वस्त्रांग, चित्रसांग, त्रुटितांग, कुसुमांग तथा दिव्यांग—ये दस प्रकारके कल्पवृक्ष होते हैं । (११५) वहाँ अनेक प्रकारके रत्नोंसे निर्मित आठ मंजिलवाले दिव्य भवनद्रुम होते हैं । शयनासनसे युक्त वे तेजमें निदाघकालीन सूर्यके सदृश होते हैं । (११६) ज्योतिर्द्रुमोंके ऊपर चन्द्र और सूर्य विद्यमान होने पर भी उन द्रुमोंके प्रभावसे तिरस्कृत होकर वे अपनी कान्ति छोड़ देते हैं । (११७) उत्तम हार, कटक, कुण्डल,

१. हवइ—तु० । २. हरी णई हवइ हरि—प्रत्य० । ३. निसुणेइ एगमणा—सु० ।

वरहार-कडय-कुण्डल-मउडालंकार-नेउसईणि । निययं पि भूसणाइं, आहरणदुमेसु जायन्ति ॥ ११८ ॥
 अट्टसयकवज्जयजुओ, चउसट्ठो तह य वज्जणवियप्पा । उप्पज्जइ आहारो, भोयणरुक्खेसु रसकलिओ ॥ ११९ ॥
 भिङ्गार-थाल-वट्टय-कच्चोलय-वट्टमाणमाईणि । कच्चण-रयणमयाइं, जायन्ति य भायणङ्गेषु ॥ १२० ॥
 खोमय-दुगुल-बालय-चीणंसुयपट्टमाईयाइं च । वत्थाइं बहुविहाइं, वत्थङ्गदुमा पणामेन्ति ॥ १२१ ॥
 कायम्बरी पसन्ना, आसवजोगा तद्देव गेगविहा । चित्तंरसेसु सया, पाणयजोगा उ जायन्ति ॥ १२२ ॥
 वीणा-तिसरिय-वेणु-सञ्जीसयमाइया सरा विविहा । निययं सवणसुहयरा, तुडियङ्गदुमेसु जायन्ति ॥ १२३ ॥
 वरबउल-तिलय-चम्पय-असोय-पुन्नाय-नायमाईणि । कुसुमाइं बहुविहाइं, कुसुमङ्गदुमा पणामेन्ति ॥ १२४ ॥
 ससि-सूरसरिसतेया, निच्चं जगजगजगेन्तवहुविडवा । विविहा य दीवियङ्गा, नासन्ति तन्मन्धयरं ते ॥ १२५ ॥
 एयारिसेसु भोगं, दुमेसु भुञ्जन्ति तत्थ मिहुणाइं । सबङ्गसुन्दराइं, वड्डियनेहाणुरायाइं ॥ १२६ ॥
 आउठिई हेमवए, पल्लं दो चेव होन्ति हरिवासे । देवकुरुमि य तिण्णि, एस कमो हवइ उत्तरओ ॥ १२७ ॥
 दो चेव धणुसहससा, होइ पमाणं तु हेमवयवासे । चत्तारि य हरिवासे, छच्चेव हवन्ति कुरुवाए ॥ १२८ ॥
 नय पत्थिवा न भिच्चा, नय खुज्जा नेय वामणा पङ्गु । नय मूया बहिरन्धा, नदुक्खिया नेव य दरिहा ॥ १२९ ॥
 समचउरससंठाणा, वलि-पलियविवज्जियां य नीरोगा । चउसट्टिलक्खणधरा, मणुया देवा इव सुरूवा ॥ १३० ॥
 ताणं चिय महिलाओ, वियसियवरकमलपत्तनेत्ताओ । सबङ्गसुन्दरीओ, कौमुइससिवयणसोहाओ ॥ १३१ ॥
 भुञ्जन्ति विसयसोक्खं, जं पुरिसा तत्थ भोगभूमीसु । कालं चिय अइदीहं, तं दाणफलं मुणोयवं ॥ १३२ ॥
 दाणं पुण दुवियप्पं, सुपत्तदाणं अपत्तदाणं च । नायवं हवइ सया, नरेण इह बुद्धिमन्तेणं ॥ १३३ ॥

मुकुटालंकार तथा नूपुर आदि अलंकार आभरण दुमोंसे उत्पन्न होते हैं । (११८) एक सौ आठ खार्द्योंसे युक्त तथा चौसठ प्रकारका व्यंजनवाला रसयुक्त आहार भोजन वृक्षोंसे पैदा होता है । (११९) म्कारी, थाली, कटोरी, प्याले, शराव आदि स्वर्ण एवं रत्नमय पात्र भाजनांगवृक्षोंसे उत्पन्न होते हैं । (१२०) क्षौम, टुकूल, बालके बने वर (ऊनी वर) चीनांशुक, पट्ट (सनका कपड़ा) आदि अनेक प्रकारके कपड़े वस्त्रांगद्रुम देते हैं । (१२१) कादम्बरी, प्रसन्ना तथा दूसरे अनेकविध आसवों एवं पेय पदार्थोंका लाभ चित्ररसांगोंसे होता है । (१२२) वीणा, त्रिसरिक (तीन तारोंवाला वाद्य) बंसी, सञ्जीसक (वाद्य-विशेष) आदि श्रवणेन्द्रियके लिए सुखकर विविध वाद्य त्रुटितांगद्रुमोंसे पैदा होते हैं । (१२३) उत्तम बकुल, तिलक, चम्पक, अशोक, पुन्नाग, नाग आदि विविध पुष्प कुसुमांगद्रुम देते हैं । (१२४) चन्द्रमा और सूर्यके समान तेजवाले और विविध प्रकारके नित्य प्रकाशित होनेवाले दिव्यांग वृक्ष अन्धकारको दूर करते हैं । (१२५) सर्वांगसुन्दर और बढ़ते हुए स्नेहानुरागवाले युगल वहाँ ऐसे वृक्षके कारण भोगोंका उपभोग करते हैं । (१२६)

आयुकी स्थिति हैमवतमें एक पल्लोपमकी हरि वर्षमें दो पल्लोपमकी तथा देवकुरुमें तीन सागरोपमकी होती है । उत्तरसे भी यही क्रम है । (१२७) हैमवत क्षेत्रमें दो हजार धनुष जितनी हरिवर्षमें चार हजार धनुष जितनी और देवकुरुमें छः हजार धनुष जितनी ऊँचाई होती है । (१२८) इन क्षेत्रोंमें न राजा होता है, न भृत्य; न कोई कुबड़ा, बौना, पंगु, मूक, बहिरा, अन्धा होता है और न कोई दुःखी-दरिद्र होता है । (१२९) यहाँके मनुष्य समचतुरस्रसंस्थानवाले, भुर्रियों और सफेद बालोंसे रहित, नीरोग, चौसठ लक्षणोंको धारण करनेवाले और देवोंकी भाँति सुरूप होते हैं । (१३०) उनकी क्रियाँ खिले हुए उत्तम कमलदलके समान नेत्रोंवाली, सर्वांगसुन्दर और शरत्पूर्णिमाके चन्द्रमाके समान मुखकी शोभासे युक्त होती हैं । (१३१)

इन भोगभूमियोंमें लोग अतिदीर्घकाल पर्यन्त विषय-सुखका जो अनुभव करते हैं वह दानका फल है ऐसा जानो । (१३२) बुद्धिमान पुरुषको दो प्रकारका दान—सुपात्रदान और अपात्रदान सदा जानना चाहिए । (१३३) पाँच

१. •णयाईया—क० सु० । २. •इयाणं च—मु० । ३. •राणेणं—प्रत्य० । ४. •व य विमुइकुरुवाए—प्रत्य० ।

५. •या पिरोगा य । च०—प्रत्य० ।

पञ्चमहव्यंकलिया, निचं सज्जाय-ज्ञाण-तवनिरया । धण-सयणविगयसज्जा, ते पत्तं साहवो भणिया ॥ १३४ ॥
 सद्धा-सत्ती-भत्ती-विन्नाणेणं हवेज्जं जं दिज्जं । साहूण गुणधराणं, तं दाणं बहुफलं भणियं ॥ १३५ ॥
 तस्स पभावेण नरा, हेमवयाईसु चैव उववन्ना । मुज्जन्ति विसयसोक्खं, वरतरुणीमज्जयारत्था ॥ १३६ ॥
 संजमरहियाण पुणो, जं दिज्जइ राग-दोसकल्लुसाणं । तं न हु फलं पयच्छइ, धणियं विधिउज्जमन्ताणं ॥ १३७ ॥
 एवं तु भोगभूमी, तुज्जं कहिया मए समासेणं । तह उज्जमेह संपइ, जेण निरुत्तेण पावेह ॥ १३८ ॥
 अन्तरदीवा मणुया, अट्टावीसाविहा उ सीहमुहा । उक्कोसेणं आउं, ताण य पलियट्टमं भागं ॥ १३९ ॥
 वन्तरसुराण उवरिं, पञ्चविहा जोइसा तओ देवा । चन्दा सूरा य गहा, नक्खत्ता तारया नेया ॥ १४० ॥
 एए भमन्ति मेरुं, पयाहिणंता सहावतेयंसी । रइसागरोवगाढा, गयं पि कालं न याणन्ति ॥ १४१ ॥
 जोइसियसुराणुवरिं, कप्पो नामेण हवइ सोहम्मो । तह य पुणो ईसाणो, सणंकुमारो य माहिन्दो ॥ १४२ ॥
 बंभो कप्पो य तहा, लन्तयकप्पो य होइ नायवो । तह य महासुक्को वि य, तह अट्टमओ सहस्तारो ॥ १४३ ॥
 तत्तो य आणओ पाणओ य तह आरणो मुणेयवो । कप्पो अच्चुयनामो, उत्तमदेवाण आवासो ॥ १४४ ॥
 कप्पाणं पुण उवरिं, नव गेवेज्जाइं मणभिरामाई । ताण वि अणुदिसाई, पुरओ आइक्खपमुहाई ॥ १४५ ॥
 विजयं च वेजयन्तं, जयन्तमवराइयं मणभिरामं । अहमिन्दवरविमाणं, सबट्टं चैव नायवं ॥ १४६ ॥
 तस्स वि य जोयणाई, वारस गन्तूण उवरिमे भागे । इसिपवभारा पुढवी, चिट्ठन्ति जाईं ठिया सिद्धा ॥ १४७ ॥
 पणयालीसं लक्खा, जोयणसंखाएँ हवइ वित्थिष्णा । अट्टेव य बाहल्ला, उत्ताणयल्लत्तंठाणा ॥ १४८ ॥
 एत्तो विमाणसंखा, कहेमि वत्तीससयसहस्साई । सोहम्मे ईसाणे, अट्टावीसं तु भणियाई ॥ १४९ ॥

महाव्रतसे युक्त, स्वाध्याय ध्यान एवं तपसे निरन्तर निरत तथा धन एवं स्वजनोके संगसे चिरत जो साधु होते हैं वे पात्र कहे जाते हैं । (१३४) श्रद्धा, शक्ति, भक्ति और ज्ञानपूर्वक जो दान, गुण धारण करनेवाले साधुओंको दिया जाता है वह बहुत फलदायी कहा गया है । (१३५) उसके प्रभावसे हेमवत आदिमें उत्पन्न मनुष्य सुन्दर तरुणियोंके बीचमें रहकर विषयसुखका उपभोग करते हैं । (१३६) संजमरहित और राग-द्वेषसे कलुषित व्यक्तियोंको जो दान दिया जाता है वह बहुत विधिसे उद्यम करने पर भी फल नहीं देता । (१३७) इसतरह मैंने तुम्हें भोगभूमिके बारेमें लक्ष्मणसे कहा । अब तुम ऐसा उद्यम करो जिससे वह अवरय ही प्राप्त हो । (१३८)

अन्तर्द्वारोंमें रहनेवाले मनुष्य अट्टाईस प्रकारके तथा सिंह जैसे मुखवाले होते हैं । उनकी उत्कृष्ट आयु पल्योपमका आठवाँ भाग होती है । (१३९) व्यन्तर देवोंके ऊपर चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारे—ये पाँच प्रकारके ज्योतिष्क देव जानने चाहिए । (१४०) स्वभावसे तेजस्वी ये देवकी प्रदक्षिणा करते हुए घूमते हैं । प्रेम-सागरमें लीन ये बीते समयको भी नहीं जानते । (१४१)

ज्योतिष्क देवों के ऊपर सौधर्म नामका कल्प तथा-ईशान, सत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्मलोक, लान्तककल्प, महाशुक्र, आठवाँ सहस्वार, आनत, प्राणत, आरण और अच्युत नामके उत्तम देवोंके आवास रूप कल्प आये हैं । (१४२-१४४) कल्पोंके ऊपर मनोहर नौ प्रवेयक आदि आये हैं । उनके भी—अनुदिस (?) ऐसे पूर्वसे प्रारंभ करके आदित्य प्रमुख हैं । (१४५) उनसे भी ऊपर अहमिन्द्रोंके विजय, वैजयन्त, जयन्त, सुन्दर अपराजित तथा सुन्दर विमान सर्वार्थसिद्ध—ये पाँच अनुत्तर विमान जानो । (१४६) इससे भी बारह योजन ऊपरके भागमें जाने पर ईषत्प्राग्भार नामकी पृथ्वी आई है जहाँ सिद्ध ठहरते हैं । (१४७) वह पैतालीस लाख योजन विस्तृत है । आठ योजन मोटी यह खोले हुए लुत्रके आकारकी है । (१४८)

अब मैं विमानों की संख्या कहता हूँ । वे सौधर्ममें बत्तीस लाख और ईशानमें अट्टाईस लाख कहे गये हैं । (१४९)

१. ०यं पि विज्जो—मु० । २. य अह—मु० । ३. इस शब्दका अर्थ अस्पष्ट है । आदित्यादि लोकान्तिक हैं और उनका स्थान न प्रत्येकमें है तत्रार्थ—४-२५-२६ ।

बारस सणकुमारे, माहिन्दे चैव अट्ट लक्खाइं । चत्तारि पुणो बग्भे, विमाणलक्खा तर्हि होन्ति ॥ १५० ॥
 पन्नाससहस्साइं, संखाए लन्तए विमाणणं । ततो य महासुक्के, चत्तालीसं सहस्साइं ॥ १५१ ॥
 छच्चेव सहस्स खल्लु, हवन्ति कप्पे तहा सहस्सारे । आणय-पाणयकप्पेसु होन्ति चत्तारि उ सयाइं ॥ १५२ ॥
 तिण्णेव सया भणिया, आरणकप्पे तहऽच्चुए चैव । तिण्णि सया अट्टारस, उवरिमगेवेज्जमाईसु ॥ १५३ ॥
 पाइक्क-तुरय-रह-गय-गोविस-गन्धब-नद्धियन्ताइं । अणियाइं होन्ति एयाइं सत्त सक्कस्स दिबाइं ॥ १५४ ॥
 वाउ हरि मायली वि य, तहेव एरावणो य दामिद्धी । रिट्ठञ्जस णीलंजस, एए अणियाण मयहरया ॥ १५५ ॥
 तत्थ सुधम्मविमाणे, एरावणवाहणो उ वज्जधरो । इन्दो महाणुभावो, जुइमन्तो रिद्धिसंपन्नो ॥ १५६ ॥
 चत्तारि लोगपाला, जम-वरुण-कुवेर-सोममाईया । सामाणियदेवाण वि, चउरासीइं सहस्साइं ॥ १५७ ॥
 तत्थ सुधम्मसहाए, परिसाओ तिण्णि होन्ति देवाणं । समिया चन्दा जउणा, मणाभिरामा रयणचित्ता ॥ १५८ ॥
 पउमा सिवा य सुलसा, अञ्जु सामा तहा विहा अयला । कालिन्दी भाणू वि य, सक्कस्स य अग्गमहिस्सीओ ॥ १५९ ॥
 एक्केक्का वरजुवई, सोलसदेवीसहस्सपरिवारा । उत्तमरूपसिरीया, सक्कं रामेन्ति गुणनिलया ॥ १६० ॥
 सो ताहि समं इन्दो, भुञ्जन्तो उत्तमं विसयसोक्खं । कालं गमेइ बहुयं, विसुद्धलेसो तिनाणोओ ॥ १६१ ॥
 सो तस्स विउल्लतवपुण्णसंचओ संजमेण निप्फन्नो । न चइज्जइ वण्णेउं, अवि वाससहस्सकोडीहि ॥ १६२ ॥
 एवं अन्ने वि सुरा, जहाणुरूवं सुहं अणुहवन्ता । अच्छन्ति विमाणगया, देविसहस्सेहि परिकिण्णा ॥ १६३ ॥
 एवं जह सोहम्भे, तह ईसाणाइएसु वि कमेणं । कप्पेसु होन्ति इन्दा, सलोगपाला सदेवीया ॥ १६४ ॥
 दो सत्त दस य चोइस, सतरस अट्टार वीस बावीसा । एक्कोत्तरपरिवद्धी, अहमिन्दाणं तु तेत्तीसं ॥ १६५ ॥

सनत्कुमारमें बारह लाख, माहेन्द्रमें आठ लाख और ब्रह्मलोकमें चार लाख विमान होते हैं । (१५०) लान्तकमें विमानोंकी संख्या पचास हजार है । महाशुकमें चालीस हजार विमान हैं । (१५१) सहस्वार कल्पमें छः हजार ही विमान होते हैं । आनत एवं प्राणत कल्पोंमें चार सौ होते हैं । (१५२) आरण एवं अच्युतकल्पमें तीन सौ ही विमान कहे गये हैं । ऊपरके ध्रैवेयक आदिमें तीन सौ अठारह होते हैं । (१५३) पदाति सैनिक, अश्व, रथ, हाथी, वृषभ, गन्धर्व और नर्तक—ये सात दिव्य सैन्य इन्द्रके होते हैं । (१५४) वायु, हरि, मातलि, ऐरावत, दामर्धि, रिष्टयशा और नीलयशा—ये सेनाओंके नायक हैं । (१५५) वहाँ सुधर्मा नामक विमानमें रहा हुआ इन्द्र ऐरावतका वाहनवाला, वज्रको धारण करनेवाला उदात्तमना, द्युतिमान् तथा ऋद्धिसम्पन्न होता है । (१५६) उसके यम, वरुण, कुवेर और सोम ये चार लोकपाल तथा चौरासी हजार सामानिक देव होते हैं । (१५७) वहाँ देवोंकी सुधर्म नामक सभाकी मनोहर एवं रत्नोंसे शोभित शमिता चन्द्रा व यमुना नामकी तीन परिपद् होती हैं । (१५८) पद्मा, शिवा, सुलसा, अंजु, श्यामा, विभा, अचला, कालिन्दी और भानु—ये शकृकी पटरानियाँ हैं । (१५९) उत्तम रूप और कान्ति से सम्पन्न और गुणोंके आवासरूप इत सुन्दर युवतियों में से एक-एकका परिवार सोलह हजार देवियोंका होता है । ये इन्द्र के साथ रमण करती हैं । (१६०) विशुद्ध लेश्या और तीन ज्ञानवाला वह इन्द्र इनके साथ उत्तम विषयसुख का अनुभव करता हुआ बहुत समय बिताता है । (१६१) उसके संयमसे निष्पन्न विपुल तप एवं पुण्यके संचयका वर्णन तो हजारों करोड़ वर्षोंमें भी नहीं किया जा सकता । (१६२) इसी प्रकार हजारों देवियोंसे घिरे हुए दूसरे भी देव यथानुरूप सुखका अनुभव करते हुए विमानोंमें रहते हैं । (१६३) जिसप्रकार सौधर्ममें उसीप्रकार अतुकमसे ईशान आदि कल्पोंमें भी लोकपाल एवं देवियोंसे युक्त इन्द्र होते हैं । (१६४) दो, सात, दस, चौदह, सत्रह, अठारह, बीस, बाईस और फिर एक एक की वृद्धि करते हुए अहमिन्द्रोंके तेत्तीस—इतने सागरोपम कल्पवासी देवोंकी उत्कृष्ट आयु होती है । मोहरहित अहमिन्द्रोंकी तो यह आयु नियत होती है, अर्थात्

१. दामिद्धी—मु० । २. सक्का रामेइ—मु० । ३. गुणकिलया—प्रत्य० । ४. न वि नज्जइ व०—मु० । ५. तेत्तीसा—प्रत्य० ।

एयाइं सागराइं, कप्पाईणं सुराण परमाउं । अहमिन्दाणं निययं, हवइ इमं मोहरहियाणं ॥ १६६ ॥
 एयन्तरम्मि रामो, परिपुच्छइ साहवं कयपणामो । कम्मरहियाणं भयवं !, सिद्धाणं केरिसं सोक्खं ? ॥ १६७ ॥
 तो भणइ सुणिवरिन्दो, सुणेहि को ताण वण्णिउं सोक्खं । तीरइ नरो नराहिव, तह वि य संखेवओ सुणसु ॥ १६८ ॥
 मणुयाणं जं तु सोक्खं, तं अहियं हवइ नरवरिन्दाणं । चक्कीण वि अहिययरं, नराण तह भोगभूमाणं ॥ १६९ ॥
 वन्तरदेयाण तओ, अहियं तं जोइसाण देवाणं । तह भवणवासियाणं, गुणन्तरं कप्पवासीणं ॥ १७० ॥
 गेवेज्जाण ततो, अहियं तु अणुत्तराण देवाणं । सोक्खं अणन्तयं पुण, सिद्धाण सिवालयरथाणं ॥ १७१ ॥
 जं तिहुयणे समत्थे, सोक्खं सवाण सुरवरिन्दाणं । तं सिद्धाणं न अग्घइ, कोडिसयसहस्सभागम्मि ॥ १७२ ॥
 ते तथ अणन्तवला, अणन्तनाणी अणन्तदरिसी य । सिद्धा अणन्तसोक्खं, अणन्तकालं समणुहोन्ति ॥ १७३ ॥
 संसारिणस्स जं पुण, जीवस्स सुहं तु फरिसमादीणं । तं मोहहेउगं निययमेव दुक्खस्स आमूलं ॥ १७४ ॥
 जीवा अभवरासी, कुधम्मधम्मोसु जइ वि तवचरणं । घोरं कुणन्ति मूढा, तह वि य सिद्धिं न पावेन्ति ॥ १७५ ॥
 जिणसासणं पमोत्तुं, राहव ! इह अन्नसासणरयाणं । कम्मक्खओ न विज्जइ, धणियं पि समुज्जमन्ताणं ॥ १७६ ॥
 जं अन्नाणतवस्सी, खवेइ भवसयसहस्सकोडीहिं । कम्मं तं तिहि गुत्तो, खवेइ नाणी मुहुत्तेणं ॥ १७७ ॥
 भविया जिणवयणरया, जे नाण-चरित्त-दंसणसमग्गा । सुक्कज्झाणरईया, ते सिद्धिं जन्ति धुयकम्मा ॥ १७८ ॥
 एवं सुणिउण तओ, रहुत्तमो साहवं भणइ भयवं ! । साहेहि जेण सत्ता, संसाराओ पमुचन्ति ॥ १७९ ॥
 एयन्तरे पवुत्तो, जिणधम्मं सयलभूसणो साह । सम्मइंसणमूलं, अणेतवनियमसंजुत्तं ॥ १८० ॥

उसमें । उत्कर्ष-अपकर्ष नहीं होता । (१६५-१६६) तब रामने हाथ जोड़कर साधुसे पूछा कि, हे भगवन् ! कर्मसे रहित सिद्धोंका सुख कैसा होता है ? (१६७) इस पर मुनिवरने कहा कि, हे राजन् ! उनके सुखका वर्णन कौन कर सकता है ? तथापि संक्षेपमें मैं कहता हूँ । (१६८) मनुष्योंको जो सुख होता है उससे अधिक राजाओंको होता है । उससे अधिक चक्रवर्तियों और भोगभूमिके मनुष्योंको होता है । (१६९) उससे अधिक व्यन्तर देवोंको, उससे अधिक ज्योतिष्क देवोंको, उससे अधिक भवणवासी देवोंको, उससे कई गुना अधिक कल्पवासियोंको सुख होता है । (१७०) उससे अधिक प्रवेयकोंको, उससे अधिक अनुत्तर विमानवासी देवोंको सुख होता है । शिवधाममें रहे हुए सिद्धोंका सुख उससे अनन्तगुना अधिक होता है । (१७१) समस्त त्रिभुवनमें सब देव एवं इन्द्रोंका मिलाकर जो सुख होता है वह सिद्धोंके हजार-करोड़वें भागके भी योग्य नहीं होता । (१७२) वहाँ जो अनन्त बलवाले, अनन्तज्ञानी और अनन्तदर्शी सिद्ध होते हैं वे अनन्त काल तक अनन्त सुखका अनुभव करते हैं । (१७३) संसारी जीवको जो स्पर्श आदिका सुख होता है वह मोहजन्य होता है, अतः अवश्य ही वह दुःखका मूल है । (१७४) अभव्यराशिके मूढ़ जीव कुधर्मको पैदा करनेवाले धर्मोंका पालन कर यदि घोर तपश्चरण करें तो भी सिद्धि प्राप्त नहीं कर सकते । (१७५)

हे राघव ! जिनशासनको छोड़कर अन्य शासनमें रत मनुष्य बहुत उद्यम करे तो भी उनके कर्मोंका क्षय नहीं होता । (१७६) अज्ञानी तपस्वी जिस कर्मको लाख-करोड़ भवोंमें खपाता है उस कर्मको मन-वचन-काय इन तीनोंका संयमन करनेवाला ज्ञानी मुहूर्तमें खपाता है । (१७७) जो भव्य जीव जिनोपदेशमें रत, ज्ञान, चारित्र और दर्शनसे युक्त तथा शुक्लध्यानमें लीन होते हैं वे कर्मोंका नाश करके मोक्षमें जाते हैं । (१७८)

ऐसा सुनकर रामने उन साधुसे कहा कि, भगवन् ! जिससे जीव संसारसे मुक्त होते हैं उसके बारेमें आप कहें । (१७९) तब सकलभूषण मुनि मूलमें सम्यग्दर्शनवाले तथा अनेक प्रकारके तप एवं नियमसे युक्त जिनधर्मके बारेमें कहने लगे । (१८०) जो जीवादि नौ पदार्थोंके ऊपर श्रद्धा रखता है और लौकिक देवोंसे रहित है वह सम्यग्दृष्टि कहा

१. *मादीयं । तं—प्रत्ययः ।

जो कुणइ सदहाणं, जीवाइयाण नयपयत्थाणं । लोइयसुरेसुं रहिओ, सम्मदिट्ठी उ सो भणिओ ॥ १८१ ॥
 संकाइदोसरहो, कुणइ तवं सम्मदंसणोवायं । इन्दियनिरुद्धपसरं, तं हवइ सया सुचारितं ॥ १८२ ॥
 नत्थ अहिंसा सच्चं, अदत्तपरिवज्जणं च वम्भं च । दुविहपरिग्गहविरई, तं हवइ सया सुचारितं ॥ १८३ ॥
 विणओ दया य दाणं, सोलं नाणं दमो तहा ज्ञाणं । कोरइ जं मोक्खट्टे, तं हवइ सया सुचारितं ॥ १८४ ॥
 जं एवगुणं राहव !, तं चारित्तं जिणेहिं परिकहियं । विवरीयं पुण लोए, तं अचरित्तं मुणेषव्वं ॥ १८५ ॥
 चारित्तेण इमेणं, संजुत्तो ददधिई अणत्तमणो । पुरिसो दुक्खविमोक्खं, करेइ नत्थेत्थ संदेहो ॥ १८६ ॥
 न दया दमो न सच्चं, न य इन्दियसंवरो न य समाही । न य नाणं न य ज्ञाणं, तत्थ उ धम्मो कओ हवइ ? ॥ १८७ ॥
 हिंसालियचोरिका, इत्थिरई परिगहो जहिं धम्मो । न य सो हवइ पसत्थो, न य दुक्खविमोक्खणं कुणइ ॥ १८८ ॥
 हिंसालियचोरिका, इत्थिरई परिगहो अविरई य । कोरइ धम्मनिमित्तं, नियमेण न होइ सो धम्मो ॥ १८९ ॥
 दिक्खं घेतुण पुणो, छज्जीवनिकायमद्दणं कुणइ । धम्मच्छलेण मूढो, न य सो सिवसोमाइं लहइ ॥ १९० ॥
 वह-बन्ध-वेह-तालण-दाहण-छेयाइ कम्मनिरयस्स । कय-विक्रयकारिस्स उ, रन्धण-पयणाइसत्तस्स ॥ १९१ ॥
 ष्हाणुवट्टण-चन्दण-मल्ला-SSभरणाइभोगतिसियस्स । एवंविहस्स भोक्खो, न कयाइ वि हवइ लिंगिस्स ॥ १९२ ॥
 मिच्छादंसणनिरओ, अन्नाणी कुणइ जइ वि तवचरणं । तह वि य किंकरदेवो, हवइ विसुद्धप्पओगेणं ॥ १९३ ॥
 जो पुण सम्मदिट्ठी, मन्दुच्छाहो वि जिणमयाभिरओ । सत्तद्ध भवे गन्तुं, सिज्झइ सो नत्थि संदेहो ॥ १९४ ॥
 उच्छाहददधिईओ, जो निययं सोलसंजमाउत्तो । दो तिण्णि भवे गन्तुं, सो लहइ सुहेण परलोयं ॥ १९५ ॥
 कोइ पुण भवियसोहो, एकभवे भाविअण सम्मत्तं । धीरो कम्मविसोहिं, काऊण य लहइ निवाणं ॥ १९६ ॥

जाता है । (१८१) सम्यग्दर्शनरूप उपायसे युक्त जो मनुष्य शंका आदि दोषोंसे रहित हो तप करता है और इन्द्रियोंके प्रसारका निरोध करता है वह सदा सुचारित्री होता है । (१८२) जहाँ अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य तथा बाह्य एवं अभ्यन्तर दोनों प्रकारके परिग्रहसे विरति होती है वह सदा सुचारित्री होता है । (१८३) जो मोक्षके लिए विनय, दया, दान, शील, ज्ञान, दम तथा ध्यान करता है वह सदा सुचारित्री होता है । (१८४) हे राहव ! ऐसा जो गुण होता है उसे जिनेश्वरोंने चारित्र कहा है । लोकमें इससे जो विपरीत होता है उसे अचारित्र समझना । (१८५) इस चारित्रसे युक्त, दृढमति और एकप्र चित्तवाला जो पुरुष होता है वह दुःखका नाश करता है, इसमें सन्देह नहीं । (१८६) जहाँ न तो दया है, न दम, न सत्य, न इन्द्रियनिग्रह, न समाधि, न ज्ञान और न ध्यान, वहाँ धर्म कैसे हो सकता है ? (१८७) हिंसा झूठ, चोरी, स्त्री-प्रेम और परिग्रह जहाँ धर्म होता है वह न तो प्रशस्त होता है और न दुःखका नाश करता है । (१८८) धर्मके निमित्तसे जो हिंसा, झूठ, चोरी, स्त्रीरति, परिग्रह और अविरति की जाती है वह अवश्यमेव धर्म नहीं है । (१८९) दीक्षा ग्रहण करके जो मूढ़ मनुष्य धर्मके बहाने छः जीवनिकायोंका मर्दन करता है वह मोक्ष जैसी सद्गति नहीं पाता । (१९०) वध, बन्ध, वेध, ताड़न, दाहन, छेदन आदि कर्ममें निरत, क्रय-विक्रय करनेवाला, रौंधने-पकाने आदिमें आसक्त, स्नान, उबटन, चन्दन, पुष्प, आभरण आदि भोगोंमें लुब्ध—ऐसे लिंगधारी साधुका कभी मोक्ष नहीं होता । (१९१-१९२) मिथ्यादर्शनमें निरत अज्ञानी जीव यदि विशुद्ध प्रवृत्तिके साथ तपश्चरण करे तो भी वह किंकर-देव होता है । (१९३) यदि जिनमतमें अभिरत सम्यग्दृष्टि जीव मन्दोत्साही हो तब भी सात-आठ भवोंमें वह सिद्धि प्राप्त करता है, इसमें सन्देह नहीं । (१९४) उत्साह एवं दृढ मतिवाला जो व्यक्ति शील एवं संयमसे अवश्य युक्त होता है वह दो-तीन भवोंको बिताकर सुखसे परलोक (मोक्ष) प्राप्त करता है । (१९५) भव्यजनोंमें सिंह जैसा कोई धीर तो एक भवमें ही सम्यक्त्वकी भावनासे भावति और कर्मोंकी विशुद्धि

१. •सुईसु र०—मु० । २. •रहियं कु०—प्रत्य० । ३. •सणो वीओ । इ०—मु० । ४. •सरं तह ह०—प्रत्य० ।

५. •इकामनि०—प्रत्य० । ६. वीरो—प्रत्य० ।

६८

लक्ष्मण वि जिणधम्म, बोहिं स कुट्टुम्बकदमनिहुत्तो । इन्दियसुहसाउलओ, परिहिण्डइ सो वि संसारे ॥ १९७ ॥
 एत्तो कयञ्जलिउट्टो, परिपुच्छइ राहवो मुणिवरं तं । भयवं ! किं भविओ हं ? केण उवाएण मुच्चिस्सं ? ॥ १९८ ॥
 अन्तेउरेण समयं, पुहइं मुञ्चामि उदहिपरियन्तं । लच्छीहरस्स नेहं, एकं न य उज्झिउं सत्तो ॥ १९९ ॥
 अहघणनेहजलाए, दुक्खावंचाएँ विसयसरियाए । वुज्झन्तस्स महासुणि ! हत्थालम्बं महं देहि ॥ २०० ॥
 भणिओ य मुणिवरेणं, राम ! इमं मुयसु सोयसंबन्धं । अवसेण भुञ्जियथा, बलदेवसिरी तुमे विउल ॥ २०१ ॥
 भोत्तूणं उत्तमसुहं, इह मणुयभवे सुरिन्दसमसरिंसं । सामण्णसुद्धकरणो, केवल्लणाणं पि पाविहिसि ॥ २०२ ॥
 ३एयं केवल्लिभणियं, ३सोउं हरिसाइओ य रोमञ्चइओ ।
 जाओ सुविमलहियओ, वियसियसयवत्तलोयणो य पउमाओ ॥ २०३ ॥

॥ इइ पञ्चमचरिए रामधम्मसवणविहाणं नाम दुरुत्तरसयं पव्वं समत्तं ॥

१०३. रामपुव्वभव-सीयापव्वज्जाविहाणपव्वं

विज्जाहराण राया, विभीसणो सयलभूषणं नमिउं । पुच्छइ विन्धियहियओ, माहण्यं रामदेवस्स ॥ १ ॥
 किं राहवेण सुकयं, भयवं ! समुवज्जियं परभवम्मि ? । जेणेह महारिद्धी, संपत्तो लक्खणसमग्गो ॥ २ ॥
 एयस्स पिया सीया, दण्डारण्णे ठियस्स छिहेणं । लक्काहिवेण हरिया, केण व अणुवन्धजोगेणं ? ॥ ३ ॥

करके निर्वाण प्राप्त करता है । (१९६) जिन धर्ममें बोधि प्राप्त करके जो कुटुम्बरूपी कीचड़में निमग्न और इन्द्रियोंके सुखमें लीन रहता है वह भी संसारमें भटकता रहता है । (१९७)

तब रामने हाथ जोड़कर उन मुनिवरसे पूछा कि, हे भगवन् ! क्या मैं भव्य हूँ ? किस उपायसे मैं मुक्त हो सकूँगा ? (१९८) अन्तःपुरके साथ समुद्र पर्यन्त पृथ्वीका मैं परित्याग कर सकता हूँ, पर एक लक्ष्मणके प्रेमका त्याग करनेमें मैं समर्थ नहीं हूँ । (१९९) हे महामुनि ! अत्यन्त सघन स्नेहरूपी जलसे युक्त तथा दुःखरूपी भँवरोंवाली विषय नदीमें डूबते हुए मुझे आप हाथका सहारा दें । (२००) तब मुनिवरने कहा कि, हे राम ! इस शोकसम्बन्धका परित्याग करो । बलदेवके विपुल ऐश्वर्यका तुम्हें अवश्य भोग करना पड़ेगा । (२०१) इस मानवभवमें देवोंके इन्द्र सरीखे उत्तम सुखका उपभोग करके आमण्यके विशुद्ध आचारसे सम्पन्न तुम केवल ज्ञान भी प्राप्त करोगे । (२०२) केवली द्वारा कथित यह वृत्तांत सुनकर विकसित कमलके समान नेत्रोंवाले राम हर्षित, रोमांचित और विमल हृदयवाले हुए । (२०३)

॥ पञ्चचरितमें रामके धर्म-श्रवणका विधान नामक एक सो दूसरा पर्व समाप्त हुआ ॥

१०३. रामके पूर्वभव तथा सीताकी प्रव्रज्या

विद्याधरोंके राजा विभीषणने सकलभूषण मुनिको वन्दन करके हृदयमें विस्मित हो रामका माहात्म्य पूछा । (१) हे भगवन् ! रामने परभवमें कौनसा पुण्य उपाजित किया था जिससे लक्ष्मणके साथ उन्होंने महती ऋद्धि पाई है ? (२) दण्डकारण्यमें स्थित इनकी प्रियाका किस पूर्वानुबन्धके योगसे रावणने छलपूर्वक अपहरण किया था ? (३) सर्व कलाओं

१. •चाएँ नेहसरि•—मु० । २. भोत्तूण—मु० । ३. एवं—प्रत्य० । ४. सुणिउं—प्रत्य० ।

सबकलागमकुसलो वि राहवो कह पुणो गओ मोहं ? परजुवइसिहिपयङ्को, कह जाओ रक्खसाहिवई ? ॥ ४ ॥
 विजाहराहिराया, दसाणणो अइवलो वि संगामे । कह लक्खणेण वहिओ ? एयं साहेहि मे भयवं ? ॥ ५ ॥
 अह भणिउं आइत्तो, केवलनाणी इमाण अन्नभवे । वेरं आसि विहीसण !, रावण-लच्छीहराणं तु ॥ ६ ॥
 इह जम्बुद्वीपवरे, दाहिणभरहे तहेव खेमपुरे । नयदत्त णाम सिट्ठी, तस्स सुणन्दा हवइ भज्जा ॥ ७ ॥
 पुत्तो से धणदत्तो, बीओ पुण तस्स हवइ वसुदत्तो । विप्पो उ जन्नवक्को, ताण कुमाराण मित्तो सो ॥ ८ ॥
 तथेव पुरे वणिओ, सायरदत्तो पिया य रयणाभा । तस्स सुओ गुणनाभो, धूया पुण गुणमई नामं ॥ ९ ॥
 सा अन्नया कयाई, सायरदत्तेण गुणमई कन्ना । जोवण-गुणाणुरूवा, दिन्ना धणदत्तनामस्स ॥ १० ॥
 तथेव पुरे सेट्ठी, सिरिकन्तो नाम विस्सुओ लोए । सो मग्गइ तं कन्नं, जोवण-ल्लायण्णपरिपुण्णं ॥ ११ ॥
 धणदत्तस्सऽवहरिउं, सा कन्ना तीएँ अत्थलुद्धाए । रयण्णभाएँ दिन्ना, गूढं सिरिकन्तसेट्ठिस्स ॥ १२ ॥
 नाऊण जन्नवक्को, त गुणमइसन्तिथं तु विचन्तं । साहेइ अपरिसेसं, सिग्घं वसुदत्तमित्तस्स ॥ १३ ॥
 तं सोऊणं रुट्ठो, वसुदत्तो नीलवत्थपरिहाणो । वच्चइ असिवरहत्थो, रत्तिं जत्थऽच्छए सेट्ठो ॥ १४ ॥
 दिट्ठो उज्जाणत्थो, सेट्ठो आयारिओ ठिओ समुहो । पहओ य असिवरेणं, तेण वि सो मारिओ सत्त् ॥ १५ ॥
 एवं ते दो वि जणा, अन्नोन्नं पहणिऊण कालगया । जाया विञ्जापाए, कुरङ्गया पुबदुकणं ॥ १६ ॥
 भाइमरणाऽइहुहिओ, धणदत्तो दुज्जणेहिं तं कन्नं । पडिसिद्धो य घराओ, विणिग्गओ भमइ परदेसं ॥ १७ ॥
 मिच्छत्तमोहियमई, सा कन्ना विहिवसेण मरिऊणं । तत्थुप्पन्ना हरिणो, जत्थ मया ते परिवसन्ति ॥ १८ ॥
 तीए कण्ण ते पुण, कुरङ्गया घाइऊण अन्नोन्नं । घोराडवीएँ जाया, दाढी कम्माणुभावेणं ॥ १९ ॥
 हत्थो य महिस-वसहा, पवङ्गमा दीविया पुणो हरिणा । घायन्ता अन्नोन्नं, दो वि रूळु चेव उप्पन्ना ॥ २० ॥

और आगमोंमें कुशल राम क्यों मोहवश हुए और रावण परछी रूपी अग्निमें पतिगां क्यों हुआ ? (४) विद्याधरोंका राजा दशानन अतिबली होने पर भी संग्राममें लक्ष्मण द्वारा क्यों मारा गया ? हे भगवन् ! आप मुझे यह कहें । (५) इस पर केवलज्ञानीने कहा कि, हे विभीषण ! इन रावण एवं लक्ष्मणका परभवमें वैर था । (६)

इस जम्बुद्वीपके दक्षिण-भरतक्षेत्रमें आये हुए क्षेमपुरमें नयदत्त नामका एक श्रेष्ठी रहता था । उसकी सुनन्द नामकी भार्या थी । (७) उसका एक पुत्र धनदत्त और दूसरा वसुदत्त था । याज्ञवल्क्य विप्र उन कुमारोंका मित्र था । (८) उसी नगरमें वणिक् सागरदत्त और उसकी प्रिया रत्नप्रभा रहते थे । उसे गुणनामका एक पुत्र और गुणमती नामकी एक पुत्री थी । (९) बादमें कभी सागरदत्तने यौवनगुणके अनुरूप वह गुणमती कन्या धनदत्तको दी । (१०) उसी नगरमें लोकमें विधुत श्रीकान्त नामक एक सेठ रहता था । यौवन एवं लावण्यसे परिपूर्ण उस कन्याकी उसने मँगनी की । (११) धनदत्तके यहाँसे अपहरण करके अर्धलुब्ध रत्नप्रभाने वह कन्या गुप्तरूपसे श्रीकान्त सेठको दी । (१२) गुणमती सम्बन्धी वृत्तान्त जानकर याज्ञवल्क्यने शीघ्र ही वह सारा वृत्तांत मित्र वसुदत्तसे कहा । (१३) उसे सुन क्रुद्ध वसुदत्त काले कपड़े पहनकर और हाथमें तलवार लेकर रातके समय जहाँ सेठ था वहाँ गया । (१४) उसने उद्यानमें ठहरे हुए सेठको देखा । ललकारकर वह सामने खड़ा हुआ और तलवारसे प्रहार किया । उसने भी शत्रुको मारा । (१५) इस तरह एक-दूसरे पर प्रहार करके वे दोनों मर गये और पूर्वके पापसे विन्ध्याटवीमें हरिण हुए । (१६)

भाईके मरण आदिसे दुःखित धनदत्त, दुर्जनों द्वारा उस कन्याके रोके जाने पर, घरसे निकल पड़ा और परदेशमें घूमने लगा । (१८) मिथ्यात्वसे मोहित वृद्धिवाली वह कन्या मरकर भाग्यवश वहीं उत्पन्न हुई जहाँ वे हरिण रहते थे । (१९) हाथी, भैंसे, बैल, बन्दर तथा फिर हरिण—इस तरह अन्योन्यके घात करके वे रुरु अनार्य मनुष्य) के रूपमें पैदा हुए । (२०)

१. साहेति—प्रत्य० । २. अह भाणिउं पयत्तो—सु० । ३. दत्तो नाम धर्मी, तं—सु० । ४. विप्पो य जणवक्को होइ कु०—प्रत्य० । ५. अह अन्नया—प्रत्य० । ६. ०या । उप्पइया विञ्जाए—प्रत्य० ।

सलिले थले य पुणरवि, पुबं ददवद्धवेरसंपण्णा । उप्पज्जन्ति मरन्ति य, घायन्ता चेव अन्नोन्नं ॥ २१ ॥
 अह सो भाइविओगे, धणदत्तो वसुमइं परिभमन्तो । तण्हाकिलामियज्जो, रत्ति समणासमं पत्तो ॥ २२ ॥
 सो भणइ मुणिवरे ते, देह महं पाणियं सुतिसियस्स । सयलजगज्जीवहिया, अहियं धम्मप्पिया तुवमे ॥ २३ ॥
 तं एक्को भणइ मुणी, संथाविन्तो य महुरवयणेहिं । अमयं पि न पायबं, भइ ! तुमे किं पुणो सलिलं ॥ २४ ॥
 मच्छी-कीड-पयज्जा, केसा अन्नं पि बं असुज्झं तं । भुज्जन्तएण रत्ति, तं सबं भविल्लयं नवरं ॥ २५ ॥
 अत्थमिए दिवसयरे, जो भुज्जइ मूढभावदोसेणं । सो चउगइविस्थिण्णं, संसारं भमइ पुणरुत्तं ॥ २६ ॥
 लिङ्गी व अलिङ्गी वा, जो भुज्जइ सबरीसु रसगिद्धो । सो न य सोगइगमणं, पावइ अचरित्तदोसेणं ॥ २७ ॥
 जे सबरीसु पुरिसा, भुज्जन्तिह सीलसंजमविहूणा । महु-मज्ज-मंसनिरया, ते जन्ति मया महानरयं ॥ २८ ॥
 हीणकुलसंभवा वि हु, पुरिसा उच्छन्नदार-धण-सयणा । परपेसणाणुकारी, जे मुत्ता रयणिसमयम्मि ॥ २९ ॥
 करचरणफुट्टकेसा, बीभच्छा दूहवा दरिदा य । तण-दारुज्जीविया ते, जेहि य मुत्तं वियालम्मि ॥ ३० ॥
 जे पुण जिणवरधम्मं, घेतुं महु-मंस-मज्जविरइं च । न कुणन्ति राइभत्तं, ते हुन्ति सुरा महिद्धीया ॥ ३१ ॥
 ते तत्थ वरविमाणे, देवीसयपरिमिया विसयसोक्खं । भुंजन्ति दीहकालं, अच्छरसुग्गीयमाहप्पा ॥ ३२ ॥
 चइऊण इहायाया, नरवइवंसेसु खायकित्तोसु । उवभुज्जिऊण सोक्खं, पुणरवि पावन्ति सुरसरिसं ॥ ३३ ॥
 पुणरवि जिणवरधम्मे, बोहिं लहिऊण गहियवय-नियमा । काऊण तवमुयारं, पाविति सिवालयं वीरा ॥ ३४ ॥
 अइआउरेण वि तुमे, भइ ! वियाले न चेव भोत्तबं । मंसं पि वज्जियबं, आमूलं सबदुक्खाणं ॥ ३५ ॥

मज्जबूतीसे बाँचे हुए वैर-संपन्न होकर वे जलमें और स्थलमें पुनः पुनः उत्पन्न होते थे और एक-दूसरेका घात करते हुए मरते थे । (२१)

उधर भाई के वियोगमें पृथ्वी पर परिभ्रमण करता हुआ वह धनदत्त तृष्णासे क्लान्त शरीरवाला होकर रातके समय श्रमगोके आश्रममें जा पहुँचा । (२२) उसने उन मुनिवरोसे कहा कि आप समग्र जगत्के जीवोंके हितकारी और धर्मप्रिय हैं । खूब प्यासे मुझको आप जल दें । (२३) मधुर वचनोंसे शान्त करते हुए एक मुनिने उसे कहा कि, हे भद्र ! रातके समय अमृत भी नहीं पिखना चाहिए, फिर पानी की तो क्या बात ? (२४) मर्कटा, कीड़े, पतंगे, बाल तथा दूसरा भी जो दिखाई नहीं देता वह सब रातमें भोजन करनेवाले मनुष्यने अवश्य ही खाया है । (२५) सूर्यके अस्त होने पर जो मूर्खतावश खाता है वह चारों गतियोंमें फँसे हुए संसारमें धारम्बार भटकता है । (२६) लिंगी या अलिंगी जो रसमें गृद्ध हो रातके समय खाता है वह अचारित्रके दोषके कारण सद्गतिमें नहीं जाता । (२७) शील एवं संयमसे हीन तथा मधु, मद्य एवं मांसमें निरत जो पुरुष इसलोकमें रातके समय भोजन करते हैं वे मरकर महानरकमें जाते हैं । (२८) जो मनुष्य रातके समय खाते हैं वे हीन कुलमें उत्पन्न होने पर भी पत्नी, धन एवं स्वजनोंसे रहित हो दूसरेकी नौकरी करते हैं । (२९) जो असमयमें खाते हैं वे टूटे हुए हाथ-पैर और बालों वाले, बीभत्स, कुरूप, दरिद्र एवं घाल-लकड़ी पर जीवन गुजारनेवाले होते हैं । (३०) और जो जिनवरके धर्मको ग्रहणकर मधु, मांस और मद्यसे विरत होते हैं तथा रात्रिभोजन नहीं करते वे भारी ऋद्धिवाले देव होते हैं । (३१) अप्सराओं द्वारा जिनका माहात्म्य गाया जाता है ऐसे वे यहाँ उत्तम विमानमें सैकड़ों देवियोंसे विरकर दीर्घकाल पर्यन्त विषयमुखका उपभोग करते हैं । (३२) वहाँसे च्युत होकर यहाँ आये हुए वे ख्यातकीर्ति वाले राजकुलोंमें उत्पन्न होकर पुनः देवसदृश सुखका उपभोग करते हैं । (३३) पुनः जिनवरके धर्ममें बोधि प्राप्त करके ब्रत नियमोंको धारण करनेवाले वे वीर उदार तप करके मोक्ष प्राप्त करते हैं । (३४) हे भद्र ! अत्यन्त आतुर होने पर भी तुम्हें असमयमें नहीं खाना चाहिए और सब दुःखोंके मूल रूप मांसका भी त्याग करना चाहिए । (३५)

१. ०रसंवदा । उ०—मु० । २. ०गर्जावहियया—प्रत्य० । ३. इहं आया—प्रत्य० । ४. धीरा—प्रत्य० ।

तं साहवस्स वयणं, सुणिऊणं सावओ तओ जाओ । कालाओ उववओ, सोहम्मे सिरिघरो देवो ॥ ३६ ॥
 सो हार-कडय-कुण्डल-मउडालंकारभूसियसरीरो । सुरगणियामज्झगओ, सुज्झइ भोगे सुरिन्दो व ॥ ३७ ॥
 अह सो चुओ समाणो, महापुरे धारिणीए मेरुणं । सेट्ठीण तओ जाओ, नियपउमरुहं ति नामेणं ॥ ३८ ॥
 तस्स पुरस्साहिवई, छत्तच्छाउ ति नाम नरवसभो । भज्जा से सिरिकन्ता, सिरि व सा रूवसारेणं ॥ ३९ ॥
 अह अज्जाया कयाई, गोट्टं गच्छन्तएण जरवसभो । दिट्ठो पउमरुईणं, निच्छेट्ठो महियल्लथो सो ॥ ४० ॥
 अह सो तुरङ्गमाओ, ओयरिउं तस्स देइ कारुणिओ । पञ्चनमोकारमिणं, मुयइ सरीरं तओ जीवो ॥ ४१ ॥
 सो तस्स पहावेणं, सिरिकन्ताए य कुच्छिसंभूओ । छत्तच्छायस्स सुओ, वसहो वसहद्वओ नामं ॥ ४२ ॥
 अह सो कुमारलोलं, अणुहवमाणो गओ तमुद्देसं । जत्थ मओ जरवसभो, जाओ जाईसरो ताहे ॥ ४३ ॥
 सी-उण्ह-उहा-तण्हा-बन्धण-वहणाइयं वसहदुक्खं । सुमरइ तं च कुमारो, पञ्चनमोकारदायारं ॥ ४४ ॥
 उप्पन्नबोहिलाभो, कारावेऊणं जिणहरं तुज्जं । ठावेइ तत्थ बालो, णियंअणुहुयचित्थियं पढयं ॥ ४५ ॥
 भणइ य निययमणुस्सा, इमस्स चित्तस्स जो उ परमत्थं । जणिहिइ निच्छएणं, तं मज्झ कहिज्जाह तुरन्ता ॥ ४६ ॥
 अह वन्दणाहिलासी, पउमरुई तं जिणालयं पत्तो । अभिवन्दिऊणं पेच्छइ, तं चित्तपडं विविहवण्णं ॥ ४७ ॥
 जाव य निवद्धदिट्ठी, तं पउमरुई निणइ चित्तपडं । ताव पुरिसेहि गन्तुं, सिट्ठं चिय रायपुत्तस्स ॥ ४८ ॥
 सो मत्तगयारुद्धो, तं जिणभवणं गओ महिद्धीओ । ओयरियं गयवराओ, पउमरुई पणमइ पहट्ठो ॥ ४९ ॥
 चलणेषु निवडमाणं, रायसुत्थं वारिऊणं पउमरुई । साहेइ निरवसेसं, तं गोदुक्खं बहुकिलेसं ॥ ५० ॥
 तो भणइ रायपुत्तो, सो हं वसहो तुह प्पसाएणं । जाओ नरवइपुत्तो, पत्तो य महागुणं रज्जं ॥ ५१ ॥

साधुका यह कथन सुनकर वह श्रावक हुआ और मरने पर सौधर्म देवलोकमें कान्तिधारी देव हुआ । (३६) हार, कटक, कुण्डल, मुकुट और अलंकारोंसे विभूषित शरीरवाला वह देव-गणिकाओंके बीच रहकर इन्द्रकी भौति भोगोंका उपभोग करने लगा । (३७) वहाँसे च्युत होने पर वह महापुरमें मेरु सेठकी धारणी पत्नीसे जिनपद्मरुचिके नामसे उत्पन्न हुआ । (३८) उस नगरका स्वामी छत्रच्छाय नामक राजा था । उसकी रूपमें लक्ष्मीके समान श्रीकान्ता नामकी भार्या थी । (३९) एक दिन गोशालाकी ओर जाते हुए पद्मरुचिने जमीन पर बैठे हुए एक बूढ़े बैल को देखा । (४०) घोड़े परसे नीचे उतर कर कारुणिक उसने उसे पंचनमस्कार मंत्र दिया । तब उसके जीवने शरीर छोड़ा । (४१) उसके प्रभावसे वह बैल छत्रच्छायका श्रीकान्ताकी कोखसे उत्पन्न वृषभध्वज नामका पुत्र हुआ । (४२)

कुमारकी लीलाका अनुभव करता हुआ वह उस स्थान पर गया जहाँ बूढ़ा बैल मर गया था । तब उसे जातिस्मरण ज्ञान हुआ । (४३) उसने शीत, उष्ण, क्षुधा, पिपासा, बन्धन, वध आदि बैलके दुःखको तथा उस पंचनमस्कारके देनेवालेको याद किया । (४४) सम्यग्ज्ञान प्राप्त किये हुए बालकने एक ऊँचा जिनमन्दिर बनवाया और उसमें अपने अनुभूतसे चित्रित एक पट स्थापित किया । (४५) और अपने आदमियोंसे कहा कि, जो इस चित्रका परमार्थ निश्चयपूर्वक जानता हो उसके बारेमें मुझे फौरन आकर कहो । (४६)

एकदिन वन्दनकी इच्छावाला पद्मरुचि उस जिनालयमें आया । वन्दन करके विविध वर्णोंसे युक्त उस चित्रपटको उसने देखा । (४७) जब आँखें गाढ़कर पद्मरुचि उस चित्रपटको देखने लगा तब आदमियोंने जाकर राजपुत्रसे कहा । (४८) मत्त हाथी पर आरुढ़ वह बड़े भारी ऐश्वर्यके साथ उस जिनमन्दिरमें गया । आनन्दमें आये हुए उसने हाथी परसे उतरकर पद्मरुचिको प्रणाम किया । (४९) पैरोंमें गिरते हुए राजकुमारको रोककर पद्मरुचिने अत्यन्त पीड़ासे युक्त उस बैलके दुःखके बारेमें सब कुछ कहा । (५०) तब राजकुमारने कहा कि मैं वह बैल हूँ । आपके अनुग्रहसे राजाका पुत्र हुआ हूँ और

१. सिट्ठीतणओ जाओ—प्रत्य० । २. ओयरियं तं—प्रत्य० । ३. निययभवचित्थियं—मु० ।

तं चिय न कुणइ माया, नेय पिया नेव बन्धवा सबे । जं कुणइ सुप्पसन्नो, समाहिमरणस्स दायारो ॥ ५२ ॥
 अह भणइ तं कुमारो, भुञ्जसु रज्जं इमं निरवसेसं । पउमरुइ ! निच्छएणं, मज्झ वि आणं तुमं देन्तो ॥ ५३ ॥
 एवं ते दो वि जणा, परमिद्धिजुया सुसावया जाया । देवगुरुपूयणरया, उत्तमसम्मत्तदढभावा ॥ ५४ ॥
 वसहद्वओ कयाई, समाहिचहुलं च पाविउं मरणं । उववन्नो ईसाणे, देवो दिबेण रूवेणं ॥ ५५ ॥
 पउमरुई वि समाहीमरणं लद्धंण सुचरियगुणेणं । तत्थेव^१ य ईसाणे, महिद्धिओ सुरवरो जाओ ॥ ५६ ॥
 तं अमरपवरसोक्खं, भोत्तण चिरं तओ चुयसमाणो । मेरुस्स अवरभाए, वेयद्वे पवए रम्भे ॥ ५७ ॥
 नयरे नन्दावत्ते, कणयाभाकुच्छिसंभवो जाओ । नन्दीसरस्स पुत्तो, नयणाणन्दो त्ति नामेणं ॥ ५८ ॥
 भोत्तण^३ खेरिदिं, पवज्जमुवागओ य निग्गन्थो । चरिय तवं कालगओ, माहिन्दे सुरवरो जाओ ॥ ५९ ॥
 पञ्चिन्दियाभिरामे, तत्थ वि भोगे कमेण भोत्तणं । चइओ खेमपुरीए, पुबविदेहे सुरम्माए ॥ ६० ॥
 सो विउलवाहणसुओ, जाओ पउमावईए देवीए । सिरिचन्दो त्ति कुमारो, जोबण-लयण्ण-गुणपुण्णो ॥ ६१ ॥
 कन्ताहिं परिमिओ सो, भुञ्जन्तो उत्तमं विसयसोक्खं । न य जाणइ वच्चन्तं, कालं दोगुन्दुओ चेव ॥ ६२ ॥
 अह अन्नया मुणिन्दो, समाहिगुत्तो ससङ्खपरिवारो । पुहई च विहरमाणो, तं चेव पुंरिं समणुपत्तो ॥ ६३ ॥
 सोऊण मुणिवरं तं, उज्जाणे आगयं पुहइवालो । वच्चइ तस्स सयासं, नरवइचक्केण समसहिओ ॥ ६४ ॥
 दट्टण साहवं तं, अवइण्णो गयवराओ सिरिचन्दो । पणमइ पहट्टमणसो, समाहिगुत्तं सपरिवारो ॥ ६५ ॥
 कयसंथवो निविट्ठो, दिन्नासीसो समं नरिन्देहिं । राया पुच्छइ धम्मं, कहेइ साहू वि संखेवं ॥ ६६ ॥
 जीवो अणाइकालं, हिण्डन्तो बहुविहासु जोणीसु । दुक्खेहिं माणुसत्तं, पावइ कम्माणुभावेणं ॥ ६७ ॥

अति समृद्ध राज्य मैने पाया है । (५१) न तो माता, न पिता और न सब बन्धुजन बह कर सकते हैं जो सुप्रसन्न और समाधिमरणका दाता कर सकता है । (५२)

कुमारने उससे कहा कि, हे पद्मारुचि ! मुझे भी आज्ञा देते हुए आप इस समस्त राज्यका उपभोग करो । (५३) इस तरह वे दोनों व्यक्ति देव एवं गुरुके पूजनमें रत, सम्यक्त्वसे युक्त उत्तम दृढ़ भाववाले तथा उत्कृष्ट ऋद्धिवाले सुश्रावक हुए । (५१) कभी समाधिसे युक्त मरण पाकर वृषभध्वज ईशान देवलोकमें दिव्य रूपसे सम्पन्न देव हुआ । (५५) पद्मारुचि भी समाधिमरण पाकर सदाचारके प्रभावसे उसी ईशान देवलोकमें बड़ी भारी ऋद्धिवाला देव हुआ । (५६) देवोंके उस उत्तम सुखका चिरकाल तक उपभोग करनेके बाद च्युत होनेपर वह मेरुके पश्चिम भागमें आये हुए सुन्दर वैताढ्य पर्वतके ऊपर नन्द्यावर्त नगरमें नन्दीश्वरकी कनकाभाकी कुक्षिसे उत्पन्न नयनानन्द नामका पुत्र हुआ । (५७-५८) विद्याधरकी ऋद्धिका उपभोग करके निर्मन्थ उसने प्रज्ज्या ली । तप करके मरने पर वह माहेन्द्र लोकमें उत्तम देव हुआ । (५९) वहाँ पाचों इन्द्रियोंके लिए सुखकर भोगोंका उपभोग करके च्युत होनेपर वह पूर्व विदेहमें आई हुई सुरभ्य क्षेमपुरीमें विमल वाहनकी पद्मावती देवीसे श्रीचन्द्र कुमार नामके यौवन एवं लावण्य गुणोंसे पूर्ण पुत्रके रूपमें उत्पन्न हुआ । (६०-६१) पत्नियोंसे घिरा हुआ वह दोगुन्दक देवकी भौंति उत्तम विषयसुखका उपभोग करता हुआ समय कैसे बीतता है यह नहीं जानता था । (६२)

एक दिन पृथ्वी पर विहार करते हुए समाधिगुप्त नामके मुनिवर संघ और परिवारके साथ उसी पुरीमें पधारे । (६३) उद्यानमें आये हुए उन मुनिवरके बारेमें सुनकर राजसमूहके साथ राजा उनके पास गया । (६४) उस साधुको देखकर श्रीचन्द्र हाथी परसे नीचे उतरा और मनमें प्रसन्न हो परिवारके साथ समाधिगुप्त मुनिको प्रणाम किया । (६५) स्तुति करके वह बैठा । नरेन्द्रोंके साथ आशीर्वाद दिये गये राजाने धर्मके बारेमें पूछा । साधुने संक्षेपसे कहा कि—

अनादि कालसे नानाविध योनियोंमें परिभ्रमण करता हुआ जीव कर्मके फलस्वरूप मुदिकलसे मनुष्य जन्म प्राप्त करता है । (६६-६७) मानव जन्म प्राप्त करके भी विषयसुखकी पीड़ासे लोलुप मूर्ख मनुष्य अपनी स्त्रीके स्नेहसे नाचता हुआ

१. नेय व० — प्रत्य० । २. उव उ ई० — मु० । ३. ण खयरिदिं — मु० । ४. यवपडिपुत्तो — प्रत्य० । ५. पुरं स० — मु० ।

पत्तो वि माणुसत्तं, विसयसुहासायलोलुओ मूढो । सकलत्तनेहनडिओ, न कुणइ जिणदेसियं धम्मं ॥ ६८ ॥
 इन्द्रधनु-फेण-बुब्बुय-संज्ञासरिसोवमे मणुयजम्मे । जो न कुणइ जिणधम्मं, सो हु मओ वच्चए नरयं ॥ ६९ ॥
 होइ महावेयणियं, नरए हण-दहण-छिन्दणाईयं । जीवस्स सुइरकालं, निमिसं पि अलद्धसुहसायं ॥ ७० ॥
 तिरियाण दमण-बन्धण-ताडण-तण्हा-सुहाइयं दुक्खं । उप्पज्जइ मणुयाण वि, बहुरोगविओगसोगकर्यं ॥ ७१ ॥
 भोत्तण वि सुरलोए, विसयसुहं उत्तमं चवणकाले । अणुहवइ महादुक्खं, जीवो संसारवासत्थो ॥ ७२ ॥
 जह इन्धणेसु अग्गी, न य तिप्पइ न य जलेसु वि समुदो । तह जीवो न य तिप्पइ, विउलेसु वि कामभोगेसु ॥ ७३ ॥
 जो पवरसुरसुहेसु वि, न य तित्ति उवगओ खलो जीवो । सो कह तिप्पइ इण्हि, माणुसभोगेसु तुच्छेसु ॥ ७४ ॥
 तम्हा नाऊण इमं, सुमिणसमं अद्घुवं चलं जीयं । नरवइ ! करेहि धम्मं, जिणविहियं दुक्खमोक्खट्ठे ॥ ७५ ॥
 सायार-निरायारं, धम्मं जिणदेसियं विउपसत्थं । सायारं गिहवासी, कुणन्ति साहू निरायारं ॥ ७६ ॥
 हिंसा-उल्लिय-चोरिका-परदार-परिग्गहस्स य नियत्ती । एयाई सावयाणं, अणुवयाई तु भणियाई ॥ ७७ ॥
 एयाई चैव पुणो, महवयाई हवन्ति समणारणं । बहुपज्जयाई नरवइ !, संसारसमुद्धतरणाई ॥ ७८ ॥
 सावयधम्मं काऊण निच्छिओ ल्हइ सुरवरमहिद्धिं । समणो पुण घोरतवो, पावइ सिद्धिं न संदेहो ॥ ७९ ॥
 दुविहो वि तुज्झ सिट्ठो, धम्मो अणुओ तहेव उक्कोसो । एयाणं एक्यरं, गेण्हसु य ससत्तिजोगेणं ॥ ८० ॥
 तं मुणिवरस्स वयणं, सिरिचन्दो निसुणिऊण परितुट्ठो । तो देइ निययरज्जं, सुयस्स धिइकन्तनामस्स ॥ ८१ ॥
 मोत्तण पणइणिजणं, रुयमाणं महुरमञ्जुलपलावं । सिरिचन्दो पवइओ, पासम्मि समाहिगुत्तस्स ॥ ८२ ॥
 उत्तमवयसंजुत्तो, तिनोगधारी विसुद्धसम्मत्तो । चारित्त-नाण-इंसण-तव-नियमविभूसियसरीरो ॥ ८३ ॥

जिनेश्वरप्रोक्त धर्मका आचरण नहीं करता । (६८) इन्द्रधनुष, फेन, बुद्बुद और सन्ध्या तुल्य क्षणिक मानवजन्ममें जो जिनधर्मका पालन नहीं करता वह मरकर नरकमें जाता है । (६९) नरकमें निमिष भरके लिए सुख शान्ति प्राप्त न करके सुचिर काल पर्यन्त जीवको वध दहन, छेदन आदि अत्यन्त दुःख भेलना पड़ता है । (७०) तिर्यकोंको दमन, बन्धन, ताड़न, तृषा, क्षुधा आदि दुःख होता है । मनुष्योंको भी अनेक प्रकारके रोग, वियोग एवं शोकजन्य दुःख उत्पन्न होते हैं । (७१) देवलोकमें उत्तम विषयसुखका उपभोग करके च्यवनके समय संसारमें रहा हुआ जीव महादुःख अनुभव करता है । (७२) जित तरह ईधनसे आग और जलसे समुद्र तृप्त नहीं होता उसी तरह विपुत्र कामभोगोंसे भी जीव तृप्त नहीं होता । (७३) जो दुष्ट जीवके उत्तम सुखोंसे तृप्त न हुआ वह यहाँ तुच्छ मानवभोगोंसे कैसे तृप्त हो सकता है ? (७४) अतएव हे राजन् ! स्वप्नसदृश, क्षणिक एवं चंचल इस जीवनको जानकर दुःखके विनाशके लिए जिनविहित धर्मका आचरण करो । (७५)

विद्वानों द्वारा प्रशंसित जिन-प्रोक्त धर्म सागर और अनगरके भेदसे दो प्रकारका है । गृहस्थ सागरधर्मका और साधु अनगरधर्मका पालन करते हैं । (७६) हिंसा, झूठ, चोरी, परदार एवं परिग्रहसे निवृत्ति -- ये श्रावकोंके अणुव्रत कहे गये हैं । (७७) हे नरपति ! अनेक भेदोंवाले तथा संसार-समुद्रसे पार उतारनेवाले ये ही श्रमणोंके महाव्रत होते हैं । (७८) श्रावकधर्मका पालन करके मनुष्य अवश्य ही देवोंकी महती ऋद्धि प्राप्त करता है और घोर तप करनेवाला श्रमण मोक्ष पाता है, इसमें सन्देह नहीं । (७९) मैंने तुम्हें अणु और उत्कृष्ट दो प्रकारका धर्म कहा । अपनी शक्तिके अनुसार इनमेंसे कोई एक तुम ग्रहण करो । (८०)

मुनिवरका ऐसा उपदेश सुनकर अत्यन्त हर्षित श्रीचन्द्रने अपना राज्य धृतिकान्त नामक पुत्रको दे दिया । (८१) रोती और मधुर मञ्जुल प्रलाप करती युवतियोंका त्याग करके श्रीचन्द्रने समाधिगुप्त मुनिके पास दीक्षा ली । (८२) उत्तम व्रतसे युक्त, मन-वचन-कायाके निग्रहरूप तीन प्रकारके योगको धारण करनेवाला, चारित्र्य, ज्ञान, दर्शन, तप एवं नियमसे

सज्जाय-ज्ञाननिरओ, जिह्न्दओ समिइ-गुत्तिसंजुत्तो । सत्तभयविप्पमुक्को, सए वि देहे निरवयक्खो ॥ ८४ ॥
छट्ट-ऽट्टमाइएहिं, जेमन्तो मासखमणजोगेहिं । विहरइ मुणी महप्पा, कुणमाणो जज्जरं कम्मं ॥ ८५ ॥
एवं भावियकरणो, सिरिचन्दो दढसमाहिसंजुत्तो । कालगओ उच्चन्नो, इन्दो सो वम्भलोगम्मि ॥ ८६ ॥
तत्थ विमाणे परमे, चूडामणिमउडकुण्डलभरणो । 'सिरि-कित्तिलच्छिनिलओ, निदाहरविसन्निभसरीरो ॥ ८७ ॥
मणनयणहारिणीहिं, देवीहिं परिमिओ महिद्धीओ । भुज्जइ विसयसुहं सो, सुराहिवो वम्भलोगत्थो ॥ ८८ ॥
एवं सो धणदत्तो, तुज्ज विहीसण^१ ! कमेण परिकहिओ । संपइ साहेमि फुडं, पगयं वसुदत्तसेट्ठीणं ॥ ८९ ॥
नयरे मिणालकुण्डे, परिवसइ नराहिवो विजयसेणो । नामेण रयणचूला, तस्स गुणालंक्रिया भज्जा ॥ ९० ॥
पुत्तो य वज्जकंचू, तस्स वि महिल्या पिया उ हेमवई । तीए सो सिरिकन्तो, जाओ पुत्तो अह सयंभू ॥ ९१ ॥
जिणसासणाणुरत्तो, पुरोहिओ^२ तस्स होइ सिरिभूई । तस्स वि गुणाणुरूवा, सरस्सई नाम वरमहिला ॥ ९२ ॥
जा आसि गुणमई सा, भमिउं नाणाविहासु जोणोसु । इत्थी सकम्मनडिया, उप्पन्ना गयवहू रणो ॥ ९३ ॥
मन्दाइणीएँ पङ्के, तीएँ निमग्गाए जीयसेसाए । अह देइ कण्णजावं, तरङ्गवेगो गयणगामी ॥ ९४ ॥
तत्तो सा कालगया, सरस्सईकुच्छिसंभवा जाया । वेगवई वरकन्ना, दुहिया सिरिभूइविप्पस्स ॥ ९५ ॥
अह सा कयाइ गेहे, साहुं भिक्खागयं उवहसन्ती । पियरेण वारिया निच्छएण तो साविया जाया ॥ ९६ ॥
अइरूविणीएँ तीएँ, कण्ण उक्कण्ठिया पुहइपाला । जाया मयणावत्था, सबे वि सयंभुमादीया ॥ ९७ ॥
जइ वि य कुवेरसरिसो, मिच्छादिट्ठी नरो हवइ लोए । तह वि य तस्स कुमारी, न देमि तो भणइ सिरिभूई ॥ ९८ ॥

विभूषित शरीरवाला, स्वाध्याय व ध्यानमें निरत, जितेन्द्रिय, समिति और गुप्तिसे युक्त, इहलोकभय, परलोकभय आदि सात-
जयसे मुक्त, अपनी देहमें भी अनासक्त, वेले, तले आदि तथा मासक्षमण (लगातार एक महीनेका उपवास) के योगके
वाद भोजन करनेवाला वह महात्मा मुनि कर्मको जर्जरित करता हुआ विहार करने लगा । (८३-८५) इस तरह शुद्ध
आचारवाला तथा दृढ़ समाधिसे युक्त श्रीचन्द्र मरकर ब्रह्मलोकमें इन्द्रके रूपमें उत्पन्न हुआ । (८६) उस उत्तम विमानमें
चूडामणि, कुण्डल एवं आभरणोंसे सम्पन्न, श्री, कीर्ति एवं लक्ष्मीका धामरूप, प्रोष्मकालीन सूर्यके जैसा शरीरवाला वह
ब्रह्मलोकस्थ महिन्द्रिक इन्द्र मन और आँखोंको आनन्द देनेवाली देवियोंसे विरहर विषयसुखका अनुभव करता था । (८७-८८)

हे विभीषण ! इस तरह धनदत्तके बारेमें मैंने क्रमशः तुमसे कहा । अब मैं वासुदेव श्रेष्ठीका वृत्तान्त स्फुट
रूपसे कहता हूँ । (८९) मृणालकुण्ड नगरमें विजयसेन राजा रहता था । गुणोंसे अलंकृत रत्नचूड़ा नामकी उसकी भार्या
थी । (९०) पुत्र वज्रकंचुक और उसकी प्रिय पत्नी हेमवती थी । वह श्रीकान्त उससे स्वयम्भू नामक पुत्रके रूपमें उत्पन्न
हुआ । (९१) उसका जिनशासनमें अनुरक्त श्रीभूति नामका एक पुरोहित था । उसके भी सरस्वती नामकी गुणानुरूप
उत्तम स्त्री थी । (९२) जो गुणमती स्त्री थी वह नानाविध योनियोंमें भ्रमण करके अपने कर्मोंसे दुःखी हो अरण्यमें एक
दृथनीके रूपमें पैदा हुई । (९३) मन्दाकिनीके कीचड़में निमग्न उसके जब प्राग निकलने वाली थे तब गगनगामी तरंगवेगने
कानोंमें नमस्कारमंत्रका जाप किया । (९४) वहाँसे मरने पर सरस्वतीकी कुक्षिसे उत्पन्न वेदवती नामकी वह उत्तम कन्या
श्रीभूति ब्राह्मणकी पुत्री हुई । (९५)

किसी समय भिक्षाके लिए घरमें आये हुए साधुओंका उपहास करनेवाली उसे पिताने रोका । तब वह निश्चयसे
श्राविका हुई । (९६) उस रूपवतीके लिए उत्कण्ठित स्वयम्भू आदि सभी राजा कामातुर हुए । (९७) भले ही लोकमें
कुवेर जैसा हो, पर यदि वह मिथ्यादृष्टि होगा तो मैं उसे लड़की नहीं दूँगा, ऐसा श्रीभूतिने कहा । (९८) इस पर रुष्ट

१. सिरि-कन्तिल०—मु० । २. ञ मए वि परि०—प्रत्य० । ३. ओ हवइ तस्स सिरि—प्रत्य० ।

रुद्रो सयंभुराया, सिरिभूदं मारिऊण वेगवई । आयडुइ रयणीए, पुणो वि अवगूहइ रुयन्ती ॥ ९९ ॥
 कलुणाई विलवमाणी, नेच्छन्ती चेव सबलकारेणं । रमिया वेगवई सा, सयंभुणा मयणमूढेणं ॥ १०० ॥
 रुद्रा भणइ तओ सा, पियरं वहिऊण जं तुमे रमिया । उप्पज्जेज्ज वहत्थे, पुरिसाहम ! तुज्ज परलोए ॥ १०१ ॥
 अरिक्कन्ताए सयासे, वेगवई दिक्खिया समियपावा । जाया संवेगमणा, कुणइ तवं बारसवियप्पं ॥ १०२ ॥
 घोरं तवोविहाणं, काऊण मया समाहिणा ततो । बम्भविमाणे, देवी जाया अइल्लियरूवा सा ॥ १०३ ॥
 मिच्छाभावियकरणो, तत्थ सयंभू वि कालधम्मेणं । संजुत्तो^३ परिहिण्डइ, नरय-तिरिक्खासु जोणीसु ॥ १०४ ॥
 कम्मस्स उवसमेणं, जाओ उ कुसद्वयस्स विप्पस्स । पुत्तो सावित्तीए, पभासकुन्दो त्ति नामेणं ॥ १०५ ॥
 अह सो पभासकुन्दो, मुणिस्स पासम्मि विजयसेणस्स । निग्गन्थो पवइओ, परिचत्तपरिग्गाहारम्भो ॥ १०६ ॥
 रइरागरोसरहिओ, बहुगुणधारी जिइन्दिओ धीरो । छट्ट-उट्टम-दसमाइसु, भुज्जन्तो कुणइ तवकम्मं ॥ १०७ ॥
 एवं तवोधरो सो, सम्मेयं वन्दणाए वचन्तो । कणगप्पहस्स इड्डी, पेच्छइ विज्जाहरिन्दस्स ॥ १०८ ॥
 अह सो कुणइ नियाणं, होउ मई ताव सिद्धिसोक्खेणं । भुज्जामि खेयरिद्धिं, तवस्स जइ अत्थि माहप्पं ॥ १०९ ॥
 पेच्छह भो ! मूढत्तं, मुणीण सनियाणदूसियतवेणं । रयणं तु पुहइमोल्लं, दिन्नं चिय सागमुट्टोए ॥ ११० ॥
 छेत्तूण य कप्पूरं, कुणइ वई कोहवस्स सो मूढो । आचुण्णिऊण रयणं, अविसेसो गेण्हए दोरं ॥ १११ ॥
 दहिऊण य गोसीसं, गेण्हइ छारं तु सो अबुद्धीओ । जो चरिय तवं घोरं, मरइ य सनियाणमरणेणं ॥ ११२ ॥
 अह सो नियाणदूसियहियओ महयं पि करिय तवचरणं । कालगओ उववन्नो, देवो उ सणंकुमारम्मि ॥ ११३ ॥
 तत्तो जुओ समाणो, जाओ चिय केक्कीसीए गब्भम्मि । रयणासवस्स पुत्तो, विक्खाओ रावणो नामं ॥ ११४ ॥
 जं एरिसी अवत्था, हवइ मुणीणं पि दूमियमणाणं । सेसाण किं च भण्णइ, वय-गुण-तव-सीलरहियाणं ? ॥ ११५ ॥

स्वयम्भू राजा रातके समय श्रीभूतिको मारकर वेगवतीको ले गया और रोती हुई उसका आलिंगन किया। (९९) कश्यप विलाप करती हुई और न चाहनेवाली वेगवतीके ऊपर कामसे मूढ़ स्वयम्भूने बलात्कार किया। (१००) रुद्र उसने कहा कि हे अधम पुरुष ! पिताको मारकर तुमने जो रमण किया है उससे परलोकमें तुम्हारे वधके लिए मैं उत्पन्न हूँगा। (१०१) बादमें शमित पापशाली वेगवतीने अरिक्कन्ताके पास दीक्षा ली और मनमें वैराग्ययुक्त होकर बारह प्रकारका तप किया। (१०२) घोर तप करके समाधिपूर्वक मरने पर वह ब्रह्मविमानमें अत्यन्त सुन्दर रूपवाली देवी हुई। (१०३)

मिथ्यात्वसे भावित अन्तःकरणवाला स्वयम्भू भी कालधर्मसे युक्त हो नरक-तिर्यच आदि योनियोंमें परिभ्रमण करने लगा। (१०४) कर्मके उपशमके कारण वह कुशध्वज ब्राह्मणका सावित्रीसे उत्पन्न प्रभासकुन्द नामका पुत्र हुआ। (१०५) रति एवं राग-द्वेषसे रहित, बहुत-से गुणोंको धारण करनेवाला, जितेन्द्रिय और धार वह बेला, तेला, चौरा आदिके बाद भोजन करके तप करने लगा। (१०६-७) ऐसे उस तपस्वीने सम्मेतशिखरकी ओर जाते हुए विद्याधरराज कनकप्रभकी ऋद्धि देखी। (१०८) तब उसने निदान (संकल्प) किया कि मोक्षके सुखले मुझे प्रयोजन नहीं है। तप का यदि माहात्म्य है तो खेचरोंकी ऋद्धिका मैं उपभोग करूँ। (१०९) निदानसे तपको दूषित करनेवाले मुनिकी मूर्खताको तो देखो ! पृथ्वी जितने मूल्य का रत्न उसने मुट्टी भर सागके लिए दे दिया। (११०) जो तपश्रवण करके निदानयुक्त मरणसे मरता है वह मूर्ख मानो कपूरके पेड़को काटकर कोदोंकी खेती करना चाहता है, रत्नको पीसकर वह अविषेकी डोरा लेना चाहता है, वह अज्ञानी गोशीर्षचन्दनको जलाकर उसकी राख ग्रहण करता है। (१११-११२) निदानसे दूषित हृदयवाला वह बड़ा भारी तप करके मरने पर सनत्कुमार देवलोकमें देवरूपसे उत्पन्न हुआ। (११३) वहाँसे च्युत होने पर वह केक्कीके गर्भसे स्तनश्रवाके पुत्र विख्यात रावणके नामसे उत्पन्न हुआ। (११४) सन्तप्त मनवाले मुनियोंकी भी यदि ऐसी अवस्था होती है तो फिर व्रत, गुण, तप एवं शीलरहित बाकी लोगोंके बारेमें तो कहना ही क्या ? (११५) ब्रह्मेन्द्र भी च्युत होकर

१. ०न्ती तेण सव—प्रत्य० । २. संपत्तो—प्रत्य० । ३. ०गइ-दोस०—मु० । ४. केक्कीए—प्रत्य० ।

बम्भिन्दो वि य चविडं, जाओ अवराइयाएँ देवीए । दसरहनिवस्स पुत्तो, रामो तेलोकविक्खाओ ॥ ११६ ॥
 जो सो नयदत्तसुओ, धणदत्तो आसि बम्भलोगवई । सो हु इमो पउमामो, बलदेवसिरिं समणुपत्तो ॥ ११७ ॥
 वसुदत्तो वि य जो सो, सिरिभूई आसि बम्भणो तइया । सो लक्खणो^१ य जाओ, संपइ णारायणो एसो ॥ ११८ ॥
 सिरिकन्तो य सयम्भू, कमेण जाओ पहासकुन्दो सो । विज्जाहरण राया, जाओ लक्काहिवो सूरो ॥ ११९ ॥
 सा गुणमई कमेणं, सिरिभूइपुरोहियस्स वेगवई । दुहिया बम्भविमाणे, देवी इह वट्टए सीया ॥ १२० ॥
 जो आसि गुणमईए, सहोयरो गुणधरो त्ति नामेणं । सो जणयरायपुत्तो, जाओ भामण्डलो एसो ॥ १२१ ॥
 जो जन्नवक्कविप्पो, सो हु विहीसण ! तुमं समुप्पन्नो । वसइद्धओ वि जाओ, सुग्गीवो वाणराहिवई ॥ १२२ ॥
 एए सबे दि पुरा, आसि निरन्तरसिणेहसंबन्धा । रामस्स तेण नेहं, वहन्ति निययं च अणुकूला ॥ १२३ ॥
 एत्तो विहीसणो पुण, परिपुच्छइ सयलभूसणं नमिउं । वालिस्स पुबजणियं, कहेहि भयवं ! भवसमूहं ॥ १२४ ॥
 निसुणसु विहीसण ! तुमं, एक्को परिहिण्डऊण संसारं । जीवो कम्मवसेणं, दण्डारण्णे मओ जाओ ॥ १२५ ॥
 साहं सज्झार्यंतं, सुणिकणं कालधम्मसंजुत्तो । उप्पन्नो एरवए, मघदत्तो नाम धणवन्तो ॥ १२६ ॥
 तस्स पिया विहियक्खो, सुसावओ सिवमई हवइ माया । मघदत्तस्स वि जाया, जिणवरधम्मे मई विउला ॥ १२७ ॥
 पञ्चाणुबयधारी, मओ य सो सुरवरो समुप्पन्नो । वरहार-कुण्डलधरो, निदाहरविसन्निहसरीरो ॥ १२८ ॥
 चइओ पुबविदेहे, गामे विजयावईएँ आसन्ने । अह मत्तकोइलरवे, कंतासोगो तहिं राया ॥ १२९ ॥
 तस्स रयणावईए, भज्जाए कुच्छिसंभवो जाओ । नामेण सुप्पमो सो, रज्जं भोत्तण पवइओ ॥ १३० ॥
 चरिय तवं कालगओ, सबट्टे सुरवरो समुप्पन्नो । तत्तो चुओ वि जाओ, वाली आइच्चरयपुत्तो ॥ १३१ ॥
 काऊण विरोहं जो, तइया सह रावणेण संविग्गो । पवइओ कइलासे, कुणइ तवं धीरगम्भीरो ॥ १३२ ॥

अपराजिता देवीसे दशरथका पुत्र तीनों लोकोंमें विख्यात रामके रूपमें पैदा हुआ। (११६) जो नयदत्तका पुत्र ब्रह्मदत्त ब्रह्मलोकका स्वामी था, उसीने इस रामके रूपमें बलदेवका ऐश्वर्य प्राप्त किया। (११७) जो वसुदत्त उस समय श्रीभूति ब्राह्मण था वही लक्ष्मण हुआ। इस समय वह नारायण है। (११८) श्रीकान्त जो क्रमशः स्वयम्भू और प्रभासकुन्द हुआ था वह, विद्याधरोंका राजा शूरवीर रावण हुआ। (११९) वह गुणमती अनुक्रमसे श्रीभूति पुरोहितकी वेगवती पुत्री और ब्रह्मविमानमें देवी होकर यहाँ सीताके रूपमें है। (१२०) गुणमतीका गुणधर नामक जो भाई था वह जनकराजका पुत्र यह भामण्डल हुआ है। (१२१) जो याज्ञवल्क्य ब्राह्मण था वह विभीषणके रूपमें उत्पन्न हुआ है। वृषभध्वज वानराधिपति सुभ्राव हुआ है। (१२२) ये सब पहले निरन्तर स्नेहसे सम्बद्ध थे। इससे सतत अनुकूल रहनेवाले वे रामके लिए स्नेह धारण करते हैं। (१२३)

इसके बाद विभीषणने पुनः सकलभूषण से नमन करके पूछा कि, हे भगवन् ! वालिके परभवके जन्मोंके बारेमें आप कहें। (१२४) इस पर उन्होंने कहा कि, विभीषण ! तुम सुनो ! संसारमें परिभ्रमण करके कोई एक जीव कर्मवश दण्डकारण्यमें मृग हुआ। (१२५) साधु द्वारा किये जाते स्वाध्यायको सुनकर काल-धर्मसे युक्त होने पर (मरने पर) वह ऐरावत क्षेत्रमें धनसम्पन्न मघदत्तके नामसे उत्पन्न हुआ। (१२६) उसका पिता सुभ्रावक विहितात्त और माता शिवमती थी। मघदत्तको जिनवरके धर्ममें उत्तम बुद्धि हुई। (१२७) पाँच महाव्रतोंको धारण करनेवाला वह मरकर उत्तम हार एवं कुण्डल धारण करनेवाला तथा ब्रह्मकालान सूर्यके समान तेजस्वी शरीरवाला देव हुआ। (१२८) च्युत होने पर वह पूर्वविदेहमें आई हुई विजयावतीके समीपवती मत्त-कोकिलरव नामक प्रामके कान्ताशोक राजाकी भार्या रत्नावतीकी कुक्षिसे सुप्रभ नामसे उत्पन्न हुआ। राज्यका उपभोग करके उसने प्रव्रज्या ली। (१२९-१३०) तप करके मरने पर वह सर्वार्थसिद्ध विमानमें देवके रूपमें उत्पन्न हुआ। वहाँसे च्युत होने पर आदित्यराजाका पुत्र वालि हुआ। (१३१) उस समय रावणके

१. ०णो पहाणो, संपइ नारा०—मु० । २. ०सणं समणं । वा०—मु० । ३. सिरिमई—मु० । ४. कयलासे—प्रत्य० ।

सबायरेण तद्व्या, उद्धरिओ रावणेण कइलासो । अङ्गुद्वेण सो पुण, नीओ वाली ण संखोहं ॥ १३३ ॥
 ज्ञाणाणलेण डहिउं, निस्सेसं कम्मकयवरं वाली । संपत्तो परमपर्यं, अजरामरनीरयं ठाणं ॥ १३४ ॥
 एवं अन्नोन्नवहं, कुणमाणा पुण्वददवेरा । संसारे परिभमिया, दोण्णि वि वसुदत्त-सिरिकन्ता ॥ १३५ ॥
 जेणं सा वेगवई, आसि सयंमुस्स वल्लहा तेणं । अणुबन्धेणऽवहरियां, सीया वि हु रक्खसिन्देणं ॥ १३६ ॥
 जो वि य सो सिरिभूई, वेगवईए कए सयंभूणा । वहिओ धम्मफलेणं, देवो जाओ विमाणम्मि ॥ १३७ ॥
 चइउं पइट्टनयरे, पुणवसू खेयराहिवो जाओ । महिलहइउं सोयं, करिय नियाणं च पवइओ ॥ १३८ ॥
 काऊण तवं धीरं, सणकुमारे सुरो समुप्पन्नो । चइओ सोमिच्चिसुओ, जाओ वि हु लक्खणो एसो ॥ १३९ ॥
 सत्तु जेण सयंभू, सिरिभूइपुरोहियस्स आसि पुरा । तेण इह मारिओ सो, दहवयणो लच्छिनिलएणं ॥ १४० ॥
 जो जेण हओ पुवं, सो तेण वहिज्जए न संदेहो । एसा ठिई विहीसण, संसारत्थाण जीवाणं ॥ १४१ ॥
 एवं सोऊण इमं, जीवाणं पुव्वेसंभन्धं । तम्हा परिहरह सया, वेरं सबे वि दूरेणं ॥ १४२ ॥
 वयणेण वि उवेओ, न य कायवो परस्स पीडयरो । सीयाए जहऽणुभूओ, महाववाओ वयणहेऊ ॥ १४३ ॥
 मण्डलियाउज्जाणे, सुदरिसणो आगओ मुणिवरिन्दो । दिट्ठो य वन्दिओ सो, सम्महिट्ठीण लोएणं ॥ १४४ ॥
 साहुं पलोइउं सा, वेगवई कइइ सयल्लोयस्स । एसो उज्जाणत्थो, महिलाए समं मए दिट्ठो ॥ १४५ ॥
 तत्तो गामजणेणं, अणायरो मुणिवरस्स आढत्तो । तेण वि य कओ सिग्धं, अभिग्गहो धीरपुरिसेणं ॥ १४६ ॥
 जइ मज्झ इमो दोसो, फिट्ठिहिइ असण्णिदुज्जणनिउत्तो । तो होही आहारो, भणियं चिय एव साहूणं ॥ १४७ ॥

साथ विरोध करके वैराग्ययुक्त उसने दीक्षा ली और धीर-गम्भीर उसने बैलास पर्वत पर तप किया । (१३२) उस समय सर्वथा निर्भय होकर रावणने कैलास उठाया और वालिने अंगूठेसे उसे संछुब्ध किया । (१३३) ध्यानरूपी अभिसे समग्र कर्म कचरेको जलाकर वालिने अजर, अमर, और रजहीन मोक्ष-स्थान प्राप्त किया । (१३४)

इस तरह पहलेके बाँधे हुए हृदय वैरभावके कारण एक-दूसरेका बध करते हुए वसुदेव और श्रीकान्त दोनों संसारमें घूमने लगे । (१३५) स्वयम्भूकी वल्लभा वेगवती थी वह कर्मविपाकवश सीताके रूपमें राक्षसेन्द्र रावण द्वारा अपहृत हुई । (१३६) वेगवतीके लिए जो श्रीभूति स्वयंभूके द्वारा मारा गया था वह धर्मके फलस्वरूप विमानमें देव हुआ । (१३७) वहाँसे च्युत होकर वह प्रतिष्ठनगरमें विद्याधरोंका राजा पुनर्वसु हुआ । पत्नीके लिए शोक और निदान करके उसने दीक्षा ली । (१३८) धीर तप करके सन्तकुमार देवलोकेमें वह देवरूपसे पैदा हुआ । वहाँसे च्युत होने पर सुमित्राका पुत्र यह लक्ष्मण हुआ है । (१३९) चूँकि पूर्वजन्ममें स्वयम्भू श्रीभूति पुरोहितका शत्रु था, इसलिए लक्ष्मणने इस जन्ममें उस रावणका बध किया । (१४०) जो जिसको पूर्वजन्ममें मारता है वह उसके द्वारा मारा जाता है, इसमें सन्देह नहीं । हे विभीषण ! संसारमें रहनेवाले जीवोंकी यह स्थिति है । (१४१) इस तरह जीवोंके पहलेके वैरके वारेमें तुमने यह सुना । अतः सबलोग वैरका दूरसे ही त्याग करें । (१४२) बचनसे दूसरेको पीड़ा देनेवाला उद्वेग नहीं करना चाहिए उदाहरणार्थ—बचनके कारण सीताने बड़े भारी अपवादका अनुभव किया । (१४३)

एक बार मण्डलिक उद्यानमें सुदर्शन नामक मुनि पधारें । सम्यग्दृष्टि लोगोंने उनका दर्शन एवं वन्दन किया । (१४४) साधुको देखकर उस वेगवतीने सब लोगों से कहा कि उद्यानमें ठहरे हुए इस मुनिको मैंने स्त्रीके साथ देखा था । (१४५) तब गाँवके लोगोंने मुनिवरका अनादर किया । उस धीर पुरुषने भी शीघ्र ही अभिग्रह किया कि अज्ञानों और दुर्जन लोगों द्वारा आरोपित यह दोष जब दूर होगा तभी मेरा भोजन होगा । उसने साधुओंसे यह कहा भी । (१४६-१४७)

१. •ममरयमलं वा०—मु० । २. पुण्वेवपडिबद्धा । सं०—प्रत्य० । ३. वि हु सो—प्रत्य० । ४. •वइकएण संभुणा वहिओ । धम्मफलेणं देवो जाओ अह वरविमाणम्मि—मु० । ५. वि दुव्वाओ—मु० । ६. सीयाए जह अणुओ, म०—प्रत्य० । ७. सप्पैलो०—प्रत्य० ।

तो वेगवईएँ मुहं, सूर्णं चिय देवयानिभोगेणं । भणइ तओ सा अलियं, तुम्हाण मए समक्खायं ॥ १४८ ॥
 तत्तो सो गामजणो, परितुट्ठो मुणिवरस्स अहिययरं । सम्माणपीइपमुहो, जाओ गुणगहणतत्तिहो ॥ १४९ ॥
 जं दाऊणऽववाओ, विसोहिओ मुणिवरस्स क्खाएँ । तेण इमाए विसोही, जाया वि हु जणयतणयाए ॥ १५० ॥
 दिट्ठो सुओ व दोसो, परस्सं न कयाइ सो कह्यवो । जिणधम्माहिरएणं, पुरिसेणं महिलियाए वा ॥ १५१ ॥
 रागेण व दोसेण व, जो दोसं जणवयस्स भासेइ । सो हिण्डइ संसारे, दुक्खसहस्साइं अणुहुन्तो ॥ १५२ ॥
 तं मुणिवरस्स वयणं, सोऊण णरा-ऽमरा सुविम्हइया । संवेगसमावन्ना, विमुक्खेरा तओ जाया ॥ १५३ ॥
 वहवो सम्मदिट्ठी, जाया पुण सावया तहिं अन्ने । भोगेसु विरत्तमणा, समणत्तं केइ पडिवन्ना ॥ १५४ ॥
 एत्तो कयन्तवयणो, सुणिऊणं भवसहस्सदुक्खोहं । दिक्खाभिमुहो पउमं, भणइ प्ह सुणसु मह वयणं ॥ १५५ ॥
 संसारम्मि अणन्ते, परिहिण्डन्तो चिरं सुपरितन्तो । दुक्खविमोक्खट्ठे हं, राहव ! गेण्हामि पवज्जं ॥ १५६ ॥
 तो भणइ पउमनाओ, कहसि तुमं उज्झउं महं नेहं । गेण्हसि दुद्धरचरियं, असिधारं जिणमयाणुगयं ॥ १५७ ॥
 कह चेव लुहाईया, विसहिस्सिसि परिसहे महाघोरे । कण्ठयतुल्लणि पुणो, वयणाणि य खलमणुस्साणं ? ॥ १५८ ॥
 उब्भडसिराक्खोलो, अट्ठियच्चम्मावसेसतणुयङ्गो । गेण्हिहिसि परागारे, कह भिक्खादाणमेत्ताहे ? ॥ १५९ ॥
 जंपइ कयन्तवयणो, सामिय ! जो तुज्झ दारुणं नेहं । छड्डेमि अहं सो कह, अन्नं कज्जं न साहेमि ? ॥ १६० ॥
 एवं निच्छियभावो, कयन्तवयणो वियाणिओ जाहे । ताहे चिय अपुणाओ, लक्खणसहिण्ण रामेणं ॥ १६१ ॥
 आपुच्छिऊण पउमं, सोमित्तिसुयं च सब्बसुहदायं । गेण्हइ कयन्तवयणो, मुणिसस पासम्मि पवज्जं ॥ १६२ ॥
 अह सयलभूसणन्ते, सुरासुरा पणमिऊण भावेणं । निययपरिवारसहिया, जहागया पडिगया सब्बे ॥ १६३ ॥

देवताओं के प्रयत्नसे वेगवतीका मुँह सूज गया। तब उसने कहा कि तुमको मैंने झूठमूठ कहा था। (१४८) इस पर गाँवके वे लोग आनन्दित होकर मुनिवरका और भी अधिक सम्मान व प्रेम करने लगे तथा गुणोंके ग्रहणमें तत्पर हुए। (१४९) मुनिवर पर अपवाद लगाकर कन्याने फिर उसे विशुद्ध किया था। इसलिए इस जनकतनया की विशुद्धि हुई। (१५०)

जिनधर्ममें निरत पुरुष अथवा स्त्रीको देखा या सुना दोष दूसरेसे नहीं कहना चाहिए। (१५१) राग अथवा द्वेषवशा जो लोगोंसे दोष कहता है वह हज़ारों दुःख अनुभव करता हुआ संसारमें भटकता है। (१५२)

उस मुनिवरका उपदेश सुनकर मनुष्य और देव विस्मित हुए और वैरका परित्याग करके संवेगयुक्त हुए। (१५३) वहाँ बहुतसे सम्यग्दृष्टि हुए, दूसरे पुनः श्रावक हुए और भोगोंसे विरक्त मनवाले कई लोगोंने श्रमणत्व अंगीकार किया। (१५४) तब हज़ारों दुःखोंसे युक्त संसारके बारेमें सुनकर दीक्षाभिमुख कृतान्तवदनने रामसे कहा कि, हे प्रभो ! मेरा कहना आप सुनें। (१५५) हे राघव ! अनन्त संसारमें चिरकालसे घूमता हुआ अत्यन्त दुःखी मैं दुःखके नाशके लिए दीक्षा लेना चाहता हूँ। (१५६) तब रामने कहा कि तुम मेरे स्नेहका त्याग करके ऐसा कहते हो। जिनधर्मसम्मत असिधारा जैसे दुर्धर चारित्रको तुम ग्रहण करना चाहते हो। (१५७) तुम भूख आदि अतिघोर परीषह तथा खल मनुष्योंके कण्ठकतुल्य वचन कैसे सहोगे ? (१५८) उभरी हुई नसोंसे युक्त कपोलवाले तथा अस्थि एवं चर्म ही बाक्री रहे हैं ऐसे कृश शरीरवाले तुम दूसरोंके घरमें केवल भिक्षा दान ही कैसे ग्रहण करोगे ? (१५९) इस पर कृतान्तवदनने कहा कि, हे स्वामी ! मैं यदि आपके प्रगाढ़ स्नेहका परित्याग कर सकता हूँ तो अन्य कार्य भी क्यों नहीं कर सकूँगा ? (१६०) इस तरह जब दृढ़ भाववाले कृतान्तवदनको जाना, तब लक्ष्मणके साथ रामने अनुमति दी। (१६१) सब प्रकारके सुख देनेवाले राम और लक्ष्मणसे पूछकर कृतान्तवदनने मुनिके पास दीक्षा ग्रहण की। (१६२)

इसके बाद भावपूर्वक सकलभूषण मुनिवरको प्रणाम करके वे सुर और असुर अपने अपने परिवारके साथ जैसे

१. •स्स ण य सो कयाइ कहियव्वो—प्रत्य० । २. संसारं—प्रत्य० । ३. •यणं मुणिऊण णरा मणेषु विम्हं—सु० ।
 ४. •हाईया विसहिहिसि परिसहा महाघोरा । क०—सु० । ५. •ण रमं—प्रत्य० ।

रामो वि केवलं तं, अभिवन्देऽङ्ग सेसया य मुणी । सीयाएँ सन्नियासं, संपत्तो अप्पवीओ सो ॥ १६४ ॥
 रामेण तओ सीया, दिट्ठा अज्जाण मज्झयारत्था । सेयम्बरपरिहाणा, तारासहिय व ससिलेहा ॥ १६५ ॥
 एवंविहं निएउं, संजमगुणधारिणिं पउमनाहो । चिन्तेइ कह पवत्ता, दुक्करचरियं इमा सीया ? ॥ १६६ ॥
 एसा मज्झ भुओयरमल्लीणा निययमेव सुहल्लिया । कह दुक्कयणचडयरं, सहिही मिच्छत्तमहिल्लाणं ? ॥ १६७ ॥
 जाए बहुप्पयारं, भुत्तं चिय भोयणं रससमिद्धं । सा कह लद्धमलद्धं, भिक्खं भुञ्जीहि परदित्रं ? ॥ १६८ ॥
 वीणावंसरवेणं, उवगिज्जन्ती य जा सुहं सइया । कह सा लहिही निहं, संपइ फरुसे धरणिवट्ठे ? ॥ १६९ ॥
 एसा बहुगुणनिलया, सीलमई निययमेव अणुकूला । परपरिवाएण मए, मूढेणं हारिया सीया ॥ १७० ॥
 एयाणि य अन्नाणि य, परचिन्तेऽङ्ग तत्थ पउमाभो । परमत्थसुणियकरणो, पणमइ ताहे जणयतणयं ॥ १७१ ॥
 तो भणइ रामदेवो, एकट्ठं चेव परिवसन्तेणं । जं चिय तुह दुक्करियं, कयं मए तं खमेज्जाए ॥ १७२ ॥
 एवं सा जणयमुया, लक्खणपमुहेहिं नरवरिन्देहिं । अहिवन्दिद्या सुसमणी, अहियं परितुट्ठहियएहिं ॥ १७३ ॥
 अहिणन्दइ वइदेही, एवं भणिऽङ्ग राहवो चलिओ । मडचक्केण परिउडो, संपत्तो अत्तणो भवणं ॥ १७४ ॥
 एयं राहवचरियं, पुरिसो जो पढइ सुणइ भावियकरणो ।
 सो लहइ बोहिल्लहं, हवइ य लोयम्मि उत्तमो विमलजसो ॥ १७५ ॥

॥ इइ पउमचरिए रामपुत्रभवसीयापत्रज्जाविहाणं नाम तिउत्तरसयं पत्रं समत्तं ॥

आये थे वैसे लौट गये । (१६३) राम भी उन केवली तथा दूसरे सुनियोंको वन्दन करके लक्ष्मणके साथ सीताके पास गये । (१६४) वहाँ रामने सीताको आर्याओंके बीच अवस्थित देखा । श्वेत वस्त्र पहने हुई वह तारा सहित चन्द्रमाकी लोखा की भाँति प्रतीत होती थी । (१६५) इस तरह संयमगुणको धारण करनेवाली सीताको देखकर राम सोचने लगे कि इस सीताने दुक्कर चारित्र कैसे अंगीकार किया होगा ? (१६६) मेरी भुजाओंमें लीन रहनेवाली और सर्वदा सुखके साथ दुलार की गई यह निःश्याथी कियोंके कठोर दुर्वचन कैसे सहती होगी ? (१६७) जिसने रससे समृद्ध नानाविध खाद्योंका भोजन किया हो वह दूसरेके द्वारा दी गई और कभी मिली या न मिली ऐसी भिक्षा कैसे खाती होगी ? (१६८) वीणा एवं बंसीकी ध्वनिसे गाई जाती जो सुखपूर्वक सोती थी वह कठोर धरातल पर कैसे नींद लेती होगी ? (१६९) अनेक गुणोंके धामरूप, शीलवती और सर्वदा अनुकूल ऐसी इस सीताको मूर्ख मैं दूसरोंके परिवादसे खो बैठा हूँ । (१७०) ये तथा ऐसे ही दूसरे विचार करके मनमें परमार्थको जाननेवाले रामने तब सीताको प्रणाम किया । (१७१) तब रामने कहा कि साथमें रहते हुए मैंने जो तुम्हारा बुरा किया हो उसे क्षमा करो । (१७२) इस प्रकार हृदय में अत्यन्त प्रसन्न लक्ष्मण प्रमुख राजाओं द्वारा सुश्रमणी जनक सुता सीता अभिवन्दित हुई । (१७३) वैदेही प्रसन्न है—ऐसा कहकर सुभटोंके समूहसे घिरे हुए राम चले और अपने भवन पर आ पहुँचे । (१७४) अन्तःकरणमें श्रद्धाके साथ जो पुरुष यह रामचरित पढ़ेगा या सुनेगा उसे बोधिलाभ प्राप्त होगा और वह लोक में उत्तम तथा विमल यशवाला होगा । (१७५)

॥ पञ्चचरितमें रामके पूर्वभव तथा सीताकी प्रव्रज्याका विधान नामक एक सौ तीसरा पर्व समाप्त हुआ ॥

१. भुओवरिम०—प्रत्य० । २. पउमेहिं—सु० । ३. परिमिओ संपत्तो सो सयं भवणं—सु० । ४. एवं रा०—प्रत्य० ।

१०४. लवणं-ऽकुसपुत्रवभवाणुकित्तणपव्वं

एतो विहीसणो पुण, परिपुच्छइ सयलभूसणं साहुं । भयवं परभवजणियं, कहेहि लवणं-ऽकुसच्चरिय ॥ १ ॥
तो भणइ मुणी निसुणसु, कायन्दिपुराहिवस्स सूरस्स । रइवद्धणस्स महिल्ल, सुदरिसणा नाम विक्खाया ॥ २ ॥
तोए गन्धुप्पन्ना, दोण्णि सुया पियहियंकरा धीरा । मन्ती उ सबगुत्तो, तत्थ नरिन्दस्स पडिकूलो ॥ ३ ॥
विजयावलि ति' नादं, धरिणी मन्तिस्स सा निसासमए । गन्तूण नरवरिन्दं, भणइ पहू ! सुणसु मह वयणं ॥ ४ ॥
तुज्झाणुरायरत्ता, कन्तं मोत्तूण आगया इहई । इच्छसु मए नराहिव ! मा वक्खेवं कुणसु एत्तो ॥ ५ ॥
भणिया य नरवईणं, विजयावलि ! नेव एरिसं जुत्तं । परणारिफरिसणं विय, उत्तमपुरिसाण लज्जणयं ॥ ६ ॥
जं एव नरवईणं, भणिया विजयावलो गया सगिहं । परपुरिसदिन्नहियया, सुणिया सा तत्थ मन्तीणं ॥ ७ ॥
अइकोहवसगएणं, तं नरवइसन्तियं महाभवणं । मन्तीण रयणिसमए, सहसा आलोवियं सबं ॥ ८ ॥
तो गूढसुरङ्गाए, विणिग्गओ नरवई सह सुएहिं । महिल्लय ठविय पुरओ, गओ य चाणारसीदेसं ॥ ९ ॥
मन्ती वि सबगुत्तो, अक्कमिऊणं च सयलरज्जं सो । पेसेइ निययदूयं, कासिनरिन्दस्स कासिपुरं ॥ १० ॥
गन्तूण तओ दूओ, साहइ कसिवस्स सामियादिहं । तेणावि उवालद्धो, दूओ अइनिट्ठुरगिराए ॥ ११ ॥
को तुज्झ सामिघायय, गेण्हइ नामं पि उत्तमो पुरिसो । ञाणन्तो च्चिय दोसे, पडिवज्जइ नेव भिच्चत्तं ॥ १२ ॥
सह पुत्तेहिं सुसामी, जं ते वहिओ तुमे अणज्जेणं । तं ते दावेमि लहुं, रइवद्धणसन्तियं ममां ॥ १३ ॥

१०४ लवण और अंकुशके पूर्वभव

एक दिन विभीषणने पुनः सकलभूषण मुनिसे पूछा कि, भगवन् ! लवण और अंकुशका परभव-सम्बन्धी चरित आप कहें। (१) तब मुनिने कहा कि सुनो :-

काकन्दीपुरके स्वामी शूरवीर रतिवर्धनकी सुदर्शना नामकी विख्यात पत्नी थी। (२) उसके गर्भसे प्रियंकर और हितकर नामके दो पुत्र हुए। वहाँ सर्वशुभ नामका मंत्री राजाका विरोधी था। (३) मंत्रीकी विजयावली नामकी पत्नी थी। रातके समय जाकर उसने राजासे कहा कि, हे प्रभो ! आप मेरा कहना सुनें। (४) हे राजन् ! आपके प्रेममें अनुरक्त मैं पतिका त्याग करके यहाँ आई हूँ। आप मेरे साथ भोग भोगो और तिरस्कार मत करो। (५) राजाने कहा कि, विजयावली ! ऐसा करना उपयुक्त नहीं है। उत्तम पुरुषोंके लिए परस्त्रीका स्पर्शन भी लज्जास्पद होता है। (६) जब राजाने ऐसा कहा तब विजयावली अपने घर पर गई। वहाँ मंत्रीने जान लिया कि यह परपुरुषको हृदय दे चुकी है। (७) क्रोधके अत्यन्त बशीभूत होकर मंत्रीने रातके समय राजाका सारा महल सहसा जला डाला। (८) सुरंगके गुप्त मार्ग द्वारा राजा पुत्रोंके साथ बाहर निकल गया और पत्नीको आगे करके वाराणसी देशमें गया। (९) उस सर्वशुभ मंत्रीने भी सारे राज्य पर आक्रमण करके काशीनरेशके पास काशीनगरीमें अपना दूत भेजा। (१०) उस दूतने जाकर काशीराज कशिपसे स्वामीका कहा हुआ कह सुनाया। उसने भी अत्यन्त निष्ठुर वाणीमें दूतकी भर्त्सना की कि अरे स्वामिपातक ! कौन उत्तम पुरुष तेरा नाम भी ले। दोषोंको जानकर कोई उत्तम पुरुष नौकरी नहीं स्वीकार करता। (११-१२) पुत्रोंके साथ अपने स्वामीका अनर्थ तुमने जो बध किया है, इससे रतिवर्धनका रास्ता मैं तुम्हें शीघ्र ही दिखाता हूँ। (१३)

१. ति णामा ष०—प्रत्य० । २. परनारित्तेदणं चिय, उ०—सु० । ३. तेण वि य उ०—प्रत्य० । ४. अक्कज्जेणं—प्रत्य० । ५. लहुं, सिरिवद्ध०—प्रत्य० ।

कसिवेण निट्ठुराए, गिराएँ निब्भच्छओ गओ दूओ । सबं सक्किथरं तं, कहेइ निययस्स सामिस्स ॥ १४ ॥
 सुणिऊण दूयवयणं, अह सो भडच्चडयरेण महएणं । निप्फडइ सब्भुत्तो, कसिवस्सुवरिं अइतुरन्तो ॥ १५ ॥
 पइसरइ सब्भुत्तो, कासोपुरिसन्तिथं तओ देसं । कसिवो वि निययसेत्तं, तुरियं मेलेइ दढसत्तो ॥ १६ ॥
 रइवद्धणेण पुरिसो, कसिवस्स पवेसिओ निसि पओसे । पत्तो साहेइ फुडं, देव ! तुमं आगओ सामी ॥ १७ ॥
 सुणिऊण अपरिसेसं, वत्तं कसिवो गओ अइतुरन्तो । पेच्छइ उज्जाणत्थं, सपुत्त-महिलं निययसामिं ॥ १८ ॥
 अन्तेउरेण समयं, पणमइ सामिं तओ सुपरितुट्ठो । कसिवो कुणइ महन्तं, निययपुरे संगमाणन्दं ॥ १९ ॥
 रइवद्धणेण समरे, कसिवसम्मगेण सब्भुत्तो सो । भग्गो पइसइ रणं, पुलिन्दसरिसो तओ जाओ ॥ २० ॥
 पुणरवि कायन्दीए, राया रइवद्धणो कुणइ रज्जं । कसिवो वि भयविमुक्को, भुज्जइ वाणारसिं मुइओ ॥ २१ ॥
 काऊण सुहरकालं, रज्जं रइवद्धणो सुसंविग्गो । समणस्स सन्नियासे, सुभागुनामस्स पवइओ ॥ २२ ॥
 विजयावली वि पढमं, चत्ता मन्तीण सोगिणी मरिउं । नियकम्मपभावेणं, उप्पन्ना रक्खसी घोरा ॥ २३ ॥
 तइया तस्सुवसग्गे, कीरन्ते रक्खसीएँ पावाए । रइवद्धणस्स सहसा, केवलनाणं समुप्पन्नं ॥ २४ ॥
 काऊण य पवज्जं, दो वि जणा पियहियंकरा समणा । पत्ता ^३गेवेज्जिड्ढिं, चउत्थभवलद्धसम्मत्ता ॥ २५ ॥
 सेणिय ! चउत्थजम्मे, सामलिनयरीएँ वामदेवसुया । वसुनन्द-सुनन्दभिहा, आसि च्चिय वम्मणा पुढं ॥ २६ ॥
 अह ताण महिलियाओ, विस्सावसु तह पियं गुणामाओ । विप्पकुलजाइयाओ, जोवण-लायण्णकलियाओ ॥ २७ ॥
 दाऊण य सिरितिलए, दाणं साहुस्स भावसंजुत्तं । आउक्खए समज्जा, उत्तरकुरवे समुप्पन्ना ॥ २८ ॥
 भोगं भोत्तूण तओ, ईसाणे सुरवरा समुप्पन्ना । चइया वोहिसमग्गा, पियंकर-हियंकरा जाया ॥ २९ ॥

कशिप द्वारा कठोर वचनोंसे तिरस्कृत दूत लौट आया और अपने स्वामीसे सब कुछ विस्तारपूर्वक कहा । (१४) दूतका कथन सुनकर बड़ी भारी सुभट-सेनाके साथ सर्वगुप्त कशिपके ऊपर आक्रमण करनेके लिए जल्दी निकल पड़ा । (१५) काशीपुरीके समीपके देशमें सर्वगुप्तने प्रवेश किया । दृढ़ शक्तिवाले कशिपने भी तुरन्त ही अपनी सेना भेजी । (१६) रतिवर्धनने रातमें प्रदोषके समय कशिपके पास आदमी भेजा । जाकर उसने स्फुट रूपसे कहा कि, देव ! आपके स्वामी आये हैं । (१७) सारी बात सुनकर कशिप एकदम जल्दी गया और उद्यानमें ठहरे हुए अपने स्वामीको पुत्र और पत्नीके साथ देखा । (१८) तब अत्यन्त आनन्दित कशिपने अन्तःपुरके साथ अपने स्वामीको प्रणाम किया और अपने नगरमें मिलनका महान् उत्सव मनाया । (१९) कशिपके साथ रतिवर्धन द्वारा हराये गये उस सर्वगुप्तने अरण्यमें प्रवेश किया और भील जैसा हो गया । (२०) रतिवर्धन राजा पुनः काकन्दीमें राज्य करने लगा । भयसे विमुक्त कशिप भी आनन्दके साथ वाराणसीका उपभोग करने लगा । (२१)

सुचिरकाल तक राज्य करके संवेगयुक्त रतिवर्धनने सुभानु नामके श्रमणके पास दीक्षा ली । (२२) मन्त्रों द्वारा पूर्वमें त्यक्त विजयावली भी दुःखित होकर मरी और अपने कर्मके प्रभावसे भयंकर राक्षसीके रूपमें उत्पन्न हुई । (२३) उस समय पापी राक्षसी द्वारा उपसर्ग किये जानेपर उस रतिवर्धनको सहसा केवल ज्ञान हुआ । (२४) प्रव्रज्या लेकर चौथे भवमें सम्यक्त्व प्राप्त किये हुए दोनों ही प्रियंकर और हितंकर श्रमणोंने भ्रूवेयककी ऋद्धि प्राप्त की । (२५)

हे श्रेणिक ! पूर्वकालमें, चौथे भवमें, शामलिनगरीमें वामदेवके वसुनन्द और सुनन्द नामके दो ब्राह्मणपुत्र थे । (२६) उनकी ब्राह्मण कुलमें उत्पन्न तथा यौवन एवं लावण्यसे युक्त विरवावसु और प्रियंगु नामकी भार्याएँ थीं । (२७) श्रीतिलक नामके साधुको भावपूर्वक दान देनेसे आयुका क्षय होने पर वे भार्याओंके साथ उत्तरकुरुमें उत्पन्न हुए । (२८) वहाँ भोगोंका उपभोग करके ईशान देवलोकेमें वे देव रूपसे उत्पन्न हुए । वहाँसे च्युत होने पर सम्यक्त्वके साथ वे प्रियंकर और हितंकर

१. कासीपुरसं—सु० । २. गेवेज्जिड्ढिं, च०—सु० । ३. वामदेविसुया । वसुदेवसुया जाया, आसि—प्रत्य० ।

तं कर्ममहारण्यं, सयलं ज्ञाणालेण डहिऊणं । रईवद्धणो महप्पा, पत्तो सिवसासयं मोक्खं ॥ ३० ॥
 कहिया जे तुज्झ मए, एत्तो पियंकर-हियंकरा भवा । गेवेज्जचुया सेणिय !, जाया लवणं-ऽकुसा धीरा ॥ ३१ ॥
 देवी सुदरिसणा वि य, सणियाणा हिण्डऊण संसारे । निज्जरिय जुवइकम्मं, सिद्धत्थो खुड्डो जाओ ॥ ३२ ॥
 पुबसिणेहेण तओ, कया य लवण-ऽकुसा अईकुसला । सिद्धत्थेण नराहिव !, रणे य अवराइया धीरा ॥ ३३ ॥

१०५. एवं सुणेज्ज भवोहदुक्खं, जीवाण संसारपहे ठियाणं ।

१०६. तुब्भे य सबे वि सयाऽपमत्ता, करेह धम्मं विमलं समत्था ॥ ३४ ॥

॥ इह पद्मचरिए लवणं-ऽकुसपुण्ड्रभवाणुकित्तणं नाम चउरुत्तरसयं पब्बं समत्तं ॥

१०५. मधु-कैटवउवक्खाणपब्बं

चइऊण य पइ-पुत्ते, निक्खन्ता तिबजायसवेगा । जं कुणइ तवं सीया, तं तुज्झ कहेमि मगहवई ! ॥ १ ॥
 तइया पुण सबज्जणो, उवसमिओ सयलभूसणसुणोणं । जाओ जिणधम्मरओ, भिक्खादाणुज्जओ अहियं ॥ २ ॥
 जा आसि सुरवहणं, सरिसी लयणज्ज-जोवणगुणेहिं । सा तवसोसियदेहा, सीया दड्ढा लया चेव ॥ ३ ॥
 पच्चमहबयधारी, दुब्भभावविवज्जिया पयइसोमा । निन्दन्ती महिलत्तं, कुणइ तवं बारसवियप्पं ॥ ४ ॥
 लोयकयउत्तमङ्गी, मलकञ्चुयधारिणी तणुसरीरा । छट्ट-ऽट्टम-मासाइसु, सुत्तविहीणं कयाहारा ॥ ५ ॥
 रइ-अरइविप्पमुक्का, निययं सज्जाय-ज्ञाणकयभावा । समिईसु य गुत्तीसु य, अविरहिया संजमुज्जुत्ता ॥ ६ ॥

हुए । (२६) कर्मरूपी उस समग्र महारण्यको ध्यानरूपी अग्निसे जलाकर महात्मा रतिवर्धनने शिव और शाश्वत मोक्षपद पाया । (३०) हे श्रेष्ठिक ! मैंने तुमसे जिन प्रियंकर और हितंकरके भवोंके बारेमें कहा वे भ्रैवेयकसे च्युत होने पर धीर लवण और अंकुश हुए हैं । (३१) सुदर्शना देवी भी अनुक्रमसे संसारमें परिभ्रमण करती हुई स्त्री-कर्मकी निर्जरा करके छुल्लक सिद्धार्थ हुई है । (३२) हे राजन् ! पूर्वस्नेहवश सिद्धार्थने लवण और अंकुशको अत्यन्त कुशल, धीर और युद्धमें अपराजित बना दिया है । (३३) इस तरह संसार मार्गमें स्थित जीवोंके संसार-दुःखको सुनकर समर्थ तुम सब सदा अप्रमत्त होकर निर्मल धर्मका आचरण करो । (३४)

॥ पद्मचरितमें लवण और अंकुशके पूर्वभवोंका अनुकीर्तन नामक एक सौ चौथा पर्व समाप्त हुआ ॥

१०५. मधु-कैटभका उपाख्यान

हे मगधपति ! पति और पुत्रोंका त्याग करके तीव्र संवेग उत्पन्न होने पर दीक्षित सीताने जो तप किया उसके बारेमें मैं कहता हूँ । (१) उस समय सकलभूषण मुनिद्वारा उपशमप्राप्त सब लोग जिनधर्ममें निरत और भिक्षा-दानमें अधिक उद्यनशील हुए । (२) सौन्दर्य एवं यौवनमें जो देववधुओं सरीखी थी वह तपसे शोषित शरीरवाली सीता जली हुई लताके जैसी मालूम होती थी । (३) पाँच महाव्रतोंको धारण करनेवाली, दुर्भावनासे रहित और स्वभावसे ही सौम्य वह स्त्रीभावकी निन्दा करती हुई बारह प्रकारके तप करने लगी । (४) सिर परके बालोंका लोंच किए हुई और मलिन चोली धारण करनेवाली दुर्बलदेहा वह शास्त्रोक्त विधिके साथ बेला तैला, मासश्रमण आदि तपश्चर्चा करके आहार लेती थी । (५) रति और अरतिसे मुक्त, सतत भावपूर्वक स्वाध्याय एवं ध्यान करनेवाली और संयममें उद्यत वह समिति एवं गुप्तिमें निरत रहती थी । (६)

१. ऊणं । सिरिवद्धं—मु० । २. सयं ठाणं—प्रत्य० । ३. उदरथो चेळो जा०—प्रत्य० । ४. एवं—प्रत्य० ।

५. तुब्भेहि सब्भे—प्रत्य० ।

परिगलियमंस-सोणिय-ण्हारु-छिरा पायडऽद्वियकवोला । सहवङ्घिण्ण वि तथा, जणेण नो लक्खिया सीया ॥ ७ ॥
 एवंविहं तवं 'सा वि सट्ठिवरिसाणि सुमहयं काउं । तेत्तीसं पुण दिव्यंहा, विहिणा सलेहणाउत्ता ॥ ८ ॥
 विहिणाऽऽराहियचरणा, कालं काऊण तत्थ वइदेही । बावीससायरठिई, पडिइन्दो अचुए जाओ ॥ ९ ॥
 मगहाहिव ! माहप्पं, पेच्छसु जिणसासणस्स जं जीवो । मोत्तण जुवइभावं, पुरिसो जाओ सुरवरिन्दो ॥ १० ॥
 सो तत्थ वरविमाणे, सुमेरुसिहरोवमे रयणचित्तं । सुरजुवईहिं परिवुडो, सीइन्दो रमइ सुहपउरो ॥ ११ ॥
 एयाणि य अन्नाणि य, जीवाणं परभवाणुचरियाइं । निमुणिज्जन्ति नराहिव !, मुणिवरकहियाइं बहुयाइं ॥ १२ ॥
 तो भणइ मगहराया, भयवं कह तेहिं अचुए कप्पे । बावीससागरठिई, मुत्ता महु-केढवेहिं पि ॥ १३ ॥
 भणइ तओ गणनाहो, वरिससहस्साणि चेव चउसट्ठी । काऊण तवं विउलं, जाया ते अचुए देवा ॥ १४ ॥
 कालेण जुयसमाणा, अह ते महु-केढवा इहं भरहे । कण्हस्स दो वि पुत्ता, उप्पन्ना सम्ब-यज्जुण्णा ॥ १५ ॥
 छस्समहिया उ लक्खा, वरिसाणं अन्तरं समक्खायं । तित्थयरेहिं महायस !, भारह-रामायणाणं तु ॥ १६ ॥
 पुणरवि य भणइ राया, भयवं ! कह तेहिं दुल्ला बोही । लद्धा तवो य चिण्णो ?, 'एयं साहेहि मे सर्वं ॥ १७ ॥
 तो भणइ इन्द्रभूई, सेणिय ! महु-केढवेहिं अन्नभवे । जह जिणमयम्मि बोहो, लद्धा तं सुणसु एगमणो ॥ १८ ॥
 इह खलु मगहाविसए, सालिगामो त्ति नाम विक्खाओ । सो भुज्जइ तं कालं, राया निस्सन्दिओ नामं ॥ १९ ॥
 विण्णो उ सोमदेवो, तत्थ उ परिवसइ सालिवरगामे । तस्सऽग्गिलाएँ पुत्ता, सिहिभूई वाउभूई य ॥ २० ॥
 अह ते पण्डियमाणी, छक्कम्मरया तिभोगसम्मूढा । सम्मइंसणरहिया, जिणवरधम्मस्स पडणीया ॥ २१ ॥

रक्त-मांस गल जानेसे तथा अस्थिमय कपोलों पर धमनियों और नसोंके स्पष्ट रूपसे दिखाई देनेसे साथमें पले-पोसे लोगों द्वारा भी सीता पहचानी नहीं जाती थी । (७) ऐसा साठ साल तक बड़ा भारी तप करके उसने तैंतीस दिन तक विधि पूर्वक सलेखना की । (८) विधिपूर्वक चारित्रिकी आराधना करके मरने पर वैदेही अच्युत देवलोकमें बाईस सागरोपमकी स्थितिवाला इन्द्र हुई । (९) हे मगधाधिप ! जिन शासनका माहात्म्य तो देखो कि जीव स्त्रीभावका त्याग करके देवेन्द्रके रूपमें पुरुष होते हैं । (१०) सुमेरुके शिखरके समान उन्नत और रत्नोंसे चित्रित उस उत्तम विमानमें सुर-युवतियोंसे घिरा हुआ वह सीतेन्द्र क्रीड़ा करता था । (११) हे राजन् ! मुनिवरके द्वारा कहे गये थे तथा दूसरे बहुत-से परभवके चरित सुने गये । (१२)

तब मगधराज श्रेणिकने पूछा कि, हे भगवन् ! उन मधु एवं कैटभने अच्युत कल्पमें बाईस सागरोपमकी स्थिति कैसे भोगी थी ? (१३) इसपर गणनाथ गौतमने कहा कि—

चौसठ हजार वर्ष तक बड़ा भारी तप करके वे अच्युत देवलोकमें देव हुए थे । (१४) समय आने पर वहाँसे च्युत हो वे मधु और कैटभ इस भरतक्षेत्रमें कृष्णके दो पुत्र राम्ब और प्रद्युम्न रूपसे उत्पन्न हुए । (१५) हे महायश ! तीर्थकरोंने भारत और रामायणके बीच छलाखसे अधिक वर्षका अन्तर कहा है । (१६)

पुनः राजाने पूछा कि, भगवन् ! उन्होंने किस तरह दुर्लभ बोधि प्राप्त की थी और तप किया था ?—यह सब आप मुझे कहें । (१७) तब इन्द्रभुतिने कहा कि, हे श्रेणिक ! मधु एवं कैटभने परभवमें जिन धर्ममें जो सम्यग्दृष्टि प्राप्त की थी उसे तुम एकाग्र मनसे सुनो । (१८)—

इस मगधमें शालिग्राम नामका एक खिल्यात नगर था । उस समय निःप्यन्दित नामका राजा उसका उपभोग करता था । (१९) उस शालिग्राममें एक सोमदेव नामका ब्राह्मण रहता था । अग्निलासे उसे शिखिभूति तथा वायुभूति नामके दो पुत्र हुए । (२०) वे पण्डितमानी, षड्विध कर्मोंमें रत, तीनों प्रकारके भोगोंसे विमूढ़, सम्यग्दर्शनसे रहित और जिनवरके

१. सा तिसट्ठी—प्रत्य० । २. दिवसा वि०—प्रत्य० । ३. ष्यचरिया, कालं—मु० । ४. बुडा, इन्दो सो रमइ—मु० ।
 ५. चउसट्ठी सहस्साइं, वरिं—मु० । ६. एवं—मु० । ७. पडणीया—प्रत्य० ।

कस्सइ कालस्स तओ, विहरन्तो समणसङ्घपरिकिण्णो । अह नन्दिवद्धणमुणी, सालिगामं समणुपत्तो ॥ २२ ॥
 तं चैव महासमणं, उज्जाणत्थं जणो निलुणिकुणं । सालिगामाउ तओ, वन्दणहेउं विणिप्पिडिओ ॥ २३ ॥
 तं अग्नि-वाउभूई, दट्टुं पुच्छन्ति कत्थ अइपउरो । एसो जाइ जणवओ, सवाल-वुद्धो अइतुरन्तो ? ॥ २४ ॥
 अन्नेण ताण सिट्ठं, उज्जाणे आगयस्स समणस्स । वन्दणनिमित्तहेउं, तस्स इमो जाइ गामजणो ॥ २५ ॥
 अह ते जेट्ठ-कणिट्ठा, वायत्थी उवगया मुणिसयासं । जंपन्ति दोण्णि वि जणा, मुणीण पडिकुट्टवयणाइं ॥ २६ ॥
 भो भो तुब्भे त्थमुणी !, जइ जाणह किंचिं सत्थसंबन्धं । तो भणह लोयमज्जे, अइरा मा कुणह वक्खेवं ॥ २७ ॥
 एक्केण मुणिवरेणं, भणिया तुब्भेहि आगया कतो ? । जंपन्ति आगया वि हु, सालिगामाओ अम्हेहिं ॥ २८ ॥
 पुणरवि मुणीण भणिया, कवणाओ भवाओ आगया तुब्भे । एयं माणुसजन्मं ?, कहेह जइ अत्थि पण्डिच्चं ॥ २९ ॥
 तं ते अयाणमाणा, अहोमुहा लज्जिया ठिया विप्पा । ताहे ताण परभवं, कहिज्जण मुणी समाढत्तो ॥ ३० ॥
 गामस्स वणत्थलीए, इमस्स तुब्भे हि दोण्णि वि सियाला । आसि चिय परलोए, मंसाहारा बहुकिलेसा ॥ ३१ ॥
 एत्थेव अत्थि गामे, पामरओ करिसओ गओ छेत्तं । मोत्तूण य उवगरणं, तत्थ पुणो आगओ सगिहं ॥ ३२ ॥
 ते^३ दो वि सियाला तं, उवगरणं खाइज्जण कालगया । कम्मवसेणुप्पन्ना, पुत्ता वि हु सोमदेवस्स ॥ ३३ ॥
 अह सो पभायसमए, पामरओ पत्थिओ नियं खित्तं । पेच्छइ दोण्णि सियालो, उवगरणं खाइज्जण मए ॥ ३४ ॥
 दिविए काऊण तओ, दोण्णि वि ते पत्थिओ निययगेहं । पामरओ कालगओ, जाओ गब्भम्मि सुण्हाए ॥ ३५ ॥
 सरिज्जण पुबजाइं, मूगत्तं कुणह तत्थ सो बालो । कह वाहरामि पुत्तं, तायं सुणहं च^४ जणणी हं ? ॥ ३६ ॥
 जइ नत्थि पच्चओ मे, तो तं वाहरह एत्थ पामरयं । एयं चिय वित्तन्तं, जेण असेसं परिकहेमि ॥ ३७ ॥
 वाहरिओ य मुणीणं, भणिओ जो आसि वच्छ पामरओ । सो हु तुमं दुक्कणं, जाओ गब्भम्मि सुण्हाए ॥ ३८ ॥

धर्मके विरोधी थे । (२१) कुछ कालके बाद श्रमणसंघके साथ विहार करते हुए नन्दिवर्धनमुनि शालिग्राममें पधारे । (२२) वे महाश्रमण उद्यानमें ठहरे हैं ऐसा सुनकर लोग वन्दनके लिए उस शालिग्राममेंसे बाहर निकले । (२३) उस मानव-समूहको देखकर अग्निभूति और वायुभूतिने पूछा कि आबालवृद्ध यह अतिविशाल जनसमुदाय जल्दी-जल्दी कहाँ जा रहा है ? (२४) किसीने उनसे कहा कि उद्यानमें पधारे हुए श्रमणको वन्दन करनेके लिए ये नगरजन जा रहे हैं । (२५) तब शास्त्रार्थकी इच्छावाले वे दोनों ज्येष्ठ और कनिष्ठ भाई मुनिके पास गये । वे दोनों ही मुनिसे प्रतिकूल वचन कहने लगे कि, अरे मुनियों ! यदि तुम कुछ भी शास्त्रकी बात जानते हो तो लोगोंके बीच बोलो । अन्यथा बाधा मत डालो । (२६-२७)

एक मुनिने उनसे पूछा कि तुम कहाँसे आये हो ? उन्होंने कहा कि हम शालिग्रामसे आये हैं । (२८) पुनः मुनिने उनसे पूछा कि किस भयमेंसे इस मनुष्यभवमें आये हो यह, यदि पाण्डित्य है तो, कहो । (२९) उसे न जाननेसे वे ब्राह्मण लज्जित हो मुँह नीचा करके खड़े रहे । तब उन्हें मुनि परभव कहने लगे । (३०) —

इस गाँवकी वनस्थलीमें तुम दोनों परभवमें मांसाहारी और बहुत दुःखी सियार थे । (३१) इसी गाँवमें प्रामरक नामका एक किसान रहता था । वह खेत पर गया और वहाँ उपकरण छोड़कर पुनः अपने घर पर आया । (३२) वे दोनों सियार उस उपकरणको खाकर मर गये । कर्मवशा वे दोनों सोमदेवके पुत्र रूपसे उत्पन्न हुए । (३३) सुबहके समय वह प्रामरक अपने खेत पर गया और उपकरणको खाकर मरे हुए दोनों सियारोंको देखा । (३४) उन दोनोंका प्रेतकर्म करके वह अपने घर पर गया । मरने पर प्रामरक अपनी पुत्रवधूके गर्भमें उत्पन्न हुआ । (३५) पूर्वजन्म याद करके उस बालकने मौन धारण किया कि मैं पुत्रको पिता और पुत्रवधूको माता कैसे कहूँ ? (३६) यदि तुम्हें विश्वास नहीं है तो उस प्रामरकको यहाँ बुलाओ जिससे यह सारा वृत्तान्त मैं कह सुनाऊँ । (३७) मुनिने उसे बुलाया और कहा कि, हे वत्स ! जो प्रामरक था वही तुम दुष्कृतकी वजहसे पुत्रवधूके गर्भसे पैदा हुए हो । (३८) राजा भृत्य होता है और भृत्य राजत्व पाता है ।

१. ०चि अत्थ—प्रत्य० । २. गओ खित्तं—प्रत्य० । ३. तो दो—मु० । ४. जणणीयं—प्रत्य० । ५. ०कहेइ—प्रत्य० ।

राया जायइ भिचो, भिचो रायत्तणं पुण उवेइ । माया वि हवइ धूया, पिया वि पुत्तो समुब्भवइ ॥ ३९ ॥
 एवं अरहइवडीजन्तसमे इह समत्थसंसारे । हिण्डन्ति सबजीवा, सकम्मविप्फंदिया सुइरं ॥ ४० ॥
 एवं संसारठिई, वच्छ ! तुमं जाणिऊण मूगत्तं । मुच्चसु फुडक्खरवयं, जंपसु इह लोयमज्झमि ॥ ४१ ॥
 सो एव भणियमेत्तो, परितुट्ठो पणमिऊण मुणिवसहं । सर्वं जणस्स साहइ, वित्तंतं कोल्हुयाईयं ॥ ४२ ॥
 संवेयजणियभावो, पामरओ दिक्खिओ मुणिसयासे । सुणिऊण तं अणेगा, जाया समणा य समणी य ॥ ४३ ॥
 ते जणवएण विप्पा, उवहसिया कल्यलं करेन्तेणं । एए ते मंसासी उ कोल्हुया बम्भणा जाया ॥ ४४ ॥
 वय-सोळवज्जिएहिं, इमेहिं पसुएहिं पावबुद्धीहिं । मुसिया सबेह पया, धम्मत्थी भोगतिसिएहिं ॥ ४५ ॥
 सवारम्भपवित्ता, अबम्भयारी य इन्दियपसत्ता । भणन्ति चरणहीणा, अबम्भणा बम्भणा लोए ॥ ४६ ॥
 एए तव-चरणटिया, सुद्धा समणा य^२ बम्भणा लोए । वयवन्धसिहाडोवा, खन्तिखमावम्भसुत्ता य ॥ ४७ ॥
 ज्ञाणग्गिहोत्तनिरया, डहन्ति निययं कसायसमिहाओ । साहन्ति मुत्तिमग्गं, समणा इह बम्भणा धीरा ॥ ४८ ॥
 जह केइ नरा लोए, हवन्ति खन्दिन्द-रुद्धनामा उ । तह एए वयरहिया, अबम्भणा बम्भणा भणिया ॥ ४९ ॥
 एवं साहूण थुइं, जंपन्तं जणवयं निसुणिऊणं । मरुभूइ-अग्गिभूई, लज्जियविलिया गया सगिहं ॥ ५० ॥
 नाऊण य उवसग्गं, एज्जन्तं अत्तणो मुणिवरिन्दो ।^३पडिमाइ पेयभवणे, ठाइ तओ धीरगम्भीरो ॥ ५१ ॥
 रोसाणलपज्जलिया, निसासु ते बम्भणा मुणिवहत्थे । पविसन्ति पिउवणं ते, असिवरहत्था महाघोरा ॥ ५२ ॥
 बहुविहचिया पलीविय, जलन्तडज्जन्तमडयसंघायं । गह-भूय-वम्भरक्खस-डाइणि-वेयालभीसणयं ॥ ५३ ॥
 किलिकिलिकिलन्तरक्खस-सिबामुहुज्जलियपेयसंघायं । कवायसत्थपउरं, मडयसमोत्थइयमहिवीढं ॥ ५४ ॥

माता पुत्री होती है और पिता भी पुत्र रूपसे पैदा होता है । (३९) इस तरह रहँटके समान इस समस्त संसारमें सब जीव अपने कर्मसे परिभ्रान्त होकर भटकते हैं । (४०) हे वत्स ! ऐसी संसारस्थिति जानकर तू मौनका त्याग कर और यहाँ लोगोंके बीच स्फुट अक्षरोंवाली वाणीका उच्चारण कर । (४१)

इस प्रकार कहे गये उसने आनन्दित होकर मुनिको प्रणाम किया और लोगोंसे सियार आदिका सारा वृत्तान्त कह सुनाया । (४२) वैराग्यजन्य भावसे युक्त प्रामरकने मुनिके पास दीक्षा ली । उसे सुनकर अनेक लोग श्रमण और श्रमणी हुए । (४३) कोलाहल करते हुए लोग उन ब्राह्मणों का उपहास करने लगे कि वे मांसभक्षक सियार ये ब्राह्मण हुए हैं । (४४) व्रत एवं शीलसे रहित, पापबुद्धि और भोगोंके प्यासे इन पशुओंने सारी धर्मार्थी प्रजाको ठगा है । (४५) सभी हिंसक कार्योंमें प्रवृत्ति करनेवाले, अब्रह्मचारी, इन्द्रियोंमें आसक्त, चारित्रहीन ये अब्राह्मण लोकमें ब्राह्मण कहे जाते हैं । (४६) तपश्चर्यामें स्थित, शुद्ध, व्रतरूपी शिखाबन्धके आटोपवाले तथा क्षान्ति-क्षमारूपी यज्ञोपवीतसे सम्पन्न ये श्रमण ही लोकमें ब्राह्मण हैं । (४७) ध्यानरूपी अग्निहोत्रमें निरत ये कवायरूपी समिधाओंको जलाते हैं । श्रमणरूपी ये धीर ब्राह्मण यहाँ मुक्तिमार्ग साधते हैं । (४८) जैसे इस लोकमें कई मनुष्य स्कन्द, इन्द्र, रुद्र के नामधारी होते हैं वैसे ही व्रतरहित ये अब्राह्मण ब्राह्मण कहे गये हैं । (४९)

इस तरह लोकोंको साधुकी स्तुति करते सुन मरुभूति और अग्निभूति लज्जित होकर अपने घर पर गये । (५०) अपने पर आनेवाले उपसर्गको जानकर धीर-गम्भीर वह मुनिवर श्मशानमें ध्यान लगाकर स्थित हुए । (५१) रोषाग्निसे प्रज्वलित वे अतिभयंकर ब्राह्मण मुनिके वधके लिए हाथमें तलवार लेकर श्मशानमें प्रविष्ट हुए । (५२) वहाँ अनेक चिताएँ जली हुई थीं ; जले और दग्ध मुरदोंका ढेर लगा था ; ग्रह, भूत, ब्रह्मराक्षस, डाकिनी और वैतालोंसे वह भयंकर था ; किलकिल आवाज करते हुए राक्षसों और गीदड़के जैसे मुखवालोंसे तथा ऊँची ज्वालाओंसे युक्त वह प्रेतोंके समूहसे व्याप्त था ; राक्षसोंके शस्त्रोंसे वह प्रचुर था ; उसकी जमीन मुरदोंसे ढाई हुई थी ; पकाये जाते मुरदोंके फेफड़ोंमेंसे

१. ०प्फंदियं सु०—सु० । २. उ—प्रत्य० । ३. ०माउ पिउवणे सो, ठाइ—सु० ।

पचन्तमडयं गुप्फससिमिसिमियगलन्तरुहिरविच्छड्डुं । डाङ्गिकबन्धकङ्कियभीमं, रूपन्तमूयगणं ॥ ५५ ॥
 कडपूयणगहियरडन्तडिभयं कयतिगिच्छमन्तरवं । मण्डलयपवणुदधुयइन्दाउहजणियनहमग्गं ॥ ५६ ॥
 विज्जासाहणसुद्वियजंगूलियतारजणियमन्तरवं । वायसअवहियमंसं, उद्धमुहुजइयजम्बुगणं ॥ ५७ ॥
 कथइ पेयायङ्कियमडयविकीरन्तकलहसदालं । कथइ वेयालाहयतरुणियरभमन्तमूयगणं ॥ ५८ ॥
 कथइ रडन्तरिदं, अन्नतो भुगुभुगेन्तजम्बुगणं । घुघुघुघुएन्तघूर्यं, कथइ कयपिङ्गलाबोलं ॥ ५९ ॥
 कथइ कटोरहुयवहतडतडफुडन्तअडिसदालं । कथइ साणायङ्किय-मडयामिसंलगजुद्धधणिं ॥ ६० ॥
 कथइ कवालधवलं, कथइ मसिधूमधूलिधूसरियं । किसुयवणं व कथइ, जालामालाउलं दित्तं ॥ ६१ ॥
 एयारिसे मसाणे, ज्ञाणत्थं मुणिवरं पलोएउं । विप्पा बहुज्जयमई, सविज्जण मुणि समाढत्ता ॥ ६२ ॥
 रे समण ! इह मसाणे, मारिज्जन्तं तुमं धरउ लोओ । पचन्तखदेवए वि हु, जं निन्दसि बम्भणे अम्हे ॥ ६३ ॥
 अम्हेहिं भाससि तुमं, जइ एए जम्बुगा परभवम्मि । आसि किर दोण्णि वि जणा, एए विप्पा समुप्पन्ना ॥ ६४ ॥
 ते एव भाणिज्जणं, दट्टोद्धा असिवराइं कड्डुउं । पहणन्ता मुणिवसहं तु थम्भिया ताव जक्खेणं ॥ ६५ ॥
 एवं क्रमेण रयणी, विप्पाणं थम्भियाण वोलीणा । उइओ य दियसणाहो, साहण समाणिओ जोगो ॥ ६६ ॥
 तावागओ समत्थो, सड्डो सह जणवएण मुणिवसमं । वन्दइ विम्हियहियओ, पेच्छन्तो थम्भिए विप्पे ॥ ६७ ॥
 भणिया य जणवएणं, एए विप्पा पराइया वाए । समणेण गुणवरेणं, जाया वि हु तेण पडिकुद्ध ॥ ६८ ॥
 चिन्तेन्ति तओ विप्पा, एस पहाओ मुणित्स निक्खुत्तं । बलविरियसमत्था वि य, तेण ऽम्हे थम्भिया इहइं ॥ ६९ ॥

सिम-सिम करके भरते हुए रुधिरसे वह आच्छन्न था; डाकिनियोंके धड़ोंमेंसे बाहर निकले हुए और भयंकर आवाज करनेवाले भूतगण उसमें थे; उसमें कटपूतन (व्यन्तरदेव) देव रोते हुए बच्चे ले रहे थे; चिकित्साके लिए मंत्रध्वनि वहाँ की जा रही थी, पवनके द्वारा उठी हुई मंडलाकार धूलसे आकाशमार्गमें इन्द्रधनुष उत्पन्न हुआ था, विश्वासाधनके लिए अच्छी तरहसे स्थित जांगुलिकों (विशमंत्रका जाप करनेवालों) द्वारा ऊँचे स्वरसे की जानेवाले मंत्रध्वनिसे वह व्याप्त था, उसमें कौबे मांस छीन रहे थे और गोदड़ ऊँचा मुँह करके चिल्ला रहे थे। (५३-५७) कहीं प्रेतों द्वारा आकर्षित मुरदोंके विखर जानेके कारण कलह ध्वनिसे वह शब्दित था, कहीं धैताल द्वारा आहत वृक्षोंमें क्रन्दन करनेवाले भूतगण घूम रहे थे, कहीं कौए चिल्ला रहे थे, सियार भुग्-भुग् आवाज कर रहे थे, कहीं उल्लू घू-घू आवाज कर रहा था तो कहीं कपिजल पक्षी बोल रहा था, कहीं भयंकर आगसे तड-तड फूटती हुई हड्डियोंसे वह शब्दित था, तो कहीं कुत्तों द्वारा खींचे जाते मुरदोंके मांसको लेकर युद्धकी ललकारें हो रही थीं, कहीं वह खोपड़ियोंसे सफेद और कहीं काले धूएँ और धूलसे धूसरित था, कहीं टेसूका जंगल था, तो कहीं जलता हुई ज्वालओंके समूहसे वह युक्त था। (५८-६१)

ऐसे श्मशानमें ध्यानस्थ मुनिवरको देखकर बधके लिए उद्यत बुद्धिवाले वे ब्राह्मण मुनिको सुनाने लगे कि, अरे श्रमण ! इस श्मशानमें हमारे द्वारा मारे जाते तुम्हारे लोग रक्षा करे, क्योंकि साक्षात् देवतारूप हम ब्राह्मणोंकी तुमने निन्दा की है। (६२-६३) हमारे लिए तुमने कहा था कि ये दोनों व्यक्ति परभवमें गोदड़ थे। वे ब्राह्मण रूपसे पैदा हुए हैं। (६४) ऐसा कहकर हॉठ पीसते हुए उन्होंने तलवार खींचकर जैसे ही मुनिवरके ऊपर प्रहार किया वैसे ही एक यक्षने उन्हें थाम लिया। (६५) इस तरह थामे हुए ब्राह्मणोंकी रात क्रमशः व्यतीत हुई। सूर्य उदित हुआ। साधुने योग समाप्त किया। (६६) उस समय लोगोंके साथ समस्त संघ मुनिवरको वन्दन करनेके लिए आया। हृदयमें विस्मित उस संघने उन स्तम्भित ब्राह्मणोंको देखा। (६७) लोगोंने कहा कि बादमें ये ब्राह्मण श्रमण गुरुवरों द्वारा पराजित हुए थे। उसीसे ये कुपित हुए हैं। (६८) तब ब्राह्मण सोचने लगे कि अवर्य ही यह प्रभाव मुनिका है। इसीसे बल एवं वीर्यमें

१. •यफुफुससिमिसियग•—प्रत्य• । २. •न्तपेयसदालं—मु० । ३. यालहयं, रुणरुणिय भम०—मु० । ४. •सलद्धधणिय-
 च्चइं—प्रत्य• । ५. गुणवरेणं—प्रत्य• ।

एयाएँ अवत्थाए, जइ अम्हे कह वि निष्फडीहामो । तो मुणिवरस्स वयणं, निस्सन्देहं करीहामो ॥ ७० ॥
 एयन्तरम्मि पत्तो, समयं चिय अग्गिलाएँ तूरन्तो । विप्पो उ सोमदेवो, पणमइ साहु पसाएन्तो ॥ ७१ ॥
 पणओ पुणो पुणो चिय, समणं तो बम्भणो भणइ एवं । जीवन्तु देव एए, दुप्पुत्ता तुज्झ वयणेणं ॥ ७२ ॥
 समसत्तु-मिच्चभावा, समसुह-दुक्खा पसंस-निन्दसमा । समणा पसत्थचित्ता, हवन्ति पावाण वि अपावा ॥ ७३ ॥
 ताव चिय संपत्तो, जक्खो तं बम्भणं भणइ रुट्ठो । मा देसि संपइ तुमं, अब्भक्खाणं मुणिवरस्स ॥ ७४ ॥
 पावा य कल्लसचित्ता, मिच्छादिट्ठी मुणी दुगुंछन्ता । रे विप्प ! तुज्झ पुत्ता, इमे मए थम्भिया दुट्ठा ॥ ७५ ॥
 मारेन्तो लहइ वहं, सम्माणेन्तो य लहइ सम्माणं । जो जं करेइ कम्मं, सो तस्स फलं तु अणुहवइ ॥ ७६ ॥
 तं एव जंपमाणं, अइ चण्डं दारुणं महादुक्खं । विन्नवइ पायवडिओ, साहुं च पुणो पुणो विप्पो ॥ ७७ ॥
 तो भणइ मुणी जक्खं, मरिससु दोसं इमाण विप्पाणं । मा कुणसु जीवघायं, मज्झ कए भइ ! दीणाणं ॥ ७८ ॥
 जं आणवेसि मुणिवर !, एवं भणिऊण तत्थ जक्खेणं । ते बम्भणा विमुक्का, आसत्था साहवं पणया ॥ ७९ ॥
 ते अग्गि-वाउभूई, वेयसुइ उज्झिऊण उवसन्ता । साहुस्स सन्नियासे, दो वि जणा सावथा जाया ॥ ८० ॥
 जिणसासणाणुरत्ता, गिहिधम्मं पालिऊण कालया । सोहम्मकप्पवासी, दोण्णि य देवा समुप्पन्ना ॥ ८१ ॥
 ततो चुया समाणा, साएयाए समुद्दत्तस्स । सेट्ठिस्स धारिणीए, पियाएँ पुत्ता समुप्पन्ना ॥ ८२ ॥
 नन्दण-नयणाणन्दा, पुणरवि सायारधम्मजोएणं । मरिऊण तथो जाया, देवा सोहम्मकप्पम्मि ॥ ८३ ॥
 ते तत्थ वरविमाणे, तुडिय-इय-कडय-कुण्डलाहरणा । मुज्जन्ति विसयसोक्खं, सुरवहुपरिवारिया सुइरं ॥ ८४ ॥

समर्थ होने पर भी हम यहाँ पर स्तम्भित किये गये हैं । (६९) इस अवस्थामेंसे यदि हमें किसी तरहसे छुटकारा मिलेगा तो हम निस्सन्देह रूपसे मुनिवरके वचनका पालन करेंगे । (७०)

उस समय अग्निलाके साथ सोमदेव ब्राह्मण जल्दी जल्दी आया और प्रशंसा करके साधुको प्रणाम किया । (७१) बारंबार श्रमणको प्रणाम करके ब्राह्मणने ऐसा कहा कि, हे देव ! आपके वचनसे ये दुष्ट पुत्र जीवित रहे । (७२) शत्रु और मित्रमें समभाव रखनेवाले, सुख और दुःखमें सम तथा निन्दा एवं प्रशंसामें भी समवृत्ति और प्रसन्न चित्तवाले श्रमण पापियोंके ऊपर भी निष्पाप होते हैं । (७३) उसी समय रुष्ट यज्ञ उपस्थित हुआ और उस ब्राह्मणसे कहने लगा कि अब तुम मुनिवर पर मिथ्या दोषरोप मत लगाओ । (७४) रे विप्र ! पापी, मलिन चित्तवाले, मुनिके निन्दक तुम्हारे इन दुष्ट पुत्रोंको मैंने स्तम्भित कर दिया है । (७५) मारने पर वध मिलता है और सम्मान करने पर सम्मान मिलता है । जो जैसा कार्य करता है वह उसका फल चखता है । (७६) इस तरह कहते हुए अतिप्रचण्ड, भयंकर और महादुःखदायी उस यक्षके एवं साधुके पैरोंमें पड़कर ब्राह्मण पुनः पुनः बिनती करने लगा । (७७) तब मुनिने यक्षसे कहा कि इन ब्राह्मणोंका दोष क्षमा करो ! हे भद्र ! मेरे लिए दीनजनोंका जीवघात मत करो । (७८) हे मुनिवर ! जैसी आज्ञा—ऐसा कहकर यक्षने उन ब्राह्मणोंको छोड़ दिया । अश्वस्त उन्होंने साधुको प्रणाम किया । (७९) क्रोध आदि विकाररहित उन अग्निभूति और वायुभूतिने वेदश्रुतिका परित्याग किया । दोनों जन साधुके पास श्रावक हुए । (८०)

जिनशासनमें अनुरक्त वे दोनों गृहस्थ-धर्मका पालन करके मरने पर सौधर्म देवलोकावासी देवके रूपमें उत्पन्न हुए । (८१) वहाँ से च्युत होने पर साकेतनगरीमें समुद्रदत्त सेठकी धारिणी नामकी प्रियासे पुत्रके रूपमें उत्पन्न हुए । (८२) नन्दन और नयनानन्द वे पुनः गृहस्थधर्मके प्रभावसे मरकर सौधर्मकल्पमें देव हुए । (८३) उस उत्तम विमानमें तोड़े, बाजूबन्द, कड़े, एवं कुण्डलोंसे विभूषित और देवकन्याओंसे घिरे हुए उन्होंने चिरकाल तक विषयसुखका

१. समणं तं ब०—प्रत्य० । २. एए पुत्ता मे तुज्झ—प्रत्य० । ३. फलं समणुहोइ—मु० । ४. गिह धम्मं—प्रत्य० ।

५. वि—प्रत्य० ।

चइया अमरवईए, देवीए कुच्छिसंभवा जाया । ते हेमणाहपुत्ता, विणियाए सुरकुमारसमा ॥ ८५ ॥
 महु-केढवा नरिन्दा, जाया तेलोकपायडपयावा । भुज्जन्ति निरवसेसं, पुहईं जियसत्तुसामन्ता ॥ ८६ ॥
 नवरं ताण न षणमइ, भीमो गिरिसिहरदुग्गमावत्थो । उवासेइ य देसं, उइष्णसेन्नो कयन्तसमो ॥ ८७ ॥
 वडनयरसामिष्णं, भीमस्स भएण वीरसेणेणं । संपेसिया य लेहा, तूरन्ता महुनरिन्दस्स ॥ ८८ ॥
 सुणिऊण य लेहत्थं, देसविणासं तओ परमरुद्धो । निष्फिडइ य महुराया, तस्सुवरिं साहणसमगो ॥ ८९ ॥
 अह सो कमेण पत्तो, वडनयरं पविसिउं कयाहारो । तं वीरसेणभज्जं, चन्दाभं पेच्छइ नरिन्दो ॥ ९० ॥
 चिन्तेइ तो मणेणं, इमाएँ सह जः न भुज्जिमो भोगे । तो मज्झ इमं रज्जं, निस्सारं निष्फलं ३जीयं ॥ ९१ ॥
 कज्जा-ऽकज्जवियन्नू, पडिसत्तुं निज्जिऊणं ३ संगामे । पुणरवि साएयपुरिं, कमेण संपत्थिओ राया ॥ ९२ ॥
 काऊण य मन्तणयं, राया पूएइ सबसामन्ते । वाहरइ वीरसेणं, ताहे अन्तेउरसमगं ॥ ९३ ॥
 सम्माणिओ य सो वि य, विसज्जिओ सबनरवइसमगो । नवरं चिय चन्दाभा, महुणा अन्तेउरे ४छूढा ॥ ९४ ॥
 अभिसेयपट्टबन्धं, चन्दाभा पविया नरिन्देणं । जाया य महादेवी, सबाण वि चेव महिल्लणं ॥ ९५ ॥
 अह सो महू नरिन्दो, चन्दाभासहगओ तहिं भवणे । रइसागरोवगाढो, गयं पि कालं न लक्खेइ ॥ ९६ ॥
 सो य पुण वीरसेणो, हरियं नाऊण अत्तणो कन्तं । षणसोगसल्लियङ्को, सहसा उम्मत्तओ जाओ ॥ ९७ ॥
 एवं अणुहविय चिरं, कन्ताविरहम्मि दुस्सहं दुक्खं । मण्डवसाहुसयासे, पवइओ वीरसेणो ५ सो ॥ ९८ ॥
 सो वीरसेणसाहू, तवचरणं अज्जिऊण कालगओ । दिवज्जयमउडधरो, देवो वेमाणिओ जाओ ॥ ९९ ॥
 अह सो महू नरिन्दो, चिद्धइ धम्मासणे सुहनिविट्ठो । मन्तोहिं सहालावं, ववहारवियारणं कुणइ ॥ १०० ॥

उपभोग किया । (८४) च्युत होने पर विनीता नगरीमें अमरवती देवीकी कुक्षिसे उत्पन्न वे हेमनाथके देवकुमारके समान सुन्दर पुत्र हुए । (८५) वे मधु और कैटभ राजा तीनों लोकोंमें व्यक्त प्रतापवाले हुए और शत्रु-राजाओंको लीन-समग्र पृथ्वीका उपभोग करने लगे । (८६) परन्तु पर्वतके शिखर पर आये हुए दुर्गमें स्थित भीम उनके समस्त युक्तता नहीं था । यमके जैसा और प्रबल सैन्यवाला वह देशको उजाड़ने लगा । (८७) वडनगरके स्वामी वीरसेनने भीमके भयसे मधु राजाके पास फौरन पत्र भेजे । (८८) पत्रमें लिखे हुए देशके नाशके बारेमें सुनकर अत्यन्त क्रुद्ध मधुराजा उसके ऊपर आक्रमण करनेके लिए सेनाके साथ निकला । (८९) क्रमशः चलता हुआ वह वडनगर पहुँचा । प्रवेश करके भोजन करके राजाने वीरसेनकी भार्या चन्द्राभाको देखा । (९०) तब वह मनमें सोचने लगा कि यदि मैं इसके साथ भोगी नहीं भोगूँगा तो मेरा यह राज्य निस्सार है और यह जीवन निष्फल है । (९१) कार्य-अकार्यको जाननेवाले उसने विरोधी शत्रुको संग्राममें जोत लिया । राजाने साकेतपुरीकी ओर पुनः क्रमशः प्रस्थान किया । (९२) मंत्रणा करके राजाने सब सामन्तोंका पूजा-सत्कार किया । तब अन्तःपुरके साथ वीरसेनको बुलाया । (९३) सम्मानित उसे भी सब राजाओंके साथ विसर्जित किया, किन्तु मधुने चन्द्राभाको अन्तःपुरमें रख लिया । (९४) राजासे चन्द्राभाने अभिषेक का पट्टबन्ध पाया । सभी महिलाओंकी वह महादेवी हुई । (९५) उस महलमें चन्द्रभाके साथ प्रेमसागरमें लीन वह मधु राजा बीते हुए समयको भी नहीं जानता था । (९६)

उधर वह वीरसेन अपनी पत्नीका अपहरण हुआ है ऐसा जानकर शरीरमें शोकसे अत्यन्त पीड़ित हो सहसा उन्मत्त हो गया । (९७) इस तरह चिरकाल तक पत्नीके विरहमें अत्यन्त दुःखित हो वीरसेन राजाने मण्डप साधुके पास प्रव्रज्या ली । (९८) वह वीरसेन साधु तपश्चर्या करके मरने पर दिव्य अंगद एवं मुकुटधारी वैमानिक देव हुआ । (९९)

एक दिवस धर्मासन पर सुखपूर्वक बैठा हुआ मधु राजा मंत्रियोंके साथ परामर्श और व्यवहारकी विचारणा कर रहा था । (१००) उस व्यवहारको छोड़कर वह अपने भवन की ओर चला । चन्द्राभाने पूछा कि हे नाथ ! आज विलम्ब

१. सामन्तं—सु० । २. जायं—सु० । ३. षण समरमुहे । पु०—प्रत्य० । ४. वृद्धा—सु० । ५. षो य—प्रत्य० ।

तं चेव उ ववहारं, राया मोत्तुण पत्थिओ समिहं । भणिओ चन्दाभाए, किं अज्ज चिरावियं सामि ? ॥ १०१ ॥
 तेण वि सा पडिभणिया, ववहारो पारदारियस्स पिए ! । आसि न तीरइ छेतुं, चिरावियं तेण अज्ज मए ॥ १०२ ॥
 तो भणइ विहसिऊणं, चन्दाभा पारदारियं सामि ! । पूएहि पयत्तेणं, न तस्स दोसो हवइ लोए ॥ १०३ ॥
 सुणिऊण तीएँ वयणं, रुट्ठो महुपत्थिवो भणइ एवं । जो निग्गहस्स भागी, सो कह पूइज्जए दुट्ठो ? ॥ १०४ ॥
 जइ निग्गहं नराहि व, कुणसि तुमं पारदारियनरस्स । घोरं तु महादण्डं, किं न हु तं अत्तणो कुणसि ? ॥ १०५ ॥
 पढमपरदारसेवी, सामि ! तुमं सयलवसुमईनाहो । पच्छा हवइ य लोओ, जह राया तह पया सवा ॥ १०६ ॥
 सयमेव नरवरिन्दो, जत्थ उ परदारिओ हवइ दुट्ठो । तत्थ उ किं ववहारो, कीरइ लोगस्स मज्झमि ? ॥ १०७ ॥
 सुणिऊण वयणमेयं, पडिबुद्धो तक्खणं महु राया । निन्दइ पुणो पुणो च्चिय, अप्पाणं जायसंवेगो ॥ १०८ ॥
 कुलवद्धणस्स रज्जं, दाउं सह केढवेण महराया । निक्खमइ दढधिईओ, पासे मुणिसीहसेणस्स ॥ १०९ ॥
 चन्दाभा वि महाकुलसंभूया उज्झिऊण रायसिंरिं । तस्सेव पायमूले, मुणिस्स दिक्खं चिय पवन्ना ॥ ११० ॥
 घोरं काऊण तवं, कालगया आरणच्चुए कप्पे । महु-केढवाऽणुजाया, दोण्णि वि ते इन्दपडिइन्दा ॥ १११ ॥
 समणी वि य चन्दाभा, संजम-तव-नियम-जोगजुत्तमणा । कालगया उववन्ना, देवी दिव्वेण रूवेणं ॥ ११२ ॥
 बावीससागराई, जह तेहि सुहं मणोहरं भुत्तं । सेणिय ! अच्चुयकप्पे, सीया इन्दो^३ वि य तहेव ॥ ११३ ॥

इमं महु-केढवरायचेट्ठियं, समासओ तुज्ज मए निवेइयं ।

नरिन्द ! धीरट्ठकुमारसंगयं, सुणेहि एत्तो विमलाणुकित्तणं ॥ ११४ ॥

॥ इइ पउमचरिए महु-केढवउवक्खाणं नाम पञ्चुत्तरसयं पव्वं समत्तं ॥

क्यों हुआ ? (१०१) उसने भी उसे उत्तरमें कहा कि, हे प्रिये! परस्त्री में लम्पटका एक मुक़द्दमा था। उसके निर्णयका पता नहीं चलता था। इससे आज मुझे विलम्ब हुआ। (१०२) तब चन्द्राभाने हँसकर कहा कि, हे स्वामी! तुम उसकी प्रयत्नसे पूजा करो परस्त्रीसेवन करनेवाले का लोकमें दोष नहीं होता। (१०३) उसका कथन सुनकर रुष्ट मधु राजाने ऐसा कहा कि जो दण्डका भागी है वह दुष्ट कैसे पूजा जायगा? (१०४) हे राजन्! परस्त्रीलम्पट मनुष्यको तुम घोर दण्ड देते हो, तो अपने आपको दण्ड क्यों नहीं देते? (१०५) हे स्वामी! सारी पृथ्वीके मालिक तुम प्रथम परदारसेवी हो। बादमें लोग हैं। जैसा राजा वैसी सारी प्रजा होती है। (१०६) जहाँ स्वयं राजा ही दुष्ट व परस्त्रीलम्पट होता है वहाँ लोगोंके बीच क्या फैसला किया जाता होगा? (१०७)

यह कथन सुनकर मधु राजा तत्काल प्रतिबुद्ध हुआ। विरक्त वह अपने आपकी पुनः पुनः निन्दा करने लगा। (१०८) कुलवर्धनको राज्य देकर दृढ़ बुद्धिवाले मधु राजाने कैटभके साथ सिंहसेन मुनिके पास दीक्षा ली। (१०९) बड़े कुलमें उत्पन्न चन्द्राभाने भी राज्यकी लक्ष्मीका परित्याग कर उसी मुनिके चरणों में दीक्षा अंगीकार की। (११०) घोर तप करके मरने पर वे दोनों मधु और कैटभ आरण और अच्युत कल्पमें इन्द्र और प्रति-इन्द्रके रूपमें पैदा हुए। (१११) संयम, तप, नियम और योगमें युक्त मनवाली श्रमणी चन्द्राभा भी मरने पर दिव्य रूपसे सम्पन्न देवीके रूपमें उत्पन्न हुई। (११२) हे श्रेणिक! जिस तरह उन्होंने बाईस सागरोपम तक अच्युत देवलोकमें मनोहर सुख भोगा उसी तरह इन्द्र रूपसे सीताने भी भोगा। (११३) हे राजन्! मधु एवं कैटभ राजाओंका चरित मैंने तुमसे संक्षेपमें कहा। अब आठ धीर कुमारोंका विमल एवं श्लाघनीय चरित सुनो। (११४)

॥ पञ्चचरितमें मधु-कैटभका उपाख्यात नामक एक सौ पाँचवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

१. षण्डं तो किं ण हु अ०—प्रत्य० । २. अत्ताणं—प्रत्य० । ३. इन्दो च्चिय—प्रत्य० ।

१०६. लक्ष्मणकुमारनिष्क्रमणपर्व

कञ्चननगराहिवर्दे, कणारहो णाम खेयरो स्रो । महिला तस्स 'सयहुया, दोण्णि य धूयाउ कन्नाओ ॥ १ ॥
 ताणं सयंवरट्टे, सबे वि य खेयरा समाहूया । कणयरहेण तुरन्तो, रामस्स वि पेसिओ लेहो ॥ २ ॥
 सुणिऊण य लेहत्थं, हलहर-नारायणा सुयसमग्गा । विजाहरपरिकिण्णा, तं कणयपुरं समणुपत्ता ॥ ३ ॥
 ताव सहासु निविट्ठा, सबे वि य उभयसेदिसामन्ता । आहरणभूसियङ्गा, देवा वं महिद्धिसंजुत्ता ॥ ४ ॥
 रामो ल्वखणसहिओ, कुमारपरिवारिओ विमाणाओ । अवयरिऊण निविट्ठो, तत्थेव सहाएँ सुरसरिसो ॥ ५ ॥
 ताव य दिणे पसत्थे, कन्नाओ दो वि कयविभूसाओ । तं चेव रायउदहिं, जणकल्लोलं पविट्ठाओ ॥ ६ ॥
 ताणं चिय मयहरओ, दावेइ नराहिवे बहुवियप्पे । हरि-वसह-सिहि-पवंगम-गरुड-महानागचिन्धाले ॥ ७ ॥
 मयहरयदाविए ते, जहकमं नरवई पलोएउं । कन्नाहि कया दिट्ठी, लवं-उकुसाणं घणसिणेहा ॥ ८ ॥
 मन्दाइणीएँ गहिओ, अणङ्गलवणो अणङ्गसमरूवो । चन्दमुहीए वि तओ, गन्तुं मयणंकुसो वरिओ ॥ ९ ॥
 अह तत्थ जणसमूहे, जाओ च्चिय हलहलारवो गहिरो । जय-हसिय-गीय-वाइय-विमुकहंकारनुक्कारो ॥ १० ॥
 साहु ति साहु लोगो, जंपइ सीसङ्गुलिं भमाडेन्तो । अणुसरिसो संजोगो, अन्हेहि 'सयंवरे दिट्ठो ॥ ११ ॥
 गम्भीरधीरगरुयं, एसा मन्दाइणी गया लवणं । मयणंकुसं सुरुवं, चन्दमुही पाविया धीरं ॥ १२ ॥
 साहुकारमुहरवं, लोगं सुणिऊण ल्वखणस्स सुया । लवणं-उकुसाण रुद्धा, सन्नज्जेउं समाढत्ता ॥ १३ ॥
 देवीण विसल्लाईण नन्दणा अट्ट वरकुमारा ते । पन्नासूणोहिं तिहिं, सएहि भाईण परिकिण्णा ॥ १४ ॥

१०६. कुमारोंका निष्क्रमण

कांचननगरका स्वामी कनकरथ नामका एक शूरवीर खेचर था। उसकी पत्नी शतदुता थी। उसकी दो अविवाहित पुत्रियाँ थीं। (१) उनके स्वयंस्वरके लिए सभी खेचर बुलाये गये। कनकरथने रामके पास भी फौरन लेख भेजा। (२) लेखमें जो लिखा था वह सुनकर विद्याधरोंसे घिरे हुए राम और लक्ष्मण पुत्रोंके साथ उस कनकपुरमें आ पहुँचे। (३) तब सभामें आभूषणोंसे भूषित शरीरवाले और देवोंके समान बड़ी भारी ऋद्धिसे युक्त दोनों श्रेणियोंके सब सामन्त बैठ गये। (४) कुमारोंसे घिरे हुए देव जैसे राम लक्ष्मणके साथ विमानमेंसे उतरकर उसी सभामें जा बैठे। (५) तब शुभ दिनमें अलंकृत दोनों कन्याएँ लोगोंरूपी तरंगोंवाले उस राजसमुद्रमें प्रविष्ट हुईं। (६) सिंह, वृषभ, मोर, वानर, गरुण एवं महानागके चिह्नोंसे अंकित अनेक राजा कंचुकीने उन्हें दिखाये। (७) अनुक्रमसे कंचुकी द्वारा दिखाये गये राजाओंकी देखती हुईं उन कन्याओं ने सघन स्नेहयुक्त दृष्टि लवण और अंकुश पर डाली। (८) मन्दाकिनीने अनंगके समान रूपवाले अनंग लवणको अंगीकार किया तो चन्द्रमुखीने भी जाकर मदनांकुशका वरण किया। (९) तब उस जनसमूहमें जयध्वनि, हास्य, गाना-बजाना तथा हुंकार और गर्जना जिसमें हो रही है, ऐसा गम्भीर कोलाहल मच गया। (१०) मस्तक और उँगली घुमाते हुए लोग 'अच्छा हुआ, अच्छा हुआ।' स्वयंस्वरमें हमने सदृशका सदृशके साथ योग देखा है— ऐसा कहने लगे। (११) यह मन्दाकिनी गम्भीर और धीर बड़े लवणके साथ गई है और चन्द्रमुखीने सुन्दर धीर मदनांकुशको पाया है। (१२)

मुखसे साधुवाद कहते हुए लोगोंको सुनकर लक्ष्मणके पुत्र लवण व अंकुशके ऊपर रुष्ट हुए और कवच धारण करने लगे। (१३) विशल्या आदि देवियोंके पुत्र वे आठ कुमारवर दूसरे ढाई सौ भाइयोंसे घिरे हुए थे। लवण और

१. सयंहूय, दो—प्रत्य० । २. ण्णा कणयपुरं चेवमणु—प्रत्य० । ३. य—मु० । ४. कण्णाहिं दिव दिट्ठी—प्रत्य० । ५. यपमुक्क—प्रत्य० । ६. सयंवरो—प्रत्य० । ७. धीरा—मु० ।

लवणं-ऽकुसाण कुद्धं, भाइवलं तेहि अट्टहि जणेहिं । मन्तेहि व उवसमियं, सुयंगमाणं समूहं व ॥ १५ ॥
ताहे लवणं-ऽकुसाणं, पाणिमाहणं कमेण निवत्तं । बहुतूर-सङ्घपउरं, नच्चन्तविल्लसिणिजणेहं ॥ १६ ॥
ते लक्खणस्स पुत्ता, दट्टुण सयंवरिं महारिद्धिं । अह भाणिउं पयत्ता, सामरिसा दुट्टवयणाइं ॥ १७ ॥
अम्हे किं केण हीणा, गुणेहिं एयाण जाणइसुयाणं ! । जेणं चिय परिहरिया, कन्नाहिं विवेगरहियाहिं ॥ १८ ॥
एयाणि य अन्नाणि य, सोयन्ता तत्थ वरकुमारा ते । भणिया रूवमईए, सुएण अइबुद्धिमन्तेणं ॥ १९ ॥
महिलाएँ कए कम्हा, सोयह तुब्भेत्य दारुणं सबे । होहह उवहसणिज्जा, इमाएँ चेट्टाएँ लोगस्स ? ॥ २० ॥
जं जेण कयं कम्मं, सुहं व असुहं व एत्थ संसारे । तं तेण पावियबं, तुब्भे मा कुणह परितावं ॥ २१ ॥
एयाण अदधुवाणं, कयलीयम्म व साररहियाणं । भोगण विससमाणं, कएण मा दुक्खिया होह ॥ २२ ॥
तायस्स मए अङ्गे, ठिएण वालेण पोत्थयम्मि सुयं । वयणं जह मणुयभवो, भवाण सन्वुत्तमो एसो ॥ २३ ॥
तं एव इमं लद्धुं, माणुसजम्मं जयम्मि अइदुलहं । कुणह परलोयहियं, जिणवरधम्मं पयत्तेणं ॥ २४ ॥
दाणेण साहवाणं, भोगो लब्भइ तवेण देवत्तं । नाणेण सिद्धिसोवस्सं, पाविज्जइ सीलसहिएणं ॥ २५ ॥
जायस्स धुवं मरणं, दोग्गइगमणं च होइ परलोगे । तं एव जाणमाणा, सबे वि य कुणह जिणधम्मं ॥ २६ ॥
सुणिज्जण वयणमेयं, पडिबुद्धा ते तंहिं कुमारवरा । पियरं कयञ्जलिउडा, भणन्ति निसुणेहिं विन्नप्यं ॥ २७ ॥
नइ ताय ! इच्छसि हियं, अम्हाणं वल्लभाण पुत्ताणं । तो मा काहिसि विग्घं, दिक्खाभिमुहाण सवाणं ॥ २८ ॥
संसारम्मि अणन्ते, परिभमिया विसयलोलुया अम्हे । दुक्खाणि अणुहवन्ता, संपइ इच्छामि पवइउं ॥ २९ ॥
तो भणइ लच्छिनिलओ, वयणं अम्हाइउं सिरे पुत्ता । कइलाससिहरसरिसा, एए चिय तुम्ह पासाया ॥ ३० ॥

अंकुशाके ऊपर क्रुद्ध भाइयोंकी सेनाको उन आठ जनोने मन्त्रोंसे शान्त किये जानेवाले सर्पोंके समूहकी भौंति, शान्त किया। (१५) तब लवण और अंकुशाका पाणिग्रहण विधिवत् सम्पन्न हुआ। उस समय अनेक विध वाद्य और शंख बज रहे थे और वारांगनाओंका समूह नाच रहा था। (१६)

लक्ष्मणके वे पुत्र स्वयम्बरकी महान् ऋद्धिको देखकर ईर्ष्यावश दुष्ट वचन कहने लगे कि क्या हम इन जानकीपुत्रोंसे गुणोंमें कुछ हीन हैं कि विवेकरहित इन कन्याओंने हमको छोड़ दिया। (१७-१८) इन तथा ऐसे दूसरे वचन सुनकर रूपमतीके अत्यन्त बुद्धिशाली पुत्रने उन कुमारोंसे कहा कि तुम सब स्त्रीके लिए क्यों दारुण शोक करते हो? ऐसी चेष्टासे लोगोंमें तुम उपहसनीय होओगे। (१९-२०) इस संसारमें जिसने जैसा शुभ अथवा अशुभ कर्म किया होगा, वैसा ही फल पावेगा। अतः तुम दुःख मत करो। (२१) इन अध्रुव, कैलेके खम्भेके समान सारहीन और विषतुल्य भोगोंके लिए तुम दुःखी मत हो। (२२) वचनमें पिताकी गोदमें बैठे हुए मैंने पुस्तकमेंसे यह वचन सुना था कि मनुष्यभव सब भवोंमें उत्कृष्ट है। (२३) जगतमें अतिदुर्लभ ऐसे इस मनुष्यजन्मको पाकर परलोकमें हितकर जिनवरके धर्मका प्रयत्नपूर्वक आचरण करो। (२४) साधुओंको दान देनेसे भोग मिलता है, तपसे देवत्व और शीलसहित ज्ञानसे सिद्धिका सुख मिलता है। (२५) जो पैदा हुआ है उसका मरण निश्चित है और परलोकमें दुर्गतिमें जाना पड़ता है। यह जानके सब कोई जिनधर्मका पालन करे। (२६)

यह कथन सुनकर वे कुमारवर वहीं प्रतिबुद्ध हुए। हाथ जोड़कर उन्होंने पितासे कहा कि आप हमारी बिनती सुनें। (२७) हे तात! हम प्रिय पुत्रोंका यदि आप हित चाहते हैं तो दीक्षाकी ओर अभिमुख हम सबके ऊपर विघ्न मत डालना। (२८) विषयलोलुप हम दुःखोंका अनुभव करते हुए अनन्त संसारमें भटके हैं। अब हम प्रव्रज्या लेना चाहते हैं। (२९) तब लक्ष्मणने सिर पर सूँधकर कहा कि पुत्रो! कैलासपर्वतके शिखरके जैसे ऊँचे ये सोनेकी उत्तम दीवारोंवाले,

१. मन्तीहि य उव०—मु० । २. अम्हेहिं केण—प्रत्य० । ३. रूवमईए—प्रत्य० । ४. होह उवहासणिज्जा—मु० ।

५. व दुक्खं व—प्रत्य० । ६. होह य परलोयहियं—मु० । ७. तंहिं वरकुमारा—प्रत्य० ।

वरकञ्चणभितीया, सव्वुवरणेहिं संजुया रम्मा । वीणा-वंसरवेण य, मधुरसरुगीयनिगोसा ॥ ३१ ॥
 वरजुवईहिं मणहरे, विवुहावासे व रयणपज्जलिए । कह पुत्त मुञ्चह इमे, पासाए निच्चरमणिज्जे ॥ ३२ ॥
 आहार-पाण-चन्दण-मल्ल-ऽऽहरणेसु लल्लिया तुब्भे । विसहिस्सह कह एयं, दुक्करचरियं मुणिवराणं ॥ ३३ ॥
 कह नेहनिभराओ, मुञ्चह जणणीउ विलवमाणीओ । नय जीवन्ति सणं पि हु, तुज्ज विओगम्मि एयाओ ॥ ३४ ॥
 सो तेहिं वि पडिभणिओ, ताय ! भमन्ताण अन्ह संसारे । जणणीण सयसहस्सा, पियराण य वोळियाऽणन्ता ॥ ३५ ॥
 न पिया न चेव माया, न य भाया नेय अत्थसंबन्धा । कुवन्ति परिचाणं, जीवस्स उ धम्मरहियस्स ॥ ३६ ॥
 जं भणसि ताय ! भुञ्जह, इस्सरियं एत्थ माणुसे जम्मे । तं खिवसि अन्धकूवे, जाणन्तो दुत्तरे अन्हे ॥ ३७ ॥
 सलिलं चेव पियन्तं, हरिणं जह हणइ एकओ वाहो । तह हणइ नरं मच्चू, तिसियं चिय कामभोगेसु ॥ ३८ ॥
 जइ एव विप्पओगो; जायइ बन्धूहिं सह धुवो एत्थं । तो कीस कीरइ रई, संसारे दोसवाहुल्ले ? ॥ ३९ ॥
 बन्धणसिणेहनडिओ, पुणरवि भोगेसु दारुणं सत्तो । पुरिसो पावइ दुक्खं, चिरकालं दीहसंसारे ॥ ४० ॥
 दुक्खसलिलावगाढे, कसायगाहुक्कडे भवावत्ते । घणदोगाइविच्चीए, जरमरणकिलेसकल्लोले ॥ ४१ ॥
 एयारिसे महायस !, भमिया संसारसाथरे अन्हे । दुक्खाई अणुहवन्ता, कह कह वि इहं समुत्तिष्णा ॥ ४२ ॥
 संसारियदुक्खाणं, भोया जरमरणविप्पओगाणं । अणुमन्नसु ताय ! तुमं, पबज्जं गिण्हिमो अज्जं ॥ ४३ ॥
 ते एव तिच्छियमणा, दिक्खाभिमुहा सुया मुणेज्जं । अणुमन्निया कुमारा, अवगूढा लच्छिनिलएणं ॥ ४४ ॥
 आउच्छिज्जण पियरं, बन्धुज्जणं चेव सबजणणीओ । ताहे गया कुमारा, महिन्दउदयं वरुज्जाणं ॥ ४५ ॥
 चइज्जण निरवसेसं, परिग्गहं जायतिवसवेगा । सरणं महाबल्लमुणिं, पत्ता ते अट्ट वि कुमारा ॥ ४६ ॥

सभी उपकरणोंसे युक्त, वीणा और बंसीकी ध्वनिसे रम्य तथा मधुर स्वरवाले गीतोंके निर्घोषसे सम्पन्न तुम्हारे ये महल हैं। (३०-३१) पुत्रो! सुन्दर युवतियोंके कारण मनोहर, रत्नोंसे देदीप्यमान देवोंके आवास जैसे और नित्य रमणीय ऐसे इन प्रासादोंको क्यों छोड़ते हो? (३२) आहार, पान, चन्दन, पुष्प एवं आभरणोंसे ललित तुम मुनिवरोंके दुष्कर चरित्रको कैसे सह सकोगे? (३३) स्नेहसे परिपूर्ण रोती हुई माताओंका तुम कैसे त्याग करोगे? तुम्हारे वियोगमें ये क्षणभर भी जीती नहीं रहेंगी। (३४)

इस पर उन्होंने उसे कहा कि, हे तात! संसारमें घूमते हुए हमारे लाखों माताएँ और अनन्त पिता व्यतीत हो चुके हैं। (३५) इस लोकमें धर्मरहित जीवकी रक्षा न पिता, न माता, न भाई और न सगे सम्बन्धी ही कर सकते हैं। (३६) पिताजी! आपने जो कहा कि इस मनुष्यजन्ममें ऐश्वर्यका उपभोग करो, तो ऐसा कहकर आप हमें जानबूझकर दुस्तर ऐसे अन्धे कूँमें फँक रहे हैं। (३७) जिस तरह पानी पीते हुए हिरनको अकेला व्याध मार डालता है उसी तरह कामभोगोंमें प्यासे मनुष्यको मृत्यु मार डालती है। (३८) यदि इस लोकमें बन्धुजनोके साथ अवश्य ही वियोग होता हो तो दोषोंसे भरे हुए संसारमें रति क्यों की जाय? (३९) स्नेहके बन्धनमें नाचता हुआ मनुष्य भोगोंमें पुनः पुनः अत्यन्त आसक्त हो दीर्घ संसारमें चिरकाल तक दुःख पाता है। (४०) हे महायश! दुःखरूपी जलसे भरे हुए, कषायरूपी प्राहोंसे व्याप्त, भवरूपी आवतवाले, दुर्गतिरूपी विशाल तरंगोंसे युक्त तथा जन्म-मरणके क्लेशोंसे कल्लोलित—ऐसे संसारसागरमें भटकते हुए और दुःख अनुभव करते हुए हम किसी तरहसे यहाँ तैरकर आये हैं। (४१-४२) हे तात! संसारके जन्म, मरण और वियोगके दुःखोंसे भयभीत हमें आप अनुमति दें। हम आज प्रव्रज्या ग्रहण करेंगे। (४३)

इस तरह दृढ़ मनवाले और दीक्षाकी ओर अभिमुख पुत्रोंको जानकर लक्ष्मणने अनुमति दी और आलिंगन किया। (४४) तब पिता, बन्धुजन तथा सब माताओंसे पूछकर कुमार महेन्द्रोदय नामके उत्तम उद्यानमें गये। (४५) समग्र परिग्रहका त्याग करके तीव्र संवेगवाले उन आठों कुमारोंने महाबल मुनिकी शरण ली। (४६) समिति और गुप्तिसे युक्त तथा

१. तुब्भ वि०—मु० ।

उमं तवोविहाणं, कुणमाणा समिइ-गुत्तिसंजुत्ता । अह ते कुमारसमणा, विहरन्ति महिं ददधिईया ॥ ४७ ॥
 एयं कुमारवरनिकखमणं पसत्थं, भावेण जे वि हु सुणन्ति नराऽपमत्ता ।
 ताणं पणस्सइ खणेण समत्थपावं, बोहीफलं च विमलं समुवज्जिणन्ति ॥ ४८ ॥
 ॥ इइ पउमचरिए कुमारनिकखमणं नाम उउत्तरसयं पव्वं समत्तं ॥

१०७. भामंडलपरलोयगमणविहाणपव्वं

वीरजिणिन्दस्स गणी, षट्मपयं संसिओ मइपगब्भो । साहइ मणोगयं सो, भामण्डलसन्तियं चरियं ॥ १ ॥
 निसुणेहि मगहसामिय !, अह सो भामण्डलो पुरे नियए । भुज्जइ खेयरइद्धि, कामिणिसहिओ सुरिन्दो व ॥ २ ॥
 चिन्तेऊण पयत्तो, संपइ नइ हं लएमि जिणदिवत्तं । तो जुवइपउमसण्डो, सुत्तिसहिइ इमो न संदेहो ॥ ३ ॥
 कामिणिज्जणमज्झगओ, विसयसुहं भुज्जिऊण चिरकालं । पच्छा तवं सुघोरं, दुक्खविमोक्खं करिस्से हं ॥ ४ ॥
 भोगेसु अज्जियं जं, पावं अइदारुणं पमाएणं । तं पच्छिमम्मि काले, ज्ञाणग्गीणं दहिस्से हं ॥ ५ ॥
 अहवा वि माणभज्जं, समरे काऊण खेयरभडाणं । ठावेमि वसे दोण्णि वि, आणाकारोउ सेढोओ ॥ ६ ॥
 मन्दरगिरीसु बहुविहरयणुज्जोवियनियम्बदेसेसु । कीलामि तत्थ गन्तुं, इमाहिं सहिओ पणइणीहिं ॥ ७ ॥
 वत्थुणि एवमाई, परिचिन्तन्तस्स तस्स मगहवई ! । भुज्जन्तस्स य भोगं, गयाई संवच्छरसयाई ॥ ८ ॥
 एवं काऊण इमं, करेमि कालम्मि चिन्तयन्तस्स । भामण्डलस्स आउं, संधारं आगयं ताव ॥ ९ ॥

दृढ़ बुद्धिवाले वे कुमारश्रमण उग्र तपोविधि करते हुए पृथ्वी पर विहार करने लगे । (४७) कुमारोंके इस प्रशस्त निष्क्रमणको जो पुरुष अप्रमत्त होकर भावपूर्वक सुनते हैं उनका सारा पाप क्षण भरमें नष्ट हो जाता है और वे विमल बोधिफल प्राप्त करते हैं । (४८)

॥ पद्मचरितमें कुमारोंका निष्क्रमण नामका एक सौ छठाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

१०७. भामण्डलका परलोक गमन

तब वीर जीवेन्द्रके श्लाघनीय और समर्थ बुद्धिशाली प्रथम गणधर गौतमस्वामी मनमें रहा हुआ भामण्डल विषयक चरित कहने लगे । (१) हे मगधनरेश ! तुम सुनो । वह भामण्डल स्त्रियोंके साथ अपने नगरमें सुरेन्द्रकी भाँति खेचर-ऋद्धिका उपभोग करता था । (२) वह सोचने लगा कि यदि मैं दीक्षा लूँ तो यह युवतीरूपी पद्मवन सूर्य जायगा, इसमें सन्देह नहीं । (३) स्त्रियोंके बीचमें रहा हुआ मैं चिरकाल तक विषयसुखका उपभोग करके बादमें दुःखका नाश करनेवाला घोर तप करूँगा । (४) भोगोंमें प्रमादवश जो अतिदारुण पाप अजित करूँगा वह बादके समयमें (वृद्धावस्थामें) ध्यानाग्निसे मैं जला डालूँगा । (५) अथवा युद्धमें खेचर-सुभटोंका मानभंग करके दोनों श्रेणियोंको आज्ञाकारी बनाकर बसमें करूँ । (६) मन्दराचल पर आये हुए नानाविध रत्नोंसे उद्योतित प्रदेशोंमें इन ऋषियों के साथ जाकर क्रीड़ा करूँ । (७) हे मगधपति ! ऐसी बातें सोचते हुए और भोगका उपभोग करते हुए उसके सैकड़ों साल बीत गये । (८) 'ऐसा करके समय आने पर यह करूँगा'—ऐसा सोचते हुए भामण्डलकी बिछौने पर पड़े रहनेकी आयु (वृद्धावस्था) आ गई । (९)

१. महिन्ददधिइया—सु० । २. सुणिति—प्रत्य० । ३. एवमाई—प्रत्य० । ४. एयं का०—प्रत्य० ।

अह अन्नया कयाई, पासाओवरि ठियस्स सयरार्ह । भामण्डलस्स असणी, पडिया य सिरि धगधगेन्ती ॥ १० ॥
जणयसुए कालगए, जाओ अन्तेउरे महाकन्दो । हाहाकारमुहरवो, पयलियनयणंसुविच्छङ्को ॥ ११ ॥
जाणन्ता वि पमाई, अन्नं जम्मन्तरं धुवं पुरिसा । तह वि य कालक्खेवं, कुणन्ति विसयामिसासत्ता ॥ १२ ॥
खणभङ्गुरस्स कज्जे, इमस्स देहस्स साररहियस्स । पुरिसा करेन्ति पावं, जाणन्ता चेव सत्थाई ॥ १३ ॥
किं कोरह सत्थेहिं, अप्पाणो जेहि नेव उवसमिओ ? । एकपयं पि वरं तं, जं निययमणं पसाएइ ॥ १४ ॥

एवं जो दीहसुत्तं कुणइ इह नरो गेयवावारजुत्तो,
निच्चं भोगाभिलासी सयणपरियणे तिबनेहाणुरत्तो ।
संसारं सो महन्तं परिभमइ चिरं धोरदुक्खं सहन्तो ।
तम्हा रायं ! पसत्थे ससियरविमले होहि धम्मेक्कचित्तो ॥ १५ ॥

॥ इइ पउमचरिए भामण्डलपरलोयगमणविहाणं नाम सत्तुत्तरसयं पव्वं समत्तं ॥

१०८. हणुवणिच्चाणगमणपव्वं

एत्तो मगहाहिवई !, सुणेहि हणुयस्स ताव वित्तन्तं । वरकण्णकुण्डलपुरे, भोगे चिय सेवमाणस्स ॥ १ ॥
जुवइसहस्सेण समं, विमाणसिहरट्टिओ महिद्धोओ । लीलायन्तो विहरइ, महीए वरकाण्णवणाई ॥ २ ॥
अह अन्नया वसन्ते, संपत्ते जणमणोहरे काले । कोइलमहरुगीए, महुयरमुच्चन्तसंकारे ॥ ३ ॥
चलिओ मेरुनगवरं, वन्दणभत्तीए चेइयहराणं । हणुओ परियणसहिओ, दिवविमाणे समारूढो ॥ ४ ॥

कभी एक दिन प्रासादके ऊपर स्थित भामण्डलके सिर पर अकरमात् धग्-धग् करती हुई बिजली गिरी । (१०) जनकसुत भामण्डलके मरने पर अन्तःपुरमें हाहाकारसे मुखरित और आँखोंमें से गिरते हुए आँसुओंसे व्याप्त ऐसा जबरदस्त आक्रन्द मच गया । (११) दूसरा जन्मान्तर अवश्य है ऐसा जानते हुए भी प्रमादी पुरुष विषयरूपी मांसमें आसक्त हो समय व्यतीत करते हैं । (१२) शास्त्रोंको जानते हुए भी इस क्षणभंगुर एवं सारहीन देहके लिए मनुष्य पाप करते हैं । (१३) जिनसे आत्मा उपशान्त न हो ऐसे शास्त्रोंसे क्या किया जाय ? वह एक शब्द भी अच्छा है जो अपने मनको प्रसन्न करता हो । (१४) इस तरह यहाँ पर अनेक व्यवसायोंमें युक्त जो मनुष्य दीर्घसूत्रता करता है और स्वजन-परिजनमें तीव्र स्नेहसे अनुरक्त होकर भोगोंकी नित्य अभिलाषा रखता है वह चिरकाल तक घोर दुःख सहनकर विशाल संसारमें भटकता फिरता है । अतः हे राजन् ! प्रशस्त और चन्द्रमाके समान विमल धर्ममें एकाग्र बनो । (१५)

॥ पउमचरितमें भामण्डलका परलोकगमन-विधान नामक एक सौ सातवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

१०८. हनुमानका निर्वाणगमन

हे मगधाधिपति श्रेणिक ! तुम अब उत्तम-कर्णकुण्डलपुरमें भोगोंका उपभोग करनेवाले हनुमानका वृत्तान्त सुनो । (१) एक हजार युवतियोंके साथ विमानके शिखर पर स्थित और बड़ी भारी ऋद्धिवाला वह पृथ्वी पर आये हुए सुन्दर बागु बगीचोंमें लीलापूर्वक विहार करता था । (२) एक दिन कोयलके द्वारा मधुर स्वरमें गाई जाती और भौरोंके भंकारसे भङ्कृत वसन्त ऋतुके आनेपर लोगोंको आनन्द देनेवाले समयमें परिजनोंसे युक्त हनुमान दिव्य विमानमें समारूढ़ हो चैत्यगृहोंके दर्शनके लिए मेरु पर्वतकी ओर चला । (३-४) मन और पवनके समान अत्यन्त तीव्र गतिवाला वह आकाशमें उड़कर

१. हाहाकारपलावो, पय०—प्रत्य० । २. अप्पाणं जेहि नेव संजमियं । एक०—प्रत्य० । ३. कुणइह पुरिसो गेय०—प्रत्य० ।
४. दुक्खं लहन्तो—मु० । ५. माणेषु आरूढो—मु० ।

उष्णहृओ गयणयले, वच्चइ मणपवणदच्छपरिहत्थो । कुलपवथाण उवरिं, अभिवन्दन्तो जिणहराईं ॥ ५ ॥
 संपत्तो य नगवरं, रयणसिलाकणयसिहरसंधायं । नाणाविहदुमगहणं, चउकाणणमण्डियं रम्मं ॥ ६ ॥
 सो भणइ पेच्छ सुन्दरि !, नगरायस्सुवरि जिणहरं तुङ्गं । जगजगजगेन्तसोहं, उब्भासेन्तं दिसायङ्गं ॥ ७ ॥
 पन्नास नोयणाईं, दोहं पणुवीस चैव वित्थिण्णं । रेहइ छत्तीसुच्चं, गिरिस्स मउडायए रम्मं ॥ ८ ॥
 तवणिज्जुज्जल-निम्मलगोउरअइतुङ्गवियडपायारं । धय-छत्त-पट्ट-चामर-लम्बूसा-ऽऽदरिस-मालङ्गं ॥ ९ ॥
 एयाईं पेच्छ कन्ते !, नाणाविहपायवोहल्लजाईं । चत्तारि उववणाईं, उवरुवरिं नगवरिन्दस्स ॥ १० ॥
 धरणिणयले सालवणं च नन्दणं मेहल्लए अइरम्मं । ततो च्चिय सोमणसं, पण्डगपरिमण्डियं सिहरं ॥ ११ ॥
 वरवउल-तिलय-चम्पय-असोय-पुन्नाय-नायमाईहिं । रेहन्ति पायवेहिं, कुसुमफलोणमियसाहेहिं ॥ १२ ॥
 धणकुसुमगुच्छकेसरमयरन्दुद्दामसुरहिगन्धेणं । वासन्ति व दिसाओ, समन्तओ काणणवणाईं ॥ १३ ॥
 एएसु चउनिकाया, देवा क्कीलन्ति परियणसमग्गा । रइसागरोवगाढा, न सरन्ति निए वि हु विमाणे ॥ १४ ॥
 एयाण उववणाणं, ठियाईं मज्झमि चैइयघराईं । तवणिज्जपिञ्जराईं, बहुविहसुरसङ्घनमियाईं ॥ १५ ॥
 अवइण्णो पवणसुओ, तथ विमाणाउ परियणसमग्गो । पायक्खिणं करेउं, पविसरइ तओ जिणागारं ॥ १६ ॥
 दइण सिद्धपडिमा, बहुलक्खणसंजुया दिणयरामा । पणमइ पट्टमणसो, कन्ताहिं समं पवणपुत्तो ॥ १७ ॥
 मण-नयणहारिणोओ, हणुवस्स पियाउ कणयकमलेहिं । पूएन्ति सिद्धपडिमा, अत्रेहिं वि दिवकुसुमेहिं ॥ १८ ॥
 सयमेव पवणपुत्तो, पडिमाओ कुड्कुमेणं अचेउं । देइ वरसुरहिधूर्यं, बलिं च त्तिवाणुराएणं ॥ १९ ॥
 एत्तो वाणरमउली, अरहन्तं झाइज्जण भावेणं । थुणइ थुइमङ्गलेहिं, विविहेहिं पावमहणेहिं ॥ २० ॥

कुलपर्वतोंके ऊपर आये हुए जिनमन्दिरोंमें बन्दन करता हुआ रत्नोंकी शिलाओं और सोनेके शिखरोंसे युक्त, नानाविध वृक्षोंसे व्याप्त और चार उद्यानोंसे मण्डित ऐसे एक सुन्दर पर्वतके पास आ पहुँचा। (५-६) उसने कहा कि, हे सुन्दरी ! पर्वतके ऊपर विशाल, जगमगाती शोभावाले और दिशाओंको प्रकाशित करनेवाले जिनमन्दिरको देखो। (७) पचास योजन लम्बा, पचीस योजन चौड़ा और छत्तीस योजन ऊँचा वह सुन्दर जिनमन्दिर पर्वतके मुकुट जैसा लगता है। (८) सोनेके उज्ज्वल और निर्मल गोपुर व अत्युन्नत विकट प्राकारवाला यह ध्वजा, छत्र, पट्ट, चामर, लम्बूष, दर्पण और मालासे शोभित है। (९) हे कान्ते ! पर्वतोंमें श्रेष्ठ इस पर्वत पर ऊपर-ऊपर आये हुए तथा नानाविध वृक्षोंके समूहसे आच्छन्न इन चार उपवनोंको देख। (१०) धरातल पर शालवन, मध्यके भागमें अत्यन्त सुन्दर नन्दनवन, उससे ऊपर सौमनस वन है और शिखर पाण्डुक वनसे मण्डित है। (११) फूल और फलोंसे भुकी हुई शाखाओंवाले उत्तम बकुल, तिलक, चम्पक, अशोक, पुन्नाग और नाग आदि वृक्षों से वे शोभित हो रहे हैं। (१२) फूलोंके घने गुच्छोंके केसरके मकरन्दकी तीव्र मीठी महकसे मानो बाग-बगीचे दिशाओंको चारों ओरसे सुगन्धित कर रहे हैं। (१३)

इन उद्यानोंमें अपने परिजनोंके साथ चारों निकायोंके देव प्रेमसागरमें अबगाहन करके क्रीड़ा करते थे। वे अपने विमानोंको भी याद नहीं करते थे। (१४) इन उद्यानोंके बीच सोनेके वने होनेसे पीत वर्ण वाले तथा देवताओंके नानाविध संघों द्वारा प्रणत चैत्यगृह अवस्थित थे। (१५)

परिजनके साथ पवनसुत हनुमान विमानमेंसे नीचे उतरा। प्रदक्षिणा करके उसने जिनमन्दिरमें प्रवेश किया। (१६) नाना लक्षणोंसे युक्त और सूर्यके समान कान्तिवाली सिद्ध-प्रतिमाको देखकर मनमें हर्षित हनुमानने पत्नियोंके साथ बन्दन किया। (१७) हनुमानकी मन और आँखोंको हरण करनेवाली सुन्दरप्रियाओंने सोनेके कमलों तथा अन्य दिव्य पुष्पोंसे सिद्ध-प्रतिमाकी पूजा की। (१८) स्वयं हनुमानने ही केसरसे प्रतिमाओंकी पूजा करके तीव्र अनुराग वश उत्तम सुगन्धित धूप तथा बलि प्रदान की। (१९) तब वानरोंमें मुकुटके समान श्रेष्ठ हनुमानने भावपूर्वक अरिहन्तका ध्यान करके पापका नाश

१. •तचाल्वा•—प्रत्य० । २. उवरोवरि—प्रत्य० । ३. ण चच्चेडं—प्रत्य० ।

युणिऊण जहिच्छाए, विणिग्गओ जिणहराउ हणुवन्तो । पायक्सिणेइ मेहं, वन्दन्तो सिद्धभवणाइ ॥ २१ ॥
 भरहं एन्तस्स तओ, क्रमेण अत्थंगओ दिर्यसनाहो । हणुवस्सं सयलसेत्तं, ठियं च सुरदुन्दुहिगिरिम्मि ॥ २२ ॥
 सो तत्थ बहुलपक्खे, गयणथलं मारुई पलोयन्तो । पेच्छइ घणञ्जणनिहं, तारासु समन्तओ छन्नं ॥ २३ ॥
 चिन्तेइ तो मणेणं, जह एयं चन्दविरहियं गयणं । न य सोहइ कुलगयणं, तहा विणा पुरिसचन्देणं ॥ २४ ॥
 तं नत्थि जए सयले, ठाणं तिल्लुसतिभागमेत्तं पि । जत्थ न कोलइ मच्चू, सच्छन्दो सुरवरेहिं पि ॥ २५ ॥
 जइ देवाण वि एसा, चवणावत्था उ हवइ सबाणं । अम्हारिसाण संपइ, का एत्थ क्हा मणुसाणं ? ॥ २६ ॥
 वुब्भन्ति जत्थ हत्थी, मत्ता गिरिसिहरसन्निहा गल्या । तो एत्थ किं व भणइ ? पदमं चिय अवहिया ससया ॥ २७ ॥
 अन्नाणमोहिणं, पच्चिन्दियवसगएण जीवेणं । तं नत्थि महादुक्खं, वं नऽणुहयं भमन्तेणं ॥ २८ ॥
 महिल्लकरेणुयाणं, लुद्धो धरवारिनियलपडिबद्धो । अणुहवइ तत्थ दुक्खं, पुरिसगओ वम्महासत्तो ॥ २९ ॥
 पासेण पञ्जरेण य, बज्जन्ति चउप्पया य पक्खी य । इह जुवइपञ्जरेणं, बद्धा पुरिसा किलिस्सन्ति ॥ ३० ॥
 किपागफलसरिच्छा, भोगा पसुहे हवन्ति गुल्लमहुरा । ते चेव उ परिणामे, जायन्ति य विसमविससरिसा ॥ ३१ ॥
 तं जाणिऊण एवं, असासयं अद्ध्युवं चलं जीयं । अवहत्थिऊण भोगे, पवज्जं गिण्हमो अज्जं ॥ ३२ ॥
 एयाणि य अन्नाणि य, परिचिन्तेन्तस्स पवणपुत्तस्स । रयणी क्रमेण शीणा, पभासयन्तो रवी उइओ ॥ ३३ ॥
 पडिबुद्धो पवणसुओ, भणइ तओ परियणं पियाओ य । धम्माभिमुहस्स महं, निसुणेह परिप्फुडं वयणं ॥ ३४ ॥
 वसिऊण सुइरकालं, माणुसजम्मम्मि बन्धवेहिं समं । अवसेण विप्पओगो, हवइ य मा अद्धिइं कुणह ॥ ३५ ॥
 ताहे भणन्ति हणुवं, महिल्लओ महरम्मणगिराओ । मा सुच्चसु नाह ! तुमं, अम्हे एत्थं असरणाओ ॥ ३६ ॥

करनेवाले विविध प्रकारके स्तुतिमंगलोंसे स्तुति की। (२०) इच्छानुसार स्तुति करके जिनमन्दिरमें से बाहर निकले हुए हनुमानने सिद्धभवनोंको वन्दन करते हुए मेरुकी प्रदक्षिणा दी। (२१) जब हनुमान भरतचेत्रकी ओर अनुक्रमसे आ रहा था तब सूर्य अस्त हो गया। हनुमानके सारे सैन्यने सुरदुन्दुभि पर्वत पर डेरा डाला। (२२) हनुमान उस कृष्णपक्षमें आकाशको देखने लगा। चारों ओर ताराओंसे आच्छादित और घने अंजनके जैसे काले आकाशको उसने देखा। (२३) वह मनमें सोचने लगा कि जिस तरह चन्द्रसे रहित यह आकाश सुहाता नहीं है उसी तरह कुलरूपी गगन भी पुरुषरूपी चन्द्रके विना नहीं सुहाता। (२४) सारे जगतमें तिल और भूसीके तीसरे भाग जितना भी स्थान नहीं है जहाँ मृत्यु स्वच्छंदरूपसे क्रीड़ा न करती हो। उत्तम देवों के साथ भी वह क्रीड़ा करती है। (२५) यदि सभी देवोंकी यह च्यवनावस्था (मृत्यु) होती है, तो फिर हम जैसे मनुष्योंकी तो बात ही क्या! (२६) जिनमें पर्वतके शिखरके समान बड़े भारी मदोन्मत्त हाथी भी बह जायें तो फिर खरगोश जैसे पहले ही बह जायें तो उसमें कहना ही क्या! (२७) अज्ञानसे मोहित और पाँचों इन्द्रियोंके वशीभूत जीवने ऐसा कोई महादुःख नहीं है जो संसारमें घूमते हुए अनुभव न किया हो। (२८) स्त्रीरूपी हथिनियोंमें लुब्ध धरवाररूपी जंजीरसे जकड़ा गया और काममें आसक्त पुरुषगत जीव वहाँ (संसारमें) दुःख अनुभव करता है। (२९) चौपाये और पक्षी बन्धन और पिंजरेमें पकड़े जाते हैं। यहाँ युवतीरूपी पिंजड़ेमें जकड़े गये पुरुष दुःख उठाते हैं। (३०) किपाकके फलके समान भोग प्रथम गुड जैसे मधुर होते हैं परिणाममें वे ही विषम विषके जैसे हो जाते हैं। (३१) इस तरह जीवनको अशाश्वत, अध्रव और चंचल जानकर और भोगोंका त्यागकर मैं आज प्रव्रज्या ग्रहण करूँगा। (३२) ऐसा तथा दूसरा विचार करते हुए हनुमानकी रात क्रमसे व्यतीत हो गई और प्रकाशित करनेवाला सूर्य उदित हुआ। (३३)

प्रतिबुद्ध हनुमानने तब परिजन एवं प्रियाओंसे कहा कि धर्मकी ओर अभिमुख मेरे स्पष्ट वचन तुम सुनो। (३४) सुचिर काल पर्यन्त मनुष्यजन्ममें बन्धुजनोंके साथ रहनेके बाद अबश्य वियोग होता है। अतः तुम अधीर मत होवो। (३५) तब मधुर और मर्मभाषी महिलाओंने हनुमानसे कहा कि, हे नाथ ! यहाँ पर असहाय हम सबका तुम त्याग मत करो। (३६)

१. दिवस०—प्रत्य०। २. गुणम०—म०।

भणइ तओ हणुवन्तो, परिहिण्डन्तस्स मज्झ संसारे । महिलाण सहस्साइं, गयाइं कालेण बहुयाइं ॥ ३७ ॥
 न य माया नेव पिया, न पुत्तदारा इहं मरन्तस्स । पुरिसस्स परिचाणं, न कुणन्ति जहा कुणइ धम्मो ॥ ३८ ॥
 तं एव अणुहवेउं, नरयतिरिक्खेसु दारुणं दुक्खं । कह पुण जाणन्तो हं, करेमि महिलासु सह नेहं ॥ ३९ ॥
 संसारम्मि अणन्ते, भीओ हं जाइयव्व-मरणाणं । संपइ लएमि दिक्खं, मरिसह मे अविणयं सबं ॥ ४० ॥
 मेरुं पिव थिरगरुयं, हिययं नाऊण तस्स महिलाओ । ताहे कुणन्ति परमं, अक्कन्दं लोलनयणाओ ॥ ४१ ॥
 आसासिऊण धीरो, जुवईओ ठाविउं सुयं रज्जे । निष्फडइ विमाणाओ, विज्जाहरसुहडपरिकिण्णो ॥ ४२ ॥
 आरुहिय पुरिसजाणं, नाणाविहरयणकिरणपज्जलियं । संपत्थिओ कमेणं, उज्जाणत्थं जिणाययणं ॥ ४३ ॥
 'काऊणं वन्दणयं, जिणभवणे साहवं सुहनिविट्ठं । नामेण धम्मरयणं, तं पणमइ मारुई तुट्ठो ॥ ४४ ॥
 काऊण य किइकम्मं, हणुवो तो भणइ मुणिवरं एत्तो । भयवं ! होहि गुरु मे, विहेहि संखेवओ दिक्खं ॥ ४५ ॥
 अणुमन्निओ गुरुणं, ताहे मउडं सकुण्डलाहरणं । देइ सुयस्स नरिन्दो, संजमम्मो कउच्छाहो ॥ ४६ ॥
 'परिचत्तकामभोगो, कुणइ सिरे मारुई तओ लोयं । हणुवन्तो पवइओ, पासे मुणिधम्मरयणस्स ॥ ४७ ॥
 पजासा सत्त सया, संवेगपरायणा य नरवइणो । पवइया खायजसा, चारणसभणं पणमिऊणं ॥ ४८ ॥
 हणुयस्स महिलियाओ, सबाओ दइयसोगदुहियाओ । लच्छीमईएँ सयासे, जायाओ चेव समणीओ ॥ ४९ ॥
 सिरिसेलो कम्मवणं, सबं ज्ञाणाणलेण दहिऊण तओ । केवललद्धाइसओ, संपत्तो विमलनिम्मलं परमपयं ॥ ५० ॥

॥ इइ पउमचरिए हणुवनिव्वाणगमणं नाम अट्ठुत्तरसयं पव्वं समत्तं ॥

इस पर हनुमानने कहा कि संसारमें घूमते हुए मेरी अनेक सहस्र महिलाएँ कालक्रममें हो चुकी हैं । (३७) इस लोकमें मरते हुए पुरुषका परित्राण वैसा न माता, न पिता, न पुत्र और न पत्नी करते हैं जैसा धर्म करता है । (३८) नरक और तिर्यक गतियोंमें वैसा दारुण दुःख अनुभव करके अभिज्ञ मैं कैसे स्त्रियोंके साथ स्नेह कर सकता हूँ ? (३९) जन्म-मरणके अनन्त संसारसे भयभीत मैं अब दीक्षा लेता हूँ । मेरा सारा अविनय क्षमा मरो । (४०)

मेरुकी भँति अत्यन्त स्थिर उसका हृदय जानकर चंचल नेत्रोंवाली स्त्रियाँ घोर आक्रन्द करने लगीं । (४१) युवतियोंको आश्वासन देकर और पुत्रको राज्यपर स्थापित करके विद्याधर सुभटोंसे घिरा हुआ वह धीर विमानमेंसे निकला । (४२) पुरुष द्वारा चलाये जाते और नानाविध रत्नोंकी किरणोंसे देदीप्यमान वाहन पर आरूढ़ होकर उसने उद्यानमें आये हुए जिनमन्दिरकी ओर प्रस्थान किया । (४३) जिनभवनमें वन्दन करके शान्तिसे बैठे हुए धर्मरत्न नामके मुनिको हनुमानने प्रसन्न होकर प्रणाम किया । (४४) हनुमानने प्रणाम करके मुनिवरसे कहा कि भगवन् ! आप मेरे गुरु हो और शीघ्र ही मुझे दीक्षा दें । (४५) तब गुरु द्वारा अनुमति मिलने पर संयम मार्गमें उस्ताही राजा हनुमानने मुकुट और कुण्डलोंके साथ आभूषण पुत्रको दे दिये । (४६) बादमें कामभोगोंका त्याग करनेवाले हनुमानने सिर परसे बालोंका लोच किया और मुनि धर्मरत्नके पास दीक्षा ली । (४७) चारणश्रमणको प्रणाम करके संवेगपरायण तथा ख्यातयश सात सौ पचास राजाओंने दीक्षा ली । (४८) पतिके शोकसे दुःखित हनुमान की सब पत्नियाँ लक्ष्मीमतीके पास श्रमणियाँ हो गईं । (४९) इसके पश्चात् हनुमानने कर्मरूपी वनको ध्यानरूपी अग्निसे जलाकर कैवलयातिशय प्राप्त करके विमल और निर्मल परमपद—मोक्ष पाया । (५०)

॥ पउमचरितमें हनुमानका निर्वाणगमन नामका एक सौ आठवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

१. काऊण वन्दणविहि, जिण०—प्रत्य० । २. दाहिण-कामकरेहि, कुणइ—प्रत्य० ।

१०९. सकसंकहाविहाणपठवं

अह तत्थ कुमाराणं, हणुयस्स य निसुणिऊण पवज्जं । भणइ पउमो हसन्तो, कह भोगाणं विरत्ता ते ॥ १ ॥
 सन्ते वि य परिचइउं, भोगे गिण्हन्ति जे हु पवज्जं । नूणं ते गहगहिया, वाऊण विलङ्घिया पुरिसा ॥ २ ॥
 अहवा ताण न विज्जा, अत्थि सहीणा पओगमइकुसला । जेणुज्झिऊण भोगा, ठिया य तव-संजमाभिमुहा ॥ ३ ॥
 एवं भोगसमुद्दे, तस्स निमगस्स रामदेवस्स । बुद्धी आसि भइजडा, सेणिय ! उदएण कम्मस्स ॥ ४ ॥
 अह अन्नया सुरिन्दो, सहाएँ सीहासणे सुहनिविट्ठो । चिट्ठइ महिद्धिजुत्तो, देवसहस्सेहिं परिकिण्णो ॥ ५ ॥
 नाणालंकारधरो, धीरो बल-विरिय-तेयसंपन्नो । अह संकहागयं सो, वयणं चिय भणइ देविन्दो ॥ ६ ॥
 देवत्तं इन्दत्तं, जस्स पसाएण पवरसिद्धत्तं । लब्भइ तं नमह सया, ससुरासुरवन्दियं अरहं ॥ ७ ॥
 जेण इमो निस्सारो, संसाररिवू जगे अनियपुबो । संजमसंगाममुद्दे, पावो नाणासिणा निहओ ॥ ८ ॥
 कन्दप्पतरङ्गाढं, कसायगाहाउलं भवावत्तं । संसारसलिलनाहं, उत्तारइ जो जणं भवियं ॥ ९ ॥
 जायस्स जस्स तइया, सुमेरुसिहरे सुरेहिं सबेहिं । जणिओ चिय अहिसेओ, खीरोयहिवारिकलसेहिं ॥ १० ॥
 मोहमल्लपडलछन्नं, पासण्डविवज्जियं नयविहीणं । नाणकिरणेहिं सबं, पयासियं जेण तेलोक्कं ॥ ११ ॥
 सो जिणवरो सयंभू, भाणु सियो संकरो महादेवो । विण्हू हिरण्णगम्भो, महेशरो ईसरो रुद्धो ॥ १२ ॥
 जो एवमाइएहिं, थुषइ नामेहिं देव-मणुएहिं । सो उसहो जगबन्धू, संसारुच्छेयणं कुणइ ॥ १३ ॥
 जइ इच्छह अणुहविउं, कल्लाणपरंपरं निरवसेसं । तो पणमह उसहजिणं, सुर-असुरनर्मसियं भयवं ॥ १४ ॥

१०९. इन्द्रका वार्तालाप

कुमारों और हनुमानकी प्रव्रज्याके बारे में सुनकर हँसते हुए रामने कहा कि वे भोगोंसे क्यों विरक्त हुए ? (१) विद्यमान भोगोंको छोड़कर जो प्रव्रज्या लेते हैं वे पुरुष अवश्य ही भूत आदिसे ग्रस्त हैं अथवा वायुसे पीड़ित हैं । (२) अथवा उनके पास प्रयोगमती कुशल विद्या नहीं है, जिससे भोगोंका त्याग करके तप एवं संयमकी ओर वे अभिमुख हुए हैं । (३) हे श्रेणिक ! इस तरह कर्मके उदयसे भोग-समुद्रमें निमग्न उन रामकी बुद्धि अतिजड़ हो गई थी । (४)

एक दिन बड़ी भारी ऋद्धिसे युक्त और हजारों देवताओंसे घिरा हुआ इन्द्र सभामें सिंहासन पर आरामसे बैठा हुआ था । (५) नाना अलंकारोंको धारण करनेवाला, धीर तथा बल, वीर्य और तेजसे सम्पन्न उस इन्द्रने वार्तालापके दौरानमें यह वचन कहा कि जिसके प्रसादसे देवत्व, इन्द्रत्व और उत्तम सिद्धगति प्राप्त होती है उस सुर-असुर द्वारा वन्दित अरिहन्तको सदा नमस्कार हो । (६-७) जिसने विश्वमें पहले न जीते गये ऐसे इस असार संसाररूपी पापी शत्रुको संयमरूपी समरत्तेत्रमें ज्ञानरूपी तलवारसे मार डाला है; जो कामरूपी तरंगोंसे युक्त कषायरूपी ग्राहोंसे व्याप्त और भवरूपी आवतों से सम्पन्न संसाररूपी सागरसे भव्य जीवोंको पार लगाता है; जिसके उत्पन्न होने पर सुमेरु पर्वतके शिखर पर सब देवताओंने मिलकर क्षीरसागरके जलसे पूर्ण कलशों द्वारा अभिषेक किया था; जिसने मोहरूपी मलके पटलसे आच्छादित, धर्मसे रहित और नीतिसे विहीन सारे त्रिभुवनको ज्ञानकी किरणोंसे प्रकाशित किया है वह जिनवर हैं; स्वयम्भू, भानु, शिव, शंकर, महादेव, विष्णु, हिरण्यगर्भ, महेश्वर, ईश्वर और रुद्र ऐसे नामोंसे देव एवं मनुष्यों द्वारा जिनकी स्तुति की जाती है वे जगद्गन्धु ऋषभदेव संसारका नाश करते हैं । (८-१३) यदि समग्ररूपसे कल्याणोंकी परम्पराका अनुभव करना चाहते हो तो सुर एवं असुर द्वारा वन्दित भगवान् ऋषभदेवको प्रणाम करो । (१४) अनादि निधन जीव अपने कार्यरूपी पवनसे आहत

जीवो अणाइनिहणो, सक्कमपवणाहओ परिभमन्तो । कह कह वि माणुसत्तं, पत्तो न कुण्णइ जिणधम्मं ॥ १५ ॥
 मिच्छादंसणचरियं, काऊणं जइ वि लहइ देवत्तं । तह वि य सुओ समाणो, मुज्जे इह माणुसे जम्मे ॥ १६ ॥
 निन्दइ जिणवरधम्मं, मिच्छतो नाणदंसणविहूणो । सो हिण्डइ संसारे, दुक्खसहस्साइं अणुहोन्तो ॥ १७ ॥
 पेच्छह महिद्धियस्स वि, सुनाणजुत्तस्स माणुसे जम्मे । दुलहा उ हवइ बोही, किं पुण अन्नाणजुत्तस्स ? ॥ १८ ॥
 इन्दो भणइ कया हं, बोहिं लद्धूण माणुसे जम्मे । कम्मद्विप्पमुक्को, परमपर्यं चेव पावित्तं ? ॥ १९ ॥
 तं भणइ सुरो एक्को, जइ तुज्झ वि एरिसी हवइ बुद्धो । अम्हारिसाण नियमा, माणुसजम्मे विमुज्झिहिइ ॥ २० ॥
 इन्दं महिद्धिजुत्तं, बम्भविमाणे सुरं चुयसमाणं । रामं किं च न पेच्छह, माणुसभोगेसु अइमूढं ? ॥ २१ ॥
 तो भणइ देवराया, सबाण वि बन्धणाण दूरेणं । कदिणो उ नेहबन्धो, संसारत्थाण सत्ताणं ॥ २२ ॥
 नियलेहि पूरिओ च्चिय, वच्चइ पुरिसो जहिच्छियं देसं । एकं पि अङ्गुलमिणं, न जाइ घणनेहपडिबद्धो ॥ २३ ॥
 रामस्स निययकालं, सोमित्ती घणसिणेहमणुरत्तो । सो वि य तस्स विओगे, मुच्चइ जोयं अइसमत्थो ॥ २४ ॥
 सो तं लच्छिनिकेयं, पउमो न य मुयइ नेहपडिबद्धो । कम्मस्स य उदएणं, कालं चिय नेइ मइमूढो ॥ २५ ॥
 सुरवइभणियं जं तच्चमगाणुरत्तं, जिणवरगुणगहणं सुप्पसत्थं पवित्तं ।
 सुणिय विवुहसङ्गा तं च इन्दं नमेउं, अइविमलसरीरा जन्ति सं सं निकेयं ॥ २६ ॥

॥ इइ पउमचरिए सक्कसंकहाविहाणं नाम नयुत्तरसयं पव्वं समत्तं ॥

होकर भटकता हुआ किसी तरहसे मानवभव प्राप्त करके भी जिनधर्मका आचरण नहीं करता । (१५) मिथ्यात्व से युक्त तप आदि आचरण करके यद्यपि देवत्व प्राप्त होता है, तथापि च्युत होने पर इस मनुष्य जन्ममें वह पुनः मोहित होता है । (१६) ज्ञान और दर्शनसे रहित जो मिथ्यात्वी जिनधर्मकी निन्दा करता है वह हजारों दुखोंका अनुभव करता हुआ संसारमें भटकता है । (१७) देखो तो, महर्धिक सुज्ञानयुक्त मनुष्य जन्ममें भी बोधि दुर्लभ होती है, तो फिर अज्ञानयुक्त प्राणीका तो कहना ही क्या ? (१८) तब इन्द्र कहने लगा कि कब मैं मानव जन्ममें बोधि प्राप्त करके और आठों कर्मोंसे विमुक्त हो परम पद प्राप्त करूँगा ? (१९)

उसे एक देवने कहा कि यदि आपकी भी ऐसी मति है तो फिर हम जैसेकी बुद्धि तो मनुष्य जन्ममें नियमतः मोहित हो जाएगी । (२०) ब्रह्म विमानमें अत्यन्त ऋद्धिसम्पन्न सुरेन्द्रके च्युत होनपर मानव भोगोंमें अत्यन्त मूढ़ रामको क्या आप नहीं देखते ? (२१) इस पर देवेन्द्रने कहा कि संसाररथ जीवोंके लिए सब बन्धनोंकी अपेक्षा स्नेहबन्धन अत्यन्त दृढ़ होता है । (२२) जंजीरोंसे बँधा हुआ मनुष्य इच्छानुसार देशमें जा सकता है, पर घने स्नेहसे जकड़ा हुआ मनुष्य एक अंगुल भी नहीं जा सकता । (२३) रामके ऊपर लक्ष्मण सर्वदा घने प्रेमसे अनुरक्त रहता है । वे अतिसमर्थ राम भी उसके वियोगमें प्राणोंका त्याग कर सकते हैं । (२४) स्नेहसे जकड़े हुए वे राम लक्ष्मणको नहीं छोड़ते और कर्मके उदयसे मतिमूढ़ हो समय बिताते हैं । (२५) देवेन्द्रने जो सत्यमार्गमें अनुरागपूर्ण, जिनवरके गुणोंसे व्याप्त, अत्यन्त प्रशस्त और पवित्र वचन कहे उसे सुनकर अतिनिर्मल शरीरवाले देवोंके संघ इन्द्रको प्रणाम करके अपने अपने भवनकी ओर चले गये । (२६)

॥ पञ्चचरितमें इन्द्रके वार्तालापका विधान नामक एक सौ नवौं पर्व समाप्त हुआ ॥

१. ०णो सिञ्चइ इह—मु० । २. सुरस्स चइयस्स माणुसे—मु० ।

११०. लवण-ऽङ्कुसतरोवणपवेशविहाणपञ्चं

अह तत्थ दोण्णि देवा, कुञ्जहली रयणचूल-मणिचूला । नेहपरिक्खणहेउं, समागया राम-केसोर्ण ॥ १ ॥
रामं सोऊण मयं, केरिसियं कुणइ लक्खणो चेट्टं ? । रूसइ किं वा गच्छइ ? , किं वा परिभासए वयणं ? ॥ २ ॥
अहवा सोगाउलियं, पेच्छामो लक्खणस्स मुहयन्धं । ते एव कयालावा, साएयपुरिं अह पविट्ठा ॥ ३ ॥
देवा रामस्स घरे, कुणन्ति मायाविणिम्मियं सइं । पउमो मओ मओ त्ति य, वरजुवईणं चिय विलावं ॥ ४ ॥
रामस्स मरणसइं, सोउं अक्कन्दियं च जुवईहिं । लच्छीहरो विसण्णो, जंपइ ताहे इमं वयणं ॥ ५ ॥
हा किं व इमं वत्तं, एव भणन्तस्स तस्स सयराहं । वायाए समं जीयं, विणिग्गयं लच्छिनिलयस्स ॥ ६ ॥
कञ्चणथम्भनिसत्तो, अणिमोलियलोयणो तहावत्थो । लक्खिज्जइ चक्कहरो, लेप्पमओ इव विणिम्मविओ ॥ ७ ॥
दट्टुण विगयनीयं, सोमिच्चिं सुरवरा विसण्णमणा । निन्दन्ति य अप्पाणं, दोण्णि वि लज्जासमावन्ना ॥ ८ ॥
लक्खणमरणनिहेणं, एएणं एत्थ पुवविहिएणं । जायं परितावयरं, अट्टाण मणं तु अप्पाणं ॥ ९ ॥
पच्छातावुम्हविया, जीयं दाऊण तस्स असमत्था । निन्दन्ता अप्पाणं, सोहम्मं पत्थिया देवा ॥ १० ॥
असमिक्खियकारीणं, पुरिसाणं एत्थ पावहिययाणं । सयमेव कयं कम्मं, परितावयरं हवइ पच्छा ॥ ११ ॥
सुरवरमायाए कयं, कम्मं अविजाणिऊण जुवईओ । पणयकुविओ त्ति काउं, सबाउ पइं पसाएन्ति ॥ १२ ॥
एक्का भणइ सुभणिया, जोवणमयगवियाए पावाए । सामि ! तुमं रोसविओ, कवणाए पावबुद्धीए ॥ १३ ॥
पणयकलहम्मि सामिय !, भणिओ जं अविणयं तुमं ताए । तं अम्ह खमसु संपइ, जंपसु महुराए वायाए ॥ १४ ॥

११०. लवण और अंकुशका तपोवनमें प्रवेश

रत्नचूल और मणिचूल नामके दो देव कुतूहलवश राम और लक्ष्मणके स्नेहकी परीक्षा करनेके लिए वहाँ आये । (१) रामको मृत सुनकर लक्ष्मण कैसी चेष्टा करता है ? कैसा रुष्ट होता है, कैसे जाता है और कौनसे वचन कहता है ? (२) अथवा लक्ष्मणके शोकाकुल मुखचन्द्रको हम देखें । इस तरह बातचीत करके वे साकेतपुरीमें प्रविष्ट हुए । (३) रामके महलमें मायानिर्मित शब्द करने लगे कि राम मर गये, राम मर गये और सुन्दर युवतियोंका विलाप भी किया । (४) रामकी मृत्युका शब्द और युवतियोंका आक्रन्दन सुनकर दुःखी लक्ष्मणने तब यह वचन कहा । (५) 'हा ! यह क्या हुआ ?'—ऐसा कहते हुए उस लक्ष्मणके वाणीके साथ प्राण भी निकल गये । (६) सोनेके स्तम्भका अवलम्बन लेकर बैठा हुआ तथा खुली आँखोंवाली—ऐसी अवस्थामें स्थित लक्ष्मण मूर्ति जैसा बन गया हो ऐसा प्रतीत होता था । (७)

लक्ष्मणको निर्जीव देखकर मनमें खिन्न दोनों देव लज्जित होकर अपने आपकी निन्दा करने लगे—(८) पूर्वकर्मोंसे विहित लक्ष्मणके इस मरणके कारण हमारा अपना मन हमें परितापजनक हो गया है । (९) पश्चात्तापसे तप्त और उसके लिए अपने प्राण देनेमें असमर्थ वे देव अपनी निन्दा करते हुए सौधर्म देवलोककी ओर गये । (१०) मनमें पापयुक्त और असमीक्ष्यकारी पुरुषोंके लिए अपना किया हुआ कार्य बादमें दुःखजनक हो जाता है । (११)

देवताओंकी मायासे यह कार्य हुआ यह न जानकर सब युवतियाँ, 'प्रणय-कुपित हैं' ऐसा मानकर पतिको प्रसन्न करने लगीं । (१२) एक वचन-कुशल युवतीने कहा कि, नाथ ! यौवनमदसे गर्वित किस पापबुद्धि और पापी स्त्रीने आपको रुष्ट किया है ? (१३) हे स्वामी ! प्रणय-कलहमें उसने आपसे जो अविनययुक्त कहा हो उसके लिए आप हमें क्षमा करें । अब आप मधुर वाणीसे बात करें । (१४) सुन्दर कमलके समान कोमलांगी कोई स्त्री स्नेहसे युक्त आलिंगन करने लगी तो

१. वत्तं, इमं भ०—मु० । २. मओ चेव निम्म०—मु० । ३. महुरक्खराए वायाए—प्रत्य० ।

वरकमलकोमलङ्गी, अवगूहइ कावि निम्भरसिणेहं । चलणेषु पडइ अन्ना, पत्तिय सामी ! कउल्लावा ॥ १५ ॥
 घेतूण काइ वीणं, तस्स य गुणकित्तणं महुरसइं । गायइ वरगन्धवं, दइयस्स पसायजणणट्टं ॥ १६ ॥
 अवगूहिऊण काई, चुम्बइ गण्डस्थलं मणभिरामं । जंपइ पुणो पुणो च्चिय, अम्ह प्हू ! देहि उल्लवं ॥ १७ ॥
 संपुण्णचन्दवयणा, कयनेवच्छा कडक्खविच्छोहं । नच्चइ कावि मणहरं, पियस्स पुरओ ससम्भवं ॥ १८ ॥
 एयाणि य अत्राणि य, ताण कुणन्तीण चेद्विप्रसयाई । जायं निरत्थयं तं, जीवियरहियम्मि कन्तम्मि ॥ १९ ॥
 चारियमुट्टाउ सुणिउं, तं वित्तन्तं ससंभमो रामो । तं लक्खणस्स भवणं, तूरन्तो चैव संपत्तो ॥ २० ॥
 अन्तेउरं पविट्ठो, पेच्छइ विगयप्पमं सिरीरहियं । लच्छीइरस्स वयणं, पमायससिसन्निहायारं ॥ २१ ॥
 चिन्तेइ तओ पउमो, केण वि कज्जेण मज्झ चक्रहरो । रुट्ठो अब्भुट्ठाणं, न देइ चिट्ठइ अविणयङ्गो ॥ २२ ॥
 विरलक्कमेसु गन्तुं, अम्घायइ मत्थए घणसिणेहं । पउमो भणइ कणिट्टं, किं मज्झ न देसि उल्लवं ? ॥ २३ ॥
 चिन्थेहि जाणिऊण य, गयजीयं लक्खणं तहावत्थं । तह वि य तं जीवन्तं, सो मन्नइ निम्भरसिणेहो ॥ २४ ॥
 न य हसइ नेव जंपइ, न चैव उस्ससइ चेद्विप्रसिहीणो । दिट्ठो य तहावत्थो, सोमित्ती रामदेवेणं ॥ २५ ॥
 मुच्छागओ विउट्ठो, पउमो परिमुसइ तस्स अज्जाइं । नक्खक्खयं पि एक्कं, न य पेच्छइ मग्गमाणो वि ॥ २६ ॥
 एयावत्थस्स तओ, वेज्जा सदाविऊण पउमाओ । कारावेइ तिगिच्छं, मन्तेहिं तहोसहेहिं पि ॥ २७ ॥
 वेज्जणणेहिं जया सो, मन्तोसहिसंजुएहिं विविहेहिं । न य पडिवज्जो चेद्वं, तओ गओ राहवो मुच्छं ॥ २८ ॥
 कह कह वि समासत्थो, कुणइ, पलावं तओ य रोवन्तो । रामो सअंसुनयणो, दिट्ठो जुवईहिं दीणमुहो ॥ २९ ॥
 एयन्तरम्मि ताओ, सबाओ लक्खणस्स महिलाओ । रोवन्ति विहलविम्भलमणाओ अज्जं हणन्तीओ ॥ ३० ॥

दूसरी 'हे नाथ ! मैं आपके आश्रयमें आई हूँ' ऐसा कहकर चरणोंमें गिरने लगी। (१५) कोई मीठे स्वरवाली स्त्री वीणा लेकर पतिको प्रसन्न करनेके लिए जिसमें उसके गुणोंका वर्णन है ऐसा उत्तम गीत गाने लगी। (१६) कोई आलिंगन देकर मनोहर गण्डस्थलको चूमती थी और बार-बार कहती थी कि, हे प्रभो ! हमारे साथ बातचीत तो करो। (१७) पूर्ण चन्द्रके समान वदनवाली कोई स्त्री वस्त्रपरिधान करके मनोहर कटाक्ष-विक्षेप करती हुई प्रियके सम्मुख सुन्दर भावके साथ नाचती थी। (१८) इन तथा दूसरी सैकड़ों प्रकारकी चेष्टाएँ करनेवाली उन स्त्रियोंकी सब चेष्टाएँ निर्जीव पतिके सम्मुख निरर्थक हुई। (१९)

गुप्तचरोके मुखसे उस वृत्तान्तको सुनकर संभ्रमयुक्त राम जल्दी ही लक्ष्मणके भवनमें आ पहुँचे। (२०) अन्तःपुरमें प्रवेश करके उन्होंने प्रभाहीन, श्रीरहित और प्रभातकालीन चन्द्रमाके जैसे आकारवाले लक्ष्मणके मुखको देखा। (२१) तब राम सोचने लगे कि किस कारण चक्रधर लक्ष्मण मुझ पर रुष्ट हुआ है ? वह आदरपूर्वक क्यों खड़ा नहीं होता और शरीरमें अविनय धारण करके बैठा है ? (२२) थोड़े कदम आगे जाकर और अत्यन्त स्नेहसे सिरका सूँघकर रामने छोटे भाईसे कहा कि मेरे साथ बात क्यों नहीं करता ? (२३) चिह्नोंसे उस अवस्थामें बैठे हुए लक्ष्मणको निष्प्राण जानकर भी स्नेहसे परिपूर्ण वे उसे जीवित ही मानते थे। (२४) न तो वह हँसता था, न बोलता था, न साँस लेता था। रामने लक्ष्मणको चेष्टारहित और उसी अवस्थामें बैठा हुआ देखा। (२५) इससे वे बेहोश हो गये। होशमें आने पर रामने उसके अंगोंको सहलाया। ढूँढ़ने पर भी एक नखत्त तक उन्होंने नहीं देखा। (२६) तब रामने बैचोंको बुलाकर ऐसी अवस्थामें स्थित उसकी मंत्रों तथा औषधियोंसे चिकित्सा करवाई। (२७) विविध मंत्र व औषधियोंके प्रयोग से वैद्यगणों के द्वारा जब वह होशमें नहीं आया तब राम मूर्च्छित हो गये। (२८) किसी तरह आश्रित होने पर वे रोते हुए प्रलाप करने लगे। युवतियोंने रामको आँखोंमें आँसूओंसे युक्त तथा दीनवदन देखा। (२९)

उस समय लक्ष्मणकी वे सब भार्याएँ मनमें विह्वल हो अंगको पीटती हुई रोने लगी। (३०) हा नाथ ! महायश !

हा नाह । हा महाजस !, उट्टेहि ससंभमाण अम्हाणं । पणिवइयवच्छल ! तुमं, उल्लावं देहि वियसन्तो ॥ ३१ ॥
 हा दक्खिण्णगुणायर, तुज्झ सयासम्मि चिट्ठए पडमो । एयस्स किं व रुट्ठो, न य उट्ठसि आसणवराओ ॥ ३२ ॥
 'अत्थाणियागयाणं, सुहडाणं नाह ! दरिसणमणाणं । होऊण सोमचित्तो, आलावं देहि विमणाणं ॥ ३३ ॥
 हा नाह ! किं न पेच्छसि, एयं अन्तेउरं विलवमाणं ? । सोयाउरं च लोयं, किं न निवारिसि दीणमुहं ? ॥ ३४ ॥
 सोयाउराहिं अहियं, जुवईहिं तथ रोवमाणीहिं । हिययं कस्स न कलुणं, जायं चिय गगमरं कण्ठं ? ॥ ३५ ॥
 एवं रोवन्तीहिं, जुवईहिं हार-कडयमाईयं । खित्तुज्झिण्णहिं छन्ना, सवा रायङ्गणत्थाणी ॥ ३६ ॥
 एयन्तरम्मि सोउं, कालगयं लक्खणं सुसंविग्गा । लवणं-ऽकुसा विरत्ता, भोगाणं तक्खणं धीरा ॥ ३७ ॥
 चिन्तेन्ति जो सुरेसु वि, संगामे लक्खणो अजियपुबो । बल-विरियसमत्थो वि हु, सो क्ह कालारिणा निहओ ? ॥ ३८ ॥
 किं वा इमेण कीरइ, कयलीथंभो व साररहिण्णं । देहेण दुक्ख-दोमाइकरेण भोगाहिलासीणं ? ॥ ३९ ॥
 गम्भवसहीए भोया, पियरं नमिऊण परमसंवेगा । दोण्णि वि महिन्दउदयं, उज्जाणं पत्थिया धीरा ॥ ४० ॥
 अमयरसनामधेयं, साहु पडिवज्जिऊण ते सरणं । पवइया खायजसा, उत्तमगुणधारया जाया ॥ ४१ ॥
 एकत्तो सुयविरहो, मरणं च सहोयरस्स अन्नतो । घणसोयमहावत्ते, रामो, दुक्खणवे पडिओ ॥ ४२ ॥
 रामस्स पिया पुत्ता, पुत्ताण उ वल्लहो य सोमिच्ची । विरहे तस्स नराहिव !, रामो अइदुक्खिओ जाओ ॥ ४३ ॥
 एवं कम्मनिओगे, संपत्ते सबसंगए बन्धुजणे । सोमं वेरग्गसमं, जायन्तिह विमलचेट्ठिया सप्पुरिसा ॥ ४४ ॥

॥ इह पडमचरिए लवणं-ऽकुसतयोवणपवेमविहाणं नाम दसुत्तरसयं पव्वं समत्तं ॥

हा प्रणिपात करनेवाले पर वात्सल्यभाव रखनेवाले ! तुम उठो और सम्भ्रमयुक्त हमारे साथ हँसकर बातें करो । (३१) हा दक्षिण्य गुणाकर ! तुम्हारे पास राम खड़े हैं, क्या इन पर भी तुम रुष्ट हुए हो ? जिससे आसन परसे खड़े नहीं होते ? (३२) हे नाथ ! सभामंडपमें आये हुए और तुम्हारे दर्शनके लिए उत्सुक मनवाले दुःखी सुभटोंके साथ चित्तमें शान्ति धारण करके तुम बातचीत करो । (३३) हा नाथ ! विलाप करते हुए इस अन्तःपुरकी क्या तुम नहीं देखते ? शोकातुर और दीन मुखवाले लोगोंका तुम दुःख दूर क्यों नहीं करते ? (३४) अत्यन्त शोकातुर और रोती हुई युवतियोंसे वहाँ किसका हृदय करुणापूर्ण और कण्ठ गदगद नहीं हुआ ? (३५) इस प्रकार रोती हुई युवतियों द्वारा फेंके और छोड़े गये हार, कटक आदिसे राजभवनका सारा आँगन और सभा-स्थान छा गया । (३६)

उधर लक्ष्मणके मरणको सुनकर अत्यन्त संवेगयुक्त धीर लवण और अंकुश तत्क्षण भोगोंसे विरक्त हुए । (३७) वे सोचने लगे कि जो लक्ष्मण युद्धमें देवों द्वारा भी अजेय थे वे बल एवं वीर्यसे युक्त होने पर भी कालरूपी शत्रु द्वारा कैसे मारे गये ? (३८) अथवा कदलीस्तम्भके समान सारहीन, दुःख और दुर्गति प्रदान करनेवाले और भोगोंके अभिलाषी इस देहका क्या प्रयोजन है ? (३९) गर्भनिवाससे डरे हुए, परम संवेगयुक्त और धीर वे दोनों पिताको नमस्कार करके महेन्द्रोदय उद्यानकी ओर गये । (४०) अमृतरस नामक साधुकी शरण स्वीकारकर ख्यात यशवाले उन्होंने प्रव्रज्या ली और उत्तम गुणोंके धारक बने । (४१) एक तरफ़ पुत्रोंका वियोग और दूसरी तरफ़ भाईका मरण । इस तरह अत्यन्त शोक रूपी बड़े बड़े भँवरवाले दुःखार्णवमें राम गिर पड़े । (४२) रामको पुत्र प्रिय थे और पुत्रों की अपेक्षा लक्ष्मण अधिक प्रिय थे । हे राजन् ! उसके विरहमें राम अतिदुःखित हुए । (४३) इस तरह कर्मके नियमवशा बन्धुजनकी मृत्यु होनेपर वैराग्यके तुल्य शोक होता है, किन्तु सत्पुरुष तो ऐसे समय विमल आचरणवाले बनते हैं । (४४)

॥ पद्मचरितमें लवण और अंकुशका तपोवनमें प्रवेश-विधान नामक एक सौ दसवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

१. अत्थाणियाग—प्रत्य० । २. •डाणं गेहदरि—प्रत्य० । ३. •इणुच्छणी—प्रत्य० । ४. •धम्मं व सा—सु० ।
 ५. •मसंविग्गा—प्रत्य० ।

१११. रामविष्पलावविहाणपच्चं

अह कालमयसमाणे, सेणिय ! नारायणे जुगपहाणे । रामेण सयलरज्जं, बन्धवनेहेण परिचत्तं ॥ १ ॥
लच्छीहरस्स देहं, सुरहिसुगन्धं सहावओ मउयं । जीएण वि परिमुक्कं, न मुयइ पउमो सिणेहेणं ॥ २ ॥
अग्घायइ परिचुम्बइ, ठवेइ अङ्गे पुणो फुसइ अङ्गं । रुयइ महासोगाणलसंतत्तो राहवो अहियं ॥ ३ ॥
हा कह मोत्तण मए, एक्काणिं दुक्खसागरनिमग्गं । अहिलससि वच्छ ! गन्तुं, सिणेहरहिओ इव निरुत्तं ? ॥ ४ ॥
उट्टेहि देव ! तुरियं, तवोवणं मज्झ पत्थिया पुत्ता । जाव न वि जन्ति दूरं, ताव य आणेहि गन्तूणं ॥ ५ ॥
धीर ! तुमे रहियाओ, अइगाढं दुक्खियाओ महिलाओ । लोलन्ति धरणिवट्टे, कलुणपलावं कुणन्तीओ ॥ ६ ॥
वियलियकुण्डलहारं, चूडामणिमेहलाइयं एयं । जुवइजणं न निवारसि, वच्छय ! अहियं विलवमाणं ॥ ७ ॥
उट्टेहि सयणवच्छल !, वाया मे देहि विलवमाणस्स । किं व अकारणकुविओ, हरसिं मुहं दोसरहियस्स ? ॥ ८ ॥
न तथा दहइ निदाहो, दिवायरो हुयवहो व पज्जलिओ । नह दहइ निरवसेसं, देहं एक्कोयरविओगो ॥ ९ ॥
किं वा करेमि वच्छय ! ? कत्तो वच्चामि हं तुमे रहिओ ? । ठाणं पेच्छामि न तं, निव्वाणं ज्जथ उ लहामि ॥ १० ॥
हा वच्छ ! मुच्चसु इमं, कोवं सोमो य होहि संखेवं । संपइ अणगाराणं, वट्टइ वेला महरिसीणं ॥ ११ ॥
अत्थाओ दिवसयरो, लच्छीहर ! किं न पेच्छसि इमाइं । मउलन्ति कुवलयइं, वियसन्ति य कुमुयसण्डाइं ? ॥ १२ ॥
अत्थरह लहुं सेज्जं, काऊण भुयन्तरम्मि सोमिच्छिं । सेवामि जेण निदं, परिवज्जियसेसवावारो ॥ १३ ॥
संपुण्णचन्दसरिसं, आसि तुमं अइमणोहरं वयणं । कज्जेण केण सुपुरिस !, संपइ विगयप्पमं जायं ? ॥ १४ ॥

१११. रामका विलाप

युगप्रधान नारायण लक्ष्मणके मरते पर बन्धुस्नेहके कारण रामने सारा राज्य छोड़ दिया । (१) लक्ष्मणकी सुगन्धित महकवाली और स्वभावसे ही कोमल देहको प्राणोंसे रहित होने पर भी राम स्नेहवश नहीं छोड़ते थे । (२) शोकाम्रिसे अत्यन्त सन्तप्त राम उसे सूँघते थे, चूमते थे, गोदमें रखते थे, फिर अंगका स्पर्श करते थे और बहुत रोते थे । (३) हा वत्स ! दुःखसागरमें निमग्न एकाकी मुझे छोड़कर स्नेहरहित तुमने चुपचाप कैसे जानेकी इच्छा की ? (४) हे देव ! जल्दी उठो ! मेरे पुत्र तपोवनमें गये हैं । जब तक वे दूर नहीं निकल जाते तब तक जा करके तुम उन्हें ले आओ । (५) हे धीर ! तुम्हारे बिना अत्यन्त दुःखित स्त्रियाँ करुण प्रलाप करती हुई जमीन पर लोटती हैं । (६) हे वत्स ! कुण्डल और हार तथा चूडामणि और मेखला आदिसे रहित इन अत्यधिक रोती हुई युवतियोंको तुम क्यों नहीं रोकते ? (७) हे स्वजनवत्सल ! तुम उठो और रोते हुए मेरे साथ बातें करो । निष्कारण कुपित तुमने दोषरहित मेरा सुख क्यों हर लिया है ? (८) आगकी तरह जलता हुआ ग्रीष्मकाल अथवा सूर्य वैसा नहीं जलाता जैसा सहादर भाईका वियोग सारी देहको जलाता है । (९) हे वत्स ! तुम्हारे बिना मैं क्या करूँ ? कहाँ जाऊँ ? ऐसा कोई स्थान नहीं देखना जहाँ मैं शान्ति पाऊँ । (१०) हा वत्स ! इस क्रोधका त्याग करो और थोड़ा-सा सौम्य बनो । अब अनगर महीषियोंकी आगमन-वेला है । (११) हे लक्ष्मण ! सूर्य अस्त हुआ है । क्या तुम नहीं देखते कि कमल बन्द हो रहे हैं और कुमुदवन खिल रहे हैं । (१२) जल्दी ही सेज बिछाओ, जिससे बाकीके व्यापारों को छोड़कर लक्ष्मणको अपने बाहुमें लपेटकर मैं निद्राका सेवन करूँ । (१३) हे सुपुरुष ! पूर्ण चन्द्रमाके समान तुम्हारा अतिसुन्दर मुख था । अब वह किस लिए कान्तिहीन हो गया है ? (१४) तुम्हारे मनमें जो

१. •वअइरम्मं—प्रत्य० । २. •इयं सव्वं । जुवइजणं ण वि वारसि—प्रत्य० । ३. •सिं मुहं दो—मु० । ४. अच्चुरह—प्रत्य० ।

५. परिसेसियसे—प्रत्य० ।

जं तुञ्ज हिययइदं, दवं संपाययामि तं सवं । सबावारमणहरं, काऊण मुहं समुल्लवसु ॥ १५ ॥
 मुञ्ज विसायं सुपुरिस!, अहं चिय खेयरा अइविरुद्धा । सबे वि आगया वि हु, धेतुमणा कोसलं कुद्धा ॥ १६ ॥
 महयं पि सत्तुसेवं, जिणयन्तो जो इमेण चक्रेणं । सो कह सहसि परिभवं, कयन्तं चकस्स धीर तुमं ॥ १७ ॥
 सुन्दर ! विमुञ्ज निहं, वोलीणा सबरी रवी उइओ । देहं पसाहिऊणं, चिट्ठसु अत्थाणमज्झगओ ॥ १८ ॥
 सबो वि^३ य पुहइजणो, समागओ तुञ्ज सन्नियासम्मि । गुरुभत्त ! मित्तवच्छल !, एयस्स करेहि माणत्थं ॥ १९ ॥
 निययं तु सुप्पहायं, जिणाण लोगावल्लोमदरिसीणं । भवियं पउमाण वि पुणो, जायं मुणिसुवओ सरणं ॥ २० ॥
 वच्छ ! तुमे चिरसइए, सिदिलायइ जिणहरेसु संगीयं । समणा जणेण समयं, संपत्ता चेव उव्वेयं ॥ २१ ॥
 उट्टेहि सयणवच्छल !, धीरेहि ममं विसायपडिवत्तं । एयाक्थम्मि तुमे, न देइ सोहा इमं नयरं ॥ २२ ॥
 णूणं कओ विओगो, कस्स वि जीवस्स अन्नजम्मम्मि मया । एक्कोयरस्स वंसणं, विमलं विहाणस्स पावियं तेण सया ॥ २३ ॥

॥ इइ पञ्चमचरिए रामचिप्पलावविहाणं नाम एगादरुत्तरसयं पवं समत्तं ॥

११२. लक्खणविओगविहीसणवयणपवं

एत्तो खेयरवसहा, सबे^{१०} तं जाणिऊण वित्तन्तं । महिलसु समं सिग्घं, साएयपुरिं समणुपत्ता ॥ १ ॥

अह सो लक्काहिवई, विहीसणो सह सुएहिं सुगगीवो । चन्दोयरस्स पुत्तो, तहेव ससिवद्धणो सुहडो ॥ २ ॥

इए हो वह सारा द्रव्य मैं ला देता हूँ । चेष्टाओंसे मुखको मनोहर करके तुम बोलो । (१५) हे सुपुरुष ! तुम विषादका त्याग करो । हमारे जो विरोधी खेचर थे वे सब क्रुद्ध होकर साकेतपुरीको लेनेकी इच्छासे आये हैं । (१६) हे धीर ! जो इस चक्रसे बड़ी भारी शत्रुसेनाको भी जीत लेता था वह तुम यमके चक्रका पराभव कैसे सहोगे ? (१७) हे सुन्दर ! नींद छोड़ो । रात बीत गई है । सूर्य उदित हुआ है । शरीरका प्रसाधन करके सभामण्डपके बीच जाकर बैठो । (१८) हे गुरुभक्त ! मित्रवत्सल ! पृथ्वी परके सब लोग तुम्हारे पास आये हैं । इनका सम्मान करो । (१९) लोक और अलोकको देखनेवाले जिनके लिए तो सर्वदा सुप्रभात ही होता है, किन्तु भव्यजन रूपी कमलोंके लिए मुनिसुव्रत स्वामी शरणरूप हुए हैं, यही सुप्रभात है । (२०) हे वत्स ! तुम्हारे बिना जिनमन्दिरोंमें संगीत शिथिल हो गया है । लोगोंके साथ श्रमण भी उद्धिग्न हो गये हैं । (२१) हे स्वजनवत्सल ! तुम उठो । विषादयुक्त मुझे धीरज बँधाओ । तुम्हारे इस अवस्थामें रहते यह नगर शोभा नहीं देता । (२२) दूसरे जन्ममें मैंने अवश्य ही किसी जीवका वियोग किया होगा । उसीसे मैंने विमल भाग्यवाले सहोदर भाईका दुःख पाया है । (२३)

॥ पञ्चचरितमें रामके विप्रलापका विधान नामक एक सौ ग्यारहवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

११२. विभीषणका आश्वासन

इस वृत्तान्तको जानकर सभी खेचरराजा शीघ्र ही महिलाओंके साथ, साकेतपुरीमें आ पहुँचे । (१) वह लंकापति विभीषण, पुत्रोंके साथ सुभ्राव, चन्द्रोदरका पुत्र तथा सुभट शशिवर्धन—इन तथा दूसरे बहुत-से आँखोंमें आँसुओंसे युक्त

१. •पाडयामि तं सवं । बावारमणहरं तं, काऊण—प्रत्य । २. •न्तवक्कस्स—सु० । ३. वि हु पु०—प्रत्य । ४. मा (१ मो)
 वच्छं—प्रत्य० । ५. •यकुसुयाण य पुणो,—प्रत्य । ६. जाणं सु०—सु० । ७. वच्छ ! तुमए विरहिए,—प्रत्य० । ८. वयणं—सु० ।
 ९. •लपहाणस्स तेण पावियं पि सया—प्रत्य० । १०. सबे ते जा०—प्रत्य० ।

एए अन्ने य वहू, खेयर'वसहा सअंसुनयणजुया । पविसन्ति सिरिहरं ते, रामस्स कयञ्जलिपणामा ॥ ३ ॥
 अह ते विसणवयणा, काऊण विही उ महियले सबे । उवविट्ठा पउमाभं, भणन्ति पाएसु पडिऊणं ॥ ४ ॥
 जइ वि य इभो महाजस !, सोगो दुक्खेहिं मुञ्चइ हयासो । तह वि य अवसेण तुमे, मोत्तवो अह वयणेणं ॥ ५ ॥
 ते एव जंपिऊणं, तुण्हका खेयरा ठिया सबे । संथावणम्मि कुसलो, तं भणइ विहीसणो वयणं ॥ ६ ॥
 जलवुब्बुयसरिसाई, राहव ! देहाई सबजीवाणं । उप्पज्जन्ति चयन्ति य, नाणानोणीसु पत्ताणं ॥ ७ ॥
 इन्द्रा सलोगपाला, मुज्जन्ता उत्तमाई सोक्खाई । पुण्णक्खयम्मि ते वि य, चइउं अणुहोन्ति दुक्खाई ॥ ८ ॥
 ते तत्थ मणुयदेहे, तणविन्दुचलाचले अइदुगन्थे । उप्पज्जन्ति महाजस !, का सत्ता पायए लोए ? ॥ ९ ॥
 अन्नं मयं समाणं, सोयइ अहियं विमूढभावेणं । मच्चुवयणे पविट्ठं, न सोयई चेव अप्पाणं ॥ १० ॥
 जत्तो पमइ जाओ, जीवो तत्तो पमइ मच्चूणं । गहिओ कुरङ्गओ विव, करालवयणेण सीहेणं ॥ ११ ॥
 लोयस्स पेच्छसु पह !, परमं चिय साहसं अभीयस्स । मच्चुस्स न वि य बीहइ, पुरओ वि हु उग्गदण्डस्स ॥ १२ ॥
 तं नत्थि जीवलोए, ठाणं तिल्लसुसतिभागमेत्तं पि । जत्थ न जाओ जीवो, जत्थेव न पाविओ मरणं ॥ १३ ॥
 मोत्तण जिणं एकं, सबं ससुरासुरम्मि तेलोक्के । मच्चूण छिज्जइ पह !, वसहेण तणं व तहियसं ॥ १४ ॥
 भमिऊणं य संसारं, जीवो कह कह वि लहइ मणुयसं । बन्धवनेहविणडिओ, न गणइ आउं परिगलन्तं ॥ १५ ॥
 जणणीए जइ वि गहिओ, रक्खिज्जन्तो वि आउहसएहिं । तह वि य नरो नराहिव !, हीरइ मच्चूण अकयत्थो ॥ १६ ॥
 संसारम्मि अणन्ते, सयणोहा इह सरीरिणा पत्ता । ते सिन्धुसायरस्स वि, सिकयाए सामि अहिययरा ॥ १७ ॥

खेचर राजाओंने रामको हाथ जोड़कर प्रणाम करके भवनमें प्रवेश किया । (२-३) तब विषण्ण मुखवाले ने सब यथोचित विधि करके जमीन पर बैठे और पैरोंमें गिरकर रामसे कहने लगे कि, हे महायश ! चक्षुषि हताश करनेवाला यह शोक मुद्रिकल से छोड़ा जा सके ऐसा है, तथापि हमारे कहनेसे आपको इसका परित्याग करना चाहिए । (४-५) ऐसा कहकर वे सब खेचर चुप हो गये । तब सान्त्वना देनेमें अतिकुशल विभीषणने उनसे ऐसा वचन कहा । (६)

हे राघव ! सब जीवोंके शरीर पानीके बुल्लेके समान क्षणिक हैं । नाना योनियोंको प्राप्त करके जीव पैदा होते हैं और मरते हैं । (७) लोकपालोंके साथ इन्द्र उत्तम सुखोंका उपभोग करते हैं । पुण्यका क्षय होने पर वे भी च्युत होकर दुःखोंका अनुभव करते हैं । (८) हे महायश ! वे यहाँ तिनके पर स्थित वृद्ध की भाँति अस्थिर और अतिदुर्गन्धमय मनुष्य देहमें पैदा होते हैं, तो फिर पापी लोगोंकी तो बात ही क्या ? (९) मनुष्य मरे हुए दूसरेके लिए विमूढ़ भावसे बहुत शोक करता है, किन्तु मृत्युके मुखमें प्रविष्ट अपने आपका शोक नहीं करता । (१०) जबसे जीव पैदा हुआ है तबसे मृत्युने, कराल मुखवाले सिंहके द्वारा पकड़े गये हिरनकी भाँति, पकड़ रखा है । (११) हे प्रभो ! निडर लोगोंका अतिसाहस तो देखो । आगे खड़े हुए उग्र दण्डवाले यमसे भी वे नहीं डरते । (१२) जीवलोकमें तिल और तुपके तीसरे भाग जितना ऐसा कोई भी स्थान नहीं है जहाँ जीव पैदा नहीं हुआ है और जहाँ जीवने मरण भी नहीं पाया है । (१३) हे प्रभो ! सुर-असुरसे युक्त त्रिलोकमें एक जिनवरको छोड़कर सब मृत्युके द्वारा, वृषभके द्वारा उस दिनके घासकी भाँति, विच्छिन्न किये जाते हैं । (१४) संसारमें भ्रमण करके जीव किसी तरहसे मनुष्य भव प्राप्त करता है । बन्धुजनोंके स्नेहमें नाचता हुआ वह बीतती हुई आयुका ध्यान नहीं रखता है । (१५) हे राजन् ! भले ही माता द्वारा पकड़ा हुआ हो अथवा सैकड़ों आयुधों द्वारा रक्षित हो, फिर भी अकृतार्थ मनुष्य मृत्युके द्वारा हरण किया जाता है । (१६) हे स्वामी ! अनन्त संसारमें शरीरी जीवने जो स्वजनसमूह पाये हैं वे सिन्धु और सागरकी रेतसे भी कहीं अधिक हैं । (१७) पापमें आसक्त जीवने नरकोंमें ताँवे

१. ०रसुहडा उअं—प्रत्य० । २. विहीए म—मु० । ३. ०भावियमइकुसलो—मु० । ४. चइयं—प्रत्य० । ५. ते एए—प्रत्य० । ६. अन्नं तु मयसमाणं—मु० । ७. ०ठं, ण य सोयइ चेव—प्रत्य० । ८. ०सुरं पि ते—प्रत्य० । ९. ०ण वि सं—प्रत्य० । १०. सयणो भाई सरी—प्रत्य० ।

नरएसु यं च पीयं, कलिलं जीवेण पावसत्तेणं । तं जयइ पिण्डियं चियं, सयंभुरमणस्स वि जलोहं ॥ १८ ॥
 पुंत्तो पिया रहुत्तमं !, जायइ धूया वि परभवे जणणी । बन्धू वि होइ, वइरी, संसारठिई इमा सामि ! ॥ १९ ॥
 रयणप्पहाइयं नं, दुक्खं जीवेण पावियं बहुसो । तं निसुणिऊण मोहं, को न चयइ उत्तमो पुरिसो ? ॥ २० ॥
 तुम्हारिसा वि राहव !, उवग्गिज्जन्ति जइ वि मोहेणं । का सन्ना हवइ प्ह !, धीरत्ते पाययनराणं ? ॥ २१ ॥
 एयं निययसरीरं, जुत्तं मोत्तुं कस्ययं दोसावासं ।
 किं पुण अन्नस्स तणुं, न य उज्जसि देव सुविमलं करिय मणं ? ॥ २२ ॥

॥ इइ पद्मचरिए लक्खणविओगबिहीसणवयणं नाम वारसुत्तरसयं पब्बं समत्तं ॥

११३. कल्लणमित्तदेवागमणपब्बं

सुग्गोवमाइएहिं, भडेहिं नमिऊण राहवो भणिओ । सक्कारेहि महाजस !, एयं लच्छीहरस्स तणुं ॥ १ ॥
 तो भणइ सकलुसमणो, रामो अचिरेण अज्ज तुम्भेहिं । माइ-पिइ-सयणसहिया, उज्जह अहियं खल्लसहावा ॥ २ ॥
 उट्टेहि लच्छिवल्लह !, अन्नं देसं लहुं पगच्छामो । जत्थ इमं अइकहुयं, खल्लण वयणं न य सुणामो ॥ ३ ॥
 निब्भच्छिऊण एव, खेयरवसहाऽइसोगसंततो । लच्छीहरस्स देहं आहत्तो चुम्बिउं रामो ॥ ४ ॥
 अह सो अवीससन्तो, ताहे लच्छीहरस्स तं देहं । आरुहिय निययखन्धे, अन्नूदेसं गओ पउमो ॥ ५ ॥

आदिके रसका जो पान किया है उसका यदि ढेर लगाया जाय तो वह स्वयम्भूरमण सागरकी जलराशिको भी मात कर दे । (१८) हे रघूत्तम ! परभवमें पुत्र पिता और पुत्री माता हो सकती है तथा भाई भी वैरी हो सकता है । हे स्वामी ! संसारकी यह स्थिति है । (१९) रत्नप्रभा आदि नरकभूमियोंमें जीवने जो अनेक बार दुःखः पाया है उसे सुनकर कौन उत्तम पुरुष मोहका त्याग न करेगा ? (२०) हे राघव ! यदि आपके सरीखे भी मोहवश उद्विग्न हों तो फिर, हे प्रभो ! प्राकृत जनोंकी धीरजके बारेमें कहना ही क्या ? (२१) कषाय एवं दोषोंके आवास रूप इस शरीरका त्याग करना उपयुक्त है । तो फिर, हे देव ! मनको अतिनिर्मल करके दूसरेके शरीरका त्याग क्यों नहीं करते ? (२२)

॥ पद्मचरितमें लक्ष्मणके वियोगमें विभीषणका उपदेश नामक एक सौ बारहवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

११३. मित्र देवोंका आगमन

सुग्रीव आदि सुभदोंने रामको प्रणाम कर कहा कि, हे महायश ! लक्ष्मणके इस शरीरका संस्कार करो । (१) तब कलुषित मनवाले रामने कहा कि, आज तुम दुष्ट स्वभाववाले माता, पिता तथा स्वजनोंके साथ अपने आपको एक दम जला डालो । (२) हे लक्ष्मण ! तुम उठो । जल्दी ही हम दूसरे देशमें चले जायँ जहाँ दुष्टोंका ऐसा अत्यन्त कटुआ वचन सनना नहीं पड़ेगा । (३) खेचर राजाओंका इस तरह तिरस्कार करके शोकसे अतिसन्तप्त राम लक्ष्मणके शरीरको चूमने लगे । (४) इसके पश्चात् अविश्वास करके लक्ष्मणके उस शरीरको अपने कन्धे पर रखकर अन्य प्रदेशमें चले गये ।

१. गिरएसु यं च पीयं जीवेणं कलमलंततत्तेणं । तं जिणइ—प्रत्य० । २. ०या उ जायइ, राहव ! धूया—प्रत्य० । ३. ०इ वेरी—प्रत्य० । ४. ०हाइदुक्खं, जीवेणं पावियं तु इइ बहुसो—प्रत्य० । ५. ०यदोससयं । किं—प्रत्य० । ६. रामो तुम्भेहिं अज्ज अचिरेणं । मा० प्रत्य० । ७. ०स्स पट्टं, आ०—प्रत्य० । ८. अन्नं देसं गओ रामो—प्रत्य० ।

भुयपङ्गरोवगूढं, मज्जणपीठे तओ ठवेऊणं । अहिसिञ्चइ सोमिच्चिं, कञ्चणकलसेई पउमाभो ॥ ६ ॥
 आहरिऊण असेसं, ताहे वाहरइ सूवयारं सो । सज्जेहि भोयणविहिं, सिग्घं मा कुणसु वैक्खेवं ॥ ७ ॥
 आणं पडिच्छिऊणं, करणिज्जं एवमाइयं सबं । अणुट्टियं तु सिग्घं, सामिहिएणं परियणेणं ॥ ८ ॥
 सो ओयणस्स पिण्डं, रामो पक्खिवइ तस्स वयणम्मि । नऽहिलसइ नेव पेच्छइ, जिणवरधम्मं पिव अभवो ॥ ९ ॥
 एसा य उत्तमरसा, निययं कायम्बरी तुमं इट्ठा । पियसु चसएसु लक्खणं, उप्पलवरसुरहिगन्धञ्जा ॥ १० ॥
 ववीस-वंस तिसरिय-वीणा-गन्धव-विविहनडएसु । थुवइ अविरहियं सो, सोमिच्चिं रामवयणेणं ॥ ११ ॥
 एयाणि य अन्नाणि य, करणिज्जसयाइं तस्स पउमाभो । कारेइ मूढहियओ, परिवज्जियसेसवावारो ॥ १२ ॥
 ताव मुणिऊण एयं, वित्तन्तं वेरिया रणुच्छाहा । चारु य वज्जमाली, रयणक्खाई य सुन्दसुया ॥ १३ ॥
 न्पन्ति अम्ह गुरवं, वहिऊणं तेण अगणियभएणं । पायालंकारपुरे, ठविओ य विराहिओ रज्जे ॥ १४ ॥
 सीयाएँ अवहियाए, लद्धूणं तत्थ पवरसुग्गीवं । लद्धेउं लवणजलं, अणेयदीवा विणासेन्तो ॥ १५ ॥
 पत्तो च्चिय विज्जाओ, ताहे चक्केण रावणं समरे । मारेऊण य लद्धा, कया वसे खेयरा सबे ॥ १६ ॥
 सो कालचक्कपहओ, सोमित्तो पत्थिओ परं लोगं । रामो वि तस्स विरहे, मोहेण वसीकओ अहियं ॥ १७ ॥
 अज्जप्पमूइ वट्टइ, लम्मासो तस्स मोहेगहियस्स । वावारवज्जियस्स य, भाइसरीरं वहन्तस्स ॥ १८ ॥
 काऊण संपहारं, एवं ते निययसाहणसमग्गा । सन्नद्धवद्धकवया, साएयपुरिं समणुपत्ता ॥ १९ ॥
 सोऊण वज्जमालिं, समागयं सुन्दपुत्तपरिवारं । रामो वज्जावत्तं, वाहरइ कयन्तदण्डसमं ॥ २० ॥

(५) भुजाओंमें आलिंगित लक्ष्मणको स्नानपीठ पर रखकर रामने सोनेके कलशोंसे नहलाया । फिर पूर्ण रूपसे आभूषित करके उन्होंने रसोइयेसे कहा कि जल्दी ही भोजनविधि सज्ज करो । देर मत लगाओ । (७) आज्ञा पाकर जो कुछ करणीय था वह सब स्वामीका हित चाहनेवाले परिजनोंने तत्काल किया । (८) रामने चावलका एक कौर उसके मुखमें डाला । जिस तरह अभव्यर्जाव जिनवरके धर्मको न तो चाहता है और न देखता ही है उसी तरह उसने उस कौरको न तो चाहा और न देखा ही । (९)

हे लक्ष्मण ! उत्तम रसवाली और सुन्दर कमलोंकी माँठी महकसे युक्त यह तुम्हारी अतिप्रिय मदिरा है । प्यालोंसे इसे पीओ । (१०) रामके कहनेसे ववीस (वाद्यविशेष), बंसी, त्रिसरक (तीन तारवाला वाद्य), वीणा, संगीत तथा विविध नृत्योंसे उस लक्ष्मणकी अविरल स्तुति की गई । (११) मूढ़ हृदयवाले रामने दूसरे सब व्यापारोंका त्याग करके उसके लिए ये तथा दूसरे सैकड़ों कार्य करवाये । (१२)

उस समय यह वृत्तान्त सुनकर युद्धके लिए उत्साही बैरी चारु, वज्रमाली तथा ररनाक्ष आदि सुन्दके पुत्र कहने लगे कि भयको न माननेवाले उसने हमारे गुरुजनको मारकर पातालपुरके राज्य पर विराधितको स्थापित किया है । (१३-१४) सीताका अपहरण होने पर प्रवर सुम्रीवको पाकर और लवणसागरको लौंघकर अनेक द्वीपोंका विनाश करते हुए उसने अनेक विद्याएँ प्राप्त की । तब चक्रसे रावणको मारकर लंका और सब खेचरोंको अपने बसमें किया । (१५-१६) कालके चक्रसे आहत होने पर उस लक्ष्मणने परलोककी ओर प्रस्थान किया है । उसके विरहमें राम भी मोहके अत्यन्त वशीभूत हो गये हैं । (१७) मोहसे ग्रस्त, व्यापारोंसे रहित और भाई के शरीरको होनेवाले उस रामको आज तक छः मास बात गये हैं । (१८) इस तरह मंत्रणा करके तैयार होकर क्वच बाँधे हुए वे अमनी सेना के साथ साकेतपुरीमें आ पहुँचे । (१९)

सुन्दके पुत्र परिवारके साथ वज्रमाली आया है ऐसा सुन रामने यमदण्ड जैसे वज्रावर्त धनुषको मंगवाया । (२०) लाये गये उस धनुषको इन्होंने ग्रहण किया । फिर लक्ष्मणको गोदमें रखकर रामने शत्रुसेनाके ऊपर

१. वज्राव०—प्रत्य० । २. विक्रवेवं—सु० । ३. परिसैसियसव्ववा०—प्रत्य० । ४. ताव मुणि०—प्रत्य० । ५. पयणक्खासंद सुन्द०—प्रत्य० । ६. लद्धूणं य तेण तत्थ सुग्गीवं—प्रत्य० । ७. रामणं—प्रत्य० । ८. कनिहतो, सो—प्रत्य० । ९. ओ वरं लोगं—प्रत्य० ।

उवणीयं चिय गेण्हइ, तं घणुयं लक्खणं ठविय अङ्गे । ताहे कयन्तसरिसो, देइ र्ह रिनुबले विट्ठि ॥ २१ ॥
 एयन्तरम्मि जाओ, आसणकम्पो सुराण सुरलोए । माहिन्दनिवासीणं, तत्थ जडाऊ-कयंताणं ॥ २२ ॥
 अवहिविसएण दट्टुं, देवा सोगाउरं पउमनाहं । तं चेव कोसलपुरिं, पडिरुद्धं वेरियबलेणं ॥ २३ ॥
 सरिऊण सामियगुणे, समागया कोसलपुरिं देवा । वेदन्ति अरिबलं तं, समन्तओ सेन्ननिवहेणं ॥ २४ ॥
 दट्टुण सुरवलं तं, भीया विजाहरा वियलियत्था । नासेन्ति एकमेकं, लङ्घेन्ता निययपुरिहुत्ता ॥ २५ ॥
 पत्ता निययपुरं ते जंपन्ति बिहीसणस्स कहं वयणं । पेच्छामो गयलज्जा, विभग्गमाणा खलसहावाः ॥ २६ ॥
 अह ते इन्दइतणया, सुन्दसुया चेव जायसंवेगा । रइवेगस्स सयासे, मुणिस्स दिक्खं चिय पवत्ता ॥ २७ ॥
 सत्तुभयम्मि ववगए, सुरपवरा तस्स सन्नियासम्मि । जणयन्ति सुक्करुक्खं, रामस्स पवोहणट्टम्मि ॥ २८ ॥
 वसहकलेवरजुत्तं, सीरं काऊण तत्थ य जडाऊ । उच्छहइ वाहिउं जे, पबिखरइ य वीयसंघायं ॥ २९ ॥
 रोवइ य पउमसण्हं, सिलयले पाणिएण सिञ्चन्ता । पुणरवि चकारुद्धो, पीलइ सिकया जडाउसुरो ॥ ३० ॥
 एयाणि य अन्नाणि य, अत्थविरुद्धाइ तत्थ कज्जाइं । कुणमाणा सुरपवरा, ते पुच्छइ हलहरो दो वि ॥ ३१ ॥
 भो भो ! सुक्कतरुवरं, किं सिञ्चसि मूढ ! सलिलनिवहेणं । वसहकलेवरजुत्तं, सीरं नासेसि विज्जसमं ॥ ३२ ॥
 सलिले मन्थिज्जन्ते, सुट्टु वि ण य मूढ होइ णवणीयं । सिकयाए पीलियाए, कत्तो चिय जायए तेळं ॥ ३३ ॥
 न य होइ कज्जसिद्धी, एव कुणन्ताण मोहगहियारणं । जायइ सरीरखेओ, नवरं विवरीयबुद्धीणं ॥ ३४ ॥
 तं भणइ कयन्तसुरो, तुहमवि जीवेण वज्जियं देहं । कइ बहसि अपरितन्तो, नेहमहामोहगहगहिओ ? ॥ ३५ ॥

यम सरीखी दृष्टि डाली । (२१) उस समय देवलोकमें माहेन्द्रकल्प निवासी जटायु और कृतान्तवक्त्र देवोंके आसन काँप उठे । (२२) अवधिज्ञानसे देवोंने शोकातुर रामको तथा शत्रुके सैन्यद्वारा घिरी हुई साकेतपुरीको देखा । स्वामीके गुणोंको याद करके वे देव साकेतपुरीमें आये और शत्रुकी सेनाको सैन्यसमूह द्वारा चारों ओरसे घेर लिया । (२४) उस देवसैन्यको देखकर भयभीत हो अस्त्रोंका त्याग करनेवाले विद्याधर एक दूसरेको लाँघते हुए अपनी नगरीकी ओर भागे । (२५) अपने नगरमें पहुँचकर वे कहने लगे कि निर्लेज्ज, मानहीन और दुष्ट स्वभाववाले हम विभोषणका मुख कैसे देख सकेंगे ? (२६) इसके बाद इन्द्रजीत और सुन्दके उन पुत्रोंने वैराग्य उत्पन्न होने पर रतिवेग मुनिके पास दीक्षा ली । (२७)

शत्रुओंका भय दूर होने पर देवोंने रामके प्रबोधके लिए उनके पास एक सूखा पेड़ पैदा किया । (२८) बैलोंके शरीरसे जुते हुए हलका निर्माण करके जटायु उसे चलानेके लिए उत्साहित हुआ और बीजसमूह बिखेरने लगा । (२९) जटायुदेव शिलातल पर पद्मवन बोकर उसे पानीसे सींचने लगा । फिर चक्की में बालू पीसने लगा । (३०) इन तथा अन्य निरर्थक कार्य करते हुए उन दोनों देवोंसे रामने पूछा कि अरे मूढ ! तुम पानीसे सूखे पेड़को क्यों सींचते हो ? बैलोंके शरीरोंसे युक्त हलको भी तुम बीजके साथ क्यों नष्ट करते हो ? (३१-३२) अरे मूर्ख ! पानीको खूब मथने पर भी मक्खन नहीं निकलेगा । बालूको पीसने पर कैसे तेल निकलेगा ? (३३) ऐसा करते हुए मूर्खोंको कार्यसिद्धी नहीं होती किन्तु विपरीत बुद्धिवालोंको केवल शरीरखेद ही होता है । (३४)

इस पर उनसे कृतान्तदेवने कहा कि स्नेह और महामोहरूपी ग्रहसे प्रस्त तुम भी सर्वथा खिन्न हुए बिना जीवरहित शरीरको क्यों धारण करते हो ? (३५) लक्ष्मणके उस शरीरका आलिंगन करके रामने कहा कि अमंगल करते हुए तुम

१. घणुवं—प्रत्य० । २. जडागीकथं—प्रत्य० । ३. •पुरं, प०—प्रत्य० । ४. •न्तओ गिययसेण्णेणं—प्रत्य० । ५. यपुरहु—प्रत्य० । ६. जडागी—प्रत्य० । ७. •रइ वी०—प्रत्य० । ८. रोयति—प्रत्य० । ९. जडागिसु०—प्रत्य० । १०. •विट्ठणाइं त०—प्रत्य० । ११. य तुग्घ क०—प्रत्य० ।

तं लक्ष्मणस्स देहं, अवगूहेऊण भणइ पउमाभो । किं सिरिहरं दुगुंछसि, अमङ्गलं चैव कुणमाणो ? ॥ ३६ ॥
 जाव कयन्तेण समं, परमो रामस्स वडइ विवाओ । रयणकलेवरखन्धो, ताव जडाऊ समणुपत्तो ॥ ३७ ॥
 दट्टण अभिमुहं तं, हलाउहो भणइ केण कज्जेणं । एयं कलेवरं चियं, मइमूढो वहसि खन्धेणं ? ॥ ३८ ॥
 भणिओ सुरेण पउमो, तुमं पि चाणेषु वज्जियं मडयं । वहसि अविवेगवन्तो, अहिययरं बालबुद्धीओ ॥ ३९ ॥
 बालग्गकोडिमैत्तं, दोसं पेच्छसि परस्स अइसिग्घं । मन्दरमेत्तं पि तुमं, न य पेच्छसि अत्तणो दोसं ॥ ४० ॥
 दट्टण तुमै परमा, मह पीई संपयं समणुजाया । सरिसा सरिसेसु सया, रज्जन्ति सुई जणे एस्स ॥ ४१ ॥
 काऊण मए पुरओ, जणम्मि सबाण बालबुद्धीणं । पुवपिसायाण तुमं, राया मोहं उवगयाणं ॥ ४२ ॥
 अहे मोहवसगया, दोण्णि वि उम्मत्तयं वयं काउं । परिहिण्डामो वसुहं, कुणमाण गहिलियं लोयं ॥ ४३ ॥
 एयं भणियं सुणित्तं, पसिदिलभावं च उवगए मोहे । सुमरइ गुरुवयणं सो, पउमो लज्जासमावन्तो ॥ ४४ ॥
 ववगयमोहघणो सो, पडिवोहणनिमलकिरणसंजुत्तो । चन्दो व सरयकाले, छज्जइ पउमो दढधिईओ ॥ ४५ ॥
 असणाइएण व जहा, लद्धं चिय भोयणं हिययइट्ठं । तण्हाप्रथेण सरं, दिट्ठं पिव सलिलपडिपुण्णं ॥ ४६ ॥
 लद्धं महोसहं पिव, अच्चन्तं वाहिपीडियतणूणं । एव पउमेण सरियं, गुरुवयणं चैव दुक्खेणं ॥ ४७ ॥
 पडिबुद्धो नरवसहो, जाओ पप्फुल्लकमलदलनयणो । चिन्तेइऽह उत्तिण्णो, अहयं मोहन्धकूवाओ ॥ ४८ ॥
 विमलं चिय संजायं, तस्स मणं गहियधम्मपरमत्थं । मोहंमलपडलमुक्कं, नज्जइ सरए व रविबिम्बं ॥ ४९ ॥
 अन्नं भवन्तरं पिव, संपत्तो विमलमाणसो रामो । चिन्तेऊणादत्तो, संसारठिई सुसंविग्गो ॥ ५० ॥

लक्ष्मणकी क्यों निन्दा करते हो ? (३६) जब कृतान्तके साथ रामका खूब विवाद हो रहा था तब जटायु रत्नोंसे युक्त मुरदेको कन्धे पर रखकर आ पहुँचा । (३७) उसे सम्मुख देखकर रामने कहा कि, अतिमूढ़ तुम क्यों इस मुरदेको कन्धे पर लेकर घूमते हो ? (३८) देवने रामसे कहा कि अविवेकी और अत्यधिक बालबुद्धिवाले तुम भी प्राणोंसे रहित मुरदेको धारण करते हो । (३९) बालके अग्रभाग जितना दूसरेका दोष तुम जल्दी ही देख लेते हो, किन्तु मन्दराचल जितना अपना दोष तुम नहीं देखते । (४०) तुम्हें देखकर इस समय मुझे अत्यन्त प्रीति उत्पन्न हुई है । सदृश व्यक्ति सदृश व्यक्तियोंके साथ ही सदा प्रसन्न होते हैं, ऐसी लोगोंमें अनुश्रुति है । (४१) लोकमें सब मूर्ख पुरुषोंका मुझे अगुआ बनाकर तुम पहलेके मोहप्राप्त मूर्खोंके राजा हुए हो । (४२) अतः मोहके वशीभूत हम दोनों ही उन्मत्त वचन बोलकर लोगोंको उन्मत्त बनाते हुए पृथ्वी पर परिभ्रमण करें । (४३)

ऐसा कहना सुनकर मोहभाव शिथिल होने पर लज्जित उस रामने गुरुके वचनको याद किया । (४४) मोहरूपी बादल दूर होने पर प्रतिबोधरूपी निर्मल किरणोंसे युक्त वे दृढमतिवाले राम शरत्कालीन चन्द्रमाकी भाँति शोभित हुए । (४५) भूखने जैसे मनपसन्द भोजन पाया और प्यासेने मानो पानीसे परिपूर्ण सरोवर देखा । (४६) व्याधिसे अत्यन्त पीड़ित शरीरवालेने मानो महौषधि पाई । इसी भाँति दुःखी रामने गुरुके वचनको याद किया । (४७) प्रतिबुद्ध राजा कमलदलके समान प्रफुल्ल नेत्रोंवाला हो गया । वह सोचने लगा कि मोहरूपी अन्धे कूर्पोंमें से मैं बाहर निकला हूँ । (४८) धर्मके परमार्थको ग्रहण करनेवाला उनका मन निर्मल हो गया । मोहरूपी मलपटलसे युक्त वे शरत्कालमें सूर्यबिम्बकी भाँति प्रतीत होते थे । (४९) निर्मल मनवाले रामने मानो दूसरा जन्म पाया । अत्यन्त वैराग्ययुक्त वे संसार स्थितिके बारेमें सोचने लगे । (५०)

१. जडागी—प्रत्य० । २. चिय, अइ—प्रत्य० । ३. णणुजुत्तो—प्रत्य० । ४. हियं इट्ठं—प्रत्य० ।
 ५. ताहोघत्थेण—प्रत्य० । ६. परिपु—प्रत्य० । ७. लवयणकमलो सो । चि—प्रत्य० । ८. मोहपडलमलमुक्कं—मु० ।

परिहिण्डन्तेण मया, संसारे क्व वि माणुसं जन्मं । लद्धं अलद्धं पुबं, मूढो च्चिय जाणमाणो हं ॥ ५१ ॥
 लब्धन्ति कलत्ताइं, संसारे बन्धवा य णेयविहा । एक्का जिणवरविहिया, नवरं च्चिय दुल्लाहो बोही ॥ ५२ ॥
 एवं पडिबुद्धं तं, देवा नाऊण अण्णो रिद्धिं । दावेन्ति हरिसियमणा, विभ्यज्जणिं तिहुयणम्मि ॥ ५३ ॥
 पवणो सुरहिसुयन्धो, जाणविमाणेसु छइयं गयणं । सुरजुवईसु मणहरं, गीयं वरवीणमहुरसरं ॥ ५४ ॥
 एयन्तरम्मि देवा, दोण्णि वि पुच्छन्ति तत्थ रहुणाहं । क्व तुज्ज नरवराहिव !, सुहेण दियहा वड्ढन्ता ॥ ५५ ॥
 तो भणइ सीरधारी, कतो कुसलं महं अपुण्णस्स । निययं तु ताण कुसलं, जाण दढा जिणवरे भत्तो ॥ ५६ ॥
 पुच्छामि फुडं साहह, के तुब्भे सोमदंसणसहावा ? । केणेव कारणेणं, जणियं च विचेट्ठियं एयं ? ॥ ५७ ॥
 ततो जडाउदेवो, जंइ जाणासि दण्डयारणे । मुण्णिरिसणेण तइया, गिद्धो तुब्भं समल्लीणो ॥ ५८ ॥
 धरिणीए तुज्ज नरवह !, अणुण्ण य लालिओ चिरं कालं । सीयाए हरणसमए, निहओ च्चिय रक्खसिन्देणं ॥ ५९ ॥
 तस्स मरन्तस्स तुमे, महिलविरहाउलेण वि क्वाए । दिन्धो य नमोक्कारो, पच्चमहापुरिससंजुत्तो ॥ ६० ॥
 कालगओ माहिन्दे, सामिय ! सो हं सुरो समुप्पन्नो । तुज्ज पसाएण प्ह !, परमिद्धिं चैव संपत्तो ॥ ६१ ॥
 तिरियभवदुक्खिण्णं, जं सुरसोक्खं मए समणुपत्तं । तं चैव तुमं राहव !, प्हुट्ठो एत्तियं कालं ॥ ६२ ॥
 तुज्ज ऽवसाणे राहव !, अकयग्घो हं इहागओ पावो । किर किंचि अेवयं पि य, करेमि एयं तु उवथारं ॥ ६३ ॥
 तं भणइ कयन्तसुरो, इहासि सेणावई अहं तुज्जं । नामेण कयन्तमुहो, सो सुरपवरो समुप्पन्नो ॥ ६४ ॥
 सामिय ! देहाणत्ति, दवं जं उत्तमं तिहुयणम्मि । तं तुज्ज संपइ प्ह !, सबं तु करेमि साहीणं ॥ ६५ ॥
 रामो भणइ रिबुवलं, भमां तुब्भेहि बोहिओ अहयं । दिट्ठा कल्लाणंमुहा, एयं च्चिय किन्न पज्जत्तं ? ॥ ६६ ॥

संसारमें घूमते हुए मैंने किसी तरह पहले अप्राप्त ऐसा मनुष्य-जन्म प्राप्त किया है, यह जानता हुआ भी मैं मूर्ख ही रहा । (५१) संसारमें स्त्रियाँ और अनेक प्रकारके बन्धुजन मिलते हैं. पर एकमात्र जिनवरविहित बोधि दुर्लभ है । (५२) इस तरह उन्हें प्रतिबुद्ध जानकर मनमें हर्षित देवोंने तीनों लोकोंमें विस्मय पैदा करनेवाली अपनी ऋद्धि दिखलाई । (५३) मीठी महकवाला पवन, यान एवं विमानोंसे आच्छादित आकाश और सुरयुवतियों द्वारा गाया जानेवाला मनोहर और उत्तम वीणाके मधुर स्वरवाला गीत—ऐसी ऋद्धि दिखलाई । (५४) तब दोनों देवोंने रामसे पूछा कि, हे राजन् ! आपके दिन किस तरह सुखसे बीत सकते हैं ? (५५) तब हलधर रामने कहा कि अपुण्यशाली मेरी कुशल कैसी ? जिनकी जिनवरमें दृढ़ भक्ति है उन्हींकी कुशल निश्चित है । (५६) मैं पूछता हूँ । तुम स्पष्ट रूपसे कहना । सौम्य दर्शन और स्वभाववाले तुम कौन हो ? और किसलिए यह विचेष्टा पैदा की ? (५७) तब जटायुदेवने कहा कि क्या आपको याद है कि दण्डकारण्यमें उस समय मुनिके दर्शनके लिए एक गीध आपके पास आया था । (५८) हे राजन् ! आपकी पत्नी और छोटे भाईने चिरकाल तक उसका लालन-पालन किया था और सीताके अपहरणके समय राक्षसेन्द्र रावण द्वारा वह मारा गया था । (५९) मरते हुए उसको पत्नीके बिरहसे व्याकुल होने पर भी आपने कृपापूर्वक पाँच महापुरुषोंसे युक्त नमस्कार मंत्र दिया था । (६०) हे स्वामी ! मरने पर वह मैं माहेन्द्र देवलोकमें देवरूपसे पैदा हुआ हूँ । हे प्रभो ! आपके प्रसादसे परम ऋद्धि भी मैंने पाई है । (६१) हे राघव ! तिर्यच भवमें दुःखित मैंने जो देवसुख पाया उससे इतने काल तक तुम विस्मृत हुए हो । (६२) हे राम ! आखिरकार अकृतज्ञ और पापी मैं यहाँ आया और कुछ थोड़ासा भी यह उपचार किया । (६३)

कृतान्त देवने कहा कि यहाँ पर आपका कृतान्तवदन नामका जो सेनापति था वह मैं देवरूपसे उत्पन्न हुआ हूँ । (६४) हे स्वामी ! आप आज्ञा दें । हे प्रभो ! तीनों लोकमें जो उत्पन्न द्रव्य है वह सब मैं आपके अधीन अभी करता हूँ । (६५) इस पर रामने कहा कि तुमने शत्रुशैत्यको भगा दिया, मुझे बोधित किया और पुण्यमुखवाले

१. ंद्धयं वो, मू०—प्रत्य० । २. अत्तणो—प्रत्य० । ३. गीयवरं वीण०—प्रत्य० । ४. ंहा अइ०—प्रत्य० ।
 ५. जडागिदे०—प्रत्य० । ६. ंद्धो उ तुमं स०—प्रत्य० । ७. ंणमुहा, ए०—प्र० ।

तं भासिऊण रामं, निययं संपत्थिया सुरा ठाणं । भुञ्जन्ति उत्तमसुहं, जिणवरधम्माणुभावेणं ॥ ६७ ॥
 पेयविभवेण एत्तो, सक्कारेऊण लक्खणं रामो । पुहईएँ पालणट्टे, सिग्घं चिय भणइ सत्तुघं ॥ ६८ ॥
 वच्छ । तुमं सयलमिणं, भुञ्जसु रज्जं नराहिवसमग्गो । संसारगमणभोओ, पविसामि तवोवणं अहयं ॥ ६९ ॥
 सत्तुघो भणइ तओ, अलाहि रज्जेण दोग्गइकरेणं । संपइ मोत्तूण तुमे, देव ! गई नत्थि मे अत्ता ॥ ७० ॥
 न कामभोगा न य बन्धुवग्गा, न चेव अत्थो न बलं पभूयं ।
 कुणन्ति ताणं सरणं च लोए, जहा सुचिण्णो विमलो हु धम्मो ॥ ७१ ॥
 ॥ इइ पउमचरिए कल्लाणमित्तदेवागमणं नाम तेरसुत्तरसयं पव्वं समत्तं ॥

११४. बलदेवणिक्खमणपव्वं

परलोगनिच्छियमणं, सत्तुघं जाणिऊणं पउमामो । पेच्छइ आसत्तत्थं, अणङ्गलवणस्स अङ्गहूँ ॥ १ ॥
 तं ठवइ कुमारवरं सँमत्तवसुहाहिवं निययरज्जे । रामो विरत्तभोगो, आउच्छइ परियणं ताहे ॥ २ ॥
 एत्तो बिहीसणो वि य, सुभूसणं नन्दणं निययरज्जे । ठावेइ अङ्गयं पि य, सदेसणाहं तु सुग्गीवो ॥ ३ ॥
 एवं अत्ते वि भडा, मणुया विज्जाहरा य पुत्ताणं । दाऊण निययरज्जं, पउमेण समं सुसंविग्गा ॥ ४ ॥
 पउमो संविग्गमणो, सेट्ठि तत्थागयं अरहदासं । पुच्छइ स सावथ ! कुसलं, सवालुवुड्डस्स सड्डस्स ॥ ५ ॥
 तो भणइ अरहदासो, सामि ! तुमे दुक्खिए वणो सबो । दुक्खं चेव पवत्तो, तह चेव विसेसओ सड्डो ॥ ६ ॥

तुमको मैंने देखा । क्या यह पर्याप्त नहीं है ? (६६) इसप्रकार रामके साथ वार्तालाप करते वे देव अपने स्थान पर गये और जिनधर्मके प्रभावसे उत्तम सुखका उपभोग करने लगे । (६७)

इसके पश्चात् वैभवके साथ लक्ष्मणका प्रेत संस्कार करके पृथ्वीके पालनके लिए शीघ्र ही शत्रुघ्नसे कहा कि, हे वत्स ! राजाओंसे युक्त इस समग्र राज्यका तुम उपभोग करो । संसारमें भ्रमणसे भयभीत मैं तपोवनमें प्रवेश करूँगा । (६८-९) तब शत्रुघ्नने कहा कि दुर्गतिकारक राज्यसे मुझे प्रयोजन नहीं । हे देव ! आपको छोड़कर अब मेरी दूसरी गति नहीं है । (७०) न कामभोग, न बन्धुवर्ग, न अर्थ और न बड़ा भारी सैन्य ही लोकमें वैसा रक्षणरूप या शरणरूप होता है, जैसा कि सम्यग्रूपसे आचरित विमल धर्म त्राण और शरणरूप होता है । (७१)

॥ पद्मचरितमें कल्याण करनेवाले भिन्न-देवोंका आगमन नामक एक सौ तेरहवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

११४. बलदेव (राम) का निष्क्रमण

परलोकमें निश्चित मनवाले शत्रुघ्नको जानकर रामने समीपमें बैठे हुए अनंगलवणके पुत्रको देखा । (१) समस्त वसुधाके स्वामी उस कुमारवरको अपने राज्य पर स्थापित किया । फिर भोगोंसे विरक्त रामने परिजनोंसे पूछा । (२) उधर विभीषणने अपने राज्य पर सुभूषण नामके पुत्रको और सुग्रीवने अपने देशके स्वामी अंगदको स्थापित किया । (३) इस तरह दूसरे भी सुभट, मनुष्य और विद्याधर पुत्रोंको अपना राज्य देकर रामके साथ विरक्त हुए । (४) मनमें वैराग्ययुक्त रामने वहाँ आये हुए सेठ अर्हदाससे पूछा कि, हे श्रावक ! बालक एवं वृद्धसहित संघका कुशलक्षेम तो है न ? (५) तब अर्हदासने कहाकि, हे स्वामी ! आपके दुःखित होने पर सब लोगोंने दुःख पाया है और विशेषतः संघने । (६) श्रावकने कहा कि हे स्वामी ! मुनिसुव्रतकी परम्परामें हुए सुव्रत नामके चारणश्रमण इस

१. ०ण माहर्षं । पे०—प्रत्य० । २. समत्थव० सु० । —३. ०सो मित्त ! तु०—प्रत्य०

भणियं च सावर्णं, सामिय ! मुणिसुवयस्स वंसम्मि । संपइ चारणसमणो, इहागओ सुवओ नामं ॥ ७ ॥
 सुणिऊण वयणमेयं, जणियमहाभावपुलइयसररीरो । रामो मुणिस्स पासं, गओ बहुसुहइपरिक्किणो ॥ ८ ॥
 समणसहस्सपरिमियं, महामुणि पेच्छिऊण पउमामो । पणमइ ससंभममणो, तिवखुत्तपयाहिणावत्तं ॥ ९ ॥
 विज्जाहरा य मणुया, कुणन्ति परमं तु तत्थ महिमाणं । धय-तोरणमाईयं, चहुतूरसहस्ससद्दालं ॥ १० ॥
 गमिऊण तत्थ रयणिं, दिवसयरे उग्गए महाभागो । रामो मणइ मुणिवरं, भयवं ! इच्छामि पवइउं ॥ ११ ॥
 अणुमन्निओ य गुरुणा, पयाहिणं कुणइ मुणिवरं रामो । उप्पन्नबोहिलाभो, संवेगपरायणो^१ धीरो ॥ १२ ॥
 छेत्तूण मोहपासं, संचुण्णेऊण नेहनियलाई । ताहे मुच्चइ पउमो, मउडाइं भूसणवराइं ॥ १३ ॥
 काऊण तत्थ धीरो, उववासं कमलकोमलकरेहिं । उप्पाडइ निययसिरे^२, केसे वरकुसुमसुसुयन्धे ॥ १४ ॥
 वामप्पासठियस्स उ, सह रयहरणेण दाउ सामइयं । पवाविओ य पउमो, सुवयनामेण समणेणं ॥ १५ ॥
 पञ्चमहवयकलिओ, पञ्चसु समिईसु चेव आउत्तो । गुत्तीसु तीसु गुत्तो, वारसतवधारओ धीरो ॥ १६ ॥
 मुक्का य कुसुमवुट्ठी, देवेहि य दुन्दुही नहे पहया । पवणो य सुरहिगन्धो, पडुपडहरवो य संजणिओ ॥ १७ ॥
 मोत्तूण रायलच्छि, निययपए टाविउं सुर्यं जेठ्ठं । सत्तुग्यो पवइओ, इन्दियसत्तु जिणिय सबे ॥ १८ ॥
 राया विहीसणो वि य, सुग्गीवो नरवई नलो नीलो । चन्दनहो गम्भीरो, विराहिओ चेव ददसत्तो ॥ १९ ॥
 एए अन्ने य वहू, दणुइन्दा नरवई य पवइया । रामेण सह महप्पा, संखाए सोलस सहस्सा ॥ २० ॥
 जुवईण सहस्साइं, तीसं सत्तुत्तराइं तद्विवसं । पवज्जमुवगयाइं, सिरिमइअज्जाए पासम्मि ॥ २१ ॥
 काऊण य पवज्जं, सट्ठिं वासाइं सुवयसयासे । तो कुणइ मुणिवरो सो, एकल्लविहारपरिकम्मं ॥ २२ ॥

समय यहाँ आये हैं। (७) यह कथन सुनकर अत्यन्त आनन्दके कारण पुलकित शरीर वाले तथा अनेक सुभटोंसे घिरे हुए राम मुनिके पास गये। (८) हजारों श्रमणोंसे घिरे हुए महामुनिके देखकर मनमें आदरयुक्त रामने उन्हें तीनबार प्रदक्षिणा देकर वन्दन किया। (९) वहाँ विचारों और मनुष्योंने ध्वजा एवं तोरण आदिसे युक्त तथा नानाविधि हजारों बाद्योंसे ध्वनिमय ऐसा महान् उत्सव मनाया। (१०) वहाँ रात बिताकर सूर्यके उदय होने पर महाभाग रामने मुनिवरसे कहा कि, भगवन् ! मैं प्रव्रज्या लेना चाहता हूँ। (११) गुरुने अनुमति दी। सम्यग्दृष्टि, संवेगपरायण और धीर रामने मुनिवरको प्रदक्षिणा दी। (१२) तब मोहके पाशको छिन्न और स्नेहकी जंजीरोंको चूर-चूर करके रामने मुकुट आदि उत्तम आभूषणोंका त्याग किया। (१३) रामने उपवास करके वहाँ अपने सिर परसे उत्तम पुष्पोंके समान अतिसुगन्धित बालोंका कमलके समान कोमल हाथोंसे लोंच किया। (१४) बाईं ओर स्थित रामको रजोहरणके साथ सामायिक देकर सुव्रत नामक श्रमणने दीक्षा दी। (१५) वे धीर राम पाँच महाव्रतोंसे युक्त, पाँच समितियोंसे सम्पन्न, तीन गुणियोंसे गुप्त तथा बारह प्रकारके तपके धारक हुए। (१६) देवोंने पुष्पोंकी वृष्टि की और आकाशमें दुन्दुभि बजाई। उन्होंने मीठी महकवाला पवन और नगारेका बड़ा भारी नाद पैदा किया। (१७)

राजलक्ष्मीका त्याग करके और अपने पद पर ज्येष्ठ पुत्रको स्थापित करके शत्रुघ्ने प्रव्रज्या ली और इन्द्रियोंके सब शत्रुओंको जीत लिया। (१८) राजा विभीषण, सुग्रीव नृपति, नल्ल, नील, चन्द्रनख, गम्भीर तथा बलवान् विराधित— ये तथा अन्य बहुतसे संख्यामें सोलह हजार महात्मा राक्षसेन्द्र और नरपति रामके साथ प्रव्रजित हुए। (१९-२०) उस दिन सैंतिस हजार युवतियोंने श्रीमती आर्याके पास दीक्षा ली। (२१) सुव्रत मुनिके पास साठ वर्षतक विहार करके वे मुनिवर

१. ०सद्दइं—प्रत्य० । २. ०णो जाओ—प्रत्य० । ३. मोहजालं, सं०—प्रत्य० । ४. ०रे, वरकुसुमसुगंधिए केसे—प्रत्य० ।
 ५. ०सुहगंधे—प्रत्य० । ६. वामेण संठियरसा, सह—प्रत्य० । ७. देवेहिं हुं०—प्रत्य० । ८. ०वरा य—प्रत्य० ।

विविहाभिगाहधारी, पुबङ्गसुएण भावियमईओ । तवभावणाइयाओ, भावेउं भावणाओ य ॥ २३ ॥
 अह निग्गओ मुणी सो, गुरूण अणुमोइओ पउमनाहो । पडिक्खो य विहारं, एकाई सत्तभयरहिओ ॥ २४ ॥
 गिरिकन्दरद्वियस्स य^२, रयणीए तोएँ तस्स उप्पन्नं । पउमस्स अवहिनाणं, सहसा ज्ञाणेक्कचित्तस्स ॥ २५ ॥
 अवहिदिसएण ताहे, सुमरइ लच्छीहरं पउमणाहो । अवियण्हकामभोगं, नरयावत्थं च दुक्खत्तं ॥ २६ ॥
 सयमेग कुमारत्ते, तिण्णोव सयाणि मण्डलित्ते य । चत्तालीस य विजए, जस्स उ संवच्छरं।ऽतीया ॥ २७ ॥
 एकारस य सहस्सां, पञ्चेव सया तहेव सट्टिजुया । वरिसाणि महारज्जे, जेण सयासे टिया विसया ॥ २८ ॥
 बारस चेव सहस्सा, हवन्ति वरिसाणं सबसंखाए । भोत्तूण इन्द्रियसुहं, गओ य नरयं अनिमियप्पा ॥ २९ ॥
 देवाण को व दोसो, परभवजणियं समागयं कम्मं । बन्धवनेहनिहेणं, मओ गओ लक्खणो नरयं ॥ ३० ॥
 मह तस्स नेहवन्धो, वसुदत्ताईभवेसुं बहुएसुं । आसि पुरा मह झीणो, संपइ सबो महामोहो ॥ ३१ ॥
 एवं जणो समत्थो, बन्धवनेहापुरायपडिक्खद्वो । धम्मं असदहन्तो, परिहिण्डइ दोहसंसारे ॥ ३२ ॥
 एवं सो बलदेवो, एगागी तत्थ कन्दरुदेसे । चिट्ठइ सज्जायरओ, दुक्खविमोक्खं विचिन्तेन्तो ॥ ३३ ॥
 एयं चिय निक्खमणं, बलदेवमुणित्थं सु^३णिय एयमणा ।
 होह जिणधम्मनिरया, निच्चं भो विमलचेट्ठिया सप्पुरिसा ॥ ३४ ॥

॥ इइ पउमचरिए बलदेव^३निक्खमणं नाम चउइसुत्तरसयं पठवं समत्तं ॥

एकाकी परिभ्रमण करने लगे । (२२) विविध प्रकारके अभिग्रहोंको धारण करनेवाले तथा पूर्व एवं अंग श्रुतसे भावित बुद्धिवाले उन्होंने तपोभावना आदि भावनाओंसे अपनेको भावित किया । (२३)

गुरु द्वारा अनुमोदित वे राम मुनिने विहार किया और सात प्रकारके भयसे रहित हो एकाकी विहार करने लगे । (२४) उस रात पर्वतकी कन्दरामें स्थित हो ध्यानमें एकाग्रचित्तवाले रामको सहसा अवधिज्ञान उत्पन्न हुआ । (२५) तब अवधिज्ञानसे रामने कामभोगकी तृष्णा रखनेवाले, दुःखार्त और नरकमें स्थित लक्ष्मणको याद किया । (२६) जिसके एक सौ वर्ष कुमारावस्थामें, तीन सौ वर्ष माण्डलिक राजाके रूपमें और चालीस विजय करनेमें बीते । (२७) महाराज्यमें जिसके पास ग्यारह हजार, पाँच सौ, साठ वर्ष तक सब देश अधीन रहे । (२८) इस प्रकार कुल बारह हजार होते हैं । असंयतात्मा वह इन्द्रियसुखका उपभोग करके नरकमें गया । (२९) इसमें देवोंका क्या दोष है ? परभवमें पैदा किया गया कर्म उदयमें आया है । भाईके स्नेहके कारण मर करके लक्ष्मण नरकमें गया है । (३०) पहले वसुदत्त आदि अनेक भवोंमें मेरा उसके साथ स्नेहसम्बन्ध था । अब मेरा सारा महामोह क्षीण हो गया है । (३१) इस तरह सब लोग बन्धुजनोंके स्नेहानुरागमें बद्ध होकर धर्म पर अश्रद्धा करके दीर्घ संसारमें परिभ्रमण करते हैं । (३२) इस प्रकार वह बलदेव राम इस गुफा-प्रदेशमें दुःखके नाशकी चिन्ता करते हुए स्वाध्यायमें रत होकर एकाकी रहते थे । (३३) हे निर्मल चेष्टा करनेवाले सत्पुरुषो ! इस तरह बलदेव मुनिका निष्क्रमण एकाग्रभावसे सुनकर नित्य जिनधर्ममें निरत रहो । (३४)

॥ पञ्चरितमें बलदेवका निष्क्रमण नामका एक सौ चौदहवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

१. ०हारं, उत्तमसामरथसंपण्णो—प्रत्य० । २. उ—प्रत्य० । ३. सयसत्त कुं—मु० । ४. सया य मंडलीए य—प्रत्य० ।
 ५. ०राणि तथा—प्रत्य० । ६. ०रसा, सर्पंचणवया तं—मु० । ७. ०ण पंचविज्ञाणा । भो—मु० । ८. ०सु सव्वेसु—प्रत्य० ।
 ९. ०क्खवणं—प्रत्य० । १०. ०स्स निमुणित्तं एयं—मु० । ११. मुणित्तं—प्रत्य० । १२. निच्चं वो वि—प्रत्य० । १३. ०वमुणित्तं नि—मु० ।

११५. बलदेवमुनिगीयरसंखोभविहाणपञ्चं

अह सो बलदेवमुणी, छट्टुववासे तओ वइकन्ते । पविसरइ सन्दणथलिं, महापुरिं पारणट्टाए ॥ १ ॥
 मत्तगयलीलगामी, सरयरीवी चैव कन्तिसंजुत्तो । दिट्ठो नयरिजणेणं, अच्चभुयरूवसंठाणो ॥ २ ॥
 तं पेच्छिउण एत्तं, विणिग्गओ अहिमुहो जणसमूहो । वेडेइ पउमणाहं, साहुकारं विमुञ्चन्तो ॥ ३ ॥
 जंपइ जणो समत्थो, अहो हु तवसंजमेण रूवेणं । नरसुन्दरेण सयलं, एणण अलंकियं भुवणं ॥ ४ ॥
 वच्चइ जुगन्तदिट्ठी, पसन्तकलुसासओ पलम्बभुओ । अच्चभुयरूवधरो, संपइ एसो जयाणन्दो ॥ ५ ॥
 पविसइ तं वरनयरिं, वन्दिज्जन्तो य सबलोएणं । उक्कीलियणच्चण-वग्गणाइ अहियं कुणन्तेणं ॥ ६ ॥
 नयरी पविट्ट सन्ते, जहकमं समयचेट्टिए रामे । पडिपूरिया समत्था, रत्थामग्गा जणवएणं ॥ ७ ॥
 वरकणयभायणार्थं, एवं आणेहि पायसं सिग्घं । सयरं दहिं च दुद्धं, तूरन्तो कुणसु साहीणं ॥ ८ ॥
 कप्पूरसुरहिगन्धा, बद्धा गुल्सकराइसु मणोज्जा । आणेहि मोयया इह, सिग्घं चिय परमरसजुत्ता ॥ ९ ॥
 थालेसु वट्टएसु य, कञ्चणपत्तीसु तत्थ नारीओ । उवणेन्ति वराहारं, मुणिस्स दढभत्तिजुत्ताओ ॥ १० ॥
 आबद्धपरियरा वि य, केइ नरा सुरभिगन्धजलपुण्णा । उवणेन्ति कणयकलसे, अन्नोत्रं चैव लङ्घन्ता ॥ ११ ॥
 जंपन्ति नायरजणा, भयवं ! गेण्हइ इमं सुपरिसुद्धं । आहारं चिय परमं, नाणारसगुणसमाउत्तं ॥ १२ ॥
 दढ-कट्ठिणदप्पिएहिं, भिक्खादाणुज्जएहिं एएहिं । पाडिज्जन्ति अणेया, भायणहत्था तुरन्तेहिं ॥ १३ ॥

११५. रामका भिक्षाटन

पट्ट (बेला) का उपवास पूर्ण होने पर उन बलदेव मुनिने महानगरी स्यन्दनस्थलीमें पारनेके लिए प्रवेश किया। (१) मत्त गजके समान लीलापूर्वक गमन करनेवाले, शरत्कालीन सूर्यके समान कान्तियुक्त तथा अत्यन्त अद्भुत रूप एवं संस्थानवाले वे नगरीके लोगों द्वारा देखे गये। (२) उन्हें आते देख जनसमूह निकलकर सामने गया और साधुकार करते हुए उसने रामको घेर लिया। (३) सबलोग कहने लगे कि अहो ! तप, संयम एवं रूपसे इस सुन्दर मनुष्यने सारे लोककों अलंकृत किया है। (४) युग (चार हाथ) तक दृष्टि रखनेवाले, मानसिक कालुष्य जिनका शान्त हो गया है ऐसे लटकती हुई भुजाओंवाले, अत्यन्त अद्भुत रूप धारण करनेवाले और जगत्को आनन्द देनेवाले ये इस समय जा रहे हैं। (५) उत्तमक्रीड़ा तथा नाचना-बजाना आदि करते हुए सबलोगों द्वारा बन्धन किये जाते उन्होंने उस नगरी में प्रवेश किया। (६) नगरीमें प्रविष्ट होने पर क्रमशः विहार करते हुए जब राम शास्त्रानुसार आचरण कर रहे थे तब लोगोंने सारे गर्ला-कूचे भर दिये। (७) सोनेके सुन्दर पात्रमें इनके लिए शीघ्र ही खीर लाओ; शर्करायुक्त दही और दूध तुरन्त ही इन्हें दो; कपूरकी मीठी सुगन्धवाले, गुड़ और शक्करसे बाँधे गये सुन्दर और उत्तम रससे युक्त लड्डू जल्दी ही यहाँ लाओ—ऐसा लोग कहते थे। (८-९) दृढ़ भक्तियुक्त स्त्रियाँ थालोंमें कटोरोंमें तथा सोनेके पात्रोंमें मुनिके लिए उत्तम आहार लाईं। (१०) कमर कसे हुए कितने ही मनुष्य एक-दूसरेको लाँघकर मीठी सुगन्धवाले जलसे भरे हुए सोनेके कलश लाये। (११) नगरजन कहने लगे कि, भगवन् ! अत्यन्त परिशुद्ध तथा नाना रस एवं गुणोंसे युक्त यह उत्तम आहार आप ग्रहण करें। (१२) भिक्षादानके लिए उद्यत हो जल्दी करते हुए इन दृढ़, कठिन और दर्पयुक्त मनुष्योंने हाथमेंसे अनेक पात्र गिरा दिये। (१३) इस तरह

१. तओ अइ—प्रत्य० । २. संपिच्छिउण—प्रत्य० । ३. णयसंदरेण—प्रत्य० । ४. उवक्कीलियणच्चण-वग्गणाति—प्रत्य० ।
 ५. ण-गायणाइ—प्रत्य० । ६. ण्ति णाह ! भयवं ! गिण्ह इमं सब्बदोसपरि—प्रत्य० ।

एवं तत्थ पुरजणे, संजाए कलयलारवे महए । हत्थी अलाणथम्भे, भत्तूण विणिग्गया बह्वे ॥ १४ ॥
 गल्लज्जुया य तुरया, तोडेऊणं पलायणुज्जुत्ता । जाया खरं-करहा विय, महिस-बइल्ला य भयभोया ॥ १५ ॥
 तं जणवयस्स सद्दं, पडिणन्दी नरवई सुणेऊणं । पेसेइ निययभिच्चे, कोस इमं आउलं नयरं ? ॥ १६ ॥
 परिमुणियकारणेहि, सिट्ठे भिच्चेहि नरवई ताहे । पेसेइ पवरसुहडे, आणह एयं महासमणं ॥ १७ ॥
 गन्तूण ते वि सुहडा, भणन्ति तं मुणिवरं कयपणामा । नित्रवइ अहं सामी, तस्स घरं गम्मए भयवं । ॥ १८ ॥
 तस्स घरम्मि महामुणि !, सहावसुवकप्पियं वराहारं । गेण्हसु निराउलमणा, एहि पसायं कुणसु अहं ॥ १९ ॥
 एव भणियं सुणेउं, संघाओ तत्थ पउरनारोओ । भिक्खा समुज्जयाओ, दाउं सुपसन्नभावाओ ॥ २० ॥
 रायपुरिसेहिं ताओ, सिग्घं अवसारियाउ जुवईओ । ताहे सुदुम्मणाओ, तक्खणमेत्तेण जायाओ ॥ २१ ॥
 उवयारच्छलेणेवं, नाऊण य अन्तराइयं ताहे । जाओ विपराहुत्तो, महामुणी वच्चइ^३ सुहेणं ॥ २२ ॥
 पविसरइ महारण्णं, संवेगपरायणो विसुद्धप्पा । जुगमित्तं तरदिट्ठी, मयमोहविवज्जिओ सया विमलमणो ॥ २३ ॥
 ॥ इइ पउअचरिए गोयरसंखो भविहाणं नाम पञ्चदसुत्तरसयं पठ्वं समत्तं ॥

११६. बलदेवमुनिदानपसंसाविहाणपञ्चं

अह सो मुणिवरवसहो, बोलीणे तत्थ वासरे विइए । कुणइ य संविग्गमणो, अभिग्गहं धीरगम्भीरो ॥ १ ॥
 जइ एत्थ महारण्णे, होहिइ भिक्खा उ देसयालम्मि । तं गेण्हीहामि अहं, न चेव गामं पविसरामि ॥ २ ॥

वहाँ नगरजनों का महान् कोलाहल होने पर बन्धनस्तम्भोंको तोड़कर बहुतसे हाथी भाग खड़े हुए। (१४) घोड़े गलेकी रस्सी तोड़कर पलायन करनेके लिए उद्यत हुए और गधे, ऊँट, भैंसे और बैल भी भयभीत हो गये। (१५) लोगोंके उस कोलाहलको सुनकर प्रतिनन्दी राजाने अपने नौकरोंको भेजा कि यह नगर क्यों आकुल हो गया है? (१६) कारण जानकर नौकरोंने राजासे कहा। तब उसने उत्तम सुभटोंको भेजकर आज्ञा दी कि उन महाश्रमणको यहाँ लाओ। (१७) जा करके और प्रणाम करके उन सुभटोंने उन मुनिवरसे कहा कि, हे भगवन्! हमारे स्वामी अपने घर पर आनेके लिये आपसे विनती करते हैं। (१८) हे महामुनि! उनके घर पर स्वाभाविक रूपसे तैयार किया गया उत्तम आहार आप निराकुल मनसे ग्रहण करें। आप पधारें और हम पर अनुग्रह करें। (१९) ऐसा कहना सुनकर वहाँकी सुप्रसन्न भाववालीं सब नगरनारियाँ भिक्षा देनेके लिए उद्यत हुईं। (२०) राजपुरुषोंने उन युवतियोंको शीघ्र ही दूर इटाया। उस समय वे एकदम अत्यन्त खिन्न हो गईं। (२१) इस प्रकार उपचारके बहानेसे अन्तराययुक्त जानकर महामुनि वापस लौटे और सुखपूर्वक चले गये। (२२) संवेगपरायण, विशुद्धात्मा, साढ़े तीन हाथ तक देखकर चलनेवाले, मद एवं मोहसे रहित तथा विमल मनवाले रामने महारण्यमें प्रवेश किया। (२३)

॥ पञ्चचरितमें भिक्षाटन संक्षोभ विधान नामक एक सौ पन्द्रहवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

११६. बलदेव मुनि दानकी प्रशंसा

वहाँ दूसरा दिन व्यतीत होने पर मनमें संवेगयुक्त और धीर, गम्भीर उन श्रेष्ठ मुनिवरने अभिग्रह किया कि यदि इस महारण्यमें यथा समय भिक्षा मिलेगी तो उसे मैं ग्रहण करूँगा, किन्तु गाँवमें प्रवेश नहीं करूँगा। (१-२) इधर जब

१. महाजस ! सहावउव०—प्रत्य० । २. सव्वत्तो त०—प्रत्य० । ३. ०इ पहेणं प्रत्य० । ४. भवसिररंजियदेहो, सुर-
 नरवइनमियचरणजुओ । पविसरइ महारण्णं, मयमोह०—सु०, उक्कण्ठाउलहिययं, सव्वं काऊण जणवयं सुपुरिसो । पविसरइ महारण्णं, मयमोह०—प्रत्य० ।
 ५. वारिसे दिवसे । कु०—प्रत्य० । ६. ०इ सुसंवि०—प्रत्य० । ७. होही भि०, होहइ भि० प्रत्य० । ८. तं गिण्हिस्सामि—प्रत्य० ।

अह तथ समारूढे, साहूण अभिग्रहे महाघोरे । ताव य दुष्टाऽऽसहिओ, पडिणन्दी पेसिओ रण्णे ॥ ३ ॥
 तस्सऽवहियस्स सबो, समाउलो जणवओऽणुमग्गेणं । वच्चइ तुरयारूढो, सहिओ सामन्तचक्रेणं ॥ ४ ॥
 हीरन्तस्सारण्णे, पडिणन्दिनराहिवस्स सो तुरओ । वेगेण वच्चमाणो, सरवरपङ्के च्चिय निहुत्तो ॥ ५ ॥
 ताव य तुरयारूढा, समागया वप्पकदमनिहुत्तं । पेच्छन्ति वरहयं तं, मरणावत्थं समणुपत्तं ॥ ६ ॥
 उत्तारिऊण तुरयं, भणन्ति सुहडा तओ नरवरिन्दं । एयं नन्दणपुण्णं, सरं तुमे दरिसियं अहं ॥ ७ ॥
 थोवन्तरेण ताव य, समागओ नरवईस्स खन्धारो । तस्सेव सरस्स तडे, सिग्घं आवासिओ सबो ॥ ८ ॥
 अह सो भडेहिं सहिओ, विमलजले मज्जिऊण नरवसहो । आहरणभूसियङ्को, भोयणभूमिखुंहासीणो ॥ ९ ॥
 एत्तो सो बलदेवो, गोयरवेलाए पविसइ निवेसं । दिट्ठो य नरवईणं, पणओ य ससंभममणेणं ॥ १० ॥
 संमज्जिओवल्लिचे, कमलेहि समच्चिए महिणएसे । तथेव मुणिवरो सो, ठविओ निवईण भत्तीए ॥ ११ ॥
 गोण्हित्तु वराहारं, राया पउमस्सं मुइयसबज्जो । खीराइसुसंपुण्णं, आहारं देइ परितुट्ठो ॥ १२ ॥
 सद्धाइगुणसमग्गं, दायारं जाणिऊण सुरपवरा । मुच्चन्ति रयणवुट्ठिं, गन्धोदयसुरभिकुसुमजुयं ॥ १३ ॥
 पुट्ठं च अहो दाणं, गयणयले दुन्दुही तओ पहया । देवेहि अच्छराहि य, पवत्तियं गीयगन्धवं ॥ १४ ॥
 एवं क्रमेण पत्ते, पारणए नरवईण पउमाभो । पणओ भावियमइणा, परिअणसहिणएण पुणरुत्तं ॥ १५ ॥
 पूया सुरेहिं पत्तो, साहूण अणुब्याइं दिन्नाइं । जाओ विसुद्धभावो, पडिणन्दी जिणमयाणुरओ ॥ १६ ॥
 रामो वि समयसंगय-सीलङ्गसहस्सणेषयजोगधरो । विहरइ विमलसरीरो, बीओ व दिवायरो समुज्जोयन्तो ॥ १७ ॥

॥ इह पञ्चमचरिए दाणपसंसाविहाणं नाम सोलमुत्तरसयं पव्वं समत्तं ॥

साधुने महाघोर अभिग्रह धारण किया उस समय एक दुष्ट घोड़े द्वारा अपहृत प्रतिनन्दीने अरण्यमें प्रवेश किया । (३) उसके अपहृत होने पर आकूल सब लोग घोड़े पर चढ़कर सामन्तोंके साथ उनके पीछे गये । (४) अरण्यमें प्रतिनन्दी राजाका अपहरण कर वेगसे जाता हुआ वह घोड़ा सरोवरके कीचड़में निमग्न हो गया । (५) उस समय घोड़े पर सवार होकर आये हुए लोगोंने किनारेके पासके कीचड़में डूबे हुए और मरणावस्थाको प्राप्त उसे सुन्दर घोड़ेको देखा । (६) शीघ्र ही घोड़ेको बाहर निकालकर सुभटोंने राजासे कहा कि इस नन्दनपुण्य सरोवरको आपने हमें दिखलाया । (७)

थोड़ी देरके बाद राजाका सैन्य आ गया । उसी सरोवरके तट पर सबने शीघ्र ही डेरा लगाया । (८) इसके बाद सुभटोंके साथ निर्मल जलमें स्नान करके आभरणोंसे विभूषित शरीरवाला वह राजा भोजनस्थान पर सुखसे बैठा । (९) उधर उस बलदेवने गोचरीके समय छावनीमें प्रवेश किया । राजाने उन्हें देखा और मनमें आदरके साथ प्रणाम किया । (१०) बुहारे और पोते गये तथा कमलोंसे अर्चित उस पृथ्वी-प्रदेश पर राजाने भक्तिपूर्वक उन मुनिवरको ठहराया । (११) सारे शरीरमें मुदित तथा परितुष्ट राजाने उत्तम आहार ग्रहण करके रामको क्षीर आदिसे परिपूर्ण आहार दिया । (१२) श्रद्धा आदि गुणोंसे युक्त दाताको जानकर देवोंने रत्नोंकी तथा सुगन्धित पुष्पोंसे युक्त गन्धोदककी वृष्टि की । (१३) तब 'अहो दान !' ऐसी देवोंने घोषणा की तथा आकाशमें दुन्दुभि बजाई अप्सराओंने गीत तथा नृत्ययुक्त संगीत गाये । (१४) इस प्रकार राजाने रामको पारना कराया । शुद्ध बुद्धिवाले उसने परिजनोंके साथ पुनः पुनः प्रणाम किया । (१५) देवोंसे पूजा प्राप्त की । साधुने श्रगुत्रत दिये । इस तरह विशुद्ध भाववाला प्रतिनन्दी जिनमतमें अनुरक्त हुआ । (१६) शास्त्रोंमें कहे गये हज़ारों शीलांग तथा अनेक योगोंको धारण करनेवाले, निर्मल शरीरवाले तथा देदीप्यमान दूसरे सूर्य सरीखे राम भी बिहार करने लगे । (१७)

॥ पञ्चचरितमें दान-प्रशंसा विधान नामक एक सौ सोलहवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

१. ओ सम०—मु० । २. वरस्स—प्रत्य० । ३. सुसाहीणो—प्रत्य० । ४. वरेणं—प्रत्य० । ५. स्स सुद्धसंवेगो । खी०—प्रत्य० । ६. पत्तो, पा०—मु०, दत्ते, पा०—प्रत्य० ।

११७. पउमकेवलनाणुपत्तिविहाणपव्वं

भयवं बलदेवो सो, पसन्तरइमच्छरो तवं धोरं । काऊण समाढत्तो, नाणाविहजोगसुपसत्थं ॥ १ ॥
 छट्ट-ऽट्टमेहिं विहरइ, गोयरचरियाएँ तत्थ आरण्णे । वणवासिणीहिं अहियं, पूइज्जन्तो सुरवह्हिं ॥ २ ॥
 वय-समिइ-मुत्तिजुत्तो, समभावजिइन्दिओ नियकसाओ । सज्जायझाणनिरओ, नाणाविहलद्धिसंपन्नो ॥ ३ ॥
 कत्थइ सिलायल्लथो, निबद्धपलियङ्कझाणगयचित्तो । चिट्ठइ पलम्बियभुओ, कत्थइ थम्भो इव अकम्पो ॥ ४ ॥
 एवं महातवं सो, कुणमाणो अणुकमेण संपत्तो । कोडिसिला जा तइया, हक्खुत्ता लच्छिनिलएणं ॥ ५ ॥
 अह सो तत्थारुहिउं, रत्तिं मण-वयण-कायसंजुत्तो । पडिमाएँ ठिओ धीरो, कम्मस्स विणासणट्टाए ॥ ६ ॥
 अह सो ज्ञाणोवगओ, सीयापुबेण अच्चुइन्देणं । अवहिसएण दिट्ठो, अच्चन्तं नेहराएणं ॥ ७ ॥
 निययं भवसंघट्टं, नाऊण य जिणतवस्स माहपपं । अच्चुयवई खणेणं, संपत्तो विम्हयं ताहे ॥ ८ ॥
 चिन्तन्तेण य मुण्णिओ, एसो हलधारणो जयाणन्दो । जो आसि मणुयलोए, महिलाभूयाए मह कन्तो ॥ ९ ॥
 एयं चिय अच्छेरं, कम्मस्स विचित्तयाएँ जं जीवो । लद्धूण इत्थिभावं, पुणरवि उप्पज्जइ मणुस्सो ॥ १० ॥
 अवियण्हकामभोगो, अहोगइं लक्खणो समणुपत्तो । सो चेव रामदेवो, बन्धुविओगम्मि पवइओ ॥ ११ ॥
 एयस्स खवगसेढीगयस्स रामस्स तं करेमि अहं । वेमाणिओ य देवो, जायइ मित्तो महं जेणं ॥ १२ ॥
 तो तेण समं पीई, काऊणं मन्दराइसु ठियाइं । वन्दीहामि पहट्ठो, चेइयभवणाइ सबाइं ॥ १३ ॥
 नरयगयं सोमिच्चिं, आणेउं लद्धवोहिसम्मत्तं । समयं रामसुरेणं, सुह-दुक्खाइं च जंपेहं ॥ १४ ॥

११७. रामको केवलज्ञान

रतिभाव और मात्सर्य जिनका उपशान्त हो गया है ऐसे वे भगवान् बलदेव नानाविध योगसे अतिप्रशस्त घोर तप करने लगे । (१) वनवासिनी देवियों द्वारा अधिक पूजित वे उस अरण्यमें बेलों और तेलोंके बाद गोचरीके लिए जाते थे । (२) व्रत, समिति और गुप्तिसे युक्त, समभाववाले, जितेन्द्रिय, कषार्योंको जीतनेवाले, स्वाध्याय और ध्यानमें निरत तथा नानाविध लब्धियोंसे सम्पन्न वे कभी शिलातल पर बैठकर और पर्यकासन लगाकर चित्तमें ध्यान करते हुए बैठते थे, तो कभी स्तम्भकी तरह निष्कंप हो भुजाएँ लटकाकर ध्यानस्थ होते थे । (३-४) इस प्रकार महातप करते हुए वे अनुक्रमसे कोटिशिलाके पास पहुँचे, जिसको उस समय लक्ष्मणने उठाया था । (५) उस पर चढ़कर रातके समय मन, वचन और कायाका निग्रह करनेवाले धीरे वे कर्मोंके नाशके लिए प्रतिमा (ध्यान)में स्थित हुए । (६)

तब ध्यानस्थ उन्हें पूर्वकी भव सीता और अब अच्युतेन्द्रने अवधिज्ञानसे अत्यन्त स्नेहपूर्वक देखा । (७) अपनी भवपीड़ा तथा जिन तपका माहात्म्य जानकर अच्युतपति क्षणभरमें विस्मयको प्राप्त हुआ । (८) सोचने पर ज्ञात हुआ कि विश्वको सुख देनेवाले वे जो हलधर हैं वे मनुष्यलोकमें जब मैं स्त्रीरूपमें थी तब मेरे पति थे । (९) यह एक आश्चर्य है कि कर्मकी विचित्रतासे जीव स्त्रीभाव प्राप्त करके पुनः पुरुषके रूपमें उत्पन्न होता है । (१०) कामभोगोंमें वृष्णायुक्त लक्ष्मणने अधोगति पाई है और उन रामने बन्धुके वियोगमें प्रव्रज्या ली है । (११) सपक श्रेणी पर आरूढ़ रामके लिए मैं ऐसा कहूँ—यदि कोई वैमानिक देव मेरा मित्र हो जाय तो उसके साथ प्रीति करके मन्दराचल आदि पर स्थित सब चैत्यगृहोंको मैं हर्षित हो वन्दन करूँ । (१२-१३) सम्यग्दर्शन पाये हुए नरकगत लक्ष्मणको लाकर रामके साथ मैं सुख-दुःखकी बातें करूँ । (१४)

परिचिन्तिऊण एवं, अवङ्णो सुरवरो विमाणाओ । सिग्घं माणुसलोयं, संपत्तो जत्थ पउमाओ ॥ १५ ॥
 बहुकुसुमरओवाही, कओ य पवणो सुरेण सयरहं । कोलाहलयिं च वणं, पक्खिगणणं कल्लवेणं ॥ १६ ॥
 तरुतरुणपल्लवुग्गयमज्जरिसहयारकिंसुयावयरं । कोइलमहुग्गीयं, उज्जाणं महुरारुणियं ॥ १७ ॥
 एवंविहं वणं तं, देवो काऊण जणगीरुवं । रामस्स समब्भासं, गओ य नेहाणुराएणं ॥ १८ ॥
 सीया किल्लं सहस ती, भणइ अहं आगया तुह समीवं । राहव ! विरहाउलिया, संपह दुक्खं चिय पवत्ता ॥ १९ ॥
 जंपइ पासल्लोणा, पण्डियमाणी अहं तुह समक्खं । पवइया विहरन्ती, खेयरकत्ताहि पेरियरिया ॥ २० ॥
 खेयरकत्ताहि अहं, भणिया दावेहि राहवं अहं । तुज्जाएसेण सिए !, तं चैव वरेसु भत्तारं ॥ २१ ॥
 एयन्तरम्मि सहसा, नाणालंकारभूसियज्जीओ । पत्ताउ कामिणीओ, सुरिन्दवेउवियकयाओ ॥ २२ ॥
 ठविऊण मए पुरओ, समयं एयाहि उत्तमं भोगं । भुज्जसु देव ! जहिच्छं, साएयाए सुरिन्दसमं ॥ २३ ॥
 अइक्खत्ता महाजस !, बावोस परीसहा छुहाईया । एएहि संजमरणे, राहव ! बहवो नरा भग्गा ॥ २४ ॥
 ताव य सुरजुवईहिं, पवत्तियं सवणमणहरं गीयं । आढत्तं चिय नट्टं, कडक्खदिट्ठीवियारिळं ॥ २५ ॥
 कुक्कुमकयचच्चिकं, दावेन्ती थणहरं तहिं का वि । नच्चइ मणखोभयरं, अधीरसत्ताण पुरिसाणं ॥ २६ ॥
 अत्ता जंपइ महुरं, इमाहिं जुवईहिं सामि । अइगाढं । उब्बेइया महाजस !, सरणं तुह आगया सिग्घं ॥ २७ ॥
 का वि विवायं महिला, कुणमाणी आगया सह सहीहिं । पुच्छइ कहेहि राहव, कमे(का उ)ण सवणस्स[१५]तीयाडा(१६) ॥ २८ ॥
 बाहा पसारिऊणं, दूरत्थाए असोगलइयाए । गेण्हेइ कुसुममेळं, दावेन्ती का वि थणजुयलं ॥ २९ ॥

ऐसा सोचकर वह सुरवर विमानसे नीचे उतरा और जहाँ राम थे वहाँ मनुष्यलोकमें शीघ्र ही आ पहुँचा । (१५) उस देवने एकदम बहुत प्रकारके पुष्पोंकी रजको बहन करनेवाले पवनका निर्माण किया और पक्षियोंके कलरवसे वन कोलाहलयुक्त बना दिया । (१६) निकले हुए पल्लवोंवाले तरुण वृक्षों तथा मंजरीयुक्त सहकार एवं पलाश वृक्षोंके समूहसे युक्त, कोयलके मधुर स्वरसे गाया जाता और भौरोंकी गुनगुनाहटसे व्याप्त—एसे उस वनको बनाकर और सीताका रूप धारण करके वह देव स्नेहपूर्वक रामके पास गया । (१७-१८) हँसती हुई सीताने कहा कि, हे राम ! विरहसे आकुल और दुःख पाई हुई मैं तुम्हारे पास आई हूँ । (१९) पासमें बैठों हुई उसने कहा कि अपने आपको पण्डित माननेवाली मैं तुम्हारे समक्ष दीक्षित हुई थी । विहार करती हुई मेरा विद्याधर-कन्याओंने अपहरण किया । (२०) खेचरकन्याओंने मुझे कहा कि इमें राम दिखलाओ । हे सीते ! तुम्हारे आदेशसे उसी भर्ताका वरण हम करेंगी । (२१) इसी बीचमें सहसा सुरेन्द्र द्वारा दिव्य सामर्थ्यसे उत्पन्न नानाविध अलंकारोंसे विभूषित शरीरवाली स्त्रियाँ आई । (२२) हे देव ! मुझे आगे स्थापित करके इनके साथ साकेतमें सुरेन्द्रके समान उत्तम भोगोंका इच्छानुसार उपभोग करो । (२३) हे महायश ! क्षुधा आदि बाईस परीषह अतिकठोर हैं । हे राघव ! संयमरूपी युद्धमें इनसे बहुतसे मनुष्य भग्न हुए हैं । (२४)

उस समय देवयुवतियोंने श्रवण-मनोहर गीत गाना शुरू किया और कटाक्षयुक्त दृष्टियोंसे विकारयुक्त नृत्य करने लगीं । (२५) कोई वहाँ केशरका लेप किये हुए स्तनोंकी दिखाती थी, कोई अधीर और आसक्त पुरुषोंके मनको क्षुब्ध करनेवाला नाच कर रही थी, दूसरी मीठे वचनोंसे कह रही थी कि, हे नाथ ! इन युवतियोंसे मैं अत्यन्त खिन्न हो गई हूँ । इसीलिए हे महायश ! मैं तुम्हारी शरणमें शीघ्र ही आई हूँ । (२६-२७) कोई विवाद करती हुई स्त्री सखियोंके साथ आई और पूछने लगी कि, हे राघव ! आप श्रमणको कौनसी स्त्री अति आदरणीय है ? (२८) कोई हाथ पसारकर दोनों स्तनोंको दिखलाती हुई दूरस्थ अशोकलतिकाके फूलोंके गुच्छेको लेती थी । (२९) इन तथा अन्य दूसरे क्रियाव्यापारोंसे धीरमना

१. ०णं घणरवेणं—प्रत्य० । २. ०सुयव्यारं । कोइलमहुल्लुग्गीयं—प्रत्य० । ३. ०हं च देवो काऊणं जणयतणयवरुयं । रा०—प्रत्य० । ४. ०ल विहरन्ती, ०ल सुहपत्ती—प्रत्य० । ५. ०त्ताहिं अवहरिया—प्रत्य० । ६. परिवरिया—प्रत्य० । ७. ०हिं, गिक्खत्तं समणमम०—प्रत्य० । ८. उब्बेइया—प्रत्य० । ९. कवणेस वणस्सई नियडे—मु० । १०. दावेइ य तह य थण०—प्रत्य० ।

एएसु य अन्नेसु य, करणनिओगेसु तथ पउमामो । न य खुभिओ धीरमणो, अहियं ज्ञाणं चिय पव्वो ॥ ३० ॥
 जाहे विउवणाहिं, सुरेण न य तस्स खोभियं ज्ञाणं । ताहे कम्मरिउवळं, नट्टं पउमस्स निस्सेसं ॥ ३१ ॥
 माहस्स सुद्धपक्खे, बारस्सिरत्तिम्मि पच्छिमे जामे । पउमस्स निरावरणं, केवलनाणं समुप्पन्नं ॥ ३२ ॥
 एत्तो केवलनाणं, उप्पन्नं जाणिऊण सुरपवरा । रामस्स सन्नियासं, समागया सयलपरिवारा ॥ ३३ ॥
 गय-तुरय-वसह-केसरि-जाण-विमाणा-ऽऽसणाइं मोत्तुणं । वन्दन्ति सुरा पउमं, तिक्खुत्तपयाहिणावत्तं ॥ ३४ ॥
 सोयाइन्दो वि तओ, केवलमहिमं च तथ काऊणं । पणमइ बलदेवमुणिं, पउञ्जमाणो शुइसयाइं ॥ ३५ ॥
 बहुदुक्खजलापुण्णं, कसायगाहाउलं भवावत्तं । संजमपोयारूढो, संसारमहोयहिं तिण्णो ॥ ३६ ॥
 ज्ञाणाणिलाहएणं, विविहतविन्धणमहन्तजलिएणं । नाणाणलेण राहव !, तुमए जम्माडवी दड्ढा ॥ ३७ ॥
 वेरगमोमारेणं, विचुण्णियं णेहपञ्जरं सिग्घं । निहओ य मोहसत्तु, उवसमसूलेण धीरेणं ॥ ३८ ॥
 भणइ सुरो मुणिवसभं, संसारमहाडविं भमन्तस्स । केवललद्दाइसयं, तुहं मह सरणं भवविणासं ॥ ३९ ॥
 एयं संसारनइं, बहुदुक्खावत्तअरइक्खोलं । एत्थ निवुडुं राहव !, उत्तारसु नाणहत्येणं ॥ ४० ॥
 भणइ तओ मुणिवसहो, मुञ्चसु दोसासयं इमं रागं । लहइ^१ सिवं तु अरागी, रागी पुण भमइ संसारे ॥ ४१ ॥
 जह बाहासु सुराहिव, उत्तरिउं नेव तीरण उयही । तह न य तीरइ तरिउं, भवोयही सीलरहिएहिं^२ ॥ ४२ ॥
^३नाणमयदारुएणं, तवनियमायासवद्धकटिणेणं । संसारोयहितरणं, हवइ^४ परं धम्मपोएणं ॥ ४३ ॥
 राग-द्वोसविसुक्को, पुरिसो तव-नियम-संजमाउत्तो । ज्ञाणेक्कजणियभावो, पावइ सिद्धिं न संदेहो ॥ ४४ ॥

राम क्षुब्ध नहीं हुए और ध्यानमें अधिक लीन हुए । (३०) जब वैकृतिक शक्ति द्वारा देव उनके ध्यानको क्षुब्ध न कर सका तब रामका कर्मरूपी समग्र शत्रुसैन्य नष्ट हो गया । (३१) माघ महीनेके शुक्ल पक्षकी द्वादशीकी रातके पिछले प्रहरमें रामको आवरण रहित केवलज्ञान उत्पन्न हुआ । (३२) केवल ज्ञान उत्पन्न हुआ है ऐसा जानकर देव परिवारके साथ रामके पास आये । (३३) हाथी, घोड़े, वृषभ एवं सिंहके यान, विमान एवं आसनोंका त्याग करके देवोंने तीन प्रदक्षिणा देकर रामको वन्दन किया । (३४) तब सीतेन्द्रने भी वहाँ केवल ज्ञानका उत्सव मनाकर सैकड़ों स्तुतियोंका प्रयोग करके बलदेवमुनिको वन्दन किया । (३५) बहुत दुःखरूपी जलसे पूर्ण, कषायरूपी ग्रहोंसे युक्त और भव रूपी आवर्तवाले संसार रूपी महोदधिको संयम रूपी नौका पर आरूढ़ हो तुमने पार किया है । (३६) हे राघव ! ध्यानरूपी वायुसे आहत और विविध तप रूपी ईंधनसे खूब जली हुई ज्ञान रूपी आगसे तुमने जन्मरूपी अटवी को जला डाला है । (३७) हे नाथ ! वैराग्यरूपी मुद्गरसे तुमने पिंजरेको तो शीघ्र ही तोड़ डाला है । धीर तुमने उपशमरूपी शूलसे मोहरूपी शत्रुको मार डाला है । (३८) देवने कहा कि, हे मुनिवृषभ ! संसाररूपी महादर्वीमें घूमते हुए मेरे लिए तुम्हारा भवविनाशक केवलज्ञानातिशय शरणरूप है । (३९) यह संसाररूपी नदी नाना दुःखोंरूपी भँवरों और खेदरूपी तरंगोंसे युक्त है । हे राघव ! इसमें डूबे हुए को ज्ञानरूपी हाथसे पार लगा दो । (४०)

तब मुनिवरने कहा कि दोषयुक्त इस रागका त्याग करो । अरागी मोक्ष पाता है, जब कि रागी संसारमें घूमता है । (४१) हे सुराधिप ! जिस तरह भुजाओंसे समुद्र नहीं तैरा जाता उसी तरह शीलरहितोंसे भवोदधि नहीं तैरा जाता । (४२) परंतु ज्ञानरूपी लकड़ीसे बनाये गये और तप एवं नियम में किये जानेवाले श्रम द्वारा मजबूतीसे बाँधे गये धर्मरूपी जहाजसे संसारसागरको तैरा जा सकता है । (४३) राग-वृषभसे रहित, तप, नियम एवं संयमसे युक्त और ध्यानसे उत्पन्न अज्ञ भाववाला पुरुष सिद्धि पाता है, इसमें सन्देह नहीं । (४४) यह कथन सुनकर अत्यन्त हर्षित सीतेन्द्र हलधर

१. ०रमुणी—प्रत्य० । २. ०उघणं, न०—प्रत्य० । ३. ०पक्खेकारसि०—प्रत्य० । ४. ०वल्लिमहिमं च सुविउलं काउं । प०—प्रत्य० । ५. ०मुणिं, उक्कित्तं तो गुणसयाइं—प्रत्य० । ६. ०लाइण्णं—प्रत्य० । ७. भयावत्तं—मु० । ८. ०ग्घं । इणिओ य मोहसत्तु उत्तमलेसात्तिपूलेणं—प्रत्य० । ९. ०डवि वसंतस्स—प्रत्य० । १०. तुहुं—प्रत्य० । ११. इ य सिवं अ०—प्रत्य० । १२. ०एणं—प्रत्य० । १३. नाणकय०—मु० । १४. ०इ तओ धम्म०—प्रत्य० ।

सुणिऊण वयणमेयं, सीयादेवो तओ सुपरितुडो । नमिऊण सीरघारिं, निययविमाणं गओ सिग्घं ॥ ४५ ॥

एवं सुरासुरा ते, केवलनाणी कमेण थोज्जण गया ।

विहरइ महामुणी वि य, संसहरकरनियरसरिसविमलाभतणू ॥ ४६ ॥

॥ इइ पउमचरिए पउमस्स केवलनाणुप्पत्तिविहाणं नाम सत्तदसुत्तरसयं पव्वं समत्तं ॥

११८. पउमणिन्वाणगमणपच्चं

अह सो सीयाइन्दो, नरयत्थं लक्खणं सुमरिऊणं । अवइण्णो मणवेगो, पडिबोहणकारणुज्जुत्तो ॥ १ ॥

सो लङ्घिऊण पढमं, सक्करपुढविं च बालुयापुढविं । पक्कथे च्चिय पेच्छइ, नेरइया तत्थ दुक्खत्ता ॥ २ ॥

पढमं सुरेण दिट्ठो, संबुक्को घणक्कसायपरिणामो । घोरग्गिमाइयाइं, अणुहोन्तो तिब्बदुक्खाइं ॥ ३ ॥

अन्ने वि तत्थ पेच्छइ, नेरइया हुयवहम्मि पक्खिक्का । इज्जन्ति आरसन्ता, नाणाचेट्ठासु दीणमुहा ॥ ४ ॥

केएत्थ सामलोए, कण्ठयपउराए विलइया सन्ता । ओयरणा-ऽऽरुहणाइं, कारिज्जन्तेत्थ बहुयाइं ॥ ५ ॥

जन्तेसु केइ लूढा, पीलिज्जन्ते पुरा अक्कयपुण्णा । कन्दूसु उद्धपाया, इज्जन्ति अहोमुहा अन्ने ॥ ६ ॥

असिक्कमोगगरहया, लोलन्ता कक्खडे धरणिवट्ठे । खज्जन्ति आरसन्ता, चित्तय-वय-वग्घ-सीहेहिं ॥ ७ ॥

पाइज्जन्ति रडन्ता, सुतत्ततवुत्तम्बसन्निभं सलिलं । असिपत्तवणगया वि य, अन्ने छिज्जन्ति सत्थेहिं ॥ ८ ॥

रामको प्रणाम करके शीघ्र ही अपने विमानमें गया । (४१) इस तरह केवलज्ञानीकी क्रमशः स्तुति करके वे सुर चले गये । चन्द्रमाकी किरणोंके समूहके समान निर्मल कान्ति युक्त शरीरवाले महामुनिने भी विहार किया । (१६)

॥ पन्नचरितमें रामको केवलज्ञानकी उत्पत्तिका विधान नामक एक सौ सत्रहवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

११८. रामका निर्वाणगमन

वह सीतेन्द्र नरकस्थ लक्ष्मणको याद करके उसके प्रतिबोधके लिए उद्यत हो मन के वेगकी भाँति नीचे उतरा । (१) पहली रत्नप्रभा पृथ्वी तथा दूसरी शर्करा पृथ्वी और तीसरी बालुका पृथ्वीको लाँघकर चौथी पंक पृथ्वीमें रहे हुए दुःखसे आर्त नारकोंको उसने देखा । (२) देवने प्रथम घने काषायिक परिणामवाले शंबूकको भयंकर अग्नि आदि तीव्र दुःखोंका अनुभव करते हुए देखा । (३) वहाँ उसने आगमें फेंके गये, जलते हुए, चिल्लाते हुए और नानाविध चेष्टाओं द्वारा दीन मुखवाले नारकियोंको देखा । (४) वहाँ कितने कण्टकप्रचुर शाल्मलिके पेड़ों पर चढ़ाकर बहुतबार उतारा-चढ़ाया जाता था । (५) पूर्वजन्ममें पुण्य न करनेवाले कई यंत्रों में फँककर पीसे जाते थे । पैर ऊपर और सिर नाँचा किये हुए दूसरे हाँडोंमें जलाये जाते थे । (६) तलवार, चक्र और मुग्दरसे आहत नारकी कठोर जमीन पर लोटते थे और चिल्लाते हुए वे चीतों, भेड़ियों, बाघ और सिंहों द्वारा खाये जाते थे । (७) रोते हुए कितनेको पानी जैसा अत्यन्त तप्त काँसा और ताँबा पिलाया जाता था । असिपत्र नामक वनमें गये हुए दूसरे शखोंसे काटे जाते थे । (८)

१. असिकरणियर—प्रत्य० । २. समरि—मु० । ३. ओसरणा—मु० । ४. लोलिता—प्रत्य० । ५. तउसण्णिभं कलकलितं असि—प्रत्य० । ६. भं कललं—मु० ।

सो एवमाइयाइं, दट्टुं दुक्खाइं नरयवासीणं । कारुण्यजणियहियओ, सोयइ परमं सुरवरिन्दो ॥ ९ ॥
 सो अग्गिकुण्डमज्जाउ निग्गयं लक्खणं सुरवरिन्दो । पेच्छइ तालिज्जन्तं, बहुएहि य नरयपालेहिं ॥ १० ॥
 सो तेहि तस्स पुरओ, करवत्त-असिबत्त-जन्तमादीहिं । भयविहलवेवियङ्को, जाइज्जइ जायणसएहिं ॥ ११ ॥
 दिट्ठो लक्काहिवई, सुरेण भणिओ य तत्थ संवुको । रे पाव ! पुवजणियं, अज्ज वि कोवं न छड्डेसि ॥ १२ ॥
 तिबकसायवसगया, अणिवारियइन्दिया किवारहिया । ते एत्थ नरयलोए, अणुहुन्ति अण्यदुक्खाइं ॥ १३ ॥
 सोऊण वि नेरइयं, दुक्खं जीवस्स नायइ भवोहे । किं पुण तुज्ज न जायइ, भयं इहं विसहमाणस्स ? ॥ १४ ॥
 सोऊण वयणमेयं, संवुको उवसमं समणुपत्तो । ताहे लक्काहिवईं, लक्खणसहियं भणइ देवो ॥ १५ ॥
 मोत्तूण भउबेयं, मह वयणं सुणह ताव वीसत्था । तुब्भे हि विरइरहिया, संपत्तां एरिसं दुक्खं ॥ १६ ॥
 दिव्विमाणारूढं, ते रावण-लक्खणा सुरं दट्टुं । पुच्छन्ति साहसु फुडं, को सि तुमं आगओ एत्थ ? ॥ १७ ॥
 सो ताण साहइ सुरो, एत्तो पउमाइयं जहावत्तं । पडिबोहकारणट्ठे, निययं च समागमारम्भं ॥ १८ ॥
 निययं चिय वित्तन्तं, सुणिउं ते तत्थ दो वि पडिबुद्धा । सोएन्ति दीणवयणा, अण्णणं लज्जियमईया ॥ १९ ॥
 धी ! किं न कओ धम्मो, तइया अम्हेहिं माणुसे जन्मे ? । जेणेह दुहावत्था, संपत्ता दारुणे नरए ॥ २० ॥
 धन्नो सि तुमं सुरवर !, जो परिचइऊण विसयसोक्खाइं । जिणवरधम्माणुरओ, संपत्तो चेव देविद्धि ॥ २१ ॥
 तत्तो सो कारुणिओ, जंपइ मा भाह दो वि तुंभेहं । हक्खुविऊण इमाओ, नरगाओ नेमि सुरलोयं ॥ २२ ॥
 आवद्धपरियरो सो, हक्खुविऊणं तओ समाढत्तो । विलियन्ति अइदुगेज्जा, ते अणलहओ व नवनीओ ॥ २३ ॥
 सबोवाएहि जया, घेत्तूण न चाइया सुरिन्देणं । ताहे ते नेरइया, भणन्ति देवं मुयसु अम्हं ॥ २४ ॥

नरकवासियोंके ऐसे दुःख देखकर हृदयमें कारुण्यभाव उत्पन्न होनेसे वह देवेन्द्र अत्यन्त शोक करने लगा । (९) उस सुरेन्द्रने बहुतसे नरकपालों द्वारा अग्निकुण्डमें से निकले हुए लक्ष्मणको पीटे जाते देखा । (१०) उन करवत, असिपत्र तथा यंत्र आदि सैकड़ों यातनाओंके कारण भयसे चिह्वल और काँपते हुए शरीरवाला वह उसके आगे गिड़गिड़ा रहा था । (११) देवने वहाँ लंकाधिपतिको देखा । फिर शंभूकसे कहा कि, रे पापी ! पूर्वजन्ममें उत्पन्न क्रोपको आज भी तू क्यों नहीं छोड़ता ? (१२) जो तीव्र कषायोंके वशीभूत होते हैं, इन्द्रियोंका निग्रह नहीं करते और दयाहीन होते हैं वे यहाँ नरकलोकमें अनेक दुःखोंका अनुभव करते हैं । (१३) नरक सम्बन्धी दुःखके बारेमें सुनकर संसारमें जीवको भय पैदा होता है । यहाँ दुःख सहते हुए तुम्हको भय नहीं होता ? (१४) यह वचन सुनकर शंभूकने शान्ति प्राप्त की । तब लक्ष्मणके साथ लंकाधिपति रावणसे देवने कहा कि भय एवं उद्वेगका त्याग करके विश्वस्त हो तुम मेरा कहना सुनो । विरतिरहित होनेसे तुमने ऐसा दुःख पाया है । (१५-६) दिव्य विमानमें आरूढ़ उस देवको देखकर रावण और लक्ष्मणने पूछा कि यहाँ आयै हुए तुम कौन हो, यह स्पष्ट कहो । (१७) तब देवने उन्हें राम आदिका सारा वृत्तान्त और प्रतिबोधके लिए अपने आगमनके बारेमें कहा । (१८) अपना वृत्तान्त सुनकर वे दोनों वहाँ प्रतिबुद्ध हुए । दीनवचन और मनमें लज्जित वे स्वयं अपने लिए शोक करने लगे कि हमें धिक्कार है उस समय मनुष्य-जन्ममें हमने धर्म क्यों नहीं किया ? इसी कारण इस दारुण नरकमें हमने दुःखकी अवस्था प्राप्त की है । (१९-२०) हे सुरवर ! तुम धन्य हो कि विषय सुखोंका परित्याग करके जिनवरके धर्ममें अनुरत हो तुमने देवोंकी ऋद्धि पाई है । (२१)

इस पर उस कारुणिकने कहा कि तुम दोनों मत डरो । इस नरकमेंसे निकालकर मैं तुम्हें देवलोकमें ले जाता हूँ । (२२) तब कमर कसकर वह उन्हें ऊपर उठाने लगा किन्तु अत्यन्त दुर्गाह्य वे आगमें मक्खनकी तरह विलीन हो गये । (२३) सब उपायोंसे भी देव जब उन्हें ग्रहण न कर सका तब उन नारकियोंने देवसे कहा कि

१. छड्डेहि—प्रत्य० । २. तुम्हेहिं । इ०—सु० । ३. ०वं सुणसु—सु० ।

गच्छसु तुमं सुराहिव !, सिग्धं चिय आरणञ्चयं कप्पं । अग्हेहिं पावज्जणियं, अणुहवियवं महादुक्खं ॥ २५ ॥
 विसयामिसुद्धाणं, नरयगयाणं अईवदुक्खाणं । निययं परवसाणं, देवा वि कुणन्ति किं ताणं ? ॥ २६ ॥
 देव ! तुमं असमत्थो, इमस्स दुक्खस्स मोइउं अग्हे । तह कुणसु जह न पुणरवि हवइ मई नरयगइगमणे ॥ २७ ॥
 भणइ सुरो अ रहस्सं, परमं चिय उत्तमं सिवं सुद्धं । सम्मइंसणरयणं, गेण्हह परमेण विणएणं ॥ २८ ॥
 एवं गए वि संपइ, जइ इच्छह अत्तणो धुवं सेयं । तो गेण्हह सम्मत्तं, सुद्धं निवाणगमणफलं ॥ २९ ॥
 एत्तो न उत्तरं वि हु, न य भूयं न य भविस्सए अन्नं । महमङ्गलं पवित्ता तिलोगसिहरट्टिया सिद्धा ॥ ३० ॥
 जीवाइपयत्था जे, जिणेहिं भणिया तिलोयदरिसीहिं । तिबिहेण सहहन्तो, सम्महिट्ठी नरो होइ ॥ ३१ ॥
 भणिएहिं तेहि एवं, गहियं नरयट्टिएहिं सम्मत्तं । जं बहुभवकोडीहि वि, अणाइमन्तेहि न य पत्तं ॥ ३२ ॥
 भो सुरवइ ! अग्हे हियं, तुमे कयं कारणं अइमहन्तं । जं सयलजीवलोए, सम्मत्तं उत्तमं दिन्नं ॥ ३३ ॥
 भो भो सीइन्द ! तुमं, गच्छ ल्हं आरणञ्चयं कप्पं । जिणवरधम्मस्स फलं, भुज्जसु अइउत्तमं भोगं ॥ ३४ ॥
 एवं महाणुभावो, देवो काऊण ताण उवयारं । सोएन्तो नेरइए, संपत्तो अत्तणो ठाणं ॥ ३५ ॥
 सो तत्थ वरविमाणे, सेविज्जन्तो वि अमरकन्नाहिं । सरिऊण नरयदुक्खं, देविन्दो अद्धिइं कुणइ ॥ ३६ ॥
 अवयरिऊणादत्तो, पउमेणालंक्रियं इमं भरहं । गय-तुरय-वसह-केसरिठिएसु देवेषु परिकिण्णो ॥ ३७ ॥
 बहुतूरनिणाएणं, अच्छरंसंगिज्जमाणमाहप्पो । पउमस्स गओ सरणं, सीइन्दो सयलपरिवारो ॥ ३८ ॥
 सवायरेण देवो, थोऊण पुणो पुणो पउमणाहं । तत्थेव सन्निविट्ठो, महिवीडे परियणसममगो ॥ ३९ ॥

तुम हमें छोड़ दो। (२४) हे सुराधिप ! तुम शीघ्र ही आरण-अच्युत कल्पमें चले जाओ। हमें पापजनित महादुःख भोगना ही पड़ेगा। (२५) विषयरूपी मांसमें लुब्ध, नरकमें गये हुए, अतीव दुःखी और सदैव परवश प्राणियोंका देव भी क्या रक्षा कर सकते हैं? (२६) हे देव ! हमें इस दुःखसे मुक्त करनेमें तुम भी असमर्थ हो। तुम वैसा करो जिससे नरकगतिमें गमनकी बुद्धि हमें पुनः न हो। (२७) इस पर देवने कहा कि परम रहस्यमय, उत्तम, कल्याणकर और शुद्ध सम्यग्दर्शनरूपी रत्नको अत्यन्त विनयके साथ ग्रहण करो। (२८) ऐसा हो चुकने पर भी यदि तुम अपना शाश्वत कल्याण चाहते हो तो निर्वाणगमनका फल देनेवाला शुद्ध सम्यक्त्व धारण करो। (२९) इससे बढ़कर दूसरा महामंगल न तो है, न था और न होगा। इसीसे पवित्र होनेके कारण सिद्ध तीनों लोकोंके शिखर पर स्थित होते हैं। (३०) त्रिलोकदर्शी जिनोंने जो जीवादि पदार्थ कहे हैं उस पर मन-वचन-क्रिया तीनों प्रकारसे श्रद्धा रखनेवाला मनुष्य सम्यग्दृष्टि होता है। (३१) इस प्रकार कहने पर नरकस्थित उन्होंने वह सम्यक्त्व प्राप्त किया जो अनादि-अनन्त अनेक करोड़ों भवोंमें भी प्राप्त नहीं किया था। (३२)

वे कहने लगे कि, हे सुरपति ! तुमने हमारा बहुत बड़ा हित किया है, क्योंकि सम्पूर्ण जीवलोकमें जो उत्तम सम्यक्त्व है वह दिया है। (३३) हे सीतेन्द्र ! तुम जल्दी ही आरणाच्युत कल्पमें जाओ और जिनवरके धर्मके फलस्वरूप अत्युत्तम भोग का उपभोग करो। (३४)

इस तरह वह महानुभाव इन्द्र उन पर बड़ा उपकार करके नारकियोंके लिए शोक करता हुआ अपने स्थान पर चला गया। (३५) वहाँ उत्तम विमानमें देवकन्याओं द्वारा सेव्यमान वह इन्द्र नरकके दुःखको यादकर मनमें अशान्ति धारण करता था। (३६) हाथी, घोड़े, वृषभ तथा सिंहों पर स्थित देवोंसे घिरा हुआ वह नीचे उतरकर राम द्वारा अलंक्रित इस भरतक्षेत्रमें आया। (३७) नानाविध वाद्योंके निनादके साथ अप्सराओं द्वारा गाये जाते माहात्म्यवाला वह सीतेन्द्र सकल परिवारके साथ रामकी शरणमें गया। (३८) सम्पूर्ण आदरके साथ पुनः पुनः रामकी स्तुति करके परिजनके

१. •याणं च तिव्वदु•—प्रत्य० । २. होहि—प्रत्य० । ३. •वकोडीहिं वियणापत्तेहि वि ण पत्तं—प्रत्य० । ४. •म्मफलं चिय, भु•—प्रत्य० । ५. •भावो, महयं का•—मु०, •भावो, काऊणं ताण सो उ उव•—प्रत्य० । ६. •रसुराणि•— मु० ।

नमिऊण पुच्छइ सुरो, भयवं ! जे एथ दसरहाईया । लवणं-ऽकुसा य भविया, साहसु कवणं गइं पत्ता ? ॥ ४० ॥
 जं एव पुच्छिओ सो, बलदेवो भणइ आणए कपे । वट्टइ अणरणसुओ, देवो विमलम्भराभरणो ॥ ४१ ॥
 ते दो वि जणय^१-कणया, केगइ तह सुण्हा य सोमिच्छो । अवराइयाएँ समयं, इमाइं सगोववनाइं ॥ ४२ ॥
 णाण-तव-संजमददा, विसुद्धसीला लवं-ऽकुसा धीरा । गच्छीहन्ति गुणधरा, अबाबाहं सिवं ठाणं ॥ ४३ ॥
 एव भणिओ सुरिन्दो, अच्चन्तं हरिसिओ पुणो नमिउं । पुच्छइ कहेहि भयवं !, संपइ भामण्डलस्स गइं ॥ ४४ ॥
 तो भणइ सीरधारी, सुरवर ! निखुणेहि ताव संबन्धं । चरिएण तुज्झ भाया, जेणं चिय पावियं ठाणं ॥ ४५ ॥
 अह कोसलापुरीए, धणवन्तो अस्थि वज्जको नामं । पुत्ता असोय-तिलया, तस्स पिया मयरिया भज्जा ॥ ४६ ॥
 निवासियं सुणेउं, सोयं सो दुक्खिओ तओ जाओ । चिन्तेइ सा अरण्णे, कह कुणइ धिइं महाघोरे ? ॥ ४७ ॥
 अहियं किवालओ सो, संविगो जुइमुणिसस सीसत्तं । पडिबज्जिऊण जाओ समणो परिवज्जियारम्भो ॥ ४८ ॥
 अह अन्नया कयाई, असोग-तिलया गया जुइमुणिन्दं । षणमन्ति आयरेणं, पियरं च पुणो पुणो तुट्ठा ॥ ४९ ॥
 सोऊण धम्मरयणं, सहसा ते तिबजायसंवेगा । दोण्णि वि जुइस्स पासे, असोय-तिलया विणिक्खन्ता ॥ ५० ॥
 काऊण तवं घोरं, कालगओ उवरिमम्मि गेवेज्जे । उववन्नो तत्थ जुई, महाजुई उत्तमो देवो ॥ ५१ ॥
 ते तत्थ पिया पुत्ता, कुक्कुडनयरं समुज्जया गन्तुं । संवेयवणियभावा, वन्दणहेउं जिणिन्दस्स ॥ ५२ ॥
 पत्तास जोयणाइं, गयाणं अह अन्नया समणुपत्तो । नवपाउसो महाघणतडिच्छडाडोवसलिलोहो ॥ ५३ ॥
 तो गिरिवरस्स हेट्ठे, जोगत्था मुणिवरा ददधिईया । जन्तेण कोसलाए, दिट्ठा जणयस्स पुत्तेणं ॥ ५४ ॥

साथ देव वहीं जमीन पर बैठा। (३६) वन्दन करके देवने पूछा कि हे भगवन् ! यहाँ जो दशरथ आदि तथा लवण और अंकुश भव्य जीव थे वे किस गतिमें गये हैं, यह आप कहें। (४०) ऐसा पूछने पर उस बलदेवने कहा कि अनरण्यका पुत्र देवरूपसे उत्पन्न होकर निर्मल वस्त्र एवं अलंकार युक्त हो आनत कल्पमें रहता है। (४१) वे दोनों जनक कन्याएँ तथा अपराजिताके साथ कैकेई, सुप्रभा और सुमित्रा—ये स्वर्गमें उत्पन्न हुए हैं। (४२) ज्ञान, तप एवं संयममें दृढ़, विशुद्ध शीलवाले, धीर और गुणोंके धारक लवण और अंकुश अव्याबाध शिवस्थानमें जाएँगे। (४३)

इस प्रकार कहे जाने पर अत्यन्त हर्षित सुरेन्द्रने नमन करके पुनः पूछा कि, भगवन् ! अब आप भामण्डलकी गतिके बारेमें कहें। (४४) तब रामने कहा कि, हे सुरवर ! जिस आचरणसे तुम्हारे भाईने जो स्थान पाया है उसका वृत्तान्त तुम सुनो। (४५) कोशलापुरीमें वज्रक नामका एक धनवान् रहता था। उसके अशोक और तिलक नामके दो पुत्र तथा प्रिय भायाँ मकरिका थी। (४६) निर्वासित सीताके विषयमें सुनकर वह दुःखित हुआ और सोचने लगा कि अतिभयंकर अरण्यमें वह धीरज कैसे बाँधती होगी ? (४७) अत्यन्त दयालु वह विरक्त होकर आरम्भका परित्याग करके और द्युतिमुनिका शिष्यत्व अंगीकार करके भ्रमण हो गया। (४८) एक दिन अशोक और तिलक द्युतिमुनिके पास गये। हर्षित उन्होंने पिताको आदरसे पुनः पुनः वन्दन किया। (४९) धर्मरत्नका श्रवण करके सहसा तीव्र वैराग्य उत्पन्न होने पर दोनों अशोक और तिलकने द्युतिमुनिके पास दीक्षा ली। (५०) घोर तप करके मरने पर द्युतिमुनि ऊर्ध्व भ्रूवेयकमें महाद्युतिवाले उत्तम देव हुए। (५१)

संवेगभाव जिन्हें उत्पन्न हुआ है ऐसे वे पिता और पुत्र जिनेन्द्रके दर्शनार्थ कुक्कुटनगरकी ओर जानेके लिए उद्यत हुए। (५२) पचास योजन जाने पर एक दिन बड़े बादलमें बिजलीकी घटासे युक्त जलसमूहवाला अभिनव वर्षाकाल आ गया। (५३) तब पर्वतके नीचे योगस्थ और दृढ़ बुद्धिवाले मुनिवरोंको साकेतकी ओर जाते हुए जनकके पुत्र भामण्डलने देखा। (५४) वह सोचने लगा कि सिद्धान्तकी रक्षाके लिए ये इस घोर, उद्वेगजनक और अनेक जंगली जानवरोंसे भरेपूरे

१. गयं प०—प्रत्य० । २. ०यतणया—मु० । ३. ०सा वीरा । गच्छीहिति—प्रत्य० । ४. षणमंतो अस्थि वज्जको नाः—प्रत्य० । ५. ०म्मसवणं—प्रत्य० । ६. दो वि जुइस्स य पासे—प्रत्य० । ७. चरिएण तवं—प्रत्य० । ८. जुई, महइमहा उ०—प्रत्य० । ९. ०ण तह—मु० ।

चिन्तेद् इमे साह, इहद्विया समयरक्खणद्वय । घोरे उतासणए, रण्णे बहुसावयाइण्णे ॥ ५५ ॥
 भामण्डलेण एवं, चिन्तेउं पाणरक्खणनिमित्तं । साहूण समासन्ने, विज्जासु कयं पुरं परमं ॥ ५६ ॥
 काले देसे य पुरं, समागया गोचरेण ते समणा । पडिलाभेइ महप्पा, चउविहआहारदाणेणं ॥ ५७ ॥
 एवं क्रमेण ताणं, चाउम्मासी गया मुणिवराणं । भामण्डलेण वि तओ, दाणफलं अज्जियं विउलं ॥ ५८ ॥
 भामण्डलो कयाई, सह सुन्दरमहिलियाएँ उज्जाणे । असणिहओ उववओ, देवकुराए तिपल्लऊ ॥ ५९ ॥
 दाणेण भोगभूमि, लहइ नरो तवगुणेण देवत्तं । नाणेणं सिद्धिसुहं, पावइ नत्थेत्थ संदेहो ॥ ६० ॥
 पुणरवि भणइ सुरिन्दो, अहोगइं लक्खणो समणुपत्तो । उवट्ठो य महामुणि !, ठाणं कवणं तु पाविहिइ ? ॥ ६१ ॥
 निज्जरिय कम्मनिवहं, लंभिही कवणं गइं च दहवयणो ? । को व भवोहामि अहं ?, एयं इच्छामि नाउं जे ॥ ६२ ॥
 भणइ तओ बलदेवो, सुणेहि देविन्द ! आगमिस्साणं । उक्कित्तणं भवाणं, लङ्काहिव-लुच्छिनिलयाणं ॥ ६३ ॥
 नरयाउ समुत्तिष्णा, क्रमेण सुरपवयस्स पुब्बेणं । विजयावइनयरीए, मणुया ते दो वि होहिन्ति ॥ ६४ ॥
 ताणं पिया सुणन्दो, जणणी वि य हवइ रोहिणी नामं । सावयकुलसंभूया, गुरुदेवयपूयणाहिरया ॥ ६५ ॥
 अइसुन्दररुवधरा, नामेणं अरहदास-सिरिदासा । काऊण सावयत्तं, देवा होहिन्ति सुरलोए ॥ ६६ ॥
 चइया तथेव पुरे, मणुया होऊण सावया परमा । मुणिवरदाणफलेणं, होहिन्ति नरा य हरिवरिसे ॥ ६७ ॥
 भोगं भोत्तूण मया, देवा होहिन्ति देवलोगमि । चइया तथेव पुरे, नरवइपुत्ता हवीहन्ति ॥ ६८ ॥
 वाउकुमारस्स सुया, लच्छीदेवीएँ कुच्छिसंभूया । अमरिन्दसरिसरुवा, जयकन्त-जयप्पहा घोरा ॥ ६९ ॥
 काऊण तवमुयारं, देवा होहिन्ति लन्तए कप्पे । उत्तमभोगठिईया, उत्तमगुणधारया धीरा ॥ ७० ॥

वनमें ठहरे हुए हैं । (५५) ऐसा सोचकर प्राणोंकी रक्षाके लिए भामण्डलने साधुओंके पास विद्याओं द्वारा उत्तम नगरका निर्माण किया । (५६) काल और देशको जानकर वे श्रमण नगरमें गोचरोके लिए गये । महात्मा भामण्डलने चतुर्विध आहारका साधुओंको दान दिया । (५७) इस तरह क्रमसे उन मुनिवरोका चातुर्मास व्यतीत हुआ । उस समय भामण्डलने दानका विपुल फल अर्जित किया । (५८) किसी समय सुन्दर महिलाओंके साथ भामण्डल उद्यानमें था । उस समय बिजली गिरनेसे मरकर देवकुरुमें तीन फल्योपमकी आयुष्यवाला वह उत्पन्न हुआ है । (५९) मनुष्य दानसे भोगभूमि, तपसे देवत्व और ज्ञानसे मोक्ष-सुख पाता है, इसमें सन्देह नहीं । (६०)

सुरेन्द्रने पुनः पूछा कि, हे महामुनि ! लक्ष्मणने अधोगति पाई है । उस गतिमेंसे बाहर निकलकर वह कौन-सा स्थान पावेगा ? (६१) कर्मसमूहकी निर्जरा करके रावण कौन-सी गति पावेगा ? और मैं क्या हूँगा ? मैं यह जानना चाहता हूँ । (६२) तब बलदेव रामने कहा कि लंकाधिप रावण और लक्ष्मणके आगामी भवोंका वर्णन सुनो । (६३) नरकमेंसे निकलकर वे दोनों ही क्रमशः मेरुपर्वतके पूर्वमें आई हुई विजयावती नगरीमें मनुष्य होंगे । (६४) उनका पिता सुनन्द और माता श्रावक कुलमें उत्पन्न तथा गुरु एवं देवताके पूजनमें अभिरत रोहिणी नामकी होगी । (६५) अतिसुन्दर रूप धारण करनेवाले अर्हदास और श्रीदास नामके वे श्रावक धर्मका पालन करके देवलोकमें देव होंगे । (६६) च्युत होने पर उसी नगरमें मनुष्य होकर उत्तम श्रावक होंगे । मुनिवरको दिये गये दानके फल स्वरूप हरिवर्षमें भी वे मनुष्य रूपसे उत्पन्न होंगे । (६७) भोगका उपयोग करके मरनेपर देवलोकमें वे देव होंगे । च्युत होनेपर उसी नगरमें राजाके पुत्र होंगे । (६८) लक्ष्मीदेवीकी कुत्तिसे उत्पन्न वे वायुकुमारके जयकान्त और जयप्रभनामके धीर पुत्र अमरेन्द्रके रूपके समान सुन्दर रूपवाले होंगे । (६९) उग्र तप करके लान्तक कल्पमें धीर, उत्तम भोग और स्थितियाले तथा उत्तम गुणोंके धारक वे देव

१. चउविहआहार—प्रत्य० । २. सुंदरिम—प्रत्य० । ३. कवणं—प्रत्य० । ४. लंभिहिति कवणं गति च—प्रत्य० ।
 ५. •सा य भवि—प्रत्य० । ६. •न्दरुवसरिसा, उ—मु० ।

तुहमवि इह भरहे खल्ल, चइऊणं अच्चुयाउ कप्पाओ । चोइसरयणाहिवई, चकहरो होहिसि निरुत्तं ॥ ७१ ॥
 ते चेव सुरा चइया, दोण्णि वि तुह नन्दणा भवीहन्ति । इन्दुरह-भोयरहा, अमरकुमारोवमसिरोया ॥ ७२ ॥
 परनारिवज्जणेणं, वण्ण एकेण सो हु दहवयणो । जाओ चिय इन्दुरहो, सम्मतपरायणो धीरो ॥ ७३ ॥
 सो चेव य इन्दुरहो, लभिऊण भवा इमा सुराईया । पच्छ होहइ^२ अरहा, समत्थतेल्लोक्कपरिमहिओ ॥ ७४ ॥
 अह सो वि चकवट्ठी, रज्जं रयणत्थंले पुरे काउं । होहइ तवोवलेणं, अहमिन्दो वेजयन्तम्मि ॥ ७५ ॥
 सो हु तुमं सग्गाओ, चइओ अरहस्सं तस्स गणपवरो । होऊण तिहुयणग्गं, सिद्धिसुहं चेव पाविहिसि ॥ ७६ ॥
 एसो ते परिकहिओ, दसाणणो सह तुमे सुराहिवई ! एत्तो सुणाहि पुणरवि, लक्खणपगयं भणिज्जन्तं ॥ ७७ ॥
 जो सोऽयं भोयरहो, चकहरसुओ तवप्पभावेणं । भमिऊण उत्तमभवे, केई दढधम्मसंजुत्तो ॥ ७८ ॥
 पुक्खरदीवविदेहे, पउमपुरे लक्खणो उ चकहरो । होहिइ तित्थयरो पुण, तथेव भवे तियसणाहो ॥ ७९ ॥
 सत्तसु वरिसेसु जिणो, काऊण असेसदोससंधारं । सुर-असुरनमियचलणो, पाविहिइ अणुत्तरं ठाणं ॥ ८० ॥
 एवं केवलिकहियं, भविस्सभवसंकहं सुणेऊणं । जाओ संसयरहिओ, पडिइन्दो भावणाजुत्तो ॥ ८१ ॥
 नमिऊण रामदेवं, ताहे सबायरेण पुणरुत्तं । अभिवन्दइ सुरपवरो, जिणवरभवणाइं विविहाइं ॥ ८२ ॥
 नन्दोसराइयाइं, अभिवन्देऊण चेइयहराइं । कुरुवं चिय संपत्तो, पेच्छइ भामण्डलं देवो ॥ ८३ ॥
 संभासिऊण पयओ, संबोहिय भायरं सिणेहेणं । विबुहाहिवो खणेणं, संपत्तो अच्चुयं कप्पं ॥ ८४ ॥
 तत्थारणच्चुए सो, अमरवहूसयसहस्सपरिकिण्णो । अणुहवइ उत्तमसुहं, सोइन्दो सुमहयं कालं ॥ ८५ ॥

होंगे । (७०) तुम भी अच्युत कल्पसे च्युत होकर अवश्य ही इसी भरत क्षेत्रमें चौदह रत्नों के स्वामी चक्रवर्ती राजा होंगे । (७१) वे दोनों देव भी च्युत होकर देवकुमारके समान कान्तिवाले इन्दुरथ और भोगरथ नामके तुम्हारे पुत्र होंगे । (७२) एक परनारीवर्जनके व्रतसे वह रावण सम्यक्त्वपरायण और धीर इन्दुरथ होगा । (७३) वे देव आदि भव प्राप्त करेंगे । बादमें वही इन्दुरथ सारे त्रैलोक्यमें प्रसिद्ध अरिहन्त होगा । (७४) वह चक्रवर्ती भी रत्नस्थल नामक नगरमें राज्य करके तपोबलसे वैजयन्तमें अहमिन्द्र होगा । (७५) वह तुम भी स्वर्गसे च्युत होनेपर अरिहन्तके गणमें प्रमुख बनकर त्रिभुवनके अग्रभागमें स्थित मोक्षका सुख पाओगे । (७६)

हे सुराधिपति ! तुम्हारे साथ रावणके बारेमें यह मैंने तुमसे कहा । अब लक्ष्मणके बारेमें कहा जाता वृत्तान्त सुनो । (७७) जो वह चक्रवर्तीका धर्ममें दृढ़ आस्थावान् पुत्र भोगरथ था वह तपके प्रभावसे कई उत्तम भवोंमें परिभ्रमण करेगा । (७८) पुष्करवरद्वीपके विदेहमें आये हुए पद्मपुरमें चक्रधर लक्ष्मण उसी भवमें देवोंका नाथ तीर्थकर होगा । (७९) सात वर्षों में सुर-असुर जिनके चरणोंमें नमस्कार करते हैं ऐसे वे जिनेश्वर सम्पूर्ण दोषोंका संहार करके अनुत्तर मोक्षस्थान प्राप्त करेंगे । (८०)

इस तरह केवली द्वारा कही गई भावी भावोंकी कथा सुनकर भावनासम्पन्न इन्द्र संशयरहित हुआ । (८१) तब सम्पूर्ण आदरके साथ रामदेवको पुनः पुनः नमस्कार करके देवेन्द्रने जिनवरके अनेक भवनोंमें अभिवन्दन किया । (८२) नन्दीश्वर आदिमें आये हुए चैत्यमन्दिरोमें वन्दन करके वह कुरुक्षेत्रमें गया और भामण्डल देवको देखा । (८३) भाईको स्नेहपूर्वक सम्बोधित करके बातचीत की । फिर इन्द्र क्षणभरमें अच्युत कल्पमें पहुँच गया । (८४) वहाँ आरण-अच्युत कल्पमें लाखों देवबधुओंसे घिरे हुए उस सीतेन्द्रने अतिदीर्घ काल तक उत्तम सुखका अनुभव किया । (८५)

१. ०रहा-भो०—सु० । २, ४. होहिइ—प्रत्य० । ३. ०रथले तवं का०—प्रत्य० । ५. ०स्स गणहरो पवरो—सु०, ०स्स गणहरो परमो—प्रत्य० । ६. सो पुण भो०—प्रत्य० । ७. ०रवतीवि०—प्रत्य० । ८. ०जो खविऊण असेसकम्मसंधायं सु०—प्रत्य० । ९. एवं केवलिकहियं—सु० ।

पन्नरस सहस्साई, वरिसाण तथाऽऽसि आउयं हलिणो । सोलस चावाणि पुणो, उच्चत्तं चैव नायवं ॥ ८६ ॥
 पेच्छह बलेण महया, जिणिन्दवरसासणे धिइं काउं । जम्म-जरा-मरणरिवू, पराजिया धीरसत्तेणं ॥ ८७ ॥
 निस्सेसदोसरहिओ, नाणाअइसयविभूइसंजुत्तो । केवलकिरणुज्जलिओ, विभाइ सरए ब दिवसयरो ॥ ८८ ॥
 आराहिज्जणं धीरो, जिणसमयं पञ्चवीस वरिसाई । आउक्खयम्मि पत्तो, पउमो सिवसासयं ठाणं ॥ ८९ ॥
 विगयभैवहेउगं तं, अणगारं सुद्धसीलसम्मत्तं । सवायरेण पणमह, दुक्खक्खयकारयं रामं ॥ ९० ॥
 पुबसिणेहेण तथा, सीयादेवाहिवेण परिमहियं । परमिद्धिसंपउत्तं, पणमह रामं मणोरामं ॥ ९१ ॥
 इक्खवागवंसतिलयं, इह भरहे अट्टमं तु बलदेवं । तं नमह णेयभवसयसहस्समुक्कं सिवपयत्थं ॥ ९२ ॥
 एयं हलहरचरियं, निययं जो सुणइ सुद्धभवेणं । सो लइइ वोहिलामं, बुद्धि-बलाऽऽउं च अइपरमं ॥ ९३ ॥
 उज्जयसत्थो वि रिवू, खिपं उवसमइ तस्स उवसमो । अज्जिगइ चैव पुण्णं, जसेण समयं न संदेहो ॥ ९४ ॥
 रज्जरहिओ वि रज्जं, लइइ धणत्थी महाधणं विउलं । उवसमइ तक्खलणं चिय, वाही सोमा य होन्ति गहा ॥ ९५ ॥
 महिलत्थी वरमहिलं, पुत्तथी गोत्तनन्दणं पुत्तं । लइइ परदेसगमणे, समागमं चैव वन्धूणं ॥ ९६ ॥
 दुब्भासियाई दुच्चिन्तियाई दुच्चरियसयसहस्साई । नासन्ति पउमकित्तणकहाएँ दूरं समत्थाई ॥ ९७ ॥
 जं पि य जणस्स हियए, अवट्ठियं कारणं अइमहन्तं । तं तस्स निच्छएणं, उवणमइ सुहाणुवन्धेणं ॥ ९८ ॥
 एवं धम्मोवाया, सिद्धा तव-नियम-सीलमाईया । त्थियरेहिं महाजस !, अणन्तनाणुत्तमधरेहिं ॥ ९९ ॥
 निययं करेह भत्ति, जिणाण मण-वयण-कायसंजुत्ता । जेणऽट्टकम्मरहिया, पावह सिद्धि सुवोसत्था ॥ १०० ॥

हलधर रामकी आयु पंद्रह हजार वर्षकी थी । उनकी ऊँचाई सोलह धनुषकी जानो । (८६) देखो ! जिनेन्द्रवरके शासनमें दृढ़ श्रद्धा रखकर धीरसत्त्व रामने बड़े भारी बलसे जन्म, जरा एवं मरणरूपी शत्रुओंको पराजित किया । (८७) समग्र दोषोंसे रहित, ज्ञानातिशयकी विभूतिसे संयुक्त और केवलज्ञानरूपी किरणोंसे प्रकाशित वे शरत् कालमें सूर्यकी भाँति शोभित हो रहे थे । (८८) जिनसिद्धान्तकी पचीस वर्ष तक आराधना करके आयुका क्षय होने पर धीर रामने शिव और शाश्वत स्थान प्राप्त किया । (८९) भवका हेतु जिनका नष्ट हो गया है ऐसे अनगर, शुद्ध शील एवं सम्यक्त्ववाले तथा दुःखोंके क्षयकारक उन रामको सम्पूर्ण आदरसे वन्दन करो । (९०) उस समय पूर्वके स्नेहवश सीतेन्द्र द्वारा परिपूजित, परम ऋद्धिसे युक्त और सुन्दर रामको वन्दन करो । (९१) इक्ष्वाकु वंशमें तिलकरूप, इस भरतक्षेत्रमें आठवें बलदेव, अनेक लाखों भवोंके बाद मुक्त तथा शिवपद (मोक्ष) में स्थित उन्हें प्रणाम करो । (९२)

हलधर रामके इस चरितको जो शुद्ध भावसे सुनता है वह सम्यक्त्व और अत्युत्कृष्ट बुद्धि, बल एवं आयु प्राप्त करता है । (९३) इसके सुननेसे शत्रु उठाये हुए शत्रु और उनका उपसर्ग शीघ्र ही उपशान्त हो जाता है । और यशके साथ ही वह पुण्य अर्जित करता है इसमें संदेह नहीं । (९४) इसके सुननेसे राज्यरहित व्यक्ति राज्य; और धनार्थी विपुल एवं उत्तम धन प्राप्त करता है; व्याधि तत्क्षण शान्त हो जाती है और ग्रह सौम्य हो जाते हैं । (९५) स्त्रीकी इच्छा करनेवाला उत्तम स्त्री; और पुत्रार्थी कुलको आनन्द देनेवाला पुत्र पाता है तथा परदेशगमनमें भाईका समागम होता है । (९६) दुर्भाषित, दुश्चिन्तित और लाखों दुराचरित—ये सब रामकी कीर्तनकथासे एकदम नष्ट हो जाते हैं । (९७) मनुष्यके हृदयमें जो कोई भी अतिमशान् प्रयोजन रहा हो तो वह पुण्यके अनुबन्धसे अवश्य ही प्राप्त होता है । (९८)

हे महायश ! इस प्रकार अनन्त और उत्तम ज्ञान धारण करनेवाले तीर्थकरोंने तप, नियम, शील आदि धर्मके उपाय कहे हैं । (९९) अतः तुम नित्य ही जिनवरोंकी मन, वचन और कायासे संयत होकर भक्ति करो, जिससे आठ कर्मोंसे रहित हो निःशंकभावसे तुम सिद्धि पाओगे । (१००)

१. सत्तरस—मु० । २. वीरो—प्रत्य० । ३. अभयहे०—मु० । ४. कारणं रा०—मु० । ५. वभवय०—प्रत्य० । ६. जो पठइ सुद्ध०—मु०, जो पठइ परमभवेणं—प्रत्य० । ७. इ तो य पु०—प्रत्य० । ८. सरिसं न—मु० । ९. धणट्ठी धणं महाविउलं—प्रत्य० । १०. हिं भगवया, अ०—प्रत्य० ।

एयं विसुद्धललियस्वरहेउजुत्तं, अस्त्राणएसु विविहेसु निबद्धअत्थं ।

नासेइ दुग्गइपहं^१ खल्लु निच्छएणं, रामारविन्दचरियं^२ तु सुयं समत्थं ॥ १०१ ॥

एयं वीरजिणेण रामचरियं सिद्धं महत्थं पुरा, पच्छाऽऽखण्डलभूइणा उ कहियं सीसाण धम्मासयं ।

भूओ साहुपरंपराएँ, सयलं लोए ठियं पायडं, एताहे विमलेण सुत्तसहियं गाहानिबद्धं कयं ॥ १०२ ॥

पञ्चेव य वाससया, दुसमाए तीसवरिससंजुत्ता । वीरे सिद्धिसुवगए, तओ निबद्धं इमं चरियं ॥ १०३ ॥

हल्लहर-चकहराणं, समयं लङ्काहिणेण जं वत्तं । विसयामिससत्ताणं, इत्थिनिमित्तं रणं परमं ॥ १०४ ॥

बहुजुवइसहस्सेहिं, न य पत्तो उवसमं मयणमूढो । सो विज्जाहरराया, गओ य नरयं अणिमियप्पा ॥ १०५ ॥

जोऽण्येयपणइणीहिं, लल्लिज्जन्तो^३ वि न य गओ तित्ति । कह पुण अत्तो तुट्ठि, वच्चिहिइ सुथोवविल्याहिं ? ॥ १०६ ॥

जे विसयसुहासत्ता, पुरिसा तव-नियम-संजमविहणा । ते उज्झऊण रयणं, गेणहन्ति हु कागिणिं मूढा ॥ १०७ ॥

एयं वेरनिमित्तं, परनारीसंसियं सुणेऊणं । होह परलोकह्वी, परविलयं चैव वज्जेह ॥ १०८ ॥

सुकयफलेण मणुस्सो, पावइ ठाणं सुसंपयनिहाणं । दुकयफलेण य कुगइं, ल्हइ सहानो इमो लोए ॥ १०९ ॥

न य देइ कोइ कस्सइ, आरोग्गणं तहेव परमाउं । जइ देन्ति सुरा लोएँ, तह वि हु किं दुक्खिया बहवे ? ॥ ११० ॥

काम-रथ-धम्म-मोक्खा, एत्थ पुराणमिं वणिया सबे । अगुणे मोत्तूण गुणे, गेण्हह जे तुम्ह हियजणणे ॥ १११ ॥

बहुएण किं व कीरइ, अबो भणियवएणं लोयम्मि ? । एकपयम्मि वि तुज्झइ, रमह सया जिणवरमयम्मि ॥ ११२ ॥

विशुद्ध और सुन्दर अक्षरों व हेतुओंसे युक्त तथा विविध आख्यानोंसे जिसमें अर्थ गूँथा गया है ऐसे इस समस्त रामचरितका श्रवण अवश्य ही दुर्गतिके मार्गको नष्ट करता है। (१०१)

वीर जिनेश्वरने पहले महान् अर्थवाला यह रामचरित कहा था। बादमें इन्द्रभूति गौतमने धर्मका आश्रयभूत यह चरित शिष्यों से कहा। पुनः साधु-परम्परासे लोकमें यह सारा प्रकट हुआ, अब विमलने सुन्दर वचनोंके साथ इसे गाथाओंमें निबद्ध किया है। (१०२) इस दुःप्रम कालमें महावीरके मोक्षमें जानेके बाद पाँच सौ तीस वर्ष व्यतीत होने पर यह चरित लिखा है। (१०३)

विषय रूपी मांस में आसक्त हलधर और चक्रधरका लंकाधिपके साथ स्त्रीके लिए महान् युद्ध हुआ। (१०४) कामसे मोहित उस अनियमितार्थ विद्याधर राजाने अनेक हजार युवतियोंसे शान्ति न पाई और नरकमें गया। (१०५) यदि अनेक स्त्रियों द्वारा स्नेहपूर्वक पालन किये जाने पर भी उसने तृप्ति न पाई, तो फिर दूसरा बहुत थोड़ी स्त्रियोंसे कैसे सन्तोष प्राप्त करेगा ? (१०६) जो मूर्ख पुरुष तप, नियम एवं संयमसे विहीन और विषयोंमें आसक्त होते हैं वे मानो रत्नका त्यागकर कौड़ी लेते हैं। (१०७) परनारीके आश्रयसे होनेवाले वैरके इस निमित्तको सुनकर परलोक (मोक्ष) के आकांक्षी बनो और दूसरेका विनय करो। (१०८) मनुष्य पुण्यके फल स्वरूप सुसंपत्तियोंकी निधि पाता है और पापके फलस्वरूप दुर्गति पाता है। जगत्का यह स्वभाव है। (१०९) कोई किसीको आरोग्य, धन तथा उत्तम आयु नहीं देता। यदि देव लोगोंको ये सब देते तो बहुत लोग दुःखी क्यों हैं ? (११०) काम, अर्थ, धर्म और मोक्ष—ये सब इस पुराणमें कहे गये हैं। दुर्गुणोंको छोड़कर गुणोंको, जो तुम्हारे हितजनक हैं, ग्रहण करो (१११) अरे ! लोकमें बहुत कहकर क्या किया जाय ? एक शब्दमें ही तुम समझ जाओ। जितवरके धर्ममें तुम सदा रमण

१. ०पहं इह नि०—प्रत्य० । २. यं विमलं स०—प्रत्य० । ३. पच्छा गोयमसामिणा उ कहियं सिस्साण—प्रत्य० । ४. ०न्तो य न—सु० । ५. वच्चिहइ—प्रत्य० । ६. एयं वइर० प्रत्य० । ७. ०ए ताहे किं—प्रत्य० । ८. ०म्मि गिण्हया—प्रत्य० । ९. ०व्वयम्मि लो०—प्रत्य० ।

जिणं सासणाणुरत्ता, होऊणं कुणह उत्तमं धम्मं । जेण अविग्घं पावह, बलदेवाई गया जत्थ ॥ ११३ ॥
 एयं राहवचरियं, सत्ता वि य समयदेवथा निययं । कुबन्तु संसणिज्जं, जणं च नियभत्तिसंजुत्तं ॥ ११४ ॥
 रक्खन्तु भवियल्लोयं, सूरार्इया गहा अपरिसेसा । सुसमाहियसोममणा, जिणवरधम्मज्जयमईया ॥ ११५ ॥
 ऊणं अहरित्तं वा, जं एत्थ कयं पमायदोसेणं । तं मे पडिपूरेउं, खंमन्तु इह पण्डिया सब्बं ॥ ११६ ॥
 'राहू नामायरिओ, ससमयपरसमयगहियसब्भावो । विजओ य तस्स सीसो, नाइलकुलवंसनन्दियरो ॥ ११७ ॥
 सीसेण तस्स रइयं, राहवचरियं तु सूरिविमलेणं । सोऊणं पुबगए, नारायणं-सीरिचरियाइं ॥ ११८ ॥
 जेहिं सुयं ववगयमच्छरेहिं तत्तमत्तिभावियमणेहिं । ताणं विहेउं बोहिं, विमलं चरियं सुपुरिसाणं ॥ ११९ ॥

॥ इइ पञ्चमचरिए पञ्चमनिव्वाणगमणं नाम अट्टदसुत्तरसयं १०पव्वं सम्मत्तं ॥

॥ "इइ नाइलवंसदिणयरराहुसूरिपसीसेण महप्पेण पुबहरेण विमल्यरिएण विरइयं सम्मत्तं पञ्चमचरियं" ॥

करो । (११२) जिनशासनमें अनुरक्त होकर उत्तम धर्मका पालन करो जिससे बलदेव आदि जहाँ गये उस स्थानको तुम निर्विघ्न प्राप्त करो । (११३)

सभी श्रुतदेवता इस रामचरितका नित्य सन्निधान करे और लोगोंको अपनी भक्तिसे युक्त करे । (११४) समाधियुक्त, सौम्यमनवाले तथा जिनवरके धर्ममें उद्यत बुद्धिवाले सूर्यादि सब ग्रह भव्यजनोंका रक्षण करे । (११५) प्रमाद-दोषवश मैंने जो यहाँ कमोवेश कहा हो उसे पूर्ण करके पण्डितजन मेरे सब दोष क्षमा करें । (११६)

स्वसिद्धान्त और परसिद्धान्तके भावको ग्रहण करनेवाले राहु नामके एक आचार्य हुए । उनका नागिलवंशके लिए मंगलकारक विजय नामका एक शिष्य था । (११७) उसके शिष्य विमलसूरिने पूर्व-ग्रन्थोंमें आये हुए नारायण तथा हलधरके चरितोंको सुनकर यह राघवचरित रचा है । (११८) मत्सररहित और उन रामकी भक्तिसे भावित मनवाले जिन्होंने यह चरित सुना उन सुपुरुषोंको बोधि और विमल चरित्र मिले ।

॥ पञ्चचरितमें रामका निर्वाणगमन नामका एक सौ अठारहवाँ पर्व समाप्त हुआ ॥

॥ नागिलवंशमें सूर्य जैसे राहुसूरिके प्रशिष्य पूर्वधर महात्मा विमलाचार्य द्वारा चरित पञ्चचरित समाप्त हुआ ॥

१-२ एकस्मिन् प्रत्यन्तरे नास्तीयं गाथा । ३. ०न्तु ससणिज्जं, ज०—प्रत्य० । ४. खमंत मह पं०—प्रत्य० । ५. बहुनामा आयरिओ—प्रत्य० । ६. विजयो तस्स उ सी०—प्रत्य० । ७. ०ण-राम च०—प्रत्य० । ८. बोहिं, स (१ म) हिंसविमलचरियाण जिणइं दे —प्रत्य० । ९. ०साणं ॥११९॥ ॥८६८४॥—प्रत्य० । १०. पव्वं सम्मत्तं ॥ ग्रन्थाम् १०५५० सर्वसंख्या—प्रत्य० । ११. नास्तीमा पुष्पिका एकस्मिन्—प्रत्यन्तरे । १२. चरियं ॥ इति पञ्चमचरियं सम्मत्तं । ग्रन्थाम् सर्वसंख्या ॥ अक्खर-भत्ता-विदू, जं च न लिहियं अयाणमाणेणं । तं [च] खमत्तु सव्व महं, तिस्सयरविणिग्गया वाणी । ॥ शुभं भवतु ॥ श्री संघस्य श्रेयोऽस्तु । ग्रन्थाम् १२००० । संवत् १६४८ वर्षे वइसाख वदि ३ बुधे ओझा रुईं लिखितं ॥ लेखक पाठकयोऽस्तु—एकस्मिन् प्रत्यन्तरे ।

परिशिष्ट

१. व्यक्तिविशेषनाम

| | | | | | |
|-----------|---|----------------|---|----------|---|
| अहबल-१ | वानर राजा ६.८४ | | २४; १०२. ३५; १०४.१. | अंबट्ट-१ | अहविरिअ का सहायक राजा, ३७.१२ |
| अहबल-२ | राजा. पांचवें तीर्थंकर का पूर्वजन्म नाम. २०.१२ | | ३१,२३; १०६.८ १३, १५, १६; ११०. ३७; ११८. ४० (देखो कुस और मयणकुस) | अंबिया | पांचवें वासुदेव की माता २०. १८४. |
| अहबल-३ | वानर योद्धा ५७ ४; ५९. ३२ | | वानर योद्धा ५९. ३७; ७६. ७; १००. ६१. | अंसुमर | राज्ञी, विद्याधर राजा चंद्रगह की स्त्री २६.८२; ३०.५८, ७५, ९३ |
| अहबल-४ | राक्षस योद्धा ५६ २४ | अंग | वानरराज सुग्गीव का पुत्र १०.१०; ४७.२१; ४९. २१; ५४.२१; ५७.७; ५९. ३७, ७५; ६१. २८; ६२. ३२; ६४. २; ६८. १, ४. ८, २२, २४, ३३; ६९. ४३; ७१. ३८; ७६. २३; ७८. २४, २५; ७९. २३; ९०. १८; १००. ६१; ११४. ३; -कुमार ५९. ७३; ७६. ७ | अंक-१ | राक्षस योद्धा ५९. २ |
| अहमीम | विद्याधर राजा ६. ३० | अंगअ | | ” -२ | ” ५९. ३ |
| अहभूइ-१ | मुनि, पांचवें वासुदेव के पूर्वजन्म गुरु २०. १७६; | | | अकजडि | विद्याधर ४५. २८ |
| ” २ | ब्राह्मणपुत्र ३०. ६०, ६२, ६९, ७२, ७७ | | | अकतेअ | विद्याधर राजा ५. ४६ |
| अहरकुच्छि | आठवें बलदेव पउम के विद्यागुरु २५. १६. | | | अकौस-१ | राक्षस योद्धा ५९. ५ |
| अहराणी-१ | राज्ञी, तीर्थंकर संति की माता. २०. ४२; | अंगकुमार | | ” -२ | वानर योद्धा ५९. ८ |
| ” २ | ब्राह्मणी २५. १६ | अंगारअ-१ | राक्षसवंशीय राजा ५. २६२. | अकख | राक्षसयोद्धा, ६७. १४ |
| अहविरिअ-१ | नन्दावत्तपुर का राजा १. ७१; ३७. ३, ४, १८, २३, २६, २८, ३०, ३४, ३६, ३८, ४४, ५३, ५६ ६०, ६२, ६४, ६५ ६७, ६८; ३८. ३, ४, ८, ११; ६४. ९; ९१. २४; | अंगरअ-१ | राक्षसवंशीय राजा ५. २६२. | अगिकुंबा | ब्राह्मणी, विस्सभूइ की स्त्री ८२. २८ |
| ” २ | इक्ष्वाकुवंशीय राजा ५. ५ | ” -२ | विद्याधरराजा ५१. १५, २०. | अगिकेउ-१ | ज्योतिष्क देव ३९, ७६ |
| अंक | सावत्थि से बहिष्कृत, पुनः एक नट, पुनः सावत्थि का राजा. ८८. १८, २१. २२, २४, ३३. -सुर ८८. ४१. | अंगिरस(अंगिरस) | तापस ४ ८६ | अगिकेउ-२ | राजपुरोहितपुत्र पुनः एक तापस ४१. ४६. ४८, ५८, ५९ |
| अंकुस | सीया का द्वितीय पुत्र १. ३२ ८४ ८७; ९१. ९; ९७ १, १९, २५; ९८. १, १८, २९, ३२, ३७, ३८, ६१, ६७, ६८. ७०, ७१, ७३; ९९. ३, ६, ४३, ५४, ५६, ६३-६५, ६८, ७२; १००. २८, ३२, ३९, ५०, ५१, ५२, ५६, ५७; १०१. | अंजणसुदरी | विद्याधरी, पवणंजय की स्त्री हणुअ की माता १५. १२, ५७; १. ६२; १५. ६० ८७, ९८; १६. ३६, ३९. ५८. ६०, ६३, ७१ ७२; १७. ८ १७, २५, ३७, ४३, ६९ ७९ ८९ ९१. ९७, १०५, ११५. ११८; १८. ५ ८, १२ ३४, ३६, ४३ ४५, ४८, ५५; १०. २०; ५३. १८; -सुदरी १६. ५८. -तणअ अंजणापुत्र हणुअ ४७. २८; ५३. ८३ | अगिगदान | सातवें वासुदेव के पिता २०. १८२. |
| | | अंजणा | १. ६२; १५. ६० ८७, ९८; १६. ३६, ३९. ५८. ६०, ६३, ७१ ७२; १७. ८ १७, २५, ३७, ४३, ६९ ७९ ८९ ९१. ९७, १०५, ११५. ११८; १८. ५ ८, १२ ३४, ३६, ४३ ४५, ४८, ५५; १०. २०; ५३. १८; -सुदरी १६. ५८. | अगिगभूइ | ब्राह्मणपुत्र, सालिगाम निवासी १०५. २४, ५०, ८०. देखो लिद्धिभूइ) |
| | | अंधअ | वानरराज किंकिंधि का भ्राता १. ४४, ४५; ६. १८५, १९२; -कुमार ८. १९७; ६. १८६. १९३. | अगिगल | ब्राह्मण, धनगाम निवासी ७७ ७४ |
| | | अंधकुमार | | अगिगला | ब्राह्मणी, सोमदेव की पत्नी १०५. २० |
| | | | | अचल | राजा, सीया-स्वयंकर में उपस्थित २८. १०२ |
| | | | | अजिअ-१ | द्वितीय तीर्थंकर १. २, ४०; ५ १४०, १४६; ९. ९१; २०. ४, २८, १०१; ९५. ३१; -जिग्दि ५. ७७, १६७; -सामि ५. ५४ |

| | | | | | |
|-------------|--|-------------------------|--|-----------|--|
| अजिअ-२ | इक्ष्वाकुराजा ११.८ | अणलप्पभ | ज्योतिष्कवासी देव ३९.३१ ११९, १२३ | अमयरस | मुनि, लवण व अंकुस के दीक्षागुरु ११० ४१ |
| अजगुप्त | मुनि २६.१९ | अणादिय | जंभुदोव का अधिपति देव १.५०; ३. ३४; ७. १०९, ११५. | अमयसर | दत्त ३९.३९ |
| अज्जुणविक्ख | लक्ष्मण-पुत्र ९१.२४ | अणिल | विद्याधरवंशीय राजा ५. २६४ | अमरधणु | मृत्य ५.१०९ |
| अणंगकुसुम | राक्षसयोद्धा ५६.३५ | अणिलललिअ | समर्षि मुनि ८९.२ | अमरप्पभ | वानरवंशीय राजा, वानर- राजचिह्न प्रवर्तक ६.६९, ७१, ७२ ८२, ८३, ९०. |
| अणंगकुसुमा | राक्षसी, चंद्रगहा की पुत्री, हणुअ की स्त्री १९.३४; ४९.२, ५; ५३ ४२. | अणिवारि- | अहविरिअ (१) का सहयोगी राजा ३७ ११ | अमरवई | रानी, महु-कैटव की माता १०५.८५ |
| अणंगरासि | राक्षसयोद्धा ५६.३६ | अणुकोसा | ब्राह्मणी ३०.६०, ६४, ६७, ७५ | अमरसुंदर | विद्याधरराजा ८.३९ (देखो सुरसुंदर मुनि १७ ४७ |
| अणंगलया | उज्जेणीकी वेद्या ३३.६६ | अणुद्धर-१ | अरिद्विपुर का राजपुत्र, पुनः तापस ३९.७९, ८१, ८२, १०० | अमियगइ | अमियप्पभ |
| अणंगलवण | सीया का प्रथम पुत्र ९७.९; ९८.५३; १०६.९; ११४.१, (देखो लवण) | अणुद्धर-२ | वानरयोद्धा ५७.४ | अमियवल | राज्यपुर का राजा, चक्रवर्ती जयसेण का पूर्वजन्मनाम २०.१५२ |
| अणंगसरा | पुंढरीयविजयके चक्रवर्ती राजा विद्याधर तिहुयणा णंदकीपुत्री ३.३४, ४९, ६० | अणुद्धरा | गणपाली आर्षिका ३९.४८ | अमियवेग | इक्ष्वाकुवंशीय राजा ५.४ |
| अणंगसुंदरी | रावण की स्त्री ७४.१० | अणुद्धरी | वानरसुग्गीवपुत्री ४७.५३ | अमोहविजया | राक्षसवंशीय राजा ५.२६१ |
| अणंत | चौदहवें तीर्थकर १.४; ५. १४८; ९. ९३; २०. ५, ४०; ९५.३ | अणुराहा | विद्याधररानी, विराहिअ की माता १. ५४; ९. २०; ४५.३ | अयल-१ | धरणिण्द द्वारा रावण को दो गयी शक्ति ९.१०१ |
| अणंतवल | केवली मुनि १४.६९, १०९; ३९.१२१ (देखो अणंत- विरिअ) | अणेशवुद्धि | राजा कुंडलमंडिअ का मंत्री २६.१६ | अयल-२ | प्रथम बलदेव ५.१५, ४; ७०. ३५ |
| अणंतरह | दसरह के ज्येष्ठ भ्राता २२. १०१, १०५ | अहिंजर | विद्याधरयोद्धा १२.९५ | अयल-३ | षाणारसी का राजा ४१. ४० |
| अणंतबिरिअ | केवली मुनि १.५९; १४.४, ६८, १०७; १८. ४४; ३९. १२० १२४; ४१.४७. ६३; ४८. ९९; ६९. २३; ७३.२, ५. (देखो अणंतवल) | अप्पडिघाअ | वानरयोद्धा ५.७.८ | अयल-४ | अवरविदेहे का चक्रवर्ती ८२.६८ |
| अणयार | मुनि, प्रथम बलदेव के पूर्वजन्म-गुरु २०.१९२ | अप्पमेयवल | मुनि ७५.२३ | अयल-५ | दाशरथी भरह के साथ दीक्षित राजा ८५.४ |
| अणरण | दसरह के पिता १.५७; १०. ८४, ८७, ८८; २२. १००, १०३, १०४; २६.२४, २७, ३१; ३०.२१; | अप्पसेअ } अप्पासेअ } | गृहपतिपुत्र, ४८.७९; ४८.७८, ८८, ८९, ९३, ९५. | अर | महुरा का राजा ८८. १७, २०-२४, २६-२८, ३०- ३४.३७ |
| अणरणसुअ | दसरह २४.३४, ३७; २६. ९४; २८.७०; ३१.३२; ३२. २८; ९५.२१; ११८.४१. | अभयमई | लक्ष्मण की रानी ९१.१५ | अर | अट्टारहवें तीर्थकर, १.४; ५. १४८; २०. ६, १४८, १९८; ९५.३४-जिण ९. ९४; २०.४४; |
| | | अभयसेण-१ | मुनि २२.१०३ | अर | सातवें चक्रवर्ती भी ५.१४९, १५३; २०.५३, १३६; |
| | | अभयसेण-२ | मुनि सयलभूमण के शिष्य १०२.६१ | अरहदत्त | साकेयपुर का श्रावक ८९. १२ १३ |
| | | आभचंद | दसवें कुलकर ३.५५ | अरिहदत्त | ८९.२३ |
| | | अभिणंदण-१ | चतुर्थ तीर्थकर ५ १४७; १.२; ९ ९१ (देखो अहिणंदण) | | |
| | | अभिणंदण-२ | मुनि ८२.२९ | | |
| | | अमयप्पभा | रानी, अवरहआ की माता २२.१०६ | | |
| | | अमयमई | पिहु नरेन्द्र की रानी ९८.४ | | |

| | | | | | |
|--------------|--|------------------------|---|-----------|--|
| अरहदास-१ | साकेयपुर का श्रेष्ठी श्रावक ११४, ५.६. | असणिवेअ-२ | वानर योद्धा ५४.२२ | आणंद-२ | छठे बलदेव ५ १५४; ७०. ३५ |
| अरहदास-२ | खिजवावाई नगरी का श्रावक ११८.६६ | असोगलया | विद्याधर राजपुत्री ८.३५ | " -३ | राजा, तेईसवें तीर्थंकर का पूर्वजन्मनाम २०.१५ |
| अरिंदम | अंजनासुंदरी का भाई १५.११ | असोय | धनाश्रय. कोसलपुरी का ११८.४६, ४९, ५०. | आणंदण | राक्षस योद्धा ५९.५ |
| अरिकंता | साध्वी, वेगवाई (४)की गुरुआनी १०३.१०२ | असोयदत्त | मगहपुर का नागरिक ८२. ४७ | आणंदमालि | (देखो नंदिमालि) विद्याधर राजा, चंदाव-त्तपुर का १३.३७ |
| अरिष्टनेमि | बाईसवें तीर्थंकर (देखो नेमि) २०.५७, २०० | अस्मायर | विद्याधर वंशीय राजा ५.४२ | आणंदिअ | दाशरथी भरह के साथ दीक्षित राजा ८५ ३ |
| अरिंदमण-१ | इक्ष्वाकुवंशीय राजा ५ ७ | अहइंद | विद्याधर राजा, मेहपुर का, सिरिकंठ के पिता ६.२ | आयरंग | भलेछराजा, मऊरमाल का २७.६, ७, ३१, ३४, ३६, ३८ |
| " -२ | मुनि, द्वितीय तीर्थंकर के पूर्वजन्मगुरु. २०.१७ | अहिणंदण } अहिनंदण } | चतुर्थ तीर्थंकर २०.४, ३०, (देखो अभिणंदण) ९५. ३१ | आयासविंदु | (देखो योमबिंदु)केकसी के पिता ७.७२ |
| " -३ | मुनि, सातवें तीर्थंकर के पूर्वजन्मगुरु. २०.१८ | अहिदेव | कोसंबी का वणिक-पुत्र ५५.३९ | आवलि | रंभकशिष्य, एउमपुर का नागरिक ५.९५, ९७; -य ५.९४, १११ ११९. |
| " -४ | (देखो सचुंदम) ३८.४३ | आइच्च | वानर राजा, किंकिंधिपुर का १.५३; -रय ६.२१४; ७. १५२; ८.२२९, २३१, २३४, २५५, २५६; ९.१.६, २७; ४७.९; १०३.१३१. | आवली | विद्याधरी ९.११ |
| अरिविजअ | वानरयोद्धा ५७.१५ | आइच्चकिति | विद्याधर रानी, लोकपाल सोम की माता ७.४३ | आसगमीव | प्रथम प्रतिवासुदेव ५ १५६; २०.२०३; ४६.९४ |
| अरिसंतास | राक्षसवंशीय राजा ५.२६५ | आइच्चगइ | राक्षसवंशीय राजा ५.२५२, २५४, २५५. | आसद्धअ | विद्याधरवंशीय राजा ५.४२ |
| अरिहदत्त | (देखो अरहदत्त) | आइच्चगइ-कुमार | राक्षसवंशीय राजा ५.२६१ | आसधम्म | " " ५ ४२ |
| अरिहसण | गंधारका राजपुत्र ३१.२३ | आइच्चजस | चक्रवर्ती भरह का पुत्र; इकरवाग वंश प्रतीक ५.३, ९, १८०; ९४.९ | आससेण | चौबीसवें तीर्थंकर के पिता २०.४९ |
| अरुहभक्तिमंत | राक्षसवंशीय राजा ५.२६४ | आइच्चरक्ष | विद्याधर राजपुत्र ५.१६६ | आसिणिदेवी | राक्षस हृत्थ और पहृत्थ की माता ५८. १२ |
| अवराइअ | राजा, छठे तीर्थंकर का पूर्वजन्मनाम २०.१३ | आइच्चरय-१ | (देखो आइच्च) | आहट्ट | वानरयोद्धा ५७.५ |
| अवराइआ | आठवें बलदेव पउम (राम) की माता तथा दसरह की प्रथमरानी २०. १९६; २२.१०६; २५. १ ७; ३२.३६; ७८.१, ९; ७९.२६; ८२ ८; १०३ ११६; ११८. ४२. | आइच्चरय-२ | विद्याधर राजा ९.१८ | आहला | विद्याधर राजपुत्री १३ ३५, ४२ |
| अविणट्ट | वानरयोद्धा ५७.५ | आउणह | राक्षसी, राजवधू ५ २५४ | इंद | विद्याधरराजा, रहनेउर चक्रवालपुर का. देखो महिइ और सक १ ४७, ६५; ७.८, १३, २२-२४ ३०, ३१, ३३-३५. ४०, ४१, १०१, १६५; ८.४, ७१, ७२. ७६ ७७, २४८, २५३ २५४; १२.३८, ७३, ७४, ७९, ८५, ८९, ९३, ९४, १००, १०७- |
| असंकिअ | महुरा का राजा ८८.८ | आउह | विद्याधर राजा ५.४४ | | |
| असणियोस | विद्याधर राजा ७०.१९ | आडोव-१ | विद्याधर योद्धा, लोकपाल जम का ८.२३९-२४२ | | |
| असणिनिधाअ | राक्षस योद्धा ७१.३६ | " -२ | वानर योद्धा ६७.९ | | |
| असणिरह | " " ५६.३१ | आणंद-१ | पोयणपुर का राजा, द्वितीय तीर्थंकर के नाना ५.५२ | | |
| असणिवेअ | विद्याधर राजा, रहनेउर का १.४४; ६.१५७. १८७, १८९, १९०, १९२, १९८, २०३. २०६, २२४; -पुत्त ६. १९५. (देखो विज्जुवेग) | | | | |

१. ध्यक्तिविशेषनाम

| | | | | |
|--|--|---|---|--|
| ११०, १२०, १२२, १२४, १२८ १३९; १३. १. ३, ६- ८. १२, १३, ३१, ५०, ५२; ५३. ९५; ६५. १४; ७०. ४७. -सुभ(देखो अर्थ) १२. १३८ | इंदरह इंदलेहा इंदाउह इंदाउहपभ इंदाणी-१ इंदाणी-२ इंदाभ इंदामयनंदण इंदासणि इंदाह इंदुमई इंदु-सुही इंदुरह | विद्याधरवंशीय राजा ५. ४४ रानी, द्वितीय तीर्थंकर की दादी ५ ५१ वानर योद्धा ५७. ९ विद्याधर राजा ६. ६६, ६७ राक्षस रानी, सुकेस की पत्नी ६. २१९ रानी, राजा महीहर की पत्नी ३६. ९ दाशरथी भरह के साथ दीक्षित राजा ८५. ४ विद्याधर राजा ६. ६७ वानरयोद्धा ६१. २७ राक्षसयोद्धा ५६. ३१ दाशरथी भरह की प्रणयिनी ८०. ५० रानी, :कोसंबी नरेश नंद की ७५. ६२; -वयणा ७५. ६५, ७५ चक्रवर्तीपुत्र, रावण का आगामी जन्मनाम ११८. ७२-७४ | उग-२ उगणाभ उगसिरी उगसेण उज उज्जुवई उज्जिअ उत्तम उत्तरगह उदयरह उदयसुंदर उदहिकुमार उदिअ उहाम उपलिआ उयहि उवओगा उवलिथ उवमच्छु उवरंभा उव्वसी उसभ उसह-१ | विद्याधरयोद्धा १२. ९८ राक्षसयोद्धा ५६. २९ राक्षसवंशीय राजा ५. २६४ रावणमंत्री ८. १६ " " ८. १६ दाशरथी भरह की प्रण- यिनी ८०. ५२ वानर योद्धा ५७. १२. राक्षसवंशीय राजा ५. २६४ " " ५. २६४ इक्ष्वाकुवंशीय राजा २२. ९७ राजपुत्र, नगपुर का २१. ४५, ५५, ५६, ६८ भवनवासी देव १. ४३; ६. १०५ १०६, ११०, १११, १४४, १४७, दूतपुत्र ३९. ४०. ४५, ४६, ७० वानरयोद्धा ५७ ७ ९ वणिकु स्त्री मिस्सई की सखी ४८. २१, २२ मुनि, आठवें वासुदेव के पूर्वजन्मसुह २०. १७७ दूतपत्नी ३९. ३९, ४४. सेणापुर की एक स्त्री, वसरह का पूर्व-जन्म नाम ३१. ५, ६. ३३ पुरोहित ३१. २१, २८, ३५ विद्याधर नलकुंडर की स्त्री. १. ५७; १२. ५३ ५५, ६२, ६४, ६९ रावणस्त्री ७४. ८ प्रथम तीर्थंकर १. ३५; ३. ६८; १०६. ११४, १२७; ४. ८४; ५. १०. ४९. १४५; ९ ९०; ११. ९३ ९८; २०. ३. ४, ८ १०१, १०६; २८. ४७, ५०; ३७. ५२; ४८. ११०; ८० २५; ९४. ८; १०२. १३ १. १; ९५. ३०; १०९. १३. १४ |
| इंदइ-१ इंदइ-२ इंदकेउ इंदगिरि इंदजुदण्ण इंदणील इंददस इंदधणु इंदपभ इंदभूइ इंदमालि इंदमालिणी इंदमेह | इंधण इधय इक्ताग-कुल इभकण इलवद्धण इला उअहि उइअ उइअपरकम उक उकामुह उकालंगूल उग-१ | इक्ष्वाकु वंश ११. ७; २२. १००; ९४. ८; -वंस ५. २; ६. ८८; २८. ६९; ९८. ३९ द्रुमाधिपति यक्ष देव ३५. २१ हरिवंशीय राजा २१. २९ राजा अणभ की माता २१. ३३ विद्याधरवंशीय राजा ५. १६६ " " " ५. २३३ इक्ष्वाकु-वंशीय राजा ५. ६ विद्याधरवंशीय राजा १०. २० महुरा का राजपुत्र, ८८. १६, २० वानरयोद्धा ५४. २३ राजपुत्र ८८. १६, २० | इंदइ-१ इंदइ-२ इंदकेउ इंदगिरि इंदजुदण्ण इंदणील इंददस इंदधणु इंदपभ इंदभूइ इंदमालि इंदमालिणी इंदमेह | |
| राक्षसवंशीय राजा ५. २६२ राजा अणभ के पिता २८. १५, ५३ हरिवंशीय राजा २१. ९ इक्ष्वाकुवंशीय राजा ५ ६ वानरयोद्धा ६८. २ राजा, कोसंबीका ८८. २५ विद्याधर राजा सुरोदय नगर का ८. १८६ राक्षस वंशीय राजा ५. २६१ देखो भोयम १. ३४; १२. १०; ३१ २; ४३. ८; ५६. २; ५८. ३; ७७. ६९; १०५ १८ रानी वानरराज आइश्च- रथ की पत्नी ९. १ साध्वी ११. ६३ राक्षसवंशीय राजा ५. २६१ | | | | |

१. व्यक्तिविशेषनाम

| | | | | | |
|---------|--|-----------|--|-----------|---|
| उसह-२ | धायईसंड में अरिजयपुर का राजा ५. १०९ | कणग-१ | मत्तियावई का एक वणिक ४८ १९ | कमलनामा | हनुअ की स्त्री, वानर सुग्गीव की पुत्री. ४९. १४ (देखो पउमराग) |
| उसहसेण | उसह-जिन के गणधर ४.३५ | कणग-२ | देवो कणअ १) ३७ २७ | कमलबंधु | इक्ष्वाकुवंशीय राजा २२.९८ |
| एकचूड | विद्याधरवंशीय राजा ५.४५ | कणगएपह | विद्याधर राजा १०३ १०८ | कमलमई | दाशरथी भरह की प्रणयिनी ८०.५१ |
| एगकण | राजा, लंपागदेश का ९८.५९ | कणय-१ | विद्याधरराजा, कणयपुर का ६.२४१ | कमलमाला | राजा आणंद (१) की रानी जिथसल्लु (१) की सास. ५.५२ |
| एरावण-१ | देवेन्द्र का हाथी २.३८, ११५; २८.३०; ७१.३ | कणय-२ | विद्याधर राजा ८.३६ | कमलसिरी-१ | विद्याधरी, लक्ष्मण की स्त्री ५४.४२ |
| एरावण-२ | विद्याधर इंद का हाथी ७. १०, २२; १२.८५, १३२ | कणयपभा | (देखो कणयपभा) ७४. ९ | कमलसिरी-२ | रावण की स्त्री ७४.९ |
| कइगई | दाशरथी भरह की माता ८०.३५; ८६.२८; ९५.२१ (देखो कैकई) | कणयपभा | रावण-स्त्री, राजा भरअ की पुत्री ११.१०० (देखो कणयपभा) | कमला | राजपुत्री, वैसभूसण और कुलभूसण की भगिनी ३९.९४ |
| कइइअ | वानरवंशीय राजा ३.८३ | कणयमाला | कुप की स्त्री ९८.४ | कमलुस्सवा | राक्षस योद्धा ५६.३१ |
| कंकड | राजा ३२.२३ | कणयरह-१ | (देखो रयणरह २) ९०.२८ | कयंत-१ | दाशरथी राम का सेनापति ८६.४७; १००.४, ८; -सुह ८६.३०; ९४.६२; १००.३; ११३.६४; -वयण १.८६; ८६.२६, ४६, ४९, ५०; ८८. ४१, ४२; ९४.२० २४, २९. ३४.४७, ५४, ५७; ५६.११; ९९.२, ५; १००.५; १०३. १५५, १६०, १६१, १६२; -सुर ११३.२०. ३५, ३७, ६४ |
| कंचणामा | रानी पियंबय की पत्नी ३९.७७ (देखो कणयामा) | कणयरह-२ | विद्याधर राजा, कंचणनयर का १०६.१, २ | कयंत-२ | दाशरथी राम का सेनापति ८६.४७; १००.४, ८; -सुह ८६.३०; ९४.६२; १००.३; ११३.६४; -वयण १.८६; ८६.२६, ४६, ४९, ५०; ८८. ४१, ४२; ९४.२० २४, २९. ३४.४७, ५४, ५७; ५६.११; ९९.२, ५; १००.५; १०३. १५५, १६०, १६१, १६२; -सुर ११३.२०. ३५, ३७, ६४ |
| कंडुह | दाशरथी भरह के साथ दीक्षित राजा ८५.५ | कणयसिरी | विद्याधरानी, कणय १ की पत्नी, मालवंत की सास ६.२४१ | कर्यबविडव | राक्षसयोद्धा ५६.३८ |
| कंत | वानर योद्धा ५७.१८ | कणयामा-१ | सोदास की रानी २२.७६ | कमचिता | रावण-पुत्री ११.१०१ |
| कंता-१ | रावण की स्त्री ७४.११ | कणयामा-२ | सलुद्धमण की रानी ३८. २७ | कयधम्म | राजा, कंपिलपुर का, तीर्थंकर जेमल के पिता २०.३९ |
| कंता-२ | दाशरथी भरह की प्रणयिनी ८०.५० | कणयामा-३ | (देखो कंचणामा) ३९.७९ | कयाण | ब्राह्मण ३०.६९, ७१, ७६ |
| कंतासोग | पुण्यविदेह में मत्तकोइ-लरख ग्राम का राजा १०३. १२९ | कणयामा-४ | अयल (५) की माता ८८. १७ | करह | राजा, पुण्यकावइण नगर का ७७.७५, ८८ |
| कंद | वानर योद्धा ६१.२७ | कणयामा-५ | विद्याधर रानी १०३.५८ | कलह | अइविरिय का मित्रराजा ३७.७ |
| ककुह | इक्ष्वाकुवंशीय राजा २२.९९ | कणयावली-१ | विद्याधर राजपुत्री, मालवंत की स्त्री. ६.२४१ | कलिंग | वानरयोद्धा ५७.१२ |
| कडोर | राजा ३२.२३ | कणयावली-२ | लोकपाल कुबेर की माता ७.४५ | कलाणगुणधर | मुनि १३.४४ |
| कणअ-१ | राजा जणअ के भाई २७. २५; २८ १३२, १३४, १३५; ३१. ३५ -सुया (देखो सुभहा) २८. १३६, १३९ | कणह | नवम वासुदेव ५.१५५, १०५.१५ | | |
| कणअ-२ | राक्षस योद्धा ५६.३२ | कणविरिय | सावत्थी नरेश, चक्रवर्ती सुभूम के पिता २०.१३९ | | |
| कणअ-ई | ५६.३६ | कमण | राक्षसयोद्धा ७१.३६ | | |
| कणओयरी | रानी, अंजणा का पूर्व-भय नाम १७.५५, ६०, ६२ ६४ ६८ | कमलकंता | साध्वी ३०.६७ | | |
| | | कमलगचम | मुनि ३१.१९, २४ | | |

| | | | | | |
|-------------|---|-----------|--|---------------|--|
| कलाणमाला | राजा वालिकिल की पुत्री लक्ष्मण की रानी ३४.२; ७९.८; ८०.५१; | कितिधर-१ | मुनि, द्वितीय बलदेव के गुरु २०.२०५ | कुंभयण्यपुत्र | ६१. २८; ७७.६४ (देखो कुंभ १) |
| कलाणमालिणी | ३४.२२, ५६; ९१.२३ | ,, -२ | इक्ष्वाकु राजा २१.७८-८१, ९१; २२.१, ५.४७ | कुटुम्बइरव | वानरयोद्धा ५७.९ |
| कलाणमुनि | मुनि ८८.१२ | ,, -३ | मुनि ७४.३४ | कुणिम | हरिवंशीय राजा २१ ३० |
| कविल | विप्र बटुक ३५.५ ६, ४४, ५१, ६२, ६४, ७३, ७४, ७९, ८१. | कितिधरल | राक्षसवंशीय राजा ५.२६९; ६.६, १२, १५ १६, १८, २८ | कुबेर | हृद का लोकपाल, ७.४५, ४७ |
| कसिव | राजा, कासी का १०४. ११, १४-२१. | कितिनाम | वानर योद्धा ५७.९ | कुबेरकंत | अटभण्यपुर का राजा ९८ ५८ |
| कामग्नि | राक्षसयोद्धा ५६.३६ | कितिमई-१ | वणिकुली ५.८३ | कुबेरदत्त | इक्ष्वाकुवंशीय राजा २२.९८ |
| कामवण्य | ,, ५६.३५ | कितिमई-२ | अंजना की सास १५.२७; १७.५, ७, २२; १८. २५, २८ (देखो कैउमई) | कुबेरी | दाशरथी भरह की प्रणयिनी ८०.५१ |
| काल-१ | राजा ८.१५६, १५७ | किरणमंडला | विद्याधर रानी १०१.५८, ६० | कुम्बर | (देखो नलकुम्बर) |
| काल-२ | विभीषण का मुख्य भट ५५.२३ | किरीड | वानरयोद्धा ५७.९ | कुसुभ | वानरयोद्धा-प्रमुख ४९.२१ |
| काल-३ | वानर योद्धा ५७.११ | कील | ,, ५७.१२ | कुमुदाक्त | ५४.३४; ६२. ३०; ६८. २; ७१.३५ |
| काल-४ | ,, ५७.१२ | कुंठ | वानरयोद्धा ५४.२१ | कुम्भी | वानरयोद्धा ५७.३ |
| काल-५ | दाशरथी राम की प्रजा का अगुआ ९३.१७ | कुंडल | राजा, वियम्भनवर का २६.६५, ६९; ३०. ७७;— मंडिअ २६.१०, १३, २४, २८, २९, ३२, ७६; ३०.२०, ४९, ७४ | कुसुविदा | ब्राह्मणी, नारदमाता ११. ५०, ५२, ५८, ५९ |
| कालग्नि-१ | विद्याधर राजा, लोकपाल जन्म के पिता ७.४६ | कुंत | वानरयोद्धा ५९.३८ | कुलपदण | वणिकुली ५५.३८ |
| कालि | राक्षसयोद्धा ६१ २७, २९ | कुंतु-१ | सत्तरहवें तीर्थकर, छठे चक्रवर्ती भी १.४; ९.९४; २०. ६, ४३; ९५. ३४; ५. १४८, १४९, १५३; २०.५३, १३६ | कुल-भूसण | विद्याधरराजकुमार ३१.३० |
| कावडिय | दास ५.१०२ | कुंतु-२ | इक्ष्वाकु वंशीय राजा २२. ९८ | कुल-भूसण | मुनि, सिद्धयनगर का राजकुमार ३९.८७, १२२. -विद्वसन १.७२ |
| कासदय | उवर्भ्रा के पिता १२.७० | कुंभ-१ | कुंभकण्ठका पुत्र ८. २७१; १०.२३; ५३. ९२; ६१.२८; ७१.३६ | कुलवदण | महु(केटव) का पुत्र १०५. १०९ |
| कासव | दाशरथी राम की प्रजा का अगुआ ९३.१७ | कुंभ-२ | राजा, मिहिलापुरी का, जिनमहो के पिता. २०.४५ | कुलविद्वसन | (देखो कुलभूसण) |
| किपुरिस | नागरिक, सिद्धिपुर का १३.२६ | कुंभ-कण्ठ | राघव का भाई (देखो भाणुकण्ठ) ३.१२; ८. ५६, ५७; ७५.५; | कुलिसउदर | राक्षसयोद्धा ५६.३१ |
| किक्किधि-१ | वानरवंशीय राजा १.४४, ५३; ६.१५४, १७४, १७६, १८३, १८६, १८९, १९२, १९४, १९६, २०१, २०७, २४३ | | -यण १.७७; २. १०८; ८. ७०, १३१ | कुलिसभार | ब्राह्मण ८८.७ |
| किक्किधि-२ | विद्याधर राजा १०.२० | | -यणमुनि ६१.२८ | कुलिसनिगाअ | राक्षसयोद्धा ५६ २९ |
| किक्किधिदंड | हाथी ६८.१ | | | कुलिस-यज | देखो वज्रकण्ठ ७९.९; -सवण ९९.५० |
| किति-१ | मुनि, पांचवें बलदेव के गुरु २०.२०५ | | | कुस | सीथा का पुत्र, देखो अंकुस १००.२, १२, १९-२२ |
| किति-२ | रावण की स्त्री ७४.११ | | | कुसदय | ब्राह्मण १०३.१०५ |
| | | | | कुसुमदंत | नवें तीर्थकर, (देखो पुष्पदंत) १.३; ९५.३२; |
| | | | | कुसुममाल | वानरयोद्धा ५७.६ |
| | | | | कुसुमरद | (देखो कुसुमदंत) २०.५ |
| | | | | कुसुमाउह | वानरयोद्धा ५७.६ |
| | | | | कूड | दास ५.१०२ |

१. व्यक्तिविशेषनाम

| | | | | | |
|---------------|---|------------------------------------|--|-------------------|---|
| कूर-१ | वानरयोद्धा ५४.२१ | केसी | मातङ्ग वासुदेव की माता २०.१८४ | खेमंकर-१ | तृतीय कुलकर ३.५२ |
| „ -२ | राक्षसयोद्धा ५६.२९ | | | „ -२ | मुनि २१.८० |
| „ -३ | मृत्यु, धायईसंड का ५. १०९ | कोडिसिला | लक्ष्मण द्वारा उठायीगयी शिला ४८. ९९, १००, १०३; ११७. ५ (देखो निव्वाणसिला) | „ -३ | राजा, सिद्धस्थानगर का देसभूषण व कुल-भूषण के पिता ३९.८६, ९०, ९३, ९८ |
| केउ | राक्षसयोद्धा ६१.२९ | | | खेमंधर | चतुर्थ कुलकर ३.५२ |
| केउमई | अज्ञाता की सास १५.२७; १७.५, ७, २२; १८. २५, २८ (देखो कितिमई) | कोण कोमुइनेदण कोलावसुंदर | वानरयोद्धा ५७.१३ ५७.१८ विद्याधर राजा १०.२१ | खेयरनरिह | वानरवंशीय राजा ६.८४ |
| केकई | दसरहकी रानी व लक्ष्मण की माता २२.१०८.= केगई २०.१८४; = केगया ७९.२६ (देखो सुमिसा और सोमिनी) | कोलाहल कोव | वानरयोद्धा ५७.१८ राक्षसयोद्धा ५९.१४, =कोह ५९.१३=कोहण ५६.३२ | खोभ | राक्षसयोद्धा ५६.३२ |
| केकई | दसरह की रानी व भरह और ससुभय की माता ७९.२८; केगई १.६४, ६९, २४.३, २३, ३७, ३९; २५. १४; २८. १३०; ३१. ६३, ६५, ६७, ७०, ७३-७५, ८९. ९८; ३२. ३७ ४८, ५०, ५४; ६४. २०; ८०. ८३. ८. १०; ८८. ३७; ९५. २६; ११८. ४२ | कोसल | इक्ष्वाकु वंशीय राजा २२. ५ (देखो सुकोसल) | गंध | राक्षसयोद्धा ५९.२ |
| | केगइपुत ३२.४४; केगइसुअ ८७.१; ८८.१. (देखोसनुज | कोमिय | केकसी की भगिनी, वेस-मणकी माता ७.५४ | गंगदत्त | मुनि, नवम वासुदेव का पूर्वजन्म नाम २०.१७२ |
| | | कोह } कोहण } खंद खणकखेत्र | देखो कोव | गंगाहर | विद्याधर राजपुत्र ८.११५, २०० |
| | | खरदूमण | वानरयोद्धा ५७.८; ६७.११ वानरयोद्धा ५७.१४ | गंधव्व गंधव्वा | विद्याधर राजा ५१.१२, २५ विद्याधर राजकुमारी ५. २४३ |
| | | | चंद्रणहा का पति, रावण का बहिनीई, पायालंकार पुर का राजा. १.७४; ९. १०, १२; १०. १७; १६. २४, २६; ४३. १६, १८; ४४. २, १०, १३, ३५; ४५. ५. १२, १३-१५, २२, ३७, ४१; ४६. ११, १७, २०, ८७; ४७. ३, ४; ४९. ८; ५३. ३४. (देखो दूसन) | गंधारी | विद्याधर राजवधू ५.२४३ |
| केकसी | रावणमाता व विद्याधर राजा वीमविदु की पुत्री १.४९; ७. ५४. ६७, ७२, १५४; ११३. ११४. | खरदूमण | चंद्रणहा का पति, रावण का बहिनीई, पायालंकार पुर का राजा. १.७४; ९. १०, १२; १०. १७; १६. २४, २६; ४३. १६, १८; ४४. २, १०, १३, ३५; ४५. ५. १२, १३-१५, २२, ३७, ४१; ४६. ११, १७, २०, ८७; ४७. ३, ४; ४९. ८; ५३. ३४. (देखो दूसन) | गंभीर-१ | राक्षसयोद्धा ५९.३ |
| केकसी | | | | गंभीर-२ | विद्याधर राजा ११४.१९ |
| केगई केगया | (देखो केकई और केकई) | खरनिस्मण | राक्षसयोद्धा ५६.३० | गंभीरणाअ | राक्षसयोद्धा ५६.२८ |
| केदव | पञ्जुण का पूर्वभवनाम, साकेयपुरका राजा १०५. १३, १५, १८, ८६, १०९, १११, ११४ | खरदूमण | वानरयोद्धा ५९.१२-१४ | गयणचंद | वालि के वीक्षागुरु, मुनि ९.४६ |
| | | खितिधर | खरदूमणका मंत्री ४५. १५ | गयणतडि | रावणमन्त्री ८.१५ |
| | | खीरकयंब | वानरयोद्धा ५७.११ | गयणविज्जू | विद्याधर राजा ८.१३२ |
| केलीगिल | वानरयोद्धा ५४.२१ | खीरधारा | धसु राजा के गुरु, नारम के पिता, ब्राह्मण ११.९, १२ | गयणाअ | राक्षसयोद्धा ५६.३८ |
| केसरि-१ | विद्याधर योद्धा १३.९८ | खेअ | किंपुरिस की जी १३.२६ | गयणाणंद | वानरवंशीय राजा ६.८४ |
| केसरि-२ | अइविरिअ का मित्रराजा ३७.११ | खेम | वानरयोद्धा ५७.१५ | गयणिंदु | विद्याधर राजा ५.४५ |
| | | | दाशरथी राम की प्रजा का अगुआ ९३.१७ | गयणुज्जल | राक्षसयोद्धा १२.९२ |
| केसरिविरिअ | „ „ ३७.७ | | | गयवरघोस | वानरयोद्धा ५४.२१ |
| | | | | गयवरतास | वानरयोद्धा ५७.१० |
| | | | | गयवाहण | राजा वज्रजंघ के पिता ९५.६४ |
| | | | | गयारि | राक्षस राजा ५६.२८ |
| | | | | गरुडंक | इक्ष्वाकुवंशीय राजा ५.७ |
| | | | | गरुडाहिव | गरुडदेवों का अधिपति, व राजा खेमंकर (३) का पुनर्भव नाम. ३९. १२९; ६०.७; ६५.२३ |
| | | | | गहयचंदाम | वानरयोद्धा ६७.९ |

१. व्यक्तिविशेषनाम

| | | | | | |
|---------------------|---|----------|--|--------------------------------|---|
| गहखोभ | राक्षसवंशीयराजा ५.२६६ | घणवाहण-३ | रावण का पुत्र १५.१६; ४८.५७;५६.४१; ५९,६२, ६५;६९.५२;६७.१४;७०. ३;७४.२२;७५.७ ४३ ५९, ७४,७९ (देखो मेहवाहण २) | चंदणकला } चंदणहा } | रावण-भगिनी १०.१८; ७.९८; ८.१३;९. १०,१३; १९.३४.४३. १६,२९,३६; ४४ १,३; ४६.१८;४९. ३; ५३.२८;७५.८३; चंदणहा-नंद (देखो सुंघ) ४५.४०; ९८ ४३;चंदणहा- नंदिणी (देखो अणंग- कुसुमा) ४९.२;५३.४२. |
| गिरिनंद | वानरवंशीय राजा ६.८४ | घणवाहरह | राजा ८५.२ | | |
| गिरिभूइ | विप्र ५५.३५.३७,४४ | घणेभ | विभीषण का मुख्य भट ५५.२३ | | |
| गुणधर } गुणनाम } | वणिक पुत्र, गुणमह (३) का भाई १०३.१२१, १०३.८ | घम्म | वानरयोद्धा ५७.१३ | चंदणपायव चंदणभ } चंदणह } | |
| गुणनिहि | मुनि ८२.९५ | घोर | विभीषण का मुख्य भट ५५.२३ | चंदणहा चंदणा } | चंदणहा-नंद (देखो सुंघ) ४५.४०; ९८ ४३;चंदणहा- नंदिणी (देखो अणंग- कुसुमा) ४९.२;५३.४२. |
| गुणमह-१ | दाशरथी भरह की प्रणयिनी ८०.५० | घोस | विभीषण का मुख्य भट ५५.२३ | | वानरयोद्धा ५७.९ |
| गुणमह-२ | „ „ ८०.५२ | घोससेण | मुनि, सातवें वासुदेव के पूर्वजन्मगुरु | | राक्षसयोद्धा ६१.२७ „ „ ५६.३१ |
| गुणमह-३ | वणिक पुत्री, स्त्रीयाका पूर्व- भवनाम १०३.९,१०,१३, ९३,१२०,१२१ | चतचूड | विद्याधरवंशीय राजा ५.४५ | | देखो चंदणकला |
| गुणमाला | विद्याधर राजपुत्री, लकखण की स्त्री ५४.४२;९३.६ | चउम्महु | इक्ष्वाकुवंशीय राजा २२.९६ | | दाशरथी भरह की प्रणयिनी ८०.५१ |
| गुणवई | वानररानी ६.६९,७१ | चंचल | राक्षसयोद्धा ५६.३९ | चंदनह चंदपह } चंदपह } | विद्याधर राजा १३४.१९ |
| गुणवल्ली | रानी १३.२९ | चंड | विद्याधरवंशीय राजा ५.२६४ | | आठवें तीर्थंकर ९५.३२; (देखो चंवाभ २) व ससिपह ३३.८९,१२६; ४७.५१ |
| गुणसमुदा | दाशरथी भरह की प्रणयिनी ८०.५२ | चंडंसु | वानरयोद्धा ५७.१२ | चंदमह | महुरा का राजा ८८.१५, १७,२८-३०,३२ |
| गुणसायर | मुनि २१.७१ | चंडकुंड | राक्षसयोद्धा ५६.३३ | चंदमई-१ | रानी ५.११५ |
| गोभूइ | विप्र ५५.३५,४४ | चंडुम्मि | वानरयोद्धा ७१.३८ | चंदमई-२ | विद्याधरी, मालि की स्त्री ६.२३७ |
| गोमुह | गृहपति १३.२७ | चंद-१ | राक्षसयोद्धा ५९.२ | | सुरगंगीयपुर का राजा ६३.१९ |
| गोयम | (देखो महावीर के गणधर इन्दभूइ) २.६०;३.३,७; २०.६३ | „-२ | वानरयोद्धा ५९.३८ | | वानरयोद्धा ६७.११ |
| गोहाणिय | वणिक ७७.१११ | „-३ | दाशरथी भरहका पूर्वभवनाम ८२.११८ (देखो चंदोदय) | चंदमई-१ | मुनि ८२.९०,९३ |
| घटस्थ | राक्षसयोद्धा ५६.३५ | „-४ | लकखणपुत्र ९१.२० | चंदमई-२ | कुस की विद्याधर स्त्री १०६.९,१२ |
| घडडवरि | वानरयोद्धा ६१.२७ | चंदक | विद्याधरवंशीय राजा ५ ४३ | | वालि का पुत्र ४७.२३; ५४.१९;५९.३७;६२.३२ |
| घण | „ „ ५७.११ | चंदकंता | दाशरथी भरह की प्रण- यिनी ८०.५२ | चंदमरीह | विद्याधरवंशीयराजा ५.१५ |
| घणमालि | विद्याधरयोद्धा १२.९५ | चंदक | राक्षसयोद्धा ५९ १२; ६१. १० | चंदमुह | „ „ „ ५.४४ |
| घणरह | वानरयोद्धा ५४.२१ | चंदक | विद्याधर राजा, चककवाल नगर का. भामंडल के द्वितीय पिता. २६.८०;२८. ८.२०.२१.२२. ४५, ५१, ५५,५८,६७, ७६;३०.१५, १८,२७,४५,४६, ४८,५६, ५७. (देखो चंदविक्रम) | चंदमुही | वानर योद्धा ५७.६ |
| घणरह | मुनि, जिन सेंटि के पूर्व- भवगुरु २०.१९ १३३ | चंदगइ | विद्याधर राजा, चककवाल नगर का. भामंडल के द्वितीय पिता. २६.८०;२८. ८.२०.२१.२२. ४५, ५१, ५५,५८,६७, ७६;३०.१५, १८,२७,४५,४६, ४८,५६, ५७. (देखो चंदविक्रम) | चंदरस्सि | दाशरथी राम की स्त्री, राजा गंधर्व की पुत्री ५१ १३ |
| घणवाहण-१ | रक्षस द्वीप का विद्याधर- वंशीय प्रथम राजा ५. ७७, १३३, १३८. १४०; (देखो मेहवाहण (१)) | चंदजोइ | विद्याधरवंशीय राजा ५.४५ | चंदरह-१ | विद्याधर राजा ७२.५,७ |
| घणवाहण-२ | राक्षसवंशीय राजा, महा- रक्षस का पुत्र ५.१६०, १६५ २३५;४३.९ | | वानर राजा ५४.२२ | चंदरह-२ | विद्याधरवंशीय राजा ५.२६६ |

१. व्यक्तिविक्षेपनाम

| | | | | |
|-----------|--|--------------|---------------------------|--------------------------|
| चंदवधना-१ | रावण की स्त्री ७४.८ | चत्रल | " " ५६.३९ | ४९.२९; ५४.३६; ६७.१२; |
| " -२ | विद्याधरी, राजा रथणरह (२ की रानी ९०.२ | चत्रलग्द | राजा चंद्रगह का शून्य | ७१.११; = जंबूनअ ४७.८; |
| चंदविक्रम | (देखो, चंद्रगह) ३०.७५ | चत्रलवेग | २८.२५, ४१ | ६४.२ |
| चंद्रसिहर | विद्याधरवंशीयराजा ५.४३ | चांडडरात्रण | विद्याधरवंशीयराजा ५.२६३ | रावण का पुत्र ५९.२२, २५; |
| चंद्रहास | रावण की एक तलवार | चाह | राक्षस सुह का पुत्र ११३. | ७१.३६; ७७.६२ |
| | ९.१४; ६८.४२; ६९.४३ | चाहसिरी | १३ | देखो जंबव |
| चंदाभ-१ | ग्यारहवें कुलकर ३.५५ | चाहसिरी | सुग्गीव की पुत्री ४७.५४ | राक्षसयोद्धा ५६.३० |
| चंदाभ-२ | आठवें तीर्थंकर २०.५.३४, | चितामणि | नवम चक्रवर्ती का पूर्व- | दाशरथी भरत के साथ |
| | ५४ (देखो ससिपभ) | | जन्मनाम, श्रीयसोयनयरी | दीक्षित राजा ८५.२ |
| चंदाभ-३ | वानरयोद्धा ५७.३; ५९. | चित्तपभ | का राजा २० १४२ | देखो जंबव |
| | ३७; ७६.२३ | | खरदूसण का मंत्री ४४. | जंबवत का पुत्र ५९.३३ |
| चंदाभा-१ | वानर सुग्गीव की पुत्री, | चित्तभाणु | १२ | देखो जंबव |
| " -२ | वडनगर के राजा वीर- | | विद्याधर राजा, पडिसुर | जंबवत का पुत्र ५९.३३ |
| | सेन की रानी १०५.९०, | | के पिता तथा अंजणा के | देखो जंबव |
| | ९४, ९५, ९६, १०१. १०३. | चित्तमाला-१ | नाना १७.१०२ | कुंचपुर का राजकुमार |
| | ११०, ११२ | " -२ | उडरंभा की दूती १२.५५. | ४८.११ १३, १५, २६ |
| चंदोदय | दाशरथी भरह का पूर्व- | | गंधर्व मणिचूल की स्त्री | अकखदस्त के पिता ४८.५४ |
| | भव-नाम ८२.२५, २७ | चित्तरह | १७.८४ | चंदाइहपुर का राजकुमार |
| चंदोयर | ११६. (देखो चंद ३) | | सीया-स्वयंवर में उप- | ८२.६५ |
| | विराहिस के पिता, | चित्तिारिक्ख | स्थित राजा २८.१०१ | एक पक्षी, वडनारण में |
| | पायालंकार का राजा १. | | मुनि, चौदहवें तीर्थंकर के | राम-सीया द्वारा प्राप्त, |
| | ५४; ९.१८ २०; ४५.३, २१ | चित्तुस्सवा | पूर्वभवगुरु २०.१९ | वडन राजा का आगामी |
| | ४१; ११२.२ | | देवी, सीया-पूर्वभवनाम | भव ४१.७५ |
| | -नंदण ४५.२६; ७९. २४; | चूषामणि | ३०.७० | १.७३; ४४. ४०, ५५; |
| | ८५. २७; ९९.३६; १०१. | छसछाय | रानी २१.४३ | ११३. २२, २९, ३७-सुर |
| | २५ देखा विराहिस | जउणदस | महापुर का राजा १०३. | ११३.३०-देव ११३.५८; |
| चक्रक | विद्याधर साहसगह के | | ३९, ४२ | ४१.६५ ७८; ४२.३५; ४४. |
| | पिता १०.३ | जउणदेव | महुरा का राजकुमार ८८. | ३७, ५४; ४७. ३; ५३. ३३; |
| चक्रुअ | चक्रपुर का राजा २६.४ | | १६ | राक्षसयोद्धा १२.९२ |
| चक्रार | विद्याधरवंशीयराजा ५.२६३ | जउणदेव | ससुग्य का पूर्व-जन्म- | सीया के पिता, मिहिला |
| चक्रुनाम | आठवें कुलकर ३.५३ | | नाम, महुराका निवासी | के हरिवंशीय राजा २१. |
| चमर | पभघ (१) का आगामी | जउणा-१ | ८८.४ | ३३, ३४; २३. १२, १५, १८; |
| | जन्मनाम, भवनवासी देवी | " -२ | वणिकू स्त्री ३३.६५ | २४.११ ३६; २६.१, २, ७०. |
| | का एक अधिपति ८७.२, | | गृहपति पभघ की स्त्री | ७२, ९२. ९५, १०२, १०३; |
| | ३, १२, -कुमार १२.३३; | जंबव | ४८.७७ | २७. २, ३, ८-११, २२, २३, |
| | -राया ८७.१५ | | वानर सुग्गीव का मंत्री | २५, २८, ४१; २८.१, १५, |
| चल-१ | वानरयोद्धा ५७ ११ | जंबवत | ४९.२१; ६२.२४; ९८.४५; | ४१-४५, ५१, ५३, ५५, ५६, |
| चल-२ | राक्षसयोद्धा ५६.३९ | जंबवत | ४८.६१; ५७.२; ७६.२३; | ६३, ६६, ६८, ७३, ७६, ७७, |
| | | जंबुवंत | ७१.१०; ७६.७; =जंबूनअ-२ | ७९, ८२, ९३ ९६, १३२; |
| | | जंबुवंत | ४७.१२; ४८.७७, ९७, ९८; | ३०.८, ३३, ५१, ५५, ८४, |
| | | | | ८५, ९५, ९७; ३१.३५; ४६. |
| | | | | ५७; ९५.२०; ९६.५; ११८. |
| | | | | ४२, ५४; |

| | | | | |
|---|---|--|--|---|
| -तणय देखो भ्रामंडल ५९. ६२; ६४, १२, १५; -नंदण ५७. २०; ६५, २५; ७६, ७; -पुत्र ५५, ४८; ६२, ३१; ७१, ४७; १०३, १२१; -सुअ ३०. ३२; ६५, २८; ७४, ३०; ७६, १५; १०७, ११; -अंगया ४१, ७८; देखो सीया -तणया ३०. ४७; ३७, ३४; ३९, १५, २०, २२; ४३, ४०; ४४, ३९; ४६, १३, ४९; ४८, ६०, ११९; ५५, ६; ६५, ३२; ६९, २१, ३९; ८०, ५४; ९४, ८५; ९५, ६; ९९, ६६; १००, ३८; १०१, २, ४३; १०२, ५, १५; १०३, १५०, १७१; -दुहिया २३, ११; ३०, ३५; -धूया ३१, ११६; ३५, १०; ४४, ४३; ४६, १, ५२, ५६, ७७; ४८, ४; ५३, १४८; ५४, ७, ११; ७६, १३, १६; ९२, १; ९३, ५, १; ९४, २१; ९५, ४६, ५६, ९६, ३६; १०१, २६; १०२, १३, १८, ३४, ६०; -नंदणा १०२, ३; -नंदणी ९४, ४६, ५३; -नंदिणी ४५, १८; ९६, २; ९७, २०; ९८, २३; -सुया ३७, ६२; ३८, २३; ३९, ९, ११; ४१, ७०; ४२, १७; ४४, २२, ४८, ५१, ६१; ४६, १४, ३७, ४७; ५३, ६०; ६३, १२; ६४, २; ६५, १७ २८; ६८, २४, ३६, ४५; ९२, १३; ९३, ८, २६, ३९; ९४, ३६, १०२; ९५, १६, ४७; ९६, ७ १२, २६; ९८, ४४, ४८; ९९, २; १००, ४२, ५९; १०१, २०, २५, ७०; १०२, २६, ३०; १०३, १७३; १०७, ११. | जणमेजअ जणय जणवल्लह जणहविपुत्र जजवक्क जम जमदंड जमदग्गि जय-१ जय-२ जयंत जयंती जयकंत जयचंदा जयप्पह जयमंत जयमित्त-१ ,, -२ जयसेण-१ ,, -२ | चंपापुरी का राजा ८. १५६, १५७, २०४ देखो जणअ दाशरथी भरह के साथ दीक्षित राजा ८५, ४ जाहनीपुत्र भगीरह ५, २०१ विप्र, घणदत्त का मित्र, विभीषणका पूर्व-भव-नाम १०३, ८, १३ विद्याधर राजकुमार, विद्या- धर ईश्व का दक्षिण क्षेत्र का लोकपाल १, ५३; ७, ४६, ४७; ८, २२९, २३०, २३२, २३४, २३७, २३८, २३९, २४२, २४५, २४६, २५२, २५३; ९, २७; १६, १४; ५३, ९५; रावण का मंत्री ६६, ३२, ३५ परसुराम के पिता २०, १४० सोतास्वयंवर में उपस्थित राज्य २८, १०१ वानरयोद्धा ५७ १४; ५९, ३८ विद्याधर ईश्व का पुत्र १२, १००, १०२-१०५, १०७ महुराजा की पत्नी ८६, ३४ राजकुमार, रावण का आगामी जन्मनाम ११८, ६९ विद्याधर राजकुमारी ८, १८७ राजकुमार ११८, ६९ सप्तर्षि मुनि ८९, २ ,, ,, ८९, २ वानरयोद्धा ५७, ३ वानरयोद्धा ६७, १२ श्यारहूवें चक्रवर्ती राजा ५, १५३; २०, १५३ | जया-१ जया-२ जया ३ जयागंद जयावई जर जरासंधु } जरासिंधु } जलकंत जलणजडि जलणसिंह-१ ,, -२ ,, -३ जलयवाहण जलहर जलियक्ख जसकंत जसकित्ति जसमई जसरह जसवई जसहर-१ जसहर-२ जसोयर जसोहर | जसहर (१) की रानी ५ ११७ पियनंदी की रानी १७ ४८ तीर्थंकर वसुपुज की माता २०, ३८ वानर सुग्गीव का पुत्र १०, १० एक भूय की माता ५, १०९ राक्षसयोद्धा ५९, ३, ९ नवम प्रतिवासुदेव २०, २०४, ५, १५६ देखो धरुण, १६, २२; १८, ३ विद्याधरवंशीयराजा ५, ४६ पुरोहित ५, ३१ जोईपुर का विद्याधर राजा, तारा के पिता १०, २, ६, आहल्ला के पिता, अरि- जयपुरका विद्याधर राजा १३, ३५ वानरयोद्धा ५७, १६ विद्याधर योद्धा १२, ९५ ,, ,, १२, ९५ वानरयोद्धा ५९, ३७ चक्रवर्ती सयर का पूर्व जन्मनाम, पुहईपुर का राजकुमार ५, ११७ चक्रवर्ती जयसेण की माता २०, १५३ इक्ष्वाकुवंशीयराजा २२ ९६ चक्रवर्तीसगर की माता २०, १०९ पुहईपुर का राजा ५, ११७ सगर के पूर्वजन्मगुरु, मुनि २०, १०८ वानरयोद्धा ५७, १९ मुनि ३१, ११ |
|---|---|--|--|---|

| | | | | | |
|--|--|---|--|---|---|
| जाणई } जाणगी } जायव जिणदत्त जिणनाम जिणपउमरुई जिणपेम्म जिणमई जिणमय जिणवडरसेण जिणपउमा जिणभाण जिणसत्तु-१ .. -२ जीमुत्तनायक जुइ जुगंधर जुजसवंत जोइ जोइपिअ जोइमई जोयणग्ंधा डामरमुणि | जणअ की पुत्री १०६.१८ (देखो सीया) ११७.१८ वशनाम २०.५६ श्रावक, गृहपति २०.११६ वानरयोद्धा ५७.१९ श्रेष्ठिपुत्र १०३.३८,४० (देखो पउमरुई) वानर योद्धा ५७.१९ वानर सुग्गीव की पुत्री ४७.५४ वानरयोद्धा ५७.१९ पुंडरीगिणी का राजा, चक्रवर्ती भरद्वाज के पूर्व जन्म-पिता २०.१०७ लक्ष्मण की स्त्री, राजा सत्तुदमण की पुत्री १, ७२;३८.२७, २८.३५,४४, ४९,५०,५५;७७.५०;९१. १५ विद्याधरवंशीयराजा ५ २५९,२६० जिन अजिअ के पिता ५.५१,५३;२०.२८ (देखो सत्तुदमण) खेमंजलीपुर का राजा ७७.५० राक्षसयोद्धा ६१.१० मुनि ३२.५७;८९.१८,१९, २०,२३;११८.४८-५१ मुनि. आठवें तीर्थंकर के पूर्वजन्मगुरु २०.१८ वानरयोद्धा ५७.१८ ,, ,, ६७.१० वानर योद्धा ५७.४ रानी, विस्लावसु की १२.३२ राजा भूरिण की रानी ३१.२३ तेईसवें तीर्थंकर के पूर्वजन्म गुरु २०.२१ | डिब णील तडिकेस } तडिकेसि } तडिजौह तडिपिंग तडिप्पभा तडिमाला-१ तडिमाला-२ तडियंगय तडिवाह तडिविलसिअ तडिवेअ } तडिवेग } तणुकेंचु तरंगतिलअ तरंगमाला तरल तारग तारा-१ तारा-२ तावण तिउरामुह तिगुत्ति तिचूड तिजड-१ तिजड-२ तियसंजअ | विद्याधर राजा १०.२० देखो नील ६८२ विद्याधर वंशीय राजा ६. ९६,९८, ९९ १००. १०३, १०९,१४३. १४४, १४७, १५१;७. १६३-समण ६. १४९ ६.१४९ राक्षसयोद्धा ५६.३२ विद्याधरयोद्धा १२.९५ विद्याधर रानी ६.१६६ कुंभकण्ण की स्त्री ८.५५ रावण की स्त्री ७४.१० विद्याधर राजा ५.२३३ वानरयोद्धा ५७.१६ राक्षसयोद्धा २३.२१,२२ विद्याधरवंशीयराजा ५.१८ ६.२०५ आमली की पुत्री ९.११ वानरयोद्धा ५७.१२ गंधर्व राजा की पुत्री, रामकी ५१.१३ वानरयोद्धा ५७.१३ द्वितीय प्रतिवासुदेव ५. १५६;२०.२०३;७०.३७ वानर सुग्गीव की स्त्री १०.२;१९.३७;४७.५० (देखो सुतारा) रानी, सुभूम की माता २०.१३९ इक्ष्वाकुवंशीय राजा ५.५ विद्याधर राजा १०.२१. मुनि ४१.१६ विद्याधरवंशीयराजा ५.४५ ,, ,, ५.२६२ विद्याधर राजा १०.२० साकेयपुर का राजा, जिन अजिअ के पितामह ५. ५१,५३,६२ | तिलय तिलयसिरी तिलयसुंदर तिलयसुंदरी तिगिसमण तिविट्टु } तिवुट्टु } तिसला तिसिर-१ तिसिर-२ तिहुयणाणंद तुरंग तेयस्सि तेलोक दंड दंडअ } दंडग दक्ख दगकित्तिधर दढरइ-१ दढरइ-२ दढरइ-३ दढरइ-४ दत्त-१ | धनिकपुत्र ११८.४६,४९,५० कुंथुजिन की माता २०. ४३ मुनि ३१.३१ रानी, सुप्पभ (२)की स्त्री २०.१२१ मुनि २०.१५५ प्रथम वासुदेव ५.१५५;२०. १९८;७०.३४ ४६.९४ महावीरस्वामी की माता (देखो पियकारिणी) २. २२-सुय (महावीर) १.३३ राक्षसयोद्धा ८.२७४ दाशरथी राम का मित्र- राजा, ९९.४९७ पुण्डरीयविजय का चक्र- वर्तीराजा, अणंगसरा के पिता ६३.३४,५५ वानरयोद्धा ५९.३८ इक्ष्वाकुवंशीयराजा ५.५ -मंडण दाशरथी राम का एक हस्ति ८०.६०;८१.१४ -निर्भूषण ८१.१५ (देखो भुवणाळकार) विद्याधर योद्धा १२.९८ कण्णकुंडल का राजा, जडागि का पूर्वभवनाम ४२.१४. ४१.१८ १९,३५,३७ हरिवंशीयराजा २१.२७.२९ दंडगारणण निवासी ३१.२५ विद्याधरवंशीयराजा ५.४१ राजा, जिन धम्म का पूर्व भव नाम २०.१४ जिनसीयल के पिता २०.३६ वानरयोद्धा ५७.४;६१.२९; ६७.९ सातवें वासुदेव ५.१५५; २०.१९९;७०.३४ |
|--|--|---|--|---|---|

| | | | |
|--------|---|---|---|
| दत्त-२ | मंत्रीपुत्र ६.१३६ | ९९;५४.१६; ५५.२१,३१; | ८६. ११४, १२६; ३२. |
| दमश्चर | मुनि, छठे, बलदेव के पूर्व- भवगुरु २०.१९३ | ५९.८१;६१. १६,५३;६४. २८,२९; ६८.५, ३६,३७; ६९.१९;७०. ६२;७१.५९; | २६;३६.११;६७. ४०;७८. १५;८६.९;९०.५;९३.२६; ९५.२०;९८.३९;१००.१७; |
| दमयंत | राजपुत्र, ह्युष्य का पूर्व- भवनाम १७.४८.४९ | ७२.१२; ११५.२३ -पुता | १०३.११६;११८.४०-मुनि |
| दसगीव | लंकाधिपति रावण ७३. ८; ८६. ४१; = दसाणण १. ६३; ३. १५; ७. १०४; ८. १६, २०, ५०, ५४, १०५. ११०, ११२, १२६, १२९. १३५. १३७, २११,२१४, २८०;९.३१, ५१ ८२, ८७, ९९, १०४; १०.१७,६२;११.९७,१०२, ११९; १२.५, ६२, १३२, १४०;१४. १५२;१६. १७; १९.१६.१८; ४४.४०;४५. ३१;४६.१२;४७.३९,५२- ५४;४८. ५९,११६, ११९; ५३.४२, १२०; ६१. २०, ६४,७१;६३.१; ६५. २०, ३९;६६.१. २५; ६७. २१; ६८.३९;७०. १८,४१;७१. ४५;७२.३०; ७४.२९;७५. १४; १०३.५; ११८. ७७; =दहगीव ७८.२५; = दह- गीव १२.४७ = दहमुह १. ४९,५२,५६,५८, ६५.७८, ७९;७. ९६, १२८, १३०, १४३, १४७, १४९. १५९, १७२;८.५, १५, १७, २२. ३८,४३.६८, ७७,८४,८५, ८९,९०, ९४. ९९, ११४, ११७,१४०, १४२, २२३. २२६, २२८,२३७, २४५ २५६.२७१, २७६, २७८; ९.३७, ७६. ८१;१०.३३, ६४ ७९;११. ८६;१२.५३, ६१,६३,७२. १३६;१४.७; ४४.३१,३२; ४६.६४ ८६; ४८.९९; ५३.६, १४,२८, | १५. १६ (इंद्रह और घणवाहण) = दहवयण (देखो रावण) १. ५४; ८. ८, १३, १४, ४४, ४८, ८६, १०१, ११९, १२३, २१२, २१३, २१७, २७५, २८१,२८५; ९. ११, २६, ६१,९७, १०३; १०. १४, १६,४६,५३, ६१, ६६,८३; ११.४६, ८५, ९८, १०४, १०७, ११०;१२. ३७,४६, ६५,७३; १३. २,४; १४. १५२;१६. २३. ८४; १९. २४,३३; ४४.२९,३५,३९, ४१,४२;४६, ३८,४५,५५, ५९,८१;४८.१२०;५३.४६, ६३;५४.१८; ५५. २,११, १८;५९.४४;६१. ६५,६७, ७३;६३.६;६५.८ ४७;६७. ५.४२, ४६; ६८. २६ ३१; ६९.२६,४२;७० १,४.२७. ४८; ७३ १३,२८; ७४.६; १०३.१४०;११८.६२,७३. साकेयपुरी के राजा, आठवें बलदेव पउम के पिता १ ६४.६८;२०.१८३; २१ ३४;२२.१०१,१०३.१०८, १०९;२३.१ १०-१२.१६, १७,२४;२४.११, १६,२७, २९,३०, ३३,३५; २५ ८, २३;२६.९३. ९४; २७ ९. १६;२८. ७० ९९, १३४, १४१;२९. ४६; ३०. ३६, ३८, ४५, ७८, ८३; ३१. १, २, ४, ३२. ३७, ३८, ५१, ७१, ७२,७९, | ३२ ३५ -पुत ६१.१९,-सुय २८. ५७,५८. -नंदण ७१. ६३; (देखो पउम)-पुत ७१. ६०. -सुय ६३. ५९. (देखो लक्षणा) -पुत ८६. ३९;८८. ३७. (देखो सन्तुम्य) -तणया ३३. १४८; ४२. १; ७६. १; -पुता ३३.१४४;३६. ४१; -सुया ३९.१,१७;५९.८७; (पउम और लक्षणा) (देखो दसगीव) |
| | दसराह | दसाणण दहगीव दहमुह दहवयण दासणी दासरहि दिणयर दीविया दुह दुद्धर दुपेक्क दुब्बुद्धि दुमसेण-१ -२ दुम्मह दुम्मरिस दुम्मरिसण दुम्मुह दुराणण दुविट्ठ | वानरयोद्धा ६७.११ दसरहपुत्र राम ६५.४५ वानरयोद्धा ५४.२३ रावण की स्त्री ३१.५ वानर योद्धा ५७.९ राक्षस सोदा ५६.३० वानर योद्धा ५७.८ " " ५७.५ मुनि, नवें वासुदेव के पूर्व- जन्मगुरु २०.१७७ मुनि आठवें वासुदेव के पूर्व-जन्म-गुरु ६३.५८ वारयोद्धा ६१.२६ राक्षसयोद्धा ६१.२७ वानरयोद्धा ५४.३४ स्त्रीयास्वयंवर में उपस्थित राजा २८.१०१ विद्याभरवंशीय राजा ५.४५ द्वितीय वासुदेव ५.१५५; ७०.३४ |

| | | | | | |
|---------|---|---|---|-------------------------|---|
| दूषण-१ | चंद्रगुहा का पति १.५४, ७५; १६. १५, २८; १८.३; ४४.९, १४, १५; ४५.६, ८, ९, १६; ४६.२२, २३, २५, ९०; ४९.४; ५३.२९ (देखो खरकूसण) | धणमित्त धजा धम्म | मुनि, तीसरे वासुदेव का पूर्वजन्मनाम २०.१७१ वणिक् स्त्री ४८.१९ धन्त्रहर्वे तीर्थंकर १४; ५. १४८; ९.९३; २०.५, ४१, ११२, १३७; ९५.३१ | ,, -२ ,, -३ ,, -४ | कोसंबी का राजा ७५. ६२, ६४, ६८ दाशरथी भरहसह दीक्षित राजा ८५.३ नन्द वंशीय राजा ८०.४६; ८९.४२ |
| दूषण-२ | वानरयोद्धा ५७.१३ | धम्ममित्त | दाशरथी भरहसहदीक्षित- राजा ८५.५. | नंदअइ | मुनि ३५.७९ |
| देव | राजकुमार ८८.१६ | धम्मरयण | हणुअ के दीक्षागुरु १०८. ४४, ४७ | नंदण-१ | सातवें बलदेव ५.१५४; ७०.३५ |
| देवई | नवम वासुदेव कणई की माता २०.१८५ | धम्मरइ | मद्रापुर का राजा. चक्र-वर्ती सणकुमार का पूर्व-भवनाम २०.१२१ | , -२ | अहविरिअ का मित्रराजा ३७.१० |
| देवरकल | विद्याधरवंशीय राजा ५. १६६, २४०, २४२, २४४. २५०. | धर | तीर्थंकर पडमपरइ के पिता २०.३२ | ,, -३ ,, -४ | मुनि २०.१४९ वानरयोद्धा ५९.९; ६७.१० |
| देवी | मिरिकंठ की बहिन व राक्षस कितिधवल की रानी ६४ | धरण-१ | धरणेन्द्र देव १.३९; ९.९६, १०२; ६४. २९ = धरणिइ ३.१४५; ५. २४, २६, ३८, ३९, ४०; ९.१०१ | ,, -५ ,, -६ | राक्षसयोद्धा ७०.६५ दाशरथीभरहसह दीक्षित राजा ८५.३ |
| देसभूषण | केवली मुनि १.७२; ३९. ८७, १२२, १३३; ८२.१, ११, १८ | धरण-२ | अंगपुरनिवासी ३१.७ | नंदवई-१ | वोमविंदु की पत्नी ७. ५३, ७२, |
| दोचूड | विद्याधरवंशीय राजा ५.४५ | धरण-३ | लक्ष्मण-पुत्र ९१.२० | ,, -२ ,, -३ | विभीषण की सासू ८.६१ सातवें वासुदेव की पटरानी २०.१८६ |
| दोण | दसरहरानी केकर्ई का आता ६४.२०; = दोणघण २४.६०, ६४.१९ = दोणमेह २४.३; ६३. २७; -सुया ६४ ४४; = दोणघण-सुया ९१.१४; २२ = दोणमेह धूया ६४. ३६ = दोणमेहसुया ६४.१७ (देखो विसल्ला) | धरणिइ धरणिघर धारिणी-१ , -२ ,, -३ ,, -४ | (देखो धरण (१)) साकेय का राजा ५.५० गृहपत्नी १३.२७ विजयपुष्वअ की रानी ३९.३८ मेरुशेठ की पत्नी १०३.३८ समुद्रवत्त शेठ की पत्नी १०५.८२ | नंदा -१ ,, -२ | रावण की स्त्री ७४.१० दाशरथी भरह की प्रणयिनी ८०.५१ |
| धणअ-१ | वेवेन्द्र का लोकपाल ३. ६७, ११३; ४.५७; ७.१४९; २१.१६; ८९.३० | धिरकंत | पुष्वविदेइ का राजकुमार १०३.८१ | नंदिघोस नंदिमालि | पुष्वविदेइ का राजा १३.३०, नंदिघोस के पिता ३१. १०, ११, १२, ३४ |
| धणअ-२ | विद्याधर इंदु का लोकपाल १.५१; ७.५३; ८.६६, ११९, १२०, १२४, १२८ | धीर धूमकेउ | सीयास्त्रयंवर में उपस्थित राजा २८.१०२ पुरोहित, महर्षिगल के पिता ३०.७१ | ,, -३ ,, -४ | सर्सकनथर का राजा ८२.८९ मुनि १०५.२२ |
| धणअ-३ | राजकुमार, कंघिलपुर का ८२.५७, ५८.६०, ७७ | धूमकल | राक्षसयोद्धा ५६.३२ | नंदिसुमित्त | मुनि, तृतीय बलदेव का पूर्वजन्मनाम, २०. १९५ |
| धणदत्त | श्रेष्ठिपुत्र, दाशरथी राम का पूर्वभवनाम. १०३.८, १०, १२, १७, २२, ८९, ११७ | धूसुहाम नंद-१ | राक्षसयोद्धा ५६.३२ मुनि, जिन नमि के पूर्व-जन्मगुरु २०.२० | नंदिलेण | राजा, सातवें तीर्थंकर का पूर्वभवनाम २०.१३ |

| | | | | | | | |
|--------------|---|-----------|--|------|--|--|--|
| नंदीसर | विद्याधरराजा १०३.५८ | नाड | वानरयोद्धा ५७.५ | निहण | राक्षस योद्धा ५६.३२ | | |
| नक्ष | राक्षसयोद्धा ५६.२८ | नाभि | चौदहवें कुलकर, उसह | नील | वानरराजकुमार, वानरसैन्य- प्रमुख ९.५; ४९. २१; ५४. २१, ३४; ५८.२, १५, १६, १९; ५९.३२; ६१.८. २६; ६३.२८; ६७.१०; ७१.३५, ७४.८; ७६.७, २३७; ९.२३; ८५.२६; १००.६१; ११४. १९; | | |
| नक्षत्तदमण | विद्याधरवंशीय राजा ५ २६६ | | जिन के पिता ३.५५, ५७, ६४, ६५, ७०. ७४, ७५, १०५, १०६; २०. १००: ८२. १९; =नाहि २०.२७ | | | | |
| नक्षत्तमाल | वानरयोद्धा ५७.१५ | | (देखो उसह) ४.६८ | | | | |
| नक्षत्तलुद्ध | वानरयोद्धा ५७.१४ | नाभिनंदण | देवर्षि, विप्र स्त्रीकलयञ्च का | नीलय | ५७. २. देखो नील | | |
| नद्युस | इक्ष्वाकुवंशीय राजा २२ ५५, ५८, ५९, ६१, ६३, ७१; ८५. ५ | नारख | पुत्र. १.६७, ८०; ११.९, २०, २२, २५, २७, ३०, ३१, ३३, ३६, ४८, ४९, ६८, ७५, ८२- ८७, ९१; २३. १, ३, ७, ८, १५; २८. १, ५, १२, १५, १८; ३०. १७; ७८ ७, ११ २१, २७, ३३ ३५; ९०. ४, ७, १२, २० २५, २६; ९८. ४९; ९९. २-६, ८. ३७ ३८; १००. २६ २९; मुनि ९८ ३८, ३९. वामुदेव लक्ष्मण ३९. २०, ३१, ३३, १२६; ४३. ७; ४८. १०१ | | | नीलय | |
| नमि-१ | इक्ष्वाकुवं तीर्थकर १.६; ५. १४८; ९.९४; २०. ६, ४७, १५४, १९९ | | २७, ३३ ३५; ९०. ४, ७, १२, २० २५, २६; ९८. ४९; ९९. २-६, ८. ३७ ३८; १००. २६ २९; मुनि ९८ ३८, ३९. वामुदेव लक्ष्मण ३९. २०, ३१, ३३, १२६; ४३. ७; ४८. १०१ | नैमि | वाइसेवें तीर्थकर १.६; ५. १४८; ९.९४; २०. ६, ५१, ५६, १५४, १५९; = रिद्धनेमि २०. ४८ (देखो अरिद्धनेमि) ब्राह्मणपत्नी ३४. ४५ | | |
| नमि-२ | वेयड्ड का राजा. विजाहर वंश प्रवर्तक ३. १४४, १४८, १५२; ५. १४; ७. १२ | | २७, ३३ ३५; ९०. ४, ७, १२, २० २५, २६; ९८. ४९; ९९. २-६, ८. ३७ ३८; १००. २६ २९; मुनि ९८ ३८, ३९. वामुदेव लक्ष्मण ३९. २०, ३१, ३३, १२६; ४३. ७; ४८. १०१ | | पइमत्ता | देखो महापउम२, नवम चक्रवर्ती ५. १५३ | |
| नयणसुंदरी | रानी ३१. ७ | | २७, ३३ ३५; ९०. ४, ७, १२, २० २५, २६; ९८. ४९; ९९. २-६, ८. ३७ ३८; १००. २६ २९; मुनि ९८ ३८, ३९. वामुदेव लक्ष्मण ३९. २०, ३१, ३३, १२६; ४३. ७; ४८. १०१ | | पउम-१ | देखो महापउम२, नवम चक्रवर्ती ५. १५३ | |
| नयणाणंद-१ | विद्याधर राजा १०३. ५८ | | २७, ३३ ३५; ९०. ४, ७, १२, २० २५, २६; ९८. ४९; ९९. २-६, ८. ३७ ३८; १००. २६ २९; मुनि ९८ ३८, ३९. वामुदेव लक्ष्मण ३९. २०, ३१, ३३, १२६; ४३. ७; ४८. १०१ | | पउम-२ | छठे तीर्थकर २०. ४; =पउमप्पह ५. १४७; ९. ९१; २०. ३२; ७७. २५, २७, ३१ = पउमाम १. २; २०. ५५; ९५. ३३ | |
| ,, -२ | श्रेष्ठ पुत्र १०५ ८३ | | २७, ३३ ३५; ९०. ४, ७, १२, २० २५, २६; ९८. ४९; ९९. २-६, ८. ३७ ३८; १००. २६ २९; मुनि ९८ ३८, ३९. वामुदेव लक्ष्मण ३९. २०, ३१, ३३, १२६; ४३. ७; ४८. १०१ | | पउम-३ | राजा, आठवें तीर्थकर का पूर्व भव २०. १३ | |
| नयदत्त | श्रेष्ठी १०३. ७, ११७ | नारायण | वामुदेव लक्ष्मण ३९. २०, ३१, ३३, १२६; ४३. ७; ४८. १०१ | | पउम-४ | महापउम२ का पुत्र २०. १४७ | |
| नल | वानरराजकुमार, वानरसैन्य प्रमुख ९.५; १९. ३६; ४९. २१; ५४. २२, ३४ ४०, ४१; ५७. २, ३३, ३४; ५८. २, १५, १६, १९; ५९. ३२; ६१. २६; ६२. २९; ६७. १०; ७६. २३; ७९. २३; १००. ८१; ११४. १९. | | २७, ३३ ३५; ९०. ४, ७, १२, २० २५, २६; ९८. ४९; ९९. २-६, ८. ३७ ३८; १००. २६ २९; मुनि ९८ ३८, ३९. वामुदेव लक्ष्मण ३९. २०, ३१, ३३, १२६; ४३. ७; ४८. १०१ | | पउम-५ | आठवें बलदेव, दूसरहपुत्र राम १. ५, ३३, ८९; ५. १५४; २५. ८; २७. १९; २८ ७१, ८६. ९५, ११३, १२३, १२९; ३१. ७२. ९०, १११; ३२. ३८, ४९; ३३. ८६, ८७, ११९, १२८; ३४. १३. ५०, ५२. ५४, ६०; ३५. ३ ३३, ३४, ३८, ४६. ५१, ६३ ७४; ३६. २, ३; ३७. ३३, ६६; ३८. ४९, ५१, ५२ ५६; ३९. ११ १८, २१, ३६, ६७; ४०. ९; ४२. २५; ४३. २८; ४४. ३८; ४७. ६ ५५; ४८. ६, ९, ३७, ४२, ६०, ९८, १०७; | |
| नलकुम्बर | विद्याधर इंद का लोकपाल १२. ३८, ३९, ४१, ५३, ५५, ६८, ७२; =कुम्बर १२. ६६ | | २७, ३३ ३५; ९०. ४, ७, १२, २० २५, २६; ९८. ४९; ९९. २-६, ८. ३७ ३८; १००. २६ २९; मुनि ९८ ३८, ३९. वामुदेव लक्ष्मण ३९. २०, ३१, ३३, १२६; ४३. ७; ४८. १०१ | | | | |
| नलकुम्बरी | दाशरथी भरह की प्रणयिनी ८०. ५१ | | २७, ३३ ३५; ९०. ४, ७, १२, २० २५, २६; ९८. ४९; ९९. २-६, ८. ३७ ३८; १००. २६ २९; मुनि ९८ ३८, ३९. वामुदेव लक्ष्मण ३९. २०, ३१, ३३, १२६; ४३. ७; ४८. १०१ | | | | |
| नलिणिगुम्म | राजा बारहवें तीर्थकर का पूर्वभवनाम २०. १४ | | २७, ३३ ३५; ९०. ४, ७, १२, २० २५, २६; ९८. ४९; ९९. २-६, ८. ३७ ३८; १००. २६ २९; मुनि ९८ ३८, ३९. वामुदेव लक्ष्मण ३९. २०, ३१, ३३, १२६; ४३. ७; ४८. १०१ | | | | |
| नह | राक्षसयोद्धा ५९. ५ | | २७, ३३ ३५; ९०. ४, ७, १२, २० २५, २६; ९८. ४९; ९९. २-६, ८. ३७ ३८; १००. २६ २९; मुनि ९८ ३८, ३९. वामुदेव लक्ष्मण ३९. २०, ३१, ३३, १२६; ४३. ७; ४८. १०१ | | | | |
| नाइलकुलवंस | एक गच्छ, नाइल शाखा, विमलसूरिकी. ११८. ११७ | | २७, ३३ ३५; ९०. ४, ७, १२, २० २५, २६; ९८. ४९; ९९. २-६, ८. ३७ ३८; १००. २६ २९; मुनि ९८ ३८, ३९. वामुदेव लक्ष्मण ३९. २०, ३१, ३३, १२६; ४३. ७; ४८. १०१ | | | | |
| नागदत्ता | राजकुमारी ३९. १०५ | | २७, ३३ ३५; ९०. ४, ७, १२, २० २५, २६; ९८. ४९; ९९. २-६, ८. ३७ ३८; १००. २६ २९; मुनि ९८ ३८, ३९. वामुदेव लक्ष्मण ३९. २०, ३१, ३३, १२६; ४३. ७; ४८. १०१ | | | | |
| नागदमण | राजा ३२. २२ | | २७, ३३ ३५; ९०. ४, ७, १२, २० २५, २६; ९८. ४९; ९९. २-६, ८. ३७ ३८; १००. २६ २९; मुनि ९८ ३८, ३९. वामुदेव लक्ष्मण ३९. २०, ३१, ३३, १२६; ४३. ७; ४८. १०१ | | | | |
| नागवई | जणमेजय की रानी ८. १५८, १५९, २०४ | निस्तंदिख | साळिगाम का राजा १०५. १९ | | | | |

| | | | |
|--|--|--|---|
| ११३:४९. १२, १७, २०, ३०: ५०. १६; ५१. २३, २६:५२. २७: ५३. १९, २२, ४८: ५४. २, ९. ३८: ५५. २६; ५७. २०: ५९. ६७, ८४, ८६; ६०. १: ६१. २५. ४८, ६५, ६५: ६२. १, २४: ६३. १६, १७: ६४. ४२: ६५. ३७, ३८, ४७: ६७. ६: ६९. २७: ७१. ८, १४: ७२. ३३: ७३. १४: ७५. २: ७६. ३, ८. ९: ७७. १२, १८. १९, २०, २७, ३१, ३२, ४१: ७८. २५, ३३. ३६: ७९. ३, ४, २१, २५: ८०. ३५, ४०, ४९: ८१. ३: ८२. ७, ९. १०: ८५. ११, १२. २५, २९, ३०: ८६. ८, १२: ९०. ५. १८: ९२. २६, २८: ९३. १४, १५, १८: ९४. २३. २६. ६३, ८७. ९९: ९५. ४, २७, २८: ९६. ११. ३६, ४७. ४८: ९८. ४१, ४२, ४८, ५०: ९९. ७. ३२. ४८, ७२: १००. ४, ८, २७, ३८. ४५: १०१. १८, २१, ४८ ५०: १०२. १, ५६. ५८: १०३. १५५. १६२: १०९. १, २५: ११०. ४, २२, २३. २६, ३२: १११. २: ११३. ५, ३९, ४४, ४५, ४७: ११४. ४. ५. १३, १५. २५: ११६. १२: ११७. ३१, ३२, ३४: ११८. १८, ३७, ३८, ८९: = पउमणाभ ४० १: = पउ- मणाह ३२. ४४. ५२: ३३. २३, ९५, १२३: ३७. ६०: ४५. २०: ४९. १८: ६८. ५०: ७७. ३६. ३७, ५३: ७८. २६: ७९. २२: ९२. ४: ११४. २६: ११८. ३९: = पउमनाभ ४२. २२: ४७. ३०: = पउम- नाह २८. ११८: ३१. ३९, ७६: | ३४. ९. ११, १७: ३५. ३२: ३६. २४: ३७. २८: ४२. २४: ४७. ३२, ५२: ५३. ३४, ७४: ५४. १२: ५५. ४६: ६०. ५: ६४. ४०: ६५. १८: ७५. १: ९२. १२: ९३. २, २१: ९४. १, २. २७: ९६. ३८: १००. ३३, ४३: १०१. १७, २९: १०३. १५७. १६६: ११३. २३: ११४. २४. = पउमाम ४१. १६: ४७. ४०, ४९: ४८. ३३: ५०. २१: ५३. ३३: ५४. ३३. ६०. ४: ७१. ५०: ७५. ५, ४२: ७७. १, ५: ७९. १३: ८७. १८: ९२. १४: ९३. २७: ९६. ४२: ९८. ४४, ५४: १०१. ३: १०२. ७. ४७, ४८, २०३: १०३. ११७, १७१: ११०. २७: ११२. ४: ११३. ६, १२, ३६: ११४. १. ९: ११७. १५, ३०. (देखो शायव) पउम-५ की कीर्तनकथा, पउम-५ की कहानी ११८. ९७ राक्षसराज किन्तिघवल की माता ५. २६९ पद्मचरित, प्रस्तुत ग्रंथनाम १. ८, ९, २९, ३१: २. १०५: ३. ८ देखो पउम ५ विद्याधरवंशीय राजा ५. ४२ (देखो पउम २) विद्याधरवंशीय राजा ५. ४२ " " ५. ४३ चौदहवें तीर्थंकर का पूर्व- भवनाम २०. १४ चक्रवर्ती महापउम के पिता २०. १४३ इक्ष्वाकुवंशीय राजा २२. ९७ | पउमराग पउमरुइ पउमा-१ पउमा-२ पउमाम पउमाभा पउमावई-१ पउमावई-२ पउमावई-३ पउमावई-४ पउमावई-५ पउमासण पउमुत्तर पंकयगुम्म पंचसुह पंचवयण पच्छिम पञ्जुण पडिंद पडिणंदि | (देखो कमलनामा) १९. ३७ वानर सुग्गीव की पुत्री, हनुम की भार्या (देखो जिणपउमरुइ) श्रष्टिपुत्र १०३. ३८, ४७, ५०, ५३, ५६ विद्याधर राजकुमारी वानर तिरिंकठ की पत्नी ६. २४, ४८ रावण की पत्नी ७४. १० देखो पउम-२ और -५ वानरसुग्गीवपुत्री ३९. ७७. ७८: ४७. ५४ विद्याधर राजकुमारी, राघव की स्त्री ८. ३४: ७४. ११ मुणिसुवय की माता २०. ४६: २१. ११ दाशरथी भरह की प्रणयिनी ८०. ५२ (देखो जिणपउमा) लक्ष्मण की एक प्रमुखरानी ९१. २३ पुण्ड्रविदेह में एक रानी १०३. ६१ राजा, तेरहवें तीर्थंकर का पूर्वभवनाम २०. १४ राजा, दसवें तीर्थंकर का पूर्वभवनाम २०. १३ राजा, अ्यारहवें तीर्थंकर का पूर्वभवनाम २०. १४ ४६. ९२; रावणमंत्री ४६. ९० कोसंबी निवासी पदम का भ्राता, एक दरिद्र ७५. ६०, ६४ कण्ह का पुत्र १०५. १५ वानर किंकिच के पिता ६. १५२, १५४ संदणथलि का राज ११५. १६. ११६. ३, ५. १६ |
|--|--|--|---|

| | | | | |
|------------|---|-------------|--|--|
| पडिवयण | इक्ष्वाकुवंशीयराजा २२.९७ | पयाससीह | विजयभनगर का राजा २६.१० | १९.२७, ४०; ५३ १०'६३ |
| पडिसुद् | प्रथम कुलकर ३.५० | | | = पवणपुत्र १९.१७; ४६. |
| पडिसुजम् | कुलवरद्वीप का विद्याधर राजकुमार, अंजणा का मामा १७. १०३, १०६, ११६, ११७; १८. ३३, ३६; १. ६१; १८. ४३; १९. ३; ८५. २६ | परसुराम | जमदग्निग का पुत्र २०. १४० | ८९; ४७. २७; ४९ १९; ५०. |
| | | पलंबबाहु | राजा ९९. ४९ | १४, १८; ५१. ११; ५२. २८; |
| पडिसूर | | पल्लव | विप्र कर्षक, वानर नील का पूर्वजन्मनाम ५८. ४, ७, १५, १६ | ५३. ९, ५८, ७३, ७५, ८१, ८५ ९३ ११४; ५९. १६, २२; १०८. १७, १९, ३३; = पवणसुअ ४९. ९, १३; |
| पडम | पडिसुम का भाई ७५. ६०, ६८ | पल्हाभ-१ | विद्याधर राजा, पवण-जय के पिता, हणुअ के पितामह १. ६०; १५. ५, २६, ३३, ३५, ३७, ३९, ८७, ८९, ९३, ९६; १६. २७, २८ ३०, ३४; १८. ३१-३३, ४२. | ५०. १; ५३. १९, ११८; ५९. २०, २६ ७१; ७६. २३; १०८ १६, ३४; = पवणाणद ५२. १. |
| पथार | वानरयोद्धा ५७. ७ | | | |
| पभव-१ | राजा सुमिष का मित्र, चमरकुमार देव का पूर्व-भवनाम १२. ११, १२, १५, १६, १७, १८, १९, २१, २४, ३२ | पल्हाभ-२ | सातवें प्रतिवासुदेव ५. १५६; २०. २०३ | पवणगड-१ देखो पवण |
| १. -२ | शुद्धपति ४८. ७७ | परुहायण | राक्षसयोद्धा ५६. ३९ | पवणगड-२ वानरवंशीयराजा ६. ६८ |
| पभवा | तीसरे वासुदेव की पटरानी २०. १८६ | पल्हायणा-१ | चंद्रोदय और सूर्योदय की माता ८२. २५ | नागपुर का विद्याधरवंशीय राजा ६. १७१ |
| | | | | वानरयोद्धा ५४. २४ |
| पभावाई | रावणजी ७४. ११ | पल्हायणा-२ | नागपुर की रानी ८२. २७ | देखो पवणवेग-१ ३०. ८४ |
| पभाविअ | वानरयोद्धा ५७. १८ | पवण | हणुअ के पिता १५. ८७; १८. ३३, ४१; १९. ३; | खेचर लेखवाहक ३०. ८३ |
| ग्भासकुंद | विप्रपुत्र, रावणका पूर्वभव-नाम १०३. १०५ १०६ १०३. ११९ | | =पवणजय १. ६०, ६२; १५. ८ २७, ४३, ४९, ५२, ५९, ६८ ८१, ८४, ८८ ९४, ९८; १६. १, ३०, ३९, ५१, ६२, ६७, ७०. ७२, ८५; १७. ३. ४, १७, ४४, ९७; १८. १, २, ६, १२. १५, १६, २२, २३, २४, ३४. ३७, ५३, ५५, ५७; १९. ७; ४८. १२३; ५३ १८, १३१; =पवणगड १५. ३७, ६४, ७१, ७७ ९१; १६ ४०, ४४, ४६, ६१, ८२; १८. ३, ४, ११, २०, ३८ ५८; १९. १०. =पवणवेग १५. ६५, ७४; १६. ३४, ३६, ६४, ६५ ७४; १८. ८, ४० | पवणवेग-२ १०. ८३ |
| ग्दासकुंद | | | | पवणवेग-३ १०. ८३ |
| ग्धु | इक्ष्वाकुवंशीय राजा ५. ७ | | | पवणवेग-४ १०. ८३ |
| ग्भूयतेय | ५. ५ | | | पवणवेग-५ १०. ८३ |
| ग्मत | वानर योद्धा ५७. १३ | | | पवणवेग-६ १०. ८३ |
| ग्मोय | राक्षसवंशीय राजा ५. २६३ | | | पवणावत् १०. ८३ |
| ग्पयंडमर | राक्षसयोद्धा ५६. ३३ | | | पवणुत्तरगड १०. ८३ |
| ग्पयंडमालि | वानरयोद्धा ५७. १६ | | | पवर १०. ८३ |
| ग्पयंडासणि | विभीषण का मुख्य भट ५५. २३ | | | पवरा १०. ८३ |
| ग्पयापाल | मुनि, पांचवें बलदेव के गुरु २०. १९२ | | | पवरावली १०. ८३ |
| ग्पयावद् | प्रथम वासुदेव के पिता २०. १८२ | | | पठवय-१ } १०. ८३ |
| ग्पयावल | चक्रवर्ती सगर का पूर्व-जन्मनाम ५. ११६ | | | पठवयअ } १०. ८३ |
| ग्पयावि | इक्ष्वाकुवंशीय राजा ५. ५ | पवणजय | देखो पवण | १०. ८३ |
| ग्पयासजस | पुष्यकर द्वीप का राजा ८२. ६४ | पवणजय-पुत्र | हणुअ १. ६३; =पवणतणअ ५२. ३, २५; = पवणनंदण १०. ८३ | १०. ८३ |

१. व्यक्तिविशेषनाम

१७

| | | | | | |
|-------------|---|-----------|--|----------------|--|
| पसन्नकिंत्स | अंजणा का भाई १२.९६, ९८; १७.२०; ५०.१०, १९; ५४ २४ | पियकारिणी | महावीर की माता २०. ५० (देखो तिसला) | .. -२ | लोकपाल वरुण का पुत्र १६.१९ |
| पसेण्ह | तेरहवें कुलकर ३.५५ | पियधम्म | दाशरथी भरह सह दीक्षित राजा ८५.५ | पुणव्वमु | सुपइहपुर का (विद्याधर राजा) मुनि तथा लक्षण का पूर्वभवनाम २०.१७२; ६३.३५, ३८, ५८; १०३. १३८ |
| पहभ | वानरयोद्धा ५९.७, ९ | पियनंदि | मंदिरपुर का राजा १७ ४८ | | रहनेउर का विद्याधर राजा, लंका के प्रथम राक्षस राजा मेहवाहण के पिता १.४०; ५.६५, ६७, ६९, ७१, ७५, ७६, ९१, ९३; विद्याधरवंशीय राजा ५.४४ वानरयोद्धा ५७.८ |
| पहत्थ | राक्षसमुखभट ८.२१३, २१४, २७४; १२.९२; ५३. ९२; १६.२७; ५७.३२-३५, ५८.१, १३, १६, १९; ५९.१; ७०.३ | पियमित्त | मुनि छठे वासुदेव का पूर्व- जन्मनाम २०.१७१ | पुण्णघण | |
| पहर | वानरयोद्धा ५७.१० | पियरूव | वानरयोद्धा ५७.७ | | |
| पहसिअ | भामंडल का मित्र १५. ५२ ५५-५७, ७२, ७७; १६.५८, ६१, ६६, ६७, ६९, ७३ ८२; १८.१५, २५, ३१; देखो भामंडल ३०.३२, ९८ | पियवद्धण | राजा ३२.२३ | | |
| पहामंडल | | पियविग्गह | वानरयोद्धा ५७.८ | | |
| पहायर | दाशरथी भरहसह दीक्षित राजा ८५.५ | पिहियासव | मुनि, छठे तीर्थंकर के पूर्व जन्मगुरु २०.१८ | पुण्णघंद-१ | .. -२ |
| पहावई-१ | लक्षण की पटरानी २०. १८७ | पिहु-१ | कुस के श्वसुर, पुहवी- पुर का राजा ९८.४, ५, ८, १२, १३, २७, ३२, ३४, ३५, ३७, ५६, | पुण्णमह | यक्षाधिपति, रावण के जिनमन्दिर का रक्षक ६७. ३५, ४०, ४८ |
| .. -२ | दाशरथी राम की दूसरी महादेवी ९१.१८ | पिहु-२ | राजा, राममित्र ९९.५० | पुफ्फचूल | राक्षसयोद्धा ५३.३५ |
| पहासकुंद | देखो पभासकुंद | पीईंकर-१ | पोयणपुर निवासी, राक्षस राजा महारक्षक का पूर्व- भवनाम ५.२२८ | पुफ्फचूला | चक्रवर्ती अंभदत्त की माता २०.१५८ |
| पहिअ | राक्षसवंशीय राजा ५.२६२ | .. -२ | पीइपुर का विद्याधर राजा, सुमालि का श्वसुर ६. २३९ | पुफ्फत्थ | राक्षसयोद्धा ५९.५ |
| पास | तेवीसवें तीर्थंकर १.६; ५. १४८; ९.९४; २०.६, ४९. ५५, ५७, १५९ | पीइमई -१ | वानरयोद्धा ३९. ३२; ६७. १०; =पीईंकर ५७.४ | पुफ्फदंत | नवें तीर्थंकर, देखो कुसुम- दंत ५.१४७; ९. ९२; २०. ३५, ५४ |
| पिगल-१ | (देखो महुपिगल) पुरो- हितपुत्र २६. ८. ७१; ३०. ५२, ७१, ७४ | पीइमई -२ | विद्याधर रानी, सुमालि की सास ६.२३९ | पुफ्फविमाण | घणय का वायुयान, पुनः रावण का, पुनः दाशरथी राम का ८. १२८; १२. १४३; ४४. २९; ४५. ३०; ६९. २५; ७९. १ १२, १३, १५; १००. ४७; १०१. १७ |
| .. -२ | दाशरथी राम की प्रजा का अग्रजा ९३.१७ | पीइमहा | ७.५९ | पुफ्फसेहर | राक्षसयोद्धा ५६.३५ |
| पियंकर | काकंदीपुर का राजकुमार, लक्षण का पूर्वजन्मनाम १०४.३, २५, २९, ३१ | पीईं | सुमालि की स्त्री ६.२३९ | पुरंदर-१ | विद्याधर राजा ६.१७० |
| पियंसु | ब्राह्मण स्त्री १०४.२७ | पीईंकर | रावण की स्त्री ७४.११ | .. -२ | इक्ष्वाकुवंशीय राजा २१. ४२, ७७, ७८, ८० |
| पियंसुलच्छी | रानी १७.५३ | पीतिकर | (देखो पीईंकर ३) मुनि ८९.४, ५ | पुरचंद | विद्याधरवंशीय राजा ५. ४४ |
| पियंसव | अरिहपुर का राजा ३९. ७७, ८० | पीयंकर-१ | राक्षसयोद्धा ५९.५ | पुरिसवरपुंडरीअ | छठे वासुदेव, (देखो पुंड- रीय १) ५.१५५; २०.१९८; ७०.३४ |
| | | .. -२ | अकलपुर का राजा ७४. ३८, ४०, ४२ | पुरिसवसम | मुनि, पांचवें बलदेव का पूर्वजन्मनाम २०.१९० |
| | | पुंजत्थल | इक्ष्वाकुवंशीय राजा २२. ९९ | | |
| | | पुंडरीय-१ | छठे वासुदेव ५.१५५; ७०.३४ (देखो पुरिस- वरपुंडरीय) | | |

| | | | | | |
|------------|--|-----------|--|---------|---|
| पुरिसचीह | पांचवें वासुदेव ५.१५५; ७०.३४ | ,, -२ | जिन अजिअ को प्रथम भिक्षा देनेवाला ५.५९ | बिभीसण | देखो बिभीसण |
| पुरिसोत्तम | चौथे वासुदेव ५.१५५; ७०.३४ | बंधरह-१ | बंधरह-१ के पिता २०. १५८. | बिहण्फह | विद्याधर इंदू का मंत्री ७.११ |
| पुस्तभूइ | पुरोहित ५. १०४, १०५. १०७ | ,, -२ | इक्ष्वाकु वंशीय राजा २२. ९६ | बिहीसण | देखो बिभीसण |
| पुहई-१ | जिन सुपास की माता २०.३३ | बंधभूइ | द्वितीय वासुदेव के पिता २०.१८२ | बीभच्छ | राक्षसयोद्धा ५९.२ |
| ,,-२ | वाल्लिखिल्ल की रानी ३४. १९,५७ | बंधरह | तापस, विप्र, नारअ के पिता ११.५०,५२,५७ | बुह-१ | विद्याधर राजा रावण का श्वसुर ८.३५ |
| ,,-३ | तीसरे वासुदेव की माता २०.१८४ | बन्वर | वानरयोद्धा ५७.५ | ,,-२ | रावण का विद्याधर सामंत ८.१३२ |
| ,,-४ | दत्तरह की माता २२. १०१ | बल | ,, ,, ५७.४,११;७१. ३५ | भइरहि | सीयास्वयंवर में उपस्थित राजा २८.१०२ |
| ,,-५ | पुष्कलानगरी की रानी ३१.१० | बलभइ | इक्ष्वाकुवंशीयराजा ५.३ | भमिरहि | सगर और जण्हवी का पुत्र ५.१७५; |
| पुहईतिलअ | लक्ष्मण का पुत्र ९१.२२ | बलि-१ | छां प्रतिवासुदेव ५.१५६; २०.२०३ | भगव-१ | ५.१७६,१९१,२०१,२०३, २०४, २०५,२१२,२१५ |
| पुहईदेवी | राजा पुरंदर की रानी २१.७८ | ,,-२ | वानरयोद्धा ५७.१३;५९. ३८ | ,,-२ | विप्र भइरकुच्छि के पिता २५.१६ |
| पुहईधर-१ | विजयपुर का राजा, लक्ष्मण के श्वसुर ३६. ११;७७.४९(देखोमहीधर) | बहुचूड | विद्याधरवंशीय राजा ५.४६ | भइ | सिरिवद्धिअ के पिता. हेमंकपुर निवासी ७७. ८१,८३,११० |
| ,,-२ | दाशरथी भरहसह दीक्षित राजा ८५.४ | बहुल | वानरयोद्धा ५७.९ | भइ | तीसरे बलदेव ५.१५४ = सुभइ ७०.३५ |
| पुहईसथा | आर्यिका ८३.१२ | बहुवाहण | विद्याधर राजा १०.२१ | भइकलस | दाशरथी राम का मृत्य ९६.४५,४६ |
| पुहईसिरी | केकई की माता २४.३ | बाल-१ | वानरयोद्धा ५७.६ | भइवरुण | दत्तरह का पूर्वभव नाम ३१.७ |
| पूयण | यक्षाधिपति ३५.२२ | ,,-२ | राजा अणारण का सामंत २६.२७,३०;३०.५० | भइ-१ | प्रथम बलदेव की माता २०.१९६ |
| पूयारह | राक्षसवंशीय राजा ५.२५९ | बालचेद | इंदुनयर का राजा ३६. १२ | भइयारिअ | रावणजी ७४.९ |
| पोट्टिल-१ | मुनि, महावीर के पूर्वभव गुरु २०.२१ | बालमिअ | सुग्गीव का भाई ४७.९, १०.२३;६२ ३३ (देखो बालि) | भइवाह | मुनि ७७.१००,१०२ |
| ,,-२ | भइविरिअ का मित्रराजा ३७.१२ | बालि | सुग्गीव ४७.१६ | भइरह-१ | राक्षसवंशीय राजा ५.२६३ |
| पोट्टिलय | मुनि २१.५ | बालिखिल्ल | कल्लाणमाला के पिता ३४.५९ (देखो वालिखिल्ल) | भइ | प्रथम चक्रवर्ती राजा, जिनउसह के ज्येष्ठ पुत्र १. ३७;३.१४१;४. ३६, ३८, ४०,४१,४४,४७,५६,६२, ६८,७१,७८,८४, ८९; ५. ३.१५२,१७१,१७५,२००; २०.१०६,१०७;२२.११०; ६८.३८;७३.११;८०.२७; ९४ ८ |
| बंधुदत्त | वणिकपुत्र ४८.१९.२० | बाहु | राजा, चक्रवर्ती भरह का पूर्वभवनाम २०.१०६ | | |
| बंधुमई | दाशरथी भरह की प्रण- यिनी ८०.५१ | बाहुबलि-१ | जिन उसह का पुत्र १. ३७;४. ३८, ४१, ४३,५२, ५४;५.१०;८.१०३ | | |
| बंधुरुह | सीयास्वयंवर में उपस्थित राजा २८.१०२ | ,,-२ | सोमवंशीय राजा ५.११ | | |
| बंधदत्त-१ | बारहवां चक्रवर्ती ५.१५३; २०.१५८ | ,,-३ | राक्षसयोद्धा ५९.१३ | | |

| | | | | |
|-------|--|---|------------|--|
| १० -२ | दस्तरहपुत्र १. ६६, ६९, ८१; २५. १४; २८. ९५. १००, १२७, १३०, १३१, १३३, १३६, १३७, १३९, ३१. ५९, ६३, ७५, ७८, ८२, ९१, ९८, १००; ३२. १३, २४, २५, २६, ४०, ४३, ४५, ४६, ५०, ५२, ५५, ५७, ५८, ५९. ९३, ९४, ९७; ३३. ९९ -१०१, १४१; ३७. ४, १४, १६-१९, २१, २६-२८, ३०, ३५, ३८, ४१, ५३, ५४, ५८, ६४, ६६; ३८. ३, ५, ८, १०, १३, १४, ३३; ६३. २२, २३, २५, ७०; ६४. ५, ६, ७, ९, ११, १२, १४, १७, १९; ७६. १४; ७७. ३७, ३८; ७८. ३९, ४०, ४४, ४५; ७९. १२-१४; ८०. २१, २२, ३४-३६, ४०, ४३, ४८, ५३, ५५, ५६, ५९, ६३-६५, ६७, ६८; ८१. ४; ८२. ११४, ११७, ११८, १२०; ८३. १-३, ५-८; ८४. ८-११; ८५. १, ८, ९-११; ९५. २१, २५; ९८. ४१; = भरहमुनि ८४. ११ | = भाणुयण ५५. २०; ६३. २; ६५. ४; ७७. ५९; महुरा का राजकुमार ८८. १६ | भियग | पावण्ड तापस, स्यु ऋषि ४. ८६ |
| | भाणुपह | राक्षस की स्त्री ७४. १० | भिसंजणाभ | राक्षस योद्धा ५६. ३४; ६१. २७ |
| | भाणुमई-१ | दाशरथी भरह की प्रणयिनी ८०. ५० | मीम-१ | देवजातीय राक्षसेन्द्र ५. १२३, १३७; ६. ३०; ४३. ९ |
| | ॥ २ | देखो भाणुकण | ॥ -२ | सगरपुत्र ५. १७५, १७६, १९१; = भीमरह ५. २०१ |
| | भाणुयण | राक्षस राजकुमार, देखो रविरक्ष ५. २४०, २४३, २४४, २५० | ॥ -३ | राक्षसवंशीय राजा ५. २६३ |
| | भाणुरकंस | राक्षस राजकुमारी ५. १३८ | ॥ -४ | वानर योद्धा ५४. २१; ५७. १२ |
| | भाणुवई | अणअ का पुत्र, दाशरथी राम के सैन्य का नायक (५९. ७०)। १. ८६; २६. ८७; २८. ८, ९, १३, १८. २०, २५, ५६; ३०. ४. ११, १६, ३१, ३८, ४७, ५७, ५९, ७८, ८३, ९६, ९७; ४५. ३८; ४६. ५७; ४८. ३७; ५४. १५, २३, ४६; ५५. ४७, ५८ ५९; ५९. ५०, ५७, ६३, ६३. ६५, ६८. ६९, ७२, ७८, ८०; ६०. ३; ६१. २९, ५०; ६२. १९, २३; ६३. १५, १७; ६४. ३, २१; ६५. २९, ३१, ४८; ६९. ५, २७, ४४; ७१. १६; ७२. ३३; ७६. २२; ७८. १५; ७९. २३; ८५. २८; ९४. १००; ९५. २०, ९६. ८; ९९. ३७-३९, ४२, ४५, ६३; १००. २, ४५, ६०; १०१. ९; १०३. १२१; १०७. १, २, ९, १०; ११८ ४४, ५६. ५८, ५९. ८३. (देखो पद्मामंडल) | ॥ -५ | राक्षस योद्धा ५६. ३८ |
| | भामंडल | चक्रवर्ती मधवा की माता २०. १११ | ॥ -६ | पर्वतीय राजा १०५. ८७, ८८ |
| | भवनपाळी | अन्ध, महाभारत १०५. १६ | मीमणाअ | राक्षस योद्धा ५६. ३८ |
| | भाणु-१ | वणिक ५. ८२, ८३, ८६, ९१ | मीमपह | राक्षसवंशीय राजा ५. २५९; = भीमरह ५. २५५, २५६ |
| | ॥ -२ | सैनापुर निवासी ३१. ४ | मीमरह-१ | वानर योद्धा ५७. १२ |
| | ॥ -३ | | ॥ -२ | देखो भीम-२ |
| | भाणुकण | | ॥ -३ | देखो भीमपह |
| | | | भुयंगबाहु | राक्षस योद्धा ५६. ३४ |
| | | | भुयबलपरकम | बाहुबलि, जिन उत्तहका पुत्र ४. ४८ |
| | | | भुयवृत्ता | वणिक स्त्री ७७. १११, ११२ |
| | | | भुवणसोह | मुनि. सातवें बलदेव के गुरु २०. २०५ |
| | | | भुवणालंकार | रावण का हाथी, पुनः दाशरथी राम का हाथी १. ५३; ८. २२५; १०. ६१; १२. १३१; ८२. १११ (देखो तेलोकमंडण) |
| | | | भुयदेव | हरिवंशीय राजा २१. ९ |
| | | | भुयनिणाअ | वानरयोद्धा ५४. २१; ७१. ३५ |
| | | | भुयसरण | मुनि, दस्तरह के वीक्षा-गुरु ३२. २७ |
| | | | भुरिण | गंधार का राजा ३१. १९, २३ |
| | | | भुरी | ३१. २१, २५, २८, ३५ |

| | | | | | |
|----------|---|-----------|--|------------|--|
| भूषण-१ | वानर योद्धा ५७.१४ | मंदरमालि | वानरयोद्धा ५४.२२ | मच्छु | राक्षसयोद्धा ५६.३१ |
| „ -२ | कंपिल का राजकुमार ८७.५७, ६०, ६१ | मंदाइणी | विद्याधर राजपुत्री. लव की स्त्री १०६.९, १२ | मणवेगा-१ | राक्षस रानी ५.२५ |
| भोगवई | विद्याधर रानी, मालि की सासू ६.२३७ | मंदिर | सीया स्वयंवर में उप- स्थित राजा २८.१०१ | „ -२ | विद्याधर रानी ८.३५ |
| भोयरह | आगामी चक्रवर्ती का पुत्र ११८.७२, ७८ | मंदोयरी | रावण की महारानी १. ५०; ८.२, ६३; ९. १५; १०. ८०; ४६.१७, २२, २७, ३६, ३७, ३८, ४१; ५३. १३, ४१, ४४, ४५, ४८, ५३, ५५, १४७; ५९. ६०, ६३; ६६. ७, ३२, ३५; ६७. २७; ६८. ३८, ४३, ५०; ७०. ८, २७, ४८, ६०; ७४. ८; ७५. २, ७५, ७८. | | रावण स्त्री ७४.११ |
| मअ | विद्याधर राजा, मंदोयरी का पिता ८.१, २, ५, ८, ११, १२, १५. १८, २३, १३३; ६७. २६; ७१. ४२. ४९, ५१; ७५. ७, ४३; ७७. ६६, ६७, ९२. १११. ११३; — महासुणि ७७.११७ | | इक्ष्वाकुवंशीय राजा २२.९७ | मणसुंदरी-१ | विद्याधर ईहू की रानी १३.३१ |
| मईददमण | (देखो मयारिदमण) | | वृंंडम की रानी ४१.२० | „ -२ | रानी २६.४ |
| मईदवाह | दाशरथी राम का सहायक राजा ९९.५० | मंधाअ | देखो सेणिय ५. २१६ | | वानरयोद्धा ५७.१३ |
| मईवदण | मुनि ३९.४७ ४९.५१ | मक्खरी | ८१.७; १००.१; = मगहन- राहिवइ २७.१; = मगहन- रिद २०. ६३; ३१. १; = मगहपुराहिवइ ८८. १; = मगहराया ३. २; ६.९९; १५. ३; २०.११४; २६. ३; ८०.१; १०५.१३ = मगहवइ २४.१; २६. २३; ४६. ६७; ४८.१२; ५५. ५७; ५६. १, ६९.४६; १०५.१; १०७. ८; = मगहसामंत २.४९, = मगह- सामिय ९१.११; १०७.२. = मगहाहिव २. ४८, ९८; ४.६४; ७. ४२; १८.१; २०. २९; ५८.१; ६१.४९; १०५. १०; = मगहाहिवइ २०.१; ४३. ७; ५३. १; ९१. ९; १०८. १ = मयहाहिवइ ३०. ४७. | मणोरम | गन्धर्व १७.८२ |
| मईसमुद | दाशरथी राम का मंत्री ५५.३२ | मगहनराहिव | | „ -२ | देव ११०.१ |
| मईसाथर-१ | चक्रवर्ती भरह का मंत्री ४.७८ | | | मणुरण | वानरयोद्धा ५७.१४ |
| „ -२ | विद्याधर राजा मईहू का मंत्री १५.१५ | | | मणोरम | राक्षसवंशीय राजा ५.२६५ |
| ३ | दाशरथी राम का मंत्री ५५.३० | | | मणोरमा-१ | विद्याधर राजकुमारी. लक्ष्मण की एक महारानी १.८२; ९०. २, ८, २२, २८; ९१.१६, २५ |
| मई | रानी ५५.३५ | | | „ -२ | रावण पुत्री, महुकुमार की रानी १२.८ |
| मऊरा | रानी, चक्रवर्ती महापउम की माता ५.२६५ | | | „ -३ | चतुर्थ वासुदेव की रानी २०.१८६ |
| मऊह | राक्षसवंशीय राजा ५.२६५ | | | मणोवाहिणी | वानर सुगमीव की पुत्री ४७. ५४ |
| मंगलनिलअ | लक्ष्मण का पुत्र ११.२३ | | | मणोहरा | वज्रबाहु २ की रानी २१.४३, ७३ |
| मंगिया | रानी, अंक की माता ८८.१८ | | | मत्त | वानरयोद्धा ५७.१३ |
| मंडल | वानरयोद्धा ५७.६ | | | मह | वानरयोद्धा ५७.१३ |
| मंडवसाहु | मुनि १०५.९८ | | | मधु | देखो महु २ |
| मंदर-१ | अहविरिय का सहायक राजा ३७ १२ | | | मयंक-१ | रावण का मंत्री ६५.२ |
| „ -२ | वानरवंशीय राजा ६.६७, ६८ | मघदत्त | धनिक बालि का पूर्वजन्म- नाम १०३.१२६ | „ -२ | विद्याधर योद्धा ९९.६३ |
| „ -३ | वानरयोद्धा ६४.४१ | मघवा | तीसरा चक्रवर्ती ५.१५३; २०.१११ | मयण | लक्ष्मणका पुत्र ९१.२० |
| | | | | मयणकुस | सीयाका पुत्र. देखो कुस ९७ ६; ९८.७, ५६; १०६. ९, १२ |
| | | | | मयणपउमा | राक्षस रानी ५.२५४ |
| | | | | मयणवेगा | रानी ३९.१०१, १०२, १०३ |
| | | | | मयणसर | राक्षसयोद्धा ५६.३६ |
| | | | | मयणावली | चक्रवर्ती हरिसेण की रानी, राजा जणमेजय की पुत्री ८. १८३, २०२, २०५ |

| | | | | | |
|------------|--|----------|---|------------|--|
| मयणसवा | वानर सुग्गीषकी पुत्री ४७. ५४ | मलि | उन्नीसवें तीर्थंकर १.५; ५. १४८; ९. ९४; २०. ६, ४५, ५७, १४८, १९८, १९९; ९५. ३४ | महाबुद्धि | दाशरथी भरद्वाज वीक्षित राजा ८५.३ |
| मयधम्म | विद्याधरवंशीय राजा ५.४३ | महंतकपिल | राक्षसराजकुमार ५.२५२, २५४ | महामह | हणुअ का मंत्री |
| मयर | राक्षसयोद्धा ६५.२९, ५९, ३ | महकंतजस | राक्षसवंशीय राजा ५.२६५ | महामालि | राक्षसयोद्धा ५६.३२ |
| मयरद्वअ-१ | वानरयोद्धा ६७.९ | महगइ | " " ५.२६५ | महारक्ख(स) | रक्खसर्वस-प्रवर्त्तक राजा १. ४२; ५. १३९, १६४, २१७, २३५, २३७ २४७ |
| " - २ | राक्षसयोद्धा ७१.३६ | महण | " " ५.२६२ | महारह-१ | हरिवंशीय राजा २१.३० |
| " - ३ | लक्ष्मण का पुत्र ९१.२० | महद्वय | (देखो वसंतद्वय) भामंडल का मित्र ३०.७ | " - २ | वानरयोद्धा ६७.९ |
| मयरह | इक्ष्वाकुवंशीय राजा २२. ९७ | महबाहु | राक्षसवंशीय राजा ५.२६५ | महालयण | सुर ५९.८३ |
| मयरिआ | वणिक् स्त्री ११८.४६ | महरव | " " ५.२६६ | महाविरिअ | इक्ष्वाकुवंशीय राजा ५.५ |
| मयहादिवइ | देखो मगहनरादिवइ | महसुह | वानरयोद्धा ५७.१३ | महावीर | देखो वीर १, अन्तिम तीर्थंकर २.२६ |
| मयारिदमण-१ | राक्षसवंशीय राजा ५.२६२ | महसेण | तीर्थंकर चंद्रपह के पिता २०.३४ | महिद-१ | महिदनयर का विद्याधर राजा. अंजणा के पिता १.६०; १५. १०, १३, १५, ३२, ३५, ३७, ३९, ८१, ९६; १७. १८, १९, २३, १००; ५७. ३; -केउ ५० १९; ५४. २४; -तणया १५. ५४, ९९; १६. १, ९, ३८, ५४, ७५; १७. १, ५८, ८१, ८६, ११६; १८. १४, ५२; -धूया १७. ४३, ९७ देखो अंजणा -पुत १७. २०; -सुअ १२. ९६ पसन्नकित्ति |
| " - २ | विद्याधर राजकुमार ६. २१६ | महाइंदइ | इक्ष्वाकुवंशीय राजा ५.६ | | -भजा द्वियसुंदरी १७. १०३ |
| " - ३ | इक्ष्वाकुवंशीय राजा २२. ९९ | महाकाम | राक्षसयोद्धा ५६.३६ | " - २ | विद्याधर इंद १.५८ |
| " - ४ | (देखो मईव्दमण) वानर योद्धा ५९.१३ | महागिरि | हरिवंशीय राजा २१.८ | महिददत्त | विअयपुर का राजा. चक्रवर्ती हरिसेण का पूर्व-भगनाम २०. १४९ |
| मरीइ | मुनि, जिन उसइ का शिष्य पुनः परित्राजक ११. ९४; ८२. २४ = मारीइ ८२. ११६ = मारिजि ८२. २६ | महाघोस | अधरविदेइ का राजा ५. ११५ | महिदविक्रम | इक्ष्वाकुवंशीय राजा ५.६ |
| मरुअ-१ | रायग्मिह का राजा ११. ४६, ७१, ९९ | महाजुइ | राक्षसयोद्धा ५६.३४ | महिहर-१ | विद्याधर राजपुत्र ८. १९५, २०० |
| मरुअ-२ | हणुअ के पिता, देखो मरुनंदण | महाधअ | अहविरिअ का सहायक राजा ३७.७ | " - २ | विजयपुर का राजा, लक्ष्मण-शसुर, वण-माला के पिता ३६. ३२; ३७. १. १४, १५, २९, ३१, ३२, ३३; ३८. १५; = महीहर ३६. ९, ३७, ४०; ३७. ४ देखो पुहईघर |
| मरुअकुमार | वानरवंशीय राजा ६. ६७ | महाधण | वणिक् ५५.३८ | | |
| मरुत | रावण का मंत्री ८. १६ | महापउम-१ | राजा, नवें तीर्थंकर का पूर्वजन्मनाम २०. १३ | | |
| मरुदेव | बारहवां कुलकर ३. ५५ | " - २ | नवां चक्रवर्ती राजा (देखो पउम १) ५. १५३; २०. १४३. १४८. | | |
| मरुदेवी | जिन उसइ की माता ३. ५८, ६१, ६६ १०४; २०. २७; ८२. १९ | " - ३ | इक्ष्वाकुवंशीय राजा ५. ४ | | |
| मरुनंदण | हणुअ ५३. ७९; = मरुसुय ६९. ४५; = मरुसुय १०१. १; | महाबल-१ | सोमवंशीय राजा ५. ११ | | |
| मरुभूइ | देखो वाउभूइ १०५. ५० | " - २ | राजा, चौथे तीर्थंकर का पूर्वजन्मनाम २०. ११ | | |
| मरुवाह | वानरयोद्धा ५७. १६ | " - ३ | मुनि, चौथे बलदेव का पूर्वजन्मनाम २०. १९० | | |
| मरुसर | राक्षस योद्धा ५६. ३३ | " - ४ | वानरयोद्धा ५७. ४; ६७. १० | | |
| मरुसुय | देखो मरुनंदण | " - ५ | विद्याधर राजा ९९. ६३ | | |
| मरुसुय | | " - ६ | मुनि. १०६. ४६ | | |
| मरुसुय | | " - ७ | राक्षसयोद्धा ५६. ३० | | |

| | | | | | |
|------------|---------------------------|------------|-------------------------------|------------|--------------------------------|
| महीदेव | वणिक पुत्र ५५.३९ | मारिज | देखो मारीइ-२ ५९.७ | मिउमइ | ब्राह्मण, भुवणालंकार |
| महीधर | हरिवंशीय राजा २१.१० | मारिजि | देखो मरीइ | | हाथी का पूर्वभवनाम ८२. |
| महीहर | (देखो महिहर) | मारिदत्त-१ | अइचिरिअ का सहायक | | ७८,८१,८४,८७,८९,९२, |
| महु-१ | चिणीयापुरी का राजा | | राजा ३७.१२ | मिगावई-१ | ९३,९६,१०२,१०५ |
| | देखो महुकेड और केडथ | | दाशरथी राम का सहायक | | प्रथम वासुदेव की माता |
| | १०५.१३, १५, १८, ८६, | ” -२ | राजा ९९.५० | | २०.१८४ |
| | ८८, ८९, ९४, ९६, १००, | मारीइ-१ | देखो मरीइ | ” -२ | राजा नद्युस की माता |
| | १०४, १०८, १०९, १११, | मारीइ-२ | रावण का मंत्री ८. १३२. | ” -३ | २२.५१.५५ |
| | ११४ | | २७४; ९.५४; १२ ९२; १४. | | रावण की स्त्री ७४.१० |
| ” -२ | महुरा का राक्षस राजा, | | ३, ४. ७५; ७; = मारीचि | मित्तजसा | ब्राह्मणी ७७.८१, ११० |
| महुकुमार | रावण का जामाता, | | ८.१५ = मारीजि ५६. | मित्तदत्ता | अथल ^५ की रानी ८८.२६ |
| | १.५७; १२. २, ४, ८, ३१, | | २७; ५९.९; ६१. १०; ७०. | मित्तमई | वणिक स्त्री ४८.२०, २७ |
| | ३४, ३५; ८६. ३, ११, २९, | | ६५; ७१. ३४; ७५. ७७; | मिता-१ | जिन अरु की माता २०. |
| | ३०, ४१, ४२, ४६, ५१, ५३, | मारुइ | हणुअ ४९.१७, ३०, ३६ | | ४४ |
| | ५४, ५५; ८७. २; | | ३७, ३८; ५०.१०; ५१.९; | ” -२ | रानी सुमिता की माता |
| | = मधु ८७.५ | | ५२.९, ११, १४; ५३. ८ १६; | | २२.१०८ |
| महुकेड | (देखो महु१) चौथा प्रति- | | ५६, ६०, ६३, ७९, ८०, | मियंक-१ | इक्ष्वाकुवंशीय राजा ५.७ |
| महुकेड | वासुदेव २०.२०३ | | १०५, ११५, ११९, १४३, | ” -२ | विद्याधर योद्धा ९९.६४ |
| | पाँचवाँ प्रतिवासुदेव ५. | | १४७; ५४.१, १८; ५९. ७४; | मिस्सकेसी | अंजणा की सखी १५. |
| | १५६ | | ८५.२६; १०८. २३, ४४, | मीसकेसी | ६९; १६.१; १५.६७, ७० |
| महुगंध | दाशरथी राम की प्रजा का | | ४७. | मुइअ-१ | वृत्तपुत्र ३९. ४०; |
| | अगुआ ९३.१७ | | | | = मुदिअ ३९.७० |
| महुच्छाअ | विद्याधर महिइ राजा का | मालवंत | सुमालि का भाई ६.२२०; | ” -२ | राक्षसयोद्धा ५६.३२ |
| | सामन्त १७.२१ | | ७.१५२, १६३. ५३. ९२ | मुणिभइ | अइचरिय का सहायक |
| महुपिंगल | पुरोहितपुत्र (देखो पिंगल) | | -पुत्र १२.९७(सिरिमाल) | | राजा ३७.१० |
| | २६.६, १४; ३०.७६; | मालि-१ | सुमालि का भाई १. | मुणिवरदत्त | मुनि ३९.१०१ |
| महोदर | कुंभपुर का विद्याधर | | ४६, ४८; ६. २२०, २३२, | मुणिसुव्वय | गीसर्वे तीर्थंकर १.५; ५. |
| | राजा, कुंभकण्ठ का | | २३३, २३५. २४२; ७. १३, | | १४८; ६.९५. १४६; ९.९४; |
| | इवसुर ८.५५ | | १८, २१, २८, २९. ३१, ३३, | | २०.६, ४६, ५६, १५१, |
| महोदहि | विद्याधर भट ४८.१२१ | ” -२ | ३५, १५८, १६३, १६५; ८. | | १९९; २१. २१, २३, २८; |
| महोयर | राक्षसयोद्धा ५९.२७, २८ | | ७१, ७३ | | ३९.१२०; ६८.८; ६९. ७; |
| महोयहिरव | वानरवंशीय राजा ६.९३, | | राक्षसयोद्धा ५६.३०; ५९. | | ८९.२०; ९५. ३५; १०२. |
| | ९८, १५०, १५१, १५२ | | १८, १९ | | १४; १११. २०; ११४. ७ |
| भाकोड | विद्याधर राजा १०.२० | माहवी-१ | पीईकर ^१ की माता ५. | | (देखो सुव्वय१) |
| भाणवई | रावण की स्त्री ७४.११ | | २२८ | मुणिसुहम्म | मुनि २०.१५२ |
| भाणसवेग | विद्याधर राजा, नागपुर का | ” -२ | विद्याधर रानी ६.२१६ | मुदिअ | (देखो मुइअ-१) |
| | ६.१७१ | ” -३ | राक्षसराज महुर की | मेघपभ | खरदूखण के पिता ९.१० |
| भाणससुंदरी | विद्याधर इइ की माता | | माता १२. ३१ | मेघवाहण | (देखो मेहवाहण) |
| | ७.२ | ” -४ | दसरे वासुदेव की माता | मेरम | तीसरा प्रतिवासुदेव ५. |
| भाणिभइ | यक्षाधिपति ६७.३५, ३७ | | २०.१८४ | | १५६; २०.२०३ |
| भाणि | राक्षसयोद्धा ५९.२ | ” -५ | रानी ८२.६४ | | |

| | | | | | |
|-------------|--|-----------|--|-----------|--|
| मेरु-१ | दाशरथी राम का सहायक राजा ९९.४९ | ,, -२ | राजकुमार ७५. ६७, ६९, ७०, ७१, ७२ | रयणप्यभा | वणिकु स्त्री १०३. १२; = रयणाभा १०३. ९ |
| ,, -२ | वणिकु १०३.३८ | ,, -३ | दाशरथी भरहसह दीक्षित राजा ८५.२ | रयणमई | दाशरथी भरह की प्रणयिनी ८०.५० |
| मेरुदत्त | विद्याधर राजा ६.१७० | | | | |
| मेरुमहानरवह | ,, ,, ६.२१६ | ,, -० | काकंदी का राजा १०४. २.१३, १७, २०, २१, २२, २४, २० | रयणमाला | रावण की स्त्री ७४.८ |
| मेरुकंत | वानरयोद्धा ५४.३६ | | | रयणमालि-१ | विद्याधरवंशीय राजा ५. १४ |
| मेरुकुमार | राजा ३२.२२ | | | ,, -२ | हरिवंशीय राजा २१.९ |
| मेरुज्ज्ञान | राक्षसवंशीय राजा ५.२६६ | रइविवद्धण | वानरयोद्धा ५७.३ | ,, -३ | अवरविदेह का विद्याधर राजा ३१. १५. १६, १८; २७ २८, ३१ |
| मेरुप्यभ-१ | राक्षसवंशीय राजा ५.२६८ | रइवेग | मुनि ११३.२७ | | |
| ,, -२ | जिन सुमह के पिता २०.३१ | रइवेगा | विद्याधर राजकुमारी ५.२४२ | | |
| मेरुप्यह | सीया स्वयंवर में उपस्थित राजा २८.१०१ | रइवेया | रावण की स्त्री ७४.११ | रयणरह-१ | विद्याधरवंशीय राजा ५.१४ |
| मेरुबाहु | गृहपति २०.१२८ | रंभअ | आवलि के गुरु ५.११३; = रंभक ५. ९४, ११९ | ,, -२ | विद्याधर राजा ९०. १, ४, ६, १२, १४, १६, २०, २४, २७ |
| मेहरह-१ | लोकगल धरुण के पिता ७.४४ | रंभा | रावण की स्त्री ७४.८ | | |
| ,, -२ | राजा, जिन संति का पूर्व-भवनाम २०.१५.१३३ | रक्खस | रक्खसवस प्रार्त्तिक विद्याधर राजा ५.२५१ | ,, -३ | रात्रकुमार ३९. ७८, ८१, ८२, ८३ |
| मेरुवाहण-१ | रक्खसदीव का प्रथम राजा (देखो घणवाहण१) ५.१११, १२३. १३७, २५१; ७.९२, १६१; ४३. १३ १५; = मेघवाहण ५.६५ | रक्खसवंस | राक्षसवंश १.४२; ५.२५२. २५८; ७ १६१; ४३. १५, १६ | रयणवज्ज | विद्याधरवंशीय राजा ५.१४ |
| ,, -२ | रावण का पुत्र १०. २३; १५. १८; ५३. १०१; ५९, ५७; ६३ ३; ७७. ५८, ६१; -मुनि ७५. ८५ (देखो घणवाहण३) | रधुस | इक्ष्वाकुवंशीय राजा २२.९९ | रयणसलाया | समुह की पुत्रियां, लक्खण की स्त्रियां ५४.४२ |
| मेरुसीह | विद्याधरवंशीय राजा ५.४३ | रणचंद | वानरयोद्धा ५७.६ | रयणसिरी | |
| मेहावि | रावण का मंत्री ८.१६ | रणलोल | राजा ३२.२२ | रयणावई | रानी १०३.१३० |
| मोगर | पृथ्वंजय का अमात्य १६.६२ | रत्तह | विद्याधरवंशीय राजा ५.४४ | रयणावली | विद्याधर राजकुमारी ९.५२ |
| रइ | रानी ३९.१०१ | रत्तवर | राक्षसयोद्धा ५६. ३५ | रयणासव | रावण के पिता ७. ५९, ६४, ७१, ७३, ९३, ९४, १२२, १२७, १५२; ८. ६५, २३६, २४०, २४६; ५३. १४०; ७३. १८; ७७. ११; १०३. ११४ |
| रइनिहा | दाशरथी राम की एक रानी ९१.१८ | रमण | विप्र ८२. ४४-४६. ४८, ४९, ५१, ५७ | | -नंदण १२. ५७; ७१. ६०; -सुअ ८. २२१; ५८ १३ (रावण) |
| रइमाला | अइविरिअ की पुत्री, लक्खण की एक रानी ३८. १७; ९१. १५ | रमणा | गणिका ८२ ८७ | | -नंदण ५९. ४० (भाणुकरण) |
| रइवद्धण-१ | वानरयोद्धा ५७. ३; ५९ ३७; ६७. ९ | रयण | वानरयोद्धा ५७.११ | रव-१ | राक्षसवंशीय राजा ५.२६२ |
| | | रयणकेसि | विद्याधर राजा, देवो-वगीयनगर का (८५. २७) ४९. २९; ४८ ४०, ४२, ४५; ५३. ३६, (देखो रयणजडि) | ,, -२ | वानरयोद्धा ५४.२१ |
| | | रयणकल | राक्षसपुत्र ११३.१३ | रविकसि | विद्याधर राजा ७०.१९ |
| | | रयणचित्त | विद्याधरवंशीय राजा ५.१५ | रविकुंडल | ,, ,, ६.१६६ |
| | | रयणचूल | देव ११०.१ | रविजोइ | वानरयोद्धा ५९.३२ |
| | | रयणचूला | रानी १०३.९० | | |
| | | रयणजडि | १.७५; ४५. २८; ४८. ४१, ४३, ४६; ५७. १३; ५९. ३८; ८५. २७; ९६. ३५; (देखो रयणकेसि) | | |

रवितेज-१ इक्ष्वाकुवंशीय राजा ५४
 ,, -२ राक्षसवंशीय राजा ५.२६५
 रविष्पभ वानरवंशीय राजा ६.६८,
 ६९
 रविभास देखो सुजहास ४६.
 ९१; ५३.२७; ५५.२६
 रविमाण वानरयोद्धा ५७.१६
 रविरक्व देखो भाणुरक्वस ५.
 २४८
 रविरह राक्षसवंशीय राजा २२.९७
 रविसप्त ,, ,, २२.९८
 रहनिघोस इक्ष्वाकुवंशीय राजा २२.९९
 रहयंद वानरयोद्धा ५७.१९
 रहू दाशरथी पञ्चम ११३.
 २१; -णाह ११३. ५५
 -साम १०२. १७९; ११२.
 १९; -नाह ४५.३६; -वह
 ६५. ५०; ७७.१७ देखो
 राघव
 रात्र वानरयोद्धा ५६.३४
 राइल रानी ४८.१४, २५
 राईव धरुण का पुत्र १६.१९
 राघव दाशरथी पञ्चम, (देखो
 राम २) १.८८; ३०. ३५;
 ३२.१२, २५; ३३. १३ १७,
 २१, १२६; ३४ ५३; ३५.
 १४. १६, ७३; ३६. २४;
 ३७. ३४, ४४, ६५, ३८ २०;
 ३९. ६, ९, १०, २९, १२६;
 ४०. ३; ४१. ६; ४२. १७,
 १८, १९, ३४; ४३. ४१, ४५;
 ४४. २३; ४५. ३४, ४२; ४६.
 ५७, ५९; ४७. २९, ४६,
 ४८; ४८. ५८, ११५; ४९.
 ११, १३, २२; ५१. २५;
 ५३. ५९, ६४; ७८. ४४,
 = राहव २७. १५. ३९;
 ३१. ९५; ३७. १; ४४.
 २२, ५२, ५४, ६६; ४८.
 ७; ५३. ३१, ४७, १२१;
 ५४. ८, १४, २५, ४१; ५५.
 १५; ५७. २; ५९. ७३; ६०.

८; ६१. १८, ५० ६७; ६४.
 २, ४५; ६५ ११. १४, १५,
 २२. ३१ ३३, ४६; ६७. ४,
 ३९, ४३; ७० ३१; ७४. २२;
 ७५. ३; ७८. २३, ३८ ४०;
 ७९. १, ११; ८१. ५, ७; ८५.
 १३; ८६. १, ३. १०; ९३.
 ३८; ९४ २१, ४७, ५८ ७१;
 ८६. २७; ९७. १; ९९. १७.
 ३५, ३७ ७०; १००. ७,
 १०. ३१, ४४; १०१. १, २७,
 २८, ३२, ४४ ४९; १०२.
 ४२ ५०, १७६, १८५, १९८;
 १०३. २, ४, १५६ १७४;
 ११०. २८; १११. ३; ११२.
 ७, २१; ११३. १ ६२, ६३;
 ११७. १९, २१. २४, २८,
 ३७, ४०.
 राम-१ नवें बलदेव, कण्ह के
 भाई ५. १५४
 ,, -२ आठवें बलदेव पञ्चम का
 अपरनाम १. ६६, ६९, ८७;
 ३. १०; २१. १; २६. १०३;
 २७. १-३, १३, १४, १७,
 २०, २८, ३७; २८. १, ६०-
 ६२; ७२-७५, ८४, ९४, ९९.
 ११४. १२०, १२१, १२२,
 १२७, १२८ १३९; ३०.
 ८-१०. ८१ ९६, ९८; ३१.
 ४०. ९३, १०१. १०३, १०५,
 १०७. १०८, ११४-११७,
 १२५; ३२. १६. १७. ४५.
 ४६, ५३. ५८. ५९; ३३. १८,
 २२, १२७. १२९ १३२;
 ३४. १२, २६; ३५. ४, १७,
 २६, ५२, ७७; ३६. ११. २६,
 ३२, ३३; ३७. २९. ३१,
 ४६, ६१; ३८. १५; ३९ १३,
 १९, २८, ३५, १२९, १३१;
 ४७. २, ८, १२, १५, १६;
 ४१. ७, ७६; ४२. २१, २३,

३५; ४३. ३७; ४४. १५, २१,
 ३३, ३४, ३६, ४७, ४८, ४९,
 ५१, ६४; ४५. १७, २०, २३,
 ३९, ४१, ४३; ४६. ४०, ४९,
 ७९; ४७. ७, ३३, ३६, ४२,
 ५१, ५६; ४८. २, ३८ ४३,
 ४७. ९५; ४९. १७ २१, ३१,
 ३६; ५०. १७; ५२. २६; ५३.
 ६, ३२, ३५, ५२. ६२, १२३.
 १३५; ५४. ३ २७, ३२, ४६;
 ५५. २७, ३०, ४५, ४८, ४९,
 ५९; ५६. १२; ५९ ८२, ८३;
 ६१. ६३, ६६; ६२. २, ३;
 ६३. २४; ६४. १; ६५. ३ १०;
 ६७. ५, ४०, ४४; ६८. ४५,
 ४८; ६९ १९, ३८-४०, ४५;
 ७०. १४, ३०; ७१. १५, ५१;
 ७३. ४; ७४. २, १८, २७ ३०;
 ७५. ६, ११, २०; ७६. ५, ११,
 १५; ७७. ४, २९, ३९; ७८.
 १५, ३५, ४१, ४२ ५५; ७९.
 २, १४, २९, ३१; ८०. १५,
 १९; ८१. ४; ८२. ३; ८३.
 १०; ८५. १२, १४ २०; ८६.
 २६; ९०. २४, २९; ९१, २;
 ९२ २३; ९३. १, १६, १९,
 २४, २६, ३०, ३९; ९४. ७,
 ६१, ६२; ९५. २३-२४; ९६,
 ६६; ९६. ३७, ४५; ९८. ४५,
 ४६; ९९. ४, १३, १५, १९,
 ४७, ५३. ६९, ७१; १००. १,
 ३, १२, १७, ३०, ४७, ५७;
 १०१. ९, २०, २४, २६ ३७,
 ४०, ५१, ७५; १०२. १६,
 ३६, १६७, २०१; १०३.
 ११६, १२३, १६१ १६४,
 १६५; १०६. २, ५; १०९
 २१, २४; ११०. १, २, ५,
 २०, २९, ४२ ४३; १११. १;
 ११२. ३; ११३. २, ४, ९,
 ११. १७, २०, २८, ३७;

| | | | | | |
|--------------|---|--|---|---|---|
| | ५०, ६६, ६७, ६८; ११४. २, ८, ११, १२, २०; ११५. ७; ११७, १२, १४, १८, ३३; ११८. ९०, ९१, १८१. = रामदेव १.७४; २६. १०३; २८.५७; ३६.४, ३७; ३८.५०; ४१. ७३; ४४. १८; ४५.२९; ४७.४३, ५७; ४८.४८, ११२; ४९. १२; ५०.१९; ५५. २८; ६४. ३, ३६; ६५. ३४; ७६. १७; ८०. १६; १०३. १, १७२; १०९. ४; ११०. २५; ११७. ११; ११८. ८२ | | | | |
| रामकण्ठ | लक्ष्मण ६१. ४७, ५५; ७२. १३; ९१. १२ | | | | |
| रामण | देखो रावण | | | | |
| रामदेव | देखो राम-२ | | | | |
| रामदेवचरियं | ग्रन्थनाम. पउमचरियं ५. ९० | | | | |
| रामा | जिन पुण्ड्रित की माता २०. ३५ | | | | |
| रामायण | ग्रन्थ (हिन्दू) २. ११६; १०५. १६ | | | | |
| रामण रावण | ७३. ५ आठवाँ प्रतिवासुदेव, लंका- धिपति राक्षस १. ५९; २. १०७, १०८ ११३; ३. ९; ५. १५६; ७ ९९; ८ १०२, १०६, १२०, २३८, २५५; ९, १०, १४, २४ ४०, ७८, १०२; ११. १; १२. ३९, ४२ ४४. ५४ ६६. ७४, १२३ १२५. १२७, १२८; १३ १ ७; १४ ६ १५७; १५. १७; १६. १०, १२, १३, १५, १८, २४, २८; १९. १, २ २१ २३, २८, ३२, ३४ ४३; २०. २०३; ४३. १६; ४४. ९, १३. १४; ४५. ३०; ४६. १६, ७८, ९८; ४८. ९५; ५३. ४७, ९०, | राहव राहवचरिय राहू रिउमहण गिक्खरअ-१ रिउनेमि रुहनाम रुहभूह | देखो राघव पउमचरियं १०३. १७५; ११८. ११४, ११८ विमलसूरि के आचार्यमह ११८. ११७ राक्षसवंशीय राजा ५ २६२ रिक्खपुर का वानरराजा नल और नील के पिता १. ५३; ६. २१४; ७. १५२; ८. २२९ २३३, २३४, २५५, २५६; ९. ५ २७; ५८ १५; वानरवंशीय राजा ६. ८४ देखो नेमि) तीसरे वासुदेव के पिता २०. १८२ कागोणंद म्लेच्छजनों का अधिपति १. ७०; ३४. ४६, ५४, ५५, ५८; ३७. ४०; ९९. ५० | रूपणी-१ ,, -२ ,, -३ रुवमई रुवव रुवाणंद रोहिणी-१ ,, -२ लंकासुदरी लंकासोग लक्ष्मण | द्वितीय वासुदेव की रानी २०. १८६ नवें वासुदेव की रानी २०. १८७ रावण की स्त्री ७४. ८ लक्ष्मणकी रानी वज्र- कण की पुत्री ७७ ४७; ९१. १४, २२; १०६. १९ ७९. ९ देव, भूतगण का स्वामी ५ १०३ नवें बलदेव की माता २० १९७ श्रावकमाता ११८. ६५ इणुभ की स्त्री, राक्षस वज्रमुह की पुत्री ५२. १२, १६, २१, २५, २९; ५३. १२४ राक्षसवंशीय राजा ५. २६५ लक्ष्मण पउम का भाई. आठवें वासुदेव, देखो सोमिति १. ६६, ६९, ७७, ७९, ८१, ८७; २०. १९९; २५. ११; २७. २७, २९, ३१, ३४, ३६, ३७ ३९; २८ ९५, १००, १२४; ३०. ८१; ३१. १०५, ११७; ३२. १६, १७, २५, ३८, ४५; ३३. १३ १८, २८, ८७, ९०, ९४, ९७, ९८, ११२, १४०; ३४. ३, ६ १३, २६; ३५. १४ ५९; ३६. १०, ११, १३, २१-२५, ३२-३४ ३७; ३७. १५, ३२, ३८, ३९, ४५, ६२. ६४; ३८ १६, २३ २५, ३६, ४२-४५, ४९, ५६; ३९. १८, १९, २९; ४०. १४; ४१. ७३, ७६; ४२. २८; ४३. ५, २३, ३७ ४८; ४४. २१, २७, ३३, ३४, ३६. ४८; ४५. ४, |

१. व्यक्तिविशेषनाम

२९;४६.४८, ८८, ९१;४७.
 ४५;४८.३३, १०८;४९.४,
 २०;५३.२२, २३, २८ ३२,
 १३५;५४. १७, ३८; ५५.
 ४८;५९;५९.६७ ७५, ८२,
 ८३, ८६; ६०.२; ६१. २५,
 ४३.४४.५१, ५९, ६० ६१,
 ६३;६२ १, १२; ६३.४, ८,
 १०, १७.५९;६४. २३, ३६,
 ३७;६५. १, ३, ४८; ६८. ४८;
 ६९. ४०, ४५;७१. ११, ५२,
 ५३, ६१, ६६, ६७;७२. ८,
 ११ १४, १६, २१, २२, ३०,
 ३६;७३. १, १९, २२; ७४.
 २७;७५. ११, २४;७६. ३, ६
 ७७. १९, २४, २८, २९, ३२,
 ४५, ४६; ७८. १५-१८, ३०,
 ३५, ४१ ४४; ७९. १४; ८०.
 ३७, ४९; ८१. ३, ४; ८२. ३;
 ८५. ८, २०; ९०. ५, ८, १०,
 २१; ९१. २, ७, १९; ९४. १,
 ४ १० २४, ५९, ९९; ९५.
 २२; ९६. ४२; ९८. ४१, ४२,
 ४४; ९९. ४, १३, ४७ ७२,
 १०० ३, १०, १४. १७, २०,
 २१, २३ २४, ३१; १०१. २४;
 १०२. ५६; १०३. २, ५, ११८,
 १३९, १६१ १७३; १०६. ५,
 १३, १७; ११०. २, ३, ४, ९
 २०, ३०, ३७, ३८; ११३.
 १० २१ ६८; ११७. ११;
 ११८. १, १०, १५, १७, ६१,
 ७७ ७९.
 =लच्छीनिलय ३६. ५; ३७.
 ३७; ३८. १; ४५. ११,
 २३; ४८. ५९, ७७, १००,
 १०७; ५४. ४२; ५९. ८४;
 ६७. ४४; ७१. ५७, ६२; ७५.
 ८; ७७. ५२; ९०. ९, १२; ९१.
 ८; ९४. १३; १००. २५;
 १०३. १४०; १०६. ३०, ४४;

लच्छी-१
 ,, -२
 ,, -३
 ,, -४
 ,, -५
 ,, -६
 लच्छीदेवी
 लच्छीनिलय
 लच्छीमई
 लच्छीवल्लह

११०.६; ११७. ५; ११८.
 ६३; = लच्छीवल्लह ११३.
 ३; = लच्छीहर ३२. ४७;
 ३४. ४२ ४३; ३५. ३२, ६१;
 ३६. १७, १८; ३७. १; ३८.
 १७, २६, ३४, ३५, ३७; ४१.
 ७२; ४३. २५; ४४. २५, २६,
 ३७; ४५. ८, १२ १५, २०;
 ४८ १०४; ४९. १९, ३६; ५३.
 २७, २९, ३४, ५०; ५५. १४,
 १५, २६; ५९. ७९; ६२ २५,
 २६; ६४. ६, १६ ३८. ४४;
 ६५. २८, ३१; ७१. १५, ५९,
 ६४ ६८; ७२. १०. १२, २४;
 ७६ १९; ७७. ९. ४३, ४९;
 ७९. २२; ८०. ४८; ८२. १७;
 ८५ १६, २३; ८६. २५, २६;
 ८७. १८; ९०. १७ २२ २३,
 २८; ९१. १०, १६, २६; ९४.
 ५ ५८; ९६ ३८; ९८. ४३;
 ९९. ३२, ४८; १००. १२, १३,
 १९, २२. २९, ३९; १०१.
 २६; १०२. ५९, १९९; १०३.
 ६; ११०. ५, २१; १११. २,
 १२; ११३. १ ४५.
 सुकंठ की रानी १७. ६०,
 ६१
 विद्याधर रानी ६. १६८
 चक्रवर्ती हरिसेण की
 सौतेली माता ८. १४६
 छठे वासुदेव की माता २०.
 १८४
 रावणलक्ष्मी ७४. १०
 दाशरथी भरह की प्रणयिनी
 ८०. ५०
 एक रानी ११८. ६९
 (देखो लक्ष्मण)
 १०८. ४९ आर्यिका
 (देखो लक्ष्मण)

लच्छीहर-१
 ,, -२
 लच्छीहरद्वय
 लक्ष्मियास
 लयादत्त
 ललियमित्त
 ललिया
 लव
 लवण-१
 लवण-२
 लुद्धनाम
 लोल-१
 ,, -२
 वइदेही-१
 वइदेही-२

(देखो लक्ष्मण)
 मुनि १७. ५६
 अककपुर का राजा
 ७४. ३१
 विद्याधर ६३. ५१, ५३
 वणिक ४८. २०
 मुनि, सातवें वासुदेव का
 पूर्वजन्म नाम २०. १७१
 रानी ८८. ८
 सीया का ज्येष्ठ पुत्र १. ३२,
 ८४; ९१. ९; ९८. १८ ५५,
 ६१, ६७, ६८, ७३; ९९. ६,
 ६८, ६९, ७०-७२ १००. १.
 २, १२. २८ ५२, ५८; १०१.
 २४; १०२. ३५; १०४. १;
 १०६. ८, १६; ११८. ४३;
 १७. १, १९, २५; १८. १, २९
 ३२, ३७, ३८; ९९. ३ ४३, ५४
 ५६, ६३. ६४, ६५; १००
 ३२, ३९, ५०, ५१, ५६; ५७;
 १०४. ३१, ३३; १०६ १२,
 १३ १५; ११०. ३७; ११८.
 ४०
 राक्षस महुका पुत्र, महुरा-
 नरेश १. ८२; ८६. ४६ ४७
 ४९, ५०
 वानरयोद्धा ५७ १४
 ,, ,, ५७. ६
 ,, ,, ५७. १२
 जणभ की रानी. सीया
 की माता २६. ७५ ९२; २८.
 ८८; ३०. ५५; = विदेहा १
 ६६; २६. ८८; २८. १६, ८०;
 ३०. २४, ९४; = विदेही २६. २
 जण अपुत्री सीया, दाशरथी
 राम की पटरानी ३१.
 १०३; ३६. २६; ४५. ३०;
 ४८. ११५; ४९. २३; ५३. ४८;
 ५५. १४; ७२. ७; ७८. १८;
 ९३. ६; ९४. ३३. ४८. ५५;

| | | | | | |
|-----------|---------------------------|-------------|-----------------------------|-------------|------------------------------|
| | ९५.५८; ९६. ३०; ९९.७; | | ९५.१, १०.१६ ६५; ९६.८; | वज्रसेण | मुनि, प्रथमतीर्थंकर के पूर्व |
| | १००.२८; १०१ १०, २९; | | ९७.८; ९८.१, ७, १०, ११, | वज्राउह-१ | भवगुरु २०.१७ |
| | १०२ २, ५५; १०३. १७४; | | १२, १५, २०, २६, २७, ३६, | „ -२ | सौधमन्द्र ३.१३७ |
| | १०५ ९; = विदेहा ४६ १०, | | ३८, ५५, ६९; ९९. १६, ३१, | „ -३ | विद्याधरवंशीय राजा ५.१६ |
| | ६५; ९७. १६, १८; ९८ २०, | | ३२; १००. २ ४५. | वज्राउहपंजर | विद्याधर राजकुमार ६.१६९ |
| | ५१ = विदेही १०१.३ | वज्रणक | राक्षसयोद्धा ५९. ५७, ५८ | वज्राभ | विद्याधरवंशीय राजा ५. १६ |
| वइवस्सअ | धनुर्वेदानाय २५.१८, २३ | वज्रदंत | वानरयोद्धा ५४.२३ | वज्रावत | सीया स्वयंवर के लिए |
| वईयमोग | मुनि, बाईसवें तीर्थंकर के | वज्रदत्त-१ | विद्याधर वंशीय राजा ५. १५ | | चंद्रगड द्वारा दिया गया |
| | पूर्वभव गुरु २०.२० | „-२ | मुनि, ग्यारहवें तीर्थंकर के | | धनुष २८.८४; ३०.९८; ४४. |
| वग्घ | वानरयोद्धा ५९.५ | | पूर्वजन्मगुरु २०.१८ | | ६०; ४९.२३; ५३.४९; ५५. |
| वग्घरह | राजा ९८.१२, १३ | | विद्याधरवंशीय राजा ५. १५ | | १५, २६; ७२.२३; ८६.२५; |
| वग्घविलकी | वानरयोद्धा ९.३१ ३३ ३४ | वज्रद्वज | राक्षसयोद्धा ५६.२८ | | ९९.७१; १००.८; ११३.२० |
| वज्ज-१ | विद्याधरवंशीयराजा ५.१६ | वज्रधर | राजा, प्रथमतीर्थंकर का | वज्जास | विद्याधरवंशीयराजा ५.१७ |
| „-२ | „ „ ५.१७ | वज्रनाभ-१ | पूर्वभवननाम २०.१२ | वज्जिदु | विभीषण का मुख्य भट |
| „-३ | राक्षससामंत ८.१३२; १२. ९४ | „ -२ | मुनि, बारहवें तीर्थंकर के | | ५५.२३ |
| | | | पूर्वजन्मगुरु २० १९ | | देखो वज्रउयर |
| वज्जउयर | राक्षसयोद्धा ५९. १२; = | वज्रनेत | रावण का मंत्री ८. १५ | वज्जोयर | राजा महीहर की पुत्री, |
| | वज्जोयर, ५६.३१; ५९.१४; | वज्रपाणि | विद्याधरवंशीयराजा ५.१७ | वज्जमाला-१ | लक्ष्मण की रानी १.७१; |
| | २०, २१; | वज्रबाहु-१ | „ „ „ ५.१६ | | ३६.९, १९, २४ २८, २९, |
| वज्जक | विद्याधरवंशीयराजा ५.१६ | „ -२ | इक्ष्वाकुवंशीयराजा २१.४२. | | ३०.३१ ३२, ३४; ३८.१६, |
| वज्जधर | „ „ „ ५.१६ | | ४४, ४६, ४७ ५१.५६. ६७, | | २०, ५५; ७७. ४९; ९१.१५, |
| वज्जसू | वानरयोद्धा ५७.८ | | ७०, ७२, ७४ | | २४, |
| वज्जक | वणिकू ११८.४६ | वज्रमज्ज-१ | राक्षसवंशीयराजा ५.२६३ | | मिह राजकुमारी १२.१४ |
| वज्जकंचू | राजकुमार १०३.९१ | वज्रमज्ज-२ | रावणमन्त्री ८.१३२ | „-२ | जुलाहे की स्त्री १४.२ |
| वज्जकंठ | वानर वंशीय राजा ६.५९, | वज्रमालि | राक्षस सुंद का पुत्र ११३- | „-३ | इत्थ व पहत्थ के पिता |
| | ६०.६६ | | १३, २० | वण्हिकुमार | ५८.१३ |
| वज्जकण्ण | दक्षपुर का राजा १.७०; | वज्रमूह | लंकाप्राकार का रक्षक | | दाशरथी राम का सहायक |
| | = वज्जयण्ण ३३. २५, २७, | | ५२.८; ५३.१२४; = वज्ज- | वण्हिसिह | राजा ९९.४९ |
| | ३०, ५४, ६०, ६१, ६४, ७८, | | वज्ज ५२.११ | | चौबीसवें तीर्थंकर २०.६. |
| | ८०, ८१, ९१, ९५, ९७, | वज्जयण्ण | देखो वज्रकण्ण | वद्धमाण | ५१ (देखो महावीर) |
| | १००, १०२ १२२, १२४, | वज्जत्रयण | देखो वज्रमुह | | चक्रवर्ती हरिसेण की |
| | १२९, १३१, १३२ १३४. | वज्जवरनयण | सीहपुर का विद्याधरराजा | वप्पा-१ | माता ८.१४४, १४५ १४८, |
| | १३६, १४७; ७७ ४७; = | | ३१.१६ | | २०६, २०७; २०.१५० |
| | वज्जसमण ३३.१४७ | वज्जवेग | राक्षसयोद्धा १२.९२ | वप्पा-२ | जिन नमि की माता २०. |
| वज्जकल | राक्षसयोद्धा ८.१३२; ५६. | वज्जसंघ | विद्याधरवंशीय राजा ५.१५. | | ४७ |
| | २८; ५९.३ १२ | वज्जसमण | देखो वज्रकण्ण | वम्मा | जिन पास की माता २०. |
| वज्जचूड | विद्याधर वंशीय राजा ५.४६ | वज्जसिरी | विद्याधररानी ६.१६९ | | ४९ |
| वज्जजंघ | पुंडरियपुर का सोनवंशीय | वज्जसुंदर | विद्याधरवंशीयराजा ५.१७ | | |
| | राजा, निर्वासित सीया का | वज्जसुजण्हु | „ „ „ ५.१७ | | |
| | संरक्षक १.८४; ९४. १०२; | | | | |

| | | | | | |
|-----------|---|------------|--|--------------|--|
| वरकिति | चंद्रपुर का नामरिक ५. ११४ | वसुगिरि | हरिवंशीय राजा २१.९ | वासवकेउ | जणअ के पिता २१.३२ |
| वरधम्म | मुनि, उन्नीसवें तीर्थंकर के पूर्वजन्मगुरु २०.२० | वसुदत्त | श्रेष्ठीपुत्र, लक्ष्मण का पूर्व जन्मनाम १०३. ८, १३, १४, ८९, ११८, १३५; ११४.३१ | वासुपुज | (देखो वसुपुज १) |
| वरा | चंद्रभद्र की रानी ८८ १५ | वसुनंद | ब्राह्मण १०४.२६ | विउलवाहण-१ | राजा तृतीय तीर्थंकर का पूर्वभवनाम २०.१२ |
| वरुण | ईश का पश्चिम दिशा का विद्याधर लोकपाल ७.४४, ४७; १६.१०, १३, १२. १३, १५, १६, १८, २२, २३, २४, २८; १८.२, ३; १९. १, ८, २०- २५, २८. २९, ३२; ५३. ४२, ९५. (देखो जलकंत) | वसुपुज-१ | बारहवें तीर्थंकर १.३; ९. ९३; २०. ५५, ५७; = वासु- पुज ५. १४७; ६. ९०; २०. ५, ८, ३८, ५१; ९५. ३२. | " =२ | पुरुवशिदेह का राजा १०३. ६१ |
| वसंतअमरा | मणिका ८२. ८७ | वसुपुज-२ | जिन वासुपुज के पिता २०. ३८ | विकल | वानरयोद्धा ५७. १२ |
| वसंततिलअ | इक्ष्वाकुवंशीय राजा २२. ९८ | वसुवल | इक्ष्वाकुवंशीय राजा ५. ४ | विक्रम | राक्षसयोद्धा ७१. ३६ |
| वसंततिलया | अंजणा की सखी १५. ६५, ६७, ६८, ६९; = वसंत- माला. १६. ७०, ७३, ८९; १७. ११, १४, १५, १७, ३७, ३९, ४३, ७५, ७९, ८३, ८६, ८९, ९४, ९७, १०५ | वसुभूइ-१ | मुनि, छठे वासुदेव के पूर्व जन्मगुरु २०. १७६ | विगयमोह | मुनि ९. ७; ३०. ६५ |
| वसंतद्वअ | भामंडल का मित्र ३०. ५ | " -२ | विप्र ३९. ४१, ४३, ४५, ६४, ७५. | विष | वानरयोद्धा ५९. ७, ९ |
| वसंतमाला | (देखो वसंततिलया) | वसुसामि | अह्विरिअ का सहायक राजा ३७. १२ | विषसुयण | वानरयोद्धा ५७. ६ |
| वसंतलया | राजकुमार सुकोसल की धात्री २२. ७ | वाउकुमार-१ | पवणंजय १६. २, ५८; | विचित्तगुप्त | मुनि २० १३८ |
| वसभ-१ | मुनि, चौथे बलदेव के पूर्व भवगुरु २०. १९२ | " -२ | विजयावई नगरीका राजा ११८. ६९ | विचित्तमाला | सुकोसल की रानी २२. १९, ५० |
| वसभ-२ | वानरयोद्धा ५७. १८ | वाउगह | अह्विरिअ का लेखवाहक ३७. १७ | विचित्तरह | अरिहपुर का राजकुमार ३९. ७८ |
| वसभदत्त | जिन मुनिसुध्वय को प्रथम पारणा कराने वाला राजा. २१. २४, २५ | वाउभूइ | ब्राह्मणपुत्र १०५. २०, २४, ८० (देखो मरुभूइ) | विजअ-१ | द्वितीय बलदेव ५. १५४; ७० ३५ |
| वसह | लक्ष्मण का पुत्र ९१. २० | वाणरवंस | वानर-वंस का नाम १. ४३; ६. १, ८८, ९२ | " -२ | जिन तमि के पिता २०. ४७ |
| वसहकेउ | इक्ष्वाकुवंशीय राजा ५. ७ | वांमदेव | ६. १, ८८, ९२ | " -३ | राजा, चक्रवर्ती सगर का पूर्वजन्मनाम २०. १०८ |
| वसहद्वअ | राजकुमार, सुग्गीव का पूर्वजन्मनाम १०३. ४२, ५५, १२२ | वायायण | ब्राह्मण १०४. २६ | " -४ | मुनि, पाँचवें वासुदेवका पूर्व जन्मनाम २०. १७१ |
| वसुधर | मुनि, सातवें बलदेव का पूर्वजन्मनाम २०. १९१ | वाल | वानरयोद्धा ६७ १० | " -५ | इक्ष्वाकु वंशीय राजा २१. ४१. ४४ ७४, ७७ |
| वसुधरा | रावण की स्त्री ७४. १० | वालखिल | सुग्गीवका ज्येष्ठभाई, देखो बालि १. ५५; ३. १०; ९. १, ६. ९, २४ ३२, ३७, ३८, ३९, ४६, ७४, १०५, १०६; ६४. २८; १०३. १२४, १३१, १३३, १३४. | " -६ | राजा ३२. २२ |
| वसु | अओज्झा का राजा ११. २१, २८-३१, ३३, ३४, ३६ ११. ८ | वालखिल | विद्याधरवंशीय राजा ५. ४५ | " -७ | वानर योद्धा ५७ १४; ५९. १५ |
| वसुकुमार | | वालखिल | कृषवह का राजा. देखो बालिखिल १. ७०; ३४. १८. २०, ५०, ५९ ५४, ५५; ७९. ८; ९९. ४९; -दुहिया ७७. ४८ = कला- णमाला | " ८ | दाशरथी राम की प्रजा का अगुआ ९३. १७, २२ |
| | | | | " -९ | विमलसूरि के गुरु ११८. ११७ |
| | | | | विजयपव्वअ | पउमिणी नगरी का राजा ३९. ३८, ५१, ६१ |
| | | | | विजयरह | अह्विरिअ का पुत्र ३७. ६८; ३८. १, ५, ६ |
| | | | | विजयसह्ल | अह्विरिअ का सहायक राजा ३७. ६ |

| | | | | |
|----------------|--|----------------------|---|--|
| विजयसायर | चक्रवर्ती सगर के पिता ५.६२ | विज्जुप्पह | (देखो विज्जुप्पभ १) | = विभीषण ८. ६२, ८१; २३.१२, १३, १४, २५; ४६. |
| विजयसीह | विद्याधर राजपुत्र ३.४४; ६.१५७, १७६, १८५ १८६ | विज्जुयंग | वणिक पुत्र ३३.६५, १२८ | ९६; ४८. ११८; ५३. १, २, ३, ७; ५५. ४, १८, २३ २९, ४५, ४६; १७. १७; ५९. ६ ७, ७५, ७६; ६१. ५३; ६७. ५ १६; ६९. ३७; ७८. ३६ ३८, ४३, ४७; = विभीषण ७. ९८; ८. |
| विजयसुंदरी | दाशरथी भरह की स्त्री, अहविरिभ की पुत्री ३७. ७, १४ | विज्जुवयण-१ | वानरयोद्धा ५४.२२ | ८४, १३१, २३९, २४०, २७४; १०. २३; १२. ६८; १५. १; १९. २५; २३. ११, १९, २०, २१, २३; ४६ ५६, ६०, ८६; ४८. ५६, १२०; ५५. १२, २१, २२, २५, २७, ३१. ३३, ४७; ६१. २२; ६२. २९; ७१. ४९ ५०; ७३. १३, ३२; १०१. १. ९, २१; १०३. १२२, १२४, १२५ |
| विजयसेण-१ | भिणालकुंड का राजा १०३.९० | विज्जुवेग | विद्याधरराजपुत्र ६ १५७, १९२, १९४ | विभु |
| विजयसेण-२ | मुनि १०३.१०६ | विज्जु-१ | विद्याधरवंशीय राजा ५.१८ | विमल-१ |
| विजया-१ | जिन अजिभ की माता ५. ५२; २०. २८ | विज्जु-२ | विभीषण का मुख्य भट ५५. २३ | इक्ष्वाकुवंशीय राजा ५.७ |
| विजया-२ | पांचवें बलदेव की माता २०. १९६ | विज्जुमुह | विद्याधरवंशीय राजा ५.१८ | विमल-१ |
| विजयारि | जिन स्मंभ के पिता २०. २९ | विणमि | पथम विद्याधर राजा ३. १४४ | विमल |
| विजयावली | एक मंत्री की स्त्री १०४. ४, ६, ७, २३ | विणयदत्त-१ | गृहपति ४८ ६३, ६४, ६५, ६८, ६९, ७३ | विमल |
| विज्जंगय | विद्याधर राजा ६.१६८ | विणयदत्त-२ | श्रावक ७७.९५ | विमल |
| विज्ञासमुग्धाअ | विद्याधर राजकुमार ६. १६८ | विणयमई | गृहपति महिला २०.११७ | विमल |
| विज्ञासुकोसिअ | राक्षसयोद्धा ५६.३४ | विणोअ-१ | = विणयवई २०.११९ | विमल |
| विज्ञाहरवंस | विद्याधरवंश १.३८; ५.१३; ६.८८, ९२ | विणोअ-२ | अहविरिभ का सहायक राजा ३२.२३ | विमल |
| विज्जुतेअ | विद्याधरवंशीय राजा ५.१८ | विणहु-१ | विम्र ८२.४४, ४७-५१, ५६ | विमल |
| विज्जुदंत | विद्याधरवंशीय राजा ५.१८; = विज्जुदाह ५. १८, २०, ३५, ४१ | विणहु-२ | जिन स्वेयंस के पिता २०. ३७ | विमल |
| विज्जुदत्त | विद्याधरवंशीय राजा ५.१८ | विणहुसिरी | मुनि ७०.२९ | विमल |
| विज्जुदाह | (देखो विज्जुदंत) | विदेहा } विदेही } | जिन स्वेयंस की माता २०. ३७ | विमल |
| विज्जुनयण | वानरयोद्धा ५७.११ | विदुमाभ | देखो वइदेही | विमल |
| विज्जुप्पभ-१ | विद्याधर राजकुमार, १५. ६८, ७०; = विज्जुप्पह १५. २१, २३, ७३ | विभम | मुनि, नवें बलदेव के पूर्व जन्मगुरु २०.१९३ | विमल |
| विज्जुप्पभ-२ | राजा १९.६३ | विभीसण | राक्षसयोद्धा ५६.२९ | विमल |
| विज्जुप्पभा-१ | वानररानी ६.९३ | | राक्षण का कनिष्ठ भ्राता ४६. ५५; ६१. २३; ७४. २७, ३०; ७७. ३५; ८५. २५; = विभीषण १. ७६; ५३. ९२; ६१. १३, १५, १७, ६०; ६२. २०, २१; ७२. ३४; ७४. १; ७५. २; ७७. ११, १८; १०३. ६; ८. | विमल |
| विज्जुप्पभा-२ | विद्याधर राजकुमारी, राक्षण स्त्री ८.३६ | | | विमल |
| विज्जुप्पभा-३ | गंधर्वपुत्री, रामस्त्री ५१. १३ | | | विमल |

| | | | | | |
|----------|--|-------------|--|------------|--|
| विमलाभ | राक्षसयोद्धा ७०.६५ | विमुद्दकमल | विद्याधरराजा ८.६१ | वेलकल | वानरयोद्धा ५९.३८ |
| विमलभ्रा | राक्षसरानी ५.१६६ | विस्सभूइ-१ | मुनि, प्रथम वासुदेवका पूर्व | वेलाजकल | विद्याधर ६३.२० |
| विमुचि | विप्र, चंद्रगड का पूर्वभव- नाम ३०.६०, ६३, ६४, ६६, ७५ | , -२ | जन्मनाम २०.१७१ | वेसमण-१ | राजा अट्टारहर्वे तीर्थकर का पूर्वभवनाम २०.१५ |
| विमड-१ | विद्याधर राजा १००.२० | विस्ससेण | विप्र ८२.२८ | वेसमण-२ | विद्याधर लोकपाल १४८, ५१; ७.५५, ५६. ५८.९९. १०१; ८.६७ ६९, ७७ ७८, ८७ ८९, ९४, ११०, ११२, ११७, १२२, १२७, २५१; १६ १४ |
| विमड-२ | वानरयोद्धा ५७.१४; ६७. १२ | विस्सावसु-१ | जिनसंति के पिता २०. ४२ = वीससेण २०.१३४ | वेसाणल | विप्र ३४.४५ |
| वियडोयर | राक्षसयोद्धा ५६.३१ | -२ | राजा १२.३२ | वोमर्थिदु | देखो आयासर्बिदु ७.५३, ६७ |
| विरस | दाशरथी भरहसह दीक्षित राजा ८५.३ | विहि | ब्राह्मणी | संकड | वानरयोद्धा ५७.१२; ६७.१२ |
| विरह | इक्ष्वाकुवंशीय राजा २२.९८ | विहियकल | राक्षसयोद्धा ५९.१२ | संख-१ | मुनि, नवे बलदेव का पूर्व- जन्मनाम २०.१९१, राक्षसयोद्धा ५६.३४ |
| विराहिअ | विद्याधर चंदोयर का पुत्र, पायालंकारपुर का राजा १.७५; ९.२१; ४५.१ ३, ६, १६, १७, १९, २१, ३९; ४६. ८८, ९१; ४७.५१; ४९.२१; ५० २१; ५४.३६; ५७.१४; ५९.३२, ५७, ५८; ६१.२८, ५१; ७६.७, २३; ८५.८.१०; ९०.१८; ९८.४५; ९९.३५; १००.३, १३, १४ ६१; १०१.९; ११३.१४; ११४. १९ | विहीसण | नाणकू १०३.१२७ | , -२ | राक्षसयोद्धा ५६.३४ |
| | | वीर-१ | (देखो विभीसण) | संगाम | वानरयोद्धा ५७.१४ |
| | | वीर-२ | चौबीसवे तीर्थकर, देखो महावीर १.६, २९, ३४, ९०; ५.१४८; ९. ९४; २०. ५०, ५७, ८२, ८४; १०७.१ | संजमसिरी-१ | आर्थिका १७.६३ |
| | | वीरय | राजा ३७.२२ | , -२ | आर्थिका ७५.८२ |
| | | वीरसुसेण | जुलाहा २१.२ | संजयंत-१ | मुनि १.३९; ५ २१.२७, ३६ |
| | | वीःसेण | इक्ष्वाकुवंशीय राजा २२.९७ | , -२ | हरिवंशीय राजा २१.३० |
| | | वीवसंत | बडनय्यर का राजा १०५. ८८, ९०, ९३, ९७, ९८, ९९ | संज्ञथ | दाशरथी भरह सह दीक्षित राजा ८५.२ |
| | | वीससेण | वानरयोद्धा ५९.३८ | संज्ञादेवी | विद्याधररानी ८.३६ |
| | | वीहृथ | लोकपाल वेसमण के पिता, जकलपुर का विद्याधर राजा ७.५५ | संज्ञावली | रावणजी ७४.११ |
| | | वेगवई-१ | राक्षसयोद्धा ५६.२८ | संताव-१ | राक्षसयोद्धा ५९.५ |
| | | वेगवई-२ | विद्याधररानी ६.१७१ | संताव-२ | वानरयोद्धा ५९.७.९ |
| | | , -३ | विद्याधरकुमारी ८.१८४. १९४ | संताव-३ | , , ५९.३२ |
| | | , -४ | विद्याधर रानी, आहला की माता १३.३५ | संतास | , , ५७.५ |
| | | वेजयती | विप्रकुमारी, सीया का पूर्व- भवनाम १०३. ९५. ९९, १००, १०२, १२०, १३६, १३७, १४५, १४८ | संति | सोलहवे तीर्थकर १.४; ९. ४९; २०.६, ४२, ५२ ११२, १३४, १३७; ६६. ६, २६, ३१; ६७.२. ५, २८, २९, ३२, ३४, ३६, ४२; ६८.१६, १७.२१, २२, ५०; ६९.१३; ७७.३. ५, ६९; ९५. ३४. |
| | | वेणुदालि | छठे बलदेव की माता २०. १९६ | संदेहपारअ | चक्रवर्ती भी. ५.१४९, १५३ राजा महिद-१ का मंत्री १५.२३ |
| | | वेय | सुवर्णकुमार देवों का इन्द्र ८७.४, ६ | | |
| | | | वेदशाख ४. ८०; - सथ ११. ७२; - सुइ १०५.८० | | |
| विसाल-१ | विद्याधरराजा २८.१०२ | | | | |
| , -२ | कुम्बरगाम निवासी ४१. ५५, ५६, ५९, ६०, ६२ | | | | |
| , -३ | वानरयोद्धा ५९.१४ | | | | |

| | | | | | |
|--------------|---|-----------------------------------|--|------------|--|
| संपरिक्रिति | राक्षसवंशीय राजा ५.२६० | सञ्चरुद्ध | गृहपति ४८.६३ | समाकुब्ध | राक्षसभट ६१.२८ |
| संपुष्पिण्डु | दाशरथी भरद्वाह सह दीक्षित राजा ८५.५ | सञ्चासअ | दाशरथीभरद्वाह सह दीक्षित राजा ८५.३ | समाण | वानरभट ५७.३ |
| संब | कण्ठपुत्र १०५.१५ | सञ्छन्द | विद्याभर सुभट ९९.६४ | समाहि | वानरभट ५७.९ |
| संबुक | खरदूसण का पुत्र १.७३; ४३.१८, १९.२१; ४४.२९; ४६.२५; ४९.४; ९५.२२; ९८.४३; ११८.३, १२.१५ | सढ | राजा ३२.२२ | समाहिमुत्त | मुनि १०३.८२ |
| संभमदेव | धनिक ५.१०१ | सगंकुमार | चौथा चक्रवर्ती ५. १५३; २०. ११३. १२४, १३७, ३५.६८; ४६.४४ | समाहिबहुल | वानरभट ६७.११ |
| संभव-१ | तीसरे तीर्थंकर १. २; ५. १४७; ९.९१; २०.४. २९; ९५ ३२ | सत्तद्विभ | मुनि ६३.३२ | समुद् | वेलेधरपुरका राक्षस राजा ५४.३९, ४०, ४१, ४२ |
| , -२ | मुनि, दूसरे वासुदेव के पूर्वजन्मशुरु २०.१७६ | सत्तुज | दसरुद्ध-पुत्र शत्रुघ्न ३२. ४७; = सत्तुग्घ २८.१००; ३७. २०, ३९; ८६. १, ३, ७, १०, ११, १३, २३. २७. ३०, ३८, ४२. ५२, ५३, ५४, ५५; ८७. १७, १८; ८८. ३, ३, ३७, ३८, ४२; ८९. ३४, ३६, ३९. ४१, ५०, ५२, ५८, ६३; ९८. ४१; १००. ४०, ६०; ११३. ६८ ७०; ११४. १, १८; = सत्तुग्घण २५.१४; = सत्तुग्घय ३८. ३; = सत्तुनिहण १.६६; = सत्तुहण ८०.३८ | समुद्दत्त | वणिकू १०५.८२ |
| संभिन्न | राक्षसयोद्धा ४६.८७ | | | समुद्दमुणि | मुनि ८८.३५ |
| संभू | राक्षसयोद्धा ५९. २, १२, १४; ६१.२६ | | | समुद्दविजअ | जिन नेमि के पिता २०.४८ |
| संभूअ-१ | इक्ष्वाकुवंशीय राजा ५.४३ | | | सम्मा | जिन विमल की माता २०.३९ |
| , -२ | राजा, बारहवें चक्रवर्ती का पूर्वजन्मनाम २०.१५५ | | | सम्मुद् | द्वितीय कुलकर ३.५२ |
| , -३ | मुनि, प्रथम वासुदेव के पूर्वजन्मशुरु २०.१७६ | | | सम्मेअ-१ | वानरभट ५७.११ |
| , -४ | हरिवंशीय राजा २१.९ | | | सम्मेअ-२ | ,, . ५९.३७ |
| संत्र-१ | मुनि, सत्तरहवें तीर्थंकर के पूर्वजन्मशुरु २०.२० | सत्तुंदम | खेमंजलीपुर का राजा ३८.३९, = सत्तुदमण ३८. २७; ४७, ५१; (देखो अरि- दमण) और जियसत्तु राजा ३२.२२ | सयवाहु | माहेसर का राजा सह- सत्तुकिरण के पिता १०. ७४ |
| , -२ | मुनि, अठारहवें तीर्थंकर के पूर्वजन्मशुरु २०.३० | सत्तुदमघर | देखो सत्तुंज | सयंपभ | मुनि, तीसरे तीर्थंकर के पूर्व- जन्मशुरु २०.१७ |
| , -३ | जिन अभिगंधर्वण के पिता २०.३० | सत्तुनिहण सत्तुहण | मुनि, दसवें तीर्थंकर के पूर्वभग्नशुरु, २०.१८ | सयंपभा-१ | मंदोयरी की बहिन १०. ८० |
| सक | विद्याधर राजा इंदू १२. ८२. १३२; १३.११, १९. २१, ४९ | सत्तुदमघर सत्तुनिहण सत्तुहण | ब्राह्मणी, एठव्ययअ की माता ११.९, १३, १५, १९ | ,, -२ | प्रथम वासुदेव की पटरानी २०.१८६ |
| सगर | द्वितीय चक्रवर्ती १.४१; ५. ६३, ६८, १४३. १५२ १६८, २०२, २१३; २०. १०९ = सयर ५.१७३, १७३, १७५. १७६. २१५, २१६; | सत्तुदमघर सत्तुनिहण सत्तुहण | वणिकू ३३.६५ | ,, -३ | राक्षस भट ५६. २७; ५९. २, १५; ६१.२६ |
| सञ्चमई | हणुअ की स्त्री, वरुण की पुत्री १९.३२ | सत्तुदमघर सत्तुनिहण सत्तुहण | वानरभट ५९.१४ | ,, -२ | तीसरे वासुदेव ५. १५५; ७०. ३४; |
| | | सत्तुदमघर सत्तुनिहण सत्तुहण | राक्षसभट ५६.३८ | ,, -३ | रावण का पूर्वजन्मनाम, १०३.९१, ९७, ९९. १००, १०४, ११९, १३६, १३७, १४० |
| | | सत्तुदमघर सत्तुनिहण सत्तुहण | वानरभट ५७.११ | | (देखो सगर) |
| | | सत्तुदमघर सत्तुनिहण सत्तुहण | छठे वासुदेव के पिता २०. १८२ | सयलजणभूसण | विद्याधर राजा, मुनि १. ८५; = सयलभूसण १०.१. ५४; ५७, ५९, ६१; १०२. ५७, १८०; १०३.१, १२४, १६३; १०४.१; १०५.२ |
| | | सत्तुदमघर सत्तुनिहण सत्तुहण | | सयहुया | विद्याधर रानी १०६.१ |

| | | | | | |
|-------------|---|----------------------|---|-----------|--|
| सरसा | विप्रवधू ३०.६०,६१,७०, ७६ | ससंकुधम्म ससि-१ | विद्याधरवंशीय राजा ५.४४ आठवें तीर्थंकर ५.१४७:- पभ ९९१; -पभ १.३; (देखो चंद्रपभ) | सहस्सभाअ | यहपति ईंद्र का पूर्वभव १३२७,२८ |
| सरस्सई | पुरोहित महिला १०३. ९२,९५ | | | सहस्समइ | रावण का मंत्री ४६.९२ |
| सरह-१ | राक्षसभट ८.१३२ | ससि-२ | रंभक का शिष्य ५.९४, ९५, ९८ १११ = ससिअ ५.९९,१०४ | सहस्सविजअ | चंद्रमंडल का वैरी ६३.२० |
| „ २ | इक्ष्वाकुवंशीय राजा २२. ९८ | | | सहसार | विद्याधर राजा ईंद्र के पिता ७.१, १६५; १२. ३१; = सहस्सार १२. ७४ ७५; १३.१,२,७,१० |
| „-३ | वानर योद्धा ६२.३२ | ससि-३ | ७ ४७ ईंद्र का पूर्वदिशा का लोकपाल | सागर | वानरयोद्धा ५७. १९; = सागर ५४.२२ |
| „-४ | लक्ष्मण का पुत्र ९१.२० | ससिअ | (देखो ससि) | सागरदत्त | मुनि, चौथे वासुदेव का पूर्वजन्मनाम २०.१७१ |
| „-५ | दाशरथी राम का सहायक राजा ९९.४९ | ससिकुंडल | विद्याधर राजा ६.१६६ | | |
| सल्ल-१ | वानरभट ५४ ३४ | ससिचूला | लक्ष्मण की रानी ९८.२ | सामंत | रावण का दूत ६५. ८, १०,११ |
| सल्ल-२ | दाशरथी भरह सह दीक्षित राजा ८५.२ | ससिपभ ससिर्षभ-१ } | देखो ससि-१ | सायर | (देखो सागर) |
| सव्व | राजा ३२.२३ | ससिपह | इक्ष्वाकुवंशीय राजा ५.५ | सायरघोस-१ | मुनि, आठवें यलदेव के पूर्वभवगुरु २०.१९३ |
| सव्वकिसि | लक्ष्मण का पुत्र ९१.२५ | ससिपभ-२ | राजा, चक्रवर्ती मधुवा का पूर्वभवनाम २०.११० | „-२ | देसभूसण और कुल- भूसण के विद्यागुरु ३९.८८ |
| सव्वसुत्त-१ | मंत्री १०४.३,१० १५,१६, २० | ससिमंडल-१ | वानरयोद्धा ५९.३८ | „-३ | वानर भट ६७.११ |
| „-२ | सीया को दीक्षा देने वाले मुनि १०२.४८ | „-२ | सुरगीव(य)पुर का विद्याधर राजा ६३. १९ | सायरदत्त | वणिक १०३.९.१० |
| सव्वजगाणदयर | मुनि, नवें तीर्थंकर के पूर्व- जन्मगुरु २०.१८ | ससिमंडला | रावण की स्त्री ७४.९ | सायरभह | इक्ष्वाकुवंशीय राजा ५.४ |
| सव्वजसा | जिन अणंत की माता २०.४० | ससिरह | इक्ष्वाकुवंशीयराजा २२.९७ | सायरबिहि | नैमित्तिक २३.१० |
| सव्वदसरह | वानरभट ५७.५ | ससिवद्धण | वानर सुभट ११२.२ | सायरसर | वानरभट ५७.१३ |
| सव्वदुट्ट | वानर भट ६७.१० | सहदेवी | चक्रवर्ती मणकुमार के पिता, गयपुर का राजा २०.१२४ | सार | „ „ ५७.१३ |
| सव्वपिय | „ „ ६७.१० | सहसकिरण | हक्ष्वाकु रानी, सुकोसल की माता २१.७९,८९; २२.२,३०,४४ | सारण | रावण का मंत्री ८.१६. १३३,२७४; १२.९२;४६. ११;५३.९२;५६.२८;५९ २,८;६१.१०;७१.३४ |
| सव्वभूयसरण | दसरह के दीक्षागुरु १. ६८; ३०.२८, ५९; ३१.२; = सव्वभूयहिअ ३१. ३४; = सव्वसत्तहिअ २९. ३६; ३१.३४ | | माहेसर नगर का राजा, रावण द्वारा पराजित १. ५७; १०. ५४, ८१; २२.१०२; = सहस्सकिरण १०.३४,५५,५८,६२, ६३, ६६ ६७ ६८ ७५,७६, ७९, ८३,८६,८७,८८ | साल | वानरभट ५७.११ |
| सव्वसार | वानरभट ५७.५ | सहसक्ख | राक्षसभट ५६.२९ | साविती-१ | ब्राह्मणी ८२ ८२ |
| सव्वसिरी | विद्याधर रानी १३.४५ | सहस्सनयण | गयणवलहपुर का विद्या- धर राजा ५.६७,७०,७२, ७३,७५,७९,१११, ११२, ११९ | „-२ | „ १०३.१०१ |
| सव्वसुत्त | मुनि, तेरहवें तीर्थंकर के पूर्वजन्मगुरु २०.१९ | | | साहसगइ | विद्याधर राजकुमार तारा के वर सुगीव का प्रति- स्पर्द्धी १.५६,७६; १०.३, ११;४७.४३,४५,४६, ४७; ५१. १७, १८, १९, २३; ५३.३५ |
| सव्वसुंदर | ससिर्षि ८९.२ | | | साहा | ब्राह्मण विणोअ २ की स्त्री ८२.४७ |
| ससंक-१ | विद्याधरवंशीय राजा ५.४३ | | | | |
| „-२ | राक्षसभट ५६.२८ | | | | |
| „-३ | दाशरथी भरहसह दीक्षित राजा ८५.२ | | | | |

| | | | | | |
|-------------|--|------------|--|-------------|--|
| साहुवच्छल | वानर भट ५७.१८ | सिरिचंदा | तडिकेस की प्रणयिनी ६.१०२ | सिरिमालि | मालवंत का पुत्र १२.९७, ९८, ९९, १०२, १०३, १०४, १०५ |
| सिद्धत्थ-१ | महावीर के पिता २.२१; २०.५० | सिरितिलभ-१ | सप्तर्षि ८९.२ | सिरिरंभा | विद्याधररानी ६.१७० |
| सिद्धत्थ-२ | बाइसवें तीर्थंकर का पूर्व-भवनाम २०.१५ | सिरिदत्ता | मुनि १०४.२८ | सिरिवक्ख | हरिवंशोराराजा २१.३० |
| सिद्धत्थ-३ | मुनि नवें बलदेव के गुरु २०.३०६ | सिरिदामा-१ | राणी ८२.३५ | सिरिवद्धण-१ | राजा. संजयंत मुनि का पूर्वभव नाम ५.२९.३१, ३६ |
| सिद्धत्थ-४ | दाशरथी भरद्वाह दीक्षित राजा ८५.२ | सिद्धिदास | दाशरथी राम की विद्या-धर रानी. मणोरमा की बहिन ९०.२८; ९१.१८ | सिद्धिद्विज | हरिवंशीय राजा २१.२९ |
| सिद्धिसिला | देवर्षि, लव और कुस के विद्यागुरु ९७.१३, २०, २१, २२; ९९.८, ९, ३७; १००.२६, २९; १०१. ४२, ४६, ४७; १०४.३२, ३३ | सिरिदेवी | श्रावक ११८.६६ | सिरिसेणराय | देखो नंदिवद्धण ३-८२.९२ |
| सिरिकंठ | देखो कोडिसिला ४८.१०८ | सिरिधम्म | विद्याधर रानी ९.५२ | सिरिसेल | पोयणपुर का राजा ७७.८२, ८६, ८७, ८८, ९६, ९७, ९८, १०५, ११३, ११७ |
| सिरिकंत | वाणरदीवका प्रथम विद्या-धर राजा ६.३, ४, ६, ८, १२, १८, २४, २८, ३६, ३८, ४२, ६३. ६४, ७४ | सिरिधर-१ | राजा, उच्चोसवें तीर्थंकर का पूर्वभव नाम २०.१५ | सिरिसेल | राजा १५.१९ |
| सिरिकंत | सीयास्वयंवर में उपस्थित राजा २८.१०१ | सिद्धिधर-१ | सीया स्वयंवर में उप-स्थित राजा २८.१०२ | सिरिसेल | हणुम का अपरनाम १७.२०; १८.१; १९.११, ३५; ४८.१२३; ४९. १५, २२; ५२.१५; ५३.८२; ७१.३५, ४३, ४४; ९०.१८; ९९.६६; १०८.५० |
| सिरिकंत | श्रेष्ठी, रावण का पूर्वभव-नाम १०३.११, १२, ११, ११९ | सिरिधरा | लक्ष्मण का पुत्र ९१.२०-२२ | सिरिसेल | देखो सिरिधरा |
| सिरिकंता-१ | विद्याधररानी ८.१८७ | सिरिधरा | सीहोदर की रानी ३३.७१, = सिरिहरा ३३.७२ | सिरिसेल | विद्याधर रानी १०१.५७ |
| सिद्धिगीव | वानर सुग्गीव की पुत्री ४७.५३ | सिरिधरा | सप्तर्षियों के पिता, महापुर का राजा ८९.३, ६ | सिरिसेल | मर्हिद -१ का द्वारपाल १७.१८ |
| सिद्धिगीव | रावण की स्त्री ७४.१० | सिरिधरा | विद्याधररानी ५.२३३ | सिरिसेल | गृहपतिपुत्र ४८.७८ |
| सिद्धिगीव | दाशरथी भरद्वाह की प्रणयिनी ८०.५२ | सिरिधरा | वानर रानी ६.८३ | सिरिसेल | राक्षसभट ५६.३६ |
| सिद्धिगीव | रानी १०३.३९, ४२ | सिरिधरा | विद्याधर जम की माता ७.४६ | सिरिसेल | पांचवें वासुदेव के पिता २०.१८२ |
| सिद्धिगीव | राक्षसवंशीय राजा ५.२६१ | सिरिधरा | वानर सुग्गीव की बहिन, रावण की स्त्री ९.४, २८, ५० | सिरिसेल | जिन नेमि की माता २०.४८ |
| सिद्धिगीव | कौटुम्बिक ३३.२४ | सिरिधरा | राजपुत्री ३९.८१ | सिरिसेल | श्रावक १२.३२ |
| सिद्धिचंद-१ | पुटव विदेह का राज-कुमार, मुनि, आठवें बल-देवका पूर्वभवनाम २०-१९१; १०३.६१, ६५, ८१, ८२, ८६ | सिरिधरा | सप्तर्षि ८९.२ | सिरिसेल | विद्याधरयोद्धा १२.९८ |
| सिद्धिचंद-२ | वालिका का मंत्री ४७.१९ | सिरिधरा | वानरदूत ४८.१२४; ४९.१ | सिरिसेल | सीयास्वयंवर में उपस्थित राजा २८.१०२ |
| | | सिरिधरा | पुरोहित, लक्ष्मण का पूर्वजन्मनाम १०३.९२, ९५, ९८, ९९ | सिरिसेल | राक्षसयोद्धा ५६.३० |
| | | सिरिधरा | अहहंशकी रानी, सिरिकंठ की माता ६.३ | सिरिसेल | देखो अग्निभूइ १०५.२० |
| | | सिरिधरा | सुतारा की माता १०.२ | सिरिसेल | देखो सीया |
| | | सिरिधरा | रावण की स्त्री ७४.९ | सिरिसेल | पांचवें कुलकर ३.५३ |
| | | सिरिधरा | आर्यिका ११४.२१ | सिरिसेल | छठें कुलकर ३.५३ |
| | | सिरिधरा | विद्याधर राजकुमारी, किर्किधि की रानी १.४४; ६.१५८, १६०, १६५, १७२, १७३, २०७, २१४ | सिरिसेल | मुनि, पांचवें तीर्थंकर के पूर्वजन्मगुरु २०.१७ |
| | | सिरिधरा | | सिरिसेल | पुंडरीगिणि के तीर्थंकर २३.४, ५ |

१. व्यक्तिविशेषनाम

| | | | | |
|------|--|--|--|--|
| सीयल | दसवें तीर्थंकर १.३; ५. १४७; ९. ९२; २०. ५. ३६, ९७; २१. २. ९५. ३३ | ४१; ७९. ३, २२; ८०. १९. ५०; ८१. ४; ८५. २२; ८९. ५६. ५७; ९१. १८; ९२. १, ११. २६; ९३. २, १४, २४, २५ २७, ३१-३३; ९४. ४, ६, ११-१३, १८-२०, २३, २७, २८, २९ ३७, ३८, ४७, ५७. ६०, ६१, ७८, ८६; ९५. १८-२०, २७ ४३, ४८, ६७. ९६; ४, ८, ९, १० १७, २५, २८ ४३, ४५, ४७, ४८; ९७. २, ६, १७, १९, २९; ९८. ४६, ४९, ७१; ९९. ८, ११. १३, १५, २१, ४०, ४१, ४५; १००. २७, ३४ ३५; १०१. ११, १२, १९, २१-२३, २७, २८, ३१, ३८, ४०, ४१, ४५, ४६ ४८, ५०. ७१, ७३, ७४; १०२. ३, ३२, ४१, ४६, ५०, ५३; १०३. ३. १२०. १३६, १४३. १६४-१६६. १७०; १०५. १, ३ ७, ११३; ११३. १५, ५९; ११७. ७, १९, ३८, ४७, ४५; ११८. १, ३, ४, ४७, ८५ ९१. = सीइंद ११८. ३४, ३८; = सीयाइंद ११७. ३५; ११८. १; = सीयादेव ११७. ४५ | सीहजस सीहणाय सीहदय-१ ,,-२ सीहबलंग सीहरव सीहरह-१ ,,-२ ,,-३ ,,-४ सीहवाह सीहवाहण-१ ,,-२ सीहविक्रम-१ ,,-२ सीहसेण-१ ,,-२ सीहसोदास सीहिया सीहेंदु सीहोदर } सीहोयर } | इक्ष्वाकुवंशीय राजा ५.३ वानरयोद्धा ५४.१७, १९ इक्ष्वाकुवंशीय राजा ५.४३ चक्रवर्ती हरिलेण के पिता ८. १४३ (देखो हरिकेड) राक्षसयोद्धा ५६.३८ वानरयोद्धा ५४.३६ राजा, सत्तरहवें तीर्थंकर का पूर्वभवनाम २०. १५ सोदास का पुत्र, इक्ष्वाकु वंशीय राजा २२. ७६, ९४ अहविरिम का सहायक राजा ३७. ११ वानरयोद्धा ५४. २२ इक्ष्वाकुवंशीय राजा ५. ४३ राक्षसवंशीय राजा ५. २६३ अरुणपुर का राजा, हणुम का पूर्वभवनाम दाशरथी पउम का सहायक राजा ९९. ४९ गुजाविहाणनयर का विद्याधर राजा १०१. ५६ अर्णत जिन के पिता २०. ४० मुनि १०५. १०९ सोदास का अपरनाम २२. ७७ नघुल की रानी २२. ५९, ६०, ६१, ६५, ६६, ७०-सुय २२. ७१ (सोदास) संघपुर का राजकुमार, देखो सीहचंद ७७. ८६, ८७, ८९, ९४, ९५ ३३. २५; उज्जेणी का राजा, देखो सीहउदर ३३. ५५, ५८, ५९, ६२, ७२, ७६, ८३, ९७, ९९, १०१, १०३, १०४, १११, ११८, १२०-१२३, १३३-१३७, १३९, १४७; ३४. २०, २१, २५; ३७. २७ |
| सीया | जणम की पुत्री, पउम की पटरानी, देखो बहदेही १. ६६-६९, ७४, ७६, ८०, ८३-८५; २६. ९८, १०२, १०३; २७. २, ३, ४१; २८. १-३, ७, १६, २०, ९८, १२१, १२३, १३९; ३०. ४, ९, ३३, ५५, ७९, ८०, ९६, ९८; ३१. १०४, १२४; ३२. १६, २५, ४२, ४९, ५४; ३३. १, ९०, १२६, १२८; ३४. ९, ११, १२, २९, ३४; ३५. २, ३, ३२, ७३; ३६. ५. २४, २६, ३८, ४०; ३७. ६१; ३८. २, २१, ५०, ५२, ५६; ३९. १३, २८, ३५; ४०. ८, १५; ४१. ६-८, ७१, ७६, ७७; ४२. २०, २१, ३५; ४४. ५, ३०, ३३, ३४, ४२, ४९, ५६; ४५. २५-२७, ४२; ४६. ६. ९, १५, १६, २५, ३६, ४२, ४५. ५७, ६४, ७९, ८३; ४७. ३, ३०, ५५, ५७; ४८. ३-५, ३५, ३९, ४३, ६२, ९५, ९६, ११३, ११४; ४९. ४, ३०, ३१; ५१. २५; ५२. २६; ५३. ६, १०-१३, १५, १६, २१, ४६, ५३, ५६, ५८, ५९, ६१, ७३, १२१, १४७; ५४. ८; ५५. २८; ६१. १८; ६२. ८, २०; ६३. १४; ६४. ६; ६५. ६. १९, २४, २७, ३६, ३७, ३९, ४०, ५०; ६७. ४४; ६९. २२, २६, ४०; ७०. १४, २०, २१; ७१. ३१; ७१. ५४; ७३. १४; ७६. ५, ८, ११, १२, १४, १७, १८, १९, २२, २४; ७७. १४, २४, २९, ४१. ६९; ७८. १६, | सील सीला सीह-१ ,,-२ सीहउदर सीहकटि-१ . ,,-२ सीहचंद सीहचूड | वानरयोद्धा ५७. ११ सातवें बलदेव की माता २०. १९६ मुनि, द्वितीय बलदेव के पूर्वजन्मशुक्र २०. १९२ राक्षसभट ८. १३२ देखो सीहोदर ९९. ५० राक्षसभट ५६. २७; ५९. २, ७, ९; ६१. २६ वानरभट ५९. ३२; ६७. ११ देखो सीहेंदु, ७७. ९६ विद्याधरवंशीय राजा ५. ४६ | |

| | | | | |
|------------|-----------------------------|---------------------------|-------------|---------------------------|
| सुइरभ | विप्रपुत्र ८२.२८,३३,३९ | २० ३५;४६.८९;४७.३,७, | १-३ | मुनि, छठे बलदेव का |
| सुंद | खरदूसण और चंद्रगहा | ९-११,१४,१६,१८, २१, | १-४ | पूर्वभव नाम २०.१९० |
| | का पुत्र ४३.१८;४५.४०, | २२,२५ २९,३०,३१ ३४, | | पांचवें बलदेव ७०. ३५ |
| | ४१,४४;५६.२९;७१ ३६ | ३५,३७-३९,४१,४२,४४, | १-५ | (देखो सुदंसण) |
| | -सुय सुंद का पुत्र ११३. | ४५ ४८; ४८.६, ७. ३४, | सुदरिसणा-१ | मुनि १०३.१४४ |
| | १३,२०,२७ | १०९, १२२; ४९.९, १०, | | तीसरे बलदेव की माता |
| दरमाला | विद्याधर रानी, अंजणा | १३,१६,२१,२४. ३७;५२. | १-२ | २०. १९६ |
| | की नानी, पंडिसुज्जभ | २७; ५३.१८, ३५ १२१; | | रानी, देवर्षि सिद्धरथ |
| | की माता १७.१०३ | ५४.२.३३;५५. ४८; ५७. | | का पूर्वजन्मनाम, १०४. |
| सुंदरसत्ति | दाशरथी भरहसह दीक्षित | २०;५९.४२,५०,६८,७८; | सुधम्म-१ | २,३२ |
| | राजा ८५.५ | ८०;६०.३;६१. ११, २९; | | मुनि, सातवें बलदेव के |
| सुदरा | राजपुत्री. सिरिवद्विय की | ६२ २१, २३, ३१; ६४.३; | १-२ | पूर्वजन्मशुभ २०.१९३ |
| | रानी ७७.८५ | ६८.२६;६९ २,४,४३;७२. | | मुनि, तृतीय बलदेव के गुरु |
| सुंदरी-१ | विद्याधर रानी, उदरंभा | ३३.३४;७३.३२;७६.२३; | सुनंद-१ | २०.२०५ |
| | की माता १२.७० | ७७.९,२३;८५.२५;९४.३; | | मुनि, नीसवें तीर्थंकर के |
| सुंदरी-२ | वानरराज सुग्गीव की | ९५.२३;९८.४५;९९.६५; | १-३ | पूर्वजन्मशुभ २०.२० |
| | पुत्री ४७.५३ | १०१.९, २५;१०३.१२२; | | महापुत्र १०४.२६ |
| १-३ | रावण की स्त्री ७४.९ | ११२. २; ११३. १, १५; | सुनंदा | सीयलजिन की माता |
| सुकंठ | अरुणपुर का राजा १७. | ११४.३,१९ | | २०.३६ |
| | ५५ | राक्षसवंशीय राजा ५ २६० | सुनयण | राक्षसभट ८.१३३ |
| सुकेंड | पुरोहितपुत्र, पुनः मुनि ४१. | दाशरथी भरहसह दीक्षित | सुनामा | यक्षिणी ३५.३४ |
| | ४६,४७,४९,५०,५७ | राजा | सुनेता | पांचवें वासुदेव की पटरानी |
| सुकेंस-१ | देखो सुकेसि ६. १४८. | विद्याधर राजा १०.२० | | २०.१८६ |
| | २१९,२२१;७.१६३ | संबुक्क की लक्ष्मण द्वारा | सुपइह | सुपासजिन के पिता २०. |
| १-२ | अरविरिभ का सहायक | अधिकृत तलवार ४३.१९, | | ३३ |
| | राजा ३७.१० | २३; ४५. १४ (देखो | सुपास | सातवें तीर्थंकर १. ३; ५. |
| सुकेशि | राक्षसवंशीय राजा, देखो | सूरहास) | | १४७;९.९१; २०.४, ३३, |
| | सुकेंस (१) १.४६;६ | राजा, तीर्थंकर महावीर | सुपासकिति | ५४;९५.३३ |
| | १८३, २०१, २४३ | का पूर्वभव नाम २०.१६ | | बलदेव लक्ष्मण का पुत्र |
| सुकोसन | इक्ष्वाकुवंशीय राजा २१. | वानरभट ७०.६५ | | ९१.२५ |
| | ८९;२२.६ १३, १४, २१, | श्रावक ११८.६५ | सुपुण्यचंद | वानरभट ६७.११ |
| | २२, ३९, ४०, ४४, ४९, | श्रेष्ठि-पत्नी १०३.७ | सुपुभ-१ | चौथे बलदेव ५.१५४; = |
| | १०६;२८.१४१ (देखो | वानरराज सुग्गीव की | | सुपुह ७०.३५ |
| | कोसल) | पत्नी १.५६;३ १०; ४७. | १-२ | महापुर का राजा २०. |
| सुग | देखो सुय ८.१६ | ११, १४, १५, २३, २४ | | १२१ |
| सुगुप्ति | मुनि ४१.३९,४१,४४,६६ | (देखो तारा) | १-३ | राजा, चंद्रोदय व सूर्यो- |
| सुग्गीव | वानर राजा, दाशरथी | पांचवें बलदेव ५. १५४ | | दय के पिता ८२.२५ |
| | पउम का सहायक. वानर | (देखो सुदरिसण) | १-४ | द्विजयावई नगरी का राजा |
| | सैन्य का नायक १.५५ ५६, | अट्टारहवें जिन के पिता | | १०३.१३० |
| | ७५; ३ १०; ९ ४ ६, ४५, | २० ४४ | सुपुभगुरु | मुनि २०.१४२ |
| | ५०;१०.५; १९. ३७,४०; | मुनि, तृतीय वासुदेव के | सुपुभदेवी-१ | राक्षसरानी ५.२५३ |
| | | पूर्वजन्म गुरु २० १७६ | १-२ | विद्याधररानी ६३.१९ |

| | | | | | |
|------------|--|-------------|---|--------------|---|
| सुपभा-१ | विद्याधर घणवाहण१ की रानी ५.१३८, १३९ | सुभूषण | त्रिभीषण का पुत्र ६७. १६; ११४.३ | सुमिता | लक्ष्मण-माता, हस्तरह की पत्नी २५. ४ (देखो सोमिच्छि १) |
| ,,-२ | चौथे बलदेव की माता २०.१९६ | सुमह-१ | पाँचवें तीर्थंकर १. २; ५. १४७; ९. ९१; २०. ४, ३१; ९५. ३१ | सुमिच्छि | (देखो सोमिच्छि २) ४८. ११ |
| ,,-३ | कणभ-१ की स्त्री २८. १३२ | ,,-२ | रावण का सारथि १२. ११९ | सुसुह-१ | राक्षसवंशीयराजा ५. २६१ |
| सुपह-१ | (देखो सुपयभ-१) | ,,-३ | महिंद्र (१) का मंत्री १५. १७ | ,,-२ | कोसंबी का राजा २१. २ |
| ,,-२ | मुनि २०. १०२ | | चक्रवर्ती स्वर्ग की माता ५. ६२ | सुय | रावण का मंत्री, राक्षस मठ, देखो सुग ८. १३३, २७४; ४६. ११; ५३. ९२; ५६. २८; ५९. २, ८; ६१. १०; ७१. ३४ |
| सुबंधु | बजाजंघ की माता ९५. ६४ | सुमंगला-१ | विद्याधर धात्री ६. १६५ | सुयधर | दाशरथी भरहसह दीक्षित राजा ८५. ४ |
| सुबंधुतिलक | कमलसंकुलपुर के राजा, सुमिता के पिता २२. १०७ | ,,-२ | सुमह-जिन की माता २०. ३१ | सुयसागर | मुनि ५. २०५ |
| सुबल-१ | इक्ष्वाकुवंशीयराजा ५. ११ | ,,-३ | उसह जिन की रानी, चक्रवर्ती भरह की माता २०. १०६ | सुयसागर | मुनि ५. २२३, २२५ |
| ,,-२ | मुनि, प्रथम बलदेव का पूर्वभवनाम २०. १९० | | विद्याधररानी १५. २१ | सुरकता | इक्ष्वाकु रानी ११. ८ |
| सुबुद्धि-१ | वालखिल्ल का मंत्री ३४. २१ | सुमणा | दाशरथी भरह की प्रणयिनी. ८०. ५१ | सुरजेष्ठ | राजा, इकोसवें तीर्थंकर का पूर्वजन्मनाम २०. १५ |
| ,,-२ | अश्विरिय का दूत ३७. १८ | सुमणुस्सुया | सोमपुर का राजा ७७. १००, १०४ | सुरप्पभ | वंसस्थलपुर का राजा ४०. २; सुरप्पह ४०. १५ |
| ,,-३ | दाशरथी भरहसह दीक्षित राजा ८५. ३ | सुमाल | रावण के पितामह १. ४८, ५०; ६. २२०, २४०; ७. १५, २१, ३६-३८, ५९, १५२, २५८; ८. ६७, ६९, ७५, १३५, १३७, १४२; ६१. २९; ७७. ११ | सुरमहै | वानर सुग्गीव की पुत्री ४७. ५४ |
| सुभह-१ | इक्ष्वाकुवंशीयराजा ५. ४ | सुमालि | राजा, महु-२ का पूर्व भव १२. ११-१३, १६, १९, २४, २५, २७, २९, ३० | सुरमंत | सप्तर्षि ८९. २ |
| ,,-२ | सीयास्वयंवर में उपस्थित राजा २८. १०२ | | मुणिस्सुवयजिन के पिता २०. ४६ | सुरयणजडि | देखो रयणजडि १०१. ९ |
| ,,-३ | अश्विरिय का सहायक राजा ३७. १० | | चक्रवर्ती मघवा के पिता २०. १११; २१. ११ | सुरसन्निभराय | गंधव्वगीयनयर का विद्याधर राजा ५. २४३ |
| ,,-४ | देखो भह ७०. ३५ | सुमित्त-१ | तीसरे बलदेव का पूर्व जन्मनाम २०. १९० (देखो नंदिसुमिच्छि) | सुरसुंदर | विद्याधर राजा ८. ३४, ४१ (देखो अमरसुंदर) |
| सुभहा-१ | दूसरे बलदेव की माता २०. १९६ | ,,-२ | मुनि, छठे बलदेव के गुरु २०. २०५ | सुरारि | राक्षसवंशीयराजा ५. २६२ |
| ,,-२ | कणभ-१ की पुत्री, दाशरथी भरह की स्त्री २८. १३२, १३६; ७६, १४; ८०. ५१ | ,,-३ | दाशरथी भरह सह दीक्षित राजा ८५. ५ | सुरूवनाम | भूताधिप ५. १०३ |
| सुभा-१ | रावण की स्त्री ७४. ११ | ,,-४ | | सुलोयण | गयणवल्लभ का विद्याधर राजा ५. ६६, ६९, ७१, ९१, ९३ |
| ,,-२ | दाशरथी भरह की प्रणयिनी ८०. ५० | | | सुवइष्ट | राजा, बीसवें तीर्थंकर का पूर्वभवनाम २०. १५ |
| सुभाणुषम्म | राक्षसवंशीय राजा ५. २६२ | | | सुवज्ज | विद्याधरवंशीयराजा ५. १६ |
| सुभाणुनाम | मुनि १०४. २२ | ,,-५ | | सुवण्णकुंभ | मुनि, प्रथम बलदेव के गुरु २०. २०५ |
| सुभीषण | राक्षसमठ ५६. ३१ | ,,-६ | | सुवयण | विद्याधरवंशीय राजा ५. १८ |
| सुभूम | आठवें चक्रवर्ती ५. १५३; २०. १४० | | | सुविहि | वानरयोद्धा ५७. ८ |

| | | | | | |
|---------------------|--|-------------|---|----------|---|
| सुव्यंत सुव्यय-१ | राक्षसवंशीयराजा ५.२६१ देखो मुणिसुव्यय ३३. ५६ | सुरंजयकुमार | राजकुमार, दूसरह का पूर्वजन्म नाम ३१. १५, ३०-३२ | सेयंस-१ | ग्यारहवें तीर्थंकर १.३:५. १४७;६.९०;९.९३;२०. ५.३७,१९८;१५.३४ |
| ॥-२ | मुणिसुव्यय का पुत्र २१. २३.२७ | सुरकमला | वानर किर्किधि की पुत्री ६.२१५ | ॥ -२ | गयपुर का राजा, जिन उसह को प्रथम पारणा करानेवाला ४.२.१२ |
| ॥-३ | मुनि ११४.७,१५.२२ | सुरसेयारिंद | लोकपाल कुबेर के पिता ७.४५ | ॥ -३ | मुनि, चौथे वासुदेव के पूर्वभवगुरु २०.१७६ |
| सुव्ययमुणि | मुनि. आठवें बलदेव के गुरु २०.२०६ | सुरदेव-१ | जेमिन्स का राजा ५५.३५ | सोदास | इक्ष्वाकुवंशीय राजा, देखो सीहसोदास २२. ७१, ७२.९०,९१,९३ |
| सुव्ययरिसि | मुनि, तीसरे बलदेव के पूर्वभवगुरु २०. १९२ | ॥ -२ | दाशरथी राम की प्रजा का अगुआ ९३.१७ | सोम-१ | विद्याधर लोकपाल ७३७, ३८४०,४३ |
| सुव्यया | घम्म जिन की माता २०.४१ | सुरहास | देखो रचिभास ४४.४ | ॥ -२ | चौथे वासुदेव के पिता २०.१८२ |
| सुसम्मा | ब्राह्मण कविल की स्त्री ३५.४८,६४,७३ | सुरिविमल | पउमच्चरिय के रचयिता ११८.११८ (देखो विमल२) | ॥ -३ | गंधावर्षी का पुरोहित ४१.४५ |
| सुसार | वानरभट ५९.३८ | सुरोदय | मरीह का शिष्य, भुष्णणा- लंकार का पूर्वजन्मनाम ८२.२५,२८,११६,११९ | सोमदेव | सालिंगगाम का ब्राह्मण १०५.२०,३३,७१ |
| सुसेण | वानरभट ८. २७४; ५४. ३४;५९.३२,३६;६२.३०; ७१. ८, ३८; ७६.२३; ७९.२३ | सुलधर | दाशरथी राम की प्रजा का अगुआ ९३.१७ | सोमप्यम | सोमवंश प्रवर्तक, बाहु- बलि का पुत्र ५.१०,११ |
| सुसेल | वानरभट ५७.१२ | सेण | विद्याधरवंशीय राजा ५.१५ | सोमबंध | एक वंश का नाम ५.२, १३;९५ ६४ |
| सुहमइ | कोउयर्मंगल के राजा केकई के पिता २४. २,२० | सेणा | संमथ जिन की माता २०.२९ | सोमसुवयण | राक्षसभट ५६.३६ |
| सुहाधार | कोमुईनयरी का राजा ३९.१०० | सेणिय | मगह का नरेश, देखो मगहनराहिव १. ३४; २. १५; ४. ९०; ५. ६४. २५८;७.५३. १३४, १४३; ९.१,११,४५;१२.९, ३५; १५.८; २०. ३, १६, २८, ३५, १०५ १६० १६८, १९५,२०२; २१. १, ३४; २६.७३,८८;२७. ३; २८. १३७; ३०. ९८; ३१. २; ३५.२७;४३. ८;४८. १३, ३२; ५३. ८४; ५६. ११; ५८.३,१८;६३. १४; ६४. १;६६.१५; ६९.५६; ७१. १७,४१,६४;७२.१५, २६; ७३.२६,३३;७५.२९;७७. ५६, ६०, ११४; ८०. २; ८२.१,६०,११३; ८५. १; ८८.३,३८,४०, ४२; ८९. ४१; ९१ २; ९७ १; ९९. ५१,५६, ७३; १०१. ५४; १०४.२६,३१; १०५.१८, ११३;१०९.४;१११.१ | सोमिति-१ | देखो सुमिस्ता और केकई २२. १०८; ३२.३६; ८२. ८;११८.४२ |
| सुर-१ | इक्ष्वाकुवंशीय राजा ५.६ | | | ॥ -२ | -पुत्र ३८५७; -सुअ २७.३०; ५९. ७३; ७२. ३; १०३. १३९, १६२ |
| ॥-२ | राक्षसवंशीय राजा ५.२६३ | | | | = लक्ष्मण |
| ॥-३ | कुंथु जिन के पिता २०.४३ | | | ॥ -३ | दूसरह का द्वितीय पुत्र = ३१.७२, ११०, १२५; ३२. ४९; ३३. १७, १८; ९२,९५,१०३, ११३; ३४. १,५; ३५. १३, १६; ३६. २०, २७, २८; ३८. २०, ४६,४८,५० ५५;३९. ११, ३५;४०.८,१२, १५; ४१. ४;४२. ३५;४३.२८; ४४. १३.१७,३९,४१; ४७. ७, ३३,४८;४८.७, १०; ५४. १४;५५. ४९; ५७. २०; ५९ ८०;६१.४५,६२;६३. १,७,११;६४. ४५;६५.५; |
| ॥-४ | सीया स्वयंवर में उप- स्थित राजा २८.१०२ | | | | |
| ॥-५ | राक्षसभट ५६.२८ | | | | |
| ॥-६ | वानरभट ५७.४.१८ | | | | |
| ॥-७ | वानरभट ५७.५ | | | | |
| ॥-८ | वानरभट ६७.९ | | | | |
| ॥-९ | दाशरथी भरह-सह दिक्षीत राजा ८५.३ | | | | |
| ॥-१० | राजपुत्र ८८.१६ | | | | |
| ॥-११ | दाशरथी राम का सहायक राजा ९९.५० | | | | |

| | | | | | |
|-------|--|-----------|---|------------|---|
| | ७१ १७; ७२. ३२; ७३. ४, ५, १३; ७७. ५५; ७९. १, २६, २९, ३१; ९४. २. ११, २१; १००. २६. ४७; १०९. २४; ११०. ८, २५, ४३; १११. १३; ११३. ६, ११, १७; ११७. १४. | | | | |
| | (देखो सुमिति और लक्ष्मण) | | | | |
| सोवीर | अरविरेख का सहायक राजा ३७.१२ | हय | राक्षसयोद्धा, रावण का एक नायक ८.२७४; १२. ९२; ५३. ९२; ५६. २७; ५७. ३२, ३३, ३४, ३५; ५८. १, १३, १६, १९; ५९. १; ७०. ३ | हालाहल | राक्षसयोद्धा ५६.३३ |
| हंसरह | हंसदीव का विद्याधर राजा ५४. ४५ | हरि | विद्याधर राजा १०.२० | हिडि | राक्षसयोद्धा ५६.३३ |
| हनुम | पवणजय-अंजणा पुत्र हनुमान, देखो पवणपुत्र, मारुह, सिरिसेल १.५९, ६१, ८७; १७. १२१; १८. ५१, ५८; १९. ४, १४, १६, १८, २८, ३२, ३४, ३६. ३९. ४१, ४२; ४७. २६, २९; ४८. १२४; ४९. १-३, १६; ५०. १६; ५२. १६, १९; ५३. १, २, ११, १८, ४३, ४४, ५४, ५५ ५७, ७८, ९०, ११७, १२१, १४६; ५७. २; ५९. १७. १८, १९, २३-२५, २८-३०, ३३, ४३; ६४. ३, ३५; ७१. ४०, ४२, ४६, ४७; ७२. ३४; ७९. २३; १०८. १, ४, ४९; १०९. १; | हरिकंता | वानर नल-नील की माता ९.५ | हिमंग | वानरयोद्धा ५७.७ |
| | = हनुम ५३. ११६; ६०. १; | हरिकेत | चक्रवर्ती हरिसेण के पिता २०. १५० देखो सीह-द्वय-२ | हिमगिरि | हरिवंशीय राजा २१.८ |
| | = हनुमंत १५. १, २. ३; १८. ५६; १९. ९, २६; ५३. २७; ५९. ७५; १००. ६०; १०१. ९; | हरिणीव | राक्षसवंशीय राजा ५. २६० | हिमचूला | राजा विजय-४ की रानी २१. ४२ |
| | = हनुवंत १९. १५; ५९. २१; ६४. २, २६; | हरिचंद | विद्याधरवंशीय राजा ५. ४४ | हिमराय | विद्याधर राजा ६. २३७ |
| | = हनुव ४७. २५; ४९. १४, १८; ५१. ३; ५२. ६, १३, २२, २९; ५३. १२. १७, ६४. ७७, १०३, १२८, १३४, १४४; ५४. ३, २३, ३४; ६४. २५; ९८. ४५; १०८. १८, २२, २६. ४५; | हरिणकुस | मुनि, चतुर्थ बलदेव के गुरु २०. २०५ | हिमंकर | काकंदीपुर का राजकुमार १०४. ३, २५, २९, ३१ |
| | | हरिणमसेसि | विद्याधर राजा, इंद्र का बलानीक ७. ११ | हियकर-१ | वणिक ५. २८ |
| | | हरिणाड-१ | विद्याधर राजा १५. २० | -२ | पोयणपुर का राजा ५. २२७ |
| | | हरिदास | लक्ष्मण पुत्र ९१. २० | हिययधम्मा | सुग्गीवपुत्री ४७. ५३ |
| | | हरिमह | वणिक पुत्र ५. ८३, ८५ ८६, ८७, ८८ | हिययसुंदरी | अंजणा की माता १५. ११; १७ १०१ |
| | | हरिमालिणी | नागपुर का राजा ८२. २७ | हिययावली | सुग्गीवपुत्री ४७. ५३ |
| | | हरिय | हनुम की स्त्री १९. ३६ | हिरणगङ्ग | इक्ष्वाकुवंशीय राजा २२. ५०, ५५ |
| | | हरिराया | राक्षस योद्धा ५९. ५ | हिरणनाम | इक्ष्वाकुवंशीय राजा २२. ९९ |
| | | हरिवंस | हरिवंश प्रवर्तक राजा २१. ७ | हेम | विद्याधरवंशीय राजा १०. २१ |
| | | हरिवाहण | वंशनाम ५. २; २१. १०, ११, ३०, ३२ | हेमंक | विप्रपंडित, मंत्री ७७. ७८, ७९, ८०, ८२ |
| | | हरिसेण | महुरा का विद्याधर राजा १२. २, ५, ६, ३१; | हेमणाह | साकेय का राजा १०५. ८५ |
| | | | -नंदण = महु-२ १२. ४ | हेमपम | केकई के स्वंबर में वसरह का प्रतिपक्षी राजा २४. २७, ३०, ३१, ३२ |
| | | | दसवां चक्रवर्ती १. ५२; ५. १५३; ८. १३९. १४१, १४४, १५० १५५ १६०, १६२-१६४, १६६, १६९, १७२, १७६, १८३, १९७, १९९, २०१, २०३, २०७, २०. १५०; ८०. १५; -कहा ८. २११ | हेमरह-१ | पोयणपुर का राजा ५. २२८ |
| | | | | हेमरह-२ | इक्ष्वाकुवंशीय राजा २२. ९६ |
| | | | | हेमवई-१ | मंदोयरी की माता ८. १ |
| | | | | ..-२ | रानी १०३. ९१ |
| | | | | हेमसिह | रानी किरणमंडला का प्रेमी १०१. ५८ |
| | | | | हेमाम | राक्षसयोद्धा ५६. ३६ |
| | | | | हेहय | विद्याधर राजा १०. २० |

परिशिष्ट २

प्रथम परिशिष्ट के वर्ग-विशेष

- (१) अमात्यमंत्रिपरिवार
- (२) आयुध
- (३) ऋषि-तापस-परिव्राजक
- (४) कुलकर
- (५) गंधर्वपरिवार
- (६) गणधर
- (७) गणिका-वेद्या
- (८) गृहपति-वणिक्-श्रेष्ठि-परिवार
- (९) ग्रन्थ
- (१०) ग्रन्थकर्ता
- (११) तन्तुवायपरिवार
- (१२) तीर्थकरभिक्षादातृ
- (१३) दासभृत्यपरिवार
- (१४) दूतपरिवार
- (१५) दूती
- (१६) देव-देवी
- (१७) द्वारपाल
- (१८) घात्री

- (१९) नागरिकपरिवार
- (२०) नैमित्तिक
- (२१) पक्षिविशेष
- (२२) पुरोहितपरिवार
- (२३) प्रजाप्रगण्य
- (२४) ब्राह्मणपरिवार
- (२५) मित्र-सखी

- (२६) योद्धा { राक्षस
वानर
विद्याधर

- (२७) राजपरिवार { इक्ष्वाकु
भलेच्छ
राक्षस
वानर
विद्याधर
सामान्य
सोम
हरि

८) लेखवाहक

- (२९) लोकपाल
- (३०) वंश
- (३१) विद्यागुरु
- (३२) विमान

- (३३) शलाकापुरुष { तीर्थकर (भरह-
वासी, विदेहवासी)
चक्रवर्ती (भरह-
वासी, अन्य)
बलदेव
वासुदेव
प्रतिवासुदेव

- (३४) शिलाविशेष
- (३५) शिष्य
- (३६) श्रमण-धमणी
- (३७) श्रमणशाखा
- (३८) भावक-धाविका
- (३९) सारथि
- (४०) सेनापति
- (४१) इस्तिनाम

(१) अमात्य-मंत्रि-परिवार

| | |
|--------------|-----------|
| पुरुष | मारीह |
| अणेशबुद्धि | मेहावि |
| उमालेण | मोगर |
| उज्ज | वज्जनेस |
| खारबूसण | वज्जमज्ज |
| मयणतच्चि | संदेहपारअ |
| चित्तपभ | सञ्जगुत्त |
| जंब-व, चंत | सहस्समइ |
| जमदंड | सारण |
| पंच-मुह, वयण | सिरीचंद |
| बिहस्फइ | सुबुद्धि |
| मइसमुह | सुमइ |
| मइसायर | सुय |
| मयंक | हेमंक |
| महत | स्त्री |
| महामइ | विजयावली |

(२) आयुध

| | |
|-------------------|-----------------|
| अमोहविजया (शक्ति) | वजावत्त (धनुष) |
| चंदहात (खड्ग) | सुजहास |
| रविभास (..) | सुरहास } (खड्ग) |

(३) ऋषि-तापस-परिव्राजक

| | |
|------------|--------|
| अंगिरस (स) | भिमग |
| अग्निकेज | धमरुह |
| अणुद्धर | मारीह |
| नारअ | सिद्धथ |

(४) कुलकर

| | |
|-----------|------------|
| १ पडिसुइ | ८ महप्पा |
| २ सम्मुइ | ९ विमलबाहण |
| ३ खेमंकर | १० अमिचंद |
| ४ खेमंधर | ११ चंदाभ |
| ५ सीमंकर | १२ मरुदेव |
| ६ सीमंधर | १३ पसेणई |
| ७ चकखुनाम | १४ नाभि-हि |

(५) गंधर्वपरिवार

| | |
|--------|-----------|
| पुरुष | स्त्री |
| मणिचूल | चित्तमाला |

(६) गणधर

| | |
|--------------|----------|
| इंदभूइ, गोयम | उसहसेण |
| अणंगलजा | वसंतअमरा |
| रमणा | |

(७) गणिका-वेद्या

| | |
|---------|----------|
| अणंगलजा | वसंतअमरा |
| रमणा | |

(८) गृहपति-वणिक्-श्रेष्ठि-परिवार

| | |
|--------|-----------|
| पुरुष | गोमुह |
| अपासेय | गोहाणिय |
| अरहदास | जिणदत्त |
| असोय | जिणपउमरुइ |
| अहिदेव | तिलथ |
| कणग | धणदत्त |
| गुणधर | नयणाणंद |

| | |
|-----------|-----------|
| नयदत्त | सहस्वभाभ |
| नियमदत्त | सायरदत्त |
| पउमरुइ | सिरिकंत |
| पभत्र | सिरिगुप्त |
| पवर | सिलाधर |
| बंधुदत्त | हरिदास |
| भावन | हियकर |
| मघदत्त | स्त्री |
| महाघण | कित्तमई |
| महीदेव | कुर्षिदा |
| मेरु | गुणमई |
| मेहबाहु | अउणा |
| लयादत्त | घषा |
| वज्जक | धारिणी |
| वसुदत्त | भुयवत्ता |
| विज्जुयंग | भयरिभा |
| विणयदत्त | मित्तमई |
| विहियक्ख | रयणप्पभा |
| संभमदेव | रयणाभा |
| सच्चरुइ | विणयमई |
| सदसंगम | सुणंदा |
| समुहदत्त | |

(९) ग्रन्थ

| | |
|------------------|-----------------------|
| पउमचरिय, रामदेव- | रामायण (ब्राह्मण) |
| चरिय, राहचरिय | वेय-सत्थ (वेदशास्त्र) |
| भारइ (महाभारत) | |

(१०) ग्रन्थकर्ता

| | |
|------|----------|
| विमल | सुरिविमल |
|------|----------|

(११) तन्तुवायपरिवार

| | |
|-------|--------|
| पुरुष | स्त्री |
| वीरय | वणमाला |

(१२) तीर्थंकर-प्रथमभिक्षा-दातृ

| | |
|---------|-------|
| वभदत्त | सेयंस |
| वसभदत्त | |

(१३) दास-भृत्य-परिवार

| | |
|--------|-------------|
| पुरुष | चवल-गइ,-वेग |
| अमरधणु | भइकलस |
| कावडिय | स्त्री |
| कूइ | जयावई |
| कूर | |

(१४) दूतपरिवार

| | |
|-------|----------|
| पुरुष | सिरिभूइ |
| अमयसर | सुबुद्धि |
| उदिअ | स्त्री |
| मुइअ | उवओगा |
| सामत | |

(१५) दूती

चित्तमाला

(१६) देव

| | |
|-----------|----------|
| अग्गिकेउ | मण्णिचूल |
| अणलप्पम | महालोयण |
| अणादिय | माग्गिभइ |
| इभकण्ण | रयणचूल |
| उदहिकुमार | रुवाणीद |
| गरुडाहिव | वज्जाउह |
| चमरकुमार | वेणुदालि |
| घणअ | सीइंद |
| धरण | सीया-इंद |
| पुण्णभइ | सीयादेव |
| पूयण | सुरूवनाम |
| मीम | |

देवी

सुनामा

(१७) द्वारपाल

सिलाकवाड

(१८) घात्री

वसंतलया

(१९) नागरिक-परिवार*

| | |
|------------|-----------|
| पुरुष | भग्गव |
| असोयदत्त | भइवरुण |
| आवलि | भावन |
| किपुरिस | वरकित्ति |
| जउणदेव | विसाल |
| दगकित्तिधर | सहस्सविजअ |
| भरण | स्त्री |
| पच्छिमय | उवत्थि |
| पठम | खीरधार। |
| पीइकर | भाहवी |

* इनका कोई विशेषपरिचय प्राप्त नहीं होने से इन्हें इस शीर्षक के नीचे रक्खा गया है।

(२०) नैमित्तिक

सायरविहि

(२१) पक्षिविशेष

जहाइ
जडागि
जडाउ

(२२) पुरोहितपरिवार

| | |
|----------|---------|
| पुरुष | महुपिगल |
| अग्गिकेउ | सिरिभूइ |
| उवमच्छु | सुकेउ |
| जलणसिह | सोम |
| धूमकेउ | स्त्री |
| पिगल | सरस्सेई |
| पुस्सभूइ | |

(२३) रामके प्रजाप्रगण्य

| | |
|------|--------|
| काल | महुगंध |
| कासव | विजअ |
| खेम | सूरदेव |
| पिगल | सूलधर |

(२४) ब्राह्मणपरिवार

| | |
|----------|------------|
| पुरुष | रमण |
| अइभूइ | वसुणंद |
| अग्गिभूइ | वसुभूइ |
| अग्गिल | वाउभूइ |
| इधण | वामदेव |
| कयाण | विणोअ |
| कविल | विमुचि |
| कुलिसधार | विसालभूइ |
| कुसअय | विस्सभूइ |
| खीरकयंब | वेसाणल |
| गिरिभूइ | सुइरअ |
| गोभूइ | सुनंद |
| जअवक्क | सोमदेव |
| पमासकुंद | स्त्री |
| पलव | अइराणी |
| पन्नयअ | अग्गिकुंडा |
| बंभरुइ | अग्गिला |
| भग्गव | अणुकोसा |
| मरुभूइ | कुम्भ |
| मिउमइ | पइमत्ता |

पियंगु
मित्तजसा
विस्सावसु
वेगवई
सत्थिमई

सरसा
साविली
साहा
सुसम्मा

निसुंद
निसुभ
निहण
पयंडहमर
पयंडासणि
परहायण

विज्जू
विन्मम
विमलाभ
वियडोयर
त्रिलंग
विहि

आहड्ड
इंदणील
इंदाउह
इंदासणि
उक्कालंगूल
उज्जिअ

चंदणपायव
चंदमरीह
चंदरह
चंदाभ
चल
जय

(२५) मित्र-सखो

पभव
पहसिअ
महद्धय
वसंतदअ

उप्पलिआ
मिस्सकेसी
वसंततिलया
वसंतमाला }

पसंख
पहत्थ
पीयंकर
पुरफचूल
पुप्फत्थ

वीहत्थ
संख
संताव
संभिअ
सहूलकीलण

उद्दाम
कंत
कंद
कलिंग
काल

जयमित्त
जयसेण
जलयवाहण
जसकंत
जसोयर

(२६) योद्धा

(१) राक्षस

अहबल
अह
अकोस
अकख
अणंगकुसुम
अणंगरासि
असणिनिघाअ
असणिरह
आणंदण
इंदाह
उरमणाअ
कणअ
कमण
कयंत
कयंबविहव
कामग्धि
कामवण
काल
कालि
कुलिद्धउदर
कुलिसनिणाअ
कूर
केउ
कोव
कोहण
खरनिस्सण
सोभ
गअ

गंभीर
गभीरणाअ
गयणाअ
गयणुज्जल
घटत्थ
घणेभ
घोर
चंचल
चंढकुंढ
चंद
चंदक
चंदणभ
चल
चवल
जंबु
जबर
जर
जीसुत्तनायक
तडिजीह
तडिविलसिअ
तिसिर
दुद्धर
दुम्मरिस
धूमकख
धूसुहाभ
नंदण
नह
नह
निरघाअ

पुप्फसेदर
बाहुबलि
बीभच्छ
भिजंजणाभ
भीम
भीमणाअ
भुयंगवाहु
मरुचु
मयणसर
मयर
मयरदअ
मरसर
महाकाम
महासुइ
महावाहु
महाभालि
महोयर
माणि
भारीइ
मालि
मुइअ
रत्तवर
वज्जकख
वज्जणक
वज्जसुइ
वज्जवेग
वज्जिहु
विक्रम
विज्जासुकोसिअ
विज्जुवयण

समाकुद
सयंभु
सरह
ससंक
सहसकख
सिलीमुह
सिहि
सीह
सीहकठि
सीहबलंग
सुनयण
सुमीसण
सुय
सूर
सोमसुवयण
हरथ
हरिय
हालाहल
हिहि
हेमाम

(२) घानर

अहबल
अंग
अकोस
अणुद्धर
अप्पडिघाअ
अरिविजअ
अविणह
असणिवेग
आदोव

किसिनाम
किरीट
कील
कुंढ
कुंत
कुट्टगइरव
कुमुअ
कुमुयावत्त
कुसुममाल
कुसुभाउह
कूर
केलीगिल
कोण
कोमुईनंदण
कोलाहल
खंद
खणकखेव
खवियारि
खितिधर
खेअ
गयवरधोस
गयवरतास
गरुयचंदाभ
घटउवरि
घण
घणरइ
घम्म
चंडंसु
चंडुम्मि
चंद

जिणनाम
जिणपेम्म
जिणमय
जुज्जवंत
जोइ
जोइपिअ
तडिवाह
तरंगतिलअ
तरल
तुरंग
दठरइ
दासणी
दिणयर
दुइ
दुप्पेकख
दुम्भुद्धि
दुम्मह
दुम्मरिसण
दूसण
नंदण
नकखत्तमाल
नकखत्तलुद्ध
नाड
परथार
पभाविअ
पभत्ता
पयंडमालि
पवणगइ
पहअ
पहूर

| | | | | | |
|-----------|-----------|----------------|-------------|-------------|-----------------------|
| पियरुव | वग्ध | सील | अरिदमण | मयणकुस | सुबल |
| पियविग्गह | वग्धविलवि | सीहकहि | आइच्चजत | मयरदअ | सुभइ |
| पीईकर | वज्जसू | सीहणाय | इंदजुइण्ण | मयरह | सूर |
| पीईकर | वज्जदंत | सीहरव | उदअपरक्कम | मयारिदमण | सोदास |
| पुण्णचंद | वज्जोयर | सीहरह | उदयरह | महाइंदइ | सोमित्तो |
| बन्वर | वसभ | सुणंद | ककुह | महाबल | हरिणाह |
| बल | वायायण | सुपुण्णचंद | कमलबंधु | महाविरिअ | हिरण्णगम्भ |
| बलि | विकल | सुविहि | कित्तिधर | महिंदविक्रम | हिरण्णनाभ |
| बहुल | विग्घ | सुसार | कुंधु | मियंक | हेमरह |
| बाल | विग्घसूयण | सुसेण | कुबेरदत्त | रधुस | स्त्री |
| भाणु | विजअ | सुसेल | कुस | रवितेअ | अवराइआ |
| मीम | विज्जुनयण | सुर | (सु)कोसल | रहनिग्घोस | इंदुमई |
| मीमरह | विज्जुनयण | हिमंग | गरुडंक | राम | उज्जुवई |
| भूयनिणाअ | विशड | (३) विद्याधर | चउम्मुह | रहु | कइगई, केकई, केगई |
| भूसण | विसाल | अहिंपजर | चंद | राघव | कंता |
| भइददमण | वीवसंत | उग्ग | जसरह | लक्खण | कणयमाला |
| मंडल | बेलक्ख | केसरि | तावण | वज्जवाहु | कणयाभा |
| मंदर | संकड | घणमालि | तेयास्सि | वसंततिलअ | कमलमई |
| मंदरमालि | संगाम | जलहर | दसरह | वसह | कलाणमाला |
| मणहरण | संताव | अलियक्ख | दासरही | वसहकेउ | कुबेरी |
| मणुरण | संतास | तडिपिग | धरण | वसुबल | केकई केगया, सुमित्ता, |
| मत्त | सहूल | दंड | नधुस | विजअ | सोमित्तो |
| मह | सपक्ख | पवणवेग | पउम | विभु | गुणमई |
| मयरदअ | समाण | मयंक | पउमरह | विरह | गुणसमुद्दा |
| मयारिदमण | समाहि | महोदहि | पडिवयण | वीरसुसेण | चंदकंता |
| मरुवाह | समाहिबहुल | मियंक | पभु | संभूअ | चंदणा |
| महसुह | सम्मैअ | सिहि | पभूयतेय | सत्तुज | चंदसुही |
| महाबल | सरह | (२७) राजपरिवार | पयावि | सत्तमघ-ण | चंदलेहा |
| महारह | सल्ल | (१) इक्ष्वाकु | पुंजत्थल | सरह | जियपउमा |
| मेहकंत | सव्वदसरह | पुरुष | पुरंदर | सव्वकित्ति | नंदा |
| रइवदण | सव्वदुड | अइविरिअ | पुरइत्तिलअ | ससिपह | नलकुव्वरी |
| रइविदण | सव्वपिय | अंकुस | वंभरह | ससिरह | पउमावई |
| रणचंद | सव्वसार | अजिअ | बलभइ | सायरभइ | पहावई |
| रण | ससिमंडल | अज्जुणविकख | बालचंद | सिरिधर | पुहईदेवी |
| रवि | ससिवदण | अणंतलवण | वाहुबलि | सीहजस | बंधुमई |
| रविजोइ | सागर | अणंतरह | भरह | सीहदय | भाणुमई |
| रविमाण | सायर | अणरण | भुयबलपरक्कम | सीहरह | मणोहरा |
| रहयंद | सायरघोस | अभियबल | मंगलनिलअ | सीहवाह | रइनिहा |
| राअ | सार | | मंधाअ | सीहसोदास | रइमाला |
| लुद्धनाम | साल | | मयण | सुकोसल | रणमई |
| कोल | साहुवच्छल | | | सुपासकित्ति | सच्छो |

| | | | | | |
|----------------|------------|------------|----------------|----------------|--------------|
| विचित्रमाला | दसग्रीव | रिउमहण | चंद्रवयणा | अंधभ, अंधकुमार | सिरिमाला |
| विसङ्गा | दसाणण | लंकासोग | तडिमाला | अमरपभ | सुंदरी |
| ससिचूला | दहग्रीव | लवण | रीविया | आइच, -रय | सुतारा |
| सहदेवी | दहसुह | वज्र | देवी | कइइय | सुरमई |
| सिरिकता | दहवण | वज्रमज्ज | नंदा | किक्किधि | सूरकमला |
| सीया | निग्गाअ | वज्रमालि | पउमगम्भा | खेयरनरिंद | हरिकता |
| सीहिया | पमोय | वज्रमुह | पउमा | गयणाणद | हिययधम्मा |
| सुभहा | पवणुत्तरगइ | वज्जिदु | पउमावई | गिरिंनंद | हिययावली |
| सुभा | पहिअ | वण्हिकुमार | पभावई | चंदजेई | (५) विद्याघर |
| सुमंगला | प्यारह | विभीसण | पीइमहा | चंद्रस्ति | पुरुष |
| सुमणुरसुया | विभीसण | विहीसण | पीई | जयाणंद | अइमीम |
| सुमिता | विहीसण | संपरिकित्त | भहा | नल | अंगारअ |
| सुरकंता | भयवाह | सिरीगीव | भाणुमई | नील | अक्कजडि |
| सोमिती | भाणुकण्ण | सिरिमालि | भाणुवई | पडिइंद | अक्कतेअ |
| हिमचूला | भाणुरक्खस | सीहवाहण | मंदोदरी | पवणगइ | अणिल |
| (२) इलेकळ | मीम | सुकेस | मणवेमा | बालि | अमरसुंदर |
| पुरुष | मीमप्पह | सुकेसी | मणोरमा | मंदर | अरिंदम |
| आयरंम | मीमरह | सुग्रीव | मयणपउमा | गरुअकुमार | असणिपोस |
| बइभइ | मऊह | सुभाणुधम्म | माहवी | महोयदिल | असणिवेग |
| रुी | मणोरम | सुभूमण | मिगावई | रविप्पभ | अरुसायर |
| बणमाला (भिळ) | मयारिंदमण | सुमालि | रइवेया | रिक्खरअ | अहइंद |
| (३) राक्षस | मईतकिसि | सुसुह | रंभा | वज्रकठ | आइश्चरवल |
| पुरुष | महकंतजस | सुरारि | रयणमाला | बालि | आइश्चरय |
| अंगारअ | महगइ | सुधंत | रवि | सुग्गीव | आउह |
| अमियवेग | महण | सूर | रूपिणी | रुी | आणंदमालि |
| अरिसंतास | महबाहु | हरिग्रीव | लंकासुंदरी | अणुदरी | आयासविंदु |
| अरुहभस्तिमंत | महरव | रुी | लच्छी | इंदमाली | आसदअ |
| आइश्चगइ | महारक्खस | अणंगसुंदरी | वसुंधरा | कमलनामा | इंद |
| आइश्चगइकुमार | मालवंत | आउणह | विमलाभा | गुणवई | इंदधणु |
| इंदइ | भालि | आसिणिदेवी | संझावली | चंदाभा | इंदरह |
| इंदप्पम | मेहज्जाण | इंदाणी | ससिमङ्गला | चारुसिरी | इंदाउहप्पभ |
| इंदमेह | महप्पभ | उब्बसी | सिरिकंता | जिणमई | इंदामयनंदण |
| उग्गसिरी | मेहवाहण | कंता | सिरिदत्ता | तारा | उअहि |
| किसिधवल | रक्खस | कणयपमा | सिरिप्पभा | पउमराग | उइअ |
| कुंम | रयणक्ख | कणयावली | सिरिमई | पउमाभा | उक्क |
| कुंभकण्ण | रविरक्खस | कमलसिरी | सुंदरी | मणोवाहिणी | एकचूड |
| ग्यारि | रविसेअ | कयचित्ता | सुप्पभदेवी | मयणूसवा | कणगप्पह |
| गहखोम | रविरह | कित्ति | (४) वानर | विज्जुप्पभा | कणय |
| बणवाहण | रविसणु | केकसी | पुरुष | सिरिकंता | कणयरह |
| चार | रामण | चंदणक्खा | अइबल | सिरिप्पभा | कमलसिरी |
| चंभुमालि | रावण | चंदणहा | अंगअ, अंगकुमार | | कासदय |

| | | | | | |
|------------|-----------------|-------------|----------------|--------------|------------|
| किर्किभि | दूमण | माणसवेग | विज्जंगय | सेण | पडमाबई |
| कुम्बर | देवरक्ख | मारुइ | विज्जासमुग्वाथ | इंसरइ | पीइमई |
| कुलणदण | दोचूड | मेषप्पम | विज्जुतेअ | हणुअ | भोगवई |
| कोलावसुंदर | नेदिमालि | मेरुदत्त | विज्जुदत्त | हय | मंदाइणी |
| खरदूमण | नेवीसर | मेरुमहानरवइ | विज्जुदंत | हरिचंद | मणवेगा |
| गंगाहर | नकलत्तदमण | मेहरइ | विज्जुदाड | हरिणाह | मणसुंदरी |
| गंधव्व | नमि | मेहवाहण | विज्जुप्पम-ह | हरिवाहण | मणोरमा |
| गंभीर | नयणाणंद | मेहसीह | विज्जुवेग | हिडिब | माणससुंदरी |
| गयणविज्जु | नलकुम्बर | रत्तइ | विज्जु | हिमराय | माहवी |
| गयणिदु | निब्बानभत्तिमंत | रमणकेसी | विज्जुसुह | हेम | रइवेगा |
| घणवाहण | पडमनिह | रयणचित्त | विणमि | हेहय | रयणसलाया |
| चंद | पडममालि | रयणज्जि | वियड | खी | रयणसिरी |
| चंदक | पडमरइ | रयणज्जि | विराहिअ | अंजणा-सुंदरी | रयणावली |
| चंदगइ | पडिसुज्जअ | रयणमालि | विरियदत्त | अंसुमई | लच्छी |
| चंदचूड | पडिसूर | रयणरइ | विसाल | अणंगकुसुमा | वज्जसिरी |
| चंदनह | पत्तहाअ | रयणवज्ज | विसुद्धकमल | अणंगसरा | विज्जुपमा |
| चंदरइ | पवण | रविकित्ति | वीससेण | अणुराहा | वेगवई |
| चंदमदुण | पवणअय | रविकुंडल | वेलाजवक्ष | असोगलया | संज्ञादेवी |
| चंदवयण | पवणगइ | लद्धियास | वोमबिंदु | आइचकित्ति | सच्चमई |
| चंदसिहर | पवणवेग | वज्ज | संबुक्क | आवली | संबेपभा |
| चंदोयर | पसभकित्ति | वज्जक | सक्क | आहक्का | सयहुया |
| चक्कक | पीइकर | वज्जधर | समुइ | उवरंभा | सव्वसिरी |
| चक्कार | पुंडरीय | वज्जचूड | सयलभूसण | कणयसिरी | सिरिकंता |
| चाउंदरावण | पुणव्वसु | वज्जदत्त | ससंक | कणयाभा | सिरिचंदा |
| चित्तभाणु | पुण्णघण | वज्जदत्त | संसंकधम्म | कणयावली | सिरिदामा |
| जम | पुण्णचंद | वज्जदत्त | ससिंकुंडल | कित्तिमई | सिरिदेवी |
| जयंत | पुरचंद | वज्जदत्त | ससिमंडल | केउमई | सिरिपभदेवी |
| जयाणंद | पुरंदर | वज्जपाणि | सहस्तनयण | कोसिय | सिरिप्पभा |
| जलकंत | बउचूड | वज्जबाहु | सइसर | गंधव्व | सिरिमई |
| जलणज्जि | बाल | वज्जनरनयण | साहसगइ | गंधारी | सिरिमाला |
| जलणसिह | बुइ | वज्जसंच | सिरिकंठ | गुणमाला | सिरिरंभा |
| जियभाणु | मअ | वज्जसुंदर | सिरिसेल | चंदमई | सिरी |
| डिब | मयधम्म | वज्जसुण्णहु | सीहचूड | चंदसुही | सुंदरमाला |
| तडिकेस | मयारिदमण | वज्जाउह | सोहविक्रम | चंदलेहा | सुंदरी |
| तडियंगय | मरुणंदण | वज्जाउहपंजर | सुज्जड | चंदवयणा | सुप्पभदेवी |
| तडिवेग | महाबल | वज्जाभ | सुंद | अयचंदा | सुप्पभा |
| तिउरामुह | महिंद | वज्जास | सुरसन्निभराय | तडिप्पभा | सुमंगल |
| तिचूड | महिहर | वाउकुमार | सुरसुंदर | तणुकचु | सुमणा |
| तिज्ज | महुच्छाअ | वालिंद | सुवज्ज | तरंगमाला | हरिमालिणी |
| दडरइ | महोदर | विजयसीह | सुवयण | नंदवई | हिययसुंदरी |
| दुराणण | माकोड | | सुरखेयारिंद | पडमा | हेमवई |

(६) सामान्य

पुरुष

अइबल
अइविरिअ
अंक
अंबहु
अग्निगदाण
अचल
अग्निवारिअविरिअ
अणुद्धर
अमियप्पभ
अयल
अरिदमण
अरिहसण
अवराइअ
असंकिअ
आणंद
आणदिअ
आससेण
इंददत्त
इंदाभ
इंदुरह
उक्कामुह
उग्ग
उदयसुंदर
उसह
एगकण्ण
ककड
कंडुरु
कतासोग
कठोर
कत्तविरिय
कयधम्म
करसह
कलह
कसिव
काल
कुंडल
कुंभ
कुबेरकेत
कुलवद्धण

कुलिसयभ
केढव
केसरि
खेमकर
गयवाहण
घणवाहरह
चंदभइ
चंदमंडल
चंदोदय
चक्रद्धअ
चित्तामणि
चित्तरह
छत्ताछाय
जउणदत्त
जंबूणअ
जवलदत्त
जवलसेण
जगज्जुइ
जणमेजअ
जणवल्लह
जमदग्नि
जभ
जयकत
जयप्पह
जसकिति
जसहर
जिणवइरसेण
जियसत्तु
तियसंजअ
तिसिर
दंडग
दडरह
दमयंत
दुम्मह
देव
दोण,--घण
धणअ
धम्ममित्त
धम्मरुइ
धर
धरणिधर

धिइकंत
धीर
नेंद
नेंदण
नेंदिओस
नेंदिवद्धण
नेंदिसेण
नलिणिगुम्म
नागदमण
निइड्ड
निस्संदिअ
पउम
पउमरह
पउमासण
पउमुत्तर
पंकवगुम्म
पज्जुण्ण
पडिण्णी
पसावल
पयावइ
पयासजस
पयाससीह
परसुराम
पलंबवाहु
पवणावत्त
पहायर
पियंकर
पियवअ
पियधम्म
पियनंदि
पियवद्धण
पिहु
पीयंकर
पुइईधर
पोट्टिल
बंधुरुह
बंभभूइ
बंभरह
बहुवाहण
बालचंद
बालमित्त

बालिखिल्ल
बाहु
बुह
भगिरही
भाणु
भागुप्पह
भीम
भूरिण, भूरी
भूसण
भोयरह
भइंदवाह
मंदर
मंदिर
भरुअ
मइसेण
महाघोस
महाधअ
महापउम
महाबल
महाबुद्धि
महिंददत्त
महिहर
महु
मारिदत्त
मुणिभइ
मेरु
मेहकुमार
मेहप्पभ
मेहप्पह
मेहरह
रइवद्धण
रणलोल
रणयरह
रुइनाभ
लच्छीहरदय
वग्घरह
वज्जकंचू
वज्जकण्ण
वज्जनाभ
वणिहसिह
वसभदत्त
वसहद्धअ

वसु
वसुपुज्ज
वसुसामि
वाउकुमार
वालिखिल्ल
विउल्लवाहण
विचित्तरह
विजअ
विजय
विजयपव्वअ
विजयरह
विजयसद्दुल्ल
विजयसायर
विजयसेण
विजयारि
विज्जुप्पभ
विणोअ
विण्हु
विमलवाह
विरस
विस्ससेण
विस्तावसु
वीर
वीरसेण
वीससेण
वैसमण
संज्ञत्थ
संपुण्णिदु
संब
संभूअ
संवर
सच्चासअ
सद
सत्तुंदम,--ण
सत्तुदमधर
समसुद्ध
समुद्धविजअ
सयंभु
सयवाहु
सरह
सल्ल
सव्व

ससंक
ससिप्पभ
सहदेव
सहसकिरण
सिद्धत्थ
सिरिकंत
सिरिचंद
सिरिधम्म
सिरिधर
सिरिनदण
सिरिवद्धण
सिरिवद्धिय
सिरिसेणराय
सिवंकर
सिहि
सीहउदर
सीहचंद
सीहद्धय
सीहरह
सीहवाहण
सीहविक्रम
सीहसेण
सीहेंदु
सीहोयर
सुंदरसत्ति
सुर्कंठ
सुकेस
सुचंद
सुणंद
सुदरिसण
सुपइड्ड
सुप्पभ
सुबंधुतिलअ
सुबुद्धि
सुभइ
सुमाल
सुमित्त
सुसुह
सुयधर
सुरजेड्ड
सुरप्पभ
सुवइड्ड

| | | | | |
|-------------|------------|------------|----------|--------------------------|
| सुव्यय | जया | रइमाला | (७) सोम | (२८) लेखवाहक |
| सुदमइ | जसमई | रयणचूला | पुरुष | पवणवेग |
| सुहाधार | जसवई | रयणावई | बाहुबलि | वाउमइ |
| सुर | जियपउमा | राइल | महाबल | (२९) लोकपाल (विद्याधर) |
| सुरंजयकुमार | जोइमई | रामा | वज्रबंध | कुवेर |
| सुरदेव | जोयणगंधा | रुपिणी | सोमप्पभ | जम |
| सुरोदय | तारा | रुवमई | रुी | धणभ |
| सेणिय | तिलयसिरी | रोहिणी | सुबंधु | वरुण |
| सेयंस | तिलयसुंदरी | लच्छी | (८) हरि | (३०) वंश |
| सोम | तिसला | लच्छीदेवी | पुरुष | इक्खाग |
| सोवीर | देवई | ललिया | इंदकेउ | जायव |
| हरि | धरणि | वणमाला | इंदगिरि | रक्खस |
| हरिकेउ | धारिणी | वप्पा | इलवदण | वाणर |
| हरिमह | नंदवई | वम्मा | कणभ | (३१) विद्यागुरु |
| हियंकर | नयणसुंदरी | वरा | कुणिम | अइरकुच्छि |
| हियकर | नागदत्ता | विजयसुंदरी | जणभ | खीरकयंब |
| हेमणाह | नागवई | विजया | दक्ख | रंभअ |
| हेमप्पह | पउमावई | विज्जुलया | भामंडल | (३२) विमान |
| हेमरह | पभवा | विण्हिसिरी | भूयदेव | पुप्फविमाण |
| हेमसिह | परहायणा | विमलसुंदरी | महागिरि | (३३) शालाकापुरुष |
| रुी | पवरावली | विमला | महारह | (१) तीर्थंकर (अ) भरहवासी |
| अइराणी | पियगुलच्छी | वेजयंती | महीधर | १ उतभ-ह |
| अंबिया | पियकारिणी | सम्मा | रयणमालि | १२ वसुपुज, वासुपुज |
| अमयमई | पुप्फचूला | सयंपभा | वसुगिरि | १३ विमल |
| अमयप्पभा | पुहई | सव्वजसा | वासवकेउ | १४ अणंत |
| अमयमई | पुहईसिरी | सिरिकंता | संजयंत | १५ धम्म |
| अमरवई | भइ | सिरिदामा | संभूअ | अहिणंदण |
| इंदलेहा | भामिणी | सिरिधरा | सिरिवक्ख | १६ संति |
| इंदाणी | मई | सिरिप्पभा | सिरिवदण | १७ कुंधु |
| इंदुमुही | मऊरा | सिवा | सुमित्त | १८ अर |
| कंचणाभा | मंगिया | सीला | सुव्वय | १९ मल्लि |
| कणओयरी | मक्खरो | सुदरिस्सणा | हरिराया | २० सुणिस्सुव्वय |
| कणयपभा | मणसुंदरी | सुंदरा | हिमगिरि | संति-पभ |
| कणयाभा | मणोरमा | सुनंदा | रुी | २१ नमि |
| कमलमाला | मयणवेगा | सुनेत्ता | इला | २२ अरिह-नेमि |
| कमलुत्सवा | मयणावली | सुप्पभा | जाणई | पुप्फदंत |
| केसी | मइदेवी | सुबंधु | वइदेही | २३ पास |
| गुणवल्ली | माहवी | सुभइ | विदेहा | २४ महावीर, वीर, |
| चंदमई | मिगावई | सुमंगला | विदेही | वइमाण |
| चंदाभा | मित्तदत्ता | सुव्वया | सीया | (ब) विदेहवासी |
| चूडामणि | मित्ता | सेणा | सुभइ | सीमधर |
| अयंती | रइ | हेमवई | सुप्पभा | (२) अक्खत्ती (अ) भरहवासी |

(ब) अन्यचक्रवर्ती

अयल (अवरविदेहमें) तिहुयणाणंद (पुंडरीक-विजयमें)

(३) बलदेव

- | | |
|-------------------|---------------------------|
| १ अयल | ७ नंदण |
| २ विजअ | ८ पउम-णाभ,-णाह,-नाभ,-नाह. |
| ३ भद् | पउमाभ, राम |
| ४ सुपभ | ९ राम |
| ५ सुदंसण, सुदरिसण | |
| ६ आणंद | |

(४) वासुदेव

- | | |
|------------------|-------------------|
| १ तिविदु, तिवुदु | ६ पुरिसवर-पुंडरीय |
| २ दुविदुदु | ७ दत्त |
| ३ संयभु | ८ नारायण |
| ४ पुरिसोत्तम | ९ कण्ह |
| ५ पुरिससीह | |

(५) प्रतिवासुदेव

- | | |
|------------|-------------------|
| १ आसगीव | ६ बलि |
| २ तारम | ७ पल्हाअ |
| ३ मेरग | ८ रामण, रावण |
| ४ निसुभ | ९ जरा-संधु,-सिंधु |
| ५ महुकैड-ड | |

(३४) शिलाविशेष

कोविसिला सिद्धिसिला
निष्वाणसिला

(३५) शिष्य

आवलि { ससि
ससिअ

(३६) श्रमण-श्रमणी

श्रमण कमलगम्भ
अइभूइ कलाणगुणघर
अज्वगुत्त कित्ति
अणंतबल कित्तिथर
अणंतविरिअ कुल-भूसण,-विहूसण
अणयार खेमकर
अणिलललिअ गंगदत्त
अप्पमेयबल गयणचंद
अभयसेण गुणनिहि
अभिणंदण गुणसायर
अमयरस घणरह
अभियगइ घोससेण
अरिदमण चंदमुह
अयहि चित्तारिकल

जयमंत
जयमित्त
जसहर
जसोहर
जुइ
जुगंधर
ठामरमुणि
तिगुत्ति
तिलयसुंदर
तिलिगसमण
दमधर
दुमसेण
देसभूयण
धणमित्त
धम्मरयण
नंद
नंदजइ
नंदण
नंदिवद्धण
नंदिसुमित्त
निष्वाणमोह
निष्वाणसंगम
पयापाल
पवणवेग
पव्वयअ
पियमित्त
पिहियासव
पीतिकर
पुणव्वसु
पुरिसवसभ
पोट्टिलय
भहायरिअ
भवत्त
भुवणसोह
भूयसरण
मइवद्धण
मंभवसाहु
मरोइ
महाबल
मुणिवरदत्त

मुणिसुहम्म
रइवेग
राइ
लच्छीहर
ललियमित्त
वइयसोण
वज्जअत्त
वज्जनाभ
वज्जसेण
वरधम्म
वसभ
वसुधर
वसुभूइ
विगयमोह
विचित्तगुत्त
विजअ
विजयसेण
विण्ह
विदुदुमाभ
विमल
सूरि-विमल
विमलमुणि
विमलवाहण
विस्तभूइ
संख
संजयंत
संभव
संभूअ
संवर
सत्तहिअ
सत्थाअ
समाहिगुत्त
समुहसुणि
सयंपभ
सयल ऋणभूसण
सयलभूसण
सव्वगुत्त
सव्वऋणाणंदयर
सव्वभूयसरण
सव्वभूयहिअ

सव्वसत्तहिअ
सव्वसुगुत्त
सव्वसुंदर
सागरदत्त
सायरघोस
सिद्धत्थ
सिरिचंद
सिरितिलअ
सिरिमंत
सीमंधर
सीह
सीहसेण
सुकेउ
सुगुत्ति
सुदरिसण
सुधम्म
सुणंद
सुप्पभगुरु
सुप्पह
सुबल
सुभाणुनाम

सुमित्त
सुयसागर
सुयसायर
सुरमंत
सुवण्णकुंभ
सुव्वय
सुव्वयमुणि
सुव्वयरिसि
सूरिविमल
सुरोदय
सेयंस
हरिणकुस
श्रमणी
अणुदरा
अरिकंता
इंदमालिणी
कमलकंता
पुहईसच्चा
लच्छीमइ
संजमसिरी
सिरिमइ

(३७) श्रमणशाखा

नाइलकुल-वंश

(३८) आवक-आविका

आवक सिरिदास
अरहदत्त सिहि
अरहदास सुणंद
जिणदत्त आविका
विणयदत्त रोहिणी

(३९) सारथि

सुमइ

(४०) सेनापति

कयंत हरिणगमेसि

(४१) इस्तिनाम

एरावण तेलोकमंडणं
किक्किविदंड भुवणालकार

परिशिष्ट ३

वर्गीकृत-भौगोलिक-विशेषनाम

(क) ग्राम-नगर-पल्ली
(ख) जन-जनपद-देश
(ग) द्वीप-निवेश

(घ) नदी
(ङ) पर्वत
(च) वन-उद्यान-कानन-गुहा-वापी

(छ) समुद्र
(ज) सरोवर

| (क) ग्राम-नगर-पल्ली | कंचण-नगर | कुंच-पुर |
|---------------------|--------------------------------|---|
| अभोज्जा | ११.७; ३७.१९. (देखो कौसलपुरी) | ४८.१४; -वरनगर ४८.३३; -वरपुर ४८.२३ |
| अंगपुर | ३१.७ | कुंजरपुर |
| अंबरतिलय | ६.१६७ | कुंड-गामपुर |
| अकखपुर | ७४.३१ | कुंदनगर |
| अभ्रमणपुर | ९८.५८ | कुंभ-नगर |
| अमयपुर | ९१.४ | कुवकुवमय |
| {अमरपुर | २.१४ | {कुम्बर |
| {अमरावई | ८.२७० (देखो देवनयरी) | {कुम्बर |
| अरिजयपुर | ५.१०९; १३.३५; ५८.१२ | (देखो कूचवह) |
| अरिद्वपुर | ३९.७७ (देखो रिद्वपुर) | कुम्बरगाम |
| {अरुणगाम | ३५.५, ६३ | कुसमनगर |
| {अरुणुगाम | १.७१ | मगहपुर |
| अरुणपुर | १७.५६ | कुसस्थल-नगर |
| अरुहस्थल | २२. १०६. (देखो कुसस्थलनगर) | (देखो अरुहस्थल) |
| अलंकारपुर | ४३.१२. (देखो पाया-लंकारपुर) | कुसुमत-पुर |
| अलकापुरी | २०.२०१ | {कुसुमपुर |
| असिणपुर | ७.५० | {कुसुमावई |
| असुरनाम | ७.४९ | कूचवह |
| असोगा | २०.१८९ | कोडयमंगल |
| आइचपभ | ५.८२ | कोमुईनयरी |
| आइचपुर | ६.१५८; १५.५, २६; १८.१२, १५, ३० | कोसंबी |
| आइचाह | ९१.३ | २०.१०, ३२, १६९; ३४.४५; ५५.३८; ८८.२४; ९५.३३; -नयरी २१.२; ७५.६० |
| आणंदपुरी | २०.१८८ | {कोसलपुरी |
| {आलोगनगर | ९८.५७ | {कोसला |
| {आलौयनगर | ८२.९७ | -नयरी |
| इंदनगर | ३६.१२ | -पुरी |
| इंसिदपल्लि | ३९.६३ | ८२.५; ९४.६२; ९९.२९, ३६; ११३.२४. ११८.४६ |
| उज्जो | ३३.२५; ७७.५१ | (देखो पदमपुरी) |
| | कंचण-नगर | |
| | -पुर | |
| | कणयपुर | |
| | कंपिष्ठ | |
| | -पुर | |
| | - | |
| | कणयपुर | |
| | कणकुंडल | |
| | -पुर | |
| | कमलसंकुलपुर | |
| | {कायंदिपुर | |
| | {कायंबी | |
| | {कासिपुर | |
| | {कासीपुरी | |
| | {किकिंध | |
| | -पुर | |
| | {किकिंधि | |
| | -नगर | |
| | -पुर | |
| | -नयरी | |
| | -पुर | |
| | किन्नर-गीय | |
| | -गीयपुर | |
| | -पुर | |

३. वर्गीकृत-भौगोलिक-विशेषनाम

४९

| | |
|--------------|--|
| खेमंजली-नगर | ३८. २४; ७७. ५४; -पुर ३८. २२. |
| खेम-पुर | १०३.७; -पुरी २० ७; १०३ ६० |
| खेमा | २०.१० |
| गंधर्व | ९१.४; -गीयनगर ५. २४३; ५५. ५०; -पुर ७. ५० |
| गंधार | ३१.१९ २३; -पुर ९१.६ |
| गंधावई | ४१.४५ |
| गयणवल्लभ | ५५.५२ |
| गयणवल्लभ | ५.६६; -उर ३.१५३ |
| गयपुर | २०. १२४; ६३. ६३; ९५ ३४; -नगर ४.२ (देखो नामपुर) |
| गीयपुर | ५५.५३ |
| गुनाविहाणनगर | १०१.५६ |
| गोवदण | २०.११५ |
| घोसपुर | २१.९१ |
| चंद-पुर | ५.११४; ९५ ३२; -पुरी २०.३४ |
| चंदाइचपुर | ८२.६४. |
| चंदावत्तपुर | १३ २७ |
| चंदा | २०.१०, ३८, ५१; ९५. ३२; -नगर २१.६; -पुरी ८.१५६ |
| चक्र-उर | ९१ ४; -पुर २०.१८०; २६.४ |
| चक्रवाल-नगर | १. ४७; ५. ७५; १३. ३२; २६ ८६; -नरनगर २८. १२६. (देखो रङ्गचक्र- वाल) |
| चत्तया | २०.१० |
| अक्षय्याण | ३९.६८ |
| अक्षपुर | ७. ४९, ५५; ९१.६ |
| जयास | ५५ ५५ |
| जोइपुर | ७ ४३; १०. २; ९१ ५ |
| जोइपम | ८ ६१ |
| जोइसदंड | ५५ ५५ |
| तकत्र-सिलपुर | ४ ४०; -सिला ४. ३८, |

| | |
|--------------|---|
| तामलिसिनगर | ५.९९ |
| तिलयपुर | ९१.६ |
| दस-उर | ३३. ५९, ९०, १२५, १४८; -उरनगर ३३ २५, ६०, ७४. ११५; -णनगर ७९. ९; -पुर ७७. ४७ ३३. ८९ ९६ |
| दसंगनगर | ५१.२ -नगर ५१. १२ |
| दहिसुह | ३०. ६० |
| दाइगाम | १२. ३८, ४३, ६३, ६५, ७३ |
| दुलंध-पुर | -पुरी १२ ४१, ४७ |
| देवनयरी | ५. २०३ (देखो ममरपुर) |
| देवोवगीयनगर | ८५. २७ |
| धणपुर | २०. १३८ |
| धनगाम | - ७७. ७३ |
| नंदणनगर | २० २०१ |
| नदपुरी | २०. १०८ |
| नंदावत्त | १०३. ५८ |
| नंदावत्तपुर | ३०३ ३३ |
| नागपुर | ६ १७१; २०. १०, ४२, ४३, १३४. १४३. १६९, १८९; २१. ४३; ८२ २७. (देखो संतिनामनगर) |
| निचालोय | ९ ५२ |
| नेउर | ९१. ४ |
| पइट्टनगर | १०३. १३८ |
| पउमपुर | ५. ९४; ११८. ७९ |
| पउमिणी | ३९. ३७, ४७. (देखो कोमुईनयरी) |
| पउमपुरी | २०. ३० ४४; २८. ७० (देखो विगिया) |
| पयान | ८२ २१ |
| परिखेय | ५५. ५५ |
| पायालंकारपुर | १ ४५, ५४; ५ १३२; ६. २०१, २१९; ७. ५९; ८. ७५; १०. ३६, ३९ २; ४५. ३८; ८५. २७. ११३. १४ |
| पायालपुर | ६. १९७, २०७, २२ ४; ७. १६६; ८. २२८; ९. १८; १६. २७, २९; ४३. १७; ४५. ३९; ४७. ६. (देखो अलंकारपुर) |
| पावा | २०. ५१ |

| | |
|--------------|--|
| पीइपुर | ६. २३९ |
| पीडरखंड | ७७ ६४ |
| पुंडपुर | ३७. ९ |
| पुंडरियपुर | ९५ १०, १६, ६५; ९७. १३; ९८. १५, १७, ६८, ७०; ९९. १. ३; १०० ४३; १०१. १०; -रीयनगर ९७. ७, २९; -रीयपुर ९७. २५; १००. ३६; (देखो पुंडरियपुर) |
| पुंडरीगिणी | २० ७, ९, १०६. ११०, १३३, १८८; २३. ४ |
| पुक्खला | ३१. ९ |
| पुष्कावइणनगर | ७७ ७५. (देखो कमल- संकुलपुर) |
| पुइइपुर | २०. २०१; ७७. ४९; ९८; ४, ५, ११, ३६; -ई २०. १८८; -ईपुर ५. ११७; २०. १०८ |
| पुंडरियपुर | ९४. १०३; ९६. ४, ५. (देखो पुंडरियपुर) |
| पुइवदण | ८६. २ |
| पोयण | २६. १७; ७७. ८८, ९१; ८६. २; ९८. १४; -नगर २६ १६; ७७ ९०. १११, ११३; -पुर ५. ५२, २२७; २०. १६९, १७०, १८०; ८९. १० |
| बहुणाय | ५५ ५३ |
| भइल | २०. ९ -पुर २०. ३६; ९५ ३३ |
| भाबिसाल | ५५. ५४ |
| भऊरमाल | २७ ६ |
| भंदरकुंज | ६. १७० |
| भंदिर | ५५. ५३; -पुर १७ ४८ |
| भगइपुर | ८२. ४६; ८८ १ (देखो रायगिह) |
| भरंड | ५५. ५४ |
| भरकोइलरव | १०३ १२९ |
| भरियावई | ४८ १९. |
| भलय | ५५. ५४; ९१. ६ |

३. वर्गीकृत-भौगोलिक-विशेषनाम

| | |
|------------------|---|
| महा-नगर | २०.९; -पुर २०. १२१, १८०; २२. ९१, ८९.३; १०३.३८ |
| महासेल | ५५ ५३ |
| महिद-नगर | १५. १०; १७८; १८७. ८; ५३. १२२; -नयरी ५०. १ |
| महिला | २४.३६ (देखो मिहिला) |
| महुरा | १२. २; २०. १८० ८६. ३. ८, ९, २४, ३२, ३७; ८७.३; ८८. १, २, ३ १५ १७, ३८; ८९ ९, ३४, ५९, ६०, ६१; -पुरी १. ८३; ८६. २७, ३३, ३८, ४१, ५२; ८७ १२; ८८. ४; ८९ १ ६, २१, २४. |
| भोहसर | १०. ३४; -नयरी १०.५५, ७४; २२. १०२ |
| मिलाणकुंड | १०३. ९० |
| {मिहिल मिहिला | २० ४७; २० ४५, १८०; २१. ३२; २८: २ १५, ७६, ७८, ९६. १३२; ७२. ७; ९५. ३४; -नयरी २८.२६, ९५; -पुरी २८ ५३, ५९; ३०, ९७ (देखो महिला) |
| मेहमिह | ५५.५२ |
| मेहपुर | ६. २; ९१, ४. -नयरी ७.४४ |
| मेहरव-तिरथ | ७७. ६१ |
| रयणस्थल | ११८ ७५ |
| रयणपुर-१ | ६.५, १६८, २१६; १३. २७; ५५.५५; ९०. १, १४, २९ |
| ,, -२ | २०.४१; ९५. ३१ |
| ,, -३ | ८२.६८ |
| रयणवरचंपा | २०.७ |
| रयणसेचय | १३.२९ |
| रयणसेचपुर | ५.११५ |
| रविभूस | ११.५ |

| | |
|------------|---|
| रघायलनगर | १९.८ (देखो धरुणनगर) |
| रहगीय | ९१.४ |
| रह-चक्रवाल | ८. ४१; -नेउर ७. ४०; १९. २; २८ ७; ७०.४७; ८५.२८; -नेउर चक्रवाल ३.१५२; ६.१६५; ८. २४८; -नेउर चक्रवालनगर १३. ९; -नेउरचक्रवालपुर ५. ६४; ६. १५६; ७. १, २१; १३. ९, १०. (देखो चक्रवाल) |
| रामपुरी | ३५.२६ |
| राय-गिह | २०. २०२; २१. २४; २५. २०; -गिह २५. १८; ८२ ४४; -पुर २.८, ४८; ११ ५, ४६; २०. १५२, १५३. (देखो कुसग- नयह) |
| रायवलि | ५.१०४ |
| रिक्कपुर | ८.२५५; ९.५; ८५.२६ |
| रिद्धपुर | २०.९. (देखो अरिद्धपुर) |
| रिवुजय | ५५.५४ |
| लंका | १. ४६, ५२ ७८ ८०; ५. १३३, २२३; ६. १११, १४८, १९७, २०६; ७. १३, ५६; ८. ३५७; १०. ४८, ७१, ७३; ११. ८९. ९१, ९९; १२. १, ३६, ४०, ५२. ६९, १०९, ११९. १२६, १२९. १३१. १४०, १४४; १३. ४, ८. १६; १४, १५१; १५. १५; १६. ११, १६; १८. २, ४, १९. ७, १३, १७, १९, २९, ३३; ४४. १२, ४७; ४६. १०, १७, १९, ८०, ९१, ९५; ४८. ४४, ४७, ४९, ५२, ५५, ११४, ११८, १२१, १२२; ४९. २७; ५०. १८; ५२. २७; ५३. ३, ८, ३०, ९४, १२०, १२५, १२७, १४६; ५४. १८, ३२, ३७, ४३, ४४; ५५. |

| | |
|--|--|
| | ४, १२, १४, ४९; ५६. ३९; ५७. २१; ५९. २२, ५२, ५९; ६१. ३, ९, २३, ५६, ७१; ६४. २७; ६५. ११, १३; ६६. २९; ६७. ८ १३; ६८ ३०. ५०; ६९. ३, १५ २१, २२, २७, ४६, ५६, ५७; ७०. २०, ३२, ६०; ७१ १० ६१; ७२. ३, १५, १६, २६; ७३. २४. २७, २९; ७४. ४२; ७५. १, ४, २४, ७४; ७८. १६ २२, ४१; ८०. १९; ८२. १११; ९३. २६; ९५. २४; १०१. ३०; १०२. ४; १०३. ३; ११२. २; ११३. १६; ११८. १२, १५. ६३. १०४; २. ११३; ६. २२८; ७. १६२, १६८; ८. १३४, २६३, २८५; १४. १५७; ४३. ९; ४६. १२; ४९. २९; ५०. १७; ६७. ७, १२, १६; ७५. २२; ७७. ४७; लंकापुरी ५. १२९, १३५, १३७, १६५ २१७, २६७, २७०; ६. १२ ९६, २२३, २३५; ७. ५८, १०१, १६१, १६४, ८. २८१; ११. १४१, १४२; १९. १४; २०. २०२; ४३. १३; ४५. ४४; ४८. ५३; ५१. २३; ५३. १, ९०; ५४. २६; ५५. १; ६४. १३; ६५. १६; ६६. १३, २०; ६७. १३, १७, ४२; ६८ २, ४; ७०. ५०; ६८; ७५. १३, २३; ७६. १; ७७. ३९, ५०, ५१, ५४; ७८. १७, ४३; ९५. २३. लच्छीपुर ५५ ५३ लच्छीहर ९१.४ लोगपुर ११.६२ वडसावरपुर ७.५० |
|--|--|

| | | | | | |
|-------------|-------------------------|-------------|-------------------------|-------------|-------------------------|
| वंशस्थल | ३९.४; -पुर ४०.२ | ससिपुर | ३१. १४ | सिरिमलय | ९१.५ |
| वृषपुर | ७७ ८४ | साएय | २०. २७, १८०; २३ ७; | सिरिस्त्रिय | ९१ ६ |
| चडनयर | १०५.८८ ९०. | | ३१.३८; ७८.३९; ८७. १७; | सिन्मंदिर | ९१.३ |
| वरपुर | १७.५२ | | -पुर | सिहपुरी | १३.२३ |
| वरुणपुर | १६.१७; १९. १९ (देखो | | ४.६८; ५.५०, ५९. २०३; | सीहपुर | २०. ३७, १६९; ३१. १६; |
| | रसायलनयर) | | २१.४१; २२ १००; ६४. ८; | | ५५.५३; ९१. ६; ९५ ३४ |
| ववगमसोगा | २० १० (देखो वीयसोग- | | ८०. १२; ९१. २७; -पुरी | सुपडडपुर | ६३ ३५ |
| | नयरी) | | १.८०; ४. ५४; ५ १७५; | सुर-गीवपुर | ६३. १९; -गीय ८. २५३; |
| वाणारसी | ६. १३५; २०. ४९, १५५; | | २२. ५८, ६०; २३. १९. २०; | -संगीय ८ १८ | |
| | ४१. ४८; ९५. ३३; १०४. ९, | | २५. २२; २८. ९४; २९. ३६; | सुरब-संगीय | ८. १; |
| | २१. (देखो कासिपुर) | | ३०. १०, १२, ८२, ८७; ३१. | सुरणेउर | ५५ ५४ |
| वाराडय | ५. २१० | | ११८; ३२. २४; ६३. ६३; | सुरमण | ७८ ११; |
| वारिपुर | २०. १८० | | ६४. ३, ४; ७८ ३६ ५५; | सुरिदरमण | ७५ ३१ |
| विउद्धवरनयर | ७५. ७३ | | ७९. २, ११; ८६. २; ८९. | सुवेलपुर | ५४. ४३. (देखो वेलंघर- |
| विजयथली | ९८. ६० | | ११; ९४. ८५; ९९. १४; | पुर) | |
| विजयपुर | २०. १४९, १८९, २०१; | | १००. ४६, ४८; १०१. | सुसीमा | २०. ७, ९, १८९ |
| | ३५. ६९; ३६. ७, ४१; ३७. | | १९; १०५. ९२; ११०. ३; | सुर | ५५. ५२; |
| | ४; ३८. २, १५; ८९. १० | | ११२. १; ११३. १९ | सुरपुर | २० २०१ |
| विजयावई | १०३. १२९; -नयरी | साएया | २०. १०, ३१, ४०, १६९; | सुरोदय | ८ १८६, १९३, १९६ |
| | ११८. ६४ | | ८० १४ १६; ९४ ६१; ९८. | सेणापुर | ३१ ४ |
| विजिया | १०५. ८५ | | ४२, ४६ ५४, ५५; ९९. ३२; | सेयंकरपुर | ६३. ६५ |
| विणीया | २४. ३४; -पुरी ३२. ५० | | १०५. ८२; (देखो | सेलपुर | २० १६९ |
| | (देखो सापय) | | साकेयपुर) | सोमपुर | ७७ १०० |
| वियन्मनयर | २६. ८; ३०. १३ ७४; | साकेयपुर | १०. ८६; | सोरियपुर | २० ४८ |
| वियन्मा | ३०. १९ | साकेयानयरी | ८२. ११४ (देखो | सोह | ५५ ५३ |
| विराहियपुर | १. ५५ (देखो अलंकार- | सामलिनयरी | बभोज्जा) | हणुरुह | १७. ११८; १८. ५७; १९. ३; |
| | पुर) | | १०४. २६ | | ५५. १६; ८५. २६; -नयर |
| वीयसोगनयरी | २०. १४२. (देखो वव- | सालि-ग्गाम | १०५. १९, २२, २३ २८; | | १७. ११२, १२१; १८. |
| | गयसोगा) | | -वरग्गाम १०५ २०. | | ५०, ५३; -पुर |
| वैष्णाय | ४८. ६३ | सावत्थि | ८८. १९, २४; | हरिदय | ९१. ५ |
| वेलंघरपुर | ५४. ३९ (देखो सुवेल- | सावत्थी | २०. २९ १११, १३९, १६९; | हरिपुर | २०. २०१ |
| | पुर) | | ८८. ३४; ९५ ३२; -नयरी | हेमंकपुर | ७७. ८१ |
| संतिनामनयर | २०. १८० (देखो कुंजर- | सिधुणद | ६. १३६ | हेमंगपुर | ६. २३७ |
| | पुर) | सिद्धत्थनयर | ८. १६८ | | |
| संदणथली | ११५ १ | सिरिगुह | ३९. ८६ | | |
| सथंपभ | ७. १५३; -पुर ७. १४९, | सिरिछाय | ९१. ५ | | |
| | १५५; ८. २२, ५४, ६५ | सिरिनिलय | ९१. ५ | | |
| सच्चरिपुर | ३०. ६५ | सिरिपह | ५५. ५४ | | |
| सयडनाम | ५. २७ | सिरेपुर | ५५ ५४ | | |
| सयदारपुर | १२. १० १४ | सिरिबहुरव | १९. ४१; ४९. १; ८५ २६ | | |
| ससंकनयर | ८२. ८९ | सिरिमंत | ९१. ५ | | |
| ससिनाय | ५५. ५४ | सिरिमंदिर | ५५. ५४ | | |
| | | | ९१. ३ | | |

(ख) जन-जनपद देश

| | |
|-----------|-------------------|
| अंग | ३७. ७; ८८. २७ |
| अंगा | ९९. ५५ |
| अंधा | ९८. ६७ |
| अंबडा | ९८. ६५ |
| अंसुचूडा | ९९. ५५ |
| चूडा | |
| अद्धवन्वर | ३७. ५, ११; २८. ५९ |
| अद्धभरह | ७. १७० |
| भरहअद्ध | |

| | |
|-------------|--|
| अवतिविसय | ३३.११ |
| अवरविदेह | ५.२०, ३६, ११५, २३१; ३१.१४; ८२.६७ |
| असिणा | ७.५० |
| असुरा | ७.४९ |
| आणंदा | ५५.५५; ९८.६६ |
| आहीरा | ९८.६४ |
| उत्तर-कुरुव | ३५.५०; १०४.२८; -कुरु ३.२७, ३५; ७०.५७; १०२. १०९, ११२; -कुरुवा ३१.८ |
| उलुगा | ९८.६६ |
| एरवय | ३.३२, ३३, ४१; १२. १०; २०.६९; ३५. ५७; १०२. १०६, १११; १०३. १२६; |
| एरावय | ७७.६३ |
| कंसु | ९८.६२ |
| कंबोय | २७.७ |
| कच्छा | ९८.६४ |
| कणया | ५५.५२ |
| कलिगमा | ९८.६७ |
| कालिगा | |
| कम्पावासी | ५५.५२ |
| कवोय | २७.७ |
| कसनीरा | ९८.६५ |
| कामोणंदा | ३४.४१, ४७ |
| कालाणला | ९९.५५ |
| कालिगा | ९९.५५ |
| कलिगमा | |
| किन्नरा | १९.३६ |
| किन्नरगीया | ५५.५३ |
| कुंता | ९८.६२ |
| कुरुवा | १०२.१२८; ११८.८३ |
| कुहरा | ९८.६७ |
| केरला | ९८.६४ |
| केलीमिला | ५५.१७ |
| कोला | ९८.६६ |
| संधारा | ९८.६६ |
| खखा | ९८.६६ |
| गंधव | १७.८२, ८४, ८५; ५१. १२, २४, २५ |
| गंधवगीयनयरा | ५५.५२ |

| | |
|-------------|-----------------------------------|
| गंधवा | ७.५० |
| गयणवल्गभा | ५५.५२ |
| गीवपुरा | ५५.५३ |
| गोसाला | ९८.६५ |
| वारुवच्छा | ९८.६४ |
| वच्छा | |
| चिलाय | २७.८ |
| चीण | १०२.१२१ |
| चूवा | ९९.५५ |
| अंसुचूवा | |
| जउणा | ३७.१० |
| जंबुभरह | ४३.१० |
| जम्बवा | ७.४९ |
| जयास | ५५.५५ |
| जवणा | ९८.६४ |
| जायव | २०.५६ |
| जोइसदंडा | ५५.५५ |
| झसा | ९८.६२ |
| णंदणा | ९८.६२ |
| णोमिस | ५५.३५ |
| तिरियलोय | ३.२० |
| तुरुक | २.११ |
| तिसिरा | ९८.६५ |
| दक्खिणदेस | ३२.५५ |
| दक्खिणभरह | २.१ |
| दक्खिणावह | २६.६८ |
| दाहिणपह | ३२.१३ |
| दाहिण भरह | १०३.७ |
| देवकुरा | ११८.५९; |
| देवकुरु | ३.२७; ८२.६६; १०२. १०९.११२, १२७ |
| महतिलया | ५५.१७ |
| नेमाला | ९८.६४ |
| नेवाला | ९९.५५ |
| पंचाल | ३७.८ |
| पणणंदण | ९८.६२ |
| परिक्षेया | ५५.५५ |
| पारसउला | ९९.५५ |
| पुंढरीवसिजय | ६३.३३ |
| पुंढा | ९९.५५ |
| पुरिकोवेरा | ९८.६७ |

| | |
|------------|--|
| पुलिंद | ९४.४३; १०४.२० |
| पुण्यविदेह | ३.३२; २३. ३; १०३. ६०. १२९ |
| वडवरा | २७. ८ २६; ९८ ६५; ९९. ५५ |
| बहुणाया | ५५.५३ |
| भरह | ३.३१, ३३. ३५. ४१. ५६; ५.९४, ११८, १६८, २२७; ८. १३९, २०१; २०. ६९, १५३. १६०; ३५. ५७, ६८; ३९. ७७; ४३. १०; ४८ १११; ६८ ८; ७०. १५; ७८. १३; ८२. १०५; ८८ ४; १०२. १०६. १११; १०५. १५; १०८ २२; ११८. ३७, ७१, ९२; -वास ४. ५६; ५. ८२, ११६, १४५; ८. १८८; १३. २१; २०. ११२, ११५, १३५. १५९; २८. ६९; ३०. ४९; ६९. ५८; ७०. ४६; १००. २५. |
| भरहद | ७.१६४; -वास ८.१४३ |
| अडभरह | |
| भारह-वरिस | १५.९; ३१.१८ |
| भरह | -वास ३.५३; १५.४; २०. २५, २०४; ७०. ३६; ७३.४; ८९.४२ |
| भाणुससिवणा | ५५.५२ |
| भाविसाला | ५५.५४ |
| भिल | १२.१३ |
| मीमा | ९८.६२ |
| भूया | ९८.६२ |
| मं(ल) गला | ९८.६२ |
| मंदिरा | ५५.५३ |
| मगहा | २.१; -विषय १०५.१९; |
| भागहवा | |
| मज्झदेस | ११.१०३ |
| मरंदा | ५५.५४ |
| मलया | ५५.१६, ५४ |
| महाविदेह | १०२.१०६ |

| | |
|------------|---------------------|
| महामेला | ५५.५३ |
| {सागह्या | ९९.५५ |
| {भगदा | |
| मा सा)ला | ९८.६५ |
| माहिदा | ५५.१६ |
| {मिच्छ | १२.१४.२७.१८;३४.४१; |
| {मेच्छजण | २७.६ |
| {मेच्छा | २७.५.१०.१६.२३.२४. |
| | २५. २७. २८. ३०; |
| | ३५;२८.५९ |
| मेहनिहा | ५५.५२ |
| मेहलया | ९८.६६ |
| रम्मय | १०२.१०६ ११२ |
| रयणपुरा | ५५.५५ |
| रयणा | ५५.१७ |
| रिलुजया | ५५.४४ |
| ल(मं)गला | ९८.६२ |
| लपाग | ९८.५९ |
| लच्छीपुरा | ५५.५३ |
| वइसा | ७.५० |
| वंगा | ९९.५५ |
| {वच्छा | ९८.६४ |
| {वाइवच्छा | |
| वरावडा | ९८.६४ |
| वरुला | ९८.६४ |
| वल्हीया | ९८.६६ |
| बाणारसीदेस | १०४.९ |
| बामणा | ९८.६२ |
| विंशत्यली | ७३.७;७७.६१ |
| विजय | ७५.७३ |
| विजा | ९८.६५ |
| विदेह | ३.३१;३५.५७; ७५. ३१; |
| | १०२.१११;१०८.७९ |
| विखाणा | ९८.६५ |
| वेल्धरा | ५५.१७ |
| वोया | ९८.६४ |
| संझाराया | ५५.१७ |
| सना | ९८.६४ |
| {सबरजण | २७.७ |
| {संबरा | ९८.६५ |
| सरमया | ९८.६५ |
| सलहा | ९८.६२ |

| | |
|-----------|---------------------|
| ससिनाहा | ५५.५४ |
| सा(मा)ला | ९८.६५ |
| सिधुदेस | ४८.१०२ |
| सिरिनिलया | ५५.५४ |
| सिरिपहा | ५५.५४ |
| सिरिमता | ५५.५४ |
| सीहपुरा | ५५.५३ |
| सीहला | ९८.६२;९९.५५ |
| सुय | २७.७ |
| सुरणेउरा | ५५.५४ |
| सुरटेणा | ९८.६६ |
| सूरा | ५५.५२ |
| सूला | ९८.६५ |
| सांपारा | ९८.६४ |
| सौहा | ५५.५३ |
| हरि-वरिस | ५८.८; ११८.६७ |
| -वास | २१. ४, ७; १०२. १०६, |
| | ११२,१२७,१२८ |
| हिडिंबय | ९८.६५ |
| हेम-वय | १०२. १०६. ११२, १२७, |
| | १३६; -वास १०२.१२८ |
| हेरणवय | १०२.१०६ ११२ |

(ग) द्वीप-निवेश

| | |
|------------|---------------------|
| {अओहण | १०.१५ |
| {अजोह | ४८.५४ |
| {सुओवण | |
| अद्धतईय | ४८.३५ |
| अद्धसग | ५.२४६;६.३२;४८.५५ |
| अमल | ६.३२ |
| अलंघ | ६.३२ |
| आवत्त | ५.२४८ |
| आयलिब | ५.२.४८ |
| उकड | ५.२४८;६.३२ |
| {उवहिनिगोस | ४८.५४ |
| {जलअ | |
| {समुह | |
| {कववीव | ५५.१६ |
| {वाणरवीव | |
| {कचण | ४८.५४; -पुण्ण १०.१५ |
| {कणय | ५.२४६;६.३१;५५.५२ |
| कत | ६.३२ |

| | |
|-----------|-----------------------|
| कंबुहीव | ४५.३२;४८.३९ |
| किन्नरवीव | ३.३२ |
| कुक्वरहीव | १७.१०२ |
| खेम | ६.३३ |
| जंबुवीव | २. १. जंबुहोन २. ११४; |
| | ३.२१ ३१. ३४; ५ ९.४; |
| | ७.१०९ १४८;९ ३; १७. |
| | ४८, ५२; ७९.३;८२.६७; |
| | १०२. ९१, १०१, १०२, |
| | ११०; १०३.७; जंबू ४३. |
| | १०; ८२. ७७ |
| {जलअ | ६.३१ |
| {समुह | |
| उझाम | ६.३१ |
| तव(ग?) | ५.२४८ |
| तोयवलीव | ६.३२ |
| दहिमुह | ५१.१;५३.१२२;५५.१७ |
| दुग्गह | ५.२४८ |
| धज | ५.२४६ |
| {धायइसंड | ५.१०८;१२. १०; ३१. ८; |
| | ४८.३५;७५.३१; |
| {धायईसंड | ७८.११;१०२.११० |
| नवीसर | ६.४९;५२.५८ ६४; १५. |
| | ३०;४४.१८ |
| -वरवीव | ६.५१,५५,५६ |
| नभ | ६.३३ |
| {पल्हाय | १०.१५;४८.५४ |
| {मणपल्हाय | |
| पुक्खरवीव | ८२ ६४; १०२. ११०; |
| | ११८ ७९ |
| {फुड | ५.२४८ |
| {फुरंत | ६.३२ |
| भाणु | ६.३३ |
| {मणपल्हाय | ५.२४६;६.३१ |
| {पल्हाय | |
| मणोहूर | ५.२४६ |
| मेह | ५.२४८ |
| रक्खसवीव | ५. १२६;४३.९;४८. ५०; |
| | ४९.३४;६३.९ |
| रयण | ५. २४८; ६. ३२; |
| | -हीव १४.१५१;३२.६१ |
| रोहण | ६.३२ |

३. वर्गीकृत-भौगोलिक-विशेषनाम

| | | | | | |
|-------------|----------------------|-------------|------------------------|------------|------------------------|
| वरुणदीव | ३.३२ | सीओया | १०२ १०८ | { देवगिरि | ६.८ |
| { वाणरदीव | ६.३४ | सीया | १०२.१०८ | { अमरगिरि | |
| कडदीव | | सुवण्णकूला | १०२.१०८ | { नाभिगिरि | ३ २५; |
| नियड | ५.२४८; ६.३२ | हंसावली | १३.४१ | { नाहिगिरि | १०२ १०३ |
| संसा-थार | १०.१५; ४८.५४; -याल | हरि | १०२.१०७ | नियुज | ८२ १०५ |
| | ५.२४६; -बैल | हरिकंता | १०२.१०७ | निसड | १०२.१०५ |
| | ६.३१ | | | नील | १०२.१०५ |
| { समुह | ५.२४६ | (क) पर्वत | | पंचसंगमय | ५ २१. |
| { उवहिनिसोस | | अंजण-कुलसेल | ८.२१४; -गिरि १८.३९; | पुष्क-हरि | ७६ १६; -गिरि ४६. |
| सयंभुरमण | १०२.१०२ | | ३७,६ | | ६६.७३ |
| { सुओवण | ६.३१ | { अट्टावय | १.६०; ८. १०; ९ ५३. | बलाहय | ८ १० |
| { अओहण | | { कइलास | ७१; २०.२७, ५१; -नग | { मंदर | १.५८; ३.७८; २१ १८; २६. |
| सुवेल | ५.२४६; ६ ३१; १०. १५; | | १. ५५; -पव्वय ९. ९६; | { मेरु | ४२; ८६. २०; ९७. १४; |
| | ४८.५४ | | १२.३६, ३९; ९५. ३० | | १०२.३९, १०३; ११३. ४० |
| हरि | ६.३१; -ज ५ २४६ | | -सिहर ९२. २१; -सेल | | -गिरि १ ३५; ३. २३; |
| हंस | ६ ३१; -दीव १०. १५; | | ४. ८८, ५. १६९; ९. १०३ | | २३.५; १०७. ७; -सिहर |
| | ५५ ४९; -दीव ५.२४६; | { अमरगिरि | ९५. ३७ | | २.२४; ७७. २३ |
| | ५४.४५; ५५.२४; -रव | { देवगिरि | | | |
| | ४८.५४ | उज्जेत | २०.४८; -सेहर २० ५१ | मणिकंत | ९.२१ |
| (घ) नदी | | { कइलास | ५३.९३; ९८.६१; १०३. | मणुसुत्तर | ६.५३ |
| कण्णरवा | ४१.२; ७९.६ | { कविलास | १३२.१३३; -गिरि ५. | मलय | ३१ १००; ५५. १६ |
| { कुंचरवा | ४२.१५ | | ५३; २७.४; -पव्वय २८. | महाहिमव | १०२.१०५ |
| { कोंचरवा | ४३.२१ | | ६; ६४. २८; ८२. १०९; | महिंदगिरि | ३०.१९. |
| { गंगा | ५.१७२; ११. १११; ९४. | | -सिहर ७.१४९; ४०. १०; | माहिंद | ५५.१६ |
| { जण्हवी | ५३; ९५. १; ९८. ६१; | | ६६.२५; ८०. १३; १०६. ३० | महु-गिरि | १.४५; ८.२५५; |
| | १०२.१०७ | कंसुसेल | ४५ ३२ | | -पव्वय ६.२०८ |
| गंभीरा | ३२.११, १६ | { कविलास | ९.५७ | | |
| जउणा | २५ ४२ | { अट्टावय | | { मेरु | २. २६; ३. ८४; ५. १८६ |
| { जण्हवी | ४१.५१; ९४.४७ ४८ | कण्णपव्वय | ६.२१८ | { सुमेरु | ८. ६२, ९८; १३. ४३; |
| { गंगा | | किंकिंधि | ६.४५ | | १४. १; १६. ६२; ५१. |
| तावी | ३५.१ | मुंजवरपव्वय | ८.८८, ९०, ९४ | | ८; ५३. ९८; ६३ ५१; |
| नम्मया | १०. २९; ३४. ३२, ३४; | चित्तकूड | ३३.४, ९ | | ६८ ४५; ७९.४; ८०.३; |
| | ७७. ६४ | जमलगिरि | ३.२८ | | ८२.९४; ४४ ८; ९४.६ |
| नरकंता | १०२.१०८ | जलवीइ | १९.१४ | | १०१.४३.४४; १०३.५७; |
| नारी | १०२.१०८ | तिकूड | ५ १२ ७; ६. ६९; ८. २६३; | | १०८ २१, ४१; -गिरि |
| मंदाइणी | १०.५०; ८२.१०९ | | ४३. ९; ५२. १; ६५.२१; | | १०२.६५; -नगवण |
| रत्ता | १०२.१०८ | | ७१. ६७, ६८. १०० ६१; | | १०८.४ |
| रत्तावुइ | १०२.१०८ | | -पव्वय ४८. ५१ -सिहर | मेहवर | ८.२९ |
| रुपयकूला | १०२.१०८ | | २३.८; ५२.२८; ८५.२५. | रहावण | १३ ४२ |
| रोहियसा | १०२.१०७ | { दंडगिरि | ४३.११; | { रामगिरि | ४० १६. |
| रोहिया | १०२.१०७ | { दंडयगिरि | ४२.१४ | { संसहरि | |
| सिंधु | ९८.६३; १०२ १०७ | दंती | १५.९ | रुपि | १०२ १०५ |

३. वर्गीकृत भौगोलिक-विशेषनाम

| | |
|------------|------------------------|
| वंस-इरि | ३९.४, ११; ७९.७; -गिरि |
| रामगिरि | १.७२; ३९.१२; -नगवर |
| | ८२.२; -सेल ४०.९ |
| वक्खारगिरि | ३.२६; १०२.१०९ |
| वसंतगिरि | २१.४६ |
| विउल-गिरि | १.३४; २.४१; -गिरिद २. |
| | ३७; -महागिरि २.३८ |
| विज्ञ-इरि | १०.२७; -गिरि ३१.१०० |
| विज्ञापाय | १०३.१६ |
| वेयद्ध | १.४७, ५६; ३.१५०; ५.६४; |
| | १२५.२३३; ६.८२, १५६, |
| | २३४; ७.९; ८.१८; १५४, |
| | २०; १७.५५; २७.४; २८. |
| | ८३; ३१.१४; ८५.२८; ९१. |
| | १; १०१.५६; १०३.५७; |
| | -गिरि १२.७३, १३९; १३. |
| | ९; १५.३१; -नग ८.१; |
| | -नगवर ९०.१; -मगवरिद |
| | ६२; ७.२१; -पव्वय |
| | ३.२६ |
| वेलधरपव्वय | ५४.३९ |
| संवागिरि | १८.४४ |
| सम्मेय | ८.१०; २०.५२; ९४.२७; |
| | १०३.१०८; -पव्वय ५. |
| | २०६; ८.२१२; २१.२८; |
| | ३९.६३.७३; -सेलसिहर |
| | ५.१६७ |
| सम्भावत्त | ८.१० |
| सिरिपव्वय | ५५.१६; ८५.२६ |
| सिहरि | १०२.१०५ |
| { सुमेह | -गिरि ७५.३८; -सिहर |
| { सुरपव्वय | १०९.१० |

| | |
|------------------------------|----------------------|
| सुरदुहुगिरि | १०८.२२ |
| सुरपव्वय | ११८.६४ |
| सुवण्णसुग | १४४ |
| मंदर | |
| { हिमगिरि | ७३.७; -सिहर २.३८ |
| { हिमव | १०२.१०५ |
| { हिमालय | १०.१३ |
| (ख) वन-उद्यान-कानन-गुहा-वापी | |
| असोगमालिणीवावी | ४६.७६ |
| कालिजर-महारण | ५८.९ |
| चउकाण वण | ३.२३ |
| तिलयवण | ८८.२१ |
| उंडारण | ९८.४२ |
| दंडगारण | ३१.२५; ४१.३५; ४२.२६; |
| | ४३.४३ |
| दंडयमहारण | ९५.२२ |
| दंडयरण | ४९.३ |
| दंडयारण | ४०.१३.११३.५८ |
| दंडारण | ४१.१; ४२.१४; ४३.१९; |
| | ७९.५; ९९.१४; १०३.३ |
| देवरमण-उज्जाण | ४६.१५ |
| मंदण-वण | ७.१९; १२.४२, ४६; |
| | ४२.१० |
| { पउमवरउज्जाण | ४६.७३ |
| { पउमुज्जाण | ५३.८० |
| पंडगावण | ४६.७३, ७७ |
| पलियकै-गुहा | १७.७५, १०१; १८.४५; |
| | ५०.३ |
| पारियत्त-अव्वी | ३२.१० |
| { सीममहारण | ८.१० |
| { सीमारण | ७.१०४; ८.९ |
| भूयरव | १८.२० |

| | |
|-----------------|---------------|
| भूयरण | १८.३७ |
| मंदारण | ३३.३० |
| महिषउद्ध-उज्जाण | ३०.२९; १०१.२० |
| वसंततिलय-उज्जाण | ३.१३४; ३९.५० |
| { विज्जा | ३५.१ |
| { विज्जाववी | ३४.३४ |
| समतकुसुमुज्जाण | ४६.६६ |
| सयडामुह-उज्जाण | ४.१६ |
| सलइवण | ८२.१०५ |
| हिमालय-गुहा | १०.१३ |

(ख) समुद्र

| | |
|-----------|---------------------|
| खीर-समुह | ३.१०७ |
| खीरोदहि | २.२५; २१.१८ |
| खीरोयसायर | ३.९३ |
| { रयणायर | ५३.५१ |
| { लवण-जल | ३.३०; ६.३४; ८.२५७; |
| | ४३.१०, २१; ४८.५०; |
| | ५५.१; -तोय ६.२९; |
| | ३७.५५; १०२.१०४; |
| | -समुह ३.२२; ७.६०; |
| | -सायर ९९.१८ |
| लवणोदहि | ६५.१६; १०१.४३ |
| लवणोय | ६४.१३ |
| लवणोयहि | ९४.८ |
| सयमुरमण | ११२.१८ |
| सिधुसायर | ११२.१७ |
| (ग) सरोवर | |
| माणस | १५.४१; -वरसर १५.४०; |
| | -सर १६.४४; ८२.१०८ |

परिशिष्ट ४

सांस्कृतिक सामग्री

(क) आभूषण

(ख) आयुध

(१) आयुध-प्रहरण-भाषरण

(२) प्रक्षेपास्त्र

(ग) तपह्वर्या

(घ) प्राणी

(ङ) वनस्पति

(च) वाक्त्रि

(छ) विद्या

| | | | | |
|----------------------------|---------------------|--------|--------------------------------|---------|
| (क) आभूषण | सर्ग (सूत्र) | ६.१९२ | सर (शर) | ५९.१९ |
| अंगुल्यम (अङ्गुलीयक) | सुरूप (क्षुरप्र) | ५९.१९ | सरासण (शरासन) | ६१.६६ |
| कंकण (कङ्कण) | खेडय (खेटक) | ७१.२१ | सम्बल (शर्वल) | ५९.२१ |
| कंठसुत (कण्ठसूत्र) | गदा (गदा) | ५२.७ | शिरसाण (शिरसाण) | १२.८४ |
| कठिया (कठिका) | चक्र (चक्र) | ७१.२१ | सिला (सिला) | १२.९० |
| कडय (कटक) | चडक | ७.९८ | सूल (सूल) | १२.१११ |
| कडिसुतम (कटिसूत्रक) | चाव (चाप) | ५३.१०९ | सेछ (बाण विशेष) | ७.२६ |
| कुंडल (कुण्डल) | छुरिया (छुरिका) | ७१.२१ | हल | ५९.८६ |
| केऊर (केयूर) | जट्टि (यष्टि) | ५९.१५ | (ख-२) प्रक्षेपास्त्र | |
| चूडामणि | झसर | ५३.८२ | अग्नेय (अग्नेय) | १२.१२६ |
| तिरीड (किरीट) | तिसूल (त्रिसूल) | ५३.१०९ | इंधणत्थ (इन्धनास्त्र) | ७१.६४ |
| नक्खलमाला (नक्षत्रमाला) | तोणीर (तूणीर) | २४.३० | उज्जोयत्थ (उद्योतास्त्र) | १२.१२८ |
| नेउर (नूपुर) | तोमर | ७३.१०९ | उरगत्थ (उरगास्त्र) | ७१.६६ |
| मउड (मुकुट) | धणु (धनुष्) | १२.८४ | गरुडत्थ (गरुडास्त्र) | १२.१२० |
| मुहा (मुद्रा) | नंगल (लाङ्गल) | ७२.३३ | तमनिवहत्थ (तमनिवहास्त्र) | १२.१३०; |
| मेहला (मेखला) | नायपास (नागपाश) | ६१.४८ | | ७१.६५ |
| संताणयसेहर (संत्राणक-शेखर) | पट्टिस (पट्टिस) | ५३.१०९ | तामसत्थ (तामसास्त्र) | ५९.६३ |
| सिहामणि (शिखामणि) | परसु (परशु) | १२.१०१ | दिवायरत्थ (दिवाकरास्त्र) | ६१.४४ |
| हार | फर | ७१.२१ | धम्मत्थ (धर्मास्त्र) | ७१.६३ |
| (ख-१) आयुधप्रहरणभाषरण | फल्लय } (फल्लक) | ७१.२१ | पडिंधणत्थ (प्रतीधनास्त्र) | ७१.६४ |
| अद्धचंद (अर्धचन्द्र) | फजिह (परिघ) | ७.२६ | महरत्थ (महास्त्र) | ७१.६७ |
| असि | बाण | ७.२६ | मारुयत्थ (मारुतास्त्र) | ५९.६१ |
| असिलट्टि (असियष्टि) | भिडमाल } (भिन्दपाल) | ७.३७ | रक्खसत्थ (राक्षसास्त्र) | ७१.६३ |
| कणय | भिडिमाल } | ८.१२० | वयणतेयत्थ (वनतेयास्त्र) | ६१.४६ |
| कण्य (कल्प) | भुणगपास (भुजङ्गपाश) | ५९.७८ | वारुणत्थ (वारुणास्त्र) | ५९.६० |
| करवत्त (करपत्र) | सुसल | ५९.८६ | विणविणायगत्थ (विणविनायकास्त्र) | ७२.१३ |
| करवाल (करपाल) | सुसुंदि | २६.५६ | विणायगत्थ (विनायकास्त्र) | ७१.६७ |
| कवय (कवच) | सोगर (सुदर) | ५७.२८ | समीरणत्थ (समीरणास्त्र) | ७१.६१ |
| कुंत } (कुंत) | वउज (वज्र) | ७.१० | सिद्धत्थ (सिद्धास्त्र) | ७२.१२ |
| कुंत } | वसुनन्दय (वसुनन्दक) | ७०.६७ | (ग) तपह्वर्या | |
| कुठार | सत्ति (शक्ति) | १०.५६ | (उउमच्चरियं २२.२४-२७) | |
| कुदाड (कुठार) | सन्नाह (संनाह) | १२.८४ | आईणसुहनामा (आचीर्णशुभनामा) | |

| | | | | |
|---|-----------------------|--------|---------------------------------|--------|
| कण्ठानलि (कनकावलि) | काञ्च (काक) | ८.७९ | तिमि | १४.१७ |
| कुलिसमञ्ज (कुलिसमन्थ = वज्रमन्थ) | किमि (कुमि) | ३९.५५ | तिमिगिलि (तिमिङ्गलि) | २२.८३ |
| केसरिकोला (केसरिकोडा = सिंहविनिक्रीडित) | कुंजर (कुञ्जर) | २.१११ | तुरंगम | ४.६ |
| चरित्रलङ्घि (चारित्रलङ्घि) | कुक्कुट (कुक्कुट) | ८२.४० | तुरय (तुरग) | ३.७४ |
| जवमज्ज (यवमन्थ) | कुक्कुर | ९४.८० | दहुर (दहुर) | ११.११७ |
| जिनगुणसंपत्ति (जिनगुणसम्प्राप्ति) | कुम्भ (कुम्भ) | २.१८ | दाडि (दंष्ट्रिन्) | ७.१८ |
| तिर्य्यङ्गुड सुय (तीर्य्याङ्गुड ?) | कुरंग (कुरङ्ग) | १०३.१९ | धेणु (धेनु) | ३.४६ |
| तिलोयसार (त्रिलोकसार) | कुरर | ८२.३८ | नउल (नकुल) | ९६.१४ |
| दंशणनाणलङ्घि (दशनज्ञानलङ्घि) | कुरली | १७.७९ | नाग | ३९.१६ |
| धम्मोवासणलङ्घि (धर्मोपासनालङ्घि) | कुरुल (कुरर) | १४.१८ | पंचमुह (पञ्चमुख) | १७.८२ |
| पंचनभोक्कारविहि (पञ्चनभस्कारविधि) | केसरि (केसरिन्) | ३.७४ | पञ्चव (पञ्चग) | २८.१०८ |
| पंचमंदर | कोइल (कोकिल) | १५.२९ | पयंग (पतङ्ग) | १०३.२५ |
| परिसहजय (परिषहजय) | कोल | ८८.५ | पवंगम (पवङ्गम) | ६.१०२ |
| पवयणमाथा (प्रवचनमाता) | कोल्हुय (शृगाल) | ७.१७ | पाडिपवम (पारिपलवक) पक्षिविशेष | १४.१८ |
| पिबोलियामज्ज (पिपीलिकामन्थ) | खर | ७.१७ | पिगल (पिङ्गल) | १०५.५९ |
| मुद्गमज्ज (मृदङ्गमन्थ) | गद्भ (गर्दभ) | ७७.११२ | बहल (बलीवर्द) | ९९.२५ |
| मुक्तावलि (मुक्तावलि) | गय (गज) | ३.६२ | बप्पीहय (चातक) | २१.४३ |
| रयणावलि (रत्नावलि) | गरुड | ५०.१३ | बरहिण (बर्हिन्) | २२.१२० |
| संभवओमद् (सर्वोभद्र) | गवल (वनमहिष) | ८८.६ | बलय (बलीवर्द) | ८०.१३ |
| सीसंकारयलङ्घि (शीर्षकारलङ्घि) | गवा } (गो) | ८०.१३ | बलाया (बलाका) | १४.१८ |
| सोक्खसंपत्ति (सौख्यसम्प्राप्ति) | गाई } | ३.१५८ | भमर (भ्रमर) | १६.४७ |
| (घ) प्राणी | गाह (ग्राह) | ६.३७ | भल (भलक) | ९६.१३ |
| (पशु-पक्षी-मत्स्य-क्रीड-जन्तु) | गिद्ध (गृध्र) | १४.१८ | भिग (भृङ्ग) | ३३.१४८ |
| अच्छ (अक्ष) | गो | १४.२९ | भुयंग (भुजङ्ग) | ४१.२३ |
| अज | गोधेणु (गोधेनु) | ५.९५ | मय (मृग) | ९४.४१ |
| अयगर (अजगर) | गोमाउ (गोमायु) | ९६.१३ | मऊर (मयूर) | ११.११७ |
| अलि | गोहेर (गोधा) | ४८.९२ | मगर (मकर) | ९४.४९ |
| अहि | घोणस (घोनस) | ३९.१७ | मच्छ (मत्स्य) | १०.३१ |
| आस (अश्व) | चकाई (चक्रवाकी) | १६.५१ | मच्छी (मक्षिका) | १०३.४५ |
| आसीविस (आशीविष) | चकाय (चक्रवाक) | ३४.३२ | मजार (मार्जार) | ५.१०० |
| उट्ट (उष्ट्र) | चकी (चक्रवाकी) | १६.५४ | मयर (मकर) | ८.२५८ |
| उरग | चमर | ३.८२ | मयराय (मृगराज) | २.१७ |
| उलुय (उलूक) | चिसय (चित्रक) | १४.१७ | मसग (मशक) | ३३.१०८ |
| कच्छभ } (कच्छप) | जंबु (जम्बु) | १०५.५९ | महिस (महिष) | २.१११ |
| कच्छव } (कच्छप) | जडाउ (जटायु) | ४४.४० | महिशी (महिषी) | ३.१५८ |
| कच्छह } (कच्छप) | जडागि (जटाकिन्) | ४४.३७ | महुयर (मधुकर) | १५.२९ |
| करभ | जलवाह | ८८.६ | महुयरी (मधुकरी) | ३.८१ |
| करि (करिन्) | जलहृत्थि (जलहरितन्) | ३४.३३ | महोरग | १४.१८ |
| करिणी | जलूम (जलौक) | १.२४ | माइवाह (मातृवाह) | ५.२११ |
| करेणु | झस (झष) | ८.२५८ | मायंग (मातङ्ग) | ९६.१३ |
| कलहड | तंतुय (तन्तुक) | १४.१७ | मीण (मीन) | १७.११४ |
| कलहय (कलभक) | तरच्छ (तरक्ष) | ४२.१२ | मूसज (मूषक) | ५.१०० |

| | | | | | |
|--------------------|--------|-----------------------------|-------------|---------------------------|------------|
| मेसी (मेची) | ४१.५५ | हय | ४.३६ | कुमुय (कुमुद) | ४३.२ |
| मोर (मयूर) | २९.४३ | हरि (सिंह) | ३२.१० | कुरबय (कुरबक) | ९२.७ |
| रासह (रासभ) | ७१.५४ | हरि (वानर) | ३.८२ | कुवलय | १६.३८ |
| रिछ (रिख) | ९४.४५ | हरिण | ३३.८ | केयई (केतकी) | ५३.७९ |
| रिद्ध (अरिद्ध) | १०५.५९ | हरिणी | १६.३ | केयरी (वृक्षविशेष) | ४२.९ |
| रुह (हरिण) | ३.८२ | | | कोरिंटय (कोरिण्टक) | ५३.७९;४२.८ |
| रोहिय (रोहित-हरिण) | ४२.१२ | (४) वनस्पति | | खइर (खदिर) | ४२.७ |
| वजुल (वजुल) | १४.१८ | (तरु-द्रुम-वल्ली-पुष्प-तृण) | | खज्जूर (खजूर) | ४१.९ |
| वम्व (व्याघ्र) | ५६.४४ | अद्भुतय (अतिमुक्त) | ४२.८ | खज्जूरी (खजूरी) | ५३.७९;४२.९ |
| वप्पीह (चातक) | ११.११७ | {अंकोल (अङ्गोल) | ४२.६ | चंदण (चन्दन) | २१.५४ |
| वय (वृक) | ११८.७ | {अंकोलय (अङ्गोलक) | ५३.७९ | चंदणलया (चन्दनलता) | ५३.६७ |
| वराह | ३.८२ | {अंब (आम्र) | ४२.७ | {चंप | ४२.८ |
| वलवा (वडवा) | २.२ | {अंबय (आम्रक) | ५३.७९ | {चंपग (चम्पक) | ४६.७४ |
| बलाय (बलाक) | ३९.३ | अंबाडय (आम्रातक) | ४२.६ | {चंपय | ३.१३४ |
| बसह (वृषभ) | ३.६२ | अज्जुण (अजुन) | ४२.६ | चिल (पुष्पविशेष) | ६६.१९ |
| बाणर (वानर) | ३३.८ | अरलग (अरटुक) | ४२.८ | चूय (चूत) | ५३.७९ |
| बायस | ७१.२६ | अरविद | ४६.३ | जंबू (जम्बू) | २०.३९ |
| वारण | ४.५९ | {असोग (अशोक) | ३.१३४ | ज्दिया (यूथिका) | ५३.७९ |
| विछिय (वृश्चिक) | ३९.१७ | {असीय | २१.४९ | तंबोलवल्ली (ताम्बूलवल्ली) | ४६.७२ |
| विसहर (विषधर) | ५०.१३ | आसतय (अश्वत्थ) | ४२.६ | तण (तृण) | ११.११९ |
| संख (शङ्ख) | ८.२५८ | इंगुय (इङ्गुद) | ४१.९ | तल (ताल) | ५३.७९ |
| संसुक (शम्बुक) | १.२४ | इंदतर (इन्द्रतर) | २०.२९ | तिलय (तिलक) | ४२.६ |
| सप्य (सर्प) | ३.४६ | इंदीवर (इन्दीवर) | ३८.३० | तुंब (तुम्ब) | २९.२४ |
| सयवस (शतपत्र) | ७.१७ | उंबर (उदुम्बर) | ४२.७ | तेंदुग (तिन्दुक) | ४२.७ |
| सरभ | ३३.६ | उत्पल (उत्पल) | ४२.११ | दक्खा (शाक्षा) | ५३.७९ |
| सरह (शरभ) | ३२.१० | कंचणार (काञ्चनार) | ५३.७९ | दम्भ (दर्भ) | १८.१८ |
| ससय (शशक) | ५८.९ | कंदली | ५३.७९ | दहिवण (दधिपर्ण) | २०.४१ |
| साण (श्वान) | १०५.६० | कडाह (कटाह) | ५३.७९ | दाहिम | २१.४८ |
| सारंग (हरिण) | ९४.५० | कणयलया (कनकलता) | ७६.१६ | देवदास | ५३.७९ |
| सारस | १०.३२ | कप्परुक्ख (कल्पवृक्ष) | ३.३५ | धम्मण (धर्मण) | ४२.६ |
| सिप्पि (शुक्ति) | २२.८४ | कमल | ४२.११ | धव | ४२.६ |
| सियाल (शृगाल) | ८.२५८ | कमलिणी (कमलिनी) | ५३.८० | घायइ (घातकी) | ५३.७९ |
| सीह (सिंह) | २.११६ | कयंब (कदम्ब) | ४२.६ | नंदि (मन्दि) | २०.४२ |
| सीही (सिंही) | ७८.२८ | कयली (कदली) | ४२.९ | नग्गोह (न्यग्रोध) | ३६.२९ |
| सुसुमार | १४.१७ | कबिट्ट (कपिर्ध) | ४२.६ | नलिणी (नलिनी) | ९४.५० |
| सुय (शुक) | १००.५८ | कास | २१.७६ | नाय | ३.१३४ |
| सुणय (शुनक) | २२.८४ | किपाग (किम्पाक) | ३३.४२ | नाय } (नाय) | २१.४९ |
| सेण (श्येन) | ३०.७२ | किमुय (किम्बुक) | २१.४८ | भारंग (भारङ्ग) | ४६.७४ |
| हंस | ८.२५८ | कुंद (कुन्द) | ५३.७९ | नालिएर (नालिकेर) | ४१.९ |
| हंसपोयअ (हंसपोतक) | ३०.७२ | कुंदलया (कुन्दलता) | २१.४९ | नालिएरी (नालिकेरी) | ४२.९ |
| हथि (हस्तिन्) | २.१७ | कुज्जय (कुञ्जक) | ५३.७९ | निब (निम्ब) | ४२.७ |
| | | कुडंगा (कुटङ्गा) | ५३.७९ | पउम (पद्म) | २५.७ |
| | | कुडय (कुटब) | ११.११९;४२.८ | | |

| | |
|----------------------------|----------------|
| पंकज (पञ्ज) | ५.५५ |
| पलास (पलाश) | २८.१०९ |
| पाडल (पाटल) | २१.४९ |
| पाडलि (पाटला) | ५३.७९ |
| पियंग (प्रियु) | ५३.७९ |
| पुंडरीय (पुण्डरीक) | ७८.५४ |
| पुंडच्छु (पुण्ड्रेक्षु) | ४२.११ |
| पुत्राग } पुत्राय } | ४२.६ २१.४५ |
| पूयफली (पूयफली) | ५३.७९ |
| फणस (पनस) | ४२.७ |
| बउल (बकुल) | ३.१३४ |
| बयरी (बदरी) | २१.५४ |
| बिल (बिल्व) | ४२.६ |
| मंदार (मन्दार) | ५३.७९ |
| मल्लिया (मल्लिका) | ५३.७९ |
| मल्लोदुम (मल्लोदुम) | २०.३५ |
| माउलिगी (मातुलिङ्गी) | २१.५४ |
| मायइ (वृक्षविशेष) | ५३.७९ |
| मालइ (मालती) | ५३.७९ |
| रत्नकोरिंटय (रत्नकोरिण्टक) | ५३.७९ |
| रत्नासोय (रत्नाशोक) | २१.४८ |
| रायणी (राजादनी) | ५३.७९ |
| रुक्ख (रुद्राक्ष) | ५३.७९ |
| लवंग (लवण) | ६.४१ |
| लोणरुक्ख (लवणरुक्ख) | ४२.७ |
| बउल (बकुल) | ४२.९ |
| वंस (वंश) | ४३.२१ |
| वड (वट) | ३३.२ |
| वम्ह (व्रह्मर) | ५३.७९ |
| वेणु | ९४.४४ |
| सत्तली (सप्तली) | ५३.७९ |
| सत्तण्ण (सप्तपर्ण) | ५३.७९ |
| समी (शमी) | २१.५४ |
| सरल | ४२.६ |
| सहयार } सहार } | २१.४९ ५३.७९ |
| साग (शाक) | ४२.७ |
| सिंदुवार (सिन्दुवार) | ५३.७९ |
| सिरिमंजरी (श्रीमंजरी) | २७.३३ |
| सिरीस (शिरीष) | ४२.६ |

| | |
|------------------------------|-------|
| सेवाल (शैवाल) | ३०.२ |
| हिलहुम ? (हलिहुम) हरिद्र-हुम | २१.४८ |

(ब) वादित्र

| | |
|---------------------|---------------|
| आईग | ३.८७ |
| कंसालय (कांस्यतालक) | ५७.२३ |
| काहल | ६१.२ |
| खरमुही (खरमुली) | ५७.२३ |
| खिखिणी (खिखिणी) | १७.११४ |
| घंट | ३.७३ |
| झळरी | ३.१९ |
| डमरुय (डमरुक) | ५७.२३ |
| डका | ५७.२३ |
| तलिमा } तिमिल } | ६१.२ ५७.२२ |
| तिसरिय | ७०.५८ |
| तूर (तूर्य) | ४४.१५ |
| दुंदुहि (दुन्दुभि) | २.३५ |
| पडह (पटह) | ३.८७ |
| पणव | ३.८७ |
| पावय (पावक) | ५७.२३ |
| मंभा | ५७.२२ |
| मेरी | ५७.२३ |
| मुइंग (मृदङ्ग) | ३.८७ |
| मुरय (मुरज) | ३.१९ |
| वंस (वंश) | १४.९३ |
| बन्वीस | ११३.११ |
| वीणा | ९.८८ |
| वेणु | १०२.१२३ |
| संख (शङ्ख) | ३.७२ |
| सन्धीसय | १०२.१२३ |
| हुडुक्क | ५७.२३ |

(छ) विद्या

निम्नलिखित विद्याएँ मुख्यतः सातवें उद्देश की १३५-१४५ गाथाओं में उल्लिखित हैं, इसके अलावा अन्य स्थलों का निर्देश नीचे कर दिया गया है।
अखोहा (अक्षोभ्या)
अविगयंभणी (अभिस्तंभनी)
अजरामरा
अणिमा
अरिदमणी (अरिदमनी)

| | |
|---------------------------|-------------|
| अरिबिइंसो (अरिविध्वंसिनी) | |
| अवल्लोवणी (अवल्लोकनी) | |
| आगासगमा } आगासगामिणी } | आकाशगामिनी) |
| आसालिया (आशालिका) | १२.६४ |
| ईसाणी (ऐशानी) | |
| उहिइदा (उहिइथा) | |
| कामगामी | |
| कामदाइणी (कामदायिनी) | |
| कित्ति (कीर्ति) | |
| कुडिला (कुटिला) | |
| कोवेरी (कौवेरी) | |
| कोमारी (कौमारी) | |
| खगामिणी (खगामिनी) | |
| गरुडा (गरुडा) | ५९.८४ |
| गिरिदारिणी (गिरिदारिणी) | |
| घोरा | |
| चंडाली (चाण्डाली) | |
| जंभणी (जृम्भणी) | |
| जयकम्मा (जयकर्मा) | |
| जया | |
| जलथंभिणी (जलस्तम्भिनी) | |
| जोगेती (योगेशो) | |
| तमोरूवा (तमोरूपा) | |
| दरिसणआवरणी (दर्शनावरणी) | ५९.४० |
| दहणी (दहनी) | |
| दारुणी (दारुणी) | |
| दिपरयणीकरी (दिनरजनीकरी) | |
| दुण्णिवारा (दुनिवारा) | |
| निहाणी (निहाणी) | |
| निव्वाघा (निर्व्याघाता) | |
| गडिबोहणी (प्रतिबोधनी) | ५९.४२ |
| पक्कसि (प्रकृति) | |
| बंधणी (बंधनी) | |
| बलमहणी (बलमयनी) | |
| बहुरूवा (बहुरूपा) | ६८.४६ |
| भयज्जणी (भयज्जनी) | |
| भाणुमालिणी (भानुमालिनी) | |
| भुयंगिणी (भुजंगिनी) | |
| भुवणा (भुवना) | |
| मणगामिणी (मनोगामिनी) | ५१.१९ |

| | | | | |
|-----------------------------------|-------|------------------------|--------------------------|-------|
| मणधंभणी (मनःस्तम्भनी) | | वरुणी (वारुणी) | संति (शांति) | |
| मयणासणी (मदनाशनी) | | बहकारी (बधकरी) | संवाहणी (संवाहनी) | |
| माणससुंदरी (मानससुन्दरी) | ७.७३ | वाउम्भवा (वायूद्भवा) | सत्ति (शक्ति) | |
| रइविद्धि (रतिवृद्धि) | | वाराही | समादिट्टि (समादिष्टी) | |
| रओरूबा (रजोरूपा) | | विउलाअरी (विपुलाकरी) | सव्वारुहा (सर्वारुहा) | |
| रवितेया (रवितेजा) | | विजया | सिद्धत्था (सिद्धार्था) | |
| रूपपरिवत्तणकरी (रूपपरिवर्तनकरी) | १०.१३ | विसज्जा (विसंज्ञा) | सीहवाहिणी (सिंहवाहिनी) | ५९.८४ |
| लधिमा | | वीरा | सुरद्धंसी (सुरध्वंसी) | |
| वज्जोयरी (वज्जोदरी) | | वेयाली (वेताली) | सुविहाणा (सुविधाना) | |
| वरिसिणी (वरिणी) | | संकरी (शंकरि) | सुहदाइणी (सुखदायिनी) | |

परिशिष्ट ५

वंशावलि - विशेष

(क) इक्ष्वाकु (ख) राक्षस (ग) वानर
(घ) विद्याधर (ङ) हरि

(क) इक्ष्वाकु-वंशावली

नामों के आगे कोष्ठक में दिये गये अंक पञ्चमचरियं के उद्देश और गाथा के हैं ।

- (१) आङ्घ्रजस (चक्रवर्ती भरहृ का पुत्र, ५.३ से ९ वें उद्देश तक)
- (२) सीहजस
(३) बलमह
(४) वसुबल
(५) महाबल
(६) अभियबल
(७) सुभद्र
(८) सायरमह
(९) रवितेअ
(१०) ससिपह
(११) पभुयतेअ
(१२) तेयस्सि
(१३) तावण
(१४) पयावि
(१५) अङ्घ्रिअ
(१६) महाविअ
(१७) उदयपरकम
(१८) महिदविकम
(१९) सूर
(२०) इंदजुइण
(२१) महाइंदइ
(२२) पभु
(२३) बिभु
(२४) अरिदमण
(२५) वसहकैउ
(२६) गरुडक
(२७) भियंक

(अन्य कई राजा)

(बीसवें तीर्थंकर मुनिमुत्र तक तीर्थकाल में)

- (२८) विजअ (२१.४१)
(२९) पुरंदर (२१.४२)
(३०) कित्तिधर (२१.७८)
(३१) सुक्रोगल (२१.८९)
(३२) हिरण्यगम्भ (२२.५०)
(३३) नद्युस (२२.५५)
(३४) सोदास (२२.७१)
(३५) सीहरह (२२.७६)
(३६) बंभरह (२२.९६ से २२. १०१ तक)
(३७) चउम्भुह
(३८) हेमरह
(३९) जसरह
(४०) पउमरह
(४१) मयगह
(४२) ससिरह
(४३) रविरह
(४४) मंधाअ
(४५) उदयरह
(४६) वीरसुसेण
(४७) पडिवयण
(४८) कमलबंधु
(४९) रविसत्तु
(५०) वसंततिलअ
(५१) कुबेरदत्त
(५२) कुंधु
(५३) सरह
(५४) विरह
(५५) रहनिग्घोअ
(५६) मयारिदमण
(५७) हिरण्यनाभ
(५८) पुंजत्थल
(५९) ककुह
(६०) रघुस

- (६१) अणरण्ण
(६२) दसरह
(६३) राम या पउम (२५.८)

इस प्रकार विमलसूरिकृत पञ्चमचरियं में 'आङ्घ्रजस' से 'राम' तक इक्ष्वाकुवंश के तिरसठ राजाओं के नाम हैं । रविषेणकृत पञ्चचरितम् में कुल संख्या छासठ है । उसमें नं ३९ से ४२, ४५ और ५५ का उल्लेख नहीं है, परंतु नौ अन्य राजाओं के नाम हैं । वे इस प्रकार हैं:- पांचवें और छठे के बीच में 'अतिबल', आठवें का नाम केवल 'सागर' और उसके और नवें के बीच में 'भद्र' नाम का राजा, चौबीसवें और पचीसवें के बीच में 'वीतभी', अष्टाईसवें और उनतीसवें के बीच में 'सुरेन्द्रमन्यु', और अकतीसवें व तैंतालीसवें के बीच में 'शतरथ', 'पृथु', 'अज', 'पयोरथ' और 'इन्द्ररथ' के नाम हैं । (देखिये पञ्चचरितम्, अध्याय १, २१ और २२)

(ख) राक्षस-वंशावली

- (१) मेहवाहण] (विद्याधर पुण्णषण का पुत्र)
षणवाहण] (५.१३७)
- (२) महारक्खस (५.१३९)
(३) देवरक्ख (५.१६६)
(४) रक्खस (५.२५१)
(५) आङ्घ्रगइ (५.२५२)
(६) भीमरह (५.२५६)
(७) पूयारह (५.२५९ से ५. २७० तक)
(८) जियभाणु
(९) संपरिकित्ति
(१०) सुग्गीव
(११) हरिग्गीव
(१२) सिरिग्गीव

- (१३) सुमुह
 (१४) सुव्वेत
 (१५) अमियवेग
 (१६) आइश्वरगङ्गुमार
 (१७) इंदुपम
 (१८) इंदुमेह
 (१९) मयारिदमण
 (२०) पहिअ
 (२१) इंदु
 (२२) सुभाणुधम्म
 (२३) सुरारि
 (२४) तिजड
 (२५) महण
 (२६) अंगारअ
 (२७) रवि
 (२८) चकार
 (२९) वज्जमज्ज
 (३०) पमोय
 (३१) सीहवाहण
 (३२) सूर
 (३३) चाउंडरावण
 (३४) भीम
 (३५) भयवाह
 (३६) रिउमहण
 (३७) निव्वाणभत्तिमंत
 (३८) उगसिदि
 (३९) अरिहभत्तिमंत
 (४०) पवणुसरगद्
 (४१) उत्तम
 (४२) अणिल
 (४३) चंड
 (४४) लंकासोग
 (४५) मऊह
 (४६) महाबाहु
 (४७) मणोरम
 (४८) रवितेअ
 (४९) महगद्
 (५०) महकंतजस
 (५१) अरिसंतास
 (५२) चदवयण
 (५३) महरव

- (५४) मेहुज्जाण
 (५५) गह्वोभ
 (५६) नक्कत्तदमण
 (अन्य कई राजा)
 (५७) मेहुपह
 (५८) किलिधवल
 (मुनिसुव्रत के तीर्थ-काल में)
 (५९) तडिकेस (६.९६)
 (६०) सुकेस (६.१४८)
 (६१) सुमालि (६.२२०)
 (६२) रयणासव (७.५९)
 (६३) रावण (७.९६)

इसप्रकार पउमचरियं में 'मेहुवाहण'से 'रावण' तक राक्षस-वंशावली में कुल तिरसठ राजाओं के नाम हैं। पउमचरितम् में यही संख्या छसठ हैं। अन्य तीन राजा १६ और १७ के बीच में 'इन्द्र', २२ और ३३ के मध्य में 'भानु' और २४ व २५ के बीच में 'भीम' हैं। महण (२५), अंगारअ (२६), सूर (३२), चाउंडरावण (३३), भयवाह (३५), उत्तम (४१) और मऊह (४५) के स्थान पर क्रमशः मोहन, उद्धारक, चासुंड, मारण, द्विपवाह, गतभुम और मयूर-वान के नाम हैं। (देखिये पउमचरितम्, अध्याय ५.७७-४०४ और ६ तथा ७)।

(ग) वानर-वंशावली

- (१) सिरिकंठ (विद्याधर अहइंद का पुत्र)
 (६.३)
 (२) वज्जकंठ (६.५९)
 (३) इंदुअहूपम (६.६६ खे ६.६९ तक)
 (४) इंदामयनंदण
 (५) मरुयकुमार
 (६) मंदर
 (७) पवणगद्
 (८) रविपुअ
 (९) अमरपुअ
 (१०) कइअ (६.८३ से ६.८४ तक)
 (११) रिक्खरअ
 (१२) अइवल
 (१३) गयणाणीद
 (१४) खेयरनरिद

- (१५) गिरिनंद
 (अन्य कई राजा)
 (मुनिसुव्रत के तीर्थ-काल में)
 (१६) महोयहिरव (६.९३)
 (१७) पडिइंद (६.१५२)
 (१८) किक्किधि (६.१५४)
 (१९) आइश्वरअ (८.२१४)
 (२०) वाली व सुगवीव (९.१,४)

पउमचरियं और पउमचरितम् में वानर-वंशावली के राजाओं की संख्या 'सिरिकंठ' से 'वाली' तक समान है। मरुयकुमार (५), रिक्खरअ (११), अइवल (१२) और पडिइंद (१७) के स्थान पर पउमचरितम् में क्रमशः मेहु, विक्रमसंपन्न, प्रतिबल और प्रतिचंद्र के नाम हैं।

(घ) विद्याधर-वंशावली

- (१) नमि (५.१४ से ५.४६ तक)
 (२) रयणमालि
 (३) रयणवज्ज
 (४) रयणरह
 (५) रयणचित्त
 (६) चंदरह
 (७) वज्जसंध
 (८) सेण
 (९) वज्जदत्त
 (१०) वज्जदअ
 (११) वज्जाउह
 (१२) वज्ज
 (१३) सुवज्ज
 (१४) वज्जधर
 (१५) वज्जाभ
 (१६) वज्जबाहु
 (१७) वज्जक
 (१८) वज्जसुंदर
 (१९) वज्जास
 (२०) वज्जवाणि
 (२१) वज्जसुजण्डु
 (२२) वज्ज
 (२३) विज्जुमुह
 (२४) सुवयण
 (२५) विज्जुदत्त

- (२६) विज्जु
(२७) विज्जुतेअ
(२८) तडिवेअ
(२९) विज्जुदाह
(३०) दहरह
(३१) आसधम्म
(३२) अस्सायर
(३३) आसद्धअ
(३४) पउमनिह
(३५) पउममालि
(३६) पउमरह
(३७) सीहवाह
(३८) मयधम्म
(३९) मेहसीह
(४०) संभूअ
(४१) सीहद्धअ
(४२) ससंक
(४३) चंदक
(४४) चंदसिहर
(४५) इंदरह
(४६) चंदरह
(४७) ससंकधम्म
(४८) आउह
(४९) रत्तह
(५०) हरिचंद
(५१) पुरचंद
(५२) पुण्णचंद

- (५३) वालिद
(५४) चंदचूड
(५५) गयगिहु
(५६) दुराणण
(५७) एकचूड
(५८) दाचूड
(५९) तिचूड
(६०) चउचूड
(६१) वज्जचूड
(६२) बहुचूड
(६३) सीहचूड
(६४) जलणजडि
(६५) अकूतेअ
(अन्य कई राजा)

इस प्रकार पउमचरिये में 'नमि' से 'अकूतेअ' तक विद्याधर राजाओं की वंशावली में कुल पैंसठ नाम हैं। पद्यचरितम् में यही संख्या तिहत्तर है। उसमें साठवें राजा का उल्लेख नहीं है: 'संभूअ' (४०), 'ससंकधम्म' (४१), और 'दुराणण' (५६) के स्थान पर क्रमशः 'सिहसपुत्र', 'चक्रधर्म' और 'उडुपातन' के नाम हैं; अट्ठाईसवें और उनतीसवें के बीचमें 'वैद्युत' और अड़तालीस व उनपचासवें के बीचमें 'चक्रध्वज', 'मणिग्रीव', 'मण्यक', 'मणिभासुर', 'मणिस्यंदन', 'मण्यास्य', 'बिम्बोष्ठ' और 'लम्बिताधर' के नाम अधिक हैं। (देखिये पद्यचरितम्, ५.१६-५४)

(क) हरि-वंशावली

- (१) हरिराया (२१.७ से २१.३३ तक)
(२) महागिरि
(३) हिमगिरि
(४) वसुगिरि
(५) इंदगिरि
(६) रथणमालि
(७) संभूअ
(८) भूयदेव
(९) महीधर
(अन्य कई राजा)
(१०) सुमित्त
(११) मुणिसुव्वय
(१२) सुव्वय
(१३) दक्ख
(१४) इलवद्धण
(१५) सिरिवद्धण
(१६) सिरिवक्ख
(१७) संजयंत
(१८) कुणिम
(१९) महारह
(अन्य कई राजा)
(२०) वासवकेउ
(२१) जगअ
पद्यचरितम् में 'महारह' (१९) के पश्चात् 'पुलोम' का नाम अधिक है, अन्यथा सभी नाम पउमचरियं के सदृश हैं।

परिशिष्ट ६

देश्य और अनुकरणात्मक शब्द

देश्य शब्द

प्रथम देशी शब्दों की सूची है। उनके सामने उनका अर्थ दिया गया है। कोष्ठक () में संस्कृत शब्द हैं जिनसे देशी-शब्द बनने की संभावना है। कोष्ठक [] में हेमचन्द्र कृत 'देशी नाममाला' के अध्याय व सूत्र का निर्देश है। अंतिम अंक 'पउम-चरियं' के पर्यं व गाथा की संख्या बतलाते हैं।
 अडयणा = असती (अट्) [११८] ७७.७४
 अणोरपार = अतिविस्तीर्ण १७.२९
 आहंग = वाद्यविशेष ३.८७; ९६.६
 आयलय = चंचल [१७५] ६१६२; ८.१८९; १२.१५१८; २४.१५; ३३.६६; ५२.१९; ५३.३०
 उरिपथ = कुपित [१.२९] ८.१७५; ९.६८; १२.८७
 उल्लोल = कोलाहल १६.३६
 ओलङ्घ्य = अंगे पिनद्धम् [१.१६२] ६.१७५
 ओसुद्ध = विनिपतितम् [१.१५७] २६.५६
 ओहामिय = स्वमितम् ४९.६
 कज्जव = विष्टा [२.११] १३.४
 कडिल = वन [२.५२] २.४५
 कणय = इषु [२.५६] १.२.२५; १०२.८२
 कयार = तृणाद्युत्कटः [२.११] १३.४; ८०.३१; ८४.१०
 किण्डय = शोभमान [२.३० किण्ण] ६२.९
 केयरी = वृक्षविशेष ४२.९
 कोलहुय = शृगाल [२.६५] ७.१७; ८.७९; ६५.२६; १०५.४२.४४
 • गङ्गा = खङ्गा; खानिः (खन्, खात) [२.६६] ८८.४
 गणित्तिया = अक्षमाला (गण्) [२.८१ गणित्ती] ११.३९
 गहलिया = खलुरिका = शङ्खविद्याभ्यासस्थल ८८.२५
 गामउड = ६६८ ग्रामप्रधान (ग्रामीण, ग्राम-कूट) [२.८९] ६६.८
 गोज्ज = गायक ८५.१९
 चम्बिक = मंडित (चम्बिका) [३.४] ३.१०५; १२.११८; २८.२८; ४३.२५; ७२.२७; ११७.२६

चडक = शस्त्रविशेष ७.२९; ८.९८, २४७; २६.५६; ५७.३०
 चडयर = समूह २.४८; ८.८७ १९६; २५७; २२.१९; ७९.१३; ९०.३५; १०३.१६७; १०४.१५
 चुंपालय = गवाक्ष [३.१०] २६.८०
 छित्त = (स्पृष्ट) [३.२७] ४८.८५
 जगडिजंत = कलहयुक्त [३.४४] ८२.९; ८६.२४
 झसर = शस्त्रविशेष ८.९५; ५०.१२; ५२.१५; ५३.८२; ५९.३९; ६१.५; ७१.२३; ७३.२५; ८६.४५
 णंगल = चञ्चु ४४.४०
 णडिअ = वंचित, खेदित [४.१८] ३.१२५; २१.६०; ४६.१६; १०३.६८; ९३; १०६.४०
 णिकलुत्त = निश्चित ७.८४; १८.३८; ५३.१३८; ५५.१०; ६५.५; ६७.४३; ८७.५; ९५.६५; १०५.६९
 णियडि = दम्भ (निकृति) [४.२६] १४.२६
 णिययं = शाश्वतम् (नियतम्) [४.४८] ३१.५३; ४७.५; ६३.९; ६४.९; ६९.२३; ८२.८६; ९४.१४; ११३.१०; ११८.२६; ९३.१००; ११४
 तत्ति = तत्परता [५.२०] ७.८७; ३३.१०२; ४८.११७; ५३.२३; ९८.५२; १००.४१
 तत्तिल = तत्पर [५.३] १.२६; २.६; ६४.१२; ९४.१४; १०३.१४९
 तत्तिल्ल = तत्पर (तत् + लिस्स) [५.३] १.१२; ७.८३; ११.६७
 तिसरिय = वाद्यविशेष ७०.५८; ९६.४४; १०२.१२३; ११३.११
 तुडिआ = आभरण-विशेष ८२.१०४
 दोर = सूत्र [५.३८] ८.१०८
 धणियं = गाढम् [५.५८] २८.३५; २९.२१; ३६.२२; ४२.२२; ४४.६; ६२; ५२.२२; ७०.५६; १०२.१३७; १७६

धाह = पूकार ५३.८८
 धाहाविय = पूकृत ५.२३९
 पउत्थ = प्रोषित [६.६६] १७.३; ७९.३२
 पडिउंचण = प्रतिकार ११.३८; ४४.१९; ८७.३
 पन्मार = गिरिशुद्धा [६.६६] ८९.१४
 पययं = अनिशम् [६.६] ११८.८४
 परड = पीडित (अत्राड) [६.७०] ५.७६; ६.१०४; ७.३४
 पतय = मृगविशेष [६.४] ७.४; १६.५७; २६.८४; २८.१२१; ७०.४५
 पावय = वाद्यविशेष ५७.२३
 पेल्लिअ = पीडित [६.५७] ९६.३७
 फुफुस = उदावर्ती अन्त्रविशेष २६.५४
 बड्ल = बलीगद [६.९१] ९९.२५; ११५.१५
 बलय = बलीवर्द्ध ८०.१३
 मडगअ = पश्चात् [६.१११] ४५.४
 मडव = ग्रामविशेष २.२
 मायइ = वृक्षविशेष ५३.७९
 मुछुडि = प्रहरणविशेष २६.५६; १०२.८२
 मुहल = मुत्र [६.१३४] ६६.७
 मैठ = हस्तिपक [६.१३८] ७१.२९
 रिट्ट = काक (अरिष्ट) [७.६] ७.१७; १०५.५९
 वड्य = भाजनविशेष १०२.१२०
 वण्ण = क्षेत्र (वण) [७.८५] २.१२; ४२.३३
 वापीह = चातक [७.३३; ७.४०] ११.११७; २९.४३
 वन्नीस = वाद्यविशेष ११३.११
 वारिज्ज = विशाह (वृ, वाय) [७.५५] १५.६३; २१.४५;
 विच्छड्डु = निवह (विच्छद) [७.३२] ६.४०३; १२.१०७; २६.५४; ६३.३६; ७२.२५; ९९.६२; ७१; १००.६; १०५.५५; १०७.११
 विरिक्क = विदारित [७.६४] ८.११८; १२.१२५; ४५.३२; ६१.२३
 वुण्ण = उद्विग्न, भीत [७.९४] १७.७८; ६३.४०; ६९.२१

६. देश्य और अनुकरणात्मक शब्द

६५

वेभारिभ = प्रताग्नि [७.९५] १४.४६; २६.
१२; ६५.३१, ४५; ८९.४८
सञ्चीसग = वाद्यविशेष १०२.१२३
सच्छह = सद्दश [८.९] ४१.३१
सयराहं = स्त्रीग्रम् [८.११] २१.१५; ७४.३४;
८८.१०; ८९.२८; १०७.
१०; ११०.६; ११७.१६
सवडहुत = अभिमुख [८.२१] ४.४६; ५.७५;
६.२२९; ७.३०; ८.४७,
१०२.११२, १३४, १५७,
१७४, १७५, २१८, २३८;
१०.५७; ३०.१२; ३३.६२;
३६.२८; ४५.१०; ५२.१३;

५६.२२; ५७.३१; ५९.१८;
६१.९ १२, ४२, ५९; ७१.
१९, ५६; ७३.१३; ९८.२८;
१००.४, २२
सव्वल = प्रहरणविशेष ८.९५; १२. ८४; ५३.
८२, १०९; ५९. २१, ३९;
६१.५; ७१.२३
सामच्छ = मंत्रणा ४२.३५
सेल्ल = वार (शत्य) [८.५०] ७.२६
हकखुव = (उतिक्षिप्) [८.६०] ८.१२२; ९.६८
४४.३९; ११७. ५; ११८.
२२, २३
हलबोल = कलकल [८.६४] ८.२८०; १००.
५६

हल्लन्त (चलन्त) [८.६२] ८.२६२
हिल्लुम = द्रुमविशेष २१.४८
हुड्कुक = वाद्यविशेष ५७.२३
हुत = अभिमुख [८.७०] १५ ८४; १९.१९;
२७.३१; ३२. २४, ५५; ३३.
७४ १०२; ३४. ३८; ३५.
५३; ४४. ४७; ५३. १४७;
५९. २७; ५९.८१; ६१.८,
३४; ६७.३४; ७१.५२; ७७.
८५; ८६. २४; ९४. ८४,
१०७; १००. १३; ११३.
२५; ११५.२२

अनुकरणात्मक शब्द

कडकडकडेन्ति २६.५६
कडकडकडेन्त २६.५०
कणकणकणन्ति २६.५३; ५३.८६
किलिकिलिकिलन्त ३३.८.९४.४१; १०५.५४
खणखणखणन्ति १२.११२; २६.५३; ७१.३०
{ गुमुगुमायारं ९.५८; ३३.९
गुमुगुगुमन्त २.४०; १५.२९; १६.४७; ९२.९
गुमुगुगुमेन्त ६.२०९
{ गुलगुलगुलन्त २२.३२
गुलगुलायन्त ८.२६२
गुलगुलेन्त ८ १७१; १०२.२०

धुधुधुधुधुधेन्त १०५.५९
धुलुधुलुधुधेन्त ३.८१
चडचडचडन्त २६.५१, ५७
छिमिछिमिछिमन्त २६.४८
जगजगजगेन्त १०२.१२५; १०८.७
झगझगझगन्ति १०२.२१
{ तडतडतडन्ति १२.११२
तडतडरवो ७१.३०
तडतडारावं ३९.२५
दिलिदिलिदिलन्त १०२.२१

{ धगधगधगन्त १२.५१; २६.४८; १०७.१०
धगधगधगेन्त १०२.१०, ८१
धुगुधुगेन्त १०५.५९
मडमडमडन्ति २६.५३
रणरणायन्त ९४.३९
रुगुरुगिय १०५.५८
सगसगेन्त ४२.३१
सिमिसिमिय १०५.५५
डुडुडुडुडुधन्त ९४.४३

ADDENDA

परिशिष्ट १ से ६ का वृद्धिपत्र

१. व्यक्तिविशेष नाम

| | |
|------------------------|--------------------------------------|
| अंगसुय | जैन आगमांग ११४.२३ |
| आरिसवेय | जैन आगम शास्त्र (आर्षवेद) ११.७५ |
| चंडरवा | एक शक्ति ६३.२१ |
| जियारि | देखो अजिम (२) ११.२१ |
| पुव्वसुय | पूर्वभुत-जैनशास्त्र ११४.२३ |
| भइकलस | राम का कंचुकी ९३.८ |
| भाणुसवण | देखो भाणुकण्ण ८.८९ |
| महप्पा | आठवें कुलकर ५.५५ |
| वियइदा | विहीसण की स्त्री ७७.१८ |
| विसाह | भंडारी २९.११ |
| वेय | वेदसास्त्र ११.७९, ८० देखो आरिसवेय |
| सिरिविक्ख | एक भट ६०.४ |
| सुमंगला-५ | राजा इसरह की माता २८.७० |
| हरिणकेसि हरिणेगवेसि | इन्द्र का सेनापति १०१.७०, १०१.७४ |
| | |

परिशिष्ट-२

(२) आयुष

चंडरवा (शक्ति)

(१) ग्रन्थ

| | |
|---------|----------|
| अंगसुय | पुव्वसुय |
| आरिसवेय | वेय |

(२७) राजपरिवार

(१) इक्ष्वाकु

| | |
|--------|---------|
| पुरुष | स्त्री |
| जियारि | सुमंगला |

(२) राक्षस

| | |
|---------|--------|
| पुरुष | स्त्री |
| भाणुसवण | वियइदा |

परिशिष्ट-३

(क)

| | |
|------------|--------------|
| अरिअयपुर-१ | ५.१०९ |
| " -२ | १३.३५; ५८.१२ |

(ख)

| | |
|----------|-------|
| मवग | ९९.५५ |
| बहुवाइया | ९८.६२ |

(घ)

| | |
|----------------|-------|
| कुबेर | ८६.३३ |
| कुसुमामोउज्जाण | ८२.५ |
| परसुज्जाण | ९४.१९ |

| | |
|----------------|--------------|
| भरसालवण | ९२.२५ |
| भंडलियाउज्जाण | १०३.१४४ |
| महिदउदय-उज्जाण | ९३.१; १०६.४५ |
| महिदोदय-उज्जाण | ९२.१५ |

परिशिष्ट-४

(क)

| | |
|-----------------|--------|
| अंगय (अंगद) | ८२.१०४ |
| तुडिय (त्रुटित) | ८२.१०४ |

(घ)

| | |
|-----------|--------|
| धूम (धूम) | १०५.५९ |
|-----------|--------|

परिशिष्ट-६

वेदय शब्द

| | | |
|------------------|-----------|-------------|
| आमेल=गुच्छ | [१.६२] | ११७.२९ |
| ओत्थय=खिन्न | [१.१५१] | ९३.३० |
| सुइअ=शुक्क | [२.७४] | १०४.३२ |
| महिलिय=उन्मत्त | | १३.४३ |
| चेलअ=शिम्य, बाल | [३.१०] | ९७.१३ |
| छटा=विद्युत् | [३.२४] | (छटा) ९६.१५ |
| दहरय=शिष्ट | [४.८] | (दहर) ८९.५ |
| णिहुत्त=निमत्त | | ११६.५, ६ |
| दीविया=न्याधमृगी | (५.५३) | १०३.२० |

परिशिष्ट ७

पाठान्तराणि

| गाथांक | पाठान्तर | प्रत | गाथांक | पाठान्तर | प्रत | गाथांक | पाठान्तर | प्रत | गाथांक | पाठान्तर | प्रत |
|--------|---------------------|------|--------|--------------------|------|--------|---------------------|------|--------|-------------------|------|
| | उद्देश-१ | | २४ | पद्मोज्ज्वलं | जे | ५४ | दुःखयं पत्तं ॥ | जे | ७३ | विभाषणं | जे |
| १ | भवणिन्दचन्दं | ख | २६ | लं ख | ,, | ५५ | लंभो विरां | ,, | ७६ | लक्षं । | ,, |
| ३ | तिजगुत्तिमं | जे | २६ | यं चिय | ,, | ५७ | महपुत्रं | ,, | ७६ | विहीसणाई, | ,, |
| ३ | ससिपहं | ,, | २८ | चरियगम्मे, | ,, | ५८ | लंभो, | ,, | ७७ | सत्तिपहारा, | ,, |
| ६ | रयमल | मु | २९ | कविकुञ्जराण | जे,ख | ५८ | लच्छिनामं | जे,ख | ७८ | भवणे जिं | ख |
| ८ | गयं तन्नं | जे | ३० | वरगजगयगंधं | ख | ५८ | दहमंदिरस्स गमणं | जे | ७८ | णं, कायस्स पं | जे |
| ९ | जिणो, | ,, | | वरगयगन्धं | जे | ५९ | रामणं | ,, | ८० | णं तवो, | ,, |
| १० | गणहरेहिं | जे,ख | ३१ | अत्ताणुसारं | ,, | ६० | वं, पसाय जणणुत्तमं | ,, | ८१ | भरहभवाणं | ,, |
| १० | चरिओ | जे | ३१ | सारसरिसं | ख,मु | ६१ | नामेण | ,, | ८२ | सिरिवच्छालिहणवेहं | ,, |
| १० | धरित(ओ) | ख | ३१ | गाहाहिं | जे,ख | ६२ | भूयाडकीय | ,, | ८३ | णं पवत्ती | ,, |
| १० | संखेवेणं च उं | जे | ३१ | संखेवमिणं जिसां | जे | ६२ | नियोग | जे,ख | ८५ | सरणुत्पत्ती | ,, |
| ११ | बुहयणेणं | ,, | ३२ | ठीवंसं | ,, | ६२ | दरिसणोसवं | जे | ८६ | कयन्तवसणे | ,, |
| १२ | दोसगणणं | ख | ३२ | पुराणे य अहिं | ,, | ६२ | अज्जणाइ समं | ,, | ८६ | दुग्गइ | ख |
| १२ | सुभणिपुं | जे | ३३ | तिमिलां | ख | ६५ | णं पमिण्डियं | ,, | | दुम्मई | जे |
| १२ | मिण्डन्ति | ,, | ३४ | कहिणं | जे | ६५ | णवरं दुक्खं खं | ,, | ८७ | परलोयं | ,, |
| १३ | जहागमगुणाणं | ख | ३५ | उसइजिणं | ,, | ६५ | समणुपत्तो ॥६५॥ | | ८७ | सोयं | ,, |
| १४ | पवणहियाइं | जे | ३५ | अभिसेयं | ,, | | मणमं भगगमणं | | ८८ | नेव्वाणं | ,, |
| १५ | तिस्थयरेहिं | ख | ३६ | चेय । | ,, | | पडियागमं नत्थि | | ८९ | भावेणं | ,, |
| १५ | अम्हारिसेहिं | ,, | ३६ | हमुट्ठीओ | ,, | | जिणयुइं काउं । | | ९० | सिद्धं | ख |
| १६ | लोओ | जे | | हमुट्ठी च ॥ | ख | | वम्मं अणंतविरिओ | | ९० | उत्तम साहवेहिं | जे,ख |
| १६ | सारेण | जे,ख | ३७ | रणसंगमं | जे | | कहेइं इणुयस्स | | | इय पं | ,, |
| १७ | रोगावासं, | जे | ४० | सुओसुइं | ,, | | उत्पत्ती ॥ इत्यधिकं | जे | | नामुहेसो | जे |
| १८ | दियय चिय | ,, | ४२ | अइक्कन्तं | ,, | ६६ | भरहस्स य सत्तुनाम- | | | उद्देश-२ | |
| १८ | चेयमाणणं | ख | ४२ | विभवस्स | ,, | | धेयस्स | जे | १ | जम्बुहीवे तीवे | जे |
| १९ | हुंति | जे | ४२ | स्स कारणे वेव | ,, | ६६ | धिदेहिं तह | ,, | २ | गोमहिसवलं | ,, |
| १९ | अण्णे | ,, | ४३ | तद्धिक्केसियस्स चं | ख | ६७ | ,व दट्टण | ख | २ | वडवपुण्णो | ख |
| १९ | वि उस्सवदिणे. | ,, | ४४ | असणिवेगस्स | जे,ख | ६८ | सव्वभयसमणस्स | जे | ३ | वइ-पवर कुडुंभियस- | |
| २० | उत्तिमत्तं | ,, | ४५ | अंभयवहं | ख | ६९ | केकइवरस्स | ,, | | मिद्धं | जे |
| २१ | दरिसणुज्जुया | ,, | ४५ | किक्किन्धपुर | जे | ७० | वाल्लिखीलस्स | ,, | ३ | कुट्टारो | ख |
| २३ | बहुविविद्वियपगंधळुं | ,, | ४६ | महन्ताण | ,, | ७१ | रामस्सपुरिनिवेसणं | ख | ४ | मती ओ | जे |
| २३ | सुसुयंथ(व)सीलगंधं | ,, | ४६ | णिग्गयसरणं | ,, | ७१ | परमं । | ख | ५ | नाणाहरणं | ,, |
| २३ | जाणाइ | ,, | ४९ | तह य पं | ,, | ७१ | वणमालासंयोगं | जे | ६ | वीवाहोसव | ,, |
| २४ | जे वि य सममुखावं | मु | ५० | मन्दोयरीय लं | ,, | ७२ | विभूसणाण | ,, | ७ | पुक्खरिणीसु | ख |
| २४ | अलुद्धा, | जे | ५३ | रिक्खरयाइं व किं | ,, | ७३ | जडागिणो | ख | | | |

| | | | | | | | | | | | |
|--------------------|---------------------|------|----|--------------------------|------|-----|-------------------|------|-----|--------------------|------|
| ११ | किरणविच्छुरियं | जे | ३९ | संदूरं | जे | ७७ | कुज्जो | ख | १०५ | हि वहिया | ख |
| ११ | अगहं | ख | ४० | गुमुगुमुगुमेन्तं | जे,ख | ७७ | दुकखेहि | जे,ख | १०६ | या धीरा | .. |
| ११ | अगरुतुं | जे | ४१ | को य हट्टं | जे | ७७ | रुयं | जे | १०७ | लोगसत्ये | जे |
| १२ | हरालीयं | .. | ४३ | लोगमिणं | जे,ख | ७८ | न हवह धं | जे,ख | १०७ | रामणं | ख,जे |
| १३ | पेच्छणयरमन्तं | .. | ४३ | किरणं | जे | ७८ | धम्मो बुद्धी | जे | १०७ | मंसादीं | जे |
| १४ | स्स व सोहं हाऊण | ख | ४४ | महाजस | .. | ७८ | लोभमोहेण | ख | १०८ | रामणं | जे,ख |
| शीर्षकः अणिको राजा | | | ४५ | संयोगं | .. | | लोभमोहेसु | जे | १०९ | ज्जइ वि पञ्चयसतेसु | जे |
| १५ | नरवइगुणेहि | जे | ४६ | अइ वां | जे,ख | ७९ | भाविज्जइ | ख | ११० | ओ समुहयं पि | ख |
| १५ | वेसवणो | .. | ४८ | मयहाहिवो | जे | ८१ | केएथ | .. | ११० | समुप (यज्ज)यं पि | जे |
| १६ | भमरभरनिद्धं | .. | ४८ | जिणसयासे | .. | ८१ | गेण्हिऊण | जे | १११ | अणसणमहाघोरं | .. |
| १७ | समगेज्जं | .. | ४८ | नीसरिओ | .. | ८२ | समज्जेन्ति | जे,ख | ११३ | अञं च एं | ख |
| १७ | ज्जो । वरनयर- | | ४९ | ओइण्णो | .. | ८३ | विकिट्टं | जे | ११३ | एण्व | जे |
| | गुणयात्परिच्छो वर- | | | उइण्णो | ख | ८३ | थेवावं | .. | ११३ | रामणेण | जे,ख |
| | कडियकहत्ति हत्थोइ ॥ | ख | ४९ | महयसां | .. | ८३ | नेव्वाणं | .. | ११३ | नगरिं | जे |
| १८ | सोमण्णियं | जे | ५० | मण्डलामोगं | जे | ८४ | वरमणुत्तरं | ख | ११५ | एरावओ मं | .. |
| २० | तस्स नरवरिदस्स | जे,ख | ५१ | एकके पायारे अट्टं | .. | ८७ | णे विगिच्छति | .. | ११५ | अओ व मं | .. |
| २० | पावेज्जा | जे | ५१ | संजुते | .. | ८७ | णिण्हन्ति | जे | ११५ | मसिरासि ॥ | .. |
| २१ | पुरं धणसमिद्धं | ख | ५३ | सिहासणे | .. | ८९ | करिसणादी | .. | ११६ | इइहि | जे,ख |
| २१ | नरिन्दवसभो | जे | ५४ | पत्तेयं, दिसें दिसें किं | .. | ८९ | संवाहा | जे,ख | | इइ पं | जे |
| २२ | तिखिल | .. | ५५ | रंमि बीं | .. | ८९ | नरयं, घोरमणंतं | | | पउमच्चरिय | |
| २३ | सुणिऊण | ख | ५५ | म्मि दिसाभाए, पं | .. | | दुरुत्तारं | ख | | विइओ वइसं | जे,ख |
| २४ | यरयणवरिसणं | जे | ५५ | सुरवराणं | .. | ९० | कडतुलकूं | .. | | | |
| २५ | खीरोदयवारिं | जे,ख | ५६ | सा खतोण गुं | .. | ९० | ववहारी | जे | | | |
| २६ | मेहं | जे | ५६ | महन्ताणं | .. | ९१ | गुणेहि | जे,ख | | | |
| २६ | तेणं सि मं | ख | ५८ | वन्तरभुव० | ख | ९३ | करणभगेसु | जे | १ | किरणं | जे |
| २७ | काऊण | .. | ५८ | सोहममादीण | जे | | करणजोएण | ख | २ | कारणेकउच्छाहो | सु |
| २७ | ठविन्ति | .. | ६० | धम्माहम्मं | .. | ९४ | पावेन्ति | जे | ३ | परियरिओ । वं | ख |
| २७ | ण्हविऊण जिं | जे | ६१ | मागहाए | .. | ९५ | लंघंति | ख | ४ | पइसं | जे |
| २८ | जाहारं | .. | ६२ | जीवाजीवं तं | ख | ९६ | तिक्खवेयणुन्हवियं | .. | ४ | गणहरवसमं | .. |
| ३० | अद्धकं | ख | ६४ | उभओ | जे | ९८ | मयहाहिवो | जे | ४ | तेएण | .. |
| ३० | अद्धकम्म | जे | ६४ | होति | जे,ख | १०० | उत्थरइ | .. | ६ | दिण्णोसीस | ख |
| ३० | वजुत्तचित्तस्स | .. | ६५ | वणस्सइ तह, चैव | जे | १०० | मउल्लंती | .. | ६ | दिण्णा आसीस | जे |
| ३० | जगुज्जोवकरं | .. | ७० | विसयरागमूं | जे,ख | १०० | उज्जोवं | .. | ६ | च्चिय उवं | .. |
| ३० | जगुज्जोयकरं | ख | ७३ | लाभालामे | जे | १०१ | कुसुमपडुच्छं | ख | ७ | ण पर्यवं सो पुं | .. |
| ३२ | सयं समत्थो, | ख | ७३ | रोगसोगेसु | .. | १०२ | सिधिणे | .. | ८ | कुसत्थवापीहि | जे,ख |
| ३३ | समंतो मारि ति विं | जे | ७४ | गरुवं | ख | | सुभिणे | जे | ९ | रामणो | .. |
| ३४ | अद्धमागहा | .. | ७५ | चाउरंतं | जे | १०३ | तूरनन्दिं | ख | ९ | सुरपुरो | जे |
| ३६ | सुणिवसभो | .. | ७५ | मग्गम्मि | .. | १०३ | मङ्गलसतेहि | जे | ९ | सुरनरो | ख |
| ३६ | भोहंतो | .. | ७५ | दुकखेहि | .. | १०४ | पयत्तो | .. | ९ | तिरिण्हि | जे,ख |
| ३७ | विभूइसहिओ | .. | ७७ | खुज्जे | .. | १०५ | वानरेहि | जे,ख | १० | मओ य आरण्णो । | जे |
| | | | | | | | | | १० | धिण्ण | .. |

उद्देश-३

| | | |
|----|-----------------|------|
| १ | किरणं | जे |
| २ | कारणेकउच्छाहो | सु |
| ३ | परियरिओ । वं | ख |
| ४ | पइसं | जे |
| ४ | गणहरवसमं | .. |
| ४ | तेएण | .. |
| ६ | दिण्णोसीस | ख |
| ६ | दिण्णा आसीस | जे |
| ६ | च्चिय उवं | .. |
| ७ | ण पर्यवं सो पुं | .. |
| ८ | कुसत्थवापीहि | जे,ख |
| ९ | रामणो | .. |
| ९ | सुरपुरो | जे |
| ९ | सुरनरो | ख |
| ९ | तिरिण्हि | जे,ख |
| १० | मओ य आरण्णो । | जे |
| १० | धिण्ण | .. |

| | | | | | | | | | | | |
|----|---------------------|------|----|--------------------|----|----|-------------------|------|-----|----------------|------|
| १२ | कुम्भयज्ञो | जे,ख | ३८ | पसेहि | ख | ७० | विभूषसहियं | ख | ९६ | सरिसेहि हृथेहि | ख |
| १२ | ज्णो य । | जे | ३८ | मणभिरामा, | जे | ७१ | पुष्णमिलाभयाइ | जे | ९७ | वियरेइ सुं | जे,ख |
| १२ | वानरेहि | ख | ३८ | निचसुहियं | जे | ७२ | वन्तरदेवी | ख | १०२ | सम्भूयगुणेहि | जे,ख |
| १३ | भगवं | जे | ३९ | जत्थसुहिया | ख | ७३ | सं खेतं ॥ | जे | १०५ | सुरकुसुमं | जे |
| १३ | दंसेहअन्थं | जे | ३९ | येवसेसे | जे | ७४ | वसभं | जे | १०५ | तइलोके अईसयं | जे |
| १४ | केवलीणा सिं | जे | ४१ | वड्ढी तहेव कां | जे | ७४ | चउप्पगारा | जे | १०६ | परहो | जे,ख |
| १४ | अह जिणवरेण सिं | ख | ४१ | य वड्ढी | जे | ७५ | कंकेयणसूरकन्ति- | जे | १०६ | वसभो | जे |
| १५ | नेय मणुषआहारो | जे | ४२ | एयं मुणिउं | जे | ७५ | पज्जलिया | जे | १०७ | णव(ब)लेण | जे |
| १६ | माणं मि दें | जे | ४२ | केण किएण | जे | ७५ | रयणसुडो | जे | १०७ | कीलयसतेसु | जे |
| १६ | परयव | जे | ४३ | भूमिसत्तं | जे | ७६ | लं चकिय पासे | जे | १०८ | लावणो | ख |
| १७ | खेतविभागो | जे,ख | ४३ | प्पयाणेण | जे | ७७ | पुलोयन्तो | ख | ११० | देवेहि | जे,ख |
| १७ | कालविभागो | जे | ४६ | गोसप्पेणं च पां | ख | ७८ | ते सव्वं | जे | ११२ | पासण्ढाणं च उं | जे |
| १७ | भागो य तत्थ | जे | ४६ | धेणुयसप्पेण | जे | ७८ | समुज्जलसिरीया | जे,ख | ११२ | नवजोव्वणं | जे |
| १८ | आलोयं तं | जे | ४६ | परिणमति | ख | ७९ | फलिहं | जे | ११३ | वारह | जे |
| १९ | सुरवसं | जे | ४९ | सहावेणं | जे | ७९ | सुललियं | जे | ११४ | पट्टणपएसा | ख |
| २० | एसु परिहिपरिणदो | जे,ख | ५१ | तस्स सुइ सुपवण्णा, | जे | ७९ | सुललिए लयां | जे | ११४ | कण्णाणपयारं | जे |
| २२ | संपरिविखत्तो दो चेष | जे | ५३ | अकखुनामो | जे | ८० | मणिमयूहं | जे | ११४ | सिपाइं उं | जे |
| | सयसहस्सा नायवो | जे | ५४ | जेण | जे | ८१ | कुसुमसुगन्धं | जे | ११५ | जोगेण नरा | जे |
| | तस्स परिवेवो पउमवरं | जे | ५४ | सिदं च | ख | ८१ | सुल्लहुल्लवहं | ख | ११६ | ते हुंति | जे |
| | इति प्रक्षितपाठः | जे | ५४ | अहवत्तं | जे | ८१ | उग्गाविवहं | जे | ११७ | कम्मविरया | ख |
| २३ | नवनउइ | ख | ५६ | अण्णे आलयवसमा, | जे | ८२ | हरिणउलं | जे | ११७ | हुंति | जे |
| २३ | विच्छिन्नो | जे | ५६ | भरहम्मए छउप्पण्णा | ख | ८२ | घणचन्दे | ख | ११८ | सव्वसत्तं | जे |
| २५ | महानदीओ | जे | ५६ | पीइसमा आधि | जे | ८५ | चन्दप्पहं | जे | ११८ | अणम्मि | जे |
| २७ | सट्ठीउ तहा, | जे | ५६ | पियसमा आसी | जे | ८५ | सप्पिहा सा, | ख | ११९ | इंदा भवे तओ वी | जे |
| २७ | सीहासणाणि | जे | ५७ | भोगहिडइ नागवसो | जे | ८५ | उअसासेन्ती | जे | १२१ | लोगसंन्धे | जे |
| २९ | भूमिसग्गा, | जे | ५८ | लायणं | ख | ८७ | संखपढहाणं | जे | १२२ | एवं | जे |
| ३० | जिणचेइयाहि रं | ख | ६० | विणिओगे | जे | ८८ | सुंवरु सु मं | ख | १२२ | अईच्छिओ | जे |
| ३० | जिणचेइपहि | प्रय | ६१ | मरुदेवि अप्रं | जे | ८८ | गा य जेगविहा | जे,ख | | अतिच्छिओ | ख |
| ३० | य देवलोयं | जे,ख | ६२ | वसभं | जे | ८८ | णागरं | जे | १२३ | नज्जइ | जे,ख |
| ३० | देवलोकसमा | प्रय | ६२ | सिं सुर झं | जे | ८९ | केएथ | ख | १२३ | कुणइ बहु चे | ख |
| ३१ | अम्बुइवगभं | जे | ६३ | सुविणां | जे | ९० | ओहुकुलं | जे | १२५ | बहु वि नदीओ | जे |
| ३१ | वो ति । | जे,ख | ६३ | नवरविपुट्ठा, | जे | ९१ | सभावभावस्थं | ख | १२५ | बहु विनडिओ | ख |
| ३२ | एरवयस्सा, | जे | ६५ | सुइणत्थं | जे | ९३ | सुरगणेहि | जे,ख | १२६ | संजमुज्जीवं | जे |
| ३२ | किण्णरसीवो | जे | ६५ | ण सुइण अत्थं | ख | ९४ | अभिसिखिकणमां | जे | १२७ | उसहो | जे |
| ३३ | णी वड्ढी | जे | ६५ | इ पिययमे । तुं | जे | ९४ | अहिंसिच्चिउं समां | ख | १२८ | सबहुओ | जे |
| ३३ | काळे, | ख | ६६ | सुणेत्तु | जे | ९५ | महिडिइए सुं | जे | १३१ | अयसहाओ | ख |
| ३४ | महिड्ढीओ | जे | ६७ | ओ मासाणि पं | जे | ९५ | पयओ | जे | १३२ | चन्दमणिं | जे |
| ३६ | आउठिति | ख | ६८ | जगम्मि | जे | ९५ | पसण्णचित्ता | जे | १३२ | परिवेवा | जे |
| ३७ | विभूषणं | जे | ६९ | खोभन्तो | जे | ९५ | जिणाभिसेयं | जे,ख | १३२ | लंया उ सुं | जे |
| ३८ | एतेहि | जे | ७० | लदूण पुत्तं | ख | ९६ | उवट्टेन्ति | जे | १३२ | सिबिवा | जे |

| | | | | | | | | | | | |
|-----|-----------------------|-------|-----------------|------------------|----------|----|--------------------|--------------|----|-----------------------|----------|
| १३३ | सुरवरिन्द | जे, ख | १६० | किरिणं | जे | २७ | करंति | जे | ५१ | परिसहभवेहि | जे |
| १३३ | बंदिणअणुसुद्धजयं | जे | १६० | जुवतीओ | ,, | २७ | अण्णाणिया | ,, | ५१ | उत्तिमं | ,, |
| १३४ | पत्तो य वरुज्जाणं | ,, | १६० | लायणवेसाओ | ,, | २७ | वि ह किं | ,, | ५२ | ब सयलसत्तो | ,, |
| १३५ | पुत्तसयलपरियंतं | ,, | १६१ | रा वि तस्थ उ, वि | ,, | २८ | अणुभवती | ,, | ५३ | महाभागा | क, ख |
| १३६ | ममोकारं | ,, | १६२ | समिद्धि | ,, | २८ | परिममन्ता | ,, | ५५ | तवबलेण | जे, क, ख |
| १३६ | चउहि | जे, ख | १६२ | करंति | जे, ख | ३० | पउंजंति | जे सु | ५६ | भुज्जई | क, ख |
| १३६ | सहस्सेहि | ,, | १६२ | विउल च | जे | ३० | सव्वजीवाण | क, ख | ५६ | समिद्धि | जे |
| १३६ | पत्तो जइणं(य जिणो) सु | ,, | १६२ | सम्मत्तो | ख | ३१ | धम्मरयण | जे | ५६ | देवलोगम्मि | ,, |
| १३७ | विज्जाउहो | ख | उद्देश-४ | | | ३१ | वरविहिय | ,, | ५७ | देवलोगसमा | जे, क, ख |
| १३९ | चउहि | जे, ख | १ | रो साणं | जे | ३१ | णा सुइया | क, ख | ५७ | गहवइणो | जे |
| १३९ | सहस्सेहि | ,, | १ | नयरागरं | जे, ख | ३२ | सुइया | जे | ५९ | धयाचिधउत्ताणं | क, ख |
| १४० | केइय | जे | ४ | जुवलो | जे | ३२ | केएथ | क, ख | ६१ | थलयरयणवासा | जे |
| १४० | वीइए | ,, | ५ | बामरादीणि | ,, | ३२ | केई | जे, क, ख | ६२ | रज्जविभूई | जे |
| १४० | छम्मासं | जे, ख | ६ | केएथ | ख | ३३ | सुरवरवसहा | जे, क, ख, सु | ६४ | महुरेहि | जे, क, ख |
| १४० | भडेहि | ,, | ६ | रयणादिमं | जे | ३४ | रोगाइवि | जे | ६६ | सव्वजीइ | क, ख |
| १४२ | गेण्हन्ति | जे | ७ | सुन्दरीओ | जे, ख | ३५ | चउरासीइ तु | जे, क, ख | ६७ | निसुणेह | जे, क, ख |
| १४२ | अम्बरयलं | ,, | ८ | तलच्छो | ,, | ३६ | चउइसं | सु | ६७ | माहणुपपती | क, ख |
| १४४ | पासे पत्ता | ,, | ११ | जुवलं | ख | ३६ | चोइसं | जे, क, ख | ६८ | इ ससइं | जे |
| १४४ | ममिदिममि | ,, | १३ | सुरभिगन्धो | ,, | ३७ | भगवओ | जे | ६९ | करीय | क, ख |
| १४५ | परियारं | ,, | १३ | कुसुमेहि | जे, ख | ३७ | सए व देहे | जे | ६९ | णं ते निं | ,, |
| १४६ | जुग्गाणे | ,, | १४ | दुन्दुभिषणं | जे | ३७ | देहे य निरवेक्खं | क, ख | ७२ | एयं | ख |
| १४६ | दो धि जणे | ख | १४ | गभीरं | ,, | ३८ | णाम सा | क | ७२ | वयणे | जे |
| १४८ | पभू | जे | १५ | पवरपुरिस | ,, | ४० | एत्तो तक्खं | ,, | ७२ | णा विगयमोहा | ,, |
| १४९ | विज्जाओ अणे | ,, | १७ | घातिकलपण | ,, | ४० | तक्खिलपुरिं | जे | ७३ | अण्णपाणाइं | ,, |
| १५१ | उक्विट्ठो | ख | १८ | उरपणम्मि | ,, | ४१ | तक्कसिं | ,, | ७३ | अण्णपाणाइं | क, ख |
| १५१ | पणुवीसा | जे, ख | १८ | तद्देय | ,, | ४२ | णं वयंततूरणं | ,, | ७६ | कागिणिं | ,, |
| १५१ | उभयतो | जे | १८ | विउल | ख | ४२ | टि. १ प्रवृत्तम् | ,, | ७६ | णं पुणो सुं | जे |
| १५२ | सेदी | सु | २० | समणुपपती | जे | ४४ | समग्भिडियं | जे | ७७ | एत्थं | ,, |
| १५३ | सरसेदीए | ख | | समुपपत्तो | ख | ४४ | तत्तो यं चक्खुं | ,, | ७७ | कयस्थ तुम्हे | ख |
| १५३ | नाम विक्खायं | ,, | २० | उवइट्ठा | ,, | ४५ | भुनयासु | ख | ७८ | भणियं, भं | क, ख |
| १५३ | नमि विक्खायं | जे | २४ | पंचअणुव्वयं | जे, क, ख | ४५ | वि वयासु | क | ७८ | जिणवरेहि भं | ,, |
| १५३ | बहुजणव्वयमंदिथ | जे, ख | २४ | सत्तहि | ,, | ४५ | लगा, दो वि जणा | ,, | ७८ | एकमणे निं | जे |
| १५४ | किन्नरादीणं | जे | २४ | सिक्खावएहि | ,, | | एकमेक्क दिठदप्पा । | जे | ८० | धंसं ति । | क, ख |
| १५४ | रिसाइ व णयं | ख | २४ | ऊ देसं | क, ख | ४६ | अट्ठयडिअत्तवं | ,, | ८० | भासणमेत्तं | ख |
| १५५ | ओयणेहिं सिहरट्ठं | जे | २५ | लभइ | जे | ४६ | जुज्जमन्त सं | क, ख | | भासणमेत्ते | जे |
| १५५ | उब्भासितं | ख | २५ | सुरमणुएपरमं | ,, | ४९ | भविरोहं | ,, | ८० | जण्णेसु य सु व हिंसति | ,, |
| १५७ | नगरं | ,, | २५ | अहम्मणे | क, ख | ५० | नासेंति | जे | ८१ | विमोहेन्ति | ,, |
| १५८ | रो मणहरथण्णेण | ,, | २६ | होइ जइ बीवं | जे | ५० | देविड्डी | ,, | ८२ | वयणमेवं | क, ख |
| १५८ | ण पज्जलिओ | ,, | २७ | वि इ तवं | ,, | ५१ | सुत्तुं | क, ख | ८३ | तेणवि निं | ,, |
| १५९ | इ व दें | जे | २७ | विकिहुं | जे, क, ख | ५१ | एहिं | जे | ८४ | सयले धिय | जे, क, ख |

| | | | | | | | | | | | |
|----|------------------------|--------|----|-------------------|-----------|----|--------------------|--------|---------|-----------------|--------|
| ८४ | °गित उ मां | जे,क,ख | २१ | धित्ण | क,ख | ५७ | °ण तत्तो | क,ख | ९० | वि ह मरणं | |
| ८५ | जे रियन्ते पं | " | २२ | °पहरेहि | ख | ५७ | मायापियपुं | जे | | समुपपतो | जे |
| ८६ | मोहेन्ता | " | | °पहरेसु खे° | जे | ५७ | °यणं सयल । | क,ख | ९१ | भाषणो | " |
| ८६ | कुसत्येहि । | क,ख | २३ | बहविहं | मु | ५७ | पव्वज्जं | | ९१ | त्रि य तं | " |
| ८६ | वसुमतीप | जे | २४ | देसयाले | जे | ५८ | दस चैव सया तह | जे | ९३ | अह ताण चं | " |
| ८६ | वसुमईण ॥ | क | १४ | °ओ जिणसगासं | " | ५८ | °णै सदि महां | क,ख | ९३ | महाजस | " |
| ८७ | पुरदेवीजिं | " | २४ | मृणिसयासं | " | ६० | अह चोइसमे | जे | ९४ | परमसीसो | जे,क |
| ८७ | नेव्वाणं | जे,ख | २६ | काऊण | " | ६१ | °रा, पंचाणउई | " | ९५ | किणिया गों | जे |
| ८८ | तिलोगनाहो | क,ख | २७ | भणइ | " | | मुणी लक्खं | जे | ९५ | मुल्लं जाम्व | " |
| ८८ | नेव्वाणं | ख | २९ | कुमुयावइं | जे | ६१ | । यमसीलवराणं | क | ९६ | गोव्लएणं | " |
| ८९ | तणभिव | जे | २९ | समुपण्णो | " | ६४ | सुणेह | जे | ९८ | सिहि मुल्लुत्थं | " |
| ८९ | समणुपतो | " | ३१ | ततो चओ | क,ख | ६५ | मेहवाहणो | क,ख | ९८ | विकेऊण य जं | जे,क,ख |
| ९० | तुज्जसुवुदा लिंगट्टिइं | " | ३१ | सिग्गिद्धमाणस्स | " | ६५ | गुणरूयसं | ख | ९९ | तानलित्तिं | जे |
| ९० | पुव्वजिणां | " | ३१ | सच्चवादी | जे | ६५ | गुणभूयसंपण्णो | क | ९९ | ससितो. | क,ख |
| ९० | नामेहि | जे,क,ख | ३४ | पुरवराओ | क,ख | ६६ | तथ सूरो, | जे | ९९ | ससिना में | जे |
| | इईं पं | क,ख | ३६ | निरिवद्धणो | " | ६७ | रूयसंपक्का | क,ख | ९९ | वसभो | जे,क,ख |
| | उइसो सं | जे,क,ख | ३६ | देवत्तणाओ | क,ख | | रूवसंपुण्णा | जे | १०० | संजारो | जे |
| | सम्मत्तो | क,ख | ३६ | ठविऊण | " | ६७ | °णो मग्गितं पयत्तो | " | १०१ | °ण तं, | जे |
| | उद्देश-५ | | ३७ | विज्जाहरेण एं | जे | ६८ | °सो वि जाइयंती | क,ख | १०२ | °रा ए | " |
| ४ | °लो विय, | क,ख | ३९ | निवो डाओ | क,ख | ७० | सहोयरी | जे,क,ख | १०२ | निमित्ता उ | क |
| ४ | अमयवलो | जे | ४० | मुणिवसभो कां | जे | ७१ | अपेच्छमाणो | | १०२ | ते उ नियत्ता उ | ख |
| ५ | ससितहं | " | ४० | °णं तिखुत्तेणं । | " | ७१ | , पुणो वि सो आगवो | | १०४ | सिसुणो चुओ | जे |
| ५ | तस्स वि पुं | " | ४१ | पट्टवन्धे | क,ख | | सयरं | क,ख | १०४ | °धरो रयणवालि- | |
| ६ | महानन्दई | क,ख | ४१ | °ण तओ | " | ७२ | °णो । थक्को अरं | " | | णुपण्णो | जे |
| ७ | तत्तो पभो विभो इय, | क | ४३ | टि. १. चंइओ | | ७२ | पहिच्छंतो | जे | १०४-१०५ | पूसभूइ | " |
| | तत्तो पभो विभो वि | ख | ४४ | रत्तोट्टो | जे | ७३ | तस्स वि य | जे,क,ख | १०४-१०५ | विस्सभूइ | क,ख |
| ९ | °जसस संभवो | क,ख | ४५ | मालिद्धं विदुचूओ, | " | ७४ | समिद्धी मं | जे | १०६ | °जोएणं | जे |
| ११ | पव्वमादीया | जे | ४५ | गयणिन्दो | जे,क,ख | ७७ | °सिओ ससंमंतो | क,ख | १०७ | °ण विस्वभूइ | क,ख |
| ११ | सोमपपभस्स | " | ४५ | नरवरिन्दो | " | ७७ | °तुरियच्चवलो, | जे | १०८ | सुयैसमणा | क |
| १२ | केइत्थ | " | ४५ | एणचूओ | मु,जे,क,ख | ८१ | °इवसभो | " | १०९ | अरिजियपुरे | क,ख |
| १६ | °दो । जाओ य | | ४७ | केइत्थ | जे | | शीर्षकः पूर्णघनं | | १०९ | जायावइ कुं | जे |
| | रयणवेजो | " | ४९ | आउय उस्सेहं | " | ८३ | सक्खा | क,ख | १०९ | कुमराभरधणुं | |
| १५ | वज्जव्वनानामो | " | ५१ | पुत्तो वि जिं | जे,ख | ८५ | जुयंमि जिं | जे | | (इति संशोधितं) | " |
| १५ | वज्जंपओ | " | ५२ | कमलमालु | क,ख | ८५ | हरियासो | क,ख | १०९ | °मरधणनामा | क,ख |
| १७ | विज्जसभण्डु | " | ५३ | °वेण गुणपुण्णा | जे | ८५ | सुरुत्ताए | " | ११० | पव्वज्जा | जे |
| १८ | विज्जुव्वनानामो | " | ५४ | अमिसैयाई | क,ख | ८६ | भाषणो | क,ख,जे | ११२ | सहस्सन्नयणो | क,ख |
| १८ | विज्जुवाओ | " | | अभिसेवाइं | जे | ८७ | सुरंगाए | " | ११२ | परिकहेइ | " |
| १९ | °सारसंपण्णा | जे,क,ख | ५५ | जुयइपं | " | ८७ | °ओ तुरियं ॥ | जे | | परिकहेइ | जे |
| १९ | सुत्तेसु | जे | ५६ | °हामगंवरिं | " | ८९ | खग्गपपहां | जे | ११२ | °णमुपपणा | क,ख |
| २१ | °ण ओगमारुटो | " | ५६ | °तं मि | " | ९० | काऊणं | " | ११३ | रउमको | जे,क,ख |

| | | | | | | | | | | | |
|-----|------------------|--------|-----|-----------------|--------|-----|--------------------|--------|-----|------------------|--------|
| ११४ | पञ्चउत्रा | जे | १४३ | समतीताऽणां | क,ख | १७५ | सगरसुं | ख | २०१ | भगिरही | क,ख |
| ११४ | °ण कालगओ | ,, | १४४ | तित्थगरं | क,ख | १७७ | कयणुण्णा जं | जे | २०२ | उत्पाडिय | ,, |
| ११५ | °संचए य पुरे | ,, | १४५ | वइकन्तो | जे | १७७ | जंपिओ पत्ता | क | २०५ | सुयसायरं | जे |
| ११६ | पयावले | ,, | १४५ | निवेइओ धं | जे,क,ख | १ | जंपिउं पयत्ता | ख | २११ | गामो वि | जे,क,ख |
| ११७ | पिउसयासे | जे,क,ख | १४६ | पञ्चज्जा | जे | १७८ | को इत्थ | जे | २११ | °हा जंता इत्थीण | जे |
| ११९ | भावरिसो रं | जे | १४७ | संभवाहिणं | क,ख | १८० | जस्से य नामसिद्धो | जे | २११ | परिमिलिया | क,ख |
| ११९ | सहस्सनयणो | क,ख | १४७ | सुमती | जे | १८० | वट्टइ | क,ख | | परिमलिओ | जे |
| ११९ | अहियनेहं | जे | १४७ | वासपुज्जो | ,, | १८१ | कित्तिसंपण्णो | जे | २१३ | समणुपत्ता ॥ | जे,क,ख |
| १२० | °गुणेहिं | ,, | १४८ | नेमी | ,, | | कित्तिसंपण्णा | क,ख | २१४ | कुणइं | क |
| १२१ | °त्ताणं देह कारं | जे | १४९ | पत्ते | जे | १८२ | हुयवहो जं वा | क | २१४ | °सहस्सघोरो | जे |
| १२१ | किम्वा अच्चेरयं | | १५१ | गामेहिं | ,, | १८२ | हुयवहो जं व | ख | २१५ | सगरपुत्ताणं | क,ख |
| | अण्णं | जे | १५२ | समदीओ | ख | १८३ | °वसभा | जे | २२० | विणिस्सन्ति | ,, |
| १२२ | °पुज्जारुहो | ,, | १५३ | बम्मयत्तो | क,ख | १८३ | °य पायवीळा | ,, | २२३ | परिगणेत्तो | जे |
| | तिलोगपुच्छोडरिहो | क,ख | १५४ | °ओ सुप्पमं | जे | १८३ | अउक्खयम्मि | | २२३ | °परिवुदो | क |
| १२२ | तिलोगपुज्जोडरिहो | ख | १५४ | य होइ नां | क | १८३ | अइ एं | ख | २२४ | समणेहिं | ख |
| १२५ | खेयरो | क,ख | | य व होइ नां | ख | १८४ | °कुडुबम्मि | क,ख | २२४ | कयनिओगं | जे |
| १२५ | बलसमिद्धो | ,, | | °णो चेव होइ नां | जे | १८४ | °कुटुम्बम्मि | जे | २२५ | उज्जाणवालं | जे,क,ख |
| १२५ | सुयणु | ,, | १५६ | रामण | जे,क,ख | १८५ | °धणुफलमु० | जे | २२८ | पीयकरो | जे |
| १२६ | सायरबरो | जे | १५६ | जरासंधु | जे | १८५ | °विज्जुलियां | ख | २२९ | पियकरो | क,ख |
| १२६ | °किरिणं | ,, | | जरासंध | क | १८५ | °हा स जीं | जे | २२९ | °यं करित्तु | क,ख |
| १२६ | °पज्जलिओ । | जे,क,ख | | जरासंधु | ख | १८६ | सोसिति | क,ख | २३० | जिणहरे | जे |
| १२६ | काणणवणेहिं | क,ख | १५७ | पत्ते | ,, | | सोसेन्ति | जे | | तुमं तं सहं | |
| १२७ | समत्तेण | ,, | १५७ | °मेत्ताए पुं | क | १८७ | अक्खहरादी | ,, | २३२ | सुणिय इं | जे |
| १२९ | °चित्तपागारा | जे | १५७ | उत्सप्पिं | जे | १८८ | लोगम्मि | ,, | | रिवू सं | जे,ख |
| १३० | बंधूजं | ,, | १५८ | ओसप्पिं | ख | १९० | °ण विणा इह | जे | | रित् सं | क |
| १३१ | °मणिकिरिणो | ,, | १५८ | परमभत्तोए | क,ख | १९० | णुणं | ,, | २३८ | एत्तियमेत्तो | क,ख |
| १३१ | देवेहिं | क,ख | १६३ | तो उज्जिं | ,, | १९१ | तो पिच्छिळण | ,, | २३९ | कूओ | जे,क,ख |
| १३२ | बारहट्टइं | जे | १६३ | परमबन्धुं | जे | १९२ | °वसवम्मन्तो | क | २४० | पुत्तो चिय | क,ख |
| १३४ | °पागारा | ,, | १६३ | °वित्तिउज्जय | ,, | १९२ | मयणेसु य | ,, | २४० | जुयरज्जे | जे,क,ख |
| १३४ | °भवणेहिं | जे,क,ख | १६४ | अभिसिं | ,, | १९३ | °णेषु वि सुं | जे | २४१ | चइळण चउत्विहं पि | जे |
| १३४ | अइरम्मा | जे | १६६ | उयही | जे,क,ख | १९३ | °ण व हया | ,, | २४१ | चउत्विहं च | ख |
| १३७ | भुज्जसु | ,, | १६८ | °कयविभवो | जे | १९४ | अवराहियं | क,ख | २४१ | सुरोत्तमो | ख |
| १३८ | भाणुमहिं | क,ख | १७० | °जे व संसंति | ,, | १९४ | °दुट्टवेरीणं | जे,क,ख | २४३ | °भनामधेयरायं | जे,ख |
| १४० | गयबहुकालो | जे | | °जे य संसंति | ख | १९४ | °कम्पेण | क,ख | | °भनामधेयरायं | क |
| १४१ | °इ य सत्थं | जे,क,ख | १७१ | मन्तीहिं | जे,ख | १९५ | नवनिहीहिं व्व | जे | २४४ | °सुया, उ चेव य | |
| १४२ | °गुणेहिं | जे | १७२ | दायं गंगां | क | १९५ | नवहिं निहीहिं च रं | क | २४४ | वर | क,ख |
| १४२ | °सतेहिं | ,, | १७२ | °नदीय | जे | १९५ | नवहिं निहीहिं व | ख | २४५ | °सन्निभाइं | जे |
| १४३ | खयरो | क,ख | १७३ | सगरपुत्ते | जे,ख | २०० | भरहादी | जे | २४५ | °सरिसाई | जे |
| १४३ | °वरसंखं | क | १७४ | दो वि जं | क,ख | | | | २४५ | °ससुएहिं | ख |
| | | | | काळण य अं | जे | | | | | °ससुएण | जे |

| | | | | | | | | | | |
|-----|------------------|----------|-----------------------|----------|----|-------------------|----------|-----|-----------------|----------|
| २४६ | हंसो वीरो | जे | सम्पत्तो | क ख | ४१ | °बवीहियाकलिओ | क | ७४ | किक्किन्धपुरं | जे, क ख |
| २४६ | °जो, हणो व क° | " | | | ४२ | पत्तो | जे, क, ख | ७५ | आहारादीसु | जे |
| २४८ | °ससुतेहिं | " | उद्देश-६ | | ४३ | °पाणमादीयं | जे | ७५ | पवरपीतीप | क, ख |
| २४९ | °भणिमयूहं | " | १ मए पयत्तेण । | क, ख | ४३ | व सव्वं कीं | " | ७५ | बन्धवा विव | जे |
| २५२ | जस्स य नां | " | २ दक्खिणिल्ले° | जे | ४४ | जूवाओ लयन्ति | क, ख | ७५ | देव व भूया | " |
| २५२ | जयम्मि विं | ख | २ °न्दो तत्थ विं | " | | जवाओ लवन्ति | जे | ७९ | पयं | क, ख |
| | जयनि(ति) विं | जे | ५ ई, धीरो | ख | ४४ | °सहुलवभावा | " | ७९ | धरणिविट्ठे | क |
| २५४ | आओहण नां | ख | ५ नामं | जे | ४५ | भुवगं | जे, क, ख | | धरणिवट्ठे | ख |
| | आडणहं | जे | ७ वत्तो | " | ४६ | °रयणमयूहं | जे | ८० | य विधानासायं° | जे |
| २५५ | °ओ । जस्सासि | " | ७ श्विय | जे क, ख | ४६ | °भित्तिविच्छुरियं | जे, क, ख | ८० | नावेह पवं | ख |
| २५५ | सहरसमेकं | " | १० हरिसुन्धिभक्तं | मु | ४६ | व सोभा | जे | ८२ | रिखु निं | जे, क, ख |
| २५७ | दीवं पुं | " | १० हरिसवसुभिण्णं | जे | ४७ | उवकरणां | जे क, ख | ८४ | °न्दो स खे° | जे |
| २५८ | समासेणं | जे, क, ख | ११ °सुयसमरगो | क, ख | ४७ | °भोयणादीयं | जे | ८७ | धणुएण | " |
| २५९ | भीमपपभस्स | जे | १४ °रह-तुरय-ओहसं | क, ख | ४९ | नमेण | " | ८८ | °रविंवेहिं | क, ख |
| २५९ | पूयारहो | " | १७ तुज्जं | जे | ५० | पूरेन्ता | क, ख | ८९ | °न्ति व वां | " |
| २५९ | जियभाणुं | " | १९ °सेहि वाहुलं ॥ | " | ५३ | कोशविहाणेणं | " | ९० | भगवओ | जे क, ख |
| | जिणभाणुं | क, ख, | १९ होज्ज | क, ख | ५४ | देवो | क | ९० | वाणरचिन्धे | क |
| २६० | जिणभाणुस्स | " | २० धुधुक्किय | " | ५४ | वोलिन्ते | क, ख | ९१ | पुव्वविरियं | जे |
| २६३ | वज्जनज्झो | जे | २१ उत्तमवसे | " | ५४ | माणु णोत्तरं | जे | ९१ | किक्किन्धपुरे | " |
| २६३ | °रादणो चिय | क | २२ वरगेहं | जे | ५९ | वज्जकंठं | क | ९३ | किक्किन्धे पुं | क |
| २६३ | °राय्णो विय | जे | २५ °भावदोसेगे | " | ५९ | °ओ वीरो | क, ख | ९३ | °भाए सरिसो, सुं | जे |
| २६३ | रिखुमहणो | " | २६ बहुनीइसत्थकुं | क, ख | ६० | पुच्छइ धणसु साहुं | जे | ९४ | अट्ठोत्तरं | " |
| २६४ | नेव्वाण भत्तिवतो | " | २७ °सुद्धपत्ते, | क | ६२ | सहोयरं | " | ९५ | विज्जाहरत्तरं | " |
| २६४ | अणिलो व चं | क, ख | २७ वसुमतीप | जे | ६३ | कणिट्ठो | " | ९५ | °चियकम्मस्स | " |
| २६५ | मयूहो | जे | ३१ वीवो य संझयालो | " | ६४ | बध्वज्जेण सहिओ, | | ९७ | पुणइ | क, ख |
| २६६ | गयखोभो | क, ख | ३१ सवेयकं | " | | इन्दो | " | १०१ | पवरवडलं | क |
| २६६ | °धमणादी | जे | ३१ सुओधणो | " | ६५ | धुरजम्मं | " | १०१ | °सुसमिदो | " |
| २६६ | °हराणुए ॥ | क | ३१ नाम पुओ धणो वि य ख | | ६५ | परिखुद्धो | क | १०१ | नन्दनवणो | " |
| २६६ | °हराएण ॥ | ख | ३१ जलओज्झाओ | " | ६५ | परिखुडं | " | १०४ | गाढप्पहारं | जे |
| २६७ | °पुरीय सामी | जे | जलउज्झाओ | क | ६९ | परिणेति | जे | १०४ | °सविम्मलो | क, ख |
| २६९ | मेहप्पहहए | " | जलउज्झाणो | जे | ६९ | वरधुवं | " | १०४ | पवंगमा | क |
| २७० | विज्जाहुरेहिं | जे, क, ख | ३३ भाणुं | " | ७० | वत्ते श्विय | " | १०४ | °जीवालो | क, ख |
| २७० | आणाईसरियं | जे | ३३ पयमादीया | " | | वत्ते व्विय | ख | १०५ | दिज्जो सो सां° | जे |
| २७० | °गुणपत्तं । | क, ख | ३३ °रमणिज्जे | जे, क, ख | | वत्ते विय | क | १०८ | खलणेसु | " |
| २७१ | पावेंति | जे | ३५ तत्थ वससु वीं | क, ख | ७२ | जेणेय धं | जे | १०८ | महिक्कड्ड | क, ख |
| २७१ | केइत्थ | " | ३५ विलंबंतो | जे | ७२ | जेणेयं धं | क, ख | ११० | पधंगमो | " |
| २७१ | °ला मलकम्ममुक्का | जे, क, ख | ३६ हय-मय-तुरयं | " | ७२ | °हं कउं | जे | ११४ | भणइं | " |
| | इइ पं | क | ४० °तरुभरेहिं | " | ७३ | जेणेय पं | " | ११५ | साहेहि मे धम्मं | जे क ख |
| | इति महापउमं | ख | ४० नखइ | क, ख | ७४ | अमरपुरिं | क, ख | ११६ | °णेहि पुट्टं | क, ख |
| | °साहियार पं | क | ४१ सभावसं | जे, क, ख | ७४ | °सरिससोभां | जे | ११७ | °रथनिरुद्धया | " |

| | | | | | | | | | | | |
|------|---------------------|--------|-----|---------------------|--------|-----|-------------------------|--------|-----|------------------|-----|
| ११८ | मोहजालेणं | जे,क,ख | १५३ | °ओ वीरो | „ | २३० | °मेहवण्णवयणो | क | २५ | चिवडइ | जे |
| ११९ | संतोसंशु | जे | १५९ | य सव्वे, | क,ख | | °मेहकण्णवयणो | ख | २६ | °बाणतोमरं | क |
| १२० | रायभत्तं | ख | १५९ | मञ्चे य ठिं | जे | २३० | °विज्जुणाउलं | जे | २६ | °आउहसतेसु | जे |
| १२० | भवइ | जे | १६२ | °ण्णकित्तिसंपुण्णं | क,ख | २३१ | विमुक्कजीवासा | क,ख | २८ | भाडोलियं | „ |
| १२२ | °रलद्धमाहप्पा | जे | १६५ | °ला हवइ वा(धा)ती जे | जे | २३२ | } निग्घोसो | जे | २९ | °खग्गतोमरचडक्खं | क |
| १२३ | पावेन्ति | „ | १६७ | इट्ठं | „ | २३३ | | जे | २९ | °तोमरवक्कं | ख |
| १२४ | मोक्खो | „ | १६७ | रइए चेव | ख | २३४ | निग्घोसं | „ | २९ | °सोवमेह पं | जे |
| १२५ | जइ विह तवं | „ | १७१ | °सामिए | जे | २३६ | पियमाइं | „ | ३० | पज्जन्तं | „ |
| १२६ | विकिट्ठं | „ | १७२ | पते | जे,क,ख | २३७ | एसोहे मंगलपुरे, | ख | ३० | भवइडिओ | जे |
| १२६ | अमेयकालं | ख | १७२ | °संपण्णा | जे | | पत्ताहे मंगलपुरे, | क | ३१ | दोणइ वि | „ |
| | आमेयकालं | क | १७३ | जो ते हिं | „ | २३८ | °विभूतीप | जे | ३१ | रणरसकण्ह | „ |
| १२९ | °असिपत्तां | क,ख | १७३ | तस्स करेहि | जे,ख | २३९ | पीयंकरस्स | „ | | रणस्स कण्ह | सु |
| १२९ | पतेसु | जे | १७३ | वरतणुम्मि मां | जे | २३९ | पीइमाइसं | „ | ३४ | °समस्याओ | ख |
| १२९ | पावेन्ति | जे,क,ख | १७३ | वरतणुम्मि मां | ख | २४० | त्रि य सुमां | „ | ३४ | रुहिरे(रा)हविदं | जे |
| १३० | जह रत्तम्मि | जे | १७५ | °णं । आछेयं | जे | २४० | रइं विसेणेण | क,ख | ३५ | आमारिसवसणं | „ |
| १३१ | एषा गाथा अग्रगाथा- | | १७७ | दानरीण | „ | २४४ | °भयसंगा | जे,क,ख | ३६ | सपरहुत्तो | „ |
| | पश्चात् | क,ख | १८२ | आभिट्ठो | „ | २४४ | °चारित्तयुत्ता | जे | ३७ | भिण्डिमालपं | „ |
| १३१ | °न्ति त्रिणो | क,ख | १८२ | पयक्कणं | „ | २४४ | सिवमयलं | „ | | भिडिमालिपं | क,ख |
| १३४ | घारेन्ति | जे | १८३ | किक्किन्धिसुही | क,ख | | उदेसो | | ४० | आसासिउं | क |
| १३४ | वेण्णि | „ | | किक्किन्धिसुही | जे | | सम्मत्तो | क,ख | ४० | सुरवरस्स | जे |
| | विण्णि | ख | १८४ | इव, चक्कसणाहो | जे,क,ख | | | | ४० | °ओ नरवइस्स | क,ख |
| १३७ | कामपुरि | जे | १८७ | तालिओ | जे | | | | -४३ | आइच्चरत्तिं | जे |
| १३७ | ठाणजोएणं | „ | १८७ | परिवेदिउं | „ | ४ | संजाओ | क,ख | ४६ | °वो धीरो | क,ख |
| | ठाणजोएणं | क,ख | १८८ | °गमणदत्ता | क | ५ | °यं रज्जं | जे | ४८ | पुहइतले | जे |
| १३९ | झाणोवजोगं | जे,क,ख | १९५ | पासइ | „ | ७ | °निब्बुयपसत्था | „ | ४९ | जक्खपुरओ | क,ख |
| १४१ | मुट्ठिप्पहारां | जे | १९७ | करसेसो | क,ख | ९ | °ण पत्तो | जे,क,ख | ४९ | टि. १. सहशनामानः | |
| १४२ | °स्स कलुसयां | जे,क,ख | १९९ | पुच्छावलन्तं | „ | ९ | °माहप्पं | जे | ५० | आसीणासीणपुरे | जे |
| १४५ | सुणित्तु | ख | २०२ | °वस्तुत्तरयणपायारे | जे | ११ | हरिणगमेसी | „ | ५० | वइसावरपुं | क |
| १४६ | समज्जेइ | क | २०२ | पमायसोगं | क,ख | | हरिणेगमेसी | क,ख | ५१ | पच्चमादी | जे |
| १४७ | नियं भवणं | जे | २०९ | °तरुवरकुसुमं | „ | १२ | °ओ वीरो | जे | ५१ | तस्सलीलं | „ |
| १४७ | गेणइ | „ | २१० | °मि पच्छज्जसंदेहो | क,ख | १३ | खेयराणंदं | क,ख | ५१ | °या धीरा | क,ख |
| १४९ | तडिकेसिखं | „ | २११ | भवणसोभं | जे | १५ | सुमाली य सं | ख | ५२ | °सेड्डिसामित्तं | जे |
| १५० | किक्किन्धपुं | „ | २१८ | अण्णपक्वं | क,ख | १५ | जिट्ठं | „ | ५३ | रण्णा सुं | क,ख |
| १५० | महोदहिरवो | „ | २१८ | विलम्बन्तं | जे | १७ | °कोइहुयादीया | जे | ५३ | नन्दवती | „ |
| १५१ | °निवेयणो | क | २२१ | °रम्मपदेसेसु | ख | १८ | टि. दादिः-शूकरः, | | ५४ | °कइकसियाओ | जे |
| १५१ | °ण उच्चिग्गो | जे | २२२ | दक्खिणदिंसं | जे,क,ख | | दंष्ट्रि | | ५५ | °रे सीमसेणं | „ |
| १५२ | अभिसिं | „ | २२४ | निग्घोसो नां | जे | १८ | °राच्चियं | जे | ५७ | अज्जप्पभिइं | ख |
| १५३ | निहियकम्मरिउं | „ | २२६ | मारैग्गित्तं | जे,क,ख | १८ | °री चयइ (संशोधितम्),, | | ५७ | लोगपालणो | क,ख |
| -१५३ | निह(ण ?) तकम्मरिक्क | क | २२८ | जन्तुनिवहं | क,ख | २० | अमलंकियं | „ | ५९ | °गन्धसंभमा | जे |
| १५३ | सिद्धिपुरं | ख | २२९ | निग्घोसो निं | जे | २४ | °ज्ज संतट्ठा । | „ | ६३ | कुडम्बं | सु |

| | | | | | | | | | | | |
|----------|------------------|--------|-----------|----------------|--------|-------|------------------------|------|-----------|-----------------------|--------|
| कुटुम्बं | जे. | १२० | विलिहमाणं | जे | १६२ | नयरीय | जे | २६ | ससिमिष जो | जे | |
| ६३ | द्विया हवइ जस्स | क | १२१ | वालिया | ,, | १६५ | ण इत्तपुत्तेण । | ,, | २६ | जुण्हं | क |
| ६५ | एयं | क,ख | १२३ | वि ह पुं | ,, | १६६ | नवरं चिय | जे,ख | २७ | चलेइ गिरी | जे |
| ६५ | साहण्हे | जे,क,ख | १२३ | वि हु पुं | क,ख | १६९ | होहीइ | जे | २९ | महत्तं | जे,क,ख |
| ६७ | परिवाडियं सो धूं | क | १२३ | अवट्टविषा | जे | १७० | मतीओ | ,, | ३० | वारिं, निं | जे |
| ६७ | रियं सो धूं | जे,क | १२४ | य नाण | क | १७३ | ण रम्मं नरं | ,, | ३० | कुमुदुपलं | ,, |
| ७४ | णसमाइणं | क,ख | १२४ | मिच्छेहि | क,ख | | (संशोधितम्) | ,, | ३० | महुरगुं | ख |
| ७४ | दव्वं | क | १२५ | जा पुत्त | ,, | | उद्देश-८ | | ३० | युज्जंतं | जे |
| ७७ | समन्भासे | जे | १२५ | सवरसूसा | जे | | १ व भज्जासे | जे | ३१ | कल्लण छस्सं | ,, |
| ७७ | परिकइइ | ख | १२५ | एवं | क,ख | १ | तीसे गुं | जे,ख | ३१ | वहन्ताणं | ,, |
| ७९ | पत्ते | जे | १२६ | चोइसघणं | ,, | २ | मज्जं चिय पं | जे | ३२ | तेहिं पि | ,, |
| ७९ | पडिबद्धा | ख | १२६ | निक्खओ | जे | ५ | सरुतो | सु | ३२ | लीलमि कीलंतो ॥ | ,, |
| ८० | सुसुणिं | ,, | १२७ | जहा न | ,, | ६ | समुद्धइ | क | ३२ | विलम्बन्तो | ख |
| | सुमिणं | क | १२९ | संजभोवयट्ठाए | जे,क,ख | ६ | एव पभू | जे | ३३ | तो कयत्थो | जे |
| ८० | इ । पत्ते सव्व | ,, | १३० | तदा | क,ख | ७ | तुंगयागारं | ,, | ३५ | अजा सुहस्स | क,ख |
| ८१ | करा धोरा | क,ख | | तहा | जे | ९ | नामतो | ख | ३७ | उदयखइं | क,ख |
| ८२ | विसालकिसिओ | | १३१ | लहुं पसज्जइ | जे,क,ख | १३ | अहय चिय चदनहा | | ३७ | उदयखेडं | जे |
| ८५ | समारहइ | क | १३२ | सम्मत्तं विं | ख | १३ | दुहिया रयणा सवनिवस्स ॥ | | ३९ | कञ्जुणो | क |
| ८८ | कयञ्जलिं | ,, | १३४ | म्मि असंपुण्णे | जे | | खरगस्स | जे | ४० | वरकमाणं | क,ख |
| ९० | सवो परमो | क,ख, | १३७ | णो य खोहा | जे,ख | १४ | चेत्तियघराहं | ,, | ४० | एस धीरो | ,, |
| ९२ | एयन्तरंषि | ख | १३७ | री वंशकारी | जे | १५ | विज्जमज्जे | क | ४१ | विचिन्तन्तो | ख |
| ९४ | होही एसो | जे,क,ख | १३८ | सुहडाइणी | ,, | | विज्जमज्जो | ख | ४१ | कणयसुइसहिओ | क,ख |
| ९५ | जणणीय पिं | क,ख | १३८ | विज्जेयरी | ,, | | गयणतट्ठि | जे | ४२ | किरिणेसु | ,, |
| ९६ | नियइवयणं | ,, | १३९ | जलथम्भणि | जे,ख | १५ | दुज्जगुगसेणो | ,, | ४३ | पत्तं | ,, |
| ९७ | एवं सु भा | जे | १३९ | गिरिदारणी | ,, | १६ | दुज्जउगसेणा | क,ख | ४५ | मयगव्वमुं | जे |
| ९७ | कालेण सो | ,, | १४० | णावज्जा | जे | १६ | वी मारणो | जे | ४६ | रक्खस पं | ,, |
| | वि वड्ढंते | ,, | १४१ | रवितोथा | ,, | १६ | सुभो मं | ,, | ४६ | संवन्धे | ,, |
| १०२ | इं ते ठिओ | क,ख | १४२ | वलमहणा | ,, | १६ | पवमारी | ,, | ५० | ताणसत्थं | जे |
| १०३ | गरुयं | जे,क,ख | १४२ | वरिसणी | ,, | १७ | पणवा | क | ५१ | तट्टचेडे | क,ख |
| १०३ | चिन्तन्तो | क,ख | १४३ | धोवद्विनं | ,, | १७ | सुणेहि | क,ख | ५१ | वेज्जाहरं | ,, |
| १०७ | जाडपडिपुण्णा | क,ख | १४३ | दियहेसु | ख | १७ | वयणमिह | क | ५१ | सच्छहेहि य, अह जे,क,ख | |
| ११२ | पत्ते | क,ख | १४४ | दा विज्जा य भा | ,, | १७ | याहिवती | जे | ५३ | पवरकल्लणं | ,, |
| ११४ | महुरालाव एय | ,, | १४५ | पत्ताओ | ,, | १९ | चडगरेण | ,, | ५३ | गयाइं निं | ,, |
| ११४ | ण सुल्लवन्तीणं | जे | १४७ | नंदसु बंधं | जे | २१ | वसुमतीप | ,, | ५४ | परमइडिडसंपतो | क,ख |
| ११७ | गहभूउं | ,, | १४७ | अपडिभूओ | जे,ख | २२ | सयंपभपुरं | ,, | ५४ | पवरइडिडसंजुतो | जे |
| ११८ | पक्कोवेन्ता | ,, | १४८ | हिडड | ख | | सयंपभपुरे | क,ख | ५४ | सयंपभपुरं | ,, |
| ११८ | घरणिपट्टं | ,, | १५१ | मतीया | जे | २५ | विण्णवेउं | ,, | ५८ | ह जणेसु खाइं | |
| ११९ | विसहरा-रु- | ,, | १५१ | मल्लगमीयं | ख | २६ | ण नियइ सव्वं | क,ख | | नियओ चिय | क,ख |
| ११९ | य सोभ | ख | १५५ | भवणोली | जे | | | | | | |
| ११९ | न गच्छन्ति | ,, | १५७ | कयपरिकम्मा | जे,ख | | | | | | |

| | | | | | | | | | | | |
|----|--------------------|--------|-----|------------------------------|----------------|----------|-------------------------------|-------------|-----|-----------------------------|-----------|
| ६० | विद्यरीयथा | जे | ९५ | सरकसरं | क,ख | १४१ | करा इमे | क,ख | १७२ | पट्टणं हं | जे |
| ६० | विकल्पेन्ति | जे,ख | ९६ | रहि एहि | „ | १४२ | °नयविहण्णु | जे | १७२ | } तस्समुहं धावए तुरियं ॥ | „ |
| | विकल्पेति | क | ९७ | °कज्जुज्जुया | जे | | °नयविहन्नु | क,ख | | | |
| ६१ | दक्खिणसेड्डीएँ | जे | ९८ | चक्रपहारो | „ | १४२ | सुणेह | जे | १७३ | सम्पूर्णगाथा नास्ति | „ |
| ६१ | धीरो विसुं | „ | ९९ | °डेसु महत्थं | „ | १४२ | जिणवरं | क,ख | १७३ | पवत्तो | क,ख |
| ६२ | पक्कयसरिसा | सु | १०० | } विसिहा तहा रणं खित्ता । | जे | १४३ | भणाभिरमं | „ | १७४ | सम्पूर्णगाथा नास्ति | जे |
| ६३ | वच्चमाणो | जे | | | | | १४७ | °रहोपत्तो | ख | १७५ | पराइओ आं |
| ६३ | तेणं चिय | सु,ख | १०० | कवा विमुहा | क,ख | १४८ | तालिया | जे | १७७ | °भोहणाहिं | „ |
| ६४ | °ण वीओ | जे | १०१ | सो हत्थि न रहवरो | जे | १४९ | वि य, भं | „ | १७८ | °भगपसरो | „ |
| ६५ | सयंपभपुरे | जे,क,ख | १०१ | °करम्ममुक्केहिं | क,ख | १४९ | °रे ससंघपरिवारो । | „ | १७८ | °लगइगमणं | „ |
| ६५ | देवलोगम्मि | जे | १०२ | बन्नुवनेहो | „ | १४९ | तो होही | „ | १७८ | गिण्हइ | „ |
| ६७ | देसपरिभं | „ | १०५ | °भङ्गुरसरीरो | क | १५० | ससंभमहियओ | सु | १७९ | °ण गओ | „ |
| ६९ | अह उत्तं | क | १०५ | °भङ्गुरसरीरे | ख | १५० | °इ संभमहियओ | जे,क,ख | १७९ | सुहोवदेसं | „ |
| ७० | कुम्भकण्णेणं | जे | १०६ | एकमेकेणं | जे | | | | १७९ | कारेमि | „ |
| ७२ | तुमं | „ | १०७ | °सुहासाय | „ | १५२ | दोण्ह वि | जे | १८१ | को वि पं | „ |
| ७४ | °यलसंजमियतणू, | „ | | °सुहासायं | ख | १५६ | °नरिन्देणं सो, | „ | १८१ | न एएइ संदेहो | क,ख |
| | चां | „ | १०८ | कारणट्टे | जे | १५७ | °ओ य राया | „ | १८२ | नरवईण | जे,क,ख |
| ७५ | °पुरं जं चइऊणं | „ | १०९ | ता सुयसु रामं | क,ख | १५८ | नागसिरी | „ | १८३ | वि हु मं | क,ख |
| ७५ | ठिओ चिरं | „ | १०९ | दावेह | जे | १५९ | नागमई | „ | १८४ | वेगवतीप | जे |
| ७५ | घरणीविवरं | जे,क,ख | १११ | तुज्जइण्हं | क,ख | १५९ | कालुकखेवं | „ | १८५ | तो वचिऊण | „ |
| ७६ | वि य ताणं | जे | ११४ | वलसमत्थं | जे,ख | १५९ | विहारेन्ती | जे,क,ख | १८५ | °य सा पुं | „ |
| ७७ | भणइ एवं । | ख | ११४ | तो पइं | जे,क,ख | १६० | दट्टणं हरिं | जे | १८७ | °न्दा ताएँ | „ |
| ७८ | नयरी | जे | ११४ | चिरावेह | जे | १६० | °ओव्वणं पुण्णा | „ | १८७ | पिययरं | ख |
| ७८ | अच्छसि | क,ख | ११५ | °रिवुभइं | क,ख | १६१ | होहि मं | क | १८९ | °सरइरियं | क |
| ७९ | भिच्छजणं | जे | ११९ | °ण वरसरसएहिं | „ | १६३ | निम्वाडिओ | „ | १९० | पत्तेण | जे,क,ख |
| ८० | } रे हूय वयणाइं | जे | ११९ | उकत्तं दं | „ | १६३ | आसमपहाओ | क,ख | १९० | °भोगेहिं | क,ख |
| | | | जे | १२० | °म्मि धणओ पहाओ | सुं, क,ख | १६५ | उज्जाणे वरं | ख | १९० | °हि सइहा |
| ८१ | आयडिडय | „ | | | | १६५ | } °रे, न लभइ धीइं तीए कए ॥ | जे | १९१ | जलणेसि पं | क |
| ८३ | घाया पवं | ख | १२२ | गिण्हिऊण | „ | १६५ | | उज्जाणे वरं | ख | १९१ | पवज्जे हं |
| ८४ | ता चलणेसु घे | जे | १२२ | ससुरिसं | „ | १६७ | जिणहरघराइं ते हं | जे | १९२ | पभू | जे |
| ८६ | य संयं, धं) कुं | „ | १२३ | अभिणान्दिओ | जे | १६७ | कारविस्सामि | ख | १९४ | °या सविहवेण | क,ख |
| ८६ | जं ताए भं | ख | १२५ | वि ओइओ | „ | १६९ | तइया ओ मिं | „ | १९४ | अस्सभागिणी | जे |
| ८७ | भट्टचडरण | जे | १२६ | °दो बिओ इओ | क,ख | १६९ | उज्जाणवणम्मि | क,ख | १९५ | तीसे मे | क,ख |
| ८८ | °गयारूढो | „ | १३० | चमरुपुव्वन्तं | „ | १६९ | °म्मि नियइ जुं | जे | १९५ | मेहुणयपुरे, | „ |
| ८८ | शुंजयरिपव्वयं | „ | १३१ | विमीसणो | जे | १७० | °घोरन्तं | क | १९५ | विज्जाहरादिच्चं | जे |
| | शुंजइरिपव्वयं | क,ख | १३३ | सुग सां | „ | १७१ | तं पत्तं, | क,ख | १९६ | °बडगरेण | „ |
| ८९ | वेसमणो | जे | १३५ | पुहइं | क,ख | १७१ | °विहलभिभं | जे | १९८ | विचइन्तं | „ |
| ८९ | °सवणादिपहिं | „ | १३६ | पव्वओवरिं | जे | | °विहलवंभ | क | १९९ | रणमुहो | क,ख |
| ९४ | शुंजयरिपं | क,ख | १३९ | °भ अत्थि चं | क,ख | | °विहलवेम्भं | ख | १९९ | ओ व न | ख |
| ९४ | पइण्णसेमाणं | जे | १३९ | इमे पुहइयले | जे,क,ख | १७१ | पलयन्ति य सं | क | | °हे, जाव न | क |

| | | | | | | | | | | |
|-----|---------------------|--------|-----|------------------|--------|-----|------------------|--------|----|-------------------------|
| १९९ | °दो सरवरेहि | जे | २३२ | नरया | क,ख | २६२ | °जलानूरिय | जे | | |
| २०० | °विसुंदुलं | जे,क,ख | २३५ | वसणं | क,ख | २६२ | गुडुगुअं | क,ख,जे | | उद्देश-२ |
| २०१ | पुणगोदयेण जां | जे | २३५ | ताण बहु ! | क,ख | २६३ | पुच्छइ | जे,क,ख | १ | आइचरइयस्त |
| २०१ | चक्रधृती | | २३६ | दाऊण य तं | „ | २६३ | °नयरी | क,ख | १ | संपत्ती |
| २०२ | तेलोकं | „ | २३७ | उच्छिता | जे | २६४ | हुयवइनिव | क | २ | वसुमतीप |
| २०४ | अणमेजएण | „ | २३७ | कहिनित्ति | ख | २६५ | मिणित्तामा | ख | ३ | उवसागरं |
| २०४ | °ण्णा, सयधणुपुत्तेण | | २४१ | चलपरिं | क,ख | २६५ | °मिळणधवं | जे | ४ | तस्स अणुगरो |
| | | जे,क,ख | २४१ | तेहिं आं | जे,क,ख | २६५ | °रलभोसवियं | जे,या | ४ | वि य नियवं |
| २०४ | पधरकण्णा | जे | २४१ | कुगइ विव | क | | °रलऊसवियं | क,ख | ५ | इवलपुरे |
| २०५ | °लसतेहिं | „ | २४३ | पयत्थेहिं | „ | २६६ | वोलेन्ते | जे | ७ | °जुवतीओ |
| २०७ | कराविया | „ | २४४ | मयपहरेहिं भूं | क,ख | २६७ | पुक्करणिं | जे | ७ | बंधवसमूहं |
| २०८ | जिणसासणं | जे,क,ख | २४४ | रुद्ध व चउन्त-पं | ख | २६७ | °चेतियं | ख | ८ | निरावेकलो |
| २०८ | °जुयमतीओ | जे | २४६ | °उं सत्तो | जे | २६८ | दिसाओ | क,ख | ९ | दिवस व्व |
| २१० | भोत्तूण | सु,क,ख | २४७ | रुद्धो | क,ख | २६८ | °मत्तणिण्णहिं | जे | | तियस व्व |
| २११ | सोऊणं | क | २४८ | धित्तूण सयण | „ | २६९ | वि य तुं | „ | १० | °मिअ अइ सा, |
| २११ | परंतुद्धो | क,ख | २५० | इण्डं | जे | २७१ | विणिग्गतो | क,ख | १३ | °न्ता कण्णभाणुमाईया जे |
| २१३ | °स ! पस्सइ कं | ख | २५१ | °ओ स मं | „ | २७४ | तिमिरं | जे | | °न्ता कण्णभाणुमाईया क,ख |
| २१६ | °समनालं | क | २५२ | एवं जं | क | २७४ | °णमासीया | „ | १३ | रिखुच्छिइवाती |
| २१६ | °पियनक्खं | जे | २५२ | नराहिवो | „ | २७६ | °णमुहाहिं | „ | १६ | सामिय |
| २१७ | °विमाणाओ | „ | २५३ | सुरगगीवं | क,ख | २७६ | अहरेणं | „ | १६ | रणकंडुं |
| २१८ | एण्हिं मं | क | २५३ | अच्छसु | „ | २७६ | संसारिओ | ख | १७ | °दो तए मिहं |
| २१८ | एहेहिं ममं सं | जे | २५३ | रिखुभडाणं | जे,क,ख | २७७ | तीए वि | क,ख | १७ | विगयसोही |
| २२० | धरणिपट्टे | „ | २५४ | भोगे | जे | २७७ | मज्झ | „ | १८ | °यस्स सुओ, |
| २२० | परिहच्छं | ख | २५४ | परभगुणे | जे,क,ख | २७८ | य भणेया सा, | सु,क,ख | १८ | विहारेउं |
| २२१ | निसणं | जे | २५४ | न यणइ कां | जे | २७९ | धम्मेल्लयं | जे | १९ | भयनिव्वेयं |
| २२२ | पासेव | ख | २५५ | राम्भणो | „ | २७९ | वयणमं | „ | १९ | सासयसभाओ |
| २२२ | खलवल्लयमों | जे,क,ख | २५५ | पत्तो | जे,ख | २८० | दसाणणे | क | २० | तस्स अणुइहा |
| २२२ | चक्रास्व | क,ख | २५५ | °भडवडगरेण | जे | २८३ | °मोत्तिअेऊण । | ख | २२ | रिखुण्णेणं |
| २२३ | इसमुद्धो | „ | २५७ | पिच्छन्तो | क | २८३ | °परिधुम्मियधं | जे | २३ | परिभमत्ति |
| २२३ | खन्धं | „ | २५७ | ऊमिसहं | जे,क,ख | २८४ | सामत्था | क,ख | २३ | °सयरम्मेल्लु देसेसु |
| २२४ | परमपीतीप | जे | २५७ | आवत्तरिद्धमां | ख | २८६ | पणयसंपया जायमइ- | „ | २४ | बालिसभं |
| २२६ | वसिओ य त्थ | „ | २५८ | °संफुडं | „ | २८६ | °भूया, पणयं | जे | २६ | एष (२) दहं |
| २२५ | इसमुद्धो | क,ख | २५९ | °पेरन्तवच्चियं | क | २८६ | °महक्कया, | क,ख | २९ | पव्वगनादो |
| २२७ | °जजरियतणूं | जे | २५९ | °कूलयळे | क,ख | २८६ | °किंती सुईसु विं | जे | २९ | पमयनाहो |
| २२७ | सयं समं | ख | २६० | °कलयलं | „ | २८६ | °सु य वित्थया ॥ | „ | ३० | मउडमण्डलां |
| | सभं समं | जे | २६० | °विद्धुमपसरं | जे | | (इति अपि च) | जे | ३५ | परिभणइ |
| २२८ | °लपुराओ | ख | २६१ | पसरंतविविहमों | „ | | इति पं | जे,क,ख | ४० | पडिसदुओ |
| २२९ | कुलकयपं | क,ख | २६१ | °दिण्णं व्व | क,ख | | उद्देसओ सं | „ | ४१ | °लं इमे चुण्णं |
| २३१ | बहुअण्णीं | „ | २६१ | °इं । पट्टंजलां | ख | | सम्मत्तो | क | ४४ | °यणबरोवरि |
| २३१ | °वीयंकतरे | जे | २६२ | | | | | | | |

| | | | | | | | | | | | |
|-----|-------------------------------|------|-----|-------------------------|--------|----|--------------------|------|-----------|---------------|--------|
| ४४ | हृत्था निग्गणुज्जय- मईया । | ज | १०४ | तिपरिवारं | ज,क,ख | ३३ | परमली° | जे | ८८ | सुहावगाढा | जे |
| ५९ | °सरभ-केसरि° | ,, | १०४ | पुव्वन्तो | क | ३४ | नईय मा° | क,ख | ८८ | कमलोयर° | ख |
| ६१ | सिलापट्टे | ,, | १०४ | मङ्गलसतेसु | जे | ३५ | नदीए° मा° | जे | ८८ | यरभत्तिजुत्ता | क,ख |
| ६४ | °राहङ्गणियं | ख | १०५ | मङ्गलसएहिं | क,ख | ३५ | °उयहिम° | जे | | इत्ति प° | जे,ख |
| ६५ | कत्तो ते पवज्जा, | जे | १०५ | °मयलमणत्तं, | क | ३७ | धणजुयलं | क,ख | | °पत्थाणे स° | जे,क,ख |
| ६६ | पेतामि | क,ख | १०६ | °विचिट्टियं | क,ख | ४० | धणे | जे | | सम्मत्तो | क |
| ६८ | अह खुविऊण | क | १०६ | दिग्वाणि स° | ,, | ४१ | परिगेठिह° | ,, | उद्देश-११ | | |
| | अक्खुविऊण | ख | १०६ | सुणंति | जे | ४३ | °निउंडण° | ,, | | | |
| ६९ | °बन्धणोमूलं | क | | इइ प° | जे,क,ख | ४५ | नदीपुलीणे | ,, | ३ | जिणहराई | क,ख |
| ७० | °भीओइय° | ख | | °नेकडाणम° | जे | ४६ | च्चिय | ,, | ४ | पडिमाकुद्धा | जे |
| ७० | °खुसिय° | क | | उद्देशओ स° | जे,क,ख | ४७ | °वाल्लयाए पुल्लिणे | ख | ४ | पुव्वदिसं | क,ख |
| ७१ | अट्ठा अउट्ठाणे | ,, | | सम्मत्तो | क,ख | ४९ | गवेसह | जे | ५ | पुव्वदिसा | जे |
| ७२ | सहियाओ | क,ख | | | | ४९ | पवेसिया | जे | ५ | अह एत्तो | जे,क,ख |
| ७३ | °खेडयकवयतोमरा | ,, | | | | ५० | नदीए° | ,, | ५ | नरवसधो | जे |
| | हृत्था | जे | | उद्देश-१० | | ५० | सुरोय म° | ख | | नरनाहो | क,ख |
| ७३ | °कप्पतोमरविहृत्था मु | ,, | २ | सिरिमतीए | जे | ५१ | नदिसळिलं | जे | शीर्षकः | यज्ञोत्पत्तिः | |
| ७३ | कप्पतोमरा हृत्था | क,ख | २ | °हिवस्सडुहिया तारा | ,, | ५१ | °ण तओ सु° | जे,ख | ६ | कहेइ | जे |
| ७८ | रवो कओ | ,, | ३ | तुट्ठो | क,ख | ५१ | °इ बहू | ख | ७ | समहुराए° | ,, |
| ८० | °हे थ वित्थरिओ | ,, | ४ | अमिलसइ | जे | ५१ | मङ्गलसतेहिं | जे | ७ | इक्खायकु° | ,, |
| ८० | पहिया य | ,, | ४ | चिन्तेन्तो | जे | ५३ | उत्तिणो | जे,ख | ८ | °उज्जुयमतीओ | ,, |
| ८७ | दइवयणो | जे | ४ | चिन्तन्तो | क,ख | ५४ | चक्रार्सा° | ,, | १० | वणुइसं | ,, |
| ८८ | नियसयाहुं | क,ख | ६ | कस्सेस पवरकज्जा | जे,क,ख | ५६ | °पाइक्कं | जे | १० | अवज्जाओ | ,, |
| ८९ | जिणइइं | ,, | ६ | परिकहेइ | जे | ५७ | तुरियं | ,, | १२ | नरयगामिओ | ,, |
| ८९ | निवेमिउं | ,, | ७ | चिराउओ | क,ख | ६१ | °सरीरे | जे,ख | १३ | सत्थिमतीए | ,, |
| ९१ | पउमपपभं | जे | १७ | रयणगघट्ठाणेणं | ,, | ६२ | एत्तं द° | ख | १४ | तेणं पि ती° | क,ख |
| ९१ | सत्तिनिभं | ,, | १८ | °दाणविभवेणं | जे | ६२ | एत्तं द° | जे | १५ | सत्थिमती | जे |
| | ससिपहं | क,ख | २० | °म्भो, गेह अदिबो | ,, | ७० | °ले, धणभंगुच्छं | ,, | १६ | °ओ मे दइओ | क,ख |
| ९२ | दत्तं जे° | ,, | २० | हयमीको अयमीको सुज्जो | जे | ७० | °कामते | ख | १८ | पयट्टे | ,, |
| ९२ | पणमितो | जे | | उक्को उ किक्किन्धी ॥ जे | जे | ७१ | तावं चिय | जे | १८ | नदीतडत्थं | जे |
| ९५ | °कायजोगेसु | क,ख | २१ | °लो गं'वाल्लसु° | क,ख | ७३ | °उत्तमङ्गो | ख | २० | निधुणिऊणं | ,, |
| ९८ | सुसुणिस | जे,ख | २१ | अन्ने व थ वहू | जे | ७३ | केणं व | जे | २४ | °धम्मधरा | ,, |
| ९९ | उट्ठो य तुह द° | क,ख | २१ | °वा महासूरा | ,, | ७४ | मुणिवसधो | ,, | २५ | °त्तो यजेसु | ,, |
| ९९ | पणामेमि | ,, | २२ | अक्खोहणी° | क,ख | ७५ | °यमती भो | ,, | २५ | °जा यविज्जा | ,, |
| १०० | °ण भणिओ ध° | ,, | २३ | °वाहणादीया | जे | ७७ | हिया | जे,ख | ३२ | °कूरपडिमुक्का | ख |
| | °ण मुणिओ ध° | जे | २७ | °ओ तस्त | ,, | ८१ | °इ विहेउं । | जे | ३४ | एक्कयरं | जे |
| १०० | फणिमणि° | ,, | २८ | °परियरावासो | जे,क,ख | ८१ | सरए य घ° | ख | ४१ | °म्मागम्मं | जे,ख |
| १०० | °मणिमयूह° | ,, | २९ | °यं विमळा ॥ | जे | ८४ | अतीयकाले | जे | ४२ | पित्तिमेइ° | जे |
| १०१ | पसत्थं | ,, | ३० | सुलीणपवहा | ,, | ८५ | जइहं पढमयरं | ख | ४२ | पत्तेसु | ,, |
| १०२ | अदिउज्जिउं | ,, | ३० | वरसरिविसुक्कं | क,ख | | चिय, परि° | ख | ४२ | सएस नामे य जे | जे |
| | | | ३३ | पवरनदी | जे | ८८ | भुवणेसु | ,, | ४५ | °धम्मुज्जुधं | ,, |

| | | | | | | | |
|-----|--|-----|--|----|------------------------------|-----|--------------------------|
| ४९ | दि ने कोउय होइ ॥ जे, क, ख | ११३ | अइगहया क, ख | ३२ | जोइमतीप जे | ८३ | फुरफुरेते जे, क, ख |
| ४९ | गरुयं क, ख | ११४ | रयमलपण्डुं जे | ३२ | ंए रिसी जा० क, ख | ८४ | धणुखगसत्तिसं जे |
| ५३ | किह जीवा जे | ११७ | मयूरं जे, क, ख | ४१ | ओ तुज्ज वेव! पा० जे, क, ख | ९२ | सुय-सारणो जे |
| ५७ | सुणिउण जे | ११७ | एयट्ट क, ख | ४१ | पिच्छह जे | ९५ | जलहरमादी जे |
| ५८ | सुइमतीया जे | ११७ | सभावेणं जे | ४१ | एयं जे, क, ख | ९५ | निसिधरेहिं जे, क, ख |
| ५८ | अरण्णम्हि जे | ११८ | पहमग्गा जे | ४३ | रिवुभडं जे, क, ख | ९६ | रणपचण्डो जे |
| ६३ | या जायतिच्चसं क, ख | १२० | घणरन्दो क, ख | ४५ | एतो पे क, ख | ९८ | केसरिउण्डो जे |
| ६३ | यमतीया जे | १२१ | हुंति जे | ४८ | तुङ्गगारं जे | ९८ | सिरिमाल-पं जे |
| ६९ | इ य मरुयनरेदं क, ख | | इति पं जे, ख | ५१ | धगधनोन्तं जे, ख | १०१ | वीसत्थो क, ख, मु |
| ७० | पसवो य वं जे | | मरुज्जणं जे | ५२ | विचिन्तोति क, ख | १०२ | सिरिमालत्रं जे |
| ७१ | परलोमथ्ये क, ख | | विद्धंसो जं जे, क, ख | ५५ | नामेण य चिं जे, क, ख | १०२ | उट्टन्तं क, ख |
| ७१ | परलोमट्टे जे | | पक्कारसमो जे, क, ख | ५६ | रागसंबद्धा जे | १०४ | आसारिउण रहमुहे क, ख |
| ७२ | धत्थसंपभो क, ख | | उहेसओ सं जे, ख | ५६ | ठविउण जे, क, ख | १०४ | उण रणमुहे जे |
| ७३ | देव्वा जे | | सम्मतो क | ५७ | पत्थे मे क, ख, मु | १०४ | गयापहारेणं क |
| ७३ | तपिययव्वा जे, क, ख | | उद्देश-१२ | ५७ | परलोमं जे | १०५ | अभिमुहदुओ क, ख |
| ७३ | सोमादीया जे | ३ | पवं मणो जे | ५८ | भायणं जे, क, ख | ११० | रणधीरा जे |
| ७४ | कतो जे | ४ | (एषा गाथा पंचमगाथा- पदचात्) जे, क, ख | ६० | कहेज्ज जे | ११२ | खणन्त खं जे |
| ७८ | बम्मादीया जे | ६ | पह क, ख | ६० | णलद्धपसरा जे | ११६ | सुमेति जे |
| ७९ | परमनेव्वाणं जे | ६ | दिणमं देवेण जे | ६१ | एवमेवं जे | ११८ | सिरिदिण्णरुहिरचं क, ख |
| ८० | वेदनिष्फणणं जे | ६ | तत्थं महुं जे | ६१ | तुरियं । क, ख | १२३ | लंघेता जे |
| ८१ | वाहा इव जे | ८ | वसुमतीप जे | ६२ | ण उवारंभा जे | १२५ | जमडण्डं जे |
| ८१ | नरयं जे, क, ख | ८ | परिपुण्णो जे, क, ख | ६२ | उग उवारंभा जे, क, ख | १२५ | इदंतमुमजा, क, ख |
| ८१ | अज्जति क, ख | १२ | मेच्छाहिं ख | ६४ | हणह जे | १३३ | उप्पाडिमपं जे |
| ८२ | सव्वे च्चिय जे | १४ | नरवरिदस्स जे, क, ख | ६५ | आसालिणी नामं जे | १३४ | पुरिमगत्तेसु जे, क, ख |
| ८८ | नरेदं क, ख | १४ | वं संतूण पुं जे | ७० | कुणरपसूया, जे | १३४ | गज्जंति क, ख |
| ८८ | भउदुयं सरीं जे | १६ | तुहं जइ जे | ७१ | पत्तेण जे, क, ख | १३४ | गुलुगुलेन्ति जे, क, ख |
| ८९ | ण तेण सं जे | २० | उण पवमेयं जे | ७३ | विसयम्हि जे | १३६ | अ तिलद्धिउण क, ख |
| ८९ | ण तहिं सं ख | २१ | हमादीयं जे | ७५ | पत्तेण जे, ख | १४१ | परिजणो जे |
| ९० | पसवा जे, क, ख | २२ | तावागतो क, ख, | ७५ | णेण य, जाहे सं क, ख | १४१ | अभिणन्द्इ जे |
| ९० | नास्ति गाथापरादं जे | २३ | मद्विलाभिलासं जे | ७६ | बलिण जे | १४१ | लसतेसु जे |
| ९१ | कडिणघायपं क, ख | २५ | ममं, जे | ७७ | विवादो जे | १४२ | देवसहं चेव दें क, ख |
| ९१ | उपपइउण य सं क, ख | २६ | सन्निसं जे | ७७ | महायासयरो जे | १४३ | मणिमयूहं जे |
| ९३ | उपपत्ति जे | २७ | मोहियमती जे | ७७ | तं एव जे | १४४ | लेण तवेण जेण जे |
| ९४ | भिरिइसहियाण क, ख | २८ | कराओ जे, क, ख | ७९ | नभं जे | १४४ | इह पं जे, क, ख |
| ९४ | इं विमुक्कसंमाण नरं (संशोधितम्) जे | २९ | उ हीयं, जे | ७९ | फोडंतो जे, ख | | उद्देश-१३ |
| १०६ | यलसुगेज्जमं जे, क, ख | ३० | गेण्हिउण जे | ८० | भासियं वयणं ? क, ख | ४ | लद्धाहिं कं जे |
| १०६ | चारुचलणो जे | ३१ | माहवदें जे, क | ८१ | नेव्वाणं जे | ५ | महिं जे, क, ख |
| ११२ | चवलवलायां क | ३१ | सो करकुमारो क, ख | ८२ | एव भं जे | ५ | दम्बेहिं जे |

| | | | | | | | | | | |
|--------------------------|--------|----|--------------------|--------|----|-----------------------|--------|----|--------------------|---------|
| ६-८ अन्नपभिर्हं | क,ख | ५२ | °विमलो मल° | जे,क,ख | ३४ | मणुयगतीप | जे | ६९ | सो वि य | जे |
| १० सहसरो | जे | | इह पउम° | क,ख | ३५ | लभन्ति | जे,क,ख | ६९ | पञ्चवो | क |
| १३ °ऊण य, इ° | क,ख,मु | | इइ पउम° | जे | ३७ | अपार्वता | जे | ७० | मेहुन्नपरि° | जे |
| १३ स, अच्छइ | ख | | सम्मत्तो | क | ३८ | जं हेति | जे,ख | ७० | °हस्स य नि° | जे,क,ख |
| १३ व चिन्तेन्तो | जे | | | | | जं दिति | क | ७० | निविस्ती | क,ख |
| १५ ते गया तुरङ्गा य | ,, | | उद्देश-२४ | | ४२ | मिच्छद्दिट्ठेण | क,ख | ७१ | उच्चारणी | जे |
| १६ जेण य षडि° | जे,क,ख | १ | वेइयघराइं | जे | ४२ | मिच्छाविट्ठीण | जे | ७२ | वद्गुत्ती | जे,क,ख |
| १६ परिबोहिओ | ,, | २ | सइं सुणिऊण | ,, | ४३ | तं पिय | क,ख | ७३ | एते | जे |
| १७ पव्वज्जं जि° | जे | ६ | मुणिवरवसभं | ,, | ४५ | कूएकसरजलेणं | ,, | ७४ | कायपरपीडा | क,ख |
| १८ देसकाले | ,, | ८ | खेपरवसभेसु | जे,क,ख | ४६ | अपसरिसेसु | जे | ७४ | रसपरिच्चागो | ,, |
| १८ जिणायतणं | ,, | ९ | सभावमहुरगिरं | जे | ४६ | च्चिय लोमो | ,, | ७५ | उवसग्गो | जे,क,ख |
| १९ °उत्तिमङ्गो | क,ख | ९ | मुणिवसभो | क,ख | ४६ | कुलिङ्गीसु | ,, | ७५ | अच्चिभतरओ तवो | |
| २३ सिद्धिपुरनामे | जे,क,ख | १२ | नरयलोमं | जे | ४६ | °पलोइजीहेहि | जे,क,ख | | एसो | क,ख |
| २३ °पीलियलरीरा | जे | १३ | तेण वि निरयं | ,, | ४७ | सागं काऊण | क,ख | ७६ | उवइट्ठो | जे |
| २५ °परिहाणी | ,, | १४ | °भइणि पत्तिसुयं च | ख | | सकं काऊण | जे | ७६ | °निजरट्ठे | ,, |
| २६ खीरधारि नि | क,ख | १५ | अलीया वया य चोरा | क,ख | ४८ | उभयो वि | ,, | ७७ | बारससु ओवेक्खासु | ,, |
| २७ °कुहुमियय° | जे,क,ख | १५ | °विया य चोरा | जे | ४९ | तित्थाइसेवणं | ,, | ७७ | बारमसु उवेक्खासु य | क,ख |
| २९ मणिरपण तभो | ,, | १६ | पसुं | जे,क,ख | ५० | संसारकन्तारे | ,, | ७८ | दुक्खं च | जे,क,ख |
| ३० °ण जणयपरियरिओ । जे | | १६ | होति | जे | ५१ | °कुलिपसु | क,ख | ८१ | धरेन्ति | ,, |
| ३० गेवेज्जं | जे,क,ख | १८ | आडिपवणं | ,, | ५१ | दारिज्जति | जे,क,ख | ८१ | च्चित्तेता परमहियं | जे |
| ३४ त्रिण्ण स° | क,ख | १८ | गिद्धा गुरुला | क,ख | ५१ | जंतुसंघाया | जे | ८२ | °रिद्धिविभवा | ,, |
| ३७ °मालिगरनामे | ,, | १९ | महाहिगरणेण । | जे | ५२ | सतसंघायं | क,ख | ८४ | चालिन्ति | ,, |
| ३८ °सागरावगाढो | ,, | १९ | आयेसदाया | ,, | ५२ | कुमारी° | जे | | खालेन्ति | क,ख |
| ३९ तत्तो पाभई तुमं, | जे | २० | ईसत्थअन्नज्जाया | जे,क,ख | ५३ | दोवगइगमणं | जे,क,ख | ८४ | पसमेन्ति | ,, |
| ३९ °परिगयसरीरो | ,, | २० | नरयं | ,, | ५३ | वज्जेन्ति | जे | ८५ | °सप्पिसरिसो | जे |
| ४३ °सु अंगमंगेसु | ,, | २१ | निरओवगा | जे | ५३ | वज्जेति | क,ख | ८५ | य खीरबुद्धीया । | ,, |
| (संशोधितम्) | ,, | २२ | पवमादी | ,, | ५४ | इमाइं दाणाइं | जे,क,ख | ८६ | पावेन्ति | ,, |
| ४३ वायसुजेहि | क,ख | २२ | नरयोवगा | ,, | ५४ | एते | जे,ख | ८७ | सोहम्मदिट्ठु | ,, |
| ४५ निस्सरिओ य समणेणं क | | २५ | °तुण्डमादीसु | ,, | ५४ | वीयरामेणं | जे,क,ख | ८८ | अह उत्तिम° | ,, |
| ४६ पेच्छिऊण अवइण्णो । जे | | २६ | जे य पुण नियडि कु° | ,, | ५५ | नाणेण दि° | ,, | ८९ | बहुभित्तिच्चित्त° | ,, |
| ४७ निइइ | जे | २६ | करिसणादीसु | ,, | ५६ | निकवहयंगोवङ्गो | ,, | ८९ | बहुभत्तिच्चित्त° | ख |
| ४७ दढविरत्तं | ,, | २७ | एवमादी | ,, | ५६ | अणुभवइ | जे | ८९ | सूरं विव | क |
| ४८ °ण मणे | क,ख | २७ | दुक्खं चिय | ,, | ५९ | न य होइ तस्स परिवड्ढी | जे,क,ख | ९० | वज्जेवनील° | जे |
| ४८ नवर | जे | २८ | निययकालमि | क,ख | ६१ | निच्चं कय° | ,, | ९० | °विचित्तमिति° | ,, |
| ४९ निययच्चरिउं | क | २९ | गो-महिस-उट्ट° | जे | ६२ | नेयारा | ,, | ९१ | गयवसभसरइ° | ,, |
| ५० नियं ठाणं | जे,क,ख | २९ | एवमादीया बहुसो | ,, | ६२ | तारंति | जे | ९१ | °पवणचला° | जे,क,मु |
| ५० ठवेइ | ,, | ३१ | पंगू | जे,क,ख | ६३ | एतेसु | ,, | ९२ | °सुरभिध्व° | क,ख |
| ५१ जिणवरदिक्खं | जे | ३३ | अडविमज्झं | ,, | ६५ | पडिमा य ति° | ,, | ९४ | अणमिस° | जे |
| ५२ अणण्णजोग° | ,, | ३३ | वीमणयं | जे | ६६ | पट्टबन्धं, | क,ख | ९५ | °चउरंषसरीरा | ,, |
| ५२ सञ्चनार्त्तं | ,, | ३३ | करिसणादी | ,, | ६६ | धूपं | क | ९९ | गेविजादीसु | ,, |

| | | | | | | | | | | | |
|-----|---------------|--------|-----|-----------------|--------|----|-------------------|--------|-----|------------------------|--------|
| १०० | °लयं पि पस्ता | जे | १४१ | जाए न | जे | २२ | हु हीड | जे | ६३ | गहसभावेणं | जे |
| १०१ | भागं पि | जे,क,ख | १४२ | वित्रिज्जइ | ,, | २० | सं जोगो | जे,ख,ख | ६४ | वरतणुं | जे,क,ख |
| १०२ | पावेंति | क,ख | १४३ | विञ्जेन्ति | क,ख | २४ | °यं व गमिही | क,ख | ६६ | जिञ्चोने | जे |
| १०४ | सीदो व्व स° | जे | १४४ | जेमिति | जे | २६ | एथ मन्ती | जे | ६६ | °रियमइपयरा | ,, |
| १०५ | °भवे जेण होइ | ,, | १४४ | अणुइवति | क,मु | २७ | भिलमवेइ | जे | ६६ | °मदिला व | ,, |
| १०६ | °भिलानिउ अ° | ख | | अणुहुति | जे | २९ | उावयणाई | ख | ६७ | मिस्सकैमोए | ,, |
| १०९ | दिमुषइ | जे | १४६ | अणुहुवति | ख | २९ | गुमुमुमुमैत° | जे,क,ख | ७१ | रोम परिमयत्त° | ,, |
| ११० | सागारो | ,, | १४६ | °कुट्टकेमाओ | जे | ३० | अइ दिवहा | जे | ७१ | मात्थ | ख |
| १११ | सावययम्मो | ,, | १४६ | इह मडिलाओ | ,, | ३१ | °ववहाणकरा | जे,क,ख | ७२ | अणुमज्जियं | ,, |
| ११३ | °वयं तु प° | क,ख | १४७ | वि य किंवि | जे,क,ख | ३२ | उवविइ | जे | ७२ | न य रुद्रा अ° | जे |
| ११४ | पत्ते | जे | १५० | लोभत्थी | जे | ३४ | °विशिमुस | ,, | ७२ | अपणो स° | क,ख |
| ११५ | वयाणि | जे,क,ख | १५० | गेणइ | ,, | ३६ | °री वजुरेव | ,, | ७३ | उिक्कापि | जे |
| ११६ | °चिरत्ती | जे | १५१ | गेणइ | ,, | ३६ | करेणि क° | क,ख | ७३ | मात्तुभभां | जे,क,ख |
| ११६ | सुराहिवज्जमं | ,, | १५२ | इक्काचरियं | क,ख | ३६ | मणोरहा सु° | जे | ७४ | सत्तुक्कियं जुाईणं ताण | ,, |
| ११७ | लोदम्मदीसु | ,, | १५४ | °भइए मए | क,ख,मु | ३९ | सक्कमैभियं तु | क,ख | ७५ | भार° | जे |
| ११८ | हुति | ,, | १५७ | मुणिसणयं | जे,क,ख | ३९ | गउम्मैय प° | क,ख | ७५ | वाइति | जे,क,ख |
| ११८ | पावेंति | जे,क,ख | १५८ | विउले च | क,ख | ४० | अणुमजेजं | जे | ७९ | मदिले च परमत्ते | क° क,ख |
| १२१ | °यादिपसुं | जे | | इति पउमं | ख | ४० | नियामेयं | ,, | ७९ | °ण उइ कओं हो° | जे |
| १२२ | अणुत्तिमं | क,ख | | °धम्मकहाणा | क,ख | ४० | गन्तूणं काय° | क,ख | ८१ | जेण यन्नामि | क,ख |
| १२२ | °मं जिणो भ° | जे | | चोइसमा | क,ख | ४३ | कंताए दांरि° | जे | ८३ | °ना य कुमु° | जे |
| १२३ | अणुभवन्ति | ,, | | उइसो व° | जे,क,ख | ४४ | °वेइणाररि° | ,, | ८८ | °जे, गुरुआरेभां | ,, |
| १२४ | थेजत्थेवो | क,ख | | सम्मत्ता | क | ४६ | पढमे व ह° | जे,क,ख | ८९ | °पिहि हलुयत्तं | क,ख |
| १२४ | सरियाओ | ख | २ | उद्देश-१५ | | ४६ | होइ चउ° | जे,क,ख | ९३ | परदावमदिइइ | जे |
| १२५ | एक दिवइ सु° | जे | २ | °णं वालिज्जइ | क,ख | ४७ | सत्तमियम्मि | जे | ९४ | पवणंजये नि° | ,, |
| १२५ | °फठं व सु° | ,, | ४ | मन्दां | जे | ४७ | °म्मि य पल° | जे,क,ख | ९६ | य वारेज्जे | जे |
| १२९ | लुवइविपिहमं | ,, | ७ | गणाद्विवो | | ४८ | पुण चेव मरइ | जे | ९६ | °दाणमणविभववा | जे,क,ख |
| १३१ | सुहुत्तवड्ढो | ,, | ११ | °ण-कित्तिपडि° | क,ख, | ४९ | °विपथायणठो | जे | १०० | डुक्कावहं ता । | क,ख |
| १३१ | उववासा | ,, | ११ | नदिमादी | जे | ५० | वि चित्ति न लभइ | जे | १०० | उवणमइ इहं लो° | क |
| १३१ | °मादीया । | ,, | १२ | रुत्ताण रु° | ,, | ५० | °वणे नेव धिइं लहइ | ,, | १०० | °संवेगसद्धा | क |
| १३३ | °भावियमतीओ | ,, | १२ | हाऊण व | क,ख | | रमं | ,, | | इति प° | ख |
| १३४ | अथत्थेते | जे,क,ख | १३ | °जोव्वणचेव° | जे | ५२ | बहुं ने | ख | | अज्जणसु° | जे |
| १३४ | °जगेन्तसोमे | जे | १४ | साहसु फुडं | जे,क,ख | | बहु तं | क | | उइसो सम्मत्तो | जे,क,ख |
| | °जगेन्तसोहो | क,ख | १६ | दिज्जउ | क,ख | ५२ | नामं | जे,क,ख | | | |
| १३६ | दिठयरं | जे | १८ | ता कुणइ | जे | ५३ | अणं व कस्स | जे | | | |
| १३७ | रयणीए | ,, | १८ | इन्द्रइं हुमारो | ,, | ५५ | जो इक्कं | ख | | | |
| १३७ | वरविहूणा | क,ख | १९ | जाओ मिरि° | ख | ५५ | दियहाणि तिञ्चि | जे | १ | पवणंजयेण | जे |
| १३८ | एथ वि | क,ख | १९ | पिउमाउदुक्कव° | जे | ५७ | कायरो होहि | क,ख | १ | डुक्किययिपिणा अ° | जे,क,ख |
| १३८ | वउजेन्ति | क,ख | १९ | °दुक्कवज्जणयं | क,ख | ५८ | दंणं पि | क,ख | २ | विरहानलत्त° | जे |
| १३९ | जा ण रत्ति | जे | २० | दक्खिणाए सेढीए | क,ख | ५८ | पि ताव ए° | जे | २ | °रं विचिन्तिन्ती | क |
| १४१ | पगाम | ,, | २१ | विज्जुपपभो | जे,क,ख | ६० | वट्टंतघणं | ,, | | °रं विचिन्तेन्ती | ख |
| | य काम | क,ख | २२ | °सरिसजोव्वणाणं | | ६२ | रत्तासोगस° | जे,क,ख | | °रं व चित्तेती | जे |
| | | | | जे,क,ख,मु | | | | | | | |

| | | | | | | | | | | | |
|----|-------------------------|---------|----|------------------|----------|----|-------------------|-----------|-----|----------------------|----------|
| ३ | °जलोसित° | जे | ६४ | पगनीवए | क,ख | ३ | पावा | क | ४५ | कम्मस्स अवदाण | जे |
| ३ | हरिणी वि वा° | ,, | ६४ | अन्भिन्तरो | जे | ५ | तओ केउमई | जे | ४६ | वा इ म° | ,, |
| | हरिणी य वा° | क,ख | ६५ | आगओ इहइं | क,ख | ७ | तत्थ केउमई | ,, | ४६ | वा इमो अपुणो | क,ख |
| ४ | तणुयासव्वणी | जे | ६६ | °उज्ज पिययमो इह | | ७ | आणवेइ कम्मकरं | ,, | ४७ | अमियमई | ,, |
| ८ | °ला किर | क,ख | | समागओ ख | | ७ | नेहि इ° | ख | | अमयमती | जे |
| ८ | °ला पहु हुंति म° | जे | | °उज्ज पियय मो इह | | ७ | पियघरं | क,ख | ५० | तओ गुं | ,, |
| ९ | महेन्द्रतणया | क,ख | | समागओ क | | ७ | पीइहरं | जे | ५४ | महिइदीओ | |
| ११ | °स्स पवेसिओ | क,ख | ६७ | सिभिणसरिसं | जे, क,ख | १० | पडिदेविऊण | जे, क,ख | ६१ | मङ्गलसतेहिं | जे, क,ख |
| १६ | दिव्वत्थेहिं पि विणा मए | | ६८ | सठवल्लोभोगं | जे, क,ख | ११ | भणति थ | क,ख | ६१ | अव्वेइ य पययमणा, शुं | जे |
| | अवस्सं जिणेयव्वो। | जे | ७४ | सामिणी अ° | जे | ११ | पुहरतले | जे | ६४ | सुणेहि | , |
| १९ | बत्तीसई सहस्साई | ,, | ७५ | तुहं नत्थि | क,ख | ११ | पाडिओ | क,ख | ६७ | °सहस्साई पावतो | ,, |
| २० | °सत्थभिज्जन्त | ,, | ७५ | वहेजासि | जे | १३ | °न्तेणावि निं | क,ख | ६७ | °स्साइं पविती | क,ख |
| २१ | पवगयतुरं | ,, | ७७ | सिणेहं | क,ख | १४ | विलयियम्मि रं | जे | ६९ | गिहधम्मं | जे, क,ख |
| २१ | °हा अवरे जुं | ,, | | सणेहं | जे | १५ | °पल्लवोविहाणे | क,ख | ६९ | कालगया तत्थ सं | |
| २३ | पेक्खिऊण | ,, | ७९ | रइपत्था(ह)रणगुं | ,, | १६ | सहियाए सम कुं | जे | | | जे, क,ख |
| २४ | घरुणसुतेहिं | ,, | ८० | दोण्ह वि | क,ख | १७ | परिपुच्छिं | क,ख | ७१ | भवनागरे | जे |
| २५ | गहियं मं | ,, | ८१ | °सुहायासलद्धं | जे | १७ | वसन्तसेणाए | जे | ७३ | तुज्ज | क,ख |
| ३० | ताय वीं | ,, | ८२ | सवुरिस | ,, | १७ | °जयमादीयं | ,, | ७३ | निस्संदेहो | जे |
| ३२ | निययलीलाए | ,, | ८२ | °रे च गच्छामो | क,ख | १८ | तं चिय वयणनिहस्सं | ,, | ७४ | उत्पयइ | क,ख |
| ३३ | मत्तवणगए | ,, | ८३ | अवग्गहिऊण | जे, क,ख | १९ | दारवालिणं | जे, क,ख | ७५ | भोयणादीयं | जे |
| ३५ | आभरणभू° | ,, | ८४ | °ण पुणा निं | जे | १९ | समववाय | ,, | ७८ | °विहलवुण्णवं | जे, क,ख |
| ३८ | महेन्द्रतणया | क,ख | ८५ | करेउ | ,, | २१ | मस्सच्छाहो | क | ८१ | सिहेण खं | ख |
| ३८ | नरेन्दमं | क,ख | ८५ | °महुरालावा | ,, | | मुहुच्छाहो | ख | ८२ | सरभरुवं | जे |
| ४२ | परिजणो | जे | ८६ | तुमं पं | ,, | २१ | होइ सं | जे, सु, ख | ८२ | गुहाओ | ख |
| ४३ | °त्तं नत्थि मज्झ सं | ,, | ८७ | गुरुयण गं | ,, | २२ | केउमई | जे, सु | ८४ | गायसु सामिथ | जे, क,ख |
| ४३ | सरेजासि | ,, | ८८ | गिण्हसु | ख | २२ | कित्तिमई | क,ख | ८६ | °गयभयाओ | जे |
| ४४ | अवाट्टओ | जे, क,ख | ८९ | °मालं च गयणं | क,ख | २२ | लोयकम्मं | जे | ८७ | अच्चन्ति | क |
| ४५ | °सणादीओ | जे | ८९ | निययनिवेसन्नभरणं | जे | २३ | पुव्वं पि | क,ख | ८८ | °णुत्तुयमं | जे, क,ख |
| ४७ | °गुमेन्तभमरं | जे, क,ख | ९० | ह सदा | ,, | २५ | °वालिणं | जे, क, ख | ८८ | °वो चिय | जे |
| ४७ | सहस्सपलेहिं | क,ख | | इति प | जे, क, ख | २८ | °वि पवण्णा | जे | ८८ | पयत्तेहिं | क,ख |
| ४८ | दीह रंजे | जे | | पवणजणां | जे | | °वि पवञ्जा | क,ख | ९१ | रुवइ | जे |
| ४९ | मउलिति | ख | | °सुन्दरिभिहाणो | जे, क, ख | २९ | °पायवेसु सं | जे | ९१ | °मि सुहं | क,ख |
| ५० | हंसादीया | जे | | नाम उ° | जे | २९ | महया अ° | ,, | ९२ | पिऊ ते | जे |
| ५३ | विहरेइ पं | क,ख | | सम्मत्तो | जे, क | ३१ | °हेउवेरिं | ,, | | पिओ ते | क,ख |
| ५५ | जं मए | जे | | | | ३३ | मायाए पि | ,, | ९३ | पसाइण | जे |
| ५५ | अलज्जण | ,, | | | | ३३ | निययाउ गेहाओ | क,ख | ९५ | एवं ताण | जे, क, ख |
| ५६ | सुदीणविमणा | क,ख | | | | ३८ | समावण्णे | क,ख | ९५ | सहज्जणाओ | जे, ख |
| ५७ | ता किं | क,ख | | | | ३८ | वच्चामि | क,ख | ९७ | सुवुरिस | जे, क, ख |
| ६० | °हिं सवुरिस | जे | | | | ३९ | मा विपत्ती | जे | १०२ | एवं चिय | जे |
| ६० | अकालहीणं तु | क,ख | | | | ४१ | मुणिवसभं | ,, | १०२ | पिओ कुं | क,ख |
| ६० | °मि ह अंजणं | क,ख | | | | ४४ | °वायरयदोसा | ,, | १०३ | अहतं, सुं | ,, |

उद्देश-१७

| | | |
|---|--------------------|----------|
| १ | गम्मस्सहुयपयासपया। | जे |
| २ | °भारकळा | ,, |
| २ | गती य | जे, क, ख |
| ३ | जायगम्भं पावा | ख |

| | | | | | | | | | |
|-----|----------------------------|--------|----|----------------------------|--------|-----------|---------|--------------------------|--------|
| १०० | विभावसु | जे,ख | १५ | संपन्नो | जे | उद्देश १२ | ४ | सुमती | जे |
| १०० | बहुलट्टमी | ,, | १८ | अपेच्छहंती | ख | १ | ७ | पुण्डरिमिणी | ,, |
| १०० | बहुलट्टमीए जे ^० | क,ख | १९ | न्ती भया | ख | १ | ८ | उसभादी | ,, |
| १०० | म्भा पुण | जे,क,ख | १९ | अरण्यमी | जे | ५ | १५ | ट्टो वरचेट्टा | क,ख |
| १०९ | ंसाहेन्ति | जे,क,ख | २० | वर्णं तं संपत्तो गं | जे,क,ख | ९ | १६ | सुनन्दी | जे |
| १०९ | रायविई | क | २१ | ता सुमं | क,ख | ९ | १७ | ंणा पुण | जे,क,ख |
| ११० | सुवुरिस | जे,क,ख | २२ | ंणाइसत्तयं | क | ९ | १७ | सुख य मी | क,ख |
| १११ | निमित्ते | जे,ख | २३ | एयं चियं | जे | १० | १७ | ंरो शीरो | जे,क,ख |
| १११ | पाविह्दि | जे | २४ | ंजयन्नित्तन्ते | ,, | ११ | १८ | ंरो अच्छाओ | ख |
| ११२ | पि व सं ^० | ख | २४ | गुरुयणम्मि सं ^० | ,, | १२ | १८ | ंरा सच्छाओ | जे |
| ११२ | संपूडळण | जे | २५ | ं गयगरसगा | ,, | १३ | १८ | वज्रदंतो | क,ख |
| ११२ | पडिमुजो । तो | , | २५ | कित्तिमहं | क,ख | १४ | १९ | विस्तारकखो | ख |
| ११४ | उच्छुंगनिट्टियतणु | ,, | २५ | एकाई कि | जे | १५ | १९ | बिनारकखो | जे |
| ११४ | समुच्छलिओ | ,, | २६ | तुरियं | ,, | १६ | २० | नन्दी वि य | ,, |
| ११४ | सितारहे | जे,क,ख | २७ | वस्तणूं | ,, | १६ | २० | अभियसंगो य | ख |
| ११५ | रोवन्ता | जे | २७ | अइए तदध वर ^० | ख | १६ | २० | य त्रिय अभियसंगो य | क |
| ११६ | हाहकारं | ,, | २७ | तो मज्झ | जे | १७ | २० | य अतीवसोगां य | जे |
| ११८ | जाइविमाणां ^० | ख | २७ | सुत्तेणं | ,, | १७ | २१ | दामरमुणी | जे |
| ११९ | जम्मुरस्सवो | जे,क,ख | २८ | कित्तिमहं | क,ख | १९ | २१ | पते | ,, |
| ११९ | देवलोगे | जे | २८ | जुवतीहि | जे | २३ | २२ | गेवेज्जं वे ^० | क,ख |
| १२१ | अया सं ^० | जे,क,ख | २९ | ंस्व संजाओ | ,, | २४ | २२ | ंया गेवेजा | जे,क,ख |
| १२१ | दणुजो ति | जे | ३० | न वेइ | ,, | २४ | २३ | महाभासं | क,ख |
| १२३ | ंउज्जवभावा | ,, | ३१ | संथाविळण | ,, | २५ | २५ | पत्तेसु | जे,क,ख |
| १२३ | विमलजिणधम्मो | क | ३१ | ंओ विव यं | क,ख | २५ | शोर्षकं | ंमाता-पितरः | ,, |
| | इति पं | ख | ३३ | पवणगती | जे | २८ | ,, | निर्वाणस्थानानि ख | ,, |
| | हणुवंसभवं ^० | जे | ३७ | गवेसमाणे | क | २८ | २७ | ंही अइ | क,ख |
| | नाम उद्दे ^० | ,, | ३८ | पवणगती | जे | ४३ | २८ | अजीओ | ख |
| | सम्मत्तो | क | ४० | ंयं उवडण्णा | क,ख | ४४ | २८ | ंलं देइ | क |
| | | | ४० | नभयलाओ | जे | ४५ | २८ | ंलं देओ | ख |
| | उद्देश-१८ | | ४३ | ंजियभाहारं | क,ख | ४५ | २९ | तरुवरसालो | ,, |
| १ | एयं तं | क,ख | ४६ | पुच्छियाय तांए | जे | | २९ | ंउ पावेन्तो | मु |
| ३ | उद्धट्टिळण | मु | ४९ | ंम सि कं | ,, | | २९ | ंउ पावेति | क |
| | उद्धट्टिळण | क | ५१ | हणुयं ति | ,, | | ३० | जिणिदं अं | जे |
| | उवड्ढिळण | जे | ५३ | परं तुट्टो | क,ख | | ३० | अभिमन्दणो कुणउ | ,, |
| ५ | ंणाभवणे | ,, | ५४ | ंव गओ | क,ख | | ३० | अभिणन्दणो | ख |
| ७ | पियहरे | क,ख | ५५ | मासा | जे | | ३१ | मेघप्पओ | जे |
| ९ | ंवरा तरुणी | जे | ५६ | हणुयन्तो | जे,ख | | ३१ | सुमती | ,, |
| ९ | पेच्छइ कणो | क,ख | ५६ | हणुअन्तो | क | | ३१ | नरिन्दा | क,ख |
| ११ | भमति य | क,ख | | इति पं | जे,ख,क | | ३३ | सिरिसं | जे |
| ११ | छिउण | ख | | पवणज्जां | ,, | | ३४ | परमो मं | जे,क,ख |
| १४ | ंभा इहं | जे | | नाम उद्दे ^० | जे | | ३४ | ंणम्मि | ,, |
| | | | | सम्मत्तो | क,ख | | | | |
| | | | | | | उद्देश-२० | | | |
| | | | | | | शोर्षकं | | | |
| | | | | | | १ | | | |
| | | | | | | ३ | | | |
| | | | | | | ४ | | | |
| | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | |

| | | | | | | | | | | | |
|----|---------------------|--------|-------|----------------------|--------|-----|-------------------|--------|-----|------------------|-------|
| ३५ | पणासेउ | क,ख | ७० | °कोबी हवति च° | क,ख | १०५ | सुणउ | जे | १३८ | °पुरे य नराहिव | सु,जे |
| | पणासंदु | जे | ७२ | दुस्समाए | जे | १०६ | उससेण सु° | जे,ख | | °पुरे नयराहिव | क |
| ३६ | नगोहदुदुमो | ,, | ७५ | मउइ | ,, | १०६ | °हो ध्व प° | जे | १३८ | सुणिवरो विचित्तस | जे |
| | नगोह° | क,ख | ७६ | उवहिसतेण | ,, | १०६ | पुण्डारिगि° | ख | १३८ | देवलोगं | जे,क |
| ३७ | तेन्दुग° | जे | ७७ | पयाइं अ° | | | पुण्डरिगि° | जे | १३९ | °णाओ | |
| | तंदुग° | ख | ७९ | °स्स होइ उणा को° | क,ख | १०८ | लभिऊण | ,, | | ईसावइसामि° | जे |
| ३८ | वासपुजो | जे | ७९ | उणा को° | जे | १०९ | जसमईप | ,, | १४१ | पसो अरमह्लि- | |
| ३९ | कम्पिलं कयवम्मा | | ८० | °रं जा ण कीमतिमे | क,ख | ११० | पुण्डरिगि° | क,ख | | जिणंतरे पसो ॥ | जे |
| | सामा | क,ख | ८० | °रं इशुणवीस° | जे | १११ | पुण्डरिगि° | जे | १४१ | पुइई | |
| ३९ | सम्मो वि° | जे | ८१ | °वीसतिम | क,ख | १११ | य विणीयाए | क,ख | १४२ | वीइसोय° | ,, |
| ४० | साएयाए सिव दि° | जे | ८२ | °जा उ सया | जे | ११२ | भा वणीए | जे | १४२ | सपभसुठं | क |
| ४१ | पत्ते | ,, | ८४ | परिनेध्वु° | ,, | | °ण तवं मधवो | | १४३ | चयिऊण | क |
| ४३ | कत्तिया | क | ८४ | °विवाज्जएकाले | ,, | ११३ | सणकुमारिणि उध्वजा | जे | १४३ | मयूराए | जे |
| ४३ | पणासेसु | क | ८४ | °हरविसु° | क,ख | ११४ | अतिरुवो | क,ख | १४३ | °वसभेहि | जे,क |
| ४३ | पणासेतु | ख | ८५ | °यमतीया | जे | ११४ | पुण्णाणुभावजाएणं | क,ख | १४६ | °जे य खे° | क |
| ४४ | च खेती सु° | जे | ८६ | गोदण्ड° | ख | ११७ | विआगे | क,ख | १४७ | देवि रज | क |
| ४५ | मदिला | जे,क,ख | ८६ | °रिसेसु | जे | ११८ | विणयमइ | जे | १४८ | °रं, मुनयनमियतरे | |
| ४५ | कुदने° | क | ८७ | अतिविट्ठि° | ,, | ११८ | हेमबाहु | ,, | | धीरी | जे |
| ४५ | °न्दो रिक्खं चिय अ° | जे | ८८ | आइपमा° | ,, | ११९ | परीवसइ | ,, | १५५ | पुव्व तिं | क |
| ४५ | भासेतु ते पिप ॥ | क,ख | ८९ | अथ य ते° | क,ख | ११९ | जिणावतणे | ,, | १५६ | °वरवसभो | जे,क |
| ४७ | मगहाहि° | क,ख | ८९ | अगिसाए | क | ११९ | ईसन्तिंयं | ,, | १५७ | मणाभिरामं | जे,क |
| ४८ | °पुरंमि एतो | जे | ९० | दोही | जे,क,ख | १२१ | तत्ताव चुयस° | ,, | १६० | पत्ते भ° | जे |
| ४८ | °ले होउ | क,ख | ९० | आइपभा° | जे | १२२ | सुपपसुं | ,, | १६० | दावेन्ति | जे,क |
| ५० | °लो जणणी सतिमिल | | ९२ | °वा न भि° | ,, | १२२ | वयसमोइ° | ,, | १६२ | °दुम्मस्स | जे |
| | हं | जे | ९३ | आउं बल उ° | क,ख | १२२ | सङ्गाएदोस° | ,, | १६३ | °दुम्मस्स | ,, |
| ५० | दिन्दु | क,ख | ९५ | °धणुवीसा | क,ख | १२३ | भावियमती | ,, | १६४ | दुकवं | क |
| ५५ | नाएदसे° | ,, | ९५ | परिहाय° | क,ख | १२४ | सहदोवनरा° | ,, | १६५ | °खल्लियासु | क |
| ५५ | किसुयसव° | ,, | ९५ | नव अट्ट सत्त सड्डा | | १२४ | नगरे | ,, | १६६ | °देवमादीया | जे |
| ५८ | पत्ते | ,, | | छस्सच्च धणु अद्धल्लु | | १२५ | सोचम्माहि° | क,ख | १६७ | °रवि य पोय° | जे |
| ५९ | पत्ते जिणवसवेदा | क,ख | | य । पंचसया पणुवीया | | १२५ | ददुम्मि | जे | १७० | इमाण नामाणि | जे,क |
| ६० | °णं संपत्ता सा° | ,, | | उस्सेहो° | जे | १२६ | °रं ति रुवं | जे,क,ख | १७१ | °मां परिस्सभूई | जे |
| ६२ | भयवं | | ९६ | °हो होई जिण° | जे,क,ख | १२७ | तो भणइ | | १७२ | °मां अह हो° | ,, |
| ६५ | अवगाढं | जे | ९७ | असोय स° | क,ख | १२८ | होउं कयपडिकम्मो | जे | १७२ | °ता य । | जे,क |
| ६५ | तु पलस्स | ,, | ९७ | °या य सत्तरी सड्ढां | जे | १२८ | कयवलिकम्मो | सु | १७२ | पत्ते | जे |
| ६७ | °हीणावस° | ख | शीषक | चायूणि | | १२८ | कयपडिकम्मो | क,ख | १७३ | जुयन्ते | ,, |
| ६८ | ओसामि° | जे | १०१ | °राए अजिओं | क,ख | १२९ | पत्तो भणन्ति | | १७३ | °रणहरणं | क |
| ६८ | °पिणीए वि | क | १०१ | छण्ण पु° | जे | १३० | °णाण रुवं | जे | १७५ | °वदणकरं | जे |
| ६८ | गरिसो | जे,क,ख | १०३ | पत्ते | ,, | १३३ | पोडरिगिणीए | ,, | १७६ | तह य ह° | जे,क |
| ६८ | °सभाएण | जे | १०४ | पुण तीमां | ख | १३३ | सासत्ते | क,ख | १७७ | °रा पत्ते | जे |
| ६९ | छम्मेदा | ,, | शीषकः | तत्पूर्वभवादि च | | १३४ | इतः पश्चात् | | १७९ | महासुकं | जे,क |
| ७० | °कांठीए ह° | ,, | १०५ | उमकत्ताए | क | | ख प्रतो पट्ट ६० | | १७९ | एतेसु | जे |
| | | | | | | | पत्राणि नोपलभन्ते | | | | |

| | | | | | | | | | | |
|-----|--------------------|------|--------------------|------|----|--------------------|---------|----|------------------|------|
| १८० | संतिनयरनामं च | जे,क | नाम उद्दे | जे | ४३ | चूलामणि | जे,क | ७३ | सायरसविहि पं | क |
| १८० | महिला | " " | उद्देमो सम्मत्तो | क | ४४ | हरिवाद्गणेण | जे | ७३ | मणोरमा सुं | क |
| १८१ | पत्तेसु | जे | उद्देश-२१ | | ४४ | पीनीप | " | ७४ | रिह भो | जे,क |
| १८१ | नयरेसु | " | | | ४५ | य वाहुजे, तं | " | ७५ | जगपरिसगहिओ | जे |
| १८२ | मो पयावई | " | | | ४६ | यहलिहम- | | ७५ | विरागं | जे,क |
| १८३ | पच्छिमो कं | जे,क | २ ंण अतिथ मं | जे | | वरजालिमं | " | ७५ | विभूतीप | जे |
| १८४ | अभ्विगा | जे | २ मदिवालो | क | ४६ | कइल्लोकारं | क | ८३ | कम्मलुद्धो | क |
| १८५ | ओ विय | " | ३ समिद्धि | क | ४९ | पविउलं | " | ८५ | वरमराहिव | " |
| १८६ | मणोहरा हं | " | ५ पोद्धिल्लमुं | जे,क | ४९ | असोगपुं | " | ८६ | पुहवीप | जे |
| १८७ | पभावई | जे,क | ७ जेण थ हं | जे | ५१ | वसभं | जे | ८७ | किन्न न मद्दु | क |
| १८७ | जोवणवराओ | क | ७ इहरे | " | ५२ | अहसत्तुमितं | क | ८८ | अपगह धीं | " |
| १८८ | पुंडरिणिणी | जे | १० गया य महिहरो वि | जे,क | ५३ | पत्तेण | जे | ९१ | मउडादिविं | जे |
| १८८ | आणन्दयरी | जे,क | १० पवमादिया | जे | ५४ | क्या व्व पां | जे,क | ९१ | नामसवस्सं तु | क |
| १९० | ओ चैव नां | जे | १२ जोइस | जे,क | ५५ | निगीक्खेसि | जे | ९३ | लं धरेइ | जे,क |
| १९१ | ओ विय | क | १३ सोइमहिसेय | जे | ५५ | निरिक्खामि | क | | | " " |
| १९१ | एयाणि | क | १४ चउद्दय | " | ५६ | बंधं दोइयं | जे,क | | | " " |
| १९१ | नामाइं | क | १५ नहाभा | क | ५६ | वाडिडिडड | क | | | " " |
| १९१ | नामाइं | क | १५ उज्जोयन्तां | " | ५६ | लमइ | जे,क | | | " " |
| १९१ | नामाइं | क | १७ वरनासिणीहिं | " | ६० | तह हवइ निरायारी जे | जे,क | | | " " |
| १९३ | भो उ । | जे | १८ विहीणं तीरो | " | ६१ | काऊण | जे,क | | | " " |
| १९३ | पत्ते | जे | १९ इन्दारी | जे | ६२ | सोइममादीसु | जे | | | " " |
| १९४ | कप्पा य | क | १९ लसत्तेदि | " | ६३ | साओ मणुओ | क | २ | इ लहुं धां | ज |
| १९४ | वंभाओ | क | २१ वि ह अस्स सुवया | | ६३ | पि कम्ममलं | जे,क | ४ | तेवि, मयं | " |
| १९५ | पत्तेसु | जे | आसि । | " | ६४ | एयं मुणिं | " " | ७ | जो सो सिलुं तुमं | " |
| १९६ | अण्णा वि य वे | " | २५ पंचाईमय | " | ६५ | विगयनेहो | " " | ८ | रउजे | " |
| १९७ | सि इत्थं | क | २६ हेट्ठे | जे,क | ६५ | इइयरो | जे | ९ | भित्तलुद्धा | " |
| १९८ | जिणे | " | ३१ ल्लेणं अइकंता | जे | ६६ | एकं पि | क | १० | पासण्डा | " |
| १९८ | आसि | जे | ३१ जोणेणं | जे,क | ६६ | अभिउत्तिउ | जे | १० | पुक्खरणीं | " |
| १९९ | अरमल्लिजिणवराण | | ३४ निमुणेसु | जे | ६७ | जुवतीउ | " | १० | लिमादीगं । | " |
| | य, दत्तो | " | ३४ त्य वासे | " | ६८ | इ य गगं | " | १० | रस्सभन्तं | " |
| २०१ | अयलपुरं विं | " | ३५ सुउज्जुया | जे,क | ६९ | जह वीयं | " | ११ | तो वि य | " |
| २०३ | तहेव हं | जे,क | ३५ दुकयमुइं | जे | ६९ | तो मयं | जे,क,मु | ११ | पक्खजामुवगं | " |
| २०३ | महुकेढा | क | ३५ अकयत्तलिकम्ममा | क | ६९ | {वि ओइणं तु अवहरइ | | १२ | पत्तेण | " |
| २०४ | जरासिन्धु | क | ३६ अणुवट्ठन्ति य | " | ६९ | {वेयणं अंमा | क | १४ | हुओ मुणिथ | क |
| २०४ | पत्ते | जे | ३६ परियत्तन्ति | जे | ७० | तं भणं | जे,क,मु | १५ | विचिन्तेत्तो | क |
| २०४ | ंजं च । | क | ३८ विच्छिऊण | " | ७० | ण्णाहं, | जे | १७ | पयत्तजामि | क |
| २०४ | सत्तु वासुदेवाणं ॥ | जे | ३९ ंण व केइ | क | ७१ | तुज्ज | क | १८ | एयं | जे,क |
| २०६ | ंणं एत्तां, | " | ४० कालमाइमि | जे | ७१ | संवेगो | जे | १८ | से अणं | जे |
| २०८ | उदियं के | क | ४० पडो य विं | " | ७३ | सोइरजे | " | १९ | वडगरेण | " |
| २०८ | धोवभवां | जे,क | ४२ जस्त महां | क | ७३ | मत्तर भाय विं | क | २० | पाववडिया | जे,क |
| | इइ पं | " " | ४३ या हरिवां | जे | ७३ | विजागहुं | जे,क | २० | मोत्तूण | क |
| | रादिभवां | " " | ४३ या विहुवां | " | | | | | | |

उद्देश-२२

| | | | | | | | |
|------------------------|------|-------------------------|------|---------------------|---------|-------------------|------|
| २० मुनिवर्द्धनं | क | ७४ अमारि | क | १४ पय ते | जे | १३ समायजा ॥ | क |
| २१ संभाविकण | क | ७६ अभिसित्तो | जे | १५ उचदेस | ॥ | १५ उप्पाइया | जे |
| २४ जियगुणं | क | ७७ °कालं पि । | जे,क | १५ °तुरियो | ॥ | १६ हरयदीविए | क |
| २८ दसमादिपं | जे | ८० पंच वजाओ । | क | १६ कोसदेसे | क | १७ °ण अणंगसमो | जे |
| २८ वेभाणिय | क | ८३ भुजसु | क | १७ समूतले | क | १७ णवरं | क |
| २९ तव-संजम | | ८३ °ओ नयरं | क | १८ °ओ वि मं | जे | १७ °रं अण्णायकुलं | जे,क |
| २९ °घितीया | जे,क | ८४ °न्ति रस(अ)ण-तं | क | १८ °अरुवाओ | क | २० पिच्छिऊण | क |
| ३२ गुलुगुलुल्लेतं | जे | ९६ °हो दसरहो | क | १९ साएयपुरं पवैसिया | जे | २० सुहमती | जे |
| ३४ सेलमोटे | क | ९७ °हो मयसरहो, | क | २० पवैसिउ | ॥ | २१ °वरिदा | ॥ |
| ३५ °झाणुज्जुयमतीया | जे | ९७ °हो सेयरहो. | जे | २० विभीसणो | ॥ | २२ जा एव | ॥ |
| ३६ एगपाएणं | क | ९८ रविमच्चू तह | क | २१ कित्तिमनरस्त | ॥ | २२ ओ मामि किं | क |
| ३७ भिक्खट्टे | जे,क | ९८ रविबंधू तह | जे | २२ लक्खरसं पगं | क | २२ पिन्छमु | क |
| ३८ °वसभा | जे | ९८ { °दत्तो, नरवसभो | | २३ °रे विलारवं | जे,क | २२ °हे पत्ते | जे |
| ३८ °या य महेहि महि, | क | ९८ { पुण राया वीरहो य ॥ | जे | २३ °पवणअइणवेगो | जे | २२ °हे एवं | क |
| ३९ बहुज्जुयमईणं | क | १०५ °सत्तसंपं | जे,क | २३ पवणजवणवेगो | क | २४ ऊसियधयं | जे,क |
| ३९ समाहं | जे,क | १०५ नियमरअ! | क | २३ लंकां | क | २४ रिनुवलं | जे |
| ४४ सम्पूर्णमाथा नास्ति | क | १०६ अम्मपभाए | जे | २४ दसरहसं | जे | २६ अण्णोणं | जे,क |
| ४५ " " | क | १०७ °विभूतीप | ॥ | २५ °पूयादी | ॥ | २८ °हमताइं | जे |
| ४६ नेव्वाणं | जे | १०८ °या विय ताथ | | २५ °मतीओ | ॥ | ३१ हेमएभो | ॥ |
| ४७ महिमाकरण एका | क | लालयकर कमला । सा | ॥ | २६ °हा चे | क | ३३ °मंगलनिलओ | क |
| ४८ °ण पणांमय | क | १०९ जुवतीहि | ॥ | २६ इहं सुं | जे,क,सु | ३४ °विभूतीं | जे |
| ४८ °ण वि निक्खुत्तं | क | १०९ °हि समे, | क | इति पं | जे | ३५ व अखंडलो | ॥ |
| ४९ नेव्वाणं | जे | १०९ °वियमती | जे | नाम उहेसो सं | ॥ | ३६ संसंभवो | ॥ |
| ५० हिरण्णगच्छं | ॥ | ११० °सत्तमिरीं | जे,क | सम्मत्तं | जे,क | ३६ ददघितीओ | ॥ |
| ५१ दुहिय | ॥ | इति पं | ॥ | | | ३९ देजासि | क |
| ५३ °ओ इमो दूओ | क | °पत्ती विहाणो | ॥ | उद्देश-२४ | | ४० °पायएपदेसो | जे |
| ५३ °सत्तकन्तिं | जे | नाम उहें | ॥ | १ सुणेह | जे | इह पं | जे,क |
| ५४ सुहपसुत्तो | जे,क | सम्मत्तो | क | २ कोउगमं | ॥ | नाम उहें | जे |
| ५६ °व निग्घासं जं | जे | | | २ सुहमती | ॥ | उहेसो सम्मत्तो | क |
| ५६ °व, निग्घासं जं | क | उद्देश-२३ | | ३ केकई | जे,क | | |
| ५६ °ह मइयं | क | ३ जिणवराणं | जे | ३ °लावणपं | जे | उद्देश-२५ | |
| ५७ महादेवीं | जे | ४ पुंडरिगिणिनयरीए, | ॥ | ४ नइत्तं लक्खं | ॥ | २ °ण सिरिं बुद्धा | जे |
| ५८ वित्तु | क | ५ °ऊण थ चे° | जे,क | ५ नइविहं सुपुणं, | क | ३ निवेदेशि | ॥ |
| ५८ साकेयपुरीं | जे | ७ सुणेह | जे | ६ °ण विय | जे | ५ अहिट्टिया | क |
| ५९ °ह जोविउ पं | क | ७ निवेदेमि | ॥ | ७ °विहवयणं | क | ५ °वरपेरन्ती | जे |
| ६० °मतीया | जे | १० दसरहस्स | क | ८ लोइयनाणं | जे | ५ चिय समत्थं | ॥ |
| ६१ °गओ नवरि । सोऊण | क | १० मारिहो | जे | १० से इमस्स इं | ॥ | ६ सुविणया | ॥ |
| ६६ °ओ आसि मह हिं | क | १० मारिहहो | क | १० गेण्हउ | ॥ | ६ तुहं भं | क |
| ६७ एव भं | क | ११ संममइ | जे | ११ तं विय तं | ॥ | १० वइरियवं | क |
| ७० नरवरिन्धो | जे,क | १२ जाणसि | क | ११ तहिं भमन्ता | जे,क | | |
| ७० भोगं ओं | जे | १३ न सुणेमि | क | | | | |

| | | | | | | | | | | | |
|----|-------------------|---------|----|------------------------|------|-----|--------------------|------|----|-----------------------|------|
| १२ | °बंकरंणाइं | जे | २१ | वसइ भया | क | ५७ | °चडाएव्वदं | जे | ७ | °सुकयचोया, | क |
| १४ | गाथायाः पच्छिमाद् | | २३ | सुणेह | जे | ५८ | अणुहतिता | क | ७ | °जगपररा | क |
| | नास्ति | क | २६ | लभइ | क | ५९ | षउजेहि | क | ७ | पतेसु | जे |
| १५ | °रसीहा | जे | २९ | पमादी | जे | ६० | सो विय | जे,क | ७ | ते गणया | जे |
| १६ | भगओ | क | ३० | °ऊण पुगी | ॥ | ६३ | नियमं | जे | ८ | °यसिन्नरस पं | क |
| १६ | भगवउ | जे | ३० | नरेंद्रस्म | ॥ | ६४ | पाविही | जे | १२ | विद्धत्थानि | जे |
| १६ | °च्छी से | ॥ | ३३ | भगवं | जे,क | ६७ | जिणितं ण | , | १२ | भवणाइं | जे |
| १७ | °ओ सुदूरं. | जे,क | ३३ | सुच्चिहिं | जे | ६९ | मग्गाओ | , | १४ | अभिसेयं | ॥ |
| २० | अंगवासोद्धिं | क | ३४ | पतेसु | ॥ | ७१ | अन्नं तओ ऋमे | ॥ | १५ | राघ गो | ॥ |
| २१ | °हं सुदुक्खिओ | क | ३५ | °णं होइ | जे,क | ७३ | पडिउं चणट्ठे | जे,क | १५ | °रणमिहं सुं | ॥ |
| २४ | चावमादीयं | जे | ३५ | तुमपवि | क | ७३ | रक्खण | क | १७ | त्रियमन्तं | क |
| २६ | कुसले | क | ३६ | सरीरट्ठे | जे,क | ७६ | सिलापट्ठे | जे | १७ | किं ताणं पसुपरिस्साणं | क |
| २६ | पुत्तं | क | ३६ | दाणेण य विं | जे | ७६ | पण्णोडेमि | जे,क | १८ | °सियवयणां नं | जे |
| २६ | °चित्तं | क | ३७ | °त्थि उ सां | क | ७८ | °जोगेणं | जे | १८ | किं मेच्छं | ॥ |
| २६ | गुरुसु | जे | ३९ | पाससंबन्धं | क | ७८ | लद्धमिहं दें | जे | १८ | मेच्छबलं | जे,क |
| | इइ पं | ॥ | ४२ | वियत्ता | क | ७९ | °णे यइल पं | जे | १९ | दइइ | जे |
| | नाम उइं | ॥ | ४२ | आमीयं | क,सु | ८० | चावाळण | ॥ | १९ | पहुत्तं हि | ॥ |
| | समत्तो | ॥ | ४२ | जोयणं | क | ८१ | सांदावणां | ॥ | २० | सुहइजय | , |
| | सम्मत्तो | क | ४३ | { °न्ति दस निकाया वि । | | ८३ | नीसे वि | जे,क | २१ | पिउपणामं | , |
| | उद्देश २६ | | ४३ | { तत्थेव य नें | जे | ८९ | केण हरिओ | क | २२ | जणयकणयणं | , |
| | | | ४५ | तत्थव | क | ९२ | परिसंठवेइ | क | २४ | °सत्थवत्तियं | जे,क |
| | | | ४५ | खुरूप | जे,क | ९३ | अज्जपभिइं | क | २५ | कणगो | जे |
| २ | विदेहं ति | जे | ४६ | पतेसु | जे | ९७ | समत्थं | जे | २५ | त्रिय जणओ | क |
| २ | पडिवालइ | क | ४८ | °यजालेहिं । | क | ९८ | जोयणलां | ॥ | २५ | वारेइ | जे |
| ५ | ताए गुं | जे | ४८ | °छिमिन्तसहे | जे | ९८ | मोहणट्ठं | क | ३२ | सुगपिच्छं | क |
| ७ | वइउइं | ॥ | ४८ | छिमिच्छिमिच्छिमन्तं | क | १०१ | मोयणट्ठा | जे | ३३ | °पंजलीकुं | जे |
| ८ | जाओं त्रिय सम्भाओ | ॥ | ४९ | °सुं विवद्धवं | क | १०१ | °समचरणा | क | ३४ | °वसभो | ॥ |
| ९ | तण्णदारुवेहिं | ॥ | ५० | °तत्तुत्तम्भं | क | १०१ | °णा नहमणिक्खिच्छु- | जे | ३४ | °ओ वड्ढियामरिसो | क |
| १० | पयासमीलस्स | क | ५१ | °चउंति वें | क | १०१ | रियकिरिणसंघाया | जे | ३५ | °ल कुन्तं | जे |
| ११ | °उहसरेणं | जे | ५१ | °वडेत्त वें | जे | १०२ | ओहांसियं | क | ३५ | खोभेता | जे,क |
| १२ | नरवतोणं | ॥ | ५१ | °वडेत्त वें | जे | १०२ | °णगुणेण | जे | ३७ | °चकतोमरसं | जे |
| १२ | °वईं भवणं | ॥ | ५१ | खण्डेति | ॥ | १०२ | निरुवेया | जे | ३७ | विवापन्तो | क |
| १४ | °लो ति एं | जे,सु,क | ५१ | त्रेहिउं | ॥ | १०३ | सुरवइमं | जे,क | ३८ | णासइ य भग्गं | क |
| १४ | तो कत्थइ य सं | जे | ५२ | महीवट्ठे | ॥ | १०३ | कप्रासतेहिं | जे | ३८ | पलोपन्तो | क |
| १५ | केणवि | ॥ | ५२ | °वड्ढंगा | जे,क | १०३ | विमलगुणसरंतो | ॥ | ३८ | राघवो | जे,क |
| १७ | एव भणियं | ॥ | ५२ | छ हि अं | ॥ | | इति पं | ॥ | ३९ | णयरं | क |
| १७ | नरेंद्रं | ॥ | ५३ | °पडेत्ति कुंता | जे | | नाम उइं | ॥ | ४२ | मणूसो | जे |
| १८ | भमइ तहिं | ॥ | ५४ | धरणिवट्ठे | ॥ | | सम्मत्तो | क | ४२ | धीरसत्तो | जे,क |
| १८ | भमइ तओ | क | ५५ | °हणंसरणाइं | जे,क | | उद्देश-२७ | | | इइ पं | जे,क |
| १९ | °अलिपुडो | जे | ५६ | केयि | जे | २ | सा भीया | क | | नाम उइं | जे |
| २० | गेमहे | ॥ | ५६ | अजे सुं | क | ४ | °पडिपुण्णा | क | | सम्मत्तो | क |
| | | | ५६ | °कघायासु | जे | | | | | | |

| उद्देश-२८ | | | | | | | | | | | |
|-----------|-------------------|-------|----|---------------------|----|-----|-------------------|-----|---------------------|-------------|----|
| १ | स य वरध्या, | जे | ३५ | पायवसाहाय | क | ७५ | तो कणा तह कओ जे | ११२ | अपुण्णेणं | जे | |
| २ | न्तो तंहि | " | ३६ | उत्थासिन्नं | जे | ७६ | बन्मभा | ११४ | महावाठिया | " | |
| ५ | जो, तूरतो ना | क | ३८ | वामभज्जं, | क | ७९ | लाभिसुहं | ११४ | परमसोम्मा | क | |
| ६ | ऊणमाठतो | क | ३८ | सगगाधो | जे | ७९ | वसोभं | ११५ | णुसमुच्छयं मं | जे | |
| ७ | एयं | क | ४० | आदिपरणम | " | ७९ | वेयरवमभो | ११८ | नरेंदाण | " | |
| ७ | णयं | क | ४० | अञ्जलिपुडे | " | ८३ | तेण तण वेयड्ढे । | ११९ | कुमुमबुड्ढो । | " | |
| ७ | उज्जाणपरे | जे | ४० | उम्मुच्छिन्नं मयं | क | ८३ | मम्मइऊण ततो | १२१ | सुभियो य वायरो सो | जे | |
| ८ | चंदगती | " | ४२ | एतो सां | जे | ८४ | कादी अं | १२१ | कमेण हइ आं | " | |
| १० | दीहवासं | " | ४२ | विभो विय | " | ८४ | तो होही | १२२ | परितोसा | " | |
| १० | सोवइ | " | ४८ | वुहं सं | क | ८४ | तो होइ तइऊ कणा, क | १२२ | या पासं | " | |
| ११ | सुसुगन्धमं | क | ४८ | म्मुहो, मसो विण्हू- | क | ८५ | धणुं | १२६ | वरमयरे | क | |
| ११ | विही य . | जे, क | ४८ | भयवं तिसोवणा | क | ८६ | तिजिती | १२८ | अम्भुअम्मो | जे | |
| १२ | तो ताणं । | " | ४८ | विण्हू भयवं तिं | जे | ८७ | णि वि दस अं | १२८ | ममसस तीं | क | |
| १२ | तइय । | क | ४९ | महिं | " | ८७ | ण कया मए अं | १३१ | निरवं | " | |
| १३ | दो, यइय अं | जे | ४९ | वुहं महु सणं | " | ८७ | धिकारेणं | १३१ | न समुवेड | जे, क | |
| १४ | कमकमिदी | क | ५१ | वुहं महु सणं | क | ८८ | पनिविड | १३२ | कणयो | जे | |
| १८ | एय वइऊण | क | ५१ | अइयत्तोणं | जे | ९० | मे होइए एया. | १३३ | धंमविज्जइ | क | |
| १८ | वियडे | क | ५२ | भो ! कयं न | क | ९१ | पोइसात्तयणं | १३५ | वेइ अइया | क | |
| १९ | लभसि | जे | ५२ | तुमं कइकथो वि | " | ९१ | एकस्त | १३६ | तरेडे | जे | |
| २० | विण्हइयं | " | ५३ | वसथवो | जे | ९१ | वीयं | १३६ | भइ वि | " | |
| २० | विण्हइयं | क | ५५ | एयणीओ | क | ९२ | विडेडे | १३७ | विच | क | |
| २० | अन्दगतरी | जे | ५५ | पुस्वि | क | ९२ | समतं लोणं | १३९ | रामस्त तओ | क | |
| २३ | न य तुं | जे, क | ५६ | निज्जइ | जे | ९३ | संधाविक्रय | १३९ | नियोगकं | जे | |
| २३ | तहिं नं | " | ५६ | अणुसरिसा । | क | ९३ | उदतोभिया | १४० | महमवं | जे, क | |
| २४ | किचि उं | क | ५६ | गाढमि अणुं | क | ९३ | मण्डनाडोवा | १४० | नरवरेंदा | जे | |
| २५ | मादीयं | जे | ५८ | भणइ तओ | " | ९४ | अरहेण | १४१ | दसरहसुया वलकित्तिरं | " | |
| २६ | य आणेमि लहुं | क | ५९ | अन्दगती | जे | ९६ | महिं | १४१ | संणं काऊण सेविया | " | |
| २६ | वित्तासिन्तो | क | ५९ | रेहि, हरिऊण वि. | " | ९७ | णेसु तो ते, | १४१ | समं कयसोहिया । | क | |
| २७ | नगरमउझे | जे | ६० | देवेसु वि जे | क | ९८ | मण्डनाडोवा | १४१ | पविसंति क | जे | |
| २७ | अदिट्टस्वं | " | ६१ | आसासिओ | क | ९९ | मिरीए | १४१ | इत्ति पं | जे, क | |
| २९ | मासमेकं | " | ६१ | परिपुणो | क | १०० | सत्तुजो | १४१ | लक्ष्मणं | क | |
| २९ | अवस्थिओ | " | ६५ | इच्छनि | क | १०० | सत्तुअओ | १४१ | णलभाविं | जे | |
| २९ | ओं जाव ताव वेणेणं | क | ६५ | संजोणं | जे | १०१ | मेहपभो | १४१ | नाम उं | " | |
| ३२ | दइणं अइडुगे | जे | ६६ | गोवरमहीणं । | " | १०२ | बन्धुभरो | १४१ | संमत्तो | क | |
| ३२ | तो भणइ नरवई | क | ६६ | करेइ नेहं निययं | " | १०४ | न एय सं | | | | |
| ३२ | आणेहि | क | ७१ | या तस्म | " | १०५ | पवत्ता | | | | |
| ३३ | नरवरेंदो | जे | ७१ | जुवतीणं | " | १०६ | इ दुक्खमि भं | क | उद्देश-२९ | | |
| ३४ | हाहाराधमं | " | ७१ | पउममादी | " | १०८ | पणयाडोवा | जे | १ | सव्वभूयसरणं | |
| | | | ७२ | परममुवं | क | १०९ | या असे । | " | २ | मीपमीवीप । | जे |
| | | | ७२ | परमउव्वाया । | जे | ११० | दाणं णेयं | " | २ | भूमीं करिति | क |
| | | | ७४ | मिण्डउ | क | १११ | अवरे भं | क | २ | करिति | जे |
| | | | | | | | | | २ | लीनियोगं | " |

| | | | | | | | |
|-------------------------|------|---------------------------|---------|------------------------|------|---------------------|------|
| ३ भर्तृण | क | ४३ चारणलीलं | जे | मुनिपायमूलस्मि | क | ७६ भमिय सं | क |
| ५ ंतो, शुण्ड परमेण वि | ,, | ४४ ंकच च चितंता | क | ३९ जणियभावा | जे | ७९ रुवइ | ,, |
| ७ सोमं च | ,, | ४४ विचिन्तेन्ता | जे | ४१ पावैते | ,, | ८० ंसणुसुअहिं | ,, |
| ८ पवत्ता | जे | ४७ नरेदवंसा | ,, | ४१ पावित्ति | क | ८० ोवगी | जे |
| ८ ंणियाओ न | क | ४८ सुणिकुण पं | जे | ४१ देहे वि नि | जे,क | ८३ आमन्तेऊग | ,, |
| ९ पुडिं | जे,क | ४८ गुणिकुण पं | क | ४२ संकाएदो | जे | ८३ पणवेगो | ,, |
| ९ जुवतीणं | जे | ४८ ेवसभं | जे | ४३ जहोनरुयाणि | ,, | ८५ ेवं से | ,, |
| ९ मण्णयारत्य | क | ४९ मुणमण हं | क | ४५ मणिकुण | ,, | ८६ ेयविइयसां | क |
| १० अन्नमेदेणं | जे | इइ पं | जे,क | ४६ ेगतीणं | जे,क | ८६ े आणन्दिओ सुं | ,, |
| १२ अन्नमन्तरं | जे,क | नाम उहेसो | जे | ४८ गतीणं | जे | ८८ आलिगेऊग | जे,क |
| १२ ेहनियमियमतीया | जे | उहेसो सम्मत्तो | क | ४९ ममुत्तययारं | ,, | ८८ ेवियोगानल | जे |
| १३ कि परद्धं, | ,, | | | ५० सिण्णामि | ,, | ९० तत्थ आगतथा । | ,, |
| १३ जीवन्तं | क | उद्देश-३० | | ५० ेमियवयं न | ,, | ९१ चिन्तगिमणा | |
| १६ कि किजइ | जे | १ सरइ ॥ | क | ५२ ततो कालं | ,, | ९२ परितोसं | जे |
| १८ ेणा पवुद्धा. | क | ६ ेगणतो | जे | ५३ आयमंतो य अहं, | ,, | ९२ ेसमूसलियं | जे,क |
| १८ अभिसित्ता | जे | ६ ेगणितो | क | ५४ ेरो तव सुं | क | ९२ ेपाभइ | जे |
| १९ तुमं आं | ,, | ६ न हुक्खु(किव,वावि | जे | ५६ चन्दगती | जे | ९३ जणं अं | ,, |
| २० तो क० | ,, | ८ वि पव भं | जे,क | ५६ नरेदो | ,, | ९३ अगाणि | जे,क |
| २१ ेसगडे व | जे | १२ अइ जार उप्पयंतो, | जे | ५७ चन्दगती | ,, | ९३ ेवुस्मियणि | जे,क |
| २२ वि हु न | क | १३ नयेण | ,, | ५८ पुक्कमइणं मं | ,, | ९६ ेबन्धवो तं मे । | क |
| २४ ते य ज० | ,, | १३ ेवसवेम्मलो | जे | ५८ ेओ हे चंतेण जं पं | ,, | ९७ कणयं मि० | जे,क |
| २५ वि हु मय | ,, | १५ चन्दगतीणं | जे | ५९ ेजुवणयं | क | ९७ ेरं नमिऊग गओ | जे |
| २५ दांडीत | जे | १६ भणइं भा० | क | ५९ परअभवे | जे,क | ९८ एयं सें | क |
| २६ ंणदक्खाओ | क | १६ ेजोणेणं | जे | ६१ ेओ. दुडो तं कणयनामो | जे | ९८ ेन्धु य भामं | ,, |
| २८ गतो वि | ,, | १७ निययमण्णी | जे,क | ६१ य ॥ | जे | ९८ पभामण्डलो | जे |
| २९ ततो चिय | ,, | १८ अइ तुज्ज | क | ६१ ेओ. धणइत्तमुओ | क | इति पं | क,जे |
| २९ इन्तो, | ,, | १९ ेगिगियं कुलं दुग्गंजे, | क | कयाणो य ॥ | क | ेलसमानमं | जे,क |
| ३१ निसमविसं | ,, | २० नरवरेन्दो | जे | ६४ ताणं सम | क | नाम उहं | जे |
| ३२ ेणोवरसं | जे | २१ ेनरवतीणं | ,, | ६४ तीव सम | जे | सम्मत्तो | ,, |
| ३२ वरधिइया | ,, | २२ मरुव मुणियायं | जे,क,मु | ६५ मुगं विं | क | | |
| ३३ विसयसुइं | | २३ दोग्गइं | जे,क | ६८ मण्णरे | जे | उद्देश-३१ | |
| ३३ च णिस्संतो । काहमि | } क | २५ मणि कुण्डले | | ६९ कयनियणो, | ,, | ेपडयजानिं | |
| य जिणधम्मं दुं | | २६ विवउन्तो | जे | ७० चिनुस्सुया | ,, | १ ेनरेदो | जे |
| ३७ सरसिउदेसं | जे,क | २६ इमाओ | ,, | ७१ ंण व मेलओ कयाणां | ,, | ५ ेधादी उ | जे |
| ३८ हिइ | क | ३० ेव य भागण्णओ | ,, | ७१ जारो य विं | क | ८ ेकुखे समुप्पणो | जे |
| ३९ उवट्टेया | जे,क | ३० उवसोभिया | ,, | ७२ ेभू. तिब्भमं | जे | ९ चइओ य पुं | क |
| ४१ धारासरजं | क | ३० वि पत्तो | ,, | ७२ सेणय | क | चइओ यो पीकलं | |
| ४२ नदीओ | जे | ३० वि पत्तो | ,, | ७२ माहुणाओ कालं | ,, | १० ेनरेदो | जे,क |
| ४२ ऊसुगमणाओ | जे | ३० वि पत्तो | क | ७३ नगोत्तरे किं | जे | १२ ेणो वि य, | ,, |
| ४२ विसूरंति | जे,क | ३० वि. १ पत्तो | | ७३ चुरओ | जे,क | १३ ेबोधिधरो | ,, |
| ४३ गजंति निब्भ(ज्ज)राइं | क | ३० जिणपायमूलस्मि | जे | ७४ इइ जं | क | १५ पियाकुच्छिउसंभवो | |
| | | | | | | एसो । | जे |

| | | | | | | | | | | |
|----|----------------------|------|-----|----------------|-----|----------------------|------|----|-------------------|------|
| १६ | वज्रधरन् | जे | ५४ | सुगेज्जं | ११५ | रामवियोगे | जे | ५ | दुद्भयं | जे |
| १७ | इहियमणो | | ५४ | अमोज्जं | ११६ | ऊसुगमणो | जे | ६ | एवं चिय | जे,क |
| १७ | रिबुपुरं | जे | ५६ | अभिसिचह | ११७ | पेच्छह | जे | ६ | विणियोगं | जे |
| १८ | भो णरवालिं | क | ५६ | जेणं चिय अज्ज | ११७ | पिच्छइ | क | ७ | सं वत्तवा, | क |
| १९ | सम्पूर्णमाथा मारित | जे | ५७ | नरवरेंदं | ११७ | एसो विय | जे | ८ | यमि तं | जे |
| २० | नामधेयो | जे | ५८ | रुविकण आटत्तो | ११९ | ताव दिवसायं | क | ८ | वसभा | जे |
| २३ | व य भू | जे | ५८ | रुविकणमां | १२० | नयरीय | जे | ८ | मेत्तपयाणं | जे |
| २३ | अरिदसणो | जे | ५९ | नेहबद्धो | १२० | द्विट्ठ जिणचेइयं मणं | जे | ९ | गामेसु य नगरेसु य | जे |
| २४ | सहस्रारकप्पे सुरवरो | जे,क | ६२ | एकौऽत्थ | १११ | ण विणएणं । | जे | १० | सरभसं | जे,क |
| २५ | तुमे ओ | जे | ६२ | वो, भमइ इह | १२२ | वरकुमारं | क | १२ | तुमे निं | जे |
| २५ | करिऊण | जे | ६३ | पावसंकुळे रण्ण | १२२ | वसिए | क | १२ | णियत्तह इओ, | क |
| २५ | दुराकिंत्तं | जे | ६३ | परिचिनेइ | १२२ | जणणीणं | जे | १३ | दक्षिणपहं | जे,क |
| २६ | परियोहिओ | जे | ६४ | दिवखाभिलां | १२२ | दोहिं वि पुत्ते | जे | १४ | णेण व, विविहेण | क |
| २६ | वि हु आं | क | ७३ | नरेंदाण | १२४ | समभिगूढे | जे | १४ | व दें | क |
| २९ | णुभूयाइं | जे | ७४ | ससुहम्मि | १२४ | परिणयत्ताओ | क | १६ | सुयावगाहिया | जे |
| ३० | नरवरेंदो | जे | ७५ | गेणहइ | १२४ | पइंसमीवं | जे,क | २० | महायस | जे |
| ३२ | करिय तवं तो गओ | जे | ७५ | येवादी | १२५ | महायस | जे | २२ | मेरुकुमारो | क |
| ३४ | गेवेज्जं | जे,क | ७६ | अप्पणो | १२५ | मा उव्वेक्खं | जे,क | २२ | मेरुकूरो | जे |
| ३४ | ओ ह सव्वं | जे | ७७ | पकं पि | १२६ | इह किंचि | जे | २३ | विणोदो | जे |
| ३५ | ते विणिण | क | ७९ | नीसंगो | १२६ | अत्थि सां | क | २३ | नरेंदा | जे |
| ३६ | उव्वट्टणं | जे | ८१ | तां पं | १२६ | वि सामत्थं | क | २४ | मोत्तणनरां | क |
| ३८ | जण-कणां | क | ८३ | गुणकरो | १२८ | नरेंदो | जे | २४ | निवेदंति | जे |
| ३९ | नाभस्स | जे | ८४ | धम्मसंसिओं | १२८ | ओ त सिं | जे | २५ | पुत्तविओगे | क |
| ३९ | पस्थमि | क | ८५ | धणधन्ने | १२८ | ओ विह | जे | २६ | पुत्तवियोए | जे |
| ४१ | नरेंदवसभस्स | जे | ८५ | हिणडइं | १२८ | इति पं | क,जे | २७ | नरेंदो | जे |
| ४२ | वायविहओ | जे,क | ८८ | सारत्थितो | १२८ | नाम उं | क | २८ | पुत्तवियोगं सं | जे |
| ४२ | समी वि | जे,क | ८९ | अणुपालेहि | १२८ | सम्मत्तो | क | ३० | णादीसंसारं | जे |
| ४२ | मंदच्छवी | क | ९० | करेह | १२८ | उद्देश-३२ | | ३१ | भोगहेउत्ति | क |
| ४३ | वि य मंडपंगुरणा | जे | ९१ | परिपालणं | १ | जिणायतणे | जे | ३३ | यत्तणसु भो | जे |
| ४४ | णजोविथा | जे | ९१ | ण वि पं | २ | गिस्संचारे | क | ३३ | संजोगविं | जे,क |
| ४५ | धूवसुसुयन्धा | जे | ९२ | अट्ठीनदीमिं | २ | घेतुणं धणुरयणं | क | ३३ | सोगमाओ | जे |
| ४६ | रइपियं, | जे | ९३ | पगंते | २ | जिणं णमेऊणं | क | ३३ | पत्तानेहाणुं | जे |
| ४९ | सव्वस्स | जे | ९३ | पणमइ | २ | ते, दीवेहिं जणं | जे | ३४ | मणो विं | जे |
| ५१ | किं करणीयं | जे | ९५ | पंकजे | २ | दो चय जणे पं | जे | ३५ | यासिन्तो य परिसहे | जे |
| ५१ | गेण्हिमो | क | १०१ | राघवो | ३ | को एत्थ | क | ३५ | इ पच्चन्तदे | जे |
| ५२ | न्ति, सामियं किं | जे | १०४ | नरवरेंदं | ३ | सुरयखिओ | जे,क | ३६ | परविदेसं | जे |
| ५२ | अज्जं कारणं तुहं चां | जे | १०४ | सस्सुयाण | ३ | अत्तग्हिटं | जे,क | ३६ | गतेसु | जे |
| ५२ | तुमे | जे | १०७ | पावेज्जं पीं | ३ | कयावरोहो | क | ३६ | सोगसमुं | जे |
| ५३ | नरवरेंदो | जे | ११० | काहं च | ४ | रे पत्तो | क | ३८ | पुत्त तुमं | जे |
| ५३ | सुक्खं | क | ११२ | भवणाओ | ५ | सुत्तायतणे | जे | ३८ | न उ सों | जे |
| ५३ | सोक्खं | जे | ११५ | एकमेकं | ५ | संकेयट्ठणदिजं | क | ३९ | वियोगं | जे |
| ५३ | सोक्खं | जे | ११५ | धणकणाट्ठणा | ५ | | क | | | जे |

| | | | | | | | | | |
|----------------------|------|----|-----------------------|------|-----------|-------------------------|-----------------|------------------------|------|
| २१. काहेति | जे | ७३ | पूयासहो | ॥ | इइ १° | जे,क | २७ | तुम्मेहि | जे,क |
| २९. बरकमारा | ॥ | ७४ | १ दिव्यामलं वरधरो, सो | ॥ | नाम उ° | जे | २९ | °ओ, दिवसा गिसा° | क |
| ४१. पहियत्रणो | ॥ | } | १ मालाधरो य देवो, | जे | उदेसो | ॥ | ३० | वज्रकण्ण° | जे |
| ४२. नदोप | ॥ | | सुरहिमुखो समु° | | सम्मत्ता | क | ३० | दडारण्णे | जे |
| ४२. वरधणुहा | ॥ | ७५ | दिव्यभाव° | क | उदेसा- ३३ | ३० | अणमारं सा° | क | |
| ४३. बहुदिवसेसु य दे° | क | ७६ | विमाणं च | ॥ | | ३१ | °धित्तोओ | जे | |
| ४३. दिवसेहि | जे | ७७ | °मतीओ | जे | | ३४ | नरेन्दो | ॥ | |
| ४४. तुरगं | ॥ | ७८ | सुरभिगं | ॥ | | १ | एत्तो ते | जे | |
| ४४. केकईपुत्तो | क | ७९ | करइ जिणि° | क | | २ | अकिट्ठण्णेग | मु | |
| ४५. °ओ य गेहेणं | ॥ | ७९ | °कार्लं ॥ ७२ | ॥ | | २ | अकिट्ठारवण्णरु° | जे | |
| ४६. °होउ णमियसिरो | ॥ | ८० | °कुम्मेहि | क | | २ | रुद्धवयम° | क | |
| ४६. सपुरिस | जे | ८० | ण्हविउं | जे,क | | २ | °दि वि ता° | जे | |
| ४७. सत्तुञ्जो | ॥ | ८१ | °दिकुट्ठिमे | जे | | ४ | °न्ति य वि° | क | |
| ४७. लच्छीभरो | जे | ८१ | प्रयाभि° | क | | ६ | °विदारित | जे | |
| ४७. तुज्जण्हं | क | ८२ | °विरियाओ | जे | ७ | दडवम्मावडिय° | जे | | |
| ५०. केकई | ॥ | ८२ | अणुभव° | ॥ | ८ | वानरवु° | ॥ | | |
| ५१. °पेही सदा य | जे,क | ८३ | निवेदणयं | ॥ | ८ | °किंलन्तं | क | | |
| माइल्ला | | ८३ | जिण्वरे | ॥ | ९ | °सुमुमुमा° | जे,क | | |
| ५२. °यवादी | जे | ८३ | आरोगं | ॥ | ९ | °विणियोगं | जे | | |
| ५४. अवगूहिउं | क | ८४ | महूमवं | ॥ | ९ | °न्ति उ वि° | ॥ | | |
| ५५. °न्दो. इव दे° | ॥ | ८४ | जिणायतणे | ॥ | १० | वरसाउक° | जे,क | | |
| ५६. सो तारि° | ॥ | ८४ | परमूमवं | ॥ | १२ | °समाउले | जे | | |
| ५६. सोगेणं | जे | ८५ | भवणे | ॥ | १२ | °मेते वि षोलेए विवण्ण ॥ | ॥ | | |
| ५६. होइ त्रिय | जे,क | ८५ | °गण भ्रमिणं | ॥ | १३ | °ट्ठा अइ सिया य ॥ | ॥ | | |
| ५७. सपरियंतो | जे | ८५ | गणअहिव | क | १४ | °दुपउरा, | ॥ | | |
| ५७. सारितत्तो | क | ८६ | सो तु सुमाणुं | क | १४ | चलुया य पउरा | जे | | |
| ५७. जुति | जे | ८६ | पाउणइ | जे | १४ | पट्टणागारा | क | | |
| ६१. °स्स सत्ताइणोयं | ॥ | ८७ | पवमादी | ॥ | १६ | °तिलप्रमुगमांसा | जे | | |
| ६२. होहिइ | क | ८८ | तवो, पावविमुद्धो | ॥ | १६ | जरगवा | क | | |
| ६३. गिण्हेउं | ॥ | ८९ | संभमइ | जे | १८ | विद्यडवित्थारं | जे | | |
| ६३. गेण्हउ | जे | ९० | सं च दि° | ॥ | १८ | सोमत्तो | ॥ | | |
| ६३. जिणवरं सम° | ॥ | ९१ | लहइ य छ° | जे,क | १९ | °सु संकिंलं | ॥ | | |
| ६३. इग्दिदयसो° | ॥ | ९२ | लभइ | जे | २१ | आणेह | ॥ | | |
| ६५. होहिइ | क | ९३ | करंह | जे,क | २१ | समोवं | जे,क | | |
| ६७. °वयणसम्भावो | जे | ९३ | °वरेन्दणं | जे | २३ | कुओ | जे,क | | |
| ५८. विदेसं | ॥ | } | १४ पज्जा पञ्जसिरि, | क | २४ | वइदेसो | क | | |
| ६९. °स्स य दाणेणं | ॥ | | १४ लक्षिण सिव | | २५ | °वंदो | जे | | |
| ७१. कालं क० | ॥ | ९४ | पि पावइ कं | जे | २६ | °सुरुं, अणमारं साइवे | ॥ | | |
| ७२. °सुरभिनि° | जे,क | ९५ | जुवइसं | क | २६ | य णाण्वरे । | क | | |
| ७२. °रच्छरेहि | जे | ९७ | कथापिसत्तो | ॥ | २७ | संहुणपसाएणं | क | | |
| ७३. सम्पए | क | | कहाभिसवो | जे | २७ | वज्रकन्नरं | जे | | |
| | | | | | | | ३१ | वज्जकण्ण° | जे |
| | | | | | | | ३० | दडारण्णे | जे |
| | | | | | | | ३० | अणमारं सा° | क |
| | | | | | | | ३१ | °धित्तोओ | जे |
| | | | | | | | ३४ | नरेन्दो | ॥ |
| | | | | | | | ३४ | थेव | क |
| | | | | | | | ३५ | निवेदेमि | जे |
| | | | | | | | ३६ | पावेन्ता | जे,क |
| | | | | | | | ३८ | विवाओ य सत्त | क |
| | | | | | | | ३८ | °पज्जेताओ | जे |
| | | | | | | | ३९ | निरया | ॥ |
| | | | | | | | ३९ | °वत्त भसिपत्त जंतादी ॥ | ॥ |
| | | | | | | | ४० | पतेसु | ॥ |
| | | | | | | | ४० | न लभेति | ॥ |
| | | | | | | | ४१ | एयारिसं | ॥ |
| | | | | | | | ४१ | तो एरिसं | क |
| | | | | | | | ४१ | पाविति | ॥ |
| | | | | | | | ४१ | पाविति | जे |
| | | | | | | | ४२ | बहुदीकत्रं | ॥ |
| | | | | | | | ४२ | कडेमि जं | जे,क |
| | | | | | | | ४३ | अइव अणु° | जे |
| | | | | | | | ४५ | पते | ॥ |
| | | | | | | | ४५ | भयह्या | ॥ |
| | | | | | | | ४६ | पतेसु | ॥ |
| | | | | | | | ४७ | जो नरसुरसं | ॥ |
| | | | | | | | ४८ | सममाणं तु महाजस | क |
| | | | | | | | ४८ | गिहवम्मे अभिर- | |
| | | | | | | | | मामीइ ॥ | ॥ |
| | | | | | | | ५० | गेण्हइ | जे,क |
| | | | | | | | ५१ | मुंचंति | जे |
| | | | | | | | ५२ | करेन्ति | जे,क |
| | | | | | | | ५३ | य उहिट्ठो | क |
| | | | | | | | ५५ | वज्जकण्ण° | जे |
| | | | | | | | ५६ | चित्तेण सुमरियं | क |
| | | | | | | | ५६ | चित्तेण सुमरिया | जे |
| | | | | | | | ५७ | परवण्णा | क |
| | | | | | | | ५७ | हरिसवल्ल° | जे |
| | | | | | | | ५७ | हरिसवल्लुम्भिमं | क |
| | | | | | | | ५९ | केणवि | जे,क |

| | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----------------------|------|-----|-----------------|------|-----|-------------------------|------|----|----------------|--------------|----|
| ६० | दसंगनयरे | जे | १०६ | संखुभिया | जे | १३६ | वज्रकणहस | क | २३ | तुक्मं समं | जे | |
| ६१ | वज्रकणहस | क | १०७ | सं सी ओकह्दे | ,, | १३७ | गणियं च ? | ,, | २६ | सुयेन्ती | ,, | |
| ६१ | वेत्तलया | ,, | १०७ | मतीया | ,, | १३७ | तच्च गं | जे | २८ | जणय अविमो | ,, | |
| ६१ | वज्रकणं | जे,क | १०८ | तं वेदिउं | जे,क | १३७ | लं दिष्ण | ,, | ३० | पभाप | जे,क | |
| ६२ | कहेहि | जे | १०८ | पन्नयो | जे | १३९ | यरमादीहि | जे | ३० | कूवइ कलण मं | जे | |
| ६४ | वज्रकणो | ,, | १०८ | जुजइ समयं | ,, | १३९ | वेहि दिष्णाण | ,, | ३० | सोणापणेण | जे | |
| ६४ | नरेंदमं | ,, | १०८ | रिबुं | क | १३९ | धणसोणिसालिणीं | { | ३३ | कच्छमं | जे,क | |
| ६७ | एकरति | क | १०८ | जुजइ समयं रिबुं | जे | १४० | सयाण तिष्णेव दिष्णाणि क | { | ३६ | निवेदेइ | जे | |
| ७२ | रायगिहं पं | क | १०९ | लपाएहि | क | १४० | लासंगमेण | जे | ३७ | अणो वि खीं | क | |
| ७३ | लभति | जे | १०९ | जंघानिलेण | जे,क | १४२ | भाव न य भुं | जे,क | ३७ | भणइ व महां | जे | |
| ७३ | कत्तो चिय वाउल- | | ११० | वजइ अवरोमुह | जे | १४२ | णं करेसु कल्लाणं | जे | ३८ | येवन्तरं | क | |
| | मणहस | जे,क | १११ | एयं सा | क | १४२ | णं करेसु कण्णार्णं | क | ४२ | से य षणं | जे | |
| ७६ | वो, वट्टेइ सभाए | | ११३ | रिबुमेणं | जे | १४७ | वजसवणेण | क | ४२ | धणवन्दं | क | |
| | मज्झयारंमि । | जे | ११३ | आभिटो | ,, | १४७ | वज्जकणणेण | जे | ४४ | सयपडन्तं | ,, | |
| ७७ | रं दुग्गविसमपायारं | ,, | ११४ | त्थमच्छरुच्छां | क | १४८ | मन्दमन्दं | जे,क | ४४ | अयपडन्तं | जे | |
| ७८ | वज्रकणं | ,, | ११४ | बक्के व | जे | | इति पं | ,, | ४४ | मेच्छसां | ,, | |
| ८० | वज्रकण | ,, | ११४ | रिबुसेल्लं | जे,क | | नाम उं | जे | ४५ | वेसानरो | क | |
| ८० | नेय ते रज्जं | ,, | ११५ | वहियजोहं | ,, | | सम्मत्तो | जे,क | ४६ | निरुविओ | जे,क | |
| ८१ | वज्रकणो | ,, | ११५ | रिबुवलं | जे | | उद्देश-३४ | | ५० | मेण य तो मं | जे | |
| ८१ | सत्वं पि में | क | ११६ | वेविरंगं | ,, | | | | ५० | वालिलीलं तो | ,, | |
| ८४ | एयं ते | जे,क | ११६ | रहासुओ | ,, | ३ | तालियसरीरो | जे | ५१ | वालिलीलं | ,, | |
| ८५ | दज्जंतयम्मि विं | जे | ११६ | उं धीरो | जे,क | ५ | परिचिन्तिऊण | जे,क | ५२ | पसावेणं | ,, | |
| ८६ | दट्टणं दुं | ,, | ११९ | संनिगासं | जे | ७ | विप्पओमो, मह | जे | ५३ | लभसु | ,, | |
| ८७ | अइदुरन्ती | ,, | १२० | अमरणीय | ,, | ७ | जाव य न तस्स | सु | ५३ | पुरिपधिओ | ,, | |
| ८८ | भूमो पयच्छामि | ,, | १२१ | ओलवेमि | क | ७ | जाव न तस्स उ वंतं, | जे | ५४ | वालिलीलो | ,, | |
| ८९ | चन्द्रपभस्स | ,, | १२२ | रुवन्तीण | जे,क | ७ | तस्स उदर्यं, व ? | जे | ५५ | " | ,, | |
| ९१ | वज्रकणो | ,, | १२२ | वज्रकणरिबु | जे | ७ | तस्स अंतं (अन्ने ?) | जे | ५६ | बधुअणुं | ,, | |
| ९३ | पाणमादीयं | ,, | १२३ | पउमनाभं | क | ८ | इं इह चेव य भों | क | ५६ | मिं व या पयओ ॥ | ,, | |
| ९४ | सव्वेहिं वि गुणपुञ्जं | जे,क | १२४ | वज्रकणणेणं | जे | ८ | इं, उवसाहियभों | जे | ५७ | सिणेह | क | |
| ९५ | वज्रकणणेणं | जे | १२६ | सिणेहा | ,, | ११ | पविससु नयराहिं | ,, | ५७ | मनागरा | जे | |
| ९७ | " | ,, | १२९ | वातेणं | जे,क | १३ | भोयणादीयं | ,, | ५९ | वालिलीलो | ,, | |
| १०० | " | ,, | १३० | वरेंदं | जे | १५ | ओइचइ | ,, | | इति | जे,क | |
| १०१ | सीहोदरो | क | १३० | तिलोगपरिं | ,, | १६ | जोयणलां | ,, | | वालिलीलवक्काणं | | |
| १०१ | जहं धिं | ,, | १३१ | ससुगिस | ,, | १८ | वालिलीलो | ,, | | नाम उं | जे | |
| १०१ | पसिज्जन्ति | ,, | १३२ | वज्रकणो | ,, | १८ | पुरसामी | ,, | | उद्देश-३५ | | |
| १०२ | वज्रकणो | जे | १३२ | जं तुमं | ,, | १९ | मिच्छाहिं | ,, | | १ | नदी | जे |
| १०४ | भणेइ | ,, | १३२ | संपाउइं | क | २० | वालिलीलं | ,, | | ३ | मं च सीया | ,, |
| १०४ | नयें रुट्टो सीहोदरो | | १३५ | न्येसिं स उं | जे | २० | पुत्तो उ सो | ,, | | ३ | मं मिमाए. उं | क |
| | भणइ एवं । | क | १३५ | नीहोदरो | जे | २१ | त्तो अहं तु जां | जे,क | | ३ | महं अइचारं | ,, |
| १०५ | संधिव्व | जे,क | १३६ | ण रहवराणं | ,, | २२ | मालिणो | ,, | | | | |

| | | | | | | | | | | |
|----|--------------------|----|-------------------------|-------|----|-----------------|------|---------------|---------------------|------|
| ५ | °णनाम | ६४ | सुसौगा य | क | २४ | °जेण भणिया | ३० | माहणिज्जे तु | ॥ | |
| १२ | पसिज्जइ | ६५ | नरेदो | जे | २४ | पामूठं | जे,क | ३२ | रहवरे | ॥ |
| १३ | °घायहि | ६६ | गरां | जे, ॥ | २४ | °लिपुडा | ज | ३२ | °हि समयं | ॥ |
| १३ | भामइ चेव | ६६ | य लहुएइ ॥ | जे | २६ | चिट्ठाए | जे | ३२ | वचंतो ल° | क |
| १५ | इत्थो ण वा° | ६७ | य होइ तस्स सा° | जे | २८ | °मालासमसहिओजे,क | ३५ | बहुभडसयसहस्स- | | |
| १५ | पते न | ६९ | °जणियकरणो | ॥ | २९ | तथेव सभु° | ॥, ॥ | | परिक्किणो | जे |
| १७ | °नदीणं | ७० | °लाभिओ | ॥ | ३० | °ण तीण | ॥, ॥ | ३५ | किह तं जिणेइ भ° | ॥ |
| १७ | निवसामो | ७० | पत्ता य | ॥ | ३४ | सा मामि! तुज्ज | जे | ३६ | चिन्तेहि | जे,क |
| १७ | निविमामो | ७१ | °विहा य म° | ॥ | ३४ | सा वि तहि | जे,क | ३७ | जंपसी | क |
| १८ | गज्जियादिम° | ७३ | स्वन्तं | जे,क | ३८ | सरीरादि | जे | ३७ | पार्थं तु अ° | जे,क |
| २० | नग्गोह° | ७३ | वि सुमोमं | क | ४२ | °ल करेहि | ॥ | ३९ | सत्तुज्जेणं | जे |
| २२ | तुरियवेगो | ७६ | तह वि न | जे | | इति | जे,क | ३९ | सिविराण य सा° | क |
| २६ | पुहइमि वि° | ७६ | धिती, | ॥ | | °नाम पन्व | जे | २५ | °णं हरइ | ॥ |
| २६ | पुहइमि वि° | ७७ | विवडिय-प° | क | | सम्मत्तं | जे,क | ४० | सिमिरं | जे |
| २७ | दत्तयइत्थो | ७७ | पसादेणं | जे | | | | ४० | भडा विगयजीया | ॥ |
| २८ | °पागारा | ७८ | अणज्जेणं | ॥ | | | | ४३ | गयणपालो | ॥ |
| ३० | माय व्व के° | ७८ | °या सउज्जेणं | क | | | | ४४ | °लिपुडं | ॥ |
| ३५ | °बिहीसियाहि | ७८ | सअं तु अयं | ॥ | १ | पञ्चक्खं | | ४५ | रत्तुपालं सल्लियं | |
| | बहुयाहि | ७९ | °या सहस्साइ, | जे | ३ | मत्थि | जे | | दइयचलणेसु | क |
| ३६ | °वडादिकं | ७९ | मंदवइस्स | जे,क | ६ | सतेहि | ॥ | ४५ | °बलिकम्मं | जे |
| ३७ | °भावाण | ८० | °मण्डिया वसुधा | जे | ७ | मादीयं । | ॥ | ५० | ईसिहं | ॥ |
| ३७ | ओ हु वि | | इइ | जे,क | १० | नन्दणमादी | ॥ | ५१ | °भमइ सा जत्थ य | ॥ |
| ३९ | °वरेंदं | | °क्खाणां नाम | क | ११ | °रहमादी | ॥ | ५१ | दिट्ठं तं | ॥ |
| ४२ | असणाइ पाण भत्तं | | °क्खाणां सम्मत्तं | जे | १२ | अभियड्ढो | ॥ | ५२ | उसभादीणं | ॥ |
| ४२ | पसादेणं | | सम्मत्तं | क | १३ | पते | ॥ | ५२ | चरियाणि | जे,क |
| ४३ | परितोसं | | | | १३ | °सा इव भोगं | जे,क | ५३ | अइविरिय किं | जे |
| ४४ | पहट्ठा | | | | १४ | पनेसु | जे | ५४ | वि वयणं भ° | ॥ |
| ४५ | महं एस | | | | १६ | °यस्स महत्थं | क | ५५ | जइ अच्छमि | क |
| ४७ | सोऊण | | १ अह लं | क | १६ | साहेह | ॥ | ५६ | नट्टियाय | जे |
| ४७ | दुल्लभलम्भो | | २ एवं मं | ॥ | १७ | मणियमेत्तो | जे | ५७ | ठाई | ॥ |
| ४७ | दुल्लभलंभो | | ३ पवुत्तो | ॥ | १८ | तुज्ज | ॥ | ५८ | भेदेणं | ॥ |
| ४८ | सुसोमा | | ४ ऊवुगमं | जे | १९ | तुमे मं | ॥ | ५९ | °वेचिरसं | क |
| ४८ | मए उजेव | | ५ रणं च आकं | क | २१ | कुण्ड मुभिच्चं | क | ६० | चेइयघरं | जे |
| ४९ | सइकालं | | १० °त्तणमादाप | जे | २२ | जणेरिसाणि | जे,क | ६० | ततोइण्णो | ॥ |
| ५० | नेव्वाणं | | ११ विणिसगया रामलक्खणा | ॥ | २४ | मणियमेत्तो | जे | ६३ | खलायइ, | क,जे |
| ५७ | भरहेरवपसु | | १२ तेषं, निग्गइया निं | क | २६ | पुरवराओ | क | ६६ | °ण एम्व भं | जे |
| ५९ | °याए वरभण्णे | | १५ पोसहिया निं | ॥ | २६ | °कण्ठं च वहं | जे | ६६ | °सु दुकरं जईवरियं । | क |
| ५९ | °णं पवत्तो । | | १७ इमाइ | जे | २७ | मिहिलासामी | क | ६६ | महाभोप | जे |
| ६० | रुवादेत्तिरुन्ति । | | १९ उन्नंविअण | जे,क | २७ | सोदाइरमादीया | जे | ६७ | अइविरिपण | ॥ |
| ६२ | °पुरिसा | | २१ समदिट्ठोय पं | क | २८ | नरेदो | ॥ | | वि भं | क |
| ६४ | नामण अहं | | २१ { सत्रिड्ढोऽऽवलोयसु, | जे | २९ | आनच्छाहि | ॥ | ६७ | °स्स जस्स परमं | जे |
| | | | अदोसां | | | | | | | |

उद्देश- ३७

उद्देश-३६

| | | | | | | | | | | | |
|----|-------------------|------|----|----------------------|------|----|----------------------------|---------|-----|--------------------|---------|
| ६८ | रज्जे सो विजयरहं, | जे | ३५ | रइऊण वं | जे,क | १९ | ऊण सोया, | जे | ७५ | काल काऊण | जे |
| ६८ | गोपहई दिं | जे | ३५ | सत्तुइमो | जे | २० | { जोगे सराण एत्तो, कुणंति | | ७५ | चविओ | जे,क |
| ७० | °सीलमुक्को | क | ३५ | °इ एंती अं | जे,क | | { भत्तीए, वदणं तुट्ठा । जे | | ७९ | य जोइससुरी | जे |
| ७० | °धरो त्ति विरिओ | जे | ४१ | दसणेहिं सा | जे | २२ | °अभिणव | जे,क,मु | ७९ | °नियणभूओ | जे |
| | इति | जे,क | ४२ | दुन्दुभो | जे | २३ | °चलन्तोह | जे | ८३ | गहिओ | जे,क,मु |
| | नाम पब्बं | जे | ४३ | °दमणो पडिच्छमिन्ति | जे | २३ | अत्थमिओ. | जे | ८३ | पंचदंडा | जे |
| | सम्मत्तं | क | ४४ | एत्तो सा | क | २३ | दिवचनावो | जे | ८३ | पंचदंडा | क |
| | उद्देश-३८ | | ४६ | सत्तदमस्स | जे | २३ | मइल्लंनो | जे | ८५ | सुरलोगे | जे |
| | | | ४६ | तुहं वत्तं | जे | २५ | जघाटी | जे | ८६ | चविआ | जे,क |
| | | | ४६ | अम्हं | जे | २६ | °हासपसरिय-संखो | जे | ९० | अवउत्तओ | जे |
| १ | °समाणुक्कथा | जे | ४७ | इमं मं | जे | २९ | राप्रत्तेणं | जे | ९१ | अणमिस्सं | जे |
| २ | कंता विं | जे | ४८ | { भणइ य मोमिन्ति | जे,क | ३१ | ओहिदिस्सं | जे | ९३ | जस्सेसा सुं | जे |
| ३ | °निमित्तं च । | जे | | { तओ, | जे,क | ३३ | केवलं नाणं | जे,क,मु | ९४ | । जे य इमं गुणं | जे |
| | सत्तुज्जं च हं | जे | ४९ | आरुभिऊण | जे | ३४ | °गया नग्गणा | जे | ९५ | जाणन्ति | जे |
| ४ | विमयसोक्खं | क | ४९ | संनिगास्से, | जे | | सुराणा य | जे | ९५ | °न्ति तओ दो | जे,क |
| ८ | नुराण वे | जे | ५१ | पणमियवाम | क | ३५ | रामगोविन्ती | जे | ९६ | अभिलसिया | जे |
| ९ | °वंशुरहिय | जे | ५२ | तत्थट्ठिउं | जे | ४० | गीओ | जे | ९७ | पियरिं सों | क |
| १० | °न्तरे निं | जे | ५२ | कुसलादी | जे | ४० | °ओ पेस्सविओ | जे | ९८ | °विओगे वि वं | जे |
| १० | गुणु कित्तणं | जे | ५२ | °ओ राइणा | जे | | निययकउज्जेणं | क | १०० | संघ मोत्तण | क |
| १२ | °अग्गे सुफलं | क | ५६ | नयराओ | जे | ४४ | एत्ते | जे | १०० | पत्तो य संघं | जे |
| १४ | °मन्तपयपीढो | जे | ५७ | अज्जोत्त | जे | ४५ | ईमालइए | जे | १०० | पत्तो संघस्सहिओ | जे |
| १५ | °ण क्रिचि | जे,क | | इइ | जे,क | ४५ | उहामिस्सं | क | १०२ | एत्ते | जे |
| १६ | गमपसउजा | जे | | °पउमा नाम | जे,क | ५० | उज्जाणपालं | जे | १०३ | सामी | जे,क |
| १७ | °गो य वुत्तो | जे | | सम्मत्तं | क | ५१ | °जघाटीए | जे | १०४ | एत्ते | जे |
| १७ | °नियत्ताओ | जे | | उद्देश-३९ | | ५१ | पणमिय सं | क | १०५ | धूर्यं च नाणं | क |
| २० | °मादिगहिं | जे | | | | ५६ | वम-कलिल-सिभं | जे | १०६ | तावसपुरओ य जों | जे |
| २२ | °यारत्थं | जे,क | २ | देवाणियउवभोगा | जे | ५८ | °हत्थि वधत्ते | जे | १०७ | °वमो उरु | जे |
| २३ | °हो पासे | क | २ | °उवकरणं | जे,क | ५८ | धरेइ | जे | १०८ | कस्स व दुं | क |
| २४ | अणुत्तं मं | जे | ४ | वोल्लंताणं | जे | ६० | अउजाइय | जे | १०९ | गिइओ | जे |
| २४ | °उजं विमग्गिऊणं | जे | ४ | नयरं | जे | ६० | करेहि | क | ११२ | उज्जया | क |
| २५ | त तत्थं | जे | ५ | अणुपयत्तु | जे | ६२ | सणित्तण | जे | ११२ | अवगू | जे,क |
| २८ | इमं तु रायं | जे | ८ | अहं कोइ | क | ६६ | मेच्छं हंतूणसुं | जे | ११३ | °सु वरणेण महं भवणे | जे |
| ३० | त्रियसत्तुं | जे | ८ | एही अं | जे | ६६ | °निगोरेणं | जे | ११५ | °सा घट्ठो | क |
| ३२ | °मि सव्वं | जे | १० | एय जणो | जे | ६७ | पवजो, | जे | ११६ | खरउज्जूहिं स बद्धो | जे |
| ३३ | °इ हं नं | जे | १० | अभिमुहुं हो | जे | ६७ | दोण्ह वि | क | ११६ | पभायं मे | जे |
| ३५ | जावुल्लावो | जे | १० | °हा थं(ठ)ति | क | ६८ | कहेति | जे,क | ११६ | किलीस | जे |
| ३५ | °वेसिणी | क | १२ | निम्भराइणं | जे | ६८ | जत्थयुणं | क | ११७ | धण-सयण-वन्धुरं | जे,क |
| ३६ | °लिपुडं | जे | १२ | गइगणाइअं | जे | ६९ | °या किवाल | जे,क | ११९ | अनलपपभो | जे |
| ३६ | °णो विय | जे | १७ | गोणसेहि | जे | ७० | य दो वी, | जे,क,मु | १२० | °हो तओ वेधली अण्णे | जे |
| ३६ | पसयच्छी | जे | १७ | °रइसुत्तेहि | जे | ७३ | तहिं गन्तुं | क | १२१ | नेव्वाणं | जे,क |
| ३७ | अरीणदम तुहं, | जे | १८ | धणुवग्गहेहिं विउडिउं | जे | ७३ | °णं पयया | जे | १२१ | दोहेति | क |

| | | | | | | | | | | | |
|-----|-----------------------|------|----|-----------------|-------------|----|------------------|------------|----|------------------|------|
| १२१ | होर्हिति | जे | | ५० | सुकुण्डं | जे | ९ | मातुलंगेणं | जे | | |
| १२१ | दोष्णि जं | जे,क | | ५२ | ंणं तुमे तं | जे | १० | ंमादिपदि | जे | | |
| १२४ | ऽवधीणं | क | २ | ंदिपुण्ण | जे | ५२ | पवमादी | जे | ११ | च्छुमादिपदि | जे |
| १२४ | ंया विहीणं | जे | ३ | नदीप | जे | ५२ | भणिजःसु | क | ११ | माहापुंसु । | क |
| १२५ | वेरदिदं | जे | ४ | भण्डवकरणं | जे | ५२ | किचि नां | जे | ११ | ंसलिलेहि | जे |
| १२७ | पवमादी | जे | ४ | समणा समियपावा | जे | ५२ | कण्णा गयं हुक्खं | जे | १२ | तरच्छभह्लाउलं | जे |
| १२९ | तात्र स गं | जे | ६ | ंफणिसं | क | ५३ | ंक्खो य । | जे | १२ | निच्चं | जे |
| १३० | ंमणसेसं । | क | ९ | ंकयलय-खं | जे | ५३ | ंक्खो उ । | जे | १२ | ंसयक्खरोहिय | जे |
| १३१ | ता आवर्हि | जे | ९ | ंय-केल-खं | क | ५४ | अत्थेत्थ | क | १४ | डण्डयिं | जे |
| १३१ | संभरेजामु | जे | १० | गन्धोद्गकुं | क | ५४ | रु(भ)गिर | जे | १४ | डण्डओ | जे |
| १३२ | इह ते | जे | ११ | द्विसि वहे | जे,सु,क | ५६ | ंउण पिउ सया मं | जे | १४ | डण्डारणं | जे |
| १३३ | वोदीकलं च | जे,क | १३ | परिगेण्हिं | जे,क | ५६ | निययतायस्स | जे | १५ | महानदी | जे |
| | इह पं | जे | १४ | ताणं गन्धोद्ग | जे | ५६ | निययमाणस्स | क | १६ | ंविचडियं | क |
| | देसभूसणवक्खलाणं पव्वं | जे | १५ | मिच्चिज्जारं | जे | ५८ | परिवुद्धो | जे | १६ | ंलयसमथरं | जे |
| | सम्मत्तं | क | १७ | असुच्चिओ य | जे,क | ५९ | पत्ते त्तिवाहं | क | १७ | वरनदी | जे |
| | | | | दुग्गंधो । | जे,क | ६१ | ंवा जायतिव्व- | जे | २० | चुरभिपुं | जे |
| | | | | मुणियपावी | जे | | संवेगा | जे | २१ | निलंति | क,सु |
| | | | | डंडगो नामं | जे | ६४ | एयं मों | जे,क | २१ | पउमाभिसं | जे |
| | | | | डण्डगो | जे | ६४ | हुंति | क | २२ | ते भमंतमहुयर, | जे |
| ४ | निम्बरपं | क | १९ | डण्डगो | जे | ६६ | करेह | जे | २२ | ंइ म्हेलियं | जे |
| ६ | सुरहिकगं | जे | २१ | ंवरं दी | जे | ६७ | भावेण जं | जे | २२ | ंइ म्हेलिया | क |
| ६ | ंगन्धेहि | जे | २१ | ंम्बियभुओ | जे | ६८ | ंवि चिय सुणिं | जे | २४ | तो सुच्चिरसीयलं | जे |
| ६ | ंस्ताविया घयं | जे | २२ | ंदि । आलइय कंठं | जे | ६९ | ंभम्मुज्जुओ | जे | २४ | नदीप | जे |
| ६ | ं तोरणा बहवे | जे | २३ | जोगमिणं सां | जे | ७३ | कोउमहिययस्स | क | २५ | सुहनिमज्जो । | क |
| ७ | आभरणं | जे,क | २६ | निययनियमत्थो | जे | ७७ | अवियण्हविट्ठीओ | जे,क | २६ | ंसमिद्धा दुमा | क |
| ७ | ंभोयणाईणि । | जे | २६ | पभूइभत्तो | जे | | | जे | २६ | ंसमिद्धो हुमो लं | जे |
| ९ | पउमाणं | जे | २७ | तत्थेव य परिवाओ | जे | ७८ | सुणिन्तो | जे | २६ | उव्वेओ । | जे |
| १० | ंसिहरसरिं | क | | दट्ठणं नं | क | | इइ पं | जे,क | २६ | सच्छेदयभरियसरो | जे |
| १० | ंलाससेलसरिसाणि | जे | २७ | दट्ठण य नं | क | | नाम पव्वं | जे | | गिरी वि एसो | जे |
| | ताणि धुं | जे | | ंभत्ति | जे | | सम्मत्तं | क | | रयणपुण्णो | जे |
| ११ | ंसुन्दरीओ | क | २८ | कयमतीओ | जे | | | | २८ | धिती | जे |
| १२ | अन्नुहेसं | जे,क | २८ | वियड परिवाओ | जे | | | | २८ | पि कुणइ धीइं | क |
| १३ | महानदी | जे | ३२ | ंतो । अइओ य | जे | | | | २८ | डंडयारणं | जे |
| १४ | दण्डगारणं | जे | ३३ | जन्तावीलियं | जे | २ | हेममणियं | जे | ३१ | ंमेवेहिं | जे |
| १५ | आपुच्छिं | क | ३५ | डण्डगो | जे | ६ | अंकुलविला | जे | ३२ | अजे विय पं | क |
| १५ | सुरपहं | जे | ३५ | डण्डमां | जे | ७ | तिन्दुगं | क | ३३ | नदीपं | जे |
| १५ | पुरवराओ | जे | ३७ | सीहमादीया | जे | ७ | ंफणिसा | क | ३४ | न य जुं | जे |
| १५ | सोभित्ति | जे | ३७ | डंडगो | जे | ७ | ंतंरु निम्बरुं | जे | ३५ | ंजडागसं | जे |
| १६ | भवणुत्तं | जे | ३७ | ंगो ति पावो | जे,क | ८ | ंकोरेण्ठयं | जे,क | | इइ पं | जे,क |
| | इति पं | जे | ४२ | होहेन्ति | क | ८ | ंथाइत्तं | जे | | डण्डगां | जे |
| | नाम पव्वं | जे | ४४ | आइहे दो | जे | ९ | चम्पयसं | जे | | नाम पव्वं | जे |
| | सम्मत्तं | जे,क | ४८ | वियोगम्मि | जे | ९ | केयइवद्रीसु | जे,क | | सम्मत्तं | क |

| उद्देश-४३ | | | उद्देश-४५ | | | | | | | | |
|-----------|------------------|------|-----------|----------------------|------|-------------|------------------|----------|---------------|----------------------|------|
| १ | बोर्हणी | क | ३५ | लं च विय | सु | ३२ | अवल्लोयणीए | जे | ४ | एवं पि | क |
| १ | सिरी | क | ३५ | सल्लिलवविय- | जे,क | ३४ | सरिससरं । | जे | ५ | सुहडा | जे |
| २ | महपडं | जे | ३५ | लियच्छो | जे,क | ३४ | स्स रवसरिसं | क | ५-६ | गाथे क-प्रयां न स्तः | क |
| ३ | लभिऊण | जे,क | ३८ | कुणमाण | क | ३५ | मारिही दो | जे,क | ७ | मजेहि | जे |
| ३ | पडिद्दाइ | जे | ३८ | लासंमुवगया | जे | ३५ | पते | जे | ८ | सहियं रहिं | जे |
| ४ | सारसाणं च । | जे,क | ३९ | नयणंमयं | जे | ३७ | जडाउक यं | जे | ९ | मह पुत्तं | जे,क |
| ५ | मोइए एं | जे | ४० | सयासे | जे | ३७ | नियत्ताभि | जे | ९ | कहिं वचसेअजि | क |
| ५ | णो धणियं | क | ४२ | सुन्दरी | जे | ४० | जडाए तो र्हा | जे | ९ | कहं वचसे अज्जं | जे |
| ६ | सुरभिसीं | जे,क | ४२ | सो विय | जे | ४० | जडागिणो | क | १२ | धणुयायवत्तो | जे |
| ७ | सुरभिवर | जे,क | ४३ | डंडयारण्यं | जे | ४७ | नहलंमज्जिमु | जे | १४ | अमरिसवसगएणं | क |
| १० | लं वीय रं | क | ४७ | होह महं दुक्खं | क | ४१ | धरणिपट्टे | क | १५ | मुच्छागओ विद्धो | जे |
| १० | पि य अरहं | जे | ४७ | { नीमासं । अह वेरियण | जे | ४३ | हारन्ती | जे | १६ | हिणं तं | जे,क |
| ११ | डडयजिं | जे | ४८ | { पुरओ | जे | ४३ | पडारसं | जे | १८ | नन्दणी | जे |
| १५ | वाहणादो | जे | ४८ | तो लक्खं | क | ४८ | पडारसं | जे | १८ | सामी | जे |
| १५ | नरेंदवंसेम | क | ४८ | करे | जे | ४९ | सोत्तं कि आगओ | जे,क | १९ | सामी | जे |
| १५ | न्दवंसेदु | जे | ४८ | विक्खंमणक्खं | जे | ४९ | पडिवेदिओ य | जे | १९ | तुसे मं | जे |
| १९ | डण्डारं | जे | ४८ | , तओ निं | जे,क | ५० | एते | जे | २० | नामं सो | क |
| १९ | हापत्थो | जे | ४८ | इह पं | जे | ५२ | निकवचइ | जे | २१ | सामी | जे |
| २० | त्तओमनिवमस | क | ४८ | नाम पव्वं | जे | ५२ | पणवीणाउल | जे | २३ | लच्छिनि | जे |
| २० | वज्जा | क | ४८ | सम्मत्त | क | ५३ | एएहि उं | जे | २६ | तुब्भेहि जलथलां | जे |
| २१ | कुंय | जे | उद्देश-४४ | | | ५४ | चच्छइ य तो जं | जे | २९ | सपरिफुडं | जे |
| २१ | नदीप | जे | ३ | रिणं वहुं | जे | ५४ | केकार्यं | जे | ३१ | मेत्ते, | जे |
| २२ | अलिद्धिकां | क | ७ | पक्कागी | जे | ५५ | केमार्यं | जे | ३१ | विज्जाए | जे |
| २३ | सुत्ताम | जे | ८ | यच्चारिता | जे,क | ५५ | ओणेणं | जे | ३२ | तस्य णं | जे |
| २४ | { संछे वेदिए ओणे | क | ८ | वि अहं | जे | ५५ | पुरउहेह | जे | ३३ | कहेन्ती | जे |
| २५ | गिण्ड | जे | १३ | रुपड विय सोमं | जे | ५५ | जडागो | क | ३४ | इ ह सायरं | जे |
| २६ | विण्णसिन्नेण | जे | १५ | न्ती. भीया | क | ५६ | , गवूण मुच्छा तं | जे | ३५ | वेहि न भत्तं | जे |
| २७ | समुल्लयं | जे | १६ | पते | जे | ५७ | , नय दिद्धा | क | ३६ | परिवियन्तो, | जे |
| २७ | पुत्तं । कयरां | जे | १६ | उप्पेहि | जे,क | ५८ | पि बुच्चमि | क | ३६ | नरेंदो | जे |
| २७ | पुत्तं । कयरां | जे | १९ | पडिन्दुचण्णथे | जे | ५८ | लच्छाओ । | क | ३६ | तुम सुं | जे |
| ३१ | निणिण अ० | जे | २० | दुपीणाए | जे | ६१ | करं तो ता लं | जे | ३६ | सोग | जे |
| ३१ | न य खमिया | क | २१ | सक्कडं | क | ६२ | दराकी | जे,क | ३९ | सुमत्ता | जे |
| ३२ | न य खमिओ मे | जे | २६ | सरिसवेगा | जे | ६२ | इय मणुं | जे,क | ४० | जिसउ संतो | जे |
| ३२ | अधकियं | जे | २६ | धाणा | जे | ६२ | मणुयवारमईयं. | जे | ४० | जिसउं सत्तो | क |
| ३२ | पावोदि | जे | २६ | मण्डियइ वराइ | जे | ६४ | एएहि | क | ४४ | गिण्डं | जे |
| ३४ | हा जे मए | जे,क | २६ | छिञ्जाइ | जे | ६५ | वा वट्टणमैह, | जे | इह पं | जे,क | |
| ३४ | परिवत्तिए | जे | २९ | एन्धन्तरम्मि | क | ६७ | पावेन्ति | जे | पव्वं नाम पणं | क | |
| ३५ | पकपिजरियं | जे,क | २९ | कविं | जे | इह पं | जे,क | पव्वं सं | जे | | |
| | | | ३० | अहोमुहं | जे | स्सलावं नाम | क | सम्मत्तं | क | | |
| | | | ३१ | एकमुहो दं | क | नाम पव्वं | जे | | | | |
| | | | | | | सम्मत्तं | क | | | | |

| | | | | | | | | | | |
|----------------------|------|------------------|----------------|--------|---------------|--------------------|----------|-------------------|--------------|------|
| उद्देश-४६ | ४४ | ,सणकुमारस्स सरि- | ५५ | पामारा | जे | ४४ | रुवगहियं | जे,क | | |
| ३ मे. कुणसि य वरं | | सरुं पि | जे | ५५ | य उवप्पयाणेणं | जे,क | ४६ | सरसतेसु | जे | |
| ३ ंतिमंगे, | | ४४ | ंहि वयणेहि | क | ५६ | ंउणं तुं | जे | ४६ | साहसगती | ,, |
| ४ पवणो इव | | ४६ | सुचिरं | जे,क | ५७ | वच्चइ | क | ४७ | धरणिपट्टे | क |
| ७ सलभो | | ४७ | किं जं | जे | ५८ | निच्चमेव पं | ,, | ५० | वानरेंदस्स | जे,क |
| ७ सलभो य दज्जिहिसि | | ४७ | किं जं | क | इइ पं | जे,क | ५१ | तत्थेव नरेंदकारणे | जे | |
| ८ पि वच्चसि | | ५३ | सुभिया | जे | नाम पव्वं | जे | सव्वे | जे | | |
| ८ ंसि तुमं, | जे,क | ५५ | ंसणादीया | ,, | छायालं पं | क | ५४ | सुरमइ नाम | ,, | |
| ९ ंओ वि सी | जे | ५९ | मम समं | क | सम्मत्त | ,, | ५४ | सिरिमइं | क | |
| ९ पेम्मासा | जे,क | ६० | एतो । | जे,क | | | ५४ | मणवाहणी | जे | |
| १० पादेसु | जे | ६० | ंरी इहाणीया | क | उद्देश-४७ | | ५४ | पडमावइ | | |
| ११ ंमादीया | ,, | ६३ | खेयरेंदो | जे | १ | किंकिधवइ | क | जिणवती चेव | ,, | |
| १२ अभिनं | ,, | ६३ | वसुमतीप | ,, | २ | विमुकजीवे | जे | ५५ | ंविओगम्मि | जे,क |
| १३ ंणं वो पवं | जे,क | ६४ | ंन्तरं व लग्गो | ,, | ४ | विह सं | क | ५६ | ंट्टाओ ताओ | क |
| १६ लभइ | क | ६४ | ंमार्यमं | ,, | ८ | नरेंदस्स | जे,क | ५६ | विणओणवं | जे |
| १६ निविस | जे | ६५ | अभिणन्दिओ | ,, | ९ | किंकिधियुं | क | इइ पं | ,, | |
| १७ ंम्मि निइए, | ,, | ६५ | ंओ य सीयाए | ,, | १० | पव्वजामुवगओ | जे | नाम पव्वं | जे | |
| २१ निय भवण | ,, | ६६ | समंतकुं | ,, | ११ | किंकिधिं | क | सम्मत्तं | क | |
| २६ सा न इच्छइ, सुकु- | | ६६ | समग्गेण | ,, | ११ | ंल पयाणं | ,, | उद्देश-४८ | | |
| माला म पइं | | ६७ | पदेसा | ,, | १४ | मन्तीहि न सुं | जे | १ | ंणिओगं | जे |
| अणिसच्छंती । | जे | ७० | सुगन्वं | क | १६ | भवणंगणं पतो | क | २ | ,सम्मणणहाणं | ,, |
| २८ , जाइजइ | क | ७२ | ंलपल्लिवं | जे | १६ | ंणं तथं पतो | जे | २ | ंभोयणादीओ | ,, |
| २८ , जा इच्छिजइ तुमे | जे | ७२ | केयरधूलीं | क | १७ | ंण भणइ मउअयागथं | ,, | ३ | सीयाए तमयमणो | ,, |
| २९ वाहुसु | ,, | ७३ | ंसामाणं | जे | १८ | योइनार्यं | जे,क | ४ | ंमुल्लावा | ,, |
| २९ ंय च्चल्लिकारेणं | क | ७४ | ंमादीहि | ,, | २१ | अकवंहणीसु | ,, | ४ | पासट्टिया | क |
| ३० इमं कां | जे | ७४ | ंविहुराणुणां | क | २१ | परिणेणइ | क | ४ | एएहि | ,, |
| ३० गेण्हाम | जे,क | ७५ | तायि अं | जे,क | २३ | चन्द्रस्सी | ,, | ५ | ंवी वि मां | ,, |
| ३२ सा मि य | जे | ७६ | नामग असों | जे | २४ | अलभन्ता | ,, | ६ | ंणिय मुणतो | जे |
| ३३ एतेण | ,, | ७८ | ंचाहुकारीं | क | २६ | किंरुध | ,, | ७ | भवणोइरत्थं | ,, |
| ३३ गेण्हामि | ,, | ७९ | ंन्नेस्ती | जे | २९ | पूणगाया नास्ति | क | ८ | किह रमसि | क |
| ३३ पुंक्कम्मि | जे,क | ८१ | विन्हावरो | जे,क | ३० | पडमाओ | जे,क | १० | ंट्टं मे | |
| ३४ उत्तरिजसि अहयं, | जे | ८३ | ंइट्ठणं | क | ३१ | हुयासणे | जे | १२ | ंततुत्तन्तं | क |
| ३५ ंन्तं तुमं मए मं | क | ८४ | कमलुत्थं | जे | ३३ | किंकिधि | क | १४ | इय कुं | जे |
| ३५ ंन्तं तुमे मए मं | जे | ८६ | सिचंनो | जे,क | ३४ | ंमुद्धिहुओ | जे | १५ | विरहुजुओ कं | ,, |
| ३६ मन्दोदरी | क | ८६ | विभीसणो | जे | ३८ | किंकिधि | क | २० | ,से गन्धो | ,, |
| ३९ देवसोकखं | जे | ८८ | ंहुअजुयमतीयो | ,, | ४१ | अविहिसि | जे | २० | ंइ मुणिओ ॥ | जे,क |
| ४१ ंनन्दणी | जे,क | ८९ | ंयभावेणं | जे,क | ४१ | ंसतेसु | ,, | २१ | ंयाप समं सं | जे |
| ४२ सइओ | क | ९४ | ंमादीया | जे | ४२ | रुदो नामो वर मेहेण | क | २२ | अहिणा इं | ,, |
| ४२ सुमहिलियाओ | क | ९४ | थेवेण | ,, | ४२ | नगोणं | जे | २२ | महारण्ये | ,, |
| | | | तिविट्ठणं | जे,क | | | | | | |

| | | | | | | | | | | | |
|----|---------------------|------|----|-------------------|----------|-----|----------------------|------|-----------|------------------|----------|
| २३ | कोचवरं | क | ७० | मयूरो | जे | ९६ | पादिति | क | नाम पव्वं | जे | |
| २८ | पीईहरं | जे | ७१ | तं आण लहुं अह मं | ॥ | ९६ | तुम्मे वि | जे | संमत्त | क | |
| ३२ | °धो ते सं | ॥ | ७१ | आणेहिऽह | ॥ | ९८ | °मादीया | ॥ | | | |
| ३४ | सिग्धं रहुवहं | जे,क | ७१ | आणेहि लहुं महं मं | क | ९८ | पत्थं सुण | ॥ | उद्देश-४९ | | |
| ३८ | °सवुत्तन्तं | क | ७१ | मयूरं | जे | ९९ | उद्धरिहीइ | ॥ | | | |
| ४० | धिग्गमणं | जे | ७२ | | | १०० | मा एत्थ कुणह वक्खेवं | ॥ | १ | सभं, | प्रत्य,क |
| ४१ | °णुज्जुवाउलं | ॥ | ७३ | मयूरो | ॥ | १०१ | आमन्तिं | ॥ | २ | °नन्दणीए | जे,क |
| ४२ | वुत्तन्तं | क | ७४ | °व्वं च । | क | १०१ | वानरंइ | क | ३ | सिरिपणामं | जे |
| ४३ | साहेहि अं | क | ७५ | मयूरं | जे | १०१ | अरहधरे वां | जे | ३ | दंडारणां | क |
| ४४ | तीए निमे, | जे | ७५ | णरोत्तम | क | १०१ | वाणरेदमादीया | ॥ | ३ | दंडारणणत्तियं | जे |
| ४४ | तीए निम्मे | क | ७७ | तो भणइ | जे,क | १०२ | सव्वे य पं | ॥ | ४ | तो ल० | क |
| ४५ | अंगुत्तित्तं | क | ७७ | जंघुण सुणेहि मज्झ | जे | १०५ | जलहिसमुत्तिण्णा | जे,क | ७ | गओ महं अपुण्णाओ | क |
| ४७ | °सुगमणो | जे | ७७ | अक्खणं | जे | १०५ | अणत्तिसिद्धा, साहू | ॥ | ७ | विमुक्काए | क |
| ४७ | खेयरे | क | ७७ | जमुणा | प्रत्य,क | १०५ | धम्मो उ मंगल ॥ | जे | ७ | दरिसणं | जे,क |
| ५१ | तस्स उ मं | जे | ७८ | सिलावरु | जे | १०६ | सिद्धि च जे सुं | ॥ | ७ | देहि | क |
| ५१ | पंच सया चेव | ॥ | ७९ | °त्तादीसु | जे | १०८ | सिद्धसिला | जे,क | ९ | पवणसुओ | |
| ५४ | हंसवरोवहीय निग्घोसो | ॥ | ७९ | भोगाई | ॥ | १०९ | सुग्गीवादी | जे | ९ | पुच्छई | जे,क |
| ५६ | वीओ | ॥ | ८० | सो, पवं भाईहि | ॥ | ११० | पडिमाओ | क | १० | अह भणइ तत्थ दूं | ॥ |
| ५७ | °णो य नां | ॥ | ८२ | देसकाले | ॥ | १११ | °पुरि | जे | १२ | सरेण | |
| ५७ | बिइओ | क | ८४ | °ग्गी तेण तो सं | ॥ | ११४ | विरहे तणुयंगी | जे | १३ | वसणसमगं | जे |
| ५८ | °मादिपहिं | जे | ८५ | नीसंसय | क | ११४ | विरहुतावियगी | क | १४ | कमलरामा | ॥ |
| ५९ | तो कि वहइ सपक्खं | ॥ | ८७ | छडुद्धिति | जे | ११५ | वयोधिडा | जे | १५ | दयगयतुरयसं | ॥ |
| ६० | जंपिएण | क | ८७ | गेणइ | जे,क | ११५ | °हो होइ | ॥ | १६ | किंकिधिं | क |
| ६१ | इमाओ | जे | ८८ | निययभवणं | जे | ११६ | सामे | जे | १६ | °ओ वओ | ॥ |
| ६२ | °हि तुमं अं | ॥ | ८९ | नरेइभं | जे,क | ११८ | निययं | ॥ | १७ | सो तह य कहे | जे |
| ६२ | कारणं | क | ८९ | पाडहिं | जे | ११९ | तस्स उ वयणाण | क | १८ | इज्जंतं | क |
| ६३ | °इ तंथ वसइ मं | जे | ९७ | नरं देण | जे,क | ११९ | °ण नामिओ सं | जे | १९ | °रादिपहिं | जे |
| ६३ | नामेण बंधुदत्तो | ॥ | ९१ | सरवरे | जे | ११९ | अप्पिहिइ | ॥ | २० | पीतम्बरं | ॥ |
| ६४ | अह बंधुदत्तमिं | ॥ | ९१ | , तं चिय सुइल- | | ११९ | अप्पिही | क,सु | २१ | °अंगसंगयं | ॥ |
| ६४ | विसालभूइ | क | | इखणं वलयं | जे | १२० | सामन्तं | जे,क | २१ | °मादीया | ॥ |
| ६४ | विसाहभूइ | जे | ९२ | पविसेऊण | ॥ | १२१ | देसकाले | जे | २१ | वेदंतां | जे,क |
| ६५ | °ण तेण नें | ॥ | ९३ | सहेण तेण भीओ, | | १२१ | कया वि लं | क | २३ | सुयं अम्हि माहपं | जे |
| ६५ | °हि पुत्तेणं | क | | नयरजणो पत्थिओ | | १२२ | पि ह खे | जे | २६ | य अकज्जो इहं | ॥ |
| ६७ | तं देससमागओ | जे | | य भइसहिओ । | | १२२ | पि हु खे | क | २७ | पसाहेमो | ॥ |
| ६८ | °ण वरतहं | क | | उम्मूलेइ तरुवरं, | | १२३ | पसाहेइ | जे | २९ | °नयरं | क |
| ६८ | , मुक्को सो बंधणाउ | जे | ९३ | अं | जे,क,सु | १२५ | नयमइणा | ॥ | ३१ | मणिजसु | जे |
| ६८ | पहिएणं । वुट्टो | जे | ९३ | तरुवरे, | क | १२५ | किं पि गं | जे | ३१ | णेवुइं | क |
| ६९ | विणो अतीव तूरंतो | ॥ | ९४ | जुइं | जे | १२५ | किं पि मणन्तेण | क | ३२ | धरेजासु | ॥ |
| ६९ | मयूरसं | ॥ | ९५ | °हिलाओ | क | | इइ पं | जे,क | ३२ | वि समागमहेउं | जे |

अधिकगाथा—दूरे वि तत्र दूरे,
सज्जन-द्विययाइ जन्धमिलियाइ ।
गयणद्विओ वि चंदो, आवा-
सइ कुमुयसंकाइ ॥ जे

२३ दुल्लभो ”
२३ दुल्लभयरं जे,क
३५ णि व मज्झवि, क
३५ मज्झय, जे
३६ ई मणभिरामं क
३६ सेसे वि ,
३७ यच्चं ति जे
३८ समयं चिय नियय-
सेजेणं क
३९ वगारजोगं ”
इइ पं जे,क
नाम पच्चं जे
सम्मत्तं ”

उद्देश-५०

१ महेंदणयरं क
१ नयरं जे
२ एत्थ ”
३ उदरत्थे क
४ पुण्णेणं ”
४ पुण्णेषु जे
७ सुणिरुण जे,क
९ महेंद्वसें क
९ रायतणओ क
११ जुज्जे जे
१४ य अं हुं ”
१६ ँण तो सो. ”
१७ तुह पुण ”
१७ किंकिधि क
१८ नहयलं जे,क
१८ लंकाभिमुहो ”
२० बहुपडहं जे
२२ ँण जे पुक्कं ”
२२ वल्लभा ”
इइ पं जे,क

नाम पच्चं
सम्मत्तं

उद्देश-५१

६ मुणिणो उं क
८ सयासं ”
९ वरेंदे जे
९ मारुदं ”
९ कण्णाओ क
१० ँन्ताणं क
१० अम्हाणं जीं ”
१३ बीया जे
१३ ँपमि ति ”
१५ अलभन्तो ”
१५ ँरोहोज्जुयमतीओ ”
१७ ओ निहणइ रणं ”
१७ , इमाण तुज्झं
दुदियराणं क
१९ ँहि विजाए, ण ”
१९ लद्धा तेहि सहस्स हं जे
१९ सारेंसु क
२१ सगगकरणं जे
२४ देसागमणं ”
२५ धेत्तुण जे,क
२५ निययागमकां जे,क
२६ तइल्लोकं क
इइ पं जे,क
लाभविहाणं जे,क
नाम पच्चं जे
सम्मत्तं क

उद्देश-५२

१ संसुहो क
२ नमेण जे
१ सुहेण क
३ तो पवणयस्स ”
३ यस्स साइइ संति
महामंति नाम नामेणं जे
३ पगारो ”

जे ४ पिच्छइ क १० ँकरठवियं क
क ५ विमुक्कहुंकारं क १२ यणं चेत्त ”
५ ँघणस्स व सरिसं, ” १३ वरुज्जाणे जे
५ ँसरिसरावं, जे १४ यवरो । ”
६ पविसरइ ” १७ भणियमित्तो ”
७ पहारेण जे १७ वरकणयं क
८ ओ कुदो जे १७ लाभरणो जे
९ सिज्जणं क २० कहं, सो सुभं कुणइ, ”
१० तत्तलणेण क २१ सोयमुवगया ”
१० पिच्छणयं ” २२ दिट्ठो सहलक्खणेण
१२ दट्ठुण पीइवहं, जे ते पउमो ”
१५ भिण्डिमालाई ” २३ णे उ सों ”
१६ छित्तुण क २४ भूयस्स
१६ पेच्छइ अ सरिसक्खं जे २४ सुदओ एत्तो ”
२० सुंजए एं क २५ परिणाओ ”
२० लो हवइ क २५ उप्पणा क
२४ घणादीए जे २६ कहेह जे
२४ ँपुरसरिसं ” २८ पिच्छिं क
२५ समयं च । क २८ चेइ व ”
२६ पुंरि जे ३४ वि पत्तो जे,क
२७ कए य तस्म उवं ” ३५ आगओ थ
२९ पियसंजमं क ३५ किंकिधे क
२९ मिणेहं विमलं जे ३५ कइभूयदेहं क
इइ पं जे,क ३५ कइवयधदेहं जे
हणुव-अंकाकआलाभ-
विहाणं ? ३६ वत्ताते रं ”
ककालंकां मु ३७ तुमे न ”
नाम पच्चं जे ३७ कज्जसिद्धी
सम्मत्तं क ३८ वादी ”
उद्देश-५३ ३८ विवेयणो ”
३८ मे कां ”

उद्देश-५३

२ भणिओ अं कारणं जे
४ नरेंदो ”
५ ,दहमुह । परं क
६ सुरेंदं जे
७ मए वुत्तो । नेच्छइ
य तत्पभूइ न य देइ
य मे समुल्लावं ”
८ भणमि जे,क
८ मर्ती जे
१० पिच्छइ क

३९ तुमे समप्पिहिई ”
४० सुणिरुणं पं क
४० नन्दणी जे,क
४० कित्तिय क
४० मह पइस्स ”
४२ नन्दणी जे,क
४३ खीगोयरेहि जे
४४ याणसी जे,क
४५ वृयसं जे
४६ भल्लीणो क

| | | | | | | | | | | | |
|----------|-------------------|------|----|---------------------|--------|-----|--------------------|-----|-----|------------------|--------|
| ४६ | कारणोगओ एत्थं | क | ७९ | दुमा ज्जहिया | जे | ९२ | वन्त वि सुरा, | क,ख | १२० | सिद्धो एयं पहु | जे |
| ४६ | णामओ एत्थं | जे | ७९ | रत्त कोरेंटया | ,, | ९२ | कुंम निकुंभं | जे | १२१ | कहिति | ,, |
| ४६ | तो तुह पाणे अवहरइ | ,, | ७९ | कडा धायई | ,, | ९३ | लतइलोके | क,ख | १२१ | सन्तिए दोसे | क,ख |
| ४७ | तो पच्चुं | क | ७९ | पाउला विळं | क,जे | ९४ | सुहं मह देइ कुम्मं | क,ख | १२१ | परेमिओ | जे,क,ख |
| ४७ | अवट्टिया | क | ७९ | नरगोहवभा तह | जे | ९४ | सकयकरमहं | क,ख | १२१ | दूतो | जे |
| ४८ | सोऊण | जे | ७९ | साहारा बहू | क | ९४ | पिययमस्स ॥ | क,ख | १२२ | महंइ | क,ख |
| ४८ | जइविस्सुयं | क | ७९ | खण्डण्डा लहुं | जे | ९५ | य से महां | जे | १२३ | ओ पवरतिण्ण | |
| ४९ | वत्तारधणुं | क | ७९ | खण्डण्डा लहुं | क | ९६ | तं हणह | ,, | | कण्णाओ | जे |
| ४९ | गहिया य कं | जे | ७९ | तुडंगा फुडन्ता | जे | ९६ | महावेरी | ,, | १२३ | किंकिधि | क,ख |
| ५० | जस्स य लं | ,, | ७९ | चला पल्लवा | ,, | ९६ | करेइ इह | ,, | १२४ | गणुण वं | जे |
| ५० | वि य रिक्खण | जे | ७९ | ललन्तपल्लवा | क,ख | ९६ | करेमिह निं | क,ख | १२४ | सुहो सो य मारिओ | |
| ५३ | यरीए रुट्टाए । | ,, | ७९ | लोलमालाउलासुक- | | ९७ | रायं विन्नं | क,ख | १२५ | सिग्घ | जे |
| ५४ | उज्जुयाओ हं | ,, | ७९ | सोहा फिडंता फलोहा | जे | ९७ | तुमे पाहं | जे | १२५ | निययसिग्घं | क |
| ५५ | च्छियाओ | क | ७९ | लोलमालादलोम्मुक- | | ९८ | उकंपउट्टुपउरं | क,ख | १२५ | तरवराहं | |
| ५६ | विया पारणं कुं | ,, | ७९ | साहा | क,ख | ९८ | जोईगणं | ,, | १२६ | स्साइं क्खुं | ,, |
| ५७ | अह इच्छिए | ,, | ७९ | पुप्फविट्ठि | ,, | ९८ | अणेहि | क,ख | १२६ | मवूड-वालां | ,, |
| ५९ | वल्लित्ते | ,, | ७९ | गोणहऊण | ,, | ९९ | मम सं | जे | १२७ | संक्कन्ताम् | क,ख |
| ५९ | पवराहारं | जे | ७९ | सोहमत्ताउले पेमं | जे | १०१ | तयो रहे समां | ,, | १२७ | पारेसु | जे |
| ६० | भोयणा सा, | क | ७९ | पेच्छई भां | क,ख | १०१ | वरमगो | क,ख | १२८ | अव्याणमं | जे,क,ख |
| ६१ | रिसअंगफरिसं | जे | ७९ | पाइकमुल्लतकच्छुल्ल- | | १०४ | रहसभरियउं | जे | १२९ | दूयन | सु,क,ख |
| ६१ | ङ्गफसं | क | ७९ | सेणासुहं | जे | १०४ | घाएन्ति | क,ख | १२९ | राणं जं कुणसि तं | |
| ६२ | न वच्छ तत्थ | जे | ७९ | वलन्तसेणासुहं | क | १०६ | इन्द्रियभडेहिं | क | १२९ | अविसेमो सि तुमं | जे |
| ६२ | मरणं वा होही इहं, | क | ८१ | धणवन्तं | जे | १०७ | विदिण्णदेमं | जे | १३० | सियमणो | क |
| ६२ | होउ इहई | जे | ८३ | गिरायरेऊण | क,ख | १०७ | विदिण्णदेहकंकडा | क,ख | १३० | निययकम्मं | जे |
| ६२ | रामोव्व | जे,क | ८३ | निवारणऊण | जे | १११ | चलन्तचारुचामरा | क,ख | १३२ | उवगारं | क,ख |
| ६३ | किंकिधि | क | ८३ | सुहडे | ,, | १११ | गया निसायरा | जे | १३३ | पंचमुही किण्ण | जे |
| ६६-६७-६८ | माथाः न लमन्ते | क | ८४ | पलालं | क | ११२ | पडेन्ति | ख | १३३ | किण्णु कों | क |
| ६८ | अइ उप्पलकरेणं | जे | ८५ | तुंगाणि | क,ख | ११३ | विणट्टकं | जे | १३३ | णीइ पसां | क,ख |
| ६९ | पहे | ,, | ८६ | चलणेसु | जे | ११३ | महाभडा | ख | १३६ | समाहुकलिं | क,ख |
| ७० | नदीप | ,, | ८६ | मयापहारां | जे,क,ख | ११४ | घाएऊणं | जे | १३७ | तित्तो | जे,क,ख |
| ७० | लाभिया | ,, | ८६ | विवडन्तं | क,ख | ११५ | वि पत्त तं सरणिवहं | | १३७ | विणिस्मिं | क,ख |
| ७१ | सकिंचना | ,, | ८६ | विवडन्ति रं | जे | ११५ | रिवूहि परिं | क,ख | १३८ | नरस्स निं | जे |
| ७२ | णी मए लं | क | ८६ | ताणि पाडेइ | | ११५ | रिवूण परिं | जे | १३८ | पुक्ककयं | जे,क,ख |
| ७२ | कयद्धय | जे | ८६ | महिवेडे॥ | क,ख | ११५ | छिजइ | ,, | १३९ | कुणइ संं | क,ख |
| ७२ | राभिन्नाणं | ,, | ८६ | ताणि इह | | ११५ | निसिमंदअडेहिं | ,, | १३९ | सहस्साइं | जे |
| ७३ | मिहइ | क | | कणयणंताइं | जे | ११७ | सुच्चइ | ,, | १४१ | अह रुट्टो | ,, |
| ७३ | भोयं | जे | ८७ | खण्डाइं | क,ख | ११७ | असियर मिहेहिं | ,, | १४२ | लपरिबद्धो | क |
| ७४ | उव्वेगं | क | ८७ | इंताउह इत्ताणि व | जे | ११९ | दिडबद्धं | ,, | १४७ | तोरणवरं लं | क,ख |
| ७७ | मारेहिं | ,, | ८७ | खंभा हं | ,, | ११९ | मम पिं | क,ख | १४७ | छिन्नूण | क |
| ७९ | कोरेंटया | जे | ८९ | तोडन्ति | क,ख | ११९ | दुट्टो | जे | १४७ | वच्छइ | क,ख |
| ७९ | देवदारं | ,, | ९० | रावणो | जे | १२० | सिद्धो | क,ख | १४८ | किंकिधिं | ,, |
| | | | | | | | | | १४८ | तुहं निच्चं | ,, |

| | | | | | | | | | | | |
|------------------------------|-------------------|--------|----|-------------------|--------|----|----------------|--------|----|-------------------|--------|
| १४९ | विभवायकित्ती | क,ख | २० | संगमसोण्डीरा | ख | ५ | तिद्वयणे सयले | जे | ३१ | विभीसं | जे |
| १४९ | षितुद्धा | जे | २१ | केलीकिलो | क,ख | ६ | तणय | जे,क | ३२ | अंशं पि पं | , |
| १४९ | पापयन्ती | ,, | २२ | चाईरइ सीहं | जे | ६ | इमाइ | क | ३४ | पसमणो | जे,क,ख |
| | इइ पं | जे,क,ख | २३ | रो श्रीरो | क,ख | ७ | इन्ध | ,, | ३५ | गिरिभूदी गोभूरी | क,ख |
| | लंकाह्रिमणं मु,जे | क,ख | २४ | महेन्द्रकेऊ | ,, | ७ | हरसमिद्धि | ,, | ३५ | जुवाणा मिसे | जे,क,ख |
| | मणं तिप्पनासइमं | क,ख | २४ | पवणगती | ,, | ८ | इन्दई तओ भणइ । | जे | ३५ | सुरा महिला | जे |
| | नाम पव्वं | जे | २४ | पते | जे,क,ख | ८ | अहिगारो | ,, | ३५ | मदी | क,ख |
| | मन्मत्तं | क,ख | २५ | मज्झथो | जे | १० | ऊण पडिसत्तुं | ,, | ३६ | हेमं ओयणञ्चं, | जे |
| | उद्देश-१४ | | २५ | भिउडीकुडिलाय- | | १० | ऊण अरिसत्थं | क | ३७ | विदणं सहो | ,, |
| | | | २६ | मुहो | जे | ११ | वसुमतीप | जे | ३८ | पि य वक्खणं | ,, |
| | | | २६ | चित्तण | क | ११ | सुंचइ | जे,क,ख | ३९ | अहदेव | ,, |
| १ | किंकिधि | क,ख | २६ | देइ इ | | ११ | , विहा | जे | ३९ | महादेवा | ,, |
| २ | नमरविणएण एत्तो | जे | २९ | सेतो | क,ख | १२ | विभोसं | जे | ३९ | अवणा | ,, |
| २ | समरवलियाण मु,क,ख | | ३० | वरेंद्रो | जे | १२ | ततो | क,ख | ४० | चित्तण | क |
| ४ | वरुज्जाणं | क,ख | ३० | सुरभिगंधो | क,ख | १२ | पूरयस्सि | जे | ४३ | लएणित | क,ख |
| ५ | सुंचेता | क,ख | ३० | पवणां सुरहिसुयंधो | जे | १३ | यं वि पं | क,ख | ४४ | लोभेण | जे |
| ५ | उण्हवीहनीसासे | जे | ३० | अह्णिणवयं तां | जे,क,ख | १४ | घरपागारं | जे,क,ख | ४४ | सहोवरणं | क |
| ५ | उंमणं | ,, | ३० | पयासिति | जे | १४ | इ करेसु | क | ४४ | जह य गिरीगोभूई तह | जे |
| ५ | विचिन्तन्ती | क,ख | ३१ | पसाहिति | क,ख | १४ | इ सुरेसु | ख | ४५ | साहितं | क |
| ६ | अंगुलेयो | जे | ३२ | पते | ,, | १५ | तुम्हेहि न जां | जे | ४६ | सिट्ठे | जे,ख |
| ६ | कुसलमादी | ,, | ३४ | किंकिधिं | ,, | १६ | पणयं | ,, | ४८ | माद्रिपडिं | जे |
| ७ | परमपमोयागया | क,ख | ३४ | इणां बहुया | क | १६ | उहादीया | जे,क,ख | ४८ | हिं चि वां | क,ख |
| ७ | पुणो च्चिय | ,, | ३५ | पते | क,ख | १७ | तडेव वेळं | जे | ४९ | दियहे | ,, |
| ९ | साहिजाणो पवत्ताए | क | ३५ | आपूरमाणगयणं, | जे | १७ | संझायारा | ख | ४९ | णं तस्थ वं | ,, |
| गाथाधिकं- जइ वि तुमं परदेसे, | | | ३५ | गयणं | क,ख | १७ | दीवाविवा | क,ख | ४९ | लंकाभिमुहा | जे |
| अंतरिओ गिरिवरेसु तुंगेसु । | | | ३७ | वरादीसु | जे | १९ | आमरिसवसगएणं | जे | ५१ | मेइणिभा | क,ख |
| तहवि तुमं समरिज्जमि, जहा | | | ३७ | लंकाभिमु | क,ख | १९ | स्स उवट्ठिओ | क,ख | ५२ | गंधव्वा गीयरवा, | |
| सरं रायहसेहि ॥ | जे | | ३८ | लोगपालेहि | जे | २० | भाणुकण्णेहिं | क | ५२ | सुव्वय तह | जे |
| १० | जं तुम्भ तीए | क | ४३ | लंकाभिमुहा | क,ख | २१ | निक्खामउ | जे | ५३ | सोया वि | जे |
| १० | जं तीए तुज्ज सं | जे | ४४ | सायरजलस्स | जे | २२ | भणियमित्तो | क | ५३ | बहुणा य | क,ख |
| १० | तो मे मरणं खुवं | ,, | ४५ | नयरस्स समां | जे | २२ | भणियमेत्ते | जे | ५४ | ससिनामा | ,, |
| ११ | सागरपडिया | क,ख | ४५ | जिणिरुणा | क,ख | २२ | विभीसणो | ,, | ५४ | भाविसालीया | क |
| ११ | दुक्खेण गं | जे | ४७ | विट्ठणो | क | २२ | वरपुरीओ | ,, | ५५ | जोइसडण्हा | जे |
| ११ | दियहे | क,ख | | इइ पं | जे,क | २३ | घोरो य | क,ख | ५६ | पते | क,ख |
| १२ | पडिवत्तं | ,, | | नाम पव्वं | जे | २३ | कालायमं | ख | ५६ | उहादीसु | जे |
| १२ | समुत्थयं | क | | चउप्पजं | क | २६ | गिण्हइ | क,ख | ५६ | पूपति | क,ख |
| १२ | यं वि विडुं | क | | सम्मत्तं | क | २७ | विभीसणेणं | जे | ५७ | अक्खोहणी | जे,क,ख |
| १४ | देह मणं | जे | | उद्देश-५५ | | २७ | सिओ पुरिसो | ,, | ५८ | ,, | क,ख |
| १७ | गरुयं | जे,क,ख | | इतो लं | क | २८ | कारणट्ठे | ,, | ५९ | सहियं | जे |
| १८ | पागारा | जे | ४ | समुज्जुयं | ,, | ३० | मइसागरो | क,ख | ६० | पुण्णोदएण पुं | क,ख |
| २० | सत्तिकित्तिसुत्ता | जे | ४ | | | ३१ | सुउभेण | जे | ६० | अवन्ति | जे |

| | | | | | | | | | |
|----|---------------------|------|----|-----------------------|--------|-------------------|----------------------|----------------------|------------------------|
| ६० | य वि ह छिं | जे | ११ | अक्खोहणीए उ।जे,क,ख | ३२ | भवे य माली ण । जे | ८ | वज्जेसु य प्पईवाओ जे | |
| | इति पं | जे,क | १२ | ंभडा य तुं | क,ख | ३३ | हिब्बिय तहा | ९ | कुहरो ति खो, तह |
| | ंगमणं पच्चं संमत्तं | जे | १३ | ंका सत्तिलुया, | क | ३३ | कुंडकुंडो | ९ | चन्दाउहो |
| | ंहाणो णाम | ख | १३ | गहियदथा | जे | ३३ | ंमादीया | १० | संकरो य |
| | णाम ५५ पच्चं | क | १४ | घित्तणं | क | ३५ | ,तूरवरो | ११ | ओ य चलो |
| | सम्मत्तं | ,, | १४ | ंणं पियथम भणइ कं | जे | ३५ | कामवतो य | १२ | कालो, |
| | | | १४ | पहणिज्जसु | क | ३६ | अणंतरासी | १२ | कल्लिग चंदु सुउज्जुओ |
| | | | १५ | ंन्ना पियं नि | जे | ३६ | सिलिसुहो चेव | १२ | भीमो महारहो |
| | | | १५ | पट्टि | जे,ख | ३८ | ंलणो विय | १२ | सुसेणो |
| | | | १५ | उंगुट्टि | जे | ३८ | सीहविलंणो | १३ | य पंचो, |
| | | | १८ | अण्णा वीरमहिलिया, | जे | ३८ | सीहवलोगो छियंमो य जे | १३ | मणहरो महं |
| | | | १९ | तत्थ महिला, कंठे | क,ख | ३९ | पम्हायणो | १३ | मभा य सारो |
| | | | १९ | दोलायं | क,ख | ४० | पत्ते | १४ | रणक्खेवो |
| | | | २० | अह भणितं | ख | ४० | कित्तिया | १४ | रवणक्खेमो |
| | | | २० | ंवणुल्लावा | ख | ४१ | पत्तेसु | १५ | खोभो तहां |
| | | | २१ | मा मं घं | क,ख | ४२ | जोहपपयं | १५ | ंमादीया |
| | | | २१ | धरेह | जे | ४३ | आवुरंतो | १५ | पत्ते |
| | | | २१ | रणरसो | क,ख | ४३ | ग्र नहमगं | १६ | राया य भेंडमाली |
| | | | २१ | विच्छं | क | ४४ | वग्घ सहिएसु । | १७ | पवमादी |
| | | | २२ | ते वरसहडा, | जे | ४५ | ,उट्टिया | १९ | कण्णो जुज्जावंतो, |
| | | | २२ | रणसुहे | ,, | ४६ | अवसउणा | १९ | जणपेम्मो |
| | | | २२ | गिनुमहादण | ,, | ४७ | ंकरा जुद्धसंनद्धदेहा | १९ | जिणपेमो रहपेम्मो |
| | | | २३ | दोलालीं | क,ख | ४७ | विमलनहपहं णिमगया | १९ | रहयंदो सायरो य जिणं जे |
| | | | २३ | ंलीलायमाणरणमुहडा | जे | | सुरधीरा | १९ | जिणमयादी |
| | | | २३ | पावेत्ति | ,, | | इति पं | १९ | पत्ते |
| | | | २४ | बीय पुण सुं | ,, | | ंचरिते | २० | नरेंदं |
| | | | २४ | ंपिम्मपडिं | क | | नाम पच्चं | २० | सविमाणट्टिया गयण- |
| | | | २४ | ंपेमपडिं | जे | | सम्मत्त | क,ख | ममो |
| | | | २४ | पिम्मेण | क | | | २२ | ल-दुमलां |
| | | | २४ | पेमेण | जे | | | २३ | ंमुइंगमहल उक्कां |
| | | | २४ | दोण्ह वि भावि भडो क ख | क,ख | | | २३ | ंमुइंगमहल काहल- |
| | | | २५ | ताण असेण | जे | | | हुंकारं | जे |
| | | | २६ | पत्तेसु | जे,क,ख | | | २४ | मयपक्खि बहुविहो |
| | | | २६ | संधावेउ सुं | जे | | | विय । | जे |
| | | | २७ | मारीची | क,ख | | | २६ | भिया य वसुमई, |
| | | | २८ | गयारिबोहच्छा | ख | | | २६ | ंवसुमतीए |
| | | | २८ | गयारिबीमच्छा | जे | | | २७ | समणुण-भावेण |
| | | | २९ | निनाओ य सुद | ,, | | | २९ | सारिता |
| | | | २९ | अग्गाओ | क,ख | | | २९ | ंवहोउज्यं |
| | | | ३१ | जोईसरो कियंतो | जे | | | २९ | ंमतीया |
| | | | ३१ | कुलिरउवरो य | ,, | | | ३० | कइत्तिमं |
| | | | | | | | | | क |

उद्देश-५६

उद्देश-५७

| क्र.सं. | शब्द | प्रकार | नाम | पञ्च सम्मतं | क | १८ | °तो, अवट्टिओ | जे | ३९ | °सरसत्तथाएसु | क,ख |
|---------|-----------|--------|-----|------------------|-----|----|---------------------|--------|----|----------------------|--------|
| ३१ | विवाइन्ता | क,ख | | | | १८ | °सुत्तिमो | क,ख | ४१ | गाइं चिय भइ- | |
| ३१ | विवायंता | जे | | | | १८ | °धारातो | क,ख | | सिदणं सिदिली | |
| ३३ | सिन्नं | क | | | | १९ | °णरेदं | क,ख | | अंगाण णिवड्ढति | क |
| ३४ | तह वि पं | जे | १ | °पहएथे | क,ख | १९ | हणुवां | क,ख | ४१ | विवड्ढन्ति | जे |
| ३५ | °सिन्नं | क | १ | णिहए णाऊण | " " | २० | °ओ पहओ वं | जे | ४२ | गया वि | " " |
| ३५ | णिवडन्तं | क,ख | २ | °रणो य | ख | २० | सो विरहो तो | कओ " | ४२ | ताण कएणं | " " |
| | इति पं | जे,क,ख | २ | °रणा सयंभू य | जे | २१ | रहं वलमो | " " | ४३ | विबुद्धं | क,ख |
| | °रथमडवहणं | जे | ३ | °णाभवेओ | क,ख | २१ | कोतसव्वलसरेहि | " " | ४३ | हणुयादीया | जे |
| | नाम पव्वं | " " | ३ | गम्भीरादी | जे | २१ | हणुवन्तेण | क,ख | ४३ | समच्छहाजाया | क |
| | संमत्तं | क,ख | ३ | °राइं सुहडा, | क,ख | २१ | वज्जोदरो | क,ख | ४३ | काउ समादत्ता | जे |
| | | | ३ | रणसमुच्छाहा | " " | २१ | णिहतो | क,ख | ४४ | अवलोइऊण | " " |
| | | | ५ | , सकेसाणंदया तथा | जे | २३ | उट्टियमितेण | क | ४५ | जुज्जे सं | क,ख |
| | | | ५ | नहणुपफत्याविग्घा | " " | २४ | धण्वरं | जे | ४६ | थेवन्नं | " " |
| | | | ५ | पए थ पियंकरा- | | २६ | °सुएण य तं | क,ख | ४८ | सिन्नं | ख |
| | | | | दीया | " " | २६ | °ण तो से, सीं | जे | ४८ | °यमितेण | क |
| | | | ६ | एककं | क | २६ | अलियणितं | क,ख | ४९ | सिन्नं | क |
| | | | ६ | जलइ व्व | क,ख | २७ | सिन्न | क | ५१ | तुरएण | जे |
| | | | ७ | पहिओ | " " | २८ | महोदरेणं | ख | ५१ | तुरएहिं | क,ख |
| | | | ७ | वहिओ सीं | जे | २९ | सीहे | क,ख | ५१ | गएहिं | क,ख |
| | | | ८ | आभिहं | " " | २९ | °ह. हणुयस्स उवरिं | | ५२ | किंकिधिं | क,ख |
| | | | ८ | °दुट्टेन्तं | क,ख | | तु ते | जे | ५२ | एतो | जे |
| | | | ९ | पहिओ | " " | ३० | जहा केसा | " " | ५४ | करेमि एत्तो न संदेहो | " " |
| | | | ९ | वहिओ | जे | ३० | न जगन्ति | " " | ५५ | किंकिधि | क,ख |
| | | | १० | पत्ते | क,ख | ३१ | तं, हणुं वं | क | ६० | गयातो | क,ख |
| | | | १० | सुहडे | क,ख | ३२ | पीइकरो | जे,क,ख | ६१ | °त्थं. ईवइ सो माठं | जे |
| | | | १० | विवाइए | क,ख | ३३ | °पुत्तादी | जे | ६१ | सो वायवत्थेण | क,ख |
| | | | ११ | उभयआं वि सामं | जे | ३३ | गय-तुरगं | क | ६२ | वि अत्थं | जे |
| | | | ११ | °सिन्नसामं | जे | ३३ | °सेणं,पविसेऊणं समां | जे | ६२ | वारणत्थेणं | क,ख |
| | | | १२ | मंदइदमणो | जे | ३४ | व, असमत्थं चेव | | ६३ | मन्दोयरीय | जे |
| | | | १२ | विधी य | क,ख | | जोइस्स | जे | ६३ | विरहो भामण्डलो | " " |
| | | | १२ | संभूओ | क,ख | ३५ | वाणरेहिं भं | क,ख | ६४ | आवासं चेव | क,ख |
| | | | १४ | कोहेण व खं | जे | ३५ | अभिमुहिहो | क,ख | ६४ | अएणं नयरं | जे |
| | | | १४ | विसालो | " " | ३५ | अहिंसुहभूओ | जे | ६५ | °लो त्ति गाढं | क,ख |
| | | | १५ | 'ओ वि अं | क,ख | ३५ | रिबुमडाणं | जे,क,ख | ६५ | अिहणं | ख |
| | | | १५ | °ओवि य जह य हओ, | जे | ३६ | सुसेणमादी | जे | ६७ | निसुणेहि | जे |
| | | | १७ | पत्तं दं | क | ३७ | °णो वि अं | " " | ६८ | °संघट्टऊण | " " |
| | | | १७ | हणुवं | क,ख | ३८ | तरंगो | क,ख | ६९ | होहिइ | " " |
| | | | १७ | काही बं | जे | ३८ | विलक्खो | क | ७० | पत्ते | जे,क,ख |
| | | | १७ | बहुयाओ | जे | ३९ | वोससंतो | क,ख | ७० | दो गेयगा | ख |
| | | | | | | | जेपत्ते | | ७० | दो जीयगा | क |

| | | | | | | | | | | | |
|----|------------------------|--------|----|-----------------|--------|----|--------------------|--------|----|---------------------|--------|
| ७० | ंराण वस् | ख | ७ | से विन्तियं | क,ख | १७ | पसादेहि | .. | ५९ | ता ठाहि | क,ख |
| ७१ | ंओ चिय | जे | ७ | ंमिलेणवि, | जे | २० | ंकोवपं | क,ख | ६० | उसाहिं | जे |
| ७२ | पते | जे,क,ख | ८ | एयं रां | .. | २३ | धणुयं | .. | ६० | विभोसणं | .. |
| ७२ | मेण्हन्दि | जे,क,ख | ८ | ंकहाणुसता | क,ख | २६ | नलो सयंभूणं । | जे,क,ख | ६० | रिवूणं | जे,क,ख |
| ७३ | ओहेहि | .. | ९ | ण थं पिया | क | २७ | घडउवरं | जे | ६१ | जालाउला | |
| ७३ | अंगउकुमरो | जे | ९ | णेय करेन्ति | क,ख | २८ | अंगथो मयं कुद्धो | .. | ६१ | फुल्लिगणिहा | क,ख |
| ७४ | निवडंतं | .. | ९ | चेव पुत्ता | .. | २८ | अंगयं सया कुद्धो | मु | ६५ | आम्ब धणुं वलड | |
| ७५ | ंन्तआगएणं, आं | .. | ९ | ंलत्त-मिस्ता | .. | २९ | हणुय तो | जे | ६५ | कह वि तूं | जे |
| ७५ | ंविमाणसरमेसु | .. | ९ | मणूसस्स | जे | २९ | ंण्डलो महाकाली | .. | ६५ | ंण रणे कओ विं | जे |
| ७५ | लकखणविरा- | | ९ | हिओवदेसं | .. | ३१ | ंत्तिट्ठोत्तिं | .. | ६६ | ंरो वेम्हओ | .. |
| | हिया | जे,क,ख | ९ | विमलस्सहावा | .. | ३२ | ंनिनाएण | .. | ६७ | लोडिओ | ख |
| ७५ | आसासेन्तो | जे | | इइ पं | जे,क,ख | ३३ | मुज्जह आं | क,ख | ६७ | अण्णेण्णरहे | जे,क,ख |
| ७७ | जइ ठाविस्सए | .. | | समागमणं | जे | ३४ | जं पगहत्तं | जे | ६८ | य ण वि सां | ख |
| ७७ | ंस्सए णातो । | क,ख | | नाम पक्क | .. | ३५ | कोवि भडो | .. | ६९ | पुण्णेण रक्खिओ | |
| ७७ | किं मारिं | जे | | सम्मत्तं | क,ख | ३५ | साहेइ साहु पुरिसा | जे,क,ख | ७० | धिय, पं | जे |
| ७८ | मिच्छिणं | .. | | | | ३५ | विवडियं | क,ख | ७० | रक्खसाहमा एं | .. |
| ७९ | तो रणाउ | जे,क,ख | | | | ३५ | ंयं अन्तं | जे | ७० | सांतापहं | क,ख |
| ८० | ंत्तो नाह ! सुणसु मह ख | | | | | ३६ | ंतोसमणुज्जतो | जे | ७१ | ंलगो | जे |
| ८० | ंहि पासेहिं | | | | | ३७ | सामियकरणिजेसु य, | .. | ७१ | भणिउं | .. |
| ८१ | ंपुरहत्तं | क,ख | १ | ंजे सरपणि | क | ३८ | घापन्ति | जे,क,ख | ७२ | भणियं | क,ख |
| ८१ | किं जीवइ | जे | १ | ंपरिहृच्छा | ज | ३९ | केसुयकं | जे | ७२ | ंकां तं | क,ख |
| ८२ | लकखणो | .. | २ | ंल-तिलिमां | क,ख | ३९ | होति सं | क,ख | ७२ | मे टं रभा | जे |
| ८२ | उवसणो | जे,ख | ३ | समविभवो | जे | ४० | गलियहन्था | जे | ७३ | रुद्धा सोऊण सुया, | .. |
| ८५ | ंपहरणेण | | ४ | ंविहथद्धविघा | .. | ४० | लोलैति | .. | ७३ | निसासु सुत्तो, | .. |
| | पडिपुण्णा | जे | ४ | सवर सों | .. | ४२ | नियये निवायंति | .. | ७४ | निसासएन्तो, | मु |
| ८५ | वारुणाइ य अं | .. | ५ | ंलकुन्तेहिं | .. | ४४ | ंसं सत्थं | .. | | हियासा | ख |
| ८६ | देवगया लं | .. | ५ | गहणंकियं | .. | ४५ | भेमसुयगेहिं | | | इति | जे,क,ख |
| | इति पं | .. | ७ | सवरसामन्ता | .. | | वेदिओ पं | .. | | सत्तेसं | जे |
| | नाम पक्कं | .. | १० | ंमारीचीं | क,ख | ४५ | ंमावणं | .. | | ंपायाविहाणं नां | जे,मु |
| | सम्मत्तं | क | १० | ंचन्दक्खा | जे | ४६ | वइणत्तेयं | जे,क,ख | | नाम पक्कं | जे |
| | उद्देश-६० | | १० | विज्जवियणं | .. | ४६ | अत्थं च | | | संमत्तं | जे,क,ख |
| | | | १० | जीसुत्तं | क,ख,मु | | विसज्जियं पं | जे | | उद्देश-६२ | |
| | | | १० | सवरसूरा | जे | ४६ | अत्थं वीमज्जिय पं | क,ख | | | |
| १ | हणुमादिभं | जे | | समासूरा | क,ख | ४७ | इन्दईकुं | जे | १ | तालिओ | जे |
| | हणुमाइभं | क,ख | ११ | तंमि थ | जे | ४७ | ंदेहो. | .. | २ | पम्हत्थं | क |
| ३ | ंवेधणाओ से मुका | जे | १२ | दूरा ओं | .. | ४७ | गागपासं | क,ख | २ | ंसवेम्भली | जे |
| ४ | पउममडा | .. | १४ | जुत्तमेवं | ख | ५० | उक पिच जलैति | क,ख | ५ | जाणासिय विउयत्तं, न | .. |
| ४ | सिरिविक्खाई भं | .. | १६ | उज्जिऊण मियवंसं | जे | ५६ | गहडं समुट्ठीओ पुं | जे | ५ | ंत्तमित्तं | क |
| ५ | जायउस्सग्गा | क,ख | १७ | ंछणो मह सुणोहिं | .. | ५७ | आहिगारो | .. | ६ | तुह मे | मु,जे |
| ६ | साहेन्ताणं | जे | | विण्णणं । | .. | ५८ | ंरो, जेण तुमे ठाहि | .. | ८ | तस्सेवं | क,ख |
| ६ | तमतिमिरं | क,ख | १७ | ंलोनेसु | .. | | मह पुं | .. | | | |
| ६ | तमतिमिरवितिमिरयरं | जे | १९ | दहरहतणया | जे | | | | | | |

| | | | | | | | | | | | |
|----|-----------------------|-----|----|----------------------|--------|----|---------------------|--------|----|----------------------|--------|
| ८ | यं चैव फलं | सु | २५ | जीविही तु° | ” | १३ | देवरस्स | क | ४४ | वं, एवं सा गगं° | जे |
| | यं चैव फलं | जे | २५ | नरथेत्थ | ” | १४ | इरीहि वयणेहि । | क,ख | ४६ | अपरार्द्धगाथा नास्ति | ” |
| ९ | भारमित्तं | क | २७ | गोघरवराइं | ” | १४ | निसुणेहि | जे | ४७ | पूर्वार्धगाथा नास्ति | जे |
| १० | चिय नो फुहं | जे | २८ | पठमं च पइं° | ” | १५ | रं दरस्स | ” | ४७ | तत्तो य गिम्हकालो, | ” |
| ११ | सत्तुदमणेण | ” | २८ | पइउउ दारे | क | १८ | पायपडणावगओ | ” | ५० | ओ, इत्तो | क |
| ११ | वि न निक्कंसा | ” | २९ | विभीसणो | जे | १९ | असिम° | ” | ५० | परए ण | जे |
| | वि णो रुद्धा | क,ख | २९ | ओ वीरो | सु | १९ | सुरगीयपुरा° | क,ख | ५१ | दियहे | क,ख |
| १२ | निच्छिणं | जे | ३० | यंमो, कु° | जे | २० | वेलाककलं° | जे | ५२ | णितो | क,ख |
| १२ | णं, मे संती वज्जदलिय | ” | ३० | तह वि सु° | ” | २२ | महिडुहाए | ” | ५२ | पीईगोयरं | जे |
| | णिम्माया | क,ख | ३२ | होउ सरद्धओ | ” | २३ | जाओ विय गयसल्लो | क,ख | ५३ | ओगजुत्ता | ” |
| | णं, इयसत्तो वज्जदलिय- | ” | ३२ | रणपचंडो | ” | २४ | खेयरस्स संभंतो | क,ख | ५४ | पिच्छइ | क |
| | णिम्माया | जे | ३२ | गोयरे | क,ख, ” | २६ | फोडय-दा° | जे,क,ख | ५४ | अगयरेण | जे |
| १३ | धणुवं धित्तु° | क,ख | ३३ | चन्द्रासी | ” | २६ | मावीसु | जे | ५५ | णं जायतिव्व- | ” |
| १३ | चिरावहे | जे | ३३ | उत्तरवारं | जे | २७ | रं इह पुण नं° | जे | ५६ | संवेगो | ” |
| १४ | परिजणो | क,ख | ३४ | सत्तिमत्तसं° | ” | २७ | जाओ नी° | क,ख | ५६ | अगयरो | जे |
| १४ | यं विट्ठीसु | क,ख | ३५ | सत्तिवेसं | क,ख | २८ | य भगिओ कह | ” | ५६ | णोसारिओ | क,ख |
| १४ | यं रिद्धीसु | जे | ३५ | वसहेहि | क,ख | २८ | रोगविवज्जिओ | ” | ५८ | तीय दुक्खसंततो | जे |
| १५ | वेरियरोहं ण पिच्छंति | क | ३५ | हिय गं° | जे | २९ | सि तं जाओ । | जे | ५९ | चविऊण | क,ख |
| १६ | पक्कागी | जे | ३६ | सम्मज्जियं | ख | २९ | रोगाण | जे,क,ख | ५९ | दसरहं° | जे |
| १६ | पडिक्को | क,ख | | इइ | क,ख | ३० | समुज्जयं° | क,ख | ६० | चविऊण | क,ख |
| १७ | तुमं वं° | जे | | इई | जे | ३० | मतीया | जे | ६१ | चरणमुवज्जियं | ” |
| १७ | ठाही मं° | ” | | नाम पव्वं | ” | ३१ | सुयधिनियरेण दे° | क | ६१ | अज्जिऊण सं° | जे |
| १७ | मम पुं° | क | | पव्वं ॥ | क | ३१ | समयं पि णियजं° | क | ६१ | तेण इमा वि वि° | ” |
| १८ | भविस्सामि | जे | | उद्देश-६३ | | ३२ | गंभीररत्तो | जे | ६१ | पणासणी | क,ख |
| १८ | एक्कागी | ” | | | | ३३ | रं तो पुंडरीयं तु ॥ | ” | ६३ | विज्जो | जे |
| १९ | कुलोच्चियं | क,ख | २ | हिउज्जुओ | क | ३४ | तस्स वि गुं | ” | ६४ | सिट्ठी | जे,क |
| १९ | णं सएसि भां° | जे | ३ | चेट्टह | जे | ३५ | सुवइट्टनरां° | ” | ६४ | इरोगेणं | जे |
| २० | विभीसण | ” | ४ | लक्खवणेण सोगत्ता | क,ख | ३५ | वसुहिं, | क | ६७ | वच्चंत नयरत्तोओ | क |
| २० | विओइयं दुं° | क,ख | ५ | तुम्हे बद्धेहिं मज्ज | ” | ३५ | ,पलोहा अत्थचित्तेणं | जे | ६८ | वायं ॥ | क |
| २० | ण तुमे | ” | | किं छुट्टं । | जे | ३७ | चिय वेरिएहिं | ” | ७१ | आणेइ | जे |
| २० | दज्जइ | जे | ६ | लहुयगजेहिं बंधेहिं | ” | ३८ | पणलहुं° | जे,क,ख | ७१ | मेहेणं | ” |
| २१ | तुहु पुण | क | | महागओ | जे | ३८ | लहुयाय | जे | ७२ | ट्टिएणं | क |
| | तुहुं पुण | ख | ७ | पहयो | ” | ३९ | संकडंइयं° | ” | ७२ | मग्गे | जे,क,ख |
| २२ | रं, करंति | क,ख | ७ | नन्दणी | जे,क,ख | ४० | ता तत्थ | सु | ७२ | णं व त्विं° | क |
| २२ | पच्छा पुण मं° | जे | ७ | समोच्छइय | जे | ४० | तत्थ पुण्णरहियया | जे | ७२ | इइ | जे,क,ख |
| २२ | उभयेसु वि विरत्ता | ” | ८ | ण महासलिलं° | ” | ४० | तत्थ पुण्णरहियया | क,ख | | लाए पुं° | जे |
| २३ | वं पद्दामण्डल | ख | ९ | सुवुसि | क,ख | ४० | खणे | जे,ख | | नाम पव्वं | ” |
| २३ | चीयं मे रयह | क,ख | ११ | विसल्ल तुमं वच्चउ | ” | ४१ | एयारण्णमि | जे | | नम्मत्तं | क |
| २३ | परलोमं | जे | | वयणेण अम्मं पि | जे | ४२ | तारिसं विं° | ” | | संमत्तं | जे |
| २४ | सोवं तुमं | ” | १२ | देवरगुं° | क | ४३ | गुणागर | ” | | | |

उद्देश- ६४

| | | | | | | | | | | | |
|----|---------------------|----------|----|---------------------------|----------|---------|-----------------------|----------|---------------|----------------------|----------|
| १ | °ओ परमतुष्टो | जे | २६ | °सु मे णत्थि दोसोत्तिक, ख | ७ | °चिष्णं | जे | ३२ | पुहई निरवसेसं | जे | |
| १ | मसागमं कजे | " | २७ | तुष्टेण हि नां | जे | ७ | बन्धवपुत्ताण | " | ३३ | कष्णाहिं तिं | जे |
| २ | जम्बूणमाइं | " | ३२ | पिच्छसु | क | ७ | °ण होइ द्वियं सं क, ख | " | ३३ | इय भुञ्ज तइल्लोकं | " |
| २ | पेसेहि | " | ३२ | °रिसाई सपुरिस | जे | ८ | एयं भणिओ मंतीयणेण | " | ३४ | °सदयणो | " |
| | पेसेइ | क, ख | ३२ | सुवरिस | क, ख | | दहं | जे | ३५ | °गामनगरं | जे, क, ख |
| २ | °यसुए | क, ख | ३३ | विन्दिओ | जे | ९ | महोसहिं | " | ३५ | °समाउलं | जे |
| ३ | हणुवो | क, ख | ३३ | पावति जे° | क, ख | १० | पुच्छिओ | सु | ३५ | सामि | क |
| ३ | °ओ वि रा° | जे | ३३ | जीवो | जे, ख | १० | पत्थिओ संशोधितं जे | " | ३६ | वयणाणि | जे |
| ४ | साकेय° | " | ३४ | नियं ठाणं | क | ११ | °न्तो राहवं भणइ एत्तो | " | ३६ | पथमादी | जे |
| | सागेय° | क, ख | ३५ | हणुवो | क, ख | | | " | ३८ | इमाणि जं | " |
| ५ | उवणिज्जं | ख | ३५ | संपत्तो | " " | १२ | °ण णम्ह कं | जे | ३८ | कह वि न फिडिया | " |
| ५ | °न्तो य बो° | क, ख | ३६ | उवट्ठिया लं | जे | १५ | जले जलणे य जस्स क, ख | " | | पसहिलं | " |
| ६ | °हं एयं सं° | " " | ३७ | °करेहिं | क, ख | १६ | भागा | जे | ३९ | णेसुई | ख |
| ८ | सव्वे सां | क | ३७ | °ण व, | " " | १६ | तुमे | " | ३९ | तुमं दं | " |
| ८ | सागेयं | " | ३८ | आयं च नं | क | | तुहं | क, ख | ४० | भमिस्सामि | क, ख |
| १० | वच्छाहं | " | ३८ | समूससिओ | जे | १७ | °त्ते, अण्णं च सहोयरं | " | ४२ | °रिसाणि | जे |
| ११ | सत्तुज्जमाइया | जे | ३९ | संगीयप य तो | जे | | च मे भायं | जे | ४३ | विज्जा, | क |
| १२ | °तच्छिच्छ । | " | ४० | वियसियं | क, ख | २० | सुपरिमिओ यते अहयं | " | ४३ | °णविज्जो | " |
| १३ | लवणोयमन्तरे | " | ४० | °सियनयं | जे | २० | इमं पुहई | " | ४४ | °ण भोमहाहिवई | जे |
| १५ | °ए । एयं देइ मं | क | ४१ | मंदिरपं | " | २२ | दूतो | " | ४४ | समामण्णे | " |
| | °ए । एयं देहि मं | ख | ४३ | गयतुरंगा । | क, ख | २२ | °लाए सत्तं | " | ४५ | न कुणसि विरोहसि | " |
| १५ | देसि मं | जे | ४४ | रुवसंपज्जा । | जे | २३ | पुत्त सहो° | " | ४६ | ममं, | जे |
| १६ | पत्तेण | जे, क, ख | ४५ | सुपडिउत्तो | क | २४ | ण य सीयं से | " | ४६ | °वत्तं । नियय भुयासु | " |
| १६ | सित्तमित्तो | क | | सुपडिउत्ते | ख | | समपेमि | क, ख | ४६ | य तरिउ किं इच्छसि | " |
| १८ | चेव सा अण्णपुरिसस्स | जे | ४५ | परिणाइ | क | २६ | °रिसाई जं | " " | ४७ | °यरो व्व रणे । | " |
| १९ | °ण पवेसिओ | " | ४६ | पुव्वविज्जिं | जे | २६ | °विरुद्धाणि | जे | ४८ | समुक्खिवंतो | " |
| | °ण पवेसिओ मओ | " | | इत्ति | जे, क, ख | २६ | वयणाणि | " | ४८ | °णेणं तु | " |
| | दं क, ख | " | | °ल्लासमागमाहिविहाणं | " | २७ | °ए काहाविय किं | " | ४८ | लच्छिणिलएणं ॥ | क, ख |
| २० | सो कइगईए | जे | | सम्मत्तं | जे | | वा वि खिइसि | क | ५० | पवयण भडसमग्गं | क |
| | सो केगईठ | क | | सम्मत्तं | क | | °ए भाओ उ हं, | " | | इत्ति | जे |
| २० | °ओ महुरसरोवयं | जे | | | " | | कि वा | जे | | रामणदं | जे, क, ख |
| २१ | विमाणं | क, ख | | | " | २७ | वा विखिइसि | ख | | नाम पव्वं | जे |
| २२ | °कयादेवा | जे | | | " | २९ | दारुणं | जे | | पव्वं ॥ | क |
| २२ | °विमाणमिणं | " | | | " | ३० | °यं वूढं | " | | | |
| २३ | सललिय | जे, क | | | " | ३० | मणूसा | " | | | |
| २३ | °रेहि धुव्वंती | क, ख | | | " | ३१ | रुद्धो, | जे, क, ख | | | |
| २६ | इणुवन्तं | " " | | | " | ३१ | °मण्डलो | " " | | | |
| | | " " | | | " | ३२ | परिचयसु जं | जे | | | |
| | | " " | | | " | ३२ | भुञ्जइ पुहईं | " | | | |
| | | " " | | | " | | णिरवसेसं | क, ख | | | |

उद्देश-६५

उद्देश-६६

| | | |
|---|-----------------|------|
| १ | °मन्तिणो सहिओ | क, ख |
| १ | जइत्थे | ख |
| ३ | °न्तुं, अत्ताणं | जे |
| ४ | सहया य संगथा | " |
| ५ | °इ जोहिज्जइ | " |

| | | | | | | | | | | | |
|----|-------------------|-----|----|-------------------|--------|----|--------------------|--------|--------|----------------------|--------|
| १२ | दा कतो भदे जि° | जे | ४७ | लतइलोकं | क,ख | २४ | सुमरिय तं तं वयणं | ४७ | भएण वा | „ | |
| १२ | भदे व क° | ख | ४९ | विज्जे | | | न मए | जे | ४९ | हिसन्ति | „ |
| १३ | करेण कु° | जे | | नत्थित्थ | क,ख | २५ | पिच्छसु सेलं | क,ख | ५१ | पलोयंता | जे,क,ख |
| १५ | इय सु° | क,ख | ५० | जाव य म° | जे | २५ | पसादेण | जे | ५२ | रुद्धिरवरिसं | जे |
| १५ | अपिच्छ° | क | ५० | परिवारय | „ | २८ | उच्चयणिज्जे | सु | ५२ | सइसा सुखियाइं ताई स° | „ |
| १५ | परिमसि° | „ | ५० | त्तिधरं | „ | २८ | अकण्णसुइं | जे | ५२ | तडतडारावं | जे,क,ख |
| १६ | परिमसं | क,ख | | इति | „ | २९ | अंपिएण | „ | ५३ | पते | जे |
| १६ | जाणिऊण वा° | जे | | रूवसां | क,ख | ३० | कम्मोदपण | जे,क,ख | ५३ | लंकाहिवस्स | „ |
| १७ | पवणभडा | क | | रूवा नामपव्वं | जे | ३२ | ससिपौड° | जे | ५५ | विरिकरसं | क |
| १८ | चित्तमणकयं | क | | म अट्टसट्ठे पं | क,ख | ३३ | धिद्धि ति हो अं | जे | ५५ | सत्थाणि | क,ख |
| | चित्तमणि कया बोहे | ख | | सम्मत्तं | क | ३३ | ला जे तं | क | ५८ | ऊण एत्थ पयचारे । | जे |
| १९ | कुसुमवरपूयं | जे | | उद्देश-६९ | | ३४ | अणियभूमी | „ | ५८ | सत्तिकित्तिं | „ |
| २० | कालागुहं | क,ख | | | | ३४ | सरिया य कुं | जे | ५८ | उत्ते | क |
| २१ | सं तु दट्ठं | क,ख | | | | ३५ | व फुसइ मज्झ अं | जे,क,ख | ५८ | हरा | जे |
| २१ | न्ति विगवरायं | | २ | अज्जेव सुं | क,ख | | | | ५९ | णा इच्चवला | जे |
| | तिक्खत्तं पं | जे | ३ | एवं । वं | जे | ३५ | परमसत्तं | सु | ५९ | तुंमे त्रिं | „ |
| २२ | पविसरइं | ख | ३ | इं दो जो मं | ख | | परआसत्तं | जे | | तुज्जा विमलत्तिमत्ता | सु |
| | परिवसइ | क | ४ | सुच्चसु कोवालम्भं | जे | ३५ | उच्चियणिजा | सु | | इइ | जे,क,ख |
| २३ | पिच्छए | क | ५ | माटीया, | „ | ३५ | हं महं जां | क,ख | | रिए जुज्झकित्तणं | जे |
| २४ | समोडिओ डंभी | जे | ५ | खेयरे | क,ख | ३६ | एया वि° | जे | | नाम पव्वं | जे |
| २६ | ओ अहियं | „ | ५ | का मत्ता पां | जे | ३६ | विय न जां | क,ख | | णं णाम एयं | क,ख |
| २७ | सपत्ताई | „ | ६ | हरयं | | ३६ | सुक्कमियं | क | | संमत्तं | जे,क,ख |
| २९ | तो तरस संशोभितम् | „ | ७ | वसभो | जे,क,ख | ३७ | एमयरो तईया | क | | | |
| २९ | मालं | „ | ७ | ए व अं | जे | ३८ | परमजोहा | जे | | उद्देश-७० | |
| २९ | म्मायं | „ | ८ | त्तिलिमा° | क,ख | ३९ | जइ य सं | „ | | कडयं | जे,क,ख |
| ३० | जलन्ती° | क | ८ | तिलमां | जे | ३९ | लोमो | क,ख | २ | चिन्ताउरो | क,ख |
| ३० | अइदुरन्तो | क,ख | ९ | मियंकवं | जे,क,ख | ४० | केउं | जे | ४ | अपिच्छं | क |
| ३२ | इ तओ तिव्वं | जे | १३ | पविसइ | | ४२ | पव मुणिऊण | क,ख | ७ | सलया सदा | जे,क,ख |
| ३४ | गिणइइ | „ | १४ | णोउविट्ठो | जे | ४२ | सुमरिय | जे | ८ | लिमडण्णयं | जे |
| ३४ | अण्णणा वं | „ | १४ | अधुरय | क,ख | ४२ | परिमवं | जे,क,ख | १० | होही कं | „ |
| ३४ | कमेण | „ | १४ | मतेसु | जे | ४३ | धित्तं | क | १० | कडुमोसइं | „ |
| ३४ | परिहच्छो | „ | १६ | अट्टारसखजजुयं | क,ख | ४३ | मज्झाओ दो | जे,क,ख | ११ | वा सासय सुणाहि | „ |
| ३५ | आरोलियं | „ | १८ | रिबुजणां | जे | ४३ | दो अडे | जे | ११ | धरेहि | ख |
| ३६ | एकागा | क | २० | वाकम्पं | क,ख | ४३ | दो य अडे | क,ख | १२ | विभू सकुललं | सु |
| ३६ | यकागा | क | २० | यमित्तो | क | ४४ | ददनियलसंकलाबद्धं | जे | १२ | गोयरि-मं | „ |
| ३७ | यावयणं | क | २० | पउमुज्जाणं | जे | ४४ | लाहि पडिबद्धं | क,ख | १४ | पीतीप | जे |
| ३९ | पिच्छसु | क | २० | इव रावणो मुं | „ | ४४ | रघाएहिं हयं | „ | १५ | मो होइ भं | „ |
| ३९ | होहइ, | जे | २१ | सिद्धं | क | ४४ | मि अज्जीवियं अज्जं | जे | १५ | त्रि न कित्ति | „ |
| ४२ | होही पइ | „ | २१ | इ दुप्रहियया | ख | ४६ | निच्छिय | „ | १६ | यं, सो कोलइ उं | क,ख |
| ४४ | विज्जाभासणपं | „ | | इ दुप्रदुहिया | क | | | | | | |
| ४६ | कुणमाणं | ख | | | | | | | | | |

| | | | | | | | | |
|----|------------------------|--------|----|----------------------|--------|----|--------------------|-----------|
| १७ | विष्वे व विसमसीलं | क | ४९ | चक्राणमि | ” ” | २७ | तुरयषलमगो सुहडो | |
| १७ | वज्जेहि | ” | ५० | पज्जलिओ | जे | २७ | आसारुडं | जे |
| १९ | तुमे भा° | जे | ५० | निवहो | ” | २९ | उम्मिन्ना | क,ख |
| २० | रिधुपाय° | जे,क,ख | ५१ | मण्डल | ” | ३० | खगोण | जे |
| २१ | यम्मि तो | ” | ५१ | हं रमिज्जइ | ” | ३१ | करिणं | क,ख |
| २१ | एवं च भणियमेत्ते, सा | जे | ५२ | माणेमो | क,ख | ३३ | गयणं निरुद्धु | सव्वं, जे |
| | ईधावसमुत्तगया देवी | जे | | माणेमो | जे | ३५ | ण मलेण य, | ख |
| २१ | मं, किं सा° | ” | ५३ | सुमन्ध° | ” | ३५ | भूसणणाएण | क,ख |
| २२ | कन्नोपलेण | क,ख | ५३ | रिद्धिल्ले | ” | ३६ | निकुंभो | ” ” |
| २३ | संयन्धी | ख | ५४ | या मिधू | ” | ३६ | विककमणो य | जे |
| २५ | यमित्तो | क | | या सिधु | क,ख | ३६ | असणीनिवयाइणो | ” |
| १६ | य अत्तणो भणइ क° | जे | ५५ | इ मइ जु° | जे | ३७ | रक्खमसुहडा, | ” |
| २६ | तुह मज्झ | ” | ५५ | तह तह गाढ य रायं | ” | ३८ | भुयधरवलसमेया | क,ख |
| | तुम मज्झ | क,ख | ५५ | चतुर्थचरणं नास्ति | ” | | भुयवलवरसंमेया | जे |
| २९ | वसभो | जे | ५६ | केवलं चतुर्थचरणमस्ति | ” | ३८ | चंदुम्मि° | क,ख |
| २९ | सिद्धंतं गीयसुयं किञ्च | ” | ५७ | नेहाणुरुवाणं | ” | ३८ | चाहुंमिगरंगाई | जे |
| २९ | गीतियासु | क,ख | ५९ | ल-पुफ-ग° | क,ख | ३९ | कयकरग्गहघण° | क,ख |
| ३२ | यमित्तो | क | ५९ | धादिपसु | ” | ४० | हणुवो | ” ” |
| ३२ | पिच्छामि | ” | ५९ | विणिओवपरमो | ” | ४१ | पहारेहि हय | ” |
| ३३ | भणिप व° | क,ख | ५९ | मयणूसवो | ” | ४२ | पिच्छिऊण सव्व, | क |
| ३३ | बुहजणेण | ” ” | ६१ | पवित्थरइ | ” | ४२ | हणुवस्स | क,ख |
| ३४ | सोत्तिमो | जे,क,ख | ६३ | पहया अइगरुय | ” | ४३ | ण्णापूरि° | जे |
| ३५ | विजओ अयलसुहम्मो | ” | | मेहनिग्घोसा | ” | ४४ | ज्जचं देणं | क,ख |
| | य सुत्तपभो तह | जे | ६४ | वलकलिया | क,ख | ४६ | हणुवं | ” ” |
| ३५ | सणो नन्दी । | सु | ६५ | मारीची | ” ” | ४७ | हणुवं | जे,क,ख |
| ३५ | भणिओ य नंदिमित्तो | ” | ६५ | मादीया | जे | ४७ | हं तह | क,ख |
| | एमे महिवइणो | ” | ६६ | पव्वयसिहरोवमेसु | ” | ४७ | सरसतेहि | जे |
| | अइक्कन्ता ॥ | जे | | हत्थीसु | ” | ४९ | वाणासणीपहओ | ” |
| ३६ | पत्ते व° | क,ख | ६८ | पुरीओ | क,ख | ५० | हं वलमगो | ” |
| ३७ | तारकादी | जे | ६८ | ऊससियआयवत्ता | जे | ५० | सतेहि | ” |
| ३७ | इ नाह वि° | जे | ६८ | संपिलोपिल्ल | क | ५३ | व्वाउहो | क,ख |
| ३८ | ओगो | ” | ६९ | निनादेणं | जे | | दुव्वारुहो | सु |
| ४१ | वच्चिहसि | ख | ७० | वच्चन्ति घणा | क,ख | ५३ | किं ते न य रा° | जे |
| ४२ | त्ति, सा मे एकं समु° | जे | ७१ | समंत तुरयगयइंद° | क | ५४ | अज्जवि य पडिक्कहाओ | ” |
| ४४ | मउला | जे,क,ख | ७१ | तूरगईदसंकुला | जे | | अहवा | ” |
| ४५ | रो तुद्धेहि | क | ७१ | सहाउहा | क,ख | ५७ | तुमे | जे |
| | रो छुद्धेहि | जे | | इति | जे | ५७ | एय गलगाजियं तुज्ज | क,ख |
| ४६ | बहवे | क | | ए पओज्या विहाणं | ” | ५८ | एवं भणियुं | जे |
| ४६ | मित्तेणं | ” | | नाम पव्वं | ” | | एव भणिओ | क,ख |
| ४७ | पिच्छसु | ” | | सम्मत्तं | जे,क,ख | ६१ | णं सत्थं | ” ” |
| ४९ | मउलंति | क,ख | | | | | | |

उद्देश-७१

| | | |
|----|-----------------|--------|
| ६ | मुइम-तिलिमा° | क,ख |
| | सुइगरववहुल चव | जे |
| ६ | पहय च नामतूरं | ” |
| ७ | दस य सह° | क,ख |
| ८ | सुहडे सु° | ” ” |
| ८ | मादीया | जे |
| | माईसु । | क,ख |
| ८ | कहेहि ए° | जे |
| ९ | अलिकुलं | ” |
| ९ | विविहरयणसं | ” |
| १० | जम्बवन्तो | जे,क |
| १० | सालो | क,ख |
| ११ | ण लक्खणो भणइ ए° | ” ” |
| १२ | ण तेण सि° | जे,क,ख |
| १३ | रुम्मति | ख |
| १३ | परिहच्छा | जे |
| १५ | तोणीरो | क,ख |
| १६ | मादीया | जे |
| १६ | कई अंगा | ” |
| १६ | सुज्जुया | क,ख |
| १८ | सुपसत्था | ” ” |
| १८ | साहिति | क |
| १९ | ओ कुद्धो | जे |
| २० | किञ्जराणं, | क,ख |
| २० | नहयगणत्थाओ | ” ” |
| २१ | डफलहयखेडय° | जे |
| २१ | संति य रणभूमी, | ” |
| २२ | केवि भडा रह° | ” |
| | पायक्का रह | क |
| २२ | नाणाविह° | जे |
| २२ | अट्ठिभट्टा | क,ख |
| २४ | वारयति | ” ” |
| २६ | देहवडिया, | जे |
| २६ | ओवडियु तुरुडं | ” |
| ३६ | यंत जाला | क,ख |
| २७ | तुरयसममगो सुहडो | क |

| | | | | | | | |
|--------------------------|------|--------------------|-----|----------------------------|--------|----------------------|--------|
| ६२ धारासएहि | " " | ३० कावि | जे | तुज्ज रिबू, | क,ख | १३ को एथ मो° | क |
| ६३ °य अदरिसं र° | क | ३१ जणसंसय° ? | | २२ अइगारव सि बइह | | को एथ मो° | जे,ख |
| ६५ °हृन्ध धयाइकयसोहं | जे | ३४ विभीसणो | " | हृन्ध° | जे | पडिउदा | क,ख |
| ६५ पि हु दि° | " | ३४ हणुवो | क,ख | २३ खेयरेहि य, | " | काएथ | जे,क,ख |
| ६६ फणमणि° | " | ३४ कुहाडेणं | जे | २३ पइसामिह | " | उरताडण° | क,ख |
| ६६ निक्खित्तं | " | ३५ सेसे वि | " | २३ किं वा बहुएण भ° | " | °चमला तणुइअंगी | " " |
| ६७ चित्तइ विणा° | क,ख | ३५ °सएसु जोहेउं तं | " | २३ बहुत्तहिं भ° | क,ख | °लुम्पमाणा | " " |
| इति | जे | समादत्ता | " | २६ रुज्जंतं पि | ख | १५ रुवइ | " " |
| नाम पव्वं | " | °गयं सहस्सरं । | " | २९ सुत्तु व्व | ख | १५ कलुणसहेणं | जे |
| सम्मत्तं | क | ३७ परभवसुकय° | " | सत्तु व्व | क | °वच्छयले | " |
| | | परभवसुकय° | क,ख | २९ °त्थो व्व | जे,क,ख | °पल्लवा | " |
| | | ३७ इय व° | " " | ३० संपिल्लपेल्ल | क | सुमरण रोवती | |
| | | इति | जे | ३२ आपुच्छिउं पवत्ता | क,ख | वाहभरियन° | " |
| | | नाम पव्वं | " | ३३ तुब्भं | जे | १८ सत्तिकित्तिबल° | " |
| | | पव्वं ॥ | क | ३४ भागसेसस्स । | | १९ पि व दे° | क,ख |
| | | संमत्तं | जे | एकारतीय दिवसे | जे | १९ देहि मे समुल्लावं | जे |
| | | | | ३५ पूर्वाधिमाथा जे प्रत्या | | वयणिदु इमं सामिय | |
| | | | | ३३तम माथा पइचात् | | किं वारसि | जे |
| | | | | ३५ उज्जेवेउं | जे | २० वयणं दुमियं सामिय | सु |
| | | | | ३५ सतेउं | क | २१ अह ते | ख |
| | | | | ३५ भाणुं | जे | २२ वयरीहि | क |
| | | | | ३५ किण्णा | " | २२ मोपह राहवाओ | |
| | | | | ३५ चन्दी सुवेइ | " | गुण | जे |
| | | | | इति | " | २३ बहुवाण | " |
| | | | | नाम पव्वं | " | २३ दरिसणं चिम देहि | " |
| | | | | संमत्तं | क,ख | २४ °विगदूमियाइं | क,ख |
| | | | | | | २४ अणुगूहं | जे |
| | | | | | | २४ °साणुक्खेणं | " |
| | | | | | | २५ उहन्ति | क,ख |
| | | | | | | २५ °चतुयंक कारणाणि | |
| | | | | | | बहू । | जे |
| | | | | | | २७ रुवसु | क,ख |
| | | | | | | २७ लोगवुत्त° | " " |
| | | | | | | २८ विचेट्ठियं | जे,क,ख |
| | | | | | | २९ इमावत्था | जे |
| | | | | | | ३० णं वदिये ! | ख |
| | | | | | | ३१ सोगं | क,ख |
| | | | | | | ३२ अभिदमणो | " " |
| | | | | | | ३२ परिवसए | जे |
| | | | | | | ३२ रिबुसेअं | जे,ख |
| १ सुरभि | क,ख | ३७ इय व° | " " | ३५ एकेकमे वयणं ॥ | जे | | |
| ४ नहमिथया | जे,क | इति | जे | पक्केकिमं वयणं . | सु | | |
| ४ वामिस्सं | जे | नाम पव्वं | " | °व्वं, चक्कं व° | क,ख | | |
| ७ साहिनित्त | " | पव्वं ॥ | क | वि ह ना° | जे | | |
| ७ °सहिओ य मिहिलम्मि | " | संमत्तं | जे | पते म° | क,ख | | |
| १० होहइ हिय° | " | | | °सवत्था | जे | | |
| १० गती । | " | | | १० सुहकहुया | " | | |
| १० वि होइइ | " | | | १२ ओ, सो हं सं° | क,ख | | |
| ११ पलोपंतो | " | | | १२ करेमि | सु,क,ख | | |
| १३ रामस्स कणिहेणं इंतं | | | | १२ पडिगए | जे | | |
| विणियागयत्थं | " | | | १३ रावणं सवडिहुत्तं | " | | |
| १३ °विणयमच्छजोएणं | क | | | १३ एंतो | क,ख | | |
| १४ °रेहिं, रिबुसिज्जं तं | | | | १४ तुह प° | सु | | |
| दिमा° | क,ख | | | १४ °एण जं पहु सीयं | क,ख | | |
| १६ °यं । पुणरवि अन्नं | | | | °णं, जंपसु सी° | जे | | |
| सीसं विज्जाए तक्खणं | | | | १५ समप्पन्तो | " | | |
| चेव ॥ | क,ख | | | १५ माणभंजेणं | क | | |
| १७ °सु दोसु वि, | सु | | | १६ अवगण्णेऊण | जे,क,ख | | |
| १७ दुगुणे दुगुणे | क | | | १८ तुज्ज अ° | जे | | |
| १८ दोण्णि य जु° | जे | | | १८ जीवंतयरी | क,ख | | |
| १८ बाहाइं | क | | | १९ बहुएण भासियव्वेण | " " | | |
| २० असि चक्ककणयतो° | क,ख | | | १९ तुज्ज अरी, | जे,सु | | |
| २१ °निउहेहिं | जे | | | | | | |
| २२ सराण | " | | | | | | |
| २४ छिण्णइ लं | " | | | | | | |
| ३० °णं लक्खणो भणइ धी° | क,ख | | | | | | |

| | | | | | | | |
|------------------------|--------|----|-----------------|----|---------------------|--------|-------------------------|
| रिवृसिभं | क | २० | केई | ५३ | वि य अ° | क,ख,जे | |
| ३३ °ऊण सिवध, | जे | २० | गती व° | ५३ | मणूसा | जे | उद्देश-७६ |
| ३४ °रेणं पाणधरेणं | ” | २० | °न्ति नरा | ५३ | °रिया चेव खेत्तेसु | ” | १ महिद्धीया जे |
| ३६ होइ कयाई वि क° | ” | २१ | अवरे गेण्हति | ५५ | °लेसु उववजा | ” | ३ संपिन्नुपिल्ल° |
| कईभा य | क | २१ | गेण्हति | ५५ | मणुससो° | ” | संपेन्नुपेळ° |
| ३८ भणई पी° | जे | २४ | जइएसो वि मह° | ५५ | लयंति | ख | ७ °न्दणो कीरो जे |
| ३९ °हरे पुरं | क | २५ | वइराणु° | ५७ | °डिऊण य कम्म उ° | क | ७ जंबवतो ” |
| ४२ हु खयरविदा | ” | २५ | नियमा नर° | ६० | तस्स धण° | ” | ८ पउमादी ” |
| ४२ परिबोहिओ | जे | २५ | नियडे नर° | ६१ | पुरी भ° | ” | ८ °ह्हां । जे,सु |
| इति | ” | २७ | सो, तुंगे कुसु° | ६२ | इन्दुमई | ” | ८ आपूरेन्ता ख |
| पीइकरउवलकखणं | ” | २९ | पगमणो ह्योऊणं, | ६३ | °णाइसु तहेव कु° | जे | ८ आपूरिता क |
| नाम पव्वं | जे | | तस्साइसय° | ६५ | °म्मि य इन्दु° | ” | ८ नरेदपहं जे,ख |
| संमत्तं | क | ३१ | सुरेन्द° | ६६ | °निवडणाइ | सु | ९ °इ तो चम° जे |
| सम्मत्तं | जे | ३४ | सूरगाहा विय. | ६६ | निचैसणाइ | ख | ९ कहेसु ” |
| | | ३५ | छट्ठो विय होइ | ६६ | नियाणाइ | जे | कहेह क,ख |
| उद्देश-७५ | | ३७ | पतेसु | ६७ | अमरेंदु° | ” | १० पुफयदी जे |
| १ °न्ताणि | क,ख | ३९ | °विभूसियं | ७३ | विजये | ” | ११ °ण्णो गयणाओ ” |
| न्ताणी | जे | ३९ | वंदेति | ७४ | वि हुया | ” | १२ अत्रोमुद्दा जे,क,ख |
| २ °ण वयणमेयं | ” | ४२ | दुन्दुभिरवं | ७५ | °णा सा हु इमा मंदो° | ” | १३ सोमं जे,ख |
| ४ °णागइ° | क,ख | ४२ | °बलेणसहिओ, | ७५ | °णी वि वी° | क | १३ जायच्चिय जे |
| ४ °रादीसु | जे | ४३ | °मरिच्चि° | ७५ | °मतीया | जे | १४ रइ व्व क,ख |
| ४ सुरभिद° | जे,क,ख | ४३ | पते | ७६ | °णा जायतिव्वसं° | जे | १६ भुयपाससुमाणसा जे,क,ख |
| ४ लंकाहिवइ नरेदो, | जे | ४४ | मुणिमहाजस विणि° | ७६ | °वेगा । पव्वइया | ” | १७ सीयासमयं जे |
| ५ °कण्णादी | ” | ४६ | अतिलोभ° | ७६ | खायजसा, | क,ख | १७ °यमीसियं सुरभि ” |
| ६ नरेहिं आणाविया | ” | ४६ | वि हु, म° | ७८ | सोगसरा° | ख | १८ °लं । पंचाणुच्चय- |
| ७ °डो उ भा° | जे | ४७ | एतो य तमा | ७८ | °सवेहला | जे | धारी ” |
| ७ °मादीया | ” | ४८ | पतेसु | ८१ | मेइणीवइ | ” | १८ अगंपियं ” |
| ९ निययोगे । | क,ख | ४८ | चउरासीती | ८१ | °ओ विणिहओ | ” | २१ जाओ विह भा° ” |
| ९ सोमुञ्चेयं | जे | ४८ | चउरासीओ | ८२ | गिण्हइ | ख | २४ पते क,ख |
| १० अलाभि | ” | ४८ | निरयाणं | ८४ | करेन्ति | क,ख | २४ अणे वि बहू जे |
| ११ °उवदेसे | ” | ४९ | कुंभियागपुडपाणा | ८५ | अन्मुज्जुया | क | २४ अठ्ठासिऊण ” |
| १३ °सु अपुरत्तो | ” | ४९ | °पामपुड° | ८५ | पव्वं इन्दइ° | ” | २४ सीयां क,ख |
| १४ तक्खणे | ” | ४९ | °कोट्टणघण° | ८५ | भावाणंदपरा ह्वंति | ” | २५ °भूसियाइ क,ख |
| १५ रायसिरिं | ” | ५० | °रणिभा | ८५ | वसुहा ते | जे | २५ धरसुरभिविलेव- |
| १५ तडिच्चलस° | क | ५० | वज्जसरसु | | इति | ” | णाइ पउराइं । जे |
| १६ विजयेण | क,ख | ५१ | पतेसु | | इंदयादि° | ” | इति ” |
| १६ °बलाणमीहेय | जे | ५१ | निवसं | | नाम पव्वं | ” | नाम पव्वं ” |
| १७ °न्ति जसं इहेमि नर° | ” | ५२ | रसमेयणो | | संमत्तं | ” | पव्वं ॥ क |
| १७ बहूवे वि | ” | ५२ | °या दुहाभागी | | सम्मत्तं | ख | संमत्तं ख |
| १८ °इ धम्माइ सुच° | ” | | °या उ दुग्गामी | | | | |

| उद्देश-७७ | | | | | | | | | | | |
|-----------|------------------|--------|----|-------------------|--------|-----|-------------------|-----|-------------------|----------------|-----|
| १ | सीयापे | | २९ | तहा विसं | | ६३ | पाविही पुं | १०० | नरेदो | जे | |
| २ | सहिओ. जयं | क,ख | ३२ | तहि विसं | क,ख | ६४ | पिहरखंडं ति भं | १०३ | इह रिद्धितीलसं | „ | |
| ३ | संभित्तीयं | „ | ३४ | न्तिजणो | जे | ६५ | मारीचि | १०३ | मतीया | „ | |
| ४ | उत्तिन्नो | ख | ३६ | कणयकुं | „ | ७० | नरवर | १०४ | सुमारिराया | „ | |
| | उत्तिन्नो | क | ३६ | सणादी | „ | ७१ | मत्तगतो | १०६ | मि जह | „ | |
| ४ | ए संतिजिणं | „ | ३६ | रजाभिसेयं | „ | ७३ | धम्मगामाओ | १०६ | छुहात्तो | „ | |
| ५ | हिं सतुट्ठो | जे | ३७ | भारो अणुं | „ | ७४ | ला य अडं | १०७ | अलभंतो | „ | |
| ६ | पावणासणगं | क,ख | ३८ | मङ्गलत्थो | „ | ७४ | त्ता उ म्हां | १०७ | तत्तो हु विं | „ | |
| ७ | इहं समं | „ | ३८ | पुरिसच्चिओ | „ | ७५ | पुफवइके नयरे | १०८ | संजोगेण | जे,क,ख | |
| ७ | अन्भन्तरारि सेजं | क,ख | ३८ | पुरिसच्चिओ | ख | ७८ | तथ छिं | १०८ | गामेळं | „ | |
| | अन्भन्तर अरिसेजं | जे | ३९ | पुरिसच्चित्तं | क | ८१ | अमोघसरं | १०९ | तत्तो चिय कां | क,ख | |
| ७ | ज्ञाणजोगेणं | „ | ४१ | होइइ कयाइ | जे | ८५ | पुरे तस्स | १११ | गेहाणिओ | क | |
| ९ | दोण्ह वि | „ | ४१ | इन्दो य सुं | „ | ८६ | नामधेयो | ११७ | ततो द्विय | जे | |
| १० | रोगेण | „ | ४२ | दोगंदुओ व्व देवो | „ | ८६ | अहिद्धिऊण | ११७ | विमलं मह देह लंमे | जे | |
| ११ | मादीया | „ | ४२ | लयं होइ | क,ख | ८६ | अवद्धिऊण | | इति | „ | |
| ११ | सोगसमुत्थयं | जे,क,ख | ४३ | विलंबतो | जे | ८६ | तिरिवद्धणेण | | मउव | „ | |
| १२ | विसज्जा | जे | ४४ | वोलीणाइं | „ | ८७ | णिज्जिणिऊण एं | क,ख | नाम पव्वं | „ | |
| १३ | इय सं | क,ख | ४५ | साभिन्नाणे | „ | ८८ | विओ णेण | जे | संमत्तं | क | |
| १३ | लाणे | जे | ४७ | रुववई | क,ख | ८९ | ओच्छजे | क,ख | | | |
| १४ | मुयट्ठ | जे,क,ख | ४७ | वज्जयण्यवरकण्णा । | जे | ९० | एक्येराओ | जे | | | |
| १५ | सुविणं | जे | ४८ | वाल्लिखीलं | „ | ९० | दराइ | ख | | | |
| १६ | तुम्मे वि | क,ख | ४८ | कुंभूयण्यरां | क | ९० | होहिइ | जे | १ | पगंतं दुक्खिया | |
| १६ | तुम्हे हि कुं | जे | ४८ | कुव्वेयण्यरां | ख | ९१ | चारगभडेहि | क,ख | ३ | य सा भवणे । | जे |
| १७ | रहुवईय ते | क,ख | ४९ | पुहतीधरस्स | क,ख | ९१ | चोरभडेहि | जे | ३ | दाहामि | „ |
| १७ | य राहवेण ते | जे | ४९ | पुहईवइस्स | जे | ९१ | हि सहसा रत्ति विं | क,ख | ३ | तुज्जं | „ |
| १७ | सुयणं | „ | ५१ | उज्जेगीमादीए नं | „ | ९१ | विज्जासिओ | जे | ६ | पविमओ | „ |
| १९ | गया. रामं विं | „ | ५१ | रेसु य जाओ | जे,क,ख | ९२ | दइययं | „ | ६ | इय दुं | ख |
| १९ | अणुमगह घरे चलण- | | ५५ | कमेण गं | जे,क,ख | ९२ | अच्छए | „ | ६ | सिदिणे | जे |
| | परिसंगयं कुणह ॥ | जे | ५६ | गयाइं तं | जे | ९४ | न्द सुजीं | „ | ७ | चिट्ठीई | „ |
| २० | पसातो | क,ख | ५६ | मादीणं | „ | ९४ | पणवइ तं साहवो तुं | „ | ७ | अवइणो | क,ख |
| २४ | भघातीकं | ख | ५६ | गुणघराणं | „ | ९५ | दच्छो । | „ | ८ | धारिणं भवणं । | क,ख |
| २७ | पउमपपभवडिमा | | ५७ | डहिऊणं | „ | ९५ | अभिवं | „ | ८ | पइसरइ | जे |
| | वि य विं | जे | ५८ | जोगेसु | „ | ९५ | महिलियां | „ | १० | अणिघाय तो | „ |
| २७ | णिम्माया | क,ख | ५८ | जोएणं । | क,ख | ९६ | सावतो सो | ख | १२ | मए पउमो | क,ख |
| २८ | लकखणादी | जे | ५८ | पडागं | जे | ९८ | संभासइ | „ | १३ | दरिसणाणुसंणे, | जे |
| २८ | जिणायनणे | „ | ५८ | सुद्धं | „ | ९८ | वरेन्दो | जे | १३ | वरिसाइं | क,ख |
| २८ | कहासुवं | „ | ५९ | इसयो | „ | ९९ | पियाए वं | „ | १५ | पव्वइओ दसरहो | क,ख |
| २९ | हरीहिं | क,ख | ५९ | भागुकण्णो | जे,क,ख | ९९ | पियाथ वं | क | १५ | समेओ | क,ख |
| | | | ६० | पत्ते, सिं | क,ख | १०० | बन्धूण संगमां | सु | १६ | जाओ य सह | „ |
| | | | ६१ | मेइरह | जे | | तो वन्दिती नरेदो | क | १७ | तुज्ज | क |
| | | | | | | | | | १८ | ही दीवं अइं | क,ख |

उद्देश-७८

| | | |
|----|----------------|-----|
| १ | पगंतं दुक्खिया | |
| ३ | दाहामि | „ |
| ३ | तुज्जं | „ |
| ६ | पविमओ | „ |
| ६ | इय दुं | ख |
| ६ | सिदिणे | जे |
| ७ | चिट्ठीई | „ |
| ७ | अवइणो | क,ख |
| ८ | धारिणं भवणं । | क,ख |
| ८ | पइसरइ | जे |
| १० | अणिघाय तो | „ |
| १२ | मए पउमो | क,ख |
| १३ | दरिसणाणुसंणे, | जे |
| १३ | वरिसाइं | क,ख |
| १५ | पव्वइओ दसरहो | क,ख |
| १५ | समेओ | क,ख |
| १६ | जाओ य सह | „ |
| १७ | तुज्ज | क |
| १८ | ही दीवं अइं | क,ख |

| | | | | | | | | | | | |
|----|-----------------|-------|----|-----------------|--------|----|------------------|-----|----|-------------------|--------|
| २१ | रुभ सयास्ये मं | जे | ५४ | रीयच्छण्डं | क,ख | २६ | अह कोमला देवी | क,ख | २५ | तायमादी | जे |
| २२ | भणिभो | जे,ख | ५५ | स्सुगमणं | जे,क,ख | २६ | केकया चैव | जे | २६ | न त्रि नाओ पैमरमो | ,, |
| | भणिय | क | ५६ | सोमं, नं | क,ख | | केगई चैव | क | २७ | जयसिरिं | ,, |
| २२ | उपपइअं | जे | | इति | जे | २७ | पुत्तत्ररिसणे | जे | २८ | धम्मो | ,, |
| २४ | तापच्चिय | क,ख | | नाम पक्वं | , | २९ | स्मगेहिं तेहिं | जे | २८ | गमणो | ,, |
| २५ | सयासे, जलमहितो | | | पक्वं ॥ | क | ३१ | सणा गिविद्धा | क,ख | २८ | वज्जिसस्सं | ,, |
| | तेह काऊर्णा | क,ख | | | | ३२ | ज सणिकण | , | २९ | न्हावहं | ख |
| २६ | अचंतं भयं करे | क | | | | ३२ | णं हई | ,, | ३० | इ गई | ख |
| २६ | य वडुओ साह | जे | | | | | ण हवइ | जे | ३२ | य रणे | जे |
| २८ | किसोरयरं | क,ख | | | | ३२ | स मच्छिओ | ख | ३२ | सो नरेहिं | ,, |
| २८ | कलभयं | जे | १ | द्विवसे, | जे,क | ३३ | नास्तीयं माथा | क,ख | ३२ | सरिसो | जे,क,ख |
| ३१ | न य सरणे | क | १ | सोमितिभडा | क,ख | ३३ | मच्छ मओ ति | जे | ३३ | सुरवरविमां | क,ख |
| ३१ | सुचन्ते | जे | २ | विमाणरहवरपुरंमं | जे | ३४ | महालच्छो | ,, | ३३ | सो कह | ,, |
| ३२ | सुदीणमणा | जे | ३ | दीसई | ,, | | इति | ,, | ३३ | अवइणमणो | जे |
| ३२ | किह किह वि | जे | ४ | एथु | ,, | | समागमं नाम पक्वं | ,, | ३३ | माणुसलोगेसु | सु |
| ३२ | कह वि पवंगम- | | ४ | सुरवरेहि अहिं | क,ख | | पक्वं ॥ | क | ३३ | तिप्पिहिति | ख |
| | महाभडेहि | क | ५ | जलहरउभंतिभं | जे | | मम्मत्तं | ख | | तिप्पिहिति | क |
| ३३ | नारदं | ख | ६ | उंडारजे | क | | | | ३५ | केगईए | क,ख |
| ३३ | दाणेण अम्हे ज० | जे | ७ | पडिलाभिया | जे | | | | ३६ | थाविओ | जे |
| ३५ | पूपंति | ,, | ७ | विंसयरी | ,, | | | | ३६ | वसुमइतिसं | ,, |
| ३६ | नामक्खो | ,, | ९ | पिच्छसु भइ | क | | | | ३८ | तुमे सं | क,ख |
| ३८ | सुणह | ,, | ९ | अणंमिड्ढो | जे | | | | ३८ | तुम सत्तुओ, | जे |
| ३९ | कारणे च एयाए । | ,, | ९ | हामइ पिया | सु | | | | ३८ | करेह | ख |
| ४२ | भडा य पं | ,, | १० | रुवत्ती पिया | क | | | | ३९ | स्सुगो | क,ख |
| ४३ | निरन्तरं | ,, | १० | णइणी | क,ख,जे | | | | ३९ | पवएजासु | जे |
| ४५ | धित्तूण | क | १० | नयरसंठाणा | जे | | | | ४० | मि हत ? | ,, |
| ४५ | तओ भरहो | | १२ | णिक्किडइ | क,ख | | | | ४० | कर नं | ,, |
| | जणणीणमुवागओ | | १३ | तओतिओ | ख | | | | ४१ | जलापुणं | क,ख |
| | पयमूलं | जे | १४ | ओयरिओ | क,जे | | | | ४१ | निसुणीहि | जे |
| ४५ | कहिति | क,ख | १४ | रिओ देइ सह- | | | | | | निसामेहि | क,ख |
| ४६ | अजे य वहु | जे | | निसो अगं । | जे | | | | ४२ | पालसु वसुहं सुहं | क |
| ४७ | विभीसुणादी य खे | सु,जे | १६ | मेहिं य । | ,, | | | | ४३ | वयणं जं जहा य | |
| ४८ | भुवणाण | क | १८ | तुरयहिंमिएहिं, | ,, | | | | | आणत्तं परि० | क,ख |
| ४८ | भवणेण भूमीसु | | १८ | कणणपडियं | ,, | | | | ४५ | अणुमणसि मे | जे |
| | त्रिलित्ता | जे | १८ | यं ति ॥ | क | | | | ४५ | सिग्घं मा कुणह | |
| ४८ | रययक्कं | क,ख | १९ | वच्चन्ता नं | जे | | | | | विलवणं महं तुव्मे | क,ख |
| ५० | पडामाए रमं | क,ख | २० | निरन्तरु छज्जा | जे | | | | ४६ | विसमपेमा | जे |
| ५० | रमणीया | जे | २१ | कोउणेण | ,, | | | | | यपेम्माओ | ख |
| ५० | अभवणसुवा | ,, | २१ | यणसममग | ,, | | | | ४६ | य पिम्माओ | क |
| ५२ | जिणघरेसु | ,, | २५ | लणवयसोही | क | | | | ४७ | य तपइ जलनिही | |
| ५२ | अद्विया | ,, | २५ | धयसोही | ख | | | | | नइ | क |

उद्देश-७२

उद्देश-८०

| | | | | | | |
|----------------------------------|------|-----------------------------|-----------------------------------|-----------|---------------------------------|-----|
| ४७ नदिसत्तेसु | जे | उद्देश-८१ | ७ ँगुज्जुओ | जे | ४६ दरिसणूसुओ | „ |
| ४९ पउमसगासे समा ^० | „ | | ८ कडगई | „ | दंसणूसुओ | क,ख |
| ५० गुणमती | „ | २ ०वयणेहि मंतीहि करी | ९ मडिगज्जन्त ^० | क | ४८ उण्डवा ^० | जे |
| ५१ बन्धुमती | „ | निओ य नियथ ^० क,ख | १० सन्वे वदति मुणि- | क,ख | ४८ तयासे | क,ख |
| ५१ कमलवई | क,ख | ३ ०य भजार्हि तत्थ | वलणे | जे | ४९ सोउ समिहाए कारणे जे | |
| ५२ सिरिचंदा | क,ख | मच्च ^० जे | १२ ०णैयवज्जओ | जे | सोउ साहकारणे | क,ख |
| ५२ ०मादीओ | जे | ४ ०रामो | १३ अणुहोमि | | ५० समयं म ^० | क |
| ५२ जुवईओ | जे,ख | ५ ०निनादेणं | १६ निच्छिया | जे | सयं म ^० | ख |
| ५३ पवमादीओ | जे | ६ ०लाभिऊण | १७ लुभिउ | क,ख | ५२ संतासीणे रण्णे | जे |
| ५४ ०सु मज्जणयंतं, स ^० | „ | ७ ताव तहि | २१ पयवग | जे | ५५ तिरिए भवन्ति | „ |
| ५५ सो एत्थ भ० | क | ८ समंगओ | २२ परीसहेहि | क | ५७ रमणजिओ | ख |
| ५५ अन्नेच्छइ | जे | ८ पभिई | २४ मिरीई | ख | एतद्गथा नास्ति | जे |
| ५६ पहिद्वाओ | „ | ८ पभीई | २४ मिरीड | क | ५९ ०रासु नियभवणे | „ |
| ५९ कीलइ रई० | क,ख | ९ महिवीढं | २४ एतद्वाथास्थाने जे | क | ६० पेच्छसु | |
| ५९ ०रतो वीरो तच्चत्थ | | १० लुब्भन्तो चिय | प्रत्याम् निस्सगाथा | | ६० न्चेट्ठिय | „ |
| धीरसन्भावो | जे | ११ चितइ सो | नाणं चिय मज्जेक्को | | ६२ | „ |
| ६० लुभिओ मलाण ^० | „ | १२ चितइ सो | गारीजी अण्णया इमहाणि। | | ६४ पंक्खरादावे | „ |
| ६१ वितासन्तो | „ | १२ विज्जपउत्ते | पारिव्वयपासंडं कणइ | | ६४ माहवदेवीए | क,ख |
| ६२ ०हरिसं रावं सुणिऊण | | १२ अहियं चिय लालिओ | कमाएहि परिहाणो ॥ | | ६५ अमरेन्द ^० | जे |
| से इमत्तगया | „ | सो | २७ ०रे कडवयिस्स | जे | ६६ ०सण य देवकुरु | „ |
| ६३ ०स्व महासन्ने | क | १२ सो वि | २९ ०वसइ वीणे अभि ^० | क,ख | ६७ च | |
| ६५ समथा | जे | १३ न सिज्जासु | कटे | जे | ६८ | जे |
| ६७ ०यणो पलोइउं | | १३ न य नगरे न | ३१ सो इम | क,ख | ७० | जे |
| लवगो | क,ख | १३ य नयरे, न य हारे | ३३ चउपव्वन्तसुईए ? | | ७० चि य | „ |
| ६७ पववहि ^० | जे | गेव | (वसुपव्वतयसुईए) | | ७० इ वीरो | क |
| ७० बंधुस्तरे सुरो | | १३ नेय पा ^० | ३३ पव्वइय त सोउ, | | ७२ भा पुण पच्छा | जे |
| आसि | जे | १४ तस्सुवायं | विपो तं सुइ ^० | जे | ७४ ०न्ताओ ताओ नियमे | |
| ७१ अनयकारी | क,ख | १५ मन्तगिरं | ३३ ०ईए विप्पी तं सुइ ^० | क,ख | गेरइन्ति जहपुत्तिव | „ |
| ७२ ०इ तं कम्मं जेण | | १५ अस्तोमं वि | ३४ ठावियं सुय | क | ७६ साणमगस्सिओ | „ |
| मच्चडु ^० | क,ख | इति | ३४ मम सुणेसु | जे | ७९ घराओ | |
| ७३ एवं अई ^० | ख | नामं पव्वं | ३५ अहियं | जे,सु,क,ख | ८१ सुरभिं | „ |
| ७३ चिन्तेभि | जे | सम्मत्तं | ३६ गेण्हेज्ज | जे | ८२ या वुत्ता । | „ |
| ७३ जेणेसठाणं | „ | उद्देश-८२ | ३६ गेण्हेज्जा | „ | ८४ एयन्नि होसु परि ^० | „ |
| ७३ लमे हं | „ | १ सुररायनमं | ३६ विसेसं | क | ८५ रायगिहे चोरियंगओ | क,ख |
| इति | „ | २ पडिमा चउयःणया- | ३८ ०ण तो हू तो मोरो | जे | ९० ०वसभस्स | „ |
| ०सोहणं नाम | क,ख | सुवगयाण | कुरो | क,ख | ९२ सिक्खियंतं | ख |
| नाम पव्वं | जे | ६ संक्कमतिलया | ४२ ०मजारेण मरि ^० | क,ख | ९२ ०णं तो सो ^० | क,ख |
| सम्मत्तं | क | ६ सच्चं वि | ४२ बहुवामसुया समु ^० | जे | ९२ मिदुमती | „ |
| | | ६ परएण | ४४ सुंसुमारो | जे | ९३ मिदुमई | ख |
| | | | विणियो | जे | ९४ भणइ मही | क |
| | | | ४५ ०वया तहि वेया | „ | | |

| | | | | | | | | | |
|-----|--------------------|--------|-----|--------------------|--------|----|-------------------|-----|----------------------|
| १४ | फासुगहारो | जे | १२० | एसो उ गओ | ,, | ६ | लाभरणो | जे | |
| १५ | नाऊण | ,, | १२१ | तुम्हेत्थ | ,, | ८ | पंचमहावयं | ,, | उद्देश-८६ |
| १६ | मिदुमई | क,ख | १२१ | मन्ता समत्ता | क | ११ | सृणंतु जे | क,ख | |
| १८ | यहुजणनिलओ | जे | | इति | जे,ख | ११ | रा जणा ॥ | जे | १ अह रावणेण |
| १८ | जिओ वीरो | क,ख | | भगवित्तणं | जे | ११ | अधिइविमलं | ,, | १ सत्तुज्जो |
| १९ | सुसाहुआहार | जे | | नाम पव्वं | ,, | | भरुइनेव्वाणां | ख | १ जं तुमे |
| १९ | पाणमादीहिं | ,, | | | | | नाम पव्वं | जे | १ पणामेति |
| १०१ | लं तेण न आओं | क,ख | | उद्देश-८३ | | | संमत्तं | क | २ पि व अं |
| १०१ | तुमे करिबद्धं एयं | | १ | मादिया | जे | | | | ४ दिण्णं पलयकसमं |
| | तिरियां | जे | २ | द्वअंजलिउडो | ,, | | | | महासुलं |
| १०२ | मिउमती | क,ख | ३ | विगयणेहो | क,ख | | | | ६ पणासितो |
| १०२ | कयाई काऊण तवं | | ४ | नदीप | जे | १ | ताणि सें | जे | ६ च भुवणं |
| | च सो हु वरकप्पे | जे | ४ | ए लुइमाणस्स | ख | २ | य संवत्थो | क | ७ रेसु न वच्छय साहिं |
| १०३ | महिट्टिपत्ताण | जे | ५ | अणुमञ्जितो | क,ख | ३ | मुणदिओ | क,ख | ७ सत्तुज्ज तुमे |
| १०३ | खुरलोणे | ,, | ५ | भरह मों | क | ३ | सव्वोसओ | जे | ८ महाजस |
| १०४ | सुरवाहियां | क,ख | ५ | हो काऊण तं | मु | ४ | य सुचारो | जे | ९ दसरहस्स |
| १०४ | सुरविलयामज्जगया | | ५ | सगधरहिओ | क,ख | ४ | अखलो | जे | १० सत्तुज्ज |
| | दिण्वंगयकुंडलसुया- | | ७ | जंपती | क | ६ | सहया हियसंपण्णा | क,ख | ११ पायपडिओ |
| | भरणे। | जे | ८ | पव्वइउं | ,, | ७ | भरहसमचें | जे | १२ विज्जाइं |
| १०५ | मिदुमई | क,ख | ११ | अइसुदयं दुरहिं | जे | ९ | उज्झिउं | | १२ हु ते रां |
| १०५ | चइओ | जे | १२ | नारीहिं सएहिं | ,, | ११ | एउमादीया | जे | १२ पमादी |
| १०६ | घणकिसणकं | ,, | १२ | वा. सममत्तं | | ११ | णिसिमिऊणं | क | १३ सत्तुज्जसकुं |
| १०६ | समुदमइनिं | ,, | | उत्तमं | क,ख,जे | ११ | सृणेऊण | जे | १४ उत्तमं |
| १०९ | निमलतोया | क | १३ | जणो जस्स सुभासियस | जे | ११ | सुहुत्ते | क | १५ यं सरं |
| ११० | सो एस करिवरेंदो | जे | १३ | करेंति | ,, | ११ | महंतं | जे | १६ लद्धजयं |
| ११२ | निमाणवासंमि | ,, | | इत्ति | ,, | १३ | णउम्हं | क | १६ कणयकलसेसु पूयं |
| ११४ | अभिरामो | क | | णामे ते | क,ख | १४ | मविणएण | क | १७ सत्तुज्ज |
| ११४ | भरहो त्ति | जे | | नाम पव्वं | जे | १४ | संतगुण | क,ख | १७ जिणा विगयमोहा |
| ११४ | इमो, उदएण सुं | ,, | | पव्वं | क | १५ | अनियच्छसु | जे | १८ जेण निं |
| ११५ | मोक्खत्थो | ,, | | | | १५ | गोष्ठेहिं | ,, | १८ हो, सो तिं |
| ११६ | सम्मं पव्वज्जा | ,, | | उद्देश-८४ | | १७ | कणयं | ,, | १८ अरहंतो मंगलं दिसउ |
| ११६ | पव्वज्जं | | १ | लम्मिउं पं | क | २१ | यणाय वणुइंदा | ,, | १८ दिवु |
| ११६ | गेण्हिऊण | क,ख | १ | धम्मसाहिओ, | जे | २२ | रें सुसइयस्स उवइइ | ,, | १९ ण य सुक्का |
| ११७ | सकम्मपं | जे | १ | धम्मनिरतो, तवसंजम- | | २६ | वि राया वे | ,, | १९ यणमगप्रिणं । |
| ११७ | इया जाया | ,, | १ | करणउज्जुत्तो | क,ख | २८ | नरेंदा | ,, | १९ दिवु |
| ११८ | समाहिमरणीयजो | | २ | पसाई | जे,क,ख | ३० | पभावं | ,, | २० स्ससि-रविं |
| | य सारंगो | ,, | ६ | तो अणसणं च | | ३० | इति | जे | २० उअहीं |
| ११८ | इमो सत्तुप्पणो | सु | ६ | कऱुउं | जे | | नाम पव्वं | ,, | २० दिवु |
| ११९ | कुरंगमो | क,ख,जे | ६ | वंसम्मि वरविमाणे | क,ख | | संमत्तं | क | २१ पुत्तय ते मं |
| १२० | अंतूणालाणखंभं | जे | | | | | | | २१ दिवु |
| | | | | | | | | | २२ साहिंति |

| | | | | | | | | | | | | |
|----|-------------------|------|----|-------------------|----------|----|----------------------|--------------------|----|-------------------------|-------------|------|
| २२ | जे य निं | जे | ५१ | कोवपजं | क, ख | ११ | सु वण्हद | जे | २५ | ए. सिहायरियं च | | |
| २२ | ते साह तुह वं | „ | ५२ | सत्तुज्जो | जे | ११ | रिवुभयं | क, ख | | दो जोहं | ख | |
| २२ | तुहं व० | ख | ५३ | सत्तुज्जसं | „ | १५ | दुस्सह | क | २८ | न्ना सन्वे वि | | |
| २२ | साहेन्तु | जे | ५३ | तस्स राया, | क, ख | १७ | सत्तुज्जो | जे | | अयलेण ॥ | क, ख | |
| २३ | सत्तुज्जो | „ | ५४ | पयत्तो | जे | १८ | सत्तुज्ज | „ | २९ | सालो तस्सेव वसुदत्तो जे | | |
| २४ | गड्ढिगज्जन्त | क | ५४ | सत्तुज्जो | „ | १८ | अं आणदिओ | क, ख | २९ | तस्सेव सहंता ॥ | क, ख | |
| २४ | दुद्धतगयं | जे | ५५ | सरणियरं निं | क, ख | २० | मादी | जे | ३० | पच्चभियां | क, ख | |
| २५ | इ मि तस्स | „ | ५६ | आसलो | जे | | इति | „ | ३० | पुवक्खिहोहि | क, ख | |
| २६ | सत्तुज्जो | „ | ५७ | समावण्णे | जे, क, ख | | नाम पब्ब | „ | ३० | कहिंति | क, ख | |
| २८ | कैगइं | क | ५९ | सवसेण | जे | | | | ३१ | अदिट्ठसें | जे | |
| २८ | पयाई | सु | ६० | मिमि व मं | क, ख | | उद्देश-८८ | | | अहिट्ठसें | क, ख | |
| | पमाइं, | क | ६० | रममे | ख | | १ | रा. मविगज्जइ कइगइं | जे | ३३ | परिजाणिओ | जे |
| २९ | ओ महाभडो निं | जे | ६० | दट्ठस्सेव य को | „ | २ | सुरपुरिसं | „ | ३४ | दठ्वं सुरप्पभूयं | क | |
| २९ | सो किह | „ | ६० | संदिहो | „ | २ | सुपुरिमसमागमाओ | „ | ३५ | सपरिवारं | जे | |
| २९ | जिब्बिही | „ | ६२ | निययमेण | „ | २ | व | क, ख | ३६ | चरित्तेहि अं | „ | |
| ३० | सत्तुज्जेणं | „ | ६३ | उवज्जयाणं | „ | २ | मथुरा | क | ३७ | भोग भो | „ | |
| ३० | जिप्पिही | „ | ६४ | नमो णमो सव्वं | क, ख | ३ | रायपुत्तस्स | | ३७ | कइगइए | „ | |
| ३२ | मंतिज्जणोवदेसेण | „ | ६५ | जयणाभा | क | ३ | बहवो भवा | क, ख | ३७ | ग्घो देसविं | क, ख | |
| ३२ | चारपुरिसा गं | „ | ६७ | ण य सुहावहा भूमी | क, ख | ४ | इह सं | जे | ३८ | णेयभवे | क, ख | |
| ३२ | सं तओ पं | „ | ६७ | फासुया हवइ भूमी | जे | ४ | ममइ, मं | क, ख | ३८ | मयरीए | जे | |
| ३३ | अतिथउ मं | क, ख | ६७ | तस्सायं | „ | ४ | गइए सो तओ जाओ जे | | ४१ | सेणाणीओ हलं | क, ख | |
| ३५ | पविट्ठस्स | क, ख | ७० | वं निग्गय वो | „ | ५ | भवणे | क, ख | ४१ | वई तओ हरिस्स | जे | |
| ३६ | जायं समामत्तजुयं | ख | ७१ | पिच्छया | क | ५ | निययभवणं । | जे | ४३ | एवं पं | जे | |
| ३६ | एतद्गथा नास्ति | जे | | करेमि | जे | १० | गेण्हइ तो ते अहवं सु | | ४३ | लोणे । | | |
| ३७ | मिमि समए अयाणिओ | | | इति | जे | १३ | देवेहि | क, ख | ४३ | वराहो | क | |
| | य तुमं पुरी महुरा | „ | | नाम पब्ब ॥ | „ | १४ | तस्स धरा | जे | ४३ | सुविउरु | जे | |
| | वे सामिओ पुं | क, ख | | संमत्तं | „ | १५ | पक्रोइग | „ | | सत्तुग्गभवाणुं | „ | |
| | | | | | | १५ | बीया | „ | | नाम पब्बं | „ | |
| ३७ | पत्थावेऽअणिओ | | | | | १५ | य अंणियाए | „ | | सम्मतं | क | |
| ३८ | सत्तुज्जो | जे | | | | १७ | पुत्तोइही काळे | „ | | उद्देश-८९ | | |
| ३९ | सत्तुज्जो | „ | | | | १८ | मुहाईहिं | क, ख | | १ | चेव संपत्ता | क, ख |
| ३९ | लो रणम्मि विं | क, ख | १ | हयपयावं | क, ख | २० | न्तो वि य | जे | १ | सुरमज्जो, | जे, सु | |
| ३९ | वंदिज्जणुद्धराओ | जे | २ | जहावितं | क, ख | २१ | कुवमाणो चिय | „ | २ | सिरिमज्जो | सु | |
| ४१ | सत्तुज्जो | „ | ३ | राभिमुहो | क | २१ | अंकेण य | | २ | सिक्कमणो | जे | |
| ४१ | णाओ सरसो | ख | ६ | उज्जं अयाणं | जे | २१ | नेत्तधलिं | क, ख | २ | सिक्कनिळओ | ख | |
| ४२ | सत्तुज्जकुं | जे | ८ | ताव पभवन्नि | „ | २१ | चत्तियमो | मु | २ | चमरो वि (चरमो वि) | सु | |
| ४३ | परियराणं | „ | ८ | य भमंति | क, ख | २१ | कोसम्भो | जे | २ | „ „ ह | जे | |
| ४४ | विवादेइ | जे | ८ | पिसायमादीया सन्वे | जे | २४ | नरवइसह गइं | जे | ३ | एत्तो सत्त | „ | |
| | विवादेइ | क | ९ | इत्थस्स यम्मंतरेण | | २५ | | | ३ | स्ता पहापुरे | क, ख | |
| ४७ | जन्तसंघाओ ॥ | क, ख | | असहंता | „ | | | | | | | |

| | | | | | | | |
|-------|---------------------|--------|----|----------------|--------|--------------------|----------------------------|
| ४ | पते, | जे | ४६ | सिलापट्टे | जे | उद्देश-१० | उद्देश-११ |
| ५ | दमरयं तर्हि | मु | | सिलापट्टे | क,ख | | १ °णं सञ्चे त्रि हु नि° जे |
| | दमरयं तओ र° | जे | ४६ | परिपट्टी | जे | ३ कतिसंपुत्रं | २ °नासणमया |
| ७ | रिखया | जे,क,ख | ४८ | वि हु, | क,ख | ४ णारतो | ३ सिवमंदिरं |
| ७ | °मुकसलिलोहो | क,ख | ४९ | बहवे | क,ख | ५ °णो धीरो | ३ °यं सिरिमंदिरं |
| १२ | भिकखट्टा | जे | ५१ | अणो हाउं | जे | ६ °मादीया | ४ °पुरं नरणीयं |
| १२-१३ | अरिहद° | क,ख | ५१ | ठावेऊण जिणाणं | „ | ७ °इउं णारओ णट्टो | ४ चक्रहरं |
| १३ | °साकालो | जे | ५१ | जिणहराणं | क,ख,मु | ७ °रओ नट्टो | ५ रविभासं |
| १३ | निययट्टाणं | जे,क,ख | ५२ | °रिसयाणं | जे,क,ख | ८ नीसेसं | ५ रविभारं |
| १४ | °कोट्टुगेसुं | जे | ५२ | तुज्झं | „ | ८ मणोरभाती | ५ य अरिजयणामं |
| १५ | एसणासु | „ | ५३ | अज्जप्पभू° | जे | ८ वरमणी सो | ७ सतेहि र° |
| १६ | पते पुण | „ | | °प्पभिइं च इहं | क,ख | ९ सो विक्खित्तिलि° | ९ भगवं |
| १७ | सुण्हाय त° | क,ख | ५३ | जस्स नेय नि° | जे | १० °प्पगाराइं | १० ण गणी |
| २१ | निययं चिय | „ | ५३ | निच्छपण | „ | ११ लभामि | ११ °ण वि व° |
| | पुण नहं | जे | ५३ | मारिही मय | „ | १२ परिकहिथा | १२ तातो नि° |
| २३ | अरइवत्तो | „ | ५४ | होही घ° | क,ख | १५ घायंतो | १४ वि°तिथा |
| २४ | °या वीरा | क,ख | | होइइ घ° | जे | १६ °मल्लिं व | जे |
| २७ | काउं जं ण मए | „ | ५४ | नामिही ल° | „ | १७ घायंतो | १८ सीया य पभावई तर्हि |
| | वंदिया मुणिवरे ते । | „ | ५५ | अभिवं | क,ख | १७ रिउभडे | भणिया |
| | अज्ज वि तं उइइ | „ | ५६ | °लाभं | क,ख | १८ किक्किधिवई | १८ पभावई |
| | मणो जच्चिय न | क,ख | ५६ | ताण मुणी | क | १८ य अण्णत्तो | १९ कइवयाणं |
| २९ | दज्जिहिई | जे | ५७ | °ऊणं ठिया | जे | १९ रिउबलं | २० वसभो |
| २९ | खलसहावं | „ | ५७ | °लाभइ | क,ख | २१ खेयरामहा सु° | २० हरिणो होइ सि° |
| ३० | °ओ निवइसमं | „ | ५८ | फलहेसु | जे | २१ पयलति | २२ मामेण दो° |
| | | जे,क,ख | ६० | आवासिया | क,ख | २२ पु°क्ख | २३ °लतिलओ |
| ३१ | °कसतेहि | जे | ६१ | परियरेण | जे | २३ कोहं | २३ परमदवो |
| ३३ | पणच्चिओगीयं | क,ख | ६१ | भवणेसु | „ | २४ राम-केसीणं | २३ °प्पभो |
| ३५ | कारुण व° | क,ख | ६२ | नरेदसं | „ | २५ °हि ते तु° | २३ ई°प उ |
| ३५ | सो साहूणाSS | क,ख | ६२ | णरवती घ° | क | २५ तुज्झ मयं | २६ सत्तसंपण्णा |
| ३६ | गेण्हइ | क,ख | ६२ | कामसइिया, म° | जे | २६ णीणेइ अं | २६ पुइइतले |
| ३८ | मणसाअण्णु° | क,ख | ६३ | आणाइस्सरिय° | „ | २७ कणमपा° | २६ °इरइसेते |
| ४० | तुम्हेत्थ | जे | ६३ | भुंजई | „ | २८ कणगरं | २७ देवमाइया इव |
| ४० | °पडिपुआ | क,ख | ६३ | एयं च जे | „ | २८ वि पुणो म° | २७ °रा विव |
| ४१ | भणितं प° | जे | ६४ | विमलेपतु° | „ | २९ वित्तं | २७ सानेयपुरं |
| ४२ | होइइ प° | „ | | इति | „ | २९ पवररिद्धीय | २९ °प्पभावा |
| ४३ | °ईतिसं | क,ख | | महुरापुरिनि° | „ | ३० पणासे | इति |
| ४३ | नगरा चिय पे° | जे | | °निवेसभिहाणं | क,ख | इति | °ए बलळं |
| ४३ | पेयलोगसमा | क,ख | | नाम पव्वं | जे | नाम पव्वं | °भूइरिसं |
| ४५ | °माणा वि । | क,ख | | सम्मत्तं | क | सलमत्तं | नाम पव्वं |
| ४६ | साहुं, म° | जे,क,ख | | | | | संमत्तं |

| | | | | | | | |
|--------------|--|--------------------------------------|----|-------------|-----------------------------------|--------------------|--------------------------------------|
| उद्देश-९२ | २ | म्हियमणा फुरमाण दाहिणं अञ्चिह क,ख | ३७ | जे त्तिय जे | ३५ | °बलि व हु पमाणं जे | |
| २ | अस्थानम° | क,ख | ३८ | नेय व° | ३६ | °भिमुहा नारी क,ख | |
| ३ | सिक्किणे | जे | ३९ | संभममां | ३६ | अण्णाणि वि | |
| ४ | वरिसणं | क,ख | ४ | वामस्स | क | दुण्णिमित्ताणि जे | |
| ४ | तुमे | जे | ४ | इति | जे | ३७ | जोदणं परमवेगो जे |
| ५ | सुमिणं | ॥ | ४ | नाम पत्तं | ॥ | ३७ | महीं गा° क,ख |
| ५ | होतु तुमं सया य पस° | जे | ५ | सम्मत्तं | क,ख | ३७ | परिपुणं क,ख |
| ७ | °तिल्यनयणो, किंसुय- आसोयरत्तदलजोहो । जे | ६ | ६ | उद्देश-९४ | ३८ | °कुमुयल° जे | |
| ८ | समूससियरोमो । ॥ | ६ | ६ | १ | °भागस्स ॥ क | ३९ | पेच्छइ वा सव्वरी- घणसरि° ॥ |
| ११ | पढमेसुगम° | जे,क,ख | ६ | २ | भूमीगोयरसुहडा खयरा सुग्गीव° जे | ४२ | °इ पयावर° ॥ |
| १२ | ते हं संपयच्छामि | जे | ९ | ४ | °वो । जंपइ जण° क,ख | ४२ | °भयदुहचं क |
| १३ | °मि य तुह | ॥ | १० | ५ | °णं सव्व क,ख | ४३ | °य, उहुहुहियउहंत- गिरिणईसलिलं क,ख |
| १३ | °ह पसाइणं | ॥ | ११ | ७ | सुमहू° क,ख | ४३ | °इ दुहुदुहुदुइन्तसरि- सलिलं जे |
| १४ | तीय ब° | ॥ | १३ | ८ | लवणोवहिं पेरता जे | ४५ | चिच्छालं । ॥ |
| १४ | कारेहि | ॥ | १३ | ८ | °लुब्भमेहिं बहुगहिं क,ख | ४५ | °घोररवो, ॥ |
| १५ | अण्णा वि | ॥ | १७ | ९ | °जसादीणं जे | ४५ | °जणो जे,क,ख |
| १५ | णागरजणो | ख | १७ | ११ | °वायाणं क,ख | ४७ | जुण्णवी° क |
| १५ | माह्मदीयरे व° | जे | २० | १२ | °सियं सीयं क,ख | ४८ | जाण्णवी जे |
| १८ | °लित्ताणं । क | २० | २१ | १४ | °गहणं जेयतत्तिलो जे | ५१ | °उल । कळोलजणियं जे |
| १९ | परिट्टिया | क,ख | २१ | १४ | °मच्छरियउ ॥ | ५२ | °समावडियं वि° क |
| १९ | °ण कणयमया क,ख | २१ | २२ | १४ | °वो य दुहो य ॥ | ५४ | रुयइ जे |
| १९ | °उरा, भरिया वि य | जे | २२ | १५ | इच्छामो ॥ | ५५ | रुयसि ॥ |
| २० | निमलतोयरा | जे | २४ | १६ | सम्मत्तरं ॥ | ५६ | पभू ॥ |
| २० | °लम्बूयादरि° ॥ | ॥ | २५ | १६ | बहओ जे | ५६ | दोहल° क,ख |
| २० | वियाणियाइ । क,ख | २५ | २६ | १७ | °सो नाइ होइ जुव° ॥ | ५९ | नेय ल° जे |
| २२ | °इ पइयाइं क | २६ | २६ | २४ | °वयणो उच्चलिओ र° क,ख | ५९ | तुज्ज इहं अरण्ये |
| २२ | °सरिसभायाइं जे | २६ | २६ | २५ | °कवओ ज° सु | ५९ | सामिणि क,ख |
| २६ | °वमादी ॥ | २८ | २६ | २५ | कस्स य अ° जे | ५९ | °णि रणं तु नि° क |
| २८ | °भत्तिजुत्तो, जे | २८ | २६ | २७ | °लाभिला ॥ | ५९ | °णि मरणं तु नि° ख |
| २८ | °धरं ग° क | २९ | २६ | २७ | °यादीसु जे | ६२ | रामो जे |
| २८ | °धरिं म ख | २९ | २६ | ३० | °इसु इम रहं | ६३ | गन्तूणं भणियव्वो ॥ |
| इति | जे | ३० | ३४ | ३० | सुनेयच्छं ॥ | ६३ | गन्तूण भाणिं सु,क,ख |
| °जोहलाभिहाणं | क,ख | ३४ | ३४ | ३० | करेहं णे° क,ख | ६३ | °वव्वो गंतुं सव्वा° क,ख |
| नाम पव्वं | जे | ३४ | ३४ | ३० | पुहइतले क,ख | ६५ | अइरेगं क,ख |
| उद्देश-९३ | १ | महंदउ° जे | ३५ | ३३ | च वदेही जे | ६५ | एत्थारण्ये कइ |
| २ | पयंतरम्मि | जे | ३७ | ३४ | °पवणवेगो सो क,ख | अउण्णा क,ख | |

| | | | | | | | | | |
|-----------------------|--------|-----|------------------------|--------|----|---------------------|--------|-----|----------------|
| ६६ महाजस | क,ख,जे | ९८ | दिसं व सं | जे | १२ | विसेसे अ° | ख | ५३ | विरह-भय-तज्ज- |
| ७१ °जोगेणं | क,ख | ९८ | °रथ ग्राहं उ° | ,, | १६ | °जंथो जं एसो | ख | | णाणि य, निम्भ- |
| ७२ मिति | ख | ९९ | पहुगु° | ,, | १७ | °मुभोइ । | जे | | च्छणरोगसोग- |
| ७३ अतिधि | क | १०० | पाविणीइ दीणाए । इह | | २० | °या भइणी | ,, | | मादीयं । |
| ७२ °यं पि य मु° | जे | | रणवे णिमगं, तुम | क | २१ | केगइवर° | क,ख | ५३ | °वेण मणुयज्जमे |
| ७४ विज्जइ | क,ख | १०० | इह रणे | जे | २४ | °अवन्तं | ख | | अणुहूयं दाहणं |
| ७४ उवदेसो | जे | १०० | सोवणवे | ,, | २४ | परमविणएणं | क,ख | ५४ | सुरविभवं |
| ७५ चिरसंवसहीए बहु | | १०२ | जांवऽ | ,, | २६ | कइगई वि | जे | ५६ | °सुरे सु ते |
| दुच्चरिय जे कथं | | १०३ | रणं | क,ख | २८ | निहेणिऽहं | ,, | ५६ | °के । मच्चू य |
| तुमं सामि । तं | | १०५ | इहं | | २९ | होउ उ° | जे | | जरा रोग, जत्य |
| मज्झ खमसु सव्वं, | जे | १०६ | इहारणे | क | २९ | उरसुगमणा | ,, | ५८ | °विउण य सुहं |
| ७६ °णं नेय महं होज्ज | | १०७ | नयि ते | जे | २९ | °असुरमहियाई | ,, | ५८ | वदेही |
| दरि° | ,, | १०७ | पुरिहुता | क,ख | ३२ | °अं । वदे हे वं | ,, | ५८ | दियहे |
| ७६ दरिसणं भूयं । | ख | १०७ | °व्दे य भं | क,ख | ३३ | सीय उषामी | क,ख | ६० | परिवायज्जं |
| ७६ °सयं तं चिय सव्वं | क | | इइ | जे | ३६ | एयाण जि° | जे | ६१ | °णअग्गीहिं उहइ |
| ७९ किवाइ मुक्को | क | | °क्वासाभिहाण नाम पव्वं | जे | ३७ | °णाइ सव्वाइ | क,ख | | इहइ |
| ७९ जइनिन्दियं | जे | | सम्मत्तं | क,ख,जे | ३८ | कोट्टिमतरुक्काई | | ६१ | अयसाणलेण |
| ७९ °सिणसका° | ख | | | | | जिण | जे | ६२ | चेईहरं |
| ८० °नयइद्ववज्जिं | क,ख | | | | | | | ६२ | डाहलयं |
| ८० वरं वइइ | जे | १ | जांव य | जे | ३८ | अभिव° | क,ख | ६४ | इ गव्वसं |
| ८१ °रो पउणी हो° | क | १ | गंध व्व गयवरेणं व । | ,, | ३८ | आगमिइसामि | क,ख | ६५ | पोण्हं |
| ८१ परवासो | जे | १ | तांव कं | ,, | ३९ | °जोगाणं | क,ख | ६५ | °वो उ नाणरओ |
| ८२ °आदेसस्स | क | २ | आसअथा | मु | ४० | चित्तेती दरिसणं चेव | जे | ६६ | पच्छायावतं |
| ८२ °म्मं ति जियलोए | जे | ३ | °चारुमडा | क,ख | ४० | चित्तेती | क,ख | ६७ | संबोधियण नं |
| ८४ °न्ति अ मि° | क,ख | ३ | °जुवनीए | जे | ४१ | बलियस्स | क | ६८ | कोण्ण |
| ८५ °पुरहुतो | जे | ३ | महुरसरं | ,, | ४२ | °इ परितोसं | जे,क,ख | ६८ | °इ धीरं |
| ८७ °म मह नरुत्तम | ,, | ४ | °विजाया | क,ख | ४४ | ता लहु रं | क,ख | | इति |
| ९० य मए अणुट्टियं पु° | ,, | ४ | गुरुविणी | जे | ४७ | रोवन्ति | क,ख | | °समागमणं |
| ९० अणुचिट्टियं | क | ५ | तुम समुलवसि । | क,ख | | रोवन्ती | जे | | नाम पव्वं |
| ९१ °ण मए वयं पुणो भं | जे | ६ | चिच्छति कयं अलिउडा. | | ४७ | एयाई | जे | | सम्मत्तं |
| ९१ वयं मए पुणो भं | क,ख | | रत्तम्मि य | क | ४८ | °भत्तिसेजुसे । | क,ख | | |
| ९३ °जुवलयं | जे,क | ७ | नाणाभरणं | क,ख | ४८ | दुक्खायणं | क,ख | | |
| ९५ जा सयणपरिअणेणं | जे | ८ | तेहिं सा | क | ४९ | तुमं न | जे | | |
| ९५ चिट्ठामि | ,, | ८ | त्रि य पडि° | ख | ५० | जीवो कम्मेण हओ | | | |
| ९६ उवगेज्जन्ती | ख | १० | °मोगा तुमं होहि | क,ख | | हिउर | जे | | |
| ९६ सईमा | क | १० | °इ सो य इहं वं | जे | ५१ | संजोग-विप्पओगा | क | १ | लंबूसियचलचामरं |
| ९७ °माऊसी° | क,ख | ११ | °उवगारं | क | ५१ | दुक्खाइ वं | क,ख | १ | °चित्तंसुवसं |
| ९७ °माउयसिइ° | जे | ११ | °लो धीरो | जे | ५२ | °विक्कंविपण | क,ख | २ | अणयणदणी |
| ९७ °मि अहं | क | १२ | दीणाईणं च पुणो, | ,, | ५२ | °ण्हावीण | जे | २ | परिचिन्तेन्ती |
| ९८ वागरेमि | ,, | | दीणाण पुण विसेसं | | ५२ | विविहाऽवं | क,ख | ४ | पोक्खरणिं |
| | | | अहियं चिय कलुणं | क,ख | ५३ | | | ४-५ | पुण्डरि° |
| | | | | | | | | ६ | पविसइ |

उद्देश-९५

उद्देश-९६

| | | | | | | | | | | | |
|----|-------------------|-----------|----|------------------------|------|----|-----------------|----------|----|-------------------------|----------|
| ८ | पुञ्जिजन्ती | ख, सु, जे | ३८ | हि मह व° | जे | २३ | खेवं, | क, ख | २७ | सोहीरा | जे, क |
| | पूज्जता | क | ३९ | वीरक्षणं | क, ख | २३ | समूहेस | क, ख | ३० | तुरओहारे | जे |
| ९ | सुचिरं | क, ख | ४० | जलणजले दा | क | २४ | देन्तो विद्य | जे | ३० | उ(हु)दधो ब° | क |
| ९ | रं सरस्मई दे° | क | ४२ | पवाइओ | जे | २७ | थिरजोनेण णमि° | क, ख | ३० | कुमारयरा | जे |
| | रं सरस्मईए दे° | ख | ४३ | रुवइ | क, ख | २७ | मारुडं ग° | क, ख | ३१ | गण्हंता सुंत्तां संघंता | |
| १० | वियहाइ त° | जे | ४४ | सुयंग° | क | २७ | पविणिज्जिफिति | जे | | सरवरे तहा बहुओ । | .. |
| ११ | यं तिण्हेसु | .. | ४४ | तिसरिय | जे | २८ | रा. धीरा | क, ख | ३२ | यं लवणकुसेहि | |
| १२ | इ सा दे° | जे, क, ख | ४७ | अणुसंतियं | जे | २९ | गुणरयणप° | क, ख | | तहेव रिबुसेण्णा । | .. |
| १५ | डाळ्ळियं | जे | ४७ | सिमिणे | .. | २९ | पव्वपवरा | जे | ३२ | रिबुगेन्नं | जे, क, ख |
| १६ | लुट्टाइयं | .. | ४८ | धिति | .. | २९ | भारव्वहा | क, ख | ३३ | उं तं जं | क |
| १६ | परिमहिए | .. | ४९ | णरेद° | क, ख | २९ | भब्बा भवते ठिया | क, ख | ३४ | णरेदो | क, ख |
| १६ | ण्वचित्तसावज्जे | .. | | इति | जे | २९ | जायं ते | क, ख | ३९ | इ अवहारे, अत्थि | जे |
| १६ | ण्णाछित्तसां | क | | सोयाविं | .. | २९ | विमलपभावजससा | | ४० | कन्तिसंजुत्ता | जे, क, ख |
| १७ | मए छ° | क, ख, जे | | नाम पव्वं | .. | | इति | जे | ४० | मा धीरा | क |
| १९ | पायवडणो° | जे | | पव्वं ॥ | क | | लवंकुस | क, ख | ४१ | अणुवो पु° | जे |
| २० | छुइइ भ° | क, ख | | | | | लवअंकसोयाविं | जे | ४२ | पालन्तो | क, ख |
| २१ | पहासिहिमि | जे | | उद्देश-२७ | | | नाम पव्वं | .. | ४२ | दण्डा° | क, ख |
| २२ | मए सुहंतस्स | ख | १ | पोण्ड° | जे | | संघत्तं | क, जे | ४३ | णो उ स° | जे |
| २३ | दुलहं | क, ख | ४ | सुमिणे | .. | | | | ४४ | जांव ग° | जे |
| २३ | बाहणारीयं | जे | ५ | वि मन्हे | .. | | उद्देश-२८ | | ४४ | तां व य | जे |
| २३ | रज्जलंभां | .. | ६ | अणमिसं | .. | | | | ४५ | दियादी | .. |
| २४ | सम्मत्तदसणरओ | क, ख | ११ | दोण्ह वि | क, ख | १ | कीडण° | जे | ४६ | च्छा य तेहि कया | क, ख |
| २५ | एयं चिय | जे | ११ | धातीसु संगिहिया | जे | २ | समिभई ना° | .. | ५२ | कह वि न | क, ख |
| २७ | सेणावयस्स | जे, ख | १४ | गन्तणं म° | .. | २ | साव | .. | ५२ | पट्टे | जे |
| २७ | सुणिकणं | जे | १४ | विदिता एव पु° | ख | ३ | नरेदो | क | ५५ | मेल्लिह | ख |
| २७ | पडिहारेण | क, ख | १४ | ता एव पु° | क | ५ | पुहईपुर | जे | ५७ | तो परिणि° | जे |
| | पडिकारणं | जे | १६ | विदेहाइ । | .. | ५ | तथं पिह | .. | ५८ | अब्भमगपुरं | .. |
| २७ | दो विलवइ सोए | क, ख | १७ | पाणार्णं | जे | १४ | नाऊणं लेह अत्थं | .. | ५८ | नरेदवरं ॥ | क, ख |
| | पियं | .. | १८ | णादीयं | .. | १५ | वित्तन्ते ते | .. | ६२ | वु-कीत्त° | जे |
| ३० | वइदेहो | .. | १९ | सुविमइओ | .. | १९ | समरमज्झमि | .. | ६२ | हमंगला | सु |
| ३१ | कि वा वि° | .. | १९ | इ ताव पव्वन्ति | .. | २० | हा तओ पु° | क, ख | ६२ | य वाहणा वि | क, ख |
| ३३ | सीहेण जइ वि | .. | १९ | सुविमइओ... वि य से | .. | २१ | निक्कसं पि | जे | ६३ | य सेण्णु | जे |
| | घोरेणं । कि वा | .. | | इति नास्ति क प्रती | | २१ | य जिपपन्ति | क, ख | ६३ | यव्वं ॥ | क |
| ३४ | दड्ढासि तुमं सहा° | क | २० | नन्दणी दड्ढुं | जे | २१ | पुरिसाणुभोज्जा | क | ६४ | आहीर-ओय° | क, ख |
| ३४ | कंते ॥ | क, ख | २० | किवालं | .. | २२ | यणइणी | क, ख | ६४ | सागकीरला | सु |
| ३४ | लोगंमि | जे | २२ | रा अइसय नाणा° | .. | २२ | यसिंस्सिणि° | क, ख | ६४ | य जेपाणा । | ख |
| ३५ | वत्ता य वि° | क, ख | २२ | सिक्खविया संपुण्णा | ख | २५ | विभूसिपसुं | जे, क, ख | | य जेपाला | क |
| ३५ | विमलाप | जे | | न हु कोडि गुरुक्खेवं | | २७ | जयाहिलासी | ख | | य णामाला | जे |
| ३६ | घरिही पा° | .. | | वच्चइ सिस्सेसु सत्तिस- | | २७ | अब्भिभट्टा | जे, ख | ६५ | वेज्जा ति° | जे |
| ३८ | लळिङ्गघरो | .. | | मुहेसु | जे | | | | | | |

| | | | | | | | | | | | |
|----|---------------------|-----|----|------------------|-----|----|---------------------|--------|----|-------------------|--------|
| ६५ | बयंबिद्धा | जे | १२ | कहिं व सो | क,ख | ५८ | आभिद्धा | जे | १६ | तु रणसीहा | जे |
| ६५ | ला रसमया | क,ख | १४ | स्स य वहं च | जे | ५९ | सत्तिकोन्तेहिं | जे | १७ | तस्सेयं | क,ख |
| ६६ | य, खिसा | ख | १६ | णा । साङ्गण | क,ख | ५९ | सीखं गहि एकमणा, कुं | क | १९ | भयजगणं | क,ख जे |
| ६६ | हुंति | क,ख | १७ | तुम्मे हं रा | जे | ५९ | का करेन्ति | जे | २० | वियलियप्पहं | जे |
| ६६ | सुरसेला | जे | १८ | वसे कया | जे | ६० | जांव | जे | २२ | धणुवं | क,ख |
| ६६ | सेणा वण्णीया गंधारा | क,ख | १९ | वत्ता ते | क,ख | ६० | गयनिवहजोहणिव- | जे | २२ | लियं स | जे |
| ६७ | कोसला लया | क,ख | २० | तेहिं पडि | क,ख | ६० | हेहिं | क,ख | २३ | विहियमाणा | क,ख |
| ६७ | पुरिय कुवेर | जे | २० | परिभगिया | जे | ६० | तांव | जे | २४ | सिलादीयं | जे |
| ६७ | कुहेडा अण्णे य | जे | २४ | तरुगहणं व | क,ख | ६१ | यहेसिय | क,ख | २४ | हाजाय | जे |
| ६७ | तहा कलिगमादीया । | जे | २५ | महिसयादीया । | जे | ६१ | एकमेकी | जे | २६ | भक्थ | क,ख |
| ६७ | पुरिकोविरा | क | २५ | रयणचेलियबहुकंचण- | जे | ६१ | अम्मिहं | जे | २८ | सीयासुया य एए | जे |
| ६७ | यते अन्ने | क,ख | २६ | भारभरभरिया | जे | ६२ | यङ्गादी | जे | २८ | लवणकुसा | जे |
| ६८ | पुण्डरीयं | ख | २६ | नेवच्छ | जे | ६४ | इ सोऊणं | जे | २८ | जेसु य व | क,ख |
| ६८ | विभवा | जे | २७ | कणधमया ऊं | क,ख | ६५ | मादीया | जे | २८ | जेसु | जे |
| ७० | न्दसमसरिसे | जे | २८ | चेलियादीयं | जे | ६५ | रिवुवल | जे | ३३ | पुत्ता, कुं | जे |
| ७२ | हरिसातन्त्र द्वियं | जे | २९ | वणपरमरमं | जे | ६७ | ण धीरेण | क,ख | ३४ | मयाऽतिकहं | क,ख |
| ७३ | णा, वसंति | क,ख | ३० | नियहं न | जे | ७० | हं व लमो | जे | ३४ | द्वियस्स अं | ख |
| ७३ | ते कमऽपुरे सिउंभवा | जे | ३० | या धीरा | क,ख | ७० | बाणे तां | जे | ३५ | उदरत्था | जे |
| ७३ | इति | जे | ३४ | कि त्थ भणइ | जे | ७३ | णं, तहेवाणुसं | जे | ३६ | यवरसामी | जे |
| ७३ | लवणकुसं | जे | ३५ | यं राहवो भणइ स | क,ख | ७४ | निच्छिथाण | जे | ३७ | वच्छया सपुण्णा | जे |
| ७३ | लवणकुस | जे | ३६ | ऊण एकमेयं | क,ख | ७४ | निययं | जे | ३९ | एतो विओगदुक्केण | जे |
| ७३ | संपुञ्जिओ | जे | ३८ | ए निरवसेसे | जे | ७४ | इति | जे | ४० | दुक्खियसरीरो । आ० | क,ख |
| ७३ | नाम पव्वं | जे | ३८ | यमणसो | क,ख | ७४ | लवकुसं | जे | ४० | सुणिऊणं | जे,क,ख |
| ७३ | धम्मतं | क | ३९ | सुणिऊण भा | जे | ७४ | नाम पव्वं | जे | ४१ | घणपीहं | जे |
| ७३ | उद्देश-६९ | जे | ३९ | रेण कमलपुरे | जे | ७४ | उद्देश-१०० | जे | ४२ | पुत्ताण दइययस्स उ | जे |
| १ | पवरगुणं | जे | ४० | मायापियरेण | क,ख | १ | महाणराहिव | क | ४६ | समा | जे |
| १ | इसरियं | क,ख | ४० | पलोएइ | जे | १ | अहिट्टिओ | जे | ४६ | उग्गीवा | जे |
| १ | पाविउं व | जे | ४१ | भाउमा | जे | ३ | तं । वाहेहि | क,ख | ४७ | तत्थ वलमो | जे |
| १ | पुण्डरीयं | क | ४१ | निव्वासणाओ | जे | ४ | निहामिब संपत्ता | जे | ४७ | भरणे | जे |
| २ | समाणो | जे | ४१ | साहंति य जं | जे | ६ | अडुबपहिं | जे | ४८ | गोयराइ | जे |
| २ | उज्झउं देसे | जे | ४७ | मणउज्जन्ती | जे | ७ | व तुज्ज भुवाओ | जे | ५१ | नियंतीहिं | ख |
| ३ | उ उ स | जे | ४८ | वलमो | जे | ८ | सिद्धियइ अइरं चिय | जे | ५१ | जुवतीहिं | जे |
| ४ | कुट्टवस्स | जे | ४८ | सेसे वि | जे | ९ | विहलं | जे | ५१ | विवडियं नेय वि | क |
| ४ | संपुञ्जिओ | जे | ४८ | माणासु | जे | ९ | रक्त्रणेणं | जे | ५२ | मापुअं | क,ख |
| ४ | संपुओ | क,ख | ५२ | सयवलमगा | जे | १० | णं । हत्थाण | जे | ५३ | न य पे | जे |
| ५ | सयइ | जे | ५३ | यं बहलत्तरं | जे | १० | रामणस्स | जे | ५५ | अपसारिं | जे |
| ८ | कुट्टवस्स | जे | ५४ | इ सोउं | जे | १३ | वि य देइ | जे | ५५ | अं नियइ | जे |
| ९ | सिद्धत्यं भणइ रिसी | जे | ५४ | सुणिऊण लवकुसा | क,ख | १४ | रिवुभडाणं | जे,क,ख | ५६ | गवकधंतरं | जे |
| १० | अंबो सां | जे | ५५ | जिययसेणं । स | क,ख | | | | | | |
| | | | ५५ | गव्वंगनेवालं | जे | | | | | | |
| | | | ५६ | ण धीरपुरिसाणं । | जे | | | | | | |
| | | | | लं | क,ख | | | | | | |

| | | | | | | | | | |
|----|-----------------|--------|----|-------------------|--------|----|--------------------|-----|-----------------------|
| ५६ | कया सन्वा | ख | १८ | विसञ्जिय | जे | ४४ | अभिवन्दि | जे | उद्देश-१०२ |
| | कया बहवे | जे | १९ | भणियमंती | ,, | ४४ | सुचिर | क,ख | |
| ५७ | उवट्टिया | क | १९ | गया सुहका | ,, | ४५ | विकल जं | मु | १ महन्त । |
| ५८ | य तओ सुयपिछस | जे | २० | रयणीगमिय एकं | ,, | ४५ | विकलं पुण्णस्स | | २ पिच्छस्सं |
| | सुगपिछसमपहेहि | | २१ | ंणुविलग्गा | क,ख | | तस्स माहए | जे | २ समाइरणं |
| | कुसो | क | २२ | संतं महाणुभावंतं | जे | ४८ | होति वि | ख | २ पाविही हु |
| ६० | हणुयंतं | जे | २२ | तइल्लेके | क,ख | | होति वि | क | ३ जंपिही जं |
| ६१ | ंयमादी | ,, | २३ | खेयरलोगो | जे | ४९ | अईणिकलणं | जे | ३ नन्दणी |
| ६१ | नायरलोए | ,, | २३ | साहुकार | ,, | ५० | चिय एत्थ अस्थि तं | क,ख | ५ निव्वविओ |
| ६१ | पलोयन्ति | क,ख | २५ | ंणं तत्थ केई ह | ,, | ५१ | ं व य ह | जे | ६ हा हवइ |
| ६२ | ंत्ता दट्ठणचारं | जे | २७ | ंथा चि न मया | | ५२ | कालागइचंदणाईथूरेहि | ,, | ८ मेहेहि |
| | इति | ,, | २९ | वंदेही | जे | | ंणाइधूलेहि | ख | ९ मेहिणीए |
| | लवकुसं | क,ख,जे | २९ | अन्नसरह पे | क,ख | ५५ | ंवयणाविवाए | क,ख | ९ किवालुयं |
| | नाम पव्वं | जे | २९ | न तहा तीरामि | | ५५ | जह तस्स तीए दुक्खं | | १० परिणाहीसु य |
| | सइमं | क,ख | | गयलज्जे | जे | | जणिय तं सुणह | | १३ दाऊण कां |
| | सम्मत्तं | जे,क | ३९ | गयलज्जे | क | | एयमणो | क,ख | १३ काउस्सग्गं |
| | त्तं ॥ शुभम् | क | ३० | बहुं दियहा | जे | ५६ | ंहरो बलिओ | क | १३ जिणा उ |
| | | | ३२ | दोहलं | ,, | ५७ | ंभूसणो तीसे । | क,ख | १३ मादीए |
| | | | ३३ | जे ह | ,, | ६१ | विज्जुमई | जे | १५ तहायरिय |
| | | | ३३ | ंन्ती वणे महाघोरे | ,, | ६२ | छेत्तुं आलाणाओ | ,, | १६ अभिलसिओ |
| | | | ३३ | तो तुज्ज किञ्चि | | ६३ | ंकटया तओ सुयइ | ,, | १८ ट्टाणलं |
| | | | ३३ | विभवं होतं | ,, | ६३ | ंउ खत्त | जे | १८ जणयतणया |
| | | | ३४ | किण अ | क,ख | ६४ | साहु | ,, | १८ संपञ्जा |
| | | | ३५ | अब्बधुमणां | क,ख | ६४ | पम्मुक्को | क,ख | १९ या उ इ |
| | | | ३५ | अणहूयमाणसाणं हुं | जे | ६४ | ंरे ति भिं | जे | २१ इज्जत्ति इति इत्थइ |
| | | | ३५ | ंय, भवइह | क | ६५ | रं । सं वं | ,, | २१ पलोइकं |
| | | | ३८ | भणित्तण एवमेयं | जे | ६६ | पत्ते अं | क,ख | २२ खुभियसां |
| | | | ३८ | ंहि मे वं | क,ख | ६६ | ंउदये त्तिं | ,, | २३ बुभित्तं |
| | | | ३८ | लोगमिहं | जे | ६८ | दुक्खाघायणेसु | जे | २३ समादत्तो |
| | | | ३९ | धरमि | ,, | ७२ | भाविएसु य | क,ख | २४ धुम्भंतो |
| | | | ३९ | धरेमि | सु,क,ख | ७३ | तुम पुण | जे | २४ उं सव्वो ॥ |
| | | | ३९ | ंजे व कं | क,ख | ७४ | करेह | ,, | २५ बुभमाणं |
| | | | ३९ | ंण विसयं | जे | ७४ | हरिणमं | क | २७ सो सव्व जणो |
| | | | ४० | ंऊण पउमो, | क,ख | ७४ | गओ वि सी | जे | सुमणसो तओ |
| | | | ४१ | समए, | क,ख | ७५ | ंवं मि ॥ | ,, | धाविं |
| | | | ४१ | विजणो | जे | ७५ | तिरीइ | ,, | २८ केसरि नि |
| | | | ४२ | ंसु नाह मं | ,, | ७५ | ंणिय तिरिं | ,, | २८ रंणलिणीगुं |
| | | | ४३ | मेहं लवणोयहिं व | ,, | | इति | ,, | २९ सोपणं |
| | | | ४३ | जणयधूयाए | ,, | | ंमणविं | ,, | २९ स्सपत्तं |
| | | | ४४ | विज्जामेत्तेण | ख | | नाम पव्वं | ,, | २९ तस्स व सी |
| | | | | | | | सम्मत्तं | क | |

उद्देश-१०१

| | | | | | | | | | |
|----|--------------|------|--|--|--|--|--|--|--|
| १ | ंणादीहिं | जे | | | | | | | |
| ३ | जणियपरिवायं | ,, | | | | | | | |
| ३ | विदेहाए | क,ख | | | | | | | |
| ४ | पुहइयलं सं | जे | | | | | | | |
| ४ | एवं सं | क,ख | | | | | | | |
| ४ | तीय सं | जे | | | | | | | |
| ४ | होही ण य | क,ख | | | | | | | |
| ४ | होहइ न | जे | | | | | | | |
| ४ | ंभेदेणं | ,, | | | | | | | |
| ६ | ंणापुण्णा | क,ख, | | | | | | | |
| | ंणालुण्णा | जे | | | | | | | |
| ७ | सवहवखणकंखुओ | ,, | | | | | | | |
| ८ | ंमादीयं | ,, | | | | | | | |
| ९ | ंहणुवंता | क,ख | | | | | | | |
| १० | पत्ते मं | क,ख | | | | | | | |
| १० | पविसन्ति | ,, | | | | | | | |
| १४ | ंवं मिल्हेहि | क | | | | | | | |
| १६ | गिण्हइ | जे | | | | | | | |
| १६ | कयाई | ,, | | | | | | | |
| १६ | ओओ अं | क,ख | | | | | | | |

| | | | | | | | | | | | |
|----|---------------------|------|-----|--------------------|-------|-----|-----------------------|----------|-----|---------------------|----------|
| ३१ | विजिज्जइ | „ | ७४ | °जादीसु | „ | १३० | सरुवा | जे | १७४ | °मादीयं | जे, क, ख |
| ३१ | देव्वेहि | क, | ७६ | समुववण्णा | जे | १३१ | °पत्तनयणाओ | „ | १७५ | °रासी होइ कुहम्मेषु | |
| ३२ | सीलाए | जे | ७७ | दुरभि | क, ख | १३२ | भूमीए । | „ | १७५ | जइ वि तव° | जे |
| ३४ | साधुकारं | „ | ७९ | भिण्णसिर° | जे | १३३ | °पं अपत्तदाणं सुपत्त° | „ | १७५ | पारिविति | क |
| ३५ | जणयरायधूया | | ८२ | °सियालेसु ख° | क, ख | १३४ | साहवो धीरा | „ | १७६ | °व तह | क, ख |
| ३५ | लवणकुसा | जे | ८४ | निमसं | जे | १३५ | सत्तीविभत्तावि° | क | १७६ | °ओ भविस्सइ धणियं जे | |
| ३६ | समीनवत्थो | „ | ८५ | °तण्हातियाइं | जे | १३५ | हवेज्ज | जे | १७७ | अण्णाणीतवस्सी | „ |
| ३६ | °वसंघो | क | ८८ | °रा व हो° | „ | १३७ | °य पि विउज्ज° | क, ख | १७७ | तिहि मुत्तं ख° | „ |
| ३७ | अलम्भं न | जे | ८८ | पत्ते दे° | „ | १३८ | तुम्भं क° | जे | १७८ | जिणघम्मरया | „ |
| ३८ | उहस्साणं | „ | ९० | पत्तेसु | क | १३९ | °वीमविहा | „ | १७८ | सुक्कःसाणे निरया | „ |
| ३८ | उत्तमं | „ | ९२ | पत्तेसु | जे, क | १३९ | °वीसविहाओ सी° | क | १७९ | एयं सु° | „ |
| ३९ | मन्दिरा° | „ | ९३ | एकौ व पुणो | „ | १३९ | उत्तोसं पुण आउं | जे | १७९ | °मो भणइ साहवं भ° | „ |
| ४० | सुरलोगसमं | क, ख | ९४ | पग्गिदि° | „ | १४० | तारणा जेया | „ | १७९ | जेण भव्वां स° | „ |
| ४३ | भोगा सु° | क | ९४ | जांव | जे | १४१ | लं अयाणंता | „ | १७९ | त्रिमुच्चन्ति | „ |
| ४४ | भोगेसु | जे | ९४ | °चक्खु° | „ | १४३ | बंभयक° | सु | १८० | °रे थ तुत्तो | „ |
| ४५ | सुपरितन्ता | „ | ९५ | °रा उ नां | क, ख | १४३ | महाकप्पो वि य अद्रुमओ | जे | १८१ | जीवादीयाण | „ |
| ४६ | °वसोभा | „ | १०१ | °दीवादीया | जे | १४३ | हवइ सहसरो | जे | १८१ | लोइयसुइंसु | „ |
| | °व सोया | क, ख | १०३ | नाभिगिरि | „ | १४५ | ताण वि य उहिसामी, | „ | १८२ | °दिट्ठीओ यो | क, ख |
| ४८ | ताव मुणि° | क, ख | १०४ | लवणतोए | „ | १४६ | °मपराइयं | „ | १८२ | °रहियं | जे, क, ख |
| ५० | आसत्तो | क, ख | १०४ | उभओ भणन्ति सत्त्वे | „ | १४८ | °यालीसा ल° | „ | १८२ | °सणो वीय | जे |
| ५३ | °ण नदेवत्तं | जे | १०७ | °न्धू तह रो° | क, ख | १५१ | °णाणं । विमाणाण म° | „ | १८२ | °पसरं तह ह° | ख |
| ५५ | आणेह लहुं | क | १०८ | हवइ न° | क, ख | १५२ | सहस्सा | „ | १८२ | °रं हवइ सया सुद- | |
| ५८ | °वरस्स पासंमि । | जे | १०९ | °जम्भूसहीणाओ | जे | १५२ | हवन्ति | „ | १८२ | चारित्तं | जे |
| | च° | जे | ११० | जम्भूदीवस्स | „ | १५३ | °मादीसु | „ | १८३ | °विरओ | „ |
| ५८ | सुणासी सुरो इव | „ | ११० | °रं दीवो | „ | १५५ | रिद्धज्जपणीलज्जरा एए | सु | १८७ | कओ होइ | „ |
| ६० | °सु य स° | क, ख | १११ | हरिवरिसं | „ | १५५ | जयणा तहजिरामा | जे | १८८ | इस्थीरइ | „ |
| ६२ | तच्चाथसुहं निववोहणं | जे | ११३ | °सो हवइ, तं | „ | १५८ | सक्को रामेइ यु° | „ | १८९ | °ण तओ छ° | „ |
| ६५ | °स्स व हिट्ठा स° | क, ख | ११७ | जोइंदुमाण | „ | १६० | सो तेहि स° | „ | १९१ | ईकामनि° | क |
| ६५ | °पुढवीओ | जे | ११९ | °वियप्पो | जे, क | १६१ | °ला य देवीया | „ | १९२ | एयंवि° | जे |
| ६५ | °पभाइ° | „ | १२० | °वट्ठय कट्टोरववद° | जे | १६४ | °स सोलस अ° | „ | १९२ | लिगिस्स | „ |
| ६६ | तत्तो तमा | „ | १२० | °मादीणि | „ | १६५ | तेस्सीसा | जे, क, ख | १९३ | °णी जइ वि कुणे | |
| ६७ | होति लक्खाओ | „ | १२३ | चच्चोसयं | क, ख | १६५ | इह मोह° | जे | १९४ | तवच्चरणं | जे |
| ६९ | °इंदएकमो | „ | ११४ | °असोग पुण्णाग- | „ | १६६ | रहियान | जे, क, ख | १९४ | ओ ण हि सम्म° | „ |
| ७० | ऊणावणं | „ | | नाथमादीणि | „ | १६७ | जोइंसाण | जे | १९५ | °वढमतीओ | „ |
| ७० | एकं अं | „ | १२६ | °णुराणेणं | क | १७० | मेवेज्जमाण | „ | १९५ | भवा गं | जे |
| ७१ | °लीससट्ठसया, सत्त थ | „ | १२९ | आउट्ठीइ | जे | १७१ | अणंतगुणियं ति° | जे | १९६ | कोवि पुण | „ |
| | छप्पण तह | „ | १२७ | हरिवरिसे | „ | १७१ | °दाणं णरवइ | „ | १९६ | भवियलोओ ए° | „ |
| ७१ | अण्णड्डाणो | क, ख | १२७ | तिणिण थ, एं | „ | १७२ | °व य त्रिबुहकुरुवाए | क, ख | १९६ | °त्तं वीरो | क, ख |
| ७२ | करपत्तसिपत्तं | जे | १२८ | °या णिरोगा य । च° | „ | १७२ | भागं पि | „ | १९७ | °धम्मो | जे |
| ७३ | पावपरा | „ | १३० | | „ | १७३ | तथेव अं | जे | २०० | तुम्भंतस्स | जे, क |

| | | | | | | | | | | |
|-----|-----------|-----|----|---------------------|-----|-----|------------------|--------|----------------------|--------|
| २०० | देह ॥ | जे | २३ | गजीव हियया | क,ख | ६३ | ज्ञया कयाई मुणी | १०२ | बारसविहं तु | जे |
| २०२ | सरिसे । | „ | २४ | गुमं किं | जे | ६३ | समां | १०२ | ततो जाया बम्भ- | |
| २०३ | एवं के° | क,ख | २५ | जं एवमादीयं । | „ | ६३ | पुहविं पविहरमाणो | १०४ | विमाणे देवी अहं | क,ख |
| २०३ | सुणिउं | „ | २५ | रत्तिं सत्त्वं चियं | „ | ६४ | पुहइपालो | १०४ | संपत्तो परिं | „ |
| | इति | जे | | भक्खियं । | „ | ६८ | साइलोलुओ | १०५ | त्तो सोमितीए | जे |
| | धम्मरसवण | क | २७ | अणमित्तदोसेणं | „ | ६८ | सरलत्तनेहवडिओ | १०६ | विणयसे° | „ |
| | नाम पब्बं | जे | २८ | सा खायंति य सी° | „ | ६८ | देसिओ धम्मो | १०७ | दसमासुं | „ |
| | सम्मत्तं | क | २९ | वि य पुं | „ | ६८ | देसिगं धम्मं | १०८ | तवंधरो | „ |
| | | | २९ | सा रिउळ्ळं | „ | ६९ | जम्मो | ११० | ह हो मू° | „ |
| | | | ३० | री भुंजंता रयणिं | „ | ७० | ज्जादीयं | ११० | सागसुद्धीए | क |
| | | | ३१ | महुमज्जमंसविरइं | „ | ७० | निविसं | १११ | आचूणिगं | ख |
| | | | ३३ | इह आया | क,ख | ७१ | य्याणं बहुं | ११२ | गिण्हइ | क |
| | | | ३३ | कितीया | „ | ७३ | इ नरजलेसु वि | ११४ | मरइ नरो नियणं | क,ख |
| | | | ३३ | भवसु | ख | | समुद्धो | ११४ | केकसीए | ख |
| | | | ३३ | पाविति | जे | | तितीमुवगओ | ११५ | कि थ मं | जे |
| | | | ३४ | „ | „ | | तितीमुवगओ | ११७ | एसो सो धणदत्तो | |
| | | | ३४ | यं धीरा | क,ख | | जेसु वत्थेसु | | आसी बंभम्मि | |
| | | | ३५ | आयरेण | जे | | जेसु तिप्पेसु | | बंधलोवइ | „ |
| | | | ३८ | धारणीए | „ | | सुविणं | १२१ | गुणमतीए | „ |
| | | | ३८ | णं । सिद्धीतणओ | | | करेह | १२२ | अन्नबलीविप्पो | „ |
| | | | | जाओ | क,ख | | व्वयाणी | | जन्नवकिविप्पो | क,ख |
| | | | ३९ | छत्तछाए त्ति | जे | | पज्जवाइं | १२३ | एते सं | जे |
| | | | ३९ | वरवसभो | „ | | ऊण पडिबुद्धो । | १२३ | सिणेइ सम्भावा | „ |
| | | | ४१ | ओयरियं तं | क | | ठिइकन्तं | १२४ | णो विथ परिं | „ |
| | | | ४२ | सिरिदत्ताए | जे | | जोगधरो | १२४ | पुव्वजणणं | „ |
| | | | ४२ | सुओ अह सो वं | „ | | रओ इदियसमिओ | १२५ | निसुणह | „ |
| | | | ४५ | निययभव चित्तियं | ख | | तिगुत्तिं | १२५ | मंदारण्णे | जे,क |
| | | | ४६ | मणुस्से इं | क,ख | | समित्तिगुत्तिं | १२८ | णिदाअरविं | क,ख |
| | | | ४६ | जाणिहइ | „ | | निरावेक्खो | १२८ | संनिहसरिच्छो | जे |
| | | | ४९ | पसंसइ पं | जे | | जेमंतो | १२९ | हे गळ्ळे विं | „ |
| | | | ५१ | प्पसादेणं | „ | | धणवंतो | १२९ | कोइलवरे | „ |
| | | | ५२ | पिया नेय वं | „ | | कमेण | १३१ | ओ व जां | क |
| | | | ५२ | समाहिरयणरस | „ | | ण मए वि परिं | १३१ | ततो वि चुओ | „ |
| | | | ५६ | समाहं मरणं | „ | | ओ हवइ तस्स सिरिं | १३१ | समाणो वाली | जे |
| | | | ५७ | उद्धे पुरवरे रंमं | „ | | जा सा आसि गुणमई | १३५ | अरायपुत्तो सो | „ |
| | | | ५८ | संसभो | „ | | भमिउं | १३७ | पुव्ववेर पडिबुद्धा । | क,ख |
| | | | ५९ | खयररिद्धिं | „ | | इत्थीयकम्मं | १३७ | वि हु सो | „ |
| | | | ६० | सुहम्माए | „ | | जीएसेसाए | १३८ | खइओ | जे,क,ख |
| | | | ६१ | सिक्खन्दो | „ | | न्ती तेण सं | १४१ | हेऊ सो | जे |
| | | | ६१ | लायजपडिपुज्जो | क,ख | १०० | वेगवती | १४३ | पुब्बिं सो | ख |
| | | | ६२ | दोगुन्दुगो | जे | १०० | | थोडवरो | जे | |

| | | | | | | | | | | | |
|-----|------------------------------|---------|-----|--------------------|--------|----|---------------------|--------|----|------------------------|--------|
| १४३ | सीयाए जह अणुओ म० | क | १७१ | परिचिन्ते | जे | ३२ | ंत्यो चेलओ जा | क,ख | ३२ | गओ खितं | क,ख |
| १४५ | कहेइ | | १७१ | जणयध्या | जे | ३४ | एयं सुं | क,ख | ३३ | तो ते दो | जे |
| १४६ | सिग्घं | | १७४ | अभिणं | क | ३४ | पहट्टियाणं | क | ३३ | ंला उवगरणं | जे |
| १४७ | फिट्टिही अं | क,ख | १७४ | ंतो सो मयं भं | जे | ३४ | तुव्मेहि सव्वे | क,ख | ३४ | सियाले | जे |
| १४७ | एस सां | जे | १७५ | एवं रां | क,ख | ३४ | पसत्ता | जे | ३५ | दीया कां | जे |
| १५१ | ंस्स ण य सो कयाइ कहियव्वो | क,ख | १७५ | भावेणं । | जे | | नाम पव्वं | जे | ३६ | ंतं तत्थ कुणइ सो | जे |
| १५१ | धम्मभिरं | जे | १७५ | बोहिलाभं | जे | | सम्मत्तं | क | ३६ | जणणीयं | क,ख |
| १५१ | ंयाए व ॥ | जे | | राधवपुव्वं | जे | | | | ३७ | ओ से भो तं | ख |
| १५२ | दोसं भो परस्स भां | जे | | नाम पव्वं | जे | | | | ३७ | ओ से तो | क |
| १५२ | दोसं संजयस्स भां | क,ख | | | | | | | ३७ | तो नं बां | जे |
| १५२ | संसारं | क | | | | | | | | | |
| १५२ | अणुहोन्तो | क,ख | | | | | | | | | |
| १५४ | सम्महिट्ठी | | | | | | | | | | |
| १५४ | सम्मत्तं | क,ख | | | | | | | | | |
| १५५ | मुणइ भ० | जे | | | | | | | | | |
| १५५ | ंन्ते चिरपरिहिंडंतो सुं | जे | | | | | | | | | |
| १५६ | गिण्हामि | क | | | | | | | | | |
| १५७ | सो भणइ | जे | | | | | | | | | |
| १५७ | गिण्हसि | जे | | | | | | | | | |
| १५८ | छुहातीया | जे | | | | | | | | | |
| १५८ | छुहाईए वि सहिस्ससि परीसहे | क,ख | | | | | | | | | |
| १५८ | विसहिस्सहि उरग-परिसहा घोरा । | जे | | | | | | | | | |
| १५९ | गिण्हिहिसि | जे,क | | | | | | | | | |
| १६० | ंय जइ तुह य दां | जे | | | | | | | | | |
| १६२ | ंण रामं, सों | क,ख | | | | | | | | | |
| १६२ | सव्वसुहडायं सव्वसुहडाणं | क | | | | | | | | | |
| १६५ | ंपरिहाणी | जे,क,ख | | | | | | | | | |
| १६६ | दुच्चरवं | क | | | | | | | | | |
| १६७ | भुओदरं | जे | | | | | | | | | |
| १६८ | भुओवरिमं | क,ख | | | | | | | | | |
| १६८ | भुजिही | मु,जे,क | | | | | | | | | |
| १६९ | ंन्ती उ जा | जे | | | | | | | | | |
| १६९ | ंवा । हा किइ लभिही मिइ | जे | | | | | | | | | |
| १६९ | धं गिण्हिहे | क | | | | | | | | | |
| | | | १७१ | चरियं | क | १ | चइउण | क | ३७ | परिकहेइ | क,ख |
| | | | ३ | णरेंदं | क | १ | ंण पईपुत्ते | जे | ३९ | माया हवइ य ध्या, | जे |
| | | | ४ | त्ति णामा धं | क,ख | २ | सव्वभूतणं | जे | | वप्पो पुत्तो समुववेइ | जे |
| | | | ८ | आलावियं | क | २ | ओ निययं ॥ | जे | ४० | ंविफडियइ इह सुइरं | जे |
| | | | | जालीवियं | ख | ३ | लावणं | जे | ४२ | कोरुहुया दीयं | जे |
| | | | ९ | बाराणसी देसं | जे | ६ | निच्चं सउज्जायझाण- | जे | | कोरुहुमाईयं | क,ख |
| | | | १० | मन्ती य सव्वसत्तो | क | | गयभावा | जे | ४३ | संवेगजं | ख |
| | | | १० | सव्वरउजं | जे | ६ | समितोसु | जे | ४४ | ते वि य जणेण विं | जे |
| | | | ११ | तेण वि य उं | क,ख | ८ | सा तिसट्ठिं | क,ख | ४४ | कलकलं | क,ख |
| | | | १२ | को तुम्ह सां | जे | ८ | मुमणसा कां | जे | ४४ | एए मंतासी कोरुहुया य | जे |
| | | | १३ | अकउजेणं | क,ख | ८ | दिवसं विं | क | | कह वंभणा आया | जे |
| | | | १३ | सिरिवद्धणं | जे,क,ख | ९ | दिवषा विं | ख | ४५ | सव्वेहि | क |
| | | | १५ | ंरिं भईवरुद्धो | जे | ९ | बावीसाअरयठिई | जे | ४६ | अव्वभचारो | क,ख |
| | | | १६ | कासिपुरं | जे | ११ | जुवतीहिं परिवुडो | जे | ४७ | पत्ते | क |
| | | | १७ | ंउं ताव तुं | जे | ११ | सोइइन्तो | जे | ४७ | ंणा उ वं | जे,क,ख |
| | | | १९ | सामी मणेण परिं | जे | ११ | सुहपउरे | जे,क,ख | ४७ | वयवद्धमिं | जे |
| | | | २१ | बाराणसी | जे | १५ | मधुकैट्ठवा | क,ख | ४७ | वम्मजुत्ता य | जे |
| | | | २४ | ंसीए घोराए । | जे | १६ | नित्थयरेसु मं | क | ४८ | दइन्ति | जे |
| | | | २५ | काउण | जे | १७ | ंहि मह सव्वं | जे | ४८ | साहेन्ति | क,ख |
| | | | २६ | ंरीए वामदेविसुया । | क,ख | १८ | मधुकै | क,ख | ४९ | ंणामाओ । | क |
| | | | २६ | ंरीए दामदेविसुया | जे | २० | उ मूदेतो | जे | ५१ | वरेंदो | जे |
| | | | २६ | वसुदेवसुया जाया | जे | २१ | ंरयाइलोगसंमूढा | जे | ५१ | पडिमाए विं | जे |
| | | | | भासि | जे,क,ख | २१ | पडिणीया | क,ख | ५१ | विउवणे सो । ठां | जे,मु |
| | | | २७ | जोयणलां | जे | २३ | ंहेउम्मि निफिडिओ | जे | ५३ | ंनियमाळीविय | जे |
| | | | ३० | रइसं | जे | २४ | भइमहतो | जे | ५४ | कव्वायसत्तपं | जे |
| | | | ३० | ंसयं ठाणं | क,ख | २७ | ंचि अरथं | क,ख | ५५ | ंयपुरफुत्तमिच्चिमियियं | क |
| | | | ३१ | ंया ते तुं | क | २७ | लोगमज्जे | क,ख | ५९ | ंपिक्कालोयं | जे |
| | | | ३१ | ंकरसुहंकरा | जे | २८ | भणियं तुम्हेहिं | जे | ६० | कठोरं | जे |
| | | | | | | २८ | ंन्ति तउ विप्पा सां | जे | ६० | ंहतडियफुं | ख |
| | | | | | | २८ | ंणामाउ आगया अम्हे ॥ | जे | ६० | ंसलद्धणियसुहं ॥ | क,ख |

| | | | | | | | | |
|-----|------------------------|-----|-----------------------|-------------------------|----------------------|-----------------------|------------------|-------------------------|
| ६० | °जुद्धवर्षं | जे | १०३ | °णं तरस्स न दो° जे,मु ख | ३० | आघादं | १५ | कुणइह पुरिसो गेय जे,क,ख |
| ६१ | °लचयलं | ॥ | १०४ | सो किइ जे | ३१ | °व करणेहिं | १५ | °वलं भयंतो क,ख |
| ६३ | लोमो | क,ख | १०५ | महाडण्डं ॥ | ३१ | °वेणं य ॥ | १५ | यरधवले जे |
| ६३ | बम्भणा | क,ख | १०६ | °च्छा य इवइ लो° ॥ | ३२ | °हरा विवुहावासा व ॥ | १५ | होह ध° ॥ |
| ६४ | इह पुण वि° | जे | १०७ | तत्थ य किं ॥ | ३२ | °हरा विवुहावास व्प सु | इति ॥ | |
| ६६ | उद्धिओ | ॥ | १०८ | अत्ताणं क,ख | ३२ | वियुद्धा° क | °लोमणमणं ॥ | |
| ६७ | पिच्छन्तो | क | ११२ | °नियमजुत्तयुत्तमणा ॥ | ३२ | पासाथा जे,मु | नाम पत्वं ॥ | |
| ६७ | वेच्छंति य थम्भिया | ११३ | सेणिय कप्पे सीया इंदो | ३२ | °णिजा जे,मु | संमत्तं क | | |
| | विप्पा | जे | इव जह तहेव इमं ॥ ॥ | ३३ | °पाण भोयण म° जे | | | |
| ६८ | गुणधरेणं | क,ख | ११४ | इहं म° ॥ | ३३ | °मल्लाभरणेसु ॥ | | |
| ६८ | वि ह ते वि पडि° | जे | ११४ | °व धीरचं°द्वयं ॥ | ३४ | तुम्ह वि° जे,क,ख | १ | गुणेइ जे |
| ७१ | तूरेन्तो | ॥ | ११४ | तुम्ह म° ॥ | ३५ | °राण वि बोलियमणंता जे | १ | भोगं चिय सु क |
| ७५ | पणमिय पुणो | ॥ | ११४ | सुणाहि ॥ | ३५ | °णंतं क | २ | °काणणवराइं ॥ |
| ७२ | समणं तं थ° | क,ख | इति ॥ | ४० | वन्धवसि° क,ख | ३ | °लमुहलुग्गीए ॥ | |
| ७२ | एए पुत्ता मे तुज्ज क,ख | | महुत्त° ॥ | ४० | दारुणे म° क,ख | ३ | °सुंचंतं जे,क,ख | |
| ७४ | मुणिरस्स जे | | नाम पत्वं ॥ | ४१ | °मादुकुडे जे,क,ख | ४ | °नगवरे जे | |
| ७६ | गारन्तो ॥ | | संमत्तं क | ४१ | भयावच्चं क | ४ | चेइयघराणं क,ख | |
| ७७ | महाजज्जवं ॥ | | | ४२ | °विलीए जे | ४ | °माणेसु आरुडो क | |
| ८१ | गिहधम्मं जे,क,ख | | | ४२ | समुच्चणता क | ५ | परिहच्छो जे | |
| ८१ | दोणिं वि देवा जे,क,ख | | | ४२ | समुत्पण्णा जे | ७ | उब्भासिन्तं क | |
| ८४ | °यसयलकु° जे | १ | सयंहुय दो° क | ४४ | अवमणिया ॥ | ९ | °उत्तचारुचामर° क | |
| ८५ | खइउं अ° ॥ | ३ | °ण्णा कणयपुरं चेवम- | ४७ | महिन्ददडधोया ॥ | ९ | °मालाडे जे | |
| ८६ | नरंदा ॥ | | पुपत्ता क,ख | ४८ | सुणित्तं क | १० | उवरोवरि क,ख | |
| ८७ | उडणसेणो ॥ | ६ | रायउवही जे | | सुणेति ख | १० | वरंद्धस्स ॥ | |
| ८८ | तूरेन्ता क | ८ | °हि दिन्न दिद्धो ख | ४८ | नरा संमंता जे | ११ | घरणितले ॥ | |
| ८८ | °नरंद्स्स जे | १० | जह-इसिय° क,ख | | इति ॥ | ११ | विहरे क,ख | |
| ९१ | भुज्जप भा° ॥ | १० | °य पमुक्क हुं क,ख | | नाम पत्वं ॥ | १२ | °मादीहिं जे | |
| ९३ | °सामन्ता ॥ | ११ | सयंवरो जे,क,ख | | | १२ | साहाहिं ॥ | |
| ९४ | सामाणिओ ॥ | १४ | पडिक्किणा जे | | | १३ | °गोच्छकेसर जे | |
| ९५ | नरं देण क | १८ | अम्हेहिं कैण जे,क,ख | ३ | पवत्तो जे | १३ | °गन्थेहिं ॥ | |
| ९६ | नरेन्दो जे | १८ | गुणाण ए° जे | ३ | सुस्सिइइ ॥ | १३ | वासंती व दि° ॥ | |
| ९७ | °सोगतालियंगो ॥ | १८ | जाणसि सु° ॥ | ५ | इहिस्से ॥ | १८ | पूइन्ति ॥ | |
| ९८ | एयं अ° ॥ | १९ | तत्थ ते कुमारवरा ॥ | ८ | एवमाइं क,ख | १८ | °हि व दि° ख | |
| ९८ | °किरहग्गिहु° ॥ | २० | महिलकएण कम्हा ॥ | ९ | एयं का° क,ख | १९ | °ण च्चेउं जे,ख | |
| ९८ | °सेणो य क,ख | २१ | सुहमसुहं व ॥ | ११ | हाहाकार पलावो, पय° क | | °ण च्चेणं । क | |
| | °सेणा उ जे | २१ | सुहं व दुक्खं व क,ख | १२ | पमादी जे | २० | गुणइ ॥ | |
| १०० | नरं दो ॥ | २४ | °लोणहियं क,ख | १२ | कालुक्खेवं ॥ | २० | पाववयणेहि ॥ | |
| १०० | सहालोयं, व° ॥ | २७ | तहिं वरकुमारा क,ख | १३ | चेव असुहमई ॥ | २२ | दिवसनाहो क,ख | |
| १०१ | °ओ मेहं ॥ | २७ | °लिपुडा जे | १४ | अप्पाणं जेहि पेव | २२ | °दुदुमिणि° क,ख | |
| १०२ | °यं अज्ज तेण मए क,ख | २८ | हाण अम्हाणं ॥ | | संजमियं । एक क,ख | २६ | मणुस्साणं जे | |

उद्देश-१०८

उद्देश-१०७

| | | | | | | | | | | | |
|----|---------------------|----------|----|-------------------------|--------|----|--------------------|----------|----|--------------------|----------|
| २७ | तो किं च एत्थ भं | जे, क, ख | १३ | संसारच्छे° | ख | १४ | महुरक्खराए वायाए | क, ख | ४४ | °गे संगए बहुज्जे | |
| २७ | अवहया | जे | १३ | कुणइ लोगो | क | १६ | तरस गुणकित्तणं | जे | | सोगं | जे |
| २८ | पञ्चेन्द्रियं | ” | १४ | अणुभविउं | जे | १९ | ताण कुणति य चे° | जे | | इति | ” |
| २९ | °कणेसुयाणं रुद्धो | ” | १६ | उत्तभजिणं | ” | २० | सणिव्वमो | ” | | °कुसदिक्खाभिहाणं | ” |
| २९ | पडिदुद्धो | ” | १६ | सुज्झइ | ” | २१ | पिच्छइ | क | | नाम पव्वं | ” |
| ३२ | भोगा प° | ” | १७ | संसारं | ” | २२ | °इ विययणयो | जे | | उद्देश-१११ | |
| ३२ | नेण्हिमो | ” | १८ | °स्स य सु° | ” | २३ | अग्गाइ य म° | ” | | | |
| ३२ | नेण्हेमो | ख | १८ | वि सुरस्स चइ- | | २३ | °सिणेहो । | ” | | | |
| ३४ | निसुणह सुपरिप्फुडं | जे | | यस्स माणुसे सुजे | सु, जे | २४ | °ऊणं गय° | जे, क, ख | १ | वन्धवमरणेण प° | जे |
| ३८ | पुत्तदाराई इह म° | जे | २० | वि हवइ एरिसी बु° | जे | २५ | ऊससइ | जे | २ | सुरभिलु° | ” |
| ४१ | °ण सव्व महि° | ” | २० | जम्मो वि° | ” | २५ | तयावत्थो | ” | २ | सभावभो | ” |
| ४४ | काऊण वंदणविहि | | २२ | °णो अणाइवंधो | ” | २६ | °द्धो परिमुसई तस्स | | २ | सद्धानअइ म° | क |
| | जिणं | क, ख | २२ | °त्थाण जीवाणं | ” | | सो उ अं° | ” | ३ | आलिगइ परि° | जे |
| ४५ | कितिकम्मं | क, ख | २४ | जीयं च असमत्थो | ” | २६ | पिच्छइ | क | ३ | °णो मुसइ | ” |
| ४६ | °लाभरणं | जे | २५ | नय सो ल° | ” | २७ | विज्जा | ” | ४ | एगागी | ” |
| ४६ | °कउच्छाहो | ” | २५ | पउमो परिमुसइ नेह | ” | २७ | °हि च ॥ | जे | ४ | अभिल° | ” |
| ४७ | दाहिणं नामकरोहं, | | २५ | °स्स उ उद° | ” | २८ | विज्जगं | क | ५ | आणेभि गं | ” |
| | कुणं | क, ख | २६ | °णं सुपपवित्तं महग्गं । | ” | २८ | °हिसन्निहोहि वि° | जे | ६ | लोकेन्ति | ” |
| | | | | इति | ” | २९ | तया य | ” | ७ | इयं सव्वं । जुवइ | |
| | | | | °संविहाणं | ” | २९ | जुवतीहि | ” | | जणं ण वि वारसि | क |
| | | | | नाम पव्वं | ” | ३० | °ल वैम्भल° | ख | ७ | म वारसि | जे |
| | | | | सम्मत्तं | क | ३१ | ण अत्ताण । | ख | ८ | °सि सुहं दो° | क, ख |
| ५० | डहिकुमं । के° | ” | | उद्देश-११० | | ३१ | पणइयणसयणवच्छल | | ८ | °ओ, रहसि मह दो° | जे |
| ५० | विमलपरमं | ” | | | | | उल्लवं देहि | | ९ | डहइ | क, ख |
| | इति | ” | | | | | विहसंतो ॥ | जे | ९ | °रविओए ॥ | जे |
| | हणुमतनिं | ” | | | | ३२ | °गुणागर | ” | १० | निव्वणी जं° | ” |
| | नाम पव्वं | ” | १ | कउतूहलि रयण- | | ३३ | अरयाणअगं | क, ख | १० | लभामि | ” |
| | सम्मत्तं | क | | चूलमयचूला | जे | ३४ | निवारोहि | जे | १२ | मउकेन्ति | ख |
| | उद्देश-१०९ | | | °यं जाण ल° | ” | ३५ | सोयायरोहि | ” | १२ | °हिसन्ति | जे |
| | | | | °हुं । किं गच्छइ | ” | ३६ | °मादीहि | ” | १३ | अत्थुरह | जे, क, ख |
| १ | सन्ता वि | जे | | किं रुसइ, | ” | ३६ | °ङ्गणुच्छाणी | क, ख | १३ | काउं भुवंतरमिं | जे |
| २ | °ण व ल° | ” | ४ | मओ च्चि य | ” | ३८ | सो किह कालानला | | १३ | सोवामि | ” |
| ६ | विरियसत्तिं | ” | ४ | °णं पिय | क | | निहओ | जे | १३ | परिसेसियसेसं | ख |
| ७ | °एण चेव सि° | ” | ४ | पलावं | जे | ३९ | कयलीगग्गो व्व | क, ख | १५ | संपाडयामि | क |
| १० | °स्स तरस त° | ” | ५ | जुवतीहि | ” | ३९ | भोगाभिला° | जे | १५ | °व्वं । वावारमणहरं | |
| १० | खीरोवहिं | ” | ६ | °म पत्तं | ख | ४० | °मसंविग्गा | क | | तं, कां | क |
| ११ | °विहूणं | ” | ८ | अत्तायं | जे | ४० | °ण जायसंवेगा | जे | १७ | °न्तो जेणिमेण | जे |
| ११ | पहासियं | ” | ९ | मणंतय अं | ” | ४० | °उद्दये उज्जाणे | जे | १७ | परभवं | ” |
| १२ | °भू थाणु | ” | १२ | °कुविय ति | ” | ४१ | अमयसरनाम° | ” | १८ | निदं | जे |
| १३ | °रो संकरो रुद्धो | ” | १४ | °कुविय ति | ” | ४१ | °धारणा जाया | क | १९ | वि हु पु° | क |
| १३ | उत्तमो | ” | १४ | सामिउ | क | ४२ | अणसोगमं | जे | | | |

| | | | | | | | | | | | |
|----|-----------------|----|----|---------------------|----|----|--------------------|------|----|-----------------------|--------|
| २० | भविष्यकुमुयाण | ख | १६ | °न्तो य आ° | „ | २ | °था वच्चह | जे | २१ | दिट्टी | क,मु |
| २१ | तुमए विरहिए | क | १६ | °सतेहि° | „ | ४ | °स्स पट्टे आ° | ख | २२ | जडागीक° | क |
| २१ | चेव उज्जोयं | जे | १७ | सयणो भाई सरी° | क | ५ | अञ्जं देसं गओ रामो | क | २३ | ते चेव | जे,ख |
| २२ | °म्मि तए न | „ | १७ | °सागरस्स | क | ६ | भुवपञ्ज° | जे | २३ | कोसलपुरं | ख |
| २३ | विमलपहाणस्स तेण | | १७ | स्स व सि° | क | ७ | °ञ्जराव° | क | २४ | वेदिति | जे |
| | पावियं सया | क | १७ | वि मिगयाए | जे | ७ | सूयवारं | जे | २४ | °न्तओ णिययसेष्णेणं | क |
| | इति | जे | १८ | णिरएसु जं च पीयं | | ७ | सउजेह | „ | २५ | णासन्ति | „ |
| | नाम पव्वं | „ | १८ | जोवेणं कलमलंतततेण । | ख | ७ | कुणह | क | २५ | °पुरहुत्ता | क,ख,जे |
| | पव्वं | „ | १८ | °सु व जं | जे | ८ | आणुट्टियं | जे | २६ | विभीसण° | ख |
| | | | १८ | कललं | „ | ९ | ओरणस्स | „ | २७ | पवत्ता | जे |
| | | | १८ | तं जिणइ | क | १० | °सुरभिग° | „ | २८ | सत्तुसमूहमि ए सुर° | ख |
| | | | १८ | स्स व जलोहं | जे | ११ | वत्तीसवंस° | „ | २८ | सुक्खहक्खं | जे |
| | | | १९ | पिया उ जायइ, | | ११ | विविहकिरिणेसु । | „ | २८ | °स्स य बोह° | „ |
| | | | | राहव धूया | ख | ११ | सोमिन्ती | क,मु | २९ | तत्थ उ ज° | „ |
| | | | १९ | इ वेरी | क | १२ | °सयाणि | जे | २९ | जडाउं | „ |
| | | | १९ | मा एसा ॥ | जे | १२ | °जसुहाइ | ख | २९ | जडागी | क |
| | | | २० | °पहादियं | „ | १२ | कारेहि | क | २९ | वीज सं° | जे |
| | | | २० | °हाइदुक्खं, जीवेणं | | १२ | पडिवजिय° | „ | ३० | रोयति य | ख |
| | | | | पावियं तु इह बहुसो | ख | १२ | परिसेभियसव्ववा° | ख | ३० | पोमसंडं | जे |
| | | | २१ | उवगि° | क | १३ | ताव सुणि° | क,ख | ३० | सिञ्चन्तो | जे,क |
| | | | २१ | उवगिउत्तंति | जे | १३ | एवं थि° | जे | ३० | जडाभिसु° | क |
| | | | २१ | वि सोएणं | „ | १३ | चाफ व य विञ्जुभा° | „ | ३१ | अत्थविहूणाइ | ख |
| | | | २१ | कस्सणा ह° | „ | १३ | रयणक्खादी य | „ | ३२ | सुक्खत° | जे |
| | | | २१ | पागयन° | क | १४ | °ओ विजाहराहिवो रजे | „ | ३४ | न य तुम्ह क° | ख |
| | | | २२ | °रं जतो मो° | ख | १४ | °हियाते बंधू लद्धण | „ | ३४ | सरीरखेदो | जे |
| | | | २२ | °दोस सयं । | क | १५ | पवर° | ख | ३४ | विवरीणधु° | „ |
| | | | | °दोसायणं । | ख | १५ | लद्धण य तेण तत्थ | | ३५ | तुममवि | ख |
| | | | २२ | उज्जसु | जे | १५ | सुभगीवं | क | ३७ | वड्ढइ | जे |
| | | | | जुज्जंसि | ख | १५ | विणासिति | क | ३७ | विवागो | क |
| | | | २२ | °य नणुं ? | ख | १५ | विणासंतो | जे | ३७ | महिलाक्खे° | ख |
| | | | | इति | जे | १६ | एतो विय | क | ३७ | जडागी | क |
| | | | | °विष्णोणे वि° | „ | १६ | रामणं | ख | ३७ | तं दट्टण | क,ख |
| | | | | नाम पव्वं | „ | १६ | °चक्कनिहतो सो° | „ | ३८ | °मुहं हला° | क,ख |
| | | | | पव्वं ॥ | क | १७ | °ओ य परलोयं | क,ख | ३८ | अहपूढो | ख |
| | | | | | | १७ | वसेकओ | जे | ३९ | अविवेगभन्ती | ख |
| | | | | | | १८ | मोहसहि° | क | ४१ | रजन्तो सुइ भवे एसा जे | जे |
| | | | | | | २० | वज्जमाली | ख | ४१ | °न्ति जणे सुई एसा ख | ख |
| | | | | | | २० | °ढड्डमं | जे | ४२ | काएण | „ |
| | | | | | | २१ | धणुवं | क | ४२ | बालवुड्डाणं | „ |
| | | | | | | २१ | °सरिसी | क,मु | ४२ | पुव्वविसा° | जे |
| | | | | | | २१ | | | ४३ | उम्मत्तआच(ध)यं का° | „ |

उद्देश-११२

उद्देश-११३

| | | | | | | | | | | | |
|----|---------------------|----------|----|---------------------|-------|----|------------------------|----------|----|--------------------|----------|
| ४३ | गहिलयं | क | ६८ | पुहवीर्षे | ,, | १७ | देवेहिं दुं | क | ३ | पिच्छं | क |
| ४४ | गहिलियं | जे | ७० | अलाहु रं | जे, ख | १७ | °णो हि सुं | ख | ४ | नरमंदिरेण | जे |
| ४४ | एवं भणिउं सुणेउं | क, मु | ७१ | °न्ति अन्ने सं | जे | १८ | °लच्छी | ,, | ४ | णयमदिरेण | ख |
| ४४ | पसमं भावं च सुवगए | जे | | इति | ,, | १८ | ठावियं | क | ४ | पत्तेण | क |
| ४५ | °किरणमुज्जुत्तो | ख | | °वागमं नां | ,, | २० | नरचरा य | जे, क, ख | ६ | पविसंतं वरनयरी | जे |
| ४६ | असणाइतेण | जे | | नाम पव्वं | ,, | २१ | तदिवहं | जे | ६ | सयल लोएणं | ,, |
| ४६ | ताहोपत्तेण | ख | | पव्वं ॥ | क | २२ | °सगासे | ,, | ६ | उवकीलिय-णच्चण- | |
| ४६ | सलिलसंपुण्णं | जे | | | | २२ | विहारपव्वजे | ,, | ६ | वज्जणाति | ख |
| ४६ | सलिलपरिपुं | ख | | | | २३ | पुड्वगवसुपण | ,, | ६ | णच्चण-मायणाइ | क |
| ४८ | °ल्लवयणकमलो सो । | ख | | उद्देश-११४ | | २३ | भाधिओ मुइओ | ,, | ७ | सन्तो | जे |
| ४९ | सरए व | जे | १ | °ण माहणं । पे° | ख | २४ | गुरुणा अ° | ,, | ७ | समरसट्टिए रामे | ,, |
| ५० | संसारठिइं | ,, | १ | °इ य आसणत्थं | जे | २४ | °रं उत्तमसामत्थसंपण्णो | क | ७ | रच्छामग्गा | ,, |
| ५१ | °दयं वो, सूं | क, ख | २ | विरत्तभावो, आ° | ,, | २४ | पगागी | जे | ८ | सयरिं | ख |
| ५२ | जेगविहा । | क | २ | आपुच्छइ | क | २५ | °स्स उ, रय° | क | ८ | दहियं च | जे |
| ५२ | नवरं चिय जिणविहिय। | | ३ | विभीसणो | ख | २६ | नरयावत्तं च | जे | ९ | आणेह | ,, |
| | संसारे दुल्लहा बोही | जे | ३ | सभूसणं | जे | २७ | सयसत्त कुं | क | ९ | मोदगा | क |
| ५३ | अत्तणो | क | ४ | °हराण पुं | ,, | २७ | सया व मंडलीए व | ख | ९ | परमसंजुता | जे, ख |
| ५४ | सुरभिसुग्ंधो | क | ५ | संवेगमणो | ,, | २७ | विजये | जे | १० | धाणेसु वं | ख |
| ५४ | °जुवतीसु | ख | ५ | अरहदत्तं । पुं | ,, | २८ | दस चंव सहस्साइं नव | | १२ | °न्ति गाह ! भवव ! | |
| ५४ | गीतं | जे | ५ | पुच्छइ सावय | ,, | | सय पणतीस संजुयाइं । जे | | | गिण्ह इमं सव्वदीस- | |
| ५४ | गीयवरं वीणं | क | ६ | °सो मित्त तुं | क | २८ | °स्सा सपंचणकया तं | क | १३ | पत्तेहिं | जे, क |
| ५५ | पेच्छन्ति ते वि र° | जे | ६ | सामि तए दुं | जे | २९ | °ण पंचवीसणा । भो° | क | १५ | गलबद्धरजयाउ तोहे° | ख |
| ५५ | अइक्कन्ता | क | ७ | सुव्वतो णाम | ख | २९ | गतो | ख | १५ | खरकरभा | जे |
| ५७ | तुम्हे | जे | ८ | गओ य बहुसुं | जे | २९ | अनियमित्यं | जे | १५ | वसहं-बड्झा | जे, ख |
| ५७ | °यं चिय चेद्धिं | ,, | ८ | °पडिक्किणो | ,, | ३१ | °त्तारीभवेसु | जे, ख | १६ | पेत्तेइं नियभिञ्जे | जे |
| ५८ | जडागिदे° | क, , | १० | °मादीयं | जे, ख | ३१ | °सु सव्वेसु । | क | १७ | °सुइडा | ,, |
| ५८ | जाणसि य संपयारणे | ,, | ११ | रयणी | ख | ३१ | पुरा महुमहणो, सं° | जे | १७ | °ह मेयं | ,, |
| ५८ | °या, गंधो तुग्ंधं | ,, | ११ | °भागे । | जे | ३२ | °रागपडि° | जे, ख | १८ | ते नरंइ भणति | ,, |
| ५८ | °द्धो उ तुम सं | क | ११ | भणति | ख | ३४ | निच्चं वो विं | क, ख | १९ | ते णरिंदा भणति | ख |
| ५९ | घरणीए | जे | १२ | °परायणो जाओ | ख | ३४ | °लच्चिट्ठिया | ख | १९ | °म्मि महाजस | |
| ५९ | अणुवेण व | ,, | १३ | मोइजालं, सं° | ,, | ३४ | °या फरिसा | ,, | | सहावउव° | क |
| ५९ | निहितो | ख | १३ | °मो पराइं इह भूसण° | जे | | इति | जे | १९ | सहावमुणिकं | ख |
| ६० | °हाउरेण | जे | १३ | °मो वयराति भूसण° | ख | | नाम पव्वं | ,, | २० | सव्वत्तो तत्थ | ख |
| ६२ | °दुक्किण | ,, | १४ | °रे वरकुसुमसुग्ंधिए | | | पव्वं ॥ | क | २१ | जुधतीओ | जे |
| ६३ | किंचि चेव अहयं क° | ,, | | केसे | क | | | | २१ | सुद्धमणाओ | क |
| ६६ | कल्लणसुही | क | १५ | वामेण संठिवस्सा, सह | ख | | उद्देश-११५ | | २२ | नाऊणं अं | ख |
| ६६ | कल्लणसुही | जे | | वामे पासे टिं | मु | १ | तओ अइ° | क | २२ | विवरां | जे |
| ६७ | सं भासिं | जे, क, ख | | वामट्टियस्स तस्स उ | | १ | महापुरी | मु, ख | २२ | °इ पट्ठेणं | जे, क, ख |
| ६७ | °धम्मणुसारेण | जे | | मह रयं | जे | १ | संपिच्छिरुण | ,, | २३ | तवसिरिरंजियदेहो | |
| ६८ | खक्खणो भाई । पुं | ,, | १६ | समितीसु | ख | ३ | | | | सुरनरवहनमियचाक- | |

| | | | | | | | | | | |
|--------------------------|------|----------------------------|---------------------|-----------|---------------------|---------------------|--------|--------------------|------------------|------|
| चरणजुओ । पवि- | २ | पुञ्जिजंतो | जे | २६ | दाविता थ° | क | ४१ | लहति | ख | |
| सरइ महारणं, मय- | ३ | समभावो तह जि- इदियकसामो | जे | २६ | सधीरस° | जे | ४२ | उवही | जे | |
| मोहविवज्जिओ सया | ३ | | २७ | उन्वेविया | क,ख | ४२ | मचोवही | ख | | |
| विमलमणो ॥ | जे | ३ | सज्जाय करणनि° | २८ | समसहीहि | जे | ४२ | रहिएण | ख | |
| २३ पविसइ महारणं | ख | ४ | ज्ञाणकय° | २८ | व, कवणेस | | ४३ | नाणकयदा° | क | |
| इति | जे | ५ | हलधारिणो | जे,क | वणस्सई नियडेक,जे,मु | | ४३ | कटिणेहि । | जे | |
| गोयरखंभा | ॥ | ५ | मह कंठे | ख | २८ | कमेण सवणस्सतीयादा | ख | ४३ | रोइहि° | ख |
| नाम पव्वं | ॥ | १० | एव चिय | ॥ | २९ | गेणहइ | क,जे | ४३ | रोवहि° | जे |
| पव्वं ॥ | क | १० | उपजए मणुओ | ॥ | २९ | कुसुमामेलं | क,जे | ४३ | इ तओ धम्म° | ख |
| | | १२ | खमगसेठी° | ख | २९ | दाइती का° | जे | ४४ | पावति | ख |
| उद्देश-११६ | | १३ | ऊणं मंदिरा° | क | ३० | ओ वीरमुणी, अ° | ख | ४६ | ससिहर° | जे |
| १ वारिसे दिवसे । कु° | ख | | ऊण य मंदिरा° | ख | ३० | ओ वीरमुणी, अ° | ख | ४६ | ससिकर° | ख |
| १ रे बीए । कु° | जे | १५ | लोगं | जे | ३१ | विउव्वणेहि | जे | ४६ | विमलभावणू | जे |
| १ इ सुसंवि° | क | १६ | णं घणरवेणं | ख | ३१ | सुरेहि | ॥ | ४६ | तणुं | ख |
| इ ससंवि° | ख | | णं च कल° | क | ३१ | रिउघणं न° | ख | | इति | जे |
| २ होही भि° | क | १७ | वरतरुणं | ख | ३२ | पक्खेक्कारसि° | क | | पत्तीवि° | जे,क |
| होहइ भि° | जे,ख | १७ | रकेसुयावरयं । को° | जे | ३५ | महिमं सुविउलय | | | नाम पव्वं | जे |
| २ त गिण्हिस्सामि | क | | किमुयवयारं । | क | | काउं । प° | जे | | पव्वं ॥ | क |
| ३ समाकटो | जे | १७ | कोइलमुहलुग्गीय | क,ख | ३५ | केवल्लिम° | ख | | | |
| ४ विहियस्स | ॥ | १७ | महुलुग्गीयं | जे | ३५ | च सुविउलं काउं । प° | ख | | | |
| ४ ओ सम° | क | १८ | विहं उवसग्ग देवो जे | | ३५ | मुणि उक्कित्ततो | | उद्देश-११८ | | |
| ५ पियनंदिनरा° | जे | | विहं च देवो काळणं | ३६ | गुणसयाटं | ख | २ | सकरवालाए पुढवीओ जे | | |
| ५ निउत्तो | ख | | अणयतणयवरुया रा° | ख | ३६ | जलाइणं | ख | ३ | सकरपहु वालया य | |
| ६ पेच्छन्तविरहये | ॥ | १८ | सम्मभासे म° | ख | ३७ | भयावत्तं | क | ४ | पुढवीओ | ख |
| ७ वरेदं | जे | १९ | किल विहरंती, भ° | क | ३७ | ज्ञाणाणला° | जे,ख | २ | पङ्कथो | जे |
| ८ नरवरस्स | क | | किल मुहपत्ती, भ° | ख | ३७ | तवेन्घणं | क | | पङ्कथु | क |
| ९ सुसाहीणो | ख | | | | ३७ | नाणाणिलेण | क | | एक्कतो | ख |
| १० लित्तो कमलाए सम° | जे | २० | कञ्जाहिं | | ३७ | ण साइय | जे,ख | ३ | घणकसायपज्जलिओ | जे |
| ११ महिपवेसे | क | | असहरिया | जे,ख | ३७ | व तवेणं ज° | ख | ३ | आरउन्ता | ॥ |
| १२ स्स सुद्धसंवेगो । खी° | ख | २० | परिवरिया | क | ३८ | ग्घं हणिओ य | क | ५ | वलइया | ॥ |
| १३ वुट्ठी | ख | २१ | ण सीए, | ख | ३८ | णिहतो य | ख | ६ | केवि | क |
| १४ दुन्दुहीओ पहयाओ । दे° | जे | | ण सया, | जे | ३८ | सत्तं, उत्तमलेमाइ- | | ६ | कंहुसु | क,जे |
| १५ जिणमए निरओ | ॥ | २२ | सुरेद्वे° | ॥ | ३९ | सूलेणं ॥ | जे,ख | ६ | सु विरुपाया | ॥ |
| १६ बीओ य दि° | ॥ | २४ | उहादीया | ॥ | ३९ | उवि° वसन्तस्स | क | ६ | दज्जन्ति | ख |
| इति | ॥ | २४ | बहवे णरा | ख | ३९ | वुहुं म° | क | ७ | लोलेन्ता | जे |
| पसंसरणावि° | ख | २५ | जुवतीहिं | जे | ४० | एवं संसारनदी | जे | ७ | णिपट्टे | ख |
| नाम पव्वं | जे | २५ | हिं णिव्वत्तं | | ४० | एथं भिउद्धं साहव | ख | ७ | चित्तय तहं धम्वं | क |
| पव्वं ॥ | क | २५ | समणमणहरं | ख | ४० | इं साहव | जे | ८ | चित्तयसयवघं | जे |
| | | २५ | रे नेवं | जे | ४१ | वसभो | ॥ | | जिभंकरउं । | ॥ |
| उद्देश-११७ | | २६ | दावेई | जे | ४१ | इ य सिवं अ° | क | | | |

| | | | | | | | | | | |
|------|--------------------|----|----------------------|------|----|-------------------|--------|-----|-----------------------|-----------|
| ८ | °तउसण्णिभं कलक- | ३५ | सोइंतो | जे | ६१ | अहोर्गई | क | ८६ | °स धणुयाणि पु° | „ |
| | लिनं । असि° | ३८ | अच्छर मुरसं | ख | ६१ | उव्वट्टिओ महा° | जे | ८७ | धिति° | ख |
| ९-१० | सुरवरेंदो | ३९ | महिपेहे | ख | ६१ | कमणं | ख | ८८ | °विभृति° | „ |
| १० | ताडिज्जंतं | ४० | °हादीया | ख | ६१ | पाविहिति | „ | ९० | ते अगोयरं मुज्झसील- | |
| ११ | °सिपत्त° | ४० | कमणं | जे | ६२ | लभिहिति कमणं | | | संपत्तं इति संबोधितम् | जे |
| ११ | °वेविरल्लो | ४० | गयं प° | ख | | गतिं न | ख | ९३ | °चरियं जो पढइ | |
| ११ | °सतेहि | ४२ | अणयत्तणया | क | ६२ | को वा भविहामि | क | | सुणेइ परमभावेणं । | जे |
| १२ | छडुहि | ४२ | कइगइ | ख | ६२ | भमिहमि अइयं, एयं | क | ९३ | जो पढइ परमभावेणं । | ख |
| १४ | °इ तओ इहं | ४२ | कयगइ | जे | ६३ | उक्खित्तणं | क | ९३ | अतिपरमं | „ |
| १५ | °हिवती, | ४२ | सुप्पभा | जे | ६५ | °णाभिरया | जे | ९४ | रज्जुसमत्थो वि रिबू | जे |
| १६ | तुम्हेहि वि° | ४३ | °संजमरया, | „ | ६६ | °सरिसिदासा | जे, ख | | वेज्जयसत्थो वि रिबू | ख |
| १६ | तुम्हे वि | ४३ | °सा वीरा गच्छोहिहि | ख | ६८ | °पुत्ता य भवि° | ख | ९४ | °णइ सो य पु° | क |
| | धीरहियया सं° | ४४ | भणिण सु° | जे | ६८ | °त्ता भविस्सति | जे | ९५ | धणत्थी धणं | |
| १७ | पेच्छन्ति | ४४ | गती | ख | ६८ | °त्ता हवीहुन्ति | सु | | महाविउलं | जे ख |
| १८ | पउमादियं | ४६ | धणसंतो | „ | ६९ | वायकमा° | जे | ९६ | °लं गोत्तत्थी | जे |
| १८ | पोमाइयं | ४६ | वज्जगो | क | ६९ | °न्दरुवसरिसा, उ° | क, जे | ९६ | लभइ | „ |
| १८ | °कारणट्ठं | ४८ | सीसं तु । प° | जे | ६९ | °जयप्पभा | ख | ९६ | चेव आरोगं | „ |
| १९ | तुत्तन्तं | ४९ | °तिलया जुति | | ७० | °न्नि आणए कं | जे | ९८ | य सुणिस्स हि° | जे, ख, सु |
| १९ | °यमतीया | | सुणिवरिंद । | ख | ७० | °ठितीया | ख | ९९ | °मादीया | जे ख |
| २२ | पत्तो सो | ५० | धम्मसवण | ख | ७१ | °हिवती | „ | ९९ | °हिं भगवया अ° | क |
| २३ | विलयन्ति | ५० | °जयसंविग्गा | जे | ७२ | अविया | क | ९९ | °हिं भयवओ अ° | ख |
| २४ | °व सुणसु | ५० | दो वि जुइस्स य पासे | क | ७२ | °णा य भविहिहि | ख | १०० | °कम्मविरया° | जे |
| २६ | °णं च तिव्वदु° | ५० | पासं. अ° | जे | ७३ | सो उ द° | ख | १०१ | एवं वि° | क, ख |
| २७ | °गतिगमणे | ५० | असोग° | ख | ७२ | °रहाभोय° | सु | १०१ | विविहेणियवद्धमत्थं | ख |
| २८ | गेण्हसु | ५१ | अरिउण तवं | „ | ७४ | भवा इमे सु° | क | १०१ | रामा... समत्थं । | |
| २९ | गिण्हह | ५१ | उवरिमे य गे° | जे | ७४ | मवा सुराइया | | | नासेइ... निच्छएणं ॥ | |
| ३० | हु एय भू° | ५१ | गे, जे | ख | | केइ । प° | जे | | | सु, क, जे |
| ३० | यं ण भ° | ५१ | जुई महइमहा उ° | क | ७४ | हेही अ° | जे | १०१ | °पहं इह नि° | क |
| ३० | °द्विया तुम्हे | ५२ | संविग्गजणिय° | जे | ७५ | होहिइ | क | | °यं विमलं समत्थं | क |
| ३१ | जीवाविप° | ५३ | गयाण मिकयपल्लवं | | ७६ | °हस्स गणहरो परमो | ख | १०२ | एवं वीर° | ख |
| ३१ | °पयत्ता | | समं | „ | ७८ | सो पुण भो° | ख | १०२ | पच्छा गोयमसामिणा उ | क |
| ३१ | तिलोगदं | ५३ | गयाणसकिउणववं समं | ख | ७९ | °गवतीविदेहे | „ | १०२ | °भूतिणा | ख |
| ३१ | तिलोक्कदं | ५३ | महप्पातडि° | जे | ७९ | °व पुरे तिय° | जे | १०२ | सिस्साण | क ख |
| ३१ | °रो होहि | ५४ | °धितिया | ख | ८० | °णोअविउण असेसण | | १०४ | इत्थे तमत्थं रणं | ख |
| ३२ | °कोडीहि वियणा- | ५५ | °द्राए । फारे उत्ता° | जे | | कम्म संघायं । सु° | ख | १०६ | जो नेहपणइणीहि | जे |
| | पत्तेहि | ५५ | °सावयागिण्णे | „ | ८१ | °संकडं सुणे° | जे | १०६ | °हिं ललियं नो | |
| | वि ण पत्तं | ५७ | अउव्विहाहार | क, ख | ८२ | अभिवंटेइ सुरवरो | „ | | विणयगतो | ख |
| ३२ | अणातिमं | ५९ | कयावी | ख | ८३ | चेइयहराति | ख | १०६ | °न्तो य न | क |
| ३४ | गच्छसु तं आ° | ५९ | सुन्दरिमं | क | | चेइयघराइं | क | १०६ | वच्चिइइ | क |
| ३४ | °धम्मकले चियं, भु° | ६१ | सुरेंदो | जे | ८६ | सत्तरस सह° | सु, जे | १०६ | अधिहिति सोव वि° | ख |

| | | | | | | | | |
|-----|----------------------|-------|-----|-------------------------|-----|---|-------------------------------------|-----|
| १०७ | गेण्हन्ती | जे | ११२ | किं थ कीरउ | जे | ११९ | ताण वि होउ विबोहिं स विमलचरिया...जे | जे |
| १०७ | न्ति हि कामिणी | ख | ११२ | लोगम्मि | ख | ११९ | ंदि स हिंसविमल चरियाण जिणइंटे | ख |
| १०८ | वहरनिमित्तं | क | ११२ | ग्मि य मुंचह, रमह | जे | ११९ | ंसाणं ॥११९॥ ८६८४ः | क,ख |
| १०८ | रीसंसयं | मु,जे | ११२ | वि उज्जमह सया | ख | १०३०० ॥ छ ॥ | | |
| १०८ | परलोगकंखी | ख | ११३ | } इमाः गाथाः न सन्ति | ख | मंगल महा श्रीः ॥ | जे | |
| १०९ | मणूसो | क | ११४ | | | इह... समत्तं इति | | |
| १०९ | दुचरियफलेण | जे | ११५ | | | नास्ति प्रत्योः | जे,ख | |
| १०९ | लहृति | ख | ११४ | न्तु संसणिज्जं जं | मु | पठ्वा ॥ ग्रंथाग्रं १०५५० | | |
| १०९ | पवाहो इमी | जे | | न्तु समणिज्जं, जं | क | सर्वं संख्या ॥छ॥ | क | |
| ११० | न य कोइ देइ कं | क | | न्तु सुसनेज्जं जं | जे | नास्तीमा पुणिका प्रतिषु | जे,क,ख | |
| ११० | आरोगधणं | जे | ११६ | अतिरित्तं | जे | इति पउमचरियं सम्मत्तं । ग्रन्थाग्रम् सर्वं संख्या ॥ | | |
| ११० | दिंति | क | ११६ | खमंत मह | ख | अक्खर-मत्ता-बिदू. जं न न लिहियं अयाणमाणेण । | | |
| | होति | ख | ११७ | बहुनामा आयरिओ | ख | तं खमसु सख्व महं, तिथियरविणिग्गया वाणी ! ॥ | | |
| ११० | लोण ताहे किं | ख | ११७ | विजयो तस्त उ सीं | ख | शुभं भवतु ॥ श्री संघस्य श्रेयोऽस्तु । | | |
| ६११ | ंभमेव गिण्हिया सख्वे | ख | ११८ | पुच्चगय. नां | ख | ग्रन्थाग्रम् १२००० । सवत् १६४८ वर्षे बइसाख बदि | | |
| | | | ११८ | यण रामचरिं | क,ख | ३ बुधे ओझा रुद्र लिखित ॥ लेखक पाठकयोऽस्तु —ख | | |

संकेत—संदर्भः—

जे = जैसलमेर की ताकपत्रीय प्रति

क = मुनि पुण्यविजयजी संग्रह नं. २८०५

ख = ,, ,, ,, नं. ४१७८

मु = मुद्रित (प्रो. याकोबी द्वारा संपादित पउमचरियं की प्रति का पाठ और 'जे' प्रति का पाठ भी यदि उसका कोई अन्य पाठान्तर नहीं हो)

जिस पाठ के आगे कोई संकेत नहीं है उसे शुद्धिकरण समझना चाहिए ।

गोटे टाइप में मुद्रित पाठ को स्वीकरणीय पाठ समझना चाहिए ।

— ० —

परिशिष्ट ८

हिन्दी अनुवाद संशोधन

उद्देश-१

मुद्रित पाठ

- ८ कथा को और
 १३ अपने-अपने
 गुणों के अनुसार
 १४ पवन के पत्तों के
 १५ जब श्रुतधर तीर्थंकर
 १५ हमारे जैसे मन्दबुद्धि तो
 २४ जौककी समान
 २८ अतएव.....नीतिनिष्ठ
 २९ समुन्नत शिखर पर
 ३० भौरे के.....दूँदों में
 ३२ युद्ध के लिए प्रस्थान
 ३३ द्वारा तुम सुनो
 ३८ विद्युद्भ्रूके.....उत्पत्ति
 ४२ अतिक्रान्त.....जन्म
 ४४ श्रीमाल खेचरों का आगमन
 ४५ पातालंकार नाम की
 ४६ सुकेशी के.....उनकी
 मृत्यु
 ५० अपमानित यक्ष का क्षोभ

पठितव्य पाठ

- कथा को जो नामावलि निबद्ध रूप में और
 आगमशास्त्र की विशेषता के अनुसार
 पवन के द्वारा हृत पत्तों के
 जब तीर्थंकर
 हमारे जैसे मन्दबुद्धि श्रुतधर तो
 जौक व शुक्ति के पृष्ठभाग के समान
 अतएव मूकता का त्याग करके सर्वाक्षर
 पूर्वक नीतिनिष्ठ
 पर्वत पर
 भौरे के जैसा मैं भी पूर्वकविशों के
 चरणरूपी मद की दूँदों में
 वन के लिए प्रस्थान
 द्वारा यह पद्य का चरित सहेतु तथा
 अधिकारों सहित कहा गया है, इसे
 अब सूत्र रूप में संक्षेप में तुम सुनो ।
 विद्याधर वंश और विद्युद्भ्रू की उत्पत्ति
 महाराक्षसका संसारत्याग, उसकी
 सन्तान के जन्म
 श्रीमाला भादि खेचरों की उत्पत्ति
 पातालंकार नामकी
 सुकेशी के बलवान पुत्रों का लंका की
 तरफ प्रस्थान व प्रवेश और निर्घात
 के वध का वर्णन
 यक्ष भनादत (जम्बूद्वीप का अधिपत्यक
 देवता) का क्षोभ

मुद्रित पाठ

- ५५ विराधितपुर में.....
 समागम
 ५६ साहसगति की
 और उसका
 ५७ उपरम्भाविषयक
 ५९ हनुमान की उत्पत्ति
 ६१ प्रतिस्वर
 ६२ पवनंजय का मिश्रय
 ६४ चक्रवर्ती प्रयत्न
 ६५ इन्द्र के साथ
 ग्रहण करना
 ६६ विदेह में कारण
 ७० उसके द्वारा राजकुमारी की
 ७४ कैकेयी के.....आगमन
 ७६ विद्याबल प्राप्ति
 ७८ वहाँ अष्ट.....रावण का
 ८२ मनोरमाकी.....लक्षण की
 ८४ विजय प्राप्त करने वाले
 ८५ अष्टप्रातिहाय्यों की रचना
 ९० बाद में.....याद रखी ।

पठितव्य पाठ

- विराधित नामक पुत्र का लाभ, सुग्रीव
 को राज्य (श्री) की प्राप्ति --
 साहसगति की मरणतुल्य भवस्था तथा
 उसका परम संताप और दशमुख का
 उपरम्भा की
 हनुमान की जन्मकथा
 प्रतिस्वर्य
 पवनंजयका:नियम (प्रतिज्ञा)
 चक्रवर्ती प्रसुक्त बलदेव, केशव व प्रति-
 वासुदेवों के चरित
 यह सम्पूर्ण गाथा मूल आकृत में ५७ वीं
 गाथा के ; पश्चात् आनी:चाहिए थी ।
 विदेहाका शोक प्रकरण
 राजकुमारियों की
 कैकेयी(सुमित्रा)पुत्र लक्ष्मण का
 पुनरागमन
 केशव (लक्ष्मण) को विद्याबल की प्राप्ति
 वहाँ देवों का अद्भुत कार्य, वानरभटों का
 श्रीवत्स-युष्म देह को धारण करने वाले
 (लक्ष्मण) को मनोरमा की प्राप्ति और
 राक्षस मधु के महान् पुत्र लक्षण की
 विजय प्राप्त करके
 (सीता की अग्नि परीक्षा की) अद्भुत
 घटना
 बाद में उत्तम साधुओंने धारण की
 और लोक में प्रकाशित की ।

उद्देश-२

- ४ धर्मका..... थे ।
 ७ संक्रामक रोग
 ९ बन्दरों के मुँहके जैसे
 १३ विशाल...वे मधुर
 १४ अलका की
 ३० आठ कर्मा का

- धर्म में निष्कपट मति रखनेवाले थे ।
 मृत्युदायक रोग
 कपिशोर्षक जैसे
 मनोहर खेल-तमाशों(प्रेक्षणक) के कारण
 मधुर
 अमरावती की
 आठ के आधे चार कर्मों का

- ३१ तथा अत्यन्त
 ३२ संक्रामक रोगों से
 ३७ हुए तथा.....युष्म
 ३९ हाथी के गण्डस्थल
 ४५ विमलगिरि
 ५० तीन भाग
 ५१ दो वक्षस्कार
 ५७ व्यन्तरकन्या

- तथा सूर्य की प्रभा के समान अत्यन्त
 मृत्युदायी रोगों व उपद्रवों से
 हुए अपने अतिशयो और विभूतियों से युष्म
 हाथी का कुम्भस्थल
 विपुलगिरि
 भाग
 दो (वारह)^३ वक्षस्कार
 व्यन्तर देवियाँ

१ पठमचरितं का पाठ शंकास्पद है । आगे वर्णित कथानक में तथा रविषेण के पद्यचरितम् में भी इसी घटना का उल्लेख है । २ सुमित्रा का अपरनाम कैकेयी भी आता है । ३ पठमचरितं का पाठ शंकास्पद है । यहाँ पर 'अह दोष्णि' के स्थान पर 'दह दोष्णि' होना चाहिए था जिससे आगे के वर्णन के साथ सुसंबद्ध हो सके ।

मुद्रित पाठ

- ६० ऐसे समूह
७३ राग में और द्वेष में
७५ चौराहे में खड़ा हुआ
जीव...मानवयोनि
७६ भी मन्द पुण्य के...शबर
१०० इससे सज्जनों के...
जाता है

पठितव्य पाठ

- ऐसे प्रसन्न हृदय समूह
रोग और शोक में
चार अंगों (गतियों) वाले मार्ग (प्रवाह)
में पड़ा हुआ जीव बड़े दुःख के
बाद मानवयोनि
भी जीव मन्द वैभववाले शबर
मानो सज्जनोंके चरित्ररूपी प्रकाश पर
दुर्जनस्वभावरूपी अन्धकार की मलि-
नता छा गई हो ।

मुद्रित पाठ

- १०१ पुण्योकी चादर
१०२ और अत्यन्त...पूछता था
१०३ संगीत से....करने लगा ।
११० नगरों और...समय पूर्ण

पठितव्य पाठ

- पुष्पांकित चादर से
और परम संदाय को उनसे प्रयत्न
पूर्वक पूछता था ।
संगीत के साथ शत शत मंगलों से
स्तूत्यमान वह महात्मा (राजा श्रेणिक)
उठा ।
नगरों और दूसरे बायोंके सामने
बजते हुए भी वह उनको नहीं
सुनता था और समय पूर्ण

उद्देश-३

- २ मुनिवर भगवान महावीर के
९ बन्दर एवं तिर्यचों
२३ दस योजन चौड़ा है ।
२७ गुफाएँ तथा उत्तरकुह
२७ मध्य में...आए हैं ।
५५ उसके बाद ... धीर
५५ चन्द्र के...तथा
५६ प्रिय तुल्य थे ।
५७ कुलकर ... आवास था ।

- मुनियों के
बन्दर रूपी जानवरों
दस हजार योजन चौड़ा है ।
गुफाएँ तथा तीस सिंहासन हैं
और उत्तरकुह
मध्य में उत्तम दिव्य वृक्ष हैं ।
उसके बाद महात्मा (यशस्वी)
और तत्पश्चात् धीर,
अभिचन्द्र, चन्द्राम तथा
पिता तुल्य थे ।
कुलकर जहाँ पर रहते थे वह
स्थान विचित्र गृहकल्पवृक्ष से
और अनेक प्रकार के उद्यान एवं
बावण्डियों से परिब्र्याप्त आनन्दों
का आवास था ।
दिग्म्बर परम्परा में ध्वज के
बदले मीनयुगल, विमान-धर-
भवन दो अलग वस्तुएँ तथा
सिंहासन को मिलाकर इस प्रकार
१६ स्वप्न-

- दि. ३ दिग्म्बर परम्परा में स्वप्न
६७ पन्द्रह दिन तक
८० शिखर पर ... हो रहा था ।

- पन्द्रह मास तक
शिखर के शिखा समूह में जहाँ
विविध महामणियों से निकलती

उद्देश-४

- २५ धर्म से जीव एवं मनुष्यों के
४५ { फिर उन्होंने...
४६ { ऐसा प्रतीत होता था ।

- धर्म से जीव, देवों एवं मनुष्योंके
फिर दोनों अत्यन्त दर्प के साथ
आपस में बाहुयुद्ध में जुट गये ।
तीव्रगति से चलायमान तथा

- ८५ चन्द्रकान्तमणि की भाँति
८७ जैसे बायों की ... ढँक दिया ।
९८ उसने ... पहनाई ।
११२ उस समय ... तथा
११४ कल्याणप्रद ... शिल्पों की
१२१ पुरोहित, सेठ
१२२ इन्द्रनीलमणि
१२२ सुदर्शनीय शिविकामें
१२६ जैन दीक्षा
१५१ दोनों ओर ... एक कोस
ऊँचा था ।

- हुई (ज्योति) किरणों से वह
देदीप्यमान हो रहा था ।
चन्द्रमा की ज्योत्सना का भाँति
जैसे बायों से मेघ की गर्जना
के समान जन्माभिषेक बैंड
बजाया गया ।
उसके ऊपर चूडामणि पहनाई
और सिर पर सत्राणक शिखर
(मुकुट) की रचना की ।
उस समय कल्याणमय प्रसंगों
(व्यवसायों) तथा
कल्याणप्रद प्रसंगों (व्यवसायों)
तथा सैकड़ों शिल्पों की
पुरोहित, सेनापति, सेठ
इन्द्रनीलमणि, मरकतमणि,
सुदर्शन नाम की शिविका से
यति-दीक्षा
वह पञ्चीस योजन ऊँचा तथा
छः योजन और एक कोस (अर्थात्
सवा छः योजन) पृथ्वी में
गहरा था । उस पर दो श्रेणियाँ
थीं जो दोनों बाजू से सुन्दर थीं ।

- मज्जूती से एक दूसरे पर मार
लगाते हुए उनके हाथ के तले
परिपूर्ण रूप से अति धँचल हो
उठे थे । उनके हाथों पर चमक

मुद्रित पाठ

पठितव्य पाठ

मुद्रित पाठ

पठितव्य पाठ

के ओत (योक्त्र) के अर्द्धभाग का खोल चढ़ा हुआ था और एक दूसरे को मार गिराने में ऊँचे किये हुए हाथ चक्राकार रूप में घूम रहे थे । इस प्रकार

वे महापुरुष भागे बिना एक दूसरे के सम्मुख रहकर युद्ध करने लगे । (यह अर्थ भी असंदिग्ध नहीं कहा जा सकता)

उद्देश-५

- १४ रत्नवज्र
४० प्रदक्षिण
४२ पद्मनिभ
४४ आनुध, हरिश्चन्द्र
६३ नाकका
६८ उद्योतिवियों के
९५ उत्तम गायें खरीदी
९६ शस्त्रों में कुशल
९६ संकेत करके
१०६ तवसान्त
११४ सौधर्म में
१२४ अब ... भय
१२४ पथ्यन्त ... है ।
१२९ प्रकार वाली
१३१ द्वारा रक्षित
१३२ छः - जिन लम्बा तथा
१३२ (लंकनगरी) नामक
१३७ विद्या पर ... समृद्ध
१४७ शीतल
१४८ अमर
१७० चैत्यभवन में प्रवेश किया ।
१७७ संज्ञा करने पर
१८२ तथा वैभव से ... जाते हैं ।
१४ रूपवाले ... हे मेरे

- रत्नवज्र
प्रदक्षिणा
पद्मनिभ
आनुध, रत्नोष्ठ, हरिश्चन्द्र
नामका
निमित्त शास्त्रियों के
उत्तम गाय खरीदी
शस्त्रों में कुशल
संश्रयण करके
सपसान्त
सौधर्म
अब मेरी बात सुना जो भय
पथ्यरूप होगी और उपस्थित
प्रसंग में निवृत्ति (सुख-शान्ति)
लाने वाली है ।
प्राकारों वाली
से स्वीकृत (प्राप्त)
छः योजन गहरा, छः योजन
लम्बा तथा
नामक
विद्याधरों से सुसमृद्ध
शीतल, श्रेयांस,
अमर
चैत्यभवनों की संज्ञा की ।
भाज्ञा पाकर
देवेन्द्र होते हैं वे भी ऐश्वर्यसे
देदीप्यमान होकर हुतावह के
समान फिर बुझ जाते हैं ।
रूपवाले हे मेरे

- १९४ तुम्हारा किसने तब
२०१ भगीरथ को
२०२ अलकापुरी में
२११ धुद्र.....कर डाला
२१६ यह वृत्तान्त
२२२ धर्म से विरहित पुरुष
२२९ करने के लिए गयां
२२९ जिनवर की.....लगा ।
२३४ चामरविक्रम को
२४५ अलकापुरी
२४८ आवर्त विकट.....रवि-
राक्षस के
२४९ राक्षसपुत्रों द्वारा निर्मित वे
२५१ इस प्रकार.....राक्षस
नाम का पुत्र उत्पन्न
हुआ
२५७ पुण्य द्वारा.....करते थे,
अतः
२६१ सुमत
उद्देश्य समाप्त हुआ ।

- बिना अपराध किए हुए ही
किस दुष्ट बैरी ने तुम्हारा वध
जाहवी के पुत्र भगीरथ को
अमरपुरी में
उस गाँव के लोग धुद्र कीड़ों के रूप
में उत्पन्न हुए और हाथी के द्वारा
वे सब कुचल दिये गये ।
यह प्रस्तावोत्पन्न वृत्तान्त
विषय सुखों का भोग करके परन्तु
धर्म से विरहित होने के कारण पुरुष
करके
जिनगृह में जयजयकार करने लगा ।
चारण मुनियों के विक्रम को
अमरपुरी
आवर्त, विकट, मेघ, उत्कट, स्फुट,
दुर्ग्रह, तपन, आतप, भलिक और रत्न
ये समृद्धिशाली रविराक्षस के
राक्षसपुत्रों के कीडार्थ वे
इस स्थल पर रविवेण के पञ्चचरित में
ऐसा है:—“राजा मेघवाहन की परंपरा
में (जो राक्षस द्वीप का आदि राजा
था) मनोवेग नामक राक्षस से राक्षस
नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ ।” और
यही पाठ उचित माद्धम होता है ।
उन द्वीपों को रक्षा करने वाले राक्षस
थे जिन्होंने अपने पुण्य से उनकी रक्षा
की थी, अतः
सुव्यक्त
उद्देश समाप्त हुआ ।

उद्देश-६

- १ राक्षसवंश
२ दक्षिण शाखा में
१ सु-उत्पन्न, अलाभ्याय

- राक्षसवंश
दक्षिण श्रेणी में
सुयोधन, अलदश्वान

- ३७ महासागर.....उद्यने
४४ बजाते थे तथा

- महासागर को आकाश के समान फैला
हुआ उसने
कूदते थे तथा

| मुद्रित पाठ | पठितव्य पाठ | मुद्रित पाठ | पठितव्य पाठ |
|--|---|---|--|
| ४६ उसके द्वारा... करती थी । | प्रासाद, ऊँचे तोरण व मणि और रत्नों की किरणों की आभा से शोभित वह नगरी ऐसी प्रतीत होती थी जैसे कि देवनगरी की शोभा को हर करके (उससे) उसका निर्माण किया गया हो । | १७५ निर्मित उसने १७५ गल में माला १८० गर्जाख से २१० सुरपुर अलकाके २१८ कर्णपुर | निर्मित वह माला उसने गले में गर्जनारव से सुरपुरी के कर्णकुण्डल |
| ५८ मैं यही पर ६२ उसको बचाकर ७४ अलका नगरी के समान १०० करने के लिए गया । १११ धर्म एवं..... सब ११७ मुनिवर द्वारा दिया गया भर्षोपदेश— | मैं अब से उसकी परीक्षा कर अमरपुरी के समान करने लगा । धर्म से अनभिज्ञ मुझ पापी के सब (इसको शीर्षक रूप में रखो) | २२३ राजा से पूछा कि लंकापुरी २२३ } हुआ हो वह... .. २२४ } उसने कहा कि उस २२९ उनका आगमन... बाहर निकले । | राजा से परत किया । तब वह लंकापुरी हुआ या वह यथार्थ रूप से कहने लगा कि उस राक्षसों का आगमन सुनकर निर्धात अपना तलवार व बाणों की प्रचुर किरणों से प्रज्वलित होकर सूर्य की भाँति उनका सामना करने बाहर निकला । |
| ११७ परमार्थ के विस्तार को १३० नगरमें प्रविष्ट होनपर भो १३१ १४१ पीड़ित होने... रहा हूँ । | परमार्थ के मिश्रण को अरुण्य में प्रविष्ट होने पर इसको १३२ के बाद पदों ध्यानलीन होने पर भी वह साधु अपने मन में ऐसा सोचने लगा कि मुझको के प्रहार से आहत कर मैं इस पापी को चूर चूर कर दूँ । | २४२ (२४२-२४३) २४३ | (२४२) ऐसे ही समय व्यतीत होते सुकेशों और किष्किन्धि जो विख्यात यश वाले थे, संवेग उत्पन्न होने पर प्रव्रजित हुए तथा अनेक वानरों एवं राक्षसों ने भी प्रव्रज्या ली । (२४३) |
| ४ आँखें फैलाकर उसने ६ परम ऋद्धि फैलाकर १० अणिमा... ऋद्धियाँ १२ साथ राज्य १३ विद्याधरोंको.... सुनकर १३ विमाली ने १५ अथवा मैं... जाता हूँ । १७ अरिष्टसूचक ३० देखकर... होता था । ३७ सोम नामके देव ने ३७ शस्त्र से प्रहार... शस्त्र से घायल ४८ जिसका... उसी के अनुसार ५५ उन्हींके उसका | उस सृगाक्षी ने परम ऋद्धि और परिषदादि सातों प्रकार के सैन्य (अनीक) साथ सभी खेचरों का स्वामित्व इन्द्र विद्याधरों का स्वामी बना है ऐसा सुनकर माली ने अथवा वापस लंका नगरी को लौट चले । काक देखकर इन्द्र शस्त्रसमूह सहित शिखर के समान स्थित हो गया जैसे सूर्य के सामने पर्वत सोम नामके शरवीर ने शस्त्र की चोट से उसको सुमाली ने घायल जिस नगरी का जैसा नाम था उसी के अनुसार उन्हीं ज्येष्ठ पुत्री का | ६७ उसे आया... उसे दी । ११ पृथ्वी पर... बालक ने १२१ रूपों से... उन्हींने १३४ वह समय... बड़ी बड़ी १३७ अक्षोभ्या १४० भुवना, दारुणी १५३ उन्हींने... देखा । १७१ मुनिका... वैसे ही तुम | व्योमबिन्दू ने यह जानकर कि उसको (रत्नभ्रवाको) विद्यासमूह की प्राप्ति हो गयी है, अपनी पुत्री केकषी को उस उद्यान में उसकी परिचर्या के लिए नियुक्त कर दी । बिस्तर पर से वह बालक जमीन पर लड़क भाया और उसने रूपों से भी जब वे उनको क्षुब्ध नहीं कर सकें तब उन्हींने उसी के कारण अवधि पूर्ण होने के पहले ही रावण को बड़ी बड़ी क्षोभ्या भुवना, अवध्या, दारुणी उन्हींने कुमारसिंहों को देखा । वे दिन-यपूर्वक बड़ों के पास गये । मुनिका वह ऐसा कथन यथोद्दिष्ट बिना संशय पूरा हो रहा है और तुम |

उद्देश-७

मुद्रित पाठ

पठितव्य पाठ

मुद्रित पाठ

पठितव्य पाठ

उद्देश-८

| | |
|-----------------------------|---|
| १ सुरतसंगीत | सुरसंगीत |
| ५ शस्त्रों का विचार | शास्त्रों का विचार |
| १० सुरपुर अलकाके | सुरपुर (देवनगरी) के |
| ४१ और बाणों के...गया । | और कनक व बुध राजा के साथ संनद हो गया । |
| ४५ बहुत से पक्षी | बहुत से काक |
| ५५ शीर्षक: इन्द्रजीत आदि का | इन्द्रजित् आदि का |
| ८० हे द्रुत ! दुर्वचन | हे दुर्वच ! ऐसे वचन |
| ८६ छोटे ओ (रावण को) | छोटे को (कुम्भकर्ण को) |
| ९५ सुसर | ससर |
| ९९ इसके...ले आया । | इसके अनन्तर दशमुखने सहसा अपने समस्त सैन्यको रणभूमि में यक्षमटों के द्वारा चक्र की भाँति घुमाया हुआ देखा । |
| १२३ तथा बाणोंकी | तथा बाणोंकी |
| १३० शरीर बाला, | उसका शरीर था, |
| १३० धारण करने बाला | को धारण किये हुए था, |
| १३० तथा चामर.. रही है | तथा उसके सामने चामर डुलाये जा रहे थे जिसके कारण ध्वजपंक्तियाँ हिल रही थी । (१३०) |
| ३१ ऐसा कुम्भकर्ण | कुम्भकर्ण |
| ३१ हुआ । (१३०-१३१) | हुआ । (१३१) |
| ३२ वज्राक्ष, शुक | वज्राक्ष, बुध, शुक |
| ३४ और...ओर | और दक्षिणदिशामें लंकानगरी की ओर |
| १३६ कि इस पर्वत...शहरोंमें | कि पर्वत पर, नदियों के किनारे तथा गाँव व शहरों में |
| १४० तुम कलियुगमें...पापसे | तुम दोष, कालुष्य व पाप से |
| १६५ अथवा...उद्यानमें | अथवा श्रेष्ठ उद्यानगृह में |
| १६६ कर सकूँगा, | कर लिया, |
| १६८ विविध...शोभित | ग्रामसमूह और नगरों से शोभित |
| १७५ तथा आकार में...बह | तथा कुपित और त्रस्त बह |
| १८२ ऐसा सोचकर...किया | तब उस राजा ने एक सौ उत्तम कुमारियाँ उसे दीं । उस ऋद्धिवान् ने प्रसन्नता |

| |
|--------------------------|
| १९० तो मेरा भग्नि में |
| २०८ धर्म में लोगों ने |
| २१० करने के...त्यागकर |
| २१३ और कहाँसे |
| २१४ समूह जैसे, |
| २२२ मारकी....घूमने लगा । |
| २२३ इस युद्ध में |
| २२७ शस्त्रों....शरीरबाला |
| २३० बन्दरों के साथ |
| ३३५ वानरकेतु ने...बह |
| २४७ उसने क्रुद्ध यमको |
| २४७ कर दिया । |
| २६२ जलसे पीबित सा |
| २६२ मानो पूजा कर रहा हो |

(२५८-२५९)

| |
|---------------------|
| २६३ उसने...पार करके |
| २७४ दृष्ट प्रदृष्ट |
| २७४ निशुम्भ |
| आठवाँ उद्देश्य |

उद्देश-९

| | |
|------------------------------|--------------------------------------|
| ३ किष्किन्धिपुरमें लौट आया । | किष्किंधिपुरमें लौट आता था । |
| ५ ऋक्षरजाकी | ऋक्षरजाको |
| ५ उत्पन्न और बड़े बड़े | बड़े बड़े |
| ५ नलनीला...थी । | नल और नील नाम के पुत्र उत्पन्न हुए । |

| |
|-------------------------------|
| ११ जब रावण...विवाह |
| १९ युद्ध क्षेत्र में...फिर भी |

| |
|--|
| पूर्वक उनके साथ विवाह मंगल किया । |
| तो हे सखि ! मेरा धर्म में ऋजु मतिवाले लोगों ने करके यथा सुख-भोगों को भोग कर और देखो कहाँसे समूह के जैसी नीली स्निग्धता वाले, |
| तत्पश्चात् वह कभी उसके गात्रों के बीचमें घूमने लगा तो कभी भाजू बाजू में, तो कभी भागे पीछे । जैसे चक्रारूढ़ होकर वह चपल गति से हाथी को मोहित करता हुआ घूमने लगा । |
| अरण्य में शस्त्रों की मार से जर्जरित शरीर वाला वानर भटों के साथ वानरकेतु पर जो व्यसन आपड़ा है वह उसने यमको करके अवरुद्ध कर दिया । जलसे परिपूर्ण सा भानो जिसकी भर्चना-पूजा की गई हो |
| (२५८-२६२) |
| उसने इस प्रकार के समुद्र को देखते हुए बहुत से योजन पार करके हस्त प्रहस्त निशुम्भ आठवाँ उद्देश्य |

| |
|--|
| जब रावण आषली की पुत्री तनु-कञ्जु की विवाह युद्ध क्षेत्र में शत्रुभटों के कारण तनिक भी भयभीत या व्याकुल नहीं होता हूँ, फिर भी |
|--|

बुद्धमञ्जरियं

मुद्रित पाठ

- २१ मणिकान्त...शिविरमें
२४ बाली के पास सहसा
३३ दूतने भी...अथवा
३४ व्याघ्रविलम्बी

पठितव्य पाठ

- मणिकान्त पर्वत के समभागमें
बाली की सभा में सहसा
दूतने भी प्रत्युत्तरमें कहा-हे
व्याघ्र-विलम्बी ! बिना विलम्ब
अपने निष्ठुर वचन (की भर्त्सना
करो) को वापिस ले लो अथवा
व्याघ्रविलम्बी

मुद्रित पाठ

- ४४ उनसे ही अब...करता हूँ ।
६४ सुन्दर किया,
७२ पृथ्वी में ... मच गई ।
१०४ शतशः ... सपरिवार

पठितव्य पाठ

- वे ही अब सिर पर अंजलि धारण
करके किसी अन्य को प्रणाम
नहीं करेंगे ।
सुन्दर तप किया ।
पृथ्वी बत्का और भूमिपि-
युक्त हो गई ।
शतशः मंगलों से शतुत्पन्न दश-
मन सपरिवार

उद्देश-१०

- ८ निर्मितों को देखकर
२१ कोल वसुन्धर
२८ तथा ... बनवाये ।
३० कहीं पर ... समवेग थी,

- निर्मितों की स्थापना करके
कोलावसुन्धर
तथा सेवकों सहित आवास की
रचना की ।
कहीं पर उत्तम सरोवर की भाँति
बिना किसी बाधा के वह शान्त
वेग से बहती थी,

- ४३ वक्षस्थलकी...तथा
४५ जलयंत्रों...वैसे ही उधर
५६ तलवार, तोमर

- वस्त्र खींचती हुई, एक दृश
को दबाती हुई तथा
जलयंत्रों के द्वारा रोके हुए पान
के छोड़े जाने पर वह राजा नद
के विशाल तट पर आभूषण
पहनकर लीला पूर्वक खड़ा ह
गया, तब उधर
तलवार, शक्ति, तोमर

उद्देश-११

- ५ वहाँ...सुना कि
१६ लगी कि...चले गये ही ?
२५ तथा छिलकेसे रहित
४५ धर्मसे उज्ज्वल
५१ पहुँचे...किया ।
६५ वह...हुआ ।

- इस तरह उसने सुना कि
लगी कि मुझ मन्दभाग्या के लिए
दुःख की बात है, क्या मेरा
प्रिय मार गया है अथवा वह
अकेला किस तरफ चला गया है ?
तथा अंकुरसे रहित
धर्ममें उद्यत
पहुँचे और उनके द्वारा दुरंत ही
(परिवृत्त कर लिये गये) स्वागत
किया गया ।
वह जिनशासन में प्रयत्नशील बना।

- ७३ मंत्रपूर्वक...चाहिए
११७ मिट्टीके...रहे थे ।
११९ घासके कारण...पुष्पों के समान
.....तथा लज्जाशीला पृथ्वी

- मंत्रोंद्वारा पशु मारनेयोग्य (हवः
करने योग्य) हो जाते हैं । उन-
सोमादि देवों को प्रयत्नपूर्वक तृ-
प्त किया जाता है ।
हाथियों की लीला के सा-
साथ में बक, मोर और बादल शक
कर रहे थे और पपीहों ने सा-
मिलानी आरंभ कर दी थी ।
घासरूपी...पुष्परूपी...तथा पृथ्वी

उद्देश-१२

- ६ हरिवाहन को
६ अक्षुर रावणने
९ " "
२१ ऐसा...बनमाला
२९ निर्विघ्नमन से
३२ देदीप्यमान
३३ श्रावक धर्म का
३८ दुर्लभपुर
४१ " "

- हरिवाहन के
अक्षुरने
" "
'ऐसा ही हो' इस प्रकार कह-
कर धनमाला
तृष्णारहित मनसे
ज्योतिर्मती की कोख से
श्रमण धर्म का
दुर्लभपुर
" "

- ४३ " "
४३ जाओ और उत्तम
४३ क्रीडा करो
४७ दुर्लभपुरी
५५ उसकी...रक्षता
६० मेद कर सके,
६३ दुर्लभपुर
६५ " "
६५ किन्हे...लिया ।
७३ दुर्लभपुर

- " "
उत्तम
क्रीडा करते हुए रहो
दुर्लभपुरी
उनकी तरफ देखता भी नहीं ।
मेद कह सके,
दुर्लभपुर
" "
किन्हे का नाश करने लगा ।
दुर्लभपुर

मुद्रित पाठ

- ७६ यदि शत्रु...अथवा
७६ करके...उसके साथ
८१ मिलने वाला...चाहिए।
१२० अत्यन्त...रावण ने

पठितव्य पाठ

- दिब शत्रु दिव्य मौर बल (साधन) में
तुल्य हो अथवा
करके उसके साथ
मिलने वाला राज्य सुख चैन
नहीं देता।
समस्त राक्षस सैन्य प्रचण्ड ताप
की ऊष्मा से आकुलित हो गया
तब रावण ने

मुद्रित पाठ

- १३४ पुरुषगात्रों पर
१३५ चपल...ने दोनों
१३७ दिव्य....राहुसे
१३७ शून्य इन्द्रने...लिया।

पठितव्य पाठ

- अग्नि गात्रों पर,
चपल, निपुण एवं दक्ष ने दोनों
अपने हाथों को मोड़कर रावण
ने उसे शीघ्र ही दिव्य बस्त्र से
बांध लिया। उस समय वह
राहुसे
शून्य हो गया।

उद्देश-१३

- १ करके...इन्द्र के
१ भा पहुँचे
१२ उत्तम विमान में

- करके इन्द्रके
भा पहुँचे, प्रतिहार द्वारा निवेदित करने
पर रावण को देखा।
उत्तम उद्यान में

- २७ सहस्रभानु के
२८ सहस्रभानु ने
२५ अग्नि से...तुम्हारी

- सहस्रभाग(भग) के
सहस्रभाग (भग) ने
उसका अग्नि से जलाने का निश्चय जान
कर तुम्हारी

उद्देश-१४

- ५ जो प्राणियोंके...देवोंके
१२ जो दुष्ट
१३ जो अत्यन्त असंयमी
होते हैं,
१९ आज्ञा का...हैं,
२० विष एवं यत के प्रयोक्ता
३१ गुनी होते हैं,
३५ पाँच...मनुष्य
३८ मानवभव प्राप्त
३८ तथा जो
३८ वह...है
३९ ही सर्वोत्तम
४५ वह...देता।
४६ कि कुशास्त्रोंका
५० जोगोदान

- और उस मुनि के पास जाते हुए देवोंके
जो रागी, दुष्ट
जो पाप-जनक क्रियाएँ करते हैं,
आज्ञा देनेवाले (अधिकारी) हैं,
विष एवं योग-चूर्ण के प्रयोक्ता
गुणी होते हैं
कोई पाँच अणुव्रतों से युक्त होकर तो
कोई अकामनिर्जेरा से, इस प्रकार से मनुष्य
मानवभव तथा देवगति प्राप्त
यदि वह
अनिकाल दो
ही लोक में सर्वोत्तम
वह अत्यन्त परिश्रम करने पर भी कोई
फल नहीं देता।
कि कुलिगी (पास्तुकी) और कुशारत्रोंका
जो गोदान

- ५१ हलों के फलों से
५३ सोना तो भारम्भ परिग्रह
का
५६ निरुपम अज्ञोपांग
६१ सब देव काम
६२ जो वृषरे देव
६५ धर्म को...उद्यमशील
७८ भाँति होते
८० धीर गम्भीर
८३ चन्द्रको...बरसाते हैं।
९१ कृत्रिम, हाथी...केसरी
९१ चमरीगायके...आसनवाले
१०४ वैसे ही...जाता है।
१३० सुखरूपी सागर में

- हल और कुलिकों से
सोना तो भयदायी और भारम्भ परि-
ग्रह का
अक्षत अज्ञोपांग
सब देव कषाययुक्त और काम
जो ये देव
धर्म का आचरण करते हैं और उनकी
प्रतिमाओं की पूजा में उद्यमशील
भाँति निबर होते
धीर और महान्
चन्द्रको आच्छादित कर मेघ के समान
बरसने लगते हैं।
हाथी, वृषभ, शरभ, केसरी
चमरीगाय के चित्रों से युक्त पक्षवाले,
वैसे ही सभी भवों में मनुष्य-भव
कीयकि गुणों में वह सबसे श्रेष्ठ है।
रति सागर में

उद्देश-१५

- ९ भारवर्ष के
१२ एकत्रित करके
१६ भादि पुत्रों को
२० हरिणनाभ
२७ यशस्वी पुत्र
३३ जिनालयों में
५३ कहा कि मित्र को
७२ हँसकर और उत्तर

- भारवर्ष के
हरण करके
पुत्रों को
हरिणनाभ (हरिण्याभ)
विख्यात कीर्तिवाला पुत्र
जिनालयों की
कहा कि जगत में मित्र को
है प्रहसित ! उत्तर

- ७५ दान करने में
७८ स्त्री पर...वह
८३ करनेवाला तथा
९२ क्योंकि वह...नहीं है।
१०० किन्तु चारों
१०० भाववाले...हैं।

- विदारण करने में
स्त्री से विरक्त होकर वह
करनेवाला, कुमुदों को मुकुलित करता
हुआ तथा
जिससे वह मेरे को अथवा अन्य को
सदा के लिए श्रेष्ठ नहीं होगी।
चारों
भाववाले धर्म में एकाग्रचित्त बने।

उद्देश-१६

मुद्रित पाठ
 ३ बाध से
 ५ होने पर...थी ।
 १२ विद्याधरों के...रुष्ट
 २२ गिरे हुए
 २९ लौटा हुआ...पातालपुर
 २९ रावण...मेजा है ।
 ३० कहा कि आप
 ३१ में...जाने की

पठितव्य पाठ
 व्याध से
 होने पर बड़े दुःख से अपने अङ्गों
 (शरीर) को धारण कर रही थी ।
 हे वरुण ! विद्याधरों के स्वामी रुष्ट
 राक्षसमर्तों की मार से गिरे हुए
 लौटे हुए पातालपुर
 रावण ने सभी सामन्तों से मिलकर
 मुझे आपके पास मेजा है ।
 कहा कि हे तात ! आप
 में स्वतन्त्रता पूर्वक (अपने आपही)

मुद्रित पाठ
 ३३ मदनोन्मत्त हाथी को
 ४२ अपने...साथ
 ४३ फिर भी...रहूँगी ।
 ५३ कमलसमूह में से...थी
 ५७ विशाल नेत्रोंवाली को
 ६३ ही भजना के
 ६४ आगे के हिस्से में
 ६९ हृदयस्थ
 ७३ कहनेवाली
 ७९ रति...गुणों से

पठितव्य पाठ
 आपको यह आलिप्त का फल दूँगा
 अर्थात् मुझे जाने की
 मदनोन्मत्त वनहस्ती को
 आपने मुझ पुण्यहीना के साथ
 फिर भी आप मुझे स्मरण तो कर लेंते ।
 कमल समूह को तोड़ती थी
 मृगाक्षी को
 ही रात्रि में भजना के
 बाह्य कमरे में
 हृदय का इष्ट
 कहती हुई
 रति को प्रोत्साहित करने वाले गुणों से

उद्देश-१७

२ और ऊँचे...और
 १३ सुख और शान्ति
 ६७ जिनेश्वरदेव...जो
 ८९ पूर्व दिशा में...एक

और ऊँचे तथा श्याम सुख वाले हो
 गये और
 सुख का स्वाद
 जिनेश्वर व गुरु के प्रातिकूल दुनियाँ
 में जो
 जैसे पूर्वदिशा सूर्य को वैसे ही एक

१०३ सुन्दर माता की
 १०४ परन्तु स्वजन के
 १०५ पहचान कर...की गई ।

सुन्दर माला की
 परन्तु चिन्हों से और स्वजन के
 पहचान कर अत्यन्त दुःख से परि-
 न्याप्त शरीर वाली वह भजना वसं
 तमाला के साथ उस अरण्य में करुण
 स्वर से रोने लगी ।

उद्देश-१८

३ जल के स्वामी वरुण ने
 ११ दरवाज़े से
 १५ वृत्तान्त कह
 २५ दुःख एवं शोक के
 २९ पुत्र के बारे में

जलकान्त ने
 अक्सर पाकर (बहाने से)
 वृत्तान्त गुरुजनों को कह
 पुत्र शोक के
 पुत्र के जीवित रहने के बारे में

३३ राजा के...पुत्रों को
 ४३ उरसाहवाले...कि,
 ४५ हुए मैने
 ४६ निर्वासना का
 ४८ सखी से युक्त

राजा के पुत्रों तथा दूतों को
 उरसाहवाले उसको भजना की दुर्दशा
 के बारे में स्पष्ट रूप से कहने लगा कि,
 हुए रात्रि में मैने
 निर्वासन का
 अनिकाल वो

उद्देश-१९

७ हनुरुह के...हमें
 ११ कि कायर का
 २७ चारों...हनुमान

दानवपति (रावण) के द्वारा बुलाये
 गये हैं और हमें
 कि हे तात ! कायर का
 चपलता से से विक्रम को प्रसारित करता

४० को बुलाया...की ।
 ४४ मध्याह्नकालीन
 ४४ सुदर्शनचक्र

हुआ हनुमान
 को स्वाधीनता पूर्वक (सम्मान) पूर्वक
 बड़े भारी समारोह के साथ लाया ।
 मध्याह्नकालीन
 सुदर्शनचक्र

उद्देश-२०

१० शोक रहित क्षेमा
 ११ अलकापुरी के
 १७ तथा वीर
 १८ पिहितालव
 १९ चित्तरक्ष
 २२ सर्वार्थसिद्धि
 २९ संभवनाथ...इन्द्रवृक्ष

क्षेमा, व्यपगत शोका
 देवपुरी के
 तथा धीर
 पिहितालव
 चिन्तारक्ष
 सर्वार्थसिद्धि
 संभवनाथ, ऐन्द्र नक्षत्र और क्षालवृक्ष

३० नाम की उत्तम नगरी
 ३० संबरराजा
 ३७ श्रेयासनाथ
 ३८ भगवान्
 ३९ कापिल्य

नाम की माता, प्रथमपुरी (अयोध्या)
 नगरी,
 संबरराजा
 श्रेयासनाथ
 भगवान्
 कापिल्य

मुद्रित पाठ
 ४२ अचिरा
 ४३ तिलकश्री माता
 ४३ सत्तिका
 ४४ अमरनाथ
 ५८ करके निकले थे ।
 ६२ विशदरूप से
 ७७ ९लाख कोटि
 ८४ अतिशय वर्जित
 १०१ अजितनाथ की
 १०२ तीसलाख एवं
 १०६ मंगला में
 १०९ वह उत्पन्न
 ११३ वहाँ....रूपवान
 १२८ एवं बलिकर्म करके
 १३२ सम्पन्न
 १३४ नागपुर से

पठितव्य पाठ
 ऐराणी
 तिलक वृक्ष, श्री माता,
 कृत्तिका
 अरनाथ
 करके गृहवास से निकले थे ।
 विस्तार से
 ९९ हजार कोटि
 अतिशयो से रहित
 अजितनाथ की
 तीस लाख, दस लाख, एवं
 सुमंगला में
 वह सगर नाम से उत्पन्न
 तत् पद्मात् अत्यन्त रूपवान
 एवं संस्कार करण करके
 सम्पन्न
 नागपुर में

मुद्रित पाठ
 १३९ श्रावस्ती के
 १४१ वरागहीन
 १४१ मरकर...सातवें
 १४४ विद्याधरों...थी ।
 १४५ विद्याधरों से...उन
 १५३ यशोदेवीका
 १५६ वृषभ के समान उत्तम
 १५९ वह
 १५९ पृथ्वी
 १६९ श्रावस्ती, सिंहपुर
 १८३ और वसुदेव
 १८६ मनोरमा

पठितव्य पाठ
 ईशावती के
 वैराग्यहीन
 मरकर अर और मल्लि जिनों के तीर्थ-
 काल के बीच में सातवें
 वे किसी की अपने पति के रूप में
 इच्छा नहीं करती थी, खेचरों द्वारा
 उनका अपहरण किया गया ।
 पता लगाकर चक्रवर्ती के द्वारा वे
 वापिस लाई गईं और उन
 यशोमतिदेवी का
 अति श्रेष्ठ
 वह
 पृथ्वी
 श्रावस्ती, कौशाम्बी, पोतनपुर, सिंहपुर
 और अन्तिम वसुदेव
 मनोहरा

१० मनुष्यों में...श्रेष्ठ
 १० बहुत से राजा
 १४ उसने पति से
 ३६ और...बदलते हैं,
 ५० तीव्र
 ५७ किमा ।

Xनिकाल दो
 बहुत से श्रेष्ठ राजा
 उसने जगकर पति से
 और उनको व्यसन (भापति) तथा महो-
 त्सव बारि बारि से भाते रहते हैं,
 तीव्र
 किया ।

उद्देश-२१

५८ मान
 ६० बन्धुजनों से
 ६८ बिनती
 ७३ भातृस्नेह
 ७८ लोक में
 ८० निर्मोही
 मद
 बन्धुजनों से
 बिनती
 आतृस्नेह
 लोगों में
 स्नेह बन्धन टूटने पर

उद्देश-२२

७ पुत्र । ...प्रतिष्ठित
 १४ करके और
 १४ सुकोशल...उससे
 १८ ऐसा...धर्म में
 २६ दर्शन-ज्ञान की लब्धि;
 पंचनमस्कारविधि

पुत्र । जिसने तुम्हें शैशव अवस्था
 में ही राज्य पर प्रतिष्ठित
 करके वहाँ बैठा और
 सुकोशल ने उससे
 इस प्रकार अपने पुत्र के चित्त को
 जानकर उस वचन कुशल अनगर ने
 कहा कि धर्म में
 दर्शन-ज्ञान की लब्धि; पञ्चमंदरविधि
 केशरिक्कीडा, चारित्रलब्धि, परीषहजया,
 प्रवचनमाता, आचीर्णसुखनामा; पंचनम-
 स्कारविधि

३४ (समाधि) के साथ
 ३५ राक्षसों, वन्य
 ५३ मेरे पास
 ५३ शक्ति
 ५८ दक्षिण देश का स्वामी
 ५८ साथ आया ।
 ६० उत्तक
 ७९ सुननेकी...प्रकट की ।
 ९६ शुष्क रुधिर से
 (समाधि) से
 कच्चा मांस खाने वाले वन्य
 यह
 सत्त्व
 दक्षिण देश के स्वामी
 साथ आये ।
 उद्यत
 सुनना प्रारंभ किया ।
 शुष्क और रुधिर से

| मुद्रित पाठ | पठितव्य पाठ | मुद्रित पाठ | पठितव्य पाठ |
|----------------------|--|-------------------------------|---|
| | | उद्देश-२३ | |
| ६ देवगणके...उस | देवगण जिस शिखर पर निवास करते हैं उस | २१ आज्ञा से महलमें | आज्ञा से तडित्त्विलसितने फौरन महलमें |
| ७ फिर...मेरा | तब नारद ने कहा, हे साकेतपति ! मेरा | २१ फौरन | ×निकाल दो |
| १० जो एक...दशरथका | जो नैमित्तिक सागरविधि ने कहा था कि दशरथका | २२ मस्तकको...दिया । | मस्तकको उठाकर तडित्त्विलसितने स्वयं ही उसे रात में देखा और फिर स्वामी को दिखाया । |
| १३ इसका...न करें । | इसमें आप विलम्ब न करें । | २३ पवन के समान | पवनकी गति के समान |
| १६ देकर...गया । | देकर वहाँ से प्रच्छन्न रूपमें बाहर चला गया । | २४ देखने लगा । | देखता हुआ रहने लगा । |
| | | २६ यहाँ...जन्ममें | इस प्रकार |
| | | उद्देश-२४ | |
| ११ चारों...भाये । | धूमते हुए वे दशरथ और जनक भी वहाँ मिलें । एक दूसरे का परिचय प्राप्तकर दोनों उस (समारंभ) में उपस्थित हुए । | २२ कि मेरे | कि हे माम ! मेरे |
| १७ रूपसे...है, | रूपसे तो यह कामदेव के समान है, | ३३ तब...किया । | तब लोगों के बीच में उसने विधिपूर्वक पाणिग्रहण किया, (इस प्रकार) राजा दशरथ ने कौतुक एवं मंगलों के धाम (मगर) में शादी की । |
| १९ पुरुषकी | पुरुषसे | ४० सुखके...जिसके | मधुरस्वरलहरी से जिसके |
| | | उद्देश-२५ | |
| ५ प्रशस्त | समस्त | २२ छिद्रमें से | छुपके से |
| ८ कान्तिवाले | आँखोंवाले | २३ उसे...सौंपे । | उसको कुमार सौंपे । |
| १० कही गई | सुनी गई । | २५ कुशलता | माहात्म्य |
| १३ जन्मों से | कई जन्मों से | २५ सागर के जैसे | चारों सागरों के जैसे |
| १५ उन कुमारसिंहोंको | उन चारों कुमारसिंहोंको | २५ वे चारों (२४) | वे (२५) |
| १६ अचिरा | ऐराणी | २६ बल, शक्ति...कलाओं में | बल एवं शक्ति में अपने पुत्रों को समर्थ चित्तवाले तथा कलाओं में |
| १६ अचिराकी...हुआ । | उसके अचिरकुक्षी नामका पुत्र था । | | |
| | | उद्देश-२६ | |
| १४ कहीं से | अटवी से | ५७ शरीरमें...करते हैं । | अन्य जीव अपने अंगों के कौओं और गृद्धोंके द्वारा चढ़ चढ़ खाये जाने के कारण नरकायु के शेष रहने तक वेदनाएँ अनुभव करते रहते हैं । |
| १६ बीच...कहा | बीच अनेकबुद्धि नामक मंत्री ने उससे कहा | ६५ अणुवर्तोंके साथ मधु- | अणुवर्तोंको ग्रहण करके मधु- |
| १८ गर्दन...पुरुषोंने | गर्दन में चोट करने वाले प्रहार करते हुए पुरुषों ने | ९४ हे प्रसन्ना । | हे सृगाक्षी ! |
| २८ कुण्डमण्डित को | कुण्डलमण्डितको | १०१ शरत्पूर्णिमाके...समूह हो- | नखमणि में किरणों का समूह ज्वलितहो |
| ३१ प्रशस्त की । | स्वस्थ की । | १०३ देवकन्या | इन्द्राणी |
| ५० हुए और गरम तबि | हुए अस्ते, तबि | | |
| | | उद्देश-२७ | |
| ७ आयरंगके...थे । | आयरंगके अधीन थे । | १४ करके...घोषके | करके डोल एवं स्तुति-पाठकोंके घोषके |
| १३ ऐसा...रामको | हाँ, ऐसा कह करके राम को | १५ सुभट खड़े हैं । | सुभट यहाँ आ खड़े हैं । |

मुद्रित पाठ

पठितव्य पाठ

मुद्रित पाठ

पठितव्य पाठ

- २१ जिनके...ऐसेने
२२ जनक...तथा
२४ किरणोंकी
२५ जनकको
२५ आक्रमण किया
६२ बार-बार...क्षणभर में
२८ पद्मसरोवरको...लगे ।

- जय, जय शब्द के उद्घोष व वायों की ध्वनि के साथ वे जनक और उसके संबंधी (कनक) तथा ज्वालाओं की कनकको (युद्ध का) संचालन किया । बार बार सामन्तोंके द्वारा भग्न होने पर भी बर्बरोने क्षण भरमें पद्मसरोवरको नष्ट करता है उस

- ३० उसका...पकड़ा ।
३१ स्वयं ही उठ
३३ कई
३३ दूसरों ने
३३ पुष्पों की...थी ।
३५ करने लगे ।
३७ राम खड़े
४२ राम तीनों...हैं ।

- तरह नष्ट-विनष्ट करने लगे । उसका पीछा किया । स्वयं अपने सुभटों के साथ उठ वे उन्होंने पुष्पों से (भपने आप) को सजावा था करते हुए लड़ने लगे । राम स्वयं खड़े राम लोक में प्रसिद्ध हुए ।

उद्देश-२८

- ३ जटा के भारसे
१० लगा,...प्रलाप
२३ भूमि...जाना
३५ देश...एक
४४ कि...राजा
४९ पितामह, जिन
६३ तुम...हो ।
६५ और बच्चेकी
६५ सामान्य...हो ।
६९ पुरुषों ने...प्राप्त
९१ विधिने...है

- जटा-जूट से लगा, शोक और अण्डबण्ड प्रलाप वहाँ स्थलचरों (मनुष्यों) के मकानों में हमारे लिए जाना देश पारकर राजा क्षीप्र ही जिनालय के पास में स्थित एक कि कहीं से यह खेचर-राजा पितामह, विष्णु, जिन तुम सामान्य पुरुष हो । और मूर्खकी सामान्य व्यक्ति भी इच्छा करता है, हीन पुरुष हीनके साथ ही सम्बन्ध चाहता है । पुरुषोंने अचल व अनुत्तर मोक्ष प्राप्त विधिने और भी भारी दूसरा दुःख दिखाया है ।

- ९२ कर्म...है
९६ माया...आये ।
९८ हुई...वृषभके
१०० महाबली
११९ तथा...देवोंने
१२१ उससे...वह
१२१ विशालाक्षी
१२४ उस...और
१२८ अभ्युदय
१४० करके
१४१ पुत्र...लगे ।

- कर्म समस्त लोक को नचाता है । माता-पिता के साथ सभी राजा मिथिला में आये । हुई सर्वाध्वजी सीता ने धनुषभवन में वृषभके महाबाहु तथा जय-जयकार और वायोंके घोष के साथ देवोंने क्षुब्ध-सागर सा वह शृगाक्षी लक्ष्मणने उम्र धनुषको उठाकर वर्ष पूर्वक मोड़ा और अद्भुत करके पुत्रों ने नववधुओं के साथ क्रमशः अयोध्यामें प्रवेश किया ।

उद्देश-२९

- १ दिन राजाने
२ (ऐपन)
१६ अपमानसे...करके
४९ राजा पूजा

- दिन से राजाने (ऐपन) उच्चकुलमें उत्पन्न जियाँ अपमानसे पीड़ित जीवन जी करके राजा पूर्ण आदरसे पूजा

- ४९ सेवा...था ।

- वह विमल हृदयवाला दिव्य नारी-जनों से संबित होकर दिन बिताता था और पूर्वजन्म में उपाजित (पुण्य के कारण) शरीर-सुख का उपभोग करता था ।

उद्देश-३०

- ३ सास एक-दूसरेके
१२ ओर चल पड़ा ।
१७ जिसको विशिष्ट
१७ वह तो मेरी
२७ चन्द्रगति सुँह

- सास आवाज करते हुए एक दूसरेके ओर चलने को प्रवृत्त हुआ । जिसका रूप वह निश्चयही मेरी चन्द्रगति विस्मित हुआ और सुँह से

- ३५ रामने...चाहिए

- ६९ अतिभूति...मरकर

- रामने यह वचन कहा कि हे भद्रे ! जो नष्ट और अशुभ हो गया है उसके बारे में रामशदार को चिन्ता नहीं करना चाहिए । अतिभूति निदानरहित मरकर

| | | | |
|---------------------|------------------|---------------------|---|
| मुद्रित पाठ | पठितव्य पाठ | मुद्रित पाठ | पठितव्य पाठ |
| ६९ करने लगे | करने लगा । | ९२ ऊपर उछल रहा है । | पुलकित हो रहा है । |
| ७३ पर्वत के मध्यमें | नगोत्तर पर्वत पर | ९४ पर...हुई । | पर अभिनन्दित की गयी । |
| ८५ उसने | और उसको | ९६ तुम... करना । | तुम परम बन्धु हो जिससे सीता को तनिक भी उद्देश प्राप्त नहीं होगा |

उद्देश-३१

| | | | |
|----------------------------|---|---------------------------|--|
| श्रेणिकने....हे भगवन् । | श्रेणिकने गणाधिपसे पूछा कि, भगवन् ! | ९६ लगी...पुत्र | लगी "हे पुत्र ! |
| १३ ज्ञानका धारक | देह-धारक | ९७ रूप हो । | रूप हो" । |
| २२ स्कन्दके द्वारा | भाक्रमणके द्वारा | कैकेई के | "कैकेई के वरके कारण पिताने |
| ४३ पुरुष...आगको | पुरुष स्वल्प वस्त्रों के कारण आगको | ९८ नहीं चाहता । | नहीं चाहता" । |
| ४४ दौतरूपी वीणा बजाने वाले | दौतरूपी वीणा जिनकी गिरगथी थी (ऐसे वृद्धलोग) | ९९ हे पुत्र ! | "हे पुत्र ! |
| ५५ आज ऐसे | आज मुनि के पास ऐसे | ९९ आऊँगी । | जाऊँगी" । |
| ६२ दुःख...संकुल | दुःख रूपी पादपों से संकुल | १०० कहा कि विन्ध्यगिरि के | कहा "विन्ध्यगिरि के |
| ७७ ऐसा ही हृदय में | भला ही | १०३ उत्तम...किया । | पति एवं पुत्र का आलिगन एक समान होने पर भी भावनाओं की भिन्नता रहती है । |
| ९१ निर्मल...करो । | पिता की विमलकीर्ति (बनी रहे इसलिए) माता के वचन का परिपालन करो । | १२५ धीर !...करो । | धीर ! उपेक्षा मत करो । |
| | | १२६ सामर्थ्य | अधिकार |

उद्देश-३२

| | | | |
|----------------------------|---------------------------------------|-------------------------|--------------------------------|
| २ करके वे | करके सीता के साथ वे | ३० भावों में | भवों में |
| ७ दूसरी दिशा में | पच्छिम दिशा में | ३५ एकान्त | सीमावर्ती |
| १० सिंह रु | सिंह, हाथी, रु | ४१ सिंह के ..देखा | उन श्रेष्ठ कुमारसिंहों को देखा |
| २४ राजाओं ने...गृहस्थ धर्म | राजाओं ने जो विषयामुख थे, गृहस्थ धर्म | ५१ स्वभावसे...होती है । | स्वभाव से मायावी होती है । |
| | | ५६ भी.....था । | भी सन्तोष नहीं पाता था । |

उद्देश-३३

| | | | |
|-----------------------|---|-------------------------------|--|
| २ था,...लगा था । | था, बिना जोते बोये हुए धान के उगने से उसके रास्ते और मार्ग अवरुद्ध हो गये थे और उदुम्बर, पनस एवं बड़ की लकड़ियाँ के गड्डों का समिधा के लिए वहाँ पर ढेर लगा था । | ३७ छोटे वन में | रास्तें अव्यवस्थित हो गये हैं । |
| ३ विनय ...बातचीत की । | विनय और उपचार के साथ सभी तापसगणों ने प्रयत्नपूर्वक उनका कुशल क्षेम करते हुए बातचीत की । | ३७ करके...जायेंगे । | मन्दारण्य में करके जल में लोहे के गोले की भाँति वे अचार नरक में जायेंगे । हैं और करवत, तलवार तथा यन्त्र होते हैं । |
| १४ भन्न...है, | खेत को बिना जोते फसलें पैदा होती हैं, | ३९ है,...होते है । | वशयष्टि |
| १४ और...प्राप्त भी | और पुण्ड्रेक्षु प्रचुर मात्रा में है, तथा प्राप्त भी | ६१ बेंत | पद्मनाभ |
| १५ और...हुए हैं । | और भ्रम शकटों व बर्तनों के कारण | ९५ पद्मनाभ | ९९ सिंहोदर के ...भरत ने |
| | | १०१ सृष्टियोंके ... पकती है ? | सिंहोदर को बुद्धिशाली लक्ष्मण ने कहा कि भरत ने |
| | | १०२ तुम्हारे...है ? | सृष्टियों से मालिक को आपत्ति होती है ? |
| | | १०५ सृष्ट्यु की...करो । | तुम्हारे आदेश से मुझे क्या ? सृष्ट्युको शीघ्रता से स्वीकार करो । |

मुद्रित पाठ

१०७ उत्सुक बुद्धिशाली

१०९ पीटा ।

११० उस...बांधलिया ।

११५ नगर के....दशपुर

- ४ अनुग्रह करके
५ इसमें...ऐसा
६ लक्ष्मण से पूछा
८ राजा के
१७ तुम ने...रही हो ?

- १४ पापी इस
२० भीगे हुए
२२ पूषण...वहाँ
२३ वहाँ विशाल
६७ वह धर्म...है ।

- ८ सभी...एक
१५ बन्धन में...वह
२१ अधिक
२५ अपने...कहा कि

७.८ सिंह के...हुआ है ।

पठितव्य पाठ

उद्यत मनवाले

पीटा गिराया ।

वह किसी किसी योद्धा को आपस में ही एक दूसरे से मरवाता था, किसी को एही की चोट से निर्जीव करता था और किसी किसी को जिसकी पीठ फट गयी थी तथा अधोमुख पड़ा हुआ था, वह यों ही छोड़े देता था ।

नगर के मुख्यद्वार पर भासीन दशपुर

बिना अवरोध
“क्या दोष है ?” ऐसा
लक्ष्मण से उसने पूछा ।
नगराधिप के
हे सुन्दर शरीर वाली कन्ये ! तुम
अपने ही राज्य में इस प्रकार के
वेश में क्यों क्रीड़ा करती हो ?

पाप अपकीर्ति का मूल है, इस
भीगते हुए
पूतन नाम का विनायक (यक्ष) वहाँ
वहाँ शीघ्र ही विशाल
वही प्रमाणित (योग्य) धर्म है ।

सभी दिशाओं में अन्धकार छा जाने
पर एक
उपवास धारण किये हुए वह
अधीरता व
लक्ष्मण को उस स्त्री के साथ देख कर
सीता ने हँस कर कहा कि

कलभ (राजा) कैसरी के साथ तथा
महाध्वज आदि (और) अंगाधिपति
राजा ये (सब अपने अपने) छः सौ
मत्त हाथियों के साथ व घात की
भयों के साथ रण में शीघ्र ही उप-

मुद्रित पाठ

१२२ उन...सिंहोदर

१२६ तथा...की ।

१३७ जैन धर्मके ..दिये ।

१४७ वज्रभ्रमण...बढ़ाया गया ।

- २५ छुड़ा सका ।
३३ शब्दायमान, ...उछलने के
३३ जल में प्रविष्ट हाथियों की
५० बन्धन से
५३ तुम...है ।

उद्देश-३५

- ७६ सम्मान से...था ।
७९ अठारह लाख
७९ नन्दपनि मुनि के
८१ यह प्रशस्त

उद्देश-३६

- २८ जैसी आज्ञा...इस
३३ भाग्य से
३३ वृद्धि हो ।

उद्देश-३७

- २७ राजा सेना के
२९ उसने
३९ राजा ने राम से

पठितव्य पाठ

उन स्त्रियों के रोते हुए सिंहोदर तथा धीता से आदर व स्नेह पूर्वक बात की ।

जैन धर्म के प्रभाव से संतुष्ट हो कर सिंहोदर ने वह गणिका (वेश्या) ? और दिव्य कुण्डल विद्युद्ग्न को सुप्रत किये ।

वज्रकर्ण (वज्रभ्रमण) के साथ उत्तम प्रीति हुई तथा परस्पर सम्मान, दान-प्रदान व आवागमन से उम दोनों का स्नेह बढ़ता गया ।

छुड़ाता है ।
शब्दायमान, संक्षुब्ध मगर, मच्छ, कच्छप और मत्स्यों के उछलने के
जल-हस्तियों को
बन्धन से
तुम यह सब जान जाओगे ।

सम्मान से वह इतना पराजित था कि उसको शान्ति नहीं हो रही थी ।
अठारह हजार
नन्द नामक यति के
यह

जिस प्रकार भाग कहती है वैसा ही है-इस
X निकाल दो
वृद्धि देखी गई है ।

स्थित हुए हैं । पंचालपति पार्थ एक हजार हाथियों के साथ आया है ।
राजा कनक सेना के
राजा महीधर ने
राजाको राम ने

| मुद्रित पाठ | पठितव्य पाठ | मुद्रित पाठ | पठितव्य पाठ |
|------------------------|---|-------------------------|---------------------------------------|
| ३१ इस पर रामने कहा कि, | × निकाल दो | ४२ प्रयत्नशील | अप्रमत्त |
| ३५ अतिवीर्य....हजारों | सुना जाता है कि अतिवीर्य बहुत से हजारों | ४४ शीघ्र ही वश में | शीघ्र ही तुम्हारे वश में |
| ३९ सेना को...है । | साधन का हरण कर रहा है । | ५३ नर्तकाने...लोगों में | नर्तकाने कहा, हे अतिवीर्यक ! लोगो में |
| | | ६१ श्रद्धा पूर्वक | उपयोग पूर्वक |

उद्देश-३८

| | | | |
|-------------------|--|----------------------|--|
| २ उस...सीता के | उसे कान्ता के रूप में स्वीकार करके सीता के | ४६ राजा ने...मेने | लक्ष्मण ने कहा, हे राजत् ! मेने |
| १३ जरके | करके | ४६ तो तुम | तो हे माम ! तुम |
| १७ मैं वापस | में आश्रय-स्थल (निवास स्थान) निश्चित करके वापस | ४७ इस...कहा कि | शत्रुदमन ने भी इसी प्रकार अपने मधुर वचनों से उसे क्षमा करके कहा कि |
| ३८ उगली । | उठायी । | ५४ भोगों में अनुसुक | भोगों में अतिपोषित होकर |
| ३९ उसने भी दाहिने | उसने उस आती हुई शक्ति को दाहिने | ५५ लक्ष्मण...भी हो । | लक्ष्मण वनमाला की तरह उसको भी आश्वासन देने लगा । |

उद्देश-३९

| | | | |
|---------------------------|--|--------------------------|--|
| ४ पार करके | पार करते हुए | ५४ हाथी के...तथा | हाथी के चलायमान कान तथा |
| ११ सीता को...रखकर | सीता को मार्ग में (चलने के लिए) स्थिर कर | ७३ उपसर्ग से युक्त | उपसर्ग से युक्त |
| १२ निर्मल | बड़ी बड़ी | ९२ सोचते ही हमारी | उसके विषय में उनकी ऐसी धारणा हुई कि हमारी |
| १६ हाथियों को | सर्पों को | ९९ यह...है । | यह महालोचन है । |
| १७ नाम्ना वर्ण के...देखा | नाम्ना वर्ण के बिच्छुओं तथा भयानक चीनसों (सर्पों) द्वारा घेरे गये उन मुनियों को दशरथ-पुत्रों ने देखा । | १०१ दूसरी पत्नी | दूसरी अमानिती पत्नी |
| १८ उन्हें...तब | धनुष के अग्र भाग से बिच्छुओं और सर्पों को चारों ओर से दूर हटा करके तब | १०१ मदनवेगा...हुई । | मदनवेगा थी जो दत्त नामक मुनिवर के पास में सम्यक्त्वपरायणा हुई थी । |
| ३४ यथायोग्य ... वे | यथाविध वे | १०६ तापसगुरुओं को | तापसगुरु को |
| ४० दौत्यकार्य के | अपने कार्य के | ११२ यह सरल है । | यह अनुकूल है । |
| ४५ ब्राह्मणपत्नी ने जैसा | ब्राह्मणपत्नी ने कामकीड़ा के लिए जैसा | ११३ मैं...हूँ । | मैं कुंवारी कन्या हूँ । |
| ४५ रात के समय | × निकाल दो | ११५ वेश्या के | वेश्या (अमानिती स्त्री) के |
| ४९ साथ...मतिवर्धन | साथ वह गणनायक मतिवर्धन | १२३ अपना...जानकर | × निकाल दो |
| ४९ एवं दूसरे प्राणियों से | प्राणियों से | १२३ वाणी को हृदय से | वाणी को सुनकर हृदय से |
| | | १२४ अवधि ज्ञान से...उसने | अवधि ज्ञान से हमको यहाँ योगस्थ जानकर उसने |

उद्देश-४०

| | | | |
|--------------|-------------------------|------------------|---------------|
| १ वे भी | उन्हें भी | १२ दूसरे देश में | दूसरे स्थल पर |
| ६ सहसा उन्नत | सहसा बहुत सी ऊँची ऊँची, | | |

उद्देश-४१

| | | | |
|----------------------|--|------------------------|--------------------------------|
| १२ मुनियों को...देखा | मुनियों को और उस परम अतिशय को देखा । | १५ शोभावाला | शोभा को प्राप्तकर |
| १२ परमअतिशययुक्त | × निकाल दो | २३ में योग | में यह योग |
| १४ पक्षी....उनके | पक्षी संसार का उच्छेदन करने के निमित्त से उनके | २६ रहा हुआ | रहता हुआ |
| | | २८ भंडुभा | विकार प्राप्त |
| | | ३७ अरण्य में....किया । | अरण्य में ही भानन्द मानता है । |

| मुद्रित पाठ | पठितव्य पाठ | मुद्रित पाठ | पठितव्य पाठ |
|----------------------------|---|-------------------------------|---|
| ४२ आचार वाले | रूप वाले | ६२ बीच...हुए । | बीच हमारे पिता की सभा (न्यायालय) में अभियोग चला और दोनों में वाद प्रतिवाद हुआ । |
| ५६ वह विशाल की | वह प्रवर के निज मामा विशाल की | ६७ यथाशक्ति उपवास | यथाशक्ति एवं भावना पूर्वक उपवास |
| ५६ और...जायगी | × निकाल दो | ७४ इन्द्र के आयुध वज्र | इन्द्रधनुष |
| ५७ वह सुकेतु | यही बात होगी ऐसा कह करके वह सुकेतु | ७७ उद्यमशील | प्रमादरहित |
| ५९ विशाल की धृता | विशाल की विधृता | ७८ अनन्यरष्टि (सम्यग्रदृष्टि) | तृष्णारहित दृष्टि से |
| उद्देश-४२ | | | |
| ८ बकुल, अतिमुक्तक | बकुल, तिलक, अतिमुक्तक, | २२ उन...भौरों को | चक्कर लगाते हुए उन बहुसंख्यक भौरों को |
| ८ शतपत्रिका से | शतपत्रिका और कुरैया से | २६ हैं, ...हैं, | हैं, लता मण्डपों से युक्त हैं, |
| ९ शमी...बेर | शमी, केतकी, बेर | ३० लपेट रहे | फोब रहे |
| ११ ऐसा...प्रिया के | 'ऐसा ही हो' यह कहकर प्रिया के | ३३ टहनियाँ...फूटे हैं | प्ररोहों का समूह जिसमें से फूटा है |
| उद्देश-४३ | | | |
| ३ विमुक्त...प्राप्त | विमुक्त होकर सुख की स्थिति को प्राप्त | ३५ हुईं...विशालाक्षीने | हुई व अश्रु बहने के कारण उस विकलाक्षी ने |
| १९ के साथ | के लिए | ३५ लीलापूर्वक | × निकाल दो |
| २० जंगल में...दृष्टिपथ में | जंगल में मेरे नियम और योग की समाप्ति के पहले जो दृष्टिपथ में | ४३ पापी ... धारण | पाप से परिशुद्ध तथा स्वजनों द्वारा परित्यक्त में वैराग्य धारण |
| २१ अभ्यास...वाले | विधान पूर्वक | | |
| २१ जंगल में | शुरुमुट में | | |
| उद्देश-४४ | | | |
| ५ रखकर ...गाय की | रखकर वत्सविहीन गायकी | ३० जाते...सम्मोह | निगाह करते हुए उसने नीचे सुख की हुई, सम्मोह |
| ६ मेरा | मेरा गाढ़ | ३२ उसके नाम | उसके नाम |
| ८ किसी तरह | बकी कठिनाई से | ६२ इस...उत्तम | इस प्रकार मनुष्यों में सार रूप उत्तम |
| १५ हुई सीता | हुई भयभीत सीता | | |
| १७ आकाशमें से हुए | आकाश में आच्छादित होते हुए | | |
| उद्देश-४५ | | | |
| ४ फिर...ठहरो । | तुम मेरे पीछे खड़े हो जाओ । | ३८ जल्दी ही...जायें | जल्दी ही पातालंकारपुर चले जायें |
| ९ वनके...मेरे | बिना कसूर अथवा मध्यस्थ भाव वाले मेरे | ३८ बैठकर ...पता | बैठकर भामण्डल के बारे में पता |
| १५ मूर्छित...डाला । | उसको लक्ष्मण ने बाणों से मूर्छित करके चौंध दिया । | ४२ भी...नहीं | भी प्रसन्नता प्राप्त नहीं |
| | | ४३ धीरज धारण की । | आनन्द प्राप्त किया । |
| उद्देश-४६ | | | |
| ९ प्रेम न छोड़ा । | प्रेमाशा नहीं छोड़ी । | ४९ क्षान्ति देता है । | सुख देता है । |
| २८ जिसे कि तुमने | जिसकी तुम्हारे द्वारा | ५९ इस रावण के ...दो । | यह रावण ले जाकर मुझे राम को सौंप दे |
| २८ साथ देखा है । | साथ याचना की जाती है । | ७० तथा समुच्चय | तथा चौथे समुच्चय |
| ३९ शरीर-सुख का | देवसुख का | ८० पूजा | बांछना |
| ४० जिन...वे भी | जो राम और लक्ष्मण तुम्हारे कल्याण के लिए नित्य उद्यमशील हैं वे भी | ८१ चिन्तातुर | चिन्तामग्न |
| | | ८२ मिश्राश | निश्वास |

मुद्रित पाठ
८५ जैसा...हुभा हूँ ?
८६ ऐसा सोचकर

पठितव्य पाठ
जैसा क्यों निरूपित कर दिया गया हूँ ।
× निकाल दो ।

मुद्रित पाठ
९४ थोड़े से त्रिपृष्ठों द्वारा

पठितव्य पाठ
छोटे से त्रिपृष्ठ द्वारा

३० तुम्हें...भीर
३७ कष्ट पूर्वक

तुम्हारे कार्य को पूरा करेंगा और
विट सुग्रीव की

४४ युक्त
५४ सुरमति
५४ पद्माभा

रहित
सुरवती
पद्मावती

उद्देश-४७

१ धैर्य के
४ दूसरा...महीं
४ जब...क्षीते ।
९ दुष्ट बुद्धिवाले
९ रामने...है ।

सुख के
दूसरी कोई कथा वे नहीं
पास में वैठी हुई (कन्या) को भी वे'सीते ।
पापमति
रामने तुम्हारे जैसे दुष्टचरित्र वाले
(साहसगति) को मेजा है ।

७९ काय
८० करनेवाले...तिरस्कृत
८७ यह...देगा
१०० परिपूर्ण
१०२ सिन्धु देश में
११४ विरह से...सीता
१२० वानरों में से...करें ।

कार्य
करते हुए इस प्रकार भाईयों व उनके
परिवार द्वारा तिरस्कृत
यह छोड़ न देगा
पूजित
नदी अथवा समुद्रस्थल पर
विरह में कृष्णकाय बनी सीता
वानरों के किसी नीति कुशल सामन्त
की आप क्षीप्र खोज करें ।

११ उपचार किया ।
२१ शवसुर
३४ राजा का
६४ विलासभृति
६५ उस...वन में

उपचार किया ।
श्वशुर
रघुपति का
विशालभृति
उस पत्नी के वचन से बहू विनयवत्
बहाने से वन में

१२५ बल से...चाहिए ।

अति बल से गर्वित तथा अपने सामर्थ्य
से युक्त पुरुष को किसी कारण (वस्तु)
पर अपनी बुद्धि से विचार करते हुए
भी सदा विमल (हृदय) होना चाहिए ।

उद्देश-४९

१-२ दूत को देखा ।
३ आदि का
९ हनुमान ने बुलाया
२७ प्रसन्न
३२ चित्तस्वस्थता के

दूत को आता हुआ देखा ।
तक का
हनुमान ने सुग्रीव की पुत्री (कमला)
को बुला करके दूत से पूछा ।
वश में
अपने संयोग के

३३ धर्म
३३ (३३-३४)
३४ आ जाऊँगा ।
३४ (३५)
३५ ...

धर्म
(३३)
आ जाता हूँ ।
(३४)
यह विश्वास दिलानेवाली अंगूठी ले
जाकर उसको देना और उसकी (सीता
की) चूड़ामणि मेरे लिए ले आना ।

उद्देश-५०

५ में उस

में निश्चय ही उस

२० दुन्दुभि और

ढोल तूर्य आदि

उद्देश-५१

४ साधना के
११ तुम ठहरी हो

साधना के
तुम रहती हो

२४ देव के आगमन के

देश लौटने के

उद्देश-५२

१ चित्रकूट की
२ सूचित करो
५ जैसी भुजाओं वाले
६ सर्पिणी के

त्रिकूट की
पता लगाओ
जैसी गजैना करने वाले
आशालिका के

८ वज्रमुख स्वयं उठ
हनुमान...नामक

वज्रमुख रूठ हो स्वयं उठ
हनुमान को लंका (सुन्दरी) कन्या का
लाम नामक

| मुद्रित पाठ | पठितव्य पाठ | मुद्रित पाठ | पठितव्य पाठ |
|---------------------------|---|---------------------------|---|
| उद्देश-५३ | | | |
| १ और....प्रविष्ट हुआ । | और दरवाजे पर (के निकट) ही स्थित विभीषण के घर में वह अकेला प्रविष्ट हुआ । | ८२ और उरसाह से | और कोप तथा उरसाह से |
| १२ स्मृतिचिन्ह के रूप में | रत्न सहित | ८७ इन्द्रधनुष की रचना | इन्द्रधनुष के खण्डों की रचना |
| १५ में पुलकित | में सन्तुष्ट होकर पुलकित | ८८ दीनभाव से रुदन | चिल्लाहट, रुदन |
| १७ कहे जाने पर | पूछे जाने पर | ९४ परपुरुष के | जिस तरह परपुरुष के |
| १९ धीरज नहीं धरते । | सुख नहीं पाते । | ९४ प्रियाकी भाँति वानर के | प्रिया को देखने में उसके प्रियतम को उसी तरह वानर के |
| २० वे गन्धर्वों की कथा | वे गीत व कथा | ९४ लंका को....सकता । | लंका को देखने में मुझे कोई भानन्द नहीं । |
| २४ शिथिल...हुई है ? | शिथिलकाय बन जाने से यह अंगूठी निकलकर वन में पड़ी हुई तुम्हें मिली है क्या ? | ९५ उसे इष्ट | तब इस |
| २६ सच्चे श्रावक हो, | सच्ची बात कहने वाले हैं (सत्य की शीघ्रता लिये हो), | १११ हत...नष्ट | हत राक्षस नष्ट |
| ३४ लक्ष्मण भी...उसने | लक्ष्मण भी तब खरबुषण को मारकर उस स्थान पर पहुँचा तो उसने | ११२ मस्तक फटने...मत्त | दूटते हुए चमकीले मोतीवाले और जिनके मद का सरना नष्ट हो गया था ऐसे मत्त |
| ४७ मृत्यु के...हुए हैं । | मृत्युपथ पर अधिष्ठित कर दिये गये हैं । | ११६ शीघ्र ही फेंकी । | शीघ्र ही उल्टे रस्ते शिला पर फेंक दिया । |
| ५६ भोजन करें, | पारणा करें, | ११७ और आते हुए | और हनुमान भी आते हुए |
| ७३ इस....पवनपुत्र | 'ऐसा ही हो' इस प्रकार कहकर पवन-पुत्र | १४१ जाने पर कुद | जाने पर रावण कुद |
| ७५ रही हुई | गयी हुई | १४५ गिरते....दिया । | उस भवन के गिरने से यह सारी पृथ्वी पर्वतों से अति नियंत्रित होने पर भी सागर के साथ हिल गयी । |
| उद्देश-५४ | | | |
| २ युद्ध में से लीटे हुए | युद्धाभिमुख (युद्धोत्सुक) | २१ कलौ, गिल | कैलीकिल |
| ६ तथा कुशलता | तथा आपकी कुशलता | ३१ हुए.. पडे | हुए आकाश को आपूरित करते हुए चल पडे । |
| २० कान्ति से | कीर्ति से | | |
| उद्देश-५५ | | | |
| ८ इन्द्रजितने | इन्द्रजितने | ५६ पुत्रों के....गया । | राक्षसपति ने आयुध आदि से सन्नद्ध इन तथा दूसरे बहुत से सुभटों का स्नेहपूर्वक बहुत सम्मान (पूजा) किया जैसे पिता अपने पुत्रों का करता है । |
| २३ काल आदि | घोर, कालादि | | |
| ३५ नैमिषारण्य में | ×निकाल दो । | | |
| ३५ युवा रहते | युवा लालपूर्वक रहते | | |
| ३६ सोना छिपा | सोना भात में छिपा | | |
| उद्देश-५६ | | | |
| १५ समक्ष...पडेगा । | समक्ष मेरा हलकापन हो जायगा । | | |
| उद्देश-५८ | | | |
| ४ सहोदर गृहस्थ | सहोदर विप्र गृहस्थ | | |
| उद्देश-५९ | | | |
| ९ उद्दाम...डाला । | उद्दामकीर्ति ने विष्णु को तथा सिंह-कटि ने प्रहत कोमार डाला । | २५ कान्तिवाले...प्रहार | कान्तिवाले बाणों से हनुमान के शरार पर प्रहार |

| मुद्रित पाठ | पठितव्य पाठ | मुद्रित पाठ | पठितव्य पाठ |
|------------------------------|---|--------------------------|---|
| ४६ इस... देखेंगे | संघर्ष के कारण हाथियों से व्याप्त इस विस्तीर्ण वानर सेना को थोड़ी ही देर में आप विनष्ट सी देखोये। | ६८ आप... बाणों के | आप देखें ! इन्द्रजित ने बाणों के सुग्रीव को बाँध दिया है। |
| ४९ फेंके गये बाणों से | फेंके गये बाण | ६८ सुग्रीव बाँधे गये हैं | स्पष्ट रूप से |
| ४९ वानर सैन्य छा गया | वानर सैन्य पर छा गये। | ७१ बिना... शंका के | विराधित |
| ५९ इच्छानुसार विहार करने लगे | × निकाल दो | ७५ विभीषण | इतने में |
| | | ७६ उस समय | |

उद्देश-६०

| | | | |
|-----------------|--------------------|------------------|--------|
| ४ तब...भादि | तब श्रीकृष्ण भादि | ९ न माता, न पिता | न पिता |
| ९ निर्मल...साधु | निर्मल स्वभाव धाके | | |

उद्देश-६१

| | | | |
|----------------------|---|-----------------|--|
| २० अभिमानी....लगा | अभिमानी वह तीक्ष्ण बाण निकाल कर उसके समीप जाने लगा। | | स्वामिमान से गिर गिर के उठने की कोशिश करते थे। |
| २७ चन्द्रनख के | चन्द्रनभ के | ४५ बाँधने में | वेष्टित करने में |
| २८ क्रुद्ध...ललकारा। | क्रुद्ध अंगद ने भय को ललकारा। | ४६ निकालने वाले | मिटा करके |
| ४० नष्ट...उठते थे। | नष्ट हाथों वाले कई सुभट भारी प्रहार से आहत होते हुए भी अपने | ७३ रावण...शोक | रावण रात में सोता हुआ शोक |

उद्देश-६२

| | | | |
|-----------------|--|---------------------|----------------------------------|
| ४ तरह...हो। | तरह के अनर्थ को तुम प्राप्त हो गये हो। | २७ नगर के तीन गोपुर | तीन बसने योग्य स्थल |
| ८ यह फल | यह पाप-फल | २९ भयंकर महात्मा | भयंकर और गदा हाथ में लिए महात्मा |
| १४ दृष्टि में | वैभव में | ३० भाला | भालें |
| २० असफल होने से | तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकने से | ३४ एवं कीर्ति से | एवं मदसे |
| २२ असमर्थ | विरक्त | ३५ आकाश में...भाँति | नक्षत्रों के साथ आकाश की भाँति |

उद्देश-६३

| | | | |
|-----------------------------|--|-----------------------|--|
| ६ प्रकार....महाराज | प्रकार गज के पकड़े जाने पर महाराज | ३४ धीर...नामका | धीर त्रिभुवनानन्द नामका |
| २ हे...बड़े | हे सुपुरुष ! अपने बन्धुजनों का त्याग करके बड़े | ३४ गुणशालिनी पुत्री | गुणशालिनी अनंगशरा नाम की पुत्री |
| १० दुःखका...पापिनी | दुःख की उत्तरदायिनी पापिनी | ३६ साथ...महान् | साथ प्रहारों से परिपूर्ण महान् |
| १९ सुरग्रीव का पुरोहित हूँ। | सुरगीतपुर का राजा हूँ। | ५२ पिता...हुए उसने | पिता के स्थान (गृह) ले जाते हुए उसे रोका गया और उसने |
| २२ साधुपुरुष | राजा | ६९ विशल्या ने...डाला। | विशल्या के उस स्नानजल से क्षण भर में नष्ट कर दिया गया। |
| २६ पीड़ित...है। | पीड़ित हो गया। | ७२ लोक में...विमल | लोक में मृत्युपथ पर स्थित मनुष्यों के लिए जो विमल |
| २७ इस नगर में...वह | परन्तु उस नगर में द्रोणमेष नामका जो राजा था वह | | |
| ३१ समक्ष | सहित | | |

उद्देश-६४

| | | | |
|---------------|-------------------------------|--|--------------------------------------|
| लवणसमुद्रके | दूर लवणसमुद्र के | | पश्चात् वह उत्तम विमान से नीचे उतरी। |
| उत्तम...उतरे। | अर्थ भादि आरम्भर किये जाने के | | |

मुद्रित पाठ

२३ सुन्दर चँवर
३३ करते हैं।

पठितव्य पाठ

सुन्दर रचेत चँवर
करता है।

मुद्रित पाठ

३५ संभाषण करनेवाली
४० तथा...सुखवाले

पठितव्य पाठ

संभाषण करके
तथा विकसित नयनवाले

उद्देश-६५

४ अमोघविद्या
९ प्रसन्नता के साथ
३८ जीभ...भाँति

अमोघविजया
सामूहिक रूप से
जीभ वसूले से काटे गये ढीले

४२ नहीं है...करे ?
४६ मद...हाथीरूपी

फल की भाँति
नहीं हैं...करें ?
हाथीरूपी

उद्देश-६६

३ पुत्रों के वैरियों को
८ ग्रामसमूह
३२ मन्दोदरीने मन्त्री से

सोये हुए वैरियों को
ग्राम के सुखिये,
मन्दोदरीने यमदण्डनामक मन्त्रीसे

३२ यमदण्डनामकी
३५ नामकी
३५ जताया गया कि

×निकाल दो
नामके मन्त्रीने
जताया कि

उद्देश-६७

२ देवोंको...जो
५ रामसे कहा
५ आप...पकड़ें।
१६ उन्हे ललचाओ।
२३ भयसे...पद्मखण्डमें

देवोंका भी भंजन करनेवाली जो
रामसे इस प्रसंग में।
आप सहसा ही पकड़ लें।
उन्हें आन्दोलित कर दो।
भयसे अन्य महिला मनमें जल्दी करती
हुई भी अपने बड़े बड़े नितम्बों के
कारण बड़ी मुश्किल से, पद्मखण्ड में

४४ किया...अनुकम्पा
४६ वशमें... नहीं साधता ?

किया है और तुम उसके ऊपर अनुकम्पा
अन्यथा (अब भी) अन्यन्त दर्पयुक्त
दशवदन साधा नहीं (वशमें नहीं किया)
जाता है, फिर बहुरूपिणी विद्या के अपने
वश में आ जाने के बाद तो कैसे (साध्य
होगा) ?

४० तुम...सुनो।

तुम मेरी एक बात सुनो।

४७ आप...देखे।

आप देखते रहें।

उद्देश-६८

३ ध्वनि से...थे।
१० दरवाजे में
१७ छू छू...वाणी से
३८

ध्वनि के साथ चल पड़ें।
कक्ष (खण्ड) में
उन्होंने स्पर्श करते हुए तथा वाणीसे
उस कुमार ने उसके हाथ से अक्ष-
माला को छीन कर उसे तोड़ डाला,
फिर शीघ्र ही उसे जोड़ दी और
हँसते हुए वापिस लौटा दी। (२८)

२९ हाथ में...विशुद्ध
२९। (२८)
३० वह माला उस
३०। (२९—३०)
३४ पीटने लगा।
५० छोड़कर...गया।

हाथ में वह विशुद्ध
। (२९)
कण्ठी को उस
। (३०)
पीड़ित करने लगा।
छोड़कर वह अन्नद राम के सभा
क्षेत्र में चला गया।

उद्देश-६९

७ मुनि सुप्रत
१४ अपने अपने...पर बैठे।

मुनिसुप्रत
अपने अपने चेत्रासनों पर बैठे जो
सुवर्णमय थे तथा श्रेष्ठ छोटे छोटे
गद्दों और चादरों सहित थे।
ऐसा सोचकर

५१ करने लगे।
५५ शृङ्गार रसमें
५८ कान्ति से

करने लगे। बड़े बड़े वृक्ष टूटने
लगे और पहाड़ों के शिखर गिरने
लगे। (५१)
वीर रसमें
कीर्ति से

४२ ऐसा कहकर

उद्देश-७०

२ सोने के कुण्डल,
१५ हो...फिर

वलय, कुण्डल
हो यदि भरत राजा के जैसा भी हो
जाय, फिर

३३ तब उसने ऐसा कहा
३४ पुरुषवर, पुण्डरीक
४५ कृशोदरी

ऐसा कहने पर उसने कहा
पुरुषवरपुण्डरीक
कृशोदरी ! तुम उठो, जे

मुद्रित पाठ

- ४५ प्रसन्नाक्षी
५१ प्रसन्न करने वाली
६८ सुभटोंने...किया ।

- २४ द्वारा...सैकड़ों
२४ शिलावाले पर्वत और
२४ मुद्रर गिरने
२५ करके...पृथ्वीतल

- ११ लक्ष्मणने...। (११)

- १२ उनके...सुनकर

- ३ वह भी
८ हों...हूँ ?
१२ क्या कहे ?
१३ रावणके...लक्ष्मणको

- १० तडिन्माता
१५ मधुर शब्द से
१८ कान्ति
१९ हमारे

- २ ऐसा कहकर
२० दूसरे भट
२९ ले रहे थे -
२५ लोग
४३ तथा सुभट मय

- १८ अणुमतों को...धारण
२५ वे आभरण
२५ विविध प्रकार के

- ३ और...दीवारोंवाला
५६ अब...लक्षि
७१ स्वच्छन्द,
८१ भागव...भार्या थी ।

पठितव्य पाठ

- सुगन्धी
प्रसन्ना नामक
सुभटोंने लङ्कापुरी से बाहर निक-

- द्वारा ढँके गये सैकड़ों
शिलाएँ, बड़े बड़े पाषाण और
मुद्रर योद्धाओं को मारते हुए गिरने
करके दर्प के साथ जीव और
शरीर को पृथ्वीतल

- लक्ष्मणको उन कुमारियोंने कहा कि
तुम्हें कार्य में सिद्धि प्राप्त हो ? (११)
उनके शब्द सुनकर

- वह ही
होने के लिए कैसे देखा गया हूँ ।
क्या मर जाऊँगा ?
हाथ में चक्र धारण किये रावणके
सम्मुख हुए लक्ष्मण को

- तडिन्माता
करुण शब्द से
कीर्ति
नेरे

- 'ऐसा ही हो' कहकर
दूसरे लोग
कैक रहे थे
भरेन्द्र
तथा मय

- पंच अणुमतों को धारण
वे प्रचुरमात्रा में आभरण
Xनिकाल दो

- और सोने की विचित्र कारीगरी वाला
इस कथा के मध्य में
स्वच्छन्द, उदात्त
भागव की भार्या थी जो अपने शरीरों

मुद्रित पाठ

- ७१ व्याप्त...सूर्यके

उद्देश-७१

- ३२ किसी...भारता
३२ हाथीको...थे ।
४७ उत्तम
५३ उत्तम ऐसे

उद्देश-७२

- १७ दोनों को
३१ विजय में

उद्देश-७३

- १४ करने वाले
२४ वध के लिए
२९ गिरा हुआ...और

उद्देश-७४

- २० इस मुखको
२० क्यों...है ?
३८ मोटे

उद्देश-७५

- ६६ राजाने...प्राकारों
७० बैठे हुए
७१ रतिवर्धन विरक्त

उद्देश-७६

- २६ हलायुध
२६ और...करो ।

उद्देश-७७

- ८५ और...सुन्दरा
९१ चोरो द्वारा
९२ मृग

पठितव्य पाठ

- लना प्रारम्भ किया ।
व्याप्त, आयुधों सहित, सूर्य के
किसी दूसरे को खींचकर भारता
हाथीको मारते थे ।
सैकड़ों
उत्तम वस्तुओं के योग्य ऐसे

- उन्हें
(लोगों को ?)

- करते हुए
सामने
लंकाधिपति गिरे हुए एक देव की
भीति, सोये हुए कामदेवकी भीति और

- इस मुखचन्द्र को
क्यों बन्द कर रखा है ?
मुझ मोटे

- राजाने राज्य की सूचना देने वाले
चिह्न (लिग) भूत बहुतसे प्राकारों
बैठकर
रतिवर्धन प्रतिबुद्ध हुआ और विरक्त

- विमल यज्ञधारी हलायुध
Xनिकाल दो ।

- से भूकूक विजय प्राप्त करनेवाला था ।
और उस नगर के राजा की सुन्दरा
चर पुरुषों द्वारा
मय

| मुद्रित पाठ | पठितव्य पाठ | मुद्रित पाठ | पठितव्य पाठ |
|----------------------------|--|-----------------------|--|
| उद्देश-७८ | | | |
| १३ जिनदर्शनमें...आसक्त में | जिन दर्शन के प्रसंग में में | ३९ पास....हैं । | पास शीघ्रगामी बल भेजे जा रहे हैं । |
| २१ आ...वृत्तान्त | तुम्हारे पुत्र के पास आकरके में वृत्तान्त | ४७ आकाशमें...सब | विभीषण की आज्ञा से आकाश में स्थित सब |
| २६ अन्नहृष्यं...उस | अधर्म करनेवाले उस | ४८ सब शिल्पियोंने | सब दक्ष शिल्पियोंने |
| २८ मोरनी | विहिनी | ५० विशाल | ५० निकाल दो |
| ३३ हमारी...जीवन | समाचार देकर तुमने हमारी माताओं को जीवन | ५० ऐसे मण्डप | ऐसे विस्तीर्ण मण्डप |
| उद्देश-७९ | | | |
| २ विमान, हाथी | विमान, रथ, हाथी, | १८ तथा...बन्दीजनोंकी | तथा वायों की आवाज और बन्दी-जनों की |
| २ साथ चले । | साथ साकेतपुरी को चले । | १८ हुई...ये । | हुं एक दूसरे की भातचीत भी नहीं सुन सकते थे । |
| ९ जहाँ...है । | जहाँ रूपवती के पिता सम्यग्दृष्टि राजा कुलिशकर्ण रहते हैं । | ३४ जीव...विशाल | जीव देवों का अति अद्भुत और विशाल |
| १४ उतरकर...किया । | उतरकर भरतने हर्ष के साथ उनको अर्घ दिया । | | |
| १७ चियाह | चियाह | | |
| उद्देश-८० | | | |
| १ विशाल शोभावाले | ५० निकाल दो । | ७ शय्यागृहमें...आसन | सिंह को धारण करनेवाली शय्या थी और आसन |
| १ राज | राजा | १२ करोड़ से...कुल | करोड़ से अधिक कुल धन एवं रत्नों से परिपूर्ण होकर साकेतपुरी में |
| १ लक्ष्मण के बारे में | लक्ष्मण के वैभवके विस्तारके बारेमें | २४ किपाक...हैं । | किपाककल के समान भोग हैं । |
| २ तुम सुनो । | तुम चेष्टा पूर्वक सुनो । | ५२ पद्मावती...मन | पद्मावती आदि युवतियाँ मन बाजार को |
| २ लक्ष्मणने...मन्यावर्त | लक्ष्मणके मन्यावर्त | ६१ वनों को | दर्पसे आरुछादित होकर दूसरे हाथी प्रशान्त हृदयसे अतीत जन्म का स्मरण |
| २ प्रासाद बनवाया । | आवास स्थान था । | ६७ हाथी...स्मरण | यह ब्रह्मोत्तर कल्प में |
| ३ वह | उनका निवास | ७० यह...ब्रह्मलोकमें | |
| ४ यह प्रासाद | प्रासाद | | |
| ४ जैसा...थी । | जैसा था, ऊँचा था और सब दिशाओं का अवलोकन करने वाला था । | | |
| ५ उसमें...था | उसमें पर्यतसदृश ऊँचा वर्द्धमान नामक विचित्र प्रेक्षागृह था | | |
| उद्देश-८१ | | | |
| ८ जबसे...तबसे | जबसे शुब्ध होकरके वह हाथी शान्त | | हुआ है तबसे |
| उद्देश-८२ | | | |
| ३१ वह बच जायगा । | वह तापस उसकी रक्षा करेगा । | १०६ लफेह | सफेद |
| ३३ ऋक्...श्रुति से | (वसु और पर्वतक की श्रुति से ?) | ११३ धैर्य | सुप्त |
| ६८ गर्भसे...गया । | गर्भसे लोगों का आनन्द रूप वह विभू नामक पुत्र उत्पन्न हुआ । | ११९ चन्द्र कुलंकर | चन्द्र, कुलंकर |
| १०२ कभी मरकर उस | कभी तपश्चरण करके उस | १२० शुब्ध | जोर से शुब्ध |
| | | १२० छोड़े के खम्भे को | बाँधने के खम्भे को |

| मुद्रित पाठ | पठितव्य पाठ | मुद्रित पाठ | पठितव्य पाठ |
|--|--|--|--|
| ४ नदी में...हुए | नदी में वेग से खींचे जाते हुए | उद्देश-८३ १२ सिद्धिपद | सम्यक्त्व |
| १ निरत हो ६ संलेखना ७ हाथीके...पाया | निष्पादित हो धनशन वह हाथी अपने सुकृत के फलस्वरूप देवगणिकाओं के मध्य में सैकड़ों | ११ ओ मनुष्य ११ बुद्धि | माटकों द्वारा प्रशंसित होता हुआ पहले के सुखको प्राप्त हुआ । ओ लोग संतोष |
| १९ करनेवाले...और २१ उत्तमहार २१ किये हुए, सुगन्धित २१ किये हुए | करनेवाले, छत्रधारी और वे उत्तमहार किये हुए और सुगन्धित किये हुए थे । (२१) | उद्देश-८५ २२ दानवेन्द्र...भारी | दानवेन्द्रोंने राम और लक्ष्मण का बन्धा भारी |
| ९ नहीं लूंगा । १६ यश १६ कमलों से ३७ आये हुए आप ३९ शत्रुओं को | धारण नहीं करूँगा । जय कलशों से अज्ञात आप रण में शत्रुओं को | उद्देश-८६ ४४ रथ...सुभट ६२ साधुओं को ६८ एक | रथिक रथसवार के साथ और घोड़े पर अवलम्बित सुभट साधुओं को सदा नमस्कार अकेला |
| ५ उसकी मृत्यु | उसकी अपने लोगों के साथ मृत्यु | उद्देश-८७ १२ ऐसा कहकर | ऐसा कहाजाने पर |
| ५ बकरे...वह १५ बरा १५-१६ (वराके) १८ मंगिका २१ घायल...शरीर वाला | बकरी के बच्चे के रूपमें भवनमें वह धरा (धराके) अंगिका दुःखदायी आवाज करता हुआ और मुड़े हुए शरीरवाला | उद्देश-८८ २४ ऐसा कहकर २५ वहाँ...किया । २८ अपने | 'ऐसा ही होगा' इस प्रकार कहकर वहाँ पर राजा इन्द्रदत्तको शस्त्रवि- द्याभ्यास के लिए भ्राया देखकर (उसके गुरु) दुर्जम विशिखाचार्य को धनुर्वेद में उसने सन्तुष्ट किया । अचलने अपने राजाओं के साथ |
| २ सुरमन्त्र, श्रीमन्त्र ६ मधुरापुरी २१ अपने...लिए २९ मेरा...तब तक ३० कुबेरके | सुरमन्त्र, श्रीमन्त्र प्रभापुरी X निकाल दो मेरा यह खल स्वभाव वाला दुःखित हृदय तब तक राजा के | उद्देश-८९ ३३ नर्तक और ५१ होकर...शत्रुघ्न ! ५२ (५२) ६२ काम में निरत | नर्तक, छत्रनर्तक और होकर घर घर में जिनप्रतिमाओं की स्थापना करके हे शत्रुघ्न ! (५१-५२) काम से समृद्ध |
| ५ भाई लक्ष्मणके ७ उद्विग्न ऊपर १८ अंगद...शत्रु के | भाई वीर लक्ष्मण के उद्विग्न और कष्ट हो ऊपर अंगद और हनुमान भी दूसरी ओर | उद्देश-९० २६ कि...वह | शत्रु के कि तुम्हारे पास आने पर पहले जो कुछ कहा गया था वह |

| मुद्रित पाठ | पठितव्य पाठ | मुद्रित पाठ | पठितव्य पाठ |
|--|--|--|---|
| | | उद्देश-९१ | |
| ५ हरिष्वज १० मुनि | अरिजर गणी | १२ दस हजार...छोटे | सोलह हजार महिलाएँ छोटे |
| | | उद्देश-९२ | |
| ५ प्रसन्नाक्षी । ६ प्रसन्न ८ गजपतियों को | मृगाक्षी । अलंकृत गजपतियों को (गतपतिका=प्रोषित | २६ आदिका २८ रामने उस | मर्तुकाओं को-शब्दश्लेष) भादि विषय मुख का रामने सुन्दरियों के साथ |
| | | उद्देश-९३ | |
| ३७ उत्तम पुत्र | सत्पुरुष | ३७ करके अचल | करके सुखप्रद अचल |
| | | उद्देश-९४ | |
| ३ सुभट, सुग्रीव ६ निर्दय ८ इक्ष्वाकुलके ३० वस्त्र...रथ ३५ गर्वित | सुभट, खेवर सुग्रीव निर्दयी इक्ष्वाकुलके सुसज्ज रथ भास्वर | ३८ सुन्दर...आच्छन्न ४३ झीलों से वन ६५ बदनामी से...सुझ ७६ तुम्हारे...यद्यपि ९५ रहकर....परिजनो | सुन्दर पंकज और कुसुमोंसे आच्छन्न पुलन्द जाति के लोगों से वन बदनामी से डरकर अविष्णु सुझ तुम्हारे साथ मेरा दर्शन (मिलन) फिर हो या न हो । यद्यपि रहकर स्वजन और परिजनो |
| | | उद्देश-९५ | |
| ८ तुम्हारी लक्ष्मी तुम्हारे ११ रखने वाले हैं १७ वीर २९ वन्दित ४८ दुःख के हेतुभूत ५३ अपवाद ५५ तथा....नाना | हे लक्ष्मी ! यह सब तुम्हारे रखने वाले और वीर हैं । वीर पूजित दुःख देने वाले भय तथा यन्त्र और वैतरणी आदि से नाना | ५६ जीवने...हो । ६१ उद्यान...जलता है । ६७ धैर्य धारण किया । | जीवने जरा, मृत्यु और रोग न पाये हो उद्यान को दुर्बचनरूपी भाग से जलता है उसके समान वह अनाथ भी भय- यशरूपी भूमि से बारंबार जलाया जाता है । शान्ति धारण की । |
| | | उद्देश-९६ | |
| १ आभूषण) से युक्त १२ कहने से...एकाकी १२ सीता को...है । १८ नेत्रों में...आपकी २२ तरह.. एकही २९ प्रकार निर्मल | आभूषण) व चन्द्राकार आभूषण से युक्त कहने से वह एकाकी सीता अरण्यमें छोड़ दी गयी है । नयनाश्रुरूपी बादलों से व्याप्त दिन वाली आपकी तरह मुझे छोड़ते हुए एक ही प्रकार शुद्ध किरण के समान निर्मल | ३१ भयंकर जंगल में ३१ मैं....होगी । ३५ जो ध्याकुल ४९ धैर्य प्राप्त किया । | Xनिकाल दो । नहीं मालूम कि उस भयानक जङ्गल में तुम को क्या मिलेगा (तुम्हारी क्या हालत होगी) ? जो पवित्र शान्ति प्राप्त की । |
| | | उद्देश ९७ | |
| | | २९ विमल एवं | Xनिकाल दो । |
| | | उद्देश ९८ | |
| १ इधर...योग्य १९ शुद्ध कर्म में | इधर युक्त कौशल के योग्य शुद्ध के बीच | ५२ नासीफल के समान ६७ पुरी कौबेर, कुहर | बसले से काटे हुए फल के समान पुरिक, कौबेर, कुहेरा (कुहेरा) |

| मुद्रित पाठ | पठितव्य पाठ | मुद्रित पाठ | पठितव्य पाठ |
|--|--|---|---|
| १५ बनाकर...में २९ किलो से | बनाकर उस साधु पुरुष के द्वारा मैं बेतो से | उद्देश-९९ ३६ ऐसा...कहकर | 'इसी प्रकार हो' ऐसा कहकर |
| ६ सैकड़ों २० बिकसित ३५ विपुल पुण्यशाली ३५ उन उदरस्थ | × निकाल दो । विगलित × निकाल दो । उन पुण्यशाली उदरस्थ | उद्देश-१०० ४० जानकर ४९ सुभटों से ४९ वे...चल | सुनकर श्रेष्ठ रथों से वे हलधर, चक्रधर तथा कुमार चल |
| २७ क्योंकि...सकता । | क्योंकि मैं तुम निर्लज्ज को इस रूप | उद्देश-१०१ | में नहीं देख सकता । |
| ३७ अकार्य ४८ सर्वगुणने...दे दी । | असम्य कार्य सर्वगुणने दीक्षा देकर भार्याओं को सौंप ली । | उद्देश-१०२ १२७ सागरोपम की १४५ उनके भी...विजय | पत्य की उनके (भाग) चारों दिशाओं में पूर्व से प्रारंभ करके अहमिन्द्रों के विजय तथा (इनके बीच में ऊपर) सुन्दर विमान सर्वार्थसिद्ध जानो । (ये पाँच अनुत्तर विमान भी कहल्यते हैं) । जिससे भव्य जीव भावित |
| ६७ नरक योनियाँ हैं । ६९ नरकावास)होते हैं । ७६ तथा...वे | नरकावास हैं । नरकावास) तथा प्रस्तर होते हैं । तथा दुःख से कराहते हुए और अंगों को मरोड़ते हुए वे | १४६ तथा...जानो । १७९ जिससे जीव १९६ भावति | |
| ११५ भोजनांग, वस्त्रांग ११५ दिव्यांग | भोजनांग, भाजनांग, वस्त्रांग दीपिकांग | उद्देश-१०३ २० (भनार्य पुरुष) २३ और अल से ७४ जो...सुखोंसे ८१ सुनकर...श्रीचन्द्रने ८३ करने वाला, चारित्र ९३ करके...कर्मों से १११ कोदों की खेती ११७ ब्रह्मदत्त १५१ स्त्रीको देखा १५२ जो लोगों से | (हरिण) और नदियों के जल से जो उत्कृष्ट देव-सुखों से सुनकर प्रतिबुद्ध श्रीचन्द्रने करने वाला, विशुद्ध सम्यक्धारी चारित्र करके स्त्रीकर्मों से कोदों के लिए बाड धनदत्त स्त्रीके द्वारा देखा जो दूसरों को आधिपत्य |
| ११ धनदत्तके....करके १७ दुर्जनो द्वारा....घर से | धनदत्त से उसे छीन करके दुर्जनो द्वारा उस कन्या के लिए निषिद्ध किये जाने पर घर से | | |
| १७ (१९) १८ (१९) १९..... | (१७) (१८) उसके लिए वे हरिण फिर एक दूसरे को मारकर अपने कर्मों के फल-स्वरूप घोर अंगल में बराह के रूप में उत्पन्न हुए । (१९) | | |
| २० बन्दर...फिर | बन्दर, व्यामृगो तथा फिर हरिण | | |
| ५ भोगो...करो | भोगो, इसमें प्रतिषेध मत करो । | उद्देश-१०४ १२ नौकरी | |
| ११ स्त्रीतेन्द्र स्त्रीका १४ अत्युत २१ भोगों से विभूक्त, | स्त्रीतेन्द्र सुखप्रचुर कौषा अत्युत भोगों में भति मोह प्राप्त, | उद्देश-१०५ ३७ जिससे...सुनाऊँ । ५३ जली हुई थी ५३ जठे और दग्ध मुरदोंका | जिससे वह सारा वृत्तान्त कह सुनाएगा । जलयी थी जलते हुए और दग्ध होते हुए मुरदों का |

| | | | |
|-------------------------|---|-------------------------|---|
| मुद्रित पाठ | पठितव्य पाठ | मुद्रित पाठ | पठितव्य पाठ |
| ५४ राक्षसों...व्यास था; | राक्षस, सियार और प्रेत-समूहके मुँह प्रकाशित हो रहे थे; | ५८ वैतालोंने...रहे थे, | वैतालों के द्वारा वृक्षसमूह के आहत होने पर भूतगण घूमने लग गये थे, |
| ५४ राक्षसों...वह | राक्षसादि क्रव्याद प्राणियों से वह | ५९ कहीं...रहा था, | कहीं नील-पीत प्रकाश दिखाई दे रहा था, |
| ५५ डाकिनियों के...और | डाकिनियों द्वारा धड़ खींचे जाने से बराबना था और | ७१ और प्रणाम | और साधु को प्रसन्न करते हुए प्रणाम |
| | | ७७ अतिप्रचंड...यक्ष के | अतिप्रचंड और भयंकर महायक्ष के |
| | | उद्देश-१०६ | |
| ७ गरुण | गरुड | ४२ यहाँ...हैं । | यहाँ उत्पन्न हुए हैं । |
| ४० स्नेह के बन्धन में | बंधुस्नेह में | ४७ दृढ़ बुद्धिवाले वे | दृढ़ संकल्प के साथ वे |
| | | उद्देश-१०७ | |
| १ वीर...गणधर | वीर जिनेन्द्र के बुद्धिशाली और प्रथमपद (प्रमुख) को प्राप्त गणधर | ९ भामण्डलकी...गई । | भामण्डलकी आयु का निस्तार आ गया । |
| | | १३ शास्त्रों को जानते | दुर्बुद्धि जानते |
| | | उद्देश-१०९ | |
| १८ महर्षिक...बोधि | महर्षिक देव के मनुष्य-जन्म में च्युत होने पर भी बोधि | २४ त्याग...हैं । | त्याग कर देंगे । |
| | | उद्देश-११० | |
| ७ भाँखों वाली | भाँखी बाला | १६ गीत गाने | गीत मधुर स्वरसे गाने |
| १६ कोई...वीणा | कोई स्त्री वीणा | ४१ अमृत रस | अमृत स्वर |
| | | उद्देश-१११ | |
| | २१ तुम्हारे बिना | तुम्हारे चिर सो जाने से | |
| | | उद्देश-११२ | |
| ५ फिर...लोगों की | फिर साधारण लोगों की | २१ मोहवश...तो | शोणित का जो पान |
| १८ नरकों में...पान | नरकों में कीचड़ अथवा वीर्य और | उद्देश-११३ | मोहवश कूदने लगे तो |
| ४२ लोक में...हो । | लोक में मुझे अगुआ करके मोह को प्राप्त सभी मूर्खों और पिशाचों के तुम | ५५ दिन.....हैं । | प्रथम राजा हो । |
| | | उद्देश-११४ | दिन क्या सुख से व्यतीत हुए ? |
| २१ सैतिस | सैतीस | २४ वे | उस |
| २३ पूर्व...ध्रुत से | पूर्वगत भ्रुत से | उद्देश-११५ | |
| | | २२ और...गये । | और रस्ते पर चल पड़े । |
| ६ नाचना-बजाना | नाच-कूद | उद्देश-११७ | |
| ३ स्वाध्याय...निरत | स्वाध्याय और क्रिया में निरत | १८ ऐसे...और | ऐसा उपसर्ग करके और |
| ७ पूर्वकी भय सीता | पूर्व भव की सीता | १९ हँसती...कहा | सीता ने अचानक कहा |
| १२ मैं...उसके | मैं वैमानिक देव ऐसा कहूँ जिससे वह मेरा मित्र हो जाय तब उसके | २० पास में...उसने | पास में जाकर उसने |
| १४ सम्यग्दर्शन...राम के | नरकगत लक्ष्मण को लाकर उसको सम्यग्बोधि प्राप्त करवाके राम के | २८ राघव !...हैं ? | राघव ! पासमें यह कौनसी वनस्पति है ? |
| | | ३८ हे नाथ ! | ×निकाल दो |

मुद्रित पाठ
३८ तुमने पिजर को
३९ तुम्हारा

पठितव्य पाठ
तुमने स्नेहपिजर को
तुम

मुद्रित पाठ
३९ केवलज्ञानातिशय
३९ है ।

पठितव्य पाठ
केवलज्ञानातिशयप्राप्त
हो ।

उद्देश-११८

५ कितने
५ पेड़ों...बहुत बार
८ कितने को...तप्त
८ ताँबा...पिलाया
३२ जो...प्राप्त
३७ वह...राम
३७ भरतक्षेत्र में भाया
४२ वे...तथा
४२ कैकेई...सुमित्रा
५३ बटा से युक्त

कितनेक
पेड़ों से लगे हुए थे और उनको बहुत
बार
कितनेक को तप्त
ताँबे जैसा पानी पिलाया
जो अनेक करोड़ों भवों में वेदना प्राप्त
करते हुए भी प्राप्त
वह राम
भरतक्षेत्र में उतरने लग्य ।
वे दोनों जनक और कनक तथा
कैकेई और सुन्दर कान्तिवाली सुमित्रा
बटा से युक्त

५१ हुआ है ।
६६ श्रीदास
७४ वे...करेंगे ।
७९ पद्मपुर में...उसी
८१ भावों की कथा
८२ वह
८३ भामण्डल देव को
८६ पन्द्रह हजार
९३ भाव से सुनता है
९५ धनार्थी...धन
९८ पुण्य के
१०८ और...करो ।
११० देवलोगों को ये

हुआ ।
ऋषिदास
वह देव आदि कई भव प्राप्त करेगा ।
पद्मपुर में लक्ष्मण चक्रधर होकर उसी
भवों का वर्णन
वह देव
भामण्डल को
सत्रह हजार
भाव से पढ़ता है और सुनता है
धनार्थी महा विपुल धन
शुभ
और दूसरे की स्त्री से दूर रहें ।
देवलोग ये

नोट :—इस संशोधित अनुवाद में स्वीकरणीय पाठान्तरों का अनुवाद भी शामिल है ।

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

